मासिक प्रकाशन जून ९१
कादम्बिनी
भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका
पटेल प्रधानमंत्री
क्यों नहीं बन पाये ?
दस
प्रेम कहानियां
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन
७ रुपये

# शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

**नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।**

● ज्ञानेन्दु

**१. देशाटन**—क. देश छोड़कर बाहर बसना, ख. देश की यात्रा, ग. देश की स्थिति का सर्वेक्षण, घ. देश लौटना।

**२. ऋतुचर्या**—क. ऋतु-परिवर्तन, ख. मौसम का अनुमान, ग. मौसम के मुताबिक खानपान व कार्य, घ. ऋतु को देखते हुए घूमना-फिरना।

**३. अविरत**—क. बिना मिलावट का, ख. विरक्त, ग. तीव्र, घ. निरंतर।

**४. क्षणभंगुर**—क. प्रतिक्षण, ख. क्षणभर में नष्ट होनेवाला, ग. क्षण-क्षण रूप बदलनेवाला, घ. क्षणिक हानि का।

**५. ऊहापोह**—क. झगड़ा, ख. तर्क-वितर्क, ग. संदेह, घ. शोरगुल।

**६. नैराश्य**—क. नयी राशि, ख. निराशा, ग. विफलता, घ. अंधकार।

**७. तथैव**—क. वैसे ही, ख. किंतु, ग. और भी, घ. फिर भी।

**८. रौरव**—क. असत्यता, ख. भयावह, ग. क्रुद्ध, घ. एक नरक।

**९. लोकांतर**—क. मानवजाति की विषमता, ख. आकाश, ग. परलोक, घ. असाधारण।

**१०. व्युत्पन्न**—क. जन्म, ख. पैदा किया हुआ, ग. बेचैन, घ. जो अशुभ घड़ी में पैदा हुआ हो।

**११. श्लील**—क. धीमा, ख. वीरतापूर्ण, ग. जुड़ा हुआ, घ. शिष्ट।

**१२. लोकवाद**—क. मान्य प्रथा, ख. प्रजातंत्र, ग. लोगों में प्रचलित चर्चा, घ. सर्वप्रियता।

**१३. संवेदनशील**—क. सहानुभूतिपूर्ण, ख. गहरी मार करनेवाला, ग. नाजुक, घ. तीव्र अनुभूति करनेवाला।

## उत्तर

१. ख. देश की यात्रा। **देशाटन** का उद्देश्य देशवासियों से मेलजोल स्थापित करना ही होता है। (देश+अटन)।

२. ग. मौसम के मुताबिक खानपान व कार्य। **ऋतुचर्या** का पालन करने में सुविधा एवं सुख होता है। (ऋतु+चर्या)

३. घ. निरंतर, बिना रुके उसने समाज सेवा का कार्य **अविरत** ही किया है।

४. ख. क्षणभर में नष्ट होनेवाला। जीवन **क्षणभंगुर** है, अतः सत्कार्य करने में देरी नहीं करनी चाहिए। (क्षण+भंगुर)

५. ख. तर्क-विवेक, अनिश्चय की स्थिति, उलझन। **उहापोह** को समाप्त किये बिना आगे बढ़ना असंभव है। (ऊह+अपोह)

६. ख. निराशा, नाउम्मेदी । **नैराश्य** के गर्त से बाहर निकलने में ही पुरुषार्थ है ।

७. क. वैसे ही, उसी तरह । जिस तरह का मनुष्य हो उसके साथ **तथैव** व्यवहार करना चाहिए ।

८. ख. भयानक । युद्ध ने **रौरव** दशा ग्रहण कर ली । घ. एक नरक । युद्ध से विनष्ट क्षेत्र में रौरव का आभास होता है । (मूल-रुरु)

९. ग. परलोक । दुःखी मनुष्य को **लोकांतर** में सुख की कल्पना से ही सांत्वना मिलती है । (लोक+अंतर)

१०. ख. पैदा किया हुआ । युद्ध से **व्युत्पन्न** विनाशलीला को कौन रोक सकता है । (मूल -वि +उत् +पद्)

११. घ. शिष्ट । नारी के प्रति **श्लील** व्यवहार ही उत्तम समाज का लक्षण है ।

१२. ग. लोगों में प्रचलित चर्चा, किंवदंती । प्रायः यथार्थ **लोकवाद** से परे होता है । (लोक+वाद)

१३. घ. तीव्र अनुभूति करनेवाला (अंग.-सेंसिटिव) वह **संवेदनशील** व्यक्ति है, अतः दुःख से विचलित हो जाता है ।

## पारिभाषिक शब्द

**Forensic Institute** =न्यायवेधक संस्थान
**Statistics** =सांख्यिकी/आंकड़ा
**Statistician**=सांख्यिक/आंकड़ा-शास्त्री
**Stricture** =अवक्षेप
**Proxy** =प्रतिपत्र/प्रतिपत्री
**Proximo** =आगामी मास का
**Lease**=पट्टा
**Levy** =उद्ग्रहण/महसूल
**Estate Duty**=संपदा-शुल्क

## समस्या-मूर्ति-१४१

### पानी में

### प्रथम पुरस्कार

*सब धुलते हैं मगर कभी कुछ दाम नहीं धुलते पानी में*
*बुझ जाती है पर अंतर की आग नहीं बुझती पानी में*
*तट परकोई डूब रहा है उभर रहा कोई मन घट पर*
*वह क्या जाने उसने कितनी नादानी भर दी पानी में*

—कुमार प्रियदर्शन
इंदौर, म.प्र.

### द्वितीय पुरस्कार

*नदिया तुम हो एक सहेली*
*मेरी राम कहानी में*
*तन मन दोनों उष्ण हुए हैं*
*चढ़ती धूप सुहानी' में*
*दोनों की ढूंढूं शीतलता*
*तेरे निर्मल पानी में*

—ओम सोनी
द्वारा— जागृति ज्वैलर्स
३-घाटी वाला कंपलैक्स
जड़ियों का रास्ता-जयपुर-३०२००३

# आस्था के आयाम

## ६२ वर्ष की आयु में भी डिग्रियों का शौक

डॉ. श्रीमती भाग रानी कालरा एक विदुषी महिला हैं । इनका जन्म १३ मई, १९२९ में हुआ । मुख्यतया दिल्ली, कलकत्ता एवं अहमदाबाद में कार्यरत रहीं । एम. ए. (हिंदी) पंजाब विश्वविद्यालय से तथा एम. ए. (एज्यूकेशन) एवं पी.एच.डी. की उपाधियां कलकत्ता विश्वविद्यालय से प्राप्त कीं । दूर शिक्षण का डिप्लोमा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से इसी वर्ष लिया ।

आप कलकत्ता में एक स्कूल की प्राचार्या रहीं । इन्होंने लोरेटो कॉलेज में प्रवक्ता के रूप में भी काम किया । आप इंडियन सायकोलॉजीकल एसोसिएशन, इंडियन सायंस कांग्रेस, ऑल इंडिया एसोसिएशन फॉर एज्यूकेशनल टेकनोलॉजी, इंडियन सोसायटी फॉर पाप्युलेशन एजूकेशन एवं हिंदी साहित्य परिषद की आजीवन सदस्या हैं । अभी आपने इंडियन एसोसिएशन फॉर सोशल साईकियाट्री की आजीवन फैलोशिप प्राप्त की है । अहमदाबाद में गुजरात काउंसिल फॉर डिस्टेंस एजूकेशन की संस्थापक सदस्यों में से एक हैं एवं कार्यकारिणी की सदस्या हैं ।

मनोविज्ञान, मनोविश्लेषण, मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त हैं । 'किशोरावस्था/प्रौढ़ावस्था में समायोजन' इनके मुख्य विषय रहे हैं । इनकी 'प्रौढ़ मनोविज्ञान' की पुस्तक (१९९०) गुजराती भाषा में छपी है ।

अहमदाबाद के बी. एम. इंस्टीट्यूट में मंद बुद्धि बालकों के साथ 'शारदा' विभाग में भी काम करती रही ।

आपका अंगरेजी, हिंदी, गुजराती, बंगला, संस्कृत, उर्दू एवं पंजाबी भाषा पर अधिकार है । आजकल आप गुजरात विद्यापीठ के शिक्षण विभाग में रीडर एवं एसोसियेट डायरेक्टर के रूप में (पत्राचार विभाग) कार्यरत हैं । श्रीमती भाग रानी सतत शिक्षण का जीता-जागता उदाहरण हमारे समक्ष है । प्रौढ़ों को भी प्रेरणा देकर साक्षर बनाने का कार्य वे कर रही हैं ।

## अंधता के विरुद्ध एक नेत्रहीन का संघर्ष

जोधपुर (राजस्थान) में महात्मा गांधी अस्पताल के राजकीय पुनर्वास एवं

अनुसंधान केंद्र में कार्यरत फिजियोथिरेपिस्ट डॉ. के. ए. खलील नेत्रहीन हैं । डॉ. खलील ने अंधता के विरुद्ध जो संघर्ष किया वह अपने आप में एक उदाहरण है । वे आज जिस स्थिति में हैं वह अंधता के विरुद्ध लड़ी गयी एक लंबी लड़ाई में उनकी अनूठी विजय का सुफल है ।

१९७० में, जब वे बी. एस-सी. के छात्र थे, तब आंखों के परदों में खराबी (डी जनरेशन ऑव रेटिना) आ गयी । सारा भविष्य अंधकारमय लगने लगा । उन्होंने पी.एम.टी. चयन हेतु आवेदन किया था और सुनहरा कल उनके सामने था लेकिन सारे सपने टूट गये ।

अंधता के कारण बी.एस.सी. अंतिम वर्ष में अध्ययन छोड़ना पड़ा । फिर नये सिरे से कला स्नातक की डिग्री प्राप्त की । आगे का अध्ययन रुक गया और तीन वर्ष घर के भीतर दुबके हुए रहना पड़ा ।

डॉ. खलील बताते हैं, "जिस तरह एक दिन अंधता ने टूटन का एक सिलसिला शुरू किया, उसी आकस्मिक रूप से एक दिन भीतर यह प्रेरणा हुई कि कुछ न कुछ करना चाहिए । एक मित्र की प्रेरणा से ब्रेल (अंधों की पढ़ने की लिपि) सीखने की शुरुआत हुई । एक ठहराव, जो जीवन का पर्याय बन गया था अचानक एक नयी सुबह सामने मिली ।

इस दौरान जीवन में संघर्ष तो बढ़ गया, लेकिन भीतर जली जोत से राह बनती रही ।

बाद में उन्होंने विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों की सलाह से शारीरिक चिकित्सा व्यवसाय में प्रशिक्षण प्राप्त किया और चिकित्सक के रूप में नियुक्त हुए ।

एक पूरी तरह स्वस्थ जीवन जीते हुए अचानक मिले अंधता के अभिशाप ने डॉ. खलील की जीवन दृष्टि ही बदल दी । उन्होंने पूरे जीवन को संघर्ष मान लिया और अपने भीतर संघर्षों के शीर्ष तक जाने की लालसा का अनुभव किया ।

विवाह के प्रश्न पर वे मौन साधे रहे । और जब अपना निर्णय सुनाया तो सभी स्तब्ध रह गये । उन्होंने कहा कि वे विवाह करेंगे तो किसी नेत्रहीन से ही ।

डॉ. खलील ने कहा कि 'अंधता की स्थिति से पहले मैं जिन स्थितियों की कल्पना भी नहीं कर सकता था वे सारी स्थितियां मेरे सामने खड़ी रहीं । उन पहाड़ों-सी स्थितियों से लगातार टकराते हुए मेरे भीतर कम से कम इतनी ताकत तो आ गयी कि मैं किसी भी तरह से किसी का आश्रित न रहा ।'

इस बीच डॉ. खलील का परिचय शहनाज अंजुम से हुआ जो उर्दू में अदीब माहिर, हिंदी में विशारद और डिप्लोमा इन टीचर्स ट्रेनिंग फॉर ब्लाइंड थीं । इन शैक्षणिक योग्यताओं के अतिरिक्त नेत्रहीन शहनाज अंजुम गृह कार्य में प्रवीण सरलता-सौम्यता की प्रतीक थीं । डॉ. खलील ने उनसे विवाह कर लिया ।

डॉ. के.ए. खलील अपने पुत्र मुदस्सिर को नेत्र चिकित्सक बनाना चाहते हैं । वे कहते हैं, "अंधता के विरुद्ध मेरे जीवन का संघर्ष तब ही सार्थक होगा ।"

**— प्रस्तुति : सत्यदेव चूरा**
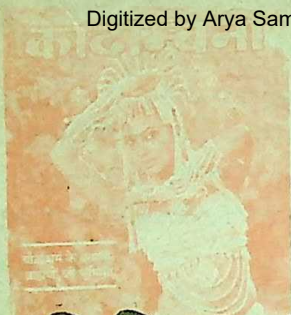
# प्रतिक्रियाएं

## पुरस्कृत पत्र

अप्रैल अंक में प्रकाशित 'लोक कहावतों में रोग मुक्ति के नुस्खे' शीर्षक लेख पढ़ा । काली खांसी के नुस्खे में आक पुष्प आया है लेकिन अनुवाद में आम के फूल आया है, जबकि यहां शुद्ध शब्द आक के पुष्प होना चाहिए । आक (मदार) के पुष्प ही खांसी में गुणकारी होते हैं न कि आम के पुष्प । आम के पुष्प मादकता और अतिसार में प्रयोग किये जाते हैं ।

रोग मुक्ति के संबंध में घाघ भडहरी के दो नुस्खे और :

*सावन हर्रें भादों चीत,*
*क्वार गुड खायउ मीत ।*
*कार्तिक मूली, अगहन तेल*
*पूस में करै दूध से मेल*
*माघ मास घिउ खिचड़ी खाय*
*फागुन उठिके प्रात: नहाय*
*चैत मास में नीम बेसहती*
*वैसाखे में खाय जडहथी*
*जेठ मास जो दिन में सौवे*
*ओकर जर असाढ़ में रोवै ।*

अर्थात सावन में हर्रें, भादों में चीता (चित्रक), कवार में गुड़, कार्तिक में मूली, अगहन में तेल, पूस में दूध, माघ में घी-खिचड़ी, फालुन में प्रातःकाल स्नान, चैत्र में नीम, वैसाख में जडहन (पूर्व के जंगल में उत्पन्न होनेवाला धान) जो इन चीजों को समयानुसार सेवन करेगा तथा ज्येष्ठ मास की लू में दिन में शयन करता है, वह आषाढ़ मास में होनेवाले ज्वर से मुक्त रहेगा अर्थात ज्वर उसे देखकर रोएगा ।

*सधुवै दासी चोरै खांसी*
*प्रेम बिनासै हांसी*
*घघ्घा उनकी बुद्धि बिनासै*
*खाय जो रोटी बासी*

साधू को सेविका, चोर को खांसी, और प्रेम को हंसी नाश कर देती है । घाघ कवि कहते हैं कि ठीक उसी प्रकार बासी रोटियां मनुष्य की बुद्धि को नष्ट कर देती हैं ।

—डॉ. कमल प्रकाश अग्रवाल
४७, हुसैनी बाजार, चंदौसी

## प्रोत्साहन पुरस्कार

अप्रैल अंक में 'पंजाबी कवियों की रामकाव्य परंपरा' लेख महत्त्वपूर्ण एवं शोधपरक है । पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों में यह लेख सौहाद्र के छींटे देगा । राम पर पंजाबी कवियों का काव्य सृजन यह सिद्ध करता है कि पंजाब हमारी संस्कृति की धारा से पृथक नहीं है । सिख कवियों द्वारा उत्कृष्ट राम साहित्य की रचना अनमोल निधि है । लेखक ने विविध कवियों द्वारा रचित विभिन्न रचनाओं का उदाहरण देते हुए पंजाब के हिंदू संस्कृति प्रेमी कवियों को तो उजागर किया ही है, हमारी विच्छृंखल होती हुई संस्कृति को भी संबल दिया है । खालिस्तान की मांग करनेवाले लोगों को अपने इन राम प्रेमी कवियों से प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए कि पंजाब

हिंदुस्तानी संस्कृति का ही अंग है ।

**—देवदत्त शर्मा**
**माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर**

अप्रैल अंक में प्रकाशित लेख 'न्याय, न्यायालय और पक्षकार : एक अहसास' लेखक के अपने ही पेशे से संबंधित एक व्यक्तिगत कटु अनुभव की तीखी अभिव्यक्ति है । साथ ही वह हमारी न्याय व्यवस्था के रिसते नासूर की एक झलक भी प्रस्तुत करता है । 'रिसीविंग एंड' पर पहुंचकर ही वस्तुस्थिति का सही एहसास हो पाता है । यह 'पोएटिक जस्टिस' का मामला भी कहा जा सकता है कि न्यायाधीश स्वयं न्यायप्रक्रिया की उलझनों का भुक्तभोगी बने । फिर भी श्री दुबे अपनी पीड़ा और घुटन को इस प्रकार प्रकाश में लाने हेतु बधाई के पात्र हैं ।

उच्चतम न्यायालय तक में लंबित मुकदमो की निरंतर बढ़ती संख्या के आंकड़े देखकर मन वितृष्णा से भर उठता है । एक ओर नये-नये कानूनों की बाढ़ जिनसे और अधिक विवाद उत्पन्न होते हैं । उस पर हमारी दूषित न्याय प्रणाली, भ्रष्ट व्यवस्था, अधिवक्ताओं की मनोवृत्ति एवं निहित स्वार्थ उनकी आये दिन की कारण-अकारण हड़तालों की नयी परंपरा, सरकार की कोरी बयानबाजी, न्यायाधीशों के रिक्त स्थानों की पूर्ति में असाधारण विलंब, उनके चयन में राजनीतिक जोड़-तोड़ और अब स्वयं न्यायाधीशों के चरित्र पर प्रश्नचिह्न, व्याधि साधारण तो नहीं !

सस्ता, सुलभ, शीघ्र न्याय दिलाने की बड़ी-बड़ी लुभावनी बातों के अतिरिक्त ठोस कदम कोई भी उठाया नहीं जा रहा । विधि सहायता प्रकोष्ठ, लोक अदालत, न्याय पंचायत आदि भी प्रचार के साधन अधिक, वास्तविक समाधान के माध्यम कम प्रमाणित हुए हैं । विधि कमीशनों की संतुतियां धूल बटोरती फाइलों में दबी पड़ी रहती हैं । राजनीतिक आपाधापी में भला किसे फुरसत है इस ओर ध्यान देने की !

**—ओम प्रकाश बजाज**
**जबलपुर (म.प्र.) ४८२००१**

इस लेख पर हमें इन पाठकों की भी प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई है :

**डॉ. ओमप्रकाश शर्मा 'प्रकाश', नयी दिल्ली, कैलाश गुप्त, वाराणसी, शीतला प्रसाद गुप्ता, बुरहानपुर, शिवशंकर दुबे, सिवनी, टी.आर. चमोली, टिहरी, प्रेम सोलंकी 'अमित' होशंगाबाद, रमा सिंह, आगरा, जगन्नाथ पाठक चतरा (हजारीबाग)**

## समय के हस्ताक्षर

'समय के हस्ताक्षर' स्तंभ का पाठकों ने बेहद स्वागत किया है । अप्रैल अंक में प्रकाशित 'समय के हस्ताक्षर' में व्यक्त विचारों से सहमति व्यक्त करते हुए हमें अनेक पाठकों ने पत्र लिखे हैं । इस स्तंभ पर प्राप्त कुछ पत्रों के प्रेषकों के नाम :

**प्रणय मिश्र, जमालपुर, डॉ. रामशंकर सिंह, अमृतसर, मनीष तिवारी, बरेली (म.प्र.) अपूर्व त्रिपाठी, टीकमगढ़, विजय शंकर, नागपुर, श्यामला गोडबोले, वर्धा, पन्ना देसाई, इंदौर, सावित्री भाटिया नयी दिल्ली, ब्रिजेन्द्र मेरठ, मधुर, लखनऊ, और सुकीर्ति शर्मा, इटारसी ।**

## डेढ़ सौ वर्ष जी सकेंगे

अप्रैल अंक में प्रकाशित लेख 'आप डेढ़ सौ वर्ष जी सकेंगे' पढ़ा । इस लेख में आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की उपलब्धियां

बताते हुए डेढ़ सौ वर्ष तक के दीर्घ जीवन का वर्णन किया गया है । परंतु यदि कोई व्यक्ति इतने वर्षों तक जीवित रहने की कामना भी करेगा तो क्या उसे यह जीवन सहजता से प्राप्त हो सकेगा । इसे तो वही व्यक्ति प्राप्त कर सकेगा जो धनाढ्य है । साधारण व्यक्ति तो यह सोच भी नहीं सकता । इसका अभिप्राय यही हुआ कि जो संपन्न व्यक्ति हैं, वे अपने धन-बल से डेढ़ सौ वर्ष का जीवन खरीद सकते हैं ।

**—रमेशचंद्र गुना**

***(वास्तविकता इसके विपरीत है । स्वास्थ्य से धन का कोई संबंध नहीं है । इस सचाई को देखा जा सकता है । —संपादक)***

## एक पत्र नेपाल से

मुझे हिंदी बहुत कम आती है । फिर भी मुझे हिंदी भाषा और साहित्य में रुचि है । इसीलिए मैं 'कादम्बिनी' नियमित पढ़ता हूं । इसी क्रम में अप्रैल '८९ के 'कादम्बिनी' में नेपाल संबंधी अनुसंधानात्मक लेख पढ़कर बहुत ही खुश हूं । इसके लिए हृदय से ही साधुवाद ।

**—वसन्त प्रकाश उपाध्याय**
**काठमांडौं**

## काल चिंतन

*अप्रैल अंक में प्रकाशित 'काल चिंतन' स्तंभ पर हमें अनेक पाठकों के चिंतनपूर्ण लंबे पत्र प्राप्त हुए हैं । स्थानाभाव के कारण उन्हें पूर्ण रूप से प्रकाशित करना संभव नहीं । प्रस्तुत है, एक लंबी प्रतिक्रिया का एक अंश :*

अप्रैल १९९१ के संपादकीय में आप लिखते हैं, 'अंधकार प्रकाश का सारतत्व है ।'

अंधकार का विस्तार देखना हो तो मन को देखो । मन में उठते भावों को देखो । कहां है मन ? किसने देखा है उसे ? कभी प्रकाश में प्रत्यक्ष दर्शन हुए हैं ? मन के ? सारा जीवन बीत जाता है मन के घोड़े दौड़ाते, कहां है मन, कैसा है मन, तुमने देखा है उसे ? मन ही तो इस विशाल विस्तृत विश्व को विजय कर सकता है । मन की सृष्टि ही तो बाह्य सृष्टि की पुष्टि करती है । फिर भी तुम कैसे कहोगे कि तुमने मन को देखा है ? नहीं कह सकते न !

**—डॉ. सरिता सूद**
**मंडी (हिमाचल प्रदेश)**

अप्रैल अंक में 'जहां ग्यारह रुपये में विवाह होता है' लेख में राम की चिरप्रचलित सगुण उपासना की लीक से हटकर निर्गुण रूप की उपासना करने वाले मध्यप्रदेश के छत्तीसगढ़ के रामनामी संप्रदाय (निराकार ब्रह्म के प्रतीक राम) तथा उसके संगठन और कार्यप्रणाली की तथ्यात्मक व ज्ञानवर्धक जानकारी दी गयी है जो कि अत्यंत उपयोगी और पठनीय है ।

**कु. अंजना त्रिपाठी**
**रायपुर (म.प्र.)**

## बौद्ध धर्म के प्रसार में

मई अंक में 'बौद्ध धर्म के प्रसार में ब्राह्मणों की भूमिका' शीर्षक लेख पढ़ा । लेखक का यह कथन सत्य है कि बौद्ध धर्म का प्रसार ब्राह्मण विद्वानों द्वारा किया गया है ।

प्राचीनकाल में ब्राह्मण एकमात्र ऐसा वर्ग था, जिसका शिक्षा, ज्ञान, धर्म, संस्कृति, पूजा तथा साहित्य पर एकाधिकार था । इस एकाधिकार का वर्चस्व न केवल हिंदू धर्म पर, प्रत्युत अन्य कर्मों पर भी था । परंतु इसका यह अर्थ नहीं निकलता कि ब्राह्मण अपना वर्गीय हित ही देखते थे । वे पूर्णतः उदार, सहिष्णु, विशाल हृदय और मानवतावादी थे । इसी

कारण उनकी जीवन के हर क्षेत्र में अमिट छाप है ।

चाहे बौद्ध धर्म के प्रचार में चाहे नास्तिक मत के प्रचार में सभी में ब्राह्मण विद्वानों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है । आज जिस भारतीय धर्म, दर्शन, चिंतन, संस्कृति, परंपरा आदि को देख रहे हैं, यह सभी ब्राह्मणों के द्वारा सुरक्षित, संरक्षित तथा संवर्धित की हुई है ।

—रमेशचंद
गुना

अप्रैल अंक में सोवियत संघ के प्रख्यात हिंदी विद् डॉ. श्री प्योतर वारान्निकोव से बातचीत पढ़कर काफी खुशी हुई और दुःख भी हुआ । खुशी इसलिए हुई एक ऐसे महान व्यक्ति (श्री वारान्निकोव) से मिलकर जिन्होंने विदेशी होकर हिंदी के लिए जीवन लगा दिया है । दुःख हुआ और शरम भी हुई अपने देश में अपनी भाषा की स्थिति को देखकर, भारत सरकार व भारतीयों द्वारा राष्ट्रभाषा हिंदी की उपेक्षा, अपमान और उसके प्रति घृणा को देखकर । श्री प्योतर वारान्निकोव का भारत व भारतवासी सदा ऋणी रहेगा । कम से कम अब हमें संभल जाना चाहिए और प्रेम, श्रद्धा व सम्मान से हिंदी के विकास के लिए खुद को समर्पण करना चाहिए । इसके लिए अंगरेजी मोह त्यागना होगा ।

—अशोक कुमार खेतान
गुवाहाटी (असम)

## फोटोग्राफर कृपया ध्यान दें

हमारे पास निम्नांकित व्यक्तियों की पारदर्शियां, जो उन्हें उनके दिये हुए पतों पर भेजी गयी थीं, लौट आयी हैं । यदि इसे वे अथवा उनके मित्र पढ़ें तो हमें सही पता सूचित करें ताकि पारदर्शियां पुनः लौटायी जा सकें :

**सर्वश्री टी.एन. प्रसाद, बंबई; राकेश लाम्बा, नयी दिल्ली; एच.के. झा, जयपुर, अशोक धवन, दिल्ली, सी.एन. राव, नयी दिल्ली, सुश्री स्नेहलता वर्मा, बंबई, दर्शन लाल, विकास वत्स, ए. के. सिन्हा, अतुल शर्मा, राजीव चावला, अविनाथ पसरीचा व रंजन गांधी आदि ।**

—संपादक

## मध्यप्रदेश में कितने शेर

**मध्यप्रदेश के वनों में ९५८ शेर और २०३६ तेंदुए हैं । आधिकारिक तौर पर बताया गया है कि नवीनतम गणना के अनुसार सबसे अधिक ९७ शेर, विश्व प्रसिद्ध कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में हैं । बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान में शेरों की संख्या ५९ और इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान में ३२ हैं । कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में ५४० बारासिंघे और ७२५ गौर बायसन हैं । जंगली भैंसे केवल बस्तर जिले में हैं । वहां इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान में सौ से भी अधिक भैंसे हैं, जबकि इसी जिले के पामेड तथा भैरमगढ़ अभयारण्यों में लगभग ७० जंगली भैंसे हैं । घड़ियाल और सोन चिड़िया भी राज्य के अभ्यारण्यों में पायी जाती है ।**

वर्ष ३१, अंक ८, जून, १९९१

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

## निबंध एवं लेख



## स्थायी स्तंभ

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

## प्रेम कहानियां



## सार-संक्षेप



## कविताएं



## संपादकीय परिवार

सह-संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, भगवती प्रसाद डोभाल उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह प्रूफ रीडर : प्रदीप कुमार। कला विभाग-प्रमुख : सुकुमार चटर्जी चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त। मूल्य : वार्षिक : ७५ रुपये; द्विवार्षिक : १४५ रुपये; विदेशों में; वायुसेवा से २९० रुपये वार्षिक समुद्री जहाज से : १३५ रुपये वार्षिक। पता : संपादक 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

—शांत है वह !

—उसने कहा जीवन, जगत को शांत रहना होगा; शांतिपाठ आयोजित किये, नहीं चाहता वह अशांति की हल्की लहर भी उसके भीतर उठे !

—दूसरा अशांत है ।

—अशांत है वह अपने प्राप्य से, व्यवस्था से, मन से, बुद्धि से, चेतना से । वह हमेशा तड़पता-सा दृष्टिगोचर होता है । क्या है उसके भीतर कि एक क्षण भी स्थिर नहीं रह सकता ?

□

—पहला शांत है, प्रस्तर प्रतिमा-सा अधिष्ठित । अर्थहीन है उसके लिए पुष्पहार कोई पहनाता है या 'बीट' से उसे नष्ट करने का यत्न करता है ।

—यह शांति जीवित की मृतक-सी अनुभूति है ! यह श्मशानी शांति रक्तहीन, उत्साहहीन है !

—दूसरा भागता-दौड़ता है यह अशांति उसकीअसंतुष्टिका द्योतक है ।

—अशांति में ही प्रगति के चरण-कमल समाहित हैं ।

- इसलिए वह अशांत है अपने आपसे ।
- वह अशांत है अपने परिवेश से
- वह अशांत है अपने वातावरण से
- वह अशांत है व्यवस्था से
- कर्महीनता से वह अशांत है
- घिसी-पिटी लकीरें कुरेद जाती हैं उसे

—अशांत वह सर्प-सा ऐंठता है

—अशांत वह खंजन-सा फुदकता है

—अशांत वह गिलहरी-सा बेचैन है

—शेर-सा घात लगाये है वह; वह न अजगर है, न हाथी है, न ऊंट है, न गाय है और न भेड़-बकरी है ।

—वह मनुष्य है !

—मनुष्य है ऐसा जो सदियों को अपनी मुट्ठी में पीस देना चाहता है ।

—मनुष्य है ऐसा जो पर्वतों की उच्चतम शिखाओं पर अपने पहले पैर रखकर अपने गरिमामय अस्तित्व का बोध विश्व को कराना चाहता है !

□

—सफलता की मूल चेतना है अशांति । अशांति से ही धरती फटती है, भीतर धड़कन होती है और एक अंकुर फूटता है । कालांतर में वही अंकुर विशाल वृक्ष बनकर शांत मनों को छाया देता है । पुष्पित होकर वह अपने होने का एहसास कराता है !

—आविष्कारक, विजेता, धावक सफलता के श्रेयी यदि शांत हो जाएं तो गति रुक जाएगी ।

—अशांत चेतना ने ही कारों और वायुयानों को जन्म दिया क्योंकि मनुष्य के पास सब-कुछ होते हुए भी पंख नहीं थे ।

—मनुष्य पंखहीन क्यों है, नियंता को चुनौती और मनुष्य के सामने नियंता की पराजय ।

□

—जीवन गतिमय एक ऐसी लक्ष्य, अलक्ष्य दौड़ है जो हलचल से गर्भ के भीतर आरंभ होती है और जीवन पर आकुल-व्याकुल छटपटाते हुए जब श्मशान में शांति लेती है तो उसकी जीवन की शाश्वतता के जयनिनाद उठने शुरू हो जाते हैं !

—जयनिनादों और अमरत्व के लिए ही तो वह भागता-दौड़ता रहा है !

—न जाने कितने नये मील के पत्थर उसने प्रस्थापित किये हैं कि समय को हवाओं के झोंके लील गये, वह हवा को लीलता हुआ कालजयी हुआ ।

— मनुष्य-जीवन का सत्य है : देह धर्म से छूटना और विदेही बनकर समय की शिलाओं में अपने अमरत्व की वीरगाथा को स्वयं अंकित कर देना ।

□

— जीवन या जीवन दृष्टि के लिए शरीर महत्त्वहीन है ।

—मनुष्य का दर्शन, उसकी अभिव्यक्ति, उसके पैरों के अमिट अंकन उसे सदैवता देते हैं ।
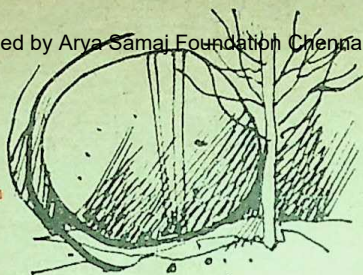
—युग आते-जाते हैं, प्रलय-महाप्रलय एक-दूसरे को निगलकर विनाश करने में कमी नहीं करते लेकिन जो व्यक्ति कभी स्वयं शांत न रहा हो उसे भला कौन शांति देकर अज्ञात के मुंह में धकेल सकता है !

—वह वंदनीय है, वह अलौकिक है, वह आराध्य है, अनंत प्राण-चेतना और प्राणवायु का समाहर्ता है ।

—अशांत व्यक्ति सामान्य धरातल से ऊंचा उठकर असामान्य बन जाता है और अपनी आभा से सदैव पथ-प्रदर्शक का कार्य करता है !

□

—मैं पहचानता हूं उसे । भोर की किरण से लेकर अंधकार के समाप्त होने तक या चंद्रमा के श्रीहीन की सीमा के बाद भी वह सोया नहीं । बिस्तर में सोने गया तो उसका मस्तिष्क उस सर्प-सा ऐंठता रहा जो अपने भक्षण को पचाने के लिए वृक्ष से लिपटकर अपनी ही लचीली देह को तोड़ता है ।

—मस्तिष्क अस्थिर हो तो लचीला शरीर कब स्थिर हो सकता है ! उसने मन और मस्तिष्क को स्थिर करने के लिए न शांति-पाठ किया और शांति-यज्ञ । उसे ज्ञात है, शांतिपाठ मृत-आत्मा के लिए किया जाता है । शांति-यज्ञ अशांति के अस्तित्व की स्वीकृति है । स्वीकार्य है जो, उसमें अपने अनुभवों के अमिट-चिह्न अंकित करता हुआ एक दिन बहुत सुबह वह देखता है कि भीड़ का सैलाब उसे घेरे है । बाहर निकला तो जयनाद से जनता ने उसे उठा लिया । अक्षरों, शब्दों और रंग-रेखाओं में उसने अपने गुणगान की विशेषणातीत संज्ञाएं पढ़ीं । आश्चर्य और अचरज ! क्या कर दिया उसने । यही न कि दिन-रात वह सोया नहीं, कभी चैन से बैठा नहीं, अब भी बेचैन है, संतुष्टि का एहसास न पहले था और न अब भी है, वह मात्र अपनी मुसकान से जन-मन के प्रांगण में निष्प्रभ घूम रहा है, उनका अभिवादन स्वीकार करता हुआ विनत है, अभिनंदन हैं वे जिन्होंने उसकी पहचान बनायी ।

—छोटे-से गांव में पैदा हुआ था वह, उद्वेलित नगरों और महानगरों को लांघता हुआ एक कमरे में बंद हो गया था । उसी कमरे में विशाल वातायन उभरा;

सूर्य-चंद्र उदित हुए; अपनी स्व-किरणों से उसने अंधकार का भक्षण किया । निरंतर लगा रहा, निरंतर चलता रहा, निरंतर भागता-दौड़ता बेचैन रहा !

—चलना मात्र सड़क या उद्यानों का श्रेय नहीं है !

—प्रकाश के लिए खुला वातायन नहीं चाहिए ।

—व्यक्ति त्रिनेत्र होता है । तीसरा नेत्र दो नेत्रों के मध्य स्थित है । जिस दिन तीसरा नेत्र उदित हो जाता है, विश्व और अंतरिक्ष, शक्ति तथा पराशक्ति सब कुछ उसके सामने इस तरह स्पष्ट हो जाते हैं जैसे किसी ने बीहड़ में 'लाल चादर' बिछाकर उसके स्वागत का आह्वान किया है ।

□

—मैं अपने पूरे मन और विचारों से विनत हूं ।

—मैं सोचता हूं, मैं वह क्यों नहीं बन सका ? क्या अब भी नहीं बन सकता !

—वह श्रेष्ठता का चरम प्रतिमान है मेरे लिए !

—इसलिए शांति को श्मशान में दफना देना चाहूंगा या किसी मृतक की देह समझकर अग्नि के हवाले करूंगा ।

—मेरी यात्रा चल रही थी, चलती रहेगी, सांस के अंतिम क्षणों तक न पराजय से भयभीत होऊंगा, न भर्त्सनाओं से हीन बनूंगा और न स्वरों के मिथ्या संसार का भागीदार रहूंगा ।

—मैं चलता रहूंगा अपने तीसरे नेत्र के खुल जाने तक ।

—तीसरा नेत्र खुलते ही अपार जन-समूह मेरी जयकार करेंगेमैं मानव से महा-मानव बनूंगा ।

□

—अपनी मां की उस छटपटाहट को जो गर्भ से बाहर आने तक उसने झेली है, मैं कृत-संकल्प हूं उसे वापस करने को ताकि वह सुख के अपार क्षणों में अपनी आंखों से आंसुओं के दो बूंद मोती में ढालकर गर्व से विश्व को दे सके, कह सके—मैं जननी हूं ।

जन्म : २० अगस्त सन १९४४
बंबई में

निधन : २१ मई सन १९९१
मद्रास में रात्रि १०.१० बजे

## समय के हस्ताक्षर

# इस देश में क्या हो रहा है ?

महात्मा बुद्ध के शांति संदेश को दुनिया भर में स्थापित करने वाला यह देश इतना हिंसक हो उठेगा, इसकी कल्पना नहीं थी । अहिंसा के नाम पर महात्मा गांधी हिंसा के शिकार हुए । विश्वास के तराजू को इंदिरा गांधी के बलिदान ने तोड़ दिया । दृढ़ संकल्प की हत्या संजय गांधी से हुई और संप्रदाय और दलगत जातिभेद ने राजीव गांधी की बलि उस समय ली जब यह पूरा देश किसी एक नयी सत्ता की तलाश में था । चुनाव से किसी को भी पराजित करना एक स्वस्थ परंपरा है । प्रजातंत्र की कल्पना इसी परंपरा के आधार पर हमने की थी लेकिन अपने प्रतिद्वंद्वी को अत्यंत बेरहम और बेढंग से मार देना प्रजातंत्र की समाप्ति और कायरता का प्रमाण है । २१ मई की रात्रि को दस बजकर दस मिनट पर जब अपनी मां की प्रस्तर प्रतिमा को पुष्पहार अर्पित करने राजीव जा रहे थे, तो किसको विश्वास था कि वे अपनी मां की गोद में ही समाहित हो जाएंगे । मृत्यु किसी की भी हो सकती है लेकिन चुनाव के बीच जिस तरह संप्रदायवाद जातिवाद और दंगे हो रहे हैं, वे इस बात के प्रमाण हैं कि यह देश एक गलत रास्ते पर जाने के लिए तैयार हो रहा है । इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि चुनाव के बाद चौदह माह रहनेवाली सरकार ने जो बीज बोयें हैं, वे तीन सौ वर्षों में अंगरेजी सत्ता भी नहीं बो सकी थी । तो क्या यह मान लिया जाए कि जिन्होंने वे बीज बोये हैं, वे सुरक्षित रह जाएंगे ।

सत्ता में मदांध कुछ व्यक्तियों ने प्रजातंत्र की सारी जड़े ही हिला दीं । आज न केवल हमारा देश बल्कि विश्व के सभी स्वाभिमानी देश बेबसी और परेशानी का अनुभव कर रहे हैं । जिस देश से सभी को आस्था और बल मिलता था, वही देश अब निरंतर हिंसा के गर्त में जा रहा है । यह अवसर नहीं है कि इस बात का लेखा-जोखा किया जाए कि इन चुनावों में कौन दल जीतेगा और कौन दल सत्तारूढ़ होगा । अब तो चिंता की ऐसी उग्र रेखा उभरी है, कि जो भी दल सत्ता में आएगा, उसका नेतृत्व यहां के अराजक तत्व कितने दिन करने देंगे । यह सिलसिला यदि चलता रहा तो इस देश का नागरिक अपनी संपूर्ण अनास्था को बर्दाश्त करता हुआ, ऐसी सत्ता की तलाश कर सकता है, जिसकी कल्पना मात्र से रोमांच हो उठता है ।

राजीव गांधी अत्यंत क्षमताशील और परिपक्व नेता के रूप में उभरे थे । वे नेतृत्व न भी करते तो भी उनका योगदान उतना ही मजबूत होता, जितना इंदिरा गांधी का १९७७ के बाद सत्ता में आने पर हुआ था । एक हंसमुख और विवेकशील व्यक्ति, जिसने राजनीति में आने की कभी कल्पना ही नहीं की थी, अकाल मृत्यु का भागीदार बना । इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है ।

हम श्रद्धानवत होकर एक असहाय व्यक्ति के नाते यही कामना कर सकते हैं कि ईश्वर किसी देश, धर्म और जाति में ऐसी घटना की पुनरावृत्ति न होने दे ।

# ज्योतिषियों को हटाइए

भारत आस्थावान देश है । और इस देश की आस्था को ज्योतिषियों ने निरंतर लूटने का काम किया है । आदमी के निजी जीवन से लेकर चुनाव और देश का भविष्य बताकर ये ज्योतिषी अपनी प्रसिद्धि की पीठ स्थापित करने में कभी नहीं कर रहे हैं । किसी भी ज्योतिषी ने इस बार यह भविष्यवाणी नहीं की, कि राजीव गांधी को मारकेश लगा है । इसके विपरीत एक स्वर से सबने यही कहा कि राजीव गांधी देश के अगले नेता के रूप में फिर उभरेंगे । कुछ ज्योतिषियों ने यदि उन्हें नेता नहीं स्वीकार किया तो यह भविष्यवाणी की कि उनका दल दूसरा शक्तिशाली राजनीतिक दल होगा । परिणाम सामने है । एक भी ज्योतिषी सही नहीं उतरा है । समाचार पत्रों के संपादकों का उत्तरदायित्व ऐसे समय में गंभीर सबक लेने का हो जाता है । हमारा सुझाव है कि सभी दैनिक और साप्ताहिक पत्रों में भविष्यवाणियां छापने का क्रम बंद कर दिया जाए । इस देश के ज्योतिषी अपने तथाकथित अधूरे ज्ञान को लेकर ग्रह और नक्षत्रों के साथ जो मनमाना खेल करते हैं, वह समाप्त हो और ये एक भिखारी की तरह चौराहे पर खड़े नजर आएं । इस कार्य की पहल हम स्वयं करेंगे । और 'कादम्बिनी' से ज्योतिषी संबंधी स्तंभ बंद करेंगे ।

ईश्वर अल्पायु में समूचे देश को रोता हुआ छोड़कर चले गये राजीव गांधी की आत्मा को शांति और चैन दे और सारी बेचैनी उन व्यक्तियों के हवाले हो, जो इस दुष्कर्म के जिम्मेदार हैं । ■

# राजीव गांधी के राजनीतिक जीवन के दुर्लभ क्षण
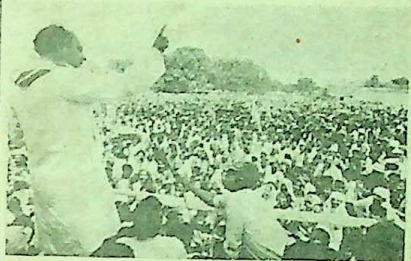
चुनाव सभावों में

अमेठी से नामांकन पत्र भरते हुए
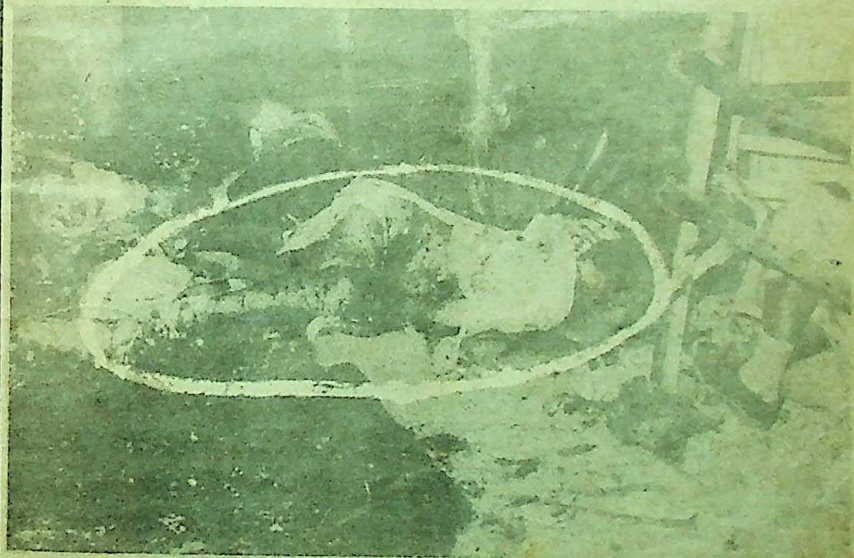
राजीव गांधी का क्षत-विक्षत शव    ईश्वर किसी को अंतिम रूप ऐसा न दे

# दशरथ की पुत्री, श्रीराम की बड़ी बहन : शांता

● कृष्ण कुमार शर्मा

एक चक्रवर्ती सम्राट की एक प्रमुख महारानी के गर्भ से एक बालिका का जन्म हुआ। अनंतर, उन्हीं महारानी ने एक ऐसे बालक को जन्म दिया, जिसके बारे में छोटे-से-छोटा बालक भी सुविज्ञ है। बालक जहां अपने माता-पिता की गोद में मुसकराया और बड़ा हुआ, वहीं उसकी बड़ी बहन को वह सब न मिल सका। उसे एक ऋषि की पत्नी बनना पड़ा।

चक्रवर्ती सम्राट की पुत्री, और विवाह एक ऋषि के साथ ! कौन थे ये चक्रवर्ती सम्राट ? और कौन थे वे बालक और बालिका ?

भागवत के नवम् स्कंध में आयी कथा के अनुसार शांता या शांति नामक यह बालिका महाराज दशरथ और कौशल्या की पुत्री थी—

**रोमपाद इतिख्यातस्तस्मै दशरथः सखा**
तथा
**शांतां स्वकन्यां प्रायच्छदृष्यश्रृंग उवाह ताम्**

भागवत के अनुसार शांता दशरथ की पुत्री थी, जिसे उन्होंने अपने मित्र अंग नरेश रोमपाद को गोद दे दिया था।

अर्थात, शांता दशरथ नंदिनी ही थीं, किंतु उन्होंने अपने सखा अंगाधिपति रोमपाद को उसे गोद दे दिया।

भवभूतिकृत 'उत्तर रामचरित' के प्रथमांक में भी इसी तथ्य को रेखांकित किया गया है—

**कन्यां दशरथो राजा शांतां नाम व्यजीजनत् ।**
**अपत्यकृतिकां राज्ञे लोमपादाय यां ददौ ॥**

'अपत्य' शब्द का अर्थ है 'संतान' तथा 'कृतक' (स्त्रीलिंग कृतिका) का अर्थ है 'कृत्रिम'। इससे यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि शांता अंगाधिपति लोमपाद की कृत्रिम (दत्तक) संतान (पुत्री) ही थीं।

शांता का विवाह ऋष्यश्रृंग ऋषि के साथ क्यों हुआ, इसकी भी एक व्यथा-कथा है।

महाभारत के अनुसार, शांता को गोद लेकर उसे अंगदेश ले जाने के पश्चात राजा रोमपाद उद्दंड हो गये और एक ब्राह्मण के साथ अनुचित

**सामान्यतः दशरथ के चार पुत्रों— श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न का ही उल्लेख मिलता है। किंतु 'उत्तर रामचरित' में भवभूति ने श्रीराम की एक बड़ी बहन शांता और उसके पति ऋष्यश्रृंग का भी उल्लेख किया है।**

व्यवहार कर बैठे । उनके व्यवहार से कुपित ब्राह्मण उसका राज्य छोड़कर अन्यत्र चले गये । इंद्र भी अपने भक्तों का अनादर देख क्रोधित हो गये और नहीं बरसे । फलतः अकाल पड़ गया ।

राजा रोमपाद व्यथित और लज्जित हुए । उन्होंने ब्राह्मणों से ही वर्षा होने का उपाय पूछा । उन्होंने कहा कि महातपस्वी ऋष्यश्रृंग यदि अंगदेश आ जाएं तो वर्षा हो जाएगी । मगर ऋष्यश्रृंग इतनी आसानी से नहीं आनेवाले थे । किसी तरह एक स्त्री उन्हें नाव में बैठाकर अंगदेश ले आयी ।

**ततो राजसाश्यपस्यैकपुत्रं प्रवेश्य योगेने विमुच्य नावम् ।**
**प्रलोभन्त्यो विविधैरुपायै राजग्मुरंगाधिपतिः समीपम् ।।**

ऋषि के राज्यप्रवेश के साथ ही आकाश मेघाच्छादित हो गया । वर्षा होने लगी । तत्पश्चात् अंगराज रोमपाद ने प्रसन्न होकर अपनी कन्या शांता को ऋष्यश्रृंग को अर्पित कर दिया—

**''स लोमपादः परिपूर्णकामः सुतो ददावृश्यश्रृंगाय शांताम्...**

और शांता उनके साथ रहने वन में चली गयी ।

महाभारत के 'वनपर्व' में ही ऋष्यश्रृंग की उत्पत्ति की रोचक कथा है । उसके अनुसार, ये ऋषि विभांडक के पुत्र थे ।

'उत्तररामचरित' के प्रथमांक में ऋष्यश्रृंग और शांता के बारे में निम्नोल्लेख मिलता है—

एक विदेशी अयोध्या आता है और राजधानी में उत्सव न होता देख कारण जानने के लिए प्रश्न करता है । इस पर 'नट' उत्तर देता है—

**वसिष्ठाधिष्ठिता देव्यो गता रामस्य मातरः ।**
**अरून्धतीं पुरस्कृत्य यज्ञे जामातुराश्रमम् ।।**

— अर्थात, उत्सव न होने का कारण यह है कि राम की माताएं वशिष्ठ की पत्नी अरुंधती के साथ अपने दामाद— ऋष्यश्रृंग— के आश्रम को गयी हैं ।

यह सुनकर विदेशी की प्रश्नाकुलता और बढ़ जाती है । वह पूछता है कि यह 'जामाता' कौन है ? 'नट' उत्तर देता है कि यह शांतापति हैं तथा उनके यज्ञ में भाग लेने ही ये लोग वहां गये हैं—**कन्यां दशरथो राजा...**
तथा—

**विभांडकसुतस्ताम् ऋष्यश्रृंगउपयेमे ।**
**तेन च साम्प्रतं द्वादशवार्षिकं सत्रमारब्धं ।**
**तदनुरोधात् कठोरगर्भामपि वधूं जानकीं विमुच्य गुरूजनस्तत्र गतः ।**

ऊपर के वर्णन से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि यद्यपि दशरथ ने अपनी दुहिता को राजा रोमपाद को गोद दे दिया था, तथापि भगवान राम की माताएं ऋष्यश्रृंग को अब भी अपना जामाता मानती है ।

आरंभ में संकेत किया गया है कि शांता श्रीराम की बड़ी बहन थीं । यह 'उत्तररामचरित' के प्रथमांक की इस कथा से और भी स्पष्ट होता है—

मुनि अष्टावक्र ऋषि ऋष्यश्रृंग के यज्ञ का समाचार लेकर लौटते हैं तो आते ही श्रीराम अपने बहनोई (आवुंत) के बारे में इस प्रकार पूछते हैं—

**''निर्विघ्नः सोमपीथी आवुंतो मे भगवान ऋष्यश्रृंगः आर्या च शांता ?''**

ऋष्यश्रृंग को 'भगवान' (अर्थात बड़ा) कहकर पुकारना शांता को उनकी बड़ी बहन

होना सिद्ध कर देता है ।

सीता भी कुशल पूछती हैं—**अवि कुसलं स जमातु अस्स ।**

इतना ही नहीं, उन्हें यह भी जिज्ञासा है कि ऋष्यश्रृंग को भी हमारी याद आती है कि नहीं—

**अह्मे वा सुमरेदि** ? अष्टावक्र तुरंत उत्तर देते हैं— "**अथ किम् ?**" (और क्या ?)

मुनि अष्टावक्र सीता के लिए उनकी ननद शांता का यह प्यारभरा संदेश भी राम को देते हैं— सीता को गर्भावस्था के दौरान जिस वस्तु की इच्छा हो, उसे उपलब्ध करायी जाए—

**गर्भदोग्दोऽस्या भवति सोऽवश्यमचिरात् सम्पादयितव्य ।**

और ऋष्यश्रृंग सलहज को यज्ञ में न बुलाने का कारण (अष्टावक्र के द्वारा संदेश भेजकर) समझाने के साथ ही संबंधोचित परिहास भी कर लेते हैं—

**वत्से ! कठोरगर्भेति नानीतासि ।**
**वत्सोऽपि रामभद्रस्त्व द्विनोदार्थमेव स्थापितः ।**
**तत्पुत्रपूर्णोत्संगामायुष्मतीं द्रक्ष्याम् ।**

—अर्थात, बच्ची, तू गर्भवती होने के कारण यहां नहीं लायी गयी है और फिर वत्स राम तो तेरे मनोरंजन के लिए अयोध्या में हैं ही । हम तो तुझे पुत्र से भरी गोदवाली देखेंगे ।

ऋष्यश्रृंग श्रीराम को 'वत्स' और सीता को 'वत्से' कहकर पुकारते हैं । स्पष्टतः है श्रीराम शांता के अनुज थे ।

शांता के इतिवृत्त के विवेचन के उपरांत प्रश्न यह उपस्थित होता है कि 'रामायण' के मुख्य चरित्र— श्रीराम— की बड़ी बहन के वर्णन की उसमें तथा अन्य राम कथा ग्रंथों (काव्यों) में उपेक्षा क्यों हुई ? इसका कारण कदाचित् यही रहा होगा कि गोद दिये जाने के उपरांत कवियों ने उन्हें दशरथ-नंदिनी मानना उचित नहीं समझा ।

यों ब्रज के लोकगीतों में शांता को श्रीराम की बड़ी बहन बताया गया है । कवि शांति स्वरूप 'कुसुम' ने 'दशरथ नंदिनी' शीर्षक से शांता के जीवन पर एक खंड काव्य लिखा है । उसकी भूमिका में शांता के संबंध में विस्तृत चर्चा करते हुए वे लिखते हैं— 'असमान वर्ण और आयु की स्त्री तथा पुरुष के मानसिक संघर्षों एवं तज्जन्य वेदना का शिकार शांता अवश्य हुई होगी । किंतु उसका लक्ष्य कायिक एवं भौतिक सुखों का आस्वादन न होकर देश-धर्म और आर्य-संस्कृति के मूल्यों के प्रति समर्पित रहा, यह तथ्य निर्विवाद है ।

### शांता-राम की बहन : लाओस की रामकथा में

लाओस की रामकथा में भी राम की बहन शांता का उल्लेख मिलता है । लाओस में रामकथा नृत्य, संगीत, चित्रकारी एवं स्थापत्य और साहित्य की धरोहर के रूप में ताड़-पत्रों पर सुरक्षित है ।

लाओस में साहित्यिक रामकथा दो रूपों में मिलती है : एक रूपांतर-फालक फालाम (प्रिय लक्ष्मण, प्रिय राम) व्येन्त्याने प्रदेश से प्राप्त हुआ है और दूसरा पोम्मचाक (ब्रह्मचक्र) जो उत्तरी लाओस की मेकांग घाटी से प्राप्त हुआ है ।

फालक फालाम की कथा के अनुसार दशरथ के पिता का नाम 'थओ तप्य रामेश्वर' है जो इंद्रप्रस्थ में रहते थे । किंतु दशरथ को गद्दी न मिलने पर वह वहां से चले गये और मेकोंग

(मां गंगा) नदी के बायें तट पर उन्होंने 'शांतापुरी-सप्तशीर्ष नाग' नामक नगर की स्थापना की । उस समय नदी के दक्षिण तीर पर सप्तशीर्ष नाग का अधिकार था ।

रावण दशरथ के भाई विलुव्ह का बेटा था जो इंद्रप्रस्थ नगर के सम्राट थे । जन्म के समय इस बालक के हाथ में धनुष तथा खड्ग थे, इसलिए इसका नाम रावणासुर रखा गया । इसने तीन वर्ष में ही समस्त विद्याओं का ज्ञान अर्जित कर लिया और अपने चाचा दशरथ से उनकी बेटी शांता की मांग की । उसकी वीरता को ध्यान में रखकर दशरथ ने अपनी बेटी उसे प्रदान कर दी, साथ ही देवताओं से प्रार्थना भी की जिससे रावण के विनाश के लिए उन्हें पुत्र प्रदान करें । भावी बुद्ध ही कुछ समय पश्चात राम और लक्ष्मण के रूप में दशरथ के घर पैदा हुए । राम और लक्ष्मण इंद्रप्रस्थ जाकर शांता को उठाकर ले आते हैं ।

इस ग्रंथ में दशरथ की केवल तीन संतानों का वर्णन है— राम, लक्ष्मण और शांता तथा रावण भी दस सिर, बीस हाथ वाला अजूबा न होकर सुंदर, सजीला विद्वान कुमार है । ग्रंथ में राम की अपेक्षा उसे प्रमुख स्थान मिला है ।

मलयेशिया में प्रचलित रामकथा में भी राम की बहन का उल्लेख मिलता है । वहां 'हिकायत मेरी राम' नामक ग्रंथ में रामकथा दी गयी है । उसके अनुसार दशरथ के चार पुत्र हैं— राम, लक्ष्मण, वर्दन एवं चित्रदन । दशरथ की एक पुत्री भी थी, जिसका नाम था— कीकवी ।

— ग्राम-दरकौली, पत्रालय— लुटसान, अलीगढ़ (उ.प्र.)

# केवल मेरा मन देखो

*केवल मेरा मन देखो, मेरी जकड़न मत देखो*
*शीतल हुई तुम्हीं से कहकर मेरी जलन-कहानी*
*तुम्हें जान पाया जिस दिन से मेरी तपन सिरानी*
*मुझे भला क्या मिला जिंदगी में जो तुमको दे दूं*
*यही समझ लो चुकी जा रही दुख की अवधि पुरानी*
*जंजीरों में जकड़ी मेरी गति को अकुलाने दो*
*तुम तो मेरा मन देखो मेरी जकड़न मत देखो*

*मुझे मूकता में घुटन दो आज तुम्हीं कुछ गाओ*

*ये सुदूर की थकी हवाएं सुनें जुड़ावन बोली*
*नभ के चुके शिशिर से बादल सुने कड़ी अनमोली*
*छलक उठे तो होठों की जलभरी उमंग न रोको*
*मेरी बौरी मति को पीने दो चैती मधुघोली*
*प्यास बुझाना नहीं, भीगना केवल चाह रहा मैं*
*तुम स्वर की उमड़ी रसवंती-सी गूंजो, छा जाओ*

*मुझे बुलाने दो जीवन भर तुम तो कभी न बोलो*
*रोम-रोम के द्वार खोल निकलें सब आर्त पुकारें*
*तुम तक पहुंच भले ही जायें मुग्धमना मनुहारें*
*केवल एक उचटती, डूबी नजर उन्हें दे देना,*
*जनम-जनम के धुंध इसी विधि तुमने सदा उबारे*
*मेरे सूखे अक्षर-अक्षर में चाहे बस जाओ*
*छवि में अटके मेरे प्राणों के दल कभी न खोलो ।*

**—रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'**

सभापति हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग १२, सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद-३

# 'कादम्बिनी' लोकप्रियता की ओर

## हम आपके पास आ रहे हैं

'कादम्बिनी' की बढ़ती हुई लोकप्रियता और प्रसार संख्या के लिए हम अपने सभी पाठकों का अभिनंदन करते हैं । इसके साथ ही हमने एक महत्त्वपूर्ण योजना तैयार की है । प्रयोग के रूप में फिलहाल हमने चार शहरों का चुनाव किया है । ये वे शहर हैं, जहां 'कादम्बिनी' की प्रचार और प्रसार संख्या काफी अच्छी है । विचार यह हुआ कि जहां अधिक पाठक हों, पहले हम वहां ही पहुंचें और पाठकों की और संख्या बढ़ाने में वहां की जनता का सहयोग लें । इन चार शहरों के बाद हम और शहरों का भी चुनाव करेंगे ।

चार शहरों के कार्यक्रम इस प्रकार हैं—

पटना : २१ और २२ जुलाई, १९९१ जयपुर : १८ और १९ अगस्त, १९९१
इंदौर : ४ और ५ अगस्त, १९९१ लखनऊ : १ और २ सितम्बर, १९९१

## एक नयी योजना



# पुरस्कार पाने के अवसर मत छोड़िए

*हम इन शहरों में किसी हाई स्कूल, कॉलेज या विश्वविद्यालय का चुनाव करेंगे । वहां पहले दिन १० बजे से प्रतियोगिता शुरू होगी । प्रतियोगिता यानी कोई भी व्यक्ति जिसकी आयु १६ से ३५ वर्ष के बीच है, प्रतियोगिता में भाग ले सकता है । प्रतियोगिता दो वर्गों में होगी । समय दो घंटे का दिया जाएगा । इस बीच प्रतियोगी या तो कोई कहानी लिख सकता है या किसी दिये हुए विषय पर लेख लिख सकता है । इसके लिए हम उसी स्थान पर प्रतियोगी से पर्चियां उठाने के लिए कहेंगे । उसमें यदि 'कहानी' शब्द निकला तो प्रतियोगी को कहानी लिखनी होगी । यदि उसमें किसी लेख का शीर्षक निकलता है तो लेख लिखना होगा । दूसरे दिन उस शहर के सबसे बड़े सभागार में समारोह आयोजित किया जाएगा, जिसमें प्रत्येक वर्ग में तीन पुरस्कार वितरित किये जाएंगे ।*

# प्रतियोगिता में भाग लीजिए : अपने शहर की जनता के सामने पुरस्कार प्राप्त कीजिए

| | |
|---|---|
| **प्रथम पुरस्कार :** | **२१०० रुपये** |
| **द्वितीय पुरस्कार :** | **१५०० रुपये** |
| **तृतीय पुरस्कार :** | **१००० रुपये** |

ये नकद पुरस्कार होंगे और साथ में एक प्रमाण-पत्र भी होगा । तीन पुरस्कार कहानी वर्ग के लिए होंगे और तीन पुरस्कार लेखन वर्ग के लिए।

हमारा प्रसार विभाग समय से काफी पहले स्थानीय समाचार पत्रों में विज्ञापन की व्यवस्था करेग और शहर में पोस्टर भी लगाये जाएंगे । पटना के बारे में पूरी सूचना अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी ।

*इस योजना को संक्षेप में इस तरह समझाया जा सकता है :—*

*२१ जुलाई को पटना के किसी उचित स्थान पर १० बजे से १२ बजे तक कहानी और लेखन प्रतियोगिता होगी । इसमें पटना शहर के अलावा आसपास के अन्य शहरों के लेखक-पाठक भी भाग ले सकते हैं । २२ जुलाई को शाम पटना के रवीन्द्र भवन में एक विशाल समारोह का आयोजन होगा । इसमें छह पुरस्कार वितरित किये जायेंगे ।*

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का पूरा नाम था भीमराव रामजी आंबेडकर । उनका पैतृक स्थान रत्नागिरी जिले के मंडणगढ़ तहसील में एक छोटा-सा ग्राम आंववडे है । भीमराव की माता का नाम था भीमाबाई और पिता का रामजी वल्द मालोजी सकपाल । महाराष्ट्र में अपनी वीरता, पराक्रम और ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध, प्रभावशाली, अस्पृश्य कहायी जानेवाली महार जाति में उन्होंने जन्म लिया था ।

भीमराव के अस्पृश्य होते हुए भी उनके प्रति स्नेह रखनेवाले कुछ अध्यापक भी थे । आंबेडकर उपनाम वाले एक ब्राह्मण शिक्षक ने उन्हें अपना कुल-नाम ही नहीं दिया, बल्कि दोपहर की छुट्टी में वे भीमराव को खाने के लिए रोटियां भी दिया करते थे । सन १९२७ के करीब जब वह आंबेडकर मास्टर उनसे मिलने आये, तो बाबासाहब उन्हें देखकर गद्‌गद्‌ हो गये, उनका गला भर आया । बाबासाहब ने बहुत दिनों तक मास्टर साहब का प्रेम से ओतप्रोत एक पत्र अपने पास संभाल कर रखा था ।

एल्फिंस्टन हाईस्कूल में पढ़ते समय ही बाबा साहब के पिता रामजी सूबेदार ने उनकी शादी भिकू वलंगर की पुत्री रमाबाई के साथ संपन्न की । विवाह के समय रमा की उम्र ९-१० साल की थी और वे सतरह साल के थे । उन दिनों मैट्रिक की परीक्षा बहुत जटिल मानी जाती थी । अस्पृश्य छात्रों में मैट्रिक की परीक्षा पास करनेवाले वे पहले विद्यार्थी थे । डबक की चाल के निवासियों ने उनका अभिनंदन करने के लिए एक समारोह का आयोजन किया था । इस सत्कार-समारोह में केलूसकर गुरुजी ने मराठी में स्वरचित भगवान बुद्ध के आत्मचरित्र की

## "अखंड भारत ही हम सबके लिए हितकर है !"

**—बाबा साहब आंबेडकर**

**डॉ. बाबा साहेब आंबेडकर मात्र दलितों के नेता नहीं थे । वे एक सुप्रसिद्ध शिक्षाविद, विधि-विशेषज्ञ और सार्वभौम मताधिकार तथा नारी मुक्ति में परम आस्था रखनेवाले महान देशभक्त थे । वे सामाजिक एवं आर्थिक समानता को राजनीतिक लोकतंत्र की भांति ही महत्त्वपूर्ण मानते थे ।**

**नेशनल बुक ट्रस्ट ने हाल ही में डॉ. आंबेडर की जीवनी का हिंदी एवं मराठी में प्रकाशन किया है । लेखक हैं, नागपुर स्थित आंबेडकर रिसर्च इंस्टीट्यूट के संस्थापक श्री वसंत मून । मूल मराठी में लिखित इस जीवनी के हिंदी अनुवादक हैं श्री प्रशांत पांडे । प्रस्तुत हैं, इसी पुस्तक से कुछ अंश ।**

पुस्तक उन्हें पुरस्कार के रूप में भेंट की । साथ ही उन्होंने यह आश्वासन दिया कि वे उसकी आगामी शिक्षा के लिए बड़ौदा नरेश श्रीमंत सयाजीराव गायकवाड़ से आर्थिक सहायता दिलवा देंगे । उन्होंने इसके बाद उनकी छात्रवृत्ति भी स्वीकृत कर दी ।

तीन जनवरी सन १९०८ के दिन भीमराव को एल्फिंस्टन कॉलेज में प्रवेश मिल गया उन दिनों एल्फिंस्टन कॉलेज में धनी और उच्च श्रेणी के विद्यार्थियों की संख्या बहुत अधिक रहती थी । बाबासाहब को अंगरेजी और फारसी पर अच्छी प्रवीणता प्राप्त थी । इसलिए फारसी के उप-आचार्य के. वी. इरानी और अंगरेजी के आचार्य प्रो. मुल्लर उन पर अधिक स्नेह रखते थे ।

बाबा साहब को कॉलेज में जो प्राप्तांक-पत्र मिला, उसे यदि देखा जाए तो यह स्पष्ट है कि उनकी कभी भी पहली श्रेणी के विद्यार्थियों में गणना संभव नहीं थी । किंतु केवल कॉलेज की शिक्षा ही इंसान की किस्मत का आइना नहीं है । यदि बी. ए. की स्नातक परीक्षा के प्राप्तांक-पत्र के आधार पर किसी ने यह भविष्यवाणी की होती कि भीमराव आंबेडकर नाम का विद्यार्थी जग-प्रसिद्ध विद्वान होगा, नाम कमाएगा तो उसे पागल करार दिया जाता । लेकिन जब व्यक्ति की बुद्धिमता और निपुणता को विस्तृत क्षेत्र मिलता है, तो वह किस प्रकार खिल उठती है, इसका अंदाजा बाबा साहब जीवन से दृष्टिगोचर होता है ।

### अपने पैरों पर खड़े हुए

रामजी सूबेदार की मृत्यु के बाद बाबासाहब का अब अपने पैरों पर खड़े रहना आवश्यक हो गया था । किंतु वे अब अपनी नौकरी पर बड़ौदा नहीं जाना चाहते थे । इन्हीं दिनों बड़ौदा के महाराज ने कुछ विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए अमरीका भिजवाने का निश्चय किया । उन्होंने महाराज के मुंबई स्थित राजवाड़े में उनसे भेंट की । महाराजा ने प्रार्थना-पत्र भेजने को कहा । उन्हें बड़ौदा जाकर शिक्षा उपमंत्री के कार्यालय में जाकर एक करारंनामे पर हस्ताक्षर करने पड़े । इस करारनामे के अनुसार उच्च-शिक्षा पूर्ण होते ही भीमराव को दस वर्ष

***''आज हम भले ही राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से टूट गये हों फिर भी परिस्थिति और समय अनुकूल होते ही हमारी एकता को कोई रोक न सकेगा । भले ही आज मुसलिम लीग हिंदुस्तान के टुकड़े करने के लिए आंदोलन चला रही है, फिर भी एक ऐसा भी दिन उदित होगा जब वह भी महसूस करेंगे कि अखंड भारत ही हम सबके लिए हितकर हैं ।''***

**यह विश्वासभरी घोषणा की थी ९ सितम्बर १९४७ को बाबा साहेब आंबेडकर ने । बाबा साहेब का यह विश्वास आज भी उतना ही प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण है, जितना वह चौवालिस वर्षों पूर्व था ।**

के लिए बड़ौदा राज्य की नौकरी में रहना आवश्यक था ।

इसके बाद उन्होंने तुरंत अमरीका जाने की तैयारी की । बाईस वर्ष के एक अस्पृश्य युवक को अमरीका—जैसे उन्नत देश में ऊंची पढ़ाई का अवसर मिले, यह एक अलभ्य उपलब्धि थी । अमरीका में अध्ययन करते समय जहां अन्य विद्यार्थी सिनेमा, शराब और सिगरेट पर पैसा बहाते थे, वहां बाबा साहब पुस्तकें खरीदने के सिवा अन्य कोई खर्चा नहीं करते थे । शराब और सिगरेट को उन्होंने कभी स्पर्श नहीं किया था । हां, केवल बचपन से लगी हुई चाय की आदत वहां अवश्य बढ़ गयी थी । उन्हीं दिनों उन्हें अपनी आंखों पर चश्मा लगवाना पड़ा था ।

अमरीका में उन्हें अपने जीवन में तत्काल परिवर्तन प्रतीत हुआ । यहां का जीवन उनके मन को नवीन अनुभवों से ओतप्रोत कर रहा था । उनके मन की सीमाएं विस्तृत हो रही थीं । उनकी ठोस भुजाएं, गठीलापन और हृष्ट-पुष्ट शरीर देखकर अमरीकी विद्यार्थी उन्हें आदरणीय मानने लगे थे । जब उन्हें पता लगा कि भीमराव भारतीय प्रणाली के व्यायाम करते हैं, तो वे उनसे व्यायाम भी सीखने लगे ।

इस प्रकार की गुरुता प्राप्त परिस्थिति में उनकी लेखनी भी प्रौढ़ व्यक्ति के समान उपदेशात्मक पत्र लिखने लगी । जमेदार नामक व्यक्ति को लिखे पत्र में उन्होंने शेक्सपीयर के नाटक की पंक्तियां उद्धृत करते हुए यह दर्शाया कि 'व्यक्ति के जीवन में अवसरों का समुद्र लहराता है । यदि वह उन अवसरों का सही उपयोग करे, तो उस व्यक्ति को गरिमा प्राप्त होती है ।' सामाजिक बुराइयों का रोग-निदान करते हुए वे कहते हैं, 'माता-पिता अपनी संतान के केवल जन्मदाता हैं, वे उसके भाग्यदाता नहीं हैं—इस दैवी-विधान को हमें तिलांजलि देनी होगी । हमें अपने मन में पक्की गांठ बांध लेनी चाहिए कि संतान का भविष्य माता-पिता के हाथ में है । बेटों के समान अपनी बेटियों को भी लिखाया-पढ़ाया जाए, तो हमारा विकास तीव्र गति से हो सकता है, यह निश्चित है ।' उनके इस पत्र में उनके स्वाभिमान, स्वावलंबन और आत्मोद्धार के लिए मची हलचल के अंकुर स्पष्ट दिखायी देते हैं ।

उन्हें जो छात्रवृत्ति मिलती थी, वह पर्याप्त न थी अतः उनके पास धन का अभाव था । इसलिए सैर-सपाटे पर जाना, सिनेमा देखना, इत्यादि बातों की ओर उनका मन कभी नहीं होता था । उन्हें अपने भोजन के लिए एक डॉलर और दस सेंट खर्च करने पड़ते थे । जब तक जोर की भूख न लगे तब तक वे खाने पर भी कुछ खर्च नहीं करते थे । वह अपनी छात्रवृत्ति की रकम में से कुछ रकम अपनी पत्नी को घर-खर्च चलाने के लिए भारत भी भेजते थे ।

उनके सहपाठियों का कहना है कि आंबेडकर ने अपने छात्र-जीवन का एक-एक क्षण अध्ययन में ही बिताया ।

● ● ●

सन १९१७ की बात है । मुंबई के सिडनहम कॉलेज में एक प्राध्यापक का स्थान रिक्त हुआ । आंबेडकर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी । अतः उन्होंने इस पद के लिए अपनी अर्जी भेजी । ग्यारह उम्मीदवार थे । प्राचार्य

अंस्टी की राय थी कि इनमें से, आर. एन. जोशी को नियुक्त किया जाए । किंतु जब उन्होंने इंगलैंड से प्रो. एडविन केनन की राय पूछी तो उन्होंने कहा कि 'विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए आंबेडकर अपने ज्ञान का सारा खजाना उनके सामने उड़ेल देंगे ।' अधिकारियों ने भी उनके आवेदन-पत्र पर यही टिप्पणी लिखी कि—'महार होते हुए उन्होंने जो ज्ञानार्जन किया है और यश पाया है उससे ही यह स्पष्ट है कि वे असाधारण गुणों के धनी हैं । उनका व्यवहार अत्यंत सभ्य तथा व्यक्तित्व आह्लादकारक है ।' और उन्हें नियुक्ति मिल गयी ।

डॉ. आंबेडकर अस्पृश्य हैं, यह पता चलते ही पहले तो विद्यार्थियों ने उनकी कक्षा में विशेष रुचि नहीं ली, किंतु जैसे-जैसे उनकी पढ़ाने की शैली के बारे में जाना तो वैसे-वैसे उनकी कक्षा में विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ने लगी । यहां तक कि अन्य कॉलेजों के विद्यार्थी भी उनकी अनुमति प्राप्त कर उनकी कक्षा में उनका व्याख्यान सुनने आने लगे ।

डॉ. आंबेडकर की दृष्टि में तत्कालीन शिक्षा-पद्धति उचित नहीं थी । मूल्य निर्धारण इस बात पर होना चाहिए कि विद्यार्थी कक्षा में क्या सीख रहा है । लिखित परीक्षा से मौखिक परीक्षा को अधिक महत्त्व देना चाहिए ।

### सिफारिश : घृणास्पद

एक परीक्षक के रूप में डॉ. आंबेडकर की निष्ठा महान थी । उन्हीं के शब्दों में एक प्रसंग—'एक बार एक अस्पृश्य विद्यार्थी के रिश्तेदार को यह पता चला कि मैं मुंबई विश्वविद्यालय की परीक्षा का परीक्षक हूं । वह व्यक्ति मेरे पास आकर अपने उस विद्यार्थी को पास करने के लिए अनुरोध करने लगा । उसे लगा कि वह विद्यार्थी भी अस्पृश्य है इसलिए मैं उसका आग्रह मानकर यह मदद अवश्य करूंगा । मगर मेरे लिए तो यह असंभव था । मैंने उसे साफ-साफ कह दिया कि माना कि यदि मैं चाहूं तो यह संभव है, परंतु मुझे यह शोभा नहीं देता । साथ ही इस तरह किसी के लिए सिफारिश करना मुझे घृणास्पद लगता है । मेरी तो यह धारणा है कि अस्पृश्य विद्यार्थी की ओर से ऐसा व्यवहार ही नहीं होना चाहिए कि जिससे अपनी बुद्धिमानी और योग्यता में अन्य विद्यार्थियों की अपेक्षा किसी भी प्रकार की कमी प्रगट हो । मैं तो यही चाहता हूं कि वह अन्य
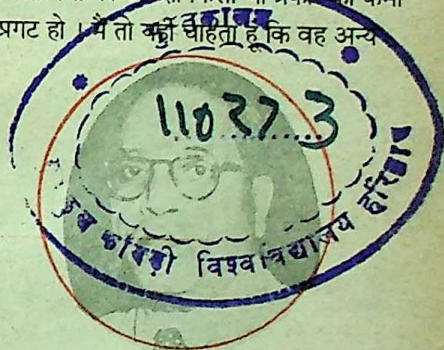


विद्यार्थियों की तुलना में एक आदर्श विद्यार्थी के रूप में ही अपना अस्तित्व स्थापित करे । मेरा यह जवाब सुनकर वह व्यक्ति चुपचाप लौट गया ।'

डॉ. आंबेडकर ने अपने माहवारी वेतन से बची रकम तथा अपने स्नेही नवल भथेना के दिए हुए कर्ज के रूप में ५००० रु. और कोल्हापुर नरेश से प्राप्त कुछ आर्थिक सहायता के बल पर लंदन जाने की तैयारी पूरी कर ली, और वे सन १९२० ई. के जुलाई महीने के अंतिम सप्ताह में लंदन पहुंचे ।

### लंदन में ज्ञान-साधना

सन १९२० में डॉ. आंबेडकर उच्च अध्ययन के लिए लंदन गये। उस समय उनका ध्यान लंदन संग्रहालय की ओर आकर्षित हुआ। इस संग्रहालय में संसार में सहज न मिल सकनेवाले ग्रंथों का अपार संग्रह है। इस महान संग्रहालय में डॉ. आंबेडकर सुबह आठ बजे से शाम आठ बजे तक बैठा करते थे। वे एक निजी तौर पर चलाये गये होटल में रहते थे। उस होटल की मालकिन जरा कठोर मिजाज की थी। वह उन्हें नाश्ते में सिर्फ एक प्याली चाय, एक पाव का टुकड़ा, और एक मछली का टुकड़ा खाने को देती थी। बस इतना ही खाकर डॉ. आंबेडकर ग्रंथागार के लिए रवाना हो जाते और सबसे पहले वहां पहुंच जाते। और बिना आराम किये वे लगातार किताबों में डूबे रहते। वे अपनी पढ़ाई में इतने तल्लीन रहते कि चौकीदार उन्हें याद दिलाता कि ग्रंथागार के बंद होने का समय हो चुका है। आंबेडकर थक अवश्य जाते थे। लेकिन वहां पर लिखे हुए कागजों के पुरजों से उनकी जेबें भरी होती थीं।

वे इस ग्रंथागार के अलावा इंडिया ऑफिस लायब्रेरी, लंदन युनिवर्सिटी लायब्रेरी और दूसरे प्रमुख ग्रंथालयों का भी लगातार उपयोग करते थे। जब शाम को वे वहां से निकलते थे, तो भूख के मारे उनका सिर चकराने लगता था। वे फिर किसी सस्ते होटल में जाकर कुछ खा-पीकर भूख को शांत करते। घर लौटने पर वे रात को भी भरपेट खाना खाते थे। और फिर सुबह तक अपनी पढ़ाई में लगे रहते थे। बाहर की दुनिया से उन्हें कोई सरोकार नहीं था। उन दिनों उनके कमरे में मुंबई निवासी अस्नोडकर रहा करते थे। वे जब भी उन्हें सोने के लिए आग्रह करते तो आंबेडकर का जवाब होता—"मेरे पास न खाने के लिए पैसा है, न सोने के लिए समय। मुझे तो बस अपनी पढ़ाई जल्द-से-जल्द खत्म करनी है।"

डॉ. आंबेडकर की ज्ञान-साधना इस प्रकार अखंड चलती रही।

### संविधान समिति में

९ सितंबर, १९४७ से संविधान समिति की बैठकें प्रारंभ हुई। मुसलिम लीग के नेताओं ने संविधान समिति का बहिष्कार किया। संविधान समिति के उद्देश्यों और ध्येय को स्पष्ट करनेवाला प्रस्ताव रखा गया। इस प्रस्ताव पर डॉ. जयकर ने एक उप-सूचना सुझायी। इस उपसूचना में कहा गया कि मुसलिम लीग और रियासतों के प्रतिनिधि सम्मिलित होने तक यह प्रस्ताव पारित न किया जाए। उन दिनों डॉ. जयकर भारत के महान कानून-विशेषज्ञ माने जाते थे। लेकिन वल्लभभाई पटेल, मसानी आदि कांग्रेसवालों ने खूब कड़ी आलोचना कर डॉ. जयकर को शांत कर दिया। इस समय संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने आंबेडकर से बोलने की विनती की।

अपने भाषण में उन्होंने कहा, "आज हम भले ही राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से टूट गये हों फिर भी परिस्थिति और समय अनुकूल होते ही हमारी एकता को कोई रोक नहीं सकेगा। भले ही आज मुसलिम लीग हिंदुस्तान के टुकड़े करने के लिए आंदोलन चला रही है, फिर भी एक ऐसा भी दिन उदित होगा जब वह भी महसूस करेंगे कि अखंड

भारत ही हम सबके लिए हितकर है ।''

अखिल भारतीय दलित विद्यार्थी फेडरेशन के विद्यार्थियों को भेजे गये उपदेशभरे संदेश में बाबासाहब ने लिखा है, ''दलित नवजवानों को जब कभी अवसर मिले तो वे यह सिद्ध करने का प्रयास करें कि वे बुद्धिमानी और योग्यता में किसी भी अन्य व्यक्ति की अपेक्षा रत्तीभर भी कम नहीं हैं । साथ ही, उन्हें सदा ही निजी स्वार्थ की ओर ध्यान देकर अपने समाज को स्वतंत्र, बलशाली और प्रतिष्ठित बनाने का प्रयत्न करना चाहिए ।''

● ● ●

सन १९५६ को दिल्ली में बाबा साहब की अध्यक्षता में कार्यकारिणी की बैठक हुई । इस सभा में तय किया गया कि एक दल की हुकूमत में प्रजातंत्र की रक्षा करने के लिए एक सशक्त विरोधी दल गठित किया जाए और उसे 'रिपब्लिक पार्टी ऑफ इंडिया' का नाम दिया जाए ।

आंबेडकर अपनी पत्नी और अपने निजी सचिव रतू के साथ नागपुर पहुंचे । उनके निवास की व्यवस्था सीतावर्डी के शाम होटल में की गयी थी । होटल के सामने की महार बस्ती के सभी नवजवान कार्यकर्ता गोडबोले के मार्गदर्शन में दीक्षा समारोह की तैयारियों में लगे थे । होटल के पार्श्व में ही बौद्ध जन समिति का कार्यालय था । उनके निवास-स्थान पर रात-दिन कर्नलबाग बस्ती के समता सैनिक दल के सैनिक गण उनकी प्राण रक्षा के लिए पहरा दे रहे थे ।

१३ अक्तूबर, १९५६ को संध्या समय उन्होंने दो प्रेस कांफ्रेंसें कीं । समाचारपत्रों के संवाददाताओं से उन्होंने कहा, 'मैंने गांधीजी को आश्वासन दिया था कि हिंदू धर्म को कम-से-कम हानि पहुंचानेवाला मार्ग अपनाऊंगा । बौद्ध धर्म भारतीय संस्कृति का ही अंग है ।' उन्होंने जवाब-सवाल में कहा, ''अस्पृश्य समाज इनसानियत पाने की कोशिश कर रहा है । सहूलियतें पाने के लिए अस्पृश्य बने रहना उचित नहीं है । बौद्ध धर्म विश्व धर्म है ।''

दूसरे दिन प्रातः बाबासाहब ने स्नान वगैरह समाप्त किया । फिर वे शुभ्र बंगाली कुरता और बढ़िया महीन धोती पहनकर, महास्थविर चंद्रमणी और भाईसाहब आंबेडकर के साथ

ठीक नौ बजे समारोह के स्थान पर पहुंचे । चित्रकार राम तिरपुडे ने मंच के सामने सांची के स्तूप का नमूना खड़ा किया था । सामने लगभग पांच लाख नर-नारियों का जनसमूह उपस्थित था । जय-जयकार समाप्त होने पर बाबा साहब ने पत्नी सहित खड़े होकर भिक्षु चंद्रमणी से त्रिसरण-पंचशील ग्रहण कर बौद्ध धर्म की दीक्षा ली ।

मालोजी की स्मृति को प्रथम अभिवादन करने के लिए संपूर्ण जनसमुदाय दो मिनट तक स्तब्ध खड़ा रहा । उसके बाद बुद्ध की मूर्ति को

शुभ्र सफेद कमलों का पुष्पहार पहनाकर बाबासाहब ने नतमस्तक हो तीन बार वंदन किया । उसके बाद उन्होंने मराठी भाषा में त्रिसरण-पंचशील को दुबारा ग्रहण किया और स्वयं तैयार की हुई बाइस प्रतिज्ञाएं लीं । लगभग दस बजे बाबा साहब के सम्मुख उपस्थित जनसमुदाय को खड़े होने का अनुरोध कर बाबासाहब ने २२ प्रतिज्ञाएं मराठी में स्वयं पढ़कर सारे दीक्षार्थियों से बुलवायी और उन्हें बौद्ध धर्म की दीक्षा दी । यह दीक्षा विधि लगभग ग्यारह बजे समाप्त हुई । श्री बली सिन्हा ने बाबा-साहब को बुद्ध की एक मूर्ति भेंट की । सारी बाईस प्रतिज्ञाएं पढ़ते समय बाबासाहब ने चश्मा नहीं लगाया था, इसके लिए अनेकों ने आश्चर्य व्यक्त किया । १५ तारीख को सुबह चौदह एकड़ के उस विशाल मैदान में बाबासाहब ने दो घंटे तक ऐतिहासिक, जोश से भरा भाषण दिया । चारों ओर इतनी शांति थी कि यदि जरा भी खटका हो तो सुनायी दे जाए ।

अपनी गंभीर, धीरताभरी आवाज में, उन्होंने बौद्ध धर्म की दीक्षा ग्रहण करने के कारणों का विवेचन किया । उन्होंने कहा, 'नागपुर विभाग में बसे हुए नाग लोग बौद्ध धर्म के कट्टर प्रसारक थे । मुझे अंधभक्ति नहीं चाहिए । जिन्हें बौद्ध धर्म में आना हो, वे सोच-समझकर आयें । जैसे इनसान का शरीर निरोगी होना चाहिए, उसी तरह उसका मन भी सुसंस्कृत होना चाहिए । व्यक्ति उस ऊंचाई तक पहुंच जाए कि उसे राजप्रासाद भी छोटा नजर आये । धर्म की गरीब व्यक्ति को आवश्यकता है !'

## ज्ञान-गंगा

***कालातिक्रमो हि प्रत्यग्रं पिबति ।***

**(यजर्वेदीप उव्वटभाष्य ३/२९)**

काल का अतिक्रमण अर्थात विलंब कार्य के ताजा रस को पी जाता है— नष्ट कर देता है ।

***छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति ।***

**(हितोपदेश १/२०४)**

संकट के समय अनर्थ बहुत बढ़ जाया करते हैं ।

***निरीहो नाऽश्नुते महत् ।***

**(महाभारत, वनपर्व ३२/४२)**

निश्चेष्ट एवं आलसी व्यक्ति किसी महान वस्तु को नहीं प्राप्त कर पाता ।

***अवस्था वस्तूनि प्रथयति च संकोचयति च ।***

**(भर्तृहरिनीतिशतक ४५)**

अवस्था अर्थात परिस्थिति वस्तुओं का महत्त्व बढ़ाती है और घटाती है ।

***प्रायः स्वं महिमानं क्षोभात् प्रतिपद्यते जन्तुः ।***

**(अभिज्ञानशाकुन्तल)**

प्रायः किसी कारण मन में क्षोभ होने से ही मनुष्य अपने महत्त्व को समझता है ।

**(प्रस्तुति : महर्षि कुमार पाण्डेय)**
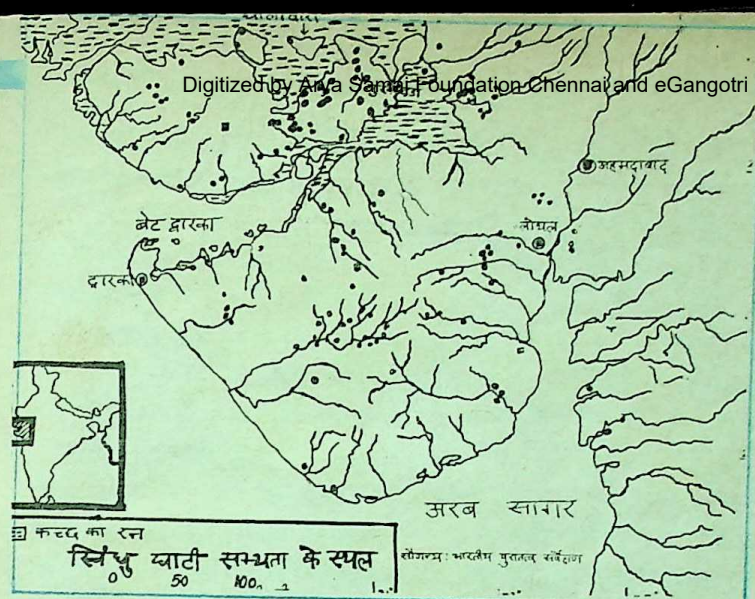
कच्छ के रन के बीच खादिर में बसे धौलावीरा गांव के समीप सिंधु घाटी सभ्यता का एक नया नगर धीरे-धीरे प्रकाश में आ रहा है । सुदृढ़ दीवारों से घिरा परकोटा, अभिजात, मध्य और निम्न वर्ग के लिए तीन भागों में विभक्त नगर, पानी एकत्र करने के लिए बनाया गया जलाशय, चौड़ी सड़कें, खुले क्षेत्र, भव्य आवास ढकी नालियां, जल निकासी की एक प्राचीन नगर प्रकट हो रहा है । भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के श्री जगतपति जोशी ने सन १९६७-६८ में इस स्थल की खोज की थी । कई कारणों से इस नगर की खुदाई का काम केवल पिछले वर्ष शुरू किया जा सका । लेकिन पिछले एक वर्ष के दौरान भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने प्रतिकूल मौसम एवं परिस्थितियों और नागरिक सुविधाओं की कमी

# सिंधु घाटी सभ्यता का नगर : धौलावीरा

● नवीन पंत

व्यवस्था, वाणिज्य-व्यवसाय में लगे लोग... ।

गुजरात के कच्छ जिले के भऊ तालुका में रन के लगभग मध्य में एक टीले, कोटडा के नीचे हजारों वर्षों से धरती के गर्भ में सुरक्षित के बावजूद नगर को विश्व के सामने लाने का जो कार्य किया है, वह स्तुत्य है । पुरातत्व विभाग के श्री रवींद्र सिंह विष्ट के नेतृत्व में दर्जनों कर्मचारी और चार सौ से अधिक श्रमिक

यत्नपूर्वक इस नगर को एक-एक परत करके बाहर निकाल रहे हैं ।

वर्तमान संकेतों के अनुसार धरती के गर्भ से निकल रहा यह नगर भारत में सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा नगर होगा । देश के विभाजन के परिणामस्वरूप हड़प्पा और मोहन जोदड़ो के पाकिस्तान में रह जाने से देश की जो अपूरणीय सांस्कृतिक क्षति हुई है, धौलावीरा उसकी पूर्ति करेगा ।

कच्छ का रन स्वयं प्रकृति का अद्भुत अजूबा है, जो २३ हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है । यह क्षेत्र नवंबर से मार्च तक सूखा रहता है । उन दिनों इसके ऊपर नमक की सफेद चादर पड़ी रहती है । वर्ष के शेष दिनों में यह समुद्री पानी से ढका रहता है । नमक के खारेपन की प्रचुरता के कारण इस क्षेत्र में घास भी पैदा नहीं होती । इससे यह सवाल पैदा होता है कि ऐसे क्षेत्र में हजारों वर्ष पहले कोई नगर क्यों बसाया गया होगा ?

### भूकंप ने धरती बंजर की

कच्छ भूकंप प्रभावित क्षेत्र है । सन १८१९ के भूकंप के कारण कच्छ का बहुत बड़ा क्षेत्र समुद्र की सतह में आ गया था और सिंधु नदी के प्रवाह के बदल जाने से कच्छ के कुछ क्षेत्र बंजर हो गये थे । गुजरात में सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों की साठ बस्तियों के चिह्न मिलते हैं । इनमें से लोथल, सुरकोटडा आदि में खुदाई की जा चुकी है । लोथल में गोदी के चिह्न भी मिले हैं । अतः यह अनुमान लगाया जा सकता है कि हजारों वर्ष पहले कच्छ वैसा नहीं होगा, जैसा आज है । संभव है तब कच्छ समुद्र से दो-तीन अथवा चारों ओर से घिरा टापू हो । उसका अधिकांश क्षेत्र उपजाऊ और संपन्न हो । अनुपजाऊ और दुर्गम क्षेत्रों में नगर कोई नहीं बसता ।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के प्रयत्नों से धौलावीरा में मिट्टी के नौ मीटर ऊंचे टीले से धीरे-धीरे प्रकट हो रहा है एक विशाल नियोजित नगर, जो सदियों तक उच्च स्तर की नागरिक सभ्यता का केंद्र रहा, लगभग एक हजार वर्ष तक जिसकी गिरी हुई इमारतों के मलबे पर नयी इमारतें बनती रहीं । इस नगर के बारे में एक उल्लेखनीय बात यह है कि यहां हड़प्पा संस्कृति के लोगों के आगमन से पहले भी कुछ लोग रहते थे । उन्हें ईंटों का निर्माण करना, चाक पर बरतन बनाना, तांबे की वस्तुएं बनाना और पत्थर को तराशना, चमकाना और साफ करना आता था । उन्होंने नगर की रक्षा करने के लिए साढ़े छह मीटर ऊंची ईंटों और पत्थरों की दीवार बनायी थी । वह इस दीवार को सफेद और गुलाबी मिट्टी से पोतते थे । बाद में हड़प्पा संस्कृति के लोगों ने इस नगर पर अधिकार करने के बाद इस दीवार को और मजबूत किया । प्रतीत होता है कि उनके आने के सौ-डेढ़ सौ वर्ष बाद भूकंप के कारण यह दीवार क्षतिग्रस्त हो गयी तो इसे और मजबूत किया गया ।

### अनुभवी हाथों का निर्माण

धौलावीरा पांच वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है । यह स्थान कच्छ के रन से लगभग सौ-सवा सौ मीटर ऊंचा है । खुदाई के बाद नगर का जो स्वरूप प्रकट होता है उससे पता लगता है कि इस नगर को बनानेवाले अनुभवी-कुशल कारीगर थे । उन्हें नगर की
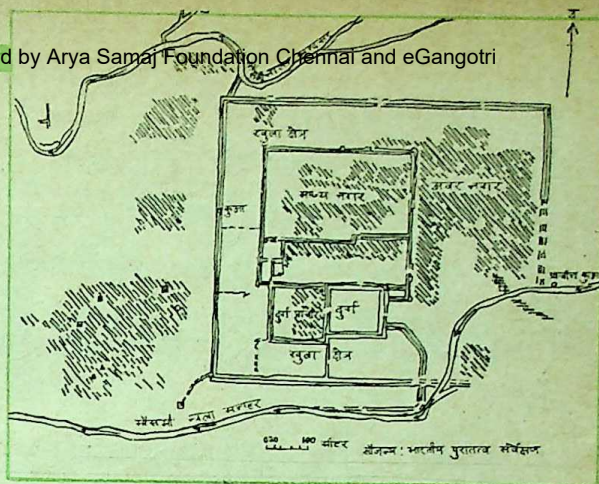
योजना बनाने के मूल सिद्धांतों की जानकारी थी । उन्हें खगोल विज्ञान की भी जानकारी थी । नगर का चुंबकीय अभिविन्यास मूल दिशा में छह डिग्री बनाये रखा गया है । नगर लगभग पौने पांच लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला था ।

नगर का निर्माण 'परम', 'मध्यम' और 'अवम' आधार पर किया गया था । नगर का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र दुर्ग 'परम' क्षेत्र में था । १४० मीटर लंबे और १२० मीटर चौड़े क्षेत्र में फैला दुर्ग १६ मीटर ऊंचा था । दुर्ग की सुरक्षा के लिए उसके चारों ओर दोहरी दीवार थी । दुर्ग के दो भाग थे । मुख्य दुर्ग और उससे जुड़े अन्य भवन । दुर्ग में राजा, सरदार और पुरोहित आदि रहते होंगे । अभिजात वर्ग के लिए इस प्रकार के दुर्ग यूनान में भी मिलते हैं । अनुमान है कि दुर्ग में चार द्वार थे । वर्तमान खुदाई से तीन द्वारों का पता लगा है । इनमें से दो द्वार अत्यंत भव्य और दर्शनीय है । द्वारों के समीप पालिश की हुई पत्थर की वर्गाकार शिलाएं भी मिली हैं, जिनमें खांचे बने हैं । स्तंभ के आकार की दो डमरू जैसी कृतियां भी मिली हैं । उनकी कटाई और सफाई देख दांतों तले अंगुली दबानी पड़ती है । प्रवेश-द्वार की सीढ़ियों के दोनों ओर कमरे बने हैं । सीढ़ियों के अंत में छज्जा है । हड़प्पा संस्कृति के अन्य नगरों में ऐसे द्वार नहीं मिलते ।

उत्तर की ओर पड़नेवाला प्रवेश-द्वार अत्यंत भव्य है । उसके सामने खुला पक्का मैदान है । इसे सदैव खुला और साफ रखा जाता था और इसका उपयोग धार्मिक एवं औपचारिक अवसरों पर किया जाता था । नगर और दुर्ग के निर्माण में अनेक प्रकार के स्थानीय पत्थरों और ईंटों का प्रयोग किया गया है ।

उत्तर प्रवेश-द्वार पर पत्थर, खनिजों, स्फटिक कणों से निर्मित नौ शब्दों या आकृतियों का एक लेख या वेदी मिली है । प्रत्येक शब्द या आकृति ३७ सेंमी. ऊंची और २७ सेंमी. चौड़ी है । यह क्या है ? विश्व का पहला साइन-बोर्ड अथवा धार्मिक अनुष्ठानों के लिए बनायी गयी वेदी अथवा ज्योतिष की गणना करनेवाले प्रतीक चिह्न । इस रहस्य का पता कुछ समय बाद ही लगेगा ।

दुर्ग के चारों ओर मजबूत दीवार है । यह

परिवार को इतिहास से जोड़ने के लिए

देश की एकता पर शहीद

## इन्दिरा गांधी की छठवीं पुण्यतिथि पर

विशेष रूप से प्रकाशित

# इन्दिरा गांधी: स्मृति-संदर्भ

सम्पादन — मृणाल पांडे

संसार की एक अग्रणी राजनेत्री के संबंध में भारत तथा विदेशों के पचास चुनींदा व्यक्तियों के स्फूर्तिप्रद संस्मरण। परिवार के सभी सदस्यों, नई पीढ़ी के युवा-युवतियों तथा भावी पीढ़ियों को वर्तमान इतिहास से जोड़ने के लिए अवश्य पठनीय। घरेलू पुस्तकालय में संग्रहणीय।

बड़े आकार के 232 पृष्ठ
16 पृष्ठ चित्र, बहुरंगी सॉफ्ट कवर

लागत मूल्य केवल रु. 75.00
(डाक व्यय अलग)

**इन्दिरा गांधी लिखित पुस्तकें:**

1 □ आनंद भवन की स्मृतियां रु. 10.00
2 □ बचपन के दिन (बच्चों के लिए सचित्र) रु. 10.00
3 □ EARLY YEARS (Same as No. 2) Rs. 10.00
4 □ REMEMBERED MOMENTS Rs. 12.50
5 □ WHAT I AM? Rs. 12.50

**न्यास के महत्वपूर्ण प्रकाशन**

6 □ TOWARDS NEW BEGINNINGS
Suitably edited and presented proceedings of Conference '87 attended by eminent scientists, thinkers and writers of the world.
345 pp. Rs. 225/-

7 □ THE MAKING OF AN EARTH CITIZEN — Proceedings of Conference '89 as above.
380 pp. Rs. 225/-

**Special offer for those buying books worth Rs. 100/-**

The large-size, 463 page book on art paper (till stocks last) for Rs. 90 only. Postage free.

8 □ **INDIRA GANDHI : Commemorative volume.**
With a small booklet for your children also, free :
**INDIRA GANDHI :** In her own words (with Photographs)

**नवीन आकर्षण : कमला नेहरू तथा जवाहरलाल का पत्र-व्यवहार**
सम्पादन—मृणाल पांडे (प्रकाशनाधीन)
कृपया अपनी प्रति बुक करायें

कूपन काटकर भेजें या अलग से लिखें।

**मेरा परिवार इन्हें अवश्य पढ़ना चाहेगा।**
□ कृपया ये पुस्तकें मुझे भेजें। मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट/भेज रहा हूँ।
इन्दिरा गांधी : स्मृति संदर्भ □
1 □ 2 □ 3 □ 4 □ 5 □ 6 □ 7 □ 8 □
(बाक्स को टिक करें)
नाम ____________
पता ____________

# इन्दिरा गांधी स्मारक न्यास

1, अकबर रोड, नई दिल्ली-110 011
फोन : 3011358, 3010094

दीवार रक्षा संबंधी आवश्यकता को देखते हुए सात, आठ और सोलह मीटर तक ऊंची है। दुर्ग की बाहरी दीवार पांच, छह मीटर से बारह-तेरह मीटर तक चौड़ी है। अनुमान है कि यह दीवार बाहरी शत्रुओं पर नजर रखने के साथ-साथ राजकीय अधिकारियों द्वारा मध्य नगर के लोगों को संबोधित करने के काम में लायी जाती होगी।

दुर्ग के बाहर लगभग ७० हजार वर्ग मीटर क्षेत्र में मध्य में नगर था। दुर्ग से आनेवाली एक दीवार इसे सुरक्षा प्रदान करती थी। नगर में काफी खुला क्षेत्र, चौड़ी सड़कें, नालियां और कुएं आदि थे। मध्य नगर में व्यापारी, व्यवसायी, सरकारी कर्मचारी और संपन्न जमींदार रहते होंगे।

मध्य नगर के बाहर 'अवम' क्षेत्र में सेवक वर्ग के लोगों के रहने की व्यवस्था थी। प्रतीत होता है कि यहां निम्न वर्ग के लोग रहते होंगे क्योंकि इनकी सुरक्षा के लिए किसी तरह के दीवार के चिह्न नहीं मिलते।

### व्यवस्था जल-संग्रह की

'मध्यम' नगर में जल-संग्रह के लिए ३७ मीटर लंबा तेरह मीटर चौड़ा एक जलाशय था। इस नगर के शिल्पियों ने वर्षा के जल की एक-एक बूंद को बचाकर उसका संग्रह करने की उत्कृष्ट व्यवस्था की थी। एक स्थान पर इस तरह के पानी को जलाशय में ले जानेवाली नाली पानी से ढकी है। तलछट रोकने की भी प्रभावी व्यवस्था की गयी है।

खुदाई स्थल से अनेक तरह की वस्तुएं मिली हैं। पत्थर के पालिश किये गये टुकड़े, पूरी अथवा टूटी मिट्टी की मुहरें, कांसे की मूर्ति, हड़प्पा लिपि अथवा संकेतों और जानवरों की आकृतियों वाली मुहरें, सोने, चांदी, तांबे, सीसे, शंख, मिट्टी और अन्य वस्तुओं के मनके, तांबे की वस्तुएं, आभूषण, पत्थर, मिट्टी और शंख की चूड़ियां, अंगूठियां, कड़े, बांट, गाड़ियों, पहियों, जानवरों और शिकारियों की मिट्टी की अनुकृतियां, त्रिभुजाकार पट्टिकाएं, अनेक तरह की पत्थर की चक्कियां, पिसनहारी, सान, मूसल, औखली और खरल आदि।

खुदाई स्थल से मिली इन वस्तुओं से कई बातें प्रमाणित होती हैं। धौलावीरा में रहनेवाले ये लोग मोहनजोदड़ो हड़प्पा संस्कृति के सदस्य थे। ये लोग दो-तीन सौ वर्षों में लगभग समूचे उत्तर भारत, गुजरात और मध्य आंध्र प्रदेश तक फैल गये। ये लोग खेती और सामान लाने-ले जाने के लिए जानवरों का इस्तेमाल करते थे। इन्हें चाक पर मिट्टी के बरतन बनाना, उन्हें पकाना और पहिए का इस्तेमाल करना आता था। ये लोग मिट्टी के बरतनों को अपनी पसंद के डिजाइनों और उकेर कर उन्हें सुंदर बनाते थे। धौलावीरा में काफी संख्या में तांबे के औजार मिले हैं। ये लोग अपने मृतकों को दफन करते थे। उनका संबंध अफरीका के तटवर्ती और मेसोपोटामिया के लोगों से भी था। मूल रूप से ये लोग नगर बनाकर रहते थे। नगर के प्रशासन की कुशल और उपयुक्त व्यवस्था थी। ऊर्जा, शक्ति और पहल से भरे ये लोग कौन थे और क्यों सर्वत्र जितनी तेजी से आये उतनी ही तेजी से विलुप्त हो गये। इतिहास की यह गुत्थी अभी नहीं सुलझी है। लेकिन अब वह दिन दूर नहीं है, जब इन लोगों की सभ्यता पर से रहस्य का परदा उठ सकेगा।

— २२ मैत्री एपार्टमेंटस,
ए/३ पश्चिम विहार, नयी दिल्ली

इस कथा-काव्य की कथा-वस्तु, नामानुरूप, मेवाड़ी सेना के हरावल से जुड़ी है । 'हरावल' सेना के अगले दस्ते को कहते हैं ।

मेवाड़ राज्य एवं महाराणा के प्रति समर्पित एवं निष्ठावान अनेक सामंत थे जिनमें से दो प्रमुख सामंत चूंड़ावत एवं शक्तावत थे । चूंडावत और शक्तावत दोनों ही न केवल मेवाड़ के राणा के सामंतों में से थे, वरन् राणा के समान ही सीसोदिया कुल के कुलवंत भी थे । में, इस विशेषाधिकार का आश्वासन शक्तावतों को दे दिया गया ।

सीसोदिया कुल की जो शाखा चूडावत कहलायी, लोकश्रुति में उसकी पृष्ठभूमि निम्नवत है :

राणा अमर सिंह से लगभग २०० वर्ष पूर्व राणा लाखा मेवाड़ के सिंहासन पर विराजमान थे । उनका राज्य-काल सन १३७३ से १३९८ ई. माना जाता है ।

# हरावल

● राजेन्द्र निगम

राजपूतों में यह परिपाटी थी कि यदि उनके वंश की किसी शाखा का कोई व्यक्ति अनुपम शौर्य एवं साहस के कारण विशिष्ट ख्याति अर्जित कर लेता था तो उसके वंशज तदंतर अपनी वंशावलि का नामकरण उसके नाम से कर लेते थे । चूडावत, शक्तावत, जैसे उदाहरण कृष्णावत, जगावत, कानावत, सांगावत, आदि अन्य अनेक हैं ।

मुख्य घटना का काल-खंड महाराणा प्रताप के पुत्र एवं उत्तराधिकारी राणा हमर सिंह के राज्य-काल—(१५९७-१६२०) का है । मेवाड़ी सेना के हरावल का नेतृत्व पर इस काल-बिंदु से लगभग २०० वर्ष से चूडावतों का परंपरागत, एकाधिकार रहा था । किंतु राणा अमर सिंह के राज्य काल में, परिस्थिति-विशेष

## आधुनिक भीष्म

राणा लाखा के ज्येष्ठ पुत्र का नाम चूंडा था । एक दिन राणा सभासदों के मध्य सिंहासन पर विराज रहे थे कि मारवाड़ के राव का दूत उनके समक्ष नारियल लेकर उपस्थित हुआ । (उन दिनों राजपूत राजघरानों में यह प्रथा थी कि कन्या-पक्ष वर-पक्ष को नारियल भेजकर दोनों कुलों के मध्य वैवाहिक संबंध का प्रस्ताव करता था ।)

नारियल देखकर विनोदी प्रकृति के राणा लाखा के मुख से सहज परिहास में ये शब्द निकल गये : निस्संदेह, यह नारियल कदाचित मुझ जैसे अधेड़ के लिए तो नहीं भेजा गया होगा । दूत ने निवेदन किया कि वह पाटवी कुंवर चूंडा से मारवाड़ की कुंवरि के विवाह का

प्रस्ताव लाया है । राणा लाखा ने दूत को साधुवाद देकर उसे चूंडा का तिलक करने का निर्देश दिया । चूंडा ने पिता की इस विनोदी उक्ति को अति गंभीरता से, भिन्न दृष्टिकोण से लिया और मारवाड़ का विवाह-प्रस्ताव यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि पिताश्री ने यदि विनोद में भी मारवाड़ की कुंवरि का नाम अपने से जोड़ लिया है तो भी उस विवाह का अधिकारी चूंडा स्वयं कैसे हो सकता है । चूंडा ने यहां तक कहा कि मारवाड़ की राज-कन्या अब उसकी दृष्टि में माता के समकक्ष हो चुकी हैं ।

राणा लाखा ने चूंडा को समझाने के प्राणपण से प्रयास किये किंतु वह अपनी असहमति पर अडिग रहा । राणा लाखा विचित्र धर्म-संकट में पड़ गये । स्थिति के निराकरण हेतु उन्होंने वरिष्ठ सभासदों से परामर्श किया जिनका मत था कि यदि चूंडा विवाह हेतु सहमत नहीं तो राणा स्वयं नारियल स्वीकार कर के विवाह करें अन्यथा मारवाड़ के राव इसे अपना अपमान मानकर अकारण युद्ध छेड़ सकते हैं । लाखा के लिए नारियल स्वयं स्वीकार करने का अर्थ था अपनी आयु से तिहाई से भी कम आयु की कन्या से विवाह करना, जिसके लिए उनकी अंतरात्मा सहमत नहीं थी । नारियल लौटाने का अर्थ था मारवाड़ के राजवंश का घोर अपमान और अवश्यंभावी युद्ध । दोनों में से कोई भी विकल्प चुनना राणा के लिए दुष्कर था । अंततः राजनीतिक विवेक की विजय हुई । चूंडा ने द्वापर के भीष्म के समान, (भिन्न परिस्थितियों में) युवराज पद और उत्तराधिकार त्याग दिया । लाखा को मारवाड़ी रानी से कई पुत्र हुए जिनमें
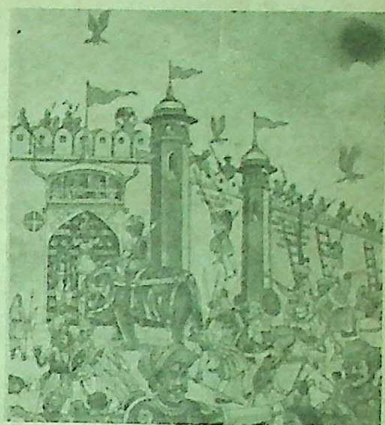
से ज्येष्ठ का नाम मुकुल था । चूंडा के स्थान पर राणा लाखा ने मुकुल को युवराज घोषित किया ।

### सफल संरक्षक

कालांतर में, जब राणा लाखा पवित्र तीर्थ बोधि-गया जाने को हुए तो उन्हें चिंता हुई कि चूंडा मुकुल के प्रति कैसा आचरण करेगा । उन्होंने चूंडा के मनोभावों की थाह लेने की दृष्टि से यह पूछा कि वह अल्पव्यस्क पांच-वर्षीय युवराज मुकुल के भरण-पोषण हेतु कितने ग्राम लगायें और उसका संरक्षक किसे बनाएं । इस पर चूंडा ने निर्लिप्त उत्तर दिया कि मुकुल भावी महाराणा है, अतः राणा प्रस्थान के पूर्व उसका राज्याभिषेक करके जाएं । चूंडा ने राणा लाखा को यह भी विश्वास दिलाया कि वह पांच वर्षीय, मुकुल का संरक्षक तो होगा ही साथ ही नये राणा का प्रथम निष्ठावान संबल एवं सामंत भी

होगा । प्रतिदान में चूंडा ने मात्र यह सम्मान मांगा कि राज सभा में राणा के उपरांत चूंडा का मुजरा (सम्मान) हो । राणा लाखा ने स्नेहाभिभूत होकर चूंडा को निम्न विशेषाधिकार स्वयं दिये :

१. किसी भी राजकीय अभिलेख पर राणा के हस्ताक्षर पर चूंडा के भाले का मुद्रण (जो कालांतर में चूंडा के वंशजों की जागीर सलूंबर के नाम पर सलूंबर का भाला कहलाया ।)

२. मेवाड़ी सेना के हरावल (अग्रभाग) का वंशानुगत नेतृत्व तथा इसके अनुरूप राणा के दाहिने बैठने का सम्मान ।

राणा लाखा ने त्याग-मूर्ति ज्येष्ठ पुत्र के परामर्श के अनुसार सहर्ष मुकुल का राज्याभिषेक किया और उससे विदा लेकर गया की ओर प्रस्थान किया । इस प्रकार पांच-वर्ष का अल्पव्यस्क राणा चूंडा के संरक्षण में राणा मुकुल के नाम से सिंहासनासीन हुआ ।

चूंडा और उनके वंशजों ने अनेकानेक अवसरों पर भीष्म की भांति मेवाड़ी सिंहासन की सेवा की और मेवाड़ के राणा के एकनिष्ठ सहायक एवं सेवक सिद्ध हुए । पीढ़ी दर पीढ़ी चूंडा के वंशज । (जो चूंडावत नाम से विख्यात हुए) मेवाड़ी सेना के हरावल के पारंपरिक नेता रहे ।

### वंशानुगत निष्ठा

चूंडा ने स्वयं अपने जीवन-काल में राणा मुकुल के मामा राव रणमल के कुचक्र से मेवाड़ के सिंहासन और राणा को बचाया । आगे भी अनेक अवसरों पर चूंडा की भांति उसके वंशजों ने भी सिंहासन तथा राणा के प्रति अनुकरणीय सेवाभाव एवं निष्ठा का प्रदर्शन किया । उदाहरण के लिए, राणा उदयसिंह ने मान्य परंपरा के विरुद्ध ज्येष्ठ पुत्र प्रताप को उत्तराधिकार से वंचित करते हुए अपनी चहेती रानी के पुत्र जगमाल को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया और उनके देहांत पर जगमाल राणा के सिंहासन पर विराज गया । इस पर समकालीन चूंडावत सामंत ने प्रताप को मेवाड़ के गौरव के अनुरूप मानते हुए जगमाल को सिंहासन से उतार दिया और प्रताप को मेवाड़ के राणा के रूप में प्रतिष्ठित किया । स्वयं राणा अमर सिंह को सिंहासनारोहण के शीघ्र बाद मुगलों के आक्रमण का विरोध करने हेतु प्रेरित करनेवाले चूंडावत ही थे । मुगलों का प्रतिरोध करने को अनिच्छुक राणा अमरसिंह को चूडावत सामंत ने सिंहासन से उठाकर बलपूर्वक अश्वारूढ़ किया और उन्हें प्रत्याक्रमण करने हेतु विवश भी, जिसमें भाग्यवश अमर सिंह सफल भी हुए ।

### एकनिष्ट सेवक : शक्तावत

शक्तावतों का इतिहास चूंडावतों की तुलना में समय की दृष्टि से अति कनिष्ठ है, किंतु शौर्य और कार्यकलाप की दृष्टि से नहीं । राणा प्रताप का सगा छोटा भाई शक्ति सिंह (शक्ता) उनसे रुष्ट होकर अकबर के दरबार में चला गया था और वहीं पांच-हजारी मनसबदार बन बैठा था । किंतु हल्दी-घाटी के युद्ध में जब अतीव घायल राणा प्रताप को लेकर उनका स्वामिभक्ति घोड़ा

*जिस क्षण चूंडावत सामंत का कटा हुआ सिर गढ़ की ओर उड़ा जा रहा था उसी समय शक्तावतों का दूसरा प्रयास सफल हुआ और दुर्ग-द्वार टूट गया सिर के गढ़ में पहुंचने के साथ-साथ शक्तावत भी गढ़ में प्रवेश कर गये । अतः, यह प्रश्न कि ऊंटाला में चूंडावत पहले घुसे या शक्तावत अनिर्णीत रह गया ।*

चेतक रणभूमि से भाग रहा था उस समय प्रताप की प्राण-रक्षा शक्ता ने ही की थी, भागते हुए चेतक के पीछे मुगल सेना के एक खुरासानी और एक मुल्तानी योद्धा ने अपने-अपने घोड़े चेतक के पीछे डाल दिये । शक्ति सिंह ने पूरी परिस्थिति को आंककर पीछा करनेवालों का पीछा किया और दोनों को एक-एक करके मौत के घाट उतार दिया । शक्ता के इस कृत्य के अभाव में प्रताप की प्राण-रक्षा कदापि न हो सकती थी । बाद में, भेद खुलने पर शक्ति सिंह को मुगल सेवा से मुक्त कर दिया, फलतः, शक्ति सिंह मेवाड़ वापस लौट आये और राणा प्रताप के एकनिष्ट सेवक एवं सामंत बनकर रहने लगे । उन्हीं के वंशज शक्तावत नाम से विख्यात हुए ।

शक्तावतों ने भी अनेक बार मेवाड़ की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए प्राणों की बाजी लगा दी । एक उदाहरण ही यथेष्ट होगा । राणा अमर सिंह के राज्यकाल में अकबर के एक सेनानी मिर्जा शाहरुख ने दल-बल सहित मेवाड़ की आरक्षित राजधानी उदयपुर पर अभियान किया । उस समय राणा मेवाड़ से बाहर थे । यद्यपि सभी सामंतों को आपदा-संदेश भेजे गये किंतु उनके आने से पूर्व ही शक्तावतों ने अपने अपेक्षाकृत अल्प सैन्य-बल से मिर्जा शाहरुख को अरावली की घाटियों में परास्त करके खदेड़ दिया । अगली घटना के बारे में राणा एवं बलवंत ही जानते थे ।

### स्वाभिमान का पुरस्कार

राणा की पितामही ने इस कठिन समय में मेवाड़ की राजधानी की रक्षा हेतु प्राणों की बाजी लगा देने के लिए शक्तावत बलवंत सिंह से आग्रह किया कि वह इस साहसपूर्ण कृतित्व के बदले में अपना अभीष्ट पुरस्कार स्वयं इंगित करे । अनवरत आग्रह पर स्वाभिमानी शक्तावत ने पुरस्कार स्वरूप मेवाड़ी सेना के हरावल का नेतृत्व और उससे जुड़ा हुआ राणा के दाहिने हाथ का सम्मान मांगा । (यहां उल्लेखनीय है कि जब हल्दीघाटी के भीषण युद्ध में राणा प्रताप गंभीर रूप से घायल हो गये थे । तो उनके एक अन्य निष्ठावान सामंत सादड़ी के झाला ने राणा के घोड़े चेतक से उनका छत्र एवं पताका बलपूर्वक उतारकर अपने घोड़े पर लगा लिये थे ताकि मुगल सेना का ध्यान प्रताप की ओर से हट जाए । सादड़ी के झाला की यह रणनीति सफल हुई ।)शत्रु ने झाला को ही प्रताप समझा । फलतः झाला चारों ओर से घिरकर मर्माहत हुआ और वीर-गति को प्राप्त हुआ । राणा प्रताप रण-क्षेत्र से सुरक्षित बच निकले । झाला के बलिदान के अभाव में यह कदाचित

संभव न होता । सादड़ी के झाला के प्रति सम्मान एवं आदर व्यक्त करते हुए राणा प्रताप ने उसके वंशजों को मेवाड़ के राणा के दाहिने आसन ग्रहण करने का वह सम्मान प्रदान किया जो पारंपरिक रूप से हरावल के नेता अर्थात चूंडावत सामंत वंशानुगत रूप से प्राप्त रहा था । संभवतः, सादड़ी के झाला के अप्रतिम बलिदान के कारण चूंडावतों ने अपने पारंपरिक सम्मान के विखंडन का कोई विरोध नहीं किया । फलतः, सम्मान-क्रम (प्रोटोकाल) इस प्रकार संशोधित हुआ कि सादड़ी का झाला जब भी सभा में उपस्थित होगा तो राणा के ठीक दाहिने आसन पाएगा । उसकी अनुपस्थिति में ही हरावल के नेता को राणा के दक्षिण में स्थान मिलेगा ।

### रोमांचक विवाद

पूर्वगामी तथ्यों एवं घटनाक्रम से इसका सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि राणा अमर सिंह के राज्यकाल में हरावल को लेकर चूंडावतों और शक्तावतों में एक रोचक एवं रोमांचक विवाद छिड़ गया । हरावल के नये और पुराने दावेदारों ने इस विवाद का अंत एक वंशघाती निर्णायक संघर्ष द्वारा करना चाहा और एक-दूसरे को मरने-मारने पर उतारू हो गये । राणा अमरसिंह अपने दोनों शूर कुलबंधुओं के इस रवैये से स्वभावतः क्षुब्ध और चिंतित हो उठे । अतः उन्होंने हस्तक्षेप किया और दोनों को पारस्परिक संघर्ष से विरत करने की असफल चेष्टा की । किंतु चूंडावत और शक्तावत इस विवाद को किसी भी भांति निपटाने के अपने निश्चय पर अडिग रहे । दोनों को अपने दुराग्रहपूर्ण हठ से विरत कर पाने की असंभावना को देखते हुए राणा अमरसिंह ने उनके उद्धत शौर्य का सदुपयोग करने हेतु रणनीति अपनायी । राणा ने दोनों के समक्ष यह शर्त रखी कि मुगलों द्वारा अधिकृत ऊंटाला नामक दुर्ग में जो सामंत पहले प्रवेश कर जाएगा उसे हरावल का नेतृत्व निर्विवाद रूप से प्रदत्त होगा और उसे ही, सादड़ी के झाला की अनुपस्थिति में सभा में राणा के दाहिने बैठने का गौरव भी मिलेगा । दोनों कुलबंधु इस स्पर्धा के लिए सहमत हो गये और तब अभिनीत हुआ दोनों दलों के द्वारा प्रदर्शित अप्रतिम शौर्य एवं बलिदान का वह नाटक जो इस कथा काव्य का मर्म है ।

### विवाद की उत्पत्ति

हरावल-विषयक विवाद का आरंभ अति रोचक परिस्थिति में होता है । शक्तावत बलवंत सिंह (बल्लू) अपने एक अनुज का विवाह ईडरपति की भतीजी से करने हेतु बारात लेकर ईडर आया हुआ था । बारात में स्वयं राणा अमर सिंह और उनके अनेक सामंत भी आये थे । इनमें से चूंडावत, शक्तावत, सांगावत, जगावत, आदि तो राणा के ही समान सीसोदिया थे और शेष सामंतों में बेदला का चौहान, बदनोर का राठौर बिलवाड़ा का झाला और बिजौली का परमार आदि थे । संयोगवश सादड़ी का झाला अनुपस्थित था ।

अर्ध रात्रि का समय था । द्वार पूजन-एवं भोज आदि से निवृत्त हो बाराती जनवास में विराजमान थे । वर भांवरों हेतु ससुराल जा चुका था । राणा अमर सिंह एक कक्ष में अपने सामंतों से किसी गूढ़ मंत्रणा में निमग्न थे । शक्तावत बलवंत सिंह किन्हीं कारणों से अन्यत्र

व्यस्त था । सादड़ी के झाला की अनुपस्थिति में सम्मान-क्रम के अनुरूप चूंडावत राणा के दाहिने विराजमान था । इसी मध्य बलवंत मंत्रणा-कक्ष में आ पहुंचा । राणा ने उसे भी आसन ग्रहण करने का अनुरोध किया । किंतु हरावल के नये दावेदार के रूप में राणा के दाहिने बैठने का अधिकार अपना मानते हुए बलवंत का मुख अदम्य रोष से तमतमा उठा । तथापि, स्वयं को संयत करके उसने राणा से प्रश्न किया—"राणा स्वयं बताएं कि मैं कहां बैठूं ।" राणा के विवेक ने इस लघु प्रश्न में विवाद की आशंका पढ़ ली और बलवंत को अधीर न होने का परामर्श दिया । उन्होंने उसे समझाया कि वह युद्ध में अगले अवसर की प्रतीक्षा करे जब उसे हरावल के नेतृत्व का गौरव प्राप्त हो ।

राणा का इतना कहना था कि चूंडावत सामंत जो हरावल के नेतृत्व और तदनुरूप राणा के दाहिने आसन पर अपना पारंपरिक अधिकार समझता था, क्रोध से हुंकार उठा । उसने न केवल शक्तावत के दावे को चुनौती दे डाली वरन राणा की उस सक्षमता को भी जिसके अंतर्गत उन्होंने हरावल के हस्तांतरण का आश्वासन शक्तावत को दिया था । चूंडावत ने अपने पूर्वज चूंडा के राज्य त्याग का गर्व-पूर्वक उल्लेख करते हुए कहा कि चूंडा के आशीर्वाद-स्वरूप ही राणा मुकूल के वंशज, (जिसमें स्वयं राणा अमरसिंह भी थे) मेवाड़ के राज्य-सिंहासन को भोग रहे थे । उसने राणा के प्रति अपने पूर्वजों और स्वयं अपनी निष्ठा एवं सेवा के अनेक उदाहरणों की याद दिलाये जिनका उल्लेख प्रारंभ में किया जा चुका है ।

राजेन्द्र निगम

## विवाद हल का प्रयास

जैसा ऊपर कहा जा चुका है कि दोनों दावेदारों के मध्य जब विवाद उग्र हो उठा तो राणा ने उसके वंशघाती समाधान के स्थान पर स्पर्धापरक समाधान-स्वरूप ऊंटाला के दुर्ग में प्रथम प्रवेश करने की शर्त रखी, जिसके आधार पर इस विवाद का हल किया जाना था ।

जैसा स्वाभाविक था, नये दावेदार की अधीरता से ग्रस्त शक्तावत अपने दल-बल सहित अविलंब ऊंटाला की ओर कूच कर गये । वह ऐसा करने की स्थिति में भी थे क्योंकि बारात के साथ उनकी लगभग ५००० की सबल सेना भी ईडर आयी थी । किंतु, चूंडावत को अपनी जागीर सलूंबर जाकर पहले सैन्य-संग्रह करना पड़ा जिसके उपरांत ही वह ऊंटाला की ओर प्रस्थान कर सका ।

उस युग में दुर्ग में प्रवेश की तीन युक्तियां व्यवहार में प्रचलित थीं । प्रथम, दुर्ग-द्वार को अथवा उसके किसी भाग को तोप से उड़ाकर, द्वितीय हाथी हूलकर द्वार का भंजन करके, तृतीय कमंदों सीढ़ियों और रस्सियों की सहायता से दुर्ग की दीवालों को लांघकर ।

राजपूतों ने इस युग तक भी तोपखाने की युद्ध-विद्या को अंगीकार नहीं किया था । अतः, शक्तावतों ने ऊंटाला में प्रवेश का पारंपरिक विकल्प यह अपनाया कि दुर्ग के फाटक को हाथी हूलकर तोड़ दिया जाए । इस हेतु वे तीन

अनुभवी प्रशिक्षित गजराज भी साथ ले आये । जब उनके महावतों ने द्वार-भंजन हेतु अपने हाथियों के सिर पर ढाल का शिरस्त्राण बांधकर फाटक पर हूला तो द्वार पर लगे हुए पैने-पैने शूल ढालों को छेदकर हाथियों के सिर में घुस गये । फलतः वे हाथी दो-तीन बार टक्कर मार कर इतने घायल हुए कि अपना मनोबल खो बैठे । शूलों को देखकर वे इतने संत्रस्त हो गये कि दोबारा टक्कर मारने को उद्‌धत नहीं हुए । शक्तावत अपने अभियान की असफलता के प्रति सशंकित खड़े देखते रह गये । इतने में चूंडावत भी सलूंबर में सैन्य-संग्रह करके अपने कुल-बंधुओं सागावतों व जगावतों सहित ऊंटाला आ पहुंचे ।

**अनिर्णीत प्रश्न**

उस समय मुगलों की सीमा-रक्षक सेना और शक्तावतों के बीच संघर्ष छिड़ा हुआ था । अब यह संघर्ष त्रिकोणी हो गया जिसमें चूंडावतों की आधी सेना सम्मिलित हो गयी । शेष आधी सेना ऊंटाला गढ़ तक जा पहुंची । दुर्ग में केवल एक द्वार था जिसे तोड़ने को शक्तावत प्रयासरत थे । चूड़ावतों के हाथी पीछे छूट चुके थे । अतः उन्होंने कमंदों और नसेनियों से दीवारों पर चढ़कर दुर्ग-प्रवेश का विकल्प अपनाया । इसी बीच शक्तावतों का वह भाई, जिसका विवाह हो रहा था इस अभियान की सूचना पाते ही भवरों के बीच से उठकर ऊंटाला की ओर दौड़ पड़ा । मार्ग भूल जाने के कारण वह ऊंटाला विलंब से पहुंचा । वहां पहुंचते ही उसने देखा कि गजों की निष्क्रियता से दुर्ग-प्रवेश का उनका अभियान निष्फल होता लग रहा है और उसके ज्येष्ठ बंधु असहाय से खड़े हैं । उसने तत्काल अपना कर्त्तव्य निश्चित किया और एक हाथी के मस्तक को अपने वक्षस्थल से ढक लिया, ताकि हाथी शूलों से भयभीत न हो । उसने महावत को आदेश दिया कि तत्काल हाथी को द्वार पर हूल दे । हाथी ने टक्कर मारी किंतु क्षीण मनोबल के कारण फाटक तोड़ नहीं सका । तथापि, इस टक्कर में वर की मृत्यु हो गयी । वर के वीरगति पाते ही उसके ज्येष्ठ बंधु बलवंत ने द्वार तोड़ने का दूसरा प्रयास किया । वह द्वार के कड़े पकड़कर लटक गया और उसने अपने शरीर से शूलों को ढकते हुए दूसरे महावत को आदेश दिया कि वह अपना गज उस पर हूल दे । चूंडावत सामंत नसेनी पर चढ़ते हुए मुगलों की गोली खाकर नीचे आ गिरा । अपनी असहायता और शक्तावतों द्वारा द्वार-भंजन हेतु किये जा रहे दूसरे प्रयास की संभावित सफलता से आशंकित होकर उसने अपने एक कुल-अनुज को निर्देश दिया कि मेरा सिर काटकर दुर्ग में फेंक दे । अनुज ने थोड़े असफल विरोध के बाद आदेश का पालन किया ।

जिस क्षण चूंडावत सामंत का कटा हुआ सिर गढ़ की ओर उड़ा जा रहा था उसी समय शक्तावतों का दूसरा प्रयास सफल हुआ और दुर्ग-द्वार टूट गया सिर के गढ़ में पहुंचने के साथ-साथ शक्तावत भी गढ़ में प्रवेश कर गये । अतः यह प्रश्न कि ऊंटाला में चूंडावत पहले घुसे या शक्तावत अनिर्णीत रह गया ।

—द्वारा अरुणा प्रकाशन
६३, राम नगर, उन्नाव

# बुद्धि-विलास

१. १४,४१५ में से कम से कम कितना घटाया जाए कि वह २४,४० और ६४ से पूरी तरह बंट जाए ?

२. दशावतार में पहला, छठा तथा नौवां अवतार किसे माना जाता है ?

३. सोलहवीं शताब्दी के किस मुसलिम संत तथा कवि को कबीर तथा मीरा की पंक्ति में रखा जाता है, जिसकी कविताएं तथा गीत 'गुरु ग्रंथसाहब' में भी सम्मिलित हैं ?

४. वह कौन प्रसिद्ध क्रांतिकारी था जो कुशल पत्रकार भी था, जिसने हिंदी तथा पंजाबी पत्रों में काम किया था, कृष्ण, बलराम, अर्जुन आदि नामों से लेख लिखे थे और केवल २३ वर्ष की आयु में देश की खातिर शहीद हो गया ?

५. किस पुरातत्त्ववेत्ता ने सबसे पहले खुदाई के द्वारा प्रसिद्ध प्राचीन तक्षशिला स्थल का पता लगाया था ?

६. देश में सबसे बड़ी खारे पानी की झील कौन-सी और कहां स्थित है ? उसका आकार बताइए।

७. अब तक देश में कौन-सी लोकसभा सर्वाधिक अल्पकालिक रही है ?

८. क. वर्ष १९९० का बहादुरशाह जफर पुरस्कार किसे प्रदान किया गया है और किसलिए ?

ख. 'मेडल आव फ्रीडम' क्या है और हाल में इससे किसको अलंकृत किया गया है ?

९. भारत के न्यायिक इतिहास में पहली बार किस दंपत्ति ने उच्च न्यायालय के न्यायाधीश बनने का श्रेय प्राप्त किया है ?

१०. भारत के अपने समय के किस प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी को, जो अब सौवें वर्ष में चल रहे हैं, इस वर्ष 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया है ?

**अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।**

**—संपादक**

११. किस क्रिकेट खिलाड़ी ने सबसे अधिक रन बनाने में नया विश्व-रेकार्ड कायम किया है ?

१२. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—
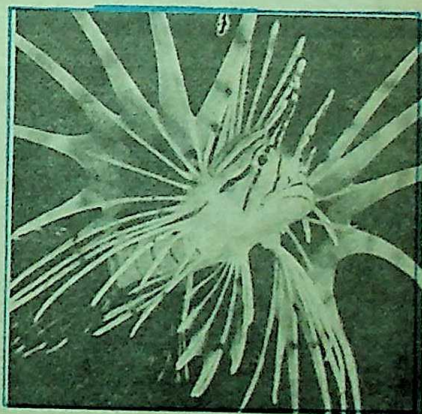
ग्रामीण पाठकों के लिए ललित निबंध

# ग्रीष्म का गांव

यदि बरसाती गांव, पानी में भीगता गांव और जाड़े का गांव सोने पे सुहागा जैसा उगता गांव है, तो ग्रीष्म का गांव हर मोरचे पर जीतकर भी हारता एक सनातन संग्राम है ।

ग्रीष्म का गांव श्रम-विश्राम का संगम और धूप में खिला सन्नाटे का सरगम है । वह सालभर के शुभ-लाभ के लेखा-जोखा का तनाव और चढ़ता-उतरता बाजार भाव है ।

ग्रीष्म का गांव सूखते कुओं, नदियों और तालाबों के बीच निर्जला भीमसैनी एकादशी का गांव और लू के झोंकों में झुलसते गंगा दशहरा का गांव है ।

ग्रीष्म का गांव हंसते मांगलिक महोत्सवों को रो-रोकर जीता एक झमेला है । उसमें विवाह, मांड़ो, तम्बू, डोली-कहार और दुमैला है । वहां मंगल गीत, ढिब-ढिब बाजा और धराऊं बनारसी साड़ियों में घूंघटों का मेला है । वह धूल उड़ाते तथा बरातियों को ढोते ट्रैक्टरों सहित बस, कार आदि का भीड़-भड़क्का है और ध्वनि विस्तारक से उछले गीतों-अगीतों का धक्का है । वह अंगरेजी भाषा के बीच संपन्न देशी द्वार-पूजा है । वह एक फुरसत, एक कसरत और एक धाम-धाम में मची धूम-धाम है ।

ग्रीष्म का गांव खलिहान के रास्ते हवेली में पहुंची आमद का रस है और फिर खर्च का अनरस सुरसा-मुंह है कि सिर थामे, अरे बाप रे बाप बस ! वह प्रिय बिन बिलखती जायसी के नागमतियों की 'तपती जेठ-असाढ़ी में गांढ़ी हुई छाजन' की सूली और ऊपर से लगान, टैक्स और सरकारी ऋण आदि की वसूली है । वह आगिल खेती आगे-आगे का सोच है, साइतिसमहुत का विचार है और नयी खेती का नया समाचार है ।

ग्रीष्म का गांव एक साहित्य है, तो गांव का ग्रीष्म एक रस है, ग्रीष्म-रस ! वह कवि बिहारी के "दीरघ दाघ-निदाघ से लेकर कवि सेनापति के 'धमका विषम" की उद्गम-स्थली तथा वीर-भयानक और रौद्र की क्रीड़ा-स्थली है । कवि सेनापति इसका प्रमाण है—

**वृष कौ तरनि, तेज सहसो करनि तपै**
**ज्वालन के जाल बिकराल बरसत है**
**तचति धरनि, जग झुरत झुरनि, सीरी—**
**छांह को पकरि पंथी—पंछी बिरसत है**
**सेनापति नेक दुपहरी दरकत होत—**
**धमका विषम ज्यों न पात खरकत है**
**मेरे जान पौनो सीरी ठौर को पकरि कोनो**
**धरी एक बैठ कहीं घामे बितवत है**

कवि सेनापति के ग्रीष्म-चित्र में आपको मिल जाएगी गाढ़ी सांस्कृतिक-चेतना, लोक-चेतना अथवा ग्राम-चेतना, ऐसी कि ग्रीष्म की आंच से रक्षार्थ चलो कोई सीरी छांह को पकड़ें । महल, पंखा, कूलर, खस की टट्टी और एअरकंडीशन नहीं, सीरी छांह । किस की सीरी छांह ? कहीं कोई शांति संस्थान-सा बाग-बगीचा है, कोई घमघोर पेड़ है, बरगद, पाकड़ जैसा, जिसकी सीरी छांह में एक छवि है, एक पूरी संस्कृति है, ग्राम-संस्कृति अथवा जिसे कृषि-संस्कृति कहें, जहां सीरी छांव का अधिष्ठान वृक्ष प्रणम्य है । वह देवता है, महायोगी है, वह तमतमाये आदित्य की अग्नि वर्षा को ऊपर-ऊपर ही से ओढ़कर ताप रहित कर देनेवाला जटाजूटधारी विशाल बट वृक्ष । उसके परिसर में प्रवेश करते निदाध के पैर डगमगा जाते हैं । बाहर की उजली आग भीतर छाया की दरिया बन इस प्रकार प्रभावित होती है कि मुक्त भाव से पंक्षी-पंक्षी बिरमते हैं, ऊपर पंछी-नीचे पंथी ।

धधकती धूप द्वारा धकियायी जाकर चौंधियायी पंथी की आंखें अभी पूरी तरह खिली या खुली नहीं कि सुनायी पड़ा, 'बड़ी कड़ी धूप है, बैठिये, सुस्ता लीजिए, जल पीजिए ।'... कौन बोल रहा है ? क्या बट-वृक्ष-देव ? नहीं, पंथी को जल पीने के लिए पूछ रहा है ग्रीष्म का गांव ।

देखें, एक खूबसूरत भारी आम का बगीचा है । पेड़ों पर तैयार आम लदे हैं । उनके ऊपर से रोहिनी नक्षत्र गुजर चुकी है । मृगशिरा में पके आम टपकने लगे हैं । जैसे-जैसे दिन बढ़ता जाता है । लोग गांव की ओर से इधर टहलते चले आ रहे हैं । बच्चे अधिक हैं, वे घाम के भय से मुक्त हैं, नंग-धड़ंग भी । दोपहरी होते जैसे सारा गांव शरण खोजता बगीचे में, पेड़ों को निहारता, रास्ते पर बैठा, सीरी छांव के सुख में डूबा और फिर तनिक दुपहरिया ढरती है, तो क्या होता है ? सेनापति का 'विषम धमका' उतर आता है, एकदम, सन्नाटा, गांव की भाषा में कहा गया, 'रइनि' नहीं डोल रही है ।' ऐसी कि 'ज्यों न पात खरकत है ।' इतनी गुमसुमी कि लगता है एक पत्ता कहीं नहीं खड़क रहा है । अद्भुत है यह धाम के आघात से उपजा धमका : और ताप में पिघली निस्तब्धता ।

इस प्रकार सामने आया ग्रीष्म का गांव, तिजहरिया वाले विषम धमका में पत्ते खड़कने

# एक साहित्य है

● डॉ. विवेकी राय

अथवा न खड़कने की संवेदनवाला गांव ।...,
एक पत्ता खड़कता है, तब जब पेड़ से पका आम टपकता है, खड़-खड़-खड़-खड़ पट्ट ! झपटे कई लड़के । ललच गया पंथी या राहगीर भी । डर क्या रखवालों का ? पंथी-पंक्षी के लिए छुट्टी है । यहां छुट्टी की भारी महत्ता है । सारी दुनिया जानती है कि ग्रीष्म का गांव होता है एक अघोषित छुट्टी । लड़के दिनभर बाग में ओल्हापाती खेल रहे हैं । बूढ़े छांह में ढरके-ढरके सुरती ठोंक रहे हैं, कुछ गमछा बिछा खरटि भर रहे हैं । बच्चों की किताब को छुट्टी । जवान की कुदाल को छुट्टी, घाम में क्या काम होगा ?... खुरपा-खांची को भी छुट्टी । कुछ लोग छांव में बैठ खांची बीन रहे हैं । तो, यह काम नहीं विराम कहा, परानी का विराम । पशुओं को भी विराम है । पेड़ों की सीरी छांव पकड़ बैठे-बैठे गाय-बैल आंखें मूंद पगुरी कर रहे हैं, उनके शरीर पर यहां-वहां आजादी से बैठे-बैठे कौए किलनी काढ़ रहे हैं, और अंगों के बाद उनकी आंखों से, उसके संवेदनशील कोनों तक से और पशु पूरी तरह शांत है, आनंद मग्न है ?..., अरे, कई दुष्ट कौआ आंख न काढ़ ले ? डर हमारे-आपके मन में है, लेकिन व्यर्थ है । इस उपवन बनाम ग्रीष्म के तपोवन में कोई कौवा भी दुष्ट क्यों होगा ? इसके संबंध में घोषित किया है न महाकवि बिहारी ने—

**''जगत तपोवन सो कियो ।''**

किसने बना दिया इस प्रकार जगत को और विशेषकर ग्रीष्म के गांव को तपोवन ? स्पष्ट है कि बिहारी के 'दीरघ-दाघ-निदाघ' और सेनापति के 'ज्वाल-जाल बरसानेवाले' 'वृष को तरनि' में कोई अंतर नहीं है ।

ग्रीष्म का गांव वृष राशि के सूर्य को संपूर्ण रूप से झेलता गांव है । हर साल २० अप्रैल को सूर्य के सायन वृष में पहुंचने पर ग्रीष्म ऋतु का आरंभ होता है । १५ मई को सूर्य की वृक्ष संक्रांति घटित होती है । २५ मई को सूर्य रोहिणी में और ८ जून को मृगशीर्ष में प्रवेश करता है । यह मृगशीर्ष ग्रीष्म की तपन का चरम बिंदु है, शुद्ध दीरघ-दाघ-निदाघ, नाचती दुपहरिया, तलफानेवाली भूसुर और सनसनाती लू से सज्जित निदाघ । अच्छा नाम दे दिया किसानों ने मृगशीर्ष नक्षत्र का, मृगडाह ! इसमें उदंड-मार्तदंड का प्रचंड उत्ताप ऐसा कि मृगगण डहक-डहक दग्ध हो प्राण-त्यागकर बैठें । इसकी तपन के दो सप्ताह तो महाभयानक । इसकी भयानकता के संदर्भ में कहते हैं, 'भादों की अन्हरिया और जेठ की दुपहरिया !' कौन साहसी निकलता है घर से ? 'सीरी ठौर को पकरि पंथी-पंछी बिरमत हैं ।' इस कविता की ग्राम-गंधिता देखते मेरी इच्छा होती है कि पंथी-पंछी पद में 'पेशु-परानी' शब्द जोड़कर इसे पूर्ण कर दें कि ग्रीष्म के आतंक से सिमटे

हुओं की लाइन पूरी हो जाए ।

बेशक ग्रीष्म के गांव में एक नक्षत्र रही आतंकवादी-जैसी यह मृगशिरा । गांव जल रहे हैं, खेत-खलिहान डांड़-मेढ़, खूंटी-बंसवार जल रही है, खपरैल, घर-घाट सब धधक रहे हैं और जल रही है खेत की माटी । किसान की धारणा है, इस नक्षत्र में माटी इतनी जल जाती है कि खाद हो जाती है । सो, महत्ता है जलने की । जले, खूब जले, बन जाए खेत की माटी खाद । इस मृगशीर्ष के पहले रोहिणी नक्षत्र रही, वर्षारंभ की नक्षत्र, पानी की व्यवस्थापिका । घाघ कहते हैं, 'रोहिणी बरसै मृग तपै ।' एक पानी की व्यवस्था करे, दूसरी खाद की । बना रहे प्राकृतिक संतुलन । रोहिणी कृषि के लिए हरी झंडी-जैसी है, शुरू करो खेती का काम । मृगशीर्ष नक्षत्र लाल झंडी जैसी है, रुक जाओ । घोर तपन में सब काम बंद ! हल चलना भी बंद । हमारे अंचल में मृगदाह के आरंभिक दस दिनों तक हल नहीं चलता है । बैलों को मृगडाह की आंच से बचाते हैं । इन दस दिनों तक वाली अवधि को 'दस ताड़का' कहते हैं । इस मृगडाह की धूप के संदर्भ में यह 'ताड़का' का नाम कैसे-क्यों आया ? यह खोज का विषय है । तो, रोहिणी और मृगशिरा के संघर्ष में समझौते की 'डेट' पड़ती है हर साल २२ जून को, वर्षा के लिए प्रसिद्ध आर्द्रा नक्षत्र के चढ़ने पर । तब बहुत खुशियाली होती है । कहते हैं, इसी खुशियाली में आर्द्रा की मां ने सारी माताओं को निर्देश दिया कि वे अपने बच्चों को खीर खिलाना न भूलें । अधिक न जुरे तो घोंघे-दोने या सीप में ही सही, खीर अवश्य बनाकर खिला दें ।

लेकिन आर्द्रा मां के बच्चे आर्द्रा-पूर्व के ये दो सप्ताह की अग्नि-वर्षा को तो पहले झेल लें । कहते हैं कि मृगशिरा की तपन के प्रभाव से सांप-बिच्छू जैसे विषैले जीव-जंतुओं का विष क्षीण हो जाता है । पशु-प्राणी के भीतर का जहर घट जाता है, घृणा का जहर, पाप का जहर, हिंसा का जहर, भेद-भाव एवं शत्रुता का जहर । महाकवि बिहारी ने ठीक ही लिखा—

**"कहलाने एकत बसत अहि-मयूर, मृग-बाघ**
**जगत तपोवन सो कियो दीरघ-दाघ-निदाघ ।"**

यह जगत विशेषकर गांव कितना अनुगृहीत है कि दीरघ-दाघ-निदाघ ने उसे तपा-तपाकर मारा कि तपोवन बना दिया । उसने धरती-आकाश के बीच धधका दी परम पवित्र प्रचंड पंचाग्नि । अब मुक्त गगन के नीचे इस विराट् के मैदान में तपो पंचाग्नि हे ग्रीष्म के गांव ! करो तपस्या, धरती, आकाश, सागर, पहाड़ और हवा सभी जल रहे हैं, नहीं, तप रहे हैं, गांव को तपा रहे हैं, जगत को तपोवन बना रहे हैं । गांव जलता है तपता है तो संपूर्ण जगत के लिए, उसकी शांति के लिए, युद्ध, हिंसा, अन्याय और अत्याचार आदि की आसुरी

प्रवृत्तियों के दमन के लिए । ऐसे गांव की तपस्या भंग करके जो लोग उसे तप-विरोधी तथा सुख-भोगी सभ्यता का आधुनिक केंद्र बना नगरों के रूप में ढालना चाहते हैं, वे पता नहीं क्या चाहते हैं ?

जहां मनुष्यों का जगर-मगर जंगल है, ऐसे नगरों में ग्रीष्म के किसी रोमांच अथवा सौंदर्य की कल्पना नहीं की जा सकती । वहां न तो दीरघ-दाघ-निदाघ के दबाव से अहिंसक तपोवन निखरता है, न ही विषम धमका की शोभा है, न पत्ते तक न खड़कने की अनुभूति का आनंद है, न पंथी-पंक्षी के सीरी छांव में बिरमने की गुदगुदी और न ही पवन तक के बिराम करने की कल्पना चारुता है । नगर-महानगर तो तपोगुण-रजोगुण की कठिन आपाधापी में, सदा एकरस शोरगुल में डूबे, दौड़ते-भागते, सिर पर से अस्पर्शित शरद-वसंत और ग्रीष्म आदि को गुजारते, यांत्रिक भीड़ बने, ट्रेन-ट्राम-बस-कार आदि में उड़ते, रात के अंधेरे को प्रकाश में ढालते, ग्रीष्म के लू को सुखद शीतलहरी में बदलते, प्रकृति की परिवर्तनशील विशेषताओं को चुनौती देते हुए जीते हैं । वे उसकी मौलिक सुंदरता को सहर्ष भोगने की जगह उसके आगे ताल ठोंककर जैसे खड़े हैं । तब ग्रीष्म के गांव के संदर्भ में इन्हें रेखांकित करना ही बेकार है । नगर के लिए ग्रीष्म मात्र एक जबरदस्त नकार है । उसे स्वीकार कर सिर का सेहरा बनानेवाला तो यह हमारा गांव है, सनातन सांस्कृतिक गांव, कृषि-संस्कृति की पृष्ठभूमि ।

यह कितनी अच्छी बात है कि गांव के लिए ग्रीष्म एक सहर्ष स्वीकार है ।... दिन चढ़ते सुनहट, सन्नाटा, माहुरधाम, पछिवहीं लूचि, अगिनबान, माथ पर दहकता सूरज, पांतर में नाचती दुपहरिया, चमकीली उजली आग की तरह लहरों में जैसे नाचते गांव-गिरांव, पेड़-रूख भी नाचते से, जीव-जंतु, कुत्ते-स्यार जीभ पसारे हांफते हुए जलाशयों की ओर भागते, पेड़ की छाया में रास्ते पर बैठा पनिसरा, प्यास का उपद्रव, पसीने का सुगंध द्रवण, सब सहर्ष स्वीकार है । आंधी-वर्षा का उपद्रव भी स्वीकार है । सबमें ग्रीष्म की सुंदरता और गांव की अपनी पहचान है । आग के पंजों में छटपटाती दुनिया की आंखों में ग्रीष्म के उठते बवंडर-बगोले जब धूल भठ-भठ देते हैं तब गांववाले कहेंगे, जाओ, यह मौसमी खता माफ है ! मान लिया यह बैर की धूल नहीं, अबीर की प्रेम-मूठ रही । गांव का ग्रीष्म होली खेल रहा है । उधर सांझ हुई तो झिल्ली-रव में झांझ-झंकार शुरू हुई, बहुत चटक, झनक-खनक के साथ एक रस, एकतार, झन-झन-झन-सों-सों-सों, सूक्ष्म और सजीली-रसीली, सांझ के सन्नाटे के एकांतिक रोमांस-जैसी ।

बहुत रसिया है ग्रीष्म का गांव, शाम ढलते-ढलते तो वह बहुत ही संवेदनशील हो जाता है । दिनभर के जलते हा-हा-हू-हू के बाद शीतल-सुखद-सुहानी रात सलमा-सितारे जड़ी झीनी झिलमिल चादर ओढ़ गांव पर उतरती है । खुले आकाश के नीचे वह सुख-नींद का वरदान भी साथ लाती है । पर यह सुख नींद बैरिन होती है कि गांव की बाहों में आते-आते भी कभी-कभी छिटक जाती है ।

पड़ोस के कई घरों में विवाह पड़े हैं और

कहीं सगुन उठ रहा है, तो कहीं बराती 'बिजै' कर रहे हैं और 'गाली' खा रहे हैं। बेचारों की ऐसी-तैसी हो रही है। चारों ओर से उठती गीत-गूंज तब झपट ले जाती है निंदिया को तो इस मनसायन-मनसायन में ही ग्रीष्म की आधी रात जैसे सांझ होती है। फिर तन्वंगी रात गरमी की छम-छनन-सी उतर पता नहीं कैसे जल्दी-जल्दी छूमंतर हो जाती है और झपकी लगते भोर हो जाती है तथा मृगराज अर्थात भेंगरजवा, 'ठाकुरजी' 'ठाकुरजी' के मीठे बोल-बोलकर अलसाये गांव को जगा देता है। साथ ही जग जाती है चिड़ियों की अनियंत्रित चहक, उतर आता है, समय का अतींद्रिय अनुभूतियों से पूर्ण सतयुग ! घटनाएं जल्दी-जल्दी घटने लगती हैं। सुखद जुड़ांसी के बीच अंधकार का झांप धीरे-धीरे उठता है। मलय पवन से सुवासित हलके अलौकिक प्रकाश रथ पर आरूढ़ गायत्री देवी का अवतारण शुरू होता है। फिर अचानक गजब हो जाता है। तेजी से एक अदद आग का लाल गोला फिक्कर कब ऊपर आ गया, पता नहीं चला। और इस प्रकार जल्दी-जल्दी बीत गया प्रभात का सतयुग। पूर्वाह्न-अपराह्न के द्वापर-त्रेता लंबे समय तक जमे रहे। शाम ढलते-ढलते रात के कलियुग की आहत मिली। ग्रीष्म के गांव की रात अथवा मधुर-मायावी कलियुग की रात सारी दुनिया के मंगल परिणयों की रात कैसे बन गयी राम जाने। ध्वनि विस्तारक से एक मंगल-गीत की कड़ी उड़ती कानों में आ रही है—

**आंजु की रात बाबा तोहरो मंड़उआ**
**काल्ह सुंदर वर साथ**

— प्रोफेसर्स कॉलोनी
सकलेनाबाद जिला—गाजीपुर

---

### भावनाओं के अनुरूप समस्या का हल

*पर्यावरण को नुकसान पहुंचाये बिना पर्यावरणीय समस्याओं को सुलझाने और विकास परियोजनाओं को लागू करने में जिंबाबवे, थाईलैंड और स्वीडन ने उल्लेखनीय सफलता अर्जित की है। ये तीनों देश आर्थिक और जनसंख्या-विशेषता की दृष्टि से अत्यंत भिन्न हैं। जिंबाबवे व्यापक गरीबी और जनसंख्या की विस्फोटक वृद्धि की समस्या से जूझ रहा है, स्वीडन विश्व में समृद्धतम देशों में से एक है, लेकिन उसकी आबादी लगभग बढ़नी बंद हो गयी है। थाईलैंड ने पिछले कुछ वर्षों में काफी आर्थिक उन्नति के साथ साक्षरता-दर में काफी वृद्धि की है और अपनी बढ़ती आबादी पर भी काबू पा लिया है। इन विभिन्नताओं के बावजूद इन तीनों देशों ने पर्यावरणीय समस्याओं को अपने देश की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए देशवासियों की भावनाओं और आर्थिक रूप से उत्पन्न समस्याओं को समायोजित करते हुए अलग-अलग ढंग से निपटाया है। यह तीसरी दुनिया के देशों के लिए अनुकरणीय है।*
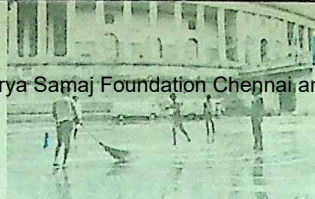
# राष्ट्रपति प्रणाली या संसदीय सत्ता ?

□ श्रीनिवास गुप्त
(कानून व्याख्याता)

*यदि भारत में प्रजातंत्र की परंपराओं को जिंदा रखना है, राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार को समाप्त करना है, देश में अराजकता, हिंसा, भ्रष्टाचार, नैतिक पतन एवं सांस्कृतिक ह्रास को रोकना है तथा गांधी और नेहरू के सपनों के भारत को पुनर्जीवन देकर, उनके द्वारा बताये गये मार्ग पर आगे बढ़ना है तो वर्तमान संसदीय प्रणाली में वांछित परिवर्तन करने होंगे ।*

संसदीय प्रणाली के स्थान पर राष्ट्रपति प्रणाली की सरकार की स्थापना के बारे में कई प्रश्न उठाये गये हैं । आठवें दशक के आरंभ में कांग्रेस के नेता ए.आर. अंतुले तथा वसंत साठे ने इसी तरह की आवश्यकता पर बल दिया था । अब मुरली मनोहर जोशी ने भी संसदीय प्रणाली के स्थान पर भारत में राष्ट्रपति प्रणाली अपनाये जाने की बात कही है ।

वास्तव में संसदीय प्रणाली को समाप्त करके राष्ट्रपति प्रणाली लागू करने में एक व्यावहारिक कठिनाई पेश आएगी । सन १९७३ में केशवानंद भारती के मामले में उच्चतम न्यायालय की संपूर्ण खंडपीठ ने यह निर्धारित किया था कि संसद संविधान की मौलिक विशेषताओं (बेसिक फीचर्स) में परिवर्तन करने के लिए सक्षम नहीं है अतः जब तक किसी अन्य मामले में उच्चतम न्यायालय की संपूर्ण खंडपीठ उपरोक्त व्यवस्था को निरस्त नहीं करती तब तक संसदीय प्रणाली में परिवर्तन कर पाना संभव नहीं है । फिर भी आइए देखें कि दोनों प्रकार की प्रणालियों में कौन-कौन-सी विशेषताएं तथा खामियां हैं । अमरीका व फ्रांस में राष्ट्रपति प्रणालियां कहां तक सफल रही हैं । गत वर्षों में संसदीय सरकारें विभिन्न राष्ट्रों में क्यों बनती और बिगड़ती रहीं ? संसदीय प्रणाली के अंतर्गत स्थापित मिलीजुली तथा
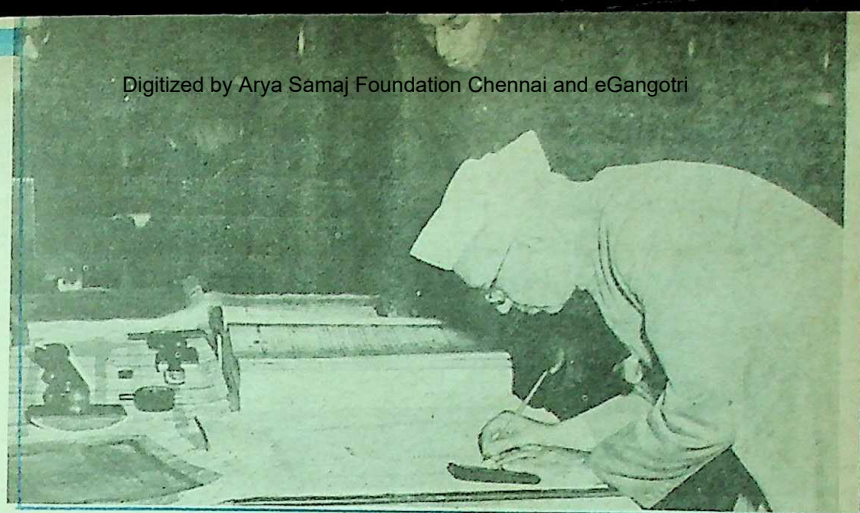
संविधान पर हस्ताक्षर करते हुए प्रथम प्रधानमंत्री पं. नेहरू ।

अल्पमतीय सरकारों का भविष्य क्या रहा है ? तो प्रस्तुत है एक लेखा-जोखा ।

## स्थायित्व के लिए

राष्ट्रपति शासन प्रणाली सरकार को स्थायित्व प्रदान करती है । उसमें जनता जनार्दन द्वारा चुना गया राष्ट्रपति अपनी शक्ति और योग्यता का प्रयोग करने के लिए स्वतंत्र होता है । उसको अपने पद को बनाये रखने के लिए दूसरों को खुश करने हेतु अपनी शक्ति का दुरुपयोग नहीं करना पड़ता है । वह अपनी शक्ति और अधिकार का प्रयोग बेहतर तरीके से कर सकता है । उसे स्वयं को अपदस्थ कर दिये जाने का भय नहीं रहता क्योंकि वह जनता के प्रतिनिधियों के प्रति उत्तरदायी नहीं होता है । हां ! कुछ विशेष परिस्थितियों में जहां भ्रष्टाचार, देशद्रोह, अथवा कोई अन्य किसी प्रकार का गंभीर आरोप सिद्ध हो जाए वहां उसे हटाया जा सकता है जैसे वाटर गेट स्कैंडल में राष्ट्रपति निक्सन को पद त्याग करना पड़ा था । इसके अतिरिक्त जनता के समक्ष इस बात का पूरा अवसर रहता है कि वह कार्य क्षमता व योग्यता के आधार पर सही चुनाव कर सकती है । ऐसे अनेक उदाहरण हमारे सम्मुख हैं जिनमें अमरीका में बहुत कम मतों से राष्ट्रपति को चुना गया परंतु वे अत्यंत कुशल व योग्य राष्ट्रपति सिद्ध हुए और अपने कर्त्तव्य तथा दायित्वों को पूरी निष्ठा एवं तत्परता के साथ पूरा किया । राष्ट्रपति कैनेडी ने १९६० में रिचार्ड निक्सन से केवल एक प्रतिशत अधिक मत पाये थे परंतु उन्होंने अपने तीन साल के छोटे से राष्ट्रपति काल में ही अत्यंत महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए और यह सिद्ध कर दिखाया कि जनता का चुनाव सही था । क्यूबा तथा नागरिक अधिकारों के मामलों में लिए गये साहसपूर्ण निर्णयों से वह अत्यंत प्रसिद्ध हो गये थे ।

## संसदीय प्रणाली और अस्थिरता

इसके विपरीत संसदीय शासन प्रणाली पूरी तरह से अस्थायी सरकार का सृजन करती है क्योंकि वह निर्वाचित सांसदों के प्रति उत्तरदायी होती है और वे जब चाहे तब उसे गिरा सकते हैं, उसके प्रति अविश्वास प्रस्ताव पारित कर सकते हैं उसे 'ब्लैकमेल' कर सकते हैं । इस

प्रकार की सरकार में प्रधानमंत्री को कोई भी निर्णय लेने से पहले यह सोचना पड़ता है कि ऐसा तो नहीं कि उनके निर्णय की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप सांसद उन्हें सहयोग देना बंद कर दें और उनकी सरकार धराशायी हो जाए। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि संसदीय प्रणाली की सरकार जो कुछ भी करती है उसके लिए यह जरूरी नहीं है कि वह देश और जनता के हित में हो। परंतु उसका सांसदों के हित में होना आवश्यक होता है। कई अवसरों पर देखने में आया है कि सरकार चाहते हुए भी किसी भी विषय पर उचित कदम उठाने में हिचक जाती है क्योंकि उस विषय से संबंधित सांसद अपने निहित स्वार्थ में सहयोग नहीं देते। प्रायः सरकार को ऐसे अवसरों पर सौदेबाजी करते हुए भी पाया गया है इसके अतिरिक्त इस प्रकार की शासन प्रणाली में यह गंभीर दोष है कि प्रधानमंत्री को अपनी मंत्रिपरिषद के लिए सांसदों में से ही चुनाव करना पड़ता है और यदि किसी अन्य व्यक्ति को मंत्रिपरिषद का सदस्य बनाया भी जाता है तो उसके लिए यह आवश्यक है कि वह आगामी छह माह में सांसद बन जाए। इस प्रावधान के कारण संसदीय सरकार की मंत्रिपरिषद में जितने कुशल व्यक्ति आते हैं उससे कहीं ज्यादा कुशल व्यक्ति राष्ट्रपति प्रणाली की सरकार में स्थान पा सकते हैं और वे देश को ज्यादा सही दिशा दे सकते हैं। भारतीय संसदीय प्रणाली सरकार का जीवन अत्यंत अनिश्चित रहता है क्योंकि अविश्वास प्रस्ताव पारित करके या बजट मतदान प्रक्रिया में 'कट मोशन' की स्वीकृति हो जाने पर या संसद के दोनों सदनों से राष्ट्रपति के भाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पारित न करा सकने की स्थिति में सरकार धराशायी हो जाती है। इसके अतिरिक्त किसी सरकार के लोकसभा में 'एडजोर्नमेंट मोशन' को स्वीकार किये जाने से रोकने में असफल होने की दिशा में भी उसे त्यागपत्र देना पड़ता है।

### खोखला होता ढांचा

अपने देश में जब सरकार बनाने की बात सन १९४७ में सामने आयी थी तो लगभग सभी लोगों ने संसदीय शासन प्रणाली का जोरदार समर्थन किया। पंडित नेहरू ने भी कहा था "इसे छोड़कर हम पीछे नहीं मुड़ सकते" अर्थात उनके विचार से संसदीय प्रणाली ही भारत के लिए सर्वोत्तम थी जिस पर चलकर राष्ट्र प्रगति कर सकता था। डॉ. भीमराव अंबेडकर ने भी इसी प्रणाली को सर्वश्रेष्ठ माना था उन्होंने कहा था कि संसदीय शासन प्रणाली में सरकारी कार्यों का दैनिक मूल्यांकन होता है जबकि राष्ट्रपति प्रणाली में यदा-कदा ही। इसी प्रकार के. एम. मुंशी तथा अल्लादी कृष्णास्वामी अय्यर जैसे राजनीति विशेषज्ञों ने भी वर्तमान शासन प्रणाली का ही समर्थन किया था। अंततः जून, ७, १९४७ को यह निर्णय ले लिया गया कि भारत में संसदीय शासन-प्रणाली लागू की जाएगी और लागू कर भी दी गयी परंतु पिछले तैंतालिस वर्षों में इस संघीय शासन प्रणाली की सरकार ने अपनी नींव गहरी कर पायी हो, ऐसा नहीं है। बल्कि आये दिन यह प्रणाली अपने-आप में चरमराती हुई प्रतीत होती है। लोकतांत्रिक मूल्यों और संस्थाओं में भारी पतन की बात सुनायी देती है। संसद के चरित्र में आयी गिरावट से भी इंकार नहीं किया जा

सकता है । ४३ साल के पहले की संसद और अब की संसद में भारी अंतर आ गया है । संसदीय ढांचा खोखला होता जा रहा है । लोगों में सुस्ती आयी है । काम न करने की भावना घर करती जा रही है । जनवरी २६, १९८२ के अवसर पर तत्कालीन राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी ने राष्ट्र के नाम संदेश में कहा था कि यद्यपि पंचवर्षीय योजनाओं में नब्बे हजार करोड़ रुपया व्यय हुआ है परंतु विकास का लाभांश आम जनता से दूर ही रहा है... जिन मूल्यों और मर्यादाओं ने अतीत में हमें पारस्परिक सौहार्द एवं मेल-जोल से शांतिपूर्वक रहना सिखाया था ऐसा लगता है कि वे अब ढीले हो रहे हैं... कानून और व्यवस्था के लिए सम्मान तथा जानमाल की पवित्रता अब हमारे चरित्र का मार्गदर्शन करती हुई नहीं लगती ।

आज संसदीय शासन प्रणाली का सर्वाधिक उपयुक्त अर्थ यदि किसी भी तरह चुनाव जीतकर राजनीतिक शक्ति प्राप्त करना माना जाए तो गलत न होगा । जनता और सरकार दोनों ही इस तथ्य से भली-भांति परिचित हैं कि चुनाव जीतने के लिए कौन-कौन से उचित और अनुचित तरीके अपनाए जाते हैं । उचित से अधिक अनुचित साधनों का प्रयोग करना हर चुनाव जीतने की लालसा रखनेवाले के लिए नितांत आवश्यक हो गया है इस विषय में वर्तमान चुनाव कानून अत्यंत बौना एवं असहाय हो गया है । जिनके पास विपुल धनराशि है वे अपने निहित स्वार्थों के लिए विभिन्न राजनीतिक दलों को आर्थिक सहायता देकर उन्हें भ्रष्ट कर देते हैं जरा सोचिए जो व्यक्ति लाखों रुपया खर्च करके विधान सभा अथवा लोकसभा का चुनाव

डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर ।

जीतेगा वह कार्यभार संभालने के बाद सबसे पहले किस दिशा में सोचेगा ? जाहिर है कि वह सबसे पहले कुल खर्च का कम से कम दस गुना धन एकत्र करने का प्रयास करता है और साथ ही साथ उन अपराधिक एवं अराजक तत्वों, जिन्हें राजनीतिक भाषा में प्रायः 'कार्यकर्ता' कहा जाता है को भी आर्थिक एवं राजनीतिक लाभ प्रदान करता है क्योंकि उन्होंने उसे चुनाव जीतने में 'सहयोग' दिया है । जिन सेठ और पूंजीपतियों ने आर्थिक सहायता प्रदान की थी उन्हें भी राजनीतिक लाभ पहुंचाना उसका नैतिक कर्त्तव्य बन जाता है । तो आप ही बताइए ऐसी स्थिति में समाज और राष्ट्र का हित कितना गौण हो जाता है । जनता के सेवक बनकर आत्म प्रचार करने और करानेवाले निर्वाचित घोषित होते ही जनता को सेवक बनाकर स्वयं मालिक बन जाते हैं ।

संसदीय शासन प्रणाली के सुचारु रूप से

प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद

कार्य करने के लिए अनेक आवश्यक तत्वों में से केवल दो राजनीतिक दलों का होना भी एक बात है, और अपने देश में अभी तक कोई एक उत्तरदायी एवं संयुक्त राजनीतिक विपक्ष तैयार नहीं हो पाया है । कुछ आशा जनता पार्टी बनने से उभरी थी परंतु उन्नीस माह के अंदर ही वह समाप्त हो गयी और 'आया-राम', 'गया-राम' की बाढ़ आ गयी परिणाम यह हुआ कि जनता सरकार भी धराशायी हो गयी । यहां पर यह कहना असंगत न होगा कि तत्कालीन राष्ट्रपति रेड्डी द्वारा जगजीवन राम को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित न किया जाना राष्ट्र के हित में रहा है । यद्यपि राष्ट्रपति का यह निर्णय कानून की कसौटी पर खरा नहीं उतरा । श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या के बाद १९८४ में राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने राजीव गांधी को प्रधानमंत्री नियुक्त किया । चुनाव में भी उन्हें परम बहुमत प्राप्त हो गया । किसी तरह से कार्यकाल पूरा कर सकने के बाद नवीं लोकसभा के लिए जब १९८९ में चुनाव हुआ वी. पी. सिंह के जनता दल को बहुमत प्राप्त हुआ उन्होंने सरकार बनायी जो लगभग सालभर चलकर टायं-टायं फिस हो गयी । जोड़-तोड़ लगाकर कांग्रेस (इ) का समर्थन प्राप्त कर चंद्रशेखर प्रधानमंत्री बन गये जिनके समर्थक मात्र साठ-पैंसठ सांसद ही थे और जिस तरह का एक अल्पमत संसदीय सरकार 'अल्पकालिक' होती है यह भी मात्र ११७ दिन चलकर उस समय खत्म हो गयी ज[illegible] चंद्रशेखर ने त्यागपत्र देकर संसद को भंग कर[illegible] की राष्ट्रपति से सिफारिश की ।

## धर्म-जाति और सत्ता

यूं तो हमारा देश धर्मनिरपेक्ष है परंतु चुनाव चाहे स्थानीय निकायों के हों, विधान सभाओं के हों अथवा लोकसभा के, सभी धर्म, जाति व उपजाति के आधार पर ही जीते और हारे जाते हैं । ये आधार राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने के खासे औजार बने हुए हैं यह तथ्य हमारी शास[illegible] प्रणाली के लिए चुनौती ही नहीं बल्कि इसके अस्तित्व के लिए भी बहुत बड़ा खतरा बन चु[illegible] है । महात्मा गांधी का वर्गविहीन समाज बनाने का सपना था परंतु आज सांप्रदायिकता तथा जातीयता की फसल लहलहा रही है ।

## परिवर्तन की आवश्यकता

हमारे संविधान में मौलिक अधिकारों, राजनीति के दिशा निर्देश सिद्धांतों, मौलिक कर्तव्यों, व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा राष्ट्रीय एक[illegible] से संबंधित प्रावधानों को अपरिवर्तित रखते [illegible] कुछ आवश्यक परिवर्तनों की नितांत आवश्यकता है, जिनमें संसदीय प्रणाली के स्थान पर राष्ट्रपति शासन प्रणाली को स्थापित

करने से संबंधित प्रावधान बनाया जाना प्रमुख है अब प्रश्न यह है कि हमारा राष्ट्रपति अमरीका के राष्ट्रपति जैसा हो अथवा फ्रांस के राष्ट्रपति जैसा। यूं तो सन १९७५ में आपात काल के दौरान कांग्रेस पार्टी के अंदर से भी अमरीकी राष्ट्रपति शासन की मांग उठी थी। उस समय सत्तारूढ़ दल ऐसा अनुभव कर रहा था कि प्रगतिशील सामाजिक और आर्थिक नीतियों को लागू करने के लिए राष्ट्रपति शासन प्रणाली सर्वश्रेष्ठ रहेगी तथा इसके अंतर्गत प्रतिक्रियावादी शक्तियों को भी दबाने में सहायता मिलेगी। इसके बाद सन १९७५ के अंत में चंडीगढ़ अधिवेशन में इस मुद्दे को फिर उठाया गया था परंतु कुछ कांग्रेसजनों ने ही इसका जबरदस्त विरोध किया था जिसके फलस्वरूप श्रीमती इंदिरा गांधी ने भी इस प्रणाली को अनुपयुक्त घोषित कर दिया परंतु सन १९८० में अखिल भारतीय अधिवक्ता सम्मेलन में अपने भाषण में श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने देश में शासन प्रणाली में परिवर्तन पर राष्ट्रीय बहस किये जाने की बात कही परंतु इस बार भी कोई खास प्रगति न हो सकी और छुट-पुट बहस के बाद सम्मेलन समाप्त हो गया। और आज एक बार फिर विद्यमान संवैधानिक व राजनीतिक संकट ने इस मुद्दे को पुनः जीवित कर दिया है। फ्रांस में जब संसदीय सरकार थी तब वहां भी सरकार बनने और बिगड़ने की बात नित्य कर्म-जैसी हो गयी थी। मेंडे की सरकार छह दिन रही, फोर की अट्ठारह दिन, मौलेट की अट्ठाइस दिन, बोर्जर मौनोरी की बाइस दिन, गिलार्ड की छत्तीस दिन और फीमिलिन की सत्ताइस दिन। इन सरकारों के अल्पकालिक पतन के पीछे ससदीय प्रणाली के अपने दोष थे। इसी प्रकार जरमनी और इटली में भी संसदीय प्रणाली की सरकारों के शीघ्र पतन की बात सर्वविदित है। जरमनी में प्रथम विश्व युद्ध के बाद चौदह वर्ष की अवधि में २१ सरकारें बनीं और बिगड़ीं और इटली में सन १९४३ से १९६० के बीच २२ सरकारें बनकर मिट गयीं जिसमें से एक ने केवल चौदह दिन ही कार्य कर पाया।

## विकेंद्रित शक्ति

फ्रांस में राष्ट्रपति कार्यपालिका का वास्तविक प्रमुख होता है, भारत के राष्ट्रपति की तरह लाचार और 'शो पीस' नहीं। जनता उसका चयन स्वयं करती है। वह सात वर्ष तक अपने पद पर रहता है। मंत्रिपरिषद संसद के सदस्य नहीं होते हैं। फ्रांस के संविधान के अनुच्छेद १९ में कहा गया है कि राष्ट्रपति के कुछ निर्णयों पर प्रीमियर के हस्ताक्षर होंगे। वहां प्रीमियर को भी राष्ट्रपति चुनता है। वह नेशनल असेंबली को समाप्त कर सकता है। जनमत को अभिषेध कर सकता है तथा अनुच्छेद ११६ के अंतर्गत आपत्तिकालीन शक्तियों को अपने हाथ में ले सकता है। वहां की संसद नेशनल असेंबली और सीनेट से मिलकर बनती है। नेशनल असेंबली का प्रत्यक्ष चुनाव होता है और सीनेट का परोक्ष रूप से। प्रीमियर और मंत्री तो सरकार की रचना करते हैं नेशनल असेंबली के प्रति उत्तरदायी होते हैं और किसी भी मामले के लिए नेशनल असेंबली में बहुमत से पारित होना आवश्यक होता है जिससे सरकार अत्यंत स्थायी परिस्थिति में रहती है। प्रीमियर राष्ट्र की नीति (पालिसी) तय करता है

और वह संयुक्त रूप से नेशनल असेंबली के प्रति उत्तरदायी है उसे राष्ट्रपति तथा संसद समूह दोनों को ही संतुष्ट करना पड़ता है लेकिन वह संसद का सदस्य नहीं होता परंतु उसके लिए वहां स्थान आरक्षित रहता है । वह नेशनल असेंबली में अपनी बात कह सकता है, संशोधन प्रस्तुत कर सकता है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि फ्रांस में कार्यपालिका की शक्तियां राष्ट्रपति और सरकार में विभक्त रहती हैं तथा संविधान में अनेक ऐसे प्रावधान हैं जिनसे राष्ट्रपति और प्रीमियर दोनों एक-दूसरे के लाभ के लिए कार्य करते हैं तथा कहीं भी टकराव की स्थिति उत्पन्न नहीं होती । इन प्रावधानों को जानने के बाद यह कहा जा सकता है कि फ्रांस में राष्ट्रपति ऊपर और सरकार नीचे होती है । वह सरकार के प्रति उत्तरदायी नहीं होता है । यहां तक कि राष्ट्रीय नीतियों के निर्धारण में भी, परंतु शक्ति न तो संसद के पास केंद्रित होती है और न ही राष्ट्रपति के पास और न ही प्रीमियर व मंत्रियों के पास और चूंकि इन तीनों में से कोई भी एक, सर्वशक्तिमान नहीं होता इसलिए राष्ट्रपति के तानाशाह बन जाने की कोई संभावना नहीं रहती । इस प्रकार की राष्ट्रपति प्रणाली में यह आवश्यक नहीं होता कि मंत्रिगण संसद के सदस्य हों । राष्ट्रपति और प्रीमियर अपनी जगह पर पूर्णरूप से इस बात के लिए स्वतंत्र होते हैं कि वह किसको अपना मंत्री बनाएं । इस प्रावधान के द्वारा योग्य, उच्च, सूझबूझ और शालीन व्यक्तित्व वाले, व्यक्ति ही मंत्री बन पाते हैं । अपने यहां के विपरीत वहां हर व्यक्ति सांसद बनने के लिए लालायित नहीं रहता । यदि विश्लेषणात्मक ढंग से देखा जाए तो हम पाएंगे कि फ्रांस में पूरी तौर पर राष्ट्रपति शासन प्रणाली नहीं है वर्तमान प्रणाली में वहां पर अनेक संसदीय प्रणाली के लक्षण भी विद्यमान हैं ; जैसे राष्ट्रपति राष्ट्र का सिरमौर होता है और सरकार से पृथक रहता है । वही सरकार के प्रमुख को नियुक्त करता है । प्रीमियर नेशनल असेंबली को खत्म कर सकता है इस प्रकार वहां पर सरकार स्थायी भी होती है और विधायिका के प्रति उत्तरदायी भी । यद्यपि इस प्रकार की राष्ट्रपति प्रणाली में भी कुछ खामियां हैं । एस.ई. फिलर के अनुसार फ्रांस के राष्ट्रपति पर संघात्मक सीमाएं लागू नहीं होतीं । इस प्रकार की अन्य अनेक खामियों को ध्यान में रखते हुए भारत में फ्रांसीसी राष्ट्रपति प्रणाली लागू करने की बात करते समय यह ध्यान रखना पड़ेगा कि संविधान के अनुच्छेद ६१ में दिये गये राष्ट्रपति को हटाये जाने से संबंधित प्रावधान उच्च न्यायालयों तथा उच्चतम न्यायालयों से संबंधित प्रावधानों को तथा मौलिक अधिकारों, मौलिक कर्त्तव्यों और राजनीति के दिशा निर्देश सिद्धांतों को यथावत रखा जाए ।

**स्वस्थ दल प्रणाली की संभावना**

वस्तुतः राष्ट्रपति प्रणाली लागू करने से कार्यपालिका के विधायिका से स्वतंत्र रहने के कारण एक स्वस्थ दल प्रणाली विकसित होगी । सांसदों में व्याप्त दल-बदल की बीमारी पर स्वतः अंकुश लगेगा, जिससे दल-बदल के समय बड़ी धनराशियों का लिया जाना और दिया जाना भी समाप्त हो जाएगा । सरकार में हर विषय एवं विभाग में योग्यतम एवं

कुशलतम व्यक्ति आ सकेंगे । राष्ट्रपति अपनी बुद्धिमत्ता एवं अनुभवशीलता के आधार निर्णय ले सकेगा । चुनाव में किये जानेवाले अंधाधुंध खर्चों पर अंकुश लग जाएगा तथा चुनाव में अन्य विभिन्न प्रकार के भ्रष्टाचार भी समाप्त हो जाएंगे, सांसदों को अपना तमाम समय व शक्ति अपने अनुयायियों एवं समर्थकों को खुश रखने तथा उन्हें फुसलाने व राजनीति के मोहरे बनाने में नहीं लगाना पड़ेगा, जिसे वे अपने दायित्वों को पूरा करने में लगा सकेंगे ।

यदि भारत में प्रजातंत्र की परंपराओं को जिंदा रखना है, राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार को समाप्त करना है, देश में अराजकता, हिंसा, भ्रष्टाचार, नैतिक पतन एवं सांस्कृतिक ह्रास को रोकना है तथा गांधी और नेहरू के सपनों के भारत को पुनर्जीवन देकर, उनके द्वारा बताये गये मार्ग पर आगे बढ़ना है तो वर्तमान संसदीय प्रणाली में वांछित परिवर्तन करने होंगे ।

देश के जाने-माने विधिवेत्ता तथा अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष व उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री बेग ने विश्वास व्यक्त किया था कि हमारा प्रजातंत्र काम नहीं कर रहा है । चरित्र का स्तर गिर चुका है अतः प्रजातंत्र को अनुशासित करने के लिए अधिक शक्तिशाली प्रणाली वाली सरकार की आवश्यकता है । वसंत साठे ने भी जनता द्वारा सीधे चुने हुए राष्ट्रपति की वकालत करते हुए कई बार कहा है कि इससे सरकार में स्थायित्व आएगा और यह वर्तमान प्रणाली से अधिक प्रजातांत्रिक होगा । इसी प्रकार अमरीका में भारत के पूर्व राजदूत नानी पालखीवाला ने भी अपना मत व्यक्त करते हुए कहा था कि राष्ट्रपति शासन प्रणाली में अपने यहां प्रचलित संसदीय शासन प्रणाली की अपेक्षा अधिक लाभ हैं । परंतु वे उसके तानाशाह बन जाने की संभावना से इनकार नहीं कर पाये । उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायमूर्ति तथा जाने-माने संविधान शास्त्री हंसराज खन्ना की अवधारणा है कि राष्ट्रपति शासन प्रणाली प्रायः तानाशाह सरकार में बदल जाती है । ब्रिटेन से भारत के उच्चायुक्त डॉ. लक्ष्मी मल्ल सिंघवी का कहना है कि यद्यपि अपने यहां की संसदीय शासन प्रणाली में कुछ कमियां अवश्य हैं परंतु यह कहना कि राष्ट्रपति शासन प्रणाली लागू करने से देश की समस्याएं हल हो जाएंगी उचित न होगा ।

— ११-१२, त्रिवेणी नगर
मीरपुर कैंट
कानपुर-२०८००४

*तारामीन मछली नहीं है । यह एक खूबसूरत समुद्री जीव है । आमतौर पर इसका आकार पांच नोकों वाले सितारे की तरह होता है । इसलिए इसे तारामीन कहते हैं । तारामीन के लगभग चालीस हाथ होते हैं । अगर किसी तरह तारामीन के ये हाथ दुर्घटना में या स्वेच्छा से कट जाते हैं, तब इस हाथ से एक और तारामीन निकल जाती है । जन्म देने का विचित्र तरीका है ना ?*

प्रेम एक सहज मानवीय प्रवृत्ति है और युगों-युगों से ही वह मानव के विचारों में, मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति के रूप में स्वभावतः प्रकट होती आ रही है। प्रेम मानवीय व्यक्तित्व की उच्चतम उपलब्धि का प्रतिनिधित्व करता है। अस्तित्व के इस महासागर में प्रेम एक महानतम निधि है। प्रेम आकाशावतरित वह ज्योति तथा अमराग्नि की वह चिनगारी है, जिसमें ईश्वरीय शक्तियां भी अपना भाग बंटाती है और जिसे स्वयं ईश्वर ही मनुष्य को प्रदान करता है, जिससे मनुष्य अपनी तुच्छ वासनाओं से उबर सकें।

### प्रेम क्या है ?

प्रेम क्या है ? हम एक किसी से इस सीमा तक प्रेम क्यों करते हैं कि वह हमारे लिए सब कुछ हो जाता है। इसे सुगमतापूर्वक स्पष्ट नहीं किया जा सकता। एक साधारण अर्थ यह है

# प्रेम जीवन का मूल

कि दो अलग-अलग शरीरों में अवतरित, समान आत्मा के दो अर्द्धभाग एक दूसरे को पा लेते हैं और उनका परितोष ही वह है, जिसे हम प्रेम कहते हैं।

प्रेम रूपी रस को पीकर प्रेमी तृप्त नहीं होता है, किंतु यह सोचना कि इस प्रेम विटप में केवल मधुर फल ही होते हैं—नितांत भ्रम है। यह तो उनसे पूछिए जिन्होंने थोड़ा-बहुत भी प्रेम प्रसाद पाया हो यदि इसमें सुख ही सुख होता, तो नित्य प्रति झंझट और झुंझलाहट क्यों होती ? गालिब ने तो चेतावनी दी है कि—

**आशकी सब्र तलब और तमन्ना बेताब**

मन ऐसा कि मिलन की आतुरता में बेताब रहे और फल ऐसा न कि न जाने कितनी तपस्याओं पर हाथ आये— ऐसी खींच-तान में बेचारे हृदय की क्या दशा होगी— किंतु क्या यह दशा प्रेमी को उस दूरूह मार्ग से रोक पाती है ? नहीं, वह तो नित्य की चोटें खाकर आगे-ही-आगे बढ़ता जाता है। सच तो है कि प्रेम ही मनुष्य की कसौटी है। जिगर कहते हैं,

**क्या लुत्फ पूछते हो शौक जिंदगी के,**
**जी-जी उठा हूं मरके, मर गया हूं जी के।**

सचमुच ही बड़ा विचित्र जीवन होता है प्रेमी का। कभी नैराश्य के तिमिर में प्रेम-पात्र की दीप ज्योति देख जी पड़ता है, तो कभी उस ज्योति के पीछे दौड़ने पर और ज्योति के एकाएक मंद पड़ जाने पर हृदय मसोसकर मर उठता है। यही आशा और निराशा की आंख-मिचौनी उसके जीवन का नित्य का खेल है। इकबाल कहते हैं,

**अच्छा है कि दिल के साथ रहे पासवाने अक्ल**
**लेकिन कभी-कभी इसे तनहा ही छोड़ दे।**

या तो इस पथ पर चले नहीं और यदि चल ही पड़े तो आंख बंद करके चलते ही रहे—उस समय भगवती चरण वर्मा के शब्दों में 'किस

ओर चले यह मत पूछो, चलना है बस इसलिए चले ।'

### प्रेम सहिष्णुता का पाठ

प्रेम एक सहिष्णुता का पाठ भी है जिसमें वियोग, वियोग में प्रतीक्षा, प्रतीक्षा में आकुलता और अकुलता में उन्मत्तता —यही प्रेम पथ के पुष्प हैं । प्रेमी को प्रेम-पात्र की बाट जोहते-जोहते रात हो गयी, पौ फटने लगी फिर भी वह उस पथ पर नजरें लगाये बैठा है जिधर से उसके पदार्पण होने की आशा है । 'जिगर' ने इस दशा का इस तरह चित्रण किया है—

**'तारीफ होती जाती है रह-रह के कुल फिजा**
**फिर भी मरीजे हिज्र उमीदें सहर में है**

घबराना नहीं । ओ प्रतीक्षा में बैठनेवाले, रात बीतने की क्या चिंता, अभी तो सुबह बाकी है ।

प्रेमी प्रेम-पात्र से मिलने की आशा से निरंतर प्रेमिका द्वारा की गयी मीठी बातें याद आने और उसके कानों में गूंजने लगती है, तब वह उन्हीं से भावातिरेक हो आनंदित हो उठता है ।

शेक्सपियर ने एक स्थल पर लिखा है, "भाग्य का ठुकराया मैं जब अकेला बैठ के रोता हूं और परमात्मा से निष्फल प्रार्थना करता हूं और अपने भाग्य को कोसता हूं, तुम्हारे प्रेम की मधुर स्मृतियां जग उठती हैं और तब मैं अपना स्थान किसी चक्रवर्ती राजा से भी बदलना हेय समझता हूं ।"

वास्तव में वह प्रेम प्रेम नहीं, जिसमें विछोह नहीं हो । बिना इस प्रखराग्नि में जले हुए आत्मा की सांसारिक मलिनता नष्ट नहीं होती । इसलिए यह सच है कि मानव जीवन में प्रेम उतना ही आवश्यक है जितना परमेश्वर ।

ब्रिटिश लेखिका मेरी कारली ने लिखा है—

## ...मूल आधार

● रामानुज पंचोली

चला जा रहा है, उसे न अंधेरे से, न उजाले से मतलब है बस वह तो अपनी उन मधुर स्मृतियों को याद करता हुआ, उसी धुन में मिलने की आशा लिए बढ़ता चला जा रहा है किसी शायर ने कहा है—

**बैठा हूं मस्त बेखुद खामोश है फिजाएं**
**कानों में आ रही हैं भूली हुई सदाएं**

सारे संसार में सन्नाटा छा रहा हो और मनुष्य भी एकांत से घबरा रहा हो, एकाएक उसे

'संसार में दो शक्तियां राज्य करती हैं, एक तो पुरुष अथवा प्रेम और दूसरी स्त्री अथवा सौंदर्य और इन्हीं दोनों के संयोग का नाम है ईश्वर ।'

—बी-१ कृष्ण नगर द्वितीय,
गांधी नगर मोड़ के सामने,
टोंक रोड, जयपुर-३०२०१५

# मारवाड़ के गले का हार

● तोषचंद्र चौहान

मारवाड़ के गले का हार-सी लगती है, अरावली पर्वत श्रृंखला । बादलों को चूमते उन्नत शिखर, कोख से फूटते जल प्रपात, आधार से उफनते नाले, घने पेड़ों के झुरमुटों से छनकर आती निर्मल धूप, बड़ा मोहक है यहां प्रकृति का पसराव । मेवाड़ की सरहद तक पहुंचते-पहुंचते यह शैल-माला, इस धरती का अलंकरण कुछ खास तरीके से करती है, अपनी नैसर्गिक गोद में 'परशुराम महादेव' के साथ ।

मान्यता है कि विष्णु के अवतार, भीष्म, द्रोण और कर्ण के गुरु परशुराम, क्षत्रिय संहार के बाद यहीं छिपे और यहीं शिव की आराधना की । वे पहाड़ी की तलहटी में रहा करते थे, और समुद्र तल से कोई ३९५५ फुट की ऊंचाई पर अवस्थित शैल-शीर्ष पर विराजमान महादेव की आराधना किया करते थे । जनश्रुति है कि यह शिवलिंग स्वयं परशुराम ने पहाड़ी पर फरसे के प्रहार से बनाया था । यह पवित्र स्थल आज, पश्चिमी राजस्थान के जिला मुख्यालय पाली से तकरीबन ११० किलोमीटर के फासले पर है ।

पाली-उदयपुर बस मार्ग पर पूर्वोत्तर दिशा में कोई ९९ कि. मी. की दूरी पर आबाद है, दानवीर भामाशाह का गांव सादड़ी । यहीं से रास्ता बदलना होता है, परशुराम महादेव के लिए । निर्जन पहाड़ी कटावों भरा पथरीला लगभग ११ किलोमीटर लंबा रास्ता महादेव के चरणों में रुकता है । बस ! यहीं से चढ़ाई आरंभ होती है । 'अमर गंगा बावड़ी' नामक इस पड़ाव के कुछ आगे अधित्यका है । यहां पर धर्मशाला और कुंड बने हुए हैं । यहीं परशुराम का मंदिर भी है । मान्यता है कि कुंड के पास की इन्हीं कंदराओं में परशुराम रहा करते थे ।

यहां से आगे का कोई साढ़े चार किलोमीटर का मार्ग गोल-घुमावदार है । कहीं कच्चा पठार-सा तो कहीं सीढ़ियां लिये । कहीं-कहीं पर रेलिंग भी । घने पेड़ों और कूदते-फांदते वन्य जीवों के बीच गुजरता यह रास्ता श्रद्धालु को प्रकृति से सीधा साक्षात्कार कराता है । हां, एक छोटा-सा दूसरा पड़ाव 'अमर गंगा प्याऊ'

भी आता है, इस बीच । यह यात्रियों खासकर बच्चों, बुजुर्गों और महिलाओं के लिए विश्राम स्थल है । प्रकृति के साथ कुछ पल बिताकर श्रद्धालु अपने पोर-पोर को प्रफुल्लित महसूस करता है । अब मूल मंदिर स्पष्ट दिखलायी देने लगता है, जो एक प्राकृतिक गुफा में बना हुआ है ।

**फरसे से बनायी गयी गुफा**

कहा जाता है, पर्वत शिखर पर परशुराम ने फरसे से बनायी थी, यह गुफा । शायद फरसे से कटाव ही कारण रहा है कि गुफा की आंतरिक बनावट खासी रोचक बन पड़ी है । प्रकृति और कल्पना के सजीव मिश्रण-जैसे पर्वत-प्रस्तरों के कटाव कहीं-कहीं झूलते कंगूरों का-सा आभास देते हैं, तो कहीं कमल का, तो कहीं-कहीं गोथन का । इन प्रस्तरों पर भूरी-मटमैली रेखाएं तो कुदरती तौर पर यों उभरी हुई हैं, मानो शिव-पार्वती के नृत्यों के

**इतिहास-प्रसिद्ध दानवीर भामा शाह के गांव सादड़ी से ग्यारह किलोमीटर दूर प्रकृति की सुरम्य गोद में स्थित है परशुराम -महादेव का मंदिर । यहां वर्ष भर श्रद्धालुओं और पर्यटकों का आना-जाना लगा रहता है लेकिन राज्य सरकार है कि सादड़ी के आगे इस मार्ग पर बस नहीं चलाती । जो एक बस चला करती थी, उसे भी बंद कर दिया गया ।**

भित्ति चित्र चिपकायें हों । गुफा के भीतर कुछ छोटा आकार लिये एक और गुफा है । यहीं विराजमान हैं, 'महादेव' । पूरी तौर पर स्वयं-भू है, यह शिव लिंग । परशुराम यहीं तपस्या किया करते थे । उन्हीं के नाम से ये महादेव 'परशुराम महादेव' कहलाये ।

बरसात के मौसम में यहां का मंजर मौजदार होता है । गुफा की छत से जल कुछ यों टपकता है, मानो स्वयं इंद्र रुद्राभिषेक कर रहे हों । कटाव के बीच से झांकते हवा के झोंके गुफा के गर्भ गृह में पूरी निर्मलता भर देते हैं ।

हैहयवंशीय क्षत्रियों का कुल इक्कीस बार विनाश करने के बाद, परशुराम यहीं छिपे थे । इनका जन्म-स्थल सालेश्वर महादेव यहां से मात्र १०० किमी. के फासले पर है । महर्षि जमदग्नि के इस आश्रम में आज भी परशुराम की माता रेणुका और मौसी मेनका की प्रतिमाएं मौजूद हैं । मेवाड़ की सरहद में मौजूद मातृकुंड़िया, जहां परशुराम ने अपनी माता के वध का पाप धोया था, वह भी इस पावन स्थल से कुछ ही दूरी पर है । इस तरह यह स्थल परशुराम से जुड़ाव की भरी-पूरी प्रामाणिकता भी दर्शाता है ।

ऐतिहासिक और नैसर्गिकता से भरे-पुरे इस मंदिर में यों तो साल भर श्रद्धालुजनों का आना-जाना लगा रहता है, मगर शिवरात्रि और श्रावण सोमवार को यह तादाद हजारों में होती है । श्रावण शुक्ला छठी और सप्तमी को यहां जोरदार मेला लगता है । भारत भर से श्रद्धालु आते हैं । जोधपुर, उदयपुर और पाली से पैकेज टूर उपलब्ध होते हैं । खाने-पीने की दुकानों से लेकर फैशन और श्रृंगार तक की चीजों की हाठ लगती है । 'जय महादेव', 'जय बम भोले' के सामूहिक उद्घोष, शंखनाद, झालर ध्वनि और नाना किस्म के लोकवाद्य यंत्रों की वाद्य लहरियों के बीच परशुराम महादेव के दर्शन चौबीसों घंटे चलते हैं । भारी भीड़ के बीच बारी आते-आते चार-पांच घंटे तक लग जाते हैं ।

### भजन प्रतियोगिता

रात में यहीं पर पहाड़ी-पठार पर सादड़ी की अमर गंगा मंडल संस्था भजन प्रतियोगिता आयोजित करती है । प्रतिष्ठा की प्रतीक इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए दूर-दूर से पेशेवर और गैर पेशेवर भजन मंडलियां यहां पहुंचती हैं । क्षेत्रीय विधायक, जिला प्रशासन के आला अफसर, पुलिस दल और आकाशवाणी की टीम भी यहां पहुंच जाती है, भजन रेकॉर्ड करने और प्रतियोगिता का फैसला करने ।

बरसात का मौसम, उफनते नदी-नाले, जैन तीर्थ और भव्य नक्काशी लिए रणकपुर मंदिर और राणा कुंभा द्वारा बनाया कुंभलगढ़ किला भी आसपास होने से यहां पर्यटक भी काफी आते हैं । मगर राज्य सरकार है कि सादड़ी से आगे के इस मार्ग पर बस तक नहीं चलाती ! पहले एक चलती थी, वह भी बंद कर दी गयी । कई संस्थाओं और राजनीतिक दलों ने इसके लिए ज्ञापन दिये, मगर सब बेकार । पूरी पर्वतीय चढ़ाई के दौरान पेयजल की व्यवस्था भी स्वयंसेवी संगठन करते हैं ।

और एक बात, पर्यटन के नक्शे पर इसका उल्लेख भी नहीं है, जबकि यह पर्यटन का वर्ष है, खासकर गुमशुदा पर्यटक स्थलों पर पूरा ध्यान देने का ।

—१६ बड़ी ब्रह्मपुरी, पाली-मारवाड़ (राजस्थान)

सालेश्वर महादेव मंदिर परिसर में मेनका और रेणुका की प्रतिमाएं

परशुराम महादेव : स्वयंभू लिंग



छाया : भूषण

परशुराम महादेव : एक विहंगम दृश्य
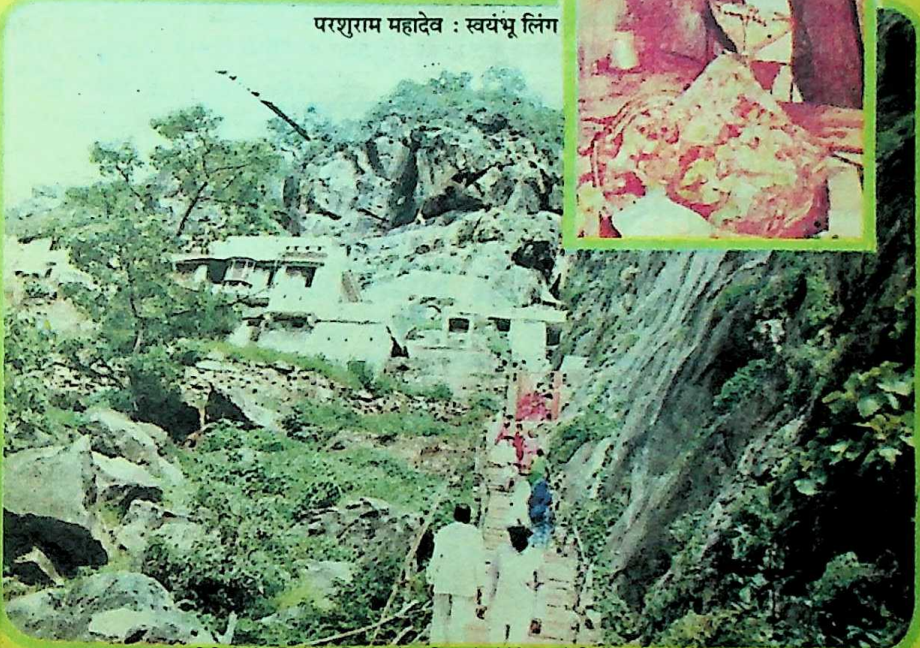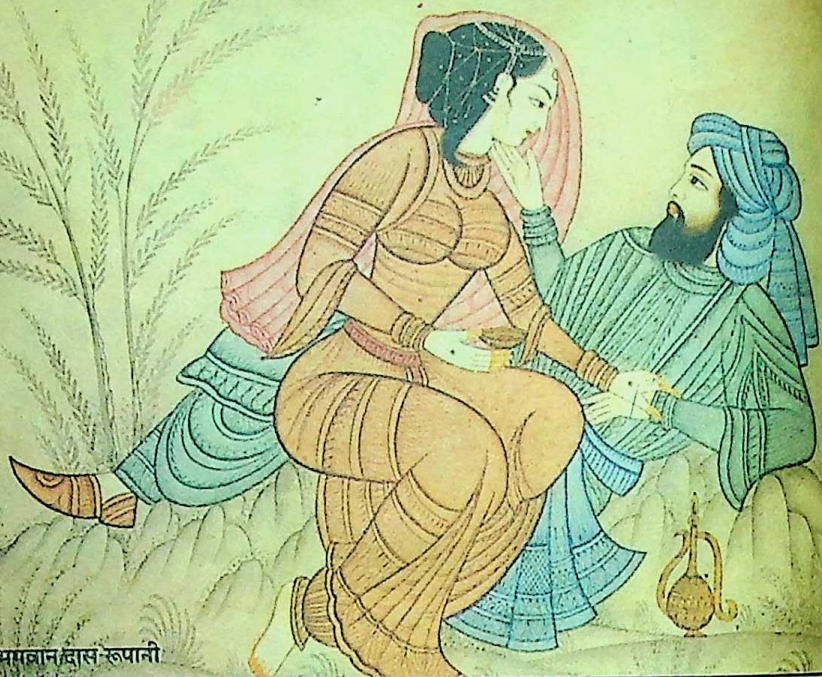
पारदर्शी : भगवान दास रूपानी

उमर खैयाम और साकी    चित्रकार की दृष्टि में

# उमर खैयाम उपनिषदों के सिद्धांतों के पालक ही नहीं प्रचारक भी

● डॉ. हरिवंश राय बच्चन

उमर खैयाम का जन्म ग्यारहवीं शताब्दी में हुआ और मृत्यु बारहवीं शताब्दी में । उनके जीवन और काव्य के विषय में संसार का कौतूहल उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में बढ़ा । उन्हीं के कहने का ढंग उधार लें तो कह सकते हैं कि यदि वे कल के सात हजार वर्षों के साथ नहीं तो सात सौ वर्षों के साथ तो अवश्य मिल चुके हैं । इन सात सौ वर्षों में फारस देश में कितनी हलचलें मचीं, कितनी राज्य-क्रांतियां हुईं, कितने आक्रमण हुए और कितने किये गये, कितनी लड़ाइयां और कितनी संधियां हुईं— और, कितने सुल्तानों की मीनारें ढह गयीं, कितने जमशेदों के दरबार खंडहर हो गये, कितने कैकुबाद और कैखुसरो आये और चले गये और कितने विद्वान और पंडित जग और जीवन की कहानी बूझकर मौन हो गये ।

हम आज चिर परिवर्तनशील इतिहास के सात सौ बरसों को भेदकर उमर खैयाम और उनके समय का फिर से साक्षात्कार करना चाहते हैं । इस कार्य में हमारी सहायता करनेवाले जो कुछ लेखादि मिलते हैं, वे अपर्याप्त हैं और प्रायः हमें अनुमान और कल्पना की शरण में जाना पड़ता है । हमारे लिए विशेष चिंता की बात तो यह है कि खैयाम के जीवन के जिस पक्ष में हमें सबसे अधिक कौतूहल है, उसके विषय में अतीत उतना ही उदासीन है ।

उन्नीसवीं सदी के पूर्व उमर की गणना दार्शनिकों में, गणितज्ञों में, ज्योतिषियों में थी, कवियों में नहीं । फिट्जेरल्ड ने जब उनकी रुबाइयों का अनुवाद किया तो उनके नाम के साथ उन्हें जोड़ना पड़ा— 'फारस के ज्योतिषी-कवि', ज्योतिषी पहले, कवि बाद को । संभवतः उमर ने अन्य विषयों में जो कुछ भी लिखा था, वह तो सबका सब प्राप्त हो गया है, पर उनकी कविता आज भी अंधकार के गर्भ में पड़ी हुई है । उनकी रुबाइयों की जो पांडुलिपियां खोजी गयी हैं, उनमें सबसे छोटी में लगभग दस और सबसे बड़ी में लगभग एक हजार रुबाइयां हैं । विभिन्नता इन पांडुलिपियों में इतनी है कि आज लगभग तीन हजार रुबाइयां उमर के नाम से संबद्ध हैं । इनमें से कितनी रुबाइयां उमर की स्वयं लिखी हुई हैं, कोई निश्चय से नहीं कह सकता । कुछ लोग यह समझते हैं कि शायद उमर ने और भी लिखा हो, खोज जारी है और प्रायः पुरानी रुबाइयों में जिनके लेखक का पता नहीं लगता, वे उमर के गले में डाल दी जाती हैं ।
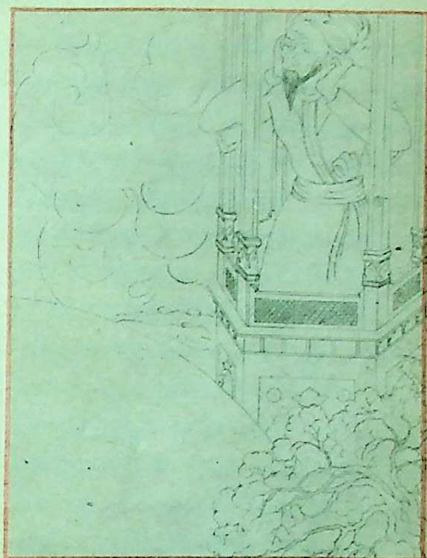
उमर ने लंबी उमर पायी थी, इसमें संदेह

सामने के पृष्ठ के चित्रकार : हरकिशन गोयल

नहीं, और उमर को यदि लिखने का व्यसन था, तो उन्होंने अपने यौवन से अपनी वृद्धावस्था तक समय-समय पर अपने अनुभवों और विचारों को वाणी दी होगी । उमर के व्यक्तिगत जीवन की उथल-पुथल को हम नहीं जानते, पर उमर स्वाध्यायी थे, विचारक थे, और इतना ही निर्विवाद माना जा सकता है कि कोई विचारक अपने समस्त जीवन में एक ही स्थान पर जड़-सा नहीं जमा रहता, वह दिनानुदिन बढ़ता है, विकसित होता है, बदलता है । उमर का लिखा जो कुछ भी हमें प्राप्त है, क्या वह उसी क्रम में है जिसमें उन्होंने लिखा होगा ? फारसी के दीवानों को लिखने की कृत्रिम वर्णानुक्रम विधि ने इस महत्त्वपूर्ण बात को हमसे सदा के लिए छिपा लिया है ।

उमर को समझने के लिए इतना ही जानना पर्याप्त नहीं है कि फलां रुबाई उनकी लिखी हुई है या नहीं— यह भी जानना जरूरी है कि फलां रुबाई उन्होंने अट्ठारह बरस की उमर में लिखी या अस्सी बरस की अवस्था में, और यह तो बताने की शायद ही जरूरत हो कि कोई भी संवेदनशील मनुष्य जो अठारह बरस की उमर में लिखता है, वही अस्सी बरस की उमर में नहीं लिखता । हम आज, उमर ने जो कुछ भी लिखा है, उसे बिना किसी तरतीब के सामने रखकर उसमें विरोधी सिद्धांतों, विचारों और मंतव्यों पर अचरज कर रहे हैं । हम पूछते हैं, उमर यदि एक विचार के थे तो उन्होंने दूसरे रूप में अपने को कैसे अभिव्यक्त किया ? हम शब्दों के अर्थों को तोड़-मरोड़कर उसके विचारों की एकता स्थापित करना चाहते हैं । हम वर्तमान उमर खैयाम की कल्पना नहीं करते । हम उमर खैयाम को मनुष्य के बजाय मूर्ति समझ बैठे हैं । उमर के संग्रहकर्ता वर्णानुक्रम से विषयानुक्रम पर आ गये हैं पर विकासमान उमर खैयाम का यथोचित संग्रह समयानुक्रम का ही हो सकता है । जहां तक मुझे ज्ञात है उमर की रुबाइयों को कोई ऐसा संग्रह नहीं किया गया । कार्य कठिन है और व्यक्तिगत झुकाव से कुछ हो जाने की संभावना भी है, परंतु यदि इस प्रकार का कोई संग्रह तैयार किया जाए तो वह बड़ा रोचक होगा । अभी थोड़े ही दिन हुए अंगरेजी में उमर खैयाम के जीवन आख्यान का रूप देने का प्रयोग किया गया है ।

**बहुत से ऐसे विवाद हैं कि उमर खैयाम नास्तिक थे या आस्तिक, परोक्षवादी थे या प्रत्यक्षवादी, पक्के मुसलमान थे या सूफी या रिंद अथवा और कुछ.... लेकिन इनसान की जिंदगी में सूफी और रिंद दोनों ही बनने के लिए मौके होते हैं..... ।**

उमर की कविता को कोई प्रेमी किसी दिन उनकी रुबाइयों को अवश्य इस प्रकार रखेगा कि जिससे उमर के विचारों और भावों का क्रमशः विकास प्रतीत हो । उस समय बहुत-से ऐसे विवाद कि वे नास्तिक थे या आस्तिक, परोक्षवादी थे या प्रत्यक्षवादी, पक्के मुसलमान थे या सूफी या रिंद अथवा और कुछ समाप्त हो जाएंगे क्योंकि इनसान की जिंदगी में नास्तिक और आस्तिक दोनों बनने के लिए स्थान है । मुसलमान और काफिर दोनों बनने के लिए मौके

हैं, सूफी और रिंद दोनों बनने के अवसर हैं ।

निशापुर, जिसका पुराना नाम ईराल शहर— आर्यन शहर— आर्य नगर था और जो खुरासान— क्षुरासन— सूर्यासन प्रदेश में स्थित था, फारस के नगरों का नमूना था । प्रकृति ने अपने हाथों से सजाकर इसे इतना रमणीय, सुंदर और मनमोहक बना दिया था कि अनवरी ने लिखा था कि पृथ्वी पर यदि कहीं स्वर्ग है तो वह निशापुर है । शिक्षा और संस्कृति का भी वह केंद्र था, नगर में कई महाविद्यालय, बहुत-से पुस्तकालय तथा कितने ही विद्वान थे । साथ ही भारत और यूनान के व्यापार मार्ग पर स्थित होने के कारण दोनों देशों की विदग्ध धाराओं से वह सदियों से अभिसिंचित होता आया था । जान पेन का कथन है कि वहां पर कई ऐसे पंथ थे जो वेदांतवादी थे । केवल राजधर्म इसलाम के आतंक से अपनी रक्षा करने के लिए उन्होंने उसके कुछ बाह्य उपकरणों को स्वीकार कर लिया था । और, निशापुर में इसलाम का आतंक भी था, इसलाम की कट्टरता भी थी, इसलाम की असहिष्णुता भी थी ।

इसी निशापुर में उमर खैयाम का जन्म हुआ, शिक्षा-दीक्षा हुई और जीवन का अधिक सम्य बीता । निशापुर के वातावरण में जितनी भी विरोधी वृत्तियां थीं उमर ने उन सबका अनुभव किया और उनकी कविता उन्हीं वृत्तियों के संघर्ष का परिणाम है । जिस युग में धर्म का सामाजिक जीवन से अत्यंत घनिष्ठ संबंध था, हम किसी जागरुक और विचारवान आत्मा की अशांति, अस्थिरता और अनिश्चय की उद्विग्नता का अनुमान भली-भांति कर सकते हैं । यदि यह संघर्ष उमर के जीवनभर चलता रहा तो फारस भर में उनसे अधिक व्यग्र, विचलित और उदास कोई भी मनुष्य नहीं था ।

रुबाइयों का रचनाक्रम न जानने से यह कहना कठिन है कि उनका विकास किस प्रकार हुआ होगा, फिर भी मेरी एक कल्पना है । अपने यौवन काल में जबकि मनुष्य की प्रवृत्तियां स्वयं ही रागात्मक होती हैं एक ओर तो फारस की विनाशमयी भूमि ने उन्हें अपनी ओर खींचा होगा और दूसरी ओर उनके विज्ञान, ज्योतिष और दर्शन के नवीन ज्ञान के अभिमान ने उन्हें नास्तिक और इहलोकवादी बना दिया होगा । इस समय वे 'मदिरा और मदिराक्षी', 'सुरा और सरक' की ओर झुके होंगे और ऐसा करने से अवश्य ही सूफियों और कट्टर मुसलमानों के कोपभाजन बने होंगे, जिनमें कुछ ने उन्हें मार डालने तक की धमकी दी थी । उमर की कितनी ही रुबाइयों में इसका संकेत मिलता है । लेकिन उमर जैसे विचारवान को प्याली और प्यारी सदा नहीं लुभा सकती थी । साथ ही यह आभास हुआ होगा कि यह तृष्णा बुझाने के प्रयत्न में बढ़ती ही जाती है । प्रौढ़ावस्था पर पहुंचने पर यौवन का ज्वर ठंडा हुआ होगा और ज्ञान की केथा भीगकर भारी हुई होगी । उस समय उमर स्वयं सूफी अथवा अद्वैतवादी हो गये होंगे । जान पेन की सम्मति है कि अपने जीवन में एक समय उमर उपनिषदों के सिद्धांतों के पालक ही नहीं, उनके प्रचारक भी थे और उनकी बहुत-सी रुबाइयों की व्याख्या केवल वेदांत के सिद्धांतों पर ही हो सकती है ।

**(संदर्भ : बच्चन की मधुशाला')**

**उमर खैयाम और उनकी रुबाइयों का चित्रांकन भारतीय चित्रकारों के प्रिय विषयों में से एक रहा है। यही कारण है कि उमर खैयाम के चित्र एक साधारण व्यावसायिक चित्रकार से लेकर मूर्धन्य चित्रकारों तक ने बनाये हैं... एक लंबी श्रृंखला रही है उमर खैयाम के चित्रों की...**

# उमर खैयाम चित्रकारों की निगाह में

● डॉ. जगदीश चंद्रिकेश

उमर खैयाम ने जिस प्रकार काव्य-रसिकों व साहित्यकारों को आकर्षित किया है, वैसे ही चित्रकारों को। उमर खैयाम, मुख्यतः फिट्जेरल्ड के अंगरेजी काव्यानुवाद के माध्यम से भारत में आये और अंगरेजी के माध्यम से भारतीय भाषाओं में। उमर खैयाम ने भारतीय चित्रकारों में सबसे पहले अवनींद्रनाथ ठाकुर को प्रभावित किया। इस सदी के आरंभ में, अवनींद्रनाथ ठाकुर ने, जो बंगाल चित्रकला शैली के जनक थे, कलकत्ता आर्ट स्कूल के प्रिसीपल ई.बी. हैवेल के पास पहली बार राजपूत-मुगल और फारसी शैली के चित्रों के एल्बम देखे थे। उन्होंने अपनी कला-साधना में इन शैलियों के प्रभावों को ग्रहण किया और एक लंबी कला-साधना के बाद अपनी एक निजी कला-शैली का विकास किया, जो आगे चलकर बंगाल चित्रकला शैली कहलायी।
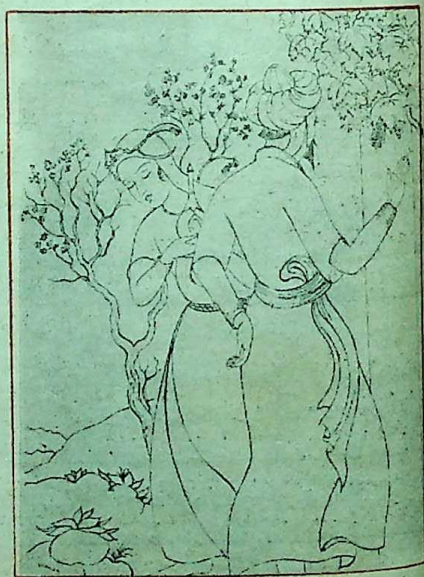
**'उमर खैयाम' चित्रमाला का एक चित्र : चित्रकार : असित कुमार हाल्दार**

अब्दुर रहमान चुगताई की उमर खैयाम चित्रमाला का एक चित्र

सन १९०६ से १९११ के बीच के पांच वर्षों में अवनींद्रनाथ ठाकुर द्वारा जिन चित्रों की रचना हुई, उनमें उमर खैयाम चित्रमाला के चित्र भी उल्लेखनीय हैं । उल्लेखनीय इसलिए भी कि उमर खैयाम चित्रमाला के चित्रों में बंगाल चित्र-कला शैली की विशेषताओं को उनकी परिपक्वावस्था में देखा जा सकता है, जैसे, जापानी चित्रकला से ली गयी प्रक्षालन-विधि (वाश मैथड), फारसी चित्रकला की हस्त-लेख शैली, पाश्चात्य चित्रकला शैली का उभार-छाया एवं प्रकाश का अंकन तथा प्राचीन भारतीय चित्र-शैलियों व मूर्तिकला का रूप-विधान और लयात्मकता ।

उमर खैयाम चित्रमाला के चित्रों में अवनींद्रनाथ ठाकुर ने अपने अन्य चित्रों की तरह रंग-योजना के अंतर्गत जापानी प्रक्षालन-विधि के साथ ही साथ रंगों में प्रायः श्वेत रंग का सम्मिश्रण किया, जिससे चित्रों में एक रहस्यमय प्रभाव की सृष्टि हुई । चित्रों में रंग प्रभाव की यह रहस्यात्मकता भी इन चित्रों की एक आधारभूत विशेषता है । उमर खैयाम चित्रमाला के अंतर्गत उनके बनाये चित्रों की संख्या कम से कम छह से अधिक थीं, जिनमें से दो चित्र कलकत्ता के राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत हैं, शेष चित्रों के बारे में कुछ पता नहीं कि वे कहां हैं, और हैं भी या नहीं ? क्योंकि उनके बहुत-से चित्र इधर-उधर हो गये और कुछ नष्ट भी हो गये ।

अवनींद्रनाथ ठाकुर के बाद उमर खैयाम ने सबसे अधिक आकर्षित किया असित कुमार हाल्दार को । असित कुमार हाल्दार (सन १८९०-१९६४) ठाकुर परिवार के निकट संबंधी और अवनींद्रनाथ ठाकुर के प्रारंभिक शिष्यों में नंदलाल बोस के सहपाठी थे । असित कुमार हाल्दार को उमर खैयाम की रुबाइयों ने शुरू से भी बहुत प्रभावित किया । उनके प्रारंभिक चित्रों में ही उमर खैयाम की रुबाइयों पर आधारित चित्रांकन हैं । इन प्रारंभिक चित्रों में उमर खैयाम चित्रमाला के बारह चित्रों की एक श्रृंखला विशेष उल्लेखनीय है । रुबाइयों के इन चित्रांकनों (इलस्ट्रेशन) के बारे में कलकत्ता आर्ट स्कूल के तत्कालीन प्रिंसीपल ई. बी. हैवेल ने लिखा है कि 'उमर खैयाम की रुबाइयों का चित्रण करनेवाले भारतीय और यूरोपीय बहुत से चित्रांकन हैं, लेकिन कोई भी प्रवाह और निश्चितता के साथ

रुबाइयों की कोमलता को छू नहीं सका है । ऐसी स्थिति में हाल्दार ने अपनी तकनीक (बंगाल शैली) में मुगल दरबारी चित्रकारों की श्रेष्ठ कला-परंपरा का अनुसरण करते हुए प्रत्येक रुबाई के चित्रांकन में अपनी सृजनात्मक कल्पना-शक्ति और लयात्मक सौंदर्यानुभूति की निजी मोहर लगा दी है ।'

ई. बी. हैवेल ने अपना यह अभिमत सन १९३० में इलाहाबाद से प्रकाशित असित कुमार हाल्दार की 'दी रुबाइयात ऑव उमर खैयाम' शीर्षक एल्बम की भूमिका में दिया है ।

असित कुमार हाल्दार उमर खैयाम को चित्रित कर यहीं नहीं रुक गये, बल्कि वह आगे भी उमर खैयाम को चित्रित करते रहे । उन्होंने उमर खैयाम को लगभग बारह चित्रमालाओं में चित्रित किया है, जिनमें कुछ केवल स्याही से बनाये रेखांकन भी हैं । ऐसा ही एक ब्रुश से बनाया काली स्याही का रेखा-चित्र उनकी लड़की अतासी बरुआ के निजी संग्रह में है । इन चित्रमालाओं में से एक चित्रमाला जिसमें बारह चित्र हैं, श्रीमती पूर्णिमा देवी के निजी संग्रह में है ।

यों तो हाल्दार के कई शिष्यों और समकालीन चित्रकारों ने उमर खैयाम को अपने चित्रों का विषय बनाया जैसे क्षितींद्रनाथ मजूमदार रामगोपाल विजयवर्गीय आदि, लेकिन इन सबमें अब्दुल रहमान चुगताई सर्वाधिक उल्लेखनीय चित्रकार हैं, जिन्होंने उमर खैयाम की रुबाइयों को चित्रित कर उन्हें एक नया रंग-रूप, कोमल-कमनीयता व गत्यात्मक-लय दी । वस्तुतः चुगताई ने उमर खैयाम के चित्रांकनों को जो सौंदर्य और गरिमा प्रदान की है, वह अनूठी और अतुलनीय है ।

कला-मर्मज्ञ डॉ. जेम्स एच. कजिंस के अनुसार चुगताई के चित्रों की विशेषता उनकी कला का पौरवात्य (फारसी) चारित्रिक गुण है । उनके चित्रों के मनोभाव मृदुल और विश्रांतिदायक हैं । चुगताई ने अपनी कला में यद्यपि फारसी कला-परंपरा की एक विशिष्ट मनस्थिति और मुद्रा को संजोये रखा है, लेकिन इसके साथ ही उन्होंने चित्रों में माधुर्यपूर्ण रंग-संयोजन और सुरुचिपूर्ण रेखाओं द्वारा अपनी निजी विशेषताएं भी पैदा की हैं । उनकी रेखाएं चित्र की रेखाएं न होकर ऐसी प्रतीत होती हैं कि उन्होंने कोई स्तब्ध कविता मूर्तिमंत कर दी हो । आकृतियों के परिधानों के मोड़ों का अंकन मात्र शरीर ढके जानेवाले वस्त्रों का अंकन नहीं बल्कि चित्र-अलंकरण का एक महत्त्वपूर्ण अंग है ।

सन १९३० में लाहौर से प्रकाशित 'चुगताई'ज आर्ट' शीर्षक एलबम की संपादक सुश्री रजिया सिराजुद्दीन का कहना है कि चुगताई के चित्रों की आकृतियां इस्लामी स्थापत्य की अलंकारिक पृष्ठभूमि पर आधारित सौंदर्य की सर्वमान्य श्रेष्ठ आकृतियां हैं, जो कल्पना के स्वप्नलोक की उन्मुक्त एवं स्वच्छंद नागरिकता के लिए हमारा आह्वान करती हैं । चुगताई की इन्हीं विशेषताओं के कारण उनकी बनायी उमर खैयाम चित्रमाला और भी विशिष्टता प्राप्त कर गयी है । उमर खैयाम चित्रमाला का एक चित्र जो दिल्ली की राष्ट्रीय आधुनिक कला-वीथी में संरक्षित है, देखते ही हमें कल्पनालोक का उन्मुक्त नागरिक बना देता है ।

# दस प्रेम कहानियां

रात्रि का तीसरा प्रहर प्रारंभ होने को था । मूमल और राणा एक-दूसरे को निहारे जा रहे थे । मरूस्थल की शांत शीतल रात्रि में मूमल की मैड़ी प्यार और मनुहार की बातों से भर गयी । मूमल और महेंद्र का प्यार गीतों की झंकार में मुखर हो उठा ।

"मूमल, अब बहुत देर हो रही है, जाने दो ! इच्छा तो यही करती है कि यहां से न जाऊं, पर मजबूरी है । महेंद्र ने उसे सहलाते हुए

यह सिलसिला निर्बाध गति से चलता रहा, प्रेम की पींगें बढ़ती रहीं और प्यार अपना रंग लाने लगा । छह महीने बीत गये ।

सौंदर्यरस की प्रतीक मूमू अपनी दुनिया में बड़े ठाट-बाट से रहती थी । उसकी मैड़ी में जीवन की सौंदर्य और विलासिता में जाने की समस्त सामग्रियां उपलब्ध थीं । वह अपनी सहेलियों से अठखेलियां करती अल्हड़ता से जीवन व्यतीत कर रही थी ।

# मूमल की मैड़ी

● एच. भीष्म पाल

कहा और उसकी पलकों पर अपने होंठ रख दिये ।

आनंद विभोरित मृमल कुछ न बोल सकी । पलकें झुकाती, हल्की-सी मुसकान बिखेरती महेन्द्र को निहारे जा रही थी । कल फिर मिलने का वादा लेकर वह भीतरी कक्ष की ओर दौड़ गयी ।

राणा महेन्द्र अपनी मूमल से दूसरे दिन का वचन बांधकर, भोर होने से पूर्व महल में पहुंचकर अपनी शैया पर सो गया ।

और अब हर रात यही सब होता । रात्रि शुरू होने पर राणा महेन्द्र अमर कोट से चलता, लोद्रवा में मूमल की मैड़ी पहुंचता और प्रातः होने से पूर्व ही अमर कोट अपने महल में लौट आता ।

वास्तविक जीवन से अनभिज्ञ वह अपनी सहेलियों से अठखेलियां करतीं । उनके साथ नाचती, गाती और रीझती-रिझाती ।

"ऐ मूमल ! क्या तूने कभी ऐसे पुरुष के बारे में सोचा है जो कभी तुझे अपनी प्रियतमा स्वीकार करेगा । अब यह खेल काफी हो गया, जीवन के बारे में भी सोच ।" एक सहेली ने उसे बड़ी गंभीर मुद्रा में समझाते हुए कहा ।

मूमल यह सुन जोर-जोर से हंसने लगी । सखियों के साथ उसका यौवनोज्जवल परिहास सारे वातावरण में गूंजने लगा । सखियों के साथ रासलीला होने लगी ।

और फिर मूमल अकस्मात ही गंभीर हो गयी । वह वहां से निकल भागी और दूर जाकर एक पत्थर के सहारे ऊंचे स्थान पर बैठ गयी ।

**आनंद विभोरित मूमल कुछ न बोल सकी । पलकें झुकाती, हल्की-सी मुसकान बिखेरती महेन्द्र को निहारे जा रही थी । कल फिर मिलने का वादा लेकर वह भीतरी कक्ष की ओर दौड़ गयी ।**

उसकी प्रिय सहेली दीपा से यह दृश्य देखा न गया और मूमल के पास जाकर वह उसे निहारने लगी ।

"अरी दीपा ! तू क्यों मेरे विवाह के लिए इतनी चिंता करती है ? मैं उस पुरुष की प्रतीक्षा कर रही हूं जो मेरी कल्पनाओं में साकार है और वह स्वयं भी एक दिन तूफान की तरह आएगा और मुझे वरण कर लेगा । इससे पूर्व मैं अवश्य ही अपनी कसौटियों पर उसे परखूंगी । मैडी की भयानकता का चक्रव्यूह तोड़ना इतना आसान नहीं है ।"....मूमल ने उत्तेजित होते हुए कहा ।

मूमल फिर सोच में पड़ गयी और कल्पना की दुनिया में उड़ने लगी । क्या यदि उसका साहसी वीर और पौरुष का धनी प्रियतम उसके सामने आ गया तो उसे पहचान सकेगी । अप्रतिम सौंदर्य का आकर्षण और प्रेम की तीव्रता अवश्य ही इसमें सहायक होगी । मूमल के सौंदर्य की चर्चा पास-पड़ोस के रजवाड़ों में होने लगी । अनेक साहसी युवकों ने मैडी तक पहुंचने का प्रयास किया, परंतु उसकी भयानकता और कठिन मार्ग ने उनके हौसले पस्त कर दिये । लोदखा का मार्ग उन्हें अति कठिन नजर आने लगा । पतंगों की तरह अनेक राजकुमारों ने मैडी नुमा दीपक पर छटपटाहट की और वापस लौट गये ।

मूमल उदास-सी रहने लगी । अपने चारों

**ऐ मूमल ! क्या तूने कभी ऐसे पुरुष के बारे में सोचा है जो कभी तुझे अपनी प्रियतमा स्वीकार करेगा । अब यह खेल काफी हो गया, जीवन के बारे में भी सोच ।**

ओर बिछाये कांटेदार जालों को देख वह घबरा उठती कि क्या उसका सपना साकार होगा । क्या कोई वीर उसकी बाहों के सामीप्य और शरीर की गरमी को समेटेगा ।

और फिर समय आ गया । मूमल को आभास हुआ कि उसके सपने का राजकुमार शीघ्र ही मिलेगा । वह आखिर कब तक अकेली अपने खिले यौवन से स्वयं ही अठखेलियां करती रहेगी ।

अमर कोट राज्य का युवा राजा अपनी बहन और बहनोई को विदा देने के लिए जा रहा था । एक स्थान पर सुंदर केकड़े के पेड़ों की खुशबू और चारों ओर फूलों की हरियाली ने उसके पग आगे बढ़ने से रोक दिये । कारू नदी के किनारे उसने अपना पड़ाव डाल दिया और यहीं से ही अपने बहनोई और बहन को विदा कर दिया ।

राणा महेन्द्र अपनी यह मनः स्थिति देख विचलित हो उठा । उसे किसी परम सुंदरी के सहवास का आभास होने लगा । महेन्द्र को नदी के दूसरे किनारे पर स्थित पेड़ों के झुंड में से एक द्वारनुमा परकोटे का संकेत नजर आया । वह अपने आपको रोक न पाया और झट से कारू नदी में कूद पड़ा । नदी को पार कर वह उस विचित्र द्वार की ओर बढ़ गया । उसके समीप पहुंचते ही द्वार अकस्मात खुल गया । वह चीतों, कौओं और अन्य जानवरों की आवाज में से होता हुआ आगे बढ़ा । महेन्द्र मुसकराता हुआ आगे बढ़ रहा था कि उसके सामने ही एक दासी उपस्थित हुई । दासी ने आदर सहित उसे एक ओर आगे बढ़ने का इशारा किया । वहां उपस्थित दासियों ने राणा महेन्द्र का स्वागत किया और आदरसहित गद्दी पर बिठवा दिया ।

महेन्द्र अति उतावला हो रहा था । वह रूपसी के दर्शन के लिए तड़प रहा था । थोड़ी देर में स्वप्न सुंदरी मूमल वहां स्वयं आ गयी । महेन्द्र और मूमल ने एक-दूसरे को देखा । थोड़ा मुसकराये और फिर दोनों ही आलिंगनबद्ध हो गये । दोनों ही प्रेमियों को इस अवसर का इंतजार था । समय निकलता गया दोनों वार्तालाप में इतने व्यस्त थे कि पता ही नहीं रात्रि कब समाप्त हो गयी । महेन्द्र अचानक हड़बड़ा कर उठा और उसे स्मरण हुआ कि सूर्य उगने से पूर्व हर हालत में उसे अमरकोट पहुंचना है । मूमल नहीं चाहती थी कि महेन्द्र इतनी जल्दी उससे विदा ले । वर्षों के इंतजार के बाद उसे अपने अनुरूप साथी मिला था । अपने आपको उस पर न्यौछावर करने का उसने अपने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया था । महेन्द्र ने अगले दिन फिर मिलने का वादा कर मूमल से विदा ली । मूमल टकटकी लगाये उसे देखती रही जब तक कि महेन्द्र उसकी आंखों से ओझल न हो गया ।

प्रेम मिलन का सिलसिला चल निकला । दूसरे दिन महेन्द्र ने अपने ऊंटों के अस्तबल में से सबसे तेज गति से दौड़नेवाली सांडनी का चयन किया और लोदरवा की ओर निकल

चला । द्वितीय प्रहर रात्रि का आरंभ होते न होते राणा महेन्द्र मूमल की मैडी के द्वार पर जा पहुंचे ।

सपनों में खोयी मूमल अपने घर की दहलीज पर पड़े मूढ़े पर बैठी अपने प्रियतम का पथ निहार रही थी । महेन्द्र को अपने सामने खड़ा देख मूमल आत्म-विभोर हो गयी ।

मरूस्थल की शांत शीतल रात्रि में मूमल की मैडी दो प्रेमियों की मधुर बातों और आलिंगनों से भर गयी । दोनों का प्यार गीतों की झंकार में मुखर हो उठा । भविष्य के सपनों के महल बनाने लगा ।

महेन्द्र ने देखा रात्रि समाप्ति पर है । वह अनिच्छा से उठा और फिर मिलने का वादा कर अपनी प्रिय ऊंटनी पर बैठ मूमल से विदा ली ।

छह महीने तक ये प्रेमालाप निर्बाध गति से चलता रहा । महेन्द्र प्रत्येक रात्रि को आता और प्रातः होने से पूर्व ही मूमल से मिल वापस अपने महल में चला जाता ।

महेन्द्र की सात अन्य रानियां थी । वे सब असमंजस में थीं कि महेन्द्र अब रात्रि को उनमें से किसी के पास भी सहवास के लिए नहीं आता । वे चौकस हो गयीं और उन्होंने अपने जासूस छोड़ दिये ।

जासूसों ने सूचना दी कि राणा प्रत्येक रात्रि को अपनी सांडनी पर बैठ पूर्व की दिशा में जाता है और प्रातः से पूर्व लौट आता है । रानियों ने अपनी सास से शिकायत की । वह बहुत क्रुद्ध हुई और उसने सांडनी को ही मरवा दिया ।

अगली रात्रि को जब महेन्द्र जाने के लिए तैयार हुआ तो उसे पता चला कि सांडनी तो

मरवा दी गयी है । इसकी चिंता न कर उसने राइका से दूसरी सांडनी मंगवायी और उस पर बैठ अपनी प्रियतमा मूमल को मिलने चल पड़ा । महेन्द्र के मन में अनेक विचार आ रहे थे । उसने लगभग यह निश्चय कर लिया कि वह आज मूमल से विवाह का प्रस्ताव रख देगा । भला कब तक यह लुका-छिपी का खेल चलता रहेगा ।

सांडनी ने मूमल के महल में प्रवेश किया । राणा को अचरज हुआ कि आज वहां कोई चौकीदार नहीं था । वह शीघ्र ही सांडनी से उतर

अंतस्थल की ओर बढ़ा । उसके कदम अभी बढ़ने को ही थे कि उसने देखा मूमल एक पुरुष की बाहों में पड़ी सो रही थी । महेन्द्र का सिर चकरा उठा । उसने घृणा की दृष्टि से देखा और वापस मैडी से बाहर आकर लौट गया ।

मूमल की अचानक नींद खुली । प्रातः होने को थी । उसने बाहर झांका तो पता चला कि उसका प्रियतम उससे मिलने आया था ।

वास्तव में बात कुछ और ही थी । मूमल की बहन सूमल कई वर्षों पश्चात उससे मिलने आयी थी । दोनों बहनें नृत्य गीतों में व्यस्त हो गयीं । ज्यों रात होने लगी मूमल विचलित होने लगी । सूमल ने उससे असली राज जान ही लिया । उसने उसे प्रसन्न करने के लिए नयी विधि सोची । सूमल पुरुष वेशभूषा धारण कर मूमल से उसी तरह प्यार करने लगी जैसे महेन्द्र उसे करता था । इसी चुहल-पहल में रात बीतने लगी और दोनों ही दिनभर के राग-रंग से थकी-हारी आलिंगनबद्ध एक ही पलंग पर सो गयीं ।

उस रात्रि के पश्चात प्रत्येक रात्रि को मूमल महेन्द्र का इंतजार करती । महेन्द्र ने मुख मोड़ लिया और उसकी मैड़ी की ओर नहीं झांका । मूमल ने अनेक संदेश भेजे पर उसे निराशा ही हाथ लगी ।

मूमल ने अमर कोट जाने का निश्चय कर लिया ।

महेन्द्र के महल के सामने मूमल की पालकी जाकर खड़ी हो गयी । अंदर जाने की स्वीकृति मांगी गयी । महेन्द्र ने मूमल से मिलने के लिए इंकार कर दिया । मूमल ने महेन्द्र के दर्शन के लिए फिर प्रार्थना की । महेन्द्र अपनी जिद पर अड़ा रहा । मूमल निराश हो गयी । उसे अपना जीवन निरर्थक-सा नजर आने लगा । वह अपने पड़ाव से बाहर निकली और पास के तालाब में छलांग मार दी । राजा महेन्द्र ने जब इस वीभत्स कांड को सुना तो उसका मन ग्लानि से भर उठा ।

महेन्द्र अपने महल से बाहर निकला और नंगे पैर ही जलाशय की ओर दौड़ने लगा, जहां उसकी प्रियतमा मूमल की लाश पड़ी थी । वह इस दृश्य को न देख सका और जलाशय में कूद गया । इस जन्म में न सही अगले जन्म में मूमल से मिलने का उसने दृढ़ निश्चय कर रखा था ।

—७०६, लक्ष्मी बाई नगर, नयी दिल्ली-२३

*प्रेम व्यथा तन में बसे, सब तन जर्जर होय ।*
*राम वियोगी ना जिए, जिए तो बौरा होय ।।*
*यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहिं ।*
*सीस उतारै भुंइ धरै, तब पैठे घर माहिं ।।*
*रस अनरस समझे न कछु, पढ़ै प्रेम की गाथ ।*
*बीछू मंत्र न जानहीं, सांप पिटारे हाथ ।।*

—वृंद

*हिंदू कहैं सो हम बड़े, मुसलमान कहैं हम*
*एक मूंग दो फाड़ हैं, कुण ज्यादा कुण कम्म*
*कुण ज्यादा कुण कम्म, कमी करना नहिं कजिया*
*एक भगत हो राम, दूजा रहिमान से रजिया*
*कहैं दीन 'दरवेश' दोय, सरिता मिल सिंधू*
*सब का साहब एक, एक मुसलिम एक हिंदू*

हिंदू कहते हैं कि हम सबसे बड़े हैं, ऊंचे हैं, श्रेष्ठतम हैं और यही बात मुसलमान भी कहते हैं कि हम सबसे बड़े हैं, ऊंचे हैं, श्रेष्ठतम हैं, लेकिन ये दोनों इस बात को क्यों नहीं समझते कि वे मूंग की दाल के एक दाने के दो हिस्से हैं, जिसमें से न कोई दूसरे से बड़ा है, न छोटा । इसलिए किसी को भी एक-दूसरे से छोटा या नीचा नहीं समझना चाहिए; यदि अंतर है तो केवल इतना कि एक राम का भक्त है, तो दूसरा रहमान का, लेकिन ये राम और रहमान भी

# हिंदू मुसलमान एक हैं

तो एक ही हैं, जिस प्रकार दो नदियां समुद्र में मिलकर एक हो जाती हैं, ठीक वैसे ही सभी का स्वामी परमेश्वर एक ही है चाहे वह मुसलमान हो या हिंदू हो ।

*बंदा बहुत न फूलिये, खुदा खिवेगा नाहिं*
*जोर जुलम कीजै नहिं, मिरतलोक के माहिं*
*मिरतलोक के माहिं, तजुरबा तुरत दिखावै*
*जो नर करै गुमान, सोई जग खत्रा खावै*
*कहै दीन 'दरवेश', भूल मत गाफिल गंदा*
*मिरतलोक के माहि, फूलिये बहुत न बंदा*

हे प्राणी, व्यर्थ का गर्व न कर । गर्व करने से भगवान नहीं मिलता, इसलिए सभी से हिल-मिलकर प्रेम से रहना चाहिए । इस मृत्युलोक में किसी पर जोर-जुलम मत कीजिए । जोर-जुल्म अपना प्रभाव तत्काल ही दिखाता है, ऐसे अत्याचारी और अभिमानी पुरुष इस संसार में डूब जाते हैं । इसलिए अभिमान के वशीभूत हो ईश्वर को मत भूल । इस मृत्यु लोक में अभिमानी व्यक्ति का भगवान बेड़ा पार नहीं लगाते ।

# पुनरारंभ

● वीरेन्द्र सक्सेना

**अपने पिता के विरोध के कारण वह अपनी प्रेमिका से विवाह न कर पाया । पिता के निर्देश पर उसने जिस लड़की से विवाह किया, वह भी उसे छोड़कर चली गयी । ऐसे में एक दिन उसके पास विनीता आयी, कमरा मांगने के लिए । फिर क्या हुआ....,**

'कितना आसान है किसी भी बारे में निश्चय कर लेना, पर साथ ही कितना कष्टप्रद और मुश्किल है उस निश्चय पर अमल करना'—पवन ने पल भर को सोचा, फिर बेमन से सामने पड़ी कुरसी को गंदी-सी मेज के पास खींचकर बैठ गया ।...होटल का नौकर अभी आटे को गूंथ रहा है; तंदूर पर रोटी सिंकने में अभी कुछ मिनट लगेंगे—सोचकर पवन ने पानी का गिलास उठाकर पी लिया और सड़क की दूसरी ओर नयी-सी इमारत को देखने लगा । इतने में एक कार तेजी से सड़क पर गुजरी और धूल की धुंध को पीछे छोड़ गयी । पवन ने बेबसी की एक दृष्टि अपने कपड़ों पर आ गयी गर्द पर डाली और सड़क की ओर पीठ करके बैठ गया ।

....इतने दिनों बाद अब पुनः एक बार इन गंदे भोजनालयों में सड़ी-गली सब्जियां खानी पड़ रही हैं । मन तो देखने तक को नहीं होता लेकिन विकल्प भी क्या है आखिर ? हां, चार वर्ष पहले बरेली में भी यही समस्याएं थीं, तब भी इन पर कितना सोचा था ! और अंत में सब ओर से परेशान होकर स्वयं ही घर पर पकाना

शुरू किया था । सुबह को खिचड़ी या पुलाव और शाम को एक सब्जी और परांठे । विविधता न होने पर भी गुणता और तृप्ति का संतोष तो रहता ही था एक प्रकार से । और पूरा का पूरा वर्ष इसी प्रकार मजे में बिता दिया था ।

लड़के द्वारा दाल-सब्जी की प्लेटें मेज पर रखी गयीं तो पवन के सोचने में व्यवधान पड़ा । उसने अजनबी नजरों से लड़के को देखा, मानों उसे स्वप्न देखते समय झकझोर दिया गया हो । प्रगट में पूछा, 'और कोई सब्जी नहीं है ?'

'स्पेशल है सा'ब, लाऊं ?'—फिर लड़का नाम गिनाने लगा, तो पवन ने सूखी भिंडी लाने को कह दिया । यों उसने भिंडियों को 'आर्डर' यादृच्छया ही दिया था, लेकिन देने के बाद ही खयाल आया कि राज्यश्री को भी भिंडियां कितनी पसंद थीं । अब भी उतनी ही पसंद होंगी क्या ? कौन जाने...तुरंत ही पवन को अपने विचारों की अप्रासंगिकता का ध्यान हो आया और वह सोचने के प्रति तटस्थ होकर अपने सामने परोसे गये खाने में व्यस्त हो गया ।

'जाने किस हृदयहीन ने कह दिया है कि बीते को भूल जाओ और भविष्य को याद रखो—पीछे की ओर न देखकर आगे की ओर ही बढ़ते जाओ'—पवन अकसर ही इन शब्दों में सोचता और सोचता रहता । पत्नी थी तो भी और अब चली गयी है, उसके बाद से भी । यह बात नहीं कि उसने 'बीते को भूल जाने' के महत्त्व को बिल्कुल ही नकारा हो, अपितु सच तो यह है कि पत्नी के संपर्क में आने के बाद से उसने मन से चाहा कि राज्यश्री को भूल जाऊं, तो अच्छा ही हो । सदा के लिए जिससे संबंध टूट ही गये हैं, उसकी स्मृति को कब तक और कहां संजोकर रखा जाए ?

....वस्तुतः पवन ने पिता की सुरक्षा के लिए ही यह-सब ढोंग स्वीकार किया था । दिल के मरीज थे पिता और जब वे किसी शर्त पर भी राज्यश्री को अपनाने को तैयार न हुए, अपितु इस बात की भी आशंका प्रगट की कि यदि
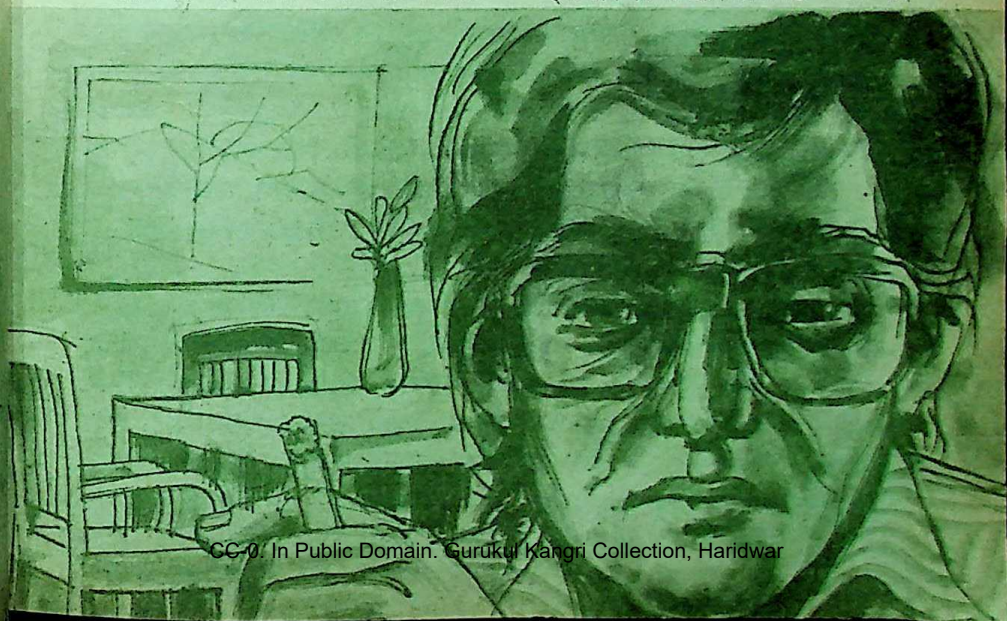
पवन ने इस पर भी मनमानी की तो वे संभवतः 'शॉक' को सहन न कर सकेंगे । पिता का जीवन उसके कारण किसी संकट में पड़े, यह वह कैसे चाह सकता था ? 'कर्त्तव्य के लिए' पवन ने, जैसा कि उसने उन दिनों अंततोगत्वा सोचा था, 'अपने प्रेम का बलिदान' कर दिया । ढोल-ताशों के साथ, एक सजायी हुई कार पर बैठकर वह ससुराल गया और पिता के लिए बहू ले आया । लेकिन अपने लिए.... ? इस विकट प्रश्न के उत्तर के लिए भी वह अपने आपको किसी प्रकार समझा लेता, यदि पिता का देहावसान बाद में वर्ष भीतर ही न हो गया होता । वह नहीं समझ पाता कि उसने पिता की इच्छा के विपरीत कार्य नहीं किया तब भी क्यों उनका हार्ट फेल हो गया ? इस विपदा का कारण दैवगति हो या संयोग, उसे इन उलझनों से क्या लेना था, लेकिन सामने जो उनकी लायी हुई 'घर की बहू' थी, उससे तो निपटना ही था । और उसने वास्तव में धैर्य से काम लिया था अर्थात् पत्नी के साथ एक नहीं, दो नहीं, पूरे तीन वर्ष एक 'आदर्श पति' बने रहने की सतत् चेष्टा की थी । लेकिन पत्नी इतने पर भी 'प्रेयसी, सखा, मंत्री' तो दूर, साधारण अर्थों में भी 'पत्नी' तक न बन सकी । इतने पर भी पवन का इरादा उसे छोड़ने का नहीं था क्योंकि इस बीच वह एक पुत्र का पिता भी बन चुका था, लेकिन जब पत्नी ने मायके जाने की जिद ठान ही ली तो उसके अंतर ने भी उससे रुकने का अनुरोध करने की जरूरत न समझी । पत्नी जाने लगी, तो उसने भी अनावश्यक मोह छोड़कर उसे जाने ही दिया ।

लेकिन असली समस्या की शुरुआत तो पत्नी के जाने से हुई थी । दिन तो किसी प्रकार दफ़्तर के काम में निकल ही जाता, किंतु सुबह-शाम क्या किया जाए ? और छुट्टियों के दिन तो काटे नहीं कटते । एक-जैसे ऊल-जलूल सिनेमा भी आखिर कितने देखे जा सकते थे या फिर छोटे-से शहर में बेवजह कितना घूमा जा सकता था ? और फिर हर रोज दिन के बीतने पर रात भी तो आती थी, जिसे सूने मकान में बिताना होता था ! स्वयं बिस्तर झाड़कर बिछाओ, टाइम-पीस में चाबी लगाओ, दूध गरम करके पियो.... । इस सबके बाद भी जब बत्ती बुझाकर सोने की कोशिश करो, तो पलकों से नींद गायब । नतीजा यह रेडियो 'ऑन' करो और लेटे-लेटे निरर्थक फिल्मी गानों का प्रोग्राम सुनो । यदा-कदा कोई सार्थक गीत भी आ जाती, किंतु वह मन को बहलाता कम, बहका अधिक देता था ।

'कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन, बीते हुए दिन हाय...बीते हुए दिन'—यह या इसी प्रकार का कोई दूसरा गीत यदि कभी आ जाता, तो पवन को सचमुच ही अपने को संभालना मुश्किल हो जाता । फिर पूरी रात या तो करवट बदलते हुए या तरह-तरह के सपने देखते हुए सोने-जागने के बीच की स्थिति में बितानी पड़ती । सुबह को उठता तो आंखें लाल-सुर्ख, मानो रोते-रोते मलता रहा हो ।

इसी प्रकार कुछ महीने बीते और जुलाई आयी । पवन को सहसा कुछ ख्याल आया और उसने एम.ए. (हिंदी) में प्रवेश ले लिया । इस नगर में प्रातःकालीन कक्षाओं की सुविधा थी ही, निवेदन करने पर विभाग ने भी अनुमति दे दी, तो पवन को मानो नया जीवन मिल

गया । समाजशास्त्र में वह पहले से एम.ए. था, और उसी के बल पर वर्तमान नौकरी कर रहा था, किंतु पुनः हिंदी लेकर एम.ए. में प्रवेश लेने का उसका इरादा फालतू समय का सदुपयोग करने की दृष्टि से हुआ था । साहित्य के अध्ययन से संभवतः अतिरिक्त लाभ यह भी हो कि वह अपने आपको टूटने से बचा ले, क्योंकि वह सचमुच ही संतुलित ढंग से जीना चाहता था !

....खाते-खाते पवन ने देखा सब्जी की प्लेट में बीड़ी का छोटा टुकड़ा पड़ा हुआ है । उसे मितली-सी आने को हुई, अतः पानी का गिलास होठों से लगा लिया, फिर होटल के मैनेजर-कम-मालिक को बुलाकर दिखाया । लेकिन मैनेजर गलती मानने को तैयार न हुआ, तो उसे क्रोध आ गया । हाथ का कौर भी उसने तत्काल प्लेट में रख दिया और उठ खड़ा हुआ । मैनेजर बड़बड़ाता हुआ काउंटर पर खड़ा हो गया और पवन ने हाथ-मुंह धोकर दस रुपये का नोट उसकी ओर फेंक दिया ।

कुछ दूर निकलकर उसे ध्यान आया कि उसने मैनेजर से हिसाब तक नहीं पूछा और न पैसे वापस लिये । लेकिन अब लौटकर झगड़ने की उसकी इच्छा बिलकुल नहीं हुई । 'बेइमान !' पवन ने मन ही मन मैनेजर को गाली दी और चाल अपेक्षाकृत तेज कर दी । वस्तुतः इस समय मन ही मन वह काफी परेशानी अनुभव कर रहा था, क्योंकि कल से अब कोई दूसरा होटल ढूंढ़ना होगा । 'प्योर बेजिटेरियन' होने से उसे अक्सर ही पसंद का होटल ढूंढ़ने में कठिनाई होती, क्योंकि शहर में या तो घटिया ढाबों की तरह के भोजनालय थे जहां वैष्णव भोजन के नाम पर पतली पानी सी दाल और शोरबे में डूबी गुमनाम सब्जी मिलती, या फिर सिंधी-टाइप के देखने में कुछ अच्छे

होटल थे, लेकिन वहां की हर सब्जी में ढेरों प्याज पड़ा रहता और उसका रंग लाल तथा गंध सड़ी मछलियों—जैसी होती ।

पुराने दिन होते तो वह अवश्य इन सब अरुचिकर स्थितियों से बचने के लिये बरेली की भांति ही स्वयं खाना बनाना शुरू कर देता, लेकिन यहां उसे कॉलेज भी तो जाना होता है, फिर खाना पकाने को समय कहां से निकल सकता है ? बरेली में तो बात ही और थी, और बात क्या वे दिन ही और थे, वहां तो पड़ोस की राज्यश्री ने सारी पाक-कला सिखा दी थी और कुछ ही दिनों में वह 'एक्सपर्ट' हो गया था । लेकिन फिर विवाह हो गया, पत्नी आ गयी और राज्यश्री को भुलाने के लिए उसने ट्रांसफर करा लिया इस शहर में । तीन साल आखिरकार पत्नी ने भी भोजन बनाकर खिलाया । लेकिन अब वह मायके चली गयी है, रूठकर नहीं, नाराज होकर । शायद कभी वापस न आने के लिए । वहां पहुंचकर, उसने जो पत्र डाला है उसमें भी तो यही संकेत है...फिर पवन ही क्यों उसे मनाने-बुलाने जाए ? और मान-मनौअल क्या एक-दो बार किये हैं उसने पिछले वर्षों में । हर दूसरे-तीसरे दिन ही किसी न किसी बात पर रानी जी की भौंहें टेढ़ी मिलतीं । पवन समझाता-बहलाता, फिर क्षमा भी मांगता, लेकिन पत्नी पर प्रभाव क्षणिक ही रहता । अंत में पवन भी परेशान हो गया । वह जानता था कि अकेले रहना आसान नहीं होगा तीन साल के, बनावटी ही सही, विवाहित जीवन के बाद; एक पुत्र का पिता बनने के बाद; लेकिन साथ रहना भी तो आसान नहीं था उस घटना के बाद से ।

...राज्यश्री के कुछ पत्र उसने एक दिन छिपकर पढ़ लिये थे और तभी से वह नियंत्रण से बिल्कुल बाहर हो गयी । यों तो पवन उसे काफी पहले बता चुका था कि वह राज्यश्री से शादी करना चाहता था, लेकिन उस दिन पुनः सारा किस्सा और अपनी विवशताएं दोहरायीं, लेकिन वह अप्रभावित रही । फिर एक दिन उसका भाई आ गया था, शायद उसने पत्र लिखकर बुलाया हो, और उसी के साथ चले जाने का प्रस्ताव रखा । पवन ने सुनकर कुछ न कहा, तो वह बड़बड़ा कर सामान बांधने लगी । फिर गाड़ी का समय होने पर उसका भाई रिक्शा ले आया, तो पवन भी साइकिल लेकर स्टेशन तक पहुंचा आया ।

यह सब क्या सोचने लगा वह ? पवन ने अपने सर को एक झटका दिया मानो गुजरे जमाने को पीछे ठेल देना चाहता हो । सामने एक पनवाड़ी की दुकान दिखायी दे रही थी, वहां जाकर उसने एक जोड़ा पान खाया । फिर कुछ सोचकर एक जोड़ा साथ बांधने को कहा । सोचा, घर जाकर खाऊंगा । कुछ रुककर दो सिगरेटें भी ले लीं । पहले, छात्र जीवन में वह सिगरेट पिया करता था, लेकिन राज्यश्री के संपर्क में आने के बाद से छोड़ दी थी । फिर पत्नी का साथ रहा, और तब भी उसने सिगरेट की आवश्यकता महसूस नहीं की । उसका ख्याल था कि सिगरेट अकेलेपन की अच्छी साथिन सिद्ध हो सकती है, अतः आज पुनः उसे सिगरेट की जरूरत तीव्रता से महसूस होने लगी । लेकिन अभी नहीं, घर पहुंचकर, आराम से बिस्तर पर लेटकर ही वह इसके संग का आनंद लेगा, सोचकर उसने सिगरेटें रख लीं ।

गली के मोड़ पर ही उसकी भेंट विनीता से हो गयी। वह रुक गया और घर तक चलने को कहा।

—लेकिन जनाब, मैं तो आपके घर होकर ही आ रही हूं। आप मिले ही नहीं।

—अब तो मिल गया। कहिए, कैसे कष्ट किया ?

—वह...आपने मकान का कमरा देने को कहा था न ! सो उसी के बारे में पूछने आयी थी। कितना किराया देना होगा ?....और भाभीजी को कब ला रहे हैं ?

—अच्छा पहले घर तक तो आइए, वहीं बातें होंगी।

उसने इस बार फिर अनुरोध किया तो विनीता साथ हो ली। घर पहुंचकर पवन ने बाहर का कमरा खोला और उसमें होकर आंगन में पहुंच गया, फिर भीतर का कमरा खोला और बत्ती जला दी। विनीता पलंग पर बैठ गयी, तो वह सामने कुरसी खींचकर बैठ गया।

वस्तुतः पवन को बिल्कुल आशा नहीं थी कि उसके क्लास की यह अकेली लड़की इस प्रकार से उसके मकान में कमरा मांगने आ जाएगी। वह तो यों ही, एक दिन वह बता रही थी कि घर में सास-ससुर और देव..नी के छोटे-छोटे बच्चों के कारण पढ़ाई नहीं हो पाती, तो पवन ने कह दिया था कि अगर वह चाहे तो एक कमरा अपने मकान का दे सकता है पढ़ने को। और आजकल तो अकेला ही है, चाहे तो ताली ले लिया करे और दिन में जब वह आफिस चला जाए, किसी भी कमरे में बैठकर पढ़े। लेकिन जब विनीता ने कहा था कि उसे तो अलग से एक स्वतंत्र कमरा चाहिए जहां वह

अकेली ही रहेगी, आखिर उसे एम.ए. में अच्छी डिवीजन लाकर और अधिकतम पढ़ाई करके अपना कैरियर भी तो बनाना है, तो बात वहीं समाप्त हो गयी थी।

और आज यह अचानक कमरा मांगने चली आयी ? पवन बैठे-बैठे विचारों में खो गया कि उसने पूछा, 'तो आप कौन-सा कमरा देंगे मुझे ? दो ही कमरे तो हैं आपके पास...'

'कोई भी ! जो आपको पसंद हो....किचन भी आप ही इस्तेमाल कर सकती हैं, क्योंकि मुझे तो अब होटल पर ही खाना है....''

'लेकिन जब आपकी पत्नी....मेरा मतलब है परिवार आएगा तब ?' पवन ने नोट किया कि इस बार इसने 'भाभी' नहीं कहा है।

'वह अब नहीं आएगी।' न चाहते हुए भी पवन के मुख से एक निःश्वास निकल गयी। लेकिन तुरंत ही उसने सिगरेट जला ली और पूछा, 'पान लेंगी ?

विनीता ने आहिस्ता-से पान मुंह में रख लिया 'मुझे भी अब अकेले ही रहना है...पति महोदय हर माह रुपया भेजकर ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। मैंने सुना है कि वह बंबई तक कई बार आ चुके हैं, वहीं से लौट जाते हैं....'

पवन मौन हो गया। विनीता ने ही पहले किसी दिन उसे बताया था कि उसके पति किसी

ट्रेड कंपनी से संबंधित हैं और जहाज के साथ पूर्वी देशों को जाते-आते हैं ।...घर में अकेले पड़े-पड़े मन नहीं लगता था इसीलिए कई वर्षों के विराम के बाद भी सोचा, क्यों न एम.ए. कर लिया जाए ।

सिगरेट की आंच अंगुलियों तक पहुंची, तो पवन ने उसी से दूसरी सुलगा ली । विनीता ने टोका, 'आप तो चैन-स्मोकर हैं....खैर, अगर मैं साथ रहने लगी, तो कम करा दूंगी ।'

पवन केवल मुसकरा दिया । विनीता ने देखा तो एक फीकी हंसी उसके भी अधरों पर फैल गयी—'अच्छा तो बताइए, क्या कहते हैं ? कमरा देंगे न ? और कितने रुपये देने होंगे मुझे ?' वह चलने को उठ खड़ी हुई ।

'रुपये ?' पवन ने उसके मुख पर सीधे दृष्टिपात किया, 'विनीता देवी कमरा तो मैं आपको दे दूंगा, लेकिन किराया 'कैश' की बजाय 'काइंड' में वसूल करूंगा । स्वीकार है ?'

विनीता का मुख पलभर को विवर्ण हो गया । फिर रुककर बोली, 'आप तो बनाने लगे मुझे ।'

'अरे नहीं....' पवन अब तक सोच चुका था कि उसे क्या कहना चाहिए । बोला, ''क्यों न आपको और कहीं किराये का कमरा ढूंढ़ दूं ?... अच्छा, परेशान न हों, मैं तो सिर्फ इतना चाहता था कि आप किराये के बदले में मुझे खाना बनाकर खिला दिया करतीं । होटल का खाना...बस ईश्वर बचाये उससे ।'

विनीता भी अब सहज हो आयी थी— 'बस इतनी सी बात ! आखिर मैं अपने लिए तो खाना बनाऊंगी ही । और अब तक भी आप मेरे घर ही क्यों नहीं खा आते थे ?... तो कल से ही आ जाऊं न ?'

'आपकी खुशी ! चाहें आप अभी से रह जाएं ।...तो बिस्तर ठीक करूं ?'

'शुक्रिया । लेकिन मिस्टर पवन कुमार, आगे भी इतना ध्यान रखें कि मैं यहां पढ़ाई की खातिर रहूंगी और मुझे डिवीजन लाकर आगे का कैरियर भी बनाना है...' कहकर वह मुसकरा दी ।

पवन में जाने कहां से बचपना लौट आया । वह उसका रास्ता रोककर खड़ा हो गया और उसी के 'टोन' में बोलने लगा, 'सुश्री विनीता देवी, आप शायद समझती हैं, पढ़ाई आपको ही करनी है और मैंने तो यों ही तफरीह में दाखिला ले लिया है ! खैर यही सही, लेकिन आप भी क्या हाथ मिलाकर वायदा कर सकती हैं कि एम.ए. के इन दो वर्षों तक पढ़ाई के अलावा अन्य कोई बात नहीं करेंगी ?'

'वचन देती हूं....' विनीता ने मुक्त भाव से हाथ आगे बढ़ा दिया ।

'तो फिर मेरे भोजन का प्रबंध कैसे होगा ?' पवन ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया । थोड़ी ही देर में वह पसीजने लगा ।...तभी विनीता ने धीरे से हाथ छुड़ा लिया और बोली, 'भावुक होने की जरूरत नहीं, भोजन मैं बना दिया करूंगी ।'

'चलिए आपको गली तक छोड़ आऊं...' पवन ने कहा, तो वह कमरे के बाहर निकल आयी । पवन भी ताला लगाकर बाहर आ गया और अंधेरी गली में साथ-साथ चलने लगा ।

**—१८/११, पुष्पविहार, से. १ साकेत, नयी दिल्ली-११००१७**

# प्रेम की चाबी

● सुभद्रा मालवी

घनी झाड़ियों, ऊंचे पेड़ों से आच्छादित, उस गहन वन में कड़ाके की सरदी से घबराकर पशु-पक्षी भी अपने-अपने स्थानों पर दुबके पड़े थे । ऐसी सरदी में उस निर्जन वन प्रांतर में एक टूटी-फूटी घासफूस की झोपड़ी में दो व्यक्ति ठंड में कांपते बातें कर रहे थे ।

बूढ़ा चारण अमरा और उसकी बेटी उजली । जैसा नाम वैसा रूप । फटे कपड़ों के बीच से भी उसका चंदा-जैसा उजला रूप झलक रहा था । काफी देर तक बातें करने के बाद वह उस दीवार से सिर टिकाकर कुछ सोचने लगी । बूढ़ा चारण भी अपनी बेटी की ओर देख-देखकर विचारमग्न हो जाता । बेटी विवाह योग्य हो गयी है, यह उसे दिखायी दे रहा था । योग्य वर के हाथों कन्यादान करके वह ऋणमुक्त होना चाहता था, किंतु वह गरीब था । कौन उसकी बेटी का हाथ थामता ? दोनों पिता-पुत्री अपने-अपने विचारों में निमग्न न जाने

**चारण कन्या उजली ने अचेत राजकुमार जेठवा की जान बचायी थी। उसे विश्वास था कि राजकुमार उसके पूर्व जन्म का प्रियतम है। जेठवा ने उजली को उससे विवाह करने का वचन दिया लेकिन राजमहल में जाते ही वह उसे भूल गया। इन स्थितियों में उजली ने क्या किया?**

कितनी देर बैठे रहे। तभी बाहर से घोड़े के हिनहिनाने की आवाज सुनायी दी। बूढ़ा चारण चौंककर उठ बैठा, "बेटी, ये आवाज कैसी थी?"

"घोड़े के हिनहिनाने की आवाज थी।"—उजली ने कहा। फिर स्वयं ही प्रश्न किया—'किंतु इस समय यहां घोड़ा आया कहां से?' इसी समय फिर वही आवाज सुनायी दी। अब उजली ने अपने पिता से कहा, "बाहर निश्चय ही घोड़ा खड़ा है पिताजी!"

"घोड़ा है तो सवार भी होगा, जा बेटी देख तो कौन है?"

उजली ने उठकर दरवाजे के पास जाकर पुकारा, "कौन है?" किंतु प्रश्न का कोई उत्तर नहीं आया, केवल घोड़े के हिनहिनाने का स्वर फिर से सुनायी दिया। अमरा ने पूछा, "क्या बात है बेटी?"

"पता नहीं पिताजी, मैं दरवाजा खोलकर बाहर जाकर देखती हूं।"

"ठहर बेटी। बाहर घना अंधकार है, मैं भी आता हूं।"

उजली ने कुंडी हटाकर दरवाजा खोला। बाहर एक उम्दा जाति का घोड़ा खड़ा था, उस पर एक राजपुरुष अचेत अवस्था में पड़ा था। वह तेजोमय मुखाकृति उजली के मन में पहली ही दृष्टि में घर कर गयी। उसका शरीर रोमांचित हो उठा, श्वास जोर से चलने लगी। अमरा बोला, "कोई शिकारी जान पड़ता है।"

"हां, मुझे भी यही लगता है। परंतु पिताजी, यह कौन है?"

"पता नहीं, बेटी। किंतु उसकी मूल्यवान पोषाक और इस उम्दा घोड़े से लगता है यह कोई राजपुरुष है।"

"मुझे भी यही लगता है, किंतु यह तो बेसु[ध] है। इसे अंदर ले चलें?"

"इसे अंदर ले जाने के लिए कह रही है?"

"हां, अंदर ले जाकर इसे होश में लाने की कोशिश करते हैं। फिर देखा जाएगा।"

अमरा आगे आ गया, उजली ने पीछे से अजनबी को उठाकर सहारा दिया। दोनों कि[सी] प्रकार उसे उठाकर अंदर ले गये और एक फ[टी] चादर किसी प्रकार बिछाकर उसे लिटा दिया। सरदी के कारण अजनबी का शरीर बर्फ के समान ठंडा तथा नीला पड़ गया था। उसकी ओर स्थिर नेत्रों से देखता हुआ अमरा बोला, "अगर सारी रात यह इसी प्रकार पड़ा रहा तो सुबह तक यह जीवित भी रहेगा इसमें मुझे संदेह है।"

"ऐसा मत कहिए पिताजी।"

"जो सच बात थी वही मैंने कही है बेटी। इस भयानक सरदी में बिना गरमी के यह ब[च] पाएगा ऐसा मुझे नहीं लगता।"

"अपने पास इसके ऊपर डालने के लि[ए]

कोई गरम कपड़ा भी तो नहीं ।''

''फिर भी कुछ भी करके इसके शरीर को गरमी पहुंचानी चाहिए ।''

''पर कैसे ?''

''एकलिंगजी ने इसे हमारे पास लाकर छोड़ा है । इसका कुछ न कुछ तो अर्थ होगा ही ।'' उसने अपने धड़कते हृदय पर हाथ रखकर कहा, ''और पिताजी, जब से इसको देखा है मेरे हृदय में खलबली मची हुई हैं ।''

''उजली बेटी !''

''सच पिताजी, इसको देखते ही मुझे अनुभव हुआ जैसे यह मेरा पिछले जन्म का कोई है ।'' उजली अत्यंत बेचैनी से बोली ''नहीं पिताजी, नहीं ! मैं इसे इस प्रकार ठंड से मरने नहीं दूंगी ।''

''किंतु बेटी इस समय हम कर ही क्या सकते हैं !''

''किसी भी प्रकार हमें इसे गरमी पहुंचानी ही चाहिए ।''

''परंतु पहुंचाएं कैसे ?''

''कैसे पहुंचाएं ? कैसे पहुंचाएं ? अच्छा बापू जाओ उस पीछेवाली झोपड़ी में चले जाओ । मैं देखती हूं ।''

''याने तू.....''

''हां बापू ! मेरा मन कहता है, यह मेरा पूर्व जन्म का प्रियतम है । इसीलिए इसे जीवित रखना मेरा कर्त्तव्य है ।'' बूढ़ा चारण अपनी बेटी की ओर विचित्र भाव से देखने लगा । उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह बेटी को डांटे या नहीं । तभी उजली ने फिर कहा, ''जाओ ना बापू, हटो यहां से ।''

अमरा धीरे-धीरे दूसरी ओर चला गया । उजली ने फिर एक बार उस अचेत पुरुष को स्थिर नेत्रों से देखा । जब उसे विश्वास हो गया कि वह मरा नहीं है तो उसने अपने फटे कपड़े उतारकर, अजनबी को अपने शरीर की गरमी पहुंचाने के लिए, अपनी बाहों में भरकर उसे अपने पास खींच लिया । काफी समय तक इसी प्रकार रखने पर अजनबी की कंपकंपी बंद हो गयी । उसके शरीर की गरमी, लौटने लगी । धीरे-धीरे उसने आंखें खोलीं और बोला, ''मैं कहां हूं ? कौन हो तुम ?''

''एक चारण कन्या की झोपड़ी में !''

''मैं यहां कैसे पहुंचा ?''

''आपका घोड़ा आपको अचेत अवस्था में यहां तक ले आया था ।''

''मैं जंगल में भटक गया था । फिर पता नहीं क्या हुआ !''

''आपके घोड़े ने आपको, अपनी पूर्व जन्म की प्रियतमा के पास पहुंचा दिया है ।''

''पूर्व जन्म की प्रियतमा.... !''

''क्यों आपको नहीं लगता कि मेरा आपका पूर्व जन्म का संबंध होने के कारण ही भाग्य से आप ठीक मेरे ही द्वार आ पहुंचे हैं ?''

''मैं नहीं जानता संबंध है या नहीं, किंतु तुमने मेरी जान बचायी है, अतः तुम मेरी प्राणप्रिय अवश्य बन गयी हो ।''

''सच ? एकलिंगजी की सौगंध खाइए ।''

''हां ! एकलिंगजी की सौगंध ! मैं यहां का राजकुमार जेठवा हूं । मैं तुमसे विवाह करूंगा ।'' जेठवा ने उसे हृदय से लगा लिया ।

इस प्रकार कुछ दिन बीत जाने पर राजकुमार जेठवा ने वापस जाने की तैयारी की । उजली ने उससे पूछा ''मुझसे कब विवाह करोगे ?''

"शीघ्र ही धूमधाम से हमारा विवाह होगा ।" जेठवा बोला ।

"धूमधाम से ?"

"अरे ! तुम्हारा विवाह एक राजकुमार के साथ होगा, उसमें धूमधाम, ठाठ-बाट नहीं होंगे ?"

उजली के नेत्र आनंद से चमकने लगे । जेठवा ने कहा, "मैं राजधानी लौटकर अपने कर्मचारियों को तुम्हें लेने भेजूंगा ।" कहकर राजकुमार ने विदा ली और घोड़ा धीरे-धीरे आगे बढ़ चला ।

उजली का हृदय धड़कने लगा । उसने अधीर होकर कहा, "मुझे लिवा लाने के लिए जल्दी ही किसी को भेज देना ।"

"बस, राजधानी पहुंचते ही लोगों को भेज दूंगा ।"

उसने घोड़े को ऐड़ लगायी । जेठवा धीरे-धीरे दृष्टि से ओझल हो गया । उजली की आंखों से अश्रु बह चले, वह उदास मन से झोपड़ी में आयी । किंतु उसका मन किसी काम में नहीं लग रहा था । उसकी आंखों के सामने जेठवा ही की तसवीर नाच रही थी । उसने मन को समझाया, बस केवल दो दिन की तो बात है ! परंतु दो दिन बीते, चार दिन बीते, होते-होते एक मास भी बीत चला किंतु जेठवा की ओर से न कोई समाचार आया न कोई व्यक्ति । अब उजली चिंताग्रस्त हो गयी । किसी प्रकार धैर्य धर उसने अपने पिता से कहा—"बापू, चलिए राजधानी चलें ।"

"तुझे क्या लगता है ? वहां जाने से कोई लाभ होगा ?"

"होगा, निश्चित रूप से होगा । हम लोग राजधानी जाकर राजमहल में सीधे राजकुमार से मिलेंगे ।"

"ठीक है, चल ।"

दोनों पिता-पुत्री तेजी से राजधानी की ओर चल दिये । वहां पहुंचकर राजमहल की ड्योढ़ी पर खड़े पहरेदार से उन्होंने कहा, "हमें राजकुमार जेठवा से मिलना है ।"

"क्या... ?" तुम्हें, और राजकुमार से मिलना है ? चलो भागो यहां से । "राजकुमार का हम पर स्नेह है इसीलिए मिलने आये हैं ।"

"यह संभव नहीं है ।"

उजली ने दृढ़ निश्चय से कहा "राजकुमार से मिले बिना मैं यहां से हिलूंगी भी नहीं ।" और वह दरवाजे के सामने जमीन पर बैठ गयी । अब द्वारपाल ने तनिक रुष्ट होकर पूछा, "तेरे जैसी दरिद्र चारण कन्या की राजकुमार से कैसे भेंट हो सकती है ?"

"क्यों ! हमारी पहले से जान-पहचान होने पर भी नहीं हो सकती ?"

"राजकुमार का तुझसे परिचय ! ऐ लड़की, व्यर्थ में झूठ मत बोल ।"

"मैं झूठ नहीं कह रही हूं । हम चारण झूठ कभी नहीं बोलते । तुम्हारे राजकुमार का हमसे घनिष्ठ परिचय है । एक बार जाकर कहो तो सही कि उजली आयी है ।"

लाल आंखों से उसे घूरता हुआ द्वारपाल अंदर गया । वह समझा था कि उजली का नाम सुनकर राजकुमार आगबबूला हो उठेगा । किंतु यह उसका भ्रम था । उजली का नाम लेते ही राजकुमार ने चौंककर पूछा—"कौन ? उजली आयी है यहां ?"

"जी सरकार, और कहती है वह आपसे भेंट किये बिना यहां से जाएगी नहीं ।"

"कहां है वह ?"

"राजमहल के द्वार पर खड़ी है सरकार ।"

"चल ।" कहकर राजकुमार द्रुत पगों से उजली के पास आया । उसे देखते ही उजली उठकर खड़ी हो गयी । वह राजकुमार के पास आने लगी, यह देखकर जेठवा ने तुरंत एक ओर हटते हुए पूछा—"यहां क्यों आयी है तू ?"

"क्यों क्या ? मुझे लेने इतने दिनों तक कोई नहीं आया । इसीलिए मुझे ही स्वयं यहां आना पड़ा ।"

"बोल तुझे क्या चाहिए ?"

"विवाह के अतिरिक्त मुझे और क्या चाहिए !"

"मैं राजकुमार होकर एक चारण कन्या से विवाह करूंगा ? छिः ! बिलकुल असंभव । चुपचाप यहां से चली जा ।"

"यह आप कह रहे हैं ? राजकुमार, आपने जो कुछ मेरी झोपड़ी में मुझसे कहा था वह भूल गये ?"

"झोपड़ी की बात यहां राजमहल में नहीं कही जाती । समझी !

"समझी । अब मैं सब-कुछ समझ गयी हूं ।"

"तब ठीक है । अब जा भाग यहां से ।"

जेठवा का इस प्रकार से कहना उजली के अंतःकरण को अंदर तक चीर गया । क्रोध से, उसके बदन में आग भड़क उठी वह चिल्ला पड़ी, "ओ मां ! मेरा शरीर जल रहा है, मैं क्या करूं ?"

"यहां से अभी निकल जा ।"

"जाती हूं । किंतु एक बात कह जाती हूं । मुझे इस प्रकार धोखा देनेवाले, मेरे शरीर का दाह तुझे जलाकर मार डालेगा ।"

उजली आवेश में बाहर की ओर दौड़ी और अंधाधुंध जिधर पांव पड़े उधर ही भागती चली गयी । राजकुमार ने उसकी दूर होती आकृति को तिरस्कार से देखा और अपने महल में लौट आया । तभी एक चमत्कार हुआ । उसके सर्वांग में जलन होने लगी और होती रही, जो किसी भी प्रकार शीतल नहीं हो पायी । वैद्यों ने

हर संभव उपचार किया, किंतु राजकुमार के अंग में होनेवाला दाह मिटा तो नहीं, वरन वह दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही चला जा रहा था।

अब उसे उजली की याद आयी। उसे त्यागने के समय के उसके उद्‌गार जेठवा के कानों में गूंजने लगे—'जा रही हूं, किंतु जाते-जाते तुम्हें कह देती हूं, मुझे इस प्रकार धोखा देनेवाले तेरे अंग-अंग में ज्वाला भड़केगी और तू मर जाएगा।''

उजली के शरीर की उष्णता ने उसके शरीर में उष्णता भरी थी और उसे मृत्यु के द्वार से खींच लिया था। अब उसके अंगों के दाह से जेठवा के अंगों में भी जलन होने लगी थी और ऐसा लगता था कि उसकी जान लेकर ही छोड़ेगी। उसे अपने कुकृत्य पर पश्चाताप होने लगा। वह पागलों के समान व्याकुल होकर पुकारने लगा—''उजली ! उजली ! मुझे क्षमा कर, मुझसे भूल हो गयी।''

उसके परिवार में खलबली मच गयी, ''यह उजली कौन है ? उसके साथ राजकुमार का क्या संबंध है ?''

परंतु उजली के बारे में वे और कुछ नहीं जान पाये। एक बार फिर राजकुमार ने आतुर स्वर में पुकारा ''मैं पापी हूं, मुझे क्षमा कर उजली, क्षमा कर।''

अब लोगों को लगा इसमें अवश्य कुछ रहस्य है। उन्होंने राजकुमार से पूछा—''राजकुमार, ये उजली कौन है, और उससे तुम्हारा क्या संबंध है ?''

अब जेठवा ने अपने परिवारवालों को सारी बात सच-सच बता दी। कुछ भी नहीं छिपाया। सारी बात कहकर वह हताश स्वर में कहने लगा, ''उजली के शाप ने मुझे ग्रस लिया है। उसके अंगों का दाह मुझे जला रहा है। अगर मुझे जीवित देखना चाहते हो तो जाकर उजली को खोज लाओ।''

अब लोगों को राजकुमार के रोग का असली कारण पता लगा, तथा यह भी, कि क्या करना है, अतः वे लोग प्रतिष्ठा-अप्रतिष्ठा के फेर में न पड़कर उजली की खोज में निकल गये। राजकुमार को जीवनदान दिलवाना ही उनका प्रथम लक्ष्य था। घुड़सवारों को अमरा के झोपड़े की ओर दौड़ाया गया, किंतु वहां उन्हें झोपड़ी खाली मिली। अब चारों ओर उजली की खोज होने लगी। कहीं भी उजली का पता न चला। किंतु उन्होंने निराश न होकर अपनी खोज जारी रखी क्योंकि वही थी जो राजकुमार के प्राण बचा सकती थी। अंत में उन्हें उजली मिल गयी। वह जंगल पहाड़ों में पागलों के समान भटक रही थी। राजसेवकों को अत्यंत प्रसन्नता हुई। वे उसे लेकर राजमहल आये, किंतु राजकुमार के प्राण-पखेरू थोड़े समय पूर्व ही पिंजरा तोड़कर बंधन मुक्त हो गये थे।

उजली के अंतर की विरहिणी जाग्रत हो उठी। वह विलाप करने लगी, ''ओ प्रियतम, पूर्वजन्म के प्रेम के नाते को जारी रखने के लिए ही मैंने यह जन्म लिया था। किंतु रे निर्मोही, तू मुझे जोगन बनाकर छोड़ गया। जेठवा, मेरे प्रेम विह्वल हृदय को ताला लगाकर तू उसकी चाबी लेकर कहां चला गया ? जब तक तू वापस नहीं आएगा मेरा हृदय इसी प्रकार तेरे प्रेम का बंदी बना रहेगा।''

# तलाकशुदा बच्चे

● सुरेशचन्द्र शुक्ल

मैं कमरे में उदास बैठी थी । मदिरा के गिलास मेरी धूमिल स्मृतियों में मधुरस घोलने का प्रयास कर रहे थे । जब समाचारपत्र पर दृष्टि पड़ती तो शीर्षक के अतिरिक्त कुछ भी पढ़ने की इच्छा नहीं होती थी । समाचारपत्र का कभी कोई पृष्ठ पलटती और कभी कोई पृष्ठ । सिगरेट के धुएं से उठते गुब्बारों में प्रतीकात्मक आकृतियों की कल्पना करके सिहर उठती थी । तभी मोनिका का फोन आया ।

**उसके माता-पिता और मेरे माता-पिता में बहुत समानता है । हम दोनों के माता-पिता का तलाक हो चुका है । वह उन विपदाओं का सामना कर चुकी है, जिन विपदाओं से मुझे सामना करना पड़ा था ।**

जब मोनिका का फोन आया, तब मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई थी । उसने फोन पर बातचीत करते समय मुझ पर बहुत दबाव डाला था कि हम दोनों को पुनः शीघ्र ही मिलना चाहिए । हम दोनों ने प्रथम बार एक दूसरे को तब देखा था और एक दूसरे से परिचित हुए थे, जब हम दोनों कॉलेज में पढ़ते थे । वह भी उसी नगर में काम करती थी जहां मैं काम करती थी ।

वह एक छोटे से कमरे में रहती थी । परंतु रसोईघर और स्नानग्रह संयुक्त था, जिसे वह पड़ोसियों के साथ प्रयोग करती थी । यही कारण है कि वह अपने पड़ोसियों और कार्यस्थल के अतिरिक्त किन्हीं और मित्रों से मेलजोल न बढ़ा सकी थी ।

"हम लोग शीघ्र ही मिलेंगे ।" मैंने उससे कहा था । मैंने आगे कहा था कि जब हम मिलेंगे, तब हम दोनों जी भरकर वार्तालाप

**कारुलीने के माता-पिता का जब तलाक हुआ था, तब वे दोनों मित्रवत थे, क्योंकि इन दोनों ने पहले से ही अपने नये जीवनसाथी चुन लिये थे, जिनकी पहले से ही संताने थीं।**

करेंगे। बड़ा आनंद मिलेगा। कुछ सुनेंगे कुछ कहेंगे। जब हम उससे मिले थे, तब से आज तक बहुत कुछ बदल गया है। बहुत कुछ घट गया है।

उसके माता-पिता और मेरे माता-पिता में बहुत समानता है। हम दोनों के माता-पिता का तलाक हो चुका है। वह उन विपदाओं का सामना कर चुकी है, जिन विपदाओं से मुझे सामना करना पड़ा था।एक बार की बात है जब मैं एक बार में बैठी थी। मेज के एक ओर वह बैठी थी दूसरी ओर मैं। उस दिन वह प्रसन्न और संतुष्ट दिखलायी पड़ रही थी। वह अपना अवकाश किसी दक्षिणी देश में व्यतीत करके आयी थी। उसने कहा था, ''मेरी नौकरी से होनेवाली आय से तो दक्षिणी देशों की सैर कर पाना संभव नहीं है। लेकिन पापा और उनकी नयी गर्लफ्रेंड थूरिल दोनों ने मिलकर मेरी यात्रा पर खर्च किया था।

मामा और पापा में यह प्रतिस्पर्धा थी कि मेरे ऊपर कौन अधिक धन खर्च करता है, कुछ ही दिनों बाद मैं, मेरा मित्र एरिक मामा के साथ रोम जानेवाले हैं। मैं अपने बल बूते पर तो इस तरह की यात्राओं में जाने की सोच भी नहीं सकती। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि मेरे माता-पिता का तलाक नहीं हुआ होता तो मुझे मामा और पापा से इतना प्रेम और सहयोग न मिलता। वह हंसी और उसने एक बार में ही बियर का पूरा गिलास पी लिया। उसने कहा, ''मुझे तो अपने माता पिता से दोगुना प्यार मिला है।''

''परंतु थूरिल के तो एक पुत्री पहले से ही है। उसके कारण तुम्हें कोई अड़चन नहीं आयी ?'' मैंने उससे पूछा तब वह कहने लगी, ''बिलकुल ठीक है। वह भी हमारे साथ दक्षिण देशों की यात्रा पर गयी थी। हम और वह आपस में मित्र बन गये हैं। जब पापा और थूरिल अपने कमरे में आराम कर रहे थे तब हम दोनों ने बहुत आनंद लिया। हम दोनों ने चरमसीमा तक आनंद लिया। खाते रहे, पीते रहे और संगीत की धुनों में खोये रहे। यह भी कितनी विस्मय से युक्त बात है कि मामा और पापा किस प्रकार हमारा उत्साह और आनंद बढ़ाने का प्रयास कर रहे थे। वह भी तलाक लेने के पश्चात। लेकिन तुम्हारे माता-पिता का क्या हालचाल है कारुलीने ? उन्होंने तो मेरे माता-पिता के तलाक के काफी पहले संबंध विच्छेद कर लिया था। तब शायद तुम दस वर्ष की थी। काफी कठोर समय का सामना करना पड़ा होगा, क्यों री।''

''हां बहुत कठोर दिनों का सामना करना पड़ा है मुझे।''

कारुलीने ने राहत की सांस लेते हुए आगे कहा, ''सभी तलाक एक से नहीं होते, सभी तलाकों की कहानियां असीम पीड़ा से नहीं आरंभ होतीं। मुझे भली भांति स्मरण है जब मैं रजाई में छिपकर अपने माता-पिता की झिड़कियां, ताने और अमानुषिक गालियां सुनती

थी । पापा ने अनेकों बार धमकी दी थी कि वह हमको छोड़कर चले जाएंगे । मैं भी पापा को बहुत चाहती थी । उस दिन जब मेरे पापा हमको छोड़कर गये थे, मैं बुरी तरह टूट गयी थी । मेरी मां इस स्थिति में नहीं थी कि मुझे सांत्वना दे सकती । क्योंकि मां बुरी तरह रोती रही थी । जब मैंने मामा से पूछा कि पापा घर छोड़कर क्यों गये हैं । पहले तो मां उत्तर नहीं देना चाहती थी । बाद में बताया कि पापा बहुत खराब आदमी थे उनसे छुटकारा पा जाना ही अच्छा है ।

परंतु मेरे लिए वह मेरे पिता थे । और मैं उन्हें बहुत चाहती थी । उस दिन मैं बहुत खुश थी जब पापा ने मुझे फोन किया था । उन्होंने बताया कि एक फ्लैट खरीदा है और उन्हें एक नयी संगिनी मिल गयी है । उनकी नयी मित्र मुझसे मिलना चाहती है । उनकी मित्र का नाम एवा है । पापा के मुख से उनकी नयी प्रेमिका की बात सुनकर मानो मेरे ऊपर बिजली गिर पड़ी हो । मैं चाहती थी कि पापा केवल मेरी मामा के साथ रहें । न कि किसी अनजान औरत के साथ । मैं समझ नहीं पा रही कि क्या से क्या हो गया और कैसे हो गया । मैं तो सदा यही सोचती थी कि पापा मामा और मैं सभी साथ-साथ रहेंगे । अब मामा अकेली थीं और वह अपने स्वयं के दुःख और कड़वाहट के साथ मुझे धीरज बंधाती थी ।

उस समय मां गुस्से से लाल हो गयीं जब उन्हें पता चला कि पापा मुझसे स्कूल में अवकाश के समय मिलने आये थे तथा मैंने पापा के संग केक खाया और काफी एक रेस्टोरेंट में पी थी ।

मेरी मां ने तब चीखकर कहा था, "तुम्हारे पिता तुम्हें खरीदना चाहते हैं । तुम्हारे पिता हमारी खिलाफत आज भी कर रहे हैं । अगर मुझसे ज्यादा तुम अपने पिता को चाहती हो तो तुम उनके पास चली जाओगी । यदि तुम्हारे पापा की यह नयी प्रेमिका चाहेगी तब ना, परंतु मुझे शक है ।" मोनिका ने आगे कहना क्रमवत रखा— "मेरी मां के पास मेरे पिता के बारे में कोई भी सुंदर शब्द नहीं बचा था । मैं महसूस करती थी कि मैं जितनी बार पापा से मिलती हूं उतना ही अपनी मामा को कमजोर कर रही हूं । परंतु इसके साथ ही अपने पापा की कभी अत्यधिक महसूस करती थी । मुझसे पापा से मिले बिना नहीं रहा जाता था । कई बार मैं मां से झूठ बोलती थी कि मैं अपनी सहेली के घर गयी थी । तब मेरी मां मेरे नेत्रों से जायजा लेते हुए कहती थीं कि मैं अपने पापा की तरह झूठी हूं । और यदि पापा के घर स्वीकार कर ली जाऊं तो मैं अपने पापा के साथ जाकर रह सकती हूं । ऐसा मेरी मामा ने कई बार कहा था । मैं अपने को झूठा नहीं समझती थी । मुझे डर था कहीं मुझसे मेरे मामा और पापा दोनों न छूट जाएं । क्योंकि पापा एक अन्य महिला के साथ रहते थे और मां कुढ़नभरे कड़वेपन के कारण दिन पर दिन निराश होती जा रही थीं ।

स्कूल में मेरे सामने समस्या आयी । पापा ही एकमात्र थे जो मुझे गणित एवं कमजोर विषयों में मेरी सहायता करते थे । अब पापा हमारे साथ नहीं हैं । एक दिन मैं कक्षा में रोने लगी । अध्यापक ने मुझे तब तक रोके रखा, जब तक सभी सहपाठी कक्षा से निकल नहीं गये । और तब अध्यापक ने पूछा कि क्या बात है । मैं

अपने आपे में नहीं थी । अतः यह समझते देर न लगी कि कोई न कोई ऐसी घटना मुझ पर घटित हुई थी जो मेरे घर से संबंधित थी । मैंने अपने अध्यापक को बताया, "मेरे माता-पिता तलाक के कगार पर खड़े हैं । पिता ने घर छोड़ दिया है । मैं पापा के साथ रहना चाहती हूं क्योंकि घर का वातावरण बहुत निराशाजनक है । उधर पापा की नयी प्रेमिका मुझे अपने घर में रखना शायद पसंद न करे । मैं अनुभव करती हूं कि यह मेरी ही त्रुटि है कि मामा घर पर सदा उदास रहती हैं क्योंकि मैं अपने पापा से मिलना-जुलना नहीं छोड़ पायी हूं, शायद इसीलिए ।" तब हमारे अध्यापक ने कहा था—

"शायद ही कोई ऐसा हो जो यह चाहे कि तुम अपने पापा से न मिलो । और न ही कोई यह चाहेगा कि तुम अपनी मां के साथ न रहो । जैसे-जैसे दुःख-दर्द से दूरी बढ़ती जाएगी वैसे-वैसे मां का ध्यान दूसरी तरफ लगने लगेगा, तब बहुत कुछ सामान्य हो जाएगा ।" मैं और कारुलीने रेस्टोरेंट में बैठकर एक-दूसरे को आपबीती सुनाकर सुख-दुःख बांट रहे थे । हम दोनों उन्नीस और बीस वर्ष की थीं । दोनों के अनुभवों में बहुत भिन्नता थी । दोनों के पीछे तलाक की दास्तान छिपी है ।

कारुलीने के माता-पिता का जब तलाक हुआ था, तब वे दोनों मित्रवत थे, क्योंकि इन दोनों ने पहले से ही अपने नये जीवनसाथी चुन लिये थे, जिनकी पहले से ही संतानें थीं । कारुलीने ने आगे कहना आरंभ किया, "जब मेरे पापा की प्रेमिका एवा ने एक लड़के को जन्म दिया, तब मैं बहुत प्रसन्न हुई थी अपने नन्हें भाई के आगमन की खुशी में । उस नन्हें-मुन्ने ने पापा का सारा ध्यान आकर्षित कर लिया । इसलिए अब पापा के पास मेरे लिए समय नहीं था । एक तो वह लड़का था । पापा बहुत पहले से ही एक पुत्र की इच्छा रखते थे । मामा पर पापा सदा नाराज रहते थे क्योंकि मामा कोई और बच्चा नहीं चाहती थीं । पापा और एवा का पुत्र पेर का जब जन्म हुआ था तब मैं साढ़े तेरह वर्ष की थी । मैं अकसर वहां जाया करती थी । बहुधा आया की तरह मैं और थूरिल पेर की देखभाल करते थे । अब इन दोनों को हमारी आवश्यकता थी । एक बार की बात है जब ये दोनों सिनेमा देखकर आये थे । पेर का बिस्तर बुरी तरह भीग गया था । और नन्हा पेर रो रहा था, तब मुझे पापा ने बहुत डांटा था और दोनों नाराज हुए थे । मैंने पेर की रोने की आवाज नहीं सुनी थी । मैं वीडियो पर फिल्म देख रही थी । फिर भी मैंने माफी मांग ली थी । वीडियो की ध्वनि ऊंची थी । मुझे पूर्ण विश्वास था कि वह सो रहा है । शायद मैं बीते हुए वर्षों में रो-रोकर, सिसक-सिसककर व्यतीत किये हुए अतीत में खोयी थी । पापा भी धीरज बंधाने के लिए नहीं थे । मुझे पेर से ईर्ष्या होने लगी थी ।

मेरे चर्च में कंफरमेशन का समय आया । मेरे बहुत से मित्रों के लिए वह दिन खुशी का दिन था परंतु मेरे लिए मात्र दर्दनाक दिन था । पापा ने कहा था कि वह अकेले आएंगे परंतु मामा को असहनीय था । मामा ने उन्हें आमंत्रित करने से मना कर दिया । मेरे दादा और दादी भी नहीं आये थे क्योंकि मेरी मां ने उनको भी नहीं बुलाया था ।" कारुलीने विचारों में लीन हो

गयी थी । कंफरमेशन के दिन उसकी मां ने कहा था, "हम दोनों मिलकर अकेले आनंद लेंगे क्यों कारुलीने" और उन्होंने कारुलीने का हाथ चूमा था । कारुलीने ने आगे कहना आरंभ रखा, "वह कोई खुशी का दिन नहीं था । जबकि मेरे अनेक मामा और नानी आयीं थीं और बहुत-सा पैसा और उपहार मिला था मुझको । मैं काफी पहले ही बिस्तर पर चली गयी थी । और रोते-रोते सो गयी थी । दूसरे दिन मैंने देखा कि मेरी मां भी बहुत रोयी थीं ।" उन्होंने कहा था, "मैं जितना अच्छा मुझसे हो सकता है उतना मैं करती हूं ।" मेरी मां झूठी दिलासा, कड़ुवे रूखेपन से मुझे खुशियां देने का असफल प्रयास कर रही थी । मैंने अपनी मां से कहा था "मामा, अब छोड़ भी दो कड़वापन । यह आपको खराब कर रहा है मामा । आप घर के बाहर निकलकर और इंसानों की तरह रेस्टोरेंट आदि क्यों नहीं जाती ? मैं चाहती हूं कि आप आदर्शवादी कम और अधिक खुश रहा करें ।"

तीन वर्ष बाद मैं और युवाओं की तरह घर छोड़कर शहर आकर बस गयी । मेरी मां अपने पत्रों में अपने एकाकी जीवन का वर्णन अवश्य करतीं । . थोड़ी देर तक वातावरण में स्तब्धता आ गयी । दोनों सहेलियां मौन थीं ।

मोनिका ने मौन तोड़ा, "तुम्हारी मां पर मुझे दया आती है । बहुत से तलाकशुदा लोग अपना जीवन कड़वा और नीरस व्यतीत कर रहे हैं । कुछ लोगों ने तो पीड़ा को ही सभी कुछ मान लिया है । लेकिन वहीं बहुत से लोग अविश्वसनीय या न निभनेवाले वैवाहिक बंधन से तलाक द्वारा स्वतंत्र जीवन व्यतीत करते हैं । मेरा ही उदाहरण ले लो । मेरी मां ने एकाकी जीवन से छुटकारा पाने की पहल की और घुटन की जिंदगी व्यतीत करने से पहले तलाक ले लिया था । और हम दोनों खुशीभरा जीवन बिताते रहे । जब से पापा को एक नयी मित्र मिल गयी, तब से उन्होंने भी मुझे ज्यादा चाहना और मानना आरंभ कर दिया था । इनमें से कोई भी असभ्य शब्द प्रयोग नहीं करते थे ।"

कारुलीने ने कहा, "माता और पिता एक-दूसरे को भद्दी गालियां न दें इस पर प्रतिबंध होना चाहिए । लेकिन ऐसा प्रायः होता है । यह कदापि नहीं कहा जा सकता कि प्रायः तलाक भाग्यशाली होते हैं और न ही उन तमाम बच्चों की संख्या ही बहुत ज्यादा है जो खुशहाल तलाकशुदा बच्चे हैं । शायद कुछ वर्षों में बदलाव आये । जब नारी और पुरुष के मध्य आर्थिक और नैतिक समानता समान हो जाएगी । मैं यह नहीं समझती कि मैं विवाह करूं और शायद कोई बच्चा ही पैदा करूं । मैं नहीं चाहती कि मैं भी मामा की तरह नरक का जीवन व्यतीत करूं ।" इस लंबे वार्तालाप के बाद मैंने मोनिका से विदायी ली । मोनिका के खुशहाल जीवन के बारे में सोचकर मेरे मन में अनेक विचार उठने लगे । रात काफी हो चुकी थी अकेलापन कहीं और न मुझे काटने लगे अतः टैक्सीवाले को एक डिस्कोथेक को चलने को कहा । शायद वहीं कुछ समय और किसी के साथ बीत जाए । सिगरेट के धुएं से निकले हुए छल्ले हवा में विलीन हो रहे थे और मैं अनुमानित खुशियों में ।

**Editor Speil, Beverveien 19, L-31 0596 Oslo-5 Norway**

पाकिस्तानी प्रेम कहानी

# तालाब

● मजहर-उल-इस्लाम

मेरी हालत उस तालाब-जैसी थी, जिसकी लहरें अंदर ही अंदर किनारों से टकराकर अपने दमखम खो चुकी हों, और पानी के तल पर बिलकुल शांति और ठहराव हो, लेकिन वह पानी में पत्थर फेंक-फेंककर हलचल मचा रहा हो....

"बात सुन ! मुझे बाजी मत कहा कर ।"

"क्यों न कहूं—क्या तुम मेरी बाजी नहीं ?" उसने मेरी ठोड़ी पर हाथ रखकर बड़े ही भोलेपन से कहा ।

"बाजी नहीं—मैं तेरी वह..."मैंने फिकरा अधूरा ही छोड़ दिया और उसे गोद में लेकर प्यार करने लग गयी । लेकिन शायद उसे मेरी गोदी में घुटन महसूस हो रही थी ।

"आप तो बस मेरे मुंह में थूक थूक देती हो...छी...छी...थू"—उसने थूक फेंकते हुए मेरी गोद में से निकलना चाहा, लेकिन मैंने उसे सख्ती के साथ अपने साथ भींच लिया ।

"बाजी ! टाफी के लिए पैसे दीजिए न ?" उसने रुआंसी आवाज में कहा ।

"फिर बाजी ?" मैंने हंसी को रोकते हुए कहा ।

"अच्छा भई ।"—उसने मजबूर होकर कहा और मैंने उसकी बेजारी को देखते हुए उसकी हथेली पर पैसे रख दिये, और वह पैर थपथपाते हुए बाहर खिसक गया ।

मैंने अंगड़ाई ली और पलंग पर लेट गयी । खयालों ने मुझे घेर लिया—यदि मेरी शादी हो गयी होती तो मेरा उसके जितना बेटा होता और मुझे कोई 'मम्मी' कहकर बुलानेवाला होता । लेकिन अब्बा और अम्मी की दूरंदेशी और बारीकबीनी ने मेरे अरमानों का गला घोंटकर रख दिया । उनका सपना था कि उनकी बेटी को कोई राजा ही ब्याह कर ले जाए । लेकिन शायद उन्होंने यह नहीं सोचा कि यदि राजा ऐसे ही ब्याह करने लग गये तो बेचारी रानियां कहां जाएंगी । मैं सौ दफा कह चुकी हूं कि मुझे दौलत नहीं चाहिए—नहीं चाहिए—और अब अट्ठाईस साल की उम्र में मेरे साथ कौन शादी करेगा ? अब तो मेरी सारी चाह भी, तड़पते

सिसकते पलों के साथ गड्डमड्ड हो गयी है ।

वह मेरे मामा का बेटा था । जब से मामी की मृत्यु हुई, उसके अब्बा ने उसे अपनी बहन के पास छोड़ दिया था । सरकारी नौकरी का मामला था, हर दूसरे-चौथे दिन बदली हो जाती थी । उन्होंने सोचा कि वह यहां पर एक जगह टिककर पढ़ सकेगा ।

यदि मुझे दुनिया में कोई प्रिय था तो केवल वह ही । औरत की हस्ती में पलनेवाला सारा प्यार मैंने उसी की नजर कर दिया था । उसे प्यार करते-करते मेरी अजीब हालत हो जाती थी । उसे गोदी में लेते ही मेरे दिल की धड़कनें उलझने लग जातीं । सोते समय पलंग के पास खड़ा होकर जब वह मेरा मुंह चूमता तो मुझे ऐसा लगता जैसे वह बच्चा नहीं है । छोटे-छोटे गरम सांसों की गरमी मुझे आग-जैसी महसूस होती । जब मैं आंखें खोलती तो वह मेरे मुंह को अपने हाथों के घेरे में लेकर कहता, "मैंने आपको पारी की है ।"

वह जब किसी नंग-धड़ंग फकीर को देख लेता तो कितने समय तक मेरी गोद में छुपकर सोया रहता । मेरी हालत उस तालाब-जैसी थी, जिसकी लहरें अंदर ही अंदर किनारों से टकराकर अपने दमखम खो चुकी हों, और पानी के तल पर बिलकुल शांति और ठहराव हो, लेकिन वह पानी में पत्थर फेक-फेककर हलचल मचा रहा हो....

मैं यह सब कुछ सोच ही रही थी कि उसने जोर से कहा, "मैं टॉफी ले आया हूं ।"

अम्मी यह सुनकर तमक उठी, "यह वक्त भी आना था । देखो, बच्चे बड़ों को कैसे बुलाते हैं । ठहर जा, मैं तेरे कान खीचती हूं ।"

"मुझे तो बाजी ने खुद कहा है कि मैं तेरी बाजी नहीं", उसने बड़ी ढीठाई के साथ कहा ।

"तब क्या तुम उसके खसम लगते हो ?" अम्मी कड़की ।

मैं रजाई सिर तक खींचकर दुबक गयी । वह तो सचमुच बच्चा है, लेकिन अम्मी को यह कहने की क्या जरूरत थी । मुझे रजाई में पड़े-पड़े शरम आने लग गयी । उस दिन वह स्कूल से आया, मैं बस्ता उतारने के लिए झुकी तो उसने मेरा कान जोर से पकड़ लिया और कहने लगा, "जल्दी से कान पास करो, तुम्हें एक बात बताऊं ।"

मैंने दुपट्टा सरकाकर अपने कान उसके नन्हे से मुंह के पास कर दिये । तेज-तेज चलती सांसों के बीच उसने सरगोशी के अंदाज में कहा, "आज हमारी मास्टरनी की शादी हो गयी है ।"

"सच !" मैंने उसका दिल रखने के लिए कहा और पलंग पर बिठाकर उसके जूते उतारने लगी ।

"लेकिन आपकी शादी नहीं हुई ।" उसने मुंह बिसूरते हुए कहा ।

"मेरी शादी तो हो भी चुकी है ।" मैंने वैसे ही कह दिया क्योंकि मुझे पता था कि अगर बात थोड़ी उलझ गयी तो वह रोटी नहीं खाएगा, शाम तक रूठा रहेगा ।

लेकिन वह उल्टे-सीधे सवाल करने लग गया, "किसके साथ हुई है आपकी शादी ?"

"मुकद्दर के साथ"

"तुमने मेरे साथ अपना ब्याह क्यों नहीं करवाया ? बताओ मुकद्दर कहां रहता है ? मैं अभी उसे मारूंगा ।" उसने मेज से फूलदान उठा लिया और सीढ़ियों की तरफ दौड़ा ।

लेकिन मैंने उसे पकड़ लिया और दिलासा देकर सुला दिया ।

अचानक मुझे ख्याल आया, जैसे कोई मल्लाह अपनी किश्ती में बैठा ऊंघ रहा हो और लोग उसे सोया हुआ जानकर दूसरे मल्लाह की किश्ती में बैठकर पार जा रहे हों । मैंने उसे अपने सीने से कसकर लगा लिया ।

"आप रूठ गये हो ? पता नहीं उसने किन अहसासों के दबाव में कह दिया मेरी आंखें गीली हो गयीं ।

"पागल, मैं तुम्हारे साथ ब्याह करवाऊंगी। अभी मेरा ब्याह नहीं हुआ ।"

वह खुश हो गया और दिल ही दिल में मेरे साथ ब्याह रचाने लग पड़ा । मैं बिलकुल पागलों-सी उसे अपना सब कुछ समझती रही। मुझे कभी ख्याल तक नहीं आया कि मेरी शादी नहीं हुई है । उसे नहलाने, कपड़े पहनाने और पढ़ाने के सिवा मेरे पास कोई और काम नहीं था ।

उस रात उसको लेटे-लेटे पता नहीं क्या ख्याल आया कि एकदम उठकर बैठ गया। "दोस्त कहते हैं कि हमें मिठाई खिलाओ, सुबह मैं आपसे पैसे जरूर लूंगा ।"

"लेकिन किस बात की मिठाई ?" मैंने हैरानी से पूछा ।

"मैंने उनको बता दिया है कि मेरा ब्याह आपके साथ हो गया है ।"

मेरे सपाट और सर्द चेहरे पर लालिमा फैल गयी ।

सुबह वह मुझसे पैसे ले गया, और अपने ब्याह की मिठाई दोस्तों में बांट आया ।

'क्या सचमुच वह मेरा खाविंद है ?' मैंने सोचा लेकिन इस सवाल का उत्तर मुझे कोई भी न दे सका । उस दिन उसका इम्तिहान था । सुबह-सुबह उसकी कमीज के बटन लगाते हुए मुझे अजीब किस्म का सुख महसूस हो रहा था । बीवियां बेचारी कितनी अच्छी होती हैं, इस ख्याल के साथ मैं खुद ही शरमा गयी ।

फिर समय गुजरता चला गया । कई साल बीत गये । कितने ही रिश्ते आये, लेकिन मैंने इनकार कर दिया । अब ब्याह में रखा ही क्या था, उसके सहारे जिंदगी गुजारनी मुश्किल नहीं थी । अब्बाजान खुदा को प्यारे हो चुके थे । अम्मी ने लाठी का सहारा ले लिया था, और मेरे अपने बाल भी सफेद हो चुके थे । उस शाम वह अपनी किसी सहपाठिन के साथ ड्राईंगरूम में बैठा था । चाय की ट्रे मेज पर रखकर रस्मी बातचीत के बाद मैं उसके जोर देने के बावजूद बाहर आ गयी । दरवाजा बंद करते हुए किसी आवाज ने मेरा पीछा किया, "यह कौन है ?"

"मेरी बाजी ।" मुझे ऐसा लगा, जैसे तालाब के पानी में फिर ठहराव आ गया हो ।

**अनुवाद : शांता ग्रोवर**

## मुक्तक

(१)

मौन मेरी साधना के स्वर
मौन मेरी श्वास का हर राग
तुम मुखर निःस्पंद मन के बीच
शीत में-जैसे सुलगती आग

(२)

दुर्दिन कैसे कट पाएगा
तुम यदि मेरी भेंट न लोगे ।
'कल' का क्या विश्वास करूं मैं
प्रिय तुम आज न दर्शन दोगे ।

(३)

प्रीति का सानिध्य मिल जाता मुझे
सिंधु पलकों पर उठाये घूमती ।
दर्द की पहचान कर पाती तनिक
हर दुःखी का घाव यदि मैं चूमती ।।

**—अंजलि पांडेय**

सी ब्लॉक, ३६, महावीर भवन, किदवई नगर, कानपुर-२०८०११

## बोलकर तुमसे

फूल-सा हल्का हुआ मन
बोलकर तुमसे
आंख भर बरसा घिरा घन
बोलकर तुमसे
तुम नहीं थे खुशी थी
जैसे कहीं सोयी
तुम मिले तो ज्यों मिला,
खोया सिरा कोई
पा गये जैसे गड़ा धन
बोलकर तुमसे

स्वप्न पीले पड़ गये थे
तुम गये जब से
बहुत आजिज आ गये थे
रोज के ढब से
प्राण फिर बुनता हरापन
बोलकर तुमसे

**—यश मालवीय**

ए-१११ मेंहदौरी कॉलोनी, इलाहाबाद-२११००४ (उ.प्र.)

# दीवार

● तेज बहादु

पहली घंटी की आवाज नुमाइश के शोर में डूब गयी। अपने तंबू में पुराने श्रृंगारदान के सामने बैठी बेला के हाथ बाल बनाते-बनाते रुक गये। उसने अपनी छवि को दर्पण में निहारा। काले बाल रेशम से मुलायम, लंबे और घने थे। सीधी मांग की दूधिया लकीर देखने में बड़ी अच्छी लग रही थी। अचानक ही बेला ने सिर को झटककर बालों को आगे की तरफ फेंक दिया। बालों का जाल पूरे चेहरे पर फैल गया। उसकी आंखों की मछलियां जाल में फंसकर बुरी तरह तड़पने लगीं। उसने घबराकर बालों को फिर पीछे की तरफ झटक दिया। उसके दिल में हूक उठी—काश, वह इस जाल से किसी प्रकार निकल पाती। आखिर वह कब तक इस जाल में फंसी छटपटाती रहेगी कब तक अपने करतब दिखाती लोगों के अश्लील मजाक, नंगे फिकरे और फबतियां सहन करती रहेगी...शायद उसकी किस्मत में उन सब सपनों में से किसी एक का भी साकार होना नहीं लिखा है जो उसने इस घेरे में आने से पहले देखे।

लेकिन, जिंदगी संवरती उलटा बिगड़ रही थी। और विरोधाभास यह था कि जिस कला को उसने अपनी जिंदगी को संवारने का माध्यम बनाया था, वही कला उसके हाथों से उसकी जिंदगी छीने लिये जा रही थी।

जब दूसरी घंटी बजी तब भी बेला अपने विचारों में खोयी बैठी थी। उसे यह अनुभूति ही नहीं हुई कि घंटी की आवाज का कुछ उससे भी संबंध है। इधर कुछ दिनों से ऐसा ही होता है कि शो शुरु होने से काफी पहले मैनेजर उसके तंबू में झांक कर उसे तैयार हो जाने के लिए कह जाता है और वह यंत्रवत तैयार होने लगती है, फिर अचानक वह अपनी सोचों के भंवर में घिर जाती है, तब उसे अपनी कुछ सुधबुध नहीं रहती। उसे याद ही नहीं रहता कि उसे सर्कस-रिंग में उतरना है, अपने चारों ओर बैठे दर्शकों के समक्ष अपनी कला का प्रदर्शन करना है। यह बात नहीं कि बेला को अब इस कला से कोई मोह नहीं रह गया था। वह कला से अब भी उतना ही प्यार करती जितना तब करती थी जब उसने अपनी बाल्यावस्था में पहली बार इस कला से परिचय प्राप्त किया था। लेकिन तरुणाई के आगमन के साथ-साथ उसके मन में कला के अतिरिक्त और एक चीज की चाह उत्पन्न हो गयी थी, और यह चाहना दिन-प्रतिदिन उग्र से उग्रतर होती अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गयी थी। इसने उसे जैसे

एकदम बेबस कर दिया था । अब तो अकसर ऐसा होता था कि वह दूसरी घंटी बजने पर ही चौंकती थी और फिर बड़ी मुश्किल से तीसरी घंटी बजने तक तैयार हो पाती । मैनेजर ने उसमें आये बदलाव को न केवल नोट ही किया, बल्कि उसे दो-तीन बार टोका भी था ।
छोड़कर जाने का कोई बहाना तलाश रही है । वह बेला को खोना नहीं चाहता था—बेला सर्कस का गौरव थी !

दर्पण के सामने बेजान मूर्ति-सी बैठी बेला को अचानक ऐसा लगा—जैसे उसको किसी ने पुकारा हो । लेकिन यह वह आवाज नहीं थी, जिसका उसे इंतजार था । जिसे सुनने के लिए उसके कान तरस गये थे, जिसमें एक अजीब नशीली-सी मिठास होती है; जो कहीं दूर से आती हुई भी कहीं निकट से आती महसूस होती है—ऐसे जैसे कोई सरगोशी के स्वर में कुछ कहे । और बेला ने चौंक कर अपने इर्द-गिर्द चोर नजरों से देखा फिर उसकी निगाहें अपने एक हाथ में पकड़ी कंघी पर टिक गयीं । बेला को याद आया कि उसे शो के लिए तैयार होना है और उसके हाथ तेज-तेज चलने लगे । वह तैयार हो रही थी और साथ ही सोच रही थी कि उसे किसने नाम लेकर पुकारा ? तैयार होकर उसने श्रृंगारदान पर रखी अपनी घड़ी देखी । शो शुरू होने में अब कुछ ही मिनट की देर थी । फिर जैसे उसके सवाल का जवाब

मिल गया । 'जरूर उस्ताद ने उसे पुकारा होगा ।' उसने सोचा और उस्ताद का नाम दिमाग में आते ही उसका मुंह कड़वा हो गया ।

पहले बेला अपने उस्ताद के प्रति बड़ा अपनत्व महसूस करती थी । उसे उतना ही प्यार करती थी जितना कोई भी बेटी अपने बाप से कर सकती है । लेकिन, अब—अब बेला को उस्ताद से प्यार बिलकुल ही नहीं रह गया था । इसमें शक नहीं कि वह उसकी इज्जत अब भी पहले जितनी करती थी, क्योंकि उसने बचपन से उसे पाला-पोसा था, लिखाया-पढ़ाया था, और सर्कस कलाकार बनाया था । लेकिन प्यार की जगह अब भय ने ले ली थी । सचमुच अब बेला को अपने उस्ताद से डर लगने लगा था । उसे देखते ही बेला अनचाहे ही सहम जाती थी और ऐसा लगने लगता था कि उस्ताद किसी भी समय आगे बढ़ कर उसका गला घोंट देगा, और एक ही हिचकी के साथ उसकी आंखें बाहर उबल आएंगी ।

उस्ताद अभी करीब दो दशक पहले तक एक जाना-माना सर्कस का कलाकार था । सर्कस कला-जगत में उसने न जाने कैसी-कैसी उपलब्धियां अर्जित की होती लेकिन एक दुर्घटना ने उसका प्रगति-पथ ही अवरुद्ध कर दिया । एक शो के दौरान झूले से गिर जाने के कारण उसकी टांग टूट गयी थी और उसका सक्रिय जीवन शेष हो गया था । तब से उसने बेला की आंखों में अपने सारे सपने सजा दिये थे । अपनी सारी आशाएं और आकांक्षाएं बेला में केंद्रित कर दी थी उसने । वह बेला को वह बनाना चाहता जो वह स्वयं बनना चाहता था ।

भय केवल बेला को ही नहीं था । उस्ताद उससे अधिक भयभीत था । उसे लगता था कि अगर बेला पर कड़ी नजर न रखी गयी तो बेला अपनी आयु के इस मोड़ पर भटक जाएगी, कला-मार्ग को छोड़कर किसी अन्य मार्ग पर चल निकलेगी । जब उस्ताद के सपनों की टांग टूटी थी उसने बेला को अपने पर तोलना, अपने पंखों की उड़ान-शक्ति को पहचानना और कला को अपने जीवन का मूल्य मानते हुए उसे अपना सब कुछ समर्पित करना सिखाया था । अब जबकि बेला कला-आकाश में ऊंचे, और ऊंचे उड़ रही थी, वह नहीं चाहता था कि बेला किसी और क्षितिज की ओर अपनी उड़ान का रुख मोड़ दे । "अगर ऐसा होता है तो मेरे सपने मर जाएंगे । मैंने अपनी जिंदगी की विकलांगता तो स्वीकार कर ली है, लेकिन मुझसे अपने सपनों की मौत नहीं देखी जाएगी । तब क्या उद्देश्य रह जाएगा जीवन में ?" वह सोचा करता और चिंतित रहता ।

बेला ने बाल बनाने के बाद सिंगारदान का खाना खोला जिसमें कई रंगों के दर्जनों रिबन रखे थे । उसने लाल रंग का रिबन उठा लिया और फिर अपने बाल बांधती उठ खड़ी हुई । उसे लाल रंग बहुत पसंद था—लाल चुनरी, लाल मांग... लेकिन, सर्कस की लाल बत्तियों ने उससे उसकी लाल चुनरी और लाल मांग छिपा रखी है । उसके मन में यह विचार सांप के फन की तरह उठा और फिर एक नये विचार ने उसे छा लिया, 'क्यों न वह भाग जाए इस सर्कस की कैद को छोड़-छाड़ कर ? लेकिन कहां ! कौन था इस दुनिया में उसका अपना ?

"तुमने आज फिर लाल रिबन बांधी है ?" उसने रूखे स्वर में प्रश्न किया । उस्ताद को लाल

रंग से चिढ़ थी । जिस दिन वह झूले से गिरा, उस दिन उसने अपनी टांग से ढेर सारा खून बहता देखा था, तब से उसे लाल रंग केवल खून की याद दिलाता था । क्योंकि वह जानता था कि बेला इधर लाल रंग क्यों ज्यादा पसंद करने लगी है इसलिए उसे लाल रंग और भी अधिक अखरने लगा था । लाल रंग के प्रति बेला का दिन-प्रतिदिन बढ़ता मोह उसके अरमानों का खून ही तो था । वह बेला को इस बात की अनुमति नहीं दे सकता था कि वह उसके सपनों को आहत कर दे...बेला उस्ताद के प्रश्न का कोई उत्तर दिये बिना आगे बढ़ गयी और उस्ताद एक ठंडी आह भरकर रह गया..., अगर उस्ताद उस समय बेला का चेहरा देख पाता तो वह देखता कि बेला के पतले-पतले होंठों पर एक अजीब तरह की मुसकान खेल रही है, जिसमें थोड़ी शरारत, थोड़ी कटुता, थोड़ी वेदना और थोड़ी खुशी घुली हुई थी ।

बेला कुछ सोचती मुसकराती सर्कस रिंग की ओर जा रही थी, ऐसे जैसे कोई उसे जबरदस्ती घसीटे लिये जा रहा हो । उसके पीछे-पीछे उस्ताद अपनी छड़ी से खट-खट आवाज करता चला जा रहा था । तब ही बेला के कानों में कुछ दूर से आती मैनेजर की आदेशात्मक आवाज पड़ी—'तीसरी घंटी...' और बेला को लगा जैसे किसी ने उसकी पीठ पर चाबुक मारा हो । वह तड़प उठी ।

सर्कस रिंग में उतरने से पहले बेला ने विंग में से कुछ तलाशती-सी एक नजर दर्शकों पर डाली । सर्कस का तंबू दर्शकों से खचाखच भरा था । तरह-तरह के लोग, तरह-तरह की पोशाकें, बच्चे, जवान, बूढ़े, गरीब, सफेदपोश,

**बेला को यह पनवाड़ी का बेटा बहुत अच्छा लगता था । वह उसे एक नजर देखने के लिए ही दिन में कई-कई बार उससे पान लेने स्वयं जाती थी, हालांकि उसके एक इशारे पर सर्कस के कई लोग कुछ भी करने को हर समय तैयार रहते.... !**

ऊंचे तबके के लोग—बेला की तैरती नजरों ने वहां मौजूद एक-एक चेहरे को ऐसे पढ़ा जैसे कोई किसी किताब के पृष्ठ पर सरसरी नजर डाले और कुछ शब्द अनचाहे ही दिमाग में अंकित होकर रह जाएं । उधर कोने में लाल रंग का सूट पहने बैठी लड़की को देखकर बेला को ऐसा लगा जैसे उसके कानों ने चूड़ियों की खनक सुनी हो । पहले बेला को किसी कलाई में चूड़ियां देख कर ऐसी अनुभूति होती थी, जैसे उसने हथकड़ियों में जकड़े किसी अपराधी को देखा हो । तब उसे स्वयं पर गर्व होता था कि वह घर की दीवारों में कैद घरेलू औरत नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र प्राणी है, जिसकी परवाज के लिए पूरा आकाश है । लेकिन अब वह स्वयं को उम्रकैद भोग रहे कैदी-सा महसूस करने लगी थी । उसे लगने लगा था कि जिसे वह उड़ान समझने की भूल कर रही थी, वह दरअसल पिंजरे के पंछी के परों की फड़फड़ाहट भर है । बेला ने अपनी नजरों को फौरन उधर से हटा लिया और फिर उसकी दृष्टि उस पर पड़ी थी, जिसकी उसे तलाश थी । वह उधर अपने ही जैसे लोगों के बीच सबसे ऊपर वाली कतार में बैठा था जो एकदम दूर थी । बेला ने साफ देखा था या केवल अनुभव किया कि पनवाड़ी

**लेकिन यह वह आवाज नहीं थी, जिसका उसे इंतजार था, जिसे सुनने के लिए उसके कान तरस गये थे, जिसमें एक अजीब नशीली-सी मिठास होती है, जो कहीं दूर से आती हुई भी कहीं निकट से आती महसूस होती है।**

का बेटा आहिस्ता-आहिस्ता पान चबाता अपने दोस्तों के साथ खुली, बेबाक बातचीत में व्यस्त होने पर भी बार-बार रिंग में उसी को तलाश रहा है। बेला को यह पनवाड़ी का बेटा बहुत अच्छा लगता था। वह उसे एक नजर देखने के लिए ही दिन में कई-कई बार उससे पान लेने स्वयं जाती थी, हालांकि उसके एक इशारे पर सर्कस के कई लोग कुछ भी करने को हर समय तैयार रहते और फिर छोटू तो मैनेजर ने खास उसी के लिए रखा हुआ था। उस्ताद के कानों में जो हर समय खतरे की घंटी बजती रहती थी, वह पनवाड़ी के बेटे के प्रति बेला के लगाव के कारण ही थी, जिसे उस्ताद की अनुभवी आंखों ने पहले दिन ही ताड़ लिया था।

बेला को एक बात की समझ नहीं आती थी कि जब वह अपने तंबू में होती थी तो उसे पनवाड़ी के बेटे की बात-बेबात कहकहे लगाने, अपने गाहकों से हंस-हंस कर बतियाने, राह चलतों पर चुस्त फिकरे कसने की आवाजें अकसर सुनायी देती थीं, लेकिन जब वह उसके सामने जाती थी तो उसकी सिट्टी-पिट्टी क्यों गुम हो जाती थी और वह एकदम गूंगा-सा क्यों हो जाता था! क्यों उसकी जबान उससे वह सब नहीं कहती थी जो उसकी आंखें बेला से बराबर कहती रहती थीं?

कई साल पहले जब सर्कस इस शहर में आया था, तब पनवाड़ी की मुलाकात मैनेजर से हुई थी। मैनेजर बड़ा बाबू था और उसकी दुकान पर पान खाने जाया करता था। इस बार जब सर्कस शहर में आया तो पनवाड़ी ने सर्कस-स्टाफ के तंबुओं के पास अपने बेटे के लिए दुकान लगाने की इजाजत मैनेजर से हासिल कर ली और इस प्रकार पहले दिन से ही पनवाड़ी के बेटे की दुकान उस्ताद के तंबू और बेला के तंबू के बीच सज गयी जो एक तरफ सर्कस परिसर के भीतर थी तो दूसरी तरफ नुमाइश के गेट नंबर तीन की ओर खुलती थी। नुमाइश में लगी दुकानें क्योंकि करीब-करीब चौबीस घंटे खुली रहती थीं इसलिए पनवाड़ी का बेटा भी दिन-रात दुकान पर ही रहता था। कोई गाहक न रहने पर वह फिल्मी गीत गुनगुनाता रहता था जिसके शब्द तो बेला की समझ में नहीं आते थे लेकिन जिसकी धुन उसे बड़ी जानी-पहचानी लगती थी...सर्कस की ऊब-भरी जिंदगी से परिलोक में ले जाती धुन...वास्तविक जिंदगी से स्वप्नलोक में ले जाती मधुर धुन....

एक झूले से दूसरे झूले पर छलांग लगाते हुए बेला कभी स्वयं को किसी दूसरी दुनिया की हस्ती महसूस करती थी। उसे लगता था दुनिया उसके सामने बहुत बौनी है। झूले पर अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए उसे ऐसा जान पड़ता था जैसे वह एक पक्षी है, जो आकाश की ऊंचाइयों को छू सकती है...उन चोटियों को पार कर सकती है, जहां कोई नहीं पहुंच

सकता...लेकिन इधर जब से उसने पनवाड़ी के लड़के के बारे में अपने मन में कुछ अजीब-सा महसूस करना शुरू किया था उसे लगने लगा था कि वह जितना भी ऊंचा उठती है, पनवाड़ी के लड़के का चेहरा उसकी उड़ान-सीमा से हाथ भर ऊंचा ही रहता है । यही नहीं, उसे इस चेहरे के साथ एक और भी काली छाया लहराती प्रतीत होती थी जो कभी जानी-पहचानी लगती थी तो कभी एकदम अजनबी-सी, कभी स्नेह-भरी प्रतिमा-सी तो कभी व्यंग्य भरी मुसकान के तीर चलाती प्रेत-छाया-सी कुरूप ।

आज सर्कस का इस शहर में आखिरी शो था—आज बेला के लिए निर्णय का अंतिम अवसर था—और उस्ताद के लिए परीक्षा की आखिरी घड़ी थी । कल सर्कस का सारा तामझाम सिमट जाएगा । कल पनवाड़ी का बेटा अपनी दुकान समेटकर चला जाएगा । कल उस्ताद के चेहरे पर विजय-मुसकान होगी और बेला कला और जिंदगी के बीच लगा आखिरी दांव हार चुकी होगी । नहीं, बेला हारेगी नहीं ! पराजित होना बेला को मंजूर नहीं !

बेला झूले पर अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए सोच रही थी—आज आखिरी शो था । शायद वह फिर यहां कभी नहीं आएगी । आयी भी तो साल दो साल के बाद आएगी...तब, तब भी शायद यही महीना होगा, यही सर्कस होगा, यही नुमाइश होगी...लेकिन, तब शायद बहुत कुछ बदल चुका होगा...तब उस्ताद अंतिम रूप से जीत चुका होगा और वह हमेशा के लिए हार चुकी होगी...नही, नहीं, वह आज ही फैसला करेगी ।

बेला ने एक झूले को छोड़कर दूसरे झूले की ओर लपकते हुए नीचे दूर, बहुत दूर दर्शकों के घेरे पर उड़ती-सी नजर डाली । दर्शक तालियां बजा रहे थे ।...पनवाड़ी का बेटा भयभीत-सा उसे एकटक देख रहा था । उस्ताद का चिंतातुर चेहरा लटका हुआ था । वह बेला को नीचे उतर आने का इशारा कर रहा था । बेला को उस्ताद की झुंझलाहट और फिक्रमंदी अच्छी लगी । बेला को पनवाड़ी के बेटे का उसे एकटक देखना अच्छा लगा । बेला का मन अपने प्रति गौरव-भाव से भर गया । बेला ने दूसरे झूले को पकड़ने से पहले हवा में दो-तीन कलाबाजियां लगायी । लोगों ने जोर से तालियां बजायीं । मैनेजर ने सांस रोक कर बेला को देखा । उस्ताद ने बड़ी निराशा से थके अंदाज में अपना बाजू लहराकर उसे फिर उतर आने का इशारा किया । बेला को उस्ताद को इस हालत में देखकर बड़ा मजा आया । वह समझ रही थी कि उस्ताद महसूस कर रहा है कि उसके हाथ से डोर फिसलती जा रही है । बेला ने दूसरे झूले से पहले झूले की ओर लौटते हुए उस्ताद पर एक नजर डाली । उस्ताद का चेहरा दर्द और गुस्से का आईना था उस समय । बेला आज अपनी कला में अपनी जिंदगीभर की साधना को डुबोये दे रही थी । कठपुतली एक-एक करके अपनी डोरियां तोड़ती जा रही थी...ऐसी सभी डोरियां जिन्होंने बेला के जीवन को इधर-उधर से बांध रखा था ।

उस्ताद ने बड़ी झुंझलाहट से अपनी छड़ी फर्श पर खटखटायी । मैनेजर ने परेशान होकर अपनी कलाई-घड़ी पर नजर डाली । भीड़ ने सांस रोककर बेला को एक झूला छोड़कर दूसरे

तक पहुंचने से पहले हवा में कजाबाजियां खाते देखा। पनवाड़ी के बेटे ने बेवकूफों की तरह मुंह खोले उसे बड़ी हसरत से देखा और फिर अनजाने ही उसके होंठों से उसके प्रिय गीत के बोल फिसल पड़े। उसके दायें-बायें बैठे उसके दोस्तों ने उसे कोहनी मारकर खामोश रहने का इशारा किया। पनवाड़ी का बेटा झेंपता-सा अपने आप में सिमट गया। उसकी निगाहें अभी भी बेला पर टिकी थीं। बेला ने उस्ताद पर एक फिसलती-सी नजर डाली और फिर खिलखिलाकर हंस दी...उस्ताद का दिल उछलकर उसके गले में अटक गया। मैनेजर चीख उठा, "जाल संभालो।"

बेला दूसरे झूले की ओर जाने के बजाय लुढ़कती नीचे गिर रही थी। उसकी आंखों के आगे सर्कस का पूरा परिवेश एक घेरे में घूम रहा था। दायरे बन रहे थे और फैलते जा रहे थे। और फिर बेला की दृष्टि एक बिंदु पर केंद्रित होकर रह गयी। यह पनवाड़ी के बेटे का चेहरा था—सांवला-सलोना चेहरा, पान से रंगे हुए होंठ, मोटी-मोटी आंखें, चौड़ा-चकला सीना, कसरती देह, मजबूत-फौलादी बाजू। जिंदगी उसकी तरफ अपनी बांहें फैलाये बढ़ रही थी। वह स्त्री जीवन को गले से लगाने के लिए उसकी ओर तेजी से लपक रही थी। उस्ताद कला की मूर्ति के टूटने-बिखरने के भय से जड़वत खड़ा फटी-फटी आंखों से शून्य को घूर रहा था। बेला ने महसूस किया जैसे किसी ने उसे अपनी बांहों में भरकर हवा में उछाल दिया है। वह तने जाल पर गिरी, उछली और फिर सर्कस रिंग के तख्तों के फर्श पर एक धमाके के साथ चित्त हो गयी—अचानक दुनिया रुक गयी, दायरे बिखरकर टूट गये और बेला के होंठों से एक लंबी चीख निकलकर लहरा गयी, जिसमें दर्द की तकलीफ कम थी, मनचाही चीज को पा लेने की खुशी अधिक थी। यह चीख कला का जीवन के प्रति समर्पण का शायद आखिरी इकरार थी।

उस्ताद फर्श पर अपनी छड़ी खटखटाता उसकी ओर दौड़ा...गेटकीपर गेट छोड़कर भागे—मैनेजर हाथ मलता "डॉक्टर ! डॉक्टर .. !!" पुकारने लगा....लोग शोर मचाते उठ खड़े हुए और उसके गिर्द जमा होने लगे...क्षणभर को बेला को कुछ अनुभूति हुई और उसकी आंखों के सामने पनवाडी के बेटे का चेहरा उभरा और फिर अजनबी चेहरों की भीड़ में डूब गया। उसकी आवाज भी लोगों के शोर में शामिल थी...आखिरी शो समाप्त होने से पहले ही शेष हो गया था—

बेला पर झुका बैठा उस्ताद गहरे दुःख से भारी हुई आवाज में कह रहा था, "बेला, मुझे माफ कर दो...मुझे माफ कर दो, मेरी बेटी ! मैंने तुम्हें उड़ने के लिए आकाश का विस्तार तो दिया, लेकिन चलने के लिए कुछ कदम जमीन न दी....मैं, मैं दोषी हूं कि मैंने तुम्हें कला का पिंजरा तो दिया लेकिन जीवन का नीड़ नहीं दिया...बहुत बुरा किया मैंने...बहुत बुरा किया..." बेला ने आंखें खोलीं। उस्ताद की बूढ़ी आंखों से आंसू लगातार बह रहे थे। मानव-संबंध ने कला की दीवार को गिरा दिया था। बेला को अजीब-सी मिठास का एहसास होने लगा। ऐसी अनुभूति जो बच्चे को अपने बाप के निकट होने से होती है। बेला ने अपना सिर उठा कर उस्ताद की गोद में गिरा दिया।

**७ पूर्वी मार्ग, वसंत विहार, नयी दिल्ली-**

**(अनु. यश सरोज**

## प्रेम प्रसंग : युद्ध संस्मरण

# र्फ एक बार आ जा

**● डॉ. विनय वाईकर**

"बला है, कहर है, आफत है, फित्ना है, कयामत है, चक्रम है, पागल है, वहशी है, हैवान है, शैतान है, ब्रिगेडियर विक्रम सिंह को विक्रम सिंह कौन कहता है ।"

हमारी ६९ ब्रिगेडियर के तमाम युवा अफसरों में ये पंक्तियां बड़ी मशहूर थीं और इसकी एक खास वजह थी । ६९ इंडिपेंडेंट बिग्रेड का ब्रिगेड कमांडर प्रिगेडियर विक्रम सिंह रील सचमुच 'ग्रेट' था । दया, माया, अनुकंपा, सहृदयता, सौहार्द्रता, शालीनता रहम, करम, 'मर्सी' इत्यादि सुसंस्कृत शब्द विक्रम सिंह रील नामक छह फुट ऊंचे जाट सिख बिग्रडियर के शब्द कोश से कब के निकल चुके थे । विक्रम सिंह का रंग गोरा है, ऐसा कुछ लोग कहते थे लेकिन पगड़ी, भरपूर दाढ़ी, और मूछों के सामने कुछ पता नहीं लगता था । उसकी आंखें हलके नीले रंग की हैं, ऐसी किंवदंती थी लेकिन उसकी ओर आंख उठाकर उसकी आंखों में झांकने की हिम्मत कप्तान और कप्तान के स्तर के नीचे के बंदे कर ही नहीं सकते थे । और इसीलिए ब्रिगेडियर विक्रम सिंह हम युवा अफसरों के लिए एक रहस्य था उसकी आवाज ! ब्रिडियर बोलता कम था, दहाड़ता ज्यादा था । और ऐसा ब्रिगेडियर विक्रम सिंह ६९ ब्रिगेड का ब्रिगेड कमांडर था ।

हमारी ६९ ब्रिगेड भी बड़ी अजीबोगरीब थी और जम्मू से श्रीनगर तक के इलाके में काफी मशहूर थी । हम आजाद थे, 'इंडिपेंडेंट' थे । हमारा संपर्क किसी डिवीजन से न होकर सीधे कोर हेडक्वार्टर और आर्मी हैडक्वार्टर से था । हमारी ब्रिगेड के तहत तीन इनफैंट्री बटालियन, एक मेडिकल कंपनी, एक सप्लाय प्लाटून, और कुछ छोटे-मोटे यूनिट्स थे । ब्रिगेड हेडक्वार्टर में ब्रिगेडियर के अलावा और भी अफसर थे और उन अफसरों में एक मैं भी था । ब्रिगेड का ब्रिगेड डॉक्टर, कैप्टेन विनय वाईकर ।

हमारी ६९ इनफैक्ट्री ब्रिगेड को कुछ लोग 'उल्टा-पुल्टा' ब्रिगेड कहते थे और कुछ 'बकरवाल' ब्रिगेड । 'बकरवाल' शब्द ज्यादा लागू होता था, क्योंकि कोई स्थायी जगह न होने से हम सालभर यहां-वहां घूमते रहते थे । जिस तरह बकरवाल अपनी भेड़-बकरियों को लेकर दाना-पानी और घास की खोज में जगह बदलते रहते हैं, उसी प्रकार हम भी, कमांडर विक्रम सिंह के नेतृत्व में गरमियों में श्रीनगर की पहाड़ियों पर और ठंड में जम्मू की तराइयों में
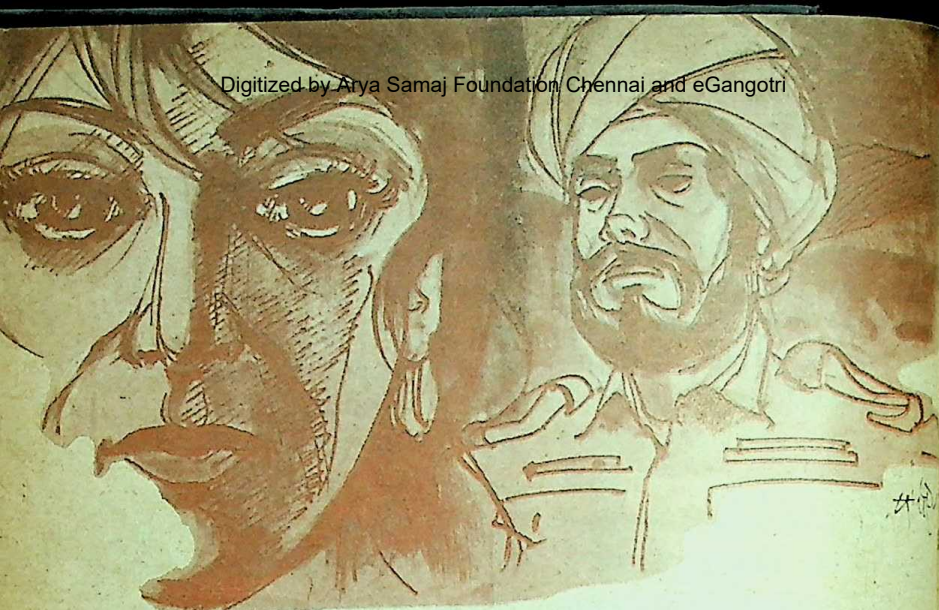
पनाह पाते थे। लेकिन इतना अवश्य था कि हमारा ब्रिगेड और हमारा ब्रिगेड कमांडर विक्रम सिंह, कब और क्या कर बैठेगा, इसकी जानकारी परवरदिगार को भी नहीं होती थी।

ब्रिगेडियर विक्रम सिंह के कुछ अलिखित कायदे थे और उनका पालन सबको करना पड़ता था। ६९ ब्रिगेड के अंतर्गत आनेवाले हर सिपाही के लिए यह अनिवार्य था कि वह सप्ताह के सात दिनों में से पांच दिन पहाड़ पर रहे और बिलकुल खुले में रहे। हम हर सोमवार पानी की छागल लेकर, साथ में बंदूक, पीठ पर बड़ा झोला (ओ एल) बांधकर, कमर में व्हेवरसैक, और पांच दिनों का ड्राय राशन लेकर पहाड़ों पर, पहाड़ी युद्ध का प्रशिक्षण लेने के लिए निकल पड़ते थे और शुक्रवार की शाम तक वापस आते थे। शनिवार और रविवार 'मैंटेनेंस डे' हुआ करता था। यह कायदा अफसर से लेकर नाई, स्वीपर तक सब पर, समान रूप से लागू होता था। ब्रिगेडियर साहब के मुताबिक ६९ ब्रिगेड का हर व्यक्ति सिपाही के समान रहे और सैनिक के समान मरे।

दूसरे कायदे के तहत ब्रिगेड के हर व्यक्ति के लिए यह लाजमी था कि वह सुबह की दिनचर्या खोदे हुए गढ़े, जिसे फौजी जुबान में डी.टी.एल.

**ब्रिगेडियर विक्रम सिंह जो अपनी यूनिटवालों के लिए 'बला' था। वे उसे विक्रम सिंह की बजाय चक्रमसिंह कहा करते थे।**

**कैप्टेन जगजीत सिंह जो अपने विवाह के लिए केवल एक दिन की छुट्टी चाहता था।**

**और मनजीत, जगजीत की प्रेमिका, मंगेतर जो बेसब्री से उसका इंतजार कर रही थी।**

**एक मर्मस्पर्शी रचना!**

(डीप ट्रेंच लैटरिन) कहते हैं, में ही करे । कुछ सीनियर अफसर ब्रिगेडियर के उस कायदे को गंभीरता से न लेते हुए अपने-अपने खेमे या टेंट के पास एक छोटे टेंट में कमोड रखते थे । पता नहीं, कैसे और कहां से, यह खबर ब्रिगेडियर विक्रम सिंह को लग गयी । एक दिन दोपहर को, वह गुस्से में आग बबूला होकर, कैंप में आया और सब जवानों के समक्ष तमाम कमोड्स जलाकर नष्ट कर डाले, एक सीनियर अफसर जरा हिम्मत करते हुए धीरे से बोला, "सर, आज आपने हम सीनियर अफसरों का सभी जवानों के सामने भारी अपमान किया है । सर, वी.आर.इंसल्टेड ।"

और यह सुनते ही विक्रम सिंह दहाड़ा, "टु हेल विथ यू एंड योर ब्लडी इंसल्ट । अरे उल्लू के पट्ठो, फर्ज करो, अगर सुबह के उस वक्त दुश्मन के हवाई जहाज अचानक बमबारी करने लगे तो छिपोगे कहां ? डिग ए ब्लडी होल, छह फुट लंबा और दो फुट चौड़ा एंड सिट देअर । समझे ?"

ऐसा था हमारा ब्रिगेडियर, और हमारा ६९ ब्रिगेड । ब्रिगेडियर तो बिलकुल एकलव्य-जैसा था । एक ही लक्ष्य था उसका । शत्रु, युद्ध युद्धनीति युद्ध के दांव-पेंच और रणांगण । और वैसे देखा जाए तो कश्मीर घाटी में वातावरण काफी तंग था, काफी तल्ख था, काफी गरम था । कुछ होनेवाला है, इसका अहसास सबको हो चुका था । वहां के निवासी भी कहते थे, 'बदले-बदले मेरे सरकार नजर आते हैं, घर की बरबादी के आसार नजर आते हैं ।' छुट्टियां रद्द हो गयी थीं ।

जो छुट्टी पर थे, उन्हें फौरन वापस बुला लिया गया था । आपातकाल की घोषणा हो चुकी थी । और हर कमांडर को दिल्ली से गुप्त संदेश आया था, "जागते रहो, चौकन्ने रहो, अगले आदेश का इंतजार करो, ट्रेनिंग बरकरार रखो ।" ब्रिगेडियर विक्रम सिंह को भी ऐसा ही आदेश मिला होगा, क्योंकि बड़े तड़के ही उसने मुझे बुला भेजा । उसके टेंट में घुसने के पहले मुझे छह महीने पहले का एक प्रसंग याद आया ।

४०९ मेडिकल कंपनी से मेरा तबादला ६९ ब्रिगेड हेड क्वार्टर हुआ था । मैं ब्रिगेड पहुंचा । ब्रिगेडियर साहब को सलाम मारना लाजमी था । मैंने ब्रिगेडियर विक्रम सिंह के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था अतः डरते, सहमते मैं उसके आफिस के सामने पहुंचा । टैंट के बाहर लगे हुए आदमकद आईने में मैंने अपना हुलिया देखी । यूनिफार्म ठीक-ठाक की, जंगल हैट सिर पर रखा और चिन स्ट्रैप खीचनेवाला ही था कि विक्रमसिंह अंदर से चीखा,

"अरे डॉक्टर, तू मर्द है या औरत । जल्दी अंदर क्यों नहीं आता ? क्या मैं शाम तक तेरा इंतजार करूं ?"

मैं हड़बड़ाया । मैंने चिन स्ट्रैप जोर से खीचा तो वह टूट गया । टूटा स्ट्रैप मैंने टोपी के अंदर दबाया और टैंट में घुसते हुए बोला ।

"गुडमार्निंग सर । आइ एम कैप्टेन वाईकर । ब्रिगेड का नया डॉक्टर ।" सैल्यूट करते हुए मैं 'स्मार्टली' बोला ।

तुम अपने आपको समझते क्या हो ? एक डॉक्टर या हॉलीवुड का विलियम होल्डेन ?" विक्रम सिंह दहाड़ा ।

"क्यों सर क्या हुआ ?" मैं हड़बड़ाया

"तुम्हारे जंगल हैट का चिन स्ट्रैप कहां है ?"

"टूटा है । हैट के अंदर है ।" मैं हिम्मत से बोला ।

"कैसे टूटा ?" ब्रिगेडियर फिर दहाड़ा ।

"आपके चीखने-चिल्लाने से ।" मैं बड़ी हिम्मत से बोला ।

"क्या बकते हो ?" विक्रम सिंह चीखा ।

"बकता नहीं, सच कह रहा हूं और एक डॉक्टर की हैसियत से आज संजीदगी से सोच रहा हूं कि इस तरह के हाइव्होल्टेज चिल्लाने से आज तक आपके हृदय की सूक्ष्म धमनियां और कोरानरी आर्टरी टूटी क्यों नहीं ?"

"क्या चिल्लाने से धमनियां फट जाती हैं ।" ब्रिगेडियर की आवाज एकदम भारी हो गयी ।

"जी हां । और आदमी बैठे-बैठे... ।" मैं गंभीरता से बोला और हैट का टूटा पट्टा उसे दिखाते हुए सामने की कुरसी से टिक गया । लेकिन इस प्रेमालाप से एक फायदा अवश्य हुआ । मैं और ब्रिगेडियर अच्छे दोस्त बन गये ।

उस प्रसंग की याद सजीव होने पर मैं मन ही मन हंसा और बिग्रेडियर के आफिस में घुसा । "गुड मार्निंग सर ।"

"देखो डॉक्टर, ऐसा लगता है कि अगले पंद्रह-बीस दिनों में जंग छिड़ जाएगी । अपनी ब्रिगेड से मैंने पांच आफिसर और बीस जवान कमांडो विशेष प्रशिक्षण के लिए चुने हैं और उन्हें आज रात को जंगल में प्रशिक्षण के लिए भेज रहा हूं । सात दिनों की ट्रेनिंग है । मेरा सुझाव है, इस ट्रेनिंग में तुम भी शरीक हो जाओ—एक डॉक्टर की हैसियत से । लेकिन याद रहे डॉक्टर, ये सब कमांडो हैं । इन पर फिजूल की दया-माया नहीं दिखाना । तुम्हारे पास आने के लिए कम से कम कोई बड़ी हड्डी टूटी होनी चाहिए । ओके ? अगर कोई जवान सरदी, खांसी, जुकाम, दस्त, कमर का दर्द लेकर आये तो उसकी कमर में एक लात लगाओ और लड़ने के लिए वापस भेजो । इज दैट क्लीअर डॉक्टर ?"

"यस सर । आय अंडर स्टैंड ।" मुझे इस बात का अहसास हो चुका था कि यह ट्रेनिंग महज ट्रेनिंग न होकर एक युद्ध की तैयारी थी।

आठवें दिन मैं लौटा और मैंने रिपोर्ट दी कि इन सात दिनों में कोई कमांडो बीमार नहीं पड़ा और कई बार तो जवानों ने मेंढक और सांप भी भूनकर खा लिए । यह सुनते ही विक्रम सिंह खुशी से झूम उठा, और आनंद से चीखा, "ब्रेव्हो डॉक, शाबाश ! अरे, मैं जानता हूं मेरे ब्वायों को । मर्द की औलाद हैं । देखना डॉक्टर जंग में दुश्मन का पांच दिनों में रायता बना देंगे रायता !!"

बहुत दिनों के बाद विक्रम सिंह के चेहरे पर मैंने हंसी देखी थी । दूसरे दिन सुबह दस बजे के करीब मेरे अस्पताल के टेंट के बाहर एक जीप आकर रुकी और जीप से ब्रिगेडियर की आवाज गूंजी, "डॉक्टर, ऑर यू फ्री ? मरीज क्या ?"

"नो सर ।" मैं बाहर आते हुए बोला ।

"ठीक है, बैठ जीप में । जरा घूमकर आते हैं ।"

मैं जीप की पिछली सीट पर बैठा गाड़ी खुद विक्रम सिंह चला चहा था । उसके पास ब्रिगेड मेजर सूरज भान बैठा था । पीछे मैं, एडज्युटेंट कैप्टेन दिवाकर और ड्रायवर थे । गाड़ी बहुत तेजी से जा रही थी । दिवाकर ने मुझे हौले से बताया कि हम नयी जगह की तलाश में जा रहे हैं । काफी घूमने के बाद हम सब लगभग दो बजे वापस लौटे । सबको भूख सता रही थी । मेस में घुसते हुए ब्रिगेड मेजर सूरज भान चिल्लाया, "हवलदार सूचासिंह, खाना गरम करो, लेकिन उसके पहले सबके लिए एक-एक ठंडी बीयर खोलो ।"

हम सब आराम से बैठ गये और उसी वक्त हम सबकी नजर कैप्टेन जगजीत सिंह पर पड़ी । जगजीत एक कोने में खामोश सिर लटकाये बैठा हुआ था । उसे न अपनी सुध थी न परायों की ।

"ओय, जगजीत, की होया तुहानू ?" विक्रम सिंह दहाड़ा और उसकी तेज आवाज सुनकर जगजीत हड़बड़ाकर उठा और हकलाते हुए बोला,

"गुड मार्निंग, आय मीन गुड ऑफ्टर नून सर, आय मीन ।"

"ये तू क्या हकला रहा है । क्या हुआ है तुझे ? लड़कियों की तरह गरदन लटकाये क्यों बैठा है । 'खाना खाया ?"

"नो सर ।" जगजीत हौले से बुदबुदाया ।

"क्यों ?" विक्रम दहाड़ा ।

"भूख नहीं है ।"

"बात क्या है ? कहता क्यों नहीं । ले एक गिलास बीयर पी ।"

"नो सर, थैंक्स । आज मूड नहीं है ।" जगजीत बुदबुदाया ।

"टु हेल विद् युवर ब्लडी मूड ? क्या हुआ है तुझे ?" ब्रिगेडियर फिर दहाड़ा । "चिट्ठी आयी है घर से ।"

"क्या लिखा है चिट्ठी में ?" विक्रम ने पूछा ।

"लीजिए आप ही पढ़ लें, प्लीज ।"

ब्रिगेड हेड क्वार्टर के सिग्नल आफिसर जगजीत सिंह ने चिट्ठी विक्रम सिंह के हवाले की । हिंदुस्तान-पाकिस्तान के बॉर्डर पर बसे जगजीत सिंह के गांव से चिट्ठी आयी थी । चिट्ठी किसी लड़की ने लिखी थी । गुरुमुखी लिपि में लिखी उस चिट्ठी में लिखा था ।

*"मेरे जगजीत—*

*अपने गांव में ही जंग की तैयारी जोरों से शुरू है । तेरे बाबा और मेरे बापू खंदक खोदने में फौज की मदद कर रहे हैं । सारा कस्बा दिन-रात इसी काम पर जुटा है । जगजीत, तू जानता है कि अपनी कुड़माई हुए करीब एक साल हो गया है । पिछले माह अपनी शादी भी होनेवाली थी । लेकिन जंग के एलान से और छुट्टियों के रद्द होने से तुझे अचानक ब्रिगेड लौट जाना पड़ा । किसी बहादुर फौजी कप्तान की मैं शायद कभी पत्नी बनूंगी, इस अहसास से कहीं*

*ज्यादा रंज इस बात का है कि आज, इस वक्त, मैं उसकी कुछ भी नहीं हूं । हाथ जोड़कर विनती करती हूं जगजीत चंद घंटों के लिए गांव आ जा । मुझसे ब्याह कर और मेरी मांग में सिंदूर भरकर चला जा । विजय का सेहरा बांधकर जब तू जंगल से लौटेगा तो मैं अपने लहू का टीका तेरे माथे पर लगा कर तेरा स्वागत करूंगी । जंग में अगर तुझे कुछ हो जाए—तो एक बहादुर अफसर की बेवा बनकर हंसते हुए जिंदगी गुजार दूंगी । जगजीत, तू मुझे बचपन से जानता है और यह भी जानता है कि मैं कितनी जिद्दी हूं । सिर्फ एक बार आ जा जगजीत सिर्फ चंद लमहों के लिए आ जा । मुझे अपनी बना और फिर वापस चले जा दुश्मन से लड़ने के लिए । इसके बाद मैं तुझसे कभी कुछ नहीं मांगूंगी—मैं वचन देती हूं । सिर्फ एक दिन की छुट्टी लेकर आ जा जगजीत— ।*

*सिर्फ तेरी,*
*मनजीत कौर*

"हां, तो तुम क्या चाहते हो जगजीत ?" ब्रिगेडियर विक्रम सिंह धीमी आवाज में बोला,

"सिर्फ एक दिन की छुट्टी सर ।"

"असंभव" ।

"प्लीज सर—मैं अभी निकलता हूं और वचन देता हूं सर कि मैं कल तक वापस आ जाऊंगा ।"

"इम्पासिबल, इमरजेंसी के दौरान मैं किसी अफसर को एक घंटे की भी छुट्टी नहीं दे सकता ।"

"सर, प्लीज आप समझने की कोशिश करें । सर, ये लड़की मनजीत सचमुच सिरफिरी है । सर, वो कुछ भी कर सकती है सर । मनजीत कौर जोश में आकर यहां भी आ धमक सकती है ।"

"वो नहीं आएगी । अगर उसे आना होता तो इसके पहले ही आ जाती । यह खत बारह दिन पहले लिखा हुआ है । अब तक उसे यकीन हो गया होगा कि तुम्हें छुट्टी मिलना असंभव है ।"

"सर, मैं एक बार फिर से गुजारिश करता हूं । मुझे बस एक दिन की—"

"नो, एंड दैट इज फाइनल । मैं तुम्हें छुट्टी नहीं दे सकता । चलो खाना खाया जाए" ब्रिगेडियर फिर से दहाड़ा और डायनिग रूम की ओर चल पड़ा । हम सब उसके पीछे हो लिये जगजीत अकेला वहीं पर खड़ा रहा । भोजन के बाद हम जब अपने अपने तंबू में लौटे तब भी जगजीत उसी कोने में सिर लटकाये बैठा था।

शाम को लगभग छह बजे सिगरेट की डिबिया लेने के लिए मैं मेस पहुंचा । कैप्टेन जगजीत उसी जगह पर बैठा हुआ था । न मैं कुछ बोला और न ही उसने कुछ कहा । सिगरेट लेकर मैं जैसे ही मुड़ा, ब्रिगेडियर विक्रम सिंह मेस में अचानक आया । उसे देखते ही हम दोनों सावधान खड़े हो गये ।"

"ओके कैप्टेन जगजीत, तुम इसी वक्त अपने गांव के लिए रवाना हो जाओ, बाहर मेरी जीप और ड्राइवर तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।"

"सर यह मैं क्या सुन रहा हूं ?"

"शट अप यू फूल जस्ट लिसन टू मी ।" विक्रम आवेश से बोला ।

"सॉरी सर", जगजीत धीरे से बोला ।

"तो कैप्टेन जगजीत, आप मेरी जीप लेकर फौरन अपने गांव जाएं । सात-आठ घंटों में

आप अपने गांव पहुंच जाएंगे। कल सुबह आप शादी करें और शादी होते ही अपनी बीवी को जीप में डालकर पठानकोट चले जाएं, वहां पर ट्रांजिट आफिसर मेस में मैंने तुम दोनों का इंतजाम वी.आई.पी. कमरे में किया है। ट्रांजिट अफसर मेस का सी.ओ. मेरा दोस्त है। कर्नल पुरी है उसका नाम। वो देखभाल करेगा तुम दोनों की। ओके ?''

''यस सर।''

''कैप्टेन जगजीत, तू सचमुच पागल है। अरे जिंदगी में शादी सिर्फ एक बार होती है। मैं तुम्हें चार दिनों के लिए भेज रहा हूं छुट्टी पर नहीं लेकिन टेंपरेरी ड्यूटी पर—पठानकोट के ट्रांजिट आफिसर मेस में—दो-तीन दिन तो अपनी दुल्हन के साथ आराम से रहो कैप्टेन ! लेकिन याद रहे, मैं अगर इस बीच तुम्हें बुलाऊं तो तुम फौरन अपनी बीवी को घर छोड़कर जीप लेकर ब्रिगेड लौटोगे। जंग कभी भी छिड़ सकती है। इज दैट क्लीयर ? दिस इज आर्डर''

''यस सर।'' ''हां उस कमरे में टेलीफोन है, मैं तुम्हें वहीं पर फोन करूंगा, ओके ?''
''यस सर—अब मैं चलता हूं सर''

''रुको ? मेरी कार्रवाई अभी पूरी नहीं हुई है''। विक्रम सिंह फिर दहाड़ा और उसने हवलदार सूचासिंह को आवाज दी। सूचासिंह दौड़ा-दौड़ा आया। उसके हाथ में कागज में लिपटा एक पैकेट था। ''कैप्टेन जगजीत सिंह। इस ब्रिगेड की ओर से हम तुम्हें एक तोहफा दे रहे हैं। तुम्हारी शादी की खुशी में। लो इसे कबूल करो और खोलकर देखो।''

जगजीत ने पैकेट खोला। अंदर दुल्हन का शादी का जोड़ा था। जगजीत बस देखता ही रह गया।

''आज दोपहर को, जब मैं कर्नल पुरी को पठानकोट फोन कर रहा था, तब सूचासिंह को जम्मू भेजकर मैंने यह जोड़ा मंगवा लिया। तुम्हें पसंद आया ?''

''सर, धन्यवाद..... ।''

जगजीत शब्दों को ढूंढ़ रहा था और उसकी आंखों में आंसुओं की बूंदें छलक रही थीं।

''कम आन, कम आन जगजीत, अरे असली फौजी कभी रोता नहीं है। जाओ बच्चे, शान से जाओ, शादी करो और विश यू आल अस दि बेस्ट दैट लाइफ केन आफर।''

विक्रम सिंह की आवाज में आज एक अजीबोगरीब हरकत थी। जगजीत ने तोहफा सीने से लगाया और विक्रम सिंह के चरण स्पर्श करने झुका ही था कि विक्रम जोर से दहाड़ा, ''असली फौजी, जरा-सी बात के लिए किसी के पांव नहीं छूते कैप्टेन। जाओ, कोई तुम्हारा बेसब्री से इंतजार कर रहा है।'' जगजीत मुड़ा, बाहर गया और थोड़ी ही देर में जीप शुरू होने की आवाज हुई।

किंकर्तव्यविमूढ़ ! बड़ा ही मजेदार शब्द है लेकिन उस वक्त मेरी दशा को दर्शन के लिए बिल्कुल योग्य था, उचित था। मैंने जो कुछ भी देखा सुना था। क्या वह सत्य था अथवा स्वप्न ? ब्रिगेड के अधिकांश अफसर विक्रम सिंह को चक्रम सिंह क्यों कहते हैं, इसका राज मुझ पर खुला। मुग्ध होकर मैंने ब्रिगेडियर विक्रम सिंह से पूछा ''सर यह सब कुछ क्या हो रहा है ?''

''जगजीत की शादी हो रही है—शादी।''

विक्रम सिंह अखबार के पत्रों के पीछे से बोला,

"वो तो सब ठीक है सर, लेकिन वो जीप वो वधु की लाल सैटिन की पोशाक, वो टेंपरेरी ड्यूटी और वो वी.आई.पी. कमरा ? सर यह सब मेरी समझ के बाहर है ।"

विक्रम सिंह ने अखबार दूर फेंका और मेरे पास आकर मेरे कंधों पर हौले से हाथ रखकर बोला, "डॉक्टर, कैप्टेन जगजीत नसीबवाला है । कोई प्यार करता है उससे । किसी को इंतजार है उसका । जगजीत वाकई नसीबवाला है क्योंकि केवल तकदीरवालों को ही मुझ-जैसा ब्रिगेडियर मिलता है । डॉक्टर—मैंने भी कभी, खैर छोड़ो इन बातों को । सब बकवास है डॉक्टर—लैट अस फरगेट इट । चलो, बार चलते हैं । लेट अस टोस्ट टू दि हेल्थ ऑव कैप्टेन जगजीत सिंह एंड हिज वाइफ मनजीत ।"

विक्रम सिंह अचानक मुड़ा और बाहर की ओर चल पड़ा । उसकी आवाज में आज केवल हरकत ही नहीं थी, आसावरी के करुण स्वरों की आर्द्रता भी घुली-मिली थी ।

रात बीती । दिन उगा । काम चल रहा था । जंग का इंतजार करते-करते रात आयी और रात के भोजन के लिए हम सब साढ़े नौ बजे के करीब फिर से डायनिंग रूम में एकत्रित हुए ।

अचानक मेस के बाहर एक जीप रुकी । कुछ ही क्षणों में जगजीत बिल्कुल हलके कदमों से अंदर आया और कोने में रखी उसी कुरसी पर बैठ गया । उसके हाथों में लाल सैटिन की वधु की पोशाक थी लेकिन आंखों में कोई चमक नहीं थी । पता नहीं वह कहां देख रहा था—किसे देख रहा था । कुछ क्षण खामोशी में बीते । डायनिंग रूम में एक मनहूस खामोशी थी और फिर जगजीत बिलकुल हौले से बोला ।

"सर, मैं आज ही ड्यूटी पर रिपोर्ट कर रहा हूं । सर इस पोशाक के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया, मैं कल रात ही गांव पहुंचा लेकिन मुझे वहां पहुंचने में थोड़ी देर हुई । मनजीत....इसी लाल रंग का शादी का जोड़ा पहने हुई थी लेकिन उसका रंग...उसका रंग... बिलकुल सूखा था सर—एकदम सूखा ।"

—९ सुंदरलाल राय पथ, रामदास पेठ, नागपुर-४४००१०

***परस्पर प्रेम के रहस्य को हृदय ही जान सकता है ।***

—भवभूति

***परमात्मा पूजा का नहीं, प्रेम का भूखा है ।***

—स्वामी दयानंद सरस्वती
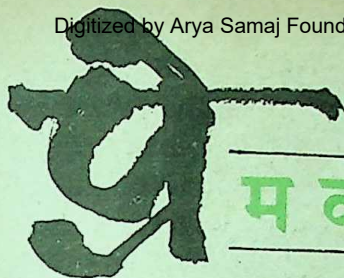
# प्रेम का नशा

१९८२ का सितम्बर मास था । नवस्थापित इंडोनेशिया जनतंत्र के लोकप्रिय राष्ट्रपति के सम्मानार्थ जावा के एक छोटे शहर में भोजन का आयोजन वहां की महिला संस्था ने किया था । भोज की समाप्ति के पश्चात संस्था की सदस्यायें एक कतार में राष्टरपति से परिचय करवाये जाने के इंतजार में खड़ी थी । संस्था की अध्यक्षा सभी सदस्याओं का बारी-बारी से परिचय देती जा रही थी । एक महिला के सामने जा कर राष्ट्रपति थम गये । उस स्त्री की आयु करीब तीस वर्ष थी, किंतु वह अपनी उम्र से छोटी लगती थी । मधुर स्मित वाली उस कोमलांगी के आकर्षक मुख की ओर सुकर्मों की दृष्टि जमी हुई थी । अध्यक्षा ने सुकर्णों का परिचय महिला से करावाया, "इनका नाम हार्तिनी है । ये पाक विद्या में निपुण हैं तथा आज के भोजन की समस्त व्यवस्था इन्होंने ही की है ।"

"अच्छा ?"—फिर जोर से हंसते हुए सुकर्णों ने कहा—"आज की सभी वस्तुएं बहुत स्वादिष्ट थीं और मैंने बहुत स्वाद लेकर उन्हें खाया है ।"

"सच कह रहे हैं ?"

"बिलकुल सच । आज के समान सुस्वादु भोजन मैंने बहुत समय से नहीं खाया था ।"

राष्ट्रपति की प्रशंसा सुनकर हार्तिनी का मन मयूर प्रसन्नता से नाच उठा । सुकार्णो के व्यक्तित्व से वह पहले ही प्रभावित थी । आज उनके मीठे बोलों और मधुर हास्य से वह और भी उनकी ओर आकर्षित हो गई ।

कुछ दिनों के पश्चात सुकार्णो के विश्वस्त व्यक्ति ने आकर हार्तिनी से कहा, "राष्ट्रपति आपसे बहुत प्रभावित हुए हैं और आपसे मिलना चाहते हैं । क्या आप उनसे भेंट करेंगी ?"

हार्तिनी तनिक हड़बड़ा गई । उसके जैसी पांच बच्चों की मां और एक तलाकशुदा साधारण स्त्री से मिलने के लिए राष्टरपति सुकार्णो जैसे श्रेष्ठा पुरुष ने खास दूत भेजकर मिलने बुलवाया है ? उसका मन डांवाडोल होने लगा, उसने फिर पूछा,—"क्या सच में ही राष्ट्रपति ने मुझे बुलवाया है ?"

"हां उन्होंने अत्यंत आग्रहपूर्वक आपको आने का निमंत्रण दिया है ।"

हार्तिनी और अधिक परेशान हो गई । सुकार्णो की रंगीनमिजाजी और ऐयाशी के बहुत चर्चे उसने सुन रखे थे । अब तक उन्होंने तीन बार विवाह करके उनमें से दो को तलाक दे दिया था । विवाहित पत्नियों के अतिरिक्त भी उनके इतर संबंधों के काफी चर्चे थे । उसने अन्त में पूछा, "राष्टरपति की पत्नी पद्मावती

**मेरा तुम पर अटूट प्रेम है । इसके बाद अब मैं किसी भी स्त्री के प्रेम में नहीं पड़ूंगा ।**

जकार्ता में उनके साथ ही रहता है न ?''

''जी हां ।''

''उनके बाल-बच्चे भी हैं ?''

''हैं ।''

''उनके राष्ट्रपति से संबंध कैसे हैं ?''

''ठीक ही है ।''

''फिर भी....''

''उनसे भेंट करने में आपको कोई हर्ज नहीं है ।''

''फिर भी मैं एक बार जरा इस पर विचार करना चाहती हूं ।''

''ठीक है । मैं उनसे यही कह दूंगा ।''

थोड़ा निराश होकर वह व्यक्ति चला गया । हार्तिनी अपने सामने खड़ी समौसया पर विचार करने लगी ।

डा. सुकर्णो मध्यमवय का हो कर भी, युवकों के समान चुस्त व तेजपूर्ण लगता था । उसकी उस दिन की उन्मुक्त हंसी ने हार्तिनी के मन में घर कर लिया था । उसे लगा वह उसके साथ छल नहीं करेगा, अतः उसने उसका आमंत्रण स्वीकार करके वहां जाने का निश्चय कर लिया ।

परंतु उसका व्यवहारकुशल मन उसको बार-बार इस राह पर जाने से रोक रहा था । वह एक बार ठोकर खा चुकी थी । बारह वर्ष के वैवाहिक जीवन और पांच संतानों के बाद उसे तलाक दे दिया गया था । अब दूसरी बार वह किसी फंदे में नहीं पड़ना चाहती थी । वह भी सुकार्णो जैसे चर्चित ऐयाश के फंदे में तो हरगिज नहीं...वरना एक बार फिर उसे पछताना पड़ेगा ।

उसका हृदय इसी उहापोह में डूब-उतरा रहा था कि उसे सुकार्णो का रजिस्ट्रर्ड पत्र प्राप्त हुआ । इस लंबे पत्र में सुकार्णो ने अपने दिल का हाल सविस्तार लिख दिया था । उसने पत्र में हार्तिनी को 'श्री हानि' कहकर संबोधित किया था तथा अपने हस्ताक्षर से पहले 'श्री हाना' लिखा था । ये दोनों ही पात्र शीरी-फरहाद, लैला-मजनू की तरह, जावी साहित्य में अमर प्रेमी यूगल के रूप में प्रसिद्ध थे । पत्र से सुकार्णो का प्रेम झलक रहा था । उसमें लिखा था, ''प्रथम बार मिलते ही मेरा हृदय तुम्हारी ओर आकर्पित हो गया था । मुझे यह समझने में तनिक भी भूल नहीं हुई कि तुम भी उस दिन मेरी ओर आकर्षण अनुभव कर रही थीं ।

हार्तिनी का हृदय इस पत्र को पढ़कर 'श्रीहानि' संबोधन से पिघल गया । वह सुकार्णो से भेंट करने को मान गई । इस आशय का पत्र उसने भेज दिया । कुछ दिनों पश्चात कुकार्णो का वही मित्र एक बार फिर आया और हार्तिनी को

**डॉ. सुकार्णो मध्य वय का होकर भी, युवकों के समान चुस्त व तेजपूर्ण लगता था। उसकी उस दिन की उन्मुक्त हंसी ने हार्तिनी के मन में घर कर लिया था। उसे लगा वह उसके साथ छल नहीं करेगा।**

गोपनीय रूप से सुकार्णो के एकांत विश्रामस्थल ले गया। जीवन की राह बदल देने वाले इस प्रवास में, हार्तिनी बहुत घबराई हुई थी। अपनी इच्छापूर्ति के पश्चात स्त्रियों को राह में फेंक देने वाले पाषाणहृदयी पुरुष के रूप में भी, इष्ट मित्रों ने हार्तिनी को समझाया था। कहीं मेरा भी हश्र ऐसा ही न हो, यही भय हार्तिनी को खाये जा रहा था। इसी मनःस्थिति में हार्तिनी सुकार्णो के पास गयी। उसके शरीर से पसीना छूट रहा था। पास जाते ही सुकार्णो ने आगे बढ़कर हार्तिनी का हाथ थाम लिया।

सात जुलाई १९५४ के दिन सुकार्णो तथा हार्तिनी का निकाह निजीपनास के महल में संपन्न हुआ। इस्लाम धर्मानुसार एक पत्नी के रहते हुए भी दूसरा विवाह किया जा सकता था। किंतु वहां का महिला समाज इस्लामी धर्म मानते हुए भी बहुपत्नी प्रथा के खिलाफ था। उसने इस विवाह का कड़ा विरोध किया तथा इसके विरोध में प्रस्ताव पास किया। सुकार्णो इससे पहले भी कई विवाह कर चुका था।

सुकार्णो की अन्य पत्नी पद्मावती जकार्ता के महल में रहती थी। अतः हार्तिनी बॉगोर के एक छोटे से सुरम्य बंगले 'पेविलियन' में रहने लगी। सुकार्णो शुक्रवार को अपराह्न में चार बजे वहां हेलिकाप्टर से आता और सोमवार को सुबह दस बजे चला जाता। कार्यवश कभी जकार्ता से बाहर कहीं जाना पड़ता तो वह हार्तिनी को फोन पर सूचना दे देता। इतना ही नहीं वह रोज हार्तिनी से फोन पर प्रेमालाप करता और अपने एक-निष्ठ प्रेम का इजहार करता। किंतु शीघ्र ही हार्तिनी को विश्वस्त सूत्रों से पता चल गया कि सुकार्णो उसके प्रति एकनिष्ठ नहीं था एवं झूठ बोलता था। १९५९ में मार्शल टीटो के आमंत्रण पर सुकार्णा युगोस्लाविया की यात्रा पर गया। इस यात्रा में वह हार्तिनी को भी साथ ले गया। शाही मेहमान की खातिर दो गायिकाओं के गायन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। सुकार्णो गायन की अपेक्षा उन गायिकाओं के यौवन रस में अधिक खिंचाव महसूस कर रहा था। मध्यांतर में वे गायिकायें विश्राम के लिए चली गईं। पीछे-पीछे सुकार्णो भी हार्तिनी की परवाह किये बगैर वहां से चला गया। इस बात से मार्शल टीटो को आश्चर्य हुआ। उन्होंने हार्तिनी से पूछा, "राष्टरपति कहां गये ?"

हार्तिनी ने बताया, "मुझे कुछ नहीं मालूम !"

मार्शल टीटो उस समय तो चुप हो गये किंतु सुकार्णो के आते ही उन्होंने पूछा, "आप कहां चले गये थे ?"

"आपकी सुंदर गायिकाओं की खोज में।" उस समय उसे यह भी ध्यान न रहा कि उसके

पास ही हार्तिनी भी बैठी है ।

इसी प्रकार १९६१ में सुकार्णो इजिप्ट की यात्रा पर गया हुआ था । वहां उसके सम्मान में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ, किंतु एक भी कार्यक्रम में किसी स्त्री की परछाई तक भी न दिखाई दी । इससे सुकार्णो तनिक निराश हो गया । अंत में उससे न रहा गया तो उसने राष्ट्रपति नासिर से पूछा ही लिया—क्या आपके देश में स्त्रियां नहीं हैं ?''

''क्यों, आपको यहां की महिला देखनी है ? ठीक है, आज रात्रि मैं एक महिला को अपके पास ले आऊंगा ।'' नासिर ने कहा ।

''सच ?''

''हां, बिलकुल सच ।''

नासिर ने एक बुजुर्ग महिला को उनके सामने ला खड़ा किया । ''आपको हमारे यहां की महिला देखनी थी न ? इन्हें देखिए । ये मेरी बड़ी बहन हैं ।''

इसी प्रकार की अनेक घटनाएं थीं । हार्तिनी के साथ निकाह हुए वर्ष भी न बीता था कि वह एक तरुण नर्तकी की जुल्फों में उलझ गया ।

''अब मैं क्या करूं,''—फिर उसने विचार किया कि सुकार्णो तो किसी प्रकार बदलने वाला नहीं । अब तो यही ठीक है कि उसके प्रेम कार्यों की ओर से आंखें मूंद कर जीवन बिता लूं । किंतु उसके कानों तक सुकार्णो की ऐय्याशियों के पर्चे पहुंच ही जाते और वह बेचैन हो जाती ।

सुकार्णो हमेशा उसे फुसलाता रहा । जापानी प्रवास के दौरान भी उसे लंबे-लंबे प्रेम-पत्र लिखता रहा । उसके प्रेम की निष्ठा का शीघ्र ही भंडाफोड़ हो भी गया । १८ जून, १९५९ को जापान में, जिस युवती रत्नादेवी से मिला करता था उसी से पांचवां निकाह कर लिया ।

सितंबर में रत्नादेवी जापान से इंडोनेशिया आयी और जकार्ता के एक भव्य प्रासाद में रहने लगी । सुकार्णो और रत्नादेवी की प्रणय केलि की सब बातें हार्तिनी तक पहुंचती रहतीं । सुकार्णो यह समझकर कि हार्तिनी को कुछ भी नहीं मालूम, उसी प्रकार सप्ताहांत में बॉगोर आता रहा । एक दिन जब हार्तिनी से न रहा गया तो उसने सुकार्णो से पूछ ही लिया, ''कैसी है आपकी नयी जापानी प्रेमिका ?''

''क्या बात करती हो ?'' सुकार्णो ने टाल दिया ।

यह नहीं कि रत्नादेवी से विवाह के पश्चात सुकार्णो के चालचलन में कोई बदलाव आया हो । उसका नये-नये पंछियों की खोज का सिलसिला अब भी जारी था । १४ मई १९६० को उसने हवाना से हार्तिनी को लिखा, ''मेरा तुम पर अपार प्रेम है । मैं एक विशेष बात की ओर तुम्हारा ध्यान दिलाना चाहता हूं । अपने सौंदर्य की ओर से तुम लापरवाही मत करना । मैं सौंदर्य का पुजारी हूं, यह इतने दिनों में तुम अच्छी प्रकार समझ गयी होगी... ।''

जिस समय यह पत्र लिखा गया था उस समय सुकार्णो एक और युवती के चक्कर में पड़ा था ।

अब तो हार्तिनी सुकार्णो के भेजे प्रेम पत्रों से चिढ़ने भी लगी थी । इसी प्रकार होते-होते १९६४ आ गया । हार्तिनी को एक और धक्का लगा । सुकार्णो द्वारा हर्वाती नामक एक युवती के साथ प्रेम का खेल खेलते हुए वह युवती गर्भवती हो गयी और घबराकर सुकार्णो ने

उससे विवाह कर लिया ।

सुकार्णो के छठे विवाह के धक्के से हार्तिनी अभी उभरी भी न थी कि सुकार्णो द्वारा सातवां विवाह करने की जानकारी मिली ! उसे लगा वह पागल हो जाएगी । उस अभागी महिला का नाम था यूरिका संगर । इस विवाह के कुछ महीनोपरांत, रत्नादेवी ने एक कन्या को जन्म दिया । उसका नाम कार्तिका रखा गया, यह भी हार्तिनी ने सुना । अब सुकार्णो एक साथ कई स्त्रियों से प्रेम का खेल रचाने लगा ।

इन सभी घटनाओं के बावजूद हार्तिनी ने बुद्धि से काम लेकर पति के साथ झगड़ा न करने का निश्चय किया । कम से कम सुकार्णो जब उसके पास होता था, तब उसके प्रति अगाध प्रेम तो प्रकट करता था, यही उसके लिए काफी था ।

१ अक्तूबर १९६५ को एक दुर्घटना हुई । सुकर्णो के छह सेनापतियों की हत्या कर दी गयी, और सुकार्णो को कुछ दिनों के पश्चात राष्ट्रपति पद त्यागना पड़ा । उसे हार्तिनी के बंगले में ही नजरबंद कर दिया गया । महीने में केवल पांच दिन उसे अपनी अन्य पत्नियों के पास जकार्ता जाने की अनुमति थी । वहां जाकर आने के बाद भी सुकार्णो अपनी इतर पत्नियों की बात हार्तिनी से छुपाने की चेष्टा करता । हार्तिनी भी स्थिति की नाजुकता को देखते हुए कुछ न कहती । इसी स्थिति में उन्हें वहां से हटकर जकार्ता में रत्नादेवी के निवास में रहना पड़ा, जिस रत्ना की बात सुकार्णो हार्तिनी से छुपाना चाहता था, उसी रत्ना के पास उसे हार्तिनी सहित जाना पड़ा । किंतु हार्तिनी ने एक शब्द भी नहीं कहा । धीरे-धीरे सुकार्णो का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा उसकी किडनी में विकार उत्पन्न हो गया और उसकी अवस्था गंभीर होती चली गयी । वह बिस्तर से लगकर रह गया । एक दिन पता नहीं क्या सोचकर उसने बातें करते-करते हार्तिनी का हाथ अपने हाथ में ले लिया और कहा, ''हार्तिनी, मुझे एक बात के लिए क्षमा कर देना ।''

''किस बात के लिए ?''

''मैंने रत्ना से अपनी शादी की बात तुमसे छिपायी है, और कार्तिका मेरी पुत्री है ।''

''मुझे मालूम है ।''

''तुम मेरी एक बात मानोगी ?''

''क्या ?''

''रत्ना को तुम अपनी बहन समझना और कार्तिका को अपनी बेटी मानना । मानोगी न ? यह मेरी अंतिम इच्छा है ।''

इसके बाद सुकार्णो की हालत गिरती गयी । १६ जून को हालत गंभीर होती देख डॉक्टर ने कहा, ''इन्हें अस्पताल पहुंचाना होगा ।''

सुकार्णो को अस्पताल ले जाया गया । वह अचेतावस्था में पड़ा था । सुकार्णो जो मूर्छित हुआ तो फिर उसे होश नहीं आया । सुकार्णो की आत्मा ने कलेवर छोड़ दिया । उसके शरीर की ओर अश्रूपूर्ण नेत्रों से देखते हुए हार्तिनी को उसके पत्र में लिखे हुए शब्द याद आये । उसने लिखा था, ''मैंने हार्तिनी से विवाह क्यों किया ? इसका कारण अत्यंत सीधा और सरल है । उसे पहली बार देखते ही मैं उसे प्रेम करने लगा था । उस प्रेम का नशा ही विचित्र था । उस रोमांचक प्रेम का वर्णन करने के लिए तो प्रेम-ग्रंथ लिखने की आवश्यकता होगी ।''

— **प्रस्तुति : सु.मा.**

फिलिस्तीनी प्रेम कहानी

# धमाके के बीच सेहरा

मूल लेखक : जियाद अब्दल फतह

**इस कहानी के लेखक 'जियाद अब्दल फतह' अफरीकी-एशियाई लेखक संघ से संबंधित हैं और ट्यूनिस से प्रकाशित संघ की पत्रिका 'लोटस' के संपादक हैं ।**

दूर होनेवाले इक्के-दुक्के धमाकों की आवाजें तो आ रही थीं, लेकिन यहां बमबारी कुछ देर से रुकी हुई थी । बेरुत के इस दक्षिणी हिस्से में छायी यह अस्वाभाविक खामोशी छतों पर फटने वाले गोलों-गोलियों की आवाजों से कभी-कभी भंग भी हो जाती थी । दूर से देखने पर लगता था कि जैसे सारे इलाके से धुंध साफ हो रही हो और चारों तरफ फैले खंडहरों तथा टूटी-फूटी गलियों के बावजूद इलाका निखर रहा हो ।

खामोशी के इन्हीं दुर्लभ क्षणों की बदौलत लोग अपनी जरूरी जरूरतें पूरी कर पाते थे लेकिन वे गलियों में कम ही निकलते थे । थोड़ा-सा पानी ले आना भी एक बड़ा भारी काम था । इन्हीं नीरव क्षणों में दुलहन की मां दूसरी मंजिल पर गयी और दुलहन के गुसल के लिए थोड़ा-सा पानी ले आयी । इसी बीच कुछ उत्सव-प्रिय स्त्रियों ने वातावरण उल्लसित करने के लिए परंपरागत वैवाहिक गीत जल्दी-जल्दी गाना शुरू कर दिया ।

शैल्टर में भी हलचल होने लगी । पुराने कंबलों को जल्दी-जल्दी सिलकर बनाये गये परदे को एक कोने में टांग दिया गया और रोशनी से भी ज्यादा उमस पैदा करते गैस के हंडे की धुंधली रोशनी में औरतें दुल्हन के करीब खिसक आयीं । वे दुलहन को शादी के लिए तैयार करने लगीं । सबका काम बंटा हुआ था । कोई दुलहन के नाखून रंगने लगी और कोई उसके वस्त्रों और केशों की सज्जा करने में लग गयी । गैस के हंडे की उमस और उत्तेजना के कारण दुलहन के चेहरे पर आये पसीने को जब एक स्त्री ने पुराने तौलिए से पोछा तो दुलहन

के गालों पर लगी क्रीम और पाउडर भी पुंछ गये ।

शैल्टर के दूसरे हिस्से में सभी मर्द और बूढ़ी औरतें जिन्हें कोई काम सौंपा नहीं गया था, समय काटने के लिए बातचीत करने लगे । उनकी बातों का प्रमुख विषय उनके जीवन में व्याप्त भय तथा उसका निवारण ही था । काम में लगे और खाली बैठे सभी एक ही बात सोच रहे थे—अब तक न तो दूल्हा ही आया और न सेहरा गानेवाले ।

पास ही कहीं बम फटा । नीरवता भंग करते हुए एक आदमी बोला, "सेहरा गानेवाले क्या यहां आ पाएंगे ? उन्हें तो दूर हमरा से यहां आना है ।"

शायद... ! हमने उन्हें कल कह तो दिया था और उन्होंने आने का वायदा भी किया था । सभी इस वार्तालाप में शामिल हो गये थे ।

"हमरा में तो बहुत भीषण बमबारी हुई है और उससे भी ज्यादा 'हमरा' से यहां आनेवाले रास्ते पर । अगर बमबारी जारी रही तो उनका आना मुश्किल है ।"

अपने आंसू पोंछती हुई वह बोली, "मुझे काजल और पाउडर दो । कोई हमारी शादी को नहीं रोक सकता । गोली व्यक्ति की हत्या कर सकती है, जीवन की नहीं ।"

"लेकिन हमें तो ज्यादा चिंता दूल्हे की है ।"

हंडे की धूमिल रोशनी में एक आदमी ने अपनी घड़ी देखी और कहा, "अब तक तो उसकी ड्यूटी खतम हो चुकी होगी और वह निश्चय ही रास्ते में कहीं होगा ।"

"क्या सेहरा गानेवाले अपने साज ला सकेंगे ।"

"जरूर....अगर वे यहां आ सके तो । लेकिन बमबारी तो अब और भी तेज और करीब हो रही है । हर जगह आग लगी है ।"

एकाएक शैल्टर की छत का बीम हिलने लगा । सब मौन हो गये । दुलहन की सहेलियां
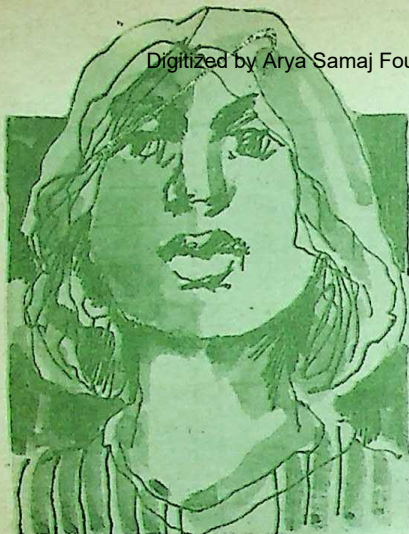
स्थिर हो गयीं और भय से उनकी अंगुलियां कांपने लगीं।

"यह बमबारी सब कुछ नष्ट कर देगी.... ।"

पहले ही से घबरा रहे लोगों के दिलों को इस बात ने और भी दहला दिया । कहनेवाले ने अपनी गलती समझी और बात संभालने की असफल-सी कोशिश की । लेकिन उससे पहले ही कोई बोल पड़ा....

"क्या बेवकूफी की बात है । दूल्हा भी आएगा और सेहरा गानेवाले भी । शैरोन (इसराइली जनरल) इस शादी को रोक नहीं सकता ।"

बमबारी तेज हो गयी थी । सारा इलाका बमों के टुकड़ों से पट गया । बमबारी बहुत करीब हो रही थी, जिससे आभास होता था कि पास का कोई मोरचा गिर चुका है । बेरूत के इस हिस्से को बचाने के लिए दो सप्ताह से घमासान मुकाबला हो रहा था ।

"शायद, हमारी सुरक्षा पंक्ति भंग हो गयी है ।"

दुलहन भी घबराने लगी थी । उसने धीरज रखने की पूरी कोशिश की । फिर भी काजल से काले हुए दो आंसू उसकी आंखों से टपक ही पड़े और गालों पर लगी क्रीम और पाउडर में घुल-मिल गये । दुलहन की सहेलियां स्तब्ध रह गयीं । सब सोच रही थीं कि दूल्हा आ भी पाएगा या नहीं.... हमें क्यों सारी दुनिया की तरह शांति से शादी भी नहीं करने दी जाती ?

शैल्टर के तहखाने से गोले गिरते तो नहीं दिखते थे लेकिन उनके धमाके महसूस किये जा सकते थे । दिल हिलानेवाले धमाके-बमों के उड़ते टुकड़े खिड़कियों के शीशों की टूटकर छितरती किरचें-उत्पीड़न, हताशा और घुटन-गोलियों का शिकार होकर वैचारिक शून्यता में परिवर्तित होता समय और स्थान का बोध-स्वप्न और कल्पना की हत्या के लिए आमादा गोलियां ।

एकाएक दुलहन चीखी, "वह आएगा । सब चुप क्यों हो । तैयारी करो ।"

पास खड़ी एक सहेली के हाथ से कपड़ा खीचकर अपने आंसू पोंछती हुई वह बोली, "मुझे काजल और पाउडर दो । कोई हमारी शादी को नहीं रोक सकता । गोली व्यक्ति की हत्या कर सकती है जीवन की नहीं ।"

सौंदर्य की अप्रतिम प्रतिमा, निश्चिंत और गर्विता वह दुलहन जब अपने विवाह के लिए तैयार होने को खड़ी हुई तो ऐसा लगा कि वह शेल्टर में नहीं बमों के धूम्रावृत आकाश में खड़ी है ।

वह अपने कामरेडों के साथ ड्यूटी पर था । तब

उसे उसने पहली बार देखा था । मुख पर स्मित हास-मूर्तिमान यौवन ।

गोलों की गड़गड़ाहट से अचिंतित उसने बताया था कि "शत्रु हमें हरा नहीं सकता । हम उस पर सौ गुणा प्रहार करेंगे और उसे नष्ट कर देंगे । शत्रु हमारे ऊपर जहाजों से बम गिरा सकता है । हमारे ठिकानों को मिसमार कर सकता है । हमारे मोरचों को रौंद सकता है । लेकिन हम हारेंगे नहीं और मौका मिलते ही उन्हें भगा कर दम लेंगे ।"

उसका यह लंबा व्याख्यान शायद खतम ही न होता अगर उसका साथी आह भरते हुए यह न कहता, 'मेरा तो प्रेम करने का समय गुजर गया है । लेकिन ये मदमाते नयन, सेब जैसे गुलाबी कपोल, तुम दोनों की जोड़ी कितनी फबती है ।'

वह लजा गया था और नीचे देखने लगा । फिर उसने सिर उठाया तो खिलखिलाकर हंस पड़ा । बमों की गड़गड़ाहट में दोनों के नयन मिले और परस्पर अपलक देखते रहे । तभी दूर बिजली चमकी और उदासी छा गयी ।

जीवन गतिमान था और प्रेम का उदय हो चुका था । उसी शाम जब रक्तवर्णी सूर्य सागर पार अपनी यात्रा पर प्रस्थान कर रहा था, बिना किसी भूमिका के उसने कहा था, "मैं तुम्हें प्रेम करता हूं । क्या तुम मुझे अपना पति स्वीकार करोगी ?"

"इतनी जल्दी ?"

"अधिक समय नहीं है ।"

वह कुछ क्षण मौन रही । फिर उसने कहा—"हम शादी करेंगे ।"

अतीत की स्मृतियां दुलहन के मुंह पर मुसकान बनकर खिल गयीं । दूसरों से अधिक प्रगल्भ एक महिला दुलहन को देखकर मुसकायी ।

एकाएक मर्दों में हलचल मची और साथ ही औरतों में भी गहमागहमी शुरू हो गयी । तभी एक बम फटने का धमाका हुआ और किसी ने दुलहन के कान में कहा, "दूल्हा आ गया है ।" दुलहन ने निढाल सी होकर शुक्रिया अदा किया वह उठी तो उसके औत्सूक्य और आनंद की सीमा न थी । दूल्हा खाकी वरदी पहने था । कमरे में घूमती उसकी भूरी आखों से व्यक्त होता आत्मविश्वास एवं दृढ़ता उसे राजसी छवि प्रदान कर रही थी ।

आश्चर्य और उत्सुकता कुछ कम हुई । जल्दी में बनाये परदे को थोड़ा खींचा गया और फिर पूरा खींच दिया गया ।

तभी कांपती दीवारों और बमों के धमाकों के बीच सेहरा गानेवाले भी आ पहुंचे । सभी के चेहरों पर उमंग थी और वे गली में हो रही बमबारी से बेखबर थे ।

बमबारी गायक की तान तले दब गयी थी ।

*"चिर नवीन यह परिणय बंधन,*
*निशा बनी यह अतिशय अनुपम ।"*

**● प्रस्तुति : फणीन्द्र शर्मा**

***नारी की आत्मा प्रेम में वास करती है ।***

**—श्रीमती सिगोरने**

मैं एक विवाह-समारोह में भाग लेने सारंगपुर गया हुआ था । सारंगपुर एक ऐतिहासिक स्थल है । इतिहास प्रेमी होने के कारण प्राचीन खंडहरों को देखने का मोह, मैं दोपहर की चिलचिलाती धूप में भी त्याग नहीं सका । जैन खां की भट्टी नामक स्थान पर जब मैं पहुंचा तो अचानक किसी के भागते कदमों की आहट, पत्तों की खड़खड़ाहट से उस सुनसान खामोश इलाके में चौंक उठा ।

सीताफलों के घने वृक्षों के बीच से एक नौजवान भागता हुआ आया और बदहवासी में कहने लगा 'उस ओर मत जाना ।' वहां लंबी काली दाढ़ी, बड़े बाल, लाल आंखों, लंबे-चौड़े डीलडौल का व्यक्ति हाथ में तलवार लिये खड़ा है । न जाने क्या बला है !' एक ही सांस में यह सब कहकर वह भागने लगा ।

मैंने उसे बड़ी मुश्किल से रोका । हिम्मत दी । तब उसने बताया, "मैं दोपहरी में अकसर इस कब्रिस्तान के घने सीताफलों के वृक्षों के बीच मन की शांति के लिए आकर बैठता हूं । नगर के कोलाहल से दूर इस इलाके में मेरे घंटों यों ही गुजर जाते हैं । आज के दिन एकाएक

# अंतिम इच्छा

● इकबाल अहमद फारुकी

रानी रूपमती और बाज बहादुर

**रूपमती के वियोग में बाज बहादुर जर्जर हो गया । उसने अकबर से अपनी अंतिम इच्छा व्यक्त की । रूपमती की कब्र पर सारंगपुर जाकर शेष जीवन बिताने का अकबर का आदेश प्राप्त कर दो सौ मुगल सरदारों के साथ म्याने (डोली) में बैठकर सारंगपुर चले आये व मजार के अंदर प्रवेश कर रूपमती की कब्र पर फूल चढ़ाकर शमा जलायी ।**

मुझे नींद का एक झोंका आया और न जाने कब वहां की छत्री के नीचे जाकर सो गया । तभी ...री निद्रा से मेरा हाथ पकड़कर मुझे उस दाढ़ीवाले भयानक से आदमी ने उठा दिया और कहा, 'हम सदियों से भटक रहे हैं और तू यहां आराम से सोया है । अब कभी यहां मत सोना ।' मैं भौचक्का-सा देखता रहा । एकाएक वह कब्रों के बीच जाकर अदृश्य हो गया ।''

यह कोई मनगढ़ंत कहानी नहीं है । यह सारंगपुर निवासी निजाम कुरेशी, जो पेशे से चालक हैं, के साथ पिछली १० फरवरी '९१ की दोपहर १ से ३ बजे के बीच घटी सत्य घटना है । दहशतभरी घटना के बाद भी जब मैं अपने पुत्र के साथ घटनास्थल पर पहुंचा तो वहां अजीब-सा सन्नाटा छाया हुआ था ।

सारंगपुर अनगिनत कब्रों का नगर है । यहां के चंद महलों के अवशेषों को छोड़कर जिधर नजर जाती है, उधर मकबरों के खंडहर व कब्रें दिखायी देती हैं । सारंगपुर वर्तमान में राजगढ़ जिले के अधीन होकर आगरा-बंबई राजमार्ग पर काली सिंध नदी के किनारे बसा है । यहां की जनसंख्या लगभग बीस हजार होगी । यहां के ऐतिहासिक स्थलों, मसजिदों, मकबरों की शिल्पकला में अफगान-मुगल शैलियों का मिश्रण पाया जाता है । कहा जाता है, यहां कभी १,८०,००० भवन थे । बाबर ने अपनी आत्मकथा में सारंगपुर लूटने का जिक्र किया है । शेरशाह सूरी भी इस नगरी को आसानी से लूटने के बाद अध्यक खानाएं (मूर्खों की बस्ती) का एक शिलालेख लगवा गया था ।

सारंगपुर का गहरा संबंध शादीयाबाद (मांडू) से है और इस रिश्ते में छिपी हुई है रानी रूपमती और बाज बहादुर की प्रेम-कथाएं । यहां के हर भवन में आज भी सुल्तान युग के प्राचीन भवनों के कलात्मक पत्थर लगे हैं । सारंगी व वीणा की स्वर लहरियों के कारण ही संभवतः इस नगरी को सारंगपुर नाम दिया गया था । सारंगपुर से ढाई किलोमीटर की दूरी पर फूलपुरा ग्राम रानी रूपमती की जन्मस्थली रहा है । रानी रूपमती के पिता यदुराय एक गुजराती ब्राह्मण थे, और उनके पूर्वज इस आशा के साथ मालवा में आकर बसे थे कि कभी उनके दिन बदलेंगे, यद्यपि यदुराय संगीत कला के महारथी नहीं थे लेकिन वीणा बहुत सुंदर बजाते थे । उनकी पुत्री रूपमती के असाधारण रूप सौंदर्य तथा नृत्य, संगीत, वीणा-वादन एवं काव्य कला में निपुण होने के कारण ही मलिक वायजीद, जिसे इतिहास में सुल्ताने मालवा बाज बहादुर

के नाम से जाना जाता है, उसके प्रेमपाश में बंध गया । बाज बहादुर और रानी रूपमती की कब्रों के भग्नावशेष अकोदिया मार्ग पर एक तालाब के बीचोबीच आज भी विद्यमान हैं । रूपमती का उक्त स्मारक सम्राट अकब्दर ने सन १५६५ ईस्वी में बनवाया था ।

मालवा के पूर्व के सुल्तानों की राजधानी मांडव कभी शादियाबाद (खुशियों का शहर) कहलाता था । होशंगाबाद, महमूद खिलजी और गयासुद्दीन आदि शासकों ने इसे सजाने-सवारने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी । किंतु समय के साथ-साथ राजधानी सारंगपुर सोलह श्रृंगार से लैस होकर विख्यात हो गयी थी । शेरशाह सूरी के वंशज शुजाअत खां ने मालवा में अफगानी हुकूमत की धाक जमायी, किंतु मुगल हुमायूं के द्वारा पुनः दिल्ली का तख्त प्राप्त कर लेने के कारण उसे खटका रहने लगा । शुजात खां ने हुमायूं पर नजर रखने के लिए पूरी जांच-पड़ताल के बाद उज्जैन-भोपाल के बीच एक गांव को राजधानी चुनकर विशाल नगर का रूप देकर उसका नाम भी अपने नाम पर शुजालपुर रख दिया । शुजात खां ने अपने बड़े पुत्र मलिक वायजिद खां को जागीर में सारंगपुर दिया व छोटे पुत्र मुस्तफा खां को रायसेन का जागीरदार बनाया । अपने पिता शुजाअत खां की मृत्यु के उपरांत बाज बहादुर ने अपनी राजधानी मांडू को चुनकर सारंगपुर रूपमती के पिता यदुराय को जागीर में दे दिया । बाज बहादुर अपने नाम के अनुरूप ही था । रूपमती को अपने हरम में शामिल कर उसने उसे हरम की अन्य बेगमों से अधिक चाहा । रूपमती और बाज बहादुर ने मिलकर संगीत में अनेक राग-रागनियों का आविष्कार किया । इधर देश में मुगल सत्ता ने फिर से जोर पकड़ा । हुमायूं के बाद उसका बेटा जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर सम्राट घोषित हुआ । राज्य विस्तार के लिए अकबर की ओर से बैरम खां ने बहादुर खां को मालवा विजय के लिए भेजा, किंतु अफगानी ताकत के आगे उसकी एक न चली । अकबर ने समय देखकर अहमद खां कोका व नासिरुल मुल्क मुल्ला पीर मोहम्मद शेरवानी, मोहम्मद कुली खां और मोहम्मद खां कंधारी, पायंदा खां मुगल, अब्दुल्ला खां अजबेक-जैसे सरदारों को मालवा-विजय हेतु भेजा । सन १५६१ में बाजबहादुर और रूपमती को नजफ खां द्वारा मालूम होने पर कि मुगल सेना ने सारंगपुर से दस कोस दूर पड़ाव डाला है और कुछ अफगानी सेनापति व मुस्तफा खां मुगलों से मिल गये हैं तो वे मुकाबले हेतु सारंगपुर की तरफ चल पड़े । सारंगपुर से तीन कोस आगे उदनी खेड़ी गांव में उन्होंने मोर्चा बांधा । रूपमती ने बड़ी बहादुरी से कंधे से कंधा मिलाकर बाजबहादुर का साथ दिया किंतु अपनी पराजय देखकर बाजबहादुर ने रूपमती को मुराद खां के द्वारा हाथी से मांडू भेज दिया और स्वयं जंगलों की खाक छानते हुए खानदेश की ओर चल पड़ा ।

बाजबहादुर ने खानदेश के शासक मीरान मुबारिक शाह फारुकी की सहायता से अपनी खोयी सत्ता को पाने की कोशिश जारी रखी । रूपमती ने अपनी प्रतिष्ठा के लिए जहर खाकर आत्महत्या की और इस तरह उद्दंड अहमद खां से अपने-आपको बचाया । अहमद खां ने उसकी लाश को जामा मसजिद मांडू के

तहखाने में दफना दिया । मालवा-बंदोबस्त की यात्रा अपनी यात्रा में अकबर को मुल्ला पीर मोहम्मद शेरवानी से मालवा-विजय, विभिन्न अत्याचारों और रूपमती की मृत्यु की कहानी सुनने के लिए मिली । अकबर ने पीर मोहम्मद शेरवानी को यह आदेश दिया कि रूपमती के शव को निकाला जाकर शान-शौकत व इज्जत के साथ सारंगपुर ले जाकर दफनाया जाए और उसके मांडू मुकाम तक कब्र पर एक शानदार मजार की तामीर भी की जाए ।

अकबर ने अहमद खां को पदच्युत कर आगरा भेज दिया और मुल्ला पीर मोहम्मद को मालवा का इंतजाम करने का आदेश देकर वापस आगरा लौट गया । बाद में बाज बहादुर पुनः सत्ता प्राप्ति हेतु एक नयी फौज के साथ मांडू की ओर बढ़ा । मुल्ला पीर मोहम्मद शेरवानी बाज बहादुर को रोकने के लिए आगे बढ़ा । नर्मदा पार करते समय उसके घोड़े को एक ऊंट ने लात मार दी तो वह नर्मदा में डूबकर मर गया । बाज बहादुर की फौज ने मुगल सेना पर हमला कर उसे खदेड़ दिया । जब अकबर को मालवा में मुगल फौज की पराजय की खबर मिली तो उसने अब्दुल्ला खां अजबेक को भेजा । अब्दुल्ला खां अजबेक आंधी की तरह बढ़ता मांडू के पास आया तो उसे पता चला कि बाज बहादुर कभी मांडू व कभी सारंगपुर में रहता है । अतः अब्दुल्ला ने मांडू तथा सारंगपुर दोनों ही स्थानों को घेरने के इरादे से अपनी विशाल सेना को दो भागों में बांट दिया । एक भाग को सिपहदार राहत खां के हवाले कर सारंगपुर घेरने के लिए रवाना कर दिया । दूसरा भाग अपने साथ मांडू घेरने में
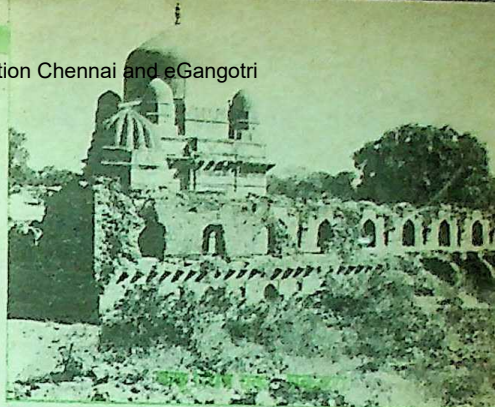
लगा दिया । उधर बाज बहादुर रूपमती की याद में सब कुछ त्यागकर गुजरात की ओर चला गया । कुछ दिनों बाद वह निजामूल मुल्क दक्षिणी के पास पहुंचे किंतु शांति न मिलने पर अंत में उदयसिंह, राणा चित्तौड़ के पास पहुंचा । उसे मांडू त्यागे आठ वर्ष व्यतीत हो गये थे ।

इधर अकबर की तख्त नशीनी का चौदहवां वर्ष चल रहा था । शाही दरबार में इधर-उधर की चर्चाएं चल रही थीं । उसी सिलसिले में मांडू, मालवा और बाज बहादुर का जिक्र छिड़ गया । हसन खां खजांची ने बताया कि बाज बहादुर राणा उदयसिंह के पास चित्तौड़ में रह रहा है । यह मालूम होने पर अकबर ने कहा, 'हमारी दिली ख्वाहिश है कि बाज बहादुर चित्तौड़ से आगरा लाया जाए । उसें हम इज्जत के साथ अपने दरबार में रखेंगे ।' हसन खां खजांची ने चित्तौड़ पहुंचकर बाज बहादुर को अकबर का संदेश सुनाया । बाज बहादुर को आंतरिक प्रसन्नता हुई । उसकी प्रबल इच्छा थी कि सारंगपुर पहुंचकर रूपमती के मजार पर रहकर कब्र पर फूल चढ़ाऊं शमा जलाऊं । इन्हीं आशाओं को लेकर वह हसन खां के साथ आगरा चल पड़ा । अकबर ने उसे अपने दरबार का दो हजारी मनसबदार बनाकर शाही दरबार

के गायकों में नाम दर्ज करा दिया । इस प्रकार बाज बहादुर को आगरा में रहते-रहते तेईस वर्ष हो गये थे ।

रूपमती के वियोग में बाज बहादुर जर्जर हो गया । उसने अकबर से अपनी अंतिम इच्छा व्यक्त की । रूपमती की कब्र पर सारंगपुर जाकर शेष जीवन बिताने का अकबर का आदेश प्राप्त कर दो सौ मुगल सरदारों के साथ म्याने (डोली) में बैठकर सारंगपुर चले आये व मजार के अंदर प्रवेश कर रूपमती की कब्र पर फूल चढ़ाकर शमा जलायी । रूपमती को अपनी बाहों में भरने के अभिप्राय से उन्होंने कब्र को अपने हाथों से पकड़कर सिर रख दिया और हमेशा के लिए वहीं चिर निद्रा में खो गये । मुगल प्रमुख सरदारों ने रूपमती के पास दफनाकर रूपमती की कब्र पर शहीदे वफा और बाज बहादुर की कब्र पर आशिके सादिक अपने हाथ से लिखकर सिर झुका दिये । यही है इस समाधि में सोये राग-रागनियों की साक्षात मूर्तियों की कहानी ।

इसके अतिरिक्त सारंगपुर में दर्शनीय स्थल १८ सदी के दो बहिनों की याद में छनिहारी एवं पनिहारी का स्मारक प्रेरणा स्रोत है । काली सिंध के तट पर बाज बहादुर का भग्न राजमहल जहां बाज बहादुर 'स्वर-सुधा' की वर्षा किया करता था । लाल पत्थरों की सुंदर कारीगरी से निर्मित अठारह खंबा मसजिद, लाल पत्थरों से ही निर्मित सैकड़ों कब्रों के बीच सुंदर एवं कलात्मक कारीगरी से युक्त तीनों ओर सुंदर डेरी एवं मुगलों तथा अफगानों की लड़ाई में शहीदों की अनगिनत कब्रें जो जेन खां की भट्टी के नाम से प्रसिद्ध है और इसी के पास एक कोड़ी कुआं है जो वर्तमान में टूट-फूट गया है । कहते हैं कि कुष्ट रोग से पीड़ित व्यक्ति इसमें स्नान कर लेता था तो उसका रोग सदा के लिए दूर हो जाता था । मुगल सम्राट शाहजहां मसजिद व औरंगजेब के काल की निर्मित अनुमानित १५ मीटर ऊंची दीवारों की १००बाय १०० मीटर की परिधि की जामा मसजिद जिसके तीन ओर प्रवेश द्वार है आज भी नगर के मध्य में इस प्राचीन धरोहर के अतिरिक्त ६३ मसजिदें हैं । इसके अतिरिक्त भी कई दर्शनीय ऐतिहासिक स्थल हैं ।

किंतु पर्यटकों को यह देखकर दुःख होता है कि रानी रूपमती और बाज बहादुर की समाधि स्थल के आसपास नगरपालिका द्वारा नगर का मैला और कूड़ा-कचरा डालकर ट्रेंचिंग ग्राउंड बना दिया है । अगर नगरपालिका चाहती तो सौंदर्य की प्रतिमूर्ति तथा सुल्तान बाज बहादुर की समाधियों को पर्यटकों के लिए एक उपयुक्त स्थल के रूप में परिवर्तित कर सकती है ।

सारंगपुर के मेरे मित्र अनुविभागीय अधिकारी श्री ठाकुर बहादुर सिंह जो रानी रूपमती पुरातत्व संग्रहालय के अध्यक्ष भी हैं ने अपनी जानकारी में यह बताया कि उनके द्वारा रूपमती-बाज बहादुर की समाधि स्थल की मरम्मत के लिए ६२ हजार का प्राकलन तैयार कर पुरातत्व विभाग को भेजा है । साथ ही मुझे यह भी आश्वासन दिया है कि स्वीकृति आने पर उक्त स्थल से 'ट्रेंचिंग ग्राउंड' हटवाकर पर्यटक स्थल के रूप में परिवर्तन करने का पूरा प्रयास करेंगे ।

— बड़नगर
जिला-उज्जैन (म.प्र.) ४५६-७७१

छाया : इकबाल फारूकी

अठारह स्तंभों की मसजिद ।
यहीं दफन है औरंगजेब की
एक पुत्री
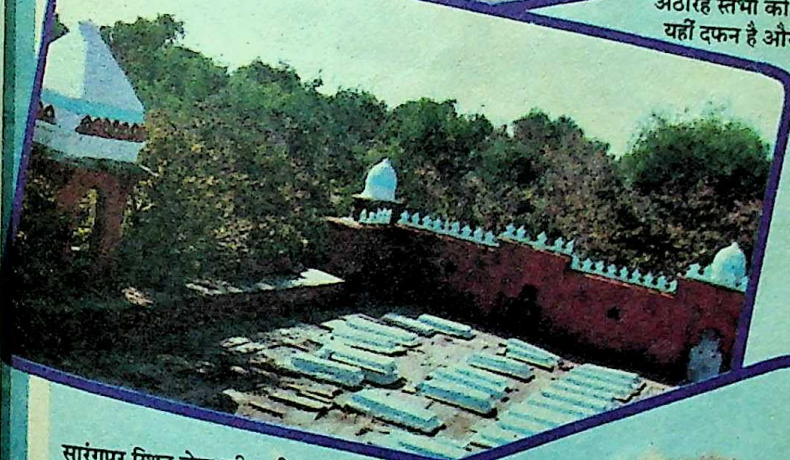
सारंगपुर स्थित जेना की भट्टी
(शाही कब्रस्तान)
चिह्नांकित छतरी जहां निजाम
कुरेशी निद्रामग्न था !

सारंगपुर स्थित रानी रूपमती
और बाज बहादुर की
समाधि के भग्नावशेष
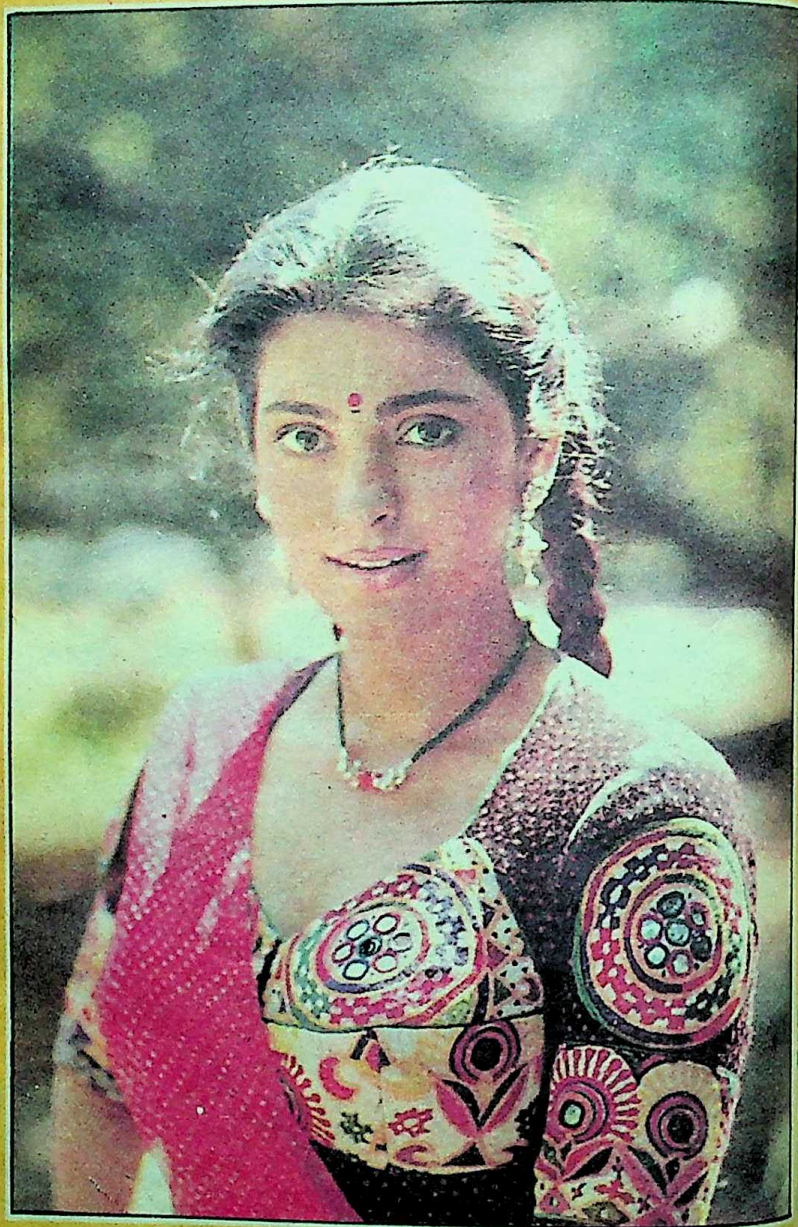
जूही चावला

# हीरोइन की फिल्मी जिंदगी बहुत थोड़ी होती है !

● जूही चावला

"मैं सोचता हूं, इस वर्ष जूही शिखर पर पहुंच जाएगी । मैंने उसकी फिल्म 'बेनाम बादशाह' के कुछ अंश देखे हैं और मैं अनुभव करता हूं कि कुछ भावों को उसने बहुत अच्छे तरीके से व्यक्त किया है ।" यह विश्वास है, निर्माता-निर्देशक विमलकुमार के, जिनकी फिल्म 'कर्ज चुकाना है' में जूही चावला नायिका की भूमिका अभिनीत कर रही है ।

नयी पीढ़ी की अभिनेत्रियों में जूही चावला का विशिष्ट स्थान है । 'कयामत से कयामत तक' फिल्म में उसकी भूमिका काफी सराही गयी । उसे 'महाभारत' सीरियल में भी द्रोपदी की भूमिका करने का प्रस्ताव मिला, पर ऐन वक्त उसने यह भूमिका अभिनीत करने में असमर्थता व्यक्त कर दी ।

जूही की विशेषता है, उसका सहज अभिनय । एक निर्देशक के अनुसार यह पता नहीं चलता कि वह कैमरे के सामने अभिनय कर रही है । उदाहरण के लिए उसकी फिल्म 'प्रतिबंध' को लिया जा सकता है । 'कर्ज चुकाना है' में उसने एक नये ढंग की भूमिका की है । जूही को अपने बारे में कोई गलतफहमी नहीं ।

वह कहती है— "हम हीरोइनों की फिल्मी जिंदगी बहुत छोटी होती है । जब-तब नयी लड़कियां और नयी फिल्में आती रहती हैं । मैं जब इन लड़कियों को शानदार ऑफरों और जानदार रोलों को हासिल करता देखती हूं, तो सोचती हूं कि मैं क्यों नहीं हासिल कर सकती ये सब ? और जब मैं किसी किस्म की कोई दिलचस्पी नहीं लेती थी, तो लोग कहते थे कि कितनी नीरस लड़की है । और अब कहते हैं कितनी 'एंबिशस' है । सर्वश्रेष्ठ बनने की इच्छा रखने में बुराई क्या है आखिर ? मैं अपने हर काम में आगे बढ़ना चाहती हूं । 'एंबिशन' रखना तो बुरी बात नहीं है, हां जरूरत से ज्यादा एंबिशस नहीं होना चाहिए इनसान को । इससे उसकी तरक्की में बाधा पड़ती है ।"

# कोई अभिनेत्री मधुबाला-जैसी नहीं

मधुबाला : जितनी सुंदर थी, उतनी ही श्रेष्ठ कलाकार भी । गूढ़ से गूढ़ मनोभावों को व्यक्त करने में उसकी बड़ी-बड़ी आंखें कमाल थीं ।

२४ फरवरी १९३३ को मधुबाला का जन्म दिल्ली के एक मुसलिम परिवार में हुआ था । छह बहनों में उसका नंबर तीसरा था । चार भाई भी थे जो बाद में नहीं रहे । उसका घर का नाम मुमताज था ।
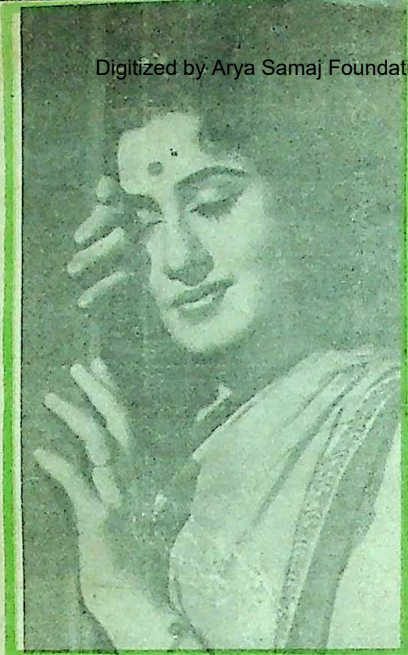
व्यक्तिगत जीवन में मधुबाला अपने छोटे से घर के दायरे में ही तमाम उम्र सिमटी रही । पत्रकारों से वह हमेशा कतराती रहती थी । फिल्में भी वह घर में प्रोजेक्टर चलाकर देखा करती थी ।

रोमांस को परदे पर जीवंत कर देनेवाली मधुबाला तमाम उम्र प्रेम के अहसास तक के लिए तरसती रह गयी । 'बादल' और 'साथी' फिल्म में नायक थे प्रेमनाथ—दोनों काफी निकट आ गये थे, मगर बाद में प्रेमनाथ ने बीना राय से विवाह कर लिया ।

मधुबाला ने अपने फिल्मी-जीवन की शुरूआत बचपन से ही कर दी थी । उस वक्त वे बेबी मुमताज के नाम से पहचानी जाती थीं । रणजीत मूवीटोन की फिल्मों में उन्होंने बेबी मुमताज के नाम से कई छोटी-बड़ी भूमिकाएं की थीं ।

मधुबाला ने अपने बीते दिनों को याद करते हुए एक बार कहा था, 'उस समय हम लोग मलाड में रहते थे । मेरी मां की तबीयत एक दिन अचानक खराब हो गयी । डॉक्टर ने सलाह दी कि जल्द ही एक छोटा-सा ऑपरेशन करना होगा । उसके लिए ३०० रुपये लगेंगे । घर में ३०० रुपये मौजूद नहीं थे, इसलिए मैं रणजीत स्टूडियो में गयी और सरदार चंदूलाल शाह से यह बात कही । सरदार ने बिना एक

पल भी सोचे मुझे ३०० रुपये दिये और इस तरह मेरी मां की जान बचायी ।'

मधुबाला के लिए उस वक्त उन ३०० रु. की जितनी कीमत थी, उतनी कीमत हीरोइन बनने के बाद ३०,००० की बड़ी रकम की भी न थी ।

मोहन सिन्हा की 'चित्तौड़ विजय' में उन्होंने पहली बार अभिनेत्री के रूप में राज कपूर के साथ काम किया । फिर केदार शर्मा की 'नीलकमल' में राज कपूर के साथ मुख्य भूमिका निभायी । 'नीलकमल' तक तो वे मुमताज के नाम से पहचानी जाती थीं, पर बाद में केदार शर्मा ने उनका परदे का नाम मधुबाला रख दिया ।

'महल' मधुबाला की एक बहुचर्चित फिल्म थी । उसमें नायक थे अशोककुमार । निर्देशक कमाल अमरोही ने 'महल' की शूटिंग के दौरान काफी सोचा कि मधुबाला को कैसे अपने करीब लाया जाए । उन्होंने इसके लिए कई जतन किये, पर मधुबाला ने इसका कोई जवाब नहीं दिया ।

'महल' के बाद, मधुबाला को अमर बनानेवाली दूसरी फिल्म थी, 'मुगले आजम' । 'मुगले आजम' में दिलीपकुमार और मधुबाला की मुख्य भूमिकाएं थीं । उन दिनों यह काफी चर्चा थी कि दिलीपकुमार मधुबाला से प्रेम करते हैं, पर दोनों के बीच संबंध मधुर होने की बजाय कटु ही होते गये ।

'चलती का नाम गाड़ी में तीनों गांगुली भाई— अशोककुमार, किशोरकुमार और अनूपकुमार काम कर रहे थे । किशोरकुमार की रंगीन प्रवृत्ति, हंसमुख स्वभाव से मधुबाला इतनी प्रभावित तो हो ही गयी कि जिस साथी की तलाश उन्हें थी, वह साथी कुछ हद तक उन्हें किशोरकुमार में दिखायी दिया । किशोरकुमार ने भी उस समय रूपादेवी से तलाक लिया था, इसलिए वे भी अकेले थे । उन्हें भी मधुबाला में अपनी दूसरी पत्नी के दर्शन हुए । सन १९५७ के मध्य में दोनों ने विवाह कर लिया ।

किशोरकुमार और मधुबाला का वैवाहिक जीवन ज्यादा लंबा नहीं रहा । विवाह का सुख तो मधुबाला ने देखा ही नहीं । २३ मार्च १९६९ के दिन मधुबाला इस संसार को छोड़ गयी । उस समय उनकी उम्र थी ३९ वर्ष ।

फिल्मों में मधुबाला की हलकी मुसकराहट का जादू आज भी दर्शकों की यादों को झकझोर कर उन्हें मंत्रमुग्ध-सा कर देता है ।

**प्रस्तुति : बद्री प्रसाद जोशी**

## केबल टी.वी. एक समानांतर 'दूरदर्शन'

**आजकल प्रायः प्रत्येक बड़े नगरों में केबल टी.वी. की लोकप्रियता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है । एक नियमित किराया लेने के बाद केबल टी.वी. पर लोग प्रतिदिन दो फिल्मों के अलावा वीडियो पत्रिकाएं, बच्चों के लिए तैयार किये गये कार्यक्रम ओर कभी-कभी विदेशी फिल्में भी देख सकते हैं । एक और जहां 'दूरदर्शन' पर दिखाये जानेवाले सीरियलों और अन्य कार्यक्रमों में निरंतर गिरावट आती जा रही है, और दर्शक उनसे ऊब रहे हैं, वहीं दूसरी ओर केबल टी.वी. का आकर्षण उन्हें 'मुंह मांगी मुराद' देनेवाला सिद्ध हो रहा है । वीडियो लाइब्रेरी और अब केबल टी.वी. के कारण सिनेमाघरों के प्रति तो आकर्षण घटा ही है, साथ ही दूरदर्शन का एक विकल्प भी लोगों को मिल रहा है, खासकर उन लोगों को जो दूरदर्शन को मात्र चित्रहार और फिल्मों के लिए देखते हैं ।**

अब्राहम लिंकन

जॉन एफ. केनेडी
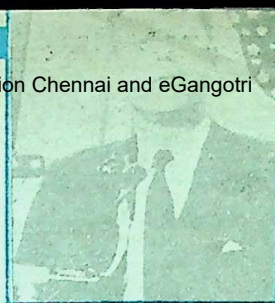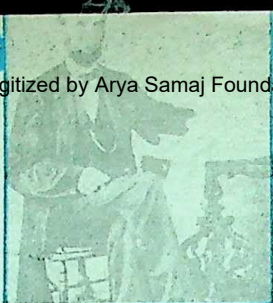
पुनर्जन्म के कई किस्से समाचार पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं तथा इस विषय पर काफी शोध कार्य भी हुआ है ।

पुनर्जन्म आखिर क्यों होता है ? सभी धार्मिक ग्रंथों में इंसानी जीवन के विशेष महत्त्व ने कुछ तथ्य प्रकाशित किये थे, जिनसे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता था कि राष्ट्रपति केनेडी राष्ट्रपति लिंकन का पुनर्जन्म ही हो सकते थे । इस पत्रिका ने इन दोनों के जीवन की कुछ अद्भुत समानताओं का उल्लेख किया—

# केनेडी और लिंकन का पुनर्जन्म ?

● समीर सचदेव

की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है । सभी में यह मत प्रकट किया गया है कि हर व्यक्ति इस धरती पर कुछ विशेष कार्य करने के लिए आता है । यदि उसका यह कार्य किसी कारणवश अपूर्ण रह जाता है, तो उस कार्य को पूरा करने के लिए उसे फिर से जन्म लेना पड़ता है ।

## अद्भुत समानताएं

पुनर्जन्म के जिस किस्से का यहां उल्लेख किया जा रहा है, वह किसी साधारण व्यक्ति का न होकर दो अमरीकी राष्ट्रपतियों का है । कुछ समय पहले एक स्पेनिश पत्रिका 'एक्सकेलिबर'

१. राष्ट्रपति लिंकन सन १८६० में राष्ट्रपति पद के लिए निर्वाचित हुए थे और इसके ठीक सौ साल बाद सन १९६० में केनेडी राष्ट्रपति बने ।

२. राष्ट्रपति लिंकन की हत्या शुक्रवार को हुई थी । राष्ट्रपति केनेडी की हत्या भी शुक्रवार को हुई ।

३. हत्या के समय राष्ट्रपति लिंकन अपनी पत्नी के साथ एक थियेटर में एक शो देख रहे थे, तभी उनकी हत्या हुई और वह भी उनकी पत्नी के सामने हुई थी । राष्ट्रपति केनेडी डालास, टेक्सास के दौरे पर थे तथा अपनी पत्नी
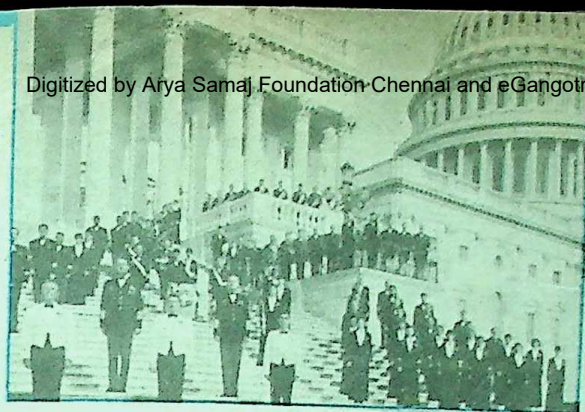
ह्वाइट हाउस (अमरीका)

के साथ कार में थे। वह भी एक 'शो' देखने जा रहे थे, यानी जनता के समर्थन का शो।

४. थियेटर में बैठे हुए राष्ट्रपति लिंकन की पीठ में गोली मारी गयी थी। कार में बैठे हुए राष्ट्रपति केनेडी की भी पीठ में गोली लगी।

सीनेट के सदस्य थे।

८. लिंकन का उत्तराधिकारी था ऐंड्रयू जॉनसन जिसका जन्म सन १८०८ में हुआ था। केनेडी की मृत्यु के पश्चात राष्ट्रपति बनने वाले जॉनसन का जन्म सन १९०८ में हुआ

**लिंकन और केनेडी के जीवन में असाधारण समानताएं मात्र संयोग ही थीं ! क्या संभव नहीं कि लिंकन जिन कार्यों को अधूरे छोड़ गये थे, उन्हें पूरा करने के लिए कैनेडी के रूप में उनका पुनर्जन्म हुआ ?**

५. राष्ट्रपति लिंकन की मृत्यु के पश्चात जॉनसन को राष्ट्रपति बनाया गया था, केनेडी की मृत्यु के बाद तत्कालीन उपराष्ट्रपति जॉनसन को राष्ट्रपति पद की शपथ दिलायी गयी।

६. जिस जॉनसन को राष्ट्रपति लिंकन की मृत्यु के बाद राष्ट्रपति बनाया गया था, वह दक्षिण अमरीका की डेमोक्रेटिक पार्टी का सदस्य था। जो जॉनसन केनेडी की मृत्यु के बाद गद्दी पर आसीन हुआ, वह टेक्सास राज्य का डेमोक्रेट था—टेक्सास राज्य अमरीका के दक्षिण में है।

७. दोनों जॉनसन राष्ट्रपति बनने से पहले

था—ठीक सौ साल बाद।

९. लिंकन की हत्या जिस व्यक्ति ने की वह स्वभाव से ही असंतुष्ट था। उसका नाम था जॉन विलकिस बूथ तथा उसका जन्म १८३९ में हुआ था। ली हार्वे ओस्वाल्ड, जिसने केनेडी की हत्या की थी वह भी स्वभाव से असंतुष्ट था तथा बहुत आसानी से किसी भी मुसीबत में फंस जाता था। उसका जन्म १९३९ में हुआ था—ठीक सौ साल बाद।

१०. इससे पहले कि लिंकन के हत्यारे बूथ को अदालत में लाया जाता, उसे मार दिया गया। इसी तरह केनेडी के हत्यारे को भी उस

वक्त मार दिया गया, जबकि उसे अदालत लाया जा रहा था।

११. ये समानताएं दोनों राष्ट्रपतियों तक ही सीमित नहीं हैं। अपितु उनके परिवारों को भी प्रभावित करती हैं। श्रीमती लिंकन ने अपने व्हाइट हाऊस प्रवास के दौरान अपने एक बच्चे की मृत्यु देखी। यही हादसा श्रीमती केनेडी के साथ भी उनके व्हाइट हाऊस प्रवास के दौरान पेश आया।

१२. राष्ट्रपति लिंकन के सेक्रेटरी का नाम था केनेडी। सेक्रेटरी केनेडी ने राष्ट्रपति को उस थियेटर में न जाने की सलाह दी थी, जिसमें उन पर गोली चलायी गयी थी। ठीक इसी तरह राष्ट्रपति केनेडी के सेक्रेटरी का नाम था लिंकन, जिसने राष्ट्रपति को डालास न जाने की सलाह दी थी।

१३. राष्ट्रपति लिंकन की पीठ में गोली मारकर हत्यारा थियेटर से भाग कर एक स्टोर में छिप गया। ओस्वाल्ड ने केनेडी पर एक स्टोर में से गोली चलायी और भागकर एक थियेटर में छिप गया। एक हत्यारे ने थियेटर में गोली चलायी और भागकर स्टोर में शरण ली। दूसरे ने एक स्टोर से गोली चलायी और थियेटर में शरण ली।

१४. 'लिंकन' शब्द के हिंदी में तीन अक्षर हैं (अंगरेजी में सात)। केनेडी के भी हिंदी में तीन ही अक्षर हैं (अंगरेजी में सात)।

१५. ठीक इसी प्रकार दोनों हत्यारों के नामों में जॉन विलकिस बूथ तथा ली हार्वे ओस्वाल्ड, अंगरेजी में पंद्रह-पंद्रह अक्षर हैं।

१६. यह माना जाता है कि ओस्वाल्ड ने केनेडी की हत्या की थी तथा ओस्वाल्ड के कुछ साथी भी थे। परंतु यह बात निश्चित रूप से कभी साबित नहीं हो पायी। कोई भी यह कभी साबित नहीं कर पाया कि बूथ ने लिंकन की हत्या की थी। तथ्य केवल बूथ तथा ओस्वाल्ड के हत्यारे होने का संकेत देते हैं, परंतु इसमें कितनी सच्चाई है तथा कितनी प्रेस की कहानी, यह कोई नहीं जानता।

१७. रूबी नाम के एक कट्टरवादी ने ओस्वाल्ड की हत्या उस वक्त की, जबकि वह दूरदर्शन पर था। लोगों की भीड़ को चीरता हुआ रूबी दूरदर्शन कैमरे के सामने पहुंचा तथा ओस्वाल्ड पर पिस्तौल तान कर गोली दाग दी। बोस्टन कॉरबट भी एक कट्टरवादी था, तथा उसने अपनी समझ से बूथ को मार कर एक सही कार्य किया था। इन दोनों ही मामलों में जिन दोनों व्यक्तियों की हत्या की गयी, उन पर राष्ट्रपति की हत्या का अभियोग था, और दोनों ही मामलों में यह बताया गया कि कॉरबट और रूबी ने यह काम अपने राष्ट्रपति के प्रति अपनी पूर्ण निष्ठा एवं वफादारी के वशीभूत होकर किया। दोनों ही मामलों में हत्या के असली उद्देश्य का पता नहीं चल पाया।

यह समानताएं यहीं पर समाप्त हो जाती हैं परंतु अपने पीछे एक प्रश्न छोड़ जाती हैं कि दो व्यक्तियों के जीवन में इतनी समानताएं क्या मात्र संयोग ही है? क्या यह संभव नहीं है कि लिंकन अपने जिस कार्य को अपूर्ण छोड़ गया था, उसे पूरा करने के लिए उसका केनेडी के रूप में पुनर्जन्म हुआ?

—फ्लैट नं. ६
डबल स्टोरी मार्किट
न्यू राजेंद्र नगर
नयी दिल्ली-११००६०

लेखक फ्रेडी फोर सिथ , अभिनेता जॉन हर्ट , लेखक रुडयर्ड किपलिंग , 'कोइनसीडेंस' के लेखक ब्रियन इंग्लिस,
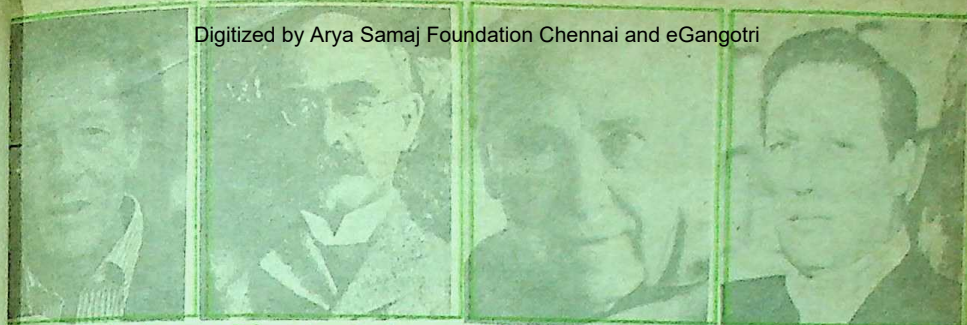
# कुछ अद्भुत, आश्चर्यजनक संयोग

● राधेश्याम बंधु

कभी-कभी हमारे जीवन में कुछ ऐसी आश्चर्यजनक और चमत्कारिक घटनाएं घटती हैं, जिन पर सहज ही विश्वास करना मुश्किल हो जाता है । वे सच होते हुए भी कहानियों से ज़्यादा रोचक और रोमांचक होती हैं । साथ ही इस रहस्यमयी संसार के बारे में सोचने के लिए भी विवश करती हैं कि आखिर इस विराट संसार को कौन-सी शक्ति संचालित कर रही है ?

आइए, कुछ ऐसी ही घटनाओं से आपका परिचय करायें—

एक बार ब्रिटेन की एक महिला ने स्वप्न में एक भयानक रेल दुर्घटना होते हुए देखी । स्वप्न इतना स्पष्ट था कि उसने नीले रंग के डीजल इंजन का नंबर ४७२१६ भी पढ़ लिया । उसने इस स्वप्न के बारे में तत्काल ब्रिटिश रेल विभाग के कर्मचारियों को भी बता दिया ।

दो वर्ष बाद ठीक उसी तरह की एक रेल दुर्घटना घटी, जैसा उस महिला ने बताया था । घटना की सभी सूचनाएं स्वप्न में देखी रेल दुर्घटना से मेल खा रही थीं, सिर्फ उसका नंबर ४७२९९ बदला हुआ था । बाद में रेल विभाग के एक कर्मचारी ने बताया कि इंजन का यह नंबर असली नहीं था । इसका असली नंबर तो ४७२१६ ही था जो बाद में बदल दिया गया था ।

इसी प्रकार सन १९७७ में यूरोप के राय जैकिंस ने एक ऐसा विचित्र स्वप्न देखा, जिसमें उसके मित्र टानी क्रासलैंड ने आकर उसे बताया कि वह मरने जा रहा है, जबकि वह मानसिक रूप से बिल्कुल ठीक है । लगभग आठ बजे प्रातः जेकिंस को फोन पर सूचना मिली कि टोनी

**एक महिला ने स्वप्न में एक रेल-दुर्घटना देखी । उसे एंजिन का नंबर भी साफ-साफ दिखायी दिया । कुछ समय बाद एक रेल दुर्घटना हुई, जिसके एंजिन का नंबर भी वही था । पढ़िए ऐसे ही कुछ विचित्र संयोगों के संबंध में ।**

की सुबह मृत्यु हो गयी है । टोनी की मृत्यु लगभग उसी समय हुई थी, जिस समय जेकिंस स्वप्न देख रहा था ।

इसी प्रकार की चौंकानेवाली कुछ और भी घटनाएं हैं, जो हमारी जिज्ञासा को और बढ़ा देती हैं ।

एक बार लंदन के मशहूर अभिनेता एंथोनी हापकिंस को एक नाटक में भाग लेने का निमंत्रण मिला । उसे अपने नाटक की तैयारी करनी थी । उसने तय किया कि वह अपनी भूमिका के बारे में गहराई से अध्ययन करने के बाद तैयारी करेगा । इसके लिए उसने उस उपन्यास की खोज शुरू कर दी, जिस पर वह नाटक आधारित था । उसने यहां-वहां जार्ज फैकेर के उस उपन्यास— 'पेत्रोवका की लड़की' की खोज की, किंतु उसे वह उपन्यास कहीं नहीं मिला ।

कुछ समय बाद वह इस बात को लगभग भूल ही गया कि अचानक एक दिन उसे भूमिगत रेलवे स्टेशन 'लीसेस्टर' स्क्वायर की एक बेंच पर एक पुस्तक पड़ी मिली । उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, जब उसने यह देखा कि यह तो वही उपन्यास है जिसको वह खोज रहा था । और यह लेखक की निजी प्रति थी ।

### विचित्र अंगूठी

आखिर, आप इसे क्या कहेंगे— एक संयोग, एक चमत्कार ? या इस रहस्यमयी सृष्टि की एक अद्भुत घटना ?

एक बार लंदन में एक प्रेमी-युगल पीटर और एनी अपनी मंगनी की अंगूठी की तलाश में घंटों दुकानों में भटकते रहे । किंतु उन्हें अपनी मनचाही अंगूठी नहीं मिली । अचानक एनी पीटर को लेकर ऐसी मामूली-सी दुकान में घुस गयी, जहां किसी का ध्यान नहीं जा सकता था । इस दुकान में चमकदार गहनों के बजाय पुरानी विदेशी टिकटें, पिस्तौलें आदि दिखायी पड़ रही थी । एनी ने दुकानदार से अंगूठी दिखाने के लिए कहा, तो दुकानदार ने सोने की एक ऐसी अंगूठी दिखायी, जो ऐनी की अंगुली में बिलकुल फिट हो गयी ।

फिर पीटर ने आतशी शीशे की सहायता से यह देखने की कोशिश की कि वह कितनी पुरानी है । वह यह देखकर दंग रह गया कि अंगूठी पर खुदा था 'ए-२३-पी' ।

यह कैसा संयोग था कि 'ए' का अर्थ था 'एनी', 'पी' का अर्थ था 'पीटर' और '२३ का अर्थ था उनकी शादी की तारीख २३ अक्तूबर ।

इससे भी ज्यादा अनोखी घटना लंदन में यूं घटी । एक निराश नवयुवक आत्महत्या करने के लिए जैसे ही ट्रेन के सामने कूदा, ट्रेन अचानक ही उस युवक से कुछ इंच के फासले पर रुक गयी । यह देखकर सभी चकित थे । क्योंकि उस ट्रेन को किसी चालक ने नहीं रोका
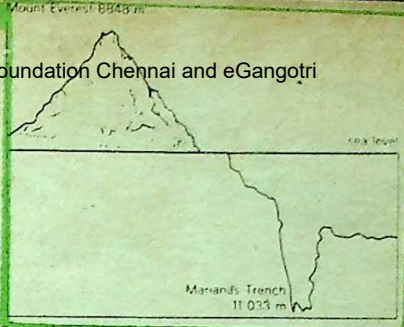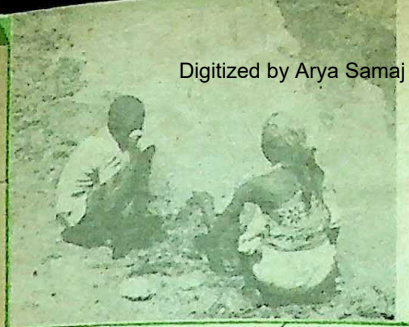
**आनंद स्वरूप आहूजा, चंडीगढ़**

**प्र : गिनी वर्म (नहरवा) किन कारणों से होते हैं और क्या भारत भी इस रोग से प्रभावित है ?**

□ प्रदूषित जल पीने से गिनी कृमि होते हैं तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार यूरेशिया में भारत और पाकिस्तान ही दो ऐसे देश हैं जहां यह रोग लोगों में अब भी मिलता है । किंतु इस दिशा में जो काम हो रहा है उससे आशा है कि १९९२ तक इन दोनों देशों में यह समाप्त हो जाएगा । अफरीका के कई देश इससे सबसे अधिक प्रभावित हैं ।

**रोहित सेन, रोहतास**

**प्र. खच्चर किसकी औलाद है ?**

□ गधे और घोड़ी की ।

**जनमेजय सिंह, सासाराम**

**प्र. सम्राट शेरशाह सूरी का जन्म कब हुआ था ? उसका कुछ और भी परिचय दीजिए ?**

□ शेरशाह सूरी का जन्म कब हुआ था इस संबंध में इतिहासकार निश्चित रूप से नहीं कहते, किंतु ऐसा अनुमान है कि वह १४८९ में किसी समय पैदा हुआ था । शेरशाह, जिसका वास्तविक नाम फरीद था, एक मामूली जागीरदार का पुत्र था । वह सूर नामक अफगान कबीले का सदस्य था जो गोर राजघराने के वंशज मानते थे । शेरशाह की मृत्यु १५४५ में हुई ।

**संजय वी. परवाले, बसई (ठाणे, महाराष्ट्र)**

**प्र : पृथ्वी की गहराई क्या अंतहीन है ?**

□ अंतहीन तो नहीं है । पृथ्वी के व्यास (विषुवतीय १२,७५६ तथा ध्रुवीय १२,७१४ किलोमीटर), इसके समुद्र की अधिकतम गहराई (मैरियानस ट्रेंच में ११,०३३ मीटर), भूमि पर सबसे अधिक ऊंचाई (माउंट एवरेस्ट, ८,८४८ मीटर) और भूपटल (क्रस्ट) की मोटाई का ज्ञान मनुष्य को हो चुका है । पृथ्वी से संबंधित इन आंकड़ों से यह सिद्ध होता है कि यदि कुछ व्यावहारिक कठिनाइयां न हों तो इसकी गहराई भी ज्ञात हो सकती है ।

**प्रणय मिश्र, जमालपुर**

**प्र. पूना पैक्ट के बारे में बताएं ?**

□ नवम्बर १९३२ की तीसरी गोलमेज कांफ्रेंस के बाद ब्रिटिश सरकार ने दलित जातियों को हिंदुओं से अलग मानकर उनके लिए विधायिकाओं में पृथक चुनावों की व्यवस्था कर दी थी । गांधीजी ने इसका विरोध करते हुए २० सितम्बर १९३२ को यरवदा जेल (पूना) में आमरण अनशन कर दिया जिससे देश में उथल-पुथल मच गयी । अंततः डॉ. आंबेडकर और गांधीजी के बीच एक समझौता हो गया जिसे पूना-पैक्ट कहते हैं । इसके अंतर्गत दलित लोग सामान्य निर्वाचन मंडल के सदस्य बने रहे किंतु उनकी सीटें आरक्षित कर दी गयीं ।

**रमेश बड़कुल, गुना**

**प्र : खांडेराव —जैसा वीर दूरदर्शन धारावाहिक में हैदर अली से एक मेमने की भांति पराजित हुआ दिखाया गया है, तथ्य क्या है ?**

☐ इतिहासकार चार्ल्स किनसेड के अनुसार मंसूर के राजा नंजराज के प्रभुत्व से सशंकित हो गये थे इसलिए उन्होंने हैदर अली को उसे खदेड़ देने के लिए प्रोत्साहित किया, किंतु वह नंजराज से भी अधिक खतरनाक निकला । अब राजा और उसकी मां ने दक्षिण के ब्राह्मण खांडेराव को हैदर अली के विरुद्ध खड़ा कर दिया । खांडेराव ने उसे तीन बार पराजित किया और अंत में वह खांडेराव के पैरों पर गिर पड़ा जिससे उसे फिर प्रधान सेनापति का पद प्राप्त हो गया । अब हैदर अली ने खांडेराव की सेना में उसके विरुद्ध विद्रोह करवा दिया । खांडेराव ने महल में शरण ली । हैदर अली ने राजा से खांडेराव को उसे सौंप देने के लिए कहा और यह वचन दिया कि वह खांडेराव को न केवल जीवनदान ही देगा बल्कि उसे तोते की भांति रखेगा । हैदर अली ने अपने इस वचन को निभाया और खांडेराव को तोते की भांति एक पिंजड़े में रखा तथा उसके मरने तक उसे केवल दूध और चावल ही खाने को दिया ।

**रत्ना पांडेय, मुजफ्फरपुर**

**प्र : सेंटिग्रेड और सेल्सियस में क्या अंतर है ?**

☐ सेंटिग्रेड का ही दूसरा नाम सेल्सियस है ।। थर्मामीटर सेल्सियस (१७०१-४४) ने बनाया था ।

**मकबूल अहमद, मुगलसराय**

**प्र : पक्षी उल्लू की कितनी किस्में होती हैं, तथा यह किन प्राणियों का अधिक शिकार करता है ?**

☐ उल्लू की लगभग तीन सौ जातियां और उपजातियां होती हैं । हॉबी, हनीबजर्ड, रेडकाइट, लेमरगेयर, स्पैरो हॉक, आदि । इनमें छोटे से छोटा पांच-छह इंच और बड़े से बड़ा ढाई फुट तक का होता है । यह किसानों का सबसे अच्छा मित्र है क्योंकि रात में जागकर फसलों को हानि पहुंचानेवाले चूहों का यह शिकार करता है । उल्लू अपना घोंसला नहीं बनाते । खंडहरों और वृक्षों की दरारों में मादा अंडे देती है । इनकी नर और मादा की जोड़ी जीवनभर नहीं टूटती ।

**विनीत त्रिपाठी, कानपुर**

**प्र : भारत की सैनिक क्षमता कितनी है ?**

☐ अप्रैल १९८९ में अमरीका की प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्रिका 'टाइम' ने पेंटागन (अमरीकी रक्षा विभाग मुख्यालय) तथा अन्य सूत्रों के हवाले से बताया था कि भारत अपने १३,६२,००० के सैन्य बल से विश्व में चौथे स्थान पर है । प्रथम है सोवियत संघ (५०,९६,०००), द्वितीय चीन (३२,००,०००) और तृतीय अमरीका (२१,६३,२००) ।

**रंजना माथुर, डेरापुर (कानपुर देहात)**

**प्र : राजनीति में 'ह्विप' शब्द से क्या तात्पर्य है ?**

☐ इसका शुद्ध उच्चारण है 'विप' जिसका शाब्दिक अर्थ सचेतक है । संसद और विधानसभाओं में प्रत्येक दल में 'विप' नामक एक पदाधिकारी होता है जिसका कार्य सदन में अपने दल के सदस्यों की उपस्थिति को सुनिश्चित करना होता है । इसकी उत्पत्ति मूल शब्द 'विपर्स-इज' से है । 'हाउंड्स' (शिकारी कुत्तों) का रखवाला 'विपर्स-इन्न' कहलाता है ।

मधुरानंद चतुर्वेदी, फर्रुखाबाद

प्र. आर्य समाज में ईश्वर का निरूपण किस प्रकार किया गया है ?

□ ईश्वर सच्चिदानंद स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वांतर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है ।

**दीनानाथ प्रसाद विद्यार्थी, सियानी (मुंगेर)**

**प्र. : संसार की सबसे बड़ी पुस्तक कौन है और कहां है ?**

□ आइरिश यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा १९६८-७२ में प्रकाशित 'ब्रिटिश पार्लमेंटरी पेपर्स ऑव १८००-१९००' को गिनेस बुक ऑव वर्ल्ड रेकॉर्डस ने इस प्रकार का सबसे बड़ा प्रकाशन माना है । यह पूरी पुस्तक १,११२ खंडों में है तथा १९८५ में इसका मूल्य ७४,९०० डॉलर था ।

**प्रणय मिश्र, जमालपुर (बिहार)**

**प्र :मनुष्य के शरीर में इंसुलीन की क्या उपयोगिता है ?**

□ इंसुलीन एक हारमोन है जो अग्न्याशय (पैंक्रियस) में छिपा होता है । यह ऊतकों (टिश्युज) को रक्त से उनकी आवश्यकता भर शर्करा प्राप्त कराता है ।

**महेश त्रिवेदी, मंदसौर**

**प्र : 'डी.डी.आई. स्पोर्ट्स' का क्या मतलब है ?**

□ 'दूरदर्शन इंडिया खेल' । दूरदर्शन द्वारा खेलों की विडियो रिकार्डिंग अन्य देशों को इसी नाम से बेची जाती है ।

**मोहन जगदाले, जबलपुर**

**प्र : लोकप्रिय आरती 'ऊं जय जगदीश हरे' के रचयिता कौन हैं ?**

□ श्री श्रद्धाराम फिल्लौरी, जिनकी हाल में जन्मशती मनायी गयी थी । वह फिल्लौर (पंजाब) के निवासी थे ।

**रवि सु. कुलकर्णी, इटारसी**

**प्र : स्मृति शब्द से क्या बोध होता है, और स्मृतियों में प्रमुख स्थान किसे है ?**

□ श्री राम दास गौड़ कृत 'हिंदुत्व' (पृष्ठ ४४९) के अनुसार स्मृति से छहों वेदांग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छंद, ज्योतिष और निरुक्तल), धर्मशास्त्र, इतिहास, पुराण और नीति के सभी ग्रंथ समझे जाते हैं । स्मृति शब्द का यह व्यापक प्रयोग है । परंतु विशिष्ट अर्थ में स्मृति शब्द से धर्मशास्त्र के उन्हीं ग्रंथों का बोध होता है जिनमें प्रजा के लिए उचित आचार-व्यवहार की व्यवस्था और समाज के शासन के निमित्त नीति और सदाचार संबंधी नियम स्पष्टतापूर्वक दिये रहते हैं । स्मृतियों में मुख्य स्थान मनुस्मृति को दिया गया है ।

**प्रकाश चंद्र कनेरिया, रतलाम**

**प्र : पाश्चुरीकृत स्टैंडर्डाइज्ड ठंडा दूध क्या रोग का कारण हो सकता है ?**

□ पाश्चुराईजेशन एक विधि है जिससे दूध को उबालकर जीवाणुरहित कर दिया जाता है । फिर दूध को ठंडा इसलिए किया जाता है ताकि यह खराब न हो । अतः ऐसे दूध को पीने योग्य माना जा सकता है ।

—सूत्रधार

## चलते-चलते

*"आज बहुओं के साथ कानून है, समाज है । दूसरी ओर, बेचारे पतियों की कहीं सुनवायी नहीं । पुलिस भी बेवजह पति और ससुरालवालों को डराती-धमकाती है । देखा गया है कि अक्सर बहू पति व ससुरालवालों को मजा चखाने के लिए, खुद पर मिट्टी का तेल छिड़क कर थाने की ओर भागने का नाटक करती है । तथा बहुओं को खुल्लम-खुल्ले ऐसे नाटक करने की छूट है ? कोई कानूनी रोक नहीं । और तो और, भारतीय दंड संहिता की धारा ४९८ए और ३०४बी के संशोधन विवाहित महिला के पक्ष में झुके हैं । ऐसी व्यवस्था भी नहीं है कि अगर निष्पक्ष जांच के बाद बहू की शिकायत झूठी पायी जाए, तो बहू को दंडित किया जा सके । क्या यह अंधा कानून नहीं है ? बेचारे पतियों के साथ कितनी बेइंसाफी है ?"*

# अखिल भारतीय प...

● अमिताभ स...

## अब पतियों ने कमर कस ली !

पढ़कर आश्चर्य होगा कि सन १९८९ में, देशभर में पत्नियों के अत्याचारों से तंग आकर ९१३ पतियों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा । विचलित होकर, दिल्ली के तीस हजारी अदालत के एक वकील श्री आर. पी. चुघ ने पतियों के अधिकारों के लिए लड़ने की ठान ली । फलतः उन्होंने 'अखिल भारतीय पत्नी अत्याचार विरोधी मोर्चा' की स्थापना कर डाली, जो दुनिया में अपनी तरह का अकेला संगठन है । अब पत्नियों के अत्याचारों के खिलाफ पतियों ने भी कमर कस ली है ।

पहले कुछ पत्नी पीड़ित पतियों के दुखड़े सुनिए—

मुजफ्फरपुर के निवासी एस.के. गोयल का कहना है— "मेरे तीनों बेटे मुझसे घृणा कर... हैं । आज स्थिति यह है कि अगर मैं मुजफ्फर... में रहूं, तो वहां पिटाई होती है और दिल्ली में रहूं, तो जान का खतरा है । आखिर मैं कहां जाऊं ?"

पत्नी-पीड़ित व्यक्तियों का धरना । साथ में महिलाएं भी

सन १९६७ में, गोयल साहब का विवाह गांव की ही एक लड़की के साथ हुआ । उसके तीन पुत्र हुए । बाद में, दिल्ली स्थित उनके मकान में पत्नी ने एक किराएदार रख लिया । उन्हें अपनी पत्नी और कथित किराएदार के मध्य अनैतिक संबंध देखकर आपत्ति हुई । उसने किराएदार को निकालने की धमकी दी । लेकिन पत्नी नहीं मानी । इसके विपरीत, पति को धमका दिया कि मैं उसे घर से निकाल दूंगी, लेकिन किराएदार को कतई नहीं निकाल सकती ।

और तो और, गोयल साहब ने केंद्रीय गृहमंत्री को भी पत्र लिखकर अपील की—"मुझे मेरी बीवी से खतरा है । अतः मुझे सुरक्षा प्रदान की जाए !"

दिल्ली स्थित 'हरियाणा विद्युत बोर्ड' में एकाउंटेंट गोविंद पांडे की बेहाली इस हद तक है कि मामला अदालत पहुंच चुका है । श्री पांडे का कहना है कि सन १९५८ में, समाचार-पत्र में वैवाहिक विज्ञापन के जरिए उसका विवाह पारस देवी से हुआ । विवाह के कई माह बाद उसे मालूम चला कि उसकी पत्नी पहले भी दो बार अलग-अलग नामों से शादी कर चुकी है । खैर, हम दोनों दो-तीन वर्ष तक साथ-साथ रहे ।

पिछले ३० वर्षों से पांडे साहब तलाक के लिए न्यायालय के चक्कर काट रहे हैं । कारण — पत्नी तलाक नहीं दे रही । जब तक पत्नी न चाहे, तलाक हो नहीं सकता । उसकी पूरी जिंदगी न्यायालय ने तबाह कर दी है । यही नहीं सन १९७७ से वह अपनी पत्नी को १७५ रुपये प्रति माह गुजारा-भत्ता भी दे रहे हैं, जबकि

# अत्याचार विरोधी मोर्चा !

पत्नी के संग एक कमाऊ बेटा भी रहता है । इसलिए उसने गुजारा भत्ता देने की अनिवार्यता रद्द करने की अपील की । मगर सब व्यर्थ ? मामला सात वर्षों से न्यायालय में लंबित है ।

**पत्नी पीड़ित ने आत्महत्या की**

अप्रैल १९८९ में, जालंधर के एक कॉलेज के अर्थशास्त्र के प्रोफेसर ललित वालिया ने अपने दो नन्हे-मुन्नों सहित आग लगाकर आत्महत्या की । आखिर क्यों ? क्योंकि जीवनभर पत्नी ने उसे खूब सताया ।

मरने से पूर्व, ३ अप्रैल १९८९ को लिखा प्रो. ललित वालिया का पत्र पत्नी की क्रूरता का पर्दाफाश करता है— "...मेरा मरने का बिलकुल मन नहीं करता । परंतु कोई रास्ता नजर नहीं आता । इतनी मेहनत के बावजूद शांति नहीं है ! दोष किसको दूं ? भाग्य में ऐसी कर्कशा स्त्री और ससुरालवाले लिखे थे । मैं अपने फूल-से बच्चों को अपने साथ कभी न लेता । परंतु वह कर्कशा इनके जीवन का नाश कर देगी ।... मेरे माता-पिता का जीवन इस औरत ने दूभर कर दिया था । उनको गालियां देती व पीटती थी । यदि मैं उस पर हाथ उठाता, तो मुझ पर इल्जाम लगता कि कम दहेज के कारण पीटता है..."

और अंत में, वालिया लिखते हैं—"... मेरी इच्छा है कि मेरा बीमा, प्रोवीडेंट फंड, मकान, बैंक-खाता और किसी प्रकार की चल-अचल संपत्ति में से किरण (पत्नी) को फूटी-कौड़ी न मिले । उस पर मेरे पश्चात माता-पिता का अधिकार है ।... हां, मकान का १/५ हिस्सा फिर भी किरण को दे दिया जाए क्योंकि उसकी रजिस्ट्रेशन मैंने पहले ही उसके नाम की हुई है ।... प्रार्थना करो— किसी को भी ऐसे ससुरालवाले और बीवी न मिले ।"

वास्तव में, अब तक पत्नी के अत्याचारों से पीड़ित सिर्फ एक पति ने आत्महत्या नहीं की है । सन १९८९ के उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार देशभर में, पत्नियों के जुल्मों से तंग आकर ९१३ पतियों को अपने प्राणों से हाथ धोने पड़े । इनमें से ८३३ ने आत्महत्या की और शेष ८० को उनकी पत्नियों ने अपने प्रेमियों की मदद से मार डाला । निःसंदेह यह आंकड़े पतियों के लिए खतरे की घंटी हैं । मगर अब पत्नियों के बढ़ते अत्याचार के खिलाफ पतियों ने कमर कस ली है ।

**पत्नियों के विरुद्ध जंग**

पिछले ढाई वर्षों से, दिल्ली की तीसहजारी अदालत के एक वकील श्री आर.पी. चुघ पतियों के अधिकारों की जंग लड़ रहे हैं । उन्होंने 'अखिल भारतीय पत्नी अत्याचार विरोधी मोर्चा' (क्राइम अगेंस्ट मेन वाई वूमन) की स्थापना की है, जो अपनी किस्म का अकेला संगठन है । अंगरेजी साप्ताहिक 'इलेस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया' के अनुसार इस मोर्चे की स्थापना पिछले दशक की दस महत्त्वपूर्ण घटनाओं में से एक है । आज भारतभर में मोर्चे की २०० शाखाएं हैं । देश के कोने-कोने से, रोजाना मदद चाहनेवालों के सैकड़ों फोन और पत्र उनके कार्यालय में आते हैं ।

विगत २६ मार्च को पत्नी, उसके मायकेवालों और पुलिस से परेशान मोर्चे के सदस्यों ने सुप्रीम कोर्ट पर एक दिवसीय धरना दिया । मांग की गयी कि समूचा पुलिस, अदालती और सामाजिक तंत्र एक बहू के पक्ष
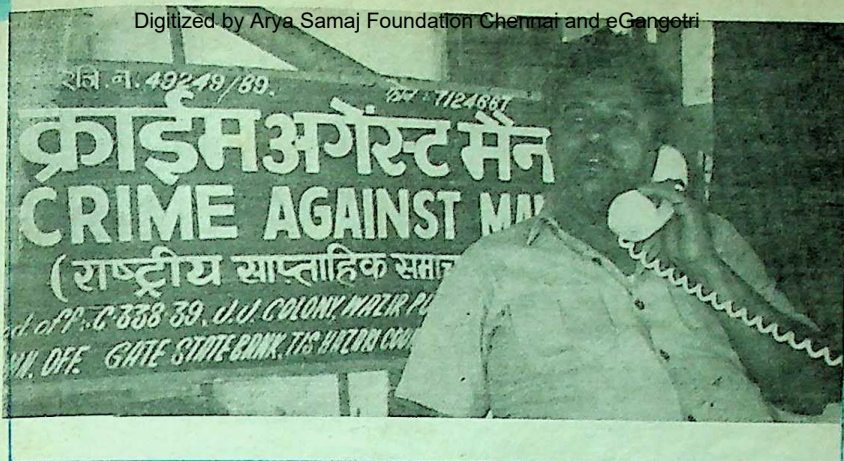
चुघ : पत्नी-पीड़ित पतियों के प्रवक्ता

में ही क्यों हैं ? यह तथ्य है कि अगर बहुएं जलायी जाती हैं, तो सैकड़ों पति भी अपनी पत्नियों से तंग आकर आत्महत्या कर चुके हैं ! फिर भी, ऐसी क्रूर बहुओं और उनके मायकेवालों को गिरफ़्तार क्यों नहीं किया जाता ? पतियों पर सदा धारा ४९८ ए, ४०६, ३०४ बी. और १२५ की तलवार क्यों लटक रही है ?

'अखिल भारतीय पत्नी अत्याचार विरोधी मोर्चा' के अध्यक्ष श्री आर.पी. चुघ का कहना है कि —"ऐसा नहीं है कि मैं हमेशा महिलाओं का विरोधी रहा हूं । मैं २०-२२ वर्षों तक महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई लड़ता रहा हूं । मैं महिला दक्षता समिति और जनवादी महिला समिति का संस्थापक सदस्य रह चुका हूं । इसके अतिरिक्त, मैंने 'वूमन फेडरेशन' और 'नारी रक्षा समिति' में भी कार्य किया है । लेकिन दो-ढाई वर्षों से, मेरा हृदय परिवर्तन हो गया है । अब महिलाओं के घड़ियाली आंसूओं में नहीं बहता । बल्कि पत्नी पीड़ित पतियों की आवाज बुलंद कर रहा हूं ।"

मोर्चे की स्थापना करने का विचार मन में कैसे और क्यों आया ? सवाल के जवाब में, श्री आर.पी. चुघ बोले—"मैं स्वयं भुक्तभोगी हूं । मैं जिंदगीभर दहेज के खिलाफ लड़ा । परंतु मेरी सास ने मुझ पर दहेज मांगने के झूठे आरोप ठोक दिये । पहले दिन से मेरी पत्नी ने अलग मकान लेकर मुझे घर से अलग कर दिया । जब कभी मैं घर देर से पहुंचता, तो वह कहती कि मेरे बहन के साथ गलत संबंध हैं ।इसलिए मैं वहीं से होकर आ रहा हूं ।... मेरी पहली शादी एक माह के बाद ही टूट गयी । फिर दूसरा विवाह किया । यह छह साल तक चला । अंततः परस्पर समझौते से तलाक हो गया । और अब शादी के नाम से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं..."

### आत्महत्या से पहले पति का नोट

'... दूसरी पत्नी से तलाक होने के उपरांत १३ जुलाई को शाहदरा (दिल्ली) में एक घटना हुई । नरेश आनंद नामक एक व्यक्ति ने दिल्ली

पुलिस की 'वूमन सैल' से परेशान होकर आत्महत्या कर ली । उसने आत्महत्या करने से पूर्व, एक नोट लिखा, जिसमें कहा गया कि देश में पतियों का भी एक संगठन होना चाहिए । खबर पढ़ते ही मैंने पतियों का संगठन बनाने की ठान ली । फिर १५ जुलाई १९८८ को इस मोर्चे का गठन किया ।"

श्री आर.पी. चुघ का मानना है कि बहुएं पति-पत्नी के मनमुटाव के शत-प्रतिशत मामलों को जानबूझकर दहेज-लोभ का रंग दे देती हैं । क्योंकि पति-पत्नी के बीच अनबन दूर करने का कोई कानून नहीं है । इसलिए पति व ससुरालवालों को सबक चखाने के उद्देश्य से, बहू थाने में दहेज मांगने की शिकायत करती है । तस्वीर की वास्तविकता केवल इतनी होती है— शादी के तुरंत बाद पत्नी पति पर दबाव डालती है कि मां-बाप से अलग हो जाओ । पति नहीं मानता । तनाव बढ़ता है । आखिर में, तनाव दहेज की मांग के आरोप में बदल जाता है । पुलिस हस्तक्षेप से पति-पत्नी के मध्य थोड़ा-बहुत विश्वास भी बिखर जाना स्वाभाविक है । अतः पति-पत्नी के मामलों में पुलिस की दखल बंद होनी चाहिए ।

**पारिवारिक मामलों में पुलिस**

पारिवारिक मामलों में पुलिस की बढ़ती दखलअंदाजी के प्रति रोष व्यक्त करते हुए श्री चुघ कहते हैं— "हमारी पुलिस को सभ्य और सुसंस्कृत लोगों से बातचीत करने की तमीज नहीं है । उनकी ज्यादतियों से तो पारिवारिक कलह को दूर करने की संभावना बिलकुल क्षीण हो जाती है । महिलाओं पर अत्याचार के खिलाफ बना 'वूमन सेल' महिलाओं की झूठी शिकायतों पर, दूसरों पर जुल्म ढा रहा है । जरा गौर कीजिए कि एक बहू की झूठी शिकायत पर, उसी घर की दूसरी बहू यानी सास पर सख्त कार्रवाई की जाती है । यह कौन-सा इंसाफ है ?"

"तो क्या मान लें कि बहुओं पर अत्याचार होते ही नहीं ?"— मैंने सवाल किया ।

कुछ क्षण सोचने के बाद वह बोले— "ऐसा नहीं है । बहुओं पर अत्याचार होते हैं, लेकिन 'न' के बराबर । एक बार मैंने 'वूमन सेल' की एक अधिकारी से कहा कि ९५ फी-सदी मामले झूठे होते हैं, तो उसने जवाब दिया— ९५ नहीं, ९८ प्रतिशत ।इसी प्रकार, एक अन्य महिला डी.सी.पी. ने तो अपने बयान में ७५ से १०० फी-सदी मामले झूठे बताए ।"

मोर्चे के एक प्रवक्ता के अनुसार आजकल टी.वी. धारावाहिकों और फिल्मों के सहारे काल्पनिक जुल्मों की ऊटपटांग बातें महिलाओं के दिमाग में ठूंसी जा रही हैं । ऐसे भड़काऊ कार्यक्रम सुखद पारिवारिक वातावरण को कलहपूर्ण बनाते हैं । यानी यह घरों को तोड़ने का षड्यंत्र है । मोर्चे ने महिला कल्याण तथा सूचना व प्रसारण मंत्री से मांग की है कि दहेज संबंधी कार्यक्रम दिखाने से पूर्व, मनोवैज्ञानिक प्रभाव को नजरअंदाज न किया जाए । यही नहीं, कार्यक्रमों में पति पक्ष को अपनी बात कहने के समुचित अवसर भी दिए जाने चाहिए ।

'अखिल भारतीय पत्नी अत्याचार विरोधी मोर्चे' ने कई बार कानून के संदेहपूर्ण दृष्टिकोण को उजागर करने के उद्देश्य से, उच्चतम न्यायालय का दरवाजा खटखटाया है । कानूनी

तरफदारी [illegible] महिलाओं का पलड़ा भारी होता है । भारतीय दंड संहिता की धाराएं ४९८ए, ३०४बी व ४०६ तथा विवाह कानून की धारा ११३ए पूर्णतः पत्नियों के पक्ष में है ।

### बेचारे पति कहां जाएं !

कानूनी तरफदारी का उल्लेख करते हुए श्री चुघ ने कहा— "विवाह कानून की धारा ११३ए के अनुसार यदि किसी महिला की मृत्यु विवाह के ७ वर्ष के भीतर आत्महत्या या किसी अन्य कारणों से हो जाती है, तो उसका दोष पति व उसके संबंधियों पर माना जाएगा । अपने को निर्दोष साबित करने का दायित्व भी उन्हीं पर है । भारतीय दंड संहिता की धारा ४९८ए के अंतर्गत अगर किसी महिला को पति या उसके परिवार द्वारा यातना दी जाती है, तो उन्हें ३ वर्ष की कैद की सजा का प्रावधान है । 'क्रूरता' की परिभाषा के अनुसार आत्महत्या के लिए उकसाना, चोट पहुंचाना, शरीर के किसी अंग को घायल करना या उसे मानसिक यातना देना शामिल है, जो किसी धन या संपत्ति (दहेज) की मांग के लिए किये जाएं । और हां, भारतीय दंड संहिता की धारा ४९८ए को इस संशोधन द्वारा गैर-जमानती बना दिया गया ।'

"आज बहुओं के साथ कानून है, समाज है । दूसरी ओर, बेचारे पतियों की कहीं सुनवायी नहीं । पुलिस भी बेवजह पति और ससुरालवालों को डराती-धमकाती है । देखा गया है कि अक्सर बहू पति व ससुरालवालों को [illegible] के लिए, खुद पर मिट्टी का तेल छिड़ककर थाने की ओर भागने का नाटक करती है । तथा बहुओं को खुल्लम-खुल्ले ऐसे नाटक करने की छूट है ? कोई कानूनी रोक नहीं । और तो और, भारतीय दंड संहिता की धारा ४९८ए और ३०४बी के संशोधन विवाहित महिला के पक्ष में झुके हैं । ऐसी व्यवस्था भी नहीं है कि अगर निष्पक्ष जांच के बाद बहू की शिकायत झूठी पायी जाए, तो बहू को दंडित किया जा सके । क्या यह अंधा कानून नहीं है ? बेचारे पतियों के साथ कितनी बेइंसाफी है ?"— श्री चुघ कह रहे थे ।

बहरहाल, तय है कि पत्नियों द्वारा कानून का दुरुपयोग किया जा रहा है । कानूनी प्रावधान दलित, पीड़ित और उपेक्षित महिलाओं के संरक्षण के लिए बनाये गये हैं, जबकि आज इनका नाजायज फायदा धनी घरानों की बहुओं द्वारा दहेज के झूठे आरोप लगाकर किया जा रहा है । फिर पत्नियां बदले की भावनावश पति को सताती हैं, अपमानित करती हैं । अतः स्वार्थी व दुष्ट पत्नियों से पतियों के बचाव के लिए कानून में व्यापक संशोधन होने चाहिए । अन्यथा पतियों पर पत्नियों के अत्याचार बढ़ते जाएंगे । और पहले से कहीं अधिक तादाद में पति यह कहते मिलेंगे— "मुझे मेरी बीवी से बचाओ । मारती है, पीटती है और हमेशा पुलिस की धमकियां देती है ।"

—५१, राजपुर रोड,
दिल्ली-११००५४

*चिथड़े का निरादर मत करो, क्योंकि उसने भी किसी समय किसी की लाज रखी थी ।* —शेखसादी

●डॉ. सुधीर खेतावत

**आंख के मध्य की सीध में और नाक के निचले भाग की सीध में आया बिंदु**
चेहरे का लकवा, दांत का दर्द हो तो इस बिंदु पर दबाव दें ।

# अद्भुत करिश्मे : अपना
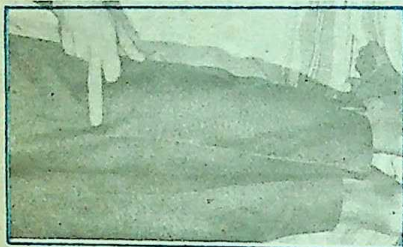
**घुटने के पीछे, मध्य में स्थित बिंदु**
घुटने और कमर में दर्द, साइटिका, पैशाब के रोग, त्वचा रोग में इस बिंदु पर दबाव दें ।

**कान के सामने स्थित बिंदु**
कान की तकलीफ, जबड़े में दर्द, चेहरे का लकवा होने पर इस बिंदु पर दबाव दीजिए ।
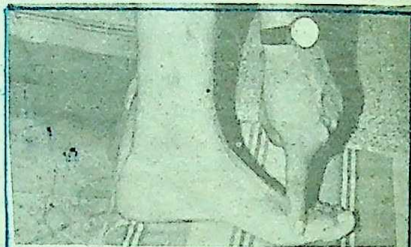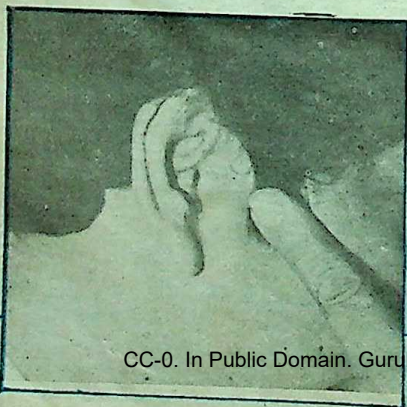
**पंजे के अंदरूनी भाग पर अंगूठे की हड्डी के एकदम पीछे स्थित बिंदु**
भूख न लगती हो तो इस बिंदु पर दबाव देना चाहिए ।

**रीढ़ की हड्डी से दो अंगुल बाहर की ओर स्थित बिंदु**
गरदन और कंधे का दर्द होने पर इस बिंदु पर दबाव लाभकारी है ।
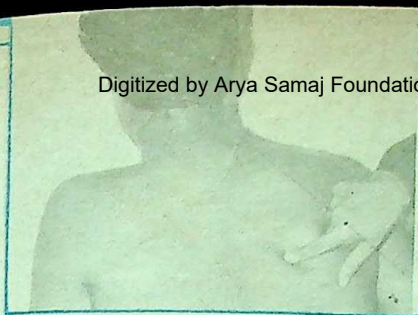
**रीढ़ की हड्डी से दो अंगुल बाहर की ओर स्थित बिंदु**
ब्रोंकाइटिस, कै की तकलीफ में इस बिंदु पर दबाव दें ।

# इलाज स्वयं कीजिए—३४
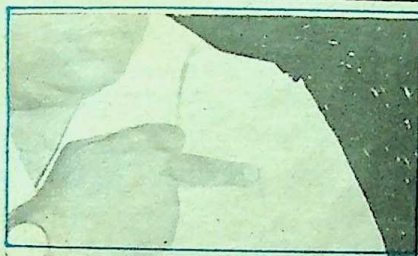
**कांख के कोने से एक अंगुल ऊपर स्थित बिंदु**
कंधे का दर्द, हाथ का लकवा होने पर इस बिंदु पर दबाव दीजिए ।

**सीने पर, मध्य लाइन पर स्थित बिंदु**
दमा, पसलियों में दर्द होने पर इस बिंदु पर हल्का दबाव दीजिए ।
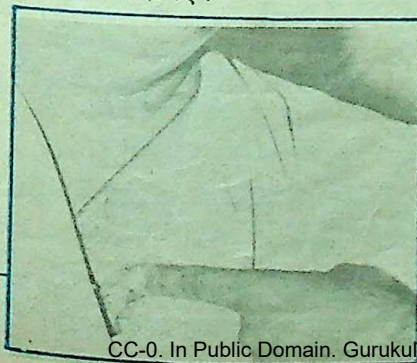
**पैर के बाहरी भाग पर, जहां मध्य अंगुली पहुंचती हो, स्थित बिंदु**
पैर का लकवा, पैर का दर्द, पैर में रक्त संचार की कमी में इस बिंदु पर दबाव देना चाहिए ।

**दबाव कितनी देर डालें**

*१. बारह घंटों में दो बार ।*
*२. दबाव एक मिनट तक दिया जा सकता है, एक बिंदु पर साठ बार ।*
*३. भोजन के एक घंटे पूर्व अथवा एक घंटे बाद ।*
*४. दबाव सहनीय होना चाहिए और अंगूठे के अग्रभाग से दिया जाना चाहिए ।*

—एक्यूप्रेशर चिकित्सा एवं प्रशिक्षण केंद्र, नीलकमल सिनेमा परिसर, इंदौर-४५२००३

# किस्से विचित्र पेड़ों के

**पेड़ किस प्रकार सभ्य मानव की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। पढ़िए कुछ विचित्र किंतु सत्य**

## पेड़ जो प्यास बुझाते हैं

### और उनका पानी होता है मीठा

मैडागास्कर के जंगलों में ऐसे पेड़ हैं जो आपकी प्यास बुझाने को आतुर हैं। यह पेड़ 'ट्रैवेलर-पाम' है। केले की प्रजाति का यह पौधा है। इसका वैज्ञानिक नाम है— 'रैवेनेला मैडागास्केरियोंसिस'। पेड़ की ऊंचाई २० फुट तक होती है। केले जैसे सीधे तने पर पंखें की आकृतियों की बड़ी-बड़ी पत्तियां होती हैं। इन पत्तियों की शिराएं फूली रहती हैं। इन शिराओं में भरपूर पानी भरा होता है। पत्ती के आधार को यदि तेज चाकू से काट दें तो मीठा पानी बहना शुरू हो जाता है। यह पानी पीने लायक होता है। इससे आप प्यास बुझा सकते हैं। जहां यह पेड़ नहीं दिखता, वहां यदि पेड़ों पर लटकती बेलें देखें तो उनको काटने पर भी प्यास बुझायी जा सकती है।

## बेलें जो धारदार हैं ब्लेड की तरह

### उनसे बनायी जा सकती है दाढ़ी

जंगलों में ऐसी बेलें भी होती हैं जिनकी सतहें ब्लेड की धार की तरह पैनी होती हैं। यदि आप जंगल में बगैर किसी सेविंग किट के हैं तो इन धारदार ब्लेडों का प्रयोग दाढ़ी बनाने के लिए कर सकते हैं। यदि साबुन की भी आवश्यकता हो तो कुछ बेलें और पौधों की पत्तियां ऐसी भी हैं, जिनको रगड़कर दाढ़ी पर फेरने से साबुन की कमी पूरी हो जाती है। इस बेल को 'सोपवाइन' कहते हैं। ऐसे ही 'सोप-बेरी-बुश', व 'सोप-बार्क ट्री' पेड़ भी हैं।

*निद्रा और आहार के प्रति लापरवाही बरतना जवानी के प्रारंभ में 'सेक्स' हार्मोंस के उभार के कारण भी यह रोग हो जाता है। अप्राकृतिक मैथुन क्रियाओं में संलग्न रहना, विशेषकर हस्तमैथुन करना। मुहांसों के मूल कारणों में एक है।*

जाते हैं। निद्रा और आहार के प्रति लापरवाही बरतना जवानी के प्रारंभ में 'सेक्स' हार्मोंस के उभार के कारण भी यह रोग हो जाता है। अप्राकृतिक मैथुन क्रियाओं में संलग्न रहना, विशेषकर हस्तमैथुन करना। मुहांसों के मूल कारणों में एक है। शरीर में अधिक गरमी जमा होने या खारिज होने से भी यह रोग हो जाया करता है। क्रीम, पाउडर, लोशन, पोमेडस आदि सौंदर्य प्रसाधन की वस्तुएं प्रयोग करने से भी यह रोग हो जाता है। भोजन में अम्ल प्रधान पदार्थों की अधिकता रहने से खून में खटाई की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे अनेक रोगों का सूत्रपात होता है। इनमें तली-भुनी चीजें, मैदा से बनी चीजें, चोकर रहित आटे की रोटी, छंटे हुए चावल, अंडा, मांस, मछली के सेवन आदि से रक्त दूषित हो जाता है। शरीर में गंदगी जमा हो जाती है। जिससे 'सिवेशिअस' ग्रंथियों में सूजन आ जाती है तथा उनमें पस पड़कर जम जाया करता है, जो मुहांसों को दबाने पर कील के रूप में निकलता है। रोमकूप खुले रहें एवं पर्याप्त पसीना निकलता रहे, इसके लिए नियमित श्रम करना आवश्यक है। कम पानी पीना भी एक कारण है। भोजन में फल एवं हरी सब्जियों का अभाव भी मुहांसे पैदा करता है।

### प्राकृतिक उपचार

प्राकृतिक चिकित्सा शरीर के किसी अंग विशेष का उपचार नहीं करती है। वह तो मिट्टी, पानी, धूप, हवा और योगासनों के द्वारा सारे शरीर का शोधन करती है। मुहांसे वास्तव में गंदगी का साक्षात प्रतिरूप हैं। प्राकृतिक चिकित्सा सभी रोगों का मूल कारण मानव द्वारा अनियमित जीवन-यापन के दुष्परिणाम में जमा हुई गंदगी को मानती है। प्राकृतिक चिकित्सा का उपचार बहुत ही धैर्य के साथ चलाना चाहिए। तभी वांछित लाभ की प्राप्ति होती है, क्योंकि पेड़ लगाने के कई वर्ष बाद फल खाने को मिलते हैं। उपचार की शुरुआत सर्वप्रथम पेडू पर मिट्टी की पट्टी को ३० मिनट तक रखें। उसके बाद नीम की पत्ती डालकर उबाला हुआ गुनगुना पानी एनीमा के रूप में लें। इससे आंतों में वर्षों से जमा गंदगी साफ हो जाएगी। जिसके बाद बननेवाला रक्त शुद्ध बनेगा। जिससे शरीर की जीवनी शक्ति में वृद्धि होगी तथा रोगों से लड़ने की क्षमता का शरीर में विस्तार होगा। जिससे मानव को रोग मुक्त जीवन बिताने का मौका मिलेगा। कंकड़ रहित साफ मिट्टी को पानी में भिगोकर प्रतिदिन पेडू पर रखने के अलावा सुबह-शाम चेहरे पर लेप करें। आधे घंटे के बाद उसे ठंडे पानी से साफ कर देना चाहिए। इससे चेहरा साफ हो जाएगा क्योंकि मिट्टी अमृत के समान गुणकारी एवं शरीर को विषमुक्त करने की अपूर्व क्षमता है। चेहरे पर ठंडे पानी के छींटे मारने से भी इस रोग में लाभ होता है। मुहांसे के रूप में चेहरे पर

जमा विकार को निकालने के लिए रोज सुबह १५ मिनट के लिए चेहरे पर भाप लगाना चाहिए तथा मिट्टी का लेप करना उत्तम है । आधा घंटे बाद ठंडे पानी से चेहरे को धो डालना चाहिए । यह प्रक्रिया सुबह-शाम दो बार करना पर्याप्त होगी । प्राकृतिक चिकित्सा में एक से तीन दिन का उपवास करके जीर्ण एवं असाध्य रोगों की चिकित्सा भी सफलतापूर्वक की जा सकती है । उपवास प्राकृतिक चिकित्सा का अंतिम वाण माना गया है । उपवासकाल में सुबह-शाम पेडू पर मिट्टी की पट्टी एवं एनीमा लेने का क्रम जारी रखना चाहिए । एक सप्ताह तक रसाहार या फलाहार का सहारा लेना उपयोगी सिद्ध हुआ । शरीर के रोम कूप खुले रहें, इसके लिए सप्ताह में एक बार भाप स्नान लेना चाहिए । इसके तुरंत बाद ठंडे पानी से स्नान करना जरूरी है । शरीर में बढ़े हुए अम्ल की मात्रा को कम करने के लिए 'कुंजल क्रिया' करना सर्वोत्तम है । इसके लिए नमकीन गुनगुने पानी को इच्छा से अधिक पियें तथा उल्टी कर दें । दो घंटे तक आराम करें एवं एक टाइम केवल खिचड़ी खाएं, जिसमें पर्याप्त मात्रा में शुद्ध घी पड़ा हो । सुबह को एक घंटे का धूप सेवन करना भी लाभकर सिद्ध हुआ है । धूप स्नान के समय ठंडे पानी का भीगा तौलिया सिर पर अवश्य रखना चाहिए । प्राकृतिक चिकित्सा में संयम को चिकित्सा से बढ़कर माना गया है । नीबू का रस और पानी मिलाकर चेहरे पर लेप करने एवं बाद में ठंडे पानी से धोने से चेहरे का रंग साफ हो जाता है । उपरोक्त बातों का सहारा लेकर धैर्य के साथ उपचार चलानेवाले को निश्चित रूप से लाभ होता है । मुहांसों से निजात पाने के लिए आहार-दोष से बचना होगा एवं धातुक्षय को रोकना भी अनिवार्य है ।

''प्रचार मंत्री''
म.प्र. प्राकृतिक चिकित्सा परिषद,

*किसी माप लेते दरजी को आप अंतिम क्षण तक कहते हैं कि कपड़ा ए-वन सिलना चाहिए, और वह भी आपको अपने काम का भरोसा दिलाता है । कई बार सही फिटिंग के लिए आपको कई जगह जाना पड़ता है ।*

*परंतु आज अब इस प्रगति के समय में माप-जोख करने का फैशन लदने ही वाला है क्योंकि अब कंप्यूटर आपका ३-डी माप लेकर कपड़े डिजाइन करेंगे ।*

*इस नयी विधि में आपको केवल कैमरे के समक्ष घूमते प्लेटफार्म पर खड़े होना है । कैमरा स्कैनिंग करेगा और कंप्यूटर बाकी माप-जोख का काम करेंगे । पश्चिमी देशों में इस मशीन ने फैशन-संसार में क्रांति ला दी है । 'मार्क एंड स्पेंसर' नामक ब्रिटेन की बड़ी फर्म के सहयोग से लोबोरी विश्वविद्यालय ने यह तकनीक विकसित की है । माप-जोख के अतिरिक्त इसमें कंप्यूटर ऐडेड डिजाइन का काम भी लिया जा सकता है ।*

*वैज्ञानिकों का मत है कि एक सामान्य व्यक्ति में सही-सही त्रिआयामी माप-जोख के लिए ६३,००० आंकड़े बिंदु होते हैं और सही पोशाक बनाने के लिए इनकी माप-जोख करना जरूरी है ।*

*वैसे इतना करने के बाद भी यंत्र के आविष्कारक और खोजी टीम थोड़ी अवसादग्रस्त है । सिर्फ इसलिए कि इससे ९९.५ प्रतिशत कमी को दूर किया जा सकता है । इसमें सुधार में अभी कुछ और समय लगे, तब कपड़े की फिटिंग में शिकायत का मौका नहीं मिलेगा ।*
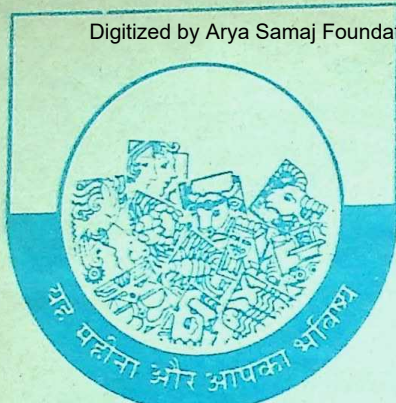
● पंडित शिव प्रसाद पाठक

**मेष** : मास में प्रतिकूल परिस्थितियों पर संघर्ष के पश्चात विजय मिलेगी। इच्छित कार्यों की पूर्ति से उत्साहवर्धक वातावरण होगा। विगत काल से चली आ रही समस्याओं का समाधान होगा। १ से ७ के मध्य शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से लंबित योजनाओं में सफलता मिलेगी। शुभ कार्यों का संपादन होगा। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। ८ से १५ के मध्य संपत्ति कार्यों में सफलता की प्राप्ति होगी। शत्रु-पक्ष का पराभव होगा। आर्थिक कार्यों में वांछित प्रगति होगी। धार्मिक स्थान की यात्रा होगी। १६ से २४ के मध्य पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता होगी। शत्रु-पक्ष से सावधानी रखना हितकर होगा। वाहन, भवन संपत्ति पर व्यय की अधिकता होगी। व्यर्थ दौड़-धूप से अस्वस्थता का सामना करना होगा। मासांत में आत्म विश्वास तथा पराक्रम से राजकीय एवं सामाजिक कार्यों में प्रतिष्ठा वृद्धि होगी।

**महिलाओं** को सामाजिक एवं मांगलिक कार्यों की अधिकता होगी। पारिवारिक दायित्वों पर व्यय बढ़ेगा। आजीविका संबंधी प्रयासों में सफलता मिलेगी।

**विद्यार्थियों** को भ्रमण मनोरंजन की अधिकता होगी। पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा। नवीन कार्यों से प्रसन्नता होगी।

**वृषभ** : नवीन दायित्व एवं कार्यों की अधिकता होगी। स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखना हितकर होगा। धैर्य तथा संयम से कार्य करें। १ से ७ के मध्य शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से नवीन योजना की पूर्ति होगी। पारिवारिक कार्यों में व्यय बढ़ेगा। धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों की पूर्ति हेतु यात्रा होगी। ८ से १५ के मध्य शत्रु-पक्ष कार्यों में अवरोध उपस्थित करेगा। जोखिम तथा साझे के कार्य करना अहितकर होगा। आमोद-प्रमोद में सावधानी रखें। १६ से २४ के मध्य कार्यों की अधिकता होगी। अस्वस्थता के कारण व्यय तथा पीड़ा होगी। व्यर्थ संभाषण टालना हितकर होगा। संपत्ति कार्यों में सुखद समाचार

**ग्रह स्थिति** : सूर्य १५ जून से मिथुन में, मंगल कर्क में, बुध १ से वृषभ, १६ से मिथुन में, गुरु कर्क में, शुक्र कर्क में, शनि मकर में, राहु धनु में, केतु मिथुन में, हर्षल नेपच्यून धनु में, प्लेटो तुला राशि में भ्रमण करेंगे।

## पर्व और त्योहार

१. जून संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, ६. शीतलाष्टमी, ९. अचला एकादशी त्रिस्पृशा महाद्वादशी, १२. स्नानदान श्राद्धादि की अमावस्या, १४. रंभा ३ व्रत, १५. वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी, महाराणा प्रताप जयंती, १७. विंध्यावासिनी पूजा, २१. श्री गंगा दशहरा, २२. निर्जला एकादशी, २४. भौम प्रदोष, २७. स्नानदान की पूर्णिमा, ३०. संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत ।

मिलेगा । मासांत में पारिवारिक कार्यों की पूर्ति होगी । धार्मिक स्थान की यात्रा होगी ।

**महिलाओं** को पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी । आजीविका की दिशा में नवीन अवसरों का उदय होगा । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में व्यस्तता होगी ।

**विद्यार्थियों** को रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी । मित्रों का सहयोग उत्साहवर्धक होगा । नवीन स्थान की यात्रा होगी ।

**मिथुन** : आर्थिक साधनों में वृद्धि होगी । पारिवारिक कार्यों में धैर्य रखें । शत्रु-पक्ष से सतर्कता हितकर होगी । १ से ७ के मध्य अधिकारी वर्ग पर प्रभाव वृद्धि होगी । आजीविका की दिशा में नवीन अवसरों का उदय होगा । शत्रु-पक्ष गुप्त रूप से अहितकर प्रयास करेगा । ८ से १५ के मध्य कार्यों की अधिकता होगी । जोखिम पूर्ण कार्यों से धनलाभ होगा । लंबित योजनाओं में वांछित प्रगति होगी । १६ से २४ के मध्य लगन एवं परिश्रम से धीमी प्रगति होगी । शत्रु-पक्ष का पराभव होगा । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में व्यय की अधिकता होगी । लेखन-सृजन रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों से यशवृद्धि होगी । मासांत में संपत्ति विवाद का समाधान स्वजनों के सहयोग से होगा ।

**महिलाओं** को पारिवारिक सहयोग मिलेगा । रोजगार संबंधी अनिश्चितता विद्यमान रहेगी । आर्थिक दिशा में परिश्रम का प्रतिफल मिलेगा ।

**विद्यार्थियों** को परीक्षा प्रतियोगिता संबंधी सुखद समाचार मिलेगा । पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा । नवीन मित्रों से समागम होगा ।

**कर्क** : मास में कीर्ति तथा सफलता मिलेगी । नवीन योजनाओं से भाग्य वृद्धि होगी । आध्यात्मिक तथा सृजन संबंधी कार्यों में रुझान बढ़ेगा । १ से ७ के मध्य आर्थिक लाभ मिलेगा । विलासितादायी वस्तु पर धन व्यय होगा । राजकीय सहयोग से उत्तरदायित्वों की अधिकता होगी । साहसिक प्रयासों से सफलता मिलेगी । ८ से १५ के मध्य नवीन संपत्ति कार्यों में सफलता मिलेगी । शत्रु-पक्ष से सुलह होगी । अज्ञात तनाव एवं चिंता में वृद्धि होगी । १६ से २४ के मध्य कार्यों की अधिकता से अस्वस्थता का सामना करना होगा । रक्त संबंधियों से व्यर्थ विवाद होगा । संभाषण पर नियंत्रण हितकर होगा । मासांत में आकस्मिक

धन से लंबित समस्या हल होगी । आजीविका की दिशा में उच्चाधिकारियों की अनुकंपा का लाभ मिलेगा । शत्रु-पक्ष से सतर्कता रखें ।

**महिलाओं** को पारिवारिक, धार्मिक, अथवा मांगलिक कार्यों से यश मिलेगा । स्वजनों से भेंट होगी । सामाजिक कार्यों की अधिकता होगी । आर्थिक अस्थिरता विद्यमान रहेगी ।

**विद्यार्थियों** को मनोनुकूल परिणाम मिलेगा । पारिवारिक दायित्वों की अधिकता होगी । नवीन अवसरों का उदय होगा ।

**सिंह :** मास में व्यर्थ विरोधाभास एवं तनावों की अधिकता होगी । प्रतिकूल परिस्थितियों पर साहसिक प्रयासों से सफलता मिलेगी । १ से ७ के मध्य शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा । नवीन दायित्व से प्रसन्नता होगी । लेखन-सृजन, रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों में अवरोधक स्थितियों का उदय होगा । ८ से १५ के मध्य गुप्त शत्रुओं से सावधानी रखें । राजकीय कार्यों में विरोधाभास का उदय होगा, अधिकारी वर्ग से संभाषण संतुलित रखें । १६ से २४ के मध्य जोखिमपूर्ण कार्यों को टालना हितकर होगा । पारिवारिक अस्वस्थता पर व्यय होंगे । आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । मासांत में परोपकारी प्रयासों से पीड़ा होगी । पारिवारिक एवं सामाजिक कार्यों में धन व्यय होगा । संपत्ति विवाद को टालना हितकर होगा ।

**महिलाओं** को रोजगार संबंधी चिंता होगी । सामाजिक तथा पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी । शत्रु-पक्ष से सावधानी रखें । स्वजनों से भेंट होगी ।

**विद्यार्थियों** को विषम परिस्थितियों के बावजूद परीक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी । प्रवास में सावधानी रखें, आमोद-प्रमोद पर नियंत्रण हितकर होगा ।

**कन्या :** मास उपलब्धिपूर्ण होगा । आजीवि[illegible] संबंधी प्रयास सार्थक होंगे । पारिवारिक सहयोग उत्साहवर्धक होगा । १ से ७ के मध्[illegible] पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी । व्यावसायिक उतार-चढ़ाव से चिंता होगी । नवीन मित्रों का समागम होगा । राजकीय का[illegible] में व्यर्थ विलंब होगा । ८ से १५ के मध्य स्वास्थ्य संबंधी पीड़ा का सामना करना होगा । वाहनादि का प्रयोग सावधानी से करें । आध्यात्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा । १६ से २४ के मध्य जोखिमपू[illegible] कार्यों से धनलाभ होगा । संपत्ति विवाद का समाधान प्रियजन के सहयोग से होगा । शत्रु-पक्ष से सुलह होगी । पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा । मासांत में शासन-सत्ता अथवा उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा ।

**महिलाओं** को उदर अथवा रक्त विका[illegible] का सामना करना होगा । आत्मविश्वास तथा पराक्रम से राजकीय कार्यों की पूर्ति होगी । आजीविका संबंधी कार्यों में सफलता मिले[illegible]

**विद्यार्थियों** को परीक्षा-प्रतियोगिता सं[illegible] सुखद समाचार मिलेगा । पारिवारिक वाता[illegible] उत्साहवर्धक होगा । यात्रादि से मन प्रसन्न रहेगा ।

**तुला :** नवीन उत्तरदायित्व एवं कार्यों की अधिकता होगी । प्रियजनों का सहयोग उत्साहवर्धक होगा । सामाजिक प्रतिष्ठा एवं[illegible]

वृद्धि होगी । १ से ७ के मध्य शासन-सत्ता अथवा उच्चाधिकारियों के सहयोग से नवीन उत्तरदायित्व मिलेगा । भौतिक सुखों के प्रयास साकार होंगे । नवीन मित्रों का समागम लाभदायी होगा । ८ से १५ के मध्य रचनात्मक अथवा आध्यात्मिक कार्यों में रुझान बढ़ेगा । उत्तम सत्संग अथवा तीर्थाटन का योग है । पारिवारिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी । १६ से २४ के मध्य साहसिक प्रयासों से उच्चाधिकारी प्रसन्न होंगे । अपूर्ण कार्य अथवा धन संपदा संबंधी विवादों में अनुकूल निर्णय होंगे । शत्रु-पक्ष के प्रयास विफल होंगे । मासांत में लेखन-सृजन, रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों की अधिकता होगी । प्रियजन से भेंट होगी ।

**महिलाओं** को पारिवारिक सहयोग से उल्लेखनीय उपलब्धि होगी । मांगलिक कार्यों में सफलता मिलेगी । आजीविका संबंधी उत्तरदायित्वों में वृद्धि होगी ।

**विद्यार्थियों** को शिक्षा, परीक्षा, प्रतियोगिता में वांछित सफलता मिलेगी । सुख समाचार मिलेगा । आमोद-प्रमोद से सतर्कता रखें ।

**वृश्चिक** : मास मिश्रित फलदायी होगा । परिवारजनों से पीड़ा होगी । सामाजिक प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी । राजकीय कार्यों में शत्रु-पक्ष क्रियाशील रहेगा । आकस्मिक धन लाभ होगा । १ से ७ के मध्य शत्रु-पक्ष के प्रभाव की अधिकता होगी । भावुकता अथवा शीघ्रता में लिया गया निर्णय घातक होगा । धैर्य तथा संयम रखें । ८ से १५ के मध्य कार्यों की अधिकता होगी । पारिवारिक अस्वस्थता पर व्यय होगा । अधिकारी वर्ग अकारण पीड़ादायी होगा । १६ से २४ के मध्य आकस्मिक धनलाभ से लंबित समस्या का समाधान होगा । विवादास्पद कार्यों को टालना हितकर होगा ।

**महिलाओं** को अस्वस्थता का सामना करना होगा । आर्थिक अस्थिरता होगी । पारिवारिक दायित्वों मे वृद्धि होगी । स्वजनों से भेंट होगी ।

**विद्यार्थियों** के लिए मध्यम समय होगा । शिक्षा कार्यों में शिथिलता रहेगी । प्रियजनों अथवा मित्रो से भेंट होगी ।

**धनु** : मास मे प्रतिकूल स्थितियों पर आत्म विश्वास से विजय मिलेगी । जमीन-जायदाद संबंधी समस्या का समाधान होगा । आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । नवीन स्थान की यात्रा लाभदायी होगी । १ से ७ के मध्य आर्थिक योजनाओं में सफलता मिलेगी । पारिवारिक वातावरण खिन्नतादायी होगा । राजकीय कार्यों में दायित्वों की अधिकता होगी । नवीन मित्रों का समागम होगा । ८ से १५ के मध्य अधिकारी वर्ग शत्रु-पक्ष से प्रभावित होगा । श्रम की अधिकता के बावजूद सफलता का अभाव होगा । व्यर्थ विवाद टालना हितकर होगा । १६ से २४ के मध्य शत्रु-पक्ष से संघर्ष विद्यमान रहेगा ।

**महिलाओं** को पारिवारिक दायित्वों की अधिकता होगी । अकारण विवादास्पद स्थितियों का उदय होगा । रोजगार संबंधी चिंता रहेगी ।

**विद्यार्थियों** को परीक्षा प्रतियोगिता संबंधी परिणाम चिंतनीय होगा । पारिवारिक सहयोग से नवीन कार्यों में सफलता मिलेगी ।

**मकर** : मास मध्यम फलदायी होगा । कार्यों में

गुप्त शत्रुओं द्वारा अवरोध होगा। परिवारजनों की स्वास्थ्य चिंता रहेगी। संपत्ति कार्यों में सफलता मिलेगी। १ से ७ के मध्य नवीन कार्यों में शत्रु-पक्ष द्वारा षड्यंत्र होगा। राज्याधिकारी से व्यर्थ विवाद होगा। धैर्य तथा संयम से कार्य करें। आर्थिक कार्यों में धीमी प्रगति होगी। ८ से १५ के मध्य अस्वस्थता, व्यर्थ पीड़ा एवं तनाव का सामना करना होगा। पारिवारिक अस्वस्थता से दौड़-धूप की अधिकता होगी। संपत्ति कार्यों में विलंब होगा, किंतु वांछित सफलता प्राप्त होगी। १६ से २४ के मध्य रचनात्मक एवं सामाजिक कार्यों की अधिकता होगी। पारिवारिक दायित्व पूर्ण होंगे। धार्मिक यात्रा का योग होगा।

**महिलाओं** को पारिवारिक एवं सामाजिक कार्यों की अधिकता होगी। उदर अथवा रक्त विकार का सामना करना होगा। आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी।

**विद्यार्थियों** को परीक्षा-प्रतियोगिता में व्यवधान होंगे। व्यर्थ आवेग तथा उत्तेजना से बचें। वाहनादि से सावधानी रखें।

**कुंभ :** मास में कीर्ति तथा सफलता मिलेगी। नवीन योजनाओं में भाग्योदय होगा। प्रियजनों का सहयोग मिलेगा। संपत्ति कार्यों में अनपेक्षित सफलता मिलेगी। १ से ७ के मध्य शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से नवीन योजनाओं में सफलता मिलेगी। नवीन आर्थिक संसाधनों का विकास होगा। पारिवारिक सहयोग उत्साहवर्धक होगा। ८ से १५ के मध्य धन संपत्ति कार्यों में परिश्रम सार्थक होगा। साहसिक प्रयासों से प्रतिकूल स्थितियों में नियंत्रण होगा। शत्रु-पक्ष के प्रयास विफल होंगे। १६ से २४ के मध्य आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी। परोपकारी कार्यों में धन व्यय होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। प्रियजनों से भेंट होगी।

**महिलाओं** को पारिवारिक सहयोग मिलेगा। स्वजनों से भेंट होगी। रचनात्मक कार्यों में संकल्पपूर्ति होगी।

**विद्यार्थियों** को शिक्षा, परीक्षा प्रतियोगिता में उत्साहवर्धक सफलता मिलेगी, वरिष्ठजनों का सहयोग मिलेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

**मीन :** मास में आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी। नवीन पद प्रतिष्ठा अथवा दायित्व मिलेगा। पारिवारिक समस्याओं का समाधान होगा। संपत्ति कार्यों में प्रियजनों का सहयोग मिलेगा। १ से ७ के मध्य शासन, सत्ता अथवा उच्चाधिकारियों के सहयोग से नवीन योजनाओं में सफलता मिलेगी। धार्मिक कार्यों में व्यय होगा। प्रियजनों का सहयोग उत्साहवर्धक होगा। ८ से १५ के मध्य विशिष्ट कार्य की पूर्ति हेतु यात्रा का योग उपस्थित होगा। परोपकारी कार्यों में धन व्यय होगा। कार्यों की अधिकता से तनाव तथा अस्वस्थता होगी। १६ से २४ के मध्य संपत्ति विवाद में विजयोपलब्धि से मन उत्साहित होगा।

**महिलाओं** को नवीन कार्यों की अधिकता होगी। उपहार, भेंट अथवा पुरस्कार मिलेगा। आजीविका संबंधी प्रयास साकार होंगे।

**विद्यार्थियों** को सुखद समाचार मिलेगा। प्रियजनों से भेंट होगी। यात्रा मनोरंजक तथा ज्ञानवर्धक होगी।

**—ज्योतिषधाम पत्रिका, १२/४, ओल्ड सुभाष नगर, गोविंदपुरा, भोपाल (म.प्र.)**

## यह अंधेरा
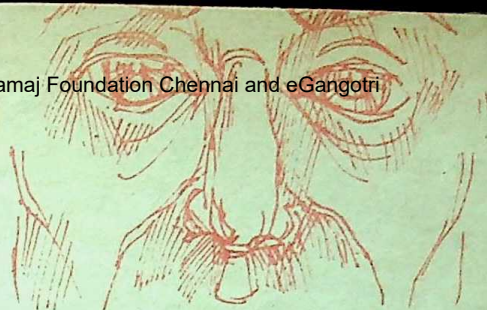
यह अंधेरा और बढ़ता जा रहा
सेंधमारों का नया दल आ रहा

उस विदूषक की करें तारीफ सब,
जुगनुओं की रोशनी जो ला रहा

बांटता बारूद है जो रात को
वह कबूतर शांति के उड़वा रहा

सब लुटेरे एक मिलकर हो गये,
घर कलह से टूट बंटता जा रहा

मूर्ख भेड़ें खुद खिंची जातीं उधर
प्यार के नगमे कसाई गा रहा

बंधु, लो, बैसाखियां फांसी बनीं
चतुर शव अब वीरगति-पद पा रहा

कलम की जलती मशालें थीं कभी
अब उसे बंसी बनाया जा रहा

**चिरंजीत**
डी-२-ई डी डी ए फ्लैट्स, मुनिरका नयी दिल्ली-६७

## करूं क्या ?

सुर सब बेसुर हुए, करूं क्या ?
उतरे हुए सभी के मुखड़े
सबके पांव लक्ष्य से उखड़े
सोच रहा हूं पराजितों से
हार-जीत के लिए लड़ूं क्या !
सागर निकले, ताल सरीखे
जो अंधे हैं, उन्हें न दीखे !
अंधों के आगे, आंसू की
उजली-उजली मौत मरूं क्या !
झूठी महिमा की मरीचिका
आत्मभृष्ट कर रही, जीविका
बौने ही, ऊंचाई पर हैं
इससे ज्यादा और कहूं क्या !!

**—रमानाथ अवस्थी**
सी चार सी १४/११ जनकपुरी, नयी दिल्ली-५८

## रुसवाइयों का शहर

वो शख्स जाते-जाते बड़ा काम कर गया
रुसवाइयों का शहर मेरे नाम कर गया

आदत थी मेरी सबसे मोहब्बत से बोलना
मेरा खुलूस ही मुझे बदनाम कर गया

गिरकर हमारी आंख से इक कतर-ए-लहू
जो बात राज की थी, उसे आम कर गया

इतराफ अपने ढूंढ़ती हूं खुद को आज तक
शोहरत का हौसला मुझे गुमनाम कर गया

चाहा था रह के कांटों में हंसती रहूं मगर
कोशिश को मेरी फूल ही नाकाम कर गया

'पूनम' मैं जिसके वास्ते घर छोड़ आयी थी,
बाजार में वही मुझे नीलाम कर गया

**— डॉ. पूर्णिमा 'पूनम'**
२१०, मढ़ाताल, जबलपुर (म.प्र.)

**'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान' प्रविष्टि १११ के लिए हमें सदा की भांति काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए। सभी पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं। कुछ चुने हुए प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं—पाठकों के सुपरिचित कंप्यूटर ज्योतिषी—अजय भाम्बी**

**मनोज कुमार गुप्ता, जयपुर**
**प्रश्न** : क्या मेरे 'राजयोग' है ? फल सहित बताएं ?
**उत्तर** : हां राजयोग है। राजयोग का अर्थ है कि जातक के पास सुख-सुविधाओं का अभाव नहीं होता।

**श्रीमती सुनीता, बेरीनाग (पिथौरागढ़)**
**प्रश्न** : पति की नौकरी कब तक ?
**उत्तर** : अगले छह माह के भीतर।

**मुन्नालाल मिश्र, जोहरी नगर, मैनपुरी**
**प्रश्न** : मैं प्रधानाचार्य कब तक बनूंगा ? उपयुक्त रत्न सुझायें ?
**उत्तर** : अगस्त १९९१ के बाद संभावना है। लहसुनिया पहनें।

**डॉ. एस.एल. गुप्त, हावड़ा**
**प्रश्न** : अपना मकान विदेश यात्रा से पूर्व या बाद ?
**उत्तर** : विदेश प्रवास के दौरान।

**मनोहर श्रीवास्तव, काशीपुर नैनीताल**
**प्रश्न** : मेरा पुत्र १२ मई १९८२ से लापता है। क्या वह जीवित है या नहीं ? अगर जीवित है तो घर वापस आने का योग कब तक ?
**उत्तर** : कुंडली से लड़का जीवित मालूम पड़ता है। वापस आने में समय लगेगा।

**रुक्मिणि कश्यप, जसखार (महाराष्ट्र)**
**प्रश्न** : पुत्र होने की संभावना है या नहीं ?
**उत्तर** : अगले वर्ष पुत्र प्राप्त होगा।

**श्रीनिवास शर्मा, शहडौल (म.प्र.)**
**प्रश्न** : शेयर के काम में लाभ या हानि ?
**उत्तर** : अब लाभ रहेगा।

**अनिता भंडारी, बूंदी**
**प्रश्न** : इस वर्ष पी.एम.टी. में चयन होगा या नहीं ?
**उत्तर** : अत्यधिक प्रयत्नों के उपरांत ही।

**कु. रजनी गुप्ता, दुर्ग**
**प्रश्न** : मेरी दीदी संगीता की शादी कब होगी ?
**उत्तर** : सितंबर १९९१ और अप्रैल ९२ के मध्य।

**जतेन्द्र कुमार, पठानकोट**
**प्रश्न** : विदेश यात्रा होगी ? यदि होगी तो कब ?
**उत्तर** : जुलाई के पश्चात योग बन रहा है।

**ऊषा देवी, गोण्डा**
**प्रश्न** : वर्तमान में दो मुकदमे चल रहे हैं। इनका परिणाम क्या होगा ?

उत्तर : अभी तो परिणाम आपके पक्ष में नहीं रहेंगे ।

**कु. नन्दिता श्रीवास्तव, इलाहाबाद**

**प्रश्न** : क्या निम्न जन्मांग चक्रम के अनुसार मैं मंगली हूं ?

**उत्तर** : मंगली तो हैं, लेकिन मंगल दोष नहीं है ।

**छोटू, श्रीगंगानगर**

**प्रश्न** : मेरा पुत्र बीमार है, स्वास्थ्य लाभ कब होगा ?

**उत्तर** : अगस्त से अच्छा समय आ रहा है । योग्य चिकित्सक का परामर्श लें ।

**अनिल राठौड़, सादुलपुर**

**प्रश्न** : अनुकूल रत्न सुझायें ?

**उत्तर** : नीलम एवं पुखराज धारण करें ।

**सुमन दुबे, रांची**

**प्रश्न** : क्या मुझे मेडिकल में प्रवेश मिलेगा ? कब तक ?

**उत्तर** : मिल जाएगा । प्रयासों में कमी न आने दें ।

**अक्षत सिंघल, कानपुर**

**प्रश्न** : पितृ सुख है या नहीं ? है तो कब तक ?

**उत्तर** : पितृ सुख है । जुलाई के बाद समय इस दृष्टि से बेहतर हो रहा है ।

**—भाम्बी कंसलटेंसी**
**डी-२/२, जनकपुरी,**
**नयी दिल्ली-५८**

११२

**नाम**

**जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख)** .......... **महीना** .......... **सन**............................

**जन्म-स्थान**.......... **जन्म-समय**..................................................

**वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण (तिथि सहित)**....................................

**पता**....................................................................................

**आपका एक प्रश्न** .......................................................................

**इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें**

**संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि ११२) 'कादम्बिनी'**
**हिंदुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१**
**अंतिम तिथि : २० जून, १९९१**

# प्रवेश



## परिचय

मत पूछो मेरा परिचय
किसी नकारात्मक चिंतन से
या
विगत स्मृतियों के भयावह वन से
मैं
तुम्हारी डायरी का
एकमात्र आशावादी पृष्ठ हूं
माना
अब उतना साफ नहीं मेरा चेहरा
फुंसियां उग आयी हैं उस पर
जैसे
सैकड़ों विद्रोही हाथ
उठ गये हों
त्वचा के भीतर
अपनी ही कैद से मुक्ति की
छटपटाहट में
उस नैसर्गिक खुरदरेपन में भी
हर स्याह समतल से विशिष्ट हूं
तुम्हारी डायरी का
कोरा छूट गया जो
वह पृष्ठ हूं
एक आशावादी पृष्ठ

## फिर

नग्न नैतिकता दिवंगत देश फिर
एक कुंठित मानसिकता शेष फिर

अमरता पर्याय भ्रष्टाचार की
जो जिये उनका यही निष्कर्ष है
स्वाभिमानी दर्पणों से डर गये
पत्थरों का कांच से संघर्ष है
सुजल, सुफल समानता संदेश फिर
एक कुंठित मानसिकता शेष फिर

रह न पाए जो अकेले बह गये
बह न पाए जो अकेले रह गये
जिंदगी के इस भंवर में क्या पता
कौन आगे कौन पीछे रह गये
शून्य में खोये सभी उपदेश फिर
एक कुंठित मानसिकता शेष फिर

## मेरी कहानी

सतत प्रवाह
टेढ़ा-मेढ़ा, आड़ा-तिरछा
फिर भी
अपनी ही सीध में बहता पानी
नदी की कहानी
मेरी ही तरह
विकृति में भी
सरल, सीधी
अपने सिंधु की दिशा में
वह सिंधु
जो हर दिशा में है
कहीं न कहीं

## काले कबूतर

चोंच में दाबे
स्याह अनुभवों के 'श्वेत पत्र'
घूमते
गली-गली, नगर-नगर
काले कबूतर

आसमानी सड़कों पर
सूर्य के रथ से कुचला
लहूलुहान बादल
फुटपाथ की झुर्रियों में
गुलाबी क्रांति का आभास दे
उतर आएगा जब
तृषित आंखों की सुर्खियों में
तब
संवर जाएंगे
आती भोर के काले अक्षर
छपते-छंटते-बंटते
दुकानों, नाश्ते की मेजों पर
घर घर
अट्टालिकाओं की ऊंचाइयों में
कल्पना की गहराइयों में
उड़ते तैरते अक्षर;
गरम बहसों की भाप बनते अ
संबंधों की नाप बनते अक्षर
वह अखबारी, बाजारी अक्षर
वह स्याह अनुभवों के श्वेत पत्र
और उन्हें बांचते
अनगिनत काले कबूतर
गली-गली, नगर-नगर

—कृष्णकुमार जोशी

### आत्मकथ्य

रोजमर्रा के जीवन के चुभते-गुदगुदाते अहसासों से व्यथित मन जब सहारे की तलाश करता है तो कागज-कलम बैसाखी बन जाते हैं।

**उम्र :** २६ वर्ष

**पता :** १७० कड़कड़डूमा, सरकारी आवास, दिल्ली-११००९२

**संप्रति :** स्वामी श्रद्धानंद (दिल्ली विश्वविद्यालय) में वाणिज्य प्राध्यापक के रूप में कार्यरत।

## कारा

तनिक सोचो
यह सब क्या है
यह उखड़ी हुई भाषा
यह बिखरे हुए शब्द
यह धुआं
यह नशा
यह शोर
जंगल खंगालता मोर
यह तनी हुई मुट्ठियां
ये भिंचे हुए होंठ
ये डगमगाते पांव
आंखों में उगता भविष्य का गांव
यह कौन है
भीतर झांको और देखो
विजय अभियान का
प्रथम गीत गाता
तुम्हारे विकृत रक्त से
छन-छनकर आते कसैले प्रकाश में
कारा का
कोई निकास-द्वार ढूंढ़ता

## व्यवधान

तुमने एक दर्पण गढ़ा
उसे रख दिया मेरे सामने
और मेरे प्रतिबिंब को देखकर
मुझे परिभाषित करने लगे

तुम्हारी परिभाषाओं के बोझ तले
दब-घुटकर सिकुड़ता रहा मेरा अस्तित्व
जैसे हवा निकली हुई गेंद
खेल में व्यवधान उत्पन्न हुआ
और तुम चिंतित हो उठे

किंतु तुमने हार नहीं मानी
तुम दर्पण को काट-छांटकर देते रहे
मेरे प्रतिबिंब को
उसका स्वाभाविक
नैसर्गिक आकार
तुम्हारी किताबों में
मेरा इतिहास बदल गया

किंतु
खेल का व्यवधान समाप्त नहीं हुआ
तुम दर्पण में छिपे
प्रतिबिंब से नहीं खेल सकते
और इधर,
मेरा 'मैं' तुम्हारे हाथ से सरक जाता है
निरंतर सिकुड़ते रहने के बावजूद
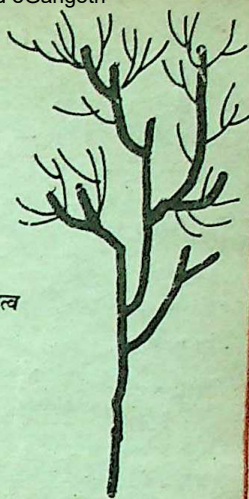
## फूल

सूरज छू देता है कली को
कली चटककर फूल बन जाती है
सूरज उसकी गोद में आ बैठता है

सूरज आग उगल देता है
फूल कुछ और सलोना हो जाता है
सूरज अपनी आग में जल उठता है

भंवरा फूल पर आ बैठता है
फूल अपने अंतर की मिठास लुटा देता है
भंवरा कुछ और काला हो जाता है

सूरज क्षितिज पर खो जाता है
भंवरा अलसाकर किसी कोने में दुबक जाता है
फूल फिर भी हंसता रहता है

—सरोज लता 'सरोज'
—३६३/१७०, बद्रीशाह लेन, एआदत गंज, लखनऊ—२२६००३

### आत्म-कथ्य

कविता मानवीय अनुभूति का वह शब्दशः शुद्ध अंश होती है... जिसमें कोई मिलावट नहीं, ऐसा मेरा मानना है। जब यह अनुभूति जन—सामान्य की अतृप्त संवेदनाओं के करीब पहुंच जाती है...तब वह ब्रह्मानंद—सहोदर कहे जानेवाले साहित्य की संज्ञा से अभिहित की जाती है।

मैंने अपनी कविताओं के माध्यम से इन्हीं जन-सामान्य की संवेदनाओं के निकट पहुंचने का प्रयास किया है।

# तनाव से मुक्ति

डॉ. सतीश मलिक

## अति अहं का शिकार

**क. ख. ग., धमतेरी, एम.पी.जी.; उम्र २५ वर्ष है। छह माह पूर्व मोहल्ले की एक औरत जिसे पति द्वारा छोड़े पांच वर्ष हो गये हैं तथा वह अपने ३ बच्चों के साथ अकेली रहती है। यद्यपि मैंने उससे बातें कभी नहीं की, लेकिन इशारों ही इशारों से मैंने अपना विवेक खोते हुए सैक्स आकर्षण के कारण दिन में ही उसके घर बात करने के अभिप्राय से गया, वहां दो मिनट बिना किसी अभिप्राय के बैठा रहा फिर वापस आ गया। इससे मेरे चरित्र पर जबरदस्त धक्का लगा। तथा मैं इतना भयभीत हूं कि मित्रगणों में भी मेरी छवि बिगड़ने लगी। अब मैं पहले से ज्यादा गुमसुम व गंभीर रहने लगा हूं। इसका कारण है मेरा यह विश्वास कि जो व्यक्ति चरित्र खो देता है, वह सब कुछ खो देता है। इससे मुझे एक भयंकर विषाद हो गया है; तथा आगे का जीवन एकदम नीरस व निरर्थक नजर आने लगा है।**

आपका ध्यान मैं तनिक सिगमेंड फ्रायड के सिद्धांत की ओर दिलाता हूं। उसने कहा था कि अहं (स्वयं) यानि गुस्सा आदि को वास्तविक दुनिया में संतुष्ट करना होता है तथा उनको दबाना भी। यह कार्य वह मन के भीतर चरम अहं की चेतना के बिना नहीं कर सकता।

इद अहं यथार्थ अति अहं×अहं÷यथार्थ

आपमें यौन इच्छा प्रबल है तो आपकी चेतना भी प्रबल है। आप दिन में गये तथा वहां दो मिनट से अधिक नहीं बैठे, परंतु अपने को दोषी व अपराधबोध भावना लेकर उत्साह विषाद व निराशा के घेरे में आ गये। अविवाहित युवक होने के नाते आपमें यौन इच्छा प्रबल है। अपने आदर्शवाद की कटार आपको कम करनी चाहिए, ताकि भले ही इस क्षेत्र में न सही किन्हीं अन्य क्षेत्र में समस्या आ सकती है जीवन में संतुलन कायम करने की कोशिश करें।

## शराब की लत

**मेरे पति शराब की आधा से लेकर एक बोतल रोज पी लेते हैं। ऐसा यह पिछले दो साल से कर रहे हैं यूं तो यह पिछले १५ साल से पी रहे हैं, परंतु अब इसके बिना रह नहीं सकते। एक बार इलाज करा कर इन्होंने छोड़ी, पर फिर शुरू कर दी है। हम अत्यधिक परेशान हैं। कृपया सलाह दें।**

मेरे विचार में आपको इतनी देर नहीं करनी चाहिए थी। शराब पीना केवल आदत नहीं रही, परंतु एक रोग बन गया है। अपने पति को आप डि-ऐडिक्शन केंद्र में भरती करवायें। इलाज के लिए वहां पर कुछ समय चाहिए। दो सप्ताह अथवा एक माह तो अवश्य चाहिए। उनके जिगर व दिमाग आदि को कुछ आराम व पौष्टिक तत्व उस समय मिलते हैं जिस समय वह उपचार की अवस्था में होंगे।

अपने पति का आत्मबल ऊंचा रखें। और बराबर डॉक्टर की निगरानी में उन्हें अस्पताल के बाद भी रखें। 'एल्कोहल एनोनिमस' विश्व में एक ऐसी संस्था है, जहां शराब छोड़े व्यक्ति दूसरों को शराब की लत छोड़ने के लिए

वातावरण तैयार करते हैं ।

## पति-व्यवहार कैसे चुकाऊं

**श्रीमती मिश्री, सानकोटड़ा (राज.) : मेरी व्यथा यह है कि एक रात मैं घर में अकेली थी तो मेरे चचेरे भाई ने मेरे साथ कुकर्म किया । मेरी मां बाहर सो रही थी तथा उसने मेरा मुंह दबा दिया, जिससे मैं हल्ला न कर सकी । फिर २० दिन बाद मेरे खास भाई ने भी । किस्मत अच्छी थी कि १ महीने बाद मेरी शादी हो गयी । मेरे पति ने सुरक्षा झिल्ली के बारे में स्पष्टीकरण मांगा तो मैंने कहा खेलकूद में स्कूल में टूट गयी होगी । वे मान गये तथा मुझे बहुत ही लाड़-प्यार से रखा । मेरी बेटी है । मैं प्रथम बच्चे की मां बनने से बहुत घबराती थी, परंतु इन्होंने विवेक व प्रेम से मुझे सहारा दिया । मुझे इतना प्रेम व आदर मिला कि मैं अब अपनी मां व भाई आदि को कोसती हूं । कुंठित रहती हूं, चिड़चिड़ापन भी आ गया है क्योंकि मैं सोचती हूं, मैंने पति को गुमराह किया, धोखा दिया । मन कहता है, माफी मांग लूं, इन्होंने मेरे घरवालों के रूखे व्यवहार को देखते हुए भी मेरे साथ अच्छा व्यवहार किया । मैं तनाव में हूं । क्या करूं ?**

आपके साथ जो दुर्व्यवहार हुआ उसके दोषी आप नहीं, क्योंकि आपका उसमें कोई हाथ न था । आपने जो उस समय किया, हरेक यही करेगा । अब कुंठित होना तथा अपराध-बोध भावना लाना सही नहीं, जबकि आपने कोई अपराध नहीं किया । पति हो सकता है, आपके पछतावे को सही दिशा में ले, परंतु अधिकतर हमने यह देखा है कि पुरुष इस बात को सही तरीके से नहीं ले पाते तथा पति-पत्नी संबंध में एक दरार पैदा हो जाती है । हमारे विचार में आप उन्हें अपनी शादी से पूर्व की घटनाओं के बारे में न बतायें । आप अपने आगे के भविष्य की सोचें व पति-सेवा कर अपनी अपराध भावना पर काबू पा लें ।

**इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आय, पद, आयु एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें ।**

**—संपादक**

## वेश्या गमन से भय

**प्रकाश शर्मा, इंदौर : २१ वर्ष का एम. ए. का छात्र हूं । कुछ माह पूर्व बंबई घूमने गया तो मित्रों के बहकावे में आ एक वेश्या से संभोग किया । यह मैंने कहीं पढ़ा कि बंबई की वेश्या से एड्स हो सकता है तथा इसके लक्षण कई साल बाद भी हो सकते हैं । अब तनाव, मृत्यु के विचार व एड्स का भय हो गया है । एड्स के परीक्षण के लिए मुझे क्या करना चाहिए ।**

एड्स की रोक-थाम के लिए पहले तो अपरिचित व्यक्ति से संभोग नहीं करना चाहिए और हमेशा कंडोम का प्रयोग ही करना चाहिए, जिससे इस रोग का वाइरस प्रवेश नहीं कर पाता । बंबई की वेश्या ही क्या, किसी भी वेश्या से या अपरिचित व्यक्ति से संबंध जोड़ने से यह रोग हो सकता है । आपको चाहिए कि अपना परीक्षण इंदौर मैडिकल कॉलेज में कराएं । वह आपका शक भी भली-भांति दूर कर सकते हैं । अखिल भारतीय चिकित्सा अनुसंधान द्वारा बड़े-बड़े शहरों में (बंबई जिसमें एक है) ऐसे केंद्र खोले गये हैं, जहां रक्त परीक्षण द्वारा जल्दी ही रोग का पता लगाया जा सकता है । यदि इंदौर के डॉक्टर ठीक समझेंगे तो वह आपका खून आदि इन केंद्रों को भेजकर जांच करा सकते हैं ।

## क्या करेंगे आप

# वोटों की बहार है

## आगामी काव्यचर्चा का विषय : छूट गये बरसात में

*बरसात में किसी को प्रेम का विरह सताता है तो कहीं नेता को कुरसी छिन जाने का।*

*संपर्क 'क्या करेंगे आप', द्वारा : संपादक, 'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स, नयी दिल्ली-१*
*अंतिम तिथि ; २० जून, १९९१*

चुनावी मौसम है बेरुखी बयार है
खून इंसा का बहाने इंसा ही तैयार है

वोटरों को भूल जाना नेताओं की सीख है
गरीबी का मजाक ही नेताओं का प्यार है

चुनाव इक कसौटी है चुनाव इम्तेहान है
बूथों की ही लूट है वोटों की बहार है

—आलोक इंद्र गुरु

परमहंसधाम डुमचांच बाजार
जिला हजारीबाग (बिहार-८२५४१८)

वोटों की बहार है
नेता भी तैयार हैं
रुपयों की बौछार है
वोटर मेरे जल्दी आवो
जिया बेकरार है
नेता की पुकार है
वोटों की बहार है

—आशारानी लखोटिया

एस-२२८, ग्रेटर कैलाश-२,
नयी दिल्ली-११००४८

[illegible]
आज रामअवतार है

घर-घर पैदल-पैदल डोले
जन-जन को जीजाजी बोले
चले तमंचे, चाकू खोले
इसीलिए अब पास हमारे
कुरसी, बंगला, कार है

आश्वासनों की झड़ी लगायी
बूथ कैप्चरिंग भी करवायी
तभी मिली हैं कुरसीमाई
संपादकजी इन बातों से
हमको कब इनकार है
वोटों की बहार है

—अशोक अंजुम

एफ-२३, नयी कॉलोनी
कासिमपुर (पा. हा.) अलीगढ़-२०२१२७

वोटों की बहार है
नेताओं की भरमार है
'लहर' बहेगी जिसके ऊपर
उसका बेड़ा पार है

—आत्म प्रकाश पंडा

बी. ए. (हिंदी प्रतिष्ठा) पोस्ट-तमाड़, रांची

घिर आये बादल चुनाव के
वादों की पड़ती फुहार है
फिर भी हवा नहीं बंध पाती
सकते में उम्मीदवार है
पता नहीं चलता चुनाव में
नुस्खा किसका असरदार है
बूथ कैप्चरिंग-घपलेबाजी
पर ही निर्भर जीत-हार है
अपनी तो हालत खराब है
प्रत्याशी सिर पर सवार है
अबकी बारी गुंडों के घर
आयी 'वोटों की बहार है...'

—यशवंत सिंह 'आलोक'

वाकोला हिंदी शाला
सांताक्रूज (पूर्व) बंबई नं. ४०००५५

तो जिन्ना ने मुसलिम लीग से अपनी १६ मई की स्वीकृति को रद्द कर देने को कहा । उन्होंने पाकिस्तान प्राप्त करने के लिए 'सीधी कार्रवाई' करने की घोषणा की ।

मुसलिम लीग के इस महत्त्वपूर्ण निर्णय के दिन जवाहर लाल की इस गलती पर विस्मित सरदार पटेल ने एक पत्र लिखा था, जिसमें इस विषय पर उनके विचार स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं ।

*पटेल का पत्र द्वारिका प्रसाद मिश्रा को; २९.७.४६ : यद्यपि नेहरू चौथी बार (अध्यक्ष) निर्वाचित हुए हैं, वह अक्सर बच्चों की-सी मासूमियत के साथ आचरण करते हैं... । लेकिन हमें अपने क्रोध को अपने ऊपर हावी नहीं होने देना चाहिए... । उनका संवाददाता सम्मेलन भावात्मक पागलपन की कार्रवाई था ।*

*लेकिन अपने मासूम अविवेक के बावजूद उनमें अपूर्व उत्साह है और स्वतंत्रता के लिए तड़प है, जिसके कारण वह अशांत और व्यग्र हो जाते हैं । विरोध किये जाने पर कभी-कभी वह बहुत ही क्रोधित हो जाते हैं क्योंकि उनमें धैर्य की कमी है ।*

*तथापि, तुम्हें इस बात का भरोसा होना चाहिए कि जब तक हममें से कोई भी उस ग्रुप में है जो कांग्रेस की नीतियों का संचालन करता है । हमारी यात्रा में कोई बाधा नहीं आएगी ।*

### जिन्ना की सीधी कार्रवाई की अपील

यद्यपि नेहरू के विचारों की जिन्ना पर भयंकर प्रतिक्रिया हुई, जवाहर लाल नेहरू ने जो विचार प्रकट किये थे उनसे सरदार पटेल भी सहमत थे । उन्होंने निजी तौर पर अपने कुछ मित्रों को इस बारे में बता भी दिया था । तथापि, यह अविवेकपूर्ण कार्रवाई बड़ी महंगी सिद्ध हुई । बाद में मौलाना आजाद ने इसका कुछ अतिरंजित वर्णन करते हुए इसे उन दुर्भाग्यजनक घटनाओं में से एक बताया जो इतिहास की दिशा बदल देती है । जिन्ना ने कौम (मुसलमानों) से १६ अगस्त को सीधी कार्रवाई दिवस मनाने की अपील करते हुए कहा था ।

*"आज हम संवैधानिक तरीकों को अलविदा कह रहे हैं । अब तक हमेशा ब्रिटेन और कांग्रेस ने अपने हाथों में एक-एक पिस्तौल ली हुई थी । एक के हाथ में अधिकारों और हथियारों की पिस्तौल थी । दूसरे के हाथ में जन आंदोलन और असहयोग की पिस्तौल थी । आज हमने भी एक पिस्तौल तैयार कर ली है और हम उसका इस्तेमाल करने की स्थिति में हैं । वाइसराय लार्ड वावेल को यह बात अच्छी नहीं लगी । वे कांग्रेस और लीग में समझौता कराने और उनका संयुक्त मंत्रिमंडल बनाने का प्रयत्न कर रहे थे । वे कांग्रेस को छह और लीग को पांच सीटें दे रहे थे । लेकिन लीग द्वारा १६ मई के प्रस्ताव को अस्वीकार करने के बाद उनके सामने कांग्रेस मंत्रिमंडल गठित करने के अलावा कोई चारा नहीं रहा ।*

### वाइसराय की भूमिका का प्रश्न

एक बार ऐसा लगा कि जवाहर लाल नेहरू

फिर कुछ समस्या पैदा करेंगे । उन्होंने वाइसराय की भूमिका को लेकर वावेल को एक पत्र लिखा । नेहरू यह स्पष्ट आश्वासन चाहते थे कि लार्ड वावेल केवल नाममात्र के अध्यक्ष के रूप में काम करेंगे । नेहरू ने वाइसराय को लिखा "अगर इस तरह का आश्वासन नहीं मिला तो कांग्रेस के लिए सहयोग करना संभव नहीं होगा ।"

लेकिन क्या जवाहर लाल कांग्रेस की तरफ से यह सब कह रहे थे ? भारत सरकार के सुधार आयुक्त बी. पी. मेनन ने वावेल को सुझाव दिया कि इस बारे में सरदार पटेल के विचार जान लिए जाएं । वाइसराय की सहमति से एच. वी. आर. आयंगर ने, जो पटेल को जानते थे, बंबई जाकर दो अगस्त की शाम को इस बारे में पटेल से बातचीत की । उन्होंने कहा कि नेहरू के रवैये से अंतरिम सरकार के निर्माण का कार्य विफल हो सकता है । अपने मेरीन ड्राइव फलैट पर अनेक चक्कर लगाने के बाद सरदार पटेल ने आयंगर से कहा "अगर कांग्रेस से अंतरिम सरकार बनाने को कहा गया तो मैं इस बात पर जोर दूंगा कि वह सरकार बनाये । उन्होंने कहा कि मैं वाइसराय की भूमिका को लेकर इस बारे में बातचीत को विफल नहीं होने दूंगा । अगर इस बारे में मेरे विचार नहीं माने गये तो मैं कार्य समिति से इस्तीफा दे दूंगा ।"

**कार्यसमिति की नियुक्तियां**

वावेल की डायरी से पता चलता है कि एक विश्वस्त सूत्र से यह सूचना मिलने के बाद ही ६ अगस्त को कांग्रेस को औपचारिक प्रस्ताव भेजा गया । आठ अगस्त को वर्धा में कार्यसमिति की बैठक हुई और उसने वाइसराय के प्रस्ताव को स्वीकार करने का फैसला किया, यद्यपि जवाहर लाल नेहरू ने जो आश्वासन मांगा था वह नहीं मिला । कांग्रेस अध्यक्ष नेहरू ने नयी कार्य समिति की नियुक्तियां सरदार पटेल की सलाह लिये बिना की थीं । आचार्य कृपालानी के स्थान पर बी. वी. केसकर और मृदुला साराभाई संयुक्त रूप से महासचिव नियुक्त किये गये । मृदुला साराभाई प्रारंभ में सरदार और मणिबेन के समीप थीं । लेकिन बाद में उन्होंने जवाहर लाल नेहरू के साथ अपनी घनिष्ठता बढ़ा ली थी ।

सरदार पटेल की पहली प्रतिक्रिया यह हुई कि वह कार्य समिति से इस्तीफा दे दें । लेकिन उन्हें मालूम था कि ऐसा करने का अर्थ है देश के हितों को नुकसान पहुंचाना । कार्यसमिति और कांग्रेस की हालत देखकर सरदार पटेल चिंतित थे । संविधान सभा में प्रवेश करने के लिए कांग्रेसजनों की लाइन लगी हुई थी । लोग अपनी खूबियों का बखान करते फिर रहे थे । वे अपनी ऐतिहासिक भूमिका की भी चर्चा करते थे । यह सब सरदार पटेल को अरुचिकर लगता था ।

*सरदार पटेल का पत्र द्वारिका प्रसाद मिश्रा को २९.७.४६ : संविधान सभा में प्रवेश करने के लिए कांग्रेसजनों में जो होड़ लगी है उससे गांधीजी को बड़ी तकलीफ पहुंची है । उन्होंने अपनी वेदना एक लेख में व्यक्त की है जिसमें जेल जानेवाले इन लोगों की तुलना डाकुओं और चोरों से की गयी है ।*

*भूमिगत रहनेवाले कांग्रेसजन, जो अपने को अगस्त क्रांति के योद्धा कहते हैं, सोचते हैं कि उन्होंने अगस्त क्रांति को जन्म दिया । एक ऐसे*

*कुत्ते की तरह, जो एक भरी हुई गाड़ी के नीचे चलता है, वे सोचते हैं कि वही गाड़ी को खींचकर आगे ले जा रहे हैं ।*

*यह स्थिति जटिलताओं और कठिनाइयों से भरी है लेकिन सच्चे सैनिकों को मजबूती के साथ आगे बढ़ना है ।*

**सरदार पटेल द्वारा शपथ ग्रहण**

कांग्रेस और उसकी कार्यसमिति में परिवर्तन आ रहा था लेकिन जब सरदार पटेल ने दृढ़ता दिखलायी तो सभी कुछ ठीक हो गया । दो सितम्बर को सरदार पटेल को शपथ दिलायी गयी । वह सवेरे कुछ अन्य साथियों के साथ हरिजन कॉलोनी गये । अपने जीवन में पहली और अंतिम बार उन्होंने गांधीजी के चरण छुए । गांधीजी की सहायिका राजकुमारी अमृतकौर ने उन्हें सूत की एक माला पहनायी । यह सूत गांधीजी ने स्वयं काता था । जवाहर लाल १२ सदस्यों की मंत्रिपरिषद के अध्यक्ष थे । इन मंत्रियों का चुनाव उन्होंने और सरदार पटेल ने मिलकर किया था ।

शपथ ग्रहण करने के तीन दिन बाद सरदार पटेल ने लार्ड और लेडी वावेल के साथ रात का भोजन किया । इसके बाद वावेल ने अपनी डायरी में लिखा "निश्चय ही कांग्रेस-नेताओं में सरदार पटेल सबसे अधिक प्रभावशाली और संतुलित हैं ।" सरदार पटेल और वाइसराय दोनों परिपक्व सेनानी थे और निरपेक्ष भाव और विनोद के साथ पिछली घटनाओं का अवलोकन कर सकते थे । वावेल ने पूछा "डी आई बी का काम आपको कैसा लग रहा है ?" डी आई बी ब्रिटिश सरकार की वह शाखा थी, जो कांग्रेस-नेताओं के कामकाज पर नजर रखती थी

## हंसिकाएं

### जून

जून के महीने पर
उनकी टिप्पणी गढ़ती है
'हर किसी को
यह जून भुगतनी ही पड़ती है ।'

### दो जून

दो जून को लोग कितना खाते हैं
कि उम्रभर सिर्फ
दो जून की ही रोटी जुटाते हैं

### वचनबद्ध

उन्होंने दो जून की रोटी देने का
वादा यों निभाया
दो जून को,
दो जून की रोटी के लिए
सभी को अपने घर पर बुलाया

### अनुकूल

पिता सेंसर बोर्ड में थे
स्नान के दृश्य अक्सर काट देते थे
प्रभाव बच्चों पर पड़ता था
बेटा भी अब नहाने से डरता था

### परिभाषा

अनुरूप आचरण
धृतराष्ट्र का अंधानुकरण

—डॉ. सरोजनी प्रीतम

और उसका विवरण तैयार करती थी । सरदार पटेल ने उत्तर दिया, "ठीक है । उन्होंने सभी पुराने गोपनीय कागजात नष्ट कर दिये हैं ।" वाइसराय ने कहा, "मैंने उनसे ऐसा करने को कहा था ।"

## सीधी कार्रवाई से सांप्रदायिक दंगा

१६ अगस्त को मुसलिम लीग ने सीधी कार्रवाई दिवस मनाया । बंगाल की राजधानी कलकत्ता में भीषण दंगे हुए— हत्याएं, बलात्कार, आगजनी और लूटमार । स्टेट्समैन समाचार पत्र ने जो अब तक जिन्ना का समर्थन करता था इस दंगे के बारे में लिखा "भयंकर हत्याकांड, भारत के इतिहास का सबसे खराब सांप्रदायिक दंगा", जो मुसलिम लीग की एक रैली के बाद शुरू हुआ था । मुसलिम लीग की सरकार ने शुरू में हत्याओं की ओर ध्यान नहीं दिया लेकिन शीघ्र ही हिंदुओं के दल दंगे में ऊपर हो गये । सरदार पटेल ने एक पत्र में राजाजी को लिखा, "मुसलिम लीग के लिए यह एक अच्छा सबक है क्योंकि मुझे पता चला है कि मरनेवालों में मुसलमानों की संख्या अधिक है ।"

कलकत्ता की घटनाओं के बाद लार्ड वावेल ने मुसलिम लीग को फिर से सरकार में लाने की अपनी कोशिशें तेज कर दीं । वावेल ने जवाहर लाल नेहरू को इस बात के लिए तैयार कर लिया कि लीग को सरकार में शामिल कर लिया जाए । जिन्ना की नाराजगी के बावजूद एक कांग्रेसी मुसलमान आसफ अली सरकार में रहे । इसके उत्तर में मुसलिम लीग ने अनुसूचित जातियों के एक हिंदू योगेंद्र नाथ मंडल को अपने कोटे में से मंत्री बनाया । सरदार पटेल और नेहरू ने मुसलिम लीग के शामिल किये जाने के बाद मंत्रि परिषद से इस्तीफा नहीं दिया । लेकिन सरदार पटेल ने यह स्पष्ट कर दिया कि अगर उनसे गृह विभाग लेकर मुसलिम लीग को दिया गया तो वह इस्तीफा दे देंगे । जवाहर लाल नेहरू ने भी इस बात का समर्थन किया । लार्ड वावेल ने सरदार पटेल से गृह विभाग लेने का कोई प्रयत्न नहीं किया । लेकिन वित्त विभाग मुसलिम लीग को सौंप दिया गया ।

## नोआखाली का दंगा

मुसलिम लीग १५ अक्तूबर को सरकार में शामिल हुई । उसी दिन से सरकार दो हिस्सों में बंट गयी । मुसलिम लीग ने जवाहर लाल नेहरू को मंत्रिपरिषद का अध्यक्ष स्वीकार नहीं किया । लीग के मंत्री लियाकत अली खां की अध्यक्षता में अपनी अनौपचारिक बैठकें पृथक करते थे । कांग्रेस और मुसलिम लीग के मंत्रियों की मिली-जुली बैठक की अध्यक्षता लार्ड वावेल करते थे ।

देश के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति बहुत ही खराब थी । अक्तूबर के शुरू में नोआखाली में लगभग तीन सौ हिंदू मारे गये । मंदिर नष्ट कर दिये गये, महिलाओं पर बलात्कार किया गया और अनेक हिंदुओं को जबरदस्ती मुसलमान बना लिया गया । गांधीजी हिंदुओं में साहस जगाने और मुसलमानों को सहिष्णुता का संदेश देने के लिए नोआखाली चले गये । पटेल चाहते थे कि मंत्रिमंडल नोआखाली की घटनाओं पर विचार करे और उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों का केंद्र अपने हाथ में ले ले । लेकिन वावेल ने

इन दोनों मांगों को नामंजूर कर दिया । हिंदू शरणार्थियों की पीड़ा और अत्याचारों की कथा को सुनकर उपद्रवियों ने बिहार में मुसलमानों का कत्लेआम शुरू किया । लगभग सात हजार लोग मारे गये । लीग ने बिहार में केंद्रीय शासन और सैनिक शासन की मांग की । पटेल, नेहरू, लियाकत अली और निस्तर ने एक साथ मिलकर बिहार का दौरा किया । दुःख की बात यह है कि बिहार के दंगों के बाद आठ नवंबर को पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गढ़मुक्तेश्वर में लगभग एक हजार मुसलमानों की हत्या कर दी गयी ।

### गृहमंत्री सरदार पटेल

अंतरिम सरकार में मंत्री बनने के बाद सरदार पटेल को औरंगजेब रोड पर एक बंगला आवास के लिए दिया गया । सरदार अक्तूबर १९४६ में शपथ ग्रहण करने के एक महीने बाद इस बंगले में पहुंचे । जवाहर लाल नेहरू ने भी उसी के समीप यार्क रोड पर एक दूसरा बंगला लिया । इससे दोनों नेता एक-दूसरे के साथ विचार-विमर्श करने हेतु आसानी से मिल सकते थे । अक्सर शाम को नेहरू पटेल के यहां पहुंच जाते थे । गृहमंत्री के रूप में सरदार पटेल के नीचे अनेक ऐसे अधिकारी थे जिन्होंने कांग्रेसी कार्यकर्ताओं को जेल भेजा था । सरदार पटेल ने पिछली बातों को भुलाकर उनके साथ काम किया । उनके लिए एक ही बात महत्त्वपूर्ण थी कि सभी सरकारी कर्मचारी मिलकर वर्तमान संकट का सामना करें । सरदार पटेल को तत्काल एक विश्वासपात्र सहयोगी की जरूरत थी, जो महत्त्वपूर्ण पत्रों का मसौदा तैयार कर सके और उनके भाषण तैयार कर सके । पहले सरदार पटेल ने स्वामी आनंद को, जो खेदा के दिनों से उनके सहयोगी थे, अपने साथ लेने का प्रयत्न किया । लेकिन स्वामी आनंद ने यह कहकर कि मैंने संन्यास ले लिया है यह जिम्मेदारी लेने से इनकार कर दिया । इसके बाद मोरारजी देसाई के सुझाव पर विद्याशंकर को लिया गया । सरदार पटेल ने लगभग ९० मिनट तक विद्याशंकर का साक्षात्कार लिया । इस काम में मणीबेन पटेल और घनश्याम दास बिरला ने भी उनकी सहायता की ।

सरदार पटेल को देशी रियासतों के विलय के कार्य में बी. पी. मेनन ने भी उल्लेखनीय सहयोग प्रदान किया । मेनन आई सी एस के सदस्य नहीं थे । वह अपनी मेहनत और प्रतिभा के बल पर क्लर्क पद से वाइसराय के सुधार आयुक्त के पद पर पहुंचे थे ।

### सरदार ग्रुप योजना के विरुद्ध थे

सोलह मई के प्रस्तावों में जिस संविधान सभा के गठन की चर्चा थी वह १९४६ के अक्तूबर तक बनायी जा चुकी थी । लेकिन उसकी बैठक दिसंबर से पहले नहीं हुई । जिन्ना ने १६ मई के प्रस्तावों को अस्वीकार करने के साथ मुसलिम लीग के सदस्यों को आदेश दिया कि वे संविधान सभा का बहिष्कार करें । ब्रिटेन की सरकार के निमंत्रण पर लार्ड वावेल और पांच भारतीय नेता— नेहरू, पटेल, जिन्ना, लियाकत और बलदेव सिंह बातचीत के लिए लंदन गये । सरदार पटेल ने जाने से इनकार कर दिया । उन्होंने नेहरू से भी न जाने को कहा लेकिन एटली की व्यक्तिगत अपील पर नेहरू लंदन गये । इसका नतीजा हुआ मुसलिम लीग की विजय ।

ब्रिटेन की सरकार ने ग्रुप योजना का समर्थन

किया । इसका सीधा-सा अर्थ यह था कि अनिच्छा के बावजूद असम को बंगाल के साथ और सिंध तथा उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत को पंजाब के साथ मिलाया जा सकता था । सरदार पटेल यह शुरू से ही जानते थे और इसीलिए वह लंदन जाने को तैयार न थे ।

सरदार पटेल ने गांधीजी से कहा, "मैं नहीं गया । उन्हें (नेहरूजी) को भी नहीं जाना चाहिए था लेकिन उन्होंने एक नहीं सुनी । अब वह हार कर लौटे हैं ।" अगर नेहरूजी लंदन न जाते तो हार को स्थगित किया जा सकता था । लेकिन नेहरूजी और पटेल के बस में भी इसे हमेशा के लिए रोकना नहीं था ।

सरदार पटेल को ब्रिटिश सरकार की घोषणा के अंतिम पैरा को देखकर काफी परेशानी हुई । इस पैरा में कहा गया था कि "संविधान सभा द्वारा तैयार किया गया कोई भी संविधान उन लोगों पर थोपा नहीं जाएगा, जो इसे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं और संविधान सभा में जिनका प्रतिनिधित्व नहीं है ।" सरदार पटेल की राय में यह एक विश्वासघात था । यह मार्च, १९४६ में लार्ड एटली के उस आश्वासन का उल्लंघन था जिसमें कहा गया था, "हम अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यकों की प्रगति पर वीटो लगाने का अधिकार नहीं दे सकते ।"

**गांधीजी एवं नेहरूजी से मतभेद**

इस काल में (जून, १९४६) गांधीजी और पटेल के बीच कुछ विषयों में गंभीर मतभेद भी हुए । विभिन्न घटनाओं और सत्ता के बारे में उनके भिन्न नजरिए के कारण उनके रिश्तों में तनाव आया । लेकिन दोनों में से कोई आपसी रिश्तों को समाप्त नहीं करना चाहता था । सरदार पटेल और नेहरू के रिश्तों में भी तनाव आ रहा था । मेरठ में कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में, जो नवंबर के अंत में हुआ, जवाहर लाल नेहरू ने घोषणा की कि कांग्रेसी मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे देंगे । यह बात न तो कांग्रेस की नीतियों के और न पटेल की इच्छा के अनुरूप थी । सरदार पटेल ने फैसला किया कि इसे सार्वजनिक तौर पर स्पष्ट किया जाना चाहिए । नेहरूजी के भाषण के कुछ दिनों बाद बंबई में चौपाटी में एक विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए सरदार पटेल ने घोषणा की "सरकार से अलग होने का कांग्रेस का कोई इरादा नहीं है ।" इसी के साथ उन्होंने यह भी कहा "अगर मेरे अन्य सभी सहयोगी अपना पद छोड़ देंगे तो भी मैं अपना काम करता रहूंगा ।"

जवाहर लाल नेहरू को सरदार पटेल के मेरठ में दिये गये भाषण के कुछ अंशों पर आपत्ति थी । पाकिस्तान के समर्थकों को चेतावनी देते हुए सरदार पटेल ने कहा था "तुम जो कुछ भी करो शांति और प्रेम के तरीके से करो । तुम्हें सफलता मिल सकती है । लेकिन ताकत का जवाब ताकत से दिया जाएगा ।" उनके इस कथन का लोगों ने तालियां बजाकर स्वागत किया । जब सरदार पटेल ने यह कहा नोआखाली और बिहार की घटनाओं को एक महीना भी नहीं हुआ था ।

**गांधीजी से शिकायत**

जब जवाहर लाल नेहरू और आचार्य कृपालानी गांधीजी से मिलने नोआखाली गये तो गांधीजी से इस बात की शिकायत की गयी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि यह

शिकायत जवाहर ला[illegible]ने की थी अथवा किसी अन्य व्यक्ति ने । गांधीजी ने इस बारे में सरदार पटेल को एक पत्र लिखा । यह पत्र उस समय लिखा गया जब जवाहर लाल नोआखाली में गांधीजी के साथ थे । सरदार पटेल को जब यह पत्र मिला वह बीमार थे । मणिबेन ने लिखा है "पत्र को पढ़ने के बाद पिताजी सारे दिन दुःखी रहे ।

*गांधीजी का पटेल को पत्र, ३०.१२.४६ प्रातः पांच बजकर पंद्रह मिनट : मैंने तुम्हारे खिलाफ अनेक शिकायतें सुनी हैं । तुम्हारे भाषण भड़कानेवाले होते हैं । तुम लोगों को खुश करने के लिए अपनी बात कहते हो । तुम हिंसा और अहिंसा के बीच कोई भेद नहीं करते, तुम लोगों को ताकत का जवाब ताकत से देना सिखा रहे हो यह सब अगर सच है तो बहुत ही नुकसान-देह है ।*

*वे कहते हैं कि तुम कुरसी से चिपके रहने की बात करते हो । अगर सच है तो यह बात भी परेशान करनेवाली है । मैंने जो कुछ सुना उसे तुम तक पहुंचा दिया है । अगर हम अपना सीधा और तंग रास्ता छोड़ देंगे तो हम नष्ट हो जाएंगे । कांग्रेस कार्य समिति उस तरह काम नहीं कर रही है जैसे उसे करना चाहिए । भ्रष्टाचार का उन्मूलन करो, तुम जानते हो कि ऐसा किस तरह किया जा सकता है ।*

*तुम्हारे आने की कोई आवश्यकता नहीं है । तुम्हारा स्वास्थ्य ऐसा नहीं है कि तुम काफी यात्राएं करो ।*

सरदार पटेल ने कुछ दिन बाद इसका उत्तर दिया ।

*पटेल का पत्र गांधीजी को, ७.१.४७ : यह आरोप कि मैं [illegible] चाहता हूं कपोल-कल्पित है । जवाहर लाल आये दिन इस्तीफा देने की झूठी धमकी देते हैं । मैंने उस पर आपत्ति की । झूठी धमकियां देने से वाइसराय के सामने केवल हमारी स्थिति खराब हुई है ।*

*मुझे यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि मैं लोगों को खुश करने के लिए भाषण देता हूं । वास्तव में मेरी आदत कटु सत्य कहने की है । नौसैनिक विद्रोह के समय मैंने अपनी साफगोई से अनेक लोगों को नाराज कर दिया था ।*

*ताकत का जवाब ताकत से देने के बारे में मेरी बात को तोड़-मरोड़कर कहा गया है । यह वाक्य एक बड़े पैरे का हिस्सा है और इसे संदर्भ से हटाकर पेश किया गया है । ये शिकायतें मृदुला ने की होंगी, क्योंकि वह मेरे काम में मीन मेख निकाला करती है । मैं उसकी बातों से तंग आ गया हूं । वह इस बात को सहन नहीं कर सकतीं कि कोई आदमी जवाहर लाल की बातों से सहमत न हो ।*

*कांग्रेस कार्य समिति में मतभेद कोई नयी बात नहीं है । अगर मेरे किसी सहयोगी ने यह शिकायत की है तो मैं उसका नाम जानना चाहूंगा । इस विषय में किसी ने मुझ से एक भी शब्द नहीं कहा है ।*

---

***[पटेल ए लाइफ नामक पुस्तक से लिये गये कुछ अंश, लेखक राजमोहन गांधी, प्रकाशक नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस, मूल्य २०० रुपये, पृष्ठ संख्या-५३३]***

---

**(प्रस्तुति : नवीन पंत)**

# और अंत में



बच जाएं भले धूप से सोखे कौन पसीना

छाया : सी. पी. टंडन

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिंदुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित

१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

कादम्बिनी
भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका
बिहार
कब तक ढोएगा
ये कलंक !
उमंग की तरंग में
प्यार के रंग में
७ रुपये
साइबेरिया में कृष्ण

# भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार, 1990

## प्रविष्टियां आमंत्रित हैं

जन संचार के विभिन्न माध्यम मुख्यतः सूचना और प्रसारण मंत्रालय से सम्बद्ध विषयों जैसे कि प्रकाशन, दूरदर्शन, प्रसारण, विज्ञापन, पत्रकारिता, फिल्म आदि पर हिन्दी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहन देने के प्रयोजन से प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार योजना के अन्तर्गत वर्ष 1990 के पुरस्कारों के लिए प्रविष्टियां आमंत्रित करता है। इस योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :—

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम पुरस्कार | : | 25,000/- रुपये |
| द्वितीय पुरस्कार | : | 15,000/- रुपये |
| तृतीय पुरस्कार | : | 10,000/- रुपये |
| मान पुरस्कार | : | 5,000/- रुपये |

वर्ष 1990 के पुरस्कार के लिए 1 जनवरी, 1990 से 31 दिसम्बर, 1990 तक की अवधि में प्रायोजित पुस्तकें अथवा लिखी पाण्डुलिपियों को विचारार्थ स्वीकार किया जाएगा।

### प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि

वर्ष 1990 की भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार, योजना में भाग लेने के लिए अपनी प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि 15 जून, 1991 है। प्रविष्टियां भेजने से पहले पुरस्कार संबंधी नियम, प्रविष्टि प्रपत्र तथा पूर्ण विवरण मंगाने के लिए सहायक निदेशक (राजभाषा), प्रकाशन विभाग, पटियाला हाउस, नई दिल्ली- 110 001 को लिखें अथवा सम्पर्क करें। अपने आवेदन पत्र के साथ अपना पता लिखा 10 × 22 सें.मी. आकार का बिना टिकट वाला एक सादा लिफाफा अवश्य भेजें।

davp 91/43

अपने

# शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी । उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए । इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा ।

● ज्ञानेन्दु

१. **हृदयग्राही**— क. कोमल, ख. प्रसन्न, ग. मनमोहक, घ. स्नेहपूर्ण ।

२. **कापुरुष**— क. बेचैन, ख. भयभीत, ग. उदासीन, घ. कायर ।

३. **लोकबाह्य**—क. अप्रचलित, ख. समाज से बाहर, ग. निंदनीय, घ. अद्वितीय ।

४. **हृष्टरोम** —क. स्वस्थ, ख. उत्तेजक, ग. रोमांचित, घ. दयालु ।

५. **व्यापद**—क. संकट, ख. फैला हुआ, ग. कई पैरों वाला, घ. चतुर ।

६. **संश्लिष्ट**—क. भाग्यशाली, ख. जुड़ा हुआ, ग. प्रशंसनीय, घ. सुस्त ।

७. **ग्रह्य**—क. ग्रहण करने योग्य, ख. मोहक, ग. घरेलू, घ. स्वीकृत ।

८. **कर्मापेक्षी**—क. दूसरों पर निर्भर, ख. क्रियाशील, ग. फल की आशा करनेवाला, घ. किसी काम को करनेवाला ।

९. **मंजुनाद**—क. शंखध्वनि, ख. कोमल स्वर, ग. मधुर आवाज, घ. संगीत ।

१०. **कुटिलचित्त**—क. टेढ़ा, ख. कपटी, ग. कूटनीतिज्ञ, घ. शत्रुतापूर्ण ।

११. **कार्यवशात**—क. मजबूरन, ख. अनिवार्यतः, ग. किसी काम से, घ. वश में करने का कार्य ।

१२. **हृतसर्वस्व** —क. जिससे सब घृणा करते हों, ख. सब कुछ त्यागनेवाला, ग. सबसे पिटा हुआ, घ. जिसका सब कुछ छिन गया हो ।

१३. **स्वोपार्जित**—क. अपने में संतुष्ट, ख. अपने परिश्रम से बना, ग. खुद कमाया हुआ, घ. अपनी पूजा करानेवाला ।

१४. **ह्रास**—क. उलटा काम, ख. कमी, ग. बाधा, घ. हंसी ।

## उत्तर

१. ग. मनमोहक । प्रकृति का यह अनुपम दृश्य **हृदयग्राही** है । (हृदय+ग्राही)

२. घ. कायर, डरपोक । **कापुरुष** होकर जीना मृत्यु के समान है । (का=कुत्सित)

३. ख. समाज से बाहर, बहिष्कृत । समाज के किसी भी अंग को **लोकबाह्य** समझना भारी भूल है । (लोक+बाह्य)

४. ग. रोमांचित (हर्ष से) । अपनी सफलता पर वह **हृष्टरोम** हो गया है । (हृष्ट+रोम)

५. क. संकट, दुर्भाग्य । असावधानी द्वारा उसने स्वयं **व्यापद** को आमंत्रित किया है । (वि+आ+पद्)

६. ख. जुड़ा हुआ, संयुक्त । अधिकारों के साथ कर्त्तव्य भी **संश्लिष्ट** हैं । (मूल-सम्+श्लिष) ।

७. ग. घरेलू, पालतू । **ग्रह्य** जीवों की

भली-भांति देखभाल करनी चाहिए ।

८. घ. किसी काम को करनेवाला । इस महत्कार्य में उसका **कर्मापेक्षी** होना अनिवार्य है । (कर्म+अपेक्षी)

९. ग. मधुर आवाज । बालकों की प्रार्थना का **मंजुनाद** गूंज रहा है । (मंजु+नाद)

१०. ख. कपटी, बुरे मन का । उस **कुटिलचित्त** से सावधान रहना चाहिए । (कुटिल+चित्त)

११. ग. किसी काम से । मैं **कार्यवशात** ही यहां आया हूं । (कार्य+वशात्)

१२. घ. जिसका सब कुछ छिन गया हो । उस **हृतसर्वस्व** को दया नहीं, सहायता की अपेक्षा है । (हृत+सर्वस्व)

१३. ग. खुद कमाया हुआ । उसकी संपत्ति **स्वोपार्जित** है । (स्व+उपार्जित)

१४. ख. कमी, घटी, पतन । किसी देश के **ह्रास** का कारण देशवासियों की दुर्बलता ही होती है । (मूल=ह्रस्)

## पारिभाषिक शब्द

Preservation = परिरक्षण/सरक्षण
Archaeology = पुरातत्व
Architecture = वास्तुकला/स्थापत्यकला
Architect = वास्तुक
Directive = निदेश/निदेशात्मक
Finding = निष्कर्ष
Excavation = उत्खनन/खुदाई

## समस्या पूर्ति—१४२

### न्यारा जीवन

### प्रथम पुरस्कार

*छिप कर आये भवन से, प्रातः दोनों बाल*
*बैठे निर्भय हाथ में, लिये ईख की डाल*
*लिये ईख की डाल ध्यान है मीठे रस पर*
*भला दूर एकांत खेत में किसका है डर*
*चिंता, भय से विलग, तृप्त उर, शुचि अंतर्मन*
*बच्चों का है जग में, सबसे न्यारा जीवन*

—राजीव कुमार झा
ग्राम, पत्रालय—झखड़ा
जिला—समस्तीपुर, (बिहार)

### द्वितीय पुरस्कार

*चुन्नू-मुन्नू चूस रहे हैं, गन्ना लेकर हाथ*
*विस्तृत नीलांबर तले, मिला अनोखा साथ*
*मिला अनोखा साथ, मुक्त दुनियादारी से*
*दोनों हैं संतुष्ट, सुखी अपनी यारी से*
*छल-प्रपंच से दूर, निष्कपट निश्छल तन-मन*
*यह बचपन है सुंदर, सबसे न्यारा जीवन*

—डॉ. आर. एस. पांडेय
नैटमो, गवर्नमेंट ऑव इंडिया
५०-ए, गरियाहाट रोड,
कलकत्ता—७०००१९
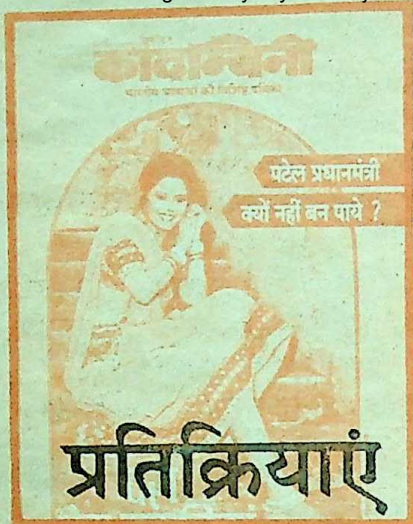
## पुरस्कृत पत्र

देश को आज आतंकवाद रूपी राक्षस ने चारों ओर से जकड़ रखा है । जम्मू-कश्मीर में, जम्मू एंड कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जे.के.एल.एफ.), असम में युनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑव असम (उल्फा) तथा पंजाब में उग्रवादी, आतंकवादियों के प्रमुख संगठन हैं ।

आतंकवाद रूपी कैंसर को समाप्त करने के लिए सरकार ने अनेक कदम उठाये हैं । पंजाब में 'आपरेशन ब्लू स्टार', असम में 'आपरेशन बजरंग' तथा कश्मीर में बड़े पैमाने पर अर्ध-सैनिक बलों द्वारा बल प्रयोग इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं । किंतु समस्या में कोई सुधार नहीं आया है । आज भी कश्मीर सुरक्षित नहीं है, पंजाब जल रहा है एवं असम सुलग रहा है ।

आतंकवाद को समाप्त करने के लिए कठोर कदम उठाने एवं बंदूक का मुकाबला बंदूक से करने के सिद्धांत के साथ ही साथ प्रयास इस बात के भी करने चाहिए कि सरकार आतंकवादियों की भावनाओं को बदलने में कामयाब हो । आतंकवाद को जड़ से समाप्त करने के लिए सरकार को आतंकवादियों के मन एवं हृदय परिवर्तन करने पर जोर देना चाहिए । प्रयास इस बात के लिए किये जाने चाहिए कि ये लोग भी राष्ट्र की मुख्य धारा में शामिल हों । आतंकवाद की समाप्ति पर ही हम एक सुखी, संपंन्न एवं खुशहाल भारत की कल्पना कर सकते हैं ।

**— जी. के. दीक्षित**
**अनुभाग अधिकारी (प.रे.)**
**मकान नं. १७८, गांधीनगर, रतलाम (म.प्र.)**
**पिन ४५७००१**

## प्रोत्साहन पुरस्कार

मैंने मई अंक का शीर्षक 'रिश्तों का रेगिस्तान' पढ़ा । सचमुच यह दुनिया रिश्तों का रेगिस्तान-सा है । जग-जंगम में पिता-माता, भाई-भतीजे, गुरु-शिष्य, पुत्र-पुत्रियां-जैसे अनेक संबंध हैं जो पवित्रतम हैं । परंतु आज की दुनिया में रिश्ते तय इसलिए किये जाते हैं जिससे उनके स्वार्थ की पूर्ति हो सके । यथार्थ मुल्य को आंकने का समय किसे रहता है । रिश्तों की असलियत उन्हें तब जान पड़ती है जब उनकी जिंदगी की शाम गहराने लगती है । मन रूपी विहग ज्ञानरूपी फलदायी वृक्ष पर आरूढ़ होना तब चाहता है जब संपूर्ण जीवन के भौतिकवादी चकाचौंध के जंगलों में भटककर आशाहीन और सुस्त हो जाता है ।

रिश्तों का आर्थिकीकरण हो गया है । कुरसियों के दंभ ने रिश्तों को नकार दिया है । किसी व्यक्ति के लिए कोई माननीय इसलिए होता है क्योंकि वह कलक्टर है, एस.पी., डी-एस.पी.... है । रिश्तों के इस रेगिस्तान में रिश्तों की असलियत और महत्त्व को खोजना मृगमरीचिका-जैसा लगता है ।

फिर भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि रेतों के रेगिस्तान ने हमें आत्मबल दिया है । रेगिस्तान ने उन तमाम यात्रियों को धैर्य दिया है जो मीलों-मील रेतों में चलकर भी अपने निर्धारित स्थान को प्राप्त करते हैं । उसी प्रकार रिश्तों के रेगिस्तान में भटककर हमें धैर्य खोना नहीं चाहिए । अभी भी अधिक देर नहीं हुई है दृष्टिकोण बदलकर अगर समर्पण की भावना से इस क्षेत्र में कार्य किया जाए तो संबंधों के प्रति उदासीनता हाथ नहीं लगेगी ऐसी मेरी धारणा है ।

**— कल्याण नारायण पाठक**
**वीर वीरसा संस्कृत उच्च विद्यालय, पूर्वी सिंहभूम, (बिहार)**

## नाच रहा राजतंत्र

'मूक है जनता, नाच रहा राजतंत्र' आलेख पढ़ा, संदर्भतः पाकिस्तानी लोकतंत्र के भविष्य के साथ भारतीय जनता तथा लोकतंत्र के भावी रूप तथा जन-मानसिकता को जोड़ना युक्तिसंगत नहीं, क्योंकि विचार व परिवेश की दृष्टि से दोनों की स्थिति सर्वथा भिन्न है । इतिहास साक्षी रहा है कि भारत में जब भी लोकतंत्रीय आत्मा आहत हुई जनता ने संगठित होकर उसकी गौरवमयी गणितीय अनिश्चितताओं सहित अन्य समयगत प्रतिकूलताओं को आत्मसात करते हुए चमत्कारिक प्रतिबद्धता से विश्व को चकित कर दिया, वहीं पाकिस्तान में जन्म से लेकर अब तक लोकतंत्र मात्र सपना ही रहा । विडंबना यह है कि विभाजन की पीड़ा उसके लिए सबक नहीं बन सकी, फलस्वरूप पाकिस्तानी समाज, तंत्र, नेतृत्व पर संकीर्णता की काली छाया निरंतर घनी होती गयी । पिछला अनुभव बताता है कि कतिपय कारणों से पाकिस्तानी भूमि में राष्ट्रवाद की जड़ें पनप नहीं सकीं । वर्तमान सिंध-समस्या के उग्रवादी आयामों तथा घटित घटनाओं के लिए भारत पर दोषारोपण पाकिस्तानी हताशा तथा समस्या से मुख मोड़ने का प्रयत्न है । मूल रूप में सिंधियों व तथाकथित मुहाजिरों के बीच संघर्ष कट्टर धर्मांधता एवं बढ़ते अधिनायकवाद के प्रति खुला विद्रोह है ।

**— वरुण कुमार मिश्र,** गोपालगंज

## भविष्यवाणियों के कॉलम बंद हों

'कादम्बिनी' के जून अंक में आपने 'ज्योतिषियों' के विरुद्ध जो अभियान छेड़ा है, उसके लिए बहुत-बहुत बधाई । मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूं कि सभी पत्रिकाओं और समाचार-पत्रों आदि में भविष्यवाणियों के कॉलम बंद कर दिये जाने चाहिए ।

इस अंक में प्रकाशित दस प्रेम कहानियां भी मैं पढ़ गया हूं । प्रेम का जो एक व्यापक अर्थ आपने इस अंक में लिया है, वह एक अच्छी बात है— अन्यथा मात्र कैशोरिक भावुकता को

## ज्ञान-गंगा

***अपकारमसंप्राप्य तुष्येत् साधुरसाधुतः ।***
***नैष लाभो भुजङ्गेन वेष्टितो यन्त दंश्यते ।।***

(सुभाषितावलिः ३७२)

असाधु व्यक्ति हमारा कोई अपकार नहीं कर रहा है इतने ही से साधु पुरुष को संतुष्ट होना चाहिए । सर्प मनुष्य को लपेटकर ही रह जाए और काटे नहीं तो क्या यह लाभ नहीं है ?

***यात्रेति जीवनं प्राहुर्यात्री वर्त्ते न संशयः ।***
***प्रीत्यैव व्यवहर्त्तव्यं यात्रिभिः, किं विरोधतः ।।***

(रश्मि-माला २९/१)

जीवन को एक यात्रा कहा जाता है । निस्संदेह मैं उस यात्रा का एक यात्री हूं । यात्रियों को परस्पर प्रीति का ही व्यवहार करना चाहिए । विरोध से क्या लाभ ?

***मा त्वा परिपन्थिनो विदन् ।***

(यजुर्वेद ४/३४)

ऐसा यत्न करो कि तुम्हारी उन्नति के बाधक शत्रु तुम पर विजय प्राप्त न कर सकें ।

***यो जागार तमु सामानि यन्ति ।***

(ऋग्वेद ५/४४/१४)

जो जागरूक रहता है, उसी को साम (स्तुति, प्रशंसा एवं यश) प्राप्त होते हैं ।

***अपो न नावा दुरिता तरेम ।***

(ऋग्वेद ६/६८/८)

जिस प्रकार नौका जल को तैर जाती है, उसी प्रकार हम दुःखों एवं पापों को तैर जाएं ।

**(प्रस्तुति : महर्षि कुमार पाण्डेय)**

प्रेम समझ लिया जाता है और पत्रिकाओं में प्रेम-कहानियों के अंतर्गत प्रायः एक-जैसी कहानियां छाप दी जाती हैं । प्रेम में अलग-अलग रूपों और उसके माध्यम से जीवन की अनेकानेक स्थितियों को उभारने में सफल कहानियों को एक स्थान पर उपलब्ध कराने के लिए भी आप बधाई के पात्र हैं ।

इधर हिंदी पत्रिकाएं या तो बंद होती जा रही हैं या उनका राजनीति पर आश्रय बढ़ता जा रहा है— ऐसे में 'कादम्बिनी' अपनी संपादकीय नीति को बिना बदले लगातार व पठनीय प्रासंगिक और प्रभावी सामग्री उपलब्ध करा रही है-! **—डॉ. वीरेन्द्र सक्सेना**, नयी दिल्ली

### पुस्तकें एक प्रकाशक की उपेक्षा

मई ९१ अंक में प्रकाशित लेख 'कागज की महंगाई और प्रकाशन उद्योग' में गुप्त जी ने जिन समस्याओं का जिक्र किया है, उसके बाद समस्या हम छात्रों के समक्ष भयावह रूप में है। यह समस्या है, आवश्यक पुस्तकें प्राप्त करने की । उत्तम ग्रंथ सब पुस्तक-विक्रय केंद्रों पर मिलते नहीं हैं, प्रकाशन संस्था से सीधे मंगाने पर अवर्णनीय परेशानी झेलनी पड़ती है । मैं खुद इसका भुक्तभोगी हूं मैंने विश्वविख्यात सांस्कृतिक संस्था 'नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी' से हिंदी शब्दानुशासन, हिंदी विश्वकोष आदि महत्त्वपूर्ण ग्रंथ उपलब्ध कराने का लिखित आग्रह किया था । १४-१०-९० को । 'सभा के अनुसार' पुस्तकें दि. २६/११/९० को रेलवे रसीद संख्या ९०४८२ द्वारा काशी स्टेशन से जगदीशपुर स्टेशन वाया

मधुपुर जं. पूर्व रेलवे को भेज दी गयी है। बिल्टी डाक द्वारा मुझे भेज दी गयी। बिल्टी तो मुझे दि. २०/१२/९० को ही मिल गयी मगर पुस्तकों का बंडल अभी तक अप्राप्य है।

'सभा' के विक्रय व्यवस्थापक महोदय से संपर्क करने पर (रे. स्टे. पर) लिखित उत्तर मिला "रेलवे से क्लेम कर दें क्योंकि बिल्टी आपके पास है।" अब सोचिए मैं एक साधारण छात्र, सुविधाविहीन देहात में बसा, इस समस्या से कैसे उबरूं ?

— **विनोद कुमार**
**जि.— गिरिडीह**

**(आप प्रकाशक को नोटिस भिजवाइए। उत्तर न मिले तो हमें लिखिए)**

### अपना हाथ जगन्नाथ

'कादम्बिनी' का मई अंक पढ़ा, 'आस्था के आयाम' में 'अपना हाथ जगन्नाथ' के कहावत को चरितार्थ करनेवाले प्राध्यापक श्री एन. श्रीनिवास रेड्डी के बारे में पढ़कर, बहुत प्रेरणा मिली। समाज के उत्थान के लिए आज ऐसे ही मार्गदर्शकों की आवश्यकता है। काश ! शिक्षा को व्यवसाय बनानेवाले तथा छात्रों के हित से ज्यादा अपनी हित की चिंता करनेवाले श्री रेड्डी से जरा भी प्रेरणा ले पाते। बच्चों के चरित्र निर्माण में शिक्षकों का बहुत बड़ा योगदान होता है। यदि पांच-फी सदी शिक्षक भी रेड्डीजी की तरह हो जाएं, तो भारत का भविष्य उज्ज्वल हो जाएगा।

— **सुधीर सरित 'सुमन'**
**जिला भोजपुर**

## अखिल भारतीय हिंदी कविता प्रतियोगिता-९१

**नयी दिल्ली : पोइट्री सोसाइटी (इंडिया द्वारा) अखिल भारतीय हिंदी कविता प्रतियोगिता-९१ का आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता में प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि ३० सितम्बर, १९९१ है। प्रविष्टियां भेजने का पता है—प्रोइट्री सोसाइटी (इंडिया) एल-६७-ए, मालवीय नगर नयी दिल्ली-११००१७।**

**पुरस्कार राशि इस प्रकार है :-**
**प्रथम पुरस्कार-५०००/रुपये,**
**द्वितीय पुरस्कार-२०००/रुपये,**
**तृतीय पुरस्कार-१०००/रुपये,**

### अद्भुत 'कालचिंतन' 'कादम्बिनी' मई ९१ अंक

*सुना था नहीं बांधता सीमा में, 'काल या मनुज चिंतन'*
*आपने बांध दिया परिभाषा में, रोचक प्रेरक 'काल चिंतन'—*
*इसीलिए हम कायल हैं, आपके कुशल संपादन के—*
*अतः अब रह नहीं सकते : बगैर 'काल-चिंतन' के।*

काल चिंतन के नूतन परिवर्तित कलेवर पर मेरी उपर्युक्त मौलिक तुकबंदी पसंद आएगी ऐसा विश्वास है।

— **भारत भूषण पुरोहित** आलोट (म.प्र.)

कालचिंतन में अबकी बार कवितांश अच्छे लगे, बधाई।

कभी-कभी यह सब इसलिए लिखता हूं कि पुराने मित्र-लेखक हैं। हमारी पीढ़ी की वह मुहब्बत, अंतरंगता, अब नयों में कहां मिलती है ?

— **डॉ. देवव्रत जोशी** रतलाम (म.प्र.)
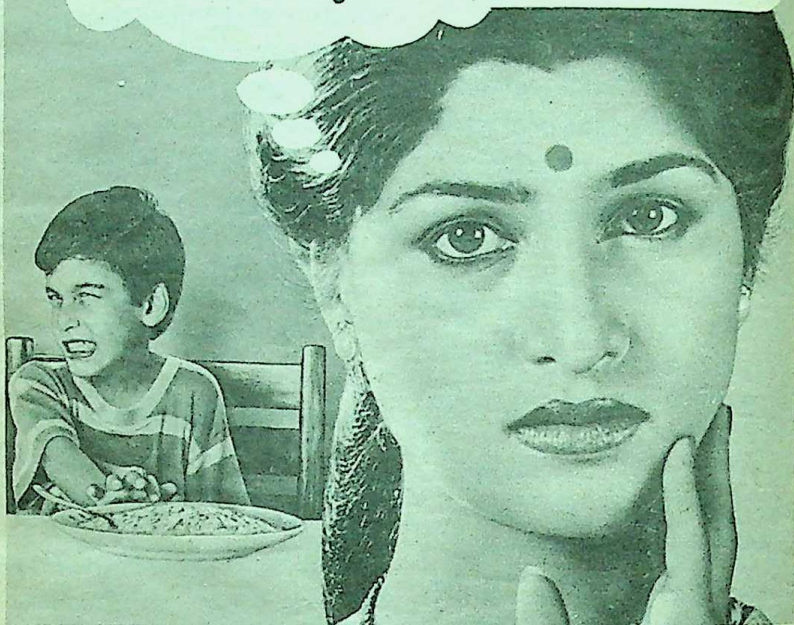
# आस्था के आयाम

## अग्नि संस्कार

महामना मदन मोहन मालवीयजी द्वारा स्थापित सेंट्रल कॉलेज, बनारस में प्रो. रिचड्र्सन नामक अंगरेज प्रधानाचार्य थे। वाराणसी में आने से पूर्व वे अपने देश के ब्रिस्टल कॉलेज में रसायन शास्त्र के अध्यापक थे। वाराणसी में रहते हुए साधु और सात्विक मनोवृत्ति के अंगरेज विद्वान पर भारतीय चिंतन और दर्शन का घनिष्ठ प्रभाव पड़ा। अपनी मृत्यु (जून, १९१२) से पूर्व उन्होंने अपनी अंतिम इच्छा व्यक्त की कि उनके पार्थिव शरीर का अग्नि संस्कार राजघाट पुल के नीचे वैदिक विधि से किया जाए, किंतु जब अग्नि संस्कार की घड़ी पहुंची तो वाराणसी के तत्कालीन गण्य-मान्य विद्वज्जन कुछ चिंतित हो उठे। प्रो. रिचड्र्सन के पार्थिव शरीर का अग्नि संस्कार करने को कोई भी द्विज सहमत नहीं था। इस अवसर पर मनीषी डॉ. भगवान दास ने भगवान राम के हाथों गृधराज जटायु के दाह संस्कार का उदाहरण देते हुए असहमति का प्रत्युत्तर निम्न पद्य में इस प्रकार दिया—

**गृध्रं ददाह भगवान् रघुवंशवीरः**
**कर्मोर्ध्वदैहिकमधास्य चकार मंत्रैः।**
**जानन् कृतं सकृतं च परावरज्ञः**
**कस्माद् भवेम मनुजे ऽपि वयं कृतघ्नः॥**

अर्थात् तिर्यग् योनि को प्राप्त गृध्रराज जटायु का अग्नि-संस्कार उसके सभी कर्मों-पुण्यकर्मों और गुणों को जाननेवाले भगवान राम ने स्वयं वेद मंत्रों से किया। "यह अंगरेज तो मनुष्य है। इसका अग्नि-संस्कार न करके हम अपनी कृतघ्नता का ही परिचय देंगे।

डॉ. भगवानदास की युक्ति के सम्मुख सभी को झुकना पड़ा। प्रो. रिचडड्सन के पार्थिव शरीर का यथास्थान वैदिक विधि से अग्नि संस्कार संपन्न किया गया।

**— भास्कर भट्ट**

## प्रोत्साहन

इंगलैंड की प्रसिद्ध संस्था रॉयल एकडेमी की चित्र सजानेवाली समिति की बैठक हो रही थी। एकडेमी हॉल में सुसज्जित करने के लिए देश-विदेश के चित्रकारों ने अपने श्रेष्ठतम चित्र भेजे थे। जितने चित्र सजाये जा सकते थे वे सजा दिये गये थे, अब एक भी चित्र लगाने को स्थान नहीं था। किंतु एक नवीन चित्रकार का चित्र सामने था और सुंदर था। एक सदस्य ने कहा, "चित्र तो उत्तम है, किंतु इसे अब कहां लगाया जाए ?"

इंगलैंड के विख्यात चित्रकार टर्नर भी उस समिति के सदस्य थे, वे बोले, "माननीय सदस्यों को चित्र पसंद आएगा तो उसे लगाने के स्थान का अभाव नहीं होगा ?"

"आप कहां लगाएंगे उसे ?" सदस्यों का प्रश्न था।

टर्नर उठे, उन्होंने स्वयं अपना एक चित्र उतारा और उस चित्र को लगा दिया। टर्नर का चित्र उस चित्र से बहुत उत्तम था। किंतु उन्होंने पूछा, "नये कलाकार को उत्साहित करना ही चाहिए।" **— विजय प्रकाश त्रिपाठी**

वर्ष ३१, अंक ९, जुलाई, १९९१

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

## निबंध एवं लेख



## स्थायी स्तंभ



मुखपृष्ठ पारदर्शी : प्रमोद [illegible]

**कार्यकारी अध्यक्ष**

**नरेश मोहन**

**संपादक**

**राजेन्द्र अवस्थी**

## कहानियां एवं हास्य-व्यंग्य



## कविताएं



## सार-संक्षेप



## संपादकीय परिवार

सह-संपादक : **दुर्गाप्रसाद शुक्ल**, वरिष्ठ उप-संपादक : **प्रभा भारद्वाज, भगवती प्रसाद डोभाल**, उप-संपादक : **डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह**, प्रूफ रीडर : **प्रदीप कुमार**, कला विभाग-प्रमुख : **सुकुमार चटर्जी**, चित्रकार : **पार्थ सेनगुप्त**, **मूल्य : वार्षिक : ७५ रुपये; द्विवार्षिक : १४५ रुपये; विदेशों में; वायुसेवा से २९० रुपये वार्षिक समुद्री जहाज से : १३५ रुपये वार्षिक** पता : **संपादक 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१**

# काल-चिंतन

- भय, आक्रोश और रक्त क्रांति से ग्रसित व्यापकता को देखते हुए, सहसा प्रश्न उभरता है : व्यक्ति कहां है ? उसके सम्मान की सीमाएं क्या हैं ? सम्मान में अर्थवत्ता शेष है अथवा मात्र व्यतीत के जर्जर उपदेशों को खंडहरों की तरह ढोया जा रहा है ?

■

— समकालीन इतिवृत्त में प्रश्न दो अंशों में विभाज्य है : एक व्यक्ति और व्यक्ति के बीच सामंजस्य और उससे उभरता विश्वास तथा सम्मान-सीमाएं ।

— दूसरा : एक व्यक्ति से परे समूचे समाज और वर्ग का आक्रोश, आक्रोश से अपनी विवेक शून्यता और सम्मान की सीमाएं ।

■

— प्रथम स्थिति का आकलन : व्यक्ति एक इकाई है ।

— प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में संपूर्ण है ।

— व्यक्ति और व्यक्ति के बीच की मानसिक-संधि में भेद हो सकता है; कोई कम हो, कोई अधिक ।

— मूलतः व्यक्ति बौद्धिक चेतना का अपार महासिंधु है ।

— सिंधुओं की सीमाएं हैं : एक अत्यंत विस्तीर्ण तो दूसरा अपेक्षाकृत संकुल ।

— सिंधु-सीमाएं व्यक्ति की चेतना के साथ सीधे मेल खाती हैं ।

— इसलिए व्यक्ति और व्यक्ति के बीच अंतर नहीं है । अंतर जो दृष्टिगोचर होता है, उसका संबंध किसी एक के अधिक शोधपरक होने का प्रतिफल

है ।

— दूसरे में क्षमताएं कहीं हैं, उसने नकारात्मकता को स्वीकारा और क्षमता को बल नहीं दिया ।
— क्षमता को बल देना और शक्ति-संपन्न बनाने का निश्चित क्षण नहीं है ।
— क्षमता-प्रदीप्त के लिए आयु भी प्रतिरोधक नहीं है ।
— क्षमता-प्रदीप्त के लिए योग, संयोग और परिस्थितियां भी आवश्यक नहीं हैं ।
— ऐसे व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने सीमित साधनों में रहकर सड़क के किनारे लगे प्रकाश-किरण को माध्यम बनाकर अपने श्रम से उन्हें पीछे छोड़ दिया जो साधन संपन्न थे ।
— क्षमता और चेतना दोनों मिलकर संस्कार को जन्म देती हैं ।
— संस्कारपूर्ण व्यक्ति और संस्कारहीन व्यक्ति सहज ही पहचाना जाता है ।
— संस्कार एकाग्रही नहीं होता ।
— संस्कार में पूर्णता व्याप्त है, वह न तो खंडित है और खंडित कर देखा जा सकता ।
— परिणाम स्पष्ट है : जिस व्यक्ति में जितने गहरे और सशक्त संस्कार होंगे, उसकी बौद्धिक क्षमता और प्रकाश चेतना उतनी ही विकसित होगी ।
— विकास भी खंडित नहीं है ।
— संस्कार, क्षमता, चेतना और विकास जब खंडित नहीं हैं तो इनसे समादृत व्यक्ति भी अखंडित होगा ।

■
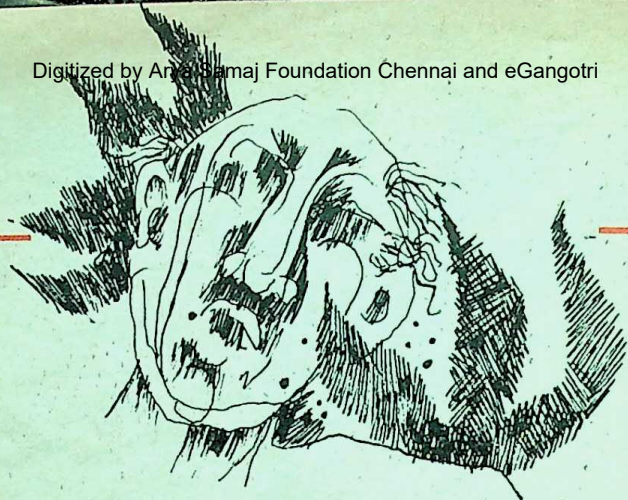
— अखंड में संपूर्ण ब्रह्मांड व्याप्त होता है ।

— यही संपूर्णता वास्तव में सामान्य दुग्ध के ऊपर तैरता हुआ मक्खन है । यही मक्खन तपने के बाद और श्रेष्ठ बनकर घृत की संज्ञा पाता है ।

— सामने के वृक्ष को देखिए : एक छतना लगा है, छतने के साथ अनगिनत पतंगे संघर्षरत हैं । एक दिन संघर्ष प्रबल होकर रसमय हो जाता है ।

— संघर्ष की प्रबलता ही शहद है ।

■

— बस, इन्हीं संक्षिप्त प्रकरणों में सम्मान की सीमाएं निहित हैं ।

— संस्कार सम्मान का पर्यायवाची हो सकता है ।

— संस्कारपूर्ण व्यक्ति, अपनी छोटी या बड़ी क्षमता के रहते हुए भी, सम्मान देता है ।

— सम्मान उसी को मिलेगा जो सम्मान देना जानता है ।

— एक व्यक्ति जिंदगी भर याचक बना रहे तो एक दिन उसे खाली मुट्ठी देखनी ही होगी ।

— जैसा करते हैं, वैसा भरते हैं; क्रिया का महत्त्व इसीलिए है क्योंकि उसके बिना कोई भी वाक्य या वाक्यार्थ संपूर्ण नहीं है ।

— इस दृष्टि से स्पष्ट हुआ कि सम्मान सीमित दृष्टि नहीं है ।

— सम्मान की सीमाएं जो भी तोड़ेगा, टूटने के अवशेष उसी पर गिरेंगे ।

— आम के वृक्ष में पत्थर मारें तो निशाना ठीक है तब तो आम मिलेगा अन्यथा वही पत्थर लौटकर सिर पर भी गिर सकता है ।

— अपनी ओर से प्रयत्न कीजिए : पूरा सम्मान दीजिए, देखिए आपका वाण

वापस नहीं आएगा । संस्कारपूर्ण व्यक्ति, अपनी छोटी या बड़ी क्षमता के रहते हुए भी, सम्मान देता है ।

— सम्मान दीजिए इसके बावजूद वह अब भी असम्मान्य की भाषा में बंधा है ।

— उसकी भाषा टूटेगी, उसके अंतर से सत्यता का ज्वार अचानक उभरेगा और वह धराशायी हो जाएगा ।

— प्रसन्न होने का क्षण नहीं है यह कि दूसरा व्यक्ति पराजित हुआ ।

— वह सम्मान की सीमा में आ गया और उसका विवेक विजित हुआ, यह आपकी विजय है ।

— सम्मान की सीमाएं निर्धारित करने के लिए न तो पाठ्यक्रम लिखे जा सकते और न कक्षाएं चलायी जा सकतीं ।

— अच्छा हो, सम्मान की अपनी दृष्टि को हम चेतन रखें, दूसरी दृष्टि कभी न कभी सजग होगी ही ।

■

— अब दूसरे अंश को ले लें : समाज और वर्ग की विवेकहीनता ।

— समाज एक-एक व्यक्ति का समुच्चय है ।

— एक व्यक्ति अपने आपमें सर्वज्ञ और सर्वश्रेष्ठ है ।

— भीड़तंत्र ने कभी मानव कल्याण के लिए अनुसंधान नहीं किए ।

— एक व्यक्ति ही नियंत रहा है प्रत्येक विवेकशीलता का और वह भीड़तंत्र रूपी समाज का मार्गदर्शक बना है ।

— समाज में आक्रोश, क्षोभ और विग्रह तथा विभाजन तभी उभरते हैं जब

'एक व्यक्ति' नाम की संज्ञा शिथिल हो जाती है ।
— समाज और वर्ग-चेतना विभाजित है, इसलिए सारे सम्मान को ताक में रखकर रक्तरंजित परिसाधनों का प्रयोग हो रहा है ।
— चिंता की बात हो सकती है, वास्तव में चिंता से अधिक उपेक्षा उत्तरदायी है ।
— वर्ग दम्भ में विभाजित है ।
— दम्भ को समाज स्वीकारने में असमर्थ है ।
— यहीं फिर एक व्यक्ति उपजता है जो समाज के दम्भ को भेदना चाहता है ।
— इस प्रक्रिया में वर्ग चेतना को बल मिलता है ।
— वर्ग-चेतना का अर्थ है : भीड़तंत्र को व्यापक आधार देना ।
— इसी से सभी भावनाएं समाप्त होती हैं ।
— भावनाओं का समाप्त होना संस्कार को श्मशान तक पहुंचाना है ।
— उसे संस्कार-शोधन केंद्र में पहुंचाया जाए तो वह स्वस्थ हो सकता है ।
— सीमा रेखा बांधकर वह कार्य तो नहीं किया किसी ने, सहज मार्ग अपना लिए चेतन-हीनता के द्वार का।
— कहां से उपजेगा फिर सम्मान ।
— कौन किसे सम्मान देगा, कौन किससे सम्मान लेगा !
— एक व्यक्ति नहीं है अब सामने, पूरा भीड़तंत्र है ।

■

— व्यक्ति और व्यक्ति का एक इकाई के रूप में सम्मान करना सीख लें, भीड़तंत्र मुट्ठी में होगा ।
— समूचा वर्ग सम्मान की उस शीतलता में विस्तीर्ण हो जाएगा जो वट-वृक्ष के नीचे मिलती है ।

# बिहार : कब तक ढोएगा यह कलंक

बिहार राज्य की स्थिति अन्य राज्यों से अलग है । भौगोलिक अर्थ में ही नहीं, राजनैतिक अर्थ में भी है । भौगोलिक दृष्टि से इस राज्य की सीमाएं अनेक संवेदनशील क्षेत्रों से जुड़ी हुई हैं । राजनैतिक पहचान के लिए सामाजिक और धार्मिक अर्थों को भी पहचानना होगा ।

बिहार को ही यह गौरव प्राप्त है कि देश के अनेक सामाजिक आंदोलनों का यह जन्म स्थान है । यहीं उनके बीज पनपे और फिर हवा के साथ उड़कर देश भर में फैले । उन्हीं आंदोलनों ने देश को गौरव दिया, आजादी के पूर्व और आजादी के दिनों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाही । ऐसे अनेक व्यक्तित्व बिहार में हुए जिन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जगत में ख्याति अर्जित की । स्वतंत्रता के बाद भारतीय ध्वज के सम्माननीय रक्षक के रूप में बिहार के पहले व्यक्ति हुए । राजनैतिक रूप से बिहार में जो होता है, उसका असर पूरे देश में देखा जा सकता है ।

धर्म को लें तो शायद ही कोई धर्म हो जिसका या तो जन्म बिहार में नहीं हुआ अथवा जो यहां फल पा, फूल और संपुष्ट हुआ । पंजाब की बात जब सोचते हैं तो क्यों
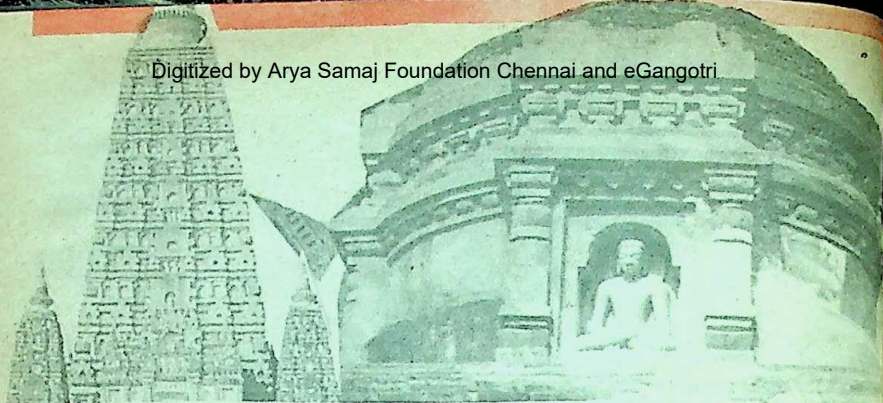
भूल जाते हैं कि सिक्ख एक धर्म के रूप में नहीं एक रक्षक-संप्रदाय के रूप में बिहार में ही जन्मा । भगवान बुद्ध के संबंध में इतिहासकार कितना भेद-मतभेद रखते हों, इसे भुलाया नहीं जा सकता कि भगवान बुद्ध ने जीवन के अनन्य क्षण बिहार में गुजारे और यहीं वे गौतम से बुद्ध हुए । हमारा यह दुर्भाग्य है कि हमारे यहां जन्मा बौद्ध धर्म चीन, जापान, मंगोलिया और अनेक देशों में वहां का मूल धर्म बना ।

बिहार राजा-महाराजाओं का केंद्र रहा है । अनेक वंश के राजाओं ने यहां अपने छोटे-बड़े राज्य स्थापित किये और रस-रंग में डूबे हुए जीवन के परमतत्व को ग्रहण करते रहे । लिच्छवी वंश का अत्यंत प्राचीन इतिहास है, जिसने बिहार के निर्माण में बहुत बड़ा योग दिया ।

शिक्षा जगत में बिहार ने सबसे पहले पहल की और नालंदा विश्व का पहला विश्वविद्यालय बना । शिक्षा की नींव पड़ेगी तो बुद्धिजीवी होंगे ही । बिहार बुद्धिजीवियों का केंद्र-स्थल रहा है । अनेक पंडितों और महापंडितों ने अपनी महिमाभरी गरिमा से विश्व ख्याति अर्जित की ।

समूचे बिहार का प्राचीन इतिहास प्रत्येक दृष्टि से सर्वोपरि है । वह परंपरा निरंतर पनपती है और विकसित हुई और आधुनिक काल तक चलती रही । अनेक कवि, महाकवि और लेखक तथा चिंतक बिहार भूमि में पैदा हुए । बाहर के विख्यात व्यक्तियों को बिहार ने आकर्षित किया ।

यह सब तब हुआ जब बिहार विरोधाभास की भूमि है । बरसात आती है तो यहां की नदियां कहर ढाती हैं । अनेक हिस्से ऐसे हैं जो सूखे पड़े हैं । खदानों और वन संपदा की यदि कमी नहीं है तो वन क्षेत्रों में रहने वाली जातियां हैं जो गरीबी से नीचे की रेखा में रहती हैं । पूरा बिहार एकदम विरोधी स्थितियों से भरा है । यहां के भू-स्वामी 'भूमिहार' हैं और अटूट भूमि के ही नहीं धन-संपत्ति के स्वामी भी हैं । मिथिला जानकी यानी सीता के नाम से जाना जाता है । मिथिला की अलग संस्कृति है । यहां संस्कृतियों, सभ्यताओं
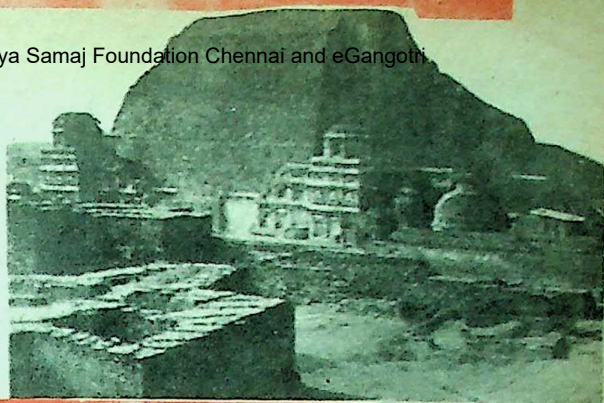
और संपन्नता का विश्लेषण हम नहीं कर रहे । पाठकों के सामने अतीत के बिहार को प्रस्तुत करते हुए हम वर्तमान में लाना चाहेंगे ।

आज का बिहार कहां खो गया है ? कहां चली गयी उसकी सभ्यता और संस्कृति । एक ओर अपार धन संपदा है तो आज का अधिकांश बिहार भूखा है । बिहार के बहुत बड़े भू-भाग में निरक्षरता है तो जो पढ़े-लिखे हैं वे पत्र-पत्रिकाएं खरीदकर पढ़ते हैं । इसका प्रमाण है कि सभी पत्र-पत्रिकाओं की सबसे अधिक बिक्री बिहार में होती है । राजनैतिक रूप से आज का बिहार इतना 'उन्नत' है कि वह गर्त में जा रहा है । जाति-पांति के भेद इस सीमा तक बढ़े हैं कि अखबारों की सुरखियों में रक्तरंजित वीभत्स क्रियाकलापों के कारनामे प्रतिदिन देखे जा सकते हैं । पूरा गांव जला देना, एक पूरे समूह को नष्ट करना और धर्म नहीं जाति के नाम पर हत्याएं आम बात हो गयी हैं । आरक्षण ने इसे और बल दिया है । कौन विश्वास करेगा कि अग्रवाल और मारवाड़ी भी यहां पिछड़ी जातियों में आरक्षण की सुविधा पा रहे हैं ।

फिर ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र और इन सबकी जातियां तथा उपजातियां एक-दूसरे के खून की प्यासी हैं । महाकवि वाल्मीकि, परशुराम, विश्वामित्र, वशिष्ठ आदि हमारे पूर्वज ऋषियों को समानरूप से समादृत माना जाता है । फिर उनकी संतानें इतने वर्षों बाद बिहार में आकर-दूसरे की प्रतिद्वंद्वी हो जाएंगी, किसी ने कल्पना नहीं की थी । यहां की वर्तमान राजसत्ता भी जातिवाद तथा संप्रदायवाद से पीड़ित है । सत्ता जैसी होगी, जनता भी वैसी होगी ।

यह बिहार के उज्ज्वल इतिहास के माथे पर लगा हुआ भीषणतम कलंक है । कब तक यह राज्य इस कलंक को ढोता रहेगा और आदमी तथा आदमी के बीच की खाई बढ़ती जाएगी । जाति-संप्रदाय को लेकर राजनीति की शतरंजें बिहार में बिछी हैं । जरूरत है ऐसे व्यक्ति की जो अतीत को समझकर वर्तमान में उभरे धब्बे मिटा सके । हम उस 'महापुरुष' की प्रतीक्षा करेंगे । ●

# हम आर्यों के मूल स्थान सुमेरु पहुंचे !

● डब्लु. आर. ऋषि

***सुमेरु को 'स्वर्णगिरि' अथवा 'सोने का पहाड़' भी कहते हैं । हमारे पुराणों के अनुसार जंबू द्वीप विश्व के सात महाद्वीपों में से एक है । एलफ्रेड वेगनर के अनुसार किसी समय सातों महाद्वीप जुड़े थे और इन सातों महाद्वीपों के संयुक्त समूह को उसने पेंगिया नाम दिया था ।***

मेरा पक्का विश्वास है कि विश्व के सुंदरतम और विशिष्ट स्थानों में अलताई का उच्च स्थान है । यहां के वन वन्य-जंतु संपदा से भरपूर है, यहां की नदियों में असंख्य मछलियां हैं और यहां की धरती पर रंग-बिरंगे फूलों का कालीन बिछा रहता है । यहां की रातें ऐसी काली चादर का आभास देती हैं जिसमें लाखों सितारे टंके हुए हैं । यहां अच्छी-खासी ठंड पड़ती है और बर्फीले तूफान आते हैं । यहां उतनी ही तेजी से वसंत ऋतु आता है, जितनी तेजी से किसी पर्वतीय नदी में बाढ़ । यहां का पतझड़ नयनाभिराम, सुरम्य और अलताई भूमि के उपहारों से भरपूर है । यहां के लोग शांत, नम्र और बहादुर हैं । वे एक-दूसरे का सम्मान करते हैं और अपनी धरती से प्यार करते हैं । सोवियत संघ के अंतरिक्ष यात्री ने अलताई को 'स्वर्ण भूमि' कहा है । वास्तव में अलताई शब्द मंगोलियन भाषा के 'अलतीन' शब्द से निकला है जिसका अर्थ है—'सोना' ।

अलताई की विशेषता यह है कि यहां गरमियों में सूरज बहुत ऊपर चढ़ता है और दिन १७ घंटे तक के होते हैं । सरदियों में सूरज कठिनाई से २० डिग्री की ऊंचाई तक जाता है और तब दिन बहुत छोटे हो जाते हैं ।

अलताई के साथ अनेक ऐसे नाम जुड़े हैं जिन्होंने अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में देश का नाम रोशन किया है : वैसिली लाजरेव का जन्म अलताई में पोल्कोव निकोव से लगभग ३०

यही है सुमेरु पर्वत ।

किलोमीटर दूर प्रोश्रो गांव में हुआ था; सुप्रसिद्ध महिला अंतरिक्ष यात्री वेलेंटीना तेरेश कोवा १९ जून १९६५ को अलताई क्रे में उतरी थीं । कामेन-आन-ओब नगर में अंतरिक्ष उड़ान के सिद्धांतशास्त्री यू.वी. कंद्रोतक रहते और कार्य करते थे; अंतरिक्ष यात्री जरमन स्टेपानो विच कोसी-खिनस्की क्षेत्र में पोल्कोव में हुआ था ।

एक सप्ताह तक चल रहे भारतीय संस्कृति समारोह और 'अलताई हिमालय सम्मेलन' के विचार-विमर्श के बाद प्रतिनिधियों को विमान से बरनौल ले जाया गया । सुंदर मनोहारी नगर बरनौल अलताई क्रे का प्रशासकीय केंद्र है । इसका इतिहास दिलचस्प है । क्रे गठन के बाद, पिछले ५० वर्षों के दौरान बरनौल देश का महत्त्वपूर्ण व्यापारिक और कृषि केंद्र बन गया है ।

बरनौल में अलताई-हिमालय पर एक छोटा सम्मेलन आयोजित किया गया । लड़के-लड़कियों ने अपनी राष्ट्रीय पोशाकों में हमें साइबेरियाई लोक नृत्य दिखाये । बाद में, हमने अलताई का संग्रहालय देखा, जो इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है । हम यानी अनेक देशों के साथ ही तीन भारतीय प्रतिनिधि—मैं, राजेन्द्र अवस्थी और ऋषि केडिया । बरनौल से हम कोकोज के उद्गम स्थल उस्त गये । उस्त में बहती नदी कातून नदी की सहायक नदी है । हमने यह यात्रा एक छोटे इलुशिअन विमान में की, जिसमें ३६ सीटें थीं और वहां तक पहुंचने में हमें ४० मिनट लगे । उस्त कोकोस छोटा नगर है किंतु इस क्षेत्र का मुख्यालय है । यह एक विशाल घाटी में स्थित है जिसे 'जोलोतया दोलीना' या 'सुनहरी घाटी' कहते हैं । यह घाटी चारों ओर से ऊंचे पर्वतों से घिरी है । चारों ओर से पर्वतों से घिरी रहने के कारण यह घाटी अत्यंत रमणीक और मनोहारी हो जाती है । कातून नदी ऊंचे पर्वतों में अपने उद्गम स्थान से निकल कर घाटी में मंद-मंद गति से बहती हुई अत्यंत भव्य लगती है ।

### दो नदियों का विवाह

देव प्रयाग में भागीरथी और अलकनंदा का संगम होने के बाद ही गंगा जन्म लेती है । इसी प्रकार कातून का अर्थ है महिला/रानी और बिया का अर्थ है पुरुष । दोनों का बिस्क नगर में मिलन होता है । इस मिलन के बाद एक नयी नदी, एक नया व्यक्तित्व लेकर जन्म लेती है । प्रचलित किंवदंती के अनुसार कातून और बिया परिणय सूत्र में बंध जाते हैं और ओब नाम से पति-पत्नी के रूप में आगे बढ़ते हैं (ओब का अर्थ होता है दोनों, या दंपत्ति) । इसके बाद ओब उत्तर की ओर बहती हुई न केवल विशाल क्षेत्रों की सिंचाई करती है बल्कि जल परिवहन अथवा सामान लाने ले जाने का मुख्य साधन बन जाती है ।

हम लोगों ने उस्त कोकोस में दोपहर का भोजन किया । उसके बाद हमारी बस वरखनी यूइमोन (ऊपरी यूइमोन; निम्पनी यूइमोन अथवा निचला युइमोन भी है) की ओर रवाना हुई;
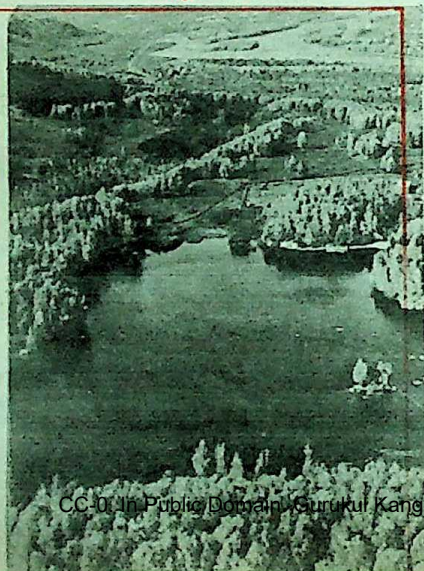
कातून नदी ।

बरखनी यूइमोन निकोलस रोरिक के अनुया[यियों] के लिए तीर्थस्थल है । निकोलस रोरिक को रूसी महर्षि भी कहा जाता है । वह विशिष्ट रूसी पेंटर (कलाकार), कवि, यात्री और विचारक थे । (रोरिक के संबंध में श्री राजे[न्द्र] अवस्थी विस्तार से 'कादम्बिनी' में लिख चुके हैं । इसलिए मैं दोहराना नहीं चाहूंगा ।)

### कातून के तट पर कैंपों में गुजरे दि[न]

हम लोगों ने कातून नदी के तट पर वन[ों में] अपने तंबू लगाये । यह स्थान बरखनी यूइमो[न] से लगभग दो किलोमीटर दूर और पर्वतों के नीचे था । प्रत्येक व्यक्ति को एक 'स्लीपिंग बै[ग]' दिया गया । रात को पूर्णिमा थी, चंद्रमा के शीतल प्रकाश में ऐसा लग रहा था मानो हम किसी स्वप्न लोक में हैं । तंबुओं की दो कता[रों] के बीच अलाव जल रहे थे ।

भोजन के पश्चात हमने साइबेरियाई चाय पी । उसमें बादाम और मारालिंक की पत्तियां मिलायी गयी थीं । हम लोग रात में बड़ी देर तक बातें करते और संगीत सुनते रहे । इस क्षे[त्र] के युवक-युवतियों ने हमारे लिए संगीत का अत्यंत मनभावन कार्यक्रम प्रस्तुत किया । कैं[पों] में बिताये दो दिन हमारी जिंदगी के अमूल्य क्ष[ण] थे जिन्हें हम कभी नहीं भूल सकेंगे ।

### बेलुखा ही सुमेर है

अगली सुबह एयरोफ़्लोट का हेलीकॉप्टर हमें अक-केम झील पर ले गया जो समुद्रतल से लगभग २००० मीटर की ऊंचाई पर है । हम लोग बेलुखा हैलीपैड पर उतरे । यहां से हिमाच्छादित बेलुखा पर्वत शिखरों का मनोर[म] दृश्य दिखायी देता है । बेलुखा अलताई क्षेत्र का सबसे ऊंचा पर्वत शिखर है । उसकी ऊं[चाई]

अलताई घाटी में स्थित चंडेक ग्राम में लेखक ग्रामवासियों के साथ ।
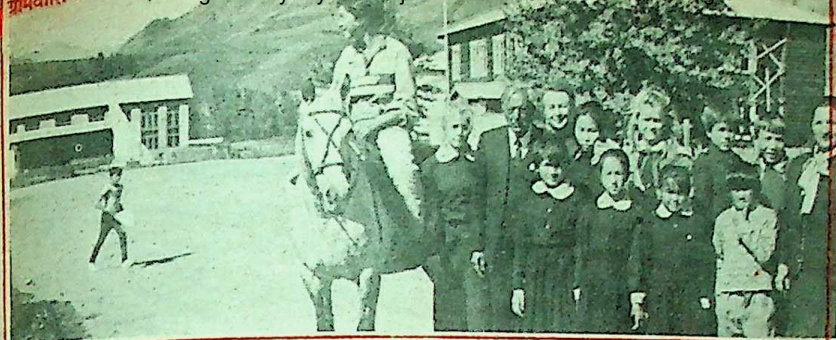
४,५०६ मीटर है । हेलीकॉप्टर के नीचे जो सुंदर दृश्य धीरे-धीरे विलीन हो रहा था, उसका वर्णन करने के लिए मेरे पास पर्याप्त शब्द नहीं हैं । कातून नदी का उद्‌गम स्थान तो सचमुच में भव्य और दैवी था—बर्फ की पिघलती बूंदों से नदी का जन्म लेना ।

बेलुखा हेलीपैड पर उतरने से पहले हेलीकॉप्टर ने पर्वत शिखर के दो चक्कर लगाये । बेलुखा के शिखर पर उगे वृक्षों का ऊपरी भाग अत्यंत शानदार लग रहा था । अककेम्म झील का शुद्ध नीला पानी इस स्थान के सौंदर्य को दूना कर रहा था ।

बेलुखा जितने विदेशी पहुंचे थे उनसे पहले ही आग्रह किया गया था कि वे अपने-अपने क्षेत्र की मिट्टी साथ लाएं । मैं अपने साथ अमृतसर के हरमंदिर साहिब और दुर्गियाना मंदिर तथा एक गिरजाघर और चंडीगढ़ के आईएस के सी ओएन से कुछ मिट्टी ले गया था । मैंने इस मिट्टी को पेड़ के समीप फैला दिया । श्री अवस्थी कृष्ण की भूमि वृंदावन की मिट्टी ले गये थे । हमें इसके बदले भारत के लिए उस स्थान की मिट्टी दी गयी, जो दोनों देशों के बीच संस्कृतियों के आदान-प्रदान और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत बनाने की प्रतीक थी । कूबा और मेक्सिको के प्रतिनिधियों ने भी ऐसा ही किया ।

### आर्यों के मूल निवास में

मेरी शोध के अनुसार, आर्यों का मूल निवास स्थान दक्षिण रूस या अलताई क्षेत्र में हो सकता है । मैंने ये विचार अपनी पुस्तक 'इंडिया एंड रशिया—लिंगुस्टिक एंड कलचुरल एफिनिटी' में भी लिखे हैं । मैं मेरु अथवा सुमेरु की खोज में था, जिसका उल्लेख हमारे पौराणिक साहित्य में है । मोनियर विलियम्स ने अपने संस्कृत-अंगरेजी कोश में मेरु/सुमेरु का वर्णन इस प्रकार किया है : उस प्रसिद्ध पर्वत का नाम, जो हिंदुओं का 'ओलिंपस' अथवा देवताओं का निवास समझा जाता है, और जंबू द्वीप के केंद्र भाग में है । सभी ग्रह इसके चारों ओर घूमते हैं और इसकी तुलना एक प्याले अथवा कमल की फलभित्ति से की जाती है, जिसके पत्तों से अलग-अलग द्वीप बनते हैं; परिधि के चार भागों में पर्वत हैं जो पूरी तरह से सोने और रत्नों से भरे हैं । इसके शिखर पर ब्रह्मा निवास करते हैं और यह देवताओं, ऋषियों और गंधर्वों का मिलन स्थल है । सुमेरु को 'स्वर्ण गिरि' अथवा 'सोने का पहाड़' भी कहते हैं ।

हमारे पुराणों के अनुसार जंबू द्वीप विश्व के सात महाद्वीपों में से एक है । एलफ्रेड वेगनर के अनुसार किसी समय सातों महाद्वीप जुड़े थे और इन सातों महाद्वीपों के संयुक्त समूह को उसने पेंगिया नाम दिया था ।

वेगनर के अनुसार इस प्राचीन भूमि समूह में कुछ उथले समुद्र थे । उसने 'टीदेज सी' का उदाहरण दियां है, जहां से हिमालय पर्वत श्रृंखला का विकास हुआ । जंबू द्वीप का नौवां भाग भारत है । 'संकल्प मंत्र' में इसका उल्लेख है : ''जंबू द्वीपे भरत खंडे आर्यावर्ते देशान्तर गते ।'' पंजाब सरकार के भाषा विभाग द्वारा तैयार 'पंजाबी कोश' में कहा गया है कि जंबू द्वीप एशिया का पुराना नाम है । श्रीमद्भागवत पुराण (खंड १ नंबर ३२) में सुमेरु उल्लेख इस प्रकार किया गया है, ''मेरु पर्वत के चारों ओर स्थित सात महाद्वीपों के मध्य में बसा ।'' मत्स्य पुराण के अनुसार, ''मेरु पर्वत के पीछे अस्त होकर सूर्य उदय हुआ (दक्षिणी ध्रुव) ।''

एक अन्य किंवदंती के अनुसार सुमेरु पर्वत को मथानी बनाकर अमृत मंथन किया गया था । उससे अन्य वस्तुओं के अलावा अमृत, विष, रत्न और जड़ी बूटियां स्वर्णकरिणी, जो घावों को ठीक कर देती है; विशालयुकरिनी जो शरीर के कटे हुए हिस्सों को जोड़ देती है; सांधनी, जो शरीर के खराब हिस्सो को ठीक कर देती है और संजीवनी, जो मृत मनुष्य को नया जीवन प्रदान करती है, निकलीं । इसी जगह से हनुमान मेघनाद की शक्ति से बुरी तरह घायल लक्ष्मण के उपचार के लिए संजीवनी ले गये थे ।

पहले हम लिख चुके हैं कि अलताई शब्द मंगोलियाई भाषा के शब्द अलतीन से बना है जिसका अर्थ सोना होता है । सुमेरु पर्वत को स्वर्ण गिरि अथवा सोने का पहाड़ भी कहते हैं बेलुखा पर्वत के नीचे यूनीमोन घाटी को 'जोलोतयाक डोलिना' अथवा सोने की घाटी कहते हैं । अलताई पर्वतों में सोना, चांदी और रत्न प्रचुर मात्रा में मिलते हैं । इस सबसे यह माना जा सकता है कि वास्तव में बेलुखा पर्वत ही हिंदू पौराणिक ग्रंथों में वर्णित सुमेरु पर्वत है । क्षेत्रीय सांस्कृतिक प्रशासन के अध्यक्ष (किसी छोटे राज्य के मंत्री के बराबर) श्री चिचीनोव वेलेरी इवानोविच बेलुखा पर्वत की यात्रा के दौरान लगातार हमारे साथ थे ।

हमने श्री चिचीनोव से अलताई भाषा में बेलुखा पर्वत का नाम पूछा । उन्हें मुझे यह बताने में एक क्षण की भी हिचकिचाहट नहीं हुई कि बेलुखा पर्वत को अलताई भाषा में 'ऊंच सुमेर' कहते हैं । उन्होंने यह भी बताया कि अक्तूबर क्रांति के बाद, जब इस क्षेत्र का रूसीकरण करने की प्रक्रिया शुरू हुई तो नाम सुमेर से बेलुखा कर दिया गया । रूसी भाषा में बेलयी का अर्थ होता है सफेद । सुमेर के ऊपर हिम की चादर बिछी रहती है अतः पर्वत का नाम बेलुखा रख दिया गया । उन्होंने कहा कि आशा है कि शीघ्र ही इस क्षेत्र को स्वायत्तशासी गणराज्य का दर्जा मिल जाएगा । उसके बाद बेलुखा नाम सरकारी तौर पर सुमेर कर दिया जाएगा ।

— ३२९०, सेक्टर १५-डी
चंडीगढ़

**प्रेम सब कुछ सह लेता है किंतु उपेक्षा नहीं सह सकता ।** —अज्ञात

उमंग की तरंग में प्यार के रंग में

# साइबेरिया में कृष्ण

● राजेन्द्र अवस्थी

साइबेरिया में घूमते हुए कातून नदी के किनारे हमें एक स्थान मिला। हठात् हमारे पैर रुक गये। वहां से 'हरे कृष्ण' की ध्वनि आ रही थी। हम वहां पहुंचे तो एक परिवार मिला। वह निरामिष 'कटलेट' बना रहा था। घर के भीतर कृष्ण के चित्र, मूर्तियां और ढोलक थी। पता चला 'हरे कृष्ण' संप्रदाय से उस परिवार का कोई संबंध नहीं है। परिवार में पति-पत्नी और उनके पांच बच्चे हैं। सबसे छोटे बच्चे का नाम उन्होंने 'कृष्ण' रखा है। बहुत प्यार से पिता नेकहा, "यह हमारे आराध्य हैं, भगवान कृष्ण।" पूरा परिवार उत्साह में था। खासी ठंड में पति-पत्नी और सभी बच्चे नीचे उतरकर कातून नदी में गये। सबने उस ठंड में भी स्नान किया। पांच-छह वर्षीय कृष्ण ने भी स्नान किया। फिर कृष्ण पूजा की समूची विधि हमने देखी। ढोलक की थाप के साथ पूरा परिवार नाच रहा था। कृष्ण भी नाच रहे थे। साइबेरिया में बाल कृष्ण को देख हमें बेहद प्रसन्नता हुई। इतने एकांत में कोई जगह तो है, भारत से हजारों मील दूर, जहां ठेठ हिंदी में कृष्ण का नाम गूंजता है। कृष्ण की गीता भी वहां रखी है।

आगे की घटना और चौंका देने वाली थी। हमारे साथ वहां के मेयर और कुछ और भारतीय मित्र भी थे। उन सबको उन्होंने सूखे मेवे से भरा चावल का पुलाव और शाकाहारी कटलेट खिलाये। कातून नदी के किनारे लगे कैंप में कुछ भी खाते हम तंग आ चुके थे। शुद्ध भारतीय भोजन ने हमें तृप्त कर दिया। यह पूरा परिवार शुद्ध शाकाहारी है। भारतीय आतिथ्य की यह परंपरा साइबेरिया में देखकर हमें विश्वास हो गया कि कातून का उद्‌गम स्थल (जिसे वहां मेरु भी कहते हैं) ही हिंदू सभ्यता का आदि केंद्र रहा है। ●

# यंत्र सिद्ध प्रेतों के साथ अनजाने ग्रह की यात्रा

• मुकुन्ददास माहेश्वरी

पिछले वर्ष रूस के लेनिनग्राद शहर में आयोजित 'इकोबायोएन ९०' की अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष संगोष्ठी में सोवियत रूस के रीगा नगरवासी यांत्रिक विक्तर कोर्चुनोव ने जब अपनी पढ़ी गयी विश्वस्त रिपोर्ट में यह घोषित किया कि हाल ही में उन्होंने पृथ्वी से बहुत दूर स्थित एक रहस्यमय ग्रह की यात्रा की है तो वहां उपस्थित संसार के शीर्ष अंतरिक्ष विज्ञानियों में हड़कंप मच गया ।

पहले तो रूस की जनता ने कोर्चुनोव को सनकी या पागल समझा पर बाद में जब वैज्ञानिकों ने उनके मस्तिष्क की सघन जांच करके यह घोषित किया कि वे पूरी तरह स्वस्थ और सच कह रहे हैं तब सोवियत पत्र-पत्रिकाओं ने ठाठ से छापा— 'सोवियत यांत्रिक कोर्चुनोव द्वारा सुदूर ग्रह की पहली यात्रा ।' समाचार के प्रकाशित होते ही कोर्चुनोव को धरती का इस प्रकार का पहला यात्री मानकर योरोप के पत्रकारों ने उन्हें घेर लिया ।

कोर्चुनोव की रिपोर्ट के अनुसार उनकी अंतरिक्ष में १ करोड़ ७० लाख प्रकाश इकाई की दूरी पर किरीट तथा हरक्यूलिस नक्षत्रों के बीच स्थित उस रहस्यमय ग्रह की यात्रा का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है :

## 'भूतों का घर'

यांत्रिक कोर्चुनोव ने बहुत दिनों से रूसी पत्रों में यह पढ़ रखा था कि यूराल की पहाड़ियों पर 'भूतों का घर' कहलानेवाला पेर्म नामक एक रहस्यमय क्षेत्र है जहां अंतरिक्ष से उड़न तश्तरियां आती-जाती रहती हैं । एक दिन वे अपने कुछ हिम्मतवर साथियों को लेकर छुट्टियां बिताने के बहाने सच्चाई जानने के लिए उस भुतहे पेर्म क्षेत्र में जा पहुंचे । वहां उन्होंने अपना तंबू गाड़ दिया और वे सभी बारी-बारी से तंबू के बाहर पहरा देते व वहां जांच-पड़ताल करते हुए रहने लगे । इस प्रकार तीन दिन और तीन रातें व्यतीत करने के बाद भी जब उन्हें वहां कुछ रहस्यमय नहीं दिखा, तो वे रीगा वापस लौटने तथा इस सफेद झूठ का पर्दाफाश करने का कार्यक्रम बनाने लगे । बस, तभी उनके साथ एक ऐसी असाधारण घटना घटी जिसने उन्हें भयभीत तथा स्तंभित करने के साथ ही संसार प्रसिद्ध व्यक्ति बना दिया ।

## तंबू में अज्ञात यात्री

ठीक चौथी रात को तीसरे पहर जब वे अपने तंबू में चैन से सो रहे थे और बाहर उनके साथी पहरा दे रहे थे, तभी किसी अज्ञात शक्ति ने उन्हें जगा दिया । उन्होंने महसूस किया कि अचानक उनका शरीर बहुत हलका हो गया है और वे अपने बिस्तर से एक फुट ऊपर उठ गये हैं । किसी अज्ञात व्यक्ति ने बिना बोले तथा बिना दिखे केवल विचारों की भाषा में उनसे पूछा— 'तुम कौन हो ? यहां किसलिए आये हो ?' कोर्चुनोव हिम्मत करके उस अदृश्य अतिथि के प्रश्नों के उत्तर लगभग २० मिनट तक देते रहे । उस रहस्यमय आगंतुक ने जब इस बीच उनकी बौद्धिक तथा शारीरिक क्षमता की जांच करके उनके पहले के रोगों (फेफड़े के दाग तथा हृदयरोग) से उन्हें पूर्ण रूप से मुक्त कर स्वस्थ भी कर दिया तब कोर्चुनोव ने उनसे सधन्यवाद प्रार्थना की, 'आप कौन हैं ? कृपया सामने आइए ।' जवाब में उनकी दृष्टि बुझा दी गयी । उनका शरीर तो बिस्तर पर ही पड़ा रहा परंतु उनकी चेतना को २० फुट ऊपर उठाकर तंबू से बाहर के जंगली मैदान में लाया गया और उन्हें जमीन पर खड़ा करके उनकी आंखों की ज्योति लौटा दी गयी । वहां उन्होंने आश्चर्य से अनेक चमकदार अति रहस्यमय मानवों को देखा जिन्होंने उन्हें फिर से उनके तंबू में पहुंचा दिया । दूसरे दिन सुबह उन्होंने अपने साथियों को इस डर से कुछ नहीं बताया कि कहीं वे उसे अकेला छोड़कर वहां से भाग न जाएं ।

**गुप्त चिह्न के माध्यम से उन्होंने अपने रहस्यमय मित्रों का आह्वान किया । नीले अंतरिक्ष में एक भूरी आंख उभरी और उसके साथ ही उनके मित्र उनके चेतन शरीर को उड़न तश्तरी में बैठा कर सुदूर ब्रह्मांड में स्थित अपने ग्रह की ओर ले गये ।**

## ग्रह-यात्रा का निमंत्रण

दूसरे दिन कोर्चुनोव को रात के समय वे रहस्यमय मानव फिर से उसी प्रकार उनके तंबू से बाहर निकाल ले गये । इस बार उन्होंने वहां अनेक चमकदार मानवों को दो उड़न तश्तरियों सहित देखा । उनमें से दो मानव कोर्चुनोव की आंखों से आंखें मिलाये विचारों के माध्यम से मैत्रीपूर्ण ढंग से बातें कर रहे थे । कोर्चुनोव को वे न भूत लगे, न छाया पुरुष और न ही कृत्रिम लगे क्योंकि उनमें से कुछ बाकायदा उड़न तश्तरियों की मरम्मत कर रहे थे । उनके सिर के बाल सफेद, आंखें भूरी तथा शरीर की चमड़ी कुछ काली थी । वे गले से लेकर पांवों तक बिना बटनों वाली बंद गले की स्वेटरें पहने थे । उन्होंने कोर्चुनोव से निवेदन किया कि क्या वे उनके ग्रह की यात्रा करना चाहेंगे ? कोर्चुनोव के यह पूछने पर कि यात्रा में कितना समय लगेगा, उन्होंने हंसकर कहा, 'हम लोग तुम धरतीवासियों से सभ्यता व विज्ञान की दृष्टि से कई लाख गुने आगे हैं । हम दिशा बांधने की तकनीक से केवल पांच मिनट में तुम्हें वहां पहुंचा देंगे ।' यह कहते हुए उन्होंने कोर्चुनोव को रेखागणित की तरह चार आकृतियों वाला एक गुप्त रहस्यमय चिह्न देते हुए प्रार्थना की कि अब तुम जाओ और जब भी तुम यात्रा करना चाहो तब इस चिह्न पर ध्यान केंद्रित कर हमें बुलाना । हम आकर तुम्हें अपने ग्रह पर ले चलेंगे । यह कहते हुए वे फिर उसी प्रकार कोर्चुनोव को उनके तंबू में वापस छोड़ गये । तंबू में आकर उन्होंने सोचा कि उन्हें उस पेर्म क्षेत्र से अपने रीगा स्थित घर लौटकर अपनी यात्रा की कार्यवाही करना चाहिए । यदि वे तंबू में अपना निश्चल शरीर छोड़कर ग्रह-यात्रा के लिए रवाना होंगे तो उनके मित्र उन्हें मृत समझ कर दफना देंगे ।

## अलौकिक यात्रा पर रवाना

अपनी पूर्व निर्धारित योजनानुसार कोर्चुनोव ने अपने गृहनगर रीगा पहुंचकर एक रात खुद को अपने एकांत शयनकक्ष में बंद किया, तीन दिनों तक कोई उनका कमरा न खोले यह हिदायत दी और अपने बिस्तर पर वे रजाई ओढ़कर लेट गये । गुप्त चिह्न के माध्यम से उन्होंने अपने रहस्यमय मित्रों का आह्वान किया । नीले अंतरिक्ष में एक भूरी आंख उभरी और उसके साथ ही उनके मित्र उनके चेतन शरीर को उड़न तश्तरी में साथ बैठा कर सुदूर ब्रह्मांड में स्थित अपने ग्रह की ओर ले उड़े ।

## ग्रह का अद्भुत वर्णन

कोर्चुनोव के अनुसार उन्हें अदृश्य रूप में उनके अतिथि मित्रों ने दो दिनों तक अपने उस विचित्र अजब-गजब ग्रह में घुमाया । वे साक्षात सब कुछ देख रहे थे परंतु सशरीर नहीं होने के कारण ग्रहवासी उन्हें नहीं देख पा रहे थे । उन्हें ग्रह की स्त्रियां पुरुषों से अधिक सुंदर दिखायी दीं । ऊंचाई में वे सभी धरतीवासियों से एक फुट ऊंचे हैं । सभी आबाल वृद्धों के बाल सफेद व चेहरे झुर्रियों रहित हैं । वे सभी फुर्तीले छरहरे तथा प्रसन्न हैं तथा पृथ्वी वासियों की तुलना में उनकी आयु ४०० से ७०० वर्ष है उनके मकान तीन मंजिले, गोल तथा घनाकार (नुकीले नहीं) और पृथ्वी के मकानों-जैसी खिड़कियों व दरवाजों वाले हैं । वहां जानवर वृक्ष तथा बिजली के खंभे तार आदि कहीं नहीं दिखायी देते हैं । वहां की झब्बेदार हरियाली

धरती से बहुत अधिक घनी है । सड़क से कुछ ऊपर उठ कर वहां की बेहद चमकीली सड़कों पर बिना चक्कों वाले विचित्र वाहन बड़ी तेज रफ़्तार से (शायद हवा के दबाव से) चलते रहते हैं । उन्होंने आकाश में तथा समुद्र में प्रायः उड़नतश्तरी नुमा वाहन ही देखे, विमान, स्टीमर या जहाज नहीं । इसी प्रकार बिना रेलों, ठेलों तथा मेलों का वह ग्रह उन्हें बड़ा विचित्र लगा । वहां उन्हें धरती के चित्रकारों द्वारा बनाये गये दूसरे ग्रहों के काल्पनिक चित्रों की तरह सर्पिल, धनुषाकार अथवा गोलाकार आकृतियां कहीं नहीं दिखीं । उन्हें दूसरे भवनों से अलग एक विशाल भवन में ले जाया गया । वहां स्टाक एक्सचेंज— जैसा कुछ चल रहा था । एक बड़े शांत हाल में सैकड़ों स्त्री पुरुष बिना मुंह से कुछ बोले विचारों के माध्यम से बिना मुसकराये विचारों का आदान-प्रदान कर रहे थे ।

कोर्चुनोव को उनके चेहरे बड़े विचित्र किंतु सुंदर लगे । बच्चों की संख्या सीमित थी । औरतें सिरों पर कनपटियों तक लटके फुंदों वाली टोपियां लगाये थीं । वे कानों में कुछ नहीं मगर गलों में किसी बेहद चमकीली धातु की रत्न जटित जंजीरें पहने थीं ।

### एक डरावना रहस्य

धरतीवासियों को यात्रा का समाचार देने की अनुमति देते हुए कोर्चुनोव को दो दिनों में अपने ग्रह से परिचित करा कर जब वे ग्रहवासी उन्हें वापस धरती पर (पेर्म प्रदेश में) लाये तो उन्होंने उन्हें बताया कि २०वीं शताब्दी के अंत तक वे उनके जैसे सैकड़ों पृथ्वी वासी मित्र बना कर पृथ्वी की रहस्यमय जानकारियां (लड़ने के लिए नहीं केवल परिचय के लिये) प्राप्त करेंगे । कोर्चुनोव के यह पूछने पर कि भविष्य में उन्हें क्या जानकारियां देनी पड़ेंगी उन यात्रियों ने कहा, 'जैसे हाल ही में तुम्हारे यहां पामीर की पहाड़ियों पर मारे गये इन ६ पर्वतारोहियों के शवों का क्या हुआ ?' यह कहकर उन्होंने पहाड़ी के नक्शे सहित सभी छहो पर्वतारोहियों के चित्र उन्हें बताये और घोषित किया, 'तुम दुनियावालों के लिए ये मर चुके हैं मगर हमारे हिसाब से ये जहां भी हैं, मजे में हैं ।' यह सुनते ही कोर्चुनोव समझ गये कि वे पर्वतारोही उन्हीं यात्रियों के ग्रह में कहीं हैं । वे यात्री स्तब्ध, चिंतित तथा हक्केबक्के कोर्चुनोव को उनके घर में वापस छोड़कर अदृश्य हो गये ।

इन दिनों वे सपरिवार अपने घर में एक कुशल यांत्रिक की अपनी ड्यूटी पूरी करते हुए रह रहे हैं । साथ ही वे देश-विदेश से आये पत्रकारों को अपनी यात्रा के साक्षात्कार देने में भी व्यस्त रहते हैं । वे ग्रहवासियों द्वारा दिये गये गुप्त चिह्न के माध्यम से पहले सप्ताह में दो बार परंतु अब एक बार संपर्क साधकर उन्हें पृथ्वी की सत्य सूचनाएं देते रहते हैं । रूसी सरकार ने उन्हें इसकी अनुमति दे रखी है ।

**—दीवान बहादुर बल्लवदास महल,**
**जबलपुर-४८२००२**

### ऐसा भी क्षेत्र

**विश्व का सबसे सूखा क्षेत्र चिली में है, जिसे 'अटकामा डेजर्ट' के नाम से जाना जाता है । इस क्षेत्र में वर्षों से वर्षा नहीं हुई है ।**

## 'कादम्बिनी' लोकप्रियता की ओर

# हम आपके पास आ रहे हैं

'कादम्बिनी' की बढ़ती हुई लोकप्रियता और प्रसार संख्या के लिए हम अपने सभी पाठकों का अभिनंदन करते हैं । इसके साथ ही हमने एक महत्त्वपूर्ण योजना तैयार की है । प्रयोग के रूप में फिलहाल हमने चार शहरों का चुनाव किया है । ये वे शहर हैं, जहां 'कादम्बिनी' की प्रचार और प्रसार संख्या काफी अच्छी है । विचार यह हुआ कि जहां अधिक पाठक हों, पहले हम वहां ही पहुंचें और पाठकों की और संख्या बढ़ाने में वहां की जनता का सहयोग लें । इन चार शहरों के बाद हम और शहरों का भी चुनाव करेंगे ।

चार शहरों के कार्यक्रम इस प्रकार हैं—

पटना : २१ और २२ जुलाई, १९९१ जयपुर : १८ और १९ अगस्त, १९९१
इंदौर : ४ और ५ अगस्त, १९९१ लखनऊ : १ और २ सितम्बर, १९९१

# प्रथम 'कादम्बिनी' साहित्य महोत्सव पटना में

## इसमें आसपास के नगरों के लोग भी भाग ले सकते हैं।

तिथि : २१ जुलाई १९९१

स्थान : ब्रज किशोर मेमोरियल हाल, पटना

समय : प्रातः १० से १२ बजे तक । आयु-सीमा : १६ से ३५ वर्ष ।

प्रतियोगिता में इस आयु वर्ग के सभी व्यक्ति भाग ले सकते हैं ।

प्रतियोगिता दो हिस्सों में होगी : कहानी, लेख

लेख के लिए साहित्यिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, समस्या मूलक विशिष्ट एवं रोचक विषयों में से कोई एक हो सकता है । विषय उसी स्थान पर दिया जाएगा ।

पुरस्कार प्रत्येक वर्ग में

**प्रथम पुरस्कार—१००० रुपये द्वितीय पुरस्कार—७०० रुपये**

**तृतीय पुरस्कार—५०० रुपये**

**दस सांत्वना पुरस्कार—१०० रुपये प्रत्येक वर्ग में**

## पुरस्कार वितरण

*दिनांक २२ जुलाई, १९९१ को रवीन्द्र भवन, पटना में राज्यपाल श्री मोहम्मद शफी कुरैशी द्वारा नगर के गणमान्य व्यक्तियों एवं साहित्य प्रेमियों की उपस्थिति में । इस पुरस्कार वितरण में 'कादम्बिनी' संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी स्वयं उपस्थित रहेंगे । प्रविष्टियों पर संपादक का निर्णय अंतिम होगा, और उसके विषय में कोई विवाद मान्य नहीं होगा । जो व्यक्ति इस प्रतियोगिता में रुचि रखते हों वे निम्नलिखित पते पर संपर्क करें :*

१. प्रबंधक, ब्रज किशोर मेमोरियल हाल, पटना

२. श्री वाय. सी. अग्रवाल, चीफ एक्जीक्यूटिव हिंदुस्तान टाइम्स, पटना,

३. डॉ. भगवती शरण मिश्र, उप विकास आयुक्त, ग्रामीण विकास विभाग, पुराना सचिवालय पटना

*कोऊ भयो मुंडिया संन्यासी कोऊ योगी भयो*
*कोऊ ब्रह्मचारी, कोऊ जतियन मान बो*
*हिंदू तुरुक कोऊ, राफजी, इमाम शाफी*
*मानस की जाति सबै इक्कै पहचान बो*
*करता करीम सोई, राजिक रहीम ओई*
*दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मान बो*
*एक ही की सेव, सब ही को गुरुदेव एक*
*एक ही सरूप, सबै एकैं जोत जान बो*

क्योंकि वही सबका गुरु है, वही सर्वश्रेष्ठ है।

*देहुरा मसीत सोई पूजा और नमाज ओई*
*मानस सबै एक पै अनेक को भ्रमाव है*
*देवता अदेव जच्छ गंधर्व तुरुक हिंदू*
*न्यारे-न्यारे देसन के भेसन को प्रभाव है*
*एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बानि*

# हिंदू मुसलमान एक हैं

कोई तो अपना सिर मुंडाकर मुडिया संन्यासी हो गया और कोई योगी हो गया। कोई ब्रह्मचारी बन बैठा, तो कोई जती बन बैठा। कोई हिंदू बन गया तो कोई मुसलमान, कोई राफजी, इमाम और सुन्नी हो गया। लेकिन आदमी-आदमी के बीच ये सब भेद झूठे हैं। आदमी की तो एक ही जाति है कि वह आदमी है, इसलिए सब को एक ही मानना चाहिए। क्योंकि सब का सृष्टिकर्ता एक ही है। और वह सृष्टिकर्ता सबका कल्याण करनेवाला (करीम) सबका पालनहार (राजिक) और सब पर दया करनेवाला (रहीम) है। सृष्टिकर्ता एक ही है, एक से अधिक सृष्टिकर्ता नहीं है, इसलिए ईश्वर या अल्लाह एक ही है, दो नहीं। अगर कोई इन्हें अलग-अलग समझता है, तो वह भ्रम में है, भूल कर रहा है। दरअसल, उस सृष्टिकर्ता का एक ही स्वरूप है, सभी के अंदर उसी की ज्योति प्रज्वलित है, इसलिए उसी एक परमपिता परमेश्वर की बंदना करनी चाहिए,

*खाक बाद आतिश औ आब को रलाव है*
*अल्लाह अभेद सोई पुरान औ कुरान ओई*
*एक ही सरूप सबै एक ही बनाव है*

जो ईश्वर मंदिर में है, वही मसजिद में है वही पूजा में है और वही नमाज में है। आदमी-आदमी तो सभी एक ही हैं, यह तो केवल हमारा भ्रम है, जो वे हमें अलग-अलग दिखायी पड़ते हैं। देव-अदेव, यक्ष-गंधर्व और हिंदू-मुसलमान सब एक ही हैं, इनमें जो अंतर दिखायी देता है, वह केवल उनके अलग-अलग देश और वेश-भूषा के कारण है। क्योंकि, सभी की आंखें एक-जैसी हैं, कान-एक-जैसे हैं, शरीर एक-जैसा है, बोली-वाणी एक-जैसी है सभी की देह मिट्टी हवा, आग, पानी के मेल से बनी है, इसीलिए ईश्वर और अल्लाह में कोई भेद नहीं है। वही पुराण में है, और वही कुरान में है। सब का एक ही स्वरूप है और एक ही बनाव है, इसलिए सब को एक ही मानना चाहिए।
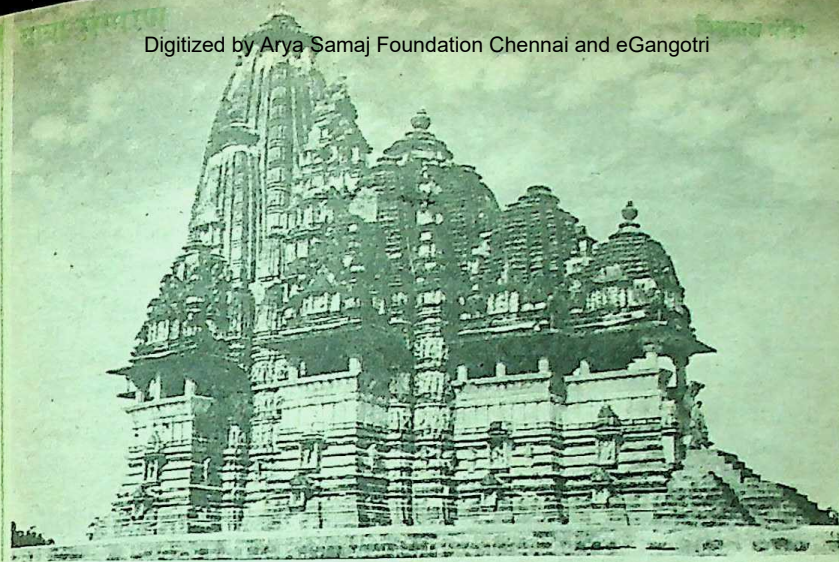
***इन मंदिरों में कहीं कोणार्क की प्रतिच्छवि दिखायी पड़ती है, तो कहीं दक्षिण भारत के कुछ मंदिरों की झलक । देश-विदेश के शोधार्थियों ने इन पर जमकर काम किया है । अनुसंधान अभी भी चल रहे हैं ।***

# खजुराहो की एक शाम

● डॉ. श्याम सिंह शशि

सुना है शामे अवध कभी कलकत्ता और बंबई की शाम की तरह प्यालों में खनकती आती थी और रात के रंगीन मिजाजों में बदल जाती थी । दिल्ली में तो दफ़्तरों के ओवरटाइम ही आदमी को बूढ़ा कर देते हैं । इसलिए यहां वह आनंद कहां ? हां, विष्णु प्रभाकरजी के काफी हाउस अपवाद हो सकते हैं । पर वहां भी साहित्य के अलंबरदार सृजन की अपेक्षा व्यक्ति की टांग खींचने में ही शाम का कचूमर निकाल देते हैं । मेरे-जैसे बहुधंधी लेखक के लिए ये सब दृश्य अब अतीत के विषय बनकर रह गये हैं । शामें मैंने भी देखी हैं देश में भी और विदेश में भी । पर, इन शामों में मैं अपने को प्रायः अकेला पाता रहा हूं (कुछ अपवादों को छोड़कर) । ग्रामीण वातावरण और संस्कारों में पल्लवित व्यक्तित्व की नियति के कारण भी ।

**खर्जुर वाटिका खजुराहो**

पर यह तो खजुराहो की शाम है । खजुराहो

जहां कभी सौंदर्य से सैक्स तक चर्चा के विषय रहते होंगे । कवियों और शिल्पकारों ने योग और भोग को साथ-साथ जिया होगा । दो दिन से इस प्राचीन नगरी में उन अतृप्त मूर्तियों का अध्ययन कर रहा हूं जिनके लिए सन १३३५ में इब्नबतूता ने यहां की यात्रा की थी और उससे भी पूर्व चीनी यात्री ह्वेन सांग सन ९४१ में इन्हें पढ़ने के लिए यहां पहुंचा था । प्रसिद्ध इतिहासकार अलब्रूनी सन १०३१ में इस नगरी के भ्रमण का मोह संवरण नहीं कर सका था । उसने एक झील तथा उसके चारों ओर मंदिरों का उल्लेख अपने ग्रंथ में किया है । इब्नबतूता के अनुसार यह स्थल खजूरा नाम से प्रसिद्ध था । वैसे इसकी व्युत्पत्ति के बारे में कहा जाता है कि कभी इस नगर के द्वार पर दो स्वर्ण वर्ण के खजूर वृक्ष थे जो द्वार को सुशोभित करते थे । ऐसी भी मान्यता है कि यहां कभी खजूर के वृक्ष बड़ी संख्या में पाये जाते थे इसलिए इसे खर्जुर वाटिका, खजुरपुरा या खजुराहो के नाम से पुकारा जाने लगा ।

खजुराहो भरा होगा कभी खजूरों के वृक्षों से, पर मुझे तो इस संध्या में दूर-दूर तक कोई खजूर का वृक्ष दिखायी नहीं पड़ रहा । लगता है वे खजूर बहुत मीठी रही होंगी । जरूर कोई फलों सहित निगल गया उन्हें ! यहां मिठाइयां भी महंगी हैं— और बातें भी । टैक्सी वाले, रिक्शावाले, होटलवाले, गाइड और छोटे-मोटे व्यापारी बस बातों का ही तो खाते हैं । मेरे होटल 'हारमोनी' का मालिक भी चार-पांच विदेशी भाषाएं जानता है । यहां ऐसे अनेक टूरिस्ट आते हैं जिन्हें फ्रेंच, जरमन, स्पेनिश तथा इटेलियन के अतिरिक्त न अंगरेजी आती है और न हिंदी । होटल मालिक गंगाजी का कहना है कि आजकल बातों से भी काम नहीं चलता । देश-विदेश में अशांति के कारण टूरिस्ट भी कम आने लगे हैं । अतः कारोबार ठप्प पड़े हैं ।

### पुरानी बस्ती में

कल यहां के मंदिरों को देखने के बाद पुरानी बस्ती में गया था । एक इंटर स्कूल, एक बालिका विद्यालय तथा दो पब्लिक स्कूल देखकर लगा कि इस नगरी में बड़ा विकास

विष्णु

हुआ होगा । एक शिक्षित व्यक्ति से बतियाता हूं । पूरा नाम याद नहीं रहा शायद कोई श्री खरे थे । कुछ समाज शास्त्रीय प्रश्न किये तो पता चला इस बस्ती में चंदेल राजपूत, ब्राह्मण, कुर्मी तथा हरिजन और मुसलमान भी रहते हैं । लोग सामान्यतः कृषि, नौकरी, व्यापार तथा मजदूरी आदि काम-धंधों में लगे हैं किंतु अधिकांश लोग टूरिस्ट यात्रियों के बलबूते पर अपनी रोजी-रोटी कमाते हैं । टैक्सीवालों के मजे हैं । बड़े ऊंचे रेट रखे हुए हैं । हवाई अड्डे से शहर तक लगभग ५ मील की दूरी के पचास रुपये ऐंठ लेते हैं । आप अकेले हों या किसी के साथ, एक पैसा भी कम नहीं होगा । संयोग से एक माथुर दंपती उसी विमान से मेरे साथ यहां उतरे थे । उन्होंने टैक्सीवाले से पूरी टैक्सी के पचास रुपये तय किये थे । अकेला देखकर अपने साथ बैठने का आग्रह करने लगे । लेकिन टैक्सीवाले ने मुझसे अलग से पचास रुपये वसूल किये । अंततः मैंने नगर के मंदिरों को रिक्शा से ही देखने का फैसला किया । रिक्शावाले को यदि कुछ फालतू पैसा देना पड़े तो उसके सूजे हुए पांव आपको दुआएं अवश्य देंगे ।

रिक्शावाला केवल बीस रुपये में खजुराहो के सभी मंदिर घुमा देता है । टैक्सीवाला डेढ़ सौ रुपये मांग रहा था । यात्रा में पैसा तोल-तोल कर खर्च करना चाहिए । दुःख-तकलीफ में पैसा ही काम आता है । अतः उसका सदुपयोग करने से यात्राएं सुखद रहती हैं । यह गुर मैंने वर्षों पूर्व सीख लिया था । पर मैंने तो विश्व यात्राएं बिना पैसे के भी की हैं— हां तब जीवन चढ़ते सूरज की तरह था और अब सिर से खिसकने लगा है पश्चिम के सूर्य की किसी शाम की प्रतीक्षा में । हम समय को तेजी से पानी के गिलास की तरह गटक जाते हैं और फिर रह जाता है एक रसहीन गन्ने के छिलके-सा जीवन । कुछ कड़वी-मीठी स्मृतियां— कुछ चेहरे— कुछ हसीन शामें— कुछ अनुत्तरित प्रश्न !

### कुछ अनुत्तरित प्रश्न

तो लीजिए इस शाम को ऐसे ही कुछ प्रश्न मेरे सामने खड़े हो गये हैं । पर ये प्रश्न चंदेल राजाओं के लिए हैं जिनके शार्दूलों की आवाजें कहीं यहां के वातावरण में आज भी गूंज रही हैं ।

यहां के मंदिरों से प्रश्न करता हूं । आचार्य रजनीश को योग से समाधि तक का दर्शन यहां की प्रतिभाओं ने तो नहीं दिया ? पता नहीं मेरे मन को इस दर्शन ने क्यों कभी प्रभावित नहीं किया । यदि ऐसा दर्शन विश्व को देना ही था तो हमारे चार्वाक भी क्या बुरे थे ! सैकड़ों वर्ष पूर्व यह भौतिकवादी फिलासफी हमारे यहां जन्मी थी । यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्, ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत् । गालिब ने भी शायद उनकी कुछ-कुछ नकल की होगी । 'मुफ्त की पीते थे मय और कहते थे कि हम । रंग लायेगी हमारी फाकामस्ती एक दिन ।' वात्स्यायन के कामसूत्र मेरे मन मस्तिष्क को झकझोर जाते हैं । दूर महुआ के एक वृक्ष में गूंजती कोई आदिवासी धुन राजेन्द्र अवस्थी के 'जंगल के फूल' की याद ताज़ा कर जाती है । महुआ और सागौन के वृक्ष बड़ी संख्या में यहां के आदिवासियों की सेवा करते हैं । महुआ की शराब ले जाता हुआ क्रांदर आदिवासी मिलता है । इस जनजाति का
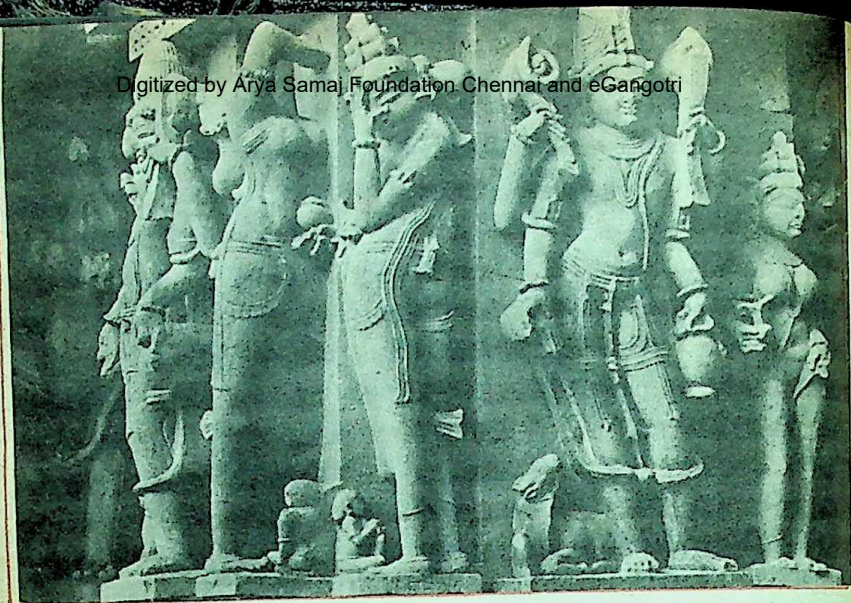
हल्की-हल्की बूंदाबांदी । जलधर मंदिर की अप्सराओं के सद्यस्नाता स्वरूप को देखने को लालायित है । चंद्रमा बादलों की ओट में लुकता-छिपता है । शायद मौखिक इतिहास के उस पंकिल पृष्ठ को उद्घाटित कर रहा है जिसके अनुसार सौंदर्य की देवी हेमवती रतिकाल में जब स्नान कर रही थी तो चंद्रमा ने उसका आलिंगन कर लिया था ।

नाम मैंने पहले कभी नहीं सुना था । पता चला कि ये लोग कत्था के लिए लकड़ी इकट्ठी करते हैं तथा उसे बेचकर अपना पेट पालते हैं । वे जंगली जानवरों का शिकार करते हैं तथा यायावरी जीवन जीते हैं । मैंने गद्दी, गूजर की तरह विश्व के यायावरों के त्रासद जीवन को निकट से देखा है इसलिए इनके दुःख-दर्द को दूर से ही भांप गया हूं ।

खजुराहो की आलिंगनबद्ध मूर्तियों से पूछता हूं । तुम्हारे निर्माताओं को इतने भयंकर आसन किसने सिखाये ? लगता है योरोप के लोग यहां इसलिए भी आते होंगे क्योंकि यहां की मूर्तियां ब्लू फिल्मों से आगे की स्थितियां दर्शाती हैं । नारी के अंग-प्रत्यंगों का चित्रण उन दिनों भारत के कुछ क्षेत्रों में वर्जना का विषय नहीं था । शिल्पियों ने बेझिझक उन्हें अपनी छैनी से बड़े धैर्य और उत्साह के साथ घड़ा होगा । इस कला के समक्ष इटली और फ्रांस की वास्तुकला भी बहुत पीछे छूट जाती है ।

### म्यूजियम में

मूर्तियों के सांस्कृतिक अध्ययन के लिए खजुराहो म्यूजियम के सहायक अधीक्षक से बात चलती है । कन्नड़ भाषाभाषी पुरातत्व शास्त्री श्री के. एम. सुरेश आज ही स्थानांतरित

होकर आये हैं । अन्य पुरातत्व शास्त्री शुक्लाजी भी उपस्थित हैं । कुछ प्रश्न अनायास उपस्थित होते हैं । और उनके उत्तर भी ।

"इस कला के कीर्तिमान स्थापित करने में शिल्पियों का कमाल था या राजाओं का ?"

"दोनों का ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि कला तो राज्याश्रय में ही पलती रही है ।"

"तो फिर कोई कलाकार या साहित्यकार अपनी सरकार से प्राप्त पुरस्कारों को वापिस कर देते हैं लेकिन व्यापारियों के पुरस्कार बड़े चाव से स्वीकार कर लेते हैं ? ऐसा क्यों ?"

"हिप्पोक्रेसी ।"

मैं पुनः प्रतिमाओं के अध्ययन में लग जाता हूं । सर्वप्रथम हम यहां के प्रमुख मंदिरों की चर्चा करते हैं । इन्हें तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है । पश्चिमी समूह : (१) चौंसठ योगिनी मंदिर, (२) लालगुआन महादेव मंदिर, (३) कंदारिया महादेव मंदिर, (४) महादेव मंदिर, (५) देवी जगदंबा मंदिर, (६) चित्रगुप्त (भरतजी का मंदिर), (७) चोपड़ा तालाब, (८) विश्वनाथ तथा नंदी मंदिर, (९) पार्वती मंदिर, (१०) लक्ष्मण-रामचंद्र अथवा चतुर्भुज मंदिर, (११) मृत्युंजय महादेव मंदिर, (१२) वराह मंदिर ।

दक्षिण पूर्वी मंदिर : (१) हनुमान मंदिर, (३) ब्रह्मा मंदिर, (३) वामन मंदिर, (४) कांगड़ा गढ़, (५) जवेरी मंदिर, (६) घंटाई मंदिर, (७) आदिनाथ मंदिर, (८) पार्श्वनाथ मंदिर।

दक्षिण समूह : (१) दुलादेव मंदिर, (२)

[illegible] विश्वनाथ मंदिर की एक प्रतिमा
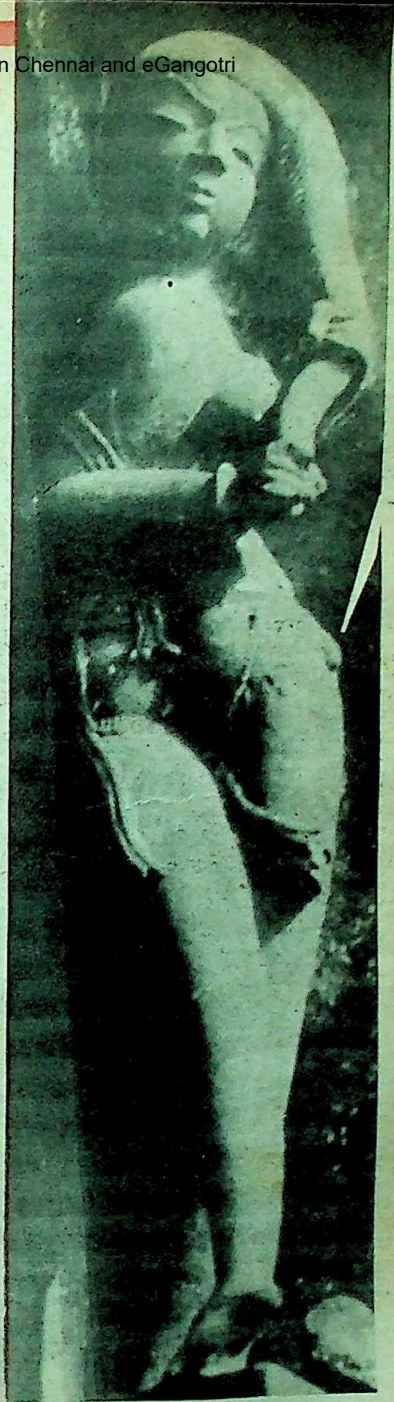
जातकारी मंदिर ।

चंदेलों ने यहां ८५ विशालकाय वैष्णव तथा जैन मंदिर बनवाये थे जिनमें से अनेक भवन आक्रमण में ध्वस्त हो गये । अब केवल उपर्युक्त मंदिर ही बचे हैं जिन्हें देखने के लिए विश्व के कोने-कोने से कलाप्रेमी यहां आते हैं ।

**कला पारखी समाज का उन्मुक्त चिंतन**

चौंसठ योगिनी मंदिर खजुराहो का सबसे प्राचीन मंदिर है जो ८०० ई. से भी पुराना है । योगिनी काली देवी की सेविकाएं हैं । १०३ फुट लंबे और ६० फुट चौड़े विस्तृत प्रांगण में चारों और पैंसठ कोठरियों के परिवृत्त थे जिनमें अब केवल ३५ ही बचे हैं ।

कंदारिया महादेव मंदिर चौंसठ योगिनी मंदिर के उत्तर में स्थित है । यह यहां के मंदिरों में सबसे बड़ा है और स्थानीय गृह निर्माण कला का उत्कृष्ट नमूना है । यह १०२ फुट ३ इंच लंबा, ६६ फुट १० इंच चौड़ा तथा १०१ फुट ९ इंच ऊंचा है । प्रवेश द्वार पर सुचित्रित तोरण है जिस पर विभिन्न मूर्तियां उत्कीर्ण हैं । नाना वाद्ययंत्र, डरावने घड़ियाल, देवी-देवता, नृत्य, राग-विराग, जन्म-मरण, आलिंगनबद्ध प्रेमी युगल, यत्र-तत्र उत्कीर्ण हैं । खजुराहो की शाम सुर बालाओं की प्रतिमाओं के नूपुर, पायल, पैंजनी, तोड़ल तथा मध्य भाग के कटिबंध, मणि, झालर एवं स्वर्ण पट्टिका और वक्षस्थल पर दो लड़ी से सात लड़ी तक मणि माला, बैजयंती, हाथों के स्वर्णवलय, मणिकंठाने, भुजबंध, बंधमुंहा, चूड़ा, दामिनी, शीशफूल, सिर पर पुष्पमाला, जटा मुकुट, पुष्प मुकुट आदि का अंकन न केवल कलाकार की कला का चरमोत्कर्ष दर्शाता है बल्कि तत्कालीन कला पारखी समाज के उन्मुक्त चिंतन को भी रेखांकि[त] करता है ।

इन मूर्तियों में देवी-देवता तथा उनके प्रेमालाप के उत्कीर्ण दृश्यों के बाद गर्भ गृह में शिवलिंग की स्थापना सैक्स के समस्त प्रश्नों का समाधान खोजने लगती है । कहीं ऐसा तो नहीं कि काम की चरम परिणति भी ईश्वरीय प्रेम में [?] होती है !

हमारी दृष्टि अन्य मंदिरों की ओर पड़ती है । कंदारिया और जगदंबी मंदिर के बीच महादेव का मंदिर है जिससे किसी शिवालय का आभा[स] मिलता है । चित्रगुप्त या भारत के मंदिर सूर्य भगवान को समर्पित हैं । सात घोड़ों के रथ प[र] सवार पांच फुट ऊंची मूर्ति मंडप में स्थित है । चतुर्भुज मंदिर में ग्यारहवीं शताब्दी का विष्णु मंदिर जतकारी ग्राम से लगभग तीन फर्लांग दक्षिण में स्थित है । ९ फुट ऊंची विष्णु भगव[ान] की महाकाय मूर्ति किरीट मुकुट तथा आभूषणों से अलंकृत है और रामचंद्र-लक्ष्मण मंदिर की बाहरी दीवार पर सबसे अधिक कामोत्तेजक चित्र दिखायी पड़ते हैं । जैन मंदिरों में भगवान महावीर के कई रूप देखे जा सकते हैं ।

**अन्य मंदिरों की प्रतिच्छवियां**

इन मंदिरों में कहीं कोणार्क की प्रतिच्छवि दिखायी पड़ती है तो कहीं दक्षिण भारत के कु[छ] मंदिरों की झलक । देश-विदेश के शोधार्थियों ने इन पर जमकर काम किया है । अनुसंधान अभी भी चल रहे हैं । पर मेरे नये प्रश्नों के उ[त्तर] कोई नहीं दे पा रहा । लगता है आज की शा[म] इन मंदिरों पर यों ही पसर जाएगी । घंटे-घड़ियालों की सुनसान संध्या । मैं इन्हें निहारने के लिए और आगे बढ़ता हूं पर वहां [...]

मुख्य दरवाजा बंद है । छह बजे के बाद यहां कोई प्रवेश नहीं होगा । दूर से ही दृष्टिपात करता हूं । आज वर्षा के आसार दिखायी पड़ते हैं । प्रधानमंत्री चंद्रशेखर भी इस तरफ आये थे । पर उन्हें तो सीधे किसी राजनीतिक सम्मेलन में सम्मिलित होना था । मंदिरों की मूर्तियां उन्हें कुछ क्षणों के लिए भी नहीं रोक सकीं ।

हल्की-हल्की बूंदाबांदी । जलधर मंदिर की अप्सराओं के सद्यस्नाता स्वरूप को देखने को लालायित है । चंद्रमा बादलों की ओट में लुकता-छिपता है । शायद मौखिक इतिहास के उस पंकिल पृष्ठ को उद्घाटित कर रहा है जिसके अनुसार सौंदर्य की देवी हेमवती रतिकाल में जब स्नान कर रही थी तो चंद्रमा ने उसका आलिंगन कर लिया था । चंदेले चंद्रमा के वंशज कहे जाते हैं । उसी के पुत्र ने इन मंदिरों का निर्माण कराया था । कई अन्य जनश्रुतियां भी हैं ।

मंदिरों का मोह छोड़कर यहां के केफेटेरिया होटल तथा अन्य शयनागारों को देखता हूं । आपके पास पैसे हैं तो १००० रुपये का रात्रि आवास भी ले सकते हैं और चाहें तो पच्चीस रुपये रोज की डारमेटरी भी । मेरी तरह हैं तो सौ-डेढ़ सौ रुपये प्रतिदिन का होटल भी । निश्चय ही अशोक और चंदेल होटल महंगे हैं किंतु टूरिस्ट विलेज में साठ-सत्तर रुपये प्रतिदिन तक का बढ़िया निवास भी मिल सकता है ।

भोजन निरामिष तथा सामिष दोनों प्रकार के हैं । राजा कैफे स्वीट्ज़रलैंड के जिलेज की ब्रिटिश पत्नी चलाती हैं । जिलेज ने केन नदी पर एक गृह का निर्माण किया है । यह स्थान खजुराहो से लगभग तीस मील दूर है । मैं भी वहां गया था । बासठ वर्षीय श्री जिलेज की जीवट देखकर आश्चर्य होता है । स्वीट्ज़रलैंड की सुख-सुविधा छोड़कर प्राकृतिक वातावरण में आदिवासी-सा जीवन बिताना उन भारतीयों के लिए एक संदेश देता है, जो पश्चिम की चकाचौंध की ओर बेतहाशा भाग रहे हैं । इस क्षेत्र में राजा भैया का शासन भी चलता है ।

आज दिन में मैंने बहुत-सी कहानियां सुनीं । कुम्हारों की बस्ती से लेकर कारीगरों तक के घर देखे । खजुराहो की यह मदहोश शाम निभृत आकाश से इन अद्भुत प्रतिमाओं के चितेरों से बतियाती है ।

*अब न रहे वे पीने वाले—*
*अब न रही वह मधुशाला ।*

बच्चन की इन पंक्तियों में उत्तर पाने का प्रयास करता हूं कि अंधेरा और घना होने लगता है और खजुराहो की यह शाम किसी विदेशी कैमरे में बंद हो जाती है— रात की बाहों में समा जाती है ।

—अनुसंधान,
बी ४/२४५, सफदरजंग एनक्लेव,
नयी दिल्ली

***विश्वास जीवन है, अविश्वास मृत्यु ।*** — रामकृष्ण परमहंस

***विश्वास प्रेम की सीढ़ी है ।*** — प्रेमचंद

**मनुष्य के चरित्र का पता उसकी बातचीत से चल जाता है ।** —मीनेंडर

*देश में लगभग १४.३ करोड़ हैक्टर कृषि भूमि है, जिसमें ४ करोड़ हैक्टर बंजर भूमि की श्रेणी में आ गयी है । भुखमरी हटाने हेतु खाद्य उत्पादन लगातार बढ़ना चाहिए और पर्यावरण संरक्षण हेतु जनसंख्या पर नियंत्रण होना चाहिए ।*

लेखक देहरादून में भारतीय वानिकी अनुसंधान परिषद के महानिदेशक हैं ।

# पर्यावरण एवं वन

● डॉ. डी. एन. तिवारी

पर्यावरण शब्द जीवों की अनुक्रियाओं को प्रभावित करनेवाली समस्त भौतिक, रासायनिक तथा जैविक परिस्थितियों का योग है । हमारे चारों ओर जो भी प्राकृतिक और मनुष्य द्वारा बनायी गयी वस्तुएं हैं, वे सब मिलकर पर्यावरण बनाती हैं । दूसरे शब्दों में इसे हम 'जीव-मंडल' (बायोस्फियर) भी कह सकते हैं, जो जल-मंडल (हाईड्रोस्फियर), स्थल-मंडल (लीथोस्फियर) तथा वायु-मंडल (ऐटमासफियर) के जीवन-युक्त भागों का योग होता है ।

जीव मंडल के इन विभिन्न भागों के संबंध में हैस का कथन है कि, यद्यपि वायु में अनेक प्रकार के प्राणी तथा पादप प्रवर्ध विचरण करते रहते हैं, तथापि वायु मंडल में कोई निश्चित अभिलक्षण तथा स्थायी निवास नहीं होते हैं । जल मंडल में समुद्रीय तथा लवण-जलीय दो जैव-चक्र होते हैं । स्थल-मंडल में केवल भूमि का समावेश होता है । इस प्रकार जीव-मंडल के संदर्भ में पर्यावरण का तात्पर्य उस समूची भौतिक, रासायनिक एवं जैविक व्यवस्था से है, जिसमें जीवधारी रहते हैं, बढ़ते-पनपते हैं और अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों का विकास करते हैं ।

अभी तक तो पृथ्वी ही एकमात्र जाना ग्रह है, जिस पर जीवन विद्यमान है । पृथ्वी पर लाखों प्रकार के जीव रहते हैं । वे सभी आपस में एक-दूसरे से तथा अपने आस-पास की निर्जीव वस्तुओं के साथ किसी-न-किसी तरह से संबंधित हैं । तरह-तरह के जीव प्रकृति में कैसे रहते हैं और एक-दूसरे पर उनका क्या असर होता है, इसी के अध्ययन को पारिस्थितिकी (इंकोलाजी) कहते हैं ।

प्रकृति में जीवों और निर्जीव वस्तुओं के बीच एक संतुलन बना रहता है । जब कोई एक वस्तु जरूरत से अधिक बढ़ या घट जाती है तब यह संतुलन बिगड़ जाता है । सतत विकास, पारंपरिक आर्थिक विकास एवं पर्यावरण संरक्षण की अवधारणाओं को समझना आवश्यक है । सतत विकास की अवधारणा में मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति पर अधिक बल है । पर्यावरण संरक्षण का आदर्श है 'विश्व

वनों से ईंधन समेटती लड़कियां

में जो प्राकृतिक संसाधन शेष हैं उनका जहां तक संभव हो यथावत संरक्षण करना ।' इस प्रकार सतत विकास तथा पर्यावरण संरक्षण दोनों अवधारणाएं एक-दूसरे के समीप हैं पर भिन्न हैं । विश्व पर्यावरण एवं विकास आयोग ने स्पष्ट किया है, 'सतत विकास का उद्देश्य है सभी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करना और सभी को बेहतर जिंदगी की अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने के सभी संभव अवसर देना ।'

## पर्यावरण एवं विकास

सतत विकास और पारंपरिक आर्थिक विकास की अवधारणा में बहुत अंतर है । जहां सतत विकास का उद्देश्य संसाधनों और पर्यावरण के क्षरण, सांस्कृतिक विघटन और सामाजिक अस्थिरता को न्यूनतम स्तर तक कम करना है, वहीं पारंपरिक आर्थिक विकास सिद्धांतों में इन सभी बातों को नगण्य महत्त्व दिया गया है ।

पर्यावरण संरक्षण और पारंपरिक आर्थिक विकास को प्रायः एक-दूसरे से एकांतिक बताया जाता है और वे हैं भी । विकासशील देशों में अनेक सुरक्षित क्षेत्र मुख्य रूप से वनस्पतियों तथा वन्य प्राणियों के संरक्षण के लिए हैं । उनकी सफलता तभी संभव है, जब मानव एवं पालतू पशुओं के उन पर अतिक्रमण को रोका जाए । संरक्षित क्षेत्रों में गैर कानूनी प्रवेश, वन्य प्राणियों को सताया जाना, अवैध शिकार, वनस्पतियों की अवैध कटाई, अवैध चराई तथा आग लगने के प्रकरण को रोका जाए ।

भारत सरकार ने निर्णय लिया है कि आयोजन प्रक्रिया तथा राष्ट्रीय विकास नीतियों का कार्यान्वयन करते समय निम्नांकित मुद्दों पर अनिवार्य रूप से ध्यान रखा जाना चाहिए—
१. पर्यावरण अपने जीवित एवं निर्जीव संसाधनों के आय, राष्ट्रीय विकास और सामाजिक समृद्धि

के लिए मूलभूत आधार प्रस्तुत करता है । अतः २. पर्यावरण को जनसंख्या वृद्धि, गरीबी और प्राकृतिक संसाधनों के दुरुपयोग व अनियोजित उपयोग से पैदा हुए दबाव में अत्यधिक खतरा है । इसलिए हमारी सारी योजना और प्रगति इस सत्य को ध्यान में रखकर होनी चाहिए कि यदि प्रकृति को नष्ट करनेवाला कोई भी कार्य करेंगे तो अंत में प्रकृति हमारा ही नाश कर देगी ।

### पर्यावरण प्रदूषण

पर्यावरण का कोई भी भाग जब प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष विकल्प के रूप में भौतिक, ऊष्मीय जैविक अथवा रेडियोधर्मी गुणों के द्वारा किसी जीवित प्रजाति के स्वास्थ्य, सुरक्षा अथवा कल्याण में बाधक अथवा संहारक रूप धारण करता है तो उसे प्रदूषण कहते हैं । बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने हेतु औद्योगीकरण एवं प्राकृतिक संसाधनों के असीमित दोहन से पर्यावरण प्रदूषण बढ़ रहा है । ये प्रदूषण हैं—

### भूमि प्रदूषण

भूमि के प्रति अविवेकपूर्ण मानव व्यवहार के फलस्वरूप, एक अनुमान के अनुसार भारत में ३२.९ करोड़ हैक्टर में १७.५ करोड़ हैक्टर भूमि झूम कृषि, खनन कार्य, अत्यधिक चराई, हवा और जल के कटाव तथा नमकीन या क्षारीय होने के कारण अनुत्पादक हो गयी है ।

खानों की खुदाई तथा निर्माण कार्यों के लिए भूमि की खुदाई तथा बढ़ती आबादी को जलाऊ लकड़ी व चारे की पूर्ति के लिए वनों की सफाई हो जाने के कारण पहाड़ों के ढलान अस्थिर होते जा रहे हैं, जिससे मिट्टी का कटाव एवं बहाव बढ़ गया है । अनुमान है कि प्रतिवर्ष १२०० करोड़ टन उपजाऊ मिट्टी पानी के साथ बह जाती है । बंजर तथा ऊसर भूमि का क्षेत्रफल लगातार बढ़ रहा है । वन-विनाश व भू-स्खलन से बाढ़ एवं सूखा बार-बार पड़ने लगा है ।

### जल-प्रदूषण

पानी के मुख्य स्रोत कुएं, तालाब, झरने और नदियां हैं । हमारे देश में औसतन ११७० मिलीमीटर वर्षा होती है । एक अनुमान के अनुसार पूरे देश के उपयोग हेतु १९०० विलियन क्यूबिक मीटर जल की आवश्यकता है । जिसका ८६ प्रतिशत भाग प्रयोग कर लेने के बाद नदी, नाले एवं बेकार भूमि में बहते या इकट्ठे जल के रूप में देखा जा सकता है ।

पानी जीवन रक्षक है, किंतु प्रदूषित होकर मौत का कारण भी बन सकता है । जल-प्रदूषण से पेचिश पीलिया, मोतीझिरा, हैजा और पेट के कीड़े जैसे रोग तथा गंदे एवं ठहरे हुए पानी में पैदा होनेवाले मच्छर से मलेरिया जैसे रोग होते हैं, जिनसे एक अनुमान के अनुसार देश में प्रतिवर्ष लगभग २० लाख व्यक्तियों की अकाल मृत्यु होती है ।

आज देश की ज्यादातर नदियां, गंदे नालों में तब्दील होकर विषैली होती जा रही हैं । राष्ट्रीय पर्यावरण, औद्योगिक संस्थान (एन.ई.ई.आर.आई.) की एक रिपोर्ट के अनुसार ७० प्रतिशत तक देश की नदियों का पानी दूषित हो चुका है ।

जल-प्रदूषण के दो कारण हैं— एक प्राकृतिक और दूसरी अप्राकृतिक । प्राकृतिक अशुद्धियां विभिन्न लवणों जैसे सोडियम, पोटेशियम, कैल्सियम, मैगनीशियम, कार्बोनेट और बायो-कार्बोनेट तथा सल्फेट आदि से होती

नर्मदा आंदोलन में व्यस्त लोग

है । अप्राकृतिक कारणों में मनुष्य द्वारा विसर्जित मलमूत्र, शव, कल-कारखानों द्वारा विसर्जित पदार्थ आदि हैं । चर्म शोधशाला, कागज उद्योग, शर्करा, मद्य निर्माणशाला, रसायन और इस्पात के कारखाने, कोयला उद्योग, रबर उद्योग और तेल शोधक कारखानों द्वारा अनेक नदियों का जल प्रदूषित होता है ।

भारत के समुद्र भी प्रदूषण से मुक्त नहीं हैं । जहाजरानी, परमाणु अस्त्रों के परीक्षण तथा समुद्र में फेंकी गयी गंदगी के कारण हमारे समुद्र भी प्रदूषण-ग्रस्त है । भारत के समुद्रों में प्रतिदिन ४.२ विलियन गैलन मल, जल तथा लगभग डेढ़ लाख डिटरजेंट गिरता रहता है ।

## वायु-प्रदूषण

वायुमंडल में पायी जानेवाली समस्त गैसें एक निश्चित अनुपात में होती हैं । कुछ अवांछनीय तत्वों के प्रवेश से इस अनुपात में असंतुलन आ जाता है, तो यह जीवधारियों के लिए घातक हो जाती है । ये अवांछनीय कारक विभिन्न प्रकार की अनावश्यक जैसे, कार्बन के कण धुआं, खनिज कण आदि हैं । विभिन्न कारखानों से निकलनेवाला धुआं, जिसमें सल्फर डाईआक्साइड, कार्बन डाईआक्साईड, कार्बन मोनोआक्साइड, नाईट्रोजन आक्साइड, ओजोन आदि गैसें प्रमुख हैं । इसके साथ ही विभिन्न धातुकर्मी प्रक्रियाओं के द्वारा भी निकलनेवाले धुएं में विभिन्न प्रकार के धात्विक तत्व विद्यमान रहते हैं । इसके अलावा दैनिक उपयोग में अनेवाले स्वचालित वाहन आदि भी अनेकानेक प्रदूषकों से युक्त दूषित वायु निकालते हैं । इस प्रकार की वायु के सेवन से दमा, खांसी, फेफड़े के रोग, त्वचा रोग एवं अन्य श्वांस संबंधी व्याधियां उत्पन्न होती हैं ।

विश्व में इस समय केवल खनिज ईंधनों को जलाने से पैदा होनेवाली कार्बन डाईआक्साइड गैस की वार्षिक मात्रा ५०० करोड़ टन तक जा पहुंची है । यदि यह इसी प्रकार बढ़ती रही तो 'ग्रीन हाऊस प्रभाव' के कारण धरती का औसत तापक्रम २ डिग्री सैल्सियस तक बढ़ जाने की

आशंका है । ग्रीन हाऊस प्रभाव' यह होता है कि सूरज की किरणें जब धरती के वातावरण में प्रवेश करती हैं, तो कार्बन डाईआक्साइड गैस कांचवाले पौधाघरों के पारदर्शी कांच जैसा कार्य करती है । यह गैस सूरज की किरणें जमीन तक तो पहुंचने देती है परंतु उससे टकराकर वापस ऊपर जानेवाली गरमी को कुछ हद तक कैद कर लेती है । इस प्राकृतिक 'ग्रीन हाऊस प्रभाव' से धरती सदैव १५ डिग्री सेंटीग्रेड की गुनगुनी गरमी में रहती है । लेकिन कार्बन डाईआक्साईड और 'ग्रीन हाऊस प्रभाव' वाली अन्य गैसों की मात्रा बढ़ती गयी तो धरती पर गरमी बढ़ती चली जाएगी । इस बढ़ी हुई गरमी से ध्रुवों की बर्फ पिघलने लगेगी । परिणाम यह होगा कि समुद्र का जल स्तर १.४ से २.२ मीटर ऊपर उठ जाएगा और समुद्र के तटवर्ती भाग समुद्र में डूब जाएंगे ।

### ओजोन की परत का ह्रास

ओजोन की परत सिर्फ अंटार्कटिका ही नहीं, पूरी दुनिया में सिकुड़ रही है, अगर वह इसी तरह सिकुड़ती रही तो धरती पर पराबैगनी किरणों का विकिरण बढ़ेगा । इससे त्वचा के कैंसर, पेड़-पौधों के घनेपन में रुकावट आने और मौसम तथा जलवायु में बदलाव का खतरा पैदा हो जाएगा ।

क्लोरोफ्लोरो कार्बन-११ और क्लोरोफ्लोरो कार्बन-१२ गैस का उत्पादन वर्ष १९७६ में ७,२५,००० टन पहुंच गया । हल्की होने से ये गैसें ओजोन परत तक आसानी से पहुंच जाती हैं तथा उसे दूसरी गैसों में बदल देती है जिससे ओजोन की परत समाप्त होती जाती है । ओजोन की परत को बचाने के लिए लगातार यह प्रयास किया जा रहा है कि क्लोरोफ्लोरो कार्बन गैस का उत्पादन कम किया जाए ।

### अम्लीय वर्षा

सल्फर डाईआक्साइड एवं नाइट्रोजन परआक्साइड का उत्पादन लगातार बढ़ रहा है । ये दोनों गैसों का जब आक्सीकरण होता है, तब अम्ल एवं नाइट्रिक एसिड का निर्माण होता है । दोनों गैसें नम हवा के संपर्क में आने पर अम्लीय वर्षा करती हैं तथा तालाबों एवं झीलों में मुख्य रूप से जल जीव-जंतुओं का सर्वनाश कर देती हैं ।

### ध्वनि प्रदूषण

लगभग सात दशक पूर्व नोबल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक राबर्ट काच ने शोर के बारे में विचार व्यक्त करते हुए कहा था, "एक दिन ऐसा आएगा जब मनुष्य के सबसे बुरे शत्रु के रूप में निर्दयी शोर से सामना पड़ेगा ।" वह दुखद दिन अब आ गया है जब हमें ध्वनि प्रदूषण के संकट का सामना करना पड़ रहा है ।

पर्यावरण-प्रदूषणों में ध्वनि-प्रदूषण भी प्रमुख है । आज विश्व का कोई भी देश इस प्रदूषण से नहीं बचा है । ध्वनि-प्रदूषण एक 'विषैले रसायन' से भी अधिक घातक है । जब किसी स्रोत से निकलनेवाली ध्वनि की तीव्रता, स्पष्ट रूप से सुनने के लिए आवश्यक तीव्रता से अधिक हो जाए, तो ध्वनि का यह रूप 'शोर' के रूप में धारण कर लेता है ।

विश्व स्वास्थ्य संगठन से स्वास्थ्य सुरक्षा की दृष्टि से ध्वनि तीव्रता का मानक स्तर स्वीकृत किया है । इसके अनुसार दिन में ध्वनि की तीव्रता ५५ डेसीबल (ध्वनि नापने का इकाई) एवं रात्रि में ४५ डेसीबल होनी चाहिए । इससे

अधिक होना बहुत घातक होता है ।। तीव्रता से बढ़ता हुआ शहरों का औद्योगीकरण बृढ़ते वाहनों की संख्या व लाउडस्पीकरों इत्यादि ने ध्वनि-प्रदूषण को बेहद बढ़ा दिया है । ध्वनि प्रदूषण का दुष्प्रभाव केवल बहरेपन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि बेचैनी, मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन आदि पैदा करता है, जिससे रक्तचाप में कोलस्ट्राल की मात्रा बढ़ने की आशंका के साथ ही हृदय एवं पाचन तंत्र पर भी इसका कुप्रभाव पड़ता है ।

इन प्रमुख प्रदूषणों के अतिरिक्त रेडियो-धर्मी प्रदूषण भी संसार के लिए घातक है । इनमें यूरेनियम, रेडियम, थोरियम आदि आते हैं । परमाणु ऊर्जा का प्रयोग चाहे वह शांतिमय कार्यों हेतु हो, खतरे से खाली नहीं है । परमाणु संयत्र के रेडियोधर्मी पदार्थ २५,००० से लेकर ३ लाख से भी अधिक वर्ष तक कायम रहते हैं । रेडियोधर्मी तत्वों से निकली गामा किरणें रक्त में पहुंचकर लिम्फेटिक टिशू, अस्थिसज्ज, आमाशय, आंत की झिल्ली, डिंबाशय, बात-नाड़ी, मांस-पेशी आदि को प्रभावित करती है ।

एक अन्य प्रदूषण है ठोस अपशिष्ट प्रदूषण । प्रत्येक संयंत्र से विभिन्न प्रकार के ठोस अपशिष्ट का निस्तारण होता है । ठोस अपशिष्ट चाहे वह बहिस्राव परिचारण या धूल उत्सर्जन प्रतिप्राप्ति या कच्चे माल का संचालन तथा संसाधितकरण या अन्य ऐसी प्रक्रिया से हो, इसका विधिवत समाधान आवश्यक है । अत्यवस्थित ठोस अपशिष्ट प्रयोग यदि ठीक प्रकार से न किया जाए, तो इससे वायु-प्रदूषण तथा जल-प्रदूषण पैदा हो जाता है ।

हरित क्रांति, तीव्रता से बढ़ते औद्योगीकरण व शहरीकरण ने पर्यावरण पर इस तरह प्रभाव डाला है कि जिससे निम्न समस्याएं उठ खड़ी हुई हैं जैसे— १. वनों का विनाश, २. वन्य-जीवों एवं पेड़-पौधों की अनेक प्रजातियों के अस्तित्व को खतरा, ३. कुछ जनजातियों, वन्य-पशुओं एवं वनस्पति प्रजातियों का लुप्त हो जाना, ४. प्रलयकारी बाढ़ एवं सूखा, ५. गंदी बस्तियां, ६. बंजर भूमि का प्रसार, उत्पादकता में कमी, ७. बहुमूल्य सिंचाई परियोजनाओं की उपयोगिता समाप्त होने का खतरा, ८. अन्य समस्याएं आदि ।

## पर्यावरण संरक्षण के प्रयास

भारत में पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की दिशा में उठाये गये मुख्य कदम हैं : वैधानिक एवं संस्थागत उपाय, अनुसंधान, शिक्षा, प्रशिक्षण और जन-जागरूकता तथा जन-सहयोग का प्रसार । इस संबंध में :

पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम १९८६, जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम १९७४, जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) उपकर अधिनियम १९७७, वायु (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम १९८१, वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम १९७२, वन (संरक्षण) अधिनियम १९८० आदि कानून बनाये गये हैं । उन्हें कार्यान्वित करने और पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रमों की योजना बनाने में केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय मुख्य भूमिका निभाता है ।

भारतीय संविधान के भाग चार में राज्य की नीति के निर्देशक तत्व में ४२वें संशोधन द्वारा अनुच्छेद ४८-अ स्थापित किया गया, जिसमें

चौकसी के लिए बुर्ज थे । वैशाली का शासन एक सभा द्वारा किया जाता था । सभी निर्णय बहुमत के आधार पर लिये जाते थे ।

वैशाली के साथ वहां की गणिका अंबपाली का उल्लेख करना आवश्यक है । पाली ग्रंथ चीवरवस्तु, बिनयवस्तु के अनुसार अंबपाली अत्यंत रूपवती होने के साथ-साथ अत्यंत कुशल नर्तकी थी । वैशाली के सभी युवक उससे विवाह करना चाहते थे अतः वहां गृहयुद्ध की आशंका पैदा हो गयी थी । इसे टालने के लिए उसे नगरवधू बनने को बाध्य किया गया । अंबपाली एक रात का शुल्क ५० कर्षापण लेती थी । बाद में वह भगवान बुद्ध के प्रभाव में आकर बौद्ध भिक्षुणी बन गयी ।

**कौशल और मगध का संघर्ष**

कंबोज गंधार, मत्स्य और अश्मक मगध से दूर थे । धीरे-धीरे काशी, कौशल, मगध और विज्जी महासंघ ने अन्य जनपदों को आत्मसात कर लिया । पहले काशी राज्य कौशल और मगध से पराजित हुआ । फिर कौशल और मगध के बीच गंगा की द्रोणी पर अधिकार के लिए लंबा संघर्ष हुआ । इस संघर्ष में मगध विजयी हुआ और सबसे शक्तिशाली राज्य बन गया ।

**पिता को मारकर गद्दी प्राप्त की**

मगध का पहला प्रमुख शासक बिंबिसार था । उसने स्थायी और नियमित सेना का संगठन किया । उसके पुत्र अजातशत्रु ने उसे काल कोठरी में डालकर मरवा दिया । अजातशत्रु ने कौशल और लिच्छवि गणराज्यों और अनेक क्षत्रों को जीत कर अपने राज्य का विस्तार किया ।

अजातशत्रु की मृत्यु ४६१ ई. पू. हुई । उसके बाद पांच शासक गद्दी पर बैठे । इनमें से प्रत्येक ने अपने पिता को मार कर गद्दी प्राप्त की । ४१३ ई. पू. जनता ने इनमें से अंतिम शासक को हटाकर काशी के उपराजा शिशुनाग को गद्दी पर बिठाया । शिशुनाग के बाद महापद्म नंद ने सत्ता संभाली ।

**भारतीय साम्राज्य के प्रथम निर्माता**

नंद भारत के पहले साम्राज्य निर्माता थे । उनकी विशाल सेना में २० हजार घुड़सवार, २ लाख पैदल सैनिक, २ हजार रथ और ३ हजार हाथी थे । नंद की विशाल और शक्तिशाली सेना का विवरण सुनकर विश्व विजेता सिकंदर पंजाब से ही स्वदेश लौट गया । नंद के साम्राज्य में कलिंग और महाराष्ट्र का कुछ भाग भी था ।

मगध अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के

*मौर्य शासन व्यवस्था नौकरशाही और गुप्तचरों पर आधारित थी । कृषि, बाजार, ब्याज की दरों, तैयार माल, कसाईघरों आदि पर राज्य का कठोर नियंत्रण था । राज्य द्वारा सफाई और औषधालयों की व्यवस्था की जाती थी । पाटलीपुत्र का प्रशासन निर्वाचित नगरपालिका के हाथों में था ।*

कारण गंगा के संपूर्ण निचले भाग को नियंत्रित करता था । यह क्षेत्र अत्यधिक उपजाऊ था और मगध के राजकोष को भरा रखता था । मगध के अधिकार क्षेत्र में दक्षिण बिहार के घने वन भी थे, जहां उसे प्रचुर इमारती लकड़ी और हाथी प्राप्त होते थे । दक्षिण पूर्व बिहार की पहाड़ियों में लोहे और तांबे की खानें थीं । इन खनिजों के कारण मगध उत्कृष्ट हथियारों का निर्माण कर सकता था ।

## पूर्व राजधानी राजगृह

अजातशत्रु के शासन काल के पूर्वार्द्ध में मगध की राजधानी राजगृह थी । यह नगर विशाल दीवारों और ऊंची पर्वतमालाओं के कारण शत्रुओं के हमलों से सुरक्षित था । बाद में गंगा, सोन और गंडक नदियों के तट पर बसे पाटलीपुत्र को राजधानी बना दिया गया ।

पाटलीपुत्र के राजधानी बनने के बाद जल मार्ग से होनेवाले व्यापार पर मगध का नियंत्रण हो गया । इससे उसकी आमदनी में काफी वृद्धि हुई ।

मौर्य वंश के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य २५ वर्ष की उम्र में ३२१ ई. पू. नंद के सिंहासन पर बैठे । चंद्रगुप्त ने मगध राज्य का विस्तार करके उसे एक प्रमुख शक्ति बना दिया । चंद्रगुप्त के बाद २९७ ई. पू. उसका पुत्र बिंदुसार गद्दी पर बैठा । बिंदुसार ने अनेक नये क्षेत्रों को अपने राज्य में मिलाकर उसका विस्तार किया । उसका राज्य दक्षिण में मैसूर तक फैला था । बिंदुसार के पुत्र अशोक ने एक भीषण युद्ध के बाद कलिंग को भी अपने राज्य में शामिल कर लिया ।

## कुशल शासन व्यवस्था

मौर्यों ने अत्यंत कुशल शासन व्यवस्था को जन्म दिया । मौर्य शासन व्यवस्था के बारे में हमें मैगस्थनीज के विवरण और चाणक्य के अर्थशास्त्र से पता लगता है । मौर्य शासन व्यवस्था नौकरशाही और गुप्तचरों पर आधारित थी । कृषि, बाजार, ब्याज की दरों, तैयार माल, कसाईघरों आदि पर राज्य का कठोर नियंत्रण था । राज्य द्वारा सफाई और औषधालयों की व्यवस्था की जाती थी । पाटलीपुत्र का प्रशासन निर्वाचित नगरपालिका के हाथों में था । इसके तीस सदस्य थे । समिति अपना काम पांच-पांच सदस्यों की छह उपसमितियों के जरिए करती थी ।

मौर्य शासन व्यवस्था में खनन और धातु कर्म पर सरकार का एकाधिकार था । खानों के अध्यक्ष को आकराध्यक्ष कहते थे । मौर्य काल में पहली बार देश के विभिन्न स्थानों पर लोहे, चांदी और सोने की खानें चालू की गयीं और उनकी आय से राजकोष को भरा गया । अर्थशास्त्र के अनुसार सड़क और नदी मार्ग से यात्रा करनेवाले व्यापारियों को साधारण चुंगी देनी पड़ती थी ।

वास्तव में मगध ने देश को सुदृढ़ केंद्रीय शासन की राह दिखायी । इस केंद्रीय शासन की परंपरा में मौर्य, गुप्त, तुर्क, पठान और मुगल शासन का विकास हुआ । वर्तमान मजबूत केंद्रीय शासन के बीज भी मगध में खोजे जा सकते हैं ।

—२२ मैत्री एपार्टमेंट्स,
ए-३, पश्चिम विहार, नयी दिल्ली ।

शीत ऋतु का कोहरा हो या बरसात की भयंकर वर्षा, गरमी का जानलेवा ताप हो या पतझड़ के झरते हुए पत्तों का मर्मर-गान, वह नीम अंधेरे हाथ में लाठी लिए अपने खेत की ओर चल पड़ती थी । गहरे सन्नाटे को उसकी लाठी की ठकठक भंग करती थी । जब वह वहां पहुंचती तो सबसे पहले वह अपने देवर के उजड़े खेत को भरी-भरी आंखों से देखती। आह छोड़ती । फिर अपने खेत को निहारती। दोनों खेत उजड़े गये थे और धीरे-धीरे घास-फूस के ढेर से लग रहे थे ।

उसका सब कुछ उजड़ गया था । साल भर पहले उसके देवर के परिवार के पांच सदस्यों की आतंकवादियों ने हत्या कर दी थी । कहर

# जमीन का टुकड़ा

• यादवेन्द्र शर्मा चंद्र

**"मेरे बेटे, मुझे माफ करना । मैंने तुझे मार डाला । ताकि तू निहत्थे और निर्दोष लोगों को न मारे । तू मां-बहनों की गोद सूनी न करे ।...बेटे ! मैं नहीं चाहती कि तू मौत के समय भी मुझसे दूर रहे । हम मां-बेटे साथ-साथ तो जलेंगे । उसका बेटा तड़पता रहा ।...घिघियाता रहा और फिर शांत होने लगा । उसने अपने बेटे को हजारों बार चूमा । उसकी जेब में से पिस्तौल निकाली । कुछ लिखने बैठ गयी । फिर, अपने सीने में गोली दाग दी ।**

बनकर टूटे थे वे। लाशें इधर-उधर बिखरी हुई थीं शायद वे जान बचाने भागे थे।

गोलियों की आवाज सुनकर वह भी अपने पति की दुनाली लेकर उस ओर लपकी थी पर वह प्रतिरोध करने में असफल रही। उस खूनी अंधेरे में हमलावर भागने में सफल रहे [illegible] पर उसने एक आवाज सुनी। वह आवाज [illegible] थी जिसने उसके समग्र अस्तित्व को हिला दिया। झकझोर दिया था उसे। पर उसने फिर अपने मन को समझाया, 'आवाजें तो कई लोगों की एक-सी होती हैं—भला उसका बेटा अपने चाचा को क्यों मारेगा ?...नहीं-नहीं, वह व्यर्थ ही परेशान हो रही है ?...उसे ऐसा नहीं सोचना चाहिए। उसका बेटा आतंकवादी जरूर है पर वह इतना नीच और घिनौना काम नहीं कर सकता।'

उस दिन से आज तक वह अपने मन को समझाती आ रही थी। फिर भी वह हां-ना के द्वंद्व से अपने को मुक्त नहीं कर पा रही थी।

वह अपने खेत में घुसी। एक टूटी-टूटी और बिखरी-बिखरी सी झोंपड़ी थी। उसका अपना नष्ट-नीड़ उसमें एक खाट थी। परमजीत लंबा सांस लेकर उस पर बैठ गयी।

वह जरा सुस्ताने लगी। दम-सा लिया।

एकाएक उसकी निगाह खूंटी पर लटके हुए कड़े पर गयी। कई स्मृतियां एक साथ उसके मस्तिष्क में घूम गयीं। यह कड़ा उसके पति का था। उस पति का जो उसे खूब चाहता था। जब ढलती उम्र यानी चालीस साल की उम्र में परमजीत के लड़का हुआ तो उसके पति सबरजीत ने खूब खुशियां मनायी थी। पर वह खुशियां ज्यादा दिन नहीं रहीं। एक दिन उसके पति की हृदयगति रुक जाने से मृत्यु हो गयी। फिर दुःख और उदासियां उसके आस-पास अदृश्य प्रेतों की तरह बैठ गयीं। असंख्य वीरानगी उसने महसूस की थी। कैसे-कैसे सन्नाटे उसके भीतर चीखते रहते थे। वह तो पीड़ाओं का पिंडमात्र हो गयी थी।

संघर्ष उसके सामने खड़ा था। एकमात्र बेटे को पालना उसका बड़ा दायित्व था। वह जुझारू बन गयी। जो औरत दिनभर खेत में मेहनत से काम करती थी, जो ऋतुओं के असर से बेअसर होकर जिंदगी जीती थी, वह पिछले दो सालों में अब हांफने लगी थी। शायद

एकमात्र पढ़े-लिखे बेटे की विछोह की पीड़ा को वह सह नहीं पा रही थी।

उसने थोड़ी देर सुस्ताया। फिर वह झाड़ू लेकर बाहर निकली और अपने खेत के पश्चिमी कोने में पहुंच गयी। जहां दो जामुन के पेड़ थे। जिनकी वजह से उस जमीन के टुकड़े पर सदा छाया रहती थी। उसने चारों ओर गहरे अपनेपन से देखा। उस समय उसकी आंखों में वीरानियों का हुजूम दिखायी दे रहा था।

उसने उस जमीन के टुकड़े पर बुहारी लगायी। उस टुकड़े के चारों ओर उसने मिट्टी की पाल बना दी थी। सदाबहार के पौधे उगा दिये थे। झाड़ू लगाकर छाया में बैठ गयी। तभी तेजपाल वहां से गुजरा। वह उसके समीप आया। सतसिरी अकाल करके वह बोला, 'परमजीत बैन, बुहारी लगाली इस जमीन के टुकड़े पर...। क्यों हररोज इसे साफ करती हो। खेत उजाड़ रही हो और इस टुकड़े को आबाद कर-रही हो।'

परमजीत ने उदास-हंसी के साथ कहा, "प्राहजी! यह मेरा श्मशान है जिंदगी के सफर का आखिरी पड़ाव। अब मैं जीते जी इस खेत में धान नहीं उगाऊंगी। देवर का परिवार नष्ट हो गया। मेरा पुत्तर चला गया। सभी कहते हैं कि वह आतंकवादी बन गया। उसने हमारे पंजाब के सांझे चूल्हे के रिवाज को तोड़ दिया? वह मूरख जिंदगी की सही लड़ाई लड़ने की बजाय गलत रास्ते पर चला गया। निरर्थक हत्याओं से किसी को कभी कुछ मिला है?"

"बुरा न माने तो एक बात कहूं।"

उसने सहमते हुए कहा। "कह प्राह!"

"मैंने सुना है कि वह बुरी तरह से उनके चक्कर में आ गया है।" उसने जैसे रहस्य की परत खोली हो, "उनके चक्कर में आनेवाला फिर लौटकर नहीं आता।"

ऐसे प्रश्न पर वह सदा चुप रहती थी। केवल शून्यभरे आकाश को देखने लगती। उसे चुप देखकर लोग चले जाते।

उसका बेटा प्रकाश बहुत सुशील था। पढ़ा-लिखा था। ..उनके पास जमीन का बहुत छोटा हिस्सा था अतः वह कोई नौकरी करना चाहता था। इस सिलसिले में वह निरंतर शहर जाया करता था। उसके साथ कई लोग होते थे। वह जब-जब गांव लौटता तब-तब वह हताश और गुस्से में होता था। वह सरकार की कटु आलोचना करता था और उसमें धीरे-धीरे ऊब, उकताहट और खालीपन भरता गया। जब वह धक्के खा-खाकर थक गया तो उसे एक दिन गुरुद्वारे में बलविंदर मिला। बलविंदर ने ही उसे उस रास्ते पर ढकेल दिया जहां से उसका लौटना अवश्यंभावी-सा हो गया।

आहिस्ता-आहिस्ता परमजीत अपने बेटे के बारे में बहुत कुछ सुनती रही और सोचती रही कि वह ऐसा क्यों बन गया?...वह किसे मारेगा...क्या अपनी मां को जो हिंदू है जिसने उसे जन्म दिया है। तब उस रात की वह आवाज उसे सताने लगती थी। वह उसके कर्ण कुहरों से टकराकर उसे विचलित कर देती थी।

अतीत का एक टुकड़ा परमजीत के सामने पड़ा । वह अपने पति सबरजीत को बचपन से ही प्यार करती थी । उसने अपने पिता लेखराज को साफ-साफ कह दिया था कि वह सबरजीत से शादी करेगी । वह उसे प्रेम करती है । शादी बड़ी आसानी से हो गयी । तब जातियों का जहर किसी की नसों में नहीं था ।...पंजाब के हिंदू व सिख...एक डाली के दो फूल थे । दोनों में एक ही रक्त बीज था । उनमें संस्कृति और भाषा के आधार पर अलगाव करना बहुत ही कठिन था । बीच में कोई विभाजन रेखा नहीं थी । उनमें सांझा चूल्हा था ।

जब सबरजीत की हृदयगति रुक जाने से मृत्यु हो गयी तब दसवीं पास व भावुक प्रकृति की परमजीत ने प्रकाश को कितनी कठिनाइयों में पाला था ।...सबरजीत के अंश को संपूर्ण रूप से स्वीकार करके उसने ढाढस धारण कर लिया था । वंशज एक ही पर्याप्त होता है ।...उससे उसके जीने की सार्थकता हो गयी थी । वह अपने बेटे को योग्य बनाने लगी । छोटे से जमीन के टुकड़े के साथ-साथ वह सिलाई का काम करती थी । बेटे को लेकर वह तरह-तरह की कल्पनाएं करती थी कि उसका बेटा पढ़-लिखकर एक काबिल आदमी बनेगा और इस घर में सुख-समृद्धि लाएगा । अपनी उस मां के, जिसने अथाह श्रम करके उसे पढ़ाया, सारे उपकारों का बदला प्रत्युपकारों से उतारेगा । और उसका बेटा प्रकाश भी सबको गहन अपनेपन व संवेदनशीलता से कहता था कि वह अपनी मां को संतोषदायक जिंदगी देगा जो उसको चहुंमुखी शांति प्रदान करेगी । कभी-कभी तो उनकी बातों से ऐसा लगता था कि वे एक-दूसरे को अधिक से अधिक सुख देने की होड़ कर रहे हैं । आपसी संवादों में श्रेष्ठ से श्रेष्ठ शब्दों का प्रयोग करते थे वे ।

पर पढ़ाई के खत्म होते ही प्रकाश के सपने धीरे-धीरे बिखरने लगे । सुखों के नीड़ के तिनके नष्ट होने लगे । भ्रष्ट प्रशासन की रिश्वतखोरी संस्कृति में वह अपने को असहाय समझने लगा । सारी योग्यता की अनिवार्यताओं की पूर्ति करने के बाद भी उसे बड़ी क्या छोटी भी नौकरी नहीं मिली । कई तरह की प्रतियोगिताओं में भाग लिया । लिखित परीक्षाओं में पास होने के बाद भी उसका कभी भी नौकरी के लिए चुनाव नहीं हुआ क्योंकि न उसके पास पैसा था और न सिफारिश कि वह इंटरव्यू में पास हो सके !

आदमी जब भीतर से टूटने लगता है तब उसकी सोच पर तरह तरह का कोहरा छा जाता है । टूटन की धुंध गहरी से गहरी होती जाती है और एक दिन वह उसकी सोच को ग्रहण की तरह तिमिरमय कर देती है । प्रकाश के साथ भी ऐसा ही हुआ । वह सब ओर से टूटता गया ।

बलविंदर उसे अपने साथ ले गया । पहले-पहल तो वह एक-दो दिनों में घर आ जाता था । मां के सवाल करने के बाद वह बहाने बना लेता था । फिर अंतराल बढ़ता गया । मां का संदेह गहरा होता गया । एक अजीब-सी चुभन होने लगी । उसने एक दिन डांटभरे स्वर में पूछा, "पुत्तर ! तू कहां रहता है ? ऐसी कौन-सी नौकरी है । ऐसी कौन-सी मजबूरी है कि तू दो-दो चार-चार दिन गायब

रहने लगा ।

"मां ! मैं ऐसा काम कर रहा हूं जो हमारे लिए बड़ा फलदायक है उसने मां के आगे नोटों का ढेर लगाते हुए कहा, तू फिकर न कर मां । मैं तुम्हें खुशियों से भर दूंगा ।"

और फिर उसने दिन की जगह रात के अंधेर में आना शुरू कर दिया । मां उसके चेहरे पर आ रहे क्रूर भावों और विद्रोही स्वर के मर्म को समझने लगी । वह आशंकाओं से घिरती गयी ।

फिर एक दिन वह ऐसा गायब हुआ कि लंबे अर्से तक वापस ही नहीं लौटा । तीन महीने बीत गये । चारों ओर चर्चा होने लगी थी—"प्रकाश आतंकवादी हो गया है । वह हत्याएं करने लगा है । वह खूनी आदमखोर हो गया है । निर्दोष लोगों को मारता है ।"

परमजीत उद्विग्न और पीड़ा से सराबोर हो गयी । वह स्वजनों-परिजनों के बीच अपराध बोध से घिरती गयी । उसे लगा कि उसका बेटा उसकी अस्मिता को मिटाने में लगा है ।

एक दिन मास्टर खुशवंत सिंह ने जब उससे कहा, "मुझे तुम्हारा बुरा चाहनेवाला मत समझना । पर यह सच है कि अब वह नहीं आएगा । पुलिस को उसके आतंकवादी होने की भनक पड़ गयी है और उसने अपने मुखबिर इधर-उधर छोड़ दिये हैं । तब परमजीत घर में आकर मौन आर्तनाद कर उठी । जमीन पर लोट-लोटकर खूब रोयी थी उस दिन ।

उस काल रात्रि में जब उसके देवर सुरजीत सिंह के परिवार की हत्या हुई तब वह दुनाली लेकर भागी थी और उसे प्रकाश की आवाज का भ्रम हुआ था तब उसका अस्तित्व ही हिल गया था । उस नर-संहार के बाद उसे लगा कि राजनीति के स्वार्थ धर्म ओढ़कर हिंस्र बन जा[ते] हैं । आदमी धर्मांध होकर अच्छे-बुरे की त[मीज] भूल जाता है ।

तब से उसने अपने आप को उजाड़ डा[ला] वह मन से उजड़ गयी । उसके खेत भी उज[ड़] गये पर उस जमीन के टुकड़े को उसने उजड़[ने] नहीं दिया । सदा बुहारी लगाती थी ।...सब[से] कहती थी—'इस जमीन के टुकड़े पर मुझे जलाना ।...यह मेरी आखिरी तमन्ना है ।'

सभी समझते कि बुढ़िया विक्षिप्त हो गयी है । पुत्र-विछोह ने उसके मन के एक-एक [..] की चमक को खरोंच डाला है ।

और वह कभी-कभार मन ही मन सोचती कि यदि उसका बेटा मर गया और उसकी ला[श] आ गयी तो वह उसे भी इसी जमीन के टुकड़े पर सुलाएगी ताकि जिस जमीन से उसने द्रोह किया, उसे छोड़कर भागा, कम से कम उस [पर] मरने के बाद तो रहें । वह नहीं, उसकी खाक सही ।

हरबंस सिंह जो खेतिहर था, वह भी कभी-कभी परमजीत के पास आता था । कह[ता] था, "परमजीत ! इस तरह कैसे चलेगा । अ[ब] तेरे देवर का कोई हकदार नहीं है, फिर तू क्यों नहीं उसके खेत जोतती ?....क्यों इन्हें उजाड़ रही है । तेरा बेटा तो गलत रास्ते पर चला ही गया । ऐसे गलत रास्ते पर चला गया जहां से लौट आना गुरु कृपा ही हो सकती है । पात[शाह] ही उसे अच्छी अक्ल दे सकते हैं ।"

जवाब में वह केवल रो देती थी ।

पर वह किसी की बात न मानकर उस जमीन के टुकड़े को आबाद कर रही थी ।

उदास-उदास और दुःखी-दुःखी ।

०००० वह रात अंधेरी थी । चारों ओर सन्नाटा था । कुत्ते की भौं-भौं भी डरावनी लग रही थी । चांद नहीं था । फिर भी तारों का मंद-मंद प्रकाश था ।

परमजीत गुरुनानक की तसवीर के आगे मत्था टेककर सो गयी । अभी उसकी आंखों में नींद घुली ही नहीं थी कि किसी ने दरवाजा खटखटाया । वह अज्ञात आशंका से सिहर उठी । उसे लगा कि कोई आतंकवादी आ गया है । वह उसे भी मार सकता है । जिन लोगों को केवल हत्या करने का जुनून चढ़ जाता है—वे नहीं सोचते कि वे किसे, क्यों और किसलिए मार रहे हैं ? उसने अपने पति की दुनाली को हाथ में लिया और शीघ्रता से छत पर चढ़ी । एक युवक खड़ा था । उसने पूछा, "कौन है ।"

"मैं हूं मां, मैं...तेरा परकास । तेरा पुत्तर !

"परकास !" परमजीत को जैसे विश्वास नहीं हुआ एक बारगी । पर आवाज तो उसके प्रकाश की ही थी । वह जल्दी-जल्दी नीचे उतरी । रोशनी की और दरवाजा खोला ।

"मां... !" प्रकाश ने अपनी बांहें फैला दी । परमजीत सहसा गंभीर हो गयी । वह पलट गयी । उसके बेटे प्रकाश ने दरवाजा बंद किया । वह मां के साथ-साथ भीतर आया ।

"मां ! क्या तू नाराज है ?"

"हां !"

"पर क्यूं ?"

"क्योंकि तू वाहे गुरु के नियमों का उल्लंघन करता है । बेमतलब हिंसा और हत्याएं करता है ।"

"मां ! हमें समझने की कोशिश करो । हम तो अपनी सिख कौम की खातिर सब कुछ कर रहे हैं ।"

वह खाट पर बैठ गया । उसने कहा, "अपने अधिकारों के लिए लड़ना अधर्म नहीं । अपने वजूद को बचाने के लिए रक्तपात करना कोई अपराध नहीं ! और... ।"

"और अपने चाचा को मारना धर्म है ? अपनी चाची, उसकी दो बेटियां और एक बेटे को मारना तेरे कौन से मकसद को पूरा करेगा ? यह कौन-सी कौम की सेवा है । झूठ मत बोलना । भयानक अंधेरों से घिरे सन्नाटों में मैंने तुम्हारी आवाज को पहचान लिया था । वह आवाज मुझे चैन से सोने नहीं देती, रहने नहीं देती, परेशान करती रहती है । यह मां कुछ ऐसी ही होती है कि अपने अंश को हर स्तर पर जान लेती है । कदमों की आहट, स्पर्श और चाल-ढाल से उसे पहचान लेती है । झूठ मत बोलना, सच कहना, तुम्हें अपनी मां की कसम ।"

"पानी नहीं पिलाओगी ।" उसने मां की बात की उपेक्षा करके कहा ।

परमजीत ने पानी पिलाया । पानी पीने के बाद उसके चेहरे पर राहत-सी दौड़ी ।

"झूठ मत बोलना ।" मां ने उसे फिर कहा, "मेरी कसम है तुझे ।"

"हां मैंने ही अपने चाचा की हत्या की थी।" उसने सिर झुका लिया।

"क्यों की थी बेरहम !"

"हमारे लिए... । चाचा की जमीन का वारिस बनने के लिए, यह जमीन तो हमारी थी। मेरे पिता की मजबूरी का उन्होंने फायदा उठाकर इसके मालिक हो गये थे।"

"कैसे हमारी थी हत्यारे !" उसकी मां ने घृणा से कहा, "तेरे बाप को धंधे में घाटा लगा था। इसलिए उन्होंने उन्हें बेचा था और उन्होंने उसे खरीदा था। तुम्हारे चाचा ने इस पर जबरदस्ती कब्जा नहीं किया था। यदि तेरे चाचा नहीं खरीदते तो कोई और खरीद लेता।

"मां !" उसने झल्लाकर कहा, "अब वे मर गये हैं। वापस जिंदा नहीं हो सकते। तू उनकी जमीन को जोत। सुख से रहे।...हमारा कमांडर एक दिन कह रहा था कि हम इस धरती के मालिक होंगे। हमारा खालिस्तान होगा। मां ! तब कितनी खुशहाल जिंदगी होगी हमारी। वहां केवल हम होंगे। हमारी हर चीज होगी। मेरा कमांडर मुझसे बहुत खुश है। वह कहता है— हर बदलाव खून तो चाहता ही है। अब मुझे खाना खिला दे। बड़ी भूख लगी है। तेरे हाथ का खाना खाये बड़ा अरसा हो गया है।"

ओह ! तूने अपने बेगुनाह चाचा के परिवार को मार डाला...पुत्तर ! उनका वंश नहीं मिटा, हमारे खानदान का नामनिशान मिट जाएगा। तूने पाप किया है, हिंसा और हत्याओं का मार्ग अपनाकर निर्रथक क्रांति का बिगुल बजाया है ...समूची बातों को समझे बिना तू उस रास्ते पर चला है जिसका अंत तेरे वजूद का अंत है। निरर्थक हत्याएं करनेवाले को एक दिन आत्महत्या ही करनी होती है। लौट आ पुत्तर लौट आ !"

"अब लौटना मुमकिन नहीं मां !" प्रकाश ने साफ-साफ कहा, "अब तो हम अपनी आजादी लेकर ही लौटेंगे। यदि मैंने लौटने की कोशिश भी की तो वे लोग मुझे मार डालेंगे। मेरी-तेरी हत्या कर देंगे।" उसने लंबी सांस लेकर फिर कहा, "मां ! उन्होंने मुझे धमकी दे रखी है कि गद्दार की सजा मौत है।...मां ! मैं अपनी नियति को अब नहीं बदल सकता।"

उसकी आंखों में पीड़ादायक विवशता जाग गयी। अपराध बोध से सिर झुक गया।

"मैं समझ गयी पुत्तर ! तेरी नियति कुत्ते की मौत है। एक अनजानी मौत। फिर तेरी गतिमुक्ति लावारिस लाश की तरह होगी। कितनी बेनाम मौत पाएगा तू। न मैं तेरी लाश पर रो पाऊंगी और न तू मेरी अंतिम अरदास में आएगा। ले बेटे मैं तुझे खाना खिलाती हूं। तेरा मन पसंद खाना।"

उसने उसके लिए सरसों की सब्जी व तंदूर की रोटी बनायी।...

इस दौरान उन दोनों के बीच गहरा मौन था। बिलकुल अजनबी बन गये थे वे मां-बेटे।...जैसे गहन-गह्वर में फंसे दो व्यक्ति हों ! चूल्हे की आग की रोशनी और उसकी

तपिश से उसकी मां का चेहरा तपा हुआ-सा लगा ।

उसने अपने बेटे को खाना खिलाया । खाना खत्म होते ही वह बेहोश होने लगा । फिर वह उसे भरपूर प्यार करने लगी । वह प्यार करती रही और रोती रही । वह रोती रही और बुदबुदाती रही, "मेरे बेटे, मुझे माफ करना । मैंने तुझे मार डाला । ताकि तू निहत्थे और निर्दोष लोगों को न मारे । तू मां-बहनों की गोद सूनी न करे....बेटे ! मैं नहीं चाहती कि तू मौत के समय भी मुझसे दूर रहे । हम मां-बेटे साथ-साथ तो जलेंगे । उसका बेटा तड़पता रहा ।...घिघियाता रहा और फिर शांत होने लगा । उसने अपने बेटे को हजारों बार चूमा । उसकी जेब में से पिस्तौल निकाली । कुछ लिखने बैठ गयी । फिर, अपने सीने में गोली दाग दी ।

गोली की आवाज से आसपास के लोग भयभीत हो गये । सबको लगा कि आतंकवादी आ गये हैं । कुछ साहसी लोग छतों पर चढ़े । गहरा सन्नाटा था । वे वापस आकर सो गये । उन्हें लगा कि उन्हें भ्रम हो गया है । आजकल जरा-सा खटका भी गोली की आवाज-सा लगता था । सबके भीतर आतंक बर्फ की तरह जम गया था ।

दूसरे दिन जब परमजीत उस जमीन के टुकड़े पर नहीं गयी तब तेजपाल को संदेह हुआ । वह घर आया, यह सोचकर कि कहीं वह बीमार तो नहीं हो गयी । वह तो बिना नागा यहां आती है । जब वह उसके घर पहुंचकर भीतर गया तो उसने लाशें देखीं । वह बाहर आकर जोर से चिल्लाने लगा । देखते-देखते वहां कई लोग इकट्ठा हो गये । सब सकते में थे । विस्मय विमूढ़ थे ! दोनों मां-बेटे मरे पड़े थे । वहां दहशत फैल गयी तुरंत पुलिस को इत्तिला दी गयी । पुलिस आयी । तलाशी ली । एक खत मिला—मैं जब भी मरूं तो मुझे मेरे खेत के उस टुकड़े में जलाया जाए जिसे मैं हररोज साफ करती हूं...उसने आगे लिखा मूलतः मनुष्य को दो गज जमीन ही चाहिए । दफनाने के लिए भी और जलाने के लिए भी । सिर्फ दो गज जमीन । मैंने अत्यंत ही यंत्रणाओं भरा जीवन जिया है—क्योंकि मेरा बेटा आतंकवादी बन गया और मेरे बार-बार कहने पर भी लोग ऐसा समझते रहे कि मैं कहीं न कहीं उससे जुड़ी हुई हूं । यह सर्वथा झूठ है—मैं हत्याओं की राजनीति को नहीं मानती ।...इससे कुछ भी हासिल नहीं हो सकता । इससे सार्थकता सिद्ध नहीं होती । फैशन की तरह आदमी को मारना आदिमवृति है ।...नृशंसता है । ओह ! बर्बरता पर अपना प्रशासन चलाना कितना अमानवीय है ।...आदमी इस संडाधभरी राजनीति को कब तक सहेगा । मेरा बेटा...बेकार युवक...भटका युवक । इस कार्य के परिणाम से अनजान उसे उस राह पर डालकर हथियार सौंप दिये जिसे वह वापस छोड़ नहीं सकता । वहां भयानक दलदल है । आतंक से आबद्ध दलदल ! मृत्यु संत्रास से त्रस्त दलदल...मेरे बेटे ने अपने चाचा के परिवार का सफाया कर दिया...इस तरह कई स्वार्थी लोग इस रक्तरंजित राह पर चलकर घिनौने स्वार्थ पूरे कर रहे हैं ? यह खूनी संस्कृति किसकी देन है ?...लाशों पर खड़ा होकर हंसनेवाला आदमी तो नहीं हो सकता । वह

राक्षस है—और राक्षस को मारनेवाला पापी नहीं होता ।...मैंने अपने बेटे को मार डाला । इसलिए मार डाला कि वह घमंड से हत्याओं को इस तरह गिनाने लगा था—जैसे उसने कोई पुण्य का कार्य किया हो । नरभक्षी इसे ही तो कहते हैं ।...

आपसे विनती है कि हम दोनों को साथ-साथ जला दें । इस दो गज जमीन के टुकड़े के अलावा मैं सारी जायदाद और जमीन यहां के गुरुद्वारे को भेंट करती हूं ।...यह दो गज जमीन का टुकड़ा साक्षी रहेगा कि अंत में आदमी को कितनी जरूरत होती है—अभागी परमजीत

एक बार उदास-उदास गहरा सन्नाटा फैल गया । फिर उस सन्नाटे को आपसी बुदबुदाहट ने भंग किया । कुछ आंसू उसकी आत्मीयता के साक्षी बने ।

पोस्टमार्टम के बाद दोनों लाशें गांववालों को सौंप दी गयीं । उन्हें साथ-साथ जला दिया गया—उसी जमीन के टुकड़े पर जहां अब न जाने कैसे और क्यूं कैक्टस उग आये । हाथों-जैसे कैक्टस !

**—आशा लक्ष्मी, नया शहर, बीकानेर-(राज.) ३३४००१**

# इनके भी बयां जुदा जुदा

**तू धड़क शौक से ए दिल, मुझे चुप रहने दे**
**तेरे जज्बात जुदा हैं, मेरे हालात जुदा**

—कतील शफाई

**इन दिनों तो धूप की शिद्दत है और हम हैं शुजा**
**बाकी जो कुछ है वह पिछली बारिशों की बात है**

—शुजा खावर

**वो हमसफर भी निहायत अजीज है ताबां**
**चले जो साथ मगर कारवां से दूर रहे**

—गुलाम रब्बानी ताबां

**करम थे मुझ पे इतने, मैं सोचता कैसे**
**कि दूसरों पे भी वो मेहरबान कितना था**

—मजहर इमाम

**हम जो पहुंचे तो रहगुजर ही न था**
**तुम जो आये तो मंजिलें लाये**

—जेहरा निगाह

**जहां रहबर असूलो रहबरी को छोड़ देता है**
**वहीं लुटते हुए देखे हैं अक्सर कारवां मैंने**

—मासूम गाजियाबादी

**बसी हुई है जो सांसों में तेरी है खुशबू**
**खिला हुआ है जो मुझ में गुलाब तेरा है**

—तहजीम अहमद गोहर

**वो है बेनजर 'पाशी' उसको क्या खबर 'पाशी'**
**कितने दिल सुलगते हैं इक दिया बुझाने से**

—कुमार पाशी

**कौन इस घर की देखभाल करे**
**रोज एक चीज टूट जाती है**

—जॉन इलिया

**(प्रस्तुति : कुलदीप तलवार)**

# कैसे थे प्राचीन उद्यान हमारे

● डॉ. रेखा रस्तोगी

प्राचीन समय में उपवन उद्यान एवं वाटिका की एक परंपरा थी । आश्रम हो या धार्मिक स्थल, राजप्रासाद हो या धनाढ्य का भवन और यहां तक कि देवदासी या गणिका के निजी गृहों के प्रांगण में उपवन और वाटिका का विशेष स्थान था । प्रत्येक ऋतु में इनमें खिलनेवाले रंग-बिरंगे पुष्प सर्वत्र अपनी सुगंध बिखरा देते । बसंत ऋतु में तो विशेषतः इन वाटिकाओं और उपवनों की शोभा अधिक निखर आती । ऋतुराज के आते ही वृक्ष फूलों से लद जाते, उपवनों में स्थित सरोवरों में कमल खिल उठते और पवन सुगंधित हो जाता । पलाश के लाल फूलों से आच्छादित भूमि को देखकर ही कवि कालिदास ने नवविवाहिता वधू की कल्पना की थी (ऋतुसंहार) ।

## प्राचीन परंपरा

प्राचीन वास्तुशिल्प ग्रंथों से ज्ञात होता है कि उस समय नगर विनियोजना में उद्यानों और उपवनों के निर्माण को विशेषतः प्रोत्साहित किया जाता था । मयमत, शिल्परत्न मानसार, समरांगणसूत्रधार आदि ऐसी अनेक पुस्तकों में विभिन्न माप-परिमाण वाले उपवनों, उद्यानों एवं वाटिकाओं का संदर्भ मिलता है जो मंदिरों, राजभवनों अथवा सार्वजनिक स्थलों से संबद्ध हैं और जिनमें प्रत्येक ऋतु में खिलनेवाले पुष्पों के वृक्षों एवं स्वादिष्ट फलों के वृक्षों को सुव्यवस्थित ढंग से लगाया गया है । अथर्ववेद तथा कौटल्य अर्थशास्त्र में हरी और कोमल दूब वाले मैदान तक का संकेत मिलता है, जिसके चारों ओर फूलों की क्यारियां हैं, तथा उनके उपरांत घने छायादार फलों और फूलों से युक्त वृक्ष हैं । इससे हमारा यह भ्रम स्वतः ही दूर हो जाता है कि आज भारत में दिखायी देनेवाली 'गार्डन पाई' की परंपरा या शैली पाश्चात्य है । वृहत्संहिता में कहा गया है कि देवताओं को नयनाभिराम उद्यानों से युक्त नगर प्रिय हैं । जो (वास्तुविद या शिल्पी) बड़े-बड़े सरोवरों से युक्त उद्यान या वाटिका बनाता है वह अधिक सम्मान का भागी होता है । वस्तुतः उस समय नगर विनियोजना एवं भवन विनियोजना या
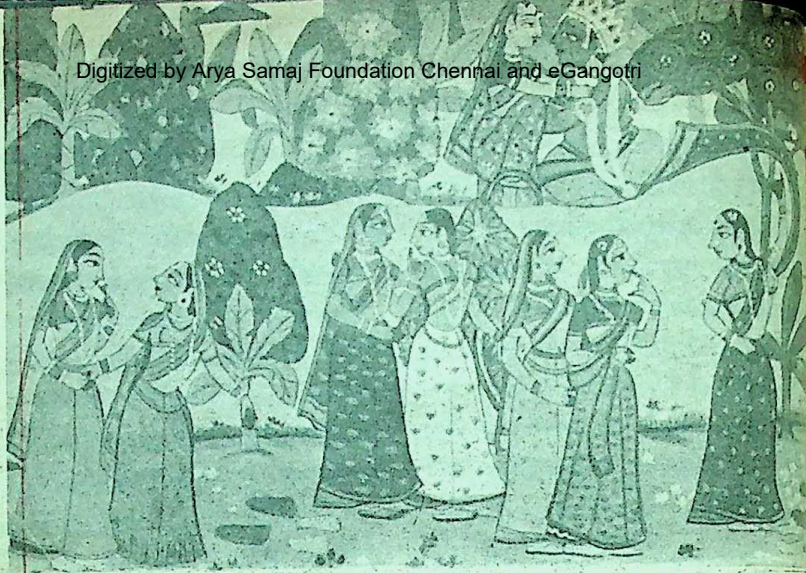
उद्यान में राधाकृष्ण

उसके निर्माण से पूर्व विभिन्न फूलों-फलों, फव्वारों से युक्त उद्यानों को सर्वप्रथम महत्त्व दिया जाता था । राजा, महाराजाओं की तो यह विशेष अभिरुचि ही थी कि उनके प्रासादों से संबद्ध वाटिका और उपवन सर्वाधिक समृद्ध एवं संपन्न हों ।

**रामायण, महाभारत तथा जैन काल में उद्यान**

बाल्मीकि रामायण में अनेक स्थलों पर विभिन्न उपवन, उद्यान एवं वाटिकाओं का वर्णन मिलता है । मिथिला नगरी में जनक के राजभवन से संबद्ध ऐसी बड़ी वाटिका का वर्णन है, जिसमें अनेक छायादार वृक्ष हैं उन पर फूल और फल लगे हैं । वहीं पर नाना प्रकार के रंग-बिरंगे सुगंधित पुष्पों से युक्त लंबी-लंबी क्यारियों वाली पुष्प वाटिका है । इसी वाटिका में जनक के अंतःपुर की स्त्रियों के लिए मंदिर बना हुआ है । इसी वाटिका में स्थित मंदिर में सीता ने पूजा के लिए आते समय राम को स्वयंवर से पूर्व देखा है । जनक के उद्यान में अतिथिगृह भी निर्मित है जिनमें सीता के विवाह के समय दशरथ आदि राजाओं को ठहराया गया है । बाल्मीकि रामायण में ही लंकावर्णन के प्रसंग का उल्लेख मिलता है । लंका में प्रवेश करते ही हनुमान इस वाटिका के कोमल एवं सरस दृश्यों की ओर सहसा आकृष्ट हो जाते हैं । इस वाटिका में कर्णिकार सरल, खर्जुर आदि के वृक्ष पुष्पयुक्त होने के कारण सुंदर लग रहे हैं । यहां पर अशोक, चंपक, नाग, आम्र, साल आदि के वृक्ष भी हैं, जिनसे विविध प्रकार के पुष्पों वाली लताएं लिपटी हुई हैं । इन वृक्षों पर बैठे पक्षी जब अपने पंख फड़फड़ाकर उड़ते हैं तब उनके पंखों की हवा से इन वृक्षों पर खिले पुष्प वर्षा की बूंदों की भांति गिरने लगते हैं ।

सुनियोजित और समृद्ध उद्यानों की यही परंपरा महाभारत, बौद्ध एवं जैन काल में भी विशेषतः व्यवहृत रही । हस्तिनापुर, मथुरा, विराटनगर, द्वारिका आदि नगरों के वर्णन में कितने ही उद्यानों एवं वाटिकाओं का उल्लेख किया गया है जिनको विस्तार से इस लेख में लिख पाना संभव नहीं है । बौद्ध एवं जैन काल में तो संगीत, नृत्य, नाटक एवं धार्मिक प्रवचन आदि सांस्कृतिक अथवा धार्मिक समारोह तो होते ही थे, पुष्पों से सजे-संवरे उद्यानों एवं वाटिकाओं में । मगध, अवंति, पाटलीपुत्र आदि नगरों में सार्वजनिक उद्यानों एवं राजप्रासादों से संबद्ध उपवन, वाटिकाओं का वर्णन किस प्रकृति प्रेमी मानव का मन मुग्ध नहीं कर देता । अत्यधिक विशाल और लंबे इन उद्यानों में उद्यान यात्रा का आयोजन किया जाता था, इस उद्यान यात्रा में राजा-प्रजा सम्मिलित होते थे । वसंत एवं शरद ऋतु में इन उद्यानों में विभिन्न उत्सव मनोविनोद के साधनों के साथ मनाये जाते थे ।

### इंद्र का नंदन वन

पुराणों में लिखा है कि नंदन वन इंद्र का प्रिय उपवन है, जिसमें पारिजात, मंदार-जैसे देवपुष्प लगे हुए हैं । ये पुष्प कभी मुरझाते नहीं हैं । ये अपनी सुगंध से समस्त देवलोक को सुगंधित और सुशोभित करते रहते हैं । हरिवंश पुराण में सुंदर उपवन, कुंज, समृद्ध उद्यान और फलफूल से युक्त वाटिकाओं के संदर्भ स्थान-स्थान पर मिलते हैं । इन वाटिकाओं में कदली, कदंब, करील नीम, आम, जामुन आदि के वृक्ष हैं तथा केतकी, पारिजात, केलि, चंपा, मालती आदि के रंग-बिरंगे पुष्प सर्वत्र अपनी सुरभि फैला रहे हैं, जिनपर भौंरे गुंजार कर रहे हैं । इन उपवन और वाटिकाओं की समतल और कृत्रिम रूप से बनायी गयी ऊंची-नीची, ढलावदार भूमि पर कोमल हरी दूब लगी हुई है जिस पर कुलांचें मारते हुए हिरण घास चर रहे हैं और गायें बड़े चाव से घास खाकर जुगाली कर रही हैं । वाटिका और उपवन में स्थित सरोवरों में लाल, श्वेत एवं नील वर्ण के कमल खिल रहे हैं । उसमें बत्तख, हंस-जैसे अनेक जलपक्षी तैरते हुए शोभायमान हैं । यह उपवन एवं उद्यान कोयल, पपीहा, तोता, मैना आदि पक्षियों के मधुर स्वर से गुंजायमान रहता है ।

### राजा के लिए उद्यान आवश्यक

वस्तुतः उद्यान या उपवन प्रत्येक, युग काल अथवा स्थान की एक आवश्यकता रही है । चाहे मानसरोवर-जैसे ऊंचे पर्वत स्थल हैं या मैदानी भाग अथवा समुद्र तटस्थित रेतीले क्षेत्र या उष्ण-ठंड सम जलवायु हो, इन सभी स्थलों पर अपनी भौगोलिक परिस्थिति के अनुकूल पर्यावरण को संतुलित करने के लिए फूल और फलों से युक्त उपवन, वाटिका मानव समाज के अभिन्न अंग रहे हैं । इसी बात पर बल डालते हुए वात्स्यायन ने 'कामसूत्र' में कहा है—'सभी सुंदर गृहों और राजाओं के प्रासादों के साथ विलासोद्यान का होना अनिवार्य है । इससे संयुक्त एक वृक्षवाटिका और एक पुष्पवाटिका होनी चाहिए, जहां फूल के पौधों और फलों के वृक्षों का आरोपण किया जा सके तथा शाकभाजी भी उगायी जा सके...तत् भवन (काभ.३ पृ. ११४)' भूमि के मध्य भाग में सिंचाई के लिए कूप, छोटी नहर, तड़ाग या बावड़ी भी खुदवानी चाहिए (मध्ये कूप वापी

दीर्घिका वा खानयेत्) । वाटिका अपेक्षाकृत छोटी होती है जिसमें फूलों के पौधे एक क्रम से लगाये जाते हैं । इसी वाटिका के साथ शाकवाटिका की भी व्यवस्था की जाती है । जिसमें गृहस्वामिनी द्वारा मूलक (मूली), आलुक (कंद), पलुकी (पालक, गपुष), खीरा, तिलिपर्णिका (एक प्रकार का साग), प्लांडु (प्याज) -जैसी तरकारी उगाने का उल्लेख किया गया है । कामसूत्र में 'बागवानी' भी ललित कलाओं में गिनी गयी है । प्रसिद्ध विद्वान चक्लदर द्वारा लिखित सोशल लाइफ इन एंशियेंट इंडिया के उपवनविनोद नामक एक लेख में कहा गया है, 'राजा वही है जिसके प्रासाद के साथ विस्तृत उद्यान हों, उसमें बड़े तालाब या झरने हों, जिनमें सुंदर कमल खिल रहे हों और उन पर भौंरे गुंजार कर रहे हों' ।

**मदनोत्सवों के आयोजन स्थल**

नगर में उद्यान और उपवन अपनी पूरी समृद्धि पर हों और किसी नाट्यकार को इसकी प्रतीति न हो, भला यह कहां संभव है उसके लिए ? अब देखिए आज से लगभग २३०० वर्ष पूर्व लिखे गये नाटक 'मृच्छकटिक' में शूद्रक का वर्णन किया गया है ।उज्जयिनी नगरी के बाहर नदी के तट के साथ 'पुष्पकरंडक' नामक उद्यान का उल्लेख है । इस में प्रत्येक ऋतु में पुष्प इतनी प्रचुरता के साथ खिलते हैं कि पूरा उद्यान ही 'फूलों की डलिया' लगता है । यह सर्व साधारण नागरिक के लिए है । इसमें सघन वृक्ष आम, पलाश, कपित्थ, जामुन के वृक्ष भी हैं । इसी नाटक में एक अन्य उद्यान का भी संकेत मिलता है, जिसे 'कामदेवायतनोद्यान' कहा गया है स्पष्ट है कि
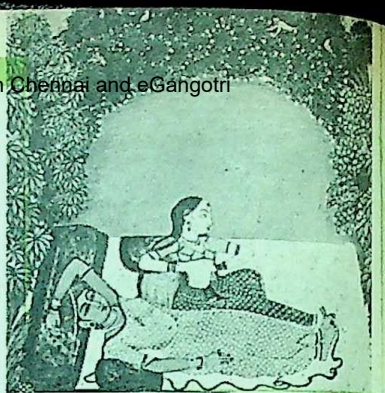
निकुंज बिहारी (जयपुर शैली)

इस उद्यान में इसके नामानुकूल ही उसमें क्रियाएं होती रही होंगी । उद्यान में निर्मित 'कामदेव' के मंदिर में वसंत ऋतु में 'मदनोत्सव'-जैसे उत्सव का आयोजन होता है, इसमें नगर की गणिकाएं एवं नर्तकियां रसिकों एवं विलासी जनों के सम्मुख नृत्य करती हैं । उद्यान में लता-गुल्मों से अनेक मंडप बने हुए हैं जो छोटे-छोटे कक्ष के समान लगते हैं । संभवतः ये मंडप, प्रणयलीला के लिए प्रयोग होते होंगे ।

इसके अतिरिक्त वसंत सेना के अपने निजी भव्य प्रासाद में भी एक समृद्ध उद्यान है । इसमें वसंत सेना प्रायः अपने मनबहलाव के लिए बैठा करती है । उसकी इस वाटिका में चंपक, जूही, शेफालिका, मालती मोतिया, कुरबक, चंपा,चमेली के पुष्प लंबी और सुव्यवस्थित क्यारियों में लगे हुए हैं । अनेक सघन वृक्ष और कमनीय लताएं हैं । इन सबकी शोभा नंदन वन की सुषमा को भी कम कर रही है । वाटिका में रेशम की डोरी वाला झूला भी पड़ा हुआ है । प्राचीन उद्यानों में पर्वत, झरने, पहाड़ी आदि दृश्यों को दर्शाया जाता रहा है ।

यक्ष के उद्यान में स्फटिक शिला स्तंभ है जो केले के पेड़ों से घिरा है । जिसके ऊपर गृहमयूर बैठा करता है । इसी उद्यान में वारियंत्र का

वर्णन मिलता है जिसमें से ऊपर छिटकती हुई जल की बूंदों को पीने की अभिलाषा में मयूर वारियंत्र (फौव्वारे) के आसपास घूमता हुआ उड़ रहा है। इन उद्यानों में पशु-पक्षी पालने के लिए छोटा सा 'चिड़िया-घर' भी होता था। उपवनों में बावड़ी भी बनायी जाती थी।

### उद्यानों की सिंचाई

'मेघदूत' में यक्ष मेघ से अपने घर का पता बताते हैं—'मेरे गृह के समीप सुंदर उपवन है जिसमें स्थित बावड़ी की सीढ़ियों पर नीलम जटित है, उसमें चिकनी वैदूर्य मणि की डंठल वाले बहुत से सुंदर कमल खिले हुए हैं।' उद्यानों के इन बावड़ी या सरोवरों से उद्यान की सिंचाई की जाती थी। उद्यानों में सिंचाई के लिए क्यारियों तक संकरी नालियों (कुल्या) का निर्माण किया जाता था। इनमें पानी उद्यानों के धारायंत्रों (फव्वारों) से निकलकर प्रचुरता से बहता रहता है जिससे वाटिका या उद्यान भूमि जलयुक्त रहती है। गरमी या शरद ऋतु में जब वर्षा नहीं या कम होती है तब वृक्षों के आलवाल (आधारबंध) को पानी से भर दिया जाता है। क्यारियों में लगे पौधों को आश्रम कन्याएं या सेविकाएं घड़ों से सींचती थीं। ये घड़े विशेष प्रकार से निर्मित होते थे। जिन्हें 'सेचनघट' कहा जाता था।

**प्रमदवन**

प्राचीन साहित्य में उद्यानों के संदर्भ में जिस उपवन का विशेष उल्लेख मिलता है, वह राजप्रासाद से संयुक्त प्रमदवन। अंतःपुर की स्त्रियों के लिए बनायी गयी यह वाटिका सभी सुख-सुविधाओं से संपन्न होती थी। इसकी देखभाल महारानी अथवा राजकुमारियों के संरक्षण में की जाती थी। इस वाटिका में राजा के अतिरिक्त केवल विदूषक और कंचुकी पुरुष पात्र ही प्रवेश कर सकते थे। वसंत ऋतु में प्रमदवन की शोभा बड़ी मनोहारी होती थी। अशोक का वृक्ष लाल-लाल फूलों के साथ खिल उठता। इसे पुष्पित होने से पूर्व किसी नवयौवना सुंदर स्त्री के पादप्रहार को सहना पड़ता। उस समय प्रमदवन में अशोक पर पाद प्रहार के इस क्षण को 'दोहोत्सव' के रूप में बड़े आनंद और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता। वृक्ष पर पुष्पों के आते ही अंतःपुर में मोदक-वितरण होता। प्रमदवन में दोलोत्सव भी मनाया जाता था। इस अवसर पर रानी महारानियां राजा के साथ झूला झूलती थीं।

प्रमदवन में खिले हुए रंग-बिरंगे पुष्पों से संपूर्ण वातावरण सुगंधित और मादकतापूर्ण हो उठता। माधवी, अतिमुक्त लताएं अपनी पुष्प-समृद्धि से प्रमदवन की शोभा बढ़ा देती थीं। राजाओं के लिए प्रमदवन-जैसे स्थल भोगविलास के प्रमुख स्थल थे। ये प्रमदवन बहुत बड़े एवं विस्तृत भी होते थे। जिसमें छोटे-छोटे कक्षों का निर्माण होता था।

'रघु वंश' में प्रमदवन के अंदर निर्मित एक 'गृहदीर्घिका' का संकेत मिलता है, जिसमें 'गूढ़मोहन ग्राह' नाम से गुप्तखंड थे। ऐसा समझा जाता है कि ये गुप्त कक्ष पानी के अंदर बने होते थे और इनकी कमर भर की ऊंचाई सूखे ढालू पर थी। वस्तुतः ये विलासकक्ष थे। इस प्रकार का गुप्त कमरे वाला तालाब आज भी लखनऊ में देखा जा सकता है जो अवध के नवाब वाजिद अली के लिए बनी 'पिक्चर गैलरी' के पृष्ठ भाग में स्थित है रघुवंश से इन गुप्त

कक्षों के विषय में जानकारी मिलती है कि ये कमरे रसिक राजा जल क्रीड़ा के समय प्रणयलीला के लिए प्रयोग में लाते थे । इन कमरों के पास ही 'यंत्रधारा गृह' भी होते थे । ऐसे भव्य प्रमदवनों का वर्णन अर्थशास्त्र में किया गया है, जो राजकुमारों के मनोरंजन के लिए होते थे । आधुनिक विद्वान पं. सीताराम चतुर्वेदी ने ऐसे उद्यान को 'नजर-बाग' कहा है । ऐसे नजरबाग का उल्लेख ग्रीक राजदूत मैगस्थनीज ने चंद्रगुप्त मौर्य के पाटलिपुत्र के राजप्रासाद के वर्णन में किया है ।

### भित्तियों पर उत्कीर्ण दृश्यावली

प्राचीन समय में उद्यान, उपवन एवं वाटिकाओं की बहुलता थी । इन सबकी देखभाल के लिए निपुण उद्यान पालक या उद्यान पालिया होते थे जो वनसंपत्तियों का विशेष ज्ञान रखते थे । इसी कारण इन उद्यानों में प्रत्येक ऋतु में अत्यधिक संख्या में पुष्प लगते थे । ये पुष्प पूजा, अर्चना एवं श्रृंगार प्रसाधन के लिए प्रयुक्त होते थे । इनसे विभिन्न प्रकार की औषधियां बनायी जाती थीं । पुष्पों का व्यवसाय भी किया जाता था । 'मेघदूत' में संकेत मिलता है कि पुष्पों के व्यवसाय करनेवाले वर्ग को 'पुष्पलावी' कहा जाता था ।

उपवन-उद्यान वाटिका की प्राकृतिक छटा सर्वत्र विकीर्ण हो और भला मूर्तिकारों या शिल्पियों को विदित न हो । इन उद्यानों के मोहक दृश्यों को प्राचीन शिल्पियों ने अपनी कल्पना के द्वारा कुदाली से स्तूपों गुफाओं और मंदिरों की भित्तियों पर उत्कीर्ण किया है । सांची और भरहुत के स्तूप पर मनोविनोद के विभिन्न साधनों में 'उद्यान यात्रा' का महत्त्वपूर्ण दृश्य दर्शाया गया है । इसमें भली-भांति पुष्पों से आच्छादित वृक्षों के नीचे सरोवर के तट पर आनंद मनाने के कई दृश्य उत्कीर्ण हैं । अजंता-एलोरा एवं दक्षिण भारत के मंदिरों में उपवन, वाटिका की अनुपम छटा सहसा मन मुग्ध कर लेती है । इसी प्राकृतिक सौंदर्य एवं सुषमा को संजोये, कालांतर में, कांगड़ा शैली के चित्रकारों की तूलिका ने असंख्य उद्यानचित्रों का चित्रण किया है । जिनमें एकांत में बैठे प्रेमी युगल अथवा राधा-कृष्ण उपवन के प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद ले रहे हैं ।

वस्तुतः ये प्राचीन उपवन, उद्यान तत्कालीन मानव के लिए मनोविनोद के स्थल थे । इसीलिए इनकी देखभाल, इनकी सुव्यवस्था बड़े ढंग से की जाती थी । सार्वजनिक उद्यानों की देखभाल या तो धनाढ्य व्यक्ति अथवा कोई धार्मिक संस्था करती थी । राजा भी उद्यानों की देखभाल करना 'राजकार्य' का ही एक महत्त्वपूर्ण कार्य समझता था । राजप्रासाद से संयुक्त उद्यान तो बहुत समृद्ध एवं संपन्न होते थे । तब भी इसमें कोई संशय नहीं कि प्राचीन कालीन उद्यान चाहे सार्वजनिक हों या निजी, वे सुनियोजित, सुव्यवस्थित एवं सुविधापूर्ण होते थे ।

९/२०९, सैक्टर-३, राजेंद्र नगर
साहिबाबाद-२०१०

बागों में बहुत होता है
लुका-छिपी का खेल
पारदर्शी : भगवान दास रूपाणी
मखमली घास और फूलों की
कतारें हरती हैं थकान
बागों में खिलते हैं रंग-बिरंगे फूल
पारदर्शी : प्रेम कपूर

रंग-बिरंगे परिधानों में नृत्य करते आदिवासी

अब तुम एक दूसरे के साथ शादी में बंध गये हो
-एक दूसरे के लिए तुम दोनों, पूरी तरह समर्पित हो
तुम्हें अपने सभी काम स्वयं ही करने हैं
प्रत्येक काम में एक दूसरे से सलाह करना
शादी से पहले स्वछंद और स्वतंत्र थे
तुम घोटुल में रहते थे,
वहां हर तरह का मनोरंजन करते थे, मजा लेते थे
लेकिन अब तो वह स्थिति नहीं रही है
अब तुम्हें घोटुल में व्यतीत जीवन को भूल जाना चाहिए
घोटुल में बिताये दिनों का मोह तुम्हें नहीं होना चाहिए
सभी काम का एक समय होता है ।
तुम हंसी खुशी साथ-साथ रहो, हम भी यही चाहते हैं....

परंपरागत गहनों में आदिवासी युवतियां

पारदर्शी : एस. अहमद

ये कोई कहानी नहीं, बल्कि हकीकत है। बस्तर में जब भी कोई घोटुल सदस्य शादी के बंधन में बंधता है तो गीतों के माध्यम से शादी के बंधन में बंधनेवाले सदस्यों को भावी जीवन को सुखमय बनाने के लिए न केवल सीख दी जाती है वरन उन्हें घोटुल में बिताये

# अविवाहितों का राजप्रसाद

## बस्तर के घोटुल, बदलता चेहरा

● एस. अहमद

रंगीन सपनो जैसे दिनों को भूलने को सलाह भी दी जाती है।

घोटुल है भी रंगीन सपने जैसा। मुरिया जनजाति के आदिवासियों में मान्यता है कि घोटुल संसार का सबसे बड़ा वरदान है जो लिंगो देवता ने मानव जाति को दिया है। अग्नि का आविष्कार, या मद्य का दान अथवा संगीत का अनुसंधान ये सब घोटुल की समता नहीं कर सकते, घोटुल 'हिंडामहल' अथवा अविवाहितों का राज प्रासाद है।

आदिवासियों में घोटुल संस्था सामाजिक तथा सांस्कृतिक दृष्टिकोण से बहुत महत्त्वपूर्ण है। अपने लड़के लड़कियों की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा पारिवारिक विकास और प्रगति के लिए यह समाज कितना सजग है। इस बात का ज्ञान घोटुल संस्था के परिचय जाने बिना नहीं जाना जा सकता। प्रायः यह देखा गया है कि समस्त आदिवासी समाजों में घोटुल संस्था की स्थापना का प्रचलन है। बोली की विविधता के कारण विभिन्न आदिवासी समाजों में इसके अलग-अलग नाम हैं।

मुरिया इसे घोटुल कहते हैं। 'गुईया' इसे 'थेगरवस्या' के नाम से पुकारते हैं। 'मुंडा' इसे 'गतिओरा' कहते हैं उरांव में यह संस्था 'घुमकुरिया' कही जाती है। कमोवेश ज्यादातर

**उनका खुला-खुला उन्मुक्त वातावरण में विचरता जीवन, बाहरी लोगों की घुसपैठ के कारण सिकुड़ता जा रहा है और इस कारण उनकी जीवन शैली में परिवर्तन आ रहा है और इस परिवर्तन को वे सहज ढंग से नहीं ले रहे हैं। क्योंकि वे इस तरह के जीने में घुटन महसूस करते हैं। लेकिन घोटुल का व्यावसायिक रूप उनको दिगभ्रमित कर देता है। वे सजग हैं। और पहचान भी रहे हैं लेकिन नोटों की चमक...उनको बहका देती है...और इस दिशाभ्रमित नजरिये के तहत मुरिया आदिवासियों की सांस्कृतिक धरोहर 'घोटुल' कितने दिनों तक जिंदा रह सकेंगे।**
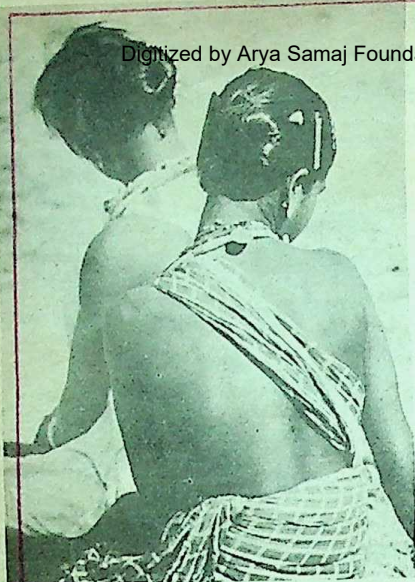
ये आदिवासी लड़कियां

आदिवासी समाजों में 'घोटुल' संस्था विराजमान है । अपने अलग-अलग नामों के साथ लेकिन एक बात हर जगह समान है कि यह संस्था पूरी तरह अविवाहित लड़के-लड़कियों के लिए है । विवाहितों का प्रवेश वर्जित है ।

सूरज ढलते ही कुमार गृह में चहल-पहल शुरू हो जाती है । और कुमार-कुमारियां रातभर घोटुल में रहकर जीवनोपयोगी बातें सीखते हैं । एक-दूसरे का मनोरंजन करते हैं । सामाजिक और धार्मिक तथ्यों से अवगत होते हैं ।

## घोटुल : संस्कृति स्थल

मुरिपा सामाजिक व्यवस्था में घोटुल का अपना महत्त्व है । यहां युवकों की साम्राज्य चलता है । घोटुल मुरिया युवकों की संगठन व्यवस्था का नाम है । घोटुल गांव से परे हरे-भरे पेड़ों से घिरे मैदान में बनाया जाता है इसमें गांव के कुमार और कुमारियां बड़े प्यार और चाव से बनाते हैं । दीवारों को घोटुल देवता लिंगो के चित्र बनाकर सजाया जाता है । युवा गृह में एक बड़ा कमरा तथा एक छोटा कमरा होता है । बड़े कमरे में व्यस्क कुमार और कुमारियां आपस में जोड़े बनाकर रहते हैं । तथा छोटे कमरे में अव्यस्क बालक और बालिकाएं सोती हैं । 'बेरिअर एलिवन' के अनुसार ये इनका मनोरंजन स्थल है । यहां वे सामाजिक सांस्कृतिक बातों के साथ-साथ यौन शिक्षा भी प्राप्त करते हैं । आपस में जोड़े बनाकर रहते हैं । परंतु कोई जोड़ा तीन दिन से ज्यादा एक-दूसरे के साथ नहीं रह सकता, एक तरह से ये संगी बदलते रहते हैं । लेकिन अगर कोई लड़की इस संपर्क के दौरान गर्भवती हो जाती है तो उसके साथी कुमार को अर्थ दंड के साथ-साथ अन्य दंड भी भोगने पड़ते हैं ।

मुरिया सामाजिक व्यवस्था में हर लड़के और लड़की को घोटुल को सदस्यता ग्रहण करना अनिवार्य है । माता-पिता अपने बच्चों को पांच साल की उम्र के बाद घोटुल में सोने के लिए भेजना शुरू कर देते हैं । अगर कोई लड़का या लड़की घोटुल की सदस्यता ग्रहण नहीं करते हैं तो उसके तथा उसके घर के सामाजिक कार्यों में घोटुल का कोई भी सदस्य शिरकत नहीं करता है ।

## सुनियोजित कार्यविभाजन

घोटुल के कार्य आपस में बंटे हुए होते हैं । हर एक सदस्य के जिम्मे जो कार्य है वह उसको करना अनिवार्य है । अगर कोई सदस्य किसी कारणवश सौंपा गया कार्य करने में असमर्थ रहता है तो उसको दंड का भागीदार बनना पड़ता है ।

घोटुल के सदस्यों के अलग-अलग पद होते

हैं। वहां कलेक्टर, थानेदार, दरोगा, पटवारी आदि पदों पर सदस्य कार्य करते हैं। वैसे घोटुल के कुमारों को 'चैलिक' और कुमारियों को 'मुटियारिन' कहा जाता है। कमोवेश हर मुरियागांव में घोटुल होता ही है। लेकिन अबूझमाड़ के घोटुलों में लड़कियां रातभर नहीं रह सकती हैं। नृत्य आदि में भाग लेकर रात को सोने के लिए अपने-अपने घर चली जाती हैं।

मुरिया आदिवासी नारायणपुर और कौंडागांव के आस-पास के इलाकों में बसे हुए हैं। अबूझमाड़ीया जिन्हें हिलमाड़िया भी कहा जाता है। 'माड़' पहाड़ पर रहते हैं। इनके गांव छोटे-छोटे होते हैं। मुरिया आदिवासियों के घर एक-दूसरे से सटे हुए तथा हर घर के आगे और पीछे खुला आंगन होता है। मुरिया आदिवासी अपने उपभोग की सब्जी अपने घर में ही उगाते हैं।

### श्रृंगार-संगीत-नृत्य का सँगम

मुरिया युवक अपने बालों को बहुत संवार कर रखते हैं। लड़कियों की तरह क्लिप और रिबिन के फूलों से अपने बालों को सजाते भी हैं। इनके चेहरे इतने सुकोमल होते हैं कि कभी-कभी लड़कियों का गुमान होता है।

नृत्य और संगीत इनके जीवन का अभिन्न अंग है। ये खेतों में काम करते हुए गाते हैं तो घर को लौटते हुए भी गाते हैं। बाजार, शादी, मड़ई, कोई भी पर्व बिना नृत्य और संगीत के पूरा नहीं हो सकता।

लेकिन अब आदिवासी संस्कृति के परिचायक घोटुल बदल रहे हैं। बाहरी लोगों की घुसपैठ के कारण उत्पन्न हुई विकृतियों की

आदिवासी लड़की पैर गुदवाती हुई

वजह से घोटुल का स्वरूप बदलने लगा है।

कुछ वर्ष पूर्व तमाम घोटुलों को बंद करने की बात उठायी गयी थी इसके पीछे मुरिया गांवों के मांझी और पटेलों का तर्क था कि 'बाहरी' लोग घोटुलों में अनापेक्षित हस्तक्षेप करते हैं उनकी नियत बुरी होती है जिसके कारण हमारी संस्कृति दूषित हो रही है। लंबी बहसों के बाद पटेलों और मांझियों ने पक्ष और विपक्ष के तर्कों को सामने रखकर कुछ आंशिक परिवर्तनों को लागू करने का निश्चय किया जिसका मुरिया युवक और युवतियों द्वारा कड़ा विरोध किया गया। फिर तय हुआ कि घोटुल प्रशासन पर छोड़ दिया जाए कि वह इन परिस्थितियों में किस प्रकार का परिवर्तन चाहते हैं और उसे लागू करने के लिए स्वतंत्र हैं लेकिन कुछ न हुआ। आज घोटुल परंपरागत ढंग से विद्यमान है हां इतना जरूर हुआ कि कहीं-कहीं लड़कियों को नृत्य के समय ब्लाऊज (पोलका) पहनना

घोटुल के लिए बनायी गयी झोंपड़ी

अनिवार्य कर दिया गया ।

जहां तक नागर संस्कृति का अतिक्रमण और बाहरी लोगों के हस्तक्षेप का सवाल है । उसके जीवंत प्रमाण मुझे कई जगह दिखायी पड़े । पिछले दिनों गढ़बेंगाल (नारायणपुर जिला बस्तर) के घोटुल में जाना हुआ था ।

उस दिन मैं दोपहर के बाद ही पहुंच गया था । गांव में लोग अभी खेतों में ही थे । अक्तूबर का महीना था । जंगलों में शाम जल्दी ही उतर आती है । गांव के पटेल ने घोटुल में पहुंचा दिया (उल्लेखनीय है कि घोटुल के बाहर ही 'थानागुड़ी' बनी होती है वह परदेसी मेहमानों के लिए होती है ।) घोटुल में सन्नाटा था वैसे भी घोटुल में चहल-पहल सूरज ढलने के बाद ही शुरू होती है ।

मैं वहीं औसारे में बिछी चटाई पर पसर गया । गढ़बेंगाल का घोटुल गांव से बाहर एक ऊंचे टीले पर है । सामने औसारा, फिर खुला आंगन, और आंगन के बीच में घोटुल देवता 'लिंगो' का प्रतीक स्तंभ, और पूरे घोटुल को घेरे लकड़ी का परकोटा, और उसके चारों तरफ खड़े थे ऊंचे-ऊंचे साल और सरई के दरख्त पहरेदारों की तरह... ।

सामने की दीवार पर कोयले से एक लड़की की 'न्यूड' आकृति बनी हुई थी । घोटुल कुमारों में से किसी ने बनायी होगी । चित्र में अंगविशेषों को उकेरने में खासी मेहनत की गयी थी यह आकृति इस बात का जीवंत प्रमाण थी कि अब इन आदिवासियों के बीच शहरी संस्कार बहुत तेजी से अतिक्रमण कर रहे हैं । आज छोटे से छोटे गांवों में भी वीडियो हाल खुल गये हैं जहां चोरी-छिपे बिल्यू फिल्मों का प्रदर्शन भी हो जाता है । पिछले १५ वर्षों के दौरान लगातार मेरा संपर्क आदिवासियों से होता रहा है । लेकिन कभी भी इस तरह के चित्र नहीं दिखायी दिये हैं । जबकि घोटुल संस्था कोई आज की पैदावार नहीं है बल्कि यह तो इनकी आदिम संस्कृति का एक अभिन्न अंग है । और यहां यौन शिक्षा या आज की शहरी संस्कृति के ख्याल से 'फ्री सेक्स' बहुत पहले से ही विद्यमान है ।

दिन ढलते ही लोग जुड़ने लगे । जुहार-जुहार की आवाजें पास आकर माहौल को गरमाने लगी । लड़के-लड़कियां गुट

बनाकर बैठ गये थे । आंगन में अलाव जलाने के लिए लकड़ियां इकट्ठी की जाने लगीं घोटुल पटेल पास आकर बैठ गया । और बतियाने लगा । थोड़ी ही देर में मंद (घर की बनी हुई महुए की शराब) आ गयी साल के दोनों में, पटेल ने एक दोना मुझ को थमा दिया 'मंद से सत्कार आदिवासी समाज में प्यार और सम्मान का प्रतीक है' एक घूंट में लगा कि गले में आग-सी तैर रही हो । सारा गला छिल-सा गया । इधर-उधर देखा लड़के-लड़कियां बिना किसी झिझक के मंद पी रहे थे, मैं भी बची हुई मंद एक झटके से गले में उतार गया । कोई धीरे-धीरे मांदर पर थाप देने लगा...लड़कियां भी धीमे स्वर में गुनगुना उठीं ।

नृत्य अबाध गति से चल रहा था जंगली पक्षी के गाने की तरह लड़कियों की आवाजें वातावरण को गुंजारित कर रही थी । अलाव के इर्द-गिर्द घूमते हुए तामटे चेहरों पर इस सरदी के मौसम में भी पसीने की चमक दिखने लगी थी । पूरे माहौल पर एक जादुई परत-सी चढ़ी हुई लग रही थी ।

अचानक गीतों के बोल हवा में विलीन हो गये मांदर भी रुकी-रुकी सी लगने लगी और नृत्य थम गया । सारे नृतक अलसा से गये । सामने देहटी पर कुछ लड़कियां आकर बैठ गयी थीं, सटी हुई, छेड़ती हुई एक दूसरे को । हलका उजाला था जिसमें चेहरों को देखा जा सकता था ।

आदिवासी समाजों में होनेवाले वर्तमान परिवर्तन को क्या कहा जा सकता है । क्या यह गांव पर शहरी संस्कृति का अतिक्रमण है...आदिवासियों के बदले हुए परिवेश को शहरी दृष्टिकोण से कोई प्रगतिशील नाम दिया जा सकता है । परंतु आदिवासी इस परिवर्तन को सहज ढंग से नहीं ले रहे हैं । वह अपनी सामाजिक संरचना के बीच अपने रीति-रिवाजों के साथ रहना चाहते हैं । अपने बीच होनेवाले अनावश्यक हस्तक्षेप से बस्तरवासी क्षुब्ध हैं । क्योंकि उनको डर है कि इस तरह वे अपनी पहचान खो देंगे । क्योंकि मुरिया आदिवासी संस्कृति में घोटुल एक सामाजिक, सांस्कृतिक संगठन है जहां युवक- युवतियां अपने भावी जीवन की बातें सीखते हैं । और आगे आनेवाली जिंदगी में उनका अनुसरण करते हैं । लेकिन 'बाहरी' लोगों की नजर घोटुल के भीतर होनेवाले कार्य-कलापों पर है चाहे बी.बी.सी. वाले हों या अपने ही देश के लोग, सभी उनकी सिधाई का फायदा उठाकर उनकी जीवन शैली के विभिन्न रूपों को विकृत ढंग से उजागर कर रहे हैं ।

उनका खुला-खुला उन्मुक्त वातावरण में विचरता जीवन, बाहरी लोगों की घुसपैठ के कारण सिकुड़ता जा रहा है और इस कारण उनकी जीवन शैली में परिवर्तन आ रहा है और इस परिवर्तन को वे सहज ढंग से नहीं ले रहे हैं । क्योंकि वे इस तरह के जीने में घुटन महसूस करते हैं । लेकिन घोटुल का व्यावसायिक रूप उनको दिगभ्रमित कर देता है । वे सजग हैं । और पहचान भी रहे हैं लेकिन नोटो की चमक...उनको बहका देती है...और इस दिशाभ्रमित नजरिये के तहत मुरिया आदिवासियों की सांस्कृतिक धरोहर 'घोटुल' कितने दिनों तक जिंदा रह सकेंगे ।

—एच-१ शांतिनगर, रायपुर म.प्र.

*'इस तरह हंसी मत उड़ाओ' मुखो ने कहा ।'' दो बातें डायरी में लिख लो । दो हफ्ते के बाद हम कुफ्री के लिए भ्रमण पर जाएंगे । रास्ते में बस उलटेगी । दूसरी बात...इस महीने के अंत में हमारे विधि के प्राचार्य जगोटा गुसलखाने में पैर फिसलकर गिरेंगे, उनका पैर टूटेगा ।''*

# मुखो

● मलयाट्टूर रामकृष्णन

भविष्य की बातों को जान पाना मनुष्य का एक विशिष्ट गुण माना जाता है । आरंभ में मैं नहीं जानता था कि हमारे मित्र मुखोपाध्याय में ऐसे गुण मौजूद हैं ।

हम उनको मुखो कहते थे । शिमला के एडमिनिस्ट्रेटीव स्टाफ कॉलेज में हम छह महीने एक साथ रहे । मुखो एकदम दुबला-पतला था । उसका पहले आई. पी. एस. में चयन हो गया था । सात साल वह पुलिस अफसर बनकर घूमा । उन दिनों तीन-चार कमीज और दो स्वटेर पहनने के बाद वह वरदी पहनता था । थोड़ा-सा मोटा लगना जरूरी है न ? इस प्रकार वरदी पहनना बहुत ही कष्टकर था । इस तरह की तकलीफ उठाते समय ही आई. ए. एस. के लिए विशेष भरती हुई थी । मुखो ने प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लिया और अच्छे अंकों से पास हुआ ।

स्टाफ कॉलेज में कई तरह के प्रशिक्षणार्थी थे । विभिन्न उम्र के और भिन्न राज्यों के लोग । सबकी अपनी-अपनी खासियत और कमियां थीं और रीति रिवाज भी ।

जम्मू कश्मीर से आये आगा नजीर हर समय मुंह में पाइप लिये घूमता था । पैंतीस साल का क़ाद्री लेक्चर क्लास में कव्वाली गाता था । अंगरेजी लिपि में मलयालम में गालियां सीखने के लिए मेरे पास बीच-बीच में आ धमकते थे तिवारी । बिहार से आये एम. सी. कुंद्रे एक बगुला था और उसे अजीर्ण की बीमारी थी । दस लोगों के बीच जोर से वायु निकालने में उसे किसी तरह की झिझक महसूस नहीं होती थी । लालगुडि का वेदनारायण सबको सूर्यनमस्कार सिखाने की कोशिश करता था ।

इस तरह सबके बारे में कुछ-न-कुछ कह सकता हूं । लेकिन नहीं, हमारी कहानी का पात्र

मुखो है । हर तरह से वह औरों से भिन्न था ।

मुखो को सिर्फ मुझसे ही मित्रता थी । वह कहता था केरल के लोग बंगालियों को प्यार किये बिना रह नहीं सकते । स्टाफ कॉलेज ग्रांट होटल में था । हर समय वहां मोटे-तगड़े बंदर आते थे । अगर खिड़की बंद करना भूल गये तो वे कमरे के अंदर घुसेंगे । अगर हाथ दिखाकर डराने की कोशिश की तो वे दांत दिखाकर आगे बढ़ेंगे । इन दुष्ट बंदरों को वाकिंग स्टिक से मारकर भगाना क्या खतरनाक नहीं है ? लेकिन मुखो ऐसा नहीं सोचता था । उन्हें वाकिंग स्टिक दिखाकर भगाना मुखो ने रोजमर्रा को एक बात बना ली थी ।

मुखो नामक वह भूतपूर्व आई. पी. एस. अफसर सिर्फ बंदर विरोधी ही नहीं था । अंगरेजी में 'तिमरक' शीर्षक से अर्थहीन कविताएं वह नोटिस बोर्ड पर लिख डालता था । इन कविताओं के माध्यम से स्टाफ कॉलेज के प्रिंसिपल से लेकर रिसेप्शन के क्लर्क तक की वह हंसी उड़ाता था । लिमरिकों में अश्लील मिलाने में भी वह नहीं चूकता था । लेक्चर क्लासों के बाद होनेवाली चर्चाओं में छुरी की नोक-जैसा कमेंट करने में मुखो बहुत उत्सुक रहता था । माल में अचानक मिली एक लड़की को अपने कमरे में ले आने का दुस्साहस दिखाया तो उसकी प्रसिद्धि (या कुप्रसिद्धि) चरम सीमा तक पहुंच गयी थी ।

ऐसी हालत में...

फिर बंदरों के बारे में बोलना जरूरी है । एक तरफ से देखें तो भविष्य की बात जानने की सिद्धि बंदरों ने ही मुखो को दी थी, ऐसा कह सकता हूं । जो घटना घटी, उसके बारे में कहूंगा ।

बंदरों के एक झुंड ने मुखो पर आक्रमण कर दिया ।

ग्रांट होटल की कोरिडोर से करीब एक दर्जन

*उसने कहा "मुझे मालूम नहीं । यह शक्ति और अन्य कई ताकतें हम लोगों के मस्तिष्क के किसी कोने में छिपी बैठी हैं । मेरी बात कहूं तो...थोड़ा रुककर, हल्की-सी मुसकराहट के बाद मुखो ने आगे कहा, "बंदरों के काटने ने मुझे यह ताकत दी ।"*

बंदर मिलकर मुखो को भगाते हुए । देखनेवाले हैं होटल के बैयरे मुसद्दी राम और भोलानाथ । उन दोनों की आंखों के सामने ही बंदर मुखो की पीठ पर कूद पड़े । मुखो गिर गया । वाकिंग स्टिक फिसलकर दूर जा गिरी । उसके बाद...

उसके बाद क्या हुआ ? बंदरों ने उसे सात-आठ बार अच्छी तरह दांतों से काट लिया ।

मुखो के घाव पर टांके लगाने पड़े । कीटाणुनाशक इंजेक्शन भी देना पड़ा । संक्षेप में कहा जा सकता है कि चार हफ्ते तक वह असहाय स्थिति में रहा । फिर से उसने लेक्चर क्लास में और (मैस) में आना शुरू कर दिया था । पर अब वह बिल्कुल अलग किस्म का आदमी हो गया था । तीखी भाषा में कमेंट करना और लिमरिक लिखना उसने छोड़ दिया था । यह बताने की जरूरत नहीं कि वह बंदरों से बहुत डरने लगा था ।

एक दिन, रात को वह मेरे कमरे में आया । उसने कहा "मुझे कुछ कहना है ।" और मानव मन में निहित ताकतों के बारे में उसने बताना शुरू कर दिया । मस्तिष्क की बनावट के बारे में कहने के बाद उसने एक सिद्धांत पेश किया । मस्तिष्क की, यानी मन की, पूरी ताकत का हम इस्तेमाल नहीं करते । ज्यादा-से-ज्यादा दस प्रतिशत ही प्रयोग में लाते हैं । उसका कारण क्या है ? यही कि हम लोगों की आयु कम हो गयी है । कई युग पहले मानव अपने मस्तिष्क का पूरा इस्तेमाल करता था । तब उसकी आयु एक हजार वर्ष थी । तब भाषा नहीं थी । टेलीपैथी से आशयों का आदान-प्रदान होता था । फिर एक घटना घटी जो हमें अज्ञात है । संभवतः एक परमाणु युद्ध ही हुआ होगा । उसके बाद मानव के कोशों में और जींस में बदलाव आया । म्यूटेशन । पुराने ढंग से और बड़प्पन से मानव का मस्तिष्क रह जाने के बाद ही उसको प्रयोग में लाने की क्षमता बड़ी तादाद में नष्ट हुई । मानव की आयु सौ साल से कम हो जाने के कारण परमाणु युद्ध के फलस्वरूप ही ऐसा हुआ है—मस्तिष्क की पूरी क्षमता को विकसित करना उससे नहीं हो पाया । "क्या आपकी समझ में आ रहा है ?" उसने पूछा ।

मैं ठीक ठीक कुछ समझ नहीं पाया, फिर भी मैंने कहा—"येस, आई फोलो..."

मुखो ने कहा कि युगों पहले मानव में जो सामर्थ्य थी, वह आज भी उनमें सोयी पड़ी है । टेलीपैथी क्लेयरवोयंस, प्रोकोग्नीशन इन सबके बारे में उसने विस्तार से कहा । अंत में एक दावा किया कि उसे प्रोकोग्नीशन को सिद्धि प्राप्त हुई है । आनेवाली बातों को वह पहले से जान सकता है ।

ऐसे में मुझसे हंसी रोकना संभव नहीं हुआ ।

"इस तरह हंसी मत उड़ाओ मुखो ने

कहा ।" दो बातें डायरी में लिख लो । दो हफ्ते के बाद हम कुफ्री के लिए भ्रमण पर जाएंगे । रास्ते में बस उलटेगी । दूसरी बात...इस महीने के अंत में हमारे विधि के प्राचार्य जगोटा गुसलखाने में पैर फिसलकर गिरेंगे, उनका पैर टूटेगा ।"

"यह सब रहने दो...कल दोपहर के खाने का क्या मेनु होगा ?" मैंने व्यंग्य किया ।

"अरे, यह बात तुम मेस स्ट्यूवार्ड या बावर्ची से जाकर पूछो ।" मुखो को जरा-सा गुस्सा आया ।

हमारी बातचीत के समय कुफ्री के भ्रमण के बारे में किसी ने सोचा तक नहीं था । वह यात्रा संपन्न हुई । हम लोगों की बस उलटी भी थी । जगोटा गिरे थे । गुसलखाने में नहीं, सेसिल होटल के बार में । उनका पैर जरूर टूट गया ।

इसके बाद मुखो की नयी ताकत को मैं कैसे बेकार मानकर छोड़ सकता था ? मैंने पूछा "यह शक्ति, प्रीकोग्नीशन तुमने कैसे पायी ?"

उसने कहा "मुझे मालूम नहीं । यह शक्ति और अन्य कई ताकतें हम लोगों के मस्तिष्क के किसी कोने में छिपी बैठी हैं । मेरी बात कहूं तो...थोड़ा रुककर, हल्की सी मुसकराहट के बाद मुखो ने आगे कहा "बंदरों के काटने ने मुझे यह ताकत दी ।"

स्टाफ कॉलेज के प्रशिक्षण के बाकी दिनों में कोई खास बात नहीं हुई ।

सबके बिछड़ने का समय आया । ...कार से कालका जाना है । फिर वहां से रेलगाड़ी से दिल्ली जाना है ।

स्टाफ कॉलेज की आखिरी शाम ।

मुखो मेरे कमरे में आया । मुझे लगा कि वह किसी मानसिक विषमता का शिकार है ।

उसने जो बात कही, उसकी मुझे जरा भी उम्मीद नहीं थी । इतने दिन वह अविवाहित रहा । प्रशिक्षण के बाद घर लौटने पर विवाह करने की उसकी इच्छा थी । सुचेता सुंदर है । उसका परिवार भी अच्छा है । लेकिन मुखो अब उसे नहीं स्वीकार कर सकता । शादी का इरादा रद्द करना है । "शादी के बाद वह मुझको धोखा देगी, यह बात मैं अभी से जान रहा हूं । उसका एक प्रेमी होगा । वह अपने प्रेमी के साथ भाग जाएगी ।"

जब मैंने चुप्पी साधी तो मुखो ने कहा "अपने दुःख को जरा कम करने के लिए ही कहा है... तुम इसे भूल जाओ ।"

सालों बाद किसी सरकारी कार्य के लिए दिल्ली गया तो मैंने मुखो को फिर देखा । तब वह वाणिज्य मंत्रालय में जायंट सेक्रेटरी के पद पर था । तब तक उसकी उम्र अड़तालीस साल हो गयी होगी ।

मैंने उसे केरला हाउस में आने का न्यौता दिया ।

व्हिस्की पीते समय मैंने उसके परिवार की कुशलता के बारे में पूछा ।

उसने विवाह नहीं किया था ।

कई प्रोपोजल आये । सबकी सब में प्रीकोग्नीशन ने रुकावट डाली, मुखो ने पूर्वाभास से समझ लिया था कि वे सब आगे चलकर उसको धोखा देंगे ।

"अगर यह हाल है तो तुम्हें कुंवारा ही रहना पड़ेगा" मैंने कहा ।

"वैसा कहना ठीक नहीं होगा । अब मैंने एक औरत को ढूंढ़ निकाला है । तीस साल की

एक विधवा । मुझे पसंद है । वह भी तैयार है । वह मुझको धोखा नहीं देगी'' मुखो ने कहा ।

''यह तो खुशी की बात है । जितनी जल्दी हो सके, उससे शादी कर लो । अगर शादी दिल्ली में होगी तो मैं भी आऊंगा । किसी सरकारी काम का बहाना करके आ जाऊंगा ।''

''लेकिन इसमें भी कुछ गड़बड़ी है ।''

''वह क्या है ?''

''मुझे पूर्वाभास हो रहा है कि दस साल बाद मैं उसे मार डालूंगा ।''

''इस सबकी एक सीमा भी होती है । तुम उसे क्यों मारने जाओगे ?''

उसका बोरडम सहना मेरे लिए संभव नहीं रहेगा । रिवॉल्वर से मैं उसे मार डालूंगा । उसकी लाश एक ट्रंक में बंद करने के बाद...''

''मुखो'', डांटने के स्वर में मैंने उसे पुकारा था । या विरोध के स्वर में ? मुझे लगा था कि उसकी पागलों-जैसी बातें क्या, सीमा को लांघ नहीं रही हैं ?''

दोस्त, पूर्वाभास के जरिए जो देखा है, वही बात मैंने कह दी है, बस । ...अच्छा, आपकी क्या राय है ? मैं इस औरत से शादी करूं ?''

व्यंग्यभाव से मैंने कहा : ''उससे कहना कि आनेवाले दिनों में तुम उसे मार डालोगे ।... फिर भी अगर वह राजी होती है तो शादी करना ।''

''यू आर ग्रेट । मैंने यही किया है, कल मैंने उससे यह बात कही है ।''

''फिर ?''

''फिर भी वह शादी के लिए तैयार है ।''

''तो शादी होगी न ?''

''होगी,...रिस्क उसी का है न ?''

**—कीडाथिल मलयिल, थेक्कुमकल, पो. ऑ. कोट्टमकल—६८९६१४ (केरल)**

**(अनुवादक : के. राधाकृष्णन)**

## घुड़दौड़ में सबसे बड़ा पुरस्कार

**अमरीका में १० नवम्बर, १९८४ और २ नवम्बर १९८५ को हुई ब्रीडर्स कप की सात घुड़दौड़ों में एक करोड़ डॉलर का पुरस्कार रखा गया था । इसमें ब्रीडर्स कप क्लासिक का ३० लाख डॉलर का इनाम भी शामिल था ।**

* * * *

## दुनिया का सबसे बड़ा रेसकोर्स

**विश्व का सबसे बड़ा रेसकोर्स न्यू मार्किट में है । उसमें शामिल राले माइकेल कोर्स और जुलाई कोर्स के ग्रेंड स्टैंड करीब एक मील दूर है । ६८० किलोमीटर लंबा बीकन कोर्स अब दुनिया में सबसे विशाल प्रशिक्षण क्षेत्र है ।**

# भारतीय दोस्त के लिए

तुम्हारी आंखों में देख रही हूं
उनके कालेपन से मोहित हूं
नजर नहीं हटाती—
तुम्हारे सौंदर्य से बिछुड़ नहीं सकती ।

मैं क्या बोल सकती हूं ?
शब्द घुले हैं शहद की तरह
फिर मेरा दिल
हलका बादल-सा आसमान में जाता है ।

# सपना

जब
सपना पूरा हो जाता है
अंबर में
सितारे जलने लगते हैं
एक, दूसरा, तीसरा
और सितारों का बाहुल्य
तुम्हारे निकट आएगा
अपने महलों की रोशनियों से चमकीला—
शहर की तरह

जब सपना पूरा हो जाता है
अंबर तुम्हारे लिए
मुसकान को प्रदान करता है
और उसका सांवला चेहरा
खुशी से चमकता है
वह तुम्हारे साथ
रात्रि के सब आनंद में
सहभागी होगी
और उसके ओंठ-जवान चांद हैं ।

जब सपना पूरा हो जाता है
तुम्हारे साथ शरारती हो नाचता है
सागर की नीली आंखों में डालते-डालते
किरणों की मुट्ठियों से
अपना गुलाल
जैसे होली
आ गयी

जब सपना पूरा हो जाता है
किस्मत सहेली बनती है
रास्ते पर नहीं देखो
उसको हाथ दो
वहां जाओ
जहां सागर और अंबर
एक बड़े प्रेम का संगम
करते हैं ।

—विजया

Miss Vijaya
Victoria Shilina Prospect Kosmonavtov
48/1-37
LENINGRADE-196233 USSR

जंगलों एवं वृक्ष-कुंज्जों का घटता क्षेत्रफल, कीटनाशक दवाईयों का उपयोग तथा पाश्चात्य भोगवादी प्रवृत्ति जिसके अनुसार पैसा कहीं से भी आना चाहिए चाहे जानवर रहे या न रहे, लगभग सभी बचे-खुचे जंगली जानवरों को लुप्तप्राय होने के कगार पर ला दिये हैं । संभवतः जंगली जानवर अभ्यारण्यों में ही सीमित हो जाएंगे ।

# कहां चले गये जंगलों के जानवर

● पद्मश्री कृष्ण मुरारी तिवारी
(भू.पू. अध्यक्ष : भारतीय वन अनुसंधान केंद्र)

क्या आप विश्वास करेंगे कि हमारे जंगलों में अनेक ऐसे जंगली जानवर हुआ करते थे जिन्हें उत्पीड़क (वर्मिन) की संज्ञा दी गयी थी । उत्पीड़क इसलिए कि या तो जंगलों के अनेक लाभकारी जानवरों के वे क्रूर शत्रु थे या जंगलों तथा नवरोपित वृक्षारोपण को बहुत नुकसान पहुंचाते थे । उत्पीड़क जंगली जानवरों की सूची काफी लंबी थी, पर उनमें से कुछ ऐसे जानवर जिनको सामान्यतः सामान्य आदमी भी जानता होगा, उनसे आपका परिचय कराना समीचीन होगा ।

उत्पीड़क जानवरों की सूची में सर्वप्रथम नाम था—जंगली कुत्तों का । वैसे कुत्ता मनुष्य का सबसे महत्त्वपूर्ण जानवर माना गया है । कुत्ते को ही यह श्रेय प्राप्त है कि वह युधिष्ठिर के साथ सदेह स्वर्ग गया था । सरमा कुतिया के श्राप से जनमेजय पर कितनी बड़ी विपत्ति आयी थी, महाभारत में इसका बड़ा रोचक वर्णन है । परंतु जंगली कुत्तों की बात ही कुछ दूसरी है । इसमें कोई संदेह नहीं कि जिसको जंगली कुत्तों की क्रूर करामात देखने का अवसर मिला होगा, वह इनको उत्पीड़क जानवरों की सूची में सर्वप्रथम रखने को पूर्ण उचित मानेगा ।

### क्रूर जंगली कुत्ते

बाह्य रूप से देखने में जंगली कुत्ते प्रायः पालतू कुत्ते-जैसे ही दीखते हैं । इनका रंग हल्का ललछाऊं होता है, और पूंछ झबरी होती है । ये कुत्ते २-४० के झुंड में रहते हैं और
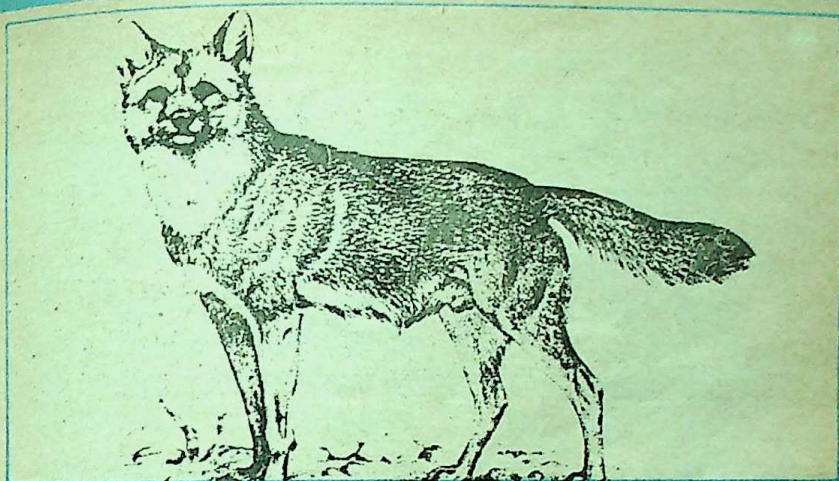
विशुद्ध मांसाहारी होते हैं । पालतू कुत्तों की तरह ये भूकते नहीं बल्कि हल्की सीटी तथा गुर्राने की आवाजें करते हैं । चीतल, सांभर काला हिरन-जैसे जानवर इनका भोजन है । परंतु ये कभी-कभी पैंथर, भालू, जंगली भैसों, वाइसन जैसे जानवरों को भी मार गिराते हैं । जंगल का राजा शेर भी इनसे बचकर रहता है । शिकार करने का तरीका इनका बड़ा ही क्रूर होता है । अपने शिकार को दौड़ाकर थका देते हैं और जब उसकी गति धीमी पड़ जाती है तो एक कुत्ता सामने कूदकर उनकी आंखें फोड़ देता है और लगभग उसी समय दूसरा कुत्ता पीछे कूदकर पीठ पर चिपक जाता है और जानवर की आंतें निकाल देता है, जानवर छ्टपटाकर जमीन पर गिर पड़ता है, फिर कुत्तों का पूरा झुंड जिंदा छटपटाते जानवर को नोच-नोच कर खा जाता है ।

जंगली कुत्तों से मेरा सामना सर्वप्रथम आज से लगभग ३५ वर्ष पूर्व उत्तर प्रदेश के हिमालय की तराई में स्थित पीलीभीत वन प्रभाग में बड़ी ही रोचक परिस्थितियों में हुआ था । गरमी (अप्रैल) के दिन थे । मैं अपने मुख्य वन संरक्षक को वनों के निरीक्षण के लिए शारदा नहर के किनारे स्थित वनों में ले गया था । हम लोग निरीक्षण उपरांत दोपहर को लौट रहे थे, शारदा नहर काफी चौड़ी नहर है लगभग ४० मीटर की चौड़ाई की । पानी तेजी से बह रहा था । सहसा हम लोग देखते क्या हैं कि एक सांभर नहर में तैरकर दूसरी ओर जा रहा है और उसके पीछे लगभग दस कुत्ते लगे थे । सांभर नहर के दूसरे किनारे से केवल १०-१२ मीटर रह गया था । हमें इस बात का बड़ा दुःख हुआ कि हमारे पास बंदूक नहीं थी, अन्यथा जंगली कुत्तों से सांभर की जान बचा देते । हम लोगों के देखते-देखते ज्यों ही सांभर नहर के किनारे से निकलकर खड़ा हुआ और भागने की कोशिश कर रहा था, तभी एक-दो कुत्ते उसके पास पहुंच गये । एक कुत्ते ने आगे से आक्रमण किया और दूसरे ने पीछे से । सांभर गिरकर तड़पने लगा, तभी सारे कुत्ते पहुंच गये और

सांभर को जिंदा ही खा गये । कहना न होगा कि इस क्रूरता को देखकर हम लोगों को बहुत ही क्रोध आया, पर हम कुछ भी करने में असमर्थ रहे ।

### अवैध शिकार में उपयोगी

जंगली कुत्तों का इस प्रकार का क्रूर स्वभाव कभी-कभी पालतू कुत्तों में भी प्रशिक्षण से आ जाता है । इसका भी आभास मुझे जंगल में ही हुआ । गोरखपुर वन प्रभाग के साल के घने जंगलों से मैं अपनी फोर्ड टूर कार द्वारा कच्ची सड़क से जा रहा था । बगल में एक ओर दो-तीन पंक्तियां साल के वृक्षों की थीं और फिर बैलगाड़ी हेतु बनी सड़क थी । मैंने दूर से देखा कि एक बड़े सींगवाला चीतल भागा आ रहा है और जब तक मैं यह समझूं कि यह क्यों भाग रहा है, वह चीतल मेरी कार से टकरा गया । कार की गति धीमी थी अतः मैं तुरंत रुक गया । चीतल फिर भागा, तभी मैं देखता हूं कि उसके पीछे दो हृष्ट-पुष्ट कुत्ते उसका पीछा कर रहे हैं । शायद कुत्तों से बचने के लिए चीतल मेरी शरण में आ रहा था, पर कार से टकराने की चोट ने उसे पुनः भागने को बाध्य कर दिया । पीछे बैठे चपरासी ने बताया कि पास के गांव के कुछ शातिर लोगों ने पालतू कुत्तों को इस प्रकार के शिकार के लिए प्रशिक्षित कर रखा है । उसका कहना था ये कुत्ते चीतल को मार गिराएंगे और फिर लौटकर अपने मालिक को साथ लेकर मरे चीतल को उठवा लाएंगे । बाद में मैंने जब इस घटना की और जांच करायी तो पता चला कि इस प्रकार का अवैध शिकार इस क्षेत्र में बहुत पहले से होता आया है ।

उस जमाने में जंगली कुत्ता मारने पर प्रति कुत्ता २० रुपये का इनाम था । मारे हुए कुत्ते की पूंछ और खोपड़ी प्रस्तुत करना इनाम के लिए आवश्यक था । परंतु जंगली कुत्तों का एक दूसरा पक्ष भी है । जंगली कुत्ता प्रकृति की एक देन है और अन्य जानवरों जैसे चीतल, सांभर आदि की बढ़ती संख्या को संतुलित रखने में इनका बड़ा योगदान है । कुत्तों की क्रूरता का तो आदमी आभास करता है परंतु कुत्तों के लिए तो यही प्रक्रिया प्रकृति ने बना रखी है । बहरहाल अब तो जंगलों की कमी के कारण जंगली कुत्तों की भी संख्या बहुत कम हो गयी है । विशेषज्ञों के अनुसार अब यह आवश्यक समझा जाने लगा है कि यदि इन कुत्तों को सुरक्षा नहीं प्रदान की गयी तो थोड़े वर्षों में ये लुप्त हो जाएंगे । अतः अब जंगली कुत्तों को भी संरक्षित सूची में डाल दिया गया है । अब इनके मारने पर ३ माह की सादी कैद और ५०० रुपये तक का जुरमाना है ।

### सियारों का काल : सियारमरवा जाति

इसी प्रकार उत्पीड़क जंगली जानवरों की सूची में एक दूसरा आम जानवर सियार भी था । वैसे सियार एक ऐसा जानवर है जो कुछ समय पहले न केवल जंगलों में बल्कि गांव-गांव में पाया जाता था । जहां कहीं भी छोटे-मोटे झाड़ी-जंगल होते थे, सियार का पाया जाना एक मामूली बात थी । जंगली कुत्तों की तरह सियार के विरुद्ध भी यह कहा जाता था कि वह जंगल के अनेक लाभकारी जानवर जैसे चीतल, सांभर के बच्चे, जंगली मुरगे उनके चूजे तथा अंडों की बड़ी हानि करता है । गांवों में गन्ना, मक्का आदि जैसी फसलों का भी सियार बड़ा नुकसान करता है । गोरखपुर वन प्रभाग
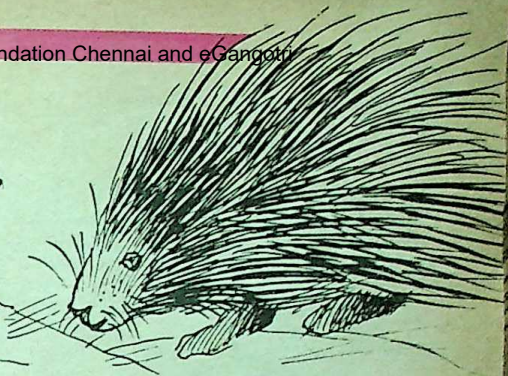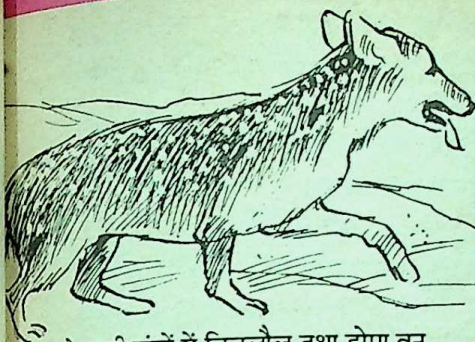
के उत्तरी खंडों में चिचलौल तथा डोमा वन खंडों में जंगली मुरगों का बाहुल्य था परंतु दक्षिणी वन खंडों में जंगली मुरगा एकदम खत्म हो गया था। इन वन खंडों में जंगली मुरगों की संख्या बढ़ाने के लिए कई बार जंगली मुरगे छोड़े गये, परंतु सियारों की अधिक संख्या होने के कारण जंगली मुरगे नहीं पनप पाये।

पाठकगणों को शायद आश्चर्य होगा कि उस समय 'सियारमरवा' नामक एक जनजाति हुआ करती थी जिनका पेशा था गांवों के पास के सियारों को पकड़ना और शायद उनकी खाल बेचकर ये लोग जीवन यापन करते थे। एक वन खंड में जहां जंगली मुरगों को छोड़ना प्रस्तावित था, वहां पर यह सुनिश्चित करने के लिए कि सियारों की संख्या बहुत कम कर दी जाए, सियारमरवा जाति के एक परिवार को आमंत्रित किया गया कि वह इस क्षेत्र के सियारों को पकड़ ले। उत्सुकतावश मैं स्वयं यह देखना चाहता था कि सियारमरवा लोग सियारों को कैसे पकड़ते हैं। बड़ा ही विचित्र दृश्य था। लगभग चार बजे संध्या का समय था। मैंने देखा कि सियारमरवा परिवार के पास ५-६ देशी कुत्ते थे, देखने में साधारण पर शायद अपने काम में निपुण। सियारमरवा परिवार के दो अधेड़ जैसे व्यक्तियों ने मुंह से सियार की हुआं-हुआं—जैसी आवाज निकालना शुरु की, थोड़ी देर में जंगल के पास और अंदर से वहां पर रह रहे सियारों की 'हुआं'—'हुआं' सुनायी देने लगी आवाज सुनकर कुत्तों ने एक दम सियारों पर आक्रमण कर दिया और कईयों को मारकर पकड़ लाये। लगभग दो घंटे के अंदर ४०-५० सियारों का काम तमाम हो गया। इस वन खंड में कुछ समय बाद जंगली मुरगे छोड़े गये। कहना न होगा कि जंगली मुरगों के आवास का यह प्रयोग सफल हो गया। कई वर्ष बाद मैं उस क्षेत्र को फिर देखने गया। मैंने पाया कि वहां न केवल जंगली मुरगे हैं बल्कि सियार भी दिखायी दिये। संभवतः दोनों का प्राकृतिक संतुलन हो गया होगा।

### लुप्त होती प्रजातियां

परंतु कुछ वर्ष पहले इस प्रकार की सूचना मिलने लगी कि सियारों को बड़ी संख्या में मारा जा रहा है। कश्मीर, राजस्थान एवं अन्य कई राज्यों में मरे सियारों के फर-युक्त चमड़ी को विदेशों में भेजा जाने लगा और इस प्रकार सियारों के ऊपर कयामत आ गयी। ऐसा आभास होने लगा कि यदि समय रहते सियारों को संरक्षण नहीं दिया गया तो इनकी प्रजाति भी

लुप्तप्राय हो जाएगी । एक तो गांव-गांव के जंगलों का सफाया और दूसरी फर की तस्करी से सियारों को संख्या बहुत कम हो गयी है । रात्रि में हुआं-हुआं की आवाज एक सामान्य घटना हुआ करती थी, अब यह आवाज संभवतः टेप रेकार्डरों के माध्यम से ही सुनी जा सकती है ।

उत्पीड़क वर्ग में सियार को मारने पर १० रुपये का इनाम था, परंतु अब इसे भी संरक्षित जानवर घोषित कर दिया गया है । अब इसके मारने पर भी जुरमाना और जेल है ।

जंगलों में, विशेषकर जहां वृक्षारोपण किया जाता था वहां पर उत्पीड़क जानवरों की सूची में एक छोटा-सा जानवर हुआ करता था जिसे, 'स्याही' अंगरेजी में पार्कुपाइन कहा जाता है । इसकी लंबाई लगभग ४७ से.मी. होती है और पूंछ लगभग २७ से.मी. । यह एक बड़े चूहे की तरह होता है । अंतर यह है कि इसके पूरे शरीर पर लंबे-लंबे कील की तरह कांटे होते हैं । कुछ कांटे तो २०-२५ से.मी. लंबे होते हैं । यह जानवर अपनी रक्षा इन्हीं कांटों से करता है । जब खतरा होता है तो यह अपने कांटों को खड़ा कर लेता है । इसका मांस बड़ा स्वादिष्ट माना जाता है । इन्हें शेर तक अपना भोजन बनाता है । कई बार मारे हुए शेरों के पंजे में इसके कांटे मिलते हैं । अब आप प्रश्न कर सकते हैं कि इस जानवर को क्यों उत्पीड़क जानवरों की सूची में रखा गया था । स्याही वक्षारोपण के क्षेत्र में बहुत ही नुकसान पहुंचाता है । कुछ लाभकारी वृक्ष जैसे सेमल अथवा चिउरा (पहाड़ी महुआ) का वृक्षारोपण जहां पर स्याही होती है, सफल करना लगभग असंभव हो जाता है । यह पौधों की जड़ों को कुतरकर खा जाता है, जिससे पौधा सूख जाता है । नैनीताल के पहाड़ी के नीचे चिउरा का वृक्षारोपण स्याही के नुकसान से असफल हो गया था । सेमल के रोपण के लिए यह विद्या अपनायी गयी कि सेमल की पौध, खैर वृक्षों की पौध के बीच में लगायी जाए खैर में कांटे होने के कारण स्याही सेमल के पौधों को नहीं खा पाती है । वृक्षारोपण क्षेत्र में स्याही के मारने के ऊपर इनाम था । परंतु इसका मारना आसान नहीं था । कहते हैं कि इसके कांटे जब खड़े रहते हैं तो मारने पर लाठी भी टूट जाती है । पर यदि लाठी मुंह पर लग गयी तो इसकी मौत हो जाती है ।

वर्तमान समय में स्याही की संख्या जंगलों में बहुत कम हो गयी है । संभवतः इसका एक कारण फसलों और वृक्षारोपण क्षेत्र में कीटनाशक जहरीली दवाइयों का बहुतायत से प्रयोग होना भी है । अब इसे भी संरक्षित जानवर की सूची में रख दिया गया है ।

—सी-३८, पार्क जे. २, महानगर एक्स., लखनऊ (उ.प्र.)

## घुड़दौड़ की शुरुआत

**घुड़सवारी करना १४०० ई. पू. में अनातोलिया, टर्की की हित्ती सभ्यता का एक महत्त्वपूर्ण अंग था । ६४८ ई. पू. में ग्रीस में हुए ३३वें प्राचीन ओलंपिक खेलों में घुड़दौड़ शामिल थी ।**

# सुबह का पड़ाव
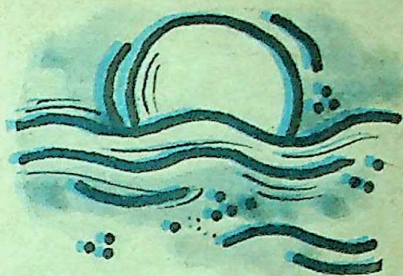
रात गुलाब की पंखुड़ियों पर,
लिख गयी है पाती
मोतियों की नन्ही पारदर्शी आंखें
गुलाबी, नारंगी, लाल झबलों के बीच
सहमा सुनहरा तन,
चहचहाती चिड़ियों के शोर में गुम होती,
रात की परछाइयां,
बगुलों के पांवों में, गुनगुनाती धूप की झांझर
इंद्रधनुषी वंदनवार,
हवाओं की दूरियां नापता,
लहराता समय का आंचल,
'शब्द' को तलाशता, सुबह का जोगी,
हाथों में एकतारा और कमंडल लिये,
सूर्य की आराधना में रत,
मलयानिल से आती,
सर्पों-जैसी वर्तिकाकार
केंचुली, धारीदार गिलहरियों की पीठ पर
झंगुर का चुटकी भर रंग बिखेरती,
धूप की सहेली, दिन के कानों में बचपन का
मधुमय, भोर, सांध्य गीतों का पाठ
हारे थके सांझ को कंधे पर उठाये,
रात का चुपके से, आना, चलना, बढ़ना
सुबह के पड़ाव तक

—डॉ. प्रीति श्रीवास्तव

द्वारा—श्री वी.एन. श्रीवास्तव,
यू.को. बैंक, मंडल कार्यालय, ३५ए/८ रामपुर बाग,
बरेली ।

हर आहट तेरी आहट है
हर पल कोई आता-सा लगे
इक पहचाना-सा सुर मेरी
मन-वीणा पर गाता-सा लगे
कोई भूली-सी बात आज
बचपन की सखी-सी याद आयी
वो इंतजार की सांझ आज
फिर मीठी सिहरन भर लायी
जब हम तुम बस में अनजाने
कुछ अपने से कुछ बेगाने
जब कहने को था बहुत मगर
होठों के बंद थे पैमाने
तब घिरती आती सांझ देख
मन पुलक-पुलक कर कह उठता—
'बस अब तुम आने वाले हो'
और मन में कुछ होने लगता
वह एक-एक पल यूं लगता
ज्यूं सरक रही हो कोई शिला
मन प्राण मेरे बस कान बने
लेते आहट इक-इक पल का
तब दूर क्षितिज पर तारक से
तुम आते हुए जब दिख जाते
लगता मैंने सब कुछ पाया
ज्यूं हृदय-ज्वार चंदा छू ले !

—संतोष शैलजा,

ओक ओवर, शिमला

# क्योटी की गढ़ी में प्रेतात्माओं से साक्षात्कार

● रामसागर शास्त्री

***रात में एक घटना ने ग्रामीणों के कथन को सत्य मानने के लिए विवश कर दिया । क्योटी की यात्रा करनेवालों को एक रात्रि गढ़ी में निवास कर प्रेतात्माओं के क्रियाकलापों का स्वयं अनुभव करना चाहिए ।***

सन १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में महारानी लक्ष्मीबाई के आमंत्रण पर क्योटी (जिला रीवा) के बघेल ठाकुर रणमत सिंह ने अपने २०० सैनिकों के साथ भाग लिया था । क्योटी की गढ़ी में ही बाबा रणमत सिंह अंगरेज कर्नल आसबर्न से युद्ध हुआ था और बहुत से अंगरेज़ मारे गये थे । सामरिक दृष्टि से यह गढ़ी बहुत ही उपयोगी थी । गढ़ी के उत्तर-दक्षिण और पूर्व इन तीनों दिशाओं में चहारदीवारी बनी है और बीच-बीच में बुर्ज हैं । पश्चिम की ओर जलप्रपात के द्वारा प्राकृतिक सुरक्षा है । क्योटी की गढ़ी स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के टिकने के लिए निरापद थी । बाबा रणमत सिंह अपने अश्वारोही सैनिकों के साथ इसी गढ़ी से प्रायः प्रतिदिन इलाहाबाद तक अंगरेजों से युद्ध करने के लिए जाते थे और किसी न किसी अंगरेज की बलि चढ़ाकर वापस लौटते थे । इसीलिए 'क्योटी की गढ़ी' शहीद स्मारक के रूप में मानी जाती है ।

बाबा रणमत सिंह का जन्म विक्रमी संवत १८९३ में रीवा राज्य घराने की प्रथम शाखा कसोटा (शंकरगढ़) में हुआ था । आपके पिता श्री महीपति सिंह अपने समय के प्रमुख योद्धाओं में से थे । क्षत्रिय धर्म का सदा पालन करते थे । अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा के कारण ही समाज में विशेष सम्मानित थे । पिताजी की ही तरह बाबा रणमत सिंहजी भी अपनी कर्त्तव्य परायणता एवं निर्भीकता के कारण वीर योद्धाओं में सदा अग्रगण्य रहे हैं । उनके वंशज श्री विक्रम सिंह ग्राम कुम्हड़ा (सेमरिया वीड़ा के पास) में आज भी रहते हैं । बाबा रणमत सिंह की तलवार तथा अन्य अस्त्र-शस्त्र उनके वंशजों

के पास सुरक्षित हैं ।

### ऐतिहासिक महत्त्व

क्योटी का ऐतिहासिक महत्त्व गढ़ी बनने के पूर्व में भी था । 'ननद-भौजाई', 'पंच भइया' तथा 'अहेरी बाबा' के नाम से जो स्तंभ खड़े हैं, उन्हें स्थानीय जनता 'सते स्तंभ' मानती है । इन स्तंभों के ऊपरी भाग में धनुष-बाण और ढाल-तलवार लिये सैनिक अंकित किये गये हैं और नीचे भाग में कई लाइन के शिलालेख हैं, जिनमें विक्रमी संवत १३९० तथा १३९७ अंकित है । इन स्तंभों में उत्कीर्ण लेखों के कुछ अंश मिट गये हैं । जो हैं, ठीक से पढ़ने में नहीं आते । काल के प्रभाव से मिटे हुए शिलालेख कठिनाई से पढ़े जाते हैं । वैसे ये नागरी लिपि में हैं । स्तंभ लेख में 'जुझितम' शब्द आता है, जिसका अर्थ-'युद्ध में मारे गये सैनिक' होता है । सती स्तंभ के ऊपरी भाग में बने सैनिक चित्रों से भी इसकी पुष्टि होती है ।

### शहीदों की स्मृतिः संगोरा शिलालेख

दूसरे सती स्तंभ में लूक के महाराजा हमीरदेव के राज्य काल में बावड़ी गांव के रावराजा जैसिंहदेव, लोहरवा के राव राजा द्रोण कठौली स्थान के महाराजाधिराज 'देवक' का उल्लेख है । काल गणना के अनुसार उस समय दिल्ली में मोहम्मद तुगलक का शासन था, किंतु प्राप्त अभिलेखों में उस समय में रीवा के बघेल राजाओं तथा शासकों का कोई उल्लेख नहीं है अर्थात उस समय तेरहवीं शताब्दी में क्योटी बघेल शासकों के अधीन नहीं थी । कठौली के महाराजाधिराज श्री महाराजा 'देवक' का उल्लेख किया गया है । देवक कोई छोटे राजा रहे होंगे, जिन्हें महाराजाधिराज की बड़ी उपाधि से विभूषित किया गया होगा । स्तंभों के लेख से स्पष्ट है कि 'क्योटी' में १५ शताब्दी के पूर्व भी अनेक युद्ध हुए हैं, जिनमें बहुत से सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए हैं और उन्हीं की स्मृति में शिला स्तंभ स्थापित किये गये हैं, किंतु ये सभी शिला स्तंभ उस समय के हैं जब क्योटी पर बघेल शासकों का शासन नहीं था । बाद में बघेलों का शासन हो गया । जनश्रुति के अनुसार बेनुवंशी और चंदेल राजा क्योटी पर चढ़ाई करते थे और वीर बघेल खदेड़ देते थे । क्योटी पर चढ़ाई करनेवाले और खदेड़नेवालों के नामों का संकेत अभी तक नहीं मिल सका । केवल १५वीं शताब्दी के बाद के युद्धों का विवरण उपलब्ध है । बघेलों के अधिकार में 'क्योटी' आ जाने पर यद्ध के संबंध की किंवदंती का तारतम्य बैठता है ।

पहाड़ के नीचे उत्तरी भू-भाग तरहार में दूसरा शासक था और ऊपरी दक्षिणी भू-भाग

पर कोई दूसरा । दोनों राज्य विस्तार के लिए आपस में लड़ते रहे । इन युद्धों में क्योटी की कंदराओं, जंगलों तथा प्राकृतिक सुरक्षित स्थानों का उपयोग किया जाता रहा है ।

मध्यकालीन मुगल शासन के पूर्व बौद्धकाल में भी 'क्योटी' का महत्त्व था । कौशांबी से दक्षिण जाने के लिए देउर, क्योटी, भरहुत आदि मार्ग था । इन तीनों स्थानों में बौद्धकालीन अवशेष उपलब्ध हैं । देउर (कटरा जिला रीवा) में बौद्ध स्तूप के खंडहर एवं शिलालेख हैं । भरहुत (जिला सतना) में जातक कथाओं से संबंधित अनेक महत्त्वपूर्ण मूर्तियां मिली हैं, जो कलकत्ता और प्रयाग के संग्रहालयों में सुरक्षित हैं । क्योटी में कंदराएं, ईसा पूर्व २०० वर्ष के शिलालेख एवं प्रागैतिहासिक शैलचित्र उपलब्ध हैं । इससे स्पष्ट है कि रीवा राज्य के १७वें राजा शालिवाहन के द्वितीय पुत्र नागमलदेव ने 'क्योटी की गढ़ी' का निर्माण कराया था । बड़े महाराज वीर सिंह देव रीवा (बांधवगढ़) के राजा हुए और छोटे भाई नागमलदेव क्योटी के इलाके का गुजारा पाये, तभी इस गढ़ी का निर्माण हुआ ।

### मध्यकालीन स्थापत्य कला

क्योटी में गढ़ी बनवाने का मुख्य आकर्षण क्योटी का ऐतिहासिक महत्त्व तथा प्राकृतिक सुरक्षा है । यह भी संभव है कि वर्तमान गढ़ी बनने के पूर्व भी कोई छोटा-सा भवन रहा हो और उसका विस्तार कर दिया हो । जो भी हो, किंतु यह तो निर्विवाद है कि नागमलदेव ने सामरिक दृष्टि से प्राकृतिक सुरक्षित स्थान में गढ़ी का निर्माण कराया । भवनों की बनावट देखकर ऐसा लगता है कि सिंहद्वार से लगा प्रथम दो मंजिले भवन में निजी निवास था और दूसरा विशाल भवन सैनिकों के आवास के लिए बनवाया गया था । बगल में अश्वशाला भी थी । गढ़ी के अंदर से आक्रमणकारियों पर प्रहार करने के लिए चहारदीवारी में सुराख बने हुए हैं । अतः युद्ध की दृष्टि से यह गढ़ी बहुत ही महत्त्वपूर्ण है ।

गढ़ी की बनावट मध्यकालीन स्थापत्यकला के अनुरूप है । बिना गर्डर-धन्नी पश्चिम के लंबी मोटी पत्थर की पटियों से महरावदार छतें बनायी गयी हैं । पूर्व-उत्तर के मकान छोटे और दक्षिण-पश्चिम के मकान बड़े-चौड़े भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार बनाये गये हैं । नैऋत्यां शास्तरमंदिरम्-नैऋत्य कोण में शस्त्रागार, वायव्यां धनधान्य मंदिरम्-वायव्य कोण में धन-धान्य मंदिर और ऐशान्या देव मंदिरम्-ईशान कोण में देव मंदिर बनाया गया है । चौखटें सभी पत्थर की थीं जो अधिकांश निकल गयी हैं, जो हैं वह भी टूटी है । खिड़कियों का अभाव है, प्रकाश के लिए ऊपर खुलनेवाली सुराखें बनी हैं । प्रायः एक कमरा दूसरे कमरे से जुड़ा है । दीवालों में गोल-मटोल अनगढ़ पत्थर लगे हैं । चूना गारे का उपयोग किया गया है । डेढ़ फुट से ४ फुट तक चौड़ी दीवालें बनी हैं । मुख्य दरवाजों में मोटी लकड़ी का बेड़ा (आड़ी) लगाने के लिए दीवाल में दरवाजों की चौड़ाई से थोड़ी अधिक लंबी सुराकें बनी हुई हैं ।

### संक्रांति का मेला

नागमलदेव की चौथी पीढ़ी में श्री विष्णुदेव सिंह हुए जो विष्णु भगवान के भक्त थे । उन्होंने

गढ़ी से पश्चिम दोनों प्रपातों के बीच चतुर्भुजी भगवान का मंदिर बनवाया था । राग-भाग के लिए पर्याप्त जमीन लगा दी और गढ़ी के अंदर भी श्री विष्णु भगवान की श्री मूर्ति की स्थापना करवा दी । मंदिर में लगायी गयी जमीन करीब ४० एकड़ आज भी मंदिर के अधिकार में है । बाद में गढ़ी के भी भगवान मंदिर में आ गये । मंदिर के दक्षिण में शिवकुंड और विष्णुकुंड है । खकी ऋषि की गुफा और परमहंसी गुफा, दो गुफाएं हैं । उत्तर में एक छतरी है, जो खकी ऋषि की समाधि है । थोड़ा आगे भैरव बाबा का मंदिर है, उसके बगल एक विशाल चट्टान के नीचे 'सीता रसोई' है । यहीं पर पश्चिम भाग में महाना नदी ३३१ फुट नीचे गिरी कूड़ा (कुंड) का निर्माण करती है । जंगल-पहाड़ को चीरती हुई करीब ४ मील उत्तर जाकर टमस नदी में मिल जाती है । मकर संक्रांति के अवसर पर १४ जनवरी को प्रतिवर्ष एक दिन का विशाल मेला लगता है, दूर-दूर से लोग आते हैं, कई हजार की भीड़ एकत्र होती है । शिवकुंड में स्नान करके पुण्य के भागी बनते हैं, किंतु विष्णुकुंड में कोई स्नान नहीं करता क्योंकि उसे श्रापित मानते हैं । विष्णुकुंड में स्नान करने से प्रतिकूल फल मिलता है । एक बार महर्षि नारदजी ने भगवान विष्णु के मना करने पर भी विष्णुकुंड में स्नान कर लिया था तो उन्हें स्त्री बनना पड़ा और बहुत वर्षों के बाद जब मकर संक्रांति के दिन शिवकुंड में स्नान किया तब स्त्री योनि से मुक्ति मिली । इस कथा के प्रभाव से विष्णुकुंड में कोई स्नान नहीं करता । इस संक्रांति के मेले को खिचड़ी का मेला और नीमवरार का मेला भी कहते हैं । जिस प्रकार धार्मिक दृष्टि से नेमिषारण्य का महत्त्व है उसी प्रकार यहां के लोग नीमरवार (नैमिषारण्य) को भी महत्त्व देते हैं । क्योटी जल प्रपात का नैसर्गिक सौंदर्य और सामने बिखरी हुई वनश्री दर्शनीय है ।

गढ़ी के अंदर द्वितीय भवन के बगल में एक छतरी बनी है, जो ठाकुर लक्ष्मणसिंह की कही जाती है । उसके संबंध में कथा प्रचलित है कि गढ़ी के ठाकुर लक्ष्मण सिंह ने गंगाराम लबाना ब्राह्मण की बंदूक जबरन छीन ली और अनुनय-विनय करने पर भी नहीं लौटायी, उलटे गंगाराम को भला-भला कहा, इस पर दुःखी होकर गंगाराम ने गढ़ी के द्वार पर आत्महत्या

कर ली । मरते ही वह ब्रह्म हो गया और लक्ष्मण सिंह को मार डाला और सर्वनाश कर दिया । उमरी झिरिया के आगे आखिरी चौगोन के दक्षिणी भाग में गंगाराम ब्रह्म का चबूतरा (चौरा) बना है । स्थानीय लोगों की मान्यता है, तिजिया और चौथिया ज्वर ब्रह्म के चबूतरे की परिक्रमा करने से छूट जाती है ।

**झिरिया और गुफाएं**

गढ़ी के नीचे ऊंची झिरिया, मध्य झिरिया और नीचे की झिरिया तीन झिरिया हैं, जिनमें से हमेशा पानी झिरता रहता है । मध्य की झिरिया

में तो वर्षा—जैसी झड़ी लगी रहती है। ऊपर से पानी गिरता रहता है। ग्रीष्म ऋतु में बड़ा ही सुखद रहता है। इन तीनों झिरियों के पास अगल-बगल छोटी-बड़ी अनेक गुफाएं हैं, जिनमें शिवगुफा, ब्रह्मगुफा, धर्मगुफा, ज्ञानगुफा, मध्यगुफा, नागगुफा, शीतल गुफा, बौद्ध गुफा, बड़ी गुफा आदि अनेक गुफाएं हैं। दो बड़ी गुफाएं तो ऐसी हैं, जिनमें हजार-हजार आदमी बैठ सकते हैं। ब्रह्म गुफा (ब्रम्हणी गुफा) के ऊपरी चट्टान में तीन शिला लेख हैं, जो ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के ब्रह्म लिपि में हैं। दो शिलालेख ठीक से नहीं पढ़े जा सके। ऊपरी चट्टान के अग्रभाग में शिला लेख है—'हारीति पृतेनम सोनकेने कारित परवरिणी'—हारीत के पुत्र सोनक के द्वारा परवरिणी (पुष्करिणी) का निर्माण कराया। बड़ी गुफा की दीवालों और ऊपरी चट्टानों पर प्रागैतिहासिक शैल चित्र बने हुए हैं। ये जोगिया रंग के हैं। हाथी, घोड़े, हिरण, बारहसिंगा, घुड़सवार, सैनिक, ग्राम्य देवता एवं बौद्ध धर्म से संबंधित चित्र बने हुए हैं। बौद्ध स्तूपों के भी चित्र उकेरे गये हैं। इन गुफाओं तक पहुंचना आसान नहीं है। श्रम साध्य है। किंतु पहुंच जाने पर गुफाओं के अवलोकन एवं जल-प्रपात आकर्षक मनोमुग्धकारी दृश्य मार्ग की कठिनाइयां तथा परिश्रम को भुला देते हैं। जल-प्रपात की धारा गिरते-रहने से एक विशाल कुंड का निर्माण हो गया है, जिसका पानी दूर से हरा-हरा दिखायी पड़ता है। जिस स्थान पर नीचे पानी दूर से गिरता है, वहां बड़ी चट्टान पर प्राकृतिक शिवलिंग है जिसका निरंतर अभिषेक होता रहता है। बड़ी गुफा से यह स्पष्ट दिखायी पड़ता है। कुंड के तीन ओर खुला जंगल है और दक्षिण की ओर ३३९ फुट ऊंची चट्टानों की खड़ी प्राकृतिक दीवाल है। प्रस्तुत नैसर्गिक सौंदर्य का वर्णन नहीं किया जा सकता, अपितु दर्शन कर सुखानुभव किया जा सकता है।

रीवा जिला के तिवनी ग्राम से जन्मे, मनगवां क्षेत्र के विधायक, मध्य-प्रदेश विधान सभा के उपाध्यक्ष वरिष्ठ कांग्रेसी नेता श्री श्रीनिवास तिवारी का ध्यान कुछ वर्ष पूर्व क्योटी की गढ़ी की ओर गया और प्रयास करके उन्होंने गढ़ी के पुरातत्व-विभाग के अधीन करा दिया। देखभाल के लिए दो चौकीदार नियुक्त हो गये हैं। पत्थर पटिया और मूर्तियों की जो चोरियां रही थीं, बंद हो गयी हैं।

सर्वप्रथम सन ८५ में श्री श्रीनिवास तिवारीजी ने क्योटी की गढ़ी में क्षेत्रीय कांग्रेस युवक प्रशिक्षण शिविर का एक दिवसीय आयोजन किया। इस अवसर पर पुरातत्व-विभाग ने गढ़ी की सफाई करा दी। तब से क्रमशः गढ़ी के अंदर के पेड़-पौधे कटा दिये गये और कमरों की सफाई हो गयी। सन सामान्यतः आने-जाने योग्य हो गया है। सन ८५ से प्रति वर्ष गढ़ी में शिविर का आयोजन होता है।

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी गंगेव जनपद के अध्यक्ष श्री सुंदरलाल तिवारी ने दिनांक २०-२-९१ को कांग्रेस युवक प्रशिक्षण शिविर का एक दिवसीय आयोजन किया, जिसका शुभारंभ मध्य-प्रदेश विधान सभा के उपाध्यक्ष श्री श्रीनिवास तिवारी के उद्घाटन भाषण से हुआ और समापन म.प्र. के भूतपूर्व मुख्यमंत्री तथा प्रतिपक्ष के नेता श्री श्यामाचरण शुक्ल के

उद्बोधन भाषण से हुआ । रीवा जिले के गण्यमान्य कांग्रेसी नेताओं के अतिरिक्त भूतपूर्व विधिमंत्री श्री कृष्णपाल सिंह भी उपस्थित थे । प्रातः १० बजे से रात्रि १० बजे तक कार्यक्रम चलता रहा । सांस्कृतिक कार्यक्रम के समाप्त होने के बाद सारी भीड़ छूट गयी । सभी प्रशिक्षणार्थी और दर्शक चले गये । रात्रि ११ बजे तक तंबू-कनात शामियाना सब उखड़ गये । १२ बजे जनरेटर भी बंद हो गया । दो गैसें जलती रहीं । सामियाना बिजली और जनरेटरवाले अपने-अपने सामान की सुरक्षा के लिए रुक गये, चौकीदार रुक गया और दो साथियों के साथ मैं भी रुक गया । क्योंकि क्योटी पर अपना लेख पूरा करने के लिए मुझे सुबह का सर्वेक्षण करना था । चौकीदार सहित हम चार लोग पश्चिमी भवन के गढ़ी के उत्तरी कमरे में सो गये ।

## भूत-प्रेतों की बैठकें

रात में करीब २ बजे मेरी नींद खुल गयी धम्-धम् की आवाज सुनायी पड़ी । मैंने ध्यान दिया, निरंतर आवाजें आती रहीं, किंतु लेटे-लेटे यह पता न चल सका कि आवाज कहां से आ रही है ? मुझे लगा कि जल प्रपात के नीचे कुंड में मछलियों के उछलने की आवाज होगी । सुनसान रात में दूर-दूर तक की आवाज सुनायी पड़ती है । गढ़ी से लगा कुंड है । उसकी आवाज आसानी से गढ़ी में सुनायी पड़ती है । मैं उठकर बैठ गया, तब यह आवाज आंगन में जमीन खोदने की मालूम पड़ी । कभी रुककर, कभी जल्दी-जल्दी आवाज होती थी । मैंने सोचा शामियानेवाले अपने खूटों-खंभे उखाड़ रहे होंगे । मैं पेशाब करने के लिए बाहर निकला

## आकाश
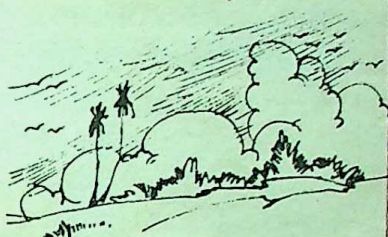
मुट्ठी
खुली हो
या बंद
फर्क क्या पड़ता है !
समाएगा तो
उतना ही आकाश
जितना
हिस्से में

लिखा है ।
मन के
आकाश पर
प्यार का इंद्रधनुष
गरीब की झोंपड़ी में
जलते दिये सा ।

एक टुकड़ा आकाश
भला किस काम का
जिसे पाकर भी
छू तो सकें न
देखें भी तो
बस, दूर
खड़े-खड़े

— डॉ. भारती वर्मा

गवर्नमेंट एम.ई. स्कूल पो. आ. सिमोंग, वाया : थिंमाकियोंग, पूर्वी सियांग जिला अरुणाचल प्रदेश

तो आंगन में कोई नहीं था । एक किनारे पेशाब करने बैठा तो उसी बीच भवन के बाहर उत्तर की ओर आवाज हुई, मेरे उठते तक दो आवाजें और हुईं । मुझे संदेह हुआ कि बाहर तो कोई शामियाना लगा नहीं था वहां क्या खोद रहे हैं ? उत्सुकतावश आंगन से बाहर निकला और दरवाजे पर खड़े होकर चौगान की ओर देखा, अंधेरा था । कोई आहट न मिली । टार्च जलायी चारों ओर सुनसान था । इसी बीच पुनः आंगन में आवाज पर आवाज सुनायी दीं । मेरे रोंगटे खड़े हो गये मैं तुरंत आंगन की ओर लौट पड़ा । कमरा पार करते-करते आंगन में पुनः दो आवाजें हुईं । आंगन में आकर देखा कोई नहीं था । मैंने सोचा, मुझे क्या करना है, आवाजें होती रहीं । कमरे की ओर लौट पड़ा । बरामदे में आया और देखा कि दक्षिण की ओर से शामियाना और बिजली वाले ६-७ लोग सिमटकर एक ही स्थान पर सब सोये हुए हैं । इसी बीच आंगन के पूर्व आवाज हुई, मैं भयभीत हो गया और चुपचाप कमरे के अंदर चला गया और लेट गया । सोने का प्रयास करने लगा, किंतु नींद नहीं आयी । बीच-बीच में चारों ओर से आवाजें आती रहीं । कभी-कभी छत के ऊपर आदमी चलने की आवाज होती रही । साढ़े तीन बजे अपने आ[illegible] आवाजें बंद हो गयीं । मैं बार-बार सोचता [illegible] कि वे आवाजें मनुष्यकृत नहीं थीं, क्योंकि [illegible] आदमी के जमीन खोदने की आवाज होती [illegible] एक ही स्थान पर होती । क्षण-क्षण में आवा[illegible] का स्थान बदलना, निश्चय ही भूतछंद है । क्योटी की गढ़ी में प्रेतात्माओं का निवास है[illegible] यद्यपि गांव के लोगों ने पूर्व में ही बताया था[illegible] रात्रि में बारह बजे के बाद गढ़ी में भूत-प्रेतों [illegible] बैठकें होती हैं, नाच-गाने होते हैं । कभी-क[illegible] बाजों की ध्वनि भी सुनायी देती है, किंतु अं[illegible] जाकर देखने का साहस किसी को नहीं होता[illegible] ३ बजे अपने आप सब बंद हो जाता है । दि[illegible] में भी अकेला कोई आदमी गढ़ी के अंदर [illegible] में नहीं जा सकता, किंतु मैंने इसे मनगढ़ंत [illegible] सही नहीं माना था और अपने लेख में उल्ले[illegible] नहीं किया था । दिनांक २०-२-९१ की रा[illegible] एक घटना ने ग्रामीणों के कथन को सत्य मा[illegible] के लिए विवश कर दिया । क्योटी की यात्रा करनेवालों को एक रात्रि गढ़ी में निवास कर[illegible] प्रेतात्माओं के क्रियाकलापों का स्वयं अनुभ[illegible] करना चाहिए ।

—शास्त्री भवन, अमहिया, रीवा (म.[illegible]

***भारतीय मानव शास्त्रीय सर्वेक्षण विभाग के अध्ययन के अनुसार भारत में इस समय ४४३ अनुसूचित जातियां, ४२६ अनुसूचित जनजातियां और १०५१ पिछड़े वर्ग के समुदाय हैं । सर्वेक्षण ने १९८५ से यह कार्य आरंभ किया । उसने कुल ४३८४ जातियों का अध्ययन किया है ।***

# कार्टून कोना

सर, अब सोच क्या रहे हैं... शेर सामने है बंदूक हाथ में है बस लगाइये निशाना...
...दूसरे का कंधा चाहिये बंदूक चलाने के लिये...


चुनाव जीत गये हो फिर भी दूध स्वयं लेते हो...
अपने लिये नहीं... चीफ मिनिस्टर के लिये है... मिनिस्टर होना अभी बाकी है...


फीता मैं काट देता हूं पर चांदी से मेरे बजाय मेरी श्रीमती जी को तौला जाय...

# चलें, मन-के-पार

● महोपाध्याय चंद्रप्रभसागर

अध्यात्म शरीर, वाणी और मन की प्रतिध्वनियों के पार है। शरीर और वाणी की कर्मठता सीधी और साफ है। बिना पैंदे का लोटा तो मन है।

घोड़े-की-तरह-खुंदी-करते-रहना मन की आदत है। अध्यात्म के साथ मन का कोई विनिमय-संबंध नहीं है। अध्यात्म विकल्प-मुक्ति है और मन विकल्प-युक्ति; अतः मन का अध्यात्म के साथ किसी भी प्रकार लेन-देन भला कैसे हो सकता है ? जीवन की सारी जीवंतता और जिंदादिली यथार्थ के साक्षात्कार से जुड़ी है। मन का यथार्थता से भला क्या वास्ता ? जब उसके ही व्यक्तित्व की असलियत खतरे में है, तो सोने का सम्यक्त्व सही-सही कैसे आंका जा सकता है ?

मन यात्रालु है। परमात्मा को खोजने की बात भी वही कहता है और संसार का स्वाद चखने की प्रेरणा भी वही देता है। उसका काम है, व्यक्ति को शरीर और विचार से हटाकर कभी आराम-कुर्सी पर न बैठने देना। आठों याम भ्रमर-उड़ान भरना यात्रालु मन का स्वभाव है। वह कभी मरघट की यात्रा नहीं करता, उसकी सारी मुसाफिरी माटी-की-काया की जीवंतता में है।

मन तो चलनी है। बुद्ध या बुद्धिमान कहलानेवाला मनुष्य मन के आगे निरा बुद्धु है। मनुष्य अपने अखिल जीवन का जल मन की चलनी में से निरुद्देश्य बहाता रहता है। आशावाद जीने का आधार अवश्य है, पर आशाओं की कब्र कहां बनायी जाएगी, जिसके लिए व्यक्ति ने जीवन की बजाय श्मशान की यात्रा की ?

**उमरे दराज मांगकर लाये थे चार दिन**
**दो आरज़ू में कट गये, दो इंतजार में। —ज़फ़र**

प्रवृत्ति जीवन के लिए कर्मठता का अर्थ जरूर है; किंतु निवृत्ति का उपसंहार पढ़ना अपरिहार्य है। निवृत्ति इसलिए कि एक दिन मनुष्य को सब यहीं छोड़-छाड़कर खालिस एकाकी जाना पड़ता है। रवानगी का टिकिट मिलनेके बाद जलानेवाला पूरा समाज-का-समाज होता है, मगर साथ जलनेवाला सारे जहान का एक भी सदस्य नहीं होता। उसकी चिता में रुपए-पैसे भी नहीं, थोड़ी-सी सूखी लकड़ियां ही जलती हैं—

**चार जने मिल खाट उठाये**
**रोवत ले चले डगर डगरिया।**

**कहे ''कबीर'' सुनो भई साधो**
**संग चली वह सूखी लकड़िया।**

जीवन में घटित होनेवाली यह मृत्यु ह[...] नहीं, मात्र मन की आपा-धापी का विराम [...] उसकी व्यर्थता का बोध है। अगर किसी जन्म में आत्मा, परमात्मा या अध्यात्म को

पहचान न पाया; परंतु निरे मन का परिचय-पत्र भी बारीकी से पढ़-जांच लिया, तो भी यह कहा जा सकेगा कि उसने मंजिल की ओर जानेवाली राह का एक बड़ा हिस्सा पार कर लिया ।

व्यक्ति को शरीर और विचार की समझ तो पल्ले पड़ जाती है, पर वह मन-की-पूंछ को थाम नहीं पाता । दौड़ते चोर की चोटी पकड़नी भी फायदेमंद होता है, पर पहले चोर की पदचाप तो सुनायी दे । ओर-छोर का पता नहीं और नापने बैठे हैं आसमान ?

मन तो चपल है पल-पल । यदि मन स्वयं जीवन हो, तो उसके पालन के लिए घर-बार और दुकानदारी की व्यवस्था की जानी चाहिए । अगर मन मुर्दा हो, तो उसे दफनाने के लिए सूखी लकड़ियां बीनने में संकोच कैसा ? चाहे पालना हो या दफनाना उसकी वास्तविकता का बोध होना स्वयं के प्रति सजगता है ।

### संरचना मन की

मन की उपज शारीरिक रचना की अनोखी प्रस्तुति है । कई परमाणुओं के सहयोग और सहकार से शरीर का ढांचा बनता है । मन उसमें ठीक वैसे ही मुखर होता है, जैसे शराब की निर्मिति से मदहोशी या नशा । जिन चिंतकों ने जमीनजल, पावक-पवन के समीकरण से उपजनेवाले तत्व को जीवन-तत्त्वा, आत्म-तत्त्व स्वीकार किया, वह वास्तव में जीवन या आत्मतत्त्व नहीं, वरन् मनोतत्त्व है । मन का अपना मौखिक/मौलिक अस्तित्व नहीं है । वह बेसिर-पांव का तत्त्व है ।

मनुष्य ने मन एवं मन-के-साथ नाना मुसीबतें पाल रखी हैं । वह दुनिया से अपना कोई पाप छिपा भी ले पर मन से छिपाना उसके वश के बाहर है । वह दूसरों की, किसी तरह अपनी आंखों में भी धूल झोंक सकता है, पर मन सहस्राक्षी है । मन की हजार आंखें हैं । उससे कुछ भी गोपनीय नहीं रखा जा सकता । जगत् की आपाधापी से तंग आकर मनुष्य चाहे जहां पलायन कर जाए पर मन से बचकर कहां भागेगा ? बाहर की घुटन से मुक्त होने के लिए बातों-ही-बातों में प्रयास हो जाते हैं, पर भीतर की घुटन से छुटकारा पाने के लिए वह कोई भी मोर्चा तैयार नहीं कर पाता ।

जनता की भीड़ से अधिक घातक, विचारों की भीड़ है । विचारों की भीड़ में मन का जी लगता भी है तो घुटता भी है । मनुष्य को जो चिंता, तनाव और घुटन विचारों की भीड़ के कारण होती है वह जनता की भीड़ में नहीं

**मन द्वारा किया जानेवाला पर्यटन स्वप्न-दशा का ही रूपांतरण है । फर्क मात्र इतना है कि पिछले में शरीर और मन दोनों जाग्रत रहते हैं और दूसरे में शरीर सोया रहता है, जबकि मन जाग्रत । अकेलापन तो दोनों में ही रहता है । रात को सोते समय भी व्यक्ति नींद में निपट अकेला होता है और ध्यान में भी वह कोरा अकेला रहता है । चाहे शयन-कक्ष में दसों लोग साथ सोये हों और ध्यान-कक्ष में सैकड़ों लोग बैठे हों, तो भी उसका एकाकीपन तो एकांतवासी ही होता है ।**

होती । जनता की भीड़ से बचने के लिए गुफा में एकांत-वास हो सकता है; किंतु विचारों के भीड़-भड़क्के से बचने के लिए दुनिया में न कोई कहीं गुफा है, न एकांत । जनता की गरद अपने आजू-बाजू रहे, तो कोई नुकसान नहीं है, पर विचारों की भरमार से घुटन-ही-घुटन है । विचारों की घुटन ही मानसिक तनाव की खास धमनी है ।

स्वास्थ्य-लाभ के लिए मन को तनाव-मुक्त करना जरूरी है। स्वास्थ्य की पूर्णता शरीर के साथ-साथ मन की तनाव-मुक्ति से जुड़ी है । तनाव-मुक्त पुरुष स्वस्थ अध्यात्म-पथ का पथिक है । जो मन की परेशानी से जकड़ा हुआ है, वह तन से तंदुरुस्त और निरोग भले ही हो, पर मानसिक रूप से अपने-आपको हमेशा उखड़ा-उखड़ा-सा/उचटा-उचटा-सा महसूस करता है । दिलचस्प बातों में घड़ी-दो-घड़ी वह पद्मासन लगाये लगता है; किंतु आमतौर पर वह लंगूर-छाप जीवन बिताता है । एक ठांव पर उसके पांव टिके रहें, ऐसा मनुष्य को अपने अनुभवों की किताब में पढ़ने में नहीं आता ।

**सत्ता मन और चित्त की**

मन व्यक्त भी रहता है और अव्यक्त भी । मन का अव्यक्त रूप ही चित्त है । मन का काम बाहरी जिंदगी और तौर-तरीकों से जुड़ा रहना है । मन भविष्य के आकाश में ही कूद-फांद करता है, जबकि चित्त अतीत से वर्तमान का साक्षात्कार है । पूर्व स्मृतियों और पूर्व संस्कारों के बीज चित्त की धरती पर ही रहते हैं । पूर्व जन्म के वृतांत भी चित्त की मदद से ही आत्मसात् होते हैं ।

ध्यान की एकाग्रता जितनी गहरी होती जाएगी, अंतर-के-पर्दे पर चित्त के सारे चलचित्र की भांति साफ-साफ दिखायी दे जाएंगे । स्वयं के पहले जन्म/जीवन की घटनाओं का दर्शन और कुछ नहीं, मात्र संस्कारों का छायांकन है । "जाति-स्मर अतीत के प्रति चित्त का गहराव है; किंतु का दर्शन चित्त के जरिए नहीं हो सकता भविष्य या वर्तमान के दर्शन को अतीत कड़ी बनाता है । भविष्य मन का परिसर मन की एकाग्रता सध जाए, तो व्यक्ति को भविष्य के कुछ संकेत अग्रिम प्राप्त हो हैं ।

ध्यान का संबंध चित्त की बजाय मन क्रियाओं से ज्यादा है; इसलिए मन की लिए अनिवार्य है । मगर ध्यान की परि चित्त को संस्कार-शून्य करने में है । मन व्यक्ति अनिवार्यतः मुक्तपुरुष हो जाता है शून्यता से ही मन-मुक्तता की अनुभूति इसलिए मन-की-शुद्धि और चित्त-की- दोनों आवश्यक हैं समाधि और कैवल्य पर दस्तक के लिए ।

ध्यान के क्षणों में जो मन की छितर दिखाई देती है, उससे व्यक्ति को न तो चाहिए और न ही उखड़ना चाहिए । उससे जागना चाहिए । परम जागरण ही ध्यान-सिद्धि की आधार-शिला है । घटिकाओं में होनेवाली चंचलता व्यक्ति ध्यान-दशा नहीं, अपितु स्वप्न-दशा है ।

मन द्वारा किया जानेवाला पर्यटन का ही रूपांतरण है । फर्क मात्र इतना है पिछले में शरीर और मन दोनों जाग्रत और दूसरे में शरीर सोया रहता है, जब

जाग्रत। अकेलापन तो दोनों में ही रहता है। रात को सोते समय भी व्यक्ति नींद में निपट अकेला होता है और ध्यान में भी वह कोरा अकेला रहता है। चाहे शयन-कक्ष में दसों लोग साथ सोये हों और ध्यान-कक्ष में सैकड़ों लोग बैठे हों, तो भी उसका एकाकीपन तो एकांतवासी ही होता है।

ध्यान मन की चंचलता में नहीं, उसकी एकाग्रता या शून्यता में है। जैसे स्वप्न में हुई विचार-यात्रा मन की भगदड़ है, वैसे ही पद्मासन में हुई मन की हवाई उड़ान स्वयं की बैठक को चुनौती है। जैसे स्वप्न के साथ रातभर सोना, सोना नहीं है, वैसे ही मन की भगदड़ के साथ ध्यान करना ध्यान नहीं है। वास्तव में व्यक्ति को ध्यान की घड़ियों में मन से जुड़ना नहीं चाहिए, बल्कि मन को परखना चाहिए। निर्विचार/निर्विकल्प स्थिति बनाने के लिए मन में उभरनेवाले विचारों/विकल्पों को तटस्थ होकर देखना अचूक फायदेमंद है।

ध्यान की एकाग्रता अक्षुण्ण बनाये रखने का मूल मंत्र है "जो होता है, सो होने दो" तुम केवल उसके दृष्टा बनकर होनहार का निरीक्षण करते चले जाओ। यदि मन मध्य में नहीं टिका है, तो एक बात दुपट्टे के पल्ले बांध लो कि वह ध्यान के समय ध्यान से हटकर जहां भी जाएगा, वहां भी नहीं टिकेगा। वह टिकाऊ माल है भी नहीं। अध्यात्म में जीने के लिए मन का अलगाव सौ टाके स्वीकार्य है।

मन में जो कुछ आता है, आने दें। मात्र स्वयं की दोस्ती उससे न जोड़ें। मन के कहे मुताबिक जीवन की गतिविधियों को ढाल लेना ही अध्यात्म-च्युति है। जिन लोगों ने इस आत्म-च्युति को हू-ब-हू स्वीकार किया है, वे नश्वर के नाम पर अनश्वर को दांव पर लगा रहे हैं।

**साधना : मन से मुक्ति है**

मन की संलग्नता आकर्षण और विकर्षण दोनों में है। दोनों मन के ही पालतू हैं। आकर्षण राग है, विकर्षण द्वेष है। मन चाहे राग से भरा हो या द्वेष से, है तो भरा हुआ ही। पात्र में पानी धौला हो या मटमैला, यह खाली तो कहलाएगा नहीं। पात्र की स्वच्छता पानी-मात्र से शून्य हो जाने में है। भरा मन व्यक्ति का शत्रु है और खाली मन अमृत-मित्र।

स्वयं को प्रकृति का सिर्फ उपकरण माननेवाला साधक आहिस्ता-आहिस्ता मन-मुक्त होता जाता है । वह हर उल्टी-सीधी परिस्थिति में भी तटस्थ और जागरूक रहता है । वीतरागता का घर मन-के-पार है । अध्यात्म मन की प्रत्येक सीमा-रेखा के पार है ।

मन के साथ जुदाई जरूरी है, पर यह बार-बार दोहराने की जरूरत नहीं है कि "मैं मन नहीं हूं; यह भी मन की ही खटपट है । यह भी सोच ही है । समाधि निर्विकल्प दशा में है । "मैं मन नहीं हूं"—यह तो स्वयं मन का ही एक विकल्प है । ध्यान में हुई मन की हर सोच विकल्प को ही निमंत्रण है । "मैं मनुष्य हूं" यह कहां कहना/जपना पड़ता है । "मैं देह नहीं हूं" यह भी बार-बार दोहराना देह का भुलावा नहीं, अपितु देह की स्मृति को तरो-ताजा करना है ।

साधकों ने "मैं देह नहीं हूं" इसे भी किसी मंत्र की तरह अपना लिया है । मैं ऐसे सैकड़ों साधकों के संपर्क में आया हूं, जो 'देह नहीं हूं" "देह नहीं हूं" कहते-कहते जीवन की सांध्य में प्रवेश कर गये हैं, फिर भी उनके देह-लगाव का तापमान घटा नहीं है । वास्तविकता तो यह है कि ध्यान गहरा हो जाने पर देहाभ्यास स्वमेव न्यूनतर हो जाता है । खरगोश पर करुणा करनेवाला हाथी तीन-तीन दिन तक एक टांग पर खड़ा रह जाता है । उसे कहां अपने-आपसे बार-बार बोलना पड़ता कि "मैं देह नहीं हूं, मन नहीं हूं ।" लक्ष्य को जीवन का सर्वस्व माननेवाला अपने-आप मुक्त हो जाता है स्वयं-के-लक्ष्य-से-भिन्न-लक्ष्यों से । "मैं देह नहीं हूं" को हजारों बार बोल चुकने के बाद भी ध्यान में बैठा आदमी शरीर पर मच्छर की काट भी सहन नहीं कर पाता । एक मच्छर काट से बौखलानेवाले साधक की क्या सहिष्णु/अस्मिता हो सकती है ? उपसर्गजयी/कष्टजयी कहलानेवाला साधक मच्छर से भी बिदक जाए, यह देहानुभूति-शून्यता नहीं है ।

जरा देखो, घर में खेल रहे उस बच्चे उसके हाथ पर पट्टी बंधी है । हाथ पर घाव है, घाव से दर्द है, पर उसके चेहरे उभरती मुस्कराहट को देखकर क्या हम संबोधि प्राप्त नहीं कर सकते कि उसने अलग रहकर जीने-की-कला हासिल है ? शरीर में घाव और वेदना होते हुए भूल बैठना भेद-विज्ञान की ही पहल है । रोजमर्रा की जिंदगी में भी जब देह-व्यथा अतिरिक्त होकर जिया जा सकता है, तब 'ध्यान' की बैठक में स्वयं को देह/विचार ऊपर नहीं माना जा सकता ? तुम सम्राट सम्राट बनकर रहो । यदि मन की खटपट अशांति तुम्हारे सिर चढ़ी है तो तुम दर-दर भटकनेवाले भिखारी हो ।

**सन्यास : ममत्व की मृत्यु है**

एक आम आदमी मन के कहे में जि जा सकता है; किंतु गृह-त्याग कर साधु- बननेवाला व्यक्ति भी यदि शांत चित्त और मन नहीं रह सकता, तो उसका गृह-त्याग को ठगना ही हुआ । साधु-साध्वियां कह कि "हम स्थित-प्रज्ञ नहीं है । मंदिर इत्या ध्यान करने बैठते तो हैं, किंतु मन मंदिर बाहर भी भटकता रहता है । मेरी समझ की इस चंचलता का कारण संकल्प-शैथि है । आवेश में आकर या किसी के उपदे

से प्रभावित होकर प्रव्रज्या लेनेवाले समय-की-कुछ-सीढ़ियों को पार करने के बाद वापस अपने अतीत की ओर आंख मारने लग जाते हैं। फिर संन्यास जीवन स्वयं की वीतरागता में सजग न रहकर मात्र कथित अनुशासन या मर्यादाओं की औपचारिकताओं/व्यावहारिकताओं में ही रच-बस जाता है।

घर छोड़ना ही संन्यास है, ऐसा नहीं है। घर छोड़ना, वेश-बदलना या अकेले रहना, इतने मात्र से संन्यास की पूरी परिभाषा नहीं हो जाती है। संन्यासी तो वह है, जिसके ममत्व की मृत्यु हो गयी है। आंखों में ध्यान और समाधि के भाव रमने के बाद तो व्यक्ति के लिए घर भी आश्रम और हिमालय हो जाता है; पर जिनकी आंखों में संसार की खुमारी है उनके लिए आश्रम और हिमालय भी घर और बाजार है। घर में रहनेवाला ही गृहस्थ हो, ऐसी बात नहीं है। गृहस्थ तो वह, जिसके मन में घर बसा है, परिवार रचा है, संसार का तूफां है। साधु तो अनगार होता है। अनगार यानी गृह-मुक्त, जिसके मन से बिसर चुके हैं घर-बार। मन से किया गया अभिनिष्क्रमण जीवन की, अप्रतिम राह है। स्वकेंद्र-में-स्थिति का उपनाम ही साधना है।

वीतरागता की उपलब्धि के लिए संकल्प सुदृढ़ हों, तो मन-मुक्ति अनिवार्य है। यदि स्वयं में शक्तियों को जागृत और आमंत्रित करना हो, तो मन की एकाग्रता प्राथमिक है। एकाग्र मन से ही किसी शक्ति के प्राण-तत्व से संपर्क किया जाता है। यदि मनोव्यक्तित्व प्रखर/प्रशस्त हो, तो अपने सप्राण शरीर में अन्य व्यक्तित्व का प्रवेश भी संभव है।

**मनोव्यक्तित्व की एकाग्रता**

कई बार जब मेरे सामने बड़े टेढ़े-मेढ़े प्रश्न आ जाते हैं या लोगों द्वारा हाथो-हाथ चाहे गये विषय पर मुझे घंटों प्रवचन देना पड़ता है तब अकस्मात् जैसे शिव के सिर पर गंगा उतर आयें, मुझमें नये-नये तर्कों/विचारों की बाढ़ आती हुई लगती है, मैं स्वयं दंग रह जाता हूं उस पर जो मैं कहता हूं। मैं यह तो स्पष्ट नहीं कह सकता कि कोई अज्ञात शक्ति मुझमें प्रवेश कर लेती हो, पर एक बात तो पक्की है कि अतिरिक्त शक्ति अवश्य प्रकट होती है। मैं इसे चमत्कार नहीं, वरन् मनोव्यक्तित्व की एकाग्रता कहूंगा।

यदि हम अपने एकाकी क्षणों में एकाग्र मन रहे तो हमें आश्चर्य में डालनेवाली कई ध्वनि-प्रतिध्वनियां, कहां-कहां की छाया-प्रतिछाया मानस पटल पर आती-जाती लगेंगी। दूसरों के मन की पर्यायें हमारे मन के आईने में उभरती लगेंगी। वास्तव में अलौकिक चीजों का साक्षात्कार व्यक्ति द्वारा चेतन मन पर विजय प्राप्त करने के बाद अचेतन मन की आंख खुलने से ही संभव हो सकता है। जो लोग मात्र बाहरी सिद्धियों को ही सर्वस्व समझते हैं, वे मरीचिकाओं पर लुभाकर मूल तत्व से दूर खिसकते हैं। स्वयं के संपूर्ण अंतर-व्यक्तित्व का निखार तो तब होता है, जब कामना की सौ फीसदी कटौती हो जाती है।

परसों (आबू) की बात है। मैं ध्यान से उठा ही था। साधक लोग मेरी अगल-बगल उपस्थित हुए अध्यात्म-चर्चा के लिए। सबकी अपनी-अपनी साधनापरक दिक्कतें थीं। चर्चा

गहरी और अध्यात्म-एकाग्र हो गयी ।

अकस्मात् एक साधिका विशारदा (मूल नाम "विनोद" ध्यान-दीक्षित नाम "विशारदा") की देह में किसी अन्य व्यक्तित्व ने प्रवेश कर लिया । विशारदा की स्थिति तत्क्षण बदल गयी, बड़ी अजीबोगरीब । मैंने दो साधिकाओं-पारदर्शिनी और योगमुद्रा को संकेत किया । उन्होंने विशारदा को संभाला । उसने थोड़ी देर में आंखें खोली । उसमें अंतर-प्रविष्ट व्यक्तित्व ने मुझसे बातचीत की । अंत में वह उस शरीर से तभी बाहर निकला जब उसकी मुक्ति के लिए सहयोगी बनने हेतु मैं वचनबद्ध हुआ । वह व्यक्तित्व वास्तव में उसके मृत भाई चंद्रसेन का प्राणतत्व था । मरते समय उसके मन में साधना के प्रति बेहद लगाव जगा था । बारीकियों को छूने के बाद मैंने पाया कि मनोव्यक्तित्व की एकाग्रता व्यक्ति के साथ किस प्रकार संबद्ध रहती है ।

साधना की शुरूआत में शक्तिपात भी उपयोगी है; किंतु मन से मुक्त होकर निर्विकल्प होने के लिए शक्तिपात की बजाय स्वयं का शक्ति जागरण अधिक श्रेयस्कर है । शक्ति... पर चलने की मैंने भी कोशिश की, पर मैंने... को उससे अतिशीघ्र मुक्त भी कर लिया । ... अनुभव यही बतलाता है कि शक्तिपात से ... केवल उसी को देखना चाहता है जो शक्ति... करता है । शक्तिपात से जो मंजिल मिलती... वह मंजिलल नहीं होती वरन् एक सोपान ... होती है । हां, आत्मजाग्रत साधक का सं... और दर्शन स्वयं को ऊर्जा के जागरण में ... स्वीकारना चाहिए, पर यह कृपा नहीं, मात्र सहकारिता है । यह मात्र शांत मन की समदर्शिता का वितरण है । असली गुरु ... वीतरागता की मस्ती में जीता है । जिसके ... बैठने और जीने से तुम्हारा मन शांत, निर्वि... और निर्विकार बनता है, वहीं तुम्हारे लिए ... हैं । जहां बैठने से तुम्हारा अशांत मन शां... जाए वहीं तुम्हारे लिए मंदिर है जिसे निहार... तुम्हारा लक्ष्य तुम्हारी आंखों से ओझल न ... वही तुम्हारा भगवान् हैं ।

### युवा बने रहने का रहस्य

*ब्रिटेन की लंबे समय तक प्रधानमंत्री बनी रही श्रीमती मार्गरेट थैचर राजनीति में 'लौह महिला' तो मानी ही जाती हैं, साथ ही प्रौढ़ावस्था में होते हुए भी युवा और आकर्षक बनी है । इसका क्या रहस्य है ? इस रहस्य का उद्घाटन हाल ही में प्रकाशित एक लेख में किया गया है, रहस्य है एक विशेष विद्युत प्रणाली द्वारा चार्ज किया हुआ जल । श्रीमती थैचर इस जल से स्नान कर एक विशेष प्रकार की विद्युत ऊर्जा प्राप्त करती हैं और यही उनके युवा बने रहने का रहस्य है ।*

# बुद्धि विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे । यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प ।

—संपादक

**१. यदि** दूध का दाम २५ प्रतिशत बढ़ जाता है तो ग्राहक दूध की खपत कितने प्रतिशत कम कर दे ताकि दूध पर खर्च होनेवाली रकम में बढ़ोतरी न होने पाये ?

**२. क. गुरु** नानक देव १५२० ई. में मक्का से लौटते हुए किस मुसलिम देश में तथा किस प्रसिद्ध मजहबी नेता व पीर के मेहमान के तौर पर दो मास रहे थे ?

**ख.** किस जगह उनकी स्मृति में एक गुरुद्वारा भी बना है ?

**३. क. ब्रिटिश** काल में किस वाइसराय ने सती प्रथा पर रोक लगायी थी और कब ?

**ख.** देश के कुछ भागों में कन्याओं को पैदा होते ही मार डालने की जघन्य प्रथा का अंत करने के लिए १९वीं शती में किसने और कब कानून बनाया था ?

**४. क. सर** मुहम्मद इकबाल के गीत 'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा' के संगीतकार कौन हैं ?

**ख.** भारत में बनी पहली अंगरेजी फिल्म कौन-सी है और वह कब बनी थी ?

**क. अहमदशाह** अब्दाली ने पंजाब सहित देश के जिस भाग को अफगान साम्राज्य में मिला लिया था उसको किस भारतीय ने मुक्त कराया था ?

**ख.** १९वीं शताब्दी में देश के किस महान शासक के राज्य की सीमाएं मध्य एशिया तथा चीन तक पहुंच गयी थीं ?

**६. क. गालिब** की उस डायरी का क्या नाम है जिसमें उन्होंने सन १८५७ में दिल्ली में घटी घटनाओं का जिक्र किया है ?

**ख.** यह किस भाषा में लिखी गयी है ?

**७. उस** प्रख्यात परमाणु वैज्ञानिक का नाम बताइए जिसने देश में सबसे पहले मानव-निर्मित धातु प्लूटोनियम का उपयोग किया और पोखरण में किये गये भूमिगत परमाणु परीक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी ?

**८. क. देश** का कौन-सा ऐसा राज्य है जो पहला पूर्ण साक्षर प्रदेश घोषित हुआ है ?

**ख.** राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के मानदंड के अनुसार कितने प्रतिशत साक्षर होने पर पूर्ण साक्षर राज्य माना जाता है ?

**९. नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

नगर के एक चौराहे पर बड़ी भीड़ थी। जिसके जी में जो आता कहता हुआ, कुछ अनुमान लगाता हुआ, एक-दूसरे से धीमे स्वर में बतियाता हुआ निकल जाता था। उमेश जी प्रातः भ्रमण से लौट रहे थे। भीड़ देखकर सहज उत्सुकता रोक पाना साधकों के लिए ही संभव है। फिर वह आदमी, जो कहानियों की वस्तु गढ़ता हो, कैसे इस अप्रत्याशित भीड़ से मुंह मोड़कर चल देगा। उमेश जी भी कौतुहलवश उधर ही देखने लगे।

बीस-पच्चीस के बीच की एक महिला अर्द्धनग्नावस्था में चौराहे पर पड़ी हुई थी। अंग-अंग से कांति की किरणें निकलकर देखनेवालों की आंखों का औत्सुक्य-वर्द्धन कर रही थीं। शरीर पर की साड़ी देखकर उसे कीमती ही कहा जा सकता था, किंतु तुड़ी-मुड़ी साड़ी कह रही थी कि रात की ही घटना ने उसे इस अवस्था में ला दिया है।

कौन है, क्या है, कहां से आयी, क्यों है, कौन उसे होश में लाएगा ? पुलिस को खबर दी जाए। चलो उसके मुंह पर पानी डालकर जगाया जाए। सब आपस में ही कर रहे थे। वाणी का व्यायाम व्यवहार में संकोच की श्रृंखला से बंधा हुआ था। जैसे उमेश जी उधर पहुंचे कि महिला ने अंगड़ाई ली; हाथ-पांव हिलाये और दोनों पैरों को लटकाने की मुद्रा बनाती हुई उठने का प्रयत्न करने लगी।

प्रयत्न तो उसने किये पर उठ नहीं पायी। फिर सो गयी। उमेश जी इसे शहर की एक साधारण घटना मानकर अपना रास्ता पकड़ने लगे कि उस महिला में फिर चेतना के लक्षण प्रकट हुए और इस वह सचमुच उठकर बैठ गयी। उमेश जी मुड़ना और युवती का आंखें खोलना—दोनों घटनाएं एक साथ हुईं। घटना जैसे एक

कहानी

# कहानी की वस्तु

● विमलेश कुमार श्रीवास्तव

***बारात की शहनाइयों के साथ तारा के मन-मस्तिष्क में उमंगों का पुंज नये-नये महल बनाता हुआ ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर आ रहा था। वर की तसवीर तो उसने देखी थी, किंतु प्रत्यक्ष-दर्शन और तसवीर दर्शन में वास्तविकता और कल्पना का-सा संबंध है।***

हुई उसी तरह उत्सुकता-आतुर उमेश जी की आंखें उस महिला से जा टकरायीं । अरे ! यह तो तारा है—मास्टर ज्ञान सिंह की बेटी । इसका तो विवाह हो गया था । ससुराल चली गयी थी । चढ़ावे में ससुरालवालों ने बहुत-सी सामग्रियां दी थीं और मां कन्या-ऋण से मुक्त होकर संतोष की सांस ले रही थी ।

अब उमेश जी की उत्सुकता सामान्यजन की तरह निर्लिप्त और प्रभावशून्य न रहकर अपने को इस घटना से संपृक्त समझने लगी । उनके मुड़े हुए चरण भीड़ को ठेलते हुए तारा के समक्ष पहुंच गये । 'कहो तारा, तुम यहां क्या कर रही हो ? यहां कैसे आयी ? ऐसा क्यों हुआ ? ज्ञान मास्टर का विद्यार्थी होने के नाते तुम्हारे प्रति मेरा भी कुछ कर्त्तव्य होता है ।' जैसे ही उमेश जी ने उस महिला को तारा कहकर संबोधित किया । वह एकाएक उठी और भीड़ को चीरती हुई दौड़ पड़ी । पीछे-पीछे उमेश जी आगे-आगे तारा । वह दौड़ती जा रही थी । उमेश जी भूल गये कि वे शहर के एक प्रतिष्ठित नागरिक हैं और किसी महिला के पीछे इस तरह उनका दौड़ना अच्छा नहीं माना जाएगा । अपनी अधेड़ अवस्था में भी उन्होंने स्वास्थ्य की रक्षा की थी । इसी का परिणाम था कि तारा से दौड़ में बाजी लगाकर वे जीत गये । तारा एकाएक लड़खड़ाकर गिर पड़ी, और उमेश जी वहां पहुंच गये । तारा फिर बेहोश हो गयी । उमेश जी हांफने लगे थे । पहले बैठ गये और जोर से चलनेवाली सांस के सहज हो जाने पर उठे, पानी लाकर तारा के मुंह पर उन्होंने छींटे मारे । तारा उठ बैठी । अबकी बार न तो उसने भागने का प्रयत्न किया, न ही उमेश जी से मुंह छिपाने का । शहर का यह छोर नया बसा था इसलिए उमेश जी को इधर के लोग कम ही पहचानते थे । सड़क से थोड़ी दूर हटकर तारा और उमेश जी बैठ गये और तारा अपनी कहानी कहने

लगी—

बारात की शहनाइयों के साथ तारा के मन-मस्तिष्क में उमंगों का पुंज नये-नये महल बनाता हुआ ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर आ रहा था। वर की तस्वीर तो उसने देखी थी किंतु, प्रत्यक्ष-दर्शन और तस्वीर-दर्शन में वास्तविकता और कल्पना का-सा संबंध है। तस्वीर के आकार को रंग से भरा हुआ देखकर तारा का मन बांसों उछलने लगा। उसे अपने ही सौभाग्य से ईर्ष्या हो रही थी।

मांगलिक विधियों के बाद बंद कमरे में उसे अपने प्रिय से बातें करने का अवसर मिला। रूप को उसने सुललित वाणी से विभूषित माना था। यहां रूप तो उदीप्त था, पर वाणी का कोकिल मंजरियों से महकती हुई अमराई में भी मौन था। बहुत प्रतीक्षा करने के बाद उसे ही आरंभ करना पड़ा—"कैसी हूं ?" नारी-मन की आकांक्षा में अपने रूप की प्रशंसा बैठी रहती है। इस प्रश्न का जब कोई उत्तर नहीं मिला तो तारा ने और समीप आकर पूछा—"क्या मैं पसंद नहीं हूं या कोई दूसरी देवी मन में बैठी हुई है।" इस बार युगल ने किंचित मुसकराने का प्रयास किया। तारा को जैसे निधि मिल गयी। उसने दोनों बाहें प्रिय के गले में डाल दी और अनेकानेक विभ्रमों से अपने प्रिय को बुलाने का प्रयत्न करने लगी। आधे घंटे के बाद युगल के अधर खुले "टु..टु..तु..म..म..ब..ब्ब —हूत..अ-अ..च्छी..—हो।" तारा ने रूप के उद्यान में जिस वाणी-कोकिल की कल्पना की थी वह छिन्न हो गयी थी। उसके मन में आयोजित विवाह के विपक्ष में कई तर्क एक साथ उठ खड़े हुए। फिर भी, यह सोचकर कि अब तो इसी रूप के साथ जीवन काटना है, उसने प्रिय के चरण-स्पर्श किये। ठीक उसी समय किसी ने सांकल खटखटायी। वह धीरे-से उठी और उसने द्वार खोल दिया। उसकी भाभी दरवाजे पर खड़ी थी। दोनों की आंखें मिलीं। एक में परिहास मिश्रित औत्सुक्य था दूसरी में उपालंभ की जीवंत किंतु अन्यथ[illegible] संबद्ध रेखा खिंची हुई थी। भाभी ने मुसकरा[illegible] से उसका स्वागत किया और उसने भी तत्क्[illegible] किंचित मुसकराहट से ही उसका जवाब भी दिया। सामने से आती हुई मां दिखायी दी। [illegible] को देखकर तारा की आंखों में आंसू प्रकट हो[illegible] को मचल उठे। बलपूर्वक उसने अपने को रोका और शीघ्रता से कमरे में घुस गयी।

जब तारा को एकांत मिला तो उसके आं[illegible] थमे नहीं। वह बाहर से कम किंतु भीतर से अधिक रो रही थी। धीरे-धीरे वह प्रकृतस्थ हुई। बारात के साथ बिदा होकर वह पीहर से पीघर आ गयी। जेठानियों और ननदों ने उसे तरह-तरह से सजाकर सुहाग-शय्या पर ला पटका।

दिन बीतने लगे और उसकी दिनचर्या स्थि[illegible] होने लगी। दिनचर्या के साथ उसने मन को स्थिर करने की चेष्टा की—मैंने सब तरह से योग्य पति पाया है। उनमें वाणी का थोड़ा-सा स्खलन है। इससे क्या हुआ। क्या कोई सब दृष्टियों से पूर्ण होता है ? उसके इस सामंजस्यवादी दृष्टिकोण ने ऐसा कुछ नहीं होने दिया जिससे दांपत्य की दीवार में छिद्र होता। युगल भी उसे प्राणों के धरातल पर बिठाकर प्रेम करने लगा। तारा के रूप-लावण्य और युगल की कांति ने एक मधुर संसार की कल[illegible]

***वह उठना चाहता था और तारा उसे उठने नहीं देना चाहती थी । इस क्रम में तारा के हाथ की चूड़ी का एक टुकड़ा देवर के माथे में धंस गया और खून बहने लगा । खून बहता देखकर वह और जोश में आ गया, फिर भी किसी तरह तारा अपना बचाव करते हुए निकल पड़ी...***

में अपने को भुला दिया ।

इसी तरह महीनों बीत गये । युगल ने किसी तरह बी. ए. किया था । तब विवाह नहीं हुआ था, परिवार के सदस्यों को उसकी बेकारी अखरती नहीं थी । भाइयों के साथ वह भी खेती के काम में कुछ-न-कुछ मदद देता था । पर छोटी-सी खेती के लिए जितने आदमियों की आवश्यकता थी उससे अधिक आदमी पहले से ही उसमें लगे हुए थे । युगल को बाहर जाकर कुछ कमाना चाहिए यह बात उसके विवाह के पहले से परिवार में चली आ रही थी । इसी बीच तारा के साथ उसके विवाह की चर्चा चलने लगी । ऐसी अवस्था में वह कहीं जा नहीं सकता था और न ही किसी ने उससे कुछ कहा । किंतु, अब तो निश्चित रूप से उसके बाहर जाने की बात उठने लगी । विशेषतः जब तारा उसे खिलाने बैठती । भौजाइयां और मां भी यह दृश्य देखने में पहले-सा आनंद का अनुभव नहीं करती थीं, बल्कि उन्हें ताना मारने का अवसर मिलता । इन तानों को सुनकर युगल तिलमिला जाता और जल्दी-जल्दी कौर निगलकर बाहर भाग जाता ।

इस प्रकार आखिर कितने दिन चलते ? एक दिन जब वह पत्नी के कमरे में आया, तारा सास का ब्लाउज सी रही थी । युगल को देखकर खड़ी हो गयी और उसे बैठने के लिए कहा । पलंग पर उसकी ससुराल से आयी हुई चादर बिछी हुई थी । युगल के बैठने पर उसने कहा, "मां और भाभियों की बात पर ध्यान देते हैं ?"

युगल, "ध्यान तो देता हूं, किंतु, क्या करूं ? कहां जाऊं, यही समझ में नहीं आता !"

तारा, "विवाह के समय मां कहा करती थी, लड़के के विवाह की देर है । नौकरी तो रखी हुई है । उसके मामा के चाचा विलासपुर में बड़े पद पर हैं । वहीं नौकरी हो जाएगी । क्यों नहीं वहीं चले जाते हैं ?"

युगल, "जाता क्यों नहीं, किंतु वास्तव में मेरे मामा के न तो कोई चाचा है, न ही वे कहीं अफसर हैं । सच पूछो तो मेरे मामा हैं ही नहीं । जो मामा कहे जाते हैं वे मेरे नाना की पट्टीदारी के भतीजे हैं ।"

तारा, "तो विवाह में झूठ कहा गया था ? रोज-रोज के ताने सुनते-सुनते मेरे तो कान पक गये । वह भीतर से क्रुद्ध मुद्रा में थी और युगल के अटक-अटक कर बोलने की आदत से वह अपना अपमान अनुभव कर रही थी । तारा के इस प्रश्न पर युगल सटपटा गया । उसकी वाणी

और लड़खड़ाने लगी । उसने बोलने का प्रयत्न किया किंतु जीभ तालू से सट गयी और वह कुछ बोल नहीं सका । इस पर तारा को न जाने कैसे हल्की हंसी आ गयी । युगल ने इसे अपना अपमान समझा, यद्यपि तारा का यह भाव नहीं था । वह बिना कुछ कहे तत्काल कमरे से बाहर निकल आया और बिना किसी को कुछ बताये उसने बाहर की राह ली ।

युगल जब संध्या क्या, रात तक घर नहीं आया तो परिवार के सारे सदस्य—तरह-तरह की बातें करने लगे । तारा की छोटी ननद ने भाभी का हंसना और भैया का लाल मुंह परदे की ओट से देख लिया था । बात मुंहामुंही हो गयी कि भैया और भाभी में झगड़ा हुआ है । परिवार के सारे व्यक्ति तारा को दोष देने लगे । वही अपने रूप के आगे युगल की खिल्ली उड़ाती है । ठीक से बात नहीं करती और उसमें तरह-तरह के दोष निकाला करती है । भीतर बैठी हुई तारा बाहर की बात सुनती और मन-ही-मन कुढ़ती । नैहर से भी कोई नहीं आ रहा था जिससे दुःख कहती । खिन्नता और पश्चाताप की स्थिति में उसका स्वास्थ्य गिरने लगा ।

काम में उसका मन नहीं लगता था, किंतु सास, जेठानियों और ननदों के साथ काम करने का तकाजा किये रहतीं । परिवार के लोगों ने मान लिया कि युगल कहीं नौकरी की तलाश में गया है । नौकरी लगते ही पत्र भेजेगा ।

इसी समय तारा की ननद के लिए लड़का देखा गया । तिलक में कई हजार रुपये देने थे खेत बंधक रखकर कुछ रुपयों का प्रबंध हुआ । अभी पांच हजार रुपये घट रहे थे । तारा की सास ने उसे एक दिन अपने पास प्यार से बैठाया और परिवार की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा कि यदि वह अपने नैहर से पांच हजार रुपयों का प्रबंध करवा देती तो उसकी ननद के विवाह-मार्ग की पहली बाधा दूर हो जाती । सुनकर तारा के दिमाग में हलचल मच गयी । कहां तो इनके परिवार के धन की चर्चा सुनकर मां ने लड़के के ऐब को छिपाकर भी शादी कर दी और अब भला कहां से मां पांच हजार रुपये देगी । वह जानती थी शादी के लिए उसकी छोटी और बहन तैयार बैठी हुई है । मां के पास थोड़े ही तो खेत बचा हुआ है । बहन की शादी में बिकेगा और मां के खर्च के लिए कुछ तो चाहिए ही । उसने साफ कह दिया उसकी मां से रुपयों का प्रबंध नहीं होगा ।

बस इसी बात पर महाभारत प्रारंभ हो गया । सास रोज ताने देती । ननदें रोज भला-बुरा कहतीं । भाई के गुण और भौजाई के दोष परिवार की आम चर्चा हो गये । देवर भीतर आकर कभी-कभी भद्दा मजाक कर जाता । वह सब सहती जा रही थी । यह सब

चल रहा था कि एक दिन उसने सुना, परिवार के सभी लोग लड़की दिखाने शहर जानेवाले हैं । केवल उसका देवर यहां रह जाएगा । इस एकांत की कल्पना से तारा को पांवों तले जमीन खिसकती नजर आने लगी । उसने सबसे छोटी ननद से कहा, "अम्मा से कहो मुझे भी शहर ले चलें ।" यद्यपि उसे उम्मीद नहीं थी फिर भी, उसने ननद से कहलवाया क्योंकि वह अन्य लोगों की अपेक्षा उससे अधिक स्नेह रखती थी और मां की भी लाड़ली थी । ननद से मां का रुख जानकर तारा को चुप लगा जाने के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं था ।

निश्चित दिन को परिवार के सभी लोग शहर चले गये, तारा और उसका देवर रह गये । उसने बैलों को खिलाया और तारा से कह गया कि सबेरे खाना बन जाना चाहिए, उसे गवनई में जाना है । तारा ने बेमन से खाना बनाया और देवर के अंदर आने पर खाना परस दिया । वह दो-चार कौर खाकर उठ गया किंतु, रसोई की तारीफ करना नहीं भूला । तारा ने थोड़ा-सा खाया और बाहर का किवाड़ बंद करके सो गयी ।

लगभग आधी रात को जंजीर बजने की आवाज सुनकर उसकी नींद खुली । उसका देवर बाहर से पुकार रहा था उसकी चादर भीतर ही रह गयी थी । बिना चादर के वह पुआल पर सोएगा कैसे ? अब तारा को किवाड़ खोलने के सिवा कोई उपाय नहीं था । उसने किवाड़ खोल दिया । देवर भीतर आ गया । बड़ी देर तक मां के घर में इधर-उधर कुछ खोजता रहा । तारा ने सब देखा और कहा कि आपको बहुत देर भीतर रहना है तो मैं अपने घर में जा रही हूं । जब बाहर जाने लगिएगा तो कह दीजिएगा, मैं किवाड़ बंद कर दूंगी । देवर को तो बाहर जाना नहीं था । वह बहुत देर तक यों ही कुछ-कुछ करता रहा । कुछ देर तक तारा जगी रही । किंतु लेटे-लेटे देवर के बाहर जाने की प्रतीक्षा करते-करते उसे नींद आ गयी । जब नींद खुली तो देवर उसके कमरे का दरवाजा बंद कर चुका था । वह आकर उसके पलंग पर बैठ गया और अपना मुंह तारा के कपोलों से सटाया कि वह हड़बड़ाकर उठ बैठी । अब लगी उठा-पटक होने । तारा महिला थी, किंतु क्षत्राणी । उसने राजपूतनियों के बलिदान की कई कहानियां सुनी थीं । उन कहानियों से उसे बल मिला करता था । ऐसी आपत्ति आ पड़ने पर वह भी अपनी रक्षा कर लेगी, यह भाव उसके मन में भर जाता । दुर्बल देवर को जब उसने धक्का दिया तो वह तिलमिलाकर गिर पड़ा । वह उठना चाहता था और तारा उसे उठने नहीं देना चाहती थी । इस क्रम में तारा के हाथ की चूड़ी का एक टुकड़ा देवर के माथे में धंस गया और खून बहने लगा । खून बहता देखकर वह और जोश में आ गया, फिर भी किसी तरह तारा अपना बचाव करते हुए निकल पड़ी और बाहर से उसने सांकल चढ़ा दी ।

इस घटना के बाद वह कोई मार्ग निश्चित करने में असमर्थ थी । इस घर में अब रहना कठिन है, ऐसा सोचकर वह घर से बाहर निकल आयी । उसने शहर का रास्ता पकड़ा और सुनसान सड़क पर चलते हुए किसी चीज से टकरा कर गिर पड़ी ।

**—१४, प्राध्यापक निवास, खबड़ा रोड,
विश्वविद्यालय परिसर, मुजफ्फरपुर**
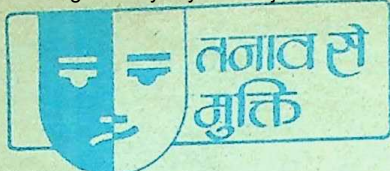
● डॉ. सतीश म...

## दोस्तों में फूट क्यों ?

दिलीप कुमार जैन, पारसिया : मेरी उम्र २८ वर्ष, शिक्षा एम.ए. राजनीति विज्ञान, प्रकृति-धार्मिक, आदर्शवादी, सिद्धांतवादी । मैं हमेशा दोस्तों को अच्छी ही सलाह देता हूं । जबकि मेरे दोस्त गलत राह चलते हैं । उनमें से कुछ मेरी बातों पर आकर्षित होते हैं, परंतु सही राह पर नहीं आ पाते हैं । बाद में वह मेरी बुराई करते हैं तथा फिर दुश्मन बन जाते हैं । जबकि मेरा मन सबके लिए बराबर रहता है । मेरे आने से दोस्तों में फूट क्यों पड़ जाती है । क्या मैं ही गलत हूं या फिर मेरे दोस्त ?

आपको इस मनोविज्ञान को भी समझना चाहिए कि आपके मित्र भला अपने बीच ऐसे व्यक्ति को कैसे सहन कर सकते हैं जो हमेशा उन्हें सिद्धांत, दार्शनिकता, धर्म आदि पर सलाह व भाषण देता रहता हो । समाज में ऐसा 'रोल' बड़े-बूढ़े, अध्यापकगण आदि करते हैं । आप हमेशा उनकी त्रुटियों की ओर ध्यान दिलाते हैं, जबकि मनोविज्ञान हमें सिखाता है कि हम प्रशंसा भी सुनना चाहते हैं । यह भी तो हो सकता है कि आपमें भी कमियां हों । आप उनकी ओर अपना ध्यान ही नहीं देते । बल्कि बड़े-बड़े सिद्धांतों की आड़ में अपने को छिपाये रहते हैं । अच्छा हो यदि आप अपने पांव जमीन पर रखें ।

## दौरा पड़ता है !

संजय श्रीवास्तव, कंकड़बाग (पटना) : गंभीर प्रकृति का २० साल का दुबला-पतला बी... छात्र हूं । होली वाले दिन, १९८८ में भांग ... इस नशे में मुझे लगा कि कमरा जिसमें मैं हूं ... यही दुनिया है, बाहर कुछ नहीं । फिर सारा वातावरण व चारों ओर की जगह सिकुड़ती ... चली । मुझे लगा मैं चारों ओर से घिर गया ... चलना, बोलना आदि कार्य सभी कठिन हो ... अजीब-सा लगा । बार-बार रुक जाता तथा ... यह मैं क्या कर रहा हूं ?

परंतु समस्या अब यह है कि परीक्षा के ... जब भी मुझे कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य करना हो ... दौरा-सा पड़ जाता है तथा वैसी ही स्थिति ... लगने लगती है । अब इसका भय उत्पन्न हो ... है । यह कौन-सा रोग है, कृपया इलाज सु...

भांग खाने के पश्चात स्थान व दूरियों में ... परिवर्तन जैसी कोई चीज या फिर शरीर के ... वातावरण बदले से लगते हैं । यह सब ... नशे में ही होता है । लोगों को जो भी अनु... होता है वह आनंददायी न होकर भय से ... होता है । आपका पत्र पढ़कर शायद अन्य ... भांग लेने को बहुत अच्छा नहीं समझेंगे । क्योंकि आपको ऐसा तजुर्बा हुआ तो इससे ... डर गये हैं । जब भी आप तनाव में होते हैं ... डर जाते हैं । वास्तव में यह स्थिति केवल ... से ही हो सकती है, भांग के बिना नहीं । इसलिए डरने के बजाय आप अपनी परी... अन्य समस्याओं को ठीक प्रकार से निपटा... सिर्फ विपरीत परिस्थितियों के बारे में न सो...

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आय, पद, आयु एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें ।

—संपादक

## अद्‌भुत लगाव

**म.कु., हजारीबाग (बिहार) : १८ वर्ष का हिंदू इंटर विज्ञान का छात्र हूं । मेरी दोस्ती एक आदिवासी ईसाई लड़के से हो गयी । वह काला है, मैं सांवला, उसे फिल्में देखने का अत्यधिक शौक है और मुझे कभी-कभी देखने का । इस प्रकार आपस में कई गुण नहीं मिलते । भिन्न प्रकृति के होते हुए भी कभी भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचाते आये । जुदा होते समय दुःखी था । ढाई वर्षों तक पत्राचार चलता रहा । कुछ दिनों से पत्र नहीं आया । एकांत में सिसकता रहता हूं । मन करता है उड़कर उसके पास जाऊं तथा उसी के साथ जीवनभर रहूं । पागलों की तरह डाकिये का इंतजार व पूछताछ करता रहता हूं । शादी न करने का भी फैसला किया है । सिर्फ उसे ही देखने की इच्छा है । कुछ भी अच्छा नहीं लगता । मेरे कई लड़के-लड़कियां मित्र हैं, परंतु ऐसी भावनाएं और किसी के संग नहीं । डॉ. साहब ऐसा क्यूं ?**

इस प्रकार की मित्रता समलैंगिकता की परिभाषा में गिनी जाएगी, परंतु किशोरावस्था की यह प्रतीक है—एक-दो साल बाद आपको स्वयं ऐसी मित्रता के संबंध अजीब लगेंगे । इसलिए भावुकता में बहकर सारी उम्र के लिए बिना शादी के रहने का विचार आदि छोड़ दें । इस मित्रता के पीछे अभित्रता भी है । मनोविश्लेषण करें व अपने आप को प्राकृतिक रास्ते में छोड़ें । जीवन में यह एक अवस्था है, न कि आपका स्थिर व्यक्तित्व, जिसके आधार पर कई बड़े निर्णय लिये जाते हैं ।

## विचित्र आवाजें

**न. मि., उज्जैन : २३ वर्ष का पोलीटैक्निक का छात्र हूं । समस्या है कि मुझे विचित्र आवाजें सुनायी देती हैं । लगता है कोई ताने कस रहा है । बेचैनी महसूस होती है, दिमाग हमेशा तनावग्रस्त रहता है । याददाश्त कमजोर हो गयी है । अकेलापन महसूस करता हूं । न्यूरोलॉजिस्ट ने माइग्रेन बताया व मनोचिकित्सक ने स्किजोफ्रेनिया । सभी की दवा खा चुका तथा अब तंग आकर छोड़ दी । जब कपाल में सूजन आती है तब क्रोध आता है । कभी लगता है लोग हंस रहे हैं, मेरे विषय में चर्चा कर रहे हैं । डॉ. साहब यह क्या है ?**

आप माइग्रेन के मरीज कदापि नहीं इसलिए न्यूरोलॉजिस्ट को दिखाना छोड़ दें । मनोचिकित्सक द्वारा इलाज थोड़ा लंबा है, परंतु आजकल बहुत-सी दवाएं उपलब्ध हो गयी हैं । ऐसी भी जिन्हें सप्ताह में एक गोली अथवा महीने में एक या दो टीकों की आवश्यकता होती है ।

आपको वास्तव में अकेलापन छोड़, मित्रों के संग उठना-बैठना चाहिए । हीन भावना व उदासीनता ही ऐसी मनोस्थिति उत्पन्न कर देती है, जिसमें लगता है आप पर लोग हंस रहे हैं या ताने कस रहे हैं । आपका पत्र पढ़कर हमें विश्वास है कि आपका रोग इतना बढ़ा हुआ नहीं जो ला इलाज हो । आप सही हो सकते हैं ।

# पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो
## गृह मंत्रालय

# पुलिस विषयों से सम्बंधित हिन्दी की पुस्तकें

पं० गोविन्द बल्लभ पंत पुरस्कार योजना के अंतर्गत पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो (गृह मंत्रालय) ने पुलिस विषयों से संबंधित निम्नलिखित हिन्दी की पुरस्कृत पुस्तकें प्रकाशित कराई हैं।

(1) भारतीय पुलिस का इतिहास (अतीत काल से मुगल काल तक)
लेखक—श्री शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी मूल्य रु० 54/-

(2) भारत में केन्द्रीय पुलिस संगठन : एक सर्वेक्षण मूल्य रु. 65/-
लेखक—श्री भीष्मपाल

(3) ग्रामीण पुलिस—समस्याएं एवं समाधान मूल्य रु० 65/-
लेखक—श्री शंकर सरौलिया

(4) ग्रामीण पुलिस—समस्याएं एवं समाधान मूल्य रु० 70/-
लेखक—श्री रामलाल विवेक

(5) विकासशील समाज में समसामयिक पुलिस की भूमिका
लेखक—श्री आर०एस० श्रीवास्तव मूल्य रु० 105/-

ये पुस्तकें बिक्री के लिए उपलब्ध हैं और इन्हें सहायक नियंत्रक (वाणिज्य), प्रकाशन विभाग, सिविल लाइन्स, दिल्ली- 110054 से प्राप्त किया जा सकता है।

davp 91/102

## बेचैन हूं

**शि. दि., बिलासपुर (म.प्र.) : मैं २० वर्ष की बी.ए. की छात्रा हूं। एक सजातीय लड़के से प्रेम करती हूं तथा ग्रेजुएशन के पश्चात शादी भी हो जाएगी। समस्या यह है कि उस लड़के ने मुझे बताया है कि मेरे से पहले वह एक लड़की से प्रेम करता था, परंतु वह नहीं चाहती थी। इसके बाद ही उसका झुकाव मेरी ओर हो गया तथा मुझे बहुत प्यार भी करता है परंतु मैं अपने आपको नियंत्रित नहीं कर पा रही। उस लड़की का विचार आते ही, बेचैन हो उठती हूं, रोने लगती हूं। स्वास्थ्य व पढ़ाई पर भी असर हो रहा है। क्या करूं ?**

आपके प्रेमी ने आपको बताकर अपनी सचाई, ईमानदारी व आपकी ओर अपनी भावनाओं को ध्यान में रख यह बात बतायी है। आप चाहती हैं कि आप वह लड़की क्यों नहीं। आपका प्रेमी उस लड़की को चाहता था लेकिन उस लड़की की कोई भावना ही नहीं थी, तब इस प्रकार की चाहत को प्रेम नहीं कहा जा सकता। चाहने के कई माप-दंड हो सकते हैं। शारीरिक आकर्षण, क्षणिक आकर्षण भी हो सकता है। आपके साथ तो संबंध क्षणिक व शारीरिक नहीं हैं। इस आयु तक पहुंचते-पहुंचते हरेक युवक व युवती को कोई न कोई सैक्स को लेकर चाहत स्वाभाविक ही है। यदि कोई कहता है कि ऐसा नहीं तो या तो वह झूठ बोलता है अथवा इस क्षेत्र में अयोग्य व असामान्य है।

## नींद नहीं

**क. ख. ग., दिल्ली : २६ साल का हूं। रात को ढाई बजे तक नींद नहीं आती है। आती भी तब है, जब कोई किताब लेकर पढ़ने बैठूं। इसका कोई उपाय बतायें।**

नींद न आना कोई स्वयं में बीमारी नहीं, परंतु लक्षण अवश्य हैं। आम तौर पर नींद के समय कोई आदत-सी बन जाती है जिसके कारण उन चीजों पर निर्भर रहना पड़ता है। इसलिए (१) देखें कि आपकी नींद किस वजह से भंग होती है—जैसे शोर आदि।

(२) या फिर आप पढ़ते रहते थे। इसलिए पढ़ते-पढ़ते सोने की, वह भी रौशनी में आदत-सी डाल ली है। इसे कंडिशनिंग कहते हैं। धीरे-धीरे यह कंडिशनिंग खत्म हो सकती है, यदि आप बहुत चिंतित व तनाव में न हों तो।

(३) रात को कभी बहुत गरमी व सरदी या फिर मच्छर आदि से भी नींद भाग जाती है।

(४) रात को थोड़ा मीठा लेकर सोयें।

(५.) नींद के पीछे न भागें यदि नहीं आ रही तो कुछ न कुछ कार्य में लग जाएं स्वयं आ जाएगी। किसी प्रकार का नशा भी न करें। चाय, काफी कोला (पेय) शाम के ५ बजे के बाद सेवन न करें।

(६) नींद आना एक प्राकृतिक स्वाभाविक क्रिया है, यदि आप इसकी चिंता छोड़ दें तो स्वयं ही वह अपना समय बांध जितनी आवश्यक होगी आ जाएगी।

*जिस मनुष्य के चित्त से विश्वास जाता रहता है उसे मृतक समझना चाहिए।* — प्रेमचंद
*जिस वस्तु का अस्तित्व नहीं है, उसे हम विश्वास से उत्पन्न नहीं कर सकते।* — टैनिसन
*जैसे फल के पहले फूल होता है, वैसे ही सत्कार्य के पहले विश्वास होता है।* — ह्वेटली

# बिहार के नचनियों-बजनियों की

देश के हर हिस्से के लोक कलाकार कष्ट के कैक्टस और दमन की नागफनी में फंसे हैं किंतु इनमें सबसे बदतर हालत बिहार के लोक कलाकारों की है । ये कलाकार भित्ति चित्र बनानेवाले हैं, लोक गीतों के गायक हैं, वादक हैं, खेल-तमाशा, नाच-नौटंकी में नाचने, गाने, स्वांग करनेवाले कलाकार हैं । इनमें भित्ति

● प्रो. साधु शरण सिंह 'सुमन'

चित्रकार और लोक गीत गायकों की संख्या तो कम है किंतु वादक और खेल-तमाशा, नाच-नौटंकी के रंगकर्मियों की काफी तादाद है । एक अनुमान के अनुसार संपूर्ण उत्तर बिहार में लगभग एक सौ भित्ति चित्रकार, पांच हजार लोक गायक, पच्चीस हजार से अधिक पेशेवर वादक (बजनियां) और पचास हजार से एक लाख तक नाच-नौटंकी में कार्य करनेवाले कलाकार (नचनियां) हैं । इनमें महिलाओं की संख्या कम है । ये समर्पित कला प्रेमी लोक गाथा, लोक संस्कृति आदि को माध्यम बनाकर अपने करतब और जौहर दिखलाते हैं । परंतु उन्हें मिलनेवाला पुरस्कार अत्यंत अल्प है ।

सामान्य तौर पर भित्ति चित्रकार और लोक गायक कला साधना के अलावा कृषि कार्य में भी रमे हैं, अतः इनकी जिंदगी, प्रायः ढंग से गुजरती है किंतु नचनियां-बजनियां वर्ग को दमन, कष्ट और नारकीय प्रताड़ना के अनगिनत थपेड़ों को सहना पड़ता है । पांच वर्ष तक लगातार इस क्षेत्र में काम करने के बाद वह किसी अन्य कार्य के उपयुक्त नहीं रहता । प्र

परंपरागत बाजा दल

कच्ची उ
दल औ
पहले उ
उन्हें न तो
सामान्य
बाजा-मा
कार्य बांट

के बाद ल
पर या तो
अथवा उ
दाढ़ी-मूंछ
उनका प्रति
लोगों को
क्रम में उन
सामान्य क
खेत-खलि
पड़ती है ।

स्वांग
करना आदि
इसकी ज्या
है । अधिक
ही होते हैं,
व्यस्त रहते
रातें लगाता
एक सट्टे से
रहता है ।

कच्ची उम्र में ही गरीब बच्चों को नाच-नौटंकी दल और बाजा मास्टर अपने पास रख लेता है। पहले उन्हें रियाज कराया जाता है। इस समय उन्हें न तो कोई मजदूरी मिलती है और न ढंग की सामान्य शिक्षा ! नौटंकी, नाच एवं बाजा-मालिकों द्वारा गुणवत्ता के आधार पर कार्य बांटा जाता है। एकाध वर्ष के प्रशिक्षण

[illegible] के कलाकार अपना काम शुरू कर देते हैं जो रात के तीसरे पहर तक अनवरत चलता रहता है। नाच-नौटंकी में नाटक-स्वांग नाच दल अपनी इच्छानुसार करता है, किंतु कभी-कभी लोक-गाथात्मक स्वांग, जैसे राजा भरथरी, आल्हा-उदल, रानी सारंगा, विजय मल्ल, सोरठी बृजभार, बिहुला-विषहरी आदि

# ...की लोमहर्षक दास्तां

के बाद लगभग युवावस्था की पहली पायदान पर या तो उसके हाथ में ढोल-ताशे आते हैं अथवा उसे साड़ी पहनकर नाचना-गाना या दाढ़ी-मूंछ लगाकर स्वांग करना पड़ता है। उनका प्रशिक्षण काल अत्यंत कष्टकर होता है। लोगों को हंसाने मनोरंजन करने की शिक्षा प्राप्ति क्रम में उन्हें न केवल बाजा-नाच मालिकों के सामान्य काम करने पड़ते हैं वरन उनके खेत-खलिहानों में भी मेहनत-मशक्कत करनी पड़ती है।

## दिन-रात परिश्रम

स्वांग करना, नाचना-बजाना, खेल-तमाशे करना आदि सालोंभर चलनेवाला पेशा है किंतु इसकी ज्यादा मांग शादी-ब्याह के मौके पर होती है। अधिकांश मांगलिक कार्य गरमी के दिनों में ही होते हैं, अतः इस समय ये कलाकार अत्यंत व्यस्त रहते हैं। इन दिनों उन्हें औसतन पंद्रह रातें लगातार परिश्रम करना पड़ता है। लगन में एक सट्टे से दूसरे सट्टे पर जाने का क्रम लगा रहता है। बारात में पहुंचने के बाद हलका

की मांग कर देने पर उनकी सारी रात कट जाती है। यही दशा बाजा बजानेवाले की भी होती है क्योंकि उसे सारी रात लड़कीवाले के दरवाजे पर बाजा बजाना पड़ता है। सूर्योदय के पूर्व उन्हें भोजन मिलता है जो न केवल बासी रहता है वरन कन्या पक्ष वालों द्वारा उन्हें बेमन से दिया जाता है।

उधर सूर्य की लालिमा फैलती है, इधर ये बिछावन पकड़ते हैं। दस बजते-बजते इन्हें फिर तैयार होकर नाचना-बजाना पड़ जाता है। यह कार्य संध्या चार बजे तक चलता है। इस बीच केवल हल्का नाश्ता लेकर ही ये काम करते रहते हैं। अगर दो रातवाली बारात है तो फिर अपराह्न आठ बजे से उन्हें कार्य पर लग जाना होता है। इस समय दल का हर सदस्य थका, परेशान और पसीने से लथपथ रहता है किंतु उसे हाजिरी बजानी ही होती है। पूरा दल अगले दिन प्रातः बिना कुछ खाये सट्टे का पैसा लेकर अगली बारात के लिए प्रस्थान कर जाता है। जी-तोड़ परिश्रम और आधे-अधूरे
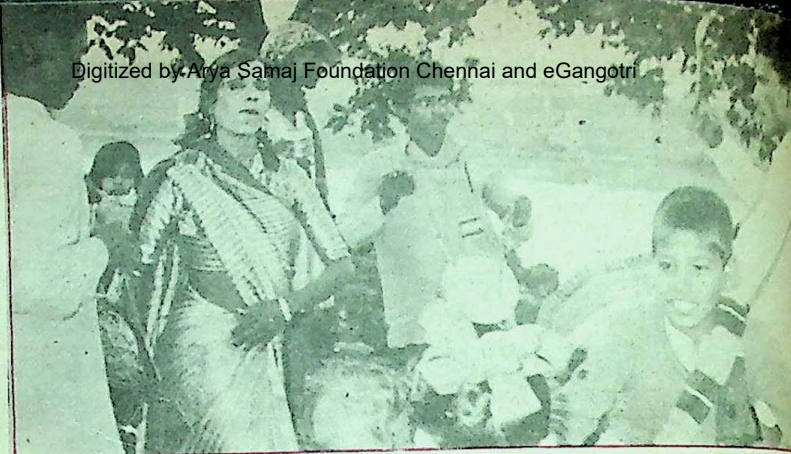
नृत्य का एक दृश्य

असामयिक भोजन से कमजोरी महसूस होते ही यह वर्ग कृत्रिम शक्ति-उत्साह प्राप्ति हेतु गांजा, भांग, शराब एवं अन्य मादक द्रव्य का सेवन करता है, जो इसके वर्तमान और भविष्य दोनों को निगल जाता है ।

ग्रामीण-क्षेत्र के नाच-नौटंकी बाजा आदि में रहनेवाले कलाकारों का कई तरह से शोषण होता है । सबसे चिंताप्रद बात तो यह है कि इन्हें पारिश्रमिक अत्यंत अल्प मिलता है । इस क्षेत्र में पंचानवे प्रतिशत कलाकार दैनिक मजदूरी पर कार्य करते हैं, जिसकी दर अनिर्धारित रहती है । इनके श्रम का पारिश्रमिक सट्टे की राशि पर निर्भर करता है । किसी सट्टे का पैसा मिलने पर मालिक सबसे अपना हिस्सा निकाल लेता है । उसके बाद वाद्ययंत्र एवं सामान का पैसा लेता है फिर वाद्य-वादन कलाकारों को चुकाता है । अंत में बचे पैसे में किसी भी कलाकार को प्रायः पंद्रह रुपये से ज्यादा नहीं मिल पाता ।

इस वर्ग के सभी कलाकारों का नाच-नौटंकी मालिक से मौखिक समझौता होता है । वे मालिक की मरजी के खिलाफ दल नहीं छोड़ सकते । बारात में देर से आने, नाच-नाटक या स्वांग के न जम पाने, आंधी-वर्षा आदि से व्यवधान उत्पन्न होने पर सट्टा की राशि कम, अधूरी या नहीं मिलती है । प्राकृतिक व्यवधान से हुए नुकसान की चोट भी इन्हीं कलाकारों को सहन करनी पड़ती है । इस तरह के घाटे की राशि उनकी अगली आय से काट ली जाती है । अक्सर बाजा-नाच-नौटंकी में कुछ नकद-व्यक्तिगत पुरस्कार भी मिलता है । उसमें भी मालिक का हिस्सा होता है । शादी-ब्याह का समय प्रायः जाड़े से प्रारंभ होता है और आगे बरसात तक चलता है । इस लंबे समय में बजनियां-नचनियां को तीन सौ पचास रुपये से अधिक नहीं मिल पाता । इसी में उसे अपने परिवार का भरण-पोषण करना होता है एवं महाजन-साहुकारों के ऋणों की अदायगी भी करनी होती है ।

लगन समापन के बाद अर्थात मध्य की ऋतु में नाच, बाजा, नौटंकी के कलाकार गांव और खेत की ओर लौटते हैं । इन्हें

बड़े ही अमानवीय शोषण के जाल में जकड़ जाना पड़ता है । चूंकि इन्हें गीत-संगीत से रुचि रहती है । सिर पर बाल बढ़े होते हैं, अतः उन्हें ग्रामीण समाज के तानों का शिकार होना पड़ता है । खेत मालिक इनसे काम काफी लेता है, बदले में दाम अत्यंत कम देता है । शांत-सरल प्रवृत्ति वाले इस वर्ग में से अधिकांश को उपेक्षा का भी गरल पीना पड़ता है । उन्हें 'कामचोर', 'लबार', 'हिजड़ा', 'नामर्द', जैसे नामों से पुकारा जाता है । इनके संबंध में पूरे बिहार में यह कहावत प्रचलित है— 'नचनियां, बजनियां, कीर्तनियां ये तीनों खेती के दुश्मनियां ।' फलतः ये अपने आपको अपूर्ण, घटिया और समाज से कटा हुआ अनुभव करने लगते हैं । माथे पर बाल बढ़ाये स्त्रैण अदा में बतियाने वाले ये लोग पूर्ण पुरुष है किंतु दुत्कार-फटकार तथा भेदभाव की कुंठा इनके व्यक्तित्व को बौना बना देती है ।

### नारकीय जीवन

आज बिहार में लगभग दस हजार नाच गिरोह, साढ़े अठारह हजार बाजा पार्टी और एक हजार नौटंकी दल कार्यरत हैं । इनके मालिक जो थोड़े संपन्न वर्ग से आते हैं, आराम की जिंदगी बिताते हैं, किंतु कलाकारों की कहानी आंसुओं में तर रहती है ।

विदेशिया स्कूल ऑव डांस एंड ड्रामा के प्रवर्त्तक राय बहादुर स्व. भिखारी ठाकुर ने अपने जीवन के अपराह्न में नाच, बाजा, नौटंकी कलाकारों की दशा सुधारने की दिशा में कुछ कार्य किया था । किंतु उनके निधन के बाद सब समाप्त हो गया । कुछ स्वयंसेवी संगठन और स्थानीय साहित्यिक संस्थाएं बीमारी आदि में इन लोगों की थोड़ी-बहुत सहायता कर दिया करती हैं । ग्रामीण कलाकारों की तुलना में शहर के नाच-नौटंकी, बाजा दल के सदस्यों की मजदूरी अधिक है । शहर में काम न रहने के समय कहीं न कहीं कोई मेहनतवाला कार्य मिल ही जाता है, किंतु देहातों में इनकी जिंदगी नारकीय है ।

नाच, नौटंकी, बाजा दल में कार्यरत इन लोगों की न तो कोई यूनियन है और न किसी की कृपा दृष्टि । गांवों में इनका भरपूर शोषण होता है । चूंकि समाज ने इन्हें कमजोर मान लिया है । अतः अक्सर ये परेशान किये जाते हैं ।

**— श्री भुवनेश्वरी राजा कॉलेज, बाढ़ जिला-पटना**

### नकल असल से असली

बात चार्ली चैपलिन के समय की है । तब अमरीका की एक संस्था ने एक सांस्कृतिक समारोह के आयोजन के लिए घोषणा की कि जो चार्ली चैपलिन के अभिनय की हूबहू नकल कर दिखाएगा उसे एक अच्छी धन राशि से पुरस्कृत किया जाएगा ।

इस घोषणा का समाचार जब चार्ली को मिला तो वह भी चुपचाप निश्चित तिथि पर इस प्रतियोगिता में जा शामिल हुए । आयोजन की समाप्ति पर जब पुरस्कारों की घोषणा हुई उस समय स्वयं चार्ली को दूसरा पुरस्कार मिला था । पहला पुरस्कार उनके ही अभिनय पर किसी दूसरे कलाकार को मिला ।

महाभारत का एक प्रसंग याद आ रहा है......

सुभद्रा अपनी गर्भावस्था में अर्जुन से जब चक्रव्यूह के बारे में सुन रही थी तब अभिमन्यु गर्भ में उन तमाम बातों को ग्रहण कर रहे थे। चक्रव्यूह से निकलने का तरीका जब अर्जुन सुभद्रा को सुना रहे थे तब सुभद्रा को नींद आने लगी और वह सो गयी। अभिमन्यु बड़े हुए वो सभी बातें सच साबित हुई जो उन्होंने गर्भ में सुनी थी। वो बड़ी कामयाबी के साथ चक्रव्यूह में घुस तो गये, मगर वहां से निकलने में

बिल्ली, आनेवाली किसी दुर्घटना से हमें सचेत करने के लिए हमारा रास्ता काटती है। जहाज डूबने से या आग लगने से पहले चूहे बेचैन होकर जहाज में इधर-उधर भागते हैं। भूकंप आने से पहले पालतू जानवर अजीबो गरीब हरकतें करते हैं। तो ये सब विशेष इंद्री के माध्यम से होता है।

**पक्षियों की असाधारण चेतना**

भारत में हर साल हजारों की संख्या में प्रवासी पक्षी आते हैं। प्रत्येक मौसम के अनुकूल, प्रतिकूल वातावरण का पूर्वानुमान

# अंडों में सुरक्षित हैं, पक्षियों की स्मृतियां

● किरन नंदा

नाकामयाब रहे, और दुश्मनों के हाथों मारे गये।

अभिमन्यु के बारे में यह बात काल्पनिक हो या सच मगर पक्षियों के बारे में यह बिलकुल सच है कि वे अपने अनुभव एवं स्मृतियां अपने प्रत्येक अंडे में सुरक्षित रखकर आनेवाली पीढ़ियों को मार्गदर्शन कराते हैं। जब कोई पक्षी अंडे से बाहर निकलते हैं तो उनको अपने जनक की तमाम आदतें, हरकतें विरासत में प्राप्त हो जाती हैं, पक्षियों में पायी जानेवाली एक विशेष इंद्री इन तमाम बातों को समय-समय पर उन्हें सचेत या याद कराती रहती है। पक्षियों के अलावा कई जानवरों में भी ये विशेष इंद्री पायी जाती है। जैसे कि

लगाकर ये पक्षी यहां आते हैं और मौसम के प्रतिकूल बदलाव के साथ ये मेहमान पक्षी यहां से विदा लेते हैं। ये पक्षी प्रवासी कैसे बनते हैं? आखिर इनके पास ऐसा कौन-सा नक्शा है कि ये जान सकें कि इस वक्त वे कहां हैं?

इस संबंध में विश्वभर के वैज्ञानिक बराबर परीक्षण कर रहे हैं! मगर अभी तक किसी नतीजे पर नहीं पहुंच पाये। कुछ वैज्ञानिकों ने तो पक्षियों के पांव में चुंबक बांधकर उनकी हरकतों को जानने की चेष्टा की ताकि यह पता लग सके कि क्या पृथ्वी के चुंबकीय आकर्षण से पक्षी प्रभावित है? ये सरासर बचकाना हरकतें हैं। कम से कम मेरा मानना तो ऐसा ही है।

बचपन में मुझे कुत्ते की पूंछ में कोई भी चीज बांधकर उसे छोड़ने का शौक था । जैसे ही कुत्ते की पूंछ पर कोई चीज बांधकर उसे छोड़ दीजिए वो बड़ी तेजी से भागेगा । जब भी वो मुड़कर पीछे देखेगा, कोई चीज उसे पीछा करती हुई नजर आएगी । इसी डर से वो और भी तेज भागेगा ! जब तक किसी झाड़ी या पेड़ में फंसकर वो चीज टूट नही जाएगी कुत्ता अपनी दौड़ जारी रखेगा ।

जहां तक पक्षियों की बात है, उनके शरीर में कोई अतिरिक्त चीज बांधने से वो भी घबराएगा । जब वो उड़ेगा तो उसका सारा ध्यान उस बंधी हुई चीज पर रहेगा । ऐसे में उसका दिशा भटकना, या डरकर लंबी दूरी उड़ना स्वाभाविक है । चुंबक की जगह यदि उतने वजन का पत्थर भी आप बांध दें तो भी पक्षी वही हरकतें करेंगे, जो चुंबक बांधने से करता है ।

### बीन और सांप

हमारे यहां सपेरे बीन बजाकर सांप को नचाते हैं । सच तो यह है कि सांप अपना फन निकालकर जब खड़ा होता है तब उसे किसी की आवाज सुनायी नहीं देती । क्योंकि सांप का कान उसके गले के नीचे एक डायाफ्राम की तरह होता है । जो जमीन से आवाज के कंपन को समझ लेता है । जब सांप फन उठाकर खड़ा होता है, तब जमीन से डायाफ्राम का रिश्ता टूट जाता है । तब सांप बीन को अपने ऊपर हमला करनेवाली कोई चीज समझकर सिर इधर-उधर करके अपना बचाव करने की कोशिश करता है, जिसे हम सांप का नाच समझते हैं । बीन की जगह अगर आप एक डंडा मुंह पर रखकर सपेरे की तरह सांप के सामने करें, तब भी सांप वैसी ही हरकत करेगा । बीन की आवाज से सांप आकर्षित जरूर होता है । लेकिन नाचना गले नहीं उतरता ।

पक्षियों के पैरों में, चुंबक बांधकर उनकी हरकतों से वैज्ञानिक कोई निष्कर्ष निकालते हैं, या कुछ नयी बात समझने का दावा करते हैं, तो ये वैसा ही है—जैसे सपेरे कहते हैं कि, मेरी बीन की आवाज से सांप नाचते हैं ।

तो मेरे कहने का मतलब है कि, पक्षियों के दिशा ज्ञान से पृथ्वी के चुंबकीय आकर्षण का कोई लेना-देना नहीं है । तब फिर सायबीरिया—जैसे देश से हजारों मील लंबी यात्रा महीनो में तय कर ये पक्षी नियमित रूप से यहां आते कैसे हैं ? और उसी रास्ते वापस भी जाते हैं । इस सवाल का जवाब जानने के लिए चलिए हम मुरगियों के उपर कुछ प्रयोग करते

*सदियों पहले हमारे देश की अति विकसित सभ्यता इन बातों से परिचित रही होगी । तभी तो हमारे पुराने साधु-संत, महात्मा कहा करते थे— कि अंडे खाना पाप है, क्योंकि वे जानते थे इन अंडों में किसी जीव का पूर्ण संस्कार, सभ्यता व तमाम स्मृतियां कैद हैं ।*

हैं। मुरगी भी प्रायः एक पक्षी है। इसलिए मुरगियों पर किये गये प्रयोग दूसरे पक्षियों पर भी लागू हो सकते हैं।

## दिशाज्ञान : पैत्रिक गुण

अपने घर पर पले-बढ़े हुए मुरगे-मुरगियों के झुंड में से आप कुछ अंडे ले लीजिए। मान लीजिए आप के घर से १५-२० फुट दूर उत्तर दिशा में मुरगियों का घर है। आप अंडे लेने के बाद उस अंडे को ४-५ सौ या हजार दो हजार मील दूर अपने किसी परिचित या रिश्तेदार के यहां उन अंडों से बच्चे निकलने का प्रबंध कीजिए।

इस बीच आप तीन मुरगी घर और बनाइए। अपने घर की उत्तर दिशा में बने मुरगी घर की तरह तीनों दिशा में एक-एक घर और बनाइए। इन तीनों घरों के डिजाइन व आकार उत्तर दिशा में बने घर की तरह होने चाहिए। अब आप किसी दिन उन सभी मुरगियों के बच्चों को अपने घर लाकर छोड़ दीजिए। उस समय यदि आप के घर पर दूसरी मुर्गियों हों तो उन्हें आप किसी कमरे में बंद कर दीजिए, ताकि ये आप की पुरानी मुरगियों से नही मिल पाएं।

आप देखेंगे दिनभर में बच्चे चरने घूमने के बाद, शाम होते ही वे उत्तर दिशा की ओर बने घर में चले जाएंगे। जबकि तीनो दिशाओं में बने घर की ओर वे मुड़कर भी नहीं देखेंगे।

ध्यान दें, उन बच्चों के लिए यह वातावरण एकदम नया रहा। शाम होते ही उन्हें आराम करने की चिंता हुई, तो पक्षियों में पायी जानेवाली विशेष इंद्रियां उन्हें याद दिलायेंगी कि उनका घर उत्तर दिशा की ओर है। क्योंकि यह सभी बच्चे उन्हीं मुरगियों के अंडों से निकले थे, जो उत्तर दिशा में बने घर में रहते हैं। तो पक्षियों का दिशा ज्ञान अपने जनक से प्राप्त होता है, ऐसा कहने में कोई गलती नहीं है।

रहा उन साइबीरियन पक्षियों का सवाल, जो यहां मेहमान बनकर हर साल आते हैं। तो इस बारे में हम कह सकते हैं कि हजारों साल पहले साइबीरिया और आसपास के देश किन्हीं प्राकृतिक विपत्तियों का शिकार हुए होंगे। जिससे इन पक्षियों को वहां रहने में कठिनाई हुई होगी तब ये पक्षी संभवतः अपने बचाव के लिए चारों तरफ उड़े होंगे। केवल दक्षिण की तरफ उड़े पक्षियों को छोड़कर। जिसमें भारत भी शामिल है। बाकी सब प्राकृतिक प्रकोप का शिकार हो गये होंगे। ये तब तक उड़ते रहे होंगे जब तक इन्हें कोई सुरक्षित स्थान नहीं मिला होगा। उनमें से कुछ झुंडों ने भारत में भी अपना पड़ाव डाला होगा। और बच्चे पैदा किये होंगे....और मौसम के अनुकूल वातावरण में इन पक्षियों ने अपने मूल वतन की ओर प्रस्थान किया होगा। उनके बच्चे कालांतर में नियमित रूप से यहां आने-जाने लगे। यह सिलसिला आज भी जारी है।

जो पक्षी यहां आकर उस प्राकृतिक प्रकोप से बच गये उनकी संतानों ने उन तमाम रास्ते, दिशाएं आदि अपने जनक से विरासत में प्राप्त किये। क्योंकि प्रत्येक पक्षी उसके प्रत्येक अंडे में अपनी तमाम स्मृतियों व अनुभव संजोये हुए रखते हैं। ताकि उन अंडों से निकले हुए बच्चे उन तमाम अनुभवों व स्मृतियों से वाकिफ हो सकें।

सदियों पहले हमारे देश की अति विकसित सभ्यता इन बातों से परिचित रही होगी। तभी

तो हमारे पुराने साधु-संत, महात्मा कहा करते थे— कि अंडे खाना पाप है, क्योंकि वे जानते थे इन अंडों में किसी जीव का पूर्ण संस्कार, सभ्यता व तमाम स्मृतियां कैद हैं ।

ये भी कहना गलत होगा कि पक्षी अपनी बुद्धि के बल पर दिशा ज्ञान प्राप्त करते हैं । सच तो यह है कि पक्षियों की अपनी कोई विशेष बुद्धि नहीं होती ।

आप किसी बत्तख के अंडों के बीच एक-दो मुरगी के अंडे रखकर बत्तख को बच्चे निकालने बैठा दीजिए बच्चे निकलने के ३०-४० दिन बाद आप उन्हें किसी तालाब या पानी के किनारे ले जाइए । आदत के मुताबिक माता बत्तख अपने बच्चों के साथ पानी में छलांग लगाएगी, लेकिन मुरगी का बच्चा घबराकर किनारे पर ही खड़ा रहेगा । जबकि बत्तख उनको भी अपना ही बच्चा समझ रही है । बत्तख ये बिल्कुल नहीं जानती है कि मुरगी का बच्चा पानी में उतरने से डूब मरेगा । बत्तख मुरगी के बच्चे को पानी में उतरने को प्रेरित करेगी ये बात अलग है कि मुरगी का बच्चा पानी में नहीं उतरेगा, क्योंकि उसकी पूर्व स्मृति में कहीं भी पानी में तैरना नहीं है ।

या फिर आप मुरगियों के अंडों के साथ एक-दो बत्तख के अंडे रखकर मुरगी से बच्चा निकलवाइए । पानी के किनारे जाते ही बत्तख के बच्चे पानी में कूद जाएंगे । ये देखकर माता मुरगी कोहराम मचा देगी क्योंकि वो समझेगी, कि उनका बच्चा पानी में डूब रहा है ।

खैर, मेरे कहने का मतलब है प्रवासी पक्षियों के दिशा का ज्ञान अपनी बुद्धि या पृथ्वी के किसी चुंबकीय आकर्षण या रात में तारों की स्थिति से नहीं, बल्कि उनके जनक के अनुभव, एवं स्मृति ही उन्हें रास्ता दिखा रही है जो अंडे के रूप में उन्हें मिले थे ।

—सी-१९१, पांडवनगर, मदर डेयरी,
नयी दिल्ली-११००९२

एजटक लोग दक्षिण अमरीका में मध्य मेक्सिको में रहते थे । अमरीकी इंडियन मूल के इन लोगों ने मेक्सिको को १३वीं शताब्दी में आबाद किया । बाद में उनका साम्राज्य अमरीका में दूर-दूर तक फैल गया । एजटक लोग बहुत ही निर्दयी होते थे । वे अपने देवताओं को प्रसन्न करने के लिए मनुष्य बलि देते थे । एजटक सभ्यता अपनी कला, अपने विशाल प्रासादों और मंदिरों के लिए विख्यात थी । बाद में स्पेनी आक्रमणकारियों ने इस सभ्यता को पूरी तरह समाप्त कर दिया ।

बलुई दलदल ढीली, हल्की रेत के पानी के साथ मिलने से बनता है । यह सामान्य बालू जैसा दिखायी देता है लेकिन यह कोई वजन नहीं संभाल सकता । बलुई दलदल आमतौर पर बड़ी नदियों के ऐसे मुहानों अथवा समतल तट पर पाया जाता है जहां जमीन पर्त के नीचे मिट्टी की कठोर पर्त होती है । यह मिट्टी पानी को स्वाभाविक रूप से नीचे रिसने नहीं देती । इसलिए बालू के नीचे एकत्र हो जाता है ।

# शादी जैसी घटना दोबारा नहीं घटने दूंगा

● धर्मपाल संभरवाल

"देखो बेटा, पति पत्नी एक ही गाड़ी के दो पहिये होते हैं, जिंदगी की गाड़ी चलाने के लिए इन दोनों की ही आवश्यकता होती है । और सिर्फ इतना ही नहीं, एक अन्य बात ध्यान से सुनो गाड़ी सुचारु ढंग से चले इसके लिए बहुत जरूरी है कि दोनों आपस में तालमेल रखें और एक ही रफ़ार से चलें..."

अन्य बहुत-सी बातों के साथ-साथ यह शिक्षा भी मुझे दहेज में मिली थी । अब भला दहेज में मिली किसी भी वस्तु को कभी किसी ने ठुकराया है क्या ? तो फिर मेरी क्या मजाल थी जो मैं इसे नकार सकता, बस एक बार सुना और इस बात को भी दिमाग में रख लिया । अब सोचता हूं तो लगता है कि ऐसा करने का एक अन्य कारण भी था । सत्ताइस वर्षों के इंतजार के बाद एक पत्नी, वह भी सुंदर पत्नी, मिलने का नशा चढ़ा हुआ था ऐसे में किसी भी बात को सोचने-विचारने का सवाल ही कहां पैदा होता था । किस बात को पल्ले बांधना है और किसे एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देना है, यह समझ शायद समझ से बाहर थी । बस पत्नी के साथ-साथ जो कुछ भी मिला चुपचाप ग्रहण कर लिया और अगर कोई बात गलत लगी भी तो उसे स्वीकार कर लिया, यह सोचते हुए कि आटे के साथ घुन तो होता ही है ।

अब भला नशा कोई भी हो कभी तो टूटता ही है । मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ । लेकिन नशा पूरी तरह टूटने में चौदह वर्ष लग गये । सच कहूं तो शादी के यह चौदह वर्ष, रामचंद्रजी के बनवास की तरह कठोर तो नहीं थे लेकिन भरत के अयोध्या-राज की तरह सुखमयी भी नहीं थे । खैर जब नशा टूटा तो पाया कि दोनों पहियों के रहने पर भी घर गृहस्थी की गाड़ी ठीक से नहीं चल रही है । अब ऐसी बात नहीं कि मेरा नशा कांच के गिलास की तरह एकदम ही टूटा हो, सच तो यह है कि समय के साथ-साथ शादी का नशा धीरे-धीरे उतरता रहा परंतु शायद इस बात को हम स्वीकार नहीं कर पाये । लेकिन अब, जब मैं इन पिछले वर्षों में झांककर देखता हूं तो एक साफ व स्पष्ट तसवीर आंखों के सामने चलचित्र की तरह आ जाती है ।

गृहस्थी की गाड़ी में हमारा सफर एक सुंदर
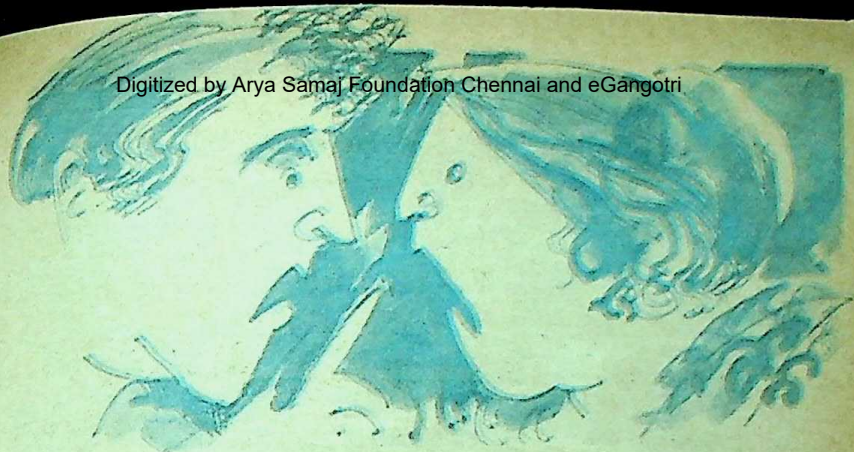
मनमोहक स्वप्न की तरह आरंभ हुआ । शुरू के वर्षों में ऐसा महसूस होता था मानो हम भारतीय रेल की सुपरफास्ट गाड़ी के प्रथम श्रेणी के वातानुकूलित डिब्बे में सफर कर रहे हों । जहां सिर्फ सुख ही सुख था । समय के साथ-साथ बहुत कुछ बदलता गया । और अब हाल यह है कि मानो हम द्वितीय श्रेणी के थ्री-टायर स्लीपर में सफर कर रहे हों जहां आराम कम और धक्का-मुक्की व शोर-शराबा ज्यादा है । इतना ही नहीं ऐसा महसूस होने लगा है कि मानो गृहस्थी की गाड़ी की गति भी धीमी हो गयी है झटके भी महसूस होने शुरू हो गये थे । यकीन मानिए अब तो यह लगने लगा है कि गाड़ी सीधी पटरी पर नहीं बल्कि टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर चल रही हो ।

किसी ने सच ही कहा है कि इंसान वर्षा पड़ने पर ही छाते की सोचता है । शायद तभी यह कहावत मशहूर है कि जब सिर पर पड़ती है तभी कोई हल निकलता है । अब हम भी आखिर साधारण इंसान ठहरे । जब असहनीय हो गया तभी हमने जिंदगी की गाड़ी की मंदगति व असहनीय झटकों के अस्तित्व को स्वीकारा और इस समस्या का कोई हल निकालने की हठ ठान ली ।

किसी भी समस्या के हल के लिए उस समस्या के कारणों का पता लगाना अनिवार्य होता है, यह बात तो समझ में आ गयी । लेकिन शुरू कहां से किया जाए यह समझ में नहीं आ रहा था । ठोडी पर हाथ रखे, एक अंगुली गाल पे टिकाये शून्य में देखते हुए सोचने की मुद्रा में हम बैठे थे कि सामने से आती हुई श्रीमतीजी दिखायी दी । दिमाग में मानो बिजली कौंध गयी । एकदम से ख्याल आया, 'अगर समस्या मौजूद है तो उसका समाधान भी कहीं आसपास ही होगा ।' बस उसी क्षण श्रीमती को पकड़कर सामने बिठाया और प्रश्न दाग दिया "प्रिय तुम मानती हो कि हमारी जीवन-नैया अब बहुत हिचकोले खाने लगी है ?"

"तुम इसे हिचकोले कहते हो ।" आग्नेय नजरों से देखते हुए श्रीमती ने प्रश्न के उत्तर में प्रश्न किया ।

"तो इसका मतलब है कि समस्या की गंभीरता को तुम भी मानती हो", मैंने श्रीमती से

नजरें चुराते हुए कहा, थोड़ी देर की चुप्पी के बाद मैंने हिम्मत बांधकर पूछा, "तुम्हारे विचार से इसका कारण क्या है ?"

मेरी दृष्टि से तो मेरा प्रश्न घी के समान साफ व निर्मल था । परंतु मुझे यह नहीं पता था कि श्रीमती के गुस्से की अग्नि में पड़कर यह भयानक रूप धारण कर लेगा । प्रश्न कानों में पड़ते ही वह भड़क उठीं और कहने लगीं, "और कौन हो सकता है ? तुम्हारी नजरों में तो मैं ही हूं समस्या की जड़ । शादी से पहले तो तुम्हारी गाड़ी ठीक ढंग से चल रही थी ? मेरे आने से ही यह सब हुआ है, यही कहना चाहते हो न तुम ?"

"तुम ऐसा क्यों सोचती हो...."

"क्योंकि तुम जो ऐसा सोचते हो और यही सब मेरे मुंह से सुनना चाहते हो ।"

"यह बात नहीं है प्रिय, मेरा विश्वास करो ।"

"प्रिय कहनेवाले दिनों को तो आप वर्षों पीछे छोड़ आये हो आदरणीय पतिदेव, अब तो आप कभी प्यार से मेरा नाम भी नहीं लेते ऐसे में तुम मुझे अपनी बातों पर विश्वास करने को कहते हो ।""हूं' इतना कहकर वह उठ खड़ी हुईं ।

"अरे कहां जा रही हो कुछ सुनो तो सही" ।

"वर्षों से बस यही कहते चले आ रहे हैं कि कुछ सुनो तो सही' लेकिन सुनाने लायक कभी कुछ कहा भी है क्या । अब तो आप मुझे अपनी इस समस्या का समाधान ही सुनाना, क्योंकि मैं तो अब...."

आगे के शब्द मैं नहीं सुन सका क्योंकि गुस्से से पैर पटकती श्रीमतीजी कमरे से बाहर जा चुकी थीं वह कहां गयी हैं,मैं जानता था और मैं यह भी जानता था कि जब तक मैं सही कारणों से उसे अवगत नहीं करा देता,तब तक वह अपने कोप भवन से बाहर नहीं आएंगी ।

कोप भवन का नाम जुबान पर आते ही महाराज दशरथ का नाम जुबान पर आ जाता है । महाराज दशरथ को मैं अच्छी तरह से जानता तो नहीं क्योंकि उनकी जीवनी या आत्मकथा पर कोई भी पुस्तक बाजार में उपलब्ध नहीं लेकिन फिर भी मैं उनकी बहुत-सी अच्छी बातों का कायल जरूर हूं । उनकी जिस बात की मैं सबसे ज्यादा सराहना करता हूं वह हैं 'कोप भवन का निर्माण' इसे सचमुच ही एक बहुत ही प्रशंसनीय और मौलिक विचार का दर्जा दिया जा सकता है । यह तो आजकल के छोटे-छोटे व तंग दो या तीन कमरों वाले मकानों को दोष दीजिए जहां अलग से कोई भी कमरा कोप भवन नहीं बनाया जा सकता वरना तो इसके लाभों की एक सूची बनायी जा सकती है ।

अब आप ही जरा सोचिए कि घर में एक अलग कोप भवन न सही एक कोप-कमरा ही होता और पत्नी उसमें चली जाती तो मैं क्या करता यह तो ख्याली पुलाव पकानेवाली बात हैं । काश ऐसा होता ! मगर ऐसा हुआ नहीं । श्रीमतीजी दो कमरों के मकान के दूसरे कमरे में जाकर टेपरिकार्डर चलाकर कुरसी पर बैठ गयीं और स्वैटर बुनने लगीं । जी हां,हमारी गृहस्थी में उनके कोप भवन में जाने का यही ढंग है । एक और बात । ऐसा नहीं कि एक बार ऐसे बैठी तो बस बैठी ही रहीं । जी नहीं, ऐसा संभव नहीं

***महाराज दशरथ को मैं अच्छी तरह से जानता तो नहीं क्योंकि उनकी जीवनी या आत्मकथा पर कोई भी पुस्तक बाजार में उपलब्ध नहीं लेकिन फिर भी मैं उनकी बहुत-सी अच्छी बातों का कायल जरूर हूं। उनकी जिस बात की मैं सबसे ज्यादा सराहना करता हूं वह है 'कोप भवन का निर्माण' इसे सचमुच ही एक बहुत ही प्रशंसनीय और मौलिक विचार का दर्जा दिया जा सकता है।***

क्योंकि नौकर-चाकर व दासियां तो घर में हैं नहीं,जो बच्चों के खाने-पीने का इंतजाम कर सकें। और फिर श्रीमतीजी का पापी-पेट भी तो भूख-हड़ताल के नाम पर ही बिगड़ पड़ता है। इसलिए उन्हें समय-समय पर कोप कमरे से बाहर निकलना ही पड़ता है। लेकिन खाने-पीने का काम करने के पश्चात वह वापस उसी मुद्रा में विराजमान हो जाती हैं।

देखा जाए तो इससे मुझे कोई कष्ट नहीं होना चाहिए लेकिन वास्तव में मेरा जीना दूभर हो जाता है। क्योंकि एक तो बच्चों की देख-भाल तथा उनकी छोटी-मोटी जरूरतों को पूरी करने की जिम्मेदारी मुझ पर आ पड़ती है। बच्चे जब भी किसी चीज की मांग करते हैं अथवा कुछ पूछते हैं तो उन्हें अंदर से उत्तर मिलता है, 'अपने पापा से बात करो' मानो हम पापा न हुए देश के प्रधानमंत्री हों, जिसके पास सभी बातों का उत्तर व सभी समस्याओं का समाधान मौजूद हो।

मेरे कष्ट का दूसरा व मुख्य कारण होता है समय पर मेरी जरूरत की वस्तुओं का न मिलना। छोटे-से घर में सभी वस्तुओं को ढंग से रखना तो निस्संदेह प्रशंसनीय है लेकिन उनका समय पर मिलना भी तो अति आवश्यक है। अब श्रीमतीजी कौन-सी चीज कहां पर रखती हैं अब यह तो या सिर्फ वह जानती हैं, या फिर उनका 'ऊपरवाला भगवान'। मुसीबत तो मेरी होती है। बस ढूंढ़ते रहो। पागलों की तरह—पूछो तो जवाब नहीं क्योंकि मेरे लिए तो वह सिर्फ कोप-कमरे में ही नहीं जाती बल्कि मौन-व्रत भी धारण कर लेती हैं। अब ऐसी स्थिति में भला कोई कितने दिन जी सकता है। निश्चित है कि उन्हें कोप-कमरे से जल्दी ही बाहर लाने के लिए मुझे न जाने कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं।

इसलिए मौजूदा समस्या के कारणों पर मैंने बहुत सोच-विचार किया। जब कुछ मित्रों से इस विषय पर बातचीत की तो पता चला कि केवल हमारी गाड़ी ही डांवाडोल नहीं बल्कि करीब सभी शादीशुदा लोग इसी तरह जिंदगी का सफर तय कर रहे हैं। इस जानकारी से दिल को थोड़ी तसल्ली तो मिली लेकिन समस्या का समाधान नहीं। जिसे खोजने में मुझे कई रातों की नींद खोनी पड़ी।

फिर एक दिन ट्रे में चाय के दो प्याले व बिस्कुटों की प्लेटें लिए कमरे के बाहर खड़े होकर मैंने कहा, "श्रीमतीजी बाहर आइये और चाय का मजा लेते हुए पटरी से उतर आयी

गाड़ी को वापिस पटरी पर रखने में मुझे सहयोग दीजिए ।"

"तो मूल कारणों का पता लगा ही लिया ?" बाहर निकलकर संदेहभरे स्वर में उसने पूछा और हुक्म दिया "कहो, हम सुनने को तैयार हैं ।"

"समस्या का प्रथम कारण तो यह है कि गाड़ी के दो पहियोंवाली शिक्षा सिर्फ बेटों को ही दी जाती है बेटियों व बहुओं को नहीं । यही बात अगर शादी के अवसर पर तुम्हें भी सिखायी जाती तो...."

"इसमें मेरा क्या दोष अपने मां-बाप से पूछो", मेरी बात को काटते हुए श्रीमतीजी ने कहा ।

"तुम्हारे मां-बाप का इसमें कोई रोल नहीं ?" मैंने पूछा ।

"देखो जी, मेरे मां-बाप को इसमें मत घसीटो" और फिर "जो हो चुका उस पर बहस करने से क्या लाभ ? आप तो सिर्फ यह बताइये कि समस्या का क्या कारण खोज निकाला है आपने ?" उसके स्वर से व्यंग्य साफ झलक रहा था ।

"समस्या का सही कारण वास्तव में इतना सीधा व सरल है कि हैरानी होती है कि क्यों अभी तक सभी की समझ से बाहर रहा 'सच तो यह है कि पति-पत्नी को एक ही गाड़ी के दो पहिए' होनेवाला यह जो पाठ पढ़ाया जाता है यह पाठ ही वास्तव में गलत है । मैंने कहा और पूछा, "थोड़ा-सा विज्ञान तो तुमने भी पढ़ा है, अब तुम ही कहो, दो पहियोंवाली गाड़ी भला कभी स्थिर रह सकती है ?"

"क्यों स्कूटर दो पहियों से नहीं चलता क्या ?" उसने तपाक से पूछा क्षणभर को तो मैं सकपका गया, लेकिन विज्ञान का छात्र होने के कारण हड़बड़ाया नहीं । कुछ देर सोचकर मैंने कहा, "तुम ठीक कहती हो कि स्कूटर भी तो दो पहियोंवाली गाड़ी है । लेकिन वह दो पहियों पर सिर्फ चल ही सकता है, ठहर नहीं सकता । उसे स्वयं अपने आप पर टिका रहने के लिए एक और सहारे यानि कि स्टैंड की आवश्यकता होती है ।"

"तुम कहना क्या चाहते हो," श्रीमतीजी ने पहली बार संजीदगी भरे स्वर में पूछा ।

"यही कि घर गृहस्थी की गाड़ी पति-पत्नी के सिर्फ दो पहिए बने रहने से टिकी नहीं रह सकती । इसमें स्थिरता नहीं आ सकती अब तुम समझ सकती हो कि हमारी जीवन-यात्रा में आजकल हिचकोले व भूचाल—जैसे झटके क्यों लगते हैं ।"

"सचमुच जानना चाहती है," मैंने शरारतभरे अंदाज में पूछा उसके हां कहने पर मैंने कहा, "एक अन्य पहिए का होना ।"

"तुम्हारा आशय प्रेमिका से है क्या ?"

"अरे यह बात तो मेरे दिमाग में थी ही नहीं, सुझाव के लिए धन्यवाद" मैंने कहा और फिर मजाक करते हुए पूछा, "आज्ञा हो तो इस बात को ट्राय करके देख लूं ।"

"दो बच्चों के बाप होकर भी बचपना नहीं गया । कभी तो गंभीरता से बात कर लिया करो ।" उसने प्यारभरे लहजे में मुझे डांटा और पूछा, "तुम्हारे तीसरे पहिएवाली बात जंचती तो है लेकिन यह इस कहावत में कहां ठीक बैठती है, कि पति-पत्नी नदी के दो किनारों के समान होते हैं जो कभी एक-दूसरे से अलग नहीं हो

सकते ।"

"वह आपस में कभी मिल भी तो नहीं सकते ।" जानेमन, और रही जुदा न होने की बात, जब नदी में बाढ़ आती है तो दोनों पाट एक-दूसरे से दूर तो हो ही जाते हैं । मैंने कहा और पूछा, "नदी के पाटों की तरह रहने का विचार है क्या ?"

"तुम कौन-से तीसरे पहिए की बात कर रहे थे ?" उसने मेरे प्रश्न को नजरअंदाज करते हुए पूछा ।

"वह पहिया है प्यार का, विश्वास का, एक-दूसरे की कमजोरियों, मजबूरियों व भावनाओं को समझने का, किसी बात को न चाहते हुए भी दूसरे की खुशी के लिए उस बात को मान लेने का और—"

"और क्या ?" उसने उतावलेपन से पूछा, "फिर कभी किसी कमरे को कोप-भवन न बनाने के निर्णय का ।"

"चलो हटो, शरारती कहीं के" । उसने शरमाते हुए कहा और पूछा "अच्छा यह बताओ इन पहियों में कभी पंक्चर भी हो सकता है क्या ?"

"होता ही रहता है श्रीमतीजी, आपका रूठना, गुस्से होना, मायके चले जाने की धमकी देना व बच्चों पर चिल्लाना, पंक्चर तो क्या ट्यूब फट जाने के समान ही होता है । विश्वास न हो तो अगली बार टेप रिकार्ड करके स्वयं सुन लेना ।"

"और इसका इलाज ।"

"अब सभी कुछ मुझसे ही पूछोगी क्या ?"

"अच्छा एक और बात बताओ सच-सच कहना । तुम्हें अपना 'साथी पहिया' कैसा लगता है ।"

"उसकी बीच की ट्यूब तो फूलकर बाहर की तरफ निकल आयी है," मैंने श्रीमतीजी के फैलते पेट की तरफ इशारा करते हुए कहा, और "सच पूछो तो अब इस पहिए को बदल देने को जी चाहता है ।"

"नया पहिया मिलेगा कहां से ।"

"उसकी चिंता तुम्हें क्यों ? मैंने पूछा ।

"तुम्हारी फिक्र मैं नहीं करूंगी तो और कौन करेगा लेकिन इतना याद रखना कि नये पहिये के साथ तुम्हारा पुराना पहिया ठीक नहीं चल पाएगा । खचर-खचर की आवाज आती रहेगी ।"

"तुम क्या समझती हो कि मैं शादी जैसी घटना को दुबारा घटने दूंगा, वैसे भी मैं तो इस बात को मानता हूं कि 'नया नौ दिन, पुराना सौ दिन' तुम्हारा क्या विचार है ?

श्रीमतीजी ने भी मेरी हां में हां मिला दी उनको ऐसा करते ही लगा मानो गाड़ी स्वयं पटरी पर आ गयी हो । और ऐसा लगा जैसे कि पतझड़ में बहार आ गयी हो ।

स्क्वाड्रन लीडर
डी.एम.आई. वैस्ट ब्लॉक-६
एयर हैडक्वार्टर्स आर.के. पुरम नयी दिल्ली-६६

---

पाकिस्तान के प्रसिद्ध हृदय-रोग विशेषज्ञ डॉ. रशीद सयाल ने एक नयी खोज की है । उनका कहना है कि हम और आप कृत्रिम वस्त्रों यानी टेरीन, टेरीकाट के कपड़े काफी पहनते हैं, लेकिन अगर हम सूती कपड़े पहनना शुरू कर दें तो दिल की बीमारियों को रोका जा सकता है । उनका कहना है कि ८० प्रतिशत से ज्यादा दिल के मरीजों में सूती कपड़े पहनने पर रोग के लक्षण समाप्त हो जाते हैं ।

# वरुण ग्रह : जादुई रजत द्वीप

● डॉ. वासुदेव प्रसाद यादव

**वरुण ग्रह पर ऐसी उज्ज्वल ध्रुवीय ज्योति क्यों उत्पन्न होती है ? जबकि सूर्य का प्रकाश पृथ्वी की तुलना में वहां हजारवां भाग ही पहुंचता है ।**

वरुण ग्रह की रुपहली-नीली ज्योत्सना में सब कुछ रहस्यमय प्रतीत होता है । यह नीले आकाशीय महासागर में तैरता-सा लगता है । यह सौरमंडल का सबसे सुंदर ग्रह है । इस ग्रह की विचित्रताओं पर चकित होना पड़ता है । यह बड़ा अजूबा ग्रह है । अपने चंद्रमाओं सहित वरुण छोटा-सा सौरमंडल—जैसा लगता है । वरुण के आकाश में सूरज तेज गति से चलता है । यहां दिन १८ घंटे का होता है ।

### मोटी बर्फ की परत

वरुण, सौरमंडल का चौथा सबसे बड़ा ग्रह है । यह सूर्य से अत्यधिक दूर है । इतनी दूर कि
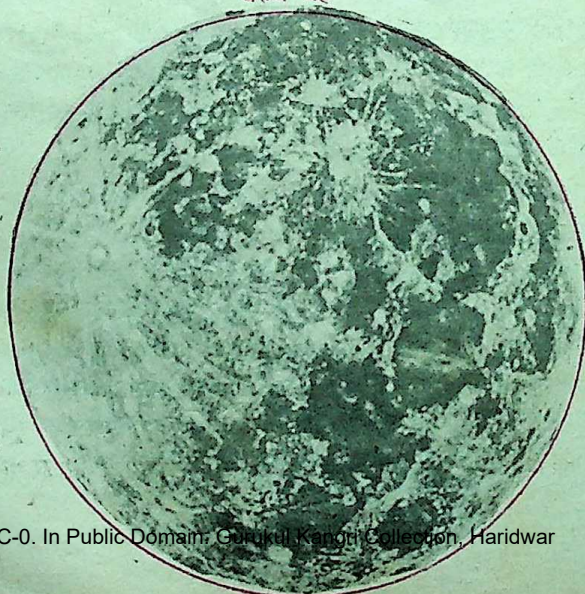
वरुण ग्रह

वरुण ग्रह के बादल
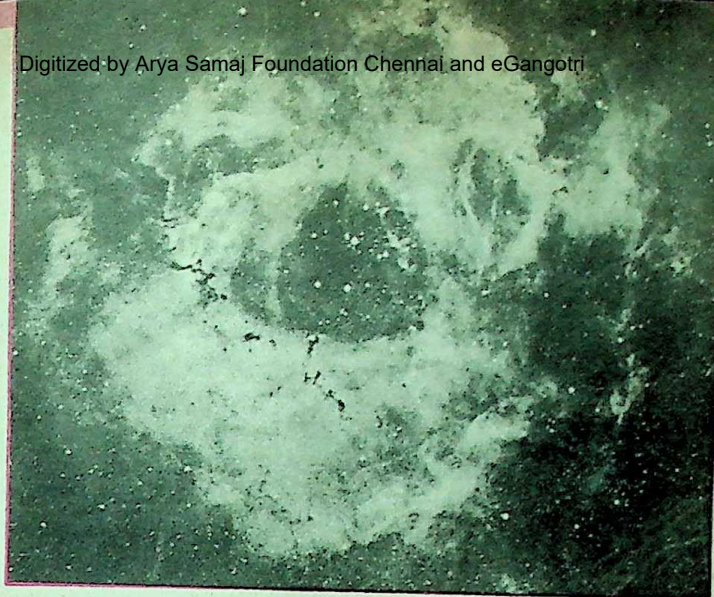
**वायजर द्वारा भेजे गये चित्रों के विश्लेषण दल के प्रमुख ब्रेडफोर्ड स्मिथ हैं । ये बताते हैं कि वरुण ग्रह का धरातल रंगहीन पत्थरों से भरा है ।**

इसे सूर्य की एक परिक्रमा करने में १६५ वर्ष लगते हैं । सूर्य वहां से एक चमकीला तारा नजर आता है और कोई ताप नहीं देता है । यदि हमारी पृथ्वी, वरुण (नेपच्यून) ग्रह के आस-पास चली जाए, तो इतनी ठंड हो जाएगी कि नदियों व समुद्रों का सारा जल जम जाएगा और पृथ्वी पर बर्फ की मोटी तह होगी, जो गरमियों में भी नहीं पिघलेगी, क्योंकि पृथ्वी, सूर्य की उष्मा से काम चलाती है और स्वयं कोई उष्मा उत्पन्न नहीं करती है । ऐसी स्थिति में पृथ्वी के सभी जीव-जंतु तथा वनस्पतियां समाप्त हो जाएंगी ।

यह तो निश्चित ही जानिए कि मनुष्य सदैव पृथ्वी पर नहीं रहेगा । वह प्रकाश तथा आकाश का पीछा करता हुआ आरंभ में डर-डरकर सौरमंडल की सीमा पार करेगा और उसके पश्चात, आकाशगंगा पर विजय प्राप्त कर लेगा ।

मानव के इसी चिंतन का परिणाम है 'वायजर' अंतरिक्ष यान परियोजना । वायजर-२ यान का निर्माण अमरीका के राष्ट्रीय उड्डयन एवं अंतरिक्ष प्रशासन के अधीन कैलिफोर्निया के पास्साडोना स्थित जेट प्रोपल्सन प्रयोगशाला ने किया । प्लैनेटरी सोसायटी के वर्तमान अध्यक्ष एवं जेट प्रोपल्सन प्रयोगशाला के पूर्व निर्देशक, डॉ. ब्रूस मुरे, के नेतृत्व में वायजर यान का

**वायजर-२ के विषय में तथ्य**

भार——८१५ किग्रा. ।
निर्माण में लगे पुरजों की संख्या—४० लाख लगभग ।
प्रस्थान—सन १९७७ ।
अध्ययन लक्ष्य—- बृहस्पति, शनि, यूरेनस और नेपच्यून (वरुण) ।
इन चार ग्रहों की यात्रा की अवधि—१२ वर्ष ।
जीवन-काल—अनंत ।
विशिष्टताएं—ग्रह के गुरुत्वीय धक्के से अपनी गति बढ़ा लेना, अति शक्तिशाली टी.वी. कैमरे, लंबी यात्रा के लिए सर्वाधिक सक्षम इलेक्ट्रॉनिक पुरजे ।

निर्माण हुआ था । इस समय परियोजना के मुख्य वैज्ञानिक एडवर्ड स्टोन हैं और उप-परियोजना वैज्ञानिक एलिस माइनर हैं । वायजर की उड़ान का नियंत्रण इसी प्रयोगशाला के खगोलशास्त्री रिचटेरिल करते आ रहे हैं । वायजर से प्राप्त सूचनाओं एवं आंकड़ों के विश्लेषण करने वाले वैज्ञानिकों के दल के प्रमुख ब्रेडफोर्ड स्मिथ हैं तथा इस विश्लेषण दल के अन्य प्रमुख सदस्य हैं कार्नेल विश्वविद्यालय के अंतरिक्ष वैज्ञानिक कार्ल सैगन । वायजर परियोजना से जुड़े अन्य महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक हैं रॉबर्ट स्ट्राम ।

**वायजर क्रम**

वायजर-१ तथा वायजर-२ यानों को अमरीका ने सन १९७७ में अंतर्ग्रहीय यात्रा के लिए अंतरिक्ष में भेजा था । सर्वप्रथम ये यान मंगल ग्रह के निकट से गुजरे और मंगल ग्रह पर कैप्सूल छोड़े जो राकेट-रोधक की सहायता से मंगल के धरातल पर उतरे और महत्त्वपूर्ण सूचनाएं प्रेषित कीं ।

वायजर-२ यान ने बृहस्पति, शनि, यूरेनस और वरुण ग्रहों का अध्ययन विस्तार से किया । वायजर-२ को वरुण ग्रह तक पहुंचाने की प्रक्रिया जितनी दुरूह रही है, उतनी ही रोचक भी । हम जानते हैं कि आकाश में पत्थर फेंकने पर वह सीधा नहीं जाता है, बल्कि एक चाप बनाता है और पृथ्वी की ओर मुड़ता जाता है । यान भी अंतरिक्ष में सीधा नहीं जाता है, बल्कि सूर्य की ओर मुड़ता जाता है । इसलिए अंतरिक्ष यान को इस तरह छोड़ना पड़ता है कि वह मुड़ते हुए भी आखिर वहीं पहुंचे, जहां हम उसे पहुंचाना चाहते हैं । अंतरिक्ष यानों को भेजने में दूसरी बड़ी कठिनाई यह है कि जिस ग्रह पर यान को पहुंचना है, वह भी एक स्थान पर खड़ा नहीं है, बल्कि सूर्य की परिक्रमा कर रहा है । इसका मतलब है कि खाली स्थान को लक्ष्य करना चाहिए और ऐसा हिसाब रखना चाहिए कि यात्रा की अवधि पूरी होने के बाद उस स्थान पर ग्रह से अंतरिक्ष यान जा मिले । यह बहुत ही जटिल काम है । वायजर-२ के लिए यह जटिलता और भी अधिक थी, क्योंकि इसे इन पांच ग्रहों का सामीप्य प्राप्त करना था—मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस और वरुण ।

लगभग एक टन भार वाला वायजर-२ यान पिछले साढ़े तेरह वर्षों में अब तक सवा आठ अरब किलोमीटर का लंबा रास्ता पार कर अनंत ब्रह्मांड में, मानव कल्पना से भी दूर, नयी मंजिलों की ओर आगे बढ़ता जा रहा है । अनुमान है कि सन २०२० तक यह पृथ्वी पर सूचनाएं भेजता रहेगा । वैज्ञानिकों का यह भी अनुमान है कि यह अनंत काल तक सुदूर ब्रह्मांड में अग्रसर रह सकता है । साढ़े तेरह वर्ष

की लंबी यात्रा में यह अब तक पांच ग्रहों और ५६ चंद्रमाओं को पीछे छोड़ चुका है ।

**सौर मंडल के अंतिम छोर पर**

इस समय वायजर-२ यान सौरमंडल के अंतिम छोर के निकट उड़ रहा है, सूर्य की विपरीत दिशा में । यह सौरमंडल के छोर को ढूंढ़ने का प्रयास कर रहा है । वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यह अगले ३० वर्षों तक अंतरिक्ष में चुंबकीय क्षेत्र और कणों के बारे में सूचनाएं बटोरता रहेगा ।

जनवरी १९९१ के प्रथम सप्ताह में वायजर-२ ने चौंकानेवाली सूचनाएं भेजी हैं । इसने सूचित किया है कि सौरमंडल को चारों ओर से एक विशाल बादल घेरे हुए है, जिसमें लगभग २० खरब धूमकेतु हैं । इस विशाल बादल के पार भटके हुए ग्रहों के पास आ जाने पर उनके गुरुत्व के प्रभाव से कुछ धूमकेतु तो बाह्य अंतरिक्ष में छिटक जाते हैं और कुछ हमारे सौरमंडल की सीमा में आ जाते हैं । सूर्य-ताप के प्रभाव से इनके नाभिक बहुत गरम हो ज़ाते हैं और धूल तथा गैस छोड़ने लगते हैं । यही धूल पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों पर जमा होती जाती है । एक औसत धूमकेतु का द्रव्यमान (भार) १०-३० अरब टन होता है । हेली धूमकेतु का द्रव्यमान ३०० अरब टन है ।

सौरमंडल के छोर के निकट से वायजर-२ ने यह भी सूचना भेजी है कि हमारे सौरमंडल में पदार्थ का वितरण उससे भिन्न प्रकार का है, जैसा कि अब तक अनुमान किया जाता रहा है । सौर मंडल में पदार्थ की अधिक मात्रा सूर्य को छोड़कर अन्य ग्रहों पर नहीं है, बल्कि उन धूमकेतुओं में समाहित है जो सौरमंडल की

असंख्य धूमकेतु

बाहरी सीमा के पार स्थित हैं । अब तक ऐसा माना जाता रहा है कि स्वयं सूर्य में संपूर्ण सौरमंडल के द्रव्यमान का ९९.९ प्रतिशत समाहित है । परंतु वायजर-२ द्वारा भेजी गयी जानकारी से पता चला है कि सूर्य में ९७ प्रतिशत द्रव्य समाहित है ।

**खरबों धूमकेतुओं का निर्माण**

वायजर की सूचनाओं से यह भी पता लगा है कि सौर-मंडल की उत्पत्ति गैस और धूल की एक बहुत तीव्र गति से चक्कर खाती हुई डिस्क से हुई है । गुरुत्वाकर्षण के एक अन्य प्रभाव के फलस्वरूप, जो पदार्थ ग्रहों के निर्माण में काम नहीं आया, वह छिटककर सौरमंडल की सीमा से बाहर चला गया और उसी से इन २० खरब धूमकेतुओं के नाभिकों का निर्माण हुआ । इसी प्रक्रिया के फलस्वरूप सौर-मंडल को घेरने वाले घने बादलों की उत्पत्ति हुई, जो इन धूमकेतुओं का आश्रय-स्थल है ।

वायजर-२ यान २४ अगस्त, १९८९ को प्रातः ९ बजकर २६ मिनट पर वरुण ग्रह के
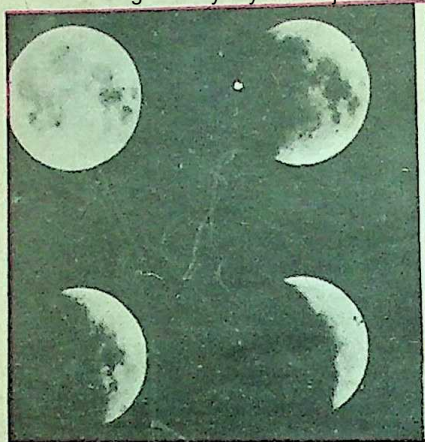
वायजर-२ अंतरिक्ष यान द्वारा खोजे गये वरुण ग्रह के चार चंद्रमा

'निरीड'—वरुण का दूसरा चंद्रमा

उत्तरी ध्रुव के बादलों की बाहरी सतह के ४,९०५ किलोमीटर निकट पहुंचा और २ बजकर ४० मिनट पर वरुण (नेपच्यून) के सबसे बड़े चन्द्रमा, 'ट्राइटन', से ३८,४५५ किलोमीटर की दूरी से गुजरा।

सूर्य से वरुण ग्रह की औसत दूरी ४ अरब ५० करोड़ किलोमीटर है। नेपच्यून से पृथ्वी तक संदेश पहुंचाने में ४ घंटे ६ मिनट का समय लगता है, जबकि सूर्य से पृथ्वी तक प्रकाश को पहुंचने में केवल ८ मिनट १९ सेकंड का समय लगता है। इसी तरह पृथ्वी से वरुण तक रेडियो संदेश को पहुंचाने में भी ४ घंटे ६ मिनट लगते हैं। अब तक कोई भी अंतरिक्ष यान, नेपच्यून के इतना निकट नहीं पहुंच पाया था।

सन १८४६ में बर्लिन बेधशाला के जॉन गॉले ने वरुण ग्रह की खोज की और इसका नाम नेपच्यून रखा। इस खोज-कार्य में एच.डी. अरेस्ट ने जॉन गॉले की सहायता की। पृथ्वी के वर्ष के अनुसार नेपच्यून १६४ वर्ष ९ माह में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है। स्पष्ट है कि सन १८४६ में इसे जिस स्थान पर खोजा गया था, वहां इसे सन २०११ तक पहुंचना संभव होगा। नेपच्यून का व्यास लगभग ४८ हजार किलोमीटर है। इस ग्रह की खोज के केवल तीन सप्ताह बाद, वैज्ञानिक लासेल ने इसके उपग्रह 'ट्राइटन' की खोज कर ली थी।
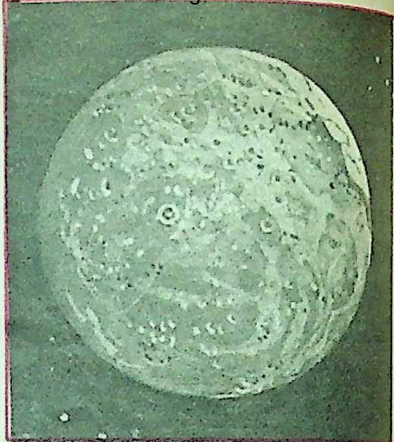
काफी लंबे समय के बाद, इस सदी के मध्य में, सन १९४९ में, खगोल वैज्ञानिक कुईपर ने नेपच्यून के दूसरे उपग्रह, 'निरीड' की खोज की। ट्राइटन की अपेक्षा निरीड बहुत छोटा है। निरीड का व्यास केवल ३२० किलोमीटर है। नेपच्यून से उपग्रह 'निरीड' की न्यूनतम दूरी १६ लाख किलोमीटर तथा अधिकतम दूरी ९६ लाख किलोमीटर है। इसका परिक्रमा-पत्र दीर्घवृताकार है। निरीड को अपने ग्रह का एक चक्कर लगाने में हमारे वर्ष का लगभग एक वर्ष का समय लगता है। दूसरी ओर, ट्राइटन केवल ६ दिनों में एक परिक्रमा पूरी कर लेता है। पृथ्वी के टेलिस्कोपों द्वारा नेपच्यून के और अधिक उपग्रहों की खोज

**वरुण ग्रह के आंकड़े**

**व्यास : ४८,००० किमी. (३०,००० मील) लगभग ।**
**घनत्व : पानी की अपेक्षा १.७७ गुना ।**
**द्रव्यमान : पृथ्वी की अपेक्षा १७.२ गुना ।**
**वर्ष की अवधि : १६४.८ वर्ष (पार्थिव) ।**
**घूर्णन काल : १७—१८ घंटे ।**
**सूर्य से औसत दूरी : ४,४९६,६००,००० किमी. (२,७९४,१८७,००० मील) ।**
**अक्ष का झुकाव : २९ अंश ।**
**पलायनवेग : २५ किमी. (१५.५ मील) प्रति सेकंड ।**
**कक्षा में औसत वेग : ५.४ किमी. (३.३६ मील) प्रति सेकंड ।**
**धरातल पर गुरुत्व बल : पृथ्वी की अपेक्षा १.२२ गुना ।**
**वायुमंडल : मुख्य अवयव 'मीथेन' ।**
**ज्ञात चंद्रमा : ८ ।**
**खोजकर्ता :** जे.जी. गेले, २३ सितंबर, १८४६ ।

संभव नहीं हो सकी ।

## सूर्य को भोजन कैसे ?

वरुण ग्रह की खोज को भी एक संयोग ही कहा जा सकता है । इस ग्रह के खोजकर्ता वैज्ञानिक, जॉन गॉले ने स्वयं ही लिखा है कि उसका जन्म जरमनी के उसी राज्य में हुआ था जहां ज्योतिष विज्ञान अधिक उन्नत अवस्था में था । वहां के ज्योतिषियों का मत था कि सूर्य अपनी किरणों को नित्य खर्च करता है, परंतु उसे कोई भोजन नहीं मिलता है । इस प्रकार इसका पूर्णरूपेण क्षय हो जाएगा और तब इसका नामोनिशान भी नहीं रहेगा ।

नानक जॉन गाले का लालन-पालन इसी वातावरण में हुआ था । 'सूर्य को भोजन कैसे दिया जाए ?' यही चिंता उसे सदैव सताती रहती थी । जैसे-जैसे वह बड़ा होने लगा, इस ओर उसकी रुचि बढ़ने लगी और असंख्य ज्योतिष पिंडों से अलंकृत एवं जगमग ब्रह्मांड की विलक्षण शोभा उसके मस्तिष्क को चकित करने लगी ।

उस समय सौरमंडल में एक विचित्र घटना घटी । यूरेनस ग्रह अचानक ही अपनी कक्षा में किसी शराबी की तरह डगमगाने लगा । उस समय के वैज्ञानिकों का अनुमान था कि अवश्य ही किसी अदृश्य आकाशीय पिंड द्वारा यूरेनस को अपनी ओर बलपूर्वक खींचने से ऐसा हो रहा है । यह अदृश्य आकाशीय पिंड है क्या ? यह बताने में कोई भी समर्थ नहीं था ।

एक दिन अचानक ही जॉन गॉले द्वारा टेलिस्कोप (दूरबीन) से लिये गये फोटोग्राफों में एक अजनबी बिंदु प्रकट हुआ । यह नयी पहेली थी । एच.सी. अरेस्ट के साथ मिलकर गॉले ने इस अजनबी बिंदु के विषय में विस्तृत खोज की और पाया कि यह तो एक नया ग्रह है, जो निकट आने पर यूरेनस ग्रह को अपनी ओर खींचता है और यूरेनस डगमगाने लगता है ।

इस खोज के बाद, गॉले की दिलचस्पी और अधिक बढ़ गयी ।

### वरुण में कम सौर किरणें

वरुण ग्रह की खोज में जॉन गॉले द्वारा किये गये प्रयासों से सौरमंडल सहित ब्रह्मांड के उद्‌भव एवं विकास की अनेक गुत्थियां सुलझीं । बारह वर्षों की लंबी यात्रा के बाद जब वायजर-२, नेपच्यून ग्रह के निकट पहुंचा, तब इस ग्रह पर तूफानों, तेजी से गतिशील बादलों और गहन रेडियो तरंगों के बारे में नये-नये रहस्यों का उद्‌घाटन करने लगा । इन नवीन सूचनाओं से पता चला कि नेपच्यून (वरुण) आश्चर्यजनक रूप से सक्रिय ग्रह है । पहले इसे शांत ग्रह माना जाता था ।

सूर्य से नेपच्यून दूरस्थ ग्रह है और वहां पृथ्वी की तुलना में करीब एक हजार गुना कम सौर किरणें पहुंचती हैं । अतः सूर्य की लगभग नगण्य ऊष्मा वहां पहुंचती है । दूसरी ओर, वरुण ग्रह पर वायुमंडल और मौसम है तथा मौसम का स्रोत ऊष्मा है ।

वॉयजर-२ में जो यंत्र लगे हुए थे, उनमें से एक यंत्र वरुण ग्रह का तापीय चित्र और उसकी सतह पर ताप का वितरण अंकित करता था । दूसरा यंत्र उसके वायुमंडल का घनत्व एवं उसकी संरचना की जांच करता था । कुछ अन्य यंत्र ग्रह की सतह की विशेषता ज्ञात करते थे । इन यंत्रों द्वारा लिये गये चित्रों की डेवेलपिंग यान में ही हो जाती थी, जिन्हें दूर-दर्शन कैमरे की सहायता से पृथ्वी पर प्रेषित कर दिया जाता था । वॉयजर-२ के यंत्रों के निर्देशन और संचालन के लिए यान में एक कंप्यूटर लगा हुआ है । इन यंत्रों की सहायता से वॉयजर-२ ने ८५ हजार चित्र भेजे ।

### रंगहीन पत्थरों से भरा

वॉयजर द्वारा भेजे गये चित्रों के विश्लेषण दल के प्रमुख, ब्रेडफोर्ड स्मिथ हैं । इनके नेतृत्व में विश्लेषण किये गये चित्रों से पता लगता है कि वरुण ग्रह का धरातल रंगहीन पत्थरों से भरा है । चारों ओर उबड़-खाबड़ खड्ड, क्रेटर और टीले हैं ।

वरुण का वायुमंडल बिलकुल दूसरे तत्वों से बना है । वॉयजर-२ से प्राप्त चित्रों का विश्लेषण करने पर वरुण का ध्रुवीय प्रदेश गहरे रंग का दिखायी पड़ता है तथा ध्रुवों के चारों ओर गोलाकार पट्टियों जैसी कुछ संरचनाएं हैं । इसके ध्रुव प्रदेश में भूरे रंग की धुंध छायी है और इसके वायु-मंडल की गैसें अपनी क्षेत्रीय गति के कारण गोलाकार पट्टियों के रूप में दिखायी पड़ती हैं । इनका निर्माण हल्की और गरम गैसों से हुआ है । संकुचित होती गैसों से अंधेरा उत्पन्न होता है और ऊपर उठती गैसों से धुंध बनती है । इन धारियों के बीच एक स्थान पर विचित्र धब्बा नजर आता है, जहां गहराई से लाल धुआं उठता है । लाल घटा सफेद बादलों की धाराओं से ऊपर उठती हैं, उमड़ती हैं, कभी उज्ज्वल हो जाती हैं और कभी फीकी पड़ जाती हैं ।वॉयजर-२ द्वारा भेजी गयी सूचनाओं से पता लगता है कि वरुण ग्रह का अपना एक चुंबकीय क्षेत्र है । वरुण के ३० अंश दक्षिण पर ध्रुवीय प्रकाश है ।

वरुण ग्रह को समझने से पृथ्वीवासियों को स्वयं अपने ही ग्रह को समझने में बड़ी सहायता मिलेगी । वैज्ञानिकों ने शुक्र ग्रह के बारे में अध्ययन किया था कि शुक्र ग्रह के घने बादल
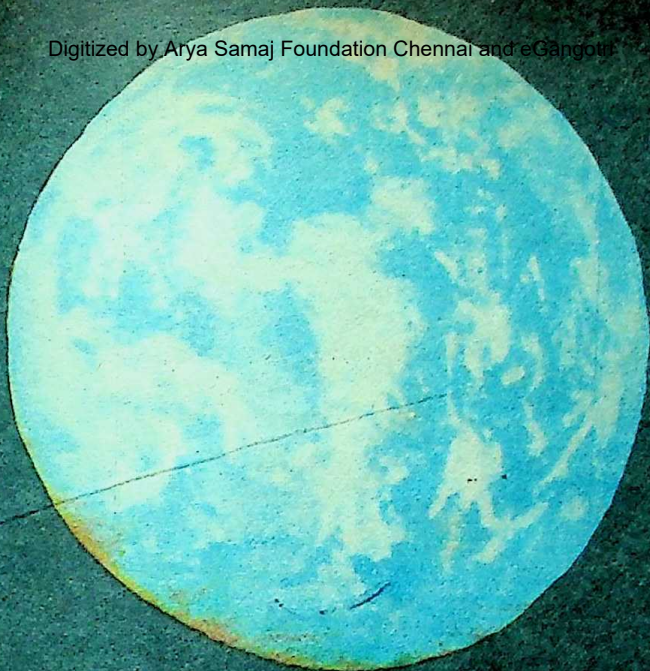
'ट्राइटन'—वरुण ग्रह का सबसे बड़ा चंद्रमा

कैसे सौर ऊर्जा को संचित करते हैं और तापमान ऊंचा रखते हैं (ग्रीन हाऊस इफेक्ट)। शुक्र ग्रह के इस अध्ययन से वैज्ञानिकों को यह अनुमान लगाने में सहायता मिली कि औद्योगिक वायु प्रदूषण से पृथ्वी का तापमान बढ़ सकता है, जिससे तटवर्ती इलाकों में बाढ़ का संकट पैदा हो सकता है। शुक्र ग्रह के अध्ययन के लिए उपयोग किये गये तरीकों के आधार पर ही अमरीकी वैज्ञानिकों ने सर्वप्रथम पृथ्वी के ओजोन कवच के कमजोर होने की चेतावनी दी थी।

—१८ अशोक नगर, आगरा-२८२००२

वरुण के अन्य चंद्रमा '१९८९ एन-४' का धरातल

वरुण ग्रह का धरातल

एक पत्रिका ने मुख-पृष्ठ पर छापा
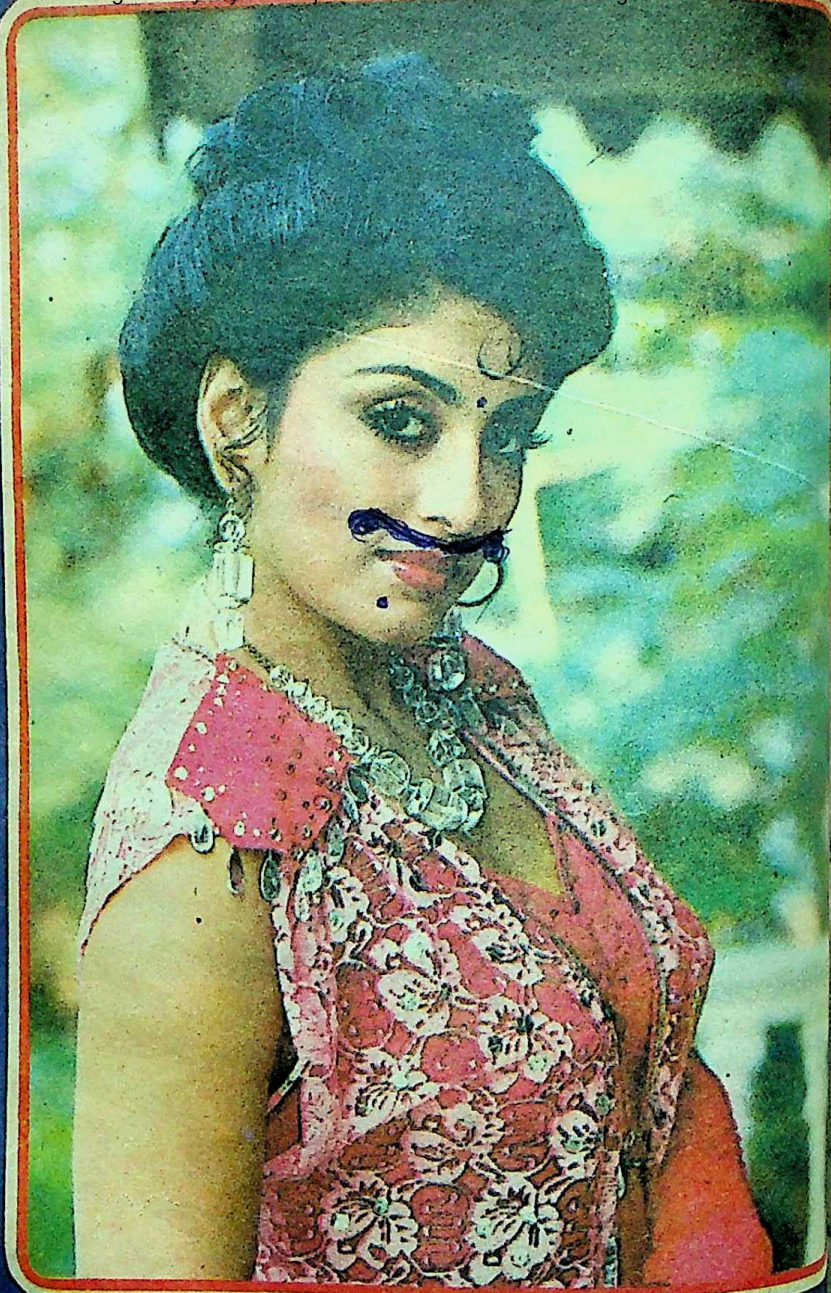
# और वह हीरोइन बन गयी

● प्रभा भारद्वाज

समय के साथ हर पेशे में व्यावसायिकता ही सर्वोपरि हो उठी है, और फिल्म-उद्योग भी इससे बच नहीं पाया है। फिल्म-क्षेत्र, धन और यश दोनों ही जी भर के प्रदान करता है, इस कारण नयी पीढ़ी की युवतियों का फिल्मों के प्रति आकर्षण बढ़ा है। ऐसी नयी अभिनेत्रियां हैं, जो अभी से ही स्वयं को प्रथम श्रेणी की नायिकाओं में रखती हैं। इनमें से स्वप्ना भी एक है।

स्वप्ना, बंबइया फिल्मों में तब आयी, जब मद्रास में उसे पर्याप्त ख्याति मिल चुकी थी।

## मंजरी से स्वप्ना

यह भी एक विडंबना है कि स्वप्ना का जन्म २ जनवरी को रांची (बिहार) में हुआ और ख्याति उसे दक्षिण भारत की एक फिल्म से मिली। स्वप्ना का बचपन का नाम मंजरी था। स्वप्ना के पिता रांची में इंजीनियर थे। व्यवसाय से इंजीनियर होते हुए भी स्वप्ना के पिता ने स्वप्ना को नृत्य की विधिवत शिक्षा दिलवायी। नृत्य के साथ-साथ वह पढ़ाई में भी तेज थी। स्वप्ना के पिता का रांची से विशाखापट्टनम और विशाखापट्टनम से मद्रास तबादला हो गया। कॉलेज की शिक्षा स्वप्ना ने मद्रास में ही प्राप्त की।

स्वप्ना जब कॉलेज गयी, तो वह जेब-खर्च के लिए मॉडलिंग करने लगी। स्वप्ना के मॉडलिंग का एक चित्र एक पत्रिका के मुख पृष्ठ पर छपा। यह एक संयोग ही समझिए कि इस चित्र को एक फिल्म निर्माता ने देखा और उसे अपनी फिल्म 'स्वप्ना' के लिए अनुबंधित कर लिया। लोकप्रियता उसके भाग्य में थी। शायद इसीलिए यह फिल्म खूब चली। इस फिल्म को भविष्य के लिए एक शुभ-संकेत मानते हुए स्वप्ना ने अपना नाम बदलकर मंजरी से स्वप्ना रख लिया। इस फिल्म के 'हिट' होने के बाद स्वप्ना ने दक्षिण भारत की चारों भाषाओं की लगभग ७० फिल्मों में काम किया, मलयालम की 'तृष्णा' और तमिल की 'टिक-टिक-टिक' के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का 'क्रिटिक एवार्ड' मिला।

## बंबई की ओर

दक्षिण में धूम मचाने के बाद स्वप्ना ने बंबई की ओर जाने का विचार बनाया। स्वप्ना हिंदी भाषी होने के कारण हिंदी अच्छी तरह बोल लेती है। इसी विशेषता के कारण उसे शीघ्र ही बंबई में 'एक दिन बहू का' फिल्म में काम करने का अवसर मिला।

इसके बाद बतौर नायिका उसे कई फिल्में मिलीं, लेकिन 'हुकूमत' की सफलता ने स्वप्ना के कैरियर को एक नयी दिशा प्रदान की।

●

"कोयला खानों में काम करने वाला आदमी फिल्म क्या खाक बनाएगा ? कि उसे तो फिल्मों की ए.बी.सी. भी नहीं आती, कि उसे फिल्म निर्माण का न तो कोई ज्ञान है न ही अनुभव, कि वो एक गंवार, जाहिल ठेठ बिहार का आदमी है, कि उसने न तो बंबई देखी है और न ही बंबई की फिल्म इंडस्ट्री, कि ...."

पर वे ठेठ बिहारी इन सबसे दो कदम आगे निकले । उन्होंने तमाम बिहारियों, बनारसियों को लेकर फिल्म बनायी और वह भी बंबई से कोसों दूर बिहार की धरती पर । यही नहीं, उनकी इस जांबाज दिलेरी में शामिल था स्व. नजीर हुसैन का बरसों पुराना सपना कि वे अपनी कहानी पर फिल्म बनाएंगे तो भोजपुरी में ही । ये बहादुर बिहारी थे विश्वनाथ प्रसाद शहाबादी । बनारस के कुंदन कुमार को निर्देशन का भार सौंपा गया । चित्रगुप्त को जो पटना के

# घड़ी पहनकर ही शिवजी की भूमिका करने की जिद

● बद्रीप्रसाद जोशी

कब होई है गवनवां हमार
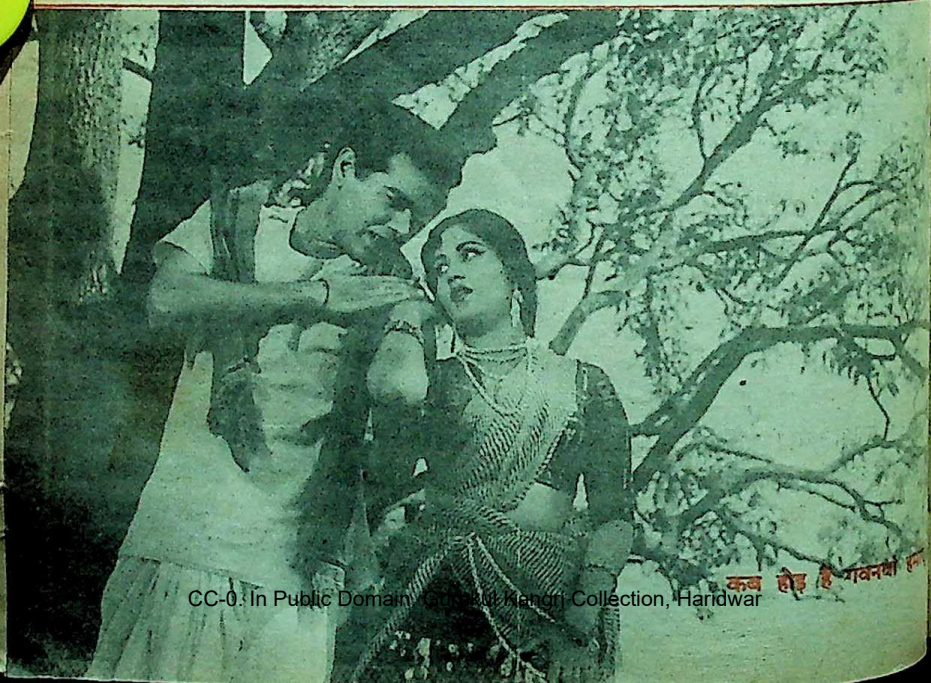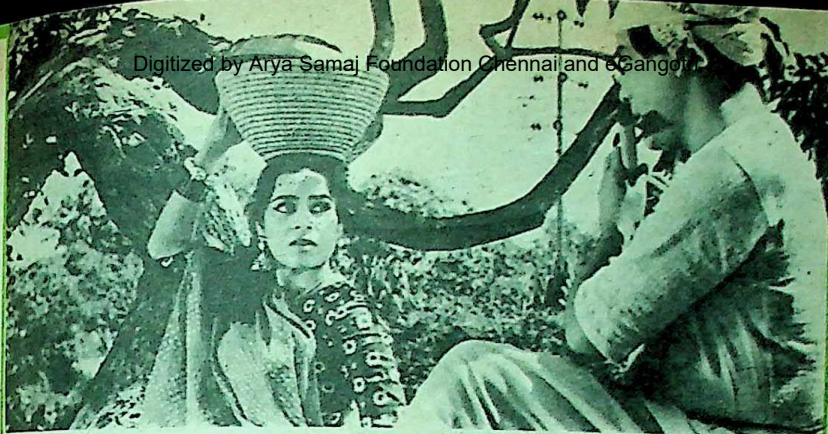
पहली सुपरहिट फिल्म 'गंगा मैया तो है...'

एक अखबार में काम करते थे और स्व. एस.एन. त्रिपाठी के सहायक थे, संगीतकार चुन लिया गया । गीत लिखने के लिए शैलेंद्र को अनुबंधित किया गया । असीम कुमार को हीरो बनाया गया और कुमकुम को हीरोइन । वे एक अच्छी डांसर भी थीं । मुजरे आदि के लिए हेलेन को ले लिया गया ।

और ... १६ फरवरी १९६२ को पटना के ऐतिहासिक शहीद स्मारक पर फिल्म का मुहूर्त किया गया । फिल्म थी 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो ।' फिल्म से जुड़े सब लोग आंचलिक भाषा के थे । सबने तन-मन से काम किया । फिल्म पूरी हुई । अब मुश्किल यह थी कि एक अनजान भाषा की फिल्म को खरीदेगा कौन ? शहाबादी वितरक की तलाश में भटकते रहे, कोई आगे नहीं आया । लिहाजा बिहार में पहली बार किसी ने अपनी ही फिल्म को खुद ही प्रदर्शित करने की हिम्मत की और १९६२ के वर्षांत में फिल्म सबसे पहले बनारस के प्रकाश टॉकिज में प्रदर्शित हुई । फिल्म जबरदस्त चल निकली । देवी-दर्शनों की तरह दूर-दूर से लोग उसे देखने जाने लगे । तभी पटना स्थित वीना सिनेमा के मालिक ने फिल्म का डिस्ट्रीब्यूशन लिया । प्रिंटों की बेहिसाब मांग ने एक असफल वितरक की बरसों से डिब्बों में बंद पड़ी फिल्मों को भी धड़ाधड़ खपा दिया । क्योंकि उनकी पहली शर्त ये थी कि पहले मेरी फिल्म चलाओ फिर 'गंगा मइया...' दूंगा । ये बात शहाबादी तक पहुंची तो उन्होंने सारा डिस्ट्रीब्यूशन खुद ही ले लिया ।

इसके बाद बंबई की 'मास्टर मूवीज' (सुबोध मुखर्जी) ने फिल्म खरीदी और बंबई

**'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' भोजपुरी की एक सुपर हिट फिल्म । आम तौर पर उसे ही भोजपुरी की पहली फिल्म माना जाता है । यह बहुत कम लोग जानते हैं कि सन १९३१ में भोजपुरी में 'पुनर्मिलन' शीर्षक से एक मूक फिल्म बनायी गयी थी ।**

के इंपीरियल सिनेमा में प्रदर्शित की । यहां भी फिल्म जोरदार हिट साबित हुई । इस तरह बंबई वालों ने पहली बार पहली भोजपुरी फिल्म इंपीरियल सिनेमा में देखी ।

किसी भी प्रादेशिक भाषा के साथ ऐसा गौरव आज तक नहीं जुड़ा, जिसकी प्रथम फिल्म ने स्वर्णजयंती मनायी हो । इस फिल्म की सफलता से प्रेरित दूसरी फिल्म के रूप में परदे पर आयी बच्चू भाई शाह की 'बिदेसिया', जिसकी कहानी भी पहली फिल्म की तरह ही थी । कहानी राममूर्ति चतुर्वेदी की थी । संगीतकार और निर्देशक थे स्व. एस.एन.त्रिपाठी । काशी में फिल्म जबरदस्त हिट हुई । बिहार वालों ने इसे इतना पसंद नहीं किया । फिल्म की एकमात्र उपलब्धि थी फिल्म के हीरो सुजीत कुमार, जो बाद में भोजपुरी फिल्मों के दिलीप कुमार बने ।

**'पुनर्मिलन'—मूक भोजपुरी फिल्म**

पर एक बात बहुत कम लोग जानते हैं कि 'गंगा मइया...' से भी पहले बिहार में सर्वप्रथम १९३१ में महाराज जगन्नाथ प्रसाद सिंह ने भोजपुरी रीति-रिवाजों को मद्देनजर रखते हुए एक मूक फिल्म 'पुनर्मिलन' बनायी थी । इसके बाद उन्होंने देव (औरंगाबाद) के प्रसिद्ध पर्व पर एक लघु फिल्म 'छुटभइया' बनायी । इसके तीस वर्ष बाद अकस्मात भोजपुरी फिल्मों की झड़ी लग गयी । वाराणसी के कुंदन कुमार ने संगीतकार चित्रगुप्त के साथ कुमकुम और के. पद्मा (पद्मा खन्ना) को लेकर 'मां' बनायी । फिल्म ने जोरदार बिजनेस किया । स्टंट फिल्मों की नायिका कुमकुम रातोंरात भोजपुरी फिल्मों की 'नरगिस' बन गयी । इसके बाद अवधी भाषा पर आधारित दिलीप कुमार की फिल्म 'गंगा जमुना' बनी । उसकी भाषा पूर्वी जरूर थी, लेकिन उसे भोजपुरी नहीं कहा जा सकता था । कायदे की शुरूआत 'गंगा मइया...' से ही हुई और भोजपुरी बोली से फिल्म-निर्माताओं का साक्षात्कार भी ।

'गंगा मइया....' और 'बिदेसिया' के बाद बिहार के रामानंद तिवारी भोजपुरी फिल्म-निर्माण के क्षेत्र में कूद पड़े । उन्होंने 'लागी नाहीं छूटे रामा' फिल्म बनायी । लेखक
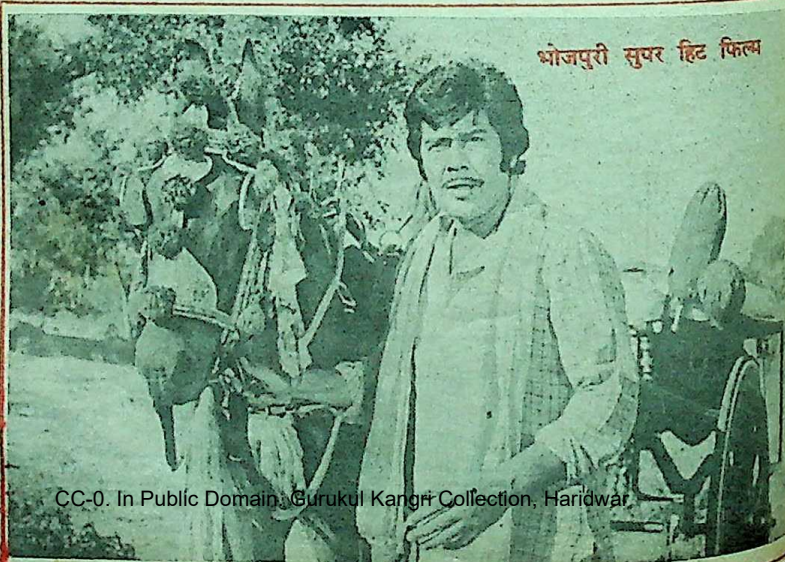
नजीर हुसैन थे और निर्देशक कुंदन कुमार। फिल्म को अच्छी सफलता मिली। उस समय के प्रसिद्ध कामेडियन महमूद भी फिल्म में थे।

## फिल्में बनाने की होड़

इसके बाद कलकत्ता-बंबई के फिल्म निर्माता, जिन्हें भोजपुरी का इतना ही ज्ञान था कि शब्दों के अंत में 'वा' लगा दो तो भोजपुरी हो जाएगी, भोजपुरी फिल्मों की निर्माण-दौड़ में कूद पड़े --'बलमा बड़ा नादान', 'कब होइ हैं गवनवा हमार', 'जेके चरणवां में लगले परनवां', 'नइहर छुटल जाय', 'भौजी', मितवा', 'नाग पंचमी', सइयां से भइले मिलनवा', 'आइल बसंत बहार', 'विधना नाच नचावे', 'लोहा सिंह', 'सोलहो सिंगार करे दुलहिनियां', 'सेंधुर'- जैसी कई फिल्में बनीं, लेकिन किसी ने भी वहां की मिट्टी की सुगंध को नहीं पहचाना। राक एंड रोल और रंबा-संबा से भोजपुरी नहीं चल सकती। उसे जरूरत थी ताल-तलैया, झोपड़ी, सादगी, लाज का घूंघट, मर्यादा और समर्पण की।

स्व. नजीर हुसैन के एक सहायक ने बताया, 'एक सज्जन थे महादेव बाबू। वे एक ऐसी फिल्म बनाना चाहते थे, जिसमें उन्हें भी रोल मिले। और ये हुआ भी। उन्होंने यहां-वहां से पैसे जोड़कर फिल्म शुरू की। उन्हें शिव का रोल मिला। उनकी एक शर्त थी कि उनकी घड़ी उनकी कलाई पर ही रहेगी। फिल्म थी 'बाबा वैद्यनाथ'। फिल्म का सबसे रोशन पहलू ये था कि फिल्म में शिव जी ने घड़ी पहनी थी। ऐसी फिल्में बनने लगीं भोजपुरी में, तो 'हिट' की परंपरा आगे कैसे बढ़ती ?' इस तरह भेड़चाल शुरू हुई। पैसा कमाने के उद्देश्य से
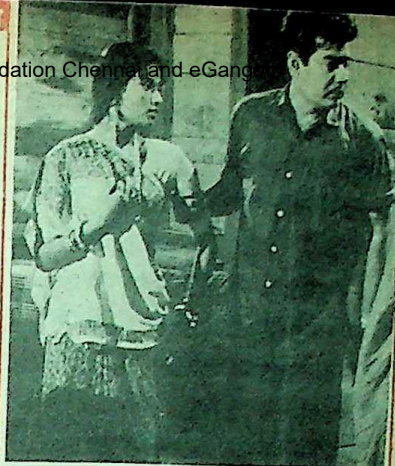
'लोहासिंह' रेडियो नाटक पर बनी भोजपुरी फिल्म

हर कोई फिल्म बनाने लगा और इस तरह से भोजपुरी फिल्मों का सत्यानाश हो गया। इसके बाद तो हर आनेवाली फिल्में जैसे पिटने के लिए ही आती गयीं। १९६७ में फिर ऐसा दौर आया कि निर्माताओं ने भोजपुरी फिल्म बनाने का ख्याल सपने में लाना भी छोड़ दिया। फिर माहौल १९६०-६१ जैसा हो गया।

एक दशक के संकट के बाद १९७२ में जब भोजपुरी की पहली फास्ट और कलर फिल्म 'दंगल' सिनेमाघरों में आयी, तो उसने दर्शकों के बीच दंगल मचा दिया। इसके निर्माता भी वही थे 'विदेसिया' वाले बच्चू भाई शाह। कलाकार थे सुजीत कुमार और प्रेमा नारायण। रतिकुमार के निर्देशन में बनी इस फिल्म के लेखक थे राजपति कुलवंत जानी और एस.

**भोजपुरी फिल्में क्यों तृतीय श्रेणी से ऊपर उठ नहीं पातीं ? क्या कारण है कि आज वे उतनी लोकप्रिय नहीं हो रही हैं ?**

भास्कर के गीतों को संगीत दिया था नदीम श्रवण ने। 'दंगल' का क्रेज अभी खतम भी नहीं हुआ था कि एक फिल्म और आयी 'बलम परदेसिया'। इसके साथ ही एक नया सितारा उभरा राकेश पांडे। स्व. नजीर हुसैन की यह फिल्म कई महीने एक ही सिनेमाघर में चलती रही। इसके बाद कई फिल्में बनी पर सफल बहुत कम रहीं।

## असफलता के कारण

भोजपुरी फिल्मों का विकास सही ढंग से न हो पाने के लिए समूचा फिल्म उद्योग जिम्मेदार है। इन फिल्मों की असफलता के पीछे कई कारण थे। फिल्म निर्माण की बाढ़ में निर्माता-निर्देशक भूल गये कि इस क्षेत्र की कुछ विशेषताएं हैं। परंपराओं की महानता, गीतों की मधुरता, भावनाओं व कल्पनाओं की पवित्रता जुड़ी है इनसे। इसके विपरीत निर्माता-निर्देशक ये भी भूल ही गये कि एक ही लीक पर फिल्में बनाकर वे बीसवीं सदी में भी सोलहवीं सदी की कहानियां पेश कर रहे हैं।

१९८६ में तो भोजपुरी फिल्मों के निर्माण ने नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया। पचास से ज्यादा फिल्में निर्माणाधीन रहीं। कई फिल्मों के सभी गीत रेकार्ड कर लिये गये थे, तो कुछ सेंसर के लिए तैयार थीं। १९८७-८८ में इस संख्या में और वृद्धि हो गयी। भोजपुरी फिल्मों के बारे में एक तथ्य यह भी है कि जो भोजपुरी फिल्में सेंसर बोर्ड से बिना किसी काट-छांट के पास कर दी जाती हैं, वे थियेटरों में चल नहीं पातीं। पिछले दो-तीन वर्षों के दौरान कुछ भोजपुरी फिल्मों ने पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल में जमकर व्यवसाय किया। १९८६ में १९ फिल्मों के प्रदर्शन तथा उनकी व्यावसायिक सफलता ने पुनः भोजपुरी फिल्मों की बाढ़-सी ला दी, जिसका परिणाम आज सामने है। बंबई में निर्माणाधीन हर पंद्रहवीं फिल्म भोजपुरी की हैं। पर दर्शक नहीं बदले हैं। तभी तो शत्रुघ्न सिन्हा की 'बिहारी बाबू' को लोगों ने पसंद नहीं किया, क्योंकि फिल्म में हिंसा थी और राजश्री प्रोडक्शन की हिंदी-भोजपुरी फिल्म 'नदिया के पार' लोगों को भा गयी, क्योंकि उसमें सादगी थी, गीत थे, संगीत था।

भोजपुरी फिल्में आजकल बाजार में नहीं बिकतीं, अधिकांश निर्माताओं को स्वयं प्रदर्शित करनी पड़ती हैं। भोजपुरी के आज दो प्रमुख निर्माता हैं। एक हैं—मुजफ्फरपुर के झा. जी, जो हर तीन महीने में एक भोजपुरी फिल्म बनाते हैं जो कि सेंसर में ही लटक जाती है।

दूसरे हैं—जैन, जो फिल्मों पर फिल्में बनाकर प्रदर्शित करते हैं। इन फिल्मों के कामेडियन हैं हरि शुक्ला, जो लगभग हर फिल्म में होते हैं। हिट हीरोइन हैं पद्मा खन्ना। नायकों में सुजीत कुमार, राकेश पांडे और कुणाल प्रसिद्ध हैं। लेकिन भोजपुरी फिल्मों को 'सी' क्लास से अधिक की प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त हो पायी है।

सच तो यह है कि भोजपुरी फिल्मों में 'टेलेंट' नहीं है—चाहे कहानी हो, गीत-संगीत हो या अभिनय। आज की तारीख में भोजपुरी फिल्मों को एक सत्यजीत रे, एक मृणाल सेन की तलाश है, जो अपनी प्रतिभा के गर्भ से फिर एक बार 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' —जैसी फिल्म बना सकें।

—५/एफ, नाज सिनेमा, बंबई

# मैं जीवन की गहराइयों में, उतर कर रचना करता हूं

आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री

**जानकी वल्लभ शास्त्री : हिंदी व संस्कृत के लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकार, विद्वान एवं आचार्य । प्रस्तुत है उनके साथ सूरज मृदुल द्वारा की गयी एक बातचीत ।**

**आप कब से लिख रहे हैं ?**

संस्कृत में सन १९३२ से और हिंदी में सन १९३५ से ।

**आपने सर्वप्रथम कौन-सी विधा में और किस भाषा में रचना लिखी ?**

सबसे पहले कविताएं लिखीं । सर्वप्रथम रचना संस्कृत भाषा की एक कविता थी, जो 'संस्कृतम्' पत्रिका, हिंदी भाषा की पत्रिका 'माधुरी' में प्रकाशित हुई थी । इसके बाद सन १९३५ से हिंदी में गद्य-पद्य, कहानी, निबंध आदि विधाओं में लिखता आ रहा हूं ।

**आप किस प्रकार की रचनाएं करते रहे हैं और आप किस रूप में अपनी प्रतिष्ठा चाहते हैं ?**

मैं साहित्य के लिए साहित्य की सेवा करना चाहता हूं । मैं गंभीर रचनाएं लिखता हूं, चूंकि मुझे संस्कृत में बहुत पहले आचार्य बना दिया गया था, इसलिए मेरा जीवन गंभीर प्रकृति का हो गया है । यही कारण है कि मैं जीवन की गहराइयों में उतरकर रचना करता हूं, मनोरंजन के लिए नहीं ?

**हिंदी साहित्य के विकास के लिए, आप क्या राय देंगे ? जिससे यह क्षेत्र विकसित हो सके ?**

साधन की सुलभता के कारण, हमारा देश भौगोलिक दृष्टि से भी और विचारों के आदान-प्रदान से भी, विश्व-साहित्य के बहुत निकट आ गया है । हिंदी साहित्य में कितने-सारे विचारों और भावों के आ जाने से, उसका विकास स्वाभाविक है । एक प्रतिमान (स्टेंडर्ड) सामने होने पर, हिंदी साहित्य भी, उस ऊंचाई तक पहुंचने में, कोर-कसर नहीं रखेगा । अभी तो वह विक्षिप्त अवस्था में है । एक मार्क्सवाद ही, उसमें कुछ नयापन ला सका है ।

**आजकल पत्र-पत्रिकाओं में छप रही रचनाएं कैसी हैं ?**

समसामयिक रचनाओं की एक अपनी सीमा होती है । वे अपने समय में जितनी पढ़ी-सुनी

जाती है, उनको कुछ ही दिनों के बाद, इतिहास भर रह जाता है । इसी दृष्टि में मुझे ये रचनाएं बहुमूल्य नहीं प्रतीत होती है । इनमें स्थायित्व नहीं है । ये तात्कालिक और अतीत और अनागत से टूटी हुई-सी लगती हैं ।

**आप अपनी रचना से पाठक को क्या देना चाहते हैं ?**

सांस्कृतिक और नैतिक विकास चाहता हूं । आज का मनुष्य अनैतिक और असांस्कृतिक हो गया है इसलिए आर्थिक दृष्टि से भरा-पूरा रहने के बावजूद, वह खोखला नजर आता है । मैं उनके सांस्कृतिक गरिमा और नैतिक बोध का, प्रकाश देखना चाहता हूं । इस कारण मेरा साहित्य आदर्शवादी है । यद्यपि मेरा आदर्श यथार्थ को छोड़कर नहीं चलता ।

**साहित्यकारों को, पुरस्कार देने की परंपरा-सी चल पड़ी है । आपके विचार ?**

कलाकार को उसकी उत्कृष्ट कला के लिए पुरस्कार देना एक बात है और अपने इष्ट मित्रों को या प्रियजनों को सबसे उपयुक्त व्यक्ति घोषित कर अपने जातीय धर्म का पालन करना दूसरी बात है । यदि योग्य व्यक्ति को पुरस्कार न मिले

आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री

तो यह भी उचित नहीं है और यदि अयोग्य व्यक्ति को जातीय कोटे के आधार पर योग्य कलाकार घोषित कर पुरस्कृत किया जाए तो यह भी उचित नहीं है । सच तो यह है कि योग्य-अयोग्य का तटस्थ निर्णय लेना अति कठिन है ।

**आज जो गजलें लिखी जा रही हैं, वे कैसी हैं ?**

इनमें बहुत अच्छी भी हैं किंतु अधिकांश नक़ल, लचर, तुकबंदियां भर हैं । गजल की सबसे बड़ी विशेषता तत्काल मर्म को स्पर्श करना है । इसलिए अधिकांश गजलें प्रेम संबंधी ही होती है क्योंकि प्रेम से अधिक मर्मस्पर्शी और क्या होगा ? इसके विपरीत आज के 'गजल-गो' यह भूल गये हैं कि पूरी जिंदगी में गालिब, मीर-जैसे महाकवियों ने एक छोटा-सा दीवान प्रस्तुत किया है, जबकि ये हर साल गालिब के तीन-तीन दीवान के बराबर अपने संकलन छपवा रहे हैं । यदि ये धीरज रखकर मन का मंथन रखकर, अपनी संवेदनाओं और अपनी अनुभूतियों को सही सांचे में ढाल सकें तो निश्चय ही गजलों का भविष्य अधिक उज्जवल होगा ।

**आपकी कोई व्यक्तिगत इच्छा ?**

मेरी व्यक्तिगत इच्छा-आकांक्षा की तलाश बेकार है । जो जितना अधिक संवेदनशील होता है उसकी पीड़ा भी उतनी ही अधिक तीव्र और झकझोर देनेवाली होती है किंतु उनका इजहार करने से क्या फायदा ? किंतु मेरी साहित्यिक व्यथा केवल एक है । पांच वर्ष पहले मैं अपना पांव तोड़ चुका हूं । मेरा बाहर आना-जाना जैसे— टेलिविजन, रेडियो, कवि-सम्मेलन

आदि, जिसके कारण मेरे आय के सारे स्रोत बंद हो गये किंतु मैं हूं कि इन विपरीत स्थितियों में पहले से भी अधिक उत्साह और लगन से नित्य नया साहित्य सिरज रहा हूं । किंतु मेरे पद पर न होने और बाहर आना-जाना बंद हो जाने के कारण इनके प्रकाशन की व्यवस्था नहीं हो पा रही है । यही एक व्यथा है जिसे चाहे तो कोई व्यक्ति, समाज या सरकार दूर कर सकती है, नहीं तो कोई बात नहीं ? इससे मेरे लिखने में कोई अंतर आनेवाला नहीं है । मैं उदास या निराश नहीं हूं । नित्य नयी उमंगों से तरंगित होता रहा हूं ।

**प्रख्यात नाट्य सम्राट पृथ्वी राज कपूर से आपका मित्रवत व्यवहार था फिर आपने अपनी कविता एवं गजलों का उपयोग फिल्म के गाने में क्यों नहीं किया ?**

पथ्वी राजजी ने मुझसे बार-बार अनुरोध किया था । 'पृथ्वी के पत्र' के नाम से उनके पत्रों का संकलन प्रकाशित हुआ है । उनमें भी इसकी चर्चा मिलेगी । अपने अंतिम समय में भी जब मैं बंबई में ही था तब उन्होंने कई-कई बार मुझसे आग्रह किया कि वे राजकपूर से कहकर मेरा और मेरी रचनाओं का अपने चित्रों में उपयोग करवा सकते हैं । हर बार मेरा एक ही उत्तर था कि मैं तमाशा देखनेवाला बना रहना चाहता हूं, खुद तमाशा बनना नहीं चाहता । इसी प्रकार श्री जगदीश चंद्र माथुर ने, जब आकाशवाणी के डायरेक्टर जनरल थे, मुझे अनेक बार रेडियो से जुड़ने, गीत-संगीत अथवा नाटक विभाग में काम करने के लिए अनुरोध किया किंतु मैं उन्हें हंसकर यही कहकर टालता रहा कि मैं कमरे के नाप की दरी ढूंढ़ता हूं, दरी के नाप का कमरा नहीं बनना चाहता हूं । सीधी-सी बात है कि ऐसी संस्थाओं में मालिक की मरजी के हिसाब से लिखना पड़ता है । अधिक लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए 'एबसर्ड' रचना तक उतरना पड़ता है । प्रेमचंद वहां से असफल होकर लौटे थे । निराला ने कभी रेडियो को अपने गीत नहीं गाने दिये । प्रेमचंद और निराला की परंपरा का एक और अदना आदमी आप मुझे समझें । मेरी मानसिकता को प्रसिद्धि का यह प्रपंच रास नहीं आता । मैं विद्वानों से विद्वान कहलाना चाहता हूं । कवियों के समाज में समादर पाने की अभिलाषा रखता हूं । बस इन्हीं कारणों से मेरे गीत आम आदमियों तक नहीं पहुंच सके । मेरा यश गली-कूचों में न गाया जा सका !

**• सूरज मृदुल**

**तंबाकू में प्रोटीन !**

अब आप तंबाकू में से भी प्रोटीन प्राप्त कर सकते हैं । धूम्रपान में इस्तेमाल होनेवाली तंबाकू की पत्तियों में दूध और पनीर की अपेक्षा कहीं अधिक प्रोटीन की मात्रा पायी जाती है । 'अमरीकन केमिकल सोसायटी' के अनुसार तंबाकू में से रासायनिक तरीकों द्वारा टार और निकोटीन—जैसे घातक द्रवों को निकालकर, इसे सोयाबीन के पाउडर की तरह खाद्य पदार्थों में मिलाकर प्रोटीनयुक्त पौष्टिक आहार बना सकते हैं ।
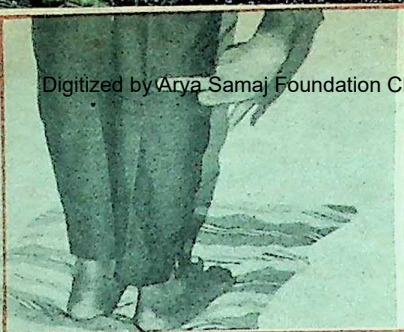
**पिंडली पर घुटने एवं ऐड़ी के मध्य स्थित बिंदु**

पिंडली का दर्द, पिंडली का क्रेंपस, साइटिका इस बिंदु पर दबाव दीजिए ।

# अपना इलाज स्वयं कीजिए-
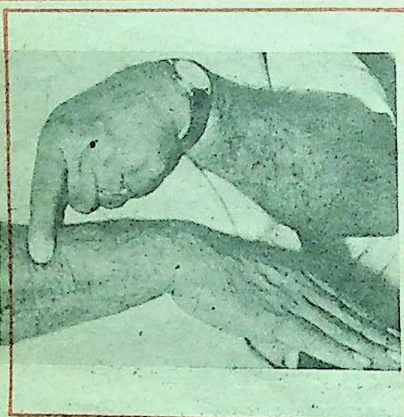
**हाथ के बाहरी भाग पर, कलाई और कोहनी के मध्य स्थित बिंदु**

हाथ का दर्द, हाथ का लकवा होने पर इस बिंदु पर दबाव दें ।

**पीठ पर स्थित बिंदु**

पीठ का दर्द, सांस की तकलीफ में इस बिंदु पर दबाव दीजिए ।

**कलाई की क्रीज और कंधे के मध्य, हाथ के अंदरूनी भाग पर स्थित बिंदु**

हाथ का दर्द, हाथ का लकवा होने पर इस बिंदु पर दबाव देना चाहिए ।

## दबाव कितनी देर डालें

*१. बारह घंटों में दो बार ।*

*२. दबाव एक मिनट तक दिया जा सकता है, एक बिंदु पर साठ बार ।*

*३. भोजन के एक घंटे पूर्व अथवा एक घंटे बाद ।*

*४. दबाव सहनीय होना चाहिए और अंगूठे के अग्रभाग से दिया जाना चाहिए ।*
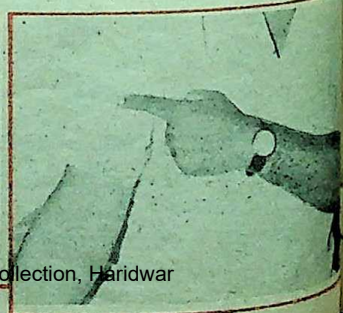
**टखने के नीचे स्थित बिंदु** ➡

टखने का दर्द, पेशाब की तकलीफ में इस बिंदु पर दबाव लाभकारी है ।
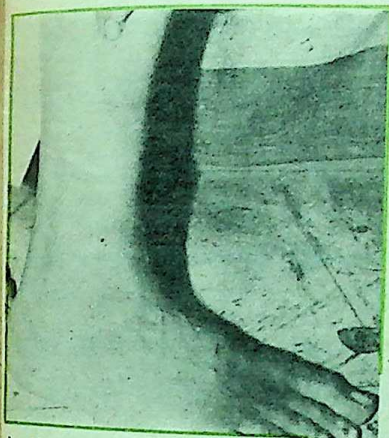
**पैर के बाहरी भाग पर घुटने की क्रीज और टखने के मध्य स्थित बिंदु**

पैर में रक्त संचार की कमी, पैर का लकवा, पैर में दर्द हो तो इस बिंदु पर दबाव दीजिए ।

**चौथी और पांचवी अंगुली के मिलन की जगह पर स्थित बिंदु**

पैर की अंगुलियों का त्वचा रोग अथवा पंजों का दर्द हो तो इस बिंदु पर दबाव दीजिए । ⬇

**हाथ के बाहरी भाग पर स्थित बिंदु** ⬆

निचले हाथ में दर्द होने पर इस बिंदु पर दबाव दें ।

**हाथ के बाहरी भाग पर स्थित बिंदु**

हाथ के ऊपर भाग में दर्द होने पर इस बिंदु पर दबाव दें । ⬇

● **डॉ. सुधीर खेतावत**

—एक्यूप्रेशर चिकित्सा एवं प्रशिक्षण केंद्र, नीलकमल सिनेमा परिसर इंदौर—४५२००३

बस्ती वही है— गांव के पूरबवाले छोर पर सड़े घाव सी ! बजबजाती भीड़, वही तीनों सवाल अपनी सच्चाई का ढिंढोरा पीटते हुए पसरे हैं, राजधानियों से खनखनाती धुनों की तरंगें आ रही हैं, अब इधर कोई नहीं आता कि कहे— जगुआ त्योहार मनाने के लिए मेरे घर से सामान ले आ रे... धन्नो के विवाह में खर्चे की फिक्र मत करना समझे... रुपये लेकर मन्ना का इलाज कराओ... !

अकाल-दुर्भिक्ष पड़ गया है तो घबड़ाना नहीं, जो मेरे घर में है, खिलाकर लड़िका-मेहेरिया पालो !' अब कोई नहीं पूछने आता ! किसानों से भरा-पूरा गांव इस बस्ती के लिए कितना निठुर हो गया है ! जग्गू ने हिकारत से गांव की ओर देखा, उधर से उड़कर आते हाड़ी पर वह भुकुर गया । हाड़ी ने वापसी की उड़ान भर ली । बस्ती वही है, अब इधर छपे-छपे रंग-बिरंगे परचे आते हैं...भोंपू आते हैं... हक

# बस्ती वही है

● कु. दिव्या

अब कोई नहीं कहता— 'परतब्बा डकैतों ने तेरी पतोहू की दुर्गति कर दी, उसके आराम का पूरा प्रबंध मैं करूंगा... खाने-पीने का सामान और भंड़वा घर से ले आ...

और अधिकारों के पुलिंदे आते हैं... योजनाओं के बस्ते आते हैं... तनी हुई मुट्ठियों का हुजूम आता है... जबरियां धकेले हुए शुभचिंतक आते हैं... तरह-तरह के हुजूर आते हैं और लंबे-लंबे

भाषण दे जाते हैं— 'आप सब ग्रामवासियों के लिए क्या-क्या नहीं किया... स्पेशल कम्पोनेंट, आई.आर.डी. जैसी तमाम योजनाओं के तहत भरपूर कर्ज या अनुदान की सुविधा मुहैया करायी है... जिनसे किसान बंधुआ मजदूरी कराते थे, कर्ज मांगते थे, उन्हें मुक्त कराया... किसानों को जुरमाने और कैद दिलायी... जीविकोपार्जन के लिए बैंड-बाजा, लाउडस्पीकर,कपड़े रखने की आल्मारियां, भेड़-बकरियां दिलायीं। आपके उत्थान के लिए ऋण की व्यवस्था की... अब आप स्वतंत्र भारत के नागरिक हैं, हिंदुस्तान की छवि बनाने के लिए सही तरीके से जिंदगी जीना सीखिए !'

भीड़ फूल के बादर हो जाती है, संझा को बस्ती के लोग बैठे होते कि अपने बीच में से किसी को फूंक करके आये हैं। जग्गू को लगता है सभी के आगे रइझैंहा पहार है, जिसे वे चढ़ नहीं पाते।

अब इधर कोई किसान आकर बंगली में घुस कोल पर नहीं गुराता— 'परतब्बा आज खेत पर काम करने क्यों नहीं गया ?... बीमारी का बहाना लिए पड़ा है ससुरा ! नहीं काम करना तो जो मेरा सौ-दो सौ रुपये कर्जा है— भर दे... फिर आराम कर... और जो मेरा खेत लिए है— फसल सहित आज छोड़ दे !'

अब इधर सहकारी समितियों, बैंकों के साहब पुलिस लेकर आते हैं। बस्ती के मर्द हांफते हुए भाग जाते हैं कि हिरनों के झुंड में करांएछ घुस आये हैं। जो मिल गये वे लात-पनहीं सहने के बाद, हाथ जोड़कर सुनते हैं— 'हस्सालो ! हरामखोरो ! घर में फूटी थाली तक नहीं— और सरकारी कर्जा दस-दस हजार रुपये ! बिना पानी के साधन में सिंचाई मशीनें, बिना घर-दुवार के दूकानें ! अररररररा खरीद-खरीद कर सरकार का भट्टा बैठा दिया ! योजनाओं की फाइलें भर दी... अब चाहे जैसे भरो ! यह भी किसान का कर्जा नहीं, सरकार का कर्जा है ! हां !... चलो, जेल में सड़ो हरामजादो ! सांझ को नारे से बंधे हुए आगे-आगे पियारे, कलट्टर और गेदा चलते कि उस मुल्क में जो आजाद हुआ था।

बस्ती वही है, सकारे सारा गांव देखता है कि जश्न मनाया जा रहा है। जीपें दौड़ रही हैं। नंग-धड़ंगे बच्चे परची के साथ उड़ रहे हैं। पेट से टूटी मेहेरिले पोस्टरों के साथ फड़फड़ा रही हैं। मेहनतकश-जंगरैत-मंसेरु उपलब्धियों के विज्ञापनों के साथ दीवारों से चिपक गये हैं। पूरी बस्ती भोंपुओं के साथ आलला रही है !

जग्गू बिना कुल्ला किये दांत निपोरता हुआ व्यस्त है। नगर में किसी मंत्री का फिर आगमन हो रहा है। दया के रिक्त पात्र ट्रकों पर

लादे-ढोये जा रहे हैं । पूरी बस्ती बच्चों के जिम्मे करते हुए सभी सयाने भाषण सुनने के पहले सख्ती बरते जा रहे हैं—

'गोबर से अनाज निकालने चले जाना... गांव के खलिहानों से गोबर सिमेटकर सरसी नाले में धो लेना और सुखा लेना... नहीं बिना बियारी किये सोना पड़ेगा हां !'

बुजुर्गों को आत्मबोध है कि संझा को मंत्री का भाषण सुनकर खाली हाथ लौटना पड़ेगा, इन्हें कोई धोखा नहीं दे सकता । अपना भविष्य ये निहार लेते हैं । बच्चों ने अपने बुजुर्गों की घिसी-पिटी बातों को रोज की तरह मानकर किसी ने भाषण देना शुरू किया, किसी ने नारे लगाना शुरू किया, बच्चों की भीड़ में श्रोता कोई नहीं था, सब नगर ढो लिये गये थे ।

घिनौनी, दरिद्र बस्तियों के श्रोता दुलहन से सजे नगर को रौंदे डाल रहे थे, डेढ़ बजे तक मंत्री कहीं आसमान में भी नहीं दिखे । व्यवस्था दल ने गली-गली धुएं से भर दिया । लोगों ने आसमान चर डाला ।

जग्गू हाथ में बुझी बीड़ी और अगल-बगल भीड़ लिए अपने तईं मुख्य श्रोता की हैसियत से बैठा था । किसी से माचिस मांग रहा था ।

माचिस तीलियों से रहित हो चुकी थी । खैर

सभी के कान झनझना उठे थे, उस वक्त जब मंत्री का भाषण हुआ था । समझदारों के लिए अर्थहीन वक्तव्य, नासमझ लोगों के लिए बजती हुई तालियों की संगत करने का जरूरी पाठ । रंगीन चौखट में मढ़ी तस्वीर से चिलचिलाती धूप में तपती भीड़ पर बासी फूल झड़ते रहे । आखिरी कीर्तन करती भीड़ वहा से तितर-बितर हो गयी थी ।

लोग जबरन अपने को कढ़ीलते हुए पैदल बस्ती को लौट रहे थे । अच्छा हुआ इन्होंने सकारे कुछ खाने की आदत नहीं डाली । संझा तक घर पहुंच जाने के खयाल से अगर कुछ चर्चा होती रहे तो पेट को बोलने को औसर न मिलता । मंत्री के भाषण में ऐसा कुछ न था कि राह कट सके । फिर भी व्यर्थ का अर्थ और अर्थ का अनर्थ बस्ती तक खिंचता चला गया

बस्ती वही है सुबह की रौनक वापिस नगर चली गयी है । गदेले में भद्दी से भद्दी गालियां बकने को शोधरत हैं । भीषण वाक्युद्ध के ... सभी ने स्वयं की बचत की है । जो भी कहा सिर्फ महतारी, बहिनी और बिटियन के लिए

खाली हाथ, खाली पेट लौटी हुई भीड़ ... सब कुछ खोकर लौटी है । उसके पास है तो सिर्फ वह जो सुबह पाले हुए बच्चों से कहा था— 'गांव के किसानों ने गोंहूंकी मड़ाई शुरू की है, दंवरी पर चलते बरधन के गोबर से ... निकाल लाना... बस्स !'

बच्चों ने ईमानदारी से पालन किया था आडर ! टोपरी-झउनी लेकर खलिहानों की ओर पिल पड़े थे । जहां अगल-बगल दाने युक्त गोबर इतनी मात्रा में पड़ा रहता है कि ...

को आपस में झगड़ने का सवाल ही पैदा नहीं होता, फिर झगड़ा करने के लिए कोई खास तैयारी भी नहीं करनी पड़ती कि शुरू करने में समय लगे। बहरहाल टोपरों में गोबर भर-भर नाले का पानी तहस-नहस कर देनेवाले यही गदेले थे। अनाज के दाने जानवरों के पाचनतंत्र से गुजरकर बाहर आते-आते अपना रंग-स्वाद भर ही नहीं बदलते बल्कि गंधाने लगते हैं। उनमें कौन तत्व आ जाते हैं, कौन तत्व चले जाते हैं— इन भूखे आदमियों की आंतें नहीं जानतीं।

बातों-बातों में दिन बिताकर जो भीड़ बस्ती में आकर समा गयी थी, उसमें से मर्द पसर रहे हैं, मेहेरिये चक्की चलाने लगी हैं। पिसते हुए गोबर से निकाले अनाज की जानी-पहचानी गंध गांव की तरफ उड़ चली कि बस्ती को जिंदा रखने के प्रयास जारी हैं।

जग्गू ने स्वयं जांत चलाया था, लेकिन बंगली पहुंचते ही पहले उसने पेटभरु पत्नी से उसकी तबीयत के विषय में पूछा था, वह कभी कराहती, करौंटा लेती, कभी फटी-फटी आवाज से कुछ बुदबुदाती, बच्चे पास में आते, महतारी का मुंह देखते, पेट की ओर निहारते और बिना कुछ बोले चूल्हे के पास बैठ जाते।

'घबराने की बात नहीं है, पेट में रोटी गयी कि फुरती आ जाएगी!'— जग्गू ने उसके मूंड़ की ओर हाथ बढ़ाते कहा, वह पति को देखती हुई चुप रही आयी, जग्गू रोटी घर्रा से निकालता और तीनों बच्चों के बीच फेंक देता, वे नून के सहारे रोटियां हपक जाते। जग्गू झल्ला उठता, गदेलों को तरेरकर देखता और अनकही बात खतम कर रोटी पकाने लगता! रोटी— हां गोबर से निकाले गये अनाज का आदिवासिया अनुवाद!

'तांत-तात रोटियां खाने से बड़ी राहत मिलती है!'— पत्नी के पास दो रोटियां धरते हुए जग्गू बोला था— 'भूख तो जगी है ना रे?'

'हां, कुछ चटपटा खाने का जी होता है... पर कहां मिले...?'

जग्गू कुछ नहीं बोला, वह इधर-उधर पड़े खंखार पर राख डालने लगा।

बंगली में अंधेरा है। चूल्हा जलने पर कभी-कभी हल्का अंजोर फैल जाता है, जग्गू की दृष्टि अपनी गिरस्थी झांकने लगती है, चींथड़ों में सिमटी उसकी दुइसहित पत्नी और एक-दूजे पर गोड़ लादकर सोये हुए गदेलों के अलावा और क्या है— बंगली के ठाठ में खोंसे हुए धुवांये कागतों का एक पुलिंदा! जग्गू ने जाने क्यों उसे सहेज रखा है। उसे तो वोटवाले कागत को छोड़ दुनिया का सारा कागत कचरा लगता है... एक कागज और था, जिसे वह कुछ दिनों तक सहेज कर रखता रहा है— पट्टे का! सुधि नहीं, कितने बिगहा का पट्टा हुआ था, सुध करके करता भी क्या? पट्टा होने के सालों बाद उसने लेखपाल को एक खटोली की चौखट देकर पटाया था कि वह आखिर जान तो ले कि भुंइ में कहां रोटी के विया छिड़क सकता है, मगर जब लेखपाल ने बताया कि गांव से पच्छूं जो पठार है, उसके बीचोंबीच की पटपर पट्टी पर कई भूमिहीनों का पट्टा है, तो जग्गू ने आंखें बंद कर लीं, गोया आंत की लंबाई नापने लगा हो, हां, लेखपाल ने बड़ी आत्मीयता से बताया था— 'चट्टानों पर

रोटी उगाना तुम्हारे बस का नहीं जग्गू ! मगर ऊसर पत्थर पर खेती के लिए पट्टा कर देना हमारे बस का होता है, खाना पूर्ति करने से हमारी पगार नहीं रुकती ।'

जग्गू की दृष्टि ठाठ पर भौंती रही... ये कागज के पुलिंदे क्या-क्या करते हैं... किसोरा, बंसी, हंसा जैसे तमाम लोग सिंचाई मशीनवाले डीलर की आत्मीयता से कितने खुश हुए थे । बैंक मनीजर तो देउता बन गया था, अंगूठा लगाने के बाद कुछ रुपये और बोझ भर झांसा लेकर वे कितने आजिज आ गये, इन कागजों ने सरकारी कर्ज खैरात की तरह बांटा... कर्मचारियों, अधिकारियों ने इन्हीं कागजों के मत्थे धन और ऊपरवालों की सहानुभूति की कमायी की... मुल्क में सुख आबाद रखने की जिम्मेदारी इन मक्कार कागजों के हवाले ?... कितना कपट किया है भोले-भाले, निरीह, अनपढ़, दरिद्र लोगों के साथ... जीने के लिए तरसती हुई भीड़ के साथ... च्च...च्च...च्च...छद्म की बेबाक रपट यह भीड़ !

जग्गू ने अपनी मेहेरिया को निहारा, उसे लगा कि वह काफी दिक है, आखिर खुश होने की नौबत कभी आयी नहीं, ससुरी के लिए जो संभव है उसके लिए भी तरसती ही जा रही है । जग्गू चाहता कि कोई चर्चा छेड़े, चूल्हे की मंद होती आगी को वह फूंकता, रोशनी की एक झलक में घरवाली से आंखी चार हो जातीं ।

'जो दिनभर जांगर फारने के बाद संझा की रोटी का इंतजाम करता है, वह मनई भाषण सुनने जाएगा तो लरिका-गदेला क्या खाकर जिंदा रहेंगे ?... मेरी कोई बात नहीं !'

'लेकिन अब कहीं नियमित काम भी तो नहीं रे ! और फिर एक-एक भाषण लाखों रुपये में होता है ! तू मेहेरिया है का जाने ? जग्गू ने तमाखू की पीक चूल्हे की राख पर उड़ेलते हुए कहा—

'दरअसल... इस मुल्क में बड़ी कमी है...'

'आदमी में न ?'

'नहीं-नहीं, मेरा मतलब कि... बड़ी गरीबी है... अंधाधुंध कर्ज बांटना इसका सबूत है... एक दिन ऐसा आएगा कि...'

'बस-बस ! जिस देश के गरीब कर्ज के बेशुमार बोझ से दब रहे हैं— उसका भविष्य मत बताइए... कर्ज बांटनेवालों ने देश को खोखला कर दिया... गरीब फटकर बिखर गये, गांव के गांव खोखले हो गये, तबाही पसर गयी, छुतुही बीमारी पसर गयी । हम क्या थे—क्या हो गये... ? वक्त-जरूरत का कोई साथी नहीं... दलाली... शोषण... धोखा... परपंच... लबरी... झूठ ! झूठ ! झूठ ! दिखा क्या खाने-कमाने को बैंड बाजा !'

जग्गू की मेहेरिया बहुत कम बोलती है, बोलती है, तो तौल-तौलकर, कराहती है तो बेहिसाब—

'अगर लाउडस्पीकर से मोहना की रोजी-रोटी चलती, तो राहजनी करके हांथ-गोड़ तुड़वा के न बैठता... बंसी पंपिंग सेट की झूठी खरीदारी में न फंसता, तो उसके परिवार की दुर्गति न होती... कुंजल ग्राम विकास अधिकारी की दलाली में न पड़ता, तो बस्ती छोड़कर गायब न होना पड़ता... कर्ज पर लिये गये काशी के बरधा मर गये, तो घर-भर के भूखों मरने लगे । आज तक बीमा कंपनी से किसी

हरिजन-आदिवासी, [illegible] मिला होता तो कर्जदार तबाह न होते ! है कोई इस मुल्क में जिसके आंखीं हों... ईमान हो... करतब्ब हो... फर्ज हो...? ? ?'— करौंटा लेते हुए वह सन्ना गयी ।

जग्गू को बरदास नहीं हुआ था । वह एक लकड़ी से राख इधर-उधर करता रहा फिर बंगली से बाहर हो गया । इस टैम उसे सन्नाटा अच्छा लगा था ।

'दीदी को अस्पताल क्यों नहीं ले जाते दादा ?' जग्गू के बड़े बेटवा ने बाहर आकर टोक दिया— 'उसकी देह कितनी फूल आयी है, देखने में डर लगता है दादा ! गुल्ला की मां ऐसे में ही मर गयी थी न ?... तुम्हें क्या हो गया है... दादा... पूरे कोलान को क्या हो गया है ?' 'जिनका आज भाषण था... वे पढ़े-लिखे होते हैं ? समुझदार होते हैं ?... न दादा अच्छे मनई होते हैं ?'— बाप का नैराश्य देखकर उसकी आंखों कोनों के पास खिंचती जा रही थी । उसकी मुठियां कसती जा रही थीं ।

क्षितिज से उतरती रात में बहुत भूखे-सा आसमान चर रहा है हंसा ! कहीं पास ही कोई बुदबुदा रहा है—

**'एक है जो रोटी बेलता है**
**एक है जो रोटी सेंकता है**
**एक और है**
**जो न बेलता है न सेंकता है**
**सिर्फ रोटी से खेलता है**
**मैं पूंछता हूं**
**यह तीसरा कौन है ?**
**मेरे देश की संसद मौन है !'**

वह अचकचाकर देखता है— बस्ती वही है... गांव के पूरब छोर पर— कुलबुलाते कीड़ों से बजबजाते नासूर-सी ।

**—लाल गांव**
**रीवा (म.प्र.)-४८६११५**

## खनिज ईंधन का विकल्प

*कोयला, तेल और गैस जैसे खनिज ईंधन का अपरिमित मात्रा में जलाया जाना ही पर्यावरण की बिगड़ती स्थिति के लिए बहुत हद तक जिम्मेदार है । वायु प्रदूषण अम्ल वर्षा, बदलती जलवायु आदि के लिए ये ही उत्तरदायी हैं । इसलिए वैज्ञानिक इनकी खपत में कमी करने के उपायों की खोज में लगे हुए हैं । उन्होंने कुछ सफलताएं भी प्राप्त की हैं जैसे—स्वीडन के एक मोटर कार निर्माता ने कार का ऐसा प्रारूप तैयार किया है, जो किसी भी प्रकार के ईंधन, यहां तक की खाना पकाने के तेल से भी, चल सकती है । गन्ने से बनाये गये एल्कोहल का तेल के स्थान पर उपयोग भी किया जा सकेगा ।*

**श्रीमती उर्मिला, नयी दिल्ली**

**प्र.—उम्र छब्बीस साल । पेट में दायीं तरफ हल्का-हल्का दर्द महसूस होता है, कभी-कभी सूजन मालूम पड़ती है । कमजोरी बहुत अधिक है । साथ में उदर की शिकायत बनी रहती है । दो संतान हैं ।**

उ.—पुनर्नवामंडूर तीस ग्राम, प्रदरांतक लौह दस ग्राम, आरोग्य वर्धनीवटी दस ग्राम, शंखभस्म वटी दस ग्राम, इनकी अस्सी मात्रा बनाएं । सुबह-शाम पानी से एक-एक मात्रा लें । अशोकारिष्ट दो चम्मच, रोहितकारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पिएं ।

**अंजुमन, बरेली**

**प्र.—उम्र तीस वर्ष । छह मास से पीलिया से पीड़ित हूं । कुछ समय ठीक रहा, अब फिर वही स्थिति बन गयी है । आंखों में पीलापन, पेशाब पीला, शरीर में बेचैनी, कभी-कभी बुखार महसूस होता है । खाने में अरुचि । स्थायी इलाज लिखें ।**

उ.—पुनर्नवामंडूर तीस ग्राम, चंदनादि लौह दस ग्राम, प्रवालपंचामृत पांच ग्राम, इनकी साठ मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें ।

रोहितकारिष्ट दो-दो बड़े चम्मच भोजन के बाद पिएं । तली वस्तुओं से बचें । तीन माह औषधियां सेवन करें ।

**राजकुमार, बंबई**

**प्र.—उम्र बत्तीस साल । पिछले दो वर्ष से सारे शरीर में पित्ती निकल आती हैं । एलोपैथी दवा लेने से कुछ समय ठीक रहता हूं किंतु फिर वही स्थिति बन जाती है । अच्छी दवा लिखें ।**

उ.—हरिद्राखंड एक-एक चम्मच सुबह-शाम पानी से लें । चंदनासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद पिएं ।

**श्याम सुंदर दास, उरई**

**प्र.—उम्र उन्नीस वर्ष । पेशाब में जलन रहती है । जांच करायी, सभी कुछ ठीक है । साधारण दवा लिखें ।**

उ.—चंदनासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद पिएं ।

**के.के., लखनऊ**

**प्र.—उम्र इक्कीस वर्ष । विवाहित हूं । मेरे गुप्तांग में पहले खुजली होती थी, बाद में हल्के दाने हो जाते हैं । वैवाहिक आनंद में भी कठिनाई होती है ।**

उ.—गंधक रसायन दो-दो वटी सुबह-शाम पानी से लें । शारिवाद्यासव दो-दो बड़े चम्मच भोजन के बाद पिएं । केशोर गूगल एक वटी रात दूध से लें । तीन माह नियमित औषधियां सेवन करें ।

**भास्कर, अकराबाद**

**प्र.—बहुत समय से पेचिस का मरीज हूं । कभी पतले दस्त हो जाते हैं, कभी खुश्क । बहुत थोड़ी मात्रा में मल आता है । वायु बहुत बनती है । कड़वी उल्टी, घबराहट, कमजोरी की शिकायत है ।**

उ.—स्वर्ण सूतशेखर रस दस ग्राम, प्रवाल पंचामृत रस पांच ग्राम, इनकी अस्सी मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । कुटजारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पिएं ।

**संजय, खतौली**

**प्र.—जुकाम से पीड़ित हूं । आठ वर्ष पहले गले और नाक का आपरेशन करा चुका हूं । किंतु स्थिति पहले-जैसी है । नाक से पानी आना व सुबह**

**छींकें बहुत आती हैं । अच्छी दवा लिखें ।**
उ.—लक्ष्मी विलास रस एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । षडबिंदु तेल एक-एक बूंद दिन में दो बार नाक में डालें । चित्रकहरित्तकी एक-एक चम्मच रात दूध से लें । दही चावल, शीतल पेय सेवन कर छह मास औषधियां सेवन करें ।

**हर गोविंद, ग्वालियर**

**प्र.—उम्र ३८ वर्ष । बचपन से ही शौच-क्रिया में बहुत समय लगता है ।**
उ.—अभयारिष्ट दो-दो बड़े चम्मच भोजन के बाद सेवन करें ।

**अजीज, खदरा**

**प्र.—उम्र ३६ साल । गैर शादीशुदा हूं । शीघ्र पतन, अधिक उत्तेजना, पेशाब के साथ लेसदार पदार्थ निकलता है । विवाह नजदीक है । बहुत परेशान हूं ।**
उ.—बृहदबंगेश्वर रस एक-एक वटी सुबह-रात दूध से लें । चंदनासव दो-दो बड़े चम्मच भोजन के बाद पिएं ।

**बबीता, नालंदा**

**प्र.—उम्र सत्रह साल । मासिक पंद्रह दिन बाद हो जाता है । एक दिन होता है । बाल भी बहुत झड़ने लगे हैं । चेहरे पर दाने भी होने लगे हैं ।**
उ.—अशोकारिष्ट दो चम्मच, दशमूलारिष्ट दो चम्मच, भोजन के बाद दोनों समय तीन माह सेवन करें ।

**सत्यनारायण, नचाप**

**प्र.—उम्र पचास साल । एक किसान हूं । देहात में रहता हूं । डॉक्टरों के अनुसार साइटिका हो गया है । बहुत परेशान हूं । बीस वर्ष में बहुत इलाज किये । अच्छी दवा लिखें ।**
उ.—समीर पन्नग रस दस ग्राम, अमृतासत्व दस ग्राम, दोनों दवा पीसकर अस्सी मात्रा बना लें । एक-एक मात्रा को सुबह-शाम शहद से लें । रास्नादि गूगल दो-दो वटी दोपहर-रात गरम पानी से लें । दही, चावल शीतल पेय आदि का सेवन न करें ।

**सीता राम गुप्ता, हुसैनाबाद**

**प्र.—उम्र छप्पन साल । उच्च रक्त चाप, संधिवात, बादी बवासीर, पेशाब रात चार बार जाना पड़ता है । इंद्रिय में शिथिलता ।**
उ.—योगराज गूगल एक वटी, आरोग्यवर्धनी वटी दो वटी, चंद्रप्रभा वटी एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । सर्पगंधावटी एक-एक वटी दोपहर-रात पानी से लें । आहार-विहार का परहेज कर तीन माह नियमित औषधियां सेवन करें ।

**—कविराज वेदव्रत शर्मा**
**बी ५/७, कृष्णानगर, दिल्ली**

समुद्र में ५० से अधिक किस्म के सांप पाये जाते हैं । ये सांप फारस की खाड़ी से लेकर प्रशांत महासागर तक सर्वत्र पाये जाते हैं । अफरीका और मैक्सिको के समुद्र में पीले पेट वाले सांप पाये जाते हैं । समुद्र में पाये जाने वाले सांप अपेक्षाकृत लंबे होते हैं । वे अपनी पूंछ का प्रयोग पतवार की तरह करते हैं । सांप सांस लेने के लिए समुद्र के ऊपर आते हैं लेकिन अपना भोजन पकड़ने के लिए वह समुद्र में काफी गहरे जा सकते हैं । समुद्री सांपिन रेतीलें समुद्र तट पर अंडे देती हैं । सभी समुद्री सांप जहरीले होते हैं ।

स्वास्थ्य अपनी जगह है और उम्र अपनी जगह । अकसर देखा यही गया है कि उम्र की मुट्ठी से स्वास्थ्य रेत के कणों की तरह उसकी पोरों से फिसलने लगता है—आहिस्ता-आहिस्ता । मगर आदमी की जुझारू जिजीविषा और जीवन जीने का संकल्प कई बार मौत को भी विस्मय-विमूढ़ कर देता है ।

रूस में जन्मी ९८ वर्षीया श्रीमती सोलोमन इस जिजीविषा का जीता-जागता उदाहरण हैं । प्रायः श्रीमती सोलोमन की तरह वृद्ध स्त्री या पुरुष की एक-सी कहानी होती है । काम करते हुए या बिस्तर पर आराम से बैठे हुए सीने में अचानक दर्द होता है । अस्पताल की भाग-दौड़ शुरू होती है, एंबुलैंस आती है, या डॉक्टर घर बुलाया जाता है । और फिर वह विश्वासपूर्वक खुद घोषणा करता है कि 'पेशेंट इज नो मोर' और फिर वह सिर झुकाकर चल पड़ता है । श्रीमती सोलोमन के साथ भी खेल की शुरूआत तो मौत ने वैसे ही की, जैसा कि करने की वह अभ्यस्त है, मगर श्रीमती सोलोमन की इच्छा शक्ति और डॉक्टरों के अथक परिश्रम ने बाजी पलट दी और मौत को करारी शिकस्त देकर जीत जिंदगी के खाते में दर्ज करा दी ।

### दस्तक मौत की

एक दिन श्रीमती सोलोमन ने अपने कंधे और बायें हाथ में तीव्र दर्द का अनुभव किया । उन्हें सीने में भी एक अजीब-सा भारीपन महसूस हुआ । उन्होंने सोचा कि यह सब सामान्य-सा दर्द होगा मगर यह दर्द कम होने के बजाय दिन-ब-दिन गाढ़ा होता चला गया । नौबत यहां तक आ पहुंची कि एक दिन दर्द से

# अंततः मृत्यु को पराजित होना पड़ा

**९८ वर्षीय श्रीमती सोलोमन को दिल का भयानक दौरा पड़ा था । चिकित्सकों ने एक तरह से उनके जीवन की आशा छोड़ दी थी । लेकिन श्रीमती सोलोमन मृत्यु के द्वार तक पहुंचकर भी वापस लौट आयीं । कारण, वे जीवन से प्यार करती थीं और उनकी इस जिजीविषा ने चिकित्सकों को भी प्रयत्नों के लिए प्रेरित किया था ।**
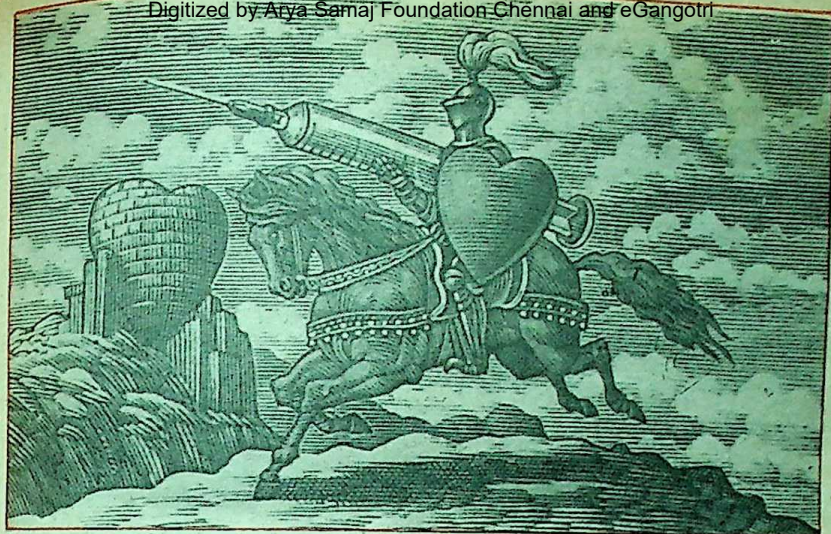
निढाल होकर श्रीमती सोलोमन ने अपने भतीजे को फोन किया और उसे अपने दर्द के बारे में जानकारी दी। उसने संयत स्वर में कहा, "मैं चालीस मील दूर से जब तक आपके पास पहुंचूंगा हो सकता है आपकी तकलीफ और बढ़ जाए। इसलिए बेहतर यह होगा कि आप तुरंत फोन करके एंबुलेंस बुलवा लें। मैं सीधे अस्पताल पहुंच जाऊंगा।"

हकीकत यह थी कि वह श्रीमती सोलोमन के दर्द की गंभीरता को भांप चुका था और एक भी पल व्यर्थ नहीं करना चाहता था। यह कोई सामान्य दर्द न होकर 'हार्ट अटैक' अर्थात दिल का दौरा था। श्रीमती सोलोमन को इसका कतई एहसास न था। वह अपने भतीजे से फोन पर कह रही थीं, "नहीं एंबुलेंस बुलाने की क्या जरूरत है। मैं ठीक-ठाक हूं और बड़े आराम से टैक्सी से अस्पताल पहुंच जाऊंगी।"

"नहीं। आप फिर घर पर ही रहें। मैं स्वयं आपको लेकर चलूंगा।" यह कहकर उसने फोन रखा, टैक्सी पकड़ी और फिर लोकल ट्रेन पकड़ने स्टेशन की ओर चल पड़ा। रास्तेभर वह सोचता रहा कि पता नहीं क्या होगा? किसी तरह विचारों के भंवर में फंसा वह श्रीमती सोलोमन के घर पहुंचा। उन्हें टैक्सी में बिठाया और 'इमरजेंसी' वॉर्ड में लेकर उन्हें दाखिल हुआ। उसने डॉक्टरों को संकेत में बताया कि संभवतः इन्हें 'हार्ट अटैक' हुआ है। डॉक्टर और नर्स फटी-फटी आंखों से श्रीमती सोलोमन को देखने लगे। अभी तक उन्होंने दिल के दौरे के मरीजों को बेहोश, मूर्छित और अस्त-व्यस्त अचेत अवस्था में ही देखा था। उनके लिए यह आश्चर्य था कि ९८ वर्ष की एक वृद्धा बिलकुल सहज ढंग से जिंदगी और मौत के खेल को तटस्थ साक्षी भाव से किस तरह देख रही है? डॉक्टरों ने वरिष्ठ डॉक्टर एलिजाबेथ रोजेनथेल को बुलाया। आते ही उन्होंने नर्स से पूछा, "इसका 'कोड स्टेट्स' क्या है?" अर्थात क्या दिल ने काम करना बंद कर दिया है? क्या उसे

फिर से 'पुनर्जीवित' किया जा सकता है । या फिर... ! ऑपरेशन थियेटर से यदि मरीज जिंदा नहीं निकलता है तो वह डॉक्टर की सबसे बड़ी हार होती है । डॉ. एलिजाबेथ रोजेनथेल ने सोचा''क्या मुझे जानबूझकर ये खेल खेलना चाहिए, जिसमें 'हार' खेल शुरू होने से पहले ही निश्चित है ?'' अंतर्द्वंद्व के ज्वार-भाटों में डूबती-उतराती डॉक्टर रोजेनथेल स्ट्रेचर पर लेटी हुई श्रीमती सोलोमन को देखने लगीं । उनकी आंखों पर सन पचास की डिजाइन का चश्मा लगा हुआ था और थके चेहरे पर एक अजीब-सी मुसकान थी । पता नहीं उनके चेहरे को देखकर डॉक्टर रोजेनथेल की आंखों में विश्वास की एक चमक सहसा क्यों जगमगा उठी । वह सधे हुए कदमों के साथ श्रीमती सोलोमन की ओर बढ़ीं । नर्सें उनके हृदय की धड़कनों को नापने के लिए 'कार्डियोग्राम' ले रही थीं और सांस सही ढंग से ली जा सके, इसलिए श्रीमती सोलोमन के फेफड़ों तक प्लास्टिक की नलियों के द्वारा नाक के जरिये ऑक्सीजन पहुंचाने में गंभीरता से जुटी हुई थीं ।

वरिष्ठ डॉक्टर रोजेनथेल ने श्रीमती सोलोमन के पास पहुंचकर जरा जोर से पूछा, ''कहिए, श्रीमती सोलोमन '' अगले क्षण अपनी तेज आवाज पर उन्हें शरम-सी आयी । कारण श्रीमती सोलोमन तुरंत उठ बैठीं । इसी बीच नर्स ने उन्हें बताया, ''डॉक्टर, मैंने सारी जांच कर ली है । ये बिलकुल सामान्य हैं और आप 'आपरेशन' से पहले इनसे केसहिस्ट्री जान सकते हैं ।''

डॉ. रोजेनथेल ने श्रीमती सोलोमन से पूछा कि उन्हें ये तकलीफ कब महसूस हुई ? श्रीमती सोलोमन ने बताया, ''चौबीस घंटे पहले जब मैं बिस्तर में थी, मुझे अजीब-सी बेचैनी हुई । फिर भी मैंने अपना घर साफ किया, और सामान खरीदने दुकान भी गयी । उन्होंने यह भी बताया कि वह आज तक कभी बीमार नहीं पड़ीं और आज से पहले उन्होंने अस्पताल का मुंह तक नहीं देखा । और न कभी उन्हें हार्ट अटैक ही हुआ है । हां ! नब्बे वर्ष की उम्र से जरूर एड़ियों पर सूजन आने लगी है । डॉक्टर रोजेनथेल ने श्रीमती सोलोमन से पूछा, उन्हें कितना दर्द अनुभव हुआ । अर्थात एक से दस के बीच वे अपने दर्द की तीव्रता को बताएं । जितने अंक अधिक, उतना ही दर्द ज्यादा । श्रीमती सोलोमन ने बताया, 'सुबह तो आठ था पर अब पांच है ।' अर्थात अब दर्द कम है । डॉक्टर रोजेनथेल ने सोचा, 'ऑक्सीजन ने श्रीमती सोलोमन की (मांसपेशियों) को कुछ हद तक तो आराम दिया है । वे अभी यह सोच ही रही थीं कि श्रीमती सोलोमन ने प्रश्न पूछकर उन्हें अपने से जोड़ लिया, ''हेलो डॉक्टर ! मेरे कारण आपको कोई तकलीफ तो नहीं हुई ?''

इसी बीच नर्स कार्डियोग्राफ ले आयी । डॉक्टर रोजेनथेल ने उसका अवलोकन किया तो उनके चेहरे पर परेशानी के भाव डूबने-उतराने लगे । कार्डियोग्राफ से पता चल रहा था कि उन्हें गंभीरतम हार्टअटैक हुआ है । इसमें हृदय की भित्ति की प्रत्येक मांसपेशी प्रभावित होती है । यह तो श्रीमती सोलोमन की उम्र के आधी उम्र के लोगों के लिए भी जानलेवा सिद्ध होता है । पता नहीं, श्रीमती सोलोमन का क्या होगा ? तभी श्रीमती सोलोमन को पुनः दर्द महसूस हुआ । दर्द इस बात का सबूत था कि

हृदय कोशिकाओं में पर्याप्त खून और ऑक्सीजन की मात्रा नहीं पहुंच पा रही है । जैसे ही हार्ट अटैक होता है कुछ कोशिकाएं मर जाती हैं, और फिर दर्द समाप्त हो जाता है । मगर हृदय का यह भाग फिर हमेशा के लिए मृत हो जाता है और 'ब्लड पंपिंग' में बिलकुल भाग नहीं ले पाता और शरीर के अन्य भागों में न रक्त पहुंच पाता है न उसे यह प्राप्त कर पाता है । फलतः व्यक्ति में एक स्थायी थकान घर कर जाती है और जरा से श्रम में ही सांस फूल जाती है । डॉक्टर रोजेनथेल ने श्रीमती सोलोमन को नाइट्रोग्लीसरीन की गोलियां दी । उनका तत्काल प्रभाव यह होता है कि यह 'कारोनरी आर्टरीज' तथा रक्त संवाहिकाओं की परिधि को थोड़ा बढ़ा देती हैं जिससे रक्त प्रवाह तेज हो जाता है और रक्त के तेज बहाव से भीतर जमा थक्का हट जाता है । हृदय में निर्बाध रक्त प्रवाहित होने लगता है ।

"अब आप कैसा महसूस कर रही हैं श्रीमती सोलोमन ?"

"मैं ठीक हूं" श्रीमती सोलोमन ने फीकी मुसकराहट के साथ उत्तर दिया । कार्डियोग्राफ अभी भी यह दर्शा रहा था कि कोई खास फायदा नहीं हो रहा है दवाइयों का । यह तो श्रीमती सोलोमन की अदम्य इच्छा शक्ति ही है, जो वह सब कुछ सहकर भी मुसकरा रही हैं ।

"इन्हें इंट्रावीनस इंजेक्शन द्वारा तुरंत बीटा ब्लौकर देना ठीक रहेगा ।" डॉक्टर रोजेनथेल ने नर्स से कहा ताकि दवाई सीधे रक्त प्रवाह में जाकर अपना असर जल्दी और प्रभावी ढंग से दिखा सके ।

नर्स दवा लेने चली गयी । डॉक्टर

रोजेनथेल के माथे पर पसीने की बूंदें झिलमिला उठी थीं । इतनी ज्यादा उम्र की महिला को यह दवा कुछ असर दिखा पाएगी या नहीं ? यही चिंता उनके मन में तैर रही थी । और अपने आसपास मंडराते जीवन संकट को नकार कर श्रीमती सोलोमन अब भी चेहरे पर एक निश्चिंत मुसकान लिए लेटी हुई थीं । इस बीच नर्स ने इंजेक्शन दे दिया था, मगर अब भी उसकी हालत में कोई खास सुधार नहीं हुआ था । कार्डियोग्राफ अब भी चिंताजनक सूचनाएं ही दे रहा था ।

डॉक्टर रोजेनथेल के लिए अब यह एक बहुत बड़ी चिंता का विषय बनता जा रहा था कि अब वे क्या करें ? क्या श्रीमती सोलोमन को चुपचाप मौत के शिकंजे में फंसने के लिए विवश छोड़ दें या फिर उनकी इच्छा शक्ति के साथ अपने कुछ और, प्रयास भी जोड़ें । आधिकारिक रूप से अब कोई और उपचार शेष नहीं रह गया था । केवल एक ही नाम बार-बार डॉक्टर के मानस पटल पर उभर रहा था टी.पी.ए. अर्थात 'टिशू प्लाजमीनोजन एक्टीवेटर', जिसका प्रयोग अमरीका के कुछ वैज्ञानिकों ने लगभग साढ़े तीन वर्ष पहले किया था । मगर डॉक्टर रोजेनथेल को भय था कि इतनी 'हार्ड पोटेंसी' की दवा का तेज असर श्रीमती सोलोमन के ब्रेन हैमरेज का कारण ही न

बन जाए । या फिर कोई और 'काम्प्लीकेशन' न हो जाए । ये क्षण डॉक्टर के अंतर्द्वंद्व के क्षण थे । प्रयास निरर्थक हुए तो अनजाने ही वह इस वृद्धा की मौत का कारण बन जाएंगी और यदि प्रयास ही नहीं किये तो श्रीमती सोलोमन को बचाने के लिए तो यह उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा के लिए एक बदनुमा प्रश्न चिह्न बन जाएगा । उन्हें लगा कि समय तेजी से फिसलता जा रहा है और क्या करना है, इसका निर्णय तुरंत ही लेना चाहिए । मन में वह प्रश्न भी उठ रहा था, जो उन्होंने श्रीमती सोलोमन को नर्स द्वारा लाते समय उनसे पूछा था, "क्या इतनी बूढ़ी महिला को हम बचा पाएंगे ?" तब उन्हें नर्सों के प्रयास निरर्थक से लगे थे । मगर अब डॉक्टर रोजेनथेल को न जाने कौन-सा मोह हो गया था श्रीमती सोलोमन से कि वह उन्हें हर कीमत पर बचा लेना चाहती थीं । हो सकता है यह श्रीमती सोलोमन की जुझारू जिजीविषा हो जिससे वे इतनी प्रभावित हुई हों या यह उनका स्वयं का कर्त्तव्य बोध भी था जो उन्हें ललकार रहा था । यह दवा हार्टअटैक के चार घंटे के भीतर दे दी जानी चाहिए अन्यथा एक कठोर थक्का उस धमनी में बन जाता है जो रक्त को सीधा हृदय में ले जाती है और जिसका परिणाम होता है—मृत्यु ।

समय अब बहुत ही कम रह गया था और प्रयोंग करने से पहले मरीज से स्वीकृति लेना भी जरूरी होता है, पता नहीं वह इस बारे में क्या उत्तर दे । साहस बटोरकर डॉक्टर रोजेनथेल ने श्रीमती सोलोमन से कहा, "श्रीमती सोलोमन, आपको मालूम है कि आपको बड़ा गंभीर 'हार्टअटैक' हुआ था ? हमारी सारी प्रचलित दवाएं भी बेअसर सिद्ध हुई हैं ।"

"तो क्या कोई उम्मीद नहीं है ?" श्रीमती सोलोमन की आंखों से आंसू की एक धारा लुढ़ककर गाल तक आ गयी थी ।

"है । एक कोशिश और बच रही है । मुझे विश्वास है कि ईश्वर की कृपा से उसमें हम अवश्य सफल होंगे । हो सकता है, आपको कुछ ज्यादा दिन तक अस्पताल में ही रहना पड़े । हम आपको मरने नहीं देंगे । यदि आप मर भी गयीं तो आपके हार्ट को दुबारा ठीक करके आपके शरीर में फिट कर देंगे और आपको बचा ही लेंगे ।" डॉक्टर रोजेनथेल ने आनेवाले संकट की सूचना देते हुए भी श्रीमती सोलोमन के मन में आशा की एक उम्मीद जगा ही दी ।

"आप कुछ भी कीजिए डॉक्टर साहब । मैं जिंदगी को बहुत प्यार करती हूं मेरी जिंदगी को आप किसी भी तरह बचाएं । आप हर तरह से स्वतंत्र हैं ।"

इस बीच प्रसिद्ध कॉर्डियोलॉजिस्ट डॉ. रेनाल्ड भी वहां आ पहुंचे । आते ही उन्होंने पूछा, "क्या करने जा रही हो अब डॉक्टर ?"

"लड़खड़ाते शरीर में जिंदगी उतारने की एक और कोशिश 'टी.पी.ए.' का इंजेक्शन ।" यह कहकर डॉ. रोजेनथेल ने नर्स को तुरंत कहा कि जीवन दायनी गोली तुरंत दागी जाए श्रीमती सोलोमन के शरीर में । एक नर्स ने इंट्रावीनस ट्यूब श्रीमती सोलोमन की बांह में लगा दी और दूसरी नर्स ने टी.पी.ए. का घोल तैयार कर बोतल में भर दिया । जैसे ही दवा ने श्रीमती सोलोमन की धमनियों में उतरना शुरू किया

उस क्षण से ही डॉक्टर और नर्स कौतुहल के साथ किसी आश्चर्य की प्रतीक्षा करने लगे थे।

डॉक्टर रोजेनथेल ने श्रीमती सोलोमन से कहा, "दर्द मापक में दर्द सूचांक देखें श्रीमती सोलोमन।"

"एक और दस।"

श्रीमती सोलोमन के उत्तर से सब निराश हो गये।

"फिर देखिए।"

"तीन और तीन" सोलोमन ने थके स्वर में कहा। सभी लोगों के चेहरे निराशा से लटक गये। लेकिन बीस मिनट बाद ही श्रीमती सोलोमन ने तकिये से सिर उठाया और लगभग खुशी से चहकती हुई बोली, "लगता है, दर्द चला गया। मैं बिलकुल ठीक हूं।"

नर्स ने कार्डियोग्राफ देखा। सामान्य संकेत उस पर तैरने लगे थे। दर्द का पहाड़ पिघल चुका था। कुछ दिन सावधानी के बतौर श्रीमती सोलोमन को 'इंटेसिव केयर यूनिट' में रखा गया। रक्त और हृदय की धड़कनों की नियमित जांच की गयी। एक बहुत बड़ी विपत्ति अपने हलके से पद्‌चिह्न को छोड़कर विदा हो गयी थी। समय के पद्‌चिह्न भी मिट गये। जिंदगी फिर एक बार मौत को हराकर जीत गयी थी। ९८ वर्षीया श्रीमती सोलोमन आज भी घर की सफाई करती या फिर किसी दुकान में खरीदारी करती देखी जा सकती हैं।

**प्रस्तुति : मधु मिश्रा**

# तुम और मैं

तुम कुछ भी न दो मुझको
केवल अपनापन दे दो
तुम्हें मैं,
अपना सर्वस्व निछावर कर दूंगी
तुम्हारे पथ की धूल को चंदन समझकर
माथे पर अंकित कर लूंगी
एक बार, केवल एक बार,
अपनी चितवन दे दो
तुम्हें मैं अपना ऐश्वर्य
अपनी निधि, अपनी
पूजा, साधना अर्पित कर दूंगी
तुम अपनी भटकन,
अपनी उदासी अपनी
तन्हाई दे दो
मैं तुम्हें सब कुछ निछावर कर दूंगी।

खालीपन स्मृति यादें,
सभी मानस पटल पर
अंकित हैं
दीपक की ज्योति बनकर
आज भी टिमटिमा रही हैं।
उसी के प्रकाश से
तुम्हें आलोकित कर दूंगी
एक बार केवल एक बार
सान्निध्य दे दो
तुम्हें मैं वटवृक्ष बनकर
आच्छादित कर दूंगी

**—मोहिनी वाजपेयी**

डी-५, माडल टाउन,
दिल्ली-११०००९

# काल और प्रेम

वज्र धातु हो, या प्रस्तर हो, धरणी हो या दुर्दम
सागर,
ये हैं नतशिर सभी सामने क्रूर काल के
तो कैसे वह रूप सहेगा उस प्रहार को
जिसका लघु अस्तित्व फूल-सा मृदु-कोमल है
मधु-वासंती वात, आह ! कैसे झेलेगी
बर्फीली ऋतुओं के ध्वंसक आघातों को
जब अभेद्य चट्टान, वज्रदृढ़ लौहद्वार ये
होते विवश विलीन काल के खर प्रवाह में
कैसे रक्षित रह पायेगा बंद काल की मंजूषा में
यह अमूल्य वरदान प्रकृति का—दिव्यरत्न यह
उसके बढ़ते कदम कौन कब रोक सकेगा
मधुर रूप का नाश क्रूर उसके हाथों से
केवल एक उपाय
अमिट लिपि में अंकित वह, मेरे निश्छल अमर प्रेम
का
मोहक जादू

—शेक्सपियर

# प्रेम और मैत्री

मुझे विदा मत करो क्योंकि तव तृषा बुझ गयी
और सभी कुछ आज तुम्हें बासी लगता है ।
अभी कुछ समय और पास रहने दो मुझको
तब मेरी भी प्यास स्वयं ही बुझ जाएगी ।
प्रेमी यदि बन सको न, मात्र सुहृद बन जाओ ।
मैत्री वह संबंध जो कि होता जीवन में—
जबकि भोग से तृप्त प्रेम का क्षय हो जाता ।

—हाइने (जरमन कवि)

# नेत्रहीन कवि का उपालंभ

जब मैं यह सोचता कि मेरी ज्योति खो गयी
किंतु आयु है शेष अभी आधी से ज्यादा,
और दिव्य मेरी प्रतिभा यह, जो न मरेगी कभी
मृत्यु के अंतिम क्षण तक,
यों ही निष्क्रिय पड़ी हुई है—
यद्यपि मेरे प्राण व्यग्र हैं उसके द्वारा, सृष्टा का
अर्चन करने को ।
जिससे हो दायित्व पूर्ण मेरे जीवन का—
और न दोषी बनकर प्रभु के सम्मुख जाऊं ।
तो मेरा अविवेक प्रश्न करता है मुझसे :
"दृष्टिहीन जब किया मुझे मेरे सृष्टा ने,
फिर क्यों आशा करता है मुझसे अर्चन की ?"
किंतु तभी मेरा विवेक जाग्रत हो कहता—
"बंद करो यह उपालंभ । सृष्टा महान है ।
नहीं अपेक्षा करता है कोई भी हमसे—
और नहीं प्रतिदिन मांगता है वह कुछ भी ।
वहन कर रहे जो प्रसन्न हो उसका शासन
वे ही निष्ठावान भक्त सच्चे हैं उसके ।
उसका है ऐश्वर्य विपुल, उसके इंगित पर
सदा सहस्रों देवदूत उड़ते रहते हैं—
भूमंडल पर और सिंधु के वक्षस्थल पर ।
मौन प्रतीक्षा भी प्रभु की सात्विक पूजा है ।

—जॉन मिल्टन

# प्रकाश तले

अंधेरे के पीछे
आक्रामक प्रकाश बोला
'अब कहां चले . . .
तुम्हारे पांव
अब कहीं नहीं जमने दूंगा'
दीपतल में चुपचाप बैठे अंधकार ने
नम्रता से कहा
'अब कहां जाना है . . .
यहीं,
आपके चरणों में मेरा निवास है . . . ।'

# वर्तमान

मेरी आंखों से
मन ने पूछा
'एक जीवन के हजार रूप
कैसे ?
तुम्हारी इस छोटी-सी परिधि में
समा जाते होंगे ?'
आंख ने कहा
'मैं सिर्फ वर्तमान क्षण
ही
देखती और वही समाहित करती हूं
इसलिए हर क्षण मेरा है ।'

**दिवंगत कवियित्री**

मंजुला कादम्बिनी परिवार की लेखिका थीं लेखन के अतिरिक्त वे समाज सेवा में भी सक्रिय थीं । गत वर्ष उनका सिरसा में असामयिक निधन हो गया । स्व. मंजुला की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर यहां हम उनकी कुछ अप्रकाशित कविताएं प्रकाशित कर रहे हैं ।

# परत का दर्द

परत-दर-परत
कुछ नहीं होता
परत के बाहर बहुत कुछ होता है
परंतु
आश्चर्य है
अंदर ना बाहर
परत को कोई दर्द नहीं होता
लेकिन
अंदर और बाहर की भावनाएं
परत के दर्द से
भरी रहती . . . हैं . . . !

—मंजुला

अपनी व अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हर व्यक्ति को, चाहे वह शहरी हो या ग्रामीण, शिक्षित हो या अशिक्षित, रोजगार की आवश्यकता होती है । काम सार्वजनिक क्षेत्र में हो या निजी क्षेत्र में, उसे साक्षात्कार की अग्निपरीक्षा से गुजरना ही पड़ता है । नौकरी पाने के लिए तो साक्षात्कार का उसे सामना करना ही पड़ता है । यदि वह अपना रोजगार खोल ले तो वह स्वयं तो इससे बच सकता है पर रोजगार के फलने-फूलने प उसे अन्य कर्मचारियों की नियुक्ति हेतु स्वयं इंटरव्यू लेने होंगे । थोड़े समय में प्रत्याशी की व्यवहार कुशलता, वाकचातुर्य, बुद्धि लब्धि, पहनावा, विषय की पकड़ तथा प्रत्युत्पन्नमति जानने का एकमात्र तरीका साक्षात्कार ही है ।

साक्षात्कार में वही पूछा जाता है कि जिसे आपने किसी स्तर पर पढ़ा है या आपसे उसके जांनने की आशा की जाती हैं । मोटे रूप में इंटरव्यू शालीनता के साथ आपसी विचारों का आदान-प्रदान है तथा इससे चयन मंडल प्रत्याशी के व्यक्तित्व का आकलन करता है ।

स्कूल तथा कॉलेज की शिक्षा पाने के बाद प्रत्याशी कुछ साहस अवश्य ही बटोर लेता है, फिर भी अनजान लोगों के सामने होना, उनके प्रश्नों के उत्तर देना, हर प्रत्याशी के लिए आसान नहीं होता है, न्यूनाधिक रूप से उसका आत्मविश्वास डगमगाने लगता है । पर इसके दूसरी ओर समाज के हर व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से काम पड़ता ही रहता है तथा अपनी बातचीत से संपर्क में आनेवाले को प्रभावित कर कार्य सिद्धि प्राप्त करता है । ऐसी स्थिति में इंटरव्यू को दिनचर्या का एक सामान्य भाग मानना चाहिए ।

प्रत्याशियों को इस तथ्य से परिचित होकर विश्वास बटोरना चाहिए कि किसी एक पद के लिए कितने गुने अधिक प्रत्याशी होते हैं, पर

# सफल इंटरव्यू कैसे दें ?

**• डॉ. जमनालाल बायती**

*प्रत्याशियों को इस तथ्य से परिचित होकर विश्वास बटोरना चाहिए कि किसी एक पद के लिए आज कितने गुने अधिक प्रत्याशी होते हैं, पर उन्हें ही इंटरव्यू के लिए आमंत्रित किया गया है, क्या यह सुखद पहलू नहीं है ? आवेदन-पत्र में दी गयी जानकारियों के आधार पर आपको इंटरव्यू के लिए पात्र समझा गया है ।*

उन्हें ही इंटरव्यू के लिए आमंत्रित किया गया है, क्या यह सुखद पहलू नहीं है ? आवेदन-पत्र में दी गयी जानकारियों के आधार पर आपको इंटरव्यू के लिए पात्र समझा गया है।

यदि आपको लिखित परीक्षा के बाद साक्षात्कार के लिए बुलाया है तो यह और सकारात्मक बिंदु आपको जान लेना चाहिए कि आपके विषय के ज्ञान के स्तर के बारे में चयन मंडल संतुष्ट है पर वह आपसे कुछ अतिरिक्त सूचनाएं चाहता है जिन्हें जानने के लिए आपको बुलाया गया है, इनमें आपका व्यक्तित्व, मौखिक योग्यता तथा कार्य व्यवहार भी आ सकता है। ऐसा साक्षात्कार निश्चित रूप से आपके विशिष्ट ज्ञान या अध्ययन के विषय पर केंद्रित होगा। यदि आप स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण हैं तो आपसे चयन मंडल अपनी रुचि का तथा सर्वाधिक अच्छी तैयारी वाला प्रश्नपत्र भी पूछ लेते हैं तथा आपका इंटरव्यू उसी पर केंद्रित होता है। आपको चयन मंडल को विश्वास दिलाना है कि आप चयन के बाद नियोक्ता के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे।

सामान्यतया प्रत्याशियों को दो भागों में बांटा जा सकता है :

प्रथम—अनुभवहीन, संस्थान की शिक्षा पूरी करने के ठीक बाद तथा द्वितीय— कार्य का अनुभव प्राप्त प्रत्याशी।

अनुभवहीन प्रत्याशियों को प्रायः उनके अध्ययन के विषयों से संबंधित तथा सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछे जाने की अपेक्षा की जाती है। अतः उनसे दैनिक जीवन की घटनाओं के निकट संपर्क में रहने की अपेक्षा की जाती है, दैनिक पत्रों के संपादकीय विभिन्न समस्याओं की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं, इनसे लाभ उठाया जाना चाहिए। रुचि के विभिन्न समाचारों की कटिंग करके संग्रह करते रहिए, उन्हें क्रमवार जमा लीजिए, इनसे समय पर लाभ उठाना चाहिए। इन समाचारों में नये आविष्कार, नये नियम, नये कानून, विश्व के चुनाव, केंद्र तथा राज्य के प्रमुख अधिकारी, महान विभूतियां— पुस्तकें प्रसिद्ध पर्यटन स्थल, लोकसेवा आयोग की परीक्षाओं के समाचार आदि प्रमुख हैं।

दूसरे वर्ग के प्रत्याशियों को, चूंकि वे पूर्व से

इंटरव्यू में सफल होना, कभी-कभी डिग्री पाने के लिए दी गई परीक्षाओं से भी कठिन होता है।

कार्य कर रहे हैं अतः कार्य निर्वाह संबंधी प्रश्नों के पूछने की ही अधिक संभावना रहती है । आपके वर्तमान पद के कर्त्तव्यों तथा उसके निर्वहन के प्रति आपका रचनात्मक एवं सकारात्मक दृष्टिकोण होना चाहिए, तभी आप अपने साक्षात्कार में विजयी हो सकेंगे ।

आपकी शैक्षिक संप्राप्तियां उच्च स्तर की हैं, आकर्षक व्यक्तित्व है, स्पष्ट सोच-विचार के धनी हैं, बिना अटके या हकलाये वार्तालाप कर सकते हैं, तो आप अपने इंटरव्यू के प्रति आश्वस्त हो सकते हैं । क्लर्क ग्रेड, बैंकिंग, वनपाल तथा अन्य विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए गाइड्स आती हैं, उनका अध्ययन कीजिए, आपका ज्ञान तथा साहस बढ़ेगा, कुछ संस्थान सायंकालीन (या दिन में भी) कक्षाएं लगाते हैं तो उनमें भरती होकर या पत्राचार पाठ्यक्रमों से ही लाभ उठाया जा सकता है ।

**सतत तैयारी**

इंटरव्यू के निकट आने पर तैयारी कर लेंगे, यह विचार हानिकारक है । निरंतर तैयारी कीजिए, तैयारी में शिथिलता न आने दीजिए, निरंतर तैयारी करते रहनेवाला प्रत्याशी ही, अपनी सूचनाएं अद्यतन रखकर, सहज होकर इंटरव्यू के समय प्रभावी उत्तर दे सकता है ।

**पूर्वाभ्यास**

आप साक्षात्कार का पूर्वाभ्यास भी कर सकते हैं । एकांत में या कमरा बंद कर स्वयं से प्रश्न पूछिए तथा उत्तर भी दीजिए । पूछे जानेवाले सभी संभावित प्रश्नों का अनुमान लगा लीजिए, उनकी तैयारी कीजिए तथा उनके सबसे अच्छे उत्तर भी तैयार कर लीजिए, मस्तिष्क में बिठा लीजिए । यदि इस पूर्वाभ्यास में कोई अन्य व्यक्ति इंटरव्यू ले सकें, तो इससे आपकी हिचकिचाहट या झिझक दूर होगी और आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा ।

**समय की पाबंदी**

साक्षात्कार के लिए नियोक्ता के पास न तो आप विलंब से पहुंचें तथा न ही बहुत जल्दी । इससे आपके समय की पाबंदी के गुण का [illegible] होता है । यदि आप लापरवाही के साथ बहुत ही विलंब से पहुंचे तो संभव है, आपका नाम सूची से हटा दे या मिलने पर अगले दिन के लिए अनुसूचित कर लें । इससे आपको 24 घंटे और साक्षात्कार के तनाव से गुजरना पड़ेगा ।

**कोई प्रश्न निरर्थक नहीं होता**

कई बार नियोक्ता छोटी-छोटी बातें पूछते हैं, उनका सटीक एवं उपयुक्त उत्तर दिया जाना चाहिए, जिस पद या संस्था या विभाग में, आप इंटरव्यू देने जा रहे हैं उसका विस्तृत ज्ञान आपको होना चाहिए— ऐसा न होने पर बड़ी हानि हो सकती है ।

**चयन मंडल को भ्रमित न करें**

कई बार किसी प्रश्न का उत्तर आप देना शुरू करते हैं तथा उत्तर पूरा होने के पूर्व ही दूसरा प्रश्न पूछ लिया जाता है । यह असामान्य नहीं है, आप इसके लिए तैयार रहिए । चयन मंडल के पास बहुत अधिक समय नहीं है । वे आपकी तत्परता के साथ ही उत्तरों की गुणवत्ता पर केंद्रित रहते हैं । चयन मंडल में मनोवैज्ञानिक तथा विषय विशेषज्ञ भी होते हैं उन्हें गुमराह या भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए ।

यदि चयन मंडल के प्रश्न पूछनेवाले सदस्य

**अपनी शिक्षा तथा ट्रेनिंग संबंधी सभी प्रमाणपत्रों को साफ स्वच्छ आवरण या पंजिका में क्रमवार रखिये, अपनी योग्यताएं आपको याद रखनी हैं । अच्छे प्लास्टिक के आवरण में रखे साफ-सुथरे प्रमाणपत्र आपका स्वच्छता प्रेम तथा टेबल पर वस्तुओं की रख-रखाव के प्रति तत्परता के सूचक हैं ।**

उत्तर नहीं भी जानते हैं तो भी वे साक्षात्कार कक्ष छोड़ने के बाद आपस में आपके उत्तरों पर विचार-विमर्श करते हैं जिसमें आपके उत्तरों पर गुणावगुण की दृष्टि से विचार होता है तथा सहमति पर पहुंचते हैं । इसलिए अच्छा यही होगा कि आपके उत्तर सहज, सही, स्पष्ट तथा पूर्ण हों ।

### प्रत्याशी की पोषाक आदि

साक्षात्कार में प्रस्तुत होने के लिए पद के उपयुक्त पोषाक पहनिए । डॉक्टर, इंजीनियर, अधिकारी या एक्ज़ीक्यूटिव पद के लिए आप आयु, रूप-रंग तथा शरीर के आकार के अनुरूप पोषाक पहनें । कीमती कपड़े होना जरूरी नहीं है, पर जरूरी है कपड़े की सार संभाल, उनका रख-रखाव तथा पहनने का तरीका, जिससे आप चुस्त व स्फूर्त लगें । यदि भारी मशीनों पर काम करना हो तो तंग कपड़े चल सकते हैं ।

साक्षात्कार के समय आप चप्पल या सेंडिल न पहनें तो अच्छा रहेगा । जूते ही पहनिए पर मोजे भी, वे भी उपयुक्त रंग में पहनना न भूलें । जूतों पर पालिश का तो आप ध्यान रखेंगे ही । एक सावधानी और बरतनी है वह यह कि आप चूं चूं या र र की आवाज करनेवाले जूते न पहनें, इसे शालीनता नहीं माना जाता ।

### व्यवस्थित अभिलेख, रेकॉर्ड

अपनी शिक्षा तथा ट्रेनिंग संबंधी सभी प्रमाणपत्रों को साफ स्वच्छ आवरण या पंजिका में क्रमवार रखिये, अपनी योग्यताएं आपको याद रखनी हैं । अच्छे प्लास्टिक के आवरण में रखे साफ-सुथरे प्रमाणपत्र आपका स्वच्छता प्रेम तथा टेबल पर वस्तुओं की रख-रखाव के प्रति तत्परता के सूचक हैं ।

### शालीन व्यवहार

इंटरव्यू के दौरान आपके कार्यव्यवहार से ही चयन मंडल के सदस्य आपके व्यक्तित्व का अनुमान लगाते हैं । धैर्यपूर्वक शिष्टाचार के साथ दरवाजा खोलें तथा स्वीकृति मिलने पर ही अंदर प्रवेश करें, मुख्य व्यक्ति को नमस्कार करें पर इस तरह से कि अन्य व्यक्तियों के प्रति आपकी उदासीनता न झलके । अनुमति मिलने पर ही आसन ग्रहण करें तथा धन्यवाद भी कहें । कुरसी या टेबल के नीचे पांवों से कोई हरकत न कीजिए, न अंगूठे से कालीन को खोदें या मोड़ें, न ही लकीरें खींचें, न ही आप हाथ मलें । ऐसा न लगे कि आप गाढ़े तनाव या दबाव में हैं, विश्राम की मुद्रा ही ठीक रहती है । यदि सामने टेबल है तो उस पर कोहनियां न टिकायें, न ही मुंह नीचा कर टेबल पर ही देखते रहें तथा न ही कंधे झुकायें ।

इंटरव्यू के समय सहज रहिए । बार-बार कोट के बटन देखना या दाढ़ी पर हाथ फेरना आपकी घबराहट या अस्थिरता बताता है, इससे बचिये । इंटरव्यू के दौरान शुरू से अंत तक आपके चेहरे से आत्मविश्वास फूटना चाहिए । व्यवहार में देखा जाता है कि प्रत्याशी कई बार प्रश्नों का उत्तर तो दे रहे हैं पर उनका ध्यान या तो दीवार पर लगी घड़ी या चित्र की ओर है या फिर खिड़की की ओर है । इससे प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है कि आप इंटरव्यू के प्रति गंभीर ही नहीं हैं ।

चयन मंडल के सदस्य पूरा प्रश्न बोल लें तभी उत्तर दीजये, उन्हें बीच में न टोकिये । यदि किसी प्रश्न के उत्तर में कुछ अधिक बोलना है तो आप लगभग सभी सदस्यों की ओर देख लीजिए । न तो आप इतना धीमे बोलें कि कोई सुन ही न पाये तथा न ही इतना जोर से बोलें कि उन्हें धीमे बोलने के लिए आपको कहना या संकेत करना पड़े । शब्दों का उच्चारण साफ तथा सही तो आप करेंगे ही । यदि आपको कोई प्रश्न अप्रासंगिक या गलत लगे तो भी चयन मंडल से आपको बहस या वादविवाद करने की जरूरत नहीं है । इससे सदैव बचिये ।

**विश्वास के साथ उत्तर पर धैर्यपूर्वक आग्रह**

पूर्ण रूप से आश्वस्त होने पर, सही उत्तर जानते हुए कभी अपना उत्तर न बदलिये यद्यपि चयन मंडल आपसे ऐसा करवाने का प्रयास करता है । पर भूल ज्ञात होने पर तुरंत क्षमा मांग लीजिए, पर यह भी याद रखिये कि बार-बार ऐसा न हो अन्यथा आपको ढुलमुल नीतिवाला या अस्थिर निश्चयवाला माना जाएगा, जो आपके हित में नहीं है । यदि आप किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकते तो शांत रहिये, याद रखिए— हर आशार्थी हर प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता । यदि ऐसी स्थिति आती है तो स्पष्ट मना कर दीजिए कि "आपके मागदर्शन में कार्य करते हुए इस पर और ज्ञान प्राप्त कर मुझे प्रसन्नता होगी ।" कहने का तात्पर्य यह है कि मिलनेवाली नौकरी या कार्य के प्रति आपके उत्तरों से आपकी पूर्ण रुचि प्रकट हो ।

**कुछ सावधानियां**

इंटरव्यू के दिन ही बाल न बनवायें, इससे विपरीत प्रभाव पड़ता है । पर हां, बाल तथा दाढ़ी काफी बढ़े हुए भी न हों, जो आपकी लापरवाही के सूचक हो सकते हैं । इससे भी चयन मंडली प्रतिकूल राय बना सकता है। शरीर रचना जैसी भी है इसे आप नहीं बदल सकते पर प्रकृति द्वारा दिये शरीर को सुरुचिपूर्ण ढंग से रखकर आप बाह्य व्यक्तित्व में निखार तो ला ही सकते हैं ।

आवाज का उतार-चढ़ाव, विषय का ज्ञान, पद के कर्त्तव्य, प्रसन्नचित चेहरा तथा आदरयुक्त शब्दावली पर तो आप अधिकार कर ही सकते हैं, उठने-बैठने का तरीका, आदरयुक्त संबोधन, आपसी व्यवहार, बात करने के शालीन तरीके आदि का ध्यान रखकर आप चयन मंडल के सदस्यों का हृदय जीत सकते हैं । यह सही है कि इन गुणों का एक दिन में विकास नहीं हो सकता, निरंतर अभ्यास से ये गुण अर्जित किये जा सकता हैं तथा सीख लेने पर स्वभाव बन सकता है ।

अच्छा यह होगा कि खुद बोलने के बजाय आपका व्यक्तित्व आपके बारे में बोले । इंटरव्यू में आपकी सफलता ही इस पर निर्भर करती है।

कि आप चयन मंडल को कितना प्रभावित कर पाते हैं।

## चयन मंडल की अपेक्षाएं

* चयन मंडल यह आशा करता है कि प्रत्याशी सहकर्मियों से सहयोग प्राप्त करने में सक्षम है तथा समय आने पर उनका मार्गदर्शन भी कर सकता है। प्रत्याशी को जो भी काम या उत्तरदायित्व सौंपा जाए, दूसरों की सहायता से निपटा देगा। अर्थ यह कि प्रबंधकों या मालिकों के विचारों को कार्य रूप में परिणित कर सकेगा।

* प्रत्याशी कम-से-कम शब्दों में पूरी बात कह सके, अपनी बाचतीत में सार्थक शब्द प्रयोग करे तथा अनावश्यक बातों से बच सके। प्रत्याशी जल्दबाजी में कही हुई बात को चतुराई से संभाल लेने या सही कर लेने अर्थात् प्रत्युत्पन्न मति का धनी, निरर्थक वाद-विवाद न करने तथा सजग रहते हुए स्वाभाविक उत्तर देनेवाला चयन मंडल पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। उसकी बातचीत से दुविधा या अविश्वास या असमंजस नहीं झलकना चाहिए।

* प्रत्याशी विषम परिस्थितियों एवं कठिनाइयों में तापमान या धैर्य न खोये, वह विचारों में परिपक्व हो, नयी जिम्मेदारियों को संभालने की क्षमता, प्रसन्नतापूर्वक दूसरों की सहायता करने का साहस, सफलता मिले या न मिले पर उसका तन-मन से कार्य में जुटे रहना, असफलता मिलने पर कारणों का विश्लेषण कर, उनसे भविष्य में बचने का निश्चय करनेवाला प्रत्याशी चयन मंडल को रचनात्मक ढंग से प्रभावित कर लेता है तथा चयनमंडल का निर्णय ऐसे प्रत्याशी के पक्ष में सकारात्मक एवं अनुकूल बन जाता है।

* भावी पद के लिए आवश्यक गुण, शोधकर्ता के रूप में असाधारण योग्यता, प्रबंधक के रूप में कठिनाइयां हल करने की मौलिक सूझबूझ, कर्म, संस्थान या संगठन में अधिक समय तक रहने की इच्छा वाला कोई भी प्रत्याशी चयन मंडल के सदस्यों का मन जीत लेता है।

* निरंतर इंटरव्यू लेने से चयन मंडल के सदस्य प्रत्याशी की क्षमता, दूरदर्शिता एवं विश्वास का अनुमान लगा लेते हैं। गंदे कपड़े, मैले या पीले दांत, उतरा चेहरा, सुस्त एवं लापरवाह प्रत्याशी चयन मंडल को प्रभावित नहीं कर सकता। चयन मंडल यह भी चाहता है कि पद के लिए अनिवार्य एवं वांछनीय योग्यताएं स्पष्ट कर दी गयी हैं, तो प्रत्याशी उन्हीं के अनुरूप तैयार होकर साक्षात्कार के लिए आये।

आपका प्रभावी व्यक्तित्व, हाजिर जवाबी, आत्मविश्वास, दृढ़ निश्चय, शालीन व्यवहार आपको इंटरव्यू में सफलता दिला सकते हैं। अतः अपने में इन्हें क्रमशः विकसित कीजिए फिर एक समय आप पाएंगे कि सफलता की जयमाला आपके गले में है।

—प्रवाचक— शिक्षा शाखा,
डॉ. राधाकृष्णन उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान,
बीकानेर (राजस्थान)-३३४८०१

अध्ययन मनन और परिशीलन के लिए करना चाहिए। —बेकन

# गोष्ठी

**दिनेश विश्वकर्मा, सुमेरपुर (पाली, राज.)**

**प्र. 'रोम जल रहा था तब नीरो वंसी बजा रहा था', नीरो का रोम से क्या संबंध था, और इस उक्ति की अंतर्कथा क्या है ?**

□ अपनी क्रूरता के लिए कुख्यात नीरो, अर्थात क्लाडियस सीजर (ई.सन ३७-६८), लगभग १४ वर्ष रोमन सम्राट रहा। उसने अपनी पत्नियों और मां के अतिरिक्त कई मंत्रियों तथा अधिकारियों की भी हत्या करवायी थी। अंततः राज्य में विद्रोह के फलस्वरूप रोम से भागकर उसे आत्महत्या के लिए मजबूर होना पड़ा। उक्त कहावत उसकी क्रूरता की द्योतक है।

**शंकरलाल उपरेती, होशंगाबाद**

**□ लाल मिर्च अधिकतर भारतीय उप-महाद्वीप में ही खायीजाती है, क्या संसार में अन्यत्र भी यह पैदा होती है ?**

□ लाल मिर्च का उत्पादन संसार में सबसे अधिक मैक्सिको में होता है।

**रजनी भटनागर, जयपुर**

**प्र. किकाडा क्या है ? कीट या पक्षी ?**

□ किकाडा एक छोटा-सा कीट है, जिसकी आयु सत्रह वर्ष होती है, किंतु अपने लंबे जीवन के पांच सप्ताह ही यह उछल-कूद कर बिता पाता है, शेष जीवन यह भूमि के नीचे सोता रहता है।

**[illegible] पांडे, हैदराबाद**

**प्र. ईसवी (ग्रेगोरियन) कैलेंडर में महीनों के नाम किस प्रकार पड़े ?**

□ रोमन देवता जैनस, जिसके भूत और भविष्य दर्शन के लिए दो चेहरे बताये जाते हैं, के नाम पर जनवरी, रोमन समारोह फैब्रुआ के नाम पर फरवरी; रोमानियों के योद्धा देवता मार्स के नाम पर मार्च हुआ; लैटिन शब्द एपिरर का अर्थ है 'खोलना' जिससे अप्रैल नाम पड़ा; रोमन देवी मैमा से मई को नाम दिया गया; जून के संबंध में निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता, किंतु संभवतः स्वर्ग की देवी जूनो से ही इसकी पहचान की जाती है; जुलाई तो जूलियस सीजर के नाम पर ही आधारित है। उसका जन्म इसी माह में हुआ था आधुनिक कैलेंडर के निर्माण में उसका बहुत अंशदान है, रोम के राजा आगस्टस के नाम पर अगस्त हुआ; सितंबर का उद्गम लैटिन शब्द 'सेपटेम' से है जिसका अर्थ सातवां' है। पुराने रोमन कैलेंडर में यह सातवां महीना था; इसी प्रकार रोमन शब्द 'आक्टो' का अर्थ आठवां है जिससे अक्तूबर नाम पड़ा; लैटिन में नौ को 'नोवेम' कहते हैं जिससे नवंबर बना; और 'डिसेम' का अर्थ लैटिन में दस है जिससे दिसंबर नाम हुआ।

**गंगा सिंह रावत, हलद्वानी (नैनीताल)**

**प्र. विश्व की पहली महिला राष्ट्रपति कौन हैं ?**

□ गिनेस बुक ऑव वर्ल्ड रैकॉर्ड्स के अनुसार आइसलैंड की राष्ट्रपति विडिस फिनबोगाटिर लोकतांत्रिक विधि से निर्वाचित प्रथम महिला राष्ट्राध्यक्ष बनीं, जिनका चुनाव ३० जून, १९३१ को हुआ और १ अगस्त को उन्होंने पदभार संभाला।
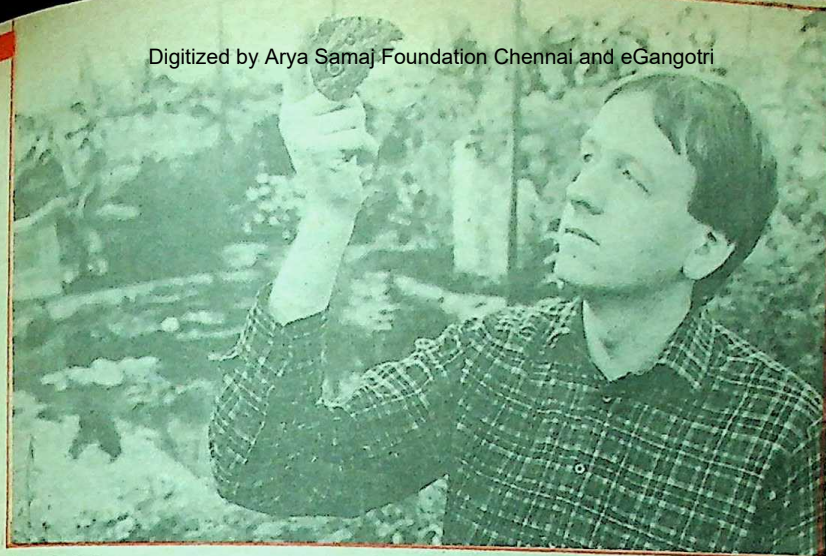
मंजरी दुबे, विदिशा

**प्र. तितली अपने अंडे कहां देती है, वर्षा आदि में कैसे सुरक्षित रखती है ? तितली पालन फार्म भी होते हैं ?**

□ तितली अपने अंडे पत्तियों पर ही देती है । चिपचिपे पदार्थ से लिपटे ये अंडे पत्तों पर पड़े-पड़े ही लार्वा के रूप में बदल जाते हैं और ये पत्तियां ही इनका भोजन बन जाती हैं । लार्वा के बाद प्यूपा और फिर पूर्ण तितली बनती है । इंग्लैंड में शेक्सपियर के जन्म स्थान स्ट्रैफर्ड-आपॉन-एवान में संसार का सबसे बड़ा तितली फार्म है । चित्र में उक्त फार्म के प्रबंध-निदेशक उल्लू की शक्ल की तितली दिखा रहे हैं ।

शंकरलाल शर्मा, सीहोर

**प्र. कागज का आविष्कार कब और कहां हुआ ?**

□ कागज का आविष्कार चीन में लगभग सन् १०५ में हुआ था । लेकिन व्यापक स्तर पर इसका उत्पादन यूरोप में उन्नीसवीं शताब्दी में किया गया था ।

प्रभावती सिंह, रांची

**प्र. न्युराल्जिया रोग क्या है ?**

□ न्युराल्जिया एक ऐसी अवस्था है, जिसमें चेहरे पर आधे भाग में तेज दर्द होता है । यह दर्द इतना असहनीय होता है कि इसे लोग 'शूटिंग' या 'स्टैबिंग पेन' कहते हैं । सामान्यतया यह दर्द कान के पास से शुरू होता है और गाल पर एक ओर केंद्रित हो जाता है । इसे सामान्य दर्द निवारकों से नियंत्रित नहीं किया जा सकता । यह उठता भी अचानक है । कई बार गाल छूने, खाना खाने या गालों पर ठंडी हवा लगने से यह दर्द उठना शुरू हो जाता है । इस दर्द से छुटकारा केवल ऑपरेशन से ही मिल सकता है ।

अनिरुद्ध बनर्जी, इलाहाबाद ?

**प्र. क्या ब्रुनाई की प्रति व्यक्ति आय विश्व में सर्वाधिक है ? इस देश का परिचय भी दें ।**

□ ऐसा कोई रिकार्ड नहीं मिलता । हां, बहरीन, कुवैत और कतर के साथ बहरीन भी उन देशों में है जहां उसके नागरिकों की आमदनी जितनी

भी हो आयकर की दर शून्य है । बोर्नियो के उत्तर-पश्चिम तट पर स्थित है ब्रुनाई और इसका क्षेत्रफल ५,८०० वर्ग किलोमीटर है । इसकी आबादी लगभग दो लाख है । तेल यहां का मुख्त उत्पादन जिसमें से अधिकतर का निर्यात किया जाता है । प्राकृतिक गैस का उत्पादन भी होता है, जिसका बहुत बड़ा ग्राहक जापान है । चावल और केले कृषिजन्य पदार्थ हैं जिनकी पैदावार ब्रुनई में होती है । इसके राष्ट्राध्यक्ष सुल्तान हैं, और अधिकारिक धर्म इस्लाम है ।

**सत्यनारायण प्रसाद, चाईबासा (सिंहभूम, बिहार)**

**प्र. क्या द्रोणाचार्य को यह पता नहीं था कि उनका पुत्र अश्वत्थामा चिरजीवी है ? उन्होंने कैसे मान लिया कि वह मारा गया और स्वयं अस्त्र-शस्त्र त्याग दिये ?**

☐ वाराणसी (रामनगर) के प्रसिद्ध विद्वान पं. रामजी मिश्र के अनुसार द्रोणाचार्य को क्षत्रियों का अंत करने के लिए उद्यत देखकर अग्नि देव को आगे करके विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गौतम, वशिष्ठ, कश्यप और अत्रि ऋषि उन्हें ब्रह्मलोक ले जाने के लिए पधारे । ये सभी सूक्ष्म रूप धारण किये हुए थे । इन महर्षियों ने द्रोणाचार्य से कहा, ''द्रोण ! अब तक तुमने अधर्म का पक्ष लेकर युद्ध किया है । अब तुम्हारी मृत्यु का समय आ गया है । तुम वेद और वेदांगों के विद्वान हो । तुम ब्राह्मण हो । तुम्हें यह काम शोभा नहीं देता । अब अपने सनातन धर्म में स्थित हो जाओ । तुम्हारा इस मनुष्य-लोक में रहने का समय पूरा हो चुका है । फेंक दो ये अस्त्र-शस्त्र, अब फिर ऐसा पा[illegible] कर्म न करो ।'' आचार्य ने इन ऋषियों की बा[illegible] सुनी, भीमसेन के कथन (मालवा-नरेश इंद्र[illegible] के अश्वत्थामा नामक हाथी मारकर किया गया उद्घोष 'अश्वत्थामा मारा गया') पर भी विचा[illegible] किया और धृष्टद्युम्न को सामने देखा, और व[illegible] उदास हो गये । ऋषियों के ज्ञापन एवं पुत्रशोकाघात ने उन्हें पराक्रमहीन कर दिया । उन्होंने शस्त्र त्याग कर योगाश्रम धारण कर लिया । उन्हें अश्वत्थामा की अमरता की अपे[illegible] युधिष्ठिर की सत्यवादिता में विशेष विश्वास हुआ । उन्होंने योगबल से अपने प्राणों को श[illegible] से पहले ही पृथक् कर लिया, पश्चात् धृष्टद्युम्न ने उनका शिरच्छेद किया । (महाभारत : द्रोण पर्व, श्लोक ६१-६२) ।

## चलते-चलते

**प्र. आंसू क्या हैं ?**

☐ द्रवीय बल जिससे पुरुष की इच्छाशक्ति प[illegible] नारी की जलशक्ति विजय प्राप्त करती है ।

—सूत्रधा[illegible]

### विलक्षण वृक्ष

**अत्यंत ठोस वस्तु का एक प्रतिरूप कैलीफोर्निया में है । यह है एक विलक्षण वृक्ष जिसका कल्पित नाम 'जनरल शेरमन' है । यह वृक्ष ८३ मी. ऊंचा है । इसकी गोलाई २४.११ मीटर व वजन २०३० टन है ।**

**'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान' प्रविष्टि ११२ के लिए हमें सदा की भांति काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए। सभी पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं। कुछ चुने हुए प्रश्नों के उत्तर दे रहे हैं—पाठकों के सुपरिचित कंप्यूटर ज्योतिषी—अजय भाम्बी**

**अवधेश कुमार मिश्र, न्यू अलीपुर (कलकत्ता)**
**प्रश्न : असफलताओं से छुटकारा कब से ?**
उत्तर : २८ अगस्त १९९१ के बाद समय अनुकूल होने लगेगा।

**डॉ. रश्मि जैन, मनेन्द्रगढ़ (म.प्र.)**
**प्रश्न : नौकरी कब तक मिलेगी ?**
उत्तर : नौकरी मिलने की संभावना अगस्त '९१ व फरवरी '९२ के मध्य।

**महेश प्रसाद सिंह, मोतिया जिला गोड्डा (बिहार)**
**प्रश्न : सफलता साहित्य क्षेत्र में मिलेगी या फिल्म क्षेत्र में ?**
उत्तर : साहित्य में ज्यादा सफलता मिलने की अधिक संभावना है।

**भूपेंद्र कुमार, नयी दिल्ली**
**प्रश्न : विदेश यात्रा का योग है ? और कब ?**
उत्तर : इस वर्ष के उत्तरार्ध में योग बन रहा है।

**कुलदीप सिंह बिष्ट, बाडा इडवालस्यू पौड़ी गढ़वाल**
**प्रश्न : मैं शोध करना चाहता हूं। सफल हो पाऊंगा ?**
उत्तर : सफलता मिलेगी लेकिन रुकावटें भी आएंगी।

**मिनी द्विवेदी, टूंडला**
**प्रश्न : पुत्र प्राप्ति कब ? पुत्र होगा या नहीं ?**
उत्तर : अगले वर्ष मनोकामना पूर्ण होने की संभावना है।

**कु. प्रभा, चिड़ावा (झुनझुनू)**
**प्रश्न : विवाह कब होगा ?**
उत्तर : १९९३ के पूर्वार्ध में।

**राजेश कुमार सिंह, हाजीपुर (वैशाली)**
**प्रश्न : इस वर्ष मेडिकल में प्रवेश होगा ? डॉक्टर बनने का योग है ?**
उत्तर : संभावना कम है।

**नवनीत द्विवेदी, कोयल नगर (राऊरकेला)**
**प्रश्न : जीवन में सुख (रति) तथा शांति कब मिलेगी ?**
उत्तर : सितम्बर से कुंडली में सुधार आ रहा है बेहतर परिणाम मिलेंगे। नीलम धारण करें।

**निर्मल पारीक, मगरासर (चुरू)**
**प्रश्न : भाइयों से सहयोग मिलेगा या नहीं ?**
उत्तर : सहयोग मिलेगा लेकिन किस्तों में।

**डॉ. संगीता, रामपुर बाग (बरेली)**
**प्रश्न : भविष्य में शरीर निरोगी रहेगा या नहीं ? दो वर्ष पूर्व बड़ा आपरेशन हुआ है, वैसे ठीक हूं।**
उत्तर : स्वास्थ्य को लेकर अत्यधिक भावुक न हों। घबराने जैसा कुछ नहीं है।

**अर्जुन झा, खगड़िया**
**प्रश्न : ऋण से मुक्ति कब तक ?**
उत्तर : जब ग्रह में सूर्य, चंद्र आदि की दशाएं आएंगी तब।

**शशांक शर्मा, कोरबा पूर्व (बिलासपुर)**
**प्रश्न : पदोन्नति कब ?**
उत्तर : जब कुंडली में बुध की महादशा में बुध

की अंतर्दशा चलेगी तभी आपकी उन्नति होगी ।

**कु. बंदना दूबे, कानपुर**

**प्रश्न : क्या में प्रशासनिक सेवा में सफल होऊंगी ? अगर हां तो कब तक ?**

उत्तर : अत्यधिक प्रयत्नों के उपरांत ही सफलता की कामना करें ।

**बलबीर चड्ढा, दिल्ली**

**प्रश्न : पत्नी से तलाक है अथवा नहीं ?**

उत्तर : तलाक नहीं होगा । मेल की कोशिश करें ।

**राजेन्द्र कुमार शाह, उज्जैन**

**प्रश्न : मकान कब तक बनेगा ? उपयुक्त रत्न बताइये ?**

उत्तर : चंद्रमा की महादशा के अंत से पूर्व । पुखराज धारण करें ।

**कु. साधना, लखनऊ**

**प्रश्न : विवाह कब और विवाहेत्तर जीवन कैसा होगा ?**

उत्तर : विवाह आठ माह के भीतर । विवाहेत्तर जीवन उत्तम रहेगा ।

**अशोक के. भल्ला, नरवाना**

**प्रश्न : सौभाग्य विदेश में या देश में और कब ? रत्न सुझाएं ?**

उत्तर : देश में और जल्द । मोती धारण करें ।

**कु. मंजुला, इंदौर**

**प्रश्न : क्या आई. ए. एस. ९१ में सफलता मिलेगी ?**

उत्तर : संभावना है ।

**डॉ. विजय गुप्ता, दिल्ली**

**प्रश्न : एम.एस./एम.डी. में प्रवेश कब होगा ? उपाय बतायें ?**

उत्तर : इसी वर्ष ।

**धीरेंद्र बांडियां, जयपुर**

**प्रश्न : सफलता किसमें, नौकरी या व्यापार में ?**

उत्तर : पहले नौकरी में, बाद में व्यवसाय में ।

**नीना, हमीरपुर (उ.प्र.)**

**प्रश्न : मेरे पति की प्रोन्नति कब होगी ?**

उत्तर : पांच माह में संभावित ।

**इंदुमति, देवास**

**प्रश्न : साहित्य व संगीत के क्षेत्र में सफलता कब ?**

उत्तर : कुंडली में ग्रह इत्यादि अनुकूल हो रहे हैं अतः दोनों ही क्षेत्रों में सफलता का योग बनेगा ।

**अनिल राठौड़, सादुलपुर (चुरू)**

**प्रश्न : कमर (रीढ़) समस्या कब, कैसे हल होगी ?**

उत्तर : योग्य चिकित्सक की सलाह लें । योग आदि से भी लाभ हो सकता है ।

**अर्चिता शर्मा, जयपुर**

**प्रश्न : प्रेम विवाह संभव ? हां तो कब तक ?**

उत्तर : प्रेम विवाह में अड़चनें आएंगी ।

**प्रेमचंद, गोरखपुर**

**प्रश्न : क्या पुत्र प्राप्ति का योग है ? कब तक ? नग सुझायें ?**

उत्तर : पत्नी की कुंडली देखे बिना इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया जा सकता ।

# बुद्धि-विलास के उत्तर

**१. (२० प्रतिशत), २. क. इराक के पीर बहलेल दाना के मेहमान, ख. बगदाद में, ३. क. वाइसराय लार्ड विलियम बेंटिक ने ४ दिसं. १८२९ ई. को, ख. गवर्नर-जनरल लार्ड मिंटो ने १८७० ई. में, ४. क. पं. रविशंकर, ख. कोर्ट डांसर (१९४१), ५. क. नवाब जस्सासिंह अहलूवालिया, ख. महाराजा रणजीतसिंह के राज्य की, ६. क. दस्तम्बू, ख. फारसी, ७. आर.आर. राय (विगत अप्रैल में निधन), ८. क. केरल (९३.६ प्र.श. साक्षर), ख. ९० प्र.श., ९. १५२० में कोलोन में बनी एक नक्काशीदार बोतल जो संग्रहालय में प्रदर्शित है ।**

**प्रकाश चंद्र वर्मा, औरंगाबाद**
**प्रश्न : क्या स्थानांतरण होगा ?**
उत्तर : स्थानांतरण अवश्य होगा ।

**अनिता भंडारी, बूंदी**
**प्रश्न : जातक का इस वर्ष पी. एम. टी. में चयन होगा या नहीं ?**
उत्तर : संभावना है ।

**भगवती प्रसाद, अल्मोड़ा**
**प्रश्न : स्वास्थ्य में सुधार कब होगा ?**
उत्तर : अक्तूबर से आपका समय ठीक हो जायेगा । तदुपरांत स्वास्थ्य में भी सुधार होगा ।

**आर्यबीर सक्सेना, बरेली**
**प्रश्न : मुकदमे का फैसला कब ? रत्न बताएं ?**
उत्तर : समय लगेगा । नीलम धारण करें ।

**अमृता अर्पणा, जमशेदपुर**
**प्रश्न : घरेलू जिंदगी में तनाव से मुक्ति अर्थात शांति कब तक ?**
उत्तर : जब आपकी कुंडली में शनि की महादशा प्रारंभ होगी तब ।

**मुकुलराज मोहन मिश्र, अजमेर**
**प्रश्न : ए.पी.आर.ओ. प्रमोशन कब होगा ?**
उत्तर : राहू मध्ये शुक्र के अंतर से पूर्व ।

— डी-२/२, जनकपुरी
नयी दिल्ली-५८

**११३**
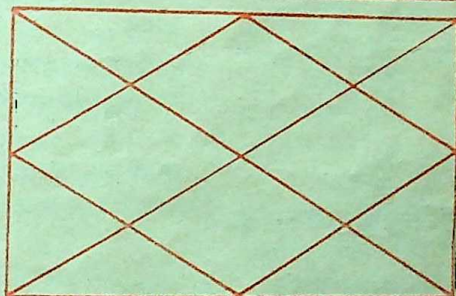
**नाम**
**जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) ......... महीना ......... सन.........................**
**जन्म-स्थान......... जन्म-समय ................................................**
**वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण...........................................**
**पता.............................................................................**
**आपका एक प्रश्न ...............................................................**

**इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें**

**संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि ११३) 'कादम्बिनी'**
**हिंदुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१**
**अंतिम तिथि : २० जुलाई, १९९१**

# प्रवेश

## त्रासदी

तब
जब
मैं दौड़ सकता था
मुझे
बैसाखियां भेंट की गयीं
अब
जब
अपाहिज हो गया हूं
कहते हैं दौड़
दौड़
दौड़

## गजल

एक पहेली थी हम से हल न हुई
रोज होती है मगर कल न हुई
जिंदगी ने तो बहुत चाहा हमें
अपने मकसद में पर सफल न हुई
ना मिली ना सही हमें मंजिल
पर कभी आंख से ओझल न हुई
टूटकर इतना रामजी बरसा
आज तक भी कोई फसल न हुई
होने को जाने क्या-क्या होता रहा
मुद्दतें हो गयीं गजल न हुई

## अपराधी

कुछ ज्यादा कुछ कम अपराधी
आदम-दर-आदम अपराधी

●

रफ़ा-रफ़ा हो जाएंगे
जलवायु मौसम अपराधी

●

सदा रहा है, सदा रहेगा
खुशियों का ये गम अपराधी

●

पायल का अपराध नहीं है
पायल की छम-छम अपराधी

●

अगर न पूरी हो पाये तो
होती नहीं कसम अपराधी

●

सुर से सुर यदि ना मिल पाएं
निश्चयेव सरगम अपराधी

●

तुम को भी यदि शामिल कर लूं
कुल-का-कुल आलम अपराधी

## घोषणा

हां... ! हां...
मैं घोषणा करता हूं
अपने जीवित होने की
उन तमाम मौतों के बाद
जो होती रहती हैं
सुबह-शाम
सरे-आम

हां, मैं घोषणा करता हूं
अपने जीवित होने की

उस कमरे में रहने के बावजूद
जिसमें नहीं पहुंचती
हवा, धूप, चांदनी

दम घुट चुका है तमाम
आक्सीजन का जिसकी

उस कमरे में रहने के बावजूद
हां
मैं घोषणा करता हूं
अपने...

— डॉ. राजू 'रंगीला'

आत्मकथ्य :

'मेरी रचनाएं' ही मेरा आत्मकथ्य हैं। जन्म : सात अगस्त, अट्ठावन
शिक्षा : एम.ए. (हिंदी), एम.ए. (संस्कृत), बी,.ई.एम.एस.। संप्रति : निजी व्यवसाय
पता—'रंगीला एस्टेट', वी.वी. इंटर कॉलेज रोड, शामली-२४७७७६ जनपद :मुजफ्फरनगर, (उत्तर प्रदेश)

## मंज़िल

न क्षितिज के इस पार
न क्षितिज के उस पार
तुम मिलोगे कहीं
मेरे ढूंढ़ने पर भी
मेरे मिटने पर भी
फिर कहां ढूं
किसे ढूं
बोलो न सुर
अपनी मंजिल का उदाहरण
मेरे लिए तो
अब मेरा रास्ता ही
मेरी मंजिल बन गया है

## समझौता

जिंदगी
मत दो अब
किसी भी तरह का प्रलोभन
मेरे मन को...
व्यर्थ है अब उसे लुभाना उसे हंसाना
वह मचलेगा नहीं अब
कल्पना पथ पर
कभी चलेगा नहीं
क्योंकि मन कर चुका है समझौता
बहुत पहले ही समय से

## जिंदगी

जिंदगी
व्यर्थ ही भटकती रही मैं
हर्ष के बाग में
मन के अनुराग में
स्वप्न-लोक के पराग में
क्या मालूम था जिंदगी तू मिलेगी
पीड़ा के रूप में, तृष्णा के रूप में
कविता के रूप में
जिंदगी तुझे देखा है, जब से सही रूप में
मुझे अपनी भी सुध नहीं
फिर तेरा
अनुवाद कैसे करूं
जिंदगी तुमसे नफरत है
फिर भी न जाने क्यूं
जिए जाती हूं तेरे लिए
और जब-जब
मृत्यु समक्ष होती है
तेरा ही नाम बारंबार लिये जाती हूं
जिंदगी
अभाव को दिया है आस का नाम
जिंदगी
तू कुछ और नहीं..
शराब के उस घूंट की तरह है
जिसे पीने के बाद बेसुध हो जाए आदमी
और न पिये हो तो
पीने की लालसा पागल बना जाए

## दृष्टि

अब मैं वह अंबर नहीं रही
जहां चांद उगता है
चंद्रिका गाती है
तारे मुसकराते हैं
और रजनी इठलाती है
मैं तो अंबर के
उस पार की
छोर-सीमा हो गयी हूं
जहां किसी की भी
दृष्टि नहीं जाती है

## फिर भी

प्रकृति
हंसती रहेगी
खिलती रहेगी
महकती रहेगी
मचलती रहेगी
सब-कुछ होगा
उसके आंचल में बंधा
फिर भी
'मौसम' बिना
बहारें न होंगी

**— मधुरिमा**

आत्मकथ्य

आज अगर कविताएं नहीं होतीं मेरे पास तो वह 'सूरज' देख नहीं पाती— इसीलिए कहूंगी कि कविता हथियार है मेरे लिए। मैं इसी हथियार से लड़ूंगी 'स्वयं' से... ! यह 'स्वयं' ही पूरी सृष्टि का रचयिता है। इसीलिए रखती हूं कविता सुर के लिए, संगीत के साथ। एक लड़की होने की बीमारी के साथ !
शिक्षा : मगध विश्वविद्यालय में बी.ए. (द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत) संगीत विशारद।
पताः सुनयना अजमा, बेलदार टोला, शेखपुरा, पटना (बिहार)-८०००१४

## पाठक क्या चाहते हैं ?

**ज्योतिषियों और उनकी भविष्यवाणियों के संबंध में हमने जून अंक में लिखा था। हम जानना चाहते हैं, हमारे पाठक यह स्तम्भ पसंद करते हैं या नहीं। पहले ५० पत्रों के बाद ही हम निर्णय ले लेंगे।**

**पहले से जो सामग्री पड़ी हुई है, फिलहाल हम उसी का उपयोग कर रहे हैं।**

**—सं.**

## ● पंडित शिवप्रसाद पाठक

**मेष :** मास शुभ फलदायी होगा। पारिवारिक दायित्वों पर धन व्यय होगा। राजकीय कार्यों में नवीन अवसरों का उदय होगा। यात्रादि में व्यय होगा। रचनात्मक कार्यों में यश प्राप्ति होगी। राजकीय उत्तरदायित्वों में वृद्धि होगी। शत्रु पक्ष से सतर्कता हितकर होगी। १ से ७ के मध्य उच्चाधिकारियों के सहयोग से नवीन दायित्व मिलेंगे। धन संचय के प्रयासों में सफलता मिलेगी। संपत्ति कार्यों में व्यर्थ विलंब एवं व्यवधान होगा। ८ से १५ के मध्य शारीरिक अस्थिरता तथा व्यर्थ मानसिक तनाव का सामना करना होगा। पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी। व्ययों की अधिकता रहेगी। १६ से २४ के मध्य यात्रा का योग होगा। रचनात्मक अथवा सृजन कार्यों में कीर्ति मिलेगी, तथा आत्मविश्वास से लंबित कार्यों में सफलता, धनलाभ होगा।

**वृषभ :** मास मिश्रित फलदायी होगा। नवीन योजनाओं से भाग्योदय होगा। यात्राओं की अधिकता होगी। संपत्ति के विवादों को टालना हितकर होगा पारिवारिक कारणों में व्यर्थ खिन्नता का उदय होगा। नवीन मित्रों से लाभ होगा। १ से ७ के मध्य धर्म आध्यात्म के प्रति रुचि बढ़ेगी। मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। यात्राओं की अधिकता होगी। व्यर्थ दौड़ धूप से अस्वस्थता का उदय होगा। ८ से १५ के मध्य नवीन योजनाओं की तीव्र गति से प्रगति होगी। १६ से २४ के मध्य कार्यों की अधिकता होगी। परिवार एवं रक्त संबंधियों के कारण व्यर्थ तनाव का सामना करना होगा। रचनात्मक अथवा सृजन संबंधी कार्यों की पूर्ति होगी। आकस्मिक धनलाभ से लंबित कार्यों की पूर्ति होगी।

**मिथुन :** मास में कार्यों की अधिकता होगी। व्यावसायिक प्रगति एवं पराक्रम में वृद्धि होगी। नवीन कार्यों में निकटजनों का सहयोग

**ग्रह स्थिति : सूर्य १६ जुलाई से कर्क में, मंगल ५ से एवं बुध २० से सिंह में, गुरु कर्क में, शुक्र २ से सिंह में, शनि मकर में, राहु, हर्षल, नेप्च्यून धनु में, केतु मिथुन में, प्लेटो तुला राशि में भ्रमण करेंगे।**

## पर्व एवं त्योहार

**५ जुलाई शीतलाष्टमी, ८ योगिनी एकादशी, ९ भौम प्रदोष, ११ स्नान दान श्रद्धादि की दर्श अमावस्या सूर्यग्रहण, १३ रथयात्रा, १५ वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी, १७ कुमार षष्ठी मनसा पूजा प्रारंभ, २० भड्डुली नवमी, २२ हरिशयनी एकादशी, २६ आषाढ़ी पूर्णिमा, २७ श्रावण मासारंभ, २९ श्रवरण सोमवार व्रत, ३० संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत ।**

उत्साहवर्धक होगा । अस्वस्थता पर व्ययों की अधिकता होगी । पारिवारिक कार्यों की अधिकता से दिनचर्या अव्यवस्थित होगी । १ से ७ के मध्य विशिष्ट व्यक्ति के सहयोग से लंबित समस्या का समाधान होगा । शत्रुपक्ष आंतरिक चिंता उपस्थित करेगा । राजकीय कार्यों में निकटजनों का सहयोग मिलेगा । ८ से १५ के मध्य दौड़ धूप की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा । जल्दबाजी में लिया निर्णय अहितकर होगा । अल्पकालिक प्रवास होगा । १६ से २४ के मध्य आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । रचनात्मक लेखन सृजन संबंधी कार्यों में उत्साहवर्धक समाचार मिलेगा । शत्रु पक्ष के प्रयास विफल होंगे । मासांत में यात्रा का योग होगा ।

**कर्क :** मास में धैर्य तथा संयम से कार्य करें । अथक परिश्रम एवं पुरुषार्थ से कार्यों में सफलता मिलेगी । धर्म व आध्यात्म के प्रति रुझान बढ़ेगा । नवीन स्थान की यात्रा होगी । शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा । शत्रु पक्ष से सतर्कता रखना हितकर होगा । १ से ७ के मध्य पारिवारिक दायित्वों की अधिकता होगी । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में व्यय होगा । आकस्मिक यात्रा होगी । ८ से १५ के मध्य शत्रु पक्ष षड्यंत्रकारी प्रयास से प्रतिष्ठा धूमिल करने का प्रयास करेगा । मानसिक एवं शारीरिक पीड़ा का सामना करना होगा । १६ से २४ के मध्य राजकीय कार्यों की अधिकता होगी । अथक लगन परिश्रम से कार्यों की पूर्ति होगी । मास में स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें । संपत्ति के कार्यों में व्यवधान की स्थिति का उदय होगा । आजीविका संबंधी दायित्वों में वृद्धि होगी ।

**सिंह :** मास पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध लाभदायी होगा । नौकरी व्यवसाय के क्षेत्र में अवरोधक स्थितियों का उदय होगा । पुरुषार्थ एवं पराक्रम से सफलता मिलेगी धर्म, आध्यात्म के प्रति रुझान बढ़ेगा । सामाजिक जीवन में शत्रु-पक्ष प्रभावी रहेगा । आकस्मिक धनलाभ होगा । १ से ७ के मध्य उच्चाधिकारी अथवा राजनेता के सहयोग से नवीन कार्यों की पूर्ति होगी । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में धनव्यय होगा । ८ से १५ के मध्य आर्थिक योजनाओं में अधिकारी वर्ग के सहयोग से धनलाभ होगा । १६ से २४ के मध्य कार्यों में उत्साहवर्धक सफलता मिलेगी । पराक्रम एवं पुरुषार्थ से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी । निकटजनों से मतांतर बढ़ेंगे । व्यर्थ विवाद को टालना हितकर होगा । प्रियजन से भेंट होगी ।

**कन्या :** मास उपलब्धिपूर्ण होगा । आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । सामाजिक प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी । नवीन पदाधिकार से

उत्साह में वृद्धि होगी । १ से ७ के मध्य प्रियजनों के सहयोग से लंबित योजनाओं की पूर्ति होगी । नवीन आर्थिक संसाधनों का उदय होगा । अल्पकालिक प्रवास उपलब्धिदायी होगा । ८ से १५ के मध्य बौद्धिक कार्यों की अधिकता होगी । शत्रुपक्ष कार्यों में अवरोध उपस्थित करेगा । १६ से २४ के मध्य सदाचरण से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी । शत्रु पक्ष के षड्यंत्र विफल होंगे । व्ययों की अधिकता होगी ।

**तुला** : मास में अनपेक्षित कार्यों की पूर्ति होगी । लंबित धन मिलेगा । पारिवारिक उत्तरदायित्वों में वृद्धि होगी । न्यायालयीन विवादों का समाधान होगा । भावुकतापूर्ण निर्णयों से हानि संभावित है । श्रम साध्य प्रयासों से नवीन कार्यों की पूर्ति होगी । १ से ७ के मध्य आत्मशक्ति साहस तथा परिश्रम से प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय प्राप्त होगी । यात्रा उपलब्धिपूर्ण होगी किंतु प्रवास कष्टप्रद होगा । ८ से १५ के मध्य कार्यों की अधिकता, व्यर्थ दौड़-धूप होगी । चिकित्सादि पर व्यय की अधिकता होगी । १६ से २४ के मध्य शत्रु पक्ष के प्रयासों का सामना करना होगा । विषम स्थितियों में विशिष्ट व्यक्ति का सहयोग अनपेक्षित उपलब्धि देगा । रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी । प्रियजन से भेंट होगी ।

**वृश्चिक** : मास में इच्छित कार्यों की पूर्ति होगी । पारिवारिक वातावरण विषमतापूर्ण होगा । पुरुषार्थ एवं पराक्रम में वृद्धि होगी । व्यर्थ यात्राओं से मानसिक खिन्नता होगी । १ से ७ के मध्य दौड़-धूप की अधिकता होगी । राजकीय कार्यों में शत्रुपक्ष अवरोध उपस्थित करेगा । नवीन कार्यों में विलंब होगा । यात्रा पीड़ादायी होगी । ८ से १५ के मध्य आध्यात्मिक अथवा रहस्यपूर्ण विषयों में रुचि बढ़ेगी । नवीन कार्यों की पूर्ति हेतु प्रवास होगा । १६ से २४ के मध्य सामाजिक कार्यों से प्रतिष्ठा बढ़ेगी । पुरुषार्थ एवं पराक्रम से सफलता मिलेगी । मासांत में अतिथि आगमन होगा । विशिष्ट व्यक्ति से भेंट होगी ।

**धनु** : मास उत्साहवर्धक एवं सफलतादायी होगा । स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से सफलता मिलेगी । आपसी विवाद तथा व्ययों पर नियंत्रण रखना हितकर होगा । सार्वजनिक जीवन में यशस्वी सफलता मिलेगी । विशिष्ट स्थान की यात्रा होगी । व्यक्तित्व विकास का श्रेष्ठतम समय होगा । १ से ७ के मध्य राजकीय कार्यों में स्व-प्रयास से विशेष लाभ होगा । परिवार विवाद से बचें । व्यर्थ संभाषण टालें । ८ से १५ के मध्य महत्त्वपूर्ण यात्रा होगी । नवीन अवसरों का उदय होगा । शत्रु पक्ष के प्रयास विफल होंगे । १६ से २४ के मध्य पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी । उच्चवर्ग पर आपका व्यक्तित्व प्रभावी होगा नवीन योजनाओं में सफलता मिलेगी । मासांत में स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें । पारिवारिक कार्यों की अपूर्णता से खिन्नता होगी । प्रियजनों से भेंट होगी ।

**मकर** : मास श्रेष्ठ फलदायी होगा । प्रियजनों का सहयोग उत्साहवर्धक रहेगा । उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से पदाधिकार में परिवर्तन होगा । वाणी तथा बुद्धि चातुर्य से कार्यों में सफलता मिलेगी । यात्रा कार्यों में व्यवधान उपस्थित होंगे । आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । शत्रुपक्ष से सतर्कता

हितकर होगी । १ से ७ के मध्य उच्चाधिकारियों के सहयोग से योजनाओं को साकार करने में सफलता मिलेगी । नवीन पदाधिकार से उल्लासपूर्ण वातावरण होगा । ८ से १५ के मध्य दीर्घकालिक योजनाओं में धन व्यय होगा । १६ से २४ के मध्य शत्रु पक्ष का शमन होगा । नवीन वाहन, वस्त्र अथवा विलासितादायी वस्तु पर व्यय होगा । मासांत में भावुकता पर नियंत्रण रखें । रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों की अधिकता होगी ।

**कुंभ** : मास में व्यर्थ विरोधाभास तथा प्रतिकूल परिस्थितियों का उदय होगा । दुर्घटनादि से कष्ट संभावित हैं । रोजगार संबंधी स्थितियों में परिवर्तन होगा । उत्तरार्द्ध में मनोनुकूल सफलता स्वजनों के सहयोग से मिलेगी । विवादों को टालना हितकर होगा । १ से ७ के मध्य नवीन योजनाओं पर धन व्यय होगा । शत्रु पक्ष के प्रभाव से कार्यों में विलंब होगा । पारिवारिक वातावरण से खिन्नता होगी । ८ से १५ के मध्य कार्यों की अधिकता होगी । न्यायालयीन कार्यों में प्रतिकूल स्थितियों का उदय होगा । १६ से २४ के मध्य आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । सत्संग तथा आध्यात्मिक यात्राओं से मानसिक शांति मिलेगी । व्यावसायिक कार्यों में साधारण लाभ होगा । प्रियजनों से भेंट होगी । मासांत में प्रतिकूल स्थितियों पर नियंत्रण होगा । मनोवांछित कार्यों की पूर्ति होगी ।

**मीन** : मास में स्वप्रयास से सफलता मिलेगी । आर्थिक चिंताओं में वृद्धि होगी । पारिवारिक वातावरण मनोनुकूल होगा । मित्रों का सहयोग लाभदायी होगा । रचनात्मक एवं लेखन संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी । उच्चाधिकारियों का सहयोग उत्साहवर्धक होगा । शत्रु पक्ष से सावधानी रखें । १ से ७ के मध्य नवीन योजनाओं में व्यस्तता रहेगी । कार्यों की अधिकता से मानसिक तनाव रहेगा । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में व्ययों की अधिकता होगी । ८ से १५ के मध्य महत्त्वपूर्ण यात्रा का योग उपस्थित होगा । १६ से २४ के मध्य अति उत्साह आमोद-प्रमोद तथा कुसंगति से बचें । आकस्मिक रूप से विषम स्थिति का सामना करना होगा । मासांत में पुरुषार्थ एवं पराक्रम से कार्यों में सफलता मिलेगी । जोखिमपूर्ण कार्य अहितकर होंगे ।

—ज्योतिषधाम १२/४ ओल्ड सुभाष नगर, गोविन्दपुरा, भोपाल (म.प्र.)

## ग्लॉकोमा का इलाज

**विश्व भर में ग्लॉकोमा अंधेपन का सामान्य कारण है । अमरीकी डॉक्टरों ने एक शल्य तरीका खोज निकाला है, जिससे ग्लॉकोमा से हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाएगा । डॉक्टरों ने प्लास्टिक का एक ऐसा रोपण विकसित किया है जो आंख के अंदर का फालतू द्रव बाहर निकाल देता है । द्रव के बाहर निकल जाने से आंख के अंदर का बढ़ा हुआ दबाव कम हो जाता है और आंख की तंत्रिकाएं टूटने से बच जाती हैं ।**

# आ गयी नयी सरकार

## आगामी काव्यचर्चा का विषय—

## कश्मीर में... !!

संपर्क 'क्या करेंगे आप,' द्वारा : संपादक, 'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स, नयी दिल्ली-१

अंतिम तिथि : २० जुलाई, १९९१

दंगल हुआ चुनाव का, सबने मारे दांव ।
पहुंचा कोई धूप में, मिली किसी को छांव ।
मिली किसी को छांव, हाय वोटों की माया ।
नेताओं ने जैसा बोया, वैसा पाया ।
आश्वासन की नाव पर, करने जन उद्धार ।
डेढ़ वर्ष में आ गयी, पुनः नयी सरकार

—मेधावसु पाठक

१७, कूंचा शीलचंद्र इटावा, (उ. प्र.)

महीने भर पहले लिखे, गये छंद ये यार ।
होय विसंगति गर कहीं, देना क्षमा करार ।
किसी पार्टी से नहीं, हमें द्वेष अरु प्यार ।
सत्ता में जो आ गयी वो अपनी सरकार ।
यही देने लगे हमें बस नयी सरकार ।

—कवि ब्रजवासी-किशनवीर यादव

सह संपादक 'यदुवाणी', कामां,
भरतपुर राज.-३२१०२२
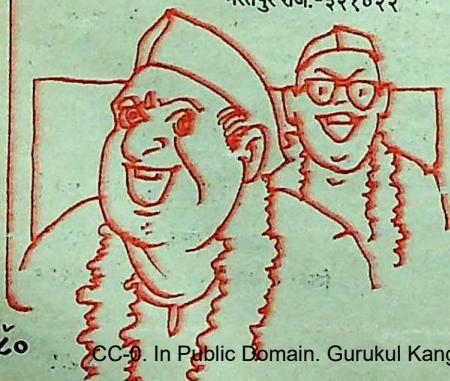
आ गयी देखो नयी सरकार
सजी है जो दिल्ली दरबार
बनी जनता की पैरोकार
वाहन है, गोली-रक्षित कार
लगे पग-पग पर पहरेदार
हमारी कैसे हो दरकार
हमीं से क्यों खाते हो खार
हमीं ने पहनाये थे हार

—पद्मनाभ तिवा

गुरु-निवास, दमो
(म. प्र.)—४७०६६१

● गोली-रक्षित कार = बुलेट-प्रूफ कार

वादे औ आश्वासन देकर,
चुनी गयी सरकार;
जन-जन की आशाएं कितनी,
करनी हैं साकार;
पर इनसे ज्यादा उम्मीदें,
रखना है बेकार;
नये नहीं हैं इनके संस्कार;
जैसी भी हो प्यारे,
आ गयी नयी सरकार ।

—सतीश निगम 'सत्य

ग्राम-पोस्ट : रामपुर बाघेल
जिला : सतना (म. प्र.)

आ गयी नयी सरकार,
कमर कस हो जाएं तैयार,
उठाने नये करों का भार
कि देश की हालत खस्ता है ।
कमर दी मंहगाई ने तोड़
सकोगे क्या तुम उसको जोड़
यहां इंसां, ईमां को छोड़
देश में क्या कुछ सस्ता है ?

**—व्यंकटराव यादव**

एम. आय. जी. ए-१८/१०,
वेदनगर, उज्जैन-४५६०१०

आ गयी नयी सरकार
दिलाने नयी दिलाशा ।
टिकट पुराने पर दिखलाने
नया तमाशा ।
नये तमाशे में नवीन
कुछ चेहरे होंगे ।
लेकिन पहले-जैसे ही
वे बहरे होंगे ।
आश्वासन, वादों के
केवल जाल बुनेंगे ।
जनता की आवाज कभी
वो नहीं सुनेंगे ।

**—नंद किशोर शर्मा**

श्रीरामपुर अयोध्या,
पो. : वैनी जि. : समस्तीपुर, (बिहार)

पोछूंगा बूढ़ी जननी की आंखों की जलधार ।
नहीं देश में रहने दूंगा, महंगी-भ्रष्टाचार ।
बहुत हो चुका और न होने दूंगा फिर तकरार ।
भारत देश रहे अखंड, आ गयी नयी सरकार ।

**—डॉ. योगेश्वर प्र. सिंह 'योगेश'**

ग्रा. : नीरपुर, पो. : अथमल गोला,
जिला : पटना (बिहार)-८०३२११

बनकर नयी-नवेली दुलहिन
लो, आ गयी नयी सरकार ।
लाल चुनर वादों की ओढ़,
पालकी पर होकर सवार ।
देखो, द्वार लगी है डोली,
गूंज रहा है मंगल-चार ।
आबाल वृद्धवनिता सभी तो,
'चंद्रमुखी' को रहे निहार ।
'नव-वधू सुलक्षणा है लगती'—
सबके मन में यही विचार ।
आज सुधन्य हो रही सास भी,
दुलहिन की आरती उतार ।

**—रामस्वरूप पंडित 'मयूरेश'**

द्वारा-श्री रामजीवन पंडित
ग्रा. : भोजपुर, पो. : कुरता,
जिला : दुमका (सं. प.), ८१५३५२ (बिहार) ।

संपादकजी प्यार में एक बार,
श्रीमती जी से कह गये 'ओ मेरी सरकार',
श्रीमती जी गुस्से में कहने लगीं,
देखोजी, मैं भी अखबार बांचती हूं,
सरकार क्या है, खूब पहचानती हूं,
यदि फिर कभी इस नाम से पुकारा,
हो जाएगा तलाक, आपका हमारा,
संपादक जी झेंप मिटाते हुए हंसने लगे,
चतुराई से बात अपनी बदलने लगे,
छोड़ पुरानी बात, मैंने तुमसे कहा 'नयी सरकार',
चूंकि मुझे ये हो चला विश्वास,
देश में अब की बार,
आ गयी जो एक नयी सरकार,
शायद हो उसमें कुछ सुधार ।

**—राजेन्द्र प्रसाद शर्मा,**

ग्रा. : कसैया, पो. : घरघोड़ा,
जिला : रायगढ़, म. प्र.-४९६१११

## विवाह कैसे हो ?

**दीपक श्रीवास्तव, कोटा : हम दोनों बालिग हैं तथा विशेष विवाह अधिनियम के अंतर्गत विवाह के इच्छुक हैं, परंतु घरवालों के कारण हम ऐसा कर सकने में असमर्थ हैं ।**

**ऐसी दशा में क्या हम आर्य समाज की विधि द्वारा विवाह कर सकते हैं ? क्या इसे कानूनी मान्यता है ? तथा इस प्रकार के विवाह के उपरांत क्या अदालत में रजिस्ट्रेशन संभव है ? अथवा क्या ऐसा संभव है कि हमारा अदालती विवाह हो जिसमें तुरंत रजिस्ट्रेशन हो सके ?**

विशेष विवाह अधिनियम के अंतर्गत विवाह के लिए प्रक्रिया निर्धारित की गयी है । विवाह के लिए आवेदन के साथ वह प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है । प्रक्रिया का पालन करना पंजीयन अधिकारी के लिए आवश्यक है । उक्त अधिनियम की धारा ६ के अंतर्गत विवाह अधिकारी द्वारा अपने कार्यालय में सूचना प्रकाशित करने का प्रावधान है ।

हिंदू विवाह, आर्य समाज मंदिर में भी हो सकता है । इस प्रकार से किये गये विवाह का पंजीकरण करवाया जा सकता है ।

## पुनः साथ कैसे रहें ?

**जयेश त्रिवेदी, गुजरात : अपनी गलती के कारण गत वर्ष तलाक की डिक्री प्राप्त कर चुका हूं । परंतु अब हम दोनों पुनः पहले की तरह साथ-साथ रहना चाहते हैं । इसके लिए क्या कोर्ट की दी गयी तलाक डिक्री रद्द करायी जा सकती है यदि नहीं, तो क्या हम बिना किसी कानूनी परेशानी के साथ-साथ पति-पत्नी के रूप में रह सकते हैं ?**

न्यायालय द्वारा तलाक दिये जाने के बाद आप पति-पत्नी नहीं हैं । आपका विवाह समाप्त हो गया और आपका रिश्ता भी । अब यदि आप पुनः रिश्ता बनाना चाहते हैं तो आपको दोबारा विवाह करना होगा ।

पुनर्विवाह के बाद आप पति-पत्नी के रूप में रह सकते हैं । न्यायालय के आदेश को निरस्त करने का कोई रास्ता नहीं है ।

## संशोधन संभव ?

**नंदिनी सिंह, बिहार : मैं एम.ए. की छात्रा हूं । कुछ असावधानियों के कारण मैट्रिक व आगे के प्रमाण पत्रों में मेरी जन्म तिथि व पिता का नाम गलत लिखा गया । क्या अब इसमें सुधार किया जा सकता है ? यदि हां तो मैं कैसे यह कार्य करूं ?**

आप अभी विद्यार्थी हैं और आपको अपने पिता का नाम व अपनी जन्मतिथि तुरंत ठीक करवा लेनी चाहिए । मैट्रिक की परीक्षा आपने कहां से दी । सबसे पहले मैट्रिक की परीक्षा लेनेवाले बोर्ड में आपको पिता का नाम व जन्मतिथि ठीक करवानी होगी और उसके बाद उसी आधार पर अन्य स्थानों पर ठीक करवायी जा सकती है । एक परेशानी आपके मार्ग में आएगी और वह यह कि आप काफी विलंब से यह कार्यवाही कर रही हैं । आवश्यकता पड़ने पर आप उच्च

न्यायालय से आवश्यक आदेश लेने के लिए आवेदन कर सकती हैं । न्यायालय में आपको अपनी जन्म तिथि तथा पिता के नाम के आवश्यक प्रमाण प्रस्तुत करने होंगे ।

## किराये की समस्या ?

**डॉ. अमर कुमार, आरा : मैं एक कंपनी में सेवारत था । तब कंपनी द्वारा देय मकान में रहता था । व्यक्तिगत कारणों से मैंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया व कार्य बंद कर दिया । कंपनी का मेरे ऊपर कोई बकाया नहीं लेकिन प्रमाण पत्र लेने में मुझे काफी समय लगा, क्योंकि उस दौरान पत्नी की अस्वस्थता मुख्य कारण थी । हम उसी क्वार्टर में रह रहे थे । तब विभाग वालों ने क्वार्टर का किराया सामान्य से कहीं अधिक वसूल किया । क्या उन्हें ऐसा करने का अधिकार है या उन्होंने द्वेषवश ऐसा किया ? कृपया सलाह दें ।**

साधारणतयः कंपनी द्वारा दिया गया निवास सेवा समाप्त होने के बाद एक निश्चित अवधि जो साधारणतयः दो माह होती है । उसके बाद खाली कर देना होता है । आपने त्याग पत्र देने के बाद एक निश्चित तिथि से सेवा कार्य बंद कर दिया, यह मानकर कि आपकी सेवा की अवधि उस दिन समाप्त हो गयी । त्याग-पत्र स्वीकृति मात्र औपचारिकता रह गयी, और आपने भी त्यागपत्र स्वीकृति का इंतजार किये बगैर सेवा कार्य बंद कर दिया ।

पत्नी की अस्वस्थता या अन्य कारणों से आप आवास नहीं छोड़ सके । समय से अधिक अवधि तक आवास रखने पर कंपनी को आवास का किराया आपसे वसूलने का अधिकार है । सेवा की अवधि में किराया बाजार की दर से कम रहता है परंतु उस अवधि के बाद किराया बाजार दर पर वसूला जा सकता है ।

*विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ*

*—रामप्रकाश गुप्त*

## संपत्ति का क्या करूं ?

**क.ख.ग. (हि.प्र.) : मैं तीन बच्चों की उनचास वर्षीय विधवा मां हूं । पति की मृत्यु उपरांत बड़े विवाहित पुत्र ने अपने विधुर श्वसुर के साथ रहने को बाध्य किया । विरोध करने पर बड़े बेटे व उसके श्वसुर ने मुझे ब्लेक मेल व बदनाम करना शुरु किया । बड़े पुत्र ने हमारी जमीनें गिरवी रखकर बैंक से ऋण ले लिया व मुझे अपमानित कर घर से निकाल दिया । मैंने नौकरी की परंतु छोटा बेटा फिर घर ले आया । संपत्ति मेरे नाम है क्या मुझे संपत्ति बेचकर अन्यत्र चले जाना चाहिए ?**

आप विधवा हैं और तीन बच्चों की मां भी हैं । पुराने समय की याद करना जब आपको अपने पति का असीम सहयोग मिलता था ठीक है, परंतु भविष्य में तो आपको अपनी स्वयं की जिम्मेदारी संभालनी होगी । किसी के द्वारा बदनाम किये जाने के भय से ग्रसित रहना ठीक नहीं । इस प्रकार के भय से अपने आपको छुटकारा दिलवाना ही होगा । आपकी सहमति के बगैर आपका पुर्नविवाह नहीं हो सकता । जहां तक आपकी संपत्ति का प्रश्न है, आप उसका अपने विवेक के अनुसार निर्णय करें । संपत्ति रखना या बेचना आपके निर्णय पर निर्भर करता है । आपके बच्चे आपकी जमीन से प्राप्त होनेवाली आय का उपयोग करते हैं, परंतु यह तब तक ही संभव है जब तक आप प्रतिरोध न करें ।

नया चिकनाई युक्त

Made specially for the Government of India
NIRODH
For Family Planning
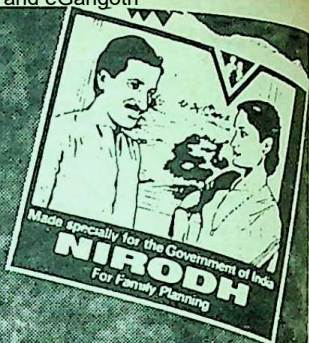
# योग द्वारा १२० वर्ष का यौवन
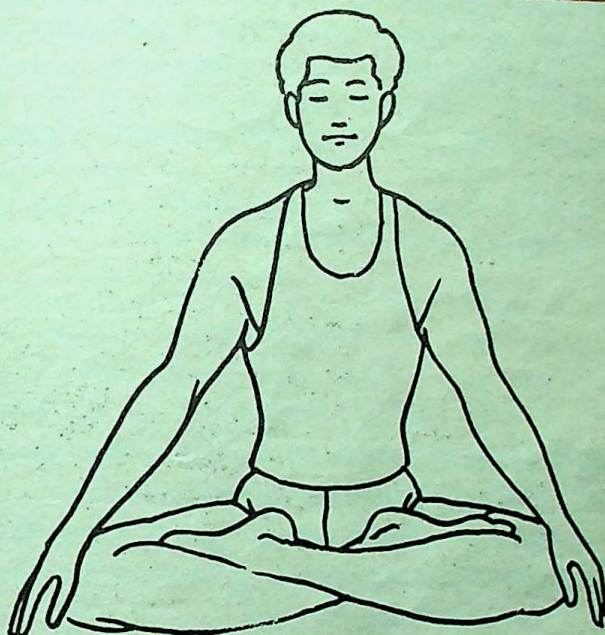
● चार्ल्स हेनरी एरनोल्ड

चार्ल्स हेनरी एरनोल्ड, जिन्होंने १८५२ में वाराणसी में एक वृद्ध को आततायी भीड़ से बचाया । बाद में इसी वृद्ध ने उन्हें योग की दीक्षा दी । १९३९ में चार्ल्स हेनरी एरनोल्ड ने एक पुस्तक लिखी—'हंडरेड टेन ईयर्स ऑव यूथ थ्रू योग' इसमें उन्होंने अपने गुरु द्वारा निर्देशित योगाभ्यासों का सरल भाषा-शैली में विवरण दिया है । प्रस्तुत है, इसी कृति का हिंदी अनुवाद

**यौ**वन क्या है ?
यौवन जीवन का एक अंग है ।

योग क्या है ?

योग भारतीय पद्धति है, जिसमें प्राण को सांस की क्रिया द्वारा संयम में लाया जाता है ।

- प्राण हमारे जीवन की शक्ति है, जो यौवनपूर्ण जीवन प्रदान करता है ।
- योग साधनों को करते रहने से प्राण पर संयम आने लगता है । रक्तचाप, नेत्र-ज्योति, हृदयरोग, अनेक शारीरिक विकार एवं मानसिक विचारों में परिवर्तन, आध्यात्मिक चेतना का विकास और शरीर को पीड़ा रहित बनाने में सहयोग मिलता है ।

योग बहुतों की दृष्टि से एक विचार-शक्ति है ?

विचार शक्ति का विकास ध्यान से होता है और जैसे-जैसे हम अपने ऊपर संयम ले आते हैं— ध्यान उतना ही अच्छा होता है ।

- ध्यान करने का ठीक समय प्रातः या संध्या ठीक रहता है ।
- कम से कम १५ मिनट का समय अपनी दिनचर्या में अवश्य दें ।

# मैंने किस तरह योग अपनाया

*मेरा जन्म ११ जुलाई १८२९ को लंदन में हुआ । मेरे जन्म के सत्य का सेंट जॉर्ज की गिरजा, ब्लूम्सबूरी लंदन और ११० वर्ष पहले वेस्टमिन्सटर अस्पताल भी साक्षी है । मेरी नेत्र दृष्टि में परिवर्तन १०९ वर्ष की आयु के बाद आया ।*

*मुझे कोई आश्चर्य नहीं है जब लोग यह पढ़ेंगे कि मैं ११० वर्ष का वृद्ध हूं । अपने मन में कल्पना करेंगे कि एक वयोवृद्ध जो पहियों की गाड़ी पर चलता होगा या खाट पर पड़ा दूसरों पर आधारित होगा ।*

*मैं यह सत्य रूप से इतना अवश्य कहूंगा कि मेरी ऐसी कोई अवस्था नहीं है ऐसी अवस्था के समीप भी नहीं हूं । मैं अभी तक स्वस्थ हूं और दिमाग में अब भी शक्ति है और कोई भी कार्य आराम से कर सकता हूं । आजकल ऐनक का प्रयोग करता हूं लेकिन किसी कार्य में कोई कठिन अनुभव नहीं करता । मैं भोजन पूर्ण आनंद के साथ लेता हूं । व्रतों के चक्कर में नहीं पड़ता ।*

*जीवन के सौ वर्षों में अनेक अनुभव हुए । पत्रकार होने के कारण अनेक विशिष्ट व्यक्तियों से भेंट हुई और विश्व के अनेक स्थानों के दर्शन किये । मुझे अपना बचपन याद है, जब एक बार लंदन की पार्लियामेंट में आग लगी थी और मल्का विक्टोरिया की ताजपोशी हुई थी । मैंने चार्ल्स डिकन के साथ बातें की हैं । याद आता है जब प्रिंस ऑव वेल्स बुरी तरह बीमार पड़े थे और उनके ठीक होने पर लंदन में खुशियां मनायी गयी थीं । जीवन के हजारों अनुभव सामने हैं जो आम आदमी को सामान्य प्रतीत*

एक बात ध्यान रखें जब मन में आये ध्यान के लिए बैठ जाएं और बाद में कुछ दिनों के लिए न करें । इससे लाभ ठीक नहीं होता है । अच्छे परिणामों के लिए नित्यप्रति योग करना आतश्यक है । जिस गुरु ने मुझे योग का ज्ञान दिया उस समय उनकी आयु १४७ वर्ष की थी । मुझे ऐसे महान योगी से भेंट कितनी मूल्यवान सिद्ध हुई । मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक दृष्टि से योग साधनों का ज्ञान दिया जो हजारों वर्षों से भारत में सिखाया जाता रहा है । योग द्वारा व्यक्ति की आयु १५० से २०० वर्ष तक जा सकती है, जो इन साधनों को श्रद्धा के साथ जीवन में अपनाएंगे उन्हें अवश्य लाभ होगा । मेरे जीवन में अनेक ऐसे अवसर आये, अगर योगाभ्यास नहीं किया होता, तो ११० वर्ष का यह जीवन संभव नहीं था । मेरी यह पुस्तक भगवान की कृपा से आपको नवजीवन प्रदान करेगी ।
अब मैं कह सकता हूं कि इस समय इंगलैंड में मेरी आयु सबसे अधिक है और इसके लिए अपने गुरु को हृदय से धन्यवाद देता हूं ।
यह ज्ञान मैं आपको देने में हर्ष का अनुभव कर रहा हूं ।

— चार्ल्स हेनरी एरनोल्ड

*होंगे । जीवन में एक ऐसा संयोग आया जिसे अब तक भुला नहीं पा रहा हूं— वह है योग । कुछ शब्दों में मेरे ऊपर जो बीता वह लिख रहा हूं और आज जिसके कारण इस आयु तक आ सका हूं ।*

*यह घटना भारत में हुई । मैं पवित्र भूमि काशी की यात्रा पर था । १८५२ की घटना है (गदर से पहले) हजारों आदमी किसी त्योहार को मनाने के लिए इधर-उधर जाते दीख रहे थे । मेरी दृष्टि कुछ दूरी पर खड़े हिंदू एवं मुसलमानों पर पड़ी, जो एक वृद्ध व्यक्ति पर बुरी तरह प्रहार कर रहे थे । मैं श्वेत त्वचा का व्यक्ति था । मेरी एक आवाज पर वे सब भाग गये लेकिन तब तक वह वृद्ध काफी आघात पा चुका था ।*

*मैंने उस व्यक्ति को वहां से हटाया और चोटों की मरहम पट्टी में सहायता पहुंचायी । वह व्यक्ति बाद में मेरे गुरुदेव, उच्च कोटि के योगी, स्वामी चक्रानंद जी थे ।*

## प्रथम योगाभ्यास : प्रथम सप्ताह

### शरीर, मन एवं आत्मा को प्रकृति के साथ एक लय में लाना।

रात्रि को सोते समय तकिये को अपने स्थान से हटा दें (योगाभ्यास के समय) ।

शरीर को सीधा लिटाकर और हाथों को पैरों के पास ले जाएं । मुख को बंद करके नासिका द्वारा हलके-हलके वायु को अंदर जाने दें । प्राणायाम करें । अपने मन को सांस के साथ रखें और अनुभव करें कि वायु शरीर की हड्डियों में प्रवेश कर रही है । बाद में यही अनुभव हाथ-पैर एवं अन्य अंगों में करें । अंत में वायु आपकी छाती और फेंफड़ों में आ जाएगी । यह योग क्रिया चार या पांच बार करें । रोकी हुई हवा को अब हलके-हलके मुख द्वारा बाहर निकालें ।

फिर से सांस लें । पांच सैकंड रोकें और अनुभव करें कि समस्त शरीर की शिरा-शिरा में प्राण की शक्ति समा रही है । इस योग क्रिया से शरीर को ऐसा अनुभव होगा कि प्रकृति के साथ मिलकर विश्व के अंग बन गये हों ।

इस योग साधना से समस्त शरीर की प्राण-शक्ति जाग्रत हो जाएगी और भविष्य में अन्य क्रियाओं को करने के लिए शरीर में शक्ति का आगमन होगा और किसी प्रकार की शारीरिक पीड़ा अनुभव नहीं होगी । अगर इस क्रिया को १२ बार किया जाए तो कुछ समय बाद शरीर के प्रत्येक अंग को आराम का अनुभव होगा और सभी मांसपेशियों का तनाव शांत हो जाएगा ।

ध्यान रहे लेटने का स्थान आरामदायक होना चाहिए । तख्त पर हलका गद्दा ठीक रहता है । समय के साथ निद्रा की अवस्था अपने आप आ जाएगी और शरीर विशेष आराम अनुभव करेगा ।

## प्रातः के समय

प्रातः की ब्राह्म महूर्त अवस्था में आराम से दिनचर्या के बाद सिरहाने के तकिये को फिर से हटा दें और आराम से लेट जाएं । अपने हाथों को कमर के पास लाकर रोक दें । हलके-हलके सांस लेकर पहले रोकें । और पैरों को शरीर से दो इंच ऊपर उठाएं । सांस की क्रिया हलके-हलके फेफड़ों में प्रवेश करेगी । अब लगभग १५ सैकंड सांस रोकें और बाद में अपने मुख को खोलकर सांस को वायुमंडल में मिलने दें । अपने पैरों को पहली अवस्था में ले आएं । यह क्रिया सांस छोड़ने के साथ अपने आप होगी, किसी प्रकार का प्रयत्न नहीं होगा ।

इस योग क्रिया को १२ बार करें । प्रारंभिक अवस्था में कुछ कठिनता अनुभव होगी लेकिन समय के साथ आसानी अनुभव होगी और शरीर में शक्ति संचार होती महसूस होगी । मन के साथ जीवन की दिनचर्या में एकरूपता आ जाएगी ।

एक सप्ताह की रात और प्रातः के योगाभ्यास से आश्चर्य अनुभव होगा । नेत्रों में ज्योति, दृष्टि परिवर्तन, गालों की सिकुड़न में कमी, रक्तचाप में समानता, मुख पर लाली एवं होठों पर तेज । जीवन का यह अनुभव इतना आनंददायक होगा, जिसे किसी भी मादक पदार्थ या कॉकटेल पार्टी से प्राप्त नहीं किया जा सकता ।

प्रारंभिक कुछ सप्ताह इसी तरह व्यायाम करते रहना चाहिए लेकिन मन में यह ध्यान रहे कि इससे स्वास्थ्य एवं शरीर को नया जीवन प्राप्त हो रहा है । शरीर में यौवनावस्था वापस आ रही है और सच्चे रूप में अनंत के साथ एक हो रहे हैं ।

अपने मन को शक्ति प्रदान करने में एक नयी चेतना का विकास होगा जो शरीर के विकास में सहायक होगा ।

योगाभ्यास में अपनी पूरी श्रद्धा और आंतरिक प्रेम होना चाहिए । अंदर से कहते रहना चाहिए कि मेरा शरीर स्वस्थ हो रहा है । इस भावना को अंदर अनुभव करें और हलके-हलके आध्यात्म चेतना के साथ विकसित होने दें । अपने मस्तिष्क में फिजूल के प्रश्नों को स्थान न दें ।

## दूसरा योगाभ्यास : दूसरा सप्ताह

**योग क्रिया से मांसपेशियों को शक्ति और शरीर में नया जीवन**

इस योगाभ्यास में ध्यान रखें कि आध्यात्मिक, मानसिक एवं शारीरिक विकास होता है । विकास की गति ज़ल्दी नहीं हलके-हलके होती है ।

अपने को सीधा खड़ा रखें और हाथों को पीछे की तरफ ले जाएं और पकड़ लें । अब नासिका द्वारा हलके-हलके लंबी सांस लें और अनुभव करें कि शरीर के सभी अंगों में उसका प्रवेश हो रहा है । हलके-हलके बाद में सांस की निकासी करें । इस क्रिया को दस बार किया जा सकता है ।

अपने हाथ में एक अच्छी घूमनेवाली छड़ी लें । उसके ऊपर के भाग को अच्छी तरह पकड़कर आगे की तरफ हलका झुकें, सारा बोझ हाथ के पंजों पर आ जाएगा । अपने शरीर को कुछ आगे झुकाकर हलका-सा सीधा करें । बाद में फिर से प्रारंभिक अवस्था में आ जाएं । यह क्रिया दस बार की जा सकती है ।

इन विधियों से हाथ की मांसपेशियों और शरीर में शक्ति का संचार होता है ।

## तीसरा योगाभ्यास : तीसरा सप्ताह

### शरीर और मन में ताल-मेल लाने की योग क्रियाएं

अपने को सीधा पीठ के सहारे लेटी अवस्था में ले जाएं । ध्यान रहे तकिये का प्रयोग बिलकुल नहीं होना चाहिए । अपनी अंगुलियों को हथेली के उस स्थान पर ले जाएं, जहां डॉक्टर लोग नब्ज देखते हैं— अब अपनी नब्ज की गति को अनुभव करें ।

अब आराम से हलके-हलके सांस लें । इस क्रिया के समय नब्ज की तीन डिब-डिब की आवाज सुनें और सांस छोड़ें, फिर तीन डिब-डिब सुनें ।

इस विधि से मन पर नियंत्रण और शरीर में प्राण शक्ति का संचार होगा । यह क्रिया १५ बार की जा सकती है । ध्यान रहे नब्ज की डिब-डिब की ध्वनि पर सांस लेते और छोड़ते समय समान रूप से ध्यान रहे । हो सकता है, प्रारंभिक अवस्था में कुछ कठिनाई अनुभव हो, लेकिन हलके-हलके क्रियाएं सुगमता से होने लगेंगी ।

समय आने पर अपने ऊपर पूर्ण नियंत्रण लाने में आसानी आ जाएगी । इस विधि से मन (इधर-उधर भटकने की भावना) पर नियंत्रण और आध्यात्मिक शक्ति का संचार शरीर में अनुभव होगा ।

समस्त संसार एक विशेष लय में अपने को चला रहा है । बिना लय के सब कुछ अस्त-व्यस्त हो सकता है । जिस समय मन और शरीर में आध्यात्मिक शक्ति और मानसिक चेतना में समन्वय आ जाता है, उस समय जीवन एक अद्भुत आनंद अनुभव करता है ।

योग की यह क्रिया महान शक्ति है— कोई जादू या परी-कथा नहीं । ध्यान रहे उसे एकाग्रित मन से करें और अंदर पूर्ण श्रद्धा होनी चाहिए— बाद में विजय आपकी ही होगी ।

## चौथा योगाभ्यास : चौथा सप्ताह

### आत्म शासन और मानसिक एवं शारीरिक विश्राम

योगाभ्यास की प्रत्येक क्रिया अपने आप में महत्त्व रखती है और मानसिक शारीरिक

विश्राम देने में सहायक पायी गयी है । समय के साथ मांसपेशियों को आराम प्राप्त होता है । प्रगति के साथ आराम की अवस्था में आध्यात्मिक चेतना का विकास शरीर की प्रत्येक शिरा और मानसिक शक्ति में परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगता है । यही अवस्था जीवन के विकास के लिए अति आवश्यक है ।

विश्राम की यह अवस्था प्राप्त करना बहुत आसान नहीं है । इसके लिए संकल्प शक्ति और ठीक रूप से व्यायाम की एक-एक क्रिया को ध्यान से करना । विश्राम अवस्था लाने के लिए आराम से लेट जाएं और मांसपेशियों पर किसी प्रकार का दबाव न आने दें । इस अवस्था में प्रत्येक शरीर का अंग आराम अनुभव करेगा, हलके-हलके सांस की क्रिया तीन या चार बार करें । सांस नासिका द्वारा लेकर छह की गिनती नब्ज पर गिनें । अपने शरीर को दायें तरफ ले जाएं और करवट की अवस्था में आ जाएं । कुछ समय रुकें और बाद में बायें तरफ ले जाएं । ध्यान रहे, सांस की क्रिया में कोई रुकावट नहीं आनी चाहिए । ऐसी अवस्था में हाथ और पैर की मांसपेशियां आराम का अनुभव करेंगी और किसी प्रकार का दबाव अनुभव नहीं होगा ।

हाथों को सिर के ऊपर ले जाकर पैरों को कभी-कभी दायें और बायें ले जा सकते हैं । दायें पैर को ऊपर उठाने का प्रयत्न करें और बाद में हलके-हलके अपनी असली अवस्था पर चले आएं ।

अब हाथों को नीचे ले आएं और पहले एक हाथ को पूरा घुमाएं और उसके बाद दूसरे को । यह क्रिया पांच या सात बार कर सकते हैं ।

पैरों को थोड़ा दूर रख कर शरीर को आगे की तरफ ले आएं ।

कुरसी पर आराम से बैठ जाएं और कमर की मांसपेशियों को आराम का अनुभव होने दें । इस आराम की अवस्था में कभी-कभी निद्रा का भास होने लगता है । इन क्रियाओं से शरीर में अद्भुत चेतना का विकास होगा और आत्म-शासन की शक्ति जाग्रत होगी ।

ध्यान रहे, योगाभ्यास से जो लाभ अनुभव हों, उन्हें नकारात्मक विचारों से बिगड़ने न दें । कभी-कभी वातावरण का प्रभाव असर कर जाता है । मानसिक और शारीरिक तनाव में विश्राम अनुभव होने से पूर्ण शरीर अनेक परिवर्तन अनुभव करता है ।

आगे कभी-कभी क्रियाओं में थोड़ा परिवर्तन करना चाहिए । शरीर को आराम देने के स्थान पर थोड़ा-सा खिंचाव ले आएं । कुछ मिनटों की इस अवस्था के बाद फिर से विश्राम की अवस्था पर अपने को ले आएं ।

इस क्रिया को करने के लिए आराम से खड़े हो जाएं । पैरों को कुछ दूर रखकर पंजों पर अपने को खड़ा करें और हाथों द्वारा ऊपर की छत को छूने का प्रयत्न करें ।

ऊपर की क्रिया के बाद आराम से बैठ जाएं और मानसिक शांति का अनुभव करें । बाहर के विचारों को अंदर प्रवेश का समय मत दें । सांस की क्रिया पर अपना मन ले जाएं । ऐसी अवस्था में अपने में एकांत अनुभव करेंगे और यह अवस्था आत्म विकास में सहायक होगी ।

अनुभव करें आप प्रकृति के एक अंग हैं और यह भावना अमरत्व की तरफ जीवन को ले जा रही है । यही चेतना विकास की ओर ले जाएगी ।

अपने विचारों में परिवर्तन लाएं और बाद में फिर से आराम की अवस्था में अपने को ले आएं । यह अनुभव नया जागरण पैदा करेगा और किसी कार्य को करने के लिए अद्भुत शक्ति शरीर में लाएगा ।

ऊपर के लोक की साहसिक यात्रा में मानसिक अवस्था में परिवर्तन आता है । शरीर में कायाकल्प का अनुभव होता है । चिंता और किसी प्रकार का डर दूर दिखायी देगा ।

ध्यान रहे, इस तरह के अनुभव कुछ क्रियाओं के बाद नहीं— काफी अभ्यास के बाद प्राप्त होते हैं ।

योग कोई जादू नहीं । नित्य प्रति इसका अय्यास करना चाहिए । मानसिक श्रद्धा के विकास होने से शरीर नये जीवन का अनुभव करेगा ।

## योगाभ्यास पांचवां : पांचवां सप्ताह

### शरीर के मोटापे में कमी और एकरूपता

आराम से बिना तकिये के लेट जाएं । सांस की क्रिया नासिका द्वारा हलके-हलके लें । ध्यान करें, सूर्य की शक्ति के साथ वायु पेट में प्रवेश कर रही है । इस क्रिया को सात या दस बार करते समय मन में अनुभव करें कि शरीर का मोटापा कम हो रहा है ।

बाद में पैरों को ऊपर ले जाएं और बाद में नीचे ले आएं । यह क्रिया सात बार करें ।

एक सप्ताह के व्यायाम के बाद शरीर में परिवर्तन अनुभव होगा । ध्यान रहे, तले पदार्थ और क्लिष्ट भोजन से बचें । सादा शाकाहारी भोजन और फलों का सेवन करें ।

इस चिकित्सा को करते समय सांस अंदर लेने के समय पेट पर हलके-हलके हाथ फेरें और बाद में वायु की निकासी करें । समय के साथ शरीर का मोटापा और शिथिलता के साथ आलस्य में भी कमी आएगी ।

## योगाभ्यास छठा : छठा सप्ताह

### चेहरे के सौंदर्य में लावण्यता और बोलने-गाने की आवाज में मीठापन

प्रातः के समय खड़े होकर नासिका द्वारा प्राणायाम की क्रिया करें। सांस को कुछ समय रोकें और मुख से तेजी के साथ वायु को बाहर निकालें। समय के साथ सांस लेने के बाद कान के छिद्रों को अंगूठे और नासिका के कनिष्ठ अंगुलियों से बंद करें। सांस तेज गति से छोड़ते समय नासिका के मार्ग पर रखी अंगुलियों को एकदम हटा लें। कान के अंगूठे को वैसा ही रहने दें। यह क्रिया पांच या सात बार की जा सकती है।

● अपने को खड़ा करके सांस की क्रिया करें और मुख द्वारा छोड़ते समय होठों में छोटा-सा छिद्र बना लें, जो एक प्रकार की सीटी की ध्वनि दे। यह क्रिया पांच या सात बार की जा सकती है।

ध्यान रहे, ठंडे पदार्थ सेवन में न लाएं। कभी-कभी गरम पानी में नमक डालकर गरारे किये जा सकते हैं। गाते समय कभी-कभी ऊष्ण जल का सेवन हितकर रहता है। कुछ ही दिनों में इन साधनों से आवाज में परिवर्तन आएगा और पहले से अधिक प्रभाव डालने की शक्ति बढ़ जाएगी।

## योगाभ्यास सप्तम : सातवां सप्ताह

### प्राण शक्ति द्वारा शारीरिक एवं मानसिक विकास

आराम से सीधे बैठ जाएं। दाये नासिका छिद्र को बंद कर लें। यह क्रिया अंगूठे के ऊपर अंगुली रखकर की जा सकती है। अब दूसरी नासिका से हलके-हलके सांस की क्रिया करें और अनुभव करें कि छाती, पेट एवं पैरों में वह प्रवेश कर रही है। सांस को दस सैकंड तक रोकें और बाद में वायु को मुख द्वारा निकालें। अब दूसरी नासिका पर अंगूठा और अंगुली से छिद्रों को रोकें और दूसरी नासिका से वायु सेवन करें।

यह क्रिया एक के बाद दूसरी नासिका द्वारा दस बार करें। अब खड़े होकर छह बार सांस की क्रिया करें और अपने हाथ को आगे-पीछे झूलने दें। अपने अंदर यह अनुभव करें कि प्राण शक्ति शरीर की शिरा में प्रवेश करके नव-जीवन प्रदान कर रही है।

# योगाभ्यास आठवां : आठवां सप्ताह

## विश्राम देने की शक्ति : ध्यान के बिना संभव नहीं

यह सत्य है कि मानसिक एकाग्रता प्राप्त करने के लिए ध्यान का विशेष स्थान है।

देखा गया है, बिल्ली, कुत्ते एवं अन्य जानवरों को जब निद्रा अवस्था में होते हैं तो उस समय उनकी अवस्था किस अवस्था में आ जाती है।

ध्यान अवस्था से पहले अपने मस्तिष्क को विचार रहित अवस्था में ले आएं और अनुभव करें कि शरीर की शिरा-शिरा आराम की अवस्था में आ रही है। आराम से शांति मुद्रा में बैठ जाएं और सांस की गति पर संयम रखते हुए हृदय में ध्यान ले जाएं। समय के साथ अर्ध निद्रा की अवस्था अनुभव में आएगी। इसी अवस्था को 'ट्रांस' भी कहते हैं।

शांत वातावरण में प्रातः या संध्या के समय ध्यान की क्रिया की जा सकती है। समय का कोई बंधन नहीं है।

## कुछ सुझाव

- समय के साथ सभी कार्यक्रमों को करना संभव न हो तो कुछ को नित्य अवश्य करना चाहिए। इनका प्रभाव थोड़े ही समय में अनुभव होने लगता है।
- दिनचर्या में जल का प्रयोग काफी होना चाहिए। भोजन एवं क्रिया के बाद पेशाब करने से शरीर की ऊष्णता में समानता और गुर्दों पर दबाव नहीं पड़ता।
- स्नान जीवन का अंग होना चाहिए। स्नान प्रातः और संध्या को किया जा सकता है।
- क्रियाओं के बाद शांत निद्रा प्राप्त होगी। इससे शरीर की मांसपेशियों को विश्राम मिलता है।
- जीवन के यम-नियम नहीं भूलने चाहिए। काम, क्रोध और लोभ से बचना चाहिए।
- अपने भोजन में मांस का सेवन कम एवं शाकाहारी चीजों का सेवन अधिक होना चाहिए। फल, सलाद, हरी तरकारियां, अंडे, मक्खन, पनीर एवं दुग्ध पदार्थ लाभप्रद हैं।
- उपरोक्त सुझावों से अच्छा स्वास्थ्य और शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त किया जा सकता है।

**— प्रस्तुति : डॉ. एम. एस. अग्रवाल**

# नयी कृतियां

**पं. गंगाप्रसाद अग्निहोत्री रचनावली :** यह कृति भारतेन्दु और द्विवेदी युग के संधिकाल के एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण साहित्यकार की प्रतिनिधि रचनाओं का संकलन है । आठ-नौ दशकों के अंतराल के उपरांत जब हम पीछे मुड़कर इन रचनाओं को देखते हैं तो उस युग के साहित्यकारों की चिंताओं की व्यापकता एक हर्ष मिश्रित आश्चर्य का उद्रेक करती है, ''हिंदी कविता किस ढंग की हो'' से लेकर ''किसानों के बालकों की शिक्षा'' तक उनके सरोकार फैले हुए थे । अग्निहोत्रीजी बहुमुखी क्षमता के साहित्यकार थे । वे अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे । हिंदी की मानक गद्य शैली की प्रतिष्ठा में उनका व्यापक योग था । उनकी अनेक रचनाएं पत्र-पत्रिकाओं में बिखरी हुई थीं । डॉ. हरिकृष्ण त्रिपाठी ने इस बिखरे हुए खजाने को खोजकर इस रचनावली के रूप में उन्हें एक व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया है । उस युग के अन्य रचनाकारों के कृतित्व का भी ऐसा ही संपादन-संकलन अपेक्षित है । शोधकर्ताओं और हिंदी साहित्य के इतिहास लेखकों के लिए तो यह रचनावली बहुत उपयोगी है ।

**— प्रो. कांतिकुमार जैन**

**पं. गंगाप्रसाद अग्निहोत्री रचनावली**
**संपादक : हरिकृष्ण त्रिपाठी, प्रकाशक : भारतीय भाषापीठ, नयी दिल्ली । मूल्य : दो सौ रुपये**

**हिंदी पत्रकारिता के युग-निर्माता :** हिंदी पत्रकारिता आज काफी समुन्नत हो चुकी है लेकिन साथ ही वह 'मिशन' से हटकर 'प्रोफेशन' भी बन गयी है । एक समय था, जब स्वाधीनता के संघर्ष में लेखनी के माध्यम से अपना योगदान देने हेतु देशभक्त पत्रकारिता के क्षेत्र में आये । यही कारण है कि हिंदी पत्रकारिता के विकास और इतिहास का राष्ट्रीय नवजागरण, राष्ट्रोत्थान और स्वाधीनता-संग्राम से अभिन्न संबंध रहा है ।

डॉ. लक्ष्मीशंकर व्यास वयोवृद्ध पत्रकार हैं । उन्होंने संपादकाचार्य श्री बाबूराव विष्णु पराड़कर के साथ कार्य भी किया है । अतः हिंदी पत्रकारिता एवं उसके निर्माताओं पर प्रकाश डालनेवाली उनकी यह कृति प्रामाणिक भी है । पुस्तक में लेखक के छयालिस निबंध हैं, जिनमें उन्होंने हिंदी पत्रकारिता के विकास, उसे समृद्ध बनानेवाले साहित्यकारों, पत्रकारों एवं समय-समय पर प्रकाशित होनेवाले समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं की अच्छी जानकारी दी है । पत्रकारिता में रुचि रखनेवाले लोगों के लिए यह एक पठनीय कृति है ।

**हिंदी पत्रकारिता के युगनिर्माता**. लेखक : **डॉ. लक्ष्मीशंकर व्यास, प्रकाशक** : व्यास प्रकाशन, **के-३१/५१ कालभैरव,** वाराणसी — मूल्य : **पैंसठ रुपये ।**
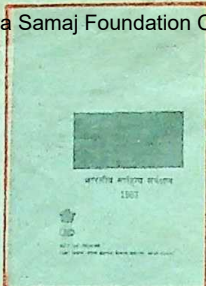
**तपती पगडंडियों पर पगयात्रा :** वयोवृद्ध पत्रकार एवं संपादक पं. कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर के जीवन संघर्ष की व्यथा कथा है । उन्हीं के शब्दों में, 'यह कहानी अनझुके शीश, अनरुके चरण, अनबुझे दीप, अनथके संकल्प की संघर्षात्मक कथा है ।' महात्मा गांधी के आह्वान पर श्री मिश्र किशोरावस्था में ही परिवार छोड़कर असहयोग आंदोलन में कूद पड़े थे । वे अनेक बार जेल भी गये । देश की सेवा के लिए ही उन्होंने पत्रकारिता को अपनाया । इस कृति में एक ओर जहां पाठक को रेखाचित्र,रिपोर्ताज, निबंध का आनंद मिलता है, वहीं लेखक का जीवन, उसका दर्शन उसकी मानसिकता को भी विकसित करता है । श्री मिश्र की भाषाशैली भी अपने ढंग की शैली है । वे सीमित शब्दों में बहुत बड़ी बात कहने में दक्ष हैं । उनकी यह कृति निश्चित ही पाठक को एक जीवन दृष्टि देगी ।

**तपती पगडंडियों पर पगयात्रा**
**लेखक : कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, प्रकाशक : भारतीय साहित्य प्रकाशन, २८६, चाणक्यपुरी सदर, मेरठ । मूल्य : सौ रुपये ।**

**वार्षिकी :** केंद्रीय हिंदी निदेशालय सन् १९६९ से 'वार्षिकी' का प्रकाशन कर रहा है । प्रारंभ में इसका नाम 'हिंदी वार्षिकी' था और उसमें हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं की वर्ष भर में हुई प्रगति का आकलन प्रस्तुत किया जाता था । बाद में इसे 'वार्षिकी' के नाम से प्रकाशित करना शुरू किया गया और इसमें संविधान में स्वीकृत १४ भाषाओं में लिखे जा रहे साहित्य का वार्षिक विवरण दिया जाने लगा । सन् १९८७ की 'वार्षिकी' में संविधान में मान्य चौदहों भाषाओं के साहित्य की प्रवृत्तियों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है । हिंदी साहित्य से संबंधित खंड में सात अध्याय हैं, जिसमें कविता, कहानियां, उपन्यास, नाटक और रंगमंच, आलोचना, बाल साहित्य और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित साहित्य पर अच्छा प्रकाश डाला गया है । असमिया, उड़िया, उर्दू आदि भाषाओं में वर्ष भर में प्रकाशित होनेवाले साहित्य की विवेचना करने वाले लेख काफी जानकारी देते हैं ।

**वार्षिकी-१९८७**
**संपादक-जगदीश चतुर्वेदी, प्रकाशक-केंद्रीय हिंदी निदेशालय,**
**रामाकृष्णपुरम, नयी दिल्ली ।**
**मूल्य-पांच सौ छयालिस रुपये ।**

**दशरथ नंदिनी :** रामायण के प्रमुख पात्रों पर साहित्य में बहुत कुछ लिखा जा चुका है । किंतु दशरथ पुत्री शांता के विषय में बहुत कम लोग जानते हैं । दशरथ ने अपनी पुत्री शांता को शैशव में ही राजा रोम पाद को गोद दे दिया था । बाद में रोम पाद ने अंगदेश में अनावृष्टि के कारण अकाल पड़ जाने से वर्षा होने के लिए ऋषिसृंग से उसका विवाह कर दिया । भवभूति ने उत्तर रामचरित में यत्र-तत्र शांता का उल्लेख किया है । कवि शांतिस्वरूप 'कुसुम' ने इस

खंड काव्य में शांता के पूरे जीवन की कहानी कही है। कवि की सहानुभूति शांता के साथ है। रोम पाद को इस बात का दुःख है कि उसने अनिच्छा से परिस्थितियों के कारण ही शांता का विवाह ऋषिसृंग से किया। शांता के संबंध में कवि की उक्ति है—

*यह है उसका त्याग, त्याग में हो अमरत्व भले ही,*
*किंतु कलेजे पर पत्थर सबको रखना होता है,*
*नारी नहीं उजागर होने देती लाचारी को,*
*अश्रु लोचन पहले ही हृदय सोख लेता है।*

दशरथ नंदिनी,
कवि : शांति स्वरूप 'कुसुम',
प्रकाशक : भारतीय साहित्य प्रकाशन, २८६, चाणक्यपुरी, सदर, मेरठ-२५०००१।
मूल्य : चालीस रुपये।

**गजलपारे** :नयी पीढ़ी के शायर शुजा खावर के एक सौ पच्चीस अशआरों का संकलन है। संकलनकर्ता ने इनको उर्दू, हिंदी और रोमन में बड़े अच्छे ढंग से पेश किया है। जहां कुछ शेर हलके-फुलके अंदाज में हैं वहीं पर बहुत-से अशआर हमें सोचने की दावत देते हैं। आहिस्ता-आहिस्ता दिल में उतरते जाते हैं। कुछ अशआर व्यंग्य से भरपूर हैं। शुजा का अपना वर्णन करने का एक खास अंदाज है जो केवल उन्हीं का हिस्सा है।
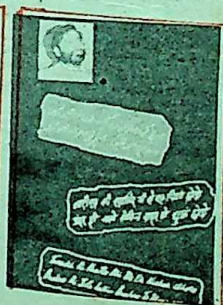
*दुकानें शहर में सारी नई थीं*
*हमें सब कुछ पुराना चाहिए था*

× × ×

*दो चार साल और लड़ाई असूल की*
*फिर खायेंगे मजे से कमाई असूल की*

× × ×

*जा बैठे पलक पर कभी लौट आये जमीं पर*
*हम जैसों को आराम नहीं आता कहीं पर*

'गजलपारे' (शायर शुजा खावर)
संकलनकर्त्ता-नूरजहां सर्वत और सिराज दर्पण,
मूल्य : एक सौ रुपये, प्रकाशक : शमा बुक डिपो, आसफअली रोड, नयी दिल्ली-११०००२

— कुलदीप तलवार

# प्राप्ति स्वीकार

**उपन्यास/**

**यादों के साये :**

लेखक—अनिल कुमार त्यागी,
प्रकाशक—प्रीति मंदिर प्रकाशन, १/६८१६, पूर्वी रोहतास नगर, बाबरपुर मार्ग शाहदरा, दिल्ली-३२, मूल्य-तीस रुपये

**काली मारी :**

लेखक-सतीश चंद्र, प्रकाशक—जनमत प्रकाशन शास्त्री नगर, धनबाद (बिहार)
मूल्य-पच्चीस रुपये

**बसेरे से दूर :**

लेखक—रणवीर सिंह 'राही',
प्रकाशक—देवदार प्रकाशन ५९, सुभाष पार्क एक्सटेंशन, दिल्ली-३२, मूल्य—पच्चीस रुपये।

और अंत में

हैं पांच सितारे बाकी सभी नारे !



छाया : प्रेम कपू

दी हिंदुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिंदुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली में
मुद्रित तथा प्रकाशित
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१

## समस्या-पूर्ति—१४३

# महुआ

समस्या-पूर्ति साहित्य की पुरानी विधा है । हमने उसे फिर से जीवित किया है । यहां प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और नीचे का शीर्षक पढ़िए, इसे लेकर आपको एक छंदबद्ध कविता लिखनी है । रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की हो । समस्या-पूर्ति के परंपरागत नियमों के अनुसार चित्र के नीचे दिये शब्द कविता के अंत में ही आने चाहिए ।

कृपया ध्यान दें :

१. समस्यापूर्ति केवल पोस्टकार्ड पर भेजें । लिफाफे में भेजी गयी प्रविष्टि खोली ही नहीं जाएगी ।
२. समस्यापूर्ति संपादक के व्यक्तिगत नाम से नहीं भेजें । ऐसी प्रविष्टियों पर विचार नहीं किया जाएगा ।
३. एक बार पुरस्कृत व्यक्ति की रचना यथासंभव छह माह तक दोबारा पुरस्कृत नहीं की जाएगी ।
४. अगले अंक से तृतीय पुरस्कार भी प्रदान किया जाएगा । इस प्रकार :

प्रथम पुरस्कार-१२५ रु., द्वितीय पुरस्कार-१०० रुपए तथा तृतीय पुरस्कार-७५ रुपए का होगा ।

अंतिम तिथि : २० जून, १९९१

पारदर्शी : निहालचंद जैन

श्रृंखला की अन्य प्रकाशित पुस्तकें

## विश्व-प्रसिद्ध ......

* प्रेरक-प्रसंग
* खोजें
* जासूस
* वैज्ञानिक
* सभ्यताएं
* दुर्घटनाएं
* जनसंहार
* युद्ध
* क्रूर हत्यारे
* भ्रष्ट राजनीतिज्ञ
* रिकार्ड्स I, II
* भूत-प्रेत की घटनाएं
* बैंक डकैतियां व जालसाजियां
* धर्म, मत एवं संप्रदाय
* विनाश लीलाएं
* हस्तियों के प्रेम-प्रसंग
* तख्तापलट की घटनाएं
* रोमांस-कथाएं
* खोज-यात्राएं
* 101 व्यक्तित्व I
* अनमोल खजाने
* अलौकिक रहस्य
* गुप्तचर-संस्थाएं
* राजनैतिक हत्याएं
* अनसुलझे रहस्य
* चिकित्सा-पद्धतियां
* सनकी तानाशाह
* खेल और खिलाड़ी
* कुख्यात महिलाएं
* मिथक एवं पुराण-कथाएं
* रोमांचक कारनामे
* भयानक रोगों पर विजय
* विलासी सुंदरियां
* जासूसी - कांड
* जन-क्रांतियां
* मांसाहारी तथा अन्य विचित्र पेड़ - पौधे
* आतंकवादी संगठन
* ड्रग माफिया
* आध्यात्मिक गुरू एवं शैतान-कल्ट्स
* मुकदमे

मूल्य : 20/- प्रत्येक डाकखर्च : 5/-
एक साथ छः पुस्तकें मंगाने पर डाकखर्च माफ

**36 Titles available in English & 4 in Bangla**

अपने निकट व ए.एच. व्हीलर के रेलवे व बस-अड्डों के बुकस्टॉलों पर मांगें अन्यथा वी.पी.पी. द्वारा मंगाने के पते :-

**पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006**
शोरूम : 10-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002.
शाखा: मिशन रोड,बंगलौर; अशोक राजपथ, पटना

# शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

**नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।**

● **ज्ञानेन्दु**

**१. अवशिष्ट—** : क. शिष्टता से नीचे, ख. बचा हुआ, ग. नाममात्र, घ. समाप्त।
**२. आविर्भाव—** : क. आगमन, ख. दर्शन, ग. प्रकट होना, घ. सत्कार।
**३. निमग्न—** : क. नाखुश, ख. व्यस्त, ग. चिंतित, घ. डूबा हुआ।
**४. पक्षपात—** : क. हिमायत, ख. अनुचित समर्थन, ग. पिछड़ापन, घ. पक्षी का व्यवहार।
**५. पंचतत्व—** : क. पांचवां भाग, ख. पांच गुना, ग. पांच मूल तत्वों का समूह, घ. विनाश।
**६. निर्जन—** : क. हार, ख. एकाकी, ग. सुनसान, घ. चिंताग्रस्त।
**७. उपहत—** : क. खंडित, ख. निराश, ग. क्षत-विक्षत, घ. गिरा हुआ।
**८. उच्छल—** : क. ऊपर को उछलता हुआ, ख. ऊंचा, ग. उपद्रवी, घ. उखड़ा हुआ।
**९. दांभिक—** : क. बनावटी, ख. ढोंगी, ग. बाहरी, घ. शत्रुतापूर्ण।
**१०. स्तब्ध—** : क. चकित, ख. गतिहीन, ग. खामोश, घ. आहत।
**११. स्तुत्य—** : क. पूजनीय, ख. सराहना किये जाने योग्य, ग. सच्चा, घ. गुणवान।
**१२. परिश्रांत—** : क. परिश्रम में लगा हुआ, ख. क्लेशमय, ग. बहुत थका हुआ, घ. शांत।
**१३. निवृत्ति—** : क.निर्वाह, ख. साधनहीनता, ग. छुटकारा, घ. तृप्ति।
**१४ विच्छिन्न—** : क. अलग किया हुआ, ख. क्षुभित, ग. तटस्थ, घ. उदास।

## उत्तर

१. ख. बचा हुआ। भोजन के **अवशिष्ट** पदार्थों का भी लोगों में वितरण हो गया। (मूल—अव, शिष्)
२. ग. प्रकट होना। नये नेता के **आविर्भाव** से समाज में नयी चेतना उत्पन्न होती है। (मूल—आविस्+भू)
३. घ. डूबा हुआ, तल्लीन। वह आध्यात्मिक चिंतन में **निमग्न** है।
४. क. हिमायत, तरफदारी। निर्णय में अनुचित **पक्षपात**ठीक नहीं। (मूल—पक्ष)
५. ग. पांच मूल तत्त्वों का समूह (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश)। अतंतः देह **पंचतत्व** में विलीन हो जाती है।
६. ग. सुनसान, एकांत। वह **निर्जन** वन में घूम रहा है। (निर्,जन)
७. ग. क्षत-विक्षत, चोट खाया हुआ। दारिद्र्य से **उपहत** व्यक्ति को सांत्वना देना कठिन है। (मूल—उप, हन्)

८. क. ऊपर को उछलता हुआ । समुद्र के किनारे **उच्छल** तरंगों का दृश्य मनमोहक है । (मूल—उद्, शल्)
९. ख. ढोंगी, घमंडी । मनुष्य को **दांभिक** नहीं, स्वाभिमानी होना चाहिए । (दंभ से विशेषण)
१०. ख. गतिहीन, सुन्न, संज्ञाहीन । उसके छद्म व्यवहार को देखकर मैं **स्तब्ध** रह गया ।
११. ख. सराहना किये जाने योग्य । अपने महान कार्यों के कारण वह **स्तुत्य** है । साहित्य के क्षेत्र में उसने **स्तुत्य** प्रयास किया है । (मूल—स्तु)
१२. ग. बहुत थका हुआ । **परिश्रांत** होने के कारण वह अधिक कार्य नहीं कर सकता ।
१३. ग. छुटकारा, मुक्ति, किसी कार्य की पूर्णता या समाप्ति । पद से **निवृत्ति** के पश्चात वह समाज सेवा में संलग्न है ।
१४. क. अलग किया हुआ । समय तथा परिस्थितियों ने सभी को **विच्छिन्न** कर दिया । (वि, छिद्)

## पारिभाषिक शब्द

| | |
|---|---|
| Interim | अंतरिम |
| Removal | हटाया जाना |
| Suspension | निलंबन |
| Upgrading | उन्नयन/ पदोन्नति |
| Underline | रेखांकित करना |
| Designation | पद/पदनाम |
| In particular | विशेषत: |
| In lieu of | के बदले में |

## समस्या-पूर्ति—१४३

### तुम हमारे

### प्रथम पुरस्कार

*बाग में है कुसुम हंसता, कंटकों के ही सहारे*
*जिंदगी की नाव हंसती, दु:ख-सुख के ही किनारे*
*प्रेम का है पंथ ऐसा, कौन जीते, कौन हारे*
*प्रीति की है रीति सच्ची, हम तुम्हारे, तुम हमारे*

**—डॉ. योगेश्वर प्र. सिंह 'योगेश'**

ग्राम— नीरपुर, पो.- रामनगर करारी कछार, वाया— अथमल गोला, जिला- पटना (बिहार), पिन-८०३२११

### द्वितीय पुरस्कार

*सुख-दु:खों की राह में हंस-हंस चलूंगी*
*आंधियों में भी शमा बनकर जलूंगी*
*जग भले हमको दिवाना कह पुकारे*
*पर न निज संकल्प से किंचित टलूंगी*
*ज्यों नदी की एक धारा, दो किनारे*
*मैं तुम्हारी ही रहूंगी, तुम हमारे*

**—डॉ. कमलेश**

आलमपुर (भिंड), म.प्र.-४७७४४९

### तृतीय पुरस्कार

*प्यार बिन इस जिंदगी में, व्यर्थ जग के सब सहारे*
*पास तुम हो तो नयन में, याद के उगते सितारे*
*आज मेरी हर खुशी के स्रोत केवल तुम्हीं-तुम हो*
*मैं तुम्हारी प्रेरणा हूं, मीत मन के तुम हमारे*

**—प्रेमशंकर लाल श्रीवास्तव 'प्रेम'**

क्वार्टर नं. आई-१५८, ब्लॉक नं. ९, हिंडालको कॉलोनी, रेनुकूट, सोनभद्र (उ.प्र.)

# ज्योतिष स्तंभ बंद करें/न करें

***हमने अपने पाठकों से ज्योतिष-स्तंभ को बंद करने के संबंध में विचार आमंत्रित किये थे । बहुत-सारे पत्र हमें मिले, जिसमें पक्ष और विपक्ष में काफी संख्या में मत-भिन्नता थी । सबको पाठकों तक पहुंचाने में स्थान की कठिनाई है । अतः इनमें से कुछ चुने हुए पत्रों को पाठकों तक प्रस्तुत कर रहे हैं—***

## ज्योतिष स्तंभ छापने के पक्ष में

महोदय,

'कादम्बिनी' जून १९९१ के अंक में आपकी टिप्पणी 'ज्योतिषियों को हटाइए' पढ़कर मन को संतोष मिला, वहीं क्षुब्ध भी हुआ । आपने नितांत सत्य कहा है कि भारत आस्थावान देश है । इस देश की आस्था को निरंतर ज्योतिषियों ने लूटने का काम किया आदि-आदि । उक्त कथन पूर्ण नहीं है और उसमें यह भी जुड़ना चाहिए कि भविष्यवक्ता ज्ञान व शोध पर बिना विचारे पेशेवर ज्योतिषी हैं क्योंकि उनका कार्य संपादक के इर्द-गिर्द घूमना, तुच्छ प्रकृति की उपलब्धता प्राप्त करना व रोजी-रोटी कमाना होता है । मैं सभी ज्योतिषियों पर लगाये गये आरोप से क्षुब्ध हूं ।

**पं. सागर तिवारी** कानपुर

कानपुर के पं. सागर तिवारी ने पिछले दो वर्षों में कुछ भविष्यवाणियां की हैं, जिन पर विश्वास करना ही पड़ रहा है— उन्होंने नवंबर १९८९ में राजीव के भविष्य के बारे में कहा था कि उनके ग्रहयोग बहुत खराब आ रहे हैं जिससे राजनीतिक पटल से अदृश्य होने की संभावनाएं हैं । उनका मानना था कि राजीव व विश्वनाथ प्रताप सिंह पुनः प्रधानमंत्री नहीं बन सकते । वे अब भी कहते हैं कि भारत के छठवें व नौवें प्रधानमंत्री के लिए जान का खतरा है । यानी छठवें प्रधानमंत्री के तौर पर स्वर्गीय राजीव गांधी थे और नौवें प्रधानमंत्री वर्तमान में हैं । यदि कोई उपाय नहीं किये गये तो इनके जीवन को

खतरा हो सकता है । पं. तिवारी का मानना है कि ज्योतिष को बदनाम करनेवाले 'सत्तामुखी' ज्योतिषी हैं ।

जून '९१ के 'कादम्बिनी' अंक में आपकी टिप्पणी— 'ज्योतिषियों को हटाइए' पढ़कर हार्दिक क्षोभ हुआ । निश्चय ही आपने यह भावातिरेक में लिखा है, जो स्व. राजीव गांधी जैसे व्यक्तित्व के हतप्रभ कर चले जाने से उपजी मानवीय प्रकृति है ।

**रा. म. तिवारी,** घासपुरा खंडवा

राजीव गांधी पर मारकेश लगा है इसकी भविष्यवाणी न कर पाना निश्चय ही बहुत बड़ी कमी को दर्शाता है, परंतु ज्योतिष को बिल्कुल निरर्थक नहीं कर देता । 'कादम्बिनी' के ज्योतिष से संबंधित स्तंभ जो अब तक स्थायी-स्तंभ स्वरूप प्रकाशित होते रहे हैं, को बंद कर देने से ऐसी हृदय-विदारक घटनाओं को रोकने में सहायता नहीं मिलेगी ।

**ब्रह्म प्रकाश दुबे,** ताम्बरम

ज्योतिष विद्या में आपके कथन को गलत साबित करने के लिए मैं अपना लेख जिसका प्रकाशन ज्योतिष की सर्वप्रथम मासिक पत्रिका 'द एस्ट्रोलाजिकल मैगजीन' में हुआ था, भेज रहा हूं, इस लेख को झांसी के दैनिक जागरण ने भी प्रकाशित किया है ।

आशा है यह लेख आपको ज्योतिष शास्त्र में नयी रोशनी प्रदान करेगा ।

**सुभाष सक्सेना,** झांसी ।

जून '९१ का 'कादम्बिनी' अंक पढ़ा । जिसमें समय के हस्ताक्षर में आपने लिखा है कि 'ज्योतिषियों' को हटाइए, क्योंकि किसी भी ज्योतिषी ने ये भविष्यवाणी नहीं की कि राजीव गांधी को मारकेश लग रहा है । तो इस संदर्भ में मैं कहना चाहूंगा कि राजीव गांधी की सही जन्म कुंडली प्राप्त न हो पाने की वजह से ऐसा हुआ । जिस समय वे पैदा हुए थे उस समय विश्वयुद्ध के कारण सभी घड़ियां कुछ धीमी कर दी गयी थीं । जिससे सही जन्म समय ज्ञात नहीं हुआ । एवं दूसरी बात यह है कि श्रीमती सोनिया गांधी को विधवा होने का पूरा योग लग रहा था । जो कि सत्य साबित हुआ ।

**केशव रस्तोगी,** पीलीभीत ।

'समय के हस्ताक्षर' स्तंभ अच्छा लगा किंतु जून '९१ के अंक में आपने लिखा है कि किसी भी ज्योतिषी ने यह भविष्यवाणी नहीं की कि राजीव को मारकेश लगा है, गलत है । एक नहीं, कई ज्योतिषियों ने यह भविष्यवाणी की थी कि राजीव के स्वास्थ्य के लिए जून '९१ तक का समय नेष्ठ है । चाटुकार ज्योतिषियों की बात आप जाने दें ।

**विनोद गुप्ता,** गोल्डन टैपल रोड ।

आपसे हमें ऐसी आशा नहीं थी । आपने अपने जून '९१ के अंक में 'समय के

हस्ताक्षर' के अंतर्गत प्रकाशित किया है कि आप ज्योतिषियों का बहिष्कार कर रहे हैं। पर संभवतः आप में बेड़ियों से विमुक्त होने की क्षमता अर्जित नहीं हुई। तभी तो आपने इसी अंक में न केवल ज्योतिष विषयक दोनों स्तंभों को स्थान प्रदान किया वरन अग्रिम प्रविष्टि हेतु कूपन भी प्रकाशित किया।

**अन्वेश सिंह,** छात्र-बी.टेक. (सिविल इंजी.)।

बहुत सारे ज्योतिषियों ने यह तर्क दिया है— कि ग्रहों का प्रभाव मनुष्य की कार्यप्रणाली पर पड़ता है। ज्वार-भाटा का आना ही नहीं, शरीर के मनोवेगों को नियंत्रित करनेवाले ग्रह-नक्षत्र ही हैं। इसलिए ज्योतिष को झूठ नहीं मानना चाहिए।

**प्रकाश गौड़, रतलाम; पं. कालिन्दी मिश्र, रीवा; अनंतराम-चरणदास, अग्रवाल दिल्ली अशोक रिछारिया,** बांदा। **पु.ना., ओक चंद्र प्रकाश,** जबलपुर।

## ज्योतिष स्तंभ छापने के विरोध में

*प्रिय अवस्थी जी,*

*मैं 'कादम्बिनी' प्रति मास पढ़ता हूं। जून '९१ की 'कादम्बिनी' में तुम्हारी टिप्पणी— 'ज्योतिषियों को हटाइए' बिल्कुल उचित और समयानुकूल है। तुम्हें शायद याद हो कि आज से ३५ वर्ष पूर्व कुछ ज्योतिषियों ने मिलकर एक भयंकर भविष्यवाणी की थी कि अमुक दिन सायं ६ बजे प्रलय का योग है, यह रुक नहीं सकता, क्योंकि, कुछ ग्रह-नक्षत्रों के आपसी टकराव ऐसी सूचना दे रहे हैं, इस घोषणा से जनता में बेचैनी फैलना स्वाभाविक था।*

*मैं उन दिनों जगन्नाथपुरी में रथ का मेला देखने काकी के साथ गया था, प्रलय की तारीख के दिन सायं ५ बजे से ही हम दोनों सागर के किनारे बैठ गये यह सोचकर कि प्रलय होनेवाला है। अतः राजी-खुशी चलते हाथ-पांव राम-राम रटते हुए समुद्र में विलीन हो जाएंगे। ८ बजे तक प्रलय की प्रतीक्षा करते रहे रिक्शेवाले उड़िया भाषा में चिल्ला रहे थे, भागो-भागो प्रलय होनेवाली है। चारों ओर भगदड़ मच रही थी, किंतु कुछ नहीं हुआ।*

*अभी कुछ दिनों पूर्व बांगलादेश में समुद्री तूफान लाखों प्राणियों को समेटकर ले गया, यदि पहले से कोई ज्योतिषीजी घोषणा कर देते तो इस विनाशलीला से बचा जा सकता था।*

*मेरा विश्वास ज्योतिष में बिल्कुल नहीं है। तुम्हारी इस घोषणा का स्वागत करता हूं कि अब 'कादम्बिनी' में ज्योतिष संबंधी स्तंभ बंद कर देंगे। धन्यवाद।*

**काका हाथरसी,** हाथरस

जून की कादम्बिनी में आपने 'ज्योतिष हटाओ' कदम उठाकर अपने व्यावहारिक दृष्टिकोण का परिचय दिया। ज्योतिष क्षेत्र में अग्रणी होते हुए भी, इस अत्यंत लोकप्रिय स्तंभ को बंद करने की घोषणा एक भीष्म प्रतिज्ञा के समान अटल कदम है।

**सुधारानी श्रीवास्तव**, एडवोकेट (म.प्र.)

'कादम्बिनी'-जैसी श्रेष्ठ पत्रिका के लिए, भविष्य फल प्रकाशित करना एवं ज्योतिषियों द्वारा लोगों की समस्याओं का समाधान प्रकाशित करना बहुमूल्य पत्रिका के ७-८ पृष्ठ बरबाद करना सचमुच 'कादम्बिनी' के साथ अन्याय ही था।

**स्वामी निगमानंद**, पतंजलि वाराणसी

जून '९१ अंक में 'ज्योतिषियों को हटाइए' पढ़ा। कादम्बिनी ने ज्योतिष संबंधि स्तंभ बंद करने की घोषणा कर एक अनुकरणीय पहल की है, जिससे वह विशिष्ट सामयिक पत्रिकाओं की श्रेणी में स्वतः ही स्थापित हो गयी है।

**गिरिवर सिंह**, भिलाई (म.प्र.)

ज्योर्तिविद रमेश चंद्र श्रीवास्तव का राजीव के दीर्घायु के बारे में जो कपोल-कल्पित कथन चाटुकार या मांड शैली में है वह नितांत भ्रमपूर्ण व गलत है।

**श्री डम्बर मल्ल** कैलाली

यह तथाकथित ज्योतिषी अपने उथले, अधकचरे ज्ञान पर हवा के रुख को देखकर समाचार पत्रों व छुटभय्ये नेताओं की टिप्पणियों पर आधारित अटकलबाजियां लगाते हैं, जिनका विज्ञानसम्मत भविष्यफल से कहीं दूर-दूर का भी वास्ता नहीं होता। सत्ताधारियों के संपर्क और सामीप्य ने इन्हें धंधेबाज बनाकर छोड़ दिया है।

**ओम प्रकाश बजाज**, जबलपुर

केवल राशि या अन्य किसी आधार पर संपूर्ण मानव जाति के लिए भविष्यवाणी करना न तो उचित ही है और न ही वैज्ञानिक। अतः भविष्यवाणियां छापने का क्रम बंद करना ही चाहिए।

**रमेश कुमार पांडेय 'श्याम', आनंद मिश्र 'अभय' माधवेंद्र तिवारी**
**बी.एल. वर्मा**, जयपुर (राजस्थान) **सुदर्शन प्रभा भाम्बी**, लुधियाना
**विजय दुबे 'एडवोकेट'**, मथुरा (उ.प्र.) **राजेंद्र कुमार अत्रे**, इंदौर (म.प्र.)

*ज्योतिष स्तंभ बंद करें/न करें पर टिप्पणी के लिए देखिए समय के हस्ताक्षर*

---

**प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. कमलारत्नम व प्रभाकर माचवे का देहावसान हो गया है। वह कादम्बिनी के लेखक थे।**

**कादम्बिनी परिवार की ओर से उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि।**

---

# कादम्बिनी

वर्ष ३१, अंक १०, अगस्त, १९९१

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

## निबंध एवं लेख



## जेल-जीवन रोमांचक सत्य कथाएं



## स्थायी स्तंभ

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी



## कहानियां एवं हास्य-व्यंग्य



## कविताएं



## संपादकीय परिवार

सह-संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल, वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, भगवती प्रसाद डोभाल, उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह, प्रूफ रीडर प्रदीप कुमार, कला विभाग-प्रमुख : सुकुमार चटर्जी, चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त, मूल्य : वार्षिक : ७५ रुपये, द्विवार्षिक : १४५ रुपये, विदेशों में : वायुसेवा से २९० रुपये वार्षिक समुद्री जहाज से : १३५ रुपये वार्षिक, पता : संपादक 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

# ाल-चिंतन

— मुझे नागफनी लगाने का शौक है । जहां जाता हूं, कैकटस या नागफनी की जातियों और नस्लों की तलाश करता हूं । उन्हें लाता हूं— कभी खरीदकर, कभी मांगकर और कभी चुराकर !

— एक समय था, मेरे बाग में कैकटसों की दर्जनों जातियां और नस्लें थीं । धीरे-धीरे वे सब सड़ते गये और अब केवल कुछ बेशर्म तरह के कैकटस बचे हैं ।

— परेशान हूं, कैकटस-जैसा जंगली पौधा देखभाल के बावजूद सड़ता जा रहा है !

— हां, जब से लोगों ने गुलाब की खेती शुरू कर दी है, कैकटस शरमाने लगे हैं !

□

— प्रश्न प्रतिद्वंद्विता का है : दोनों में कांटे होते हैं, दोनों खूबसूरत भी होते हैं !

— कैकटस को सहज गम्य रूप से नागफनी भी कहा जाता है । नागफनी किसानों और खेतिहर मालिकों की रक्षक है ! उसकी बाड़ी तारों से भी ज्यादा मजबूत होती हैं । उसे कोई तोड़ नहीं सकता ।

— कई नागफनियों में मैंने खूबसूरत फूल भी देखे हैं !

— शहरी हवाओं में नागफनी के फूल शायद उड़ जाते हैं । यहां लगे कैकटस शायद ही फूल देते हों ।

— बात क्या है ?

— नाम का असर तो नहीं है : कैकटस और नागफनी के बीच कहीं यह अंतर तो नहीं आ गया ?

□

— सोचना मुश्किल है ।
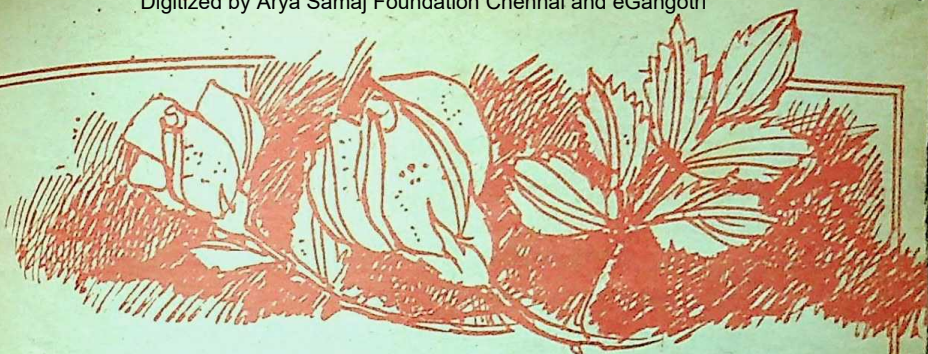
— गुलाब की खेती से कम नुकसान नहीं हुआ ।

— सुगंधवाले देशी गुलाबों में आयात किये गये विदेशी गुलाबों की कलमें लगाकर फूलों का आकार तो बढ़ाया जा रहा है, उनकी भारतीयता समाप्त हो रही है ।

— आयातित गुलाब सुगंधहीन होते हैं !

— हमारी सभ्यता पर भी संभवतः आयातित कलई चढ़ने लगी है ।

— विदेशी तत्वों की सुरक्षा हमारा कर्त्तव्यबोध हो गया है । परिणाम यह हुआ है कि हमारे भीतर ही भेदिये उभर आये हैं ।

— इन भेदियों की नस्लें गुलाब-जैसी हैं ! हमें सम्हालना होता है, खाद देना पड़ता है और ये मजे से केंचुए की तरह मनमाने पनप रहे हैं !

— गुलाब ने हमारे पेट में कीड़े पैदा कर दिये हैं ।

— जलवायु और मौसम को यदि ललकारा जाएगा तो बादल फटेंगे ही, गाज गिरेगी और सूरज अपना धरम छोड़कर किसी और देश को तप्त करेगा ।

— जलवायु और मौसम धरती और आकाश के बीच ही नहीं पनपते, वे हमारे भीतर भी पनपते हैं ।

— उनसे ही हमारे व्यक्तित्व का निर्माण होता है । वही हमारे धर्म को निर्धारित करते हैं !

— धर्म मंदिरों और घंटियों के बीच ही नहीं होता; वह तो धर्म के नाम पर हमारे संतोष की चेतना है !

— मंदिर की घंटियां क्षणिक आस्था की मात्र प्रतिध्वनियां हैं !

— मंदिर के पवित्र प्रांगण से बाहर निकलते ही गुलाब और नागफनी के कांटे हमारे भीतर फिर उभर आते हैं ।

— वास्तव में धर्म मनुष्य की आत्मा का स्वर है और उसके व्यक्तित्व का परिचायक है ।

— धर्महीन शरीर दुराचार की ओर प्रवृत्त होता है । परिणाम — हत्याएं,

लूट-खसोट और मनुष्य की मनुष्य से दूरी !

— तब हर आदमी का खून एक-सा नहीं रह जाता ।

— विधर्मी केंचुए पेट में घुसकर खून पीने लगते हैं और शरीर को पीला बनाते हैं ।

— ऐसी स्थिति में जोंक चिपकाने की जरूरत है, जो सड़ा-गला खून पीकर अपने को तृप्त कर ले ।

— प्रकृति ने कुछ जीव-जंतु ऐसे बनाये हैं, जो परोपकार के लिए स्वयं गरल-खून पीकर ही जीवित रहते हैं । दुष्ट वे नहीं हैं, उनकी नस्लों को खत्म नहीं करना चाहिए ।

□

— धर्म !

— धर्म हमारी सुविधा है ।

— धर्म हमारी आत्मा है !

— धर्म हमारा व्यक्तित्व है !

— धर्म हमारी संस्कार-परंपरा को उजागर करता है ।

— धर्म गुलाब का फूल नहीं है कि नजर पड़ते ही तोड़ने की इच्छा हो जाए !

— धर्म की सुरक्षा नागफनी है !

— नागफनी-धर्म हमारी मनुष्यता को मानवता का अमृत्व देता है !

□

— परेशान हूं मैं, अमृत्व देनेवाले वही कैकटस (या नागफनी) अब सड़ते जा रहे हैं ।

— उन्हें न पानी की जरूरत है, न उपजाऊ धरती की । तब भी वे रह नहीं पाते ।

— धर्म के लिए भी तो कुछ नहीं चाहिए, वह मात्र संकल्प के साथ जी सकता है !

— गुलाब की तरह अब लोग धर्म की भी चोरी करने लगे हैं और फूल

तोड़कर मात्र कांटे वहां छोड़ जाते हैं !

— तब प्रतिद्वंद्विता दो कांटों के बीच हुई न ?

— जो रक्षक-कांटा है, उसे सुरक्षा के आयाम नहीं चाहिए ।

— जो कांटा दिखावटी सौंदर्य को पालता है, वह पालने के भ्रम का मूल्य चाहता है ।

— धर्महीनता ने मूल्यहीन बना दिया है हमें । कहां से पढ़ाएंगे हम मूल्य को, जब मूल्यों की रक्षा ही हम नहीं कर सकते ।

□

— नागफनी !

— तुम्हारा दोष नहीं है, मैं शिकायत कैसे करूं तुम्हारे सड़ने की, जब गुलाब की खाद के कीड़े हमारे भीतर पनपने लगे हैं !

— मैं तब भी अपना मोहभंग नहीं होने दूंगा— नागफनी लगाता रहूंगा तब तक, जब तक नकली गुलाबों की नस्ल खत्म नहीं हो जाती !

— उसके खत्म होते ही धर्म और मूल्यों का उदय होगा । उनकी रक्षा के लिए हमें तब नागफनी की जरूरत पड़ेगी । ऐसा अवसर नहीं आने देंगे हम कि हमें नागफनी की तलाश के लिए भी आयोग बैठाना पड़े !

— मैं हर देश, हर धरती और हर मूल्यों की नागफनी की खेती करता रहूंगा— खरीदकर, मांगकर या चुराकर !

— मेरा श्रम व्यर्थ नहीं होगा क्योंकि समय हर 'टकराव' को अजगर की तरह तोड़ देता है ।

— टकराव के बाद ही ठहराव आता है और मनुष्य के भीतर उपजे घृणा के बीज सड़ जाते हैं ।

# समय के हस्ताक्षर

कुछ समय पहले ज्योतिषियों की भविष्यवाणियों को लेकर हमने एक प्रश्न पाठकों के सामने प्रस्तुत किया। इसके पक्ष और विपक्ष में हमें सैकड़ों पत्र मिले। इन सभी पत्रों को छापना संभव नहीं है, कुछ पत्र ही इस अंक में हम प्रकाशित कर रहे हैं। हमारा उद्देश्य जनता के सामने पाठकों की राय क्या है, उसे सामने रखना है। इसमें संदेह नहीं कि ज्योतिष विज्ञान है और हमारी परंपरा के साथ जुड़ा हुआ है। इसका हमें विरोध भी नहीं, विरोध तो उन ज्योतिषियों से है,जो राजनीतिक भविष्यवाणियां करते हैं, हमें पता चला है कि भविष्यवाणियां करनेवाले ज्योतिषी कहीं न कहीं दलगत या व्यक्तिगत प्रभाव से जुड़े हुए हैं। एक प्रसिद्ध ज्योतिषी ने एक जगह लिखा है कि मृत्यु की भविष्यवाणी करना भारतीय संविधान के अंतर्गत अपराध है। यह शब्द वास्तव में उनके ज्ञान की कमी का बोध है। संविधान निर्माताओं ने ऐसे सवालों को कभी सोचा भी नहीं, तब यह प्रश्न कहां से खड़ा हो गया ? खींच-तान कर एक गलत को सही बतलाना अपनी कमजोरी को ढकना है।

कादम्बिनी की लोकप्रियता का कारण हमारा पाठकों के साथ गहराई से बंधे रहना है। जो विचार पक्ष या विपक्ष में हमें मिले हैं। इन पर हम गंभीरतापूर्वक सोचेंगे और फिर जो उचित होगा वह करेंगे। हम उन सभी लेखकों के आभारी हैं, जिन्होंने अपने विचार स्पष्ट रूप से लिखकर हमें भेजे हैं।

□ □ □

कादम्बिनी के समय-समय पर विशेषांक प्रकाशित होते रहे हैं यदि ३१ वर्षों का लेखा-जोखा किया जाए तो इतने अधिक विषयों पर किसी भी पत्रिका ने विशेषांक प्रकाशित नहीं किये। जंगल विशेषांक के बारे में आज भी अनेक पाठक याद करते हैं। इस बहाने 'कादम्बिनी' घोर जंगलों में कार्यरत कर्मचारी और उनके परिवारों तक पहुंची है। सामान्य पाठकों को भी जंगल जीवन की पूरी जानकारी मिल सकी। इसीलिए

संभवतः अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने हमसे आग्रह किया है कि हम इस तरह का विशेषांक फिर प्रकाशित करें ।

अगस्त महीने में कई तरह के विशेषांक हम निकाल चुके हैं । हमारा विचार था कि इस बार किसी नये विषय पर विशेषांक निकाला जाए । हमारे सामने आज की दयनीय स्थिति उपस्थित हो गयी । ४४ वर्षों की आजादी के बाद हमारे देश ने जितनी वीभत्स और कठोर समस्याओं को जन्म दिया है, संभवतः भुलाया नहीं जा सकता । आशा हम यह करते थे कि ४४ वर्षों में हम एक सबल और सशक्त राष्ट्र के रूप में खड़े हो जाएंगे, लेकिन जो स्थितियां हैं, वे हमारे पाठकों के सामने स्पष्ट हैं ।

कुछ वर्षों पहले खान अब्दुल गफ्फार खान से आम अंतरंग बातचीत कर रहे थे, वे दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में भर्ती थे और भारत सरकार उनका इलाज करा रही थी । उनके लिए नर्सिंग होम के दो कमरे जोड़कर एक लंबा कमरा बनाया गया था । वे सीधे लेटे हुए थे और उनकी नजर के सामने पक्की सड़क पड़ती थी, वे बोले, "दिन-रात मैं कारों और ट्रकों की आवाज सुनता हूं । जब हमने आजादी की लड़ाई शुरू की थी तो यह नहीं सोचा था कि आजाद होने के बाद इतनी कारें और मोटरें हो जाएंगी, यह भी नहीं सोचा था कि इस देश में गरीबी उससे ज्यादा बढ़ जाएगी ।"

खान साहब के आंखों में हल्के से आंसू थे, "मैं तो सोचता था कि अब भी यहां बैलगाड़ियां, घोड़े और टट्टू चलते हुए नजर आ जाएंगे । वे तब तक चलेंगे, जब तक हर आदमी के पास अपनी कार नहीं हो जाती ।"

भरे हुए गले से खान साहब ने कहा था, "हमने अंगरेजों के कोड़े खाये, पूरी जेलों में कीड़ों की तरह नारकीय जीवन बिताया । घोर यातनाएं सहीं हमारे बहुत-से भाई हंसते और गाते हुए फांसी के फंदे में लटक गये, लेकिन तब भी हमने हिम्मत नहीं हारी, हमें विश्वास था कि जो यातनाएं हम सब सह रहे हैं, वह व्यर्थ नहीं जाएंगी । नंगे पैर चलनेवाले गांधीजी ने तो यहां तक कहा था कि एक दिन आएगा जब तपती हुई दुपहरी में मेरे पैरों के तलवों में ठंडक होगी ।" ठंडक तलाशनेवाले गांधी को गोली का शिकार

होना पड़ा । खान साहब की मृत्यु अत्यंत दर्दनाक ढंग से हुई फिर राजनीतिक हत्याओं का सिलसिला चला । हमें याद आया कि ऐसे कितने व्यक्ति हैं, जिन्होंने इस देश की आजादी के लिए क्या नहीं किया । उन्हें मिला क्या ? बहुत-से तो गरीबी की हालत में मर गये । बहुत ऐसे हैं जो अब भी गरीबी में अकेलेपन का जीवन बिता रहे हैं । कुछ याद है और बहुत-से स्वतंत्रता सेनानी भुला दिये गये हैं । आजादी के ४४ वर्ष हम पूरे कर रहे हैं । ऐसी स्थिति में जेल-जीवन में क्या यातनाएं दी जाती रही हैं और कुछ जाने और कुछ अनजाने शहीदों ने देश भक्ति का किस तरह परिचय दिया है, इसका लेखा-जोखा हम पाठकों के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं ।

इसी दृष्टि से प्रस्तुत हैं— 'जेल-जीवन' और उससे संबंधित यातनाओं से भरपूर दास्तान यह विशेषांक ।

इस विशेषांक का महत्त्व संभवतः उस पीढ़ी के लिए नहीं है जो अकेले में बुढ़ापे का दर्द झेल रही है । इसका महत्त्व हमारे लिए है जो कभी शायद ही जेल गये हों, लेकिन अपने छात्र-जीवन में बहुत-से जुलूस देखते आये । इसका महत्त्व हमारे बाद की नयी पीढ़ी को है, जिस पर इस देश का भावी भाग्य टिका हुआ है । वे समझें कि केवल खूनी-क्रांति ही आजादी के लिए महत्त्वपूर्ण नहीं है, उससे ज्यादा महत्त्वपूर्ण निरंतर एक दर्दभरी जिंदगी से जीना है । और या तो आजादी देखकर अथवा बिना देखे अपनी अंतिम सांस ले लें ।

हमारे देश की नयी पीढ़ी भटक रही है । उसके सामने कोई पड़ाव नहीं, उसके सामने कोई सिद्धांत नहीं । वह दर्द, निराशा, घुटन, टूटन व तड़पन में जी रही है ।

यह विशेषांक उनके लिए मार्गदर्शक होगा । वे शहीदों की यातनाओं को पढ़ेंगे । निश्चय ही उन्हें अपनी आज की यातनाएं बहुत छोटी मालूम पड़ेगी । इस आशा और विश्वास के साथ हम यह अंक अपने पाठकों, विशेषकर नयी पीढ़ी के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं ।

# पाकिस्तान में राम झरोखा

● जमना दास अख्तर

***जानकारी रखनेवालों का कहना है कि आसिफ जरदारी के खिलाफ केस की सुनवाई करनेवाले जज की हत्या वास्तव में उस गुट ने की है जो सिंधु देश की स्थापना की मांग कर रहा है।***

जून के अंतिम सप्ताह जब लाहौर और शेखुपुरा में दो व्यापारी परिवारों के दो दर्जन के लगभग सदस्यों को डाकुओं या आतंकवादियों ने मौत के घाट उतार दिया। तो तमाम पश्चिमी पंजाब में व्यापारियों ने हड़ताल कर दी। कराची और हैदराबाद में मुहाजिरों के दो गुटों में खूनी झड़पें हो रही थीं, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने जापान के दौरे का प्रोग्राम कैंसिल कर दिया और इस्लामाबाद में अफवाहें फैलने लगीं कि राष्ट्रपति इसहाक ने नवाज शरीफ को डिसमिस करने का फैसला कर लिया है।

## सेना के हवाले

यह अफवाहें तो ठीक नहीं थीं, परंतु यह बात किसी से छिपी नहीं कि पाकिस्तान में 'सब अच्छा' नहीं। राष्ट्रपति इसहाक और प्रधानमंत्री नवाज शरीफ में खींचातानी हो रही है। सिंध के मुख्यमंत्री जाम सादिक अली को नवाज शरीफ अलग करना और इस प्रांत को सेना के हवाले कर देना चाहते हैं, परंतु राष्ट्रपति इसहाक जाम सादिक अली का संरक्षण कर रहे हैं। मुहाजिर कौमी मूवमेंट जाम सादिक अली की सरकार में शामिल होकर एक तरह से कराची और हैदराबाद की हाकिम बनी हुई है, जबकि मियां नवाज शरीफ ने अपने इंटेलीजेंस ब्यूरो के महानिदेशक ब्रिगेडियर इमत्याज की मदद से मुहाजिरों में फूट डाल दी है। मुहाजिर मुखिया अलताफ हुस्सैन के खिलाफ मुहाजिर मंत्री बदर इकबाल के नेतृत्व में दूसरे गुट ने बगावत कर दी है। इक़बाल अपनी जान खतरे में देखकर भाग कर ब्रिटेन चला गया है।

उसके तीन साथी विधायकों ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। अलताफ के दबाव पर सिंध सरकार इन बागियों को आतंकवादी करार देकर गिरफ़्तार करना चाहती है और यह तीनों भूमिगत हो गये हैं। कराची में कोरंगी, मलेर और लांडी की मुहाजिर बस्तियों में दोनों गुटों में फंसाद हो रहा है। एक-दूसरे की हत्या की जा रही है। मकान और दुकानें जलायी जा रही हैं। घर-घर में मोर्चे बने हुए हैं और हजारों लोग अपनी जान बचाने के लिए भाग गये हैं। इसके साथ ही डकैतियां और अगवा की घटनाओं में कमी नहीं हो रही। यही हालत अब पंजाब में भी पैदा हो गयी है। लाहौर में कृष्ण नगर की कॉलोनी में एक ही परिवार के १६ सदस्यों की हत्या कर दी गयी। मुसलिम विद्यार्थी संघ के वरिष्ठ नेता जावेद चौधरी को डी.आई.जी. पुलिस के कार्यालय के सामने गोलियों का

निशाना बना दिया गया । लाहौर के निकट कसूर में पीपुल्स पार्टी के सूचना सचिव सरदार फारूक अहमद की हत्या कर दी गयी । चिनाब एक्सप्रेस को डाकुओं ने लूट लिया । पंजाब में ही १७ ट्रकों को जरनैली सड़क पर डाकुओं ने लूट लिया । रावलपिंडी से पैशावर जानेवाली रेल व कार पर हमला हुआ । मोंगा मंडी में एक मसजिद में दाखिल होकर आतंकवादियों ने एक वरिष्ठ वकील राणा असगर को गोलियों का निशाना बना दिया । बोलान मेल पर हमला करके डाकुओं ने यात्रियों को लूट लिया । इस्लामाबाद में बम फट जाने से कई लोग घायल हो गये । पैशावर में डाकुओं ने यूनाईटेड बैंक को लूट लिया ।

दैनिक नेशन लाहौर ने लिखा है कि पंजाब में सिंध जैसी अराजकता पैदा हो गयी है । कोई व्यक्ति अपने आप को सुरक्षित नहीं समझता । यद्यपि प्रधानमंत्री ने निर्देश दिया है कि पुलिस कृष्णनगर में १६ व्यक्तियों की हत्या करनेवालों को २४ घंटों के अंदर-अंदर गिरफ़्तार करेगी और उन्हें चौराहों पर फांसी दी जाएगी, परंतु दिन गुजर जाने के बावजूद कोई गिरफ़्तारी नहीं हुई । इस बात के बावजूद कि प्रधानमंत्री ने निर्देश जारी किया था कि लोग अवैध हथियार ३० दिन के अंदर-अंदर जमा करा दें नहीं तो फांसी या आजीवन कारागार की सजा दी जाएगी, किसी ने इस निर्देश पर अमल नहीं किया । कुछ लोगों का कहना है कि पुलिस के आदमी ही आतंक की आग भड़का रहे हैं क्योंकि कुछ दिन पहले जब पुलिस के आदमियों ने तीन विधायकों की कार को रोककर उन्हें कहा था कि वे अपनी कार के काले शीशे उतार दें तो टकराव हो गया और विधायकों ने शिकायत की कि एक सिपाही ने उन्हें पीटा है । मुख्यमंत्री पंजाब गुलाम हैदर ने इन सिपाहियों की गिरफ़्तारी और कई अधिकारियों के तबादले का निर्देश जारी कर दिया । इस पर लाहौर में पुलिस ने हड़ताल

पाकिस्तान क्रिकेट टीम के खिलाड़ी प्रकाश दलपत विवाह सूत्र में बंधते हुए
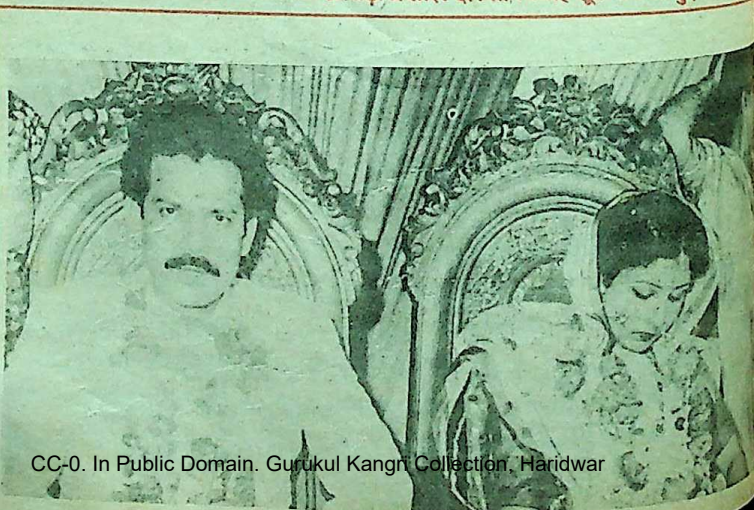
प्रधानमंत्री नवाज शरीफ
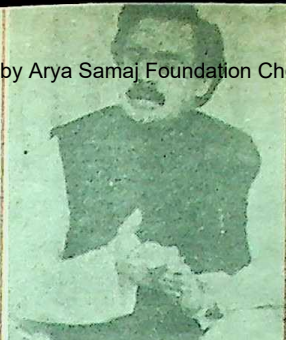
मुहाजिर नेता अलताफ हुसैन

जनरल बेग

दी और आरोप लगाया कि डाकुओं के खिलाफ कार्रवाई के लिए काले शीशे इस्तेमाल करना जुर्म करार दिया गया था, इसलिए पुलिस ने उन्हें रोकना अपना कर्त्तव्य समझा । इन हालात में कहीं यह हत्याएं पुलिसवाले ही तो नहीं करा रहे हैं। कहीं इसका मकसद यह तो नहीं कि अराजकता की आग भड़काकर प्रधानमंत्री को डिसमिस कराया जाए । पंजाब के पूर्व राज्यपाल और मुख्यमंत्री गुलाम मुस्तफा खार ने राष्ट्रपति से मांग की है कि जिस तरह उन्होंने बेनजीर को डिसमिस किया था, उसी तरह नवाज शरीफ को भी डिसमिस कर दिया जाए । उन्होंने कहा है कि सिंध को सेना के हवाले कर दिया जाए ।

## सेना का इस्तेमाल

हालात इतने बिगड़ गये हैं कि प्रधानमंत्री ने एक बयान में कहा है कि सिंध में अराजकता पर काबू पाने के लिए सेना का इस्तेमाल किया जा सकता है, परंतु वे मुख्यमंत्री को डिसमिस करने का नाम नहीं लेते क्योंकि उन्हें अंदेशा है कि इस तरह की कार्रवाई की तो राष्ट्रपति उन्हें ही डिसमिस कर देंगे । उन्होंने कहा कि सिंध के छह-सात जिलों में असैनिक सरकार की मदद के लिए पहले अर्धसैनिक बलों का इस्तेमाल किया जाएगा । वैसे संविधान इस बात की इजाजत देता है कि प्रशासन अपनी मदद के लिए सेना को बुला सकता है ।

## अपराधी राष्ट्रपति

पूर्व राज्यपाल गुलाम मुस्तफा खार ने कहा कि जाम सादिक अली लुटेरा और धोखेबाज है । यह व्यक्ति डाकुओं और हत्यारों पर प्रहार करने की बजाय राजनीतिक विरोधियों पर प्रहार कर रहा है । बेनजीर ने कहा कि जाम सादिक अली डाकुओं का संरक्षण कर रहा है । मेरी पार्टी के हजारों कार्यकर्ताओं को झूठे आरोपों में गिरफ़्तार कर लिया गया है । मेरा जीवन खतरे में है ।

बेनजीर की पार्टी के एक वरिष्ठ नेता फारूक लगारी ने कहा कि तमाम शरारत की जड़ राष्ट्रपति इसहाक है । समय आ गया है जब जनता इसे हटाकर दम लेगी । जाम सादिक अली ने कई पूर्व मंत्रियों और विधायकों को झूठे आरोपों में गिरफ़्तार कर लिया है । इसकी यह हालत है कि कोई भी दुर्घटना हो, यह बेनजीर और उनकी पार्टी पर दोषी होने का आरोप लगा देता है । इसने सिंगापुर के विमान के अपहरण की साजिश का आरोप बेनजीर पर लगा दिया था । रेलगाड़ियों की दुर्घटनाओं के लिए भी बेनजीर पर आरोप लगा दिया था । कुछ दिन

पहले इसने आरोप लगाया कि बेनजीर की पार्टी के कार्यकर्ताओं ने भारत में प्रशिक्षण पाकर मेरी और राष्ट्रपति की हत्या की साजिश की थी।

**साजिशों का इतिहास**

पाकिस्तान में अराजकता के लिए राजनेताओं की साजिशें बहुत हद तक जिम्मेदार हैं। पाकिस्तान बनने के बाद अब तक इसके १५ प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति मारे गये या बर्खास्त हुए। अधिकृत कश्मीर में डेढ़ दर्जन से अधिक राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री बर्खास्त होकर गिरफ्तार हुए। आज का राष्ट्रपति अब्दुल क्यूम तीन बार बर्खास्त या गिरफ्तार हो चुका है। श्री जिन्ना का सचिव सरदार खुर्शीद दो बार राष्ट्रपति बना और बर्खास्त व गिरफ्तार हुआ। मीर वाहज दो बार राष्ट्रपति पद से बर्खास्त हुए। यही हालात सरदार इब्राहीम के बारे में कहा जा सकता है। सिंध और बलूचिस्तान तथा पंजाब में एक दर्जन से अधिक मुख्यमंत्री बर्खास्त होकर गिरफ्तार हुए। लियाकत अली को उनकी पार्टी के तीन सदस्यों ने किराये के हत्यारे से मौत के घाट उतरवाया। जनरल अयूब खान ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री सौहरावर्दी की हत्या जहरीली गैस से करायी। मिस जिन्ना का गला घोंट दिया गया। डॉक्टर खान साहिब को मेजर जनरल सिकन्दर मिर्जा ने एक पटवारी द्वारा हलाक कराया यह साजिश ही तो थी कि भुट्टो को फांसी दी गयी।

जनरल अयूब खान ने कराची में सैकड़ों पठान भेजकर सैंकड़ों मुहाजिरों की हत्या करा दी थी। जनरल जिया के दिनों में तीन-चार महीनों में तीन हजार से अधिक मुहाजिरों की हत्या की गयी। इसी अवधि में एक हजार से अधिक सिंधी मारे गये। कम से कम २० करोड़ की संपत्ति जला दी गयी। अगवा करनेवाले डाकुओं से सरकारी अधिकारियों छुड़ाने के लिए कुल मिलाकर १५ करोड़ दिया गया। तीन हजार से अधिक उद्योग ने अगवा किये जाने के बाद कुल मिलाकर करोड़ रुपया अदा किया। सिंध, पंजाब, बलूचिस्तान और सीमा प्रांत में लाखों लो पास आधुनिक अवैध हथियार हैं। सार्क सम्मेलन के दिनों मैंने रावलपिंडी में अवैध हथियार बेचनेवाले एक व्यापारी से मजाक तौर पर पूछा तो उसने कहा कि आप १० प्रतिशत कमीशन पेशगी अदा कर दें। के अंदर-अंदर आपको आपकी आवश्यकता के अनुसार हथियार मिल जाएंगे।

**यह कराची है**

गत तीन वर्षों में मैं तीन बार पाकिस्तान चुका हूं। एक बार सार्क सम्मेलन के दिनों था। दूसरी बार अपने विवाह की गोल्डन जुबली मनाने के लिए लाहौर गया। जिस मकान से १९३६ में मेरी बारात निकली थी उसी से पुनः बारात निकली और माल रोड स्वागत समारोह हुआ। एक मुसलमान ने मुझे सेहरा बांधा। गत मई के अंतिम में एक मित्र पत्रकार श्री हुस्सैनी की सुपुत्री विवाह के सिलसिले में कराची गया। कराची प्रेस क्लब ने स्वागत समारोह का प्रबंध किया इसके अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार श्री सल्लाहउद्दीन थे। दैनिक जंग के मालिक मीर खलील रहमान और वरिष्ठ पत्रकार शयाम महमूद ने स्वागत समारोहों का आयोजन किया। पाकिस्तान अल्पसंख्यक बोर्ड के सदस्य श्री
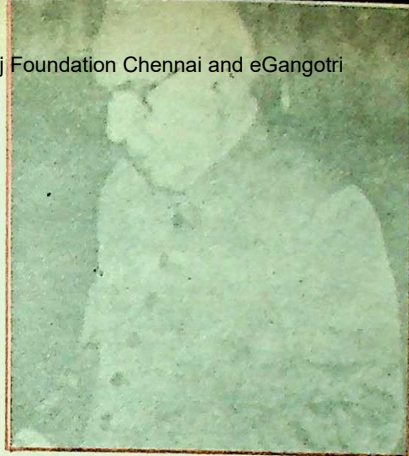
जाम सादिक अली

राष्ट्रपति इसहाक

दलपत सोनावारिया ने भी एक ऐसा ही समारोह आयोजित किया। मुझे कराची के तीन मंदिरों— नारायर्णस्वामी मंदिर, पंचमुखी हनुमान मंदिर और किलफटन के इलाके के मशहूर शिव मंदिर की यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्री दलपत के सुपुत्र श्री अनिल दलपत पाकिस्तान की क्रिकेट टीम के विकेट कीपर हैं। नारायण स्वामी मंदिर की कमेटी के अध्यक्ष श्री महिंदर महाराज और कमेटी के सदस्य श्री लाल चंदजी से बातचीत का अवसर मिला। इस मंदिर में भगवान कृष्ण, भगवान राम, बलराम, सुभद्रा, नरसिंह, प्रहलाद, गणेश और शंकर आदि की मूर्तियां हैं। मंदिर परिसर में लगभग एक सौ लोगों के रहने की जगह है। अंदर और बाहर दुकानें हैं। बच्चों के खेलने की जगह भी है।

पंचमुखी हनुमान मंदिर सोलजर बाजार में है। इसमें महंत बलदेव दास कथा करते हैं। यह भी बहुत बड़ा मंदिर है। किलफटन में बेनजीर भुट्टो की किलानुमा कोठी के सामने समुद्र के किनारे कराची का प्रसिद्ध शिव मंदिर है। यह मंदिर एक तरह से एक गुफा में है। इसमें शिव, भैरों, दुर्गा और अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियां हैं। मंदिर के एक हाल में हर सोमवार को कथा होती है। इस मंदिर में एक गुफा को राम झरोखा कहते हैं। यहां एक परंपरा के अनुसार भगवान राम के पांव के निशान हैं। सीढ़ियों से उतरें तो सामने एक बोर्ड लगा दिखायी देता है, जिस पर लिखा है कि यह हिंदू मंदिर है। इसका मतलब यह है कि इसके अंदर और कोई नहीं जा सकता। हाल के गेट पर एक बोर्ड पर लिखा है कि यहां हर 'पीर' की कथा होती है। इस्लाम का रंग चढ़ने के कारण 'सोमवार' को पीर कहा जाता है।

### हिंदुओं की स्थिति

तमाम सिंध में हिंदुओं का अपना कोई समाचार पत्र नहीं। अलबत्ता हिंदू अपने उत्सव अवश्य ही मनाते हैं। श्री खूब चंद भाटिया हिंदू पंचायत के अध्यक्ष हैं। इसकी शाखाएं जगह-जगह हैं। श्री दलपत आर सोनावारिया पाकिस्तान सरकार की अल्पसंख्यक केंद्रीय परिषद के सलाहकार हैं। आप फिल्म सेंसर बोर्ड कराची डिवीजन निकासी ट्रस्ट प्रापर्टीज और सिंध स्पोर्टस के सदस्य भी हैं। पेशे के

लिहाज से डॉक्टर हैं । वे 'हालीडे इन' में ले गये जहां संसद सदस्य श्री गोवर्धन दास चावला से मुलाकात हुई । श्री चावला बेनजीर भुट्टो की पीपुल्स पार्टी के वरिष्ठ सदस्य हैं । उन्होंने सिंध लैंड कस्टम का ठेका लिया हुआ है । श्री दलपत सोनावारिया राजपूत पंचायत के अध्यक्ष भी हैं । इसके दो सदस्यों श्री रमेश बी माना और श्री सुभाष माधवजी से भी मुलाकात हुई ।

श्री दलपत के अनुसार कराची में डेढ़ लाख के लगभग हिंदू रहते हैं । इनमें दूसरे नगरों की तरह अनुसूचित जातियों के हिंदू बहुसंख्यक हैं । सरकार ने इनके लिए अलग मतदाताओं की सूचियां प्रकाशित करायी हुई है । मतलब यह कि इन्हें अपने तौर पर दूसरे हिंदुओं से अलग किया हुआ है । यही कारण है कि नगर निगमों में यही लोग चुनाव में कामयाब होते हैं । इसके बावजूद यह लोग अपने आप को दूसरे हिंदुओं से अलग नहीं समझते । सिंध के हिंदू आम तौर पर सक्रिय राजनीति में हिस्सा नहीं लेते । कुछ युवक वाम पंथी राजनीतिक दलों और बेनजीर की पार्टी के सदस्य हैं । कभी-कभी इनकी गिरफ्तारियों के समाचार प्रकाशित होते हैं । कराची के श्री शाहानी एक कामयाब वकील हैं । वह मुख्यमंत्री के सलाहकार रह चुके हैं । हाल ही में उन्होंने शरीयत बिल के विरोध में 'एक सेमिनार' में भाषण किया । उनके परिवार की सदस्या श्रीमती सोहन अडवानी इस्लामाबाद में रहती हैं ।

हिंदू नेता आमतौर पर मजहब के आधार पर चुनाव में सीटों के विभाजन का विरोध करते हैं । उनका कहना है कि इस प्रणाली ने उन्हें दूसरों से अलग कर दिया है । हिंदुओं को स्थानीय मुसलमानों से शिकायत नहीं परंतु जमायते इस्लामी के नेता अवसर मिलने पर घृणा की आग लगाने से बाज नहीं आते । यही हालत पंजाब के समाचार पत्रों का है जो हिंदुओं के खिलाफ जहर उगलते रहते हैं । निराधार आरोप लगाते रहते हैं कि स्कूलों में हिंदू अध्यापक भारत का प्रापेगंडा करते हैं और सीमावर्ती इलाकों में भारत के लिए जासूसी करते हैं । डाकुओं की बढ़ती हुई गतिविधियों के कारण देहात में हिंदू परेशान हैं । दैनिक ... ने एक समाचार प्रकाशित किया कि मोहिंजोदड़ो के इलाके में रहनेवाले हिंदुओं ने कहा है कि यदि सरकार ने उनकी सुरक्षा न की तो वे पाकिस्तान से निकल जाएंगे ।

**अरब और अमरीका का विरोध**

ईरान के समर्थक मुसलमान और जमीयत उलेमाए पाकिस्तान की ओर से अमरीका और सऊदी अरब के शासक के खिलाफ प्रापेगंडा किया जा रहा है । कराची की दीवारों पर जगह-जगह 'शाह फहद मुर्दाबाद', 'वहाबी काफिर हैं', 'इस्लाम के दुश्मन हैं' और 'अमरीका के एजेंट हैं' के नारे लिखे हुए दिखायी देते हैं । कराची पर एक तरह से मुहाजिरों के मुखिया अलताफ हुसैन का ... है । उसके खिलाफ बगावत हो रही है । ... वापस आने के बाद से दोनों गुटों में खूनी ... हो रही हैं । मुकाबला वास्तव में मुख्यमंत्री ... सादिक अली और प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ... हैं । अलताफ और जाम सादिक अली एक-दूसरे की हिमायत करते हैं जबकि ... मुहाजिरों को प्रधानमंत्री की हिमायत हासिल है । इस हालत में जबकि राष्ट्रपति इसहाक

मुख्यमंत्री के संरक्षक हैं और सेनापति प्रधानमंत्री का मित्र है, स्थिति निःसंदेह गंभीर है । क्या पता किसी समय अचानक ही कुछ हो जाए ।

कराची एक अमीर और अत्यंत सुंदर नगर है । यहां धन की कमी नहीं । विदेशी मुद्रा के मुकाबले में पाकिस्तानी मुद्रा की कीमत बहुत कम होने के कारण सरकार का दीवाला पिट रहा है, परंतु लोग अमीर बन गये हैं । कराची तस्करी का गढ़ है । पुलिस की साठ-गांठ के कारण तस्करी करनेवाले मजे में हैं । शराब बंदी सरकारी तौर पर है, परंतु विदेशी शराब की कमी नहीं । कराची पाकिस्तान का एकमात्र नगर है जहां आप मुसलमान लड़कियों को जीन और साड़ियां पहने हुए देख सकते हैं । कठमुल्लाओं का जोर नहीं है ।

समाचार पत्र जो चाहे लिखे कराची में रहनेवाले भारत के दुश्मन नहीं । वे युद्ध नहीं चाहते । मुहाजिरों का भारत से खून का रिश्ता है । वे नहीं चाहते कि युद्ध हो और दोनों ओर वही मारे जाएं और उनका व्यापार नष्ट हो जाए । १९६५ के युद्ध में कराची की बंदरगाह को तबाही का सामना करना पड़ा था । बमवर्षा से तेल के तमाम भंडार जल गये थे । कई पत्रकारों ने मुझसे कहा कि हम भारत में रहनेवाले मुसलमानों के रक्षक होने का दावा करके उनकी पोजीशन खराब करना नहीं चाहते । श्री राजीव गांधी की हत्या पर कराची के अधिकतर समाचार पत्रों ने उन्हें श्रद्धांजलि पेश की ।

—९/१०, साऊथ पटेल नगर
नयी दिल्ली-११०००८

# जेल की दीवारों पर कोयले से कविताएं लिखता था !

● द्वारका प्रसाद मिश्र

बुलढाना जेल के अधीक्षक राय नाम के एक सुसंस्कृत बंगाली सज्जन थे । उनमें देशभक्ति की भावना थी । उन्होंने मेरे लिए विशेष भोजन की व्यवस्था की लेकिन इसी बीच एक घटना घट गयी । जेल में 'सी' क्लास के अनेक राजनीतिक बंदी थे । उन्हें सड़ा-गला भोजन दिया जाता था और उनसे पत्थर तुड़वाये जाते थे । एक दिन वार्डर ने मुझे बताया कि एक बंदी सरकार से क्षमा याचना करने का विचार कर रहा है , इससे मैं बहुत परेशान हुआ और अगले दिन मैंने जेलर से कह दिया कि मैं सी क्लास के बंदियों को दिया जानेवाला भोजन ही

**पं. द्वारका प्रसाद मिश्र : स्वाधीनता-सेनानी और एक कुशल राजनीतिक और सफल प्रशासक ही नहीं, निर्भीक पत्रकार और साहित्यकार भी थे । वे अनेक बार जेल भी गये । उनकी आत्मकथात्मक कृति 'लिविंग एन एरा' से प्रस्तुत हैं, उनके जेल जीवन के दो प्रसंग**

खाऊंगा । यही नहीं, उन्हीं की तरह पत्थर भी तोड़ूंगा । पत्थर तोड़ने के कारण मैं थककर चूर-चूर हो गया । दूसरी ओर ज्वार की रोटियां खाने से मेरी पाचन क्रिया बिगड़ गयी । मुझे दस्त होने शुरू हो गये । फिर भी मैं अपने संकल्प पर अड़ा रहा कि मैं पत्थर तोड़ूंगा और सी क्लास को दिया जानेवाला भोजन ही करूंगा । अंततः जेल अधिकारियों को झुकना पड़ा और उन्होंने सी क्लास के राजनीतिक बंदियों को अच्छा भोजन और हल्का काम देना शुरू किया । परंतु मेरी कठिनाइयों का अंत नहीं हुआ ।

जेल में एक दिन एक नया डिप्टी कमिश्नर स्लोकाक आया । उसने महात्मा गांधी और जवाहर लाल के संबंध में कुछ अपशब्द कहे । इसे मैं सहन नहीं कर सका और मैंने अंगरेज सरकार की कड़ी आलोचना की । फलतः हमारे बीच झगड़ा हो गया और उसने मेरी सारी सुविधाएं बंद कर दीं । एक मास बाद वह फिर
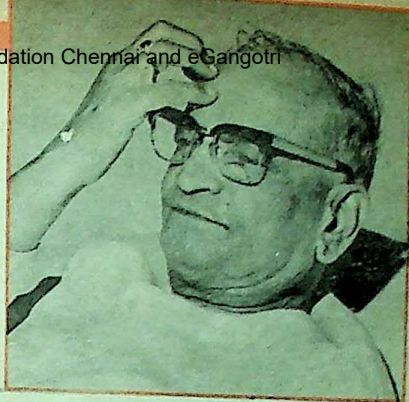
जब मेरे कमरे में आया तो अपनी आदत के खिलाफ मैंने कुरसी से उठकर उसका स्वागत नहीं किया। उसने मेरे हाथ से पुस्तक छीन ली, मैंने कोई विरोध नहीं किया। उसने कमरे में एक ओर करीने से सजाकर रखी गयी मेरी पुस्तकों पर नजर डाली और जेलर को सारी पुस्तकें हटाने का आदेश दिया फिर भी चुपचाप बैठा रहा। अंततः वह जल्दी में कमरा छोड़कर चला गया।

अब मैं अपना समय चरखा कातकर बिताता था। जब कभी ऊब जाता तो जेल की चूना पुती दीवार पर कोयले से कविताएं लिखता। एक दिन इंस्पेक्टर जनरल ऑव प्रिजन ले. जठार जेल का निरीक्षण करने आये। जेल अधीक्षक ने मेरे और स्लोकाक के बीच हुए झगड़े का पूरा ब्योरा उन्हें दिया। जठार ने मेरी पुस्तकें मुझे लौटवा दीं और लोगों से मिलने और पत्र लिखने पर लगाया गया प्रतिबंध भी समाप्त कर दिया। फिर उनकी नजर दीवार पर लिखी मेरी कविताओं पर गयी उन्होंने जेलर से कहा कि मुझे इन कविताओं को कापी में उतारने का समय दिया जाए और जब मैं इसे कर चुकूं तो दीवार पर सफेदी करा दी जाए।

**कारागार में रचा गया कृष्णायन**

बचपन से ही भगवान के जीवन और उनके जीवन-दर्शन पर मैं मुग्ध था। मैं अवधी में रामचरित मानस की तर्ज पर उनकी जीवनी लिखना चाहता था। पर यह महत्त्वाकांक्षा कठोर परिश्रम द्वारा ही संभव थी, पर व्यस्त सार्वजनिक जीवन के कारण मुझे समय नहीं मिल पा रहा था। सन १९३८ में जब मैंने मंत्री पद त्यागा तो मुझे विश्वास हो गया कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान मेरा अधिकांश समय किसी न किसी जेल में बीतेगा।

सन १९४१ के व्यक्तिगत अवज्ञा आंदोलन के सिलसिले में मैं गिरफ़्तार किया गया। प्रस्तावित सात अध्यायों में से मैं एक ही पूरा कर पाया था कि मुझे छोड़ दिया गया। बाद में मैं वेलोर कैंप में डेढ़ वर्ष रहा और वहां से जब मुझे सेंट्रल प्राविंस (मध्यप्रांत) की जेल में स्थानांतरित किया गया, तब तक मैं आधी कृति लिख चुका था। पांचवां अध्याय मैंने सिवनी जेल में लिखा और शेष अध्याय मंडला जेल में। मैं घंटों इस कृति के सृजन में जुटा रहता और समय बचाने के लिए दाढ़ी तक नहीं बनाता। ●

# कालकोठरी में अनशन

• मन्मथनाथ गुप्त

मैं कुल मिलाकर १९ साल ९ महीने जेल में रहा ।

जेलों से मेरा पहला संबंध दिसम्बर, १९२१ में हुआ जब मुझे ३ महीने की सादा जेल हुई । मेरे साथ और भी कई साथी गिरफ्तार हुए थे, जिनमें विचित्र नारायण शर्मा (इस समय वे ९१वें वर्ष में चल रहे हैं), रामनाथ लाल सुमन, हिंदी लेखक कुंवर बेचैन शर्मा उग्र और बजरंगबली गुप्त (जो कि बाद में लेखक और प्रकाशक बने) थे । इनके अलावा प्रसिद्ध क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद भी हम लोगों के साथ थे, यद्यपि वे मेरे साथ गिरफ्तार नहीं हुए थे ।

जब हम लोग अदालत में पेश हुए, तो हमने वही बयान दिया जो हमें अपने बड़ों ने सिखाया था । हमने कहा, "वह सरकार, जिसने खिलाफत अन्याय किया है और पंजाब हत्याकांड के लिए जिम्मेदार है, मैं उसे सहयोग नहीं करता ।" यहां तक कि हमने अपने नाम-वाम भी नहीं बताये । जब चंद्रशेखर आजाद उस २४ वर्षीय पारसी मजिस्ट्रेट मिस्टर खरेघाट के सामने पेश किये गये, तो उन्होंने बिल्कुल इसी तरह का बयान दिया । या तो उन्हें किसी ने सिखाया नहीं था या उनकी तबियत इतनी मौलिक थी कि उन्होंने लकीरी की फकीरी अपनाकर बतायी हुई पट्टी पर चलने से इनकार कर दिया । मुझे तो खरेघाट ने तीन महीने की सादा कैद दी थी पर चंद्रशेखर को पंद्रह बेंत की सजा भी दी गयी । इसका कारण यह था कि चंद्रशेखर ने उन्हें नाराज कर दिया था ।

**आजाद असहयोग आंदोलन के प्रतीक बने**

खरेघाट ने चंद्रशेखर से पूछा, "तुम्हारा नाम ।"

—"मेरा नाम आजाद ।"

—"तुम्हारे बाप का नाम ?"

—"मेरे बाप का नाम स्वाधीन ।"

—"तुम्हारा घर ?"

—"मेरा घर जेलखाना ।"

मजिस्ट्रेट को यह जवाब असहनीय लगे और चंद्रशेखर को पंद्रह बेंतों की सजा सुना दी । लेकिन आजाद ने इस बेंत खाने की घटना को एक ऐतिहासिक घटना इस प्रकार बना दिया कि हर बेंत पर उन्होंने 'महात्मा गांधी की जय' का नारा दिया । इस प्रकार एक ही क्षण में चंद्रशेखर आजाद उस महान असहयोग आंदोलन के प्रतीक बन गये ।

*अनशन ५२ दिन का हो चुका था । मेरी स्थिति मृत प्रायः हो गयी थी । तब मुझे नाक के रास्ते रबड़ की नली से रोज दूध-दवा आदि पिलाया जाता । जब नाक में रबड़ की नली डाली जाती थी, तब अत्यंत कष्ट होता था ।*
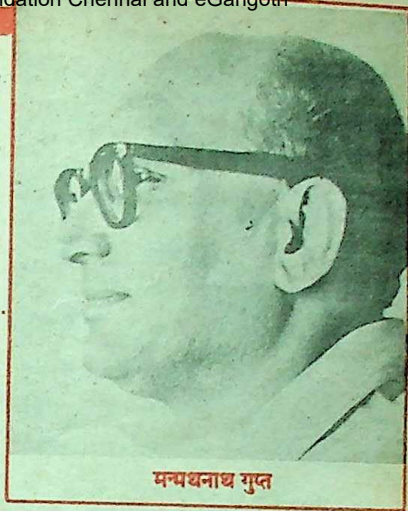
मन्मथनाथ गुप्त

यद्यपि जेल जाने का यह पहला अवसर था, फिर भी मैं एक हद तक तैयार था । अंडमान कैदियों और दूसरे लोगों के जेल के अनुभवों से मैं परिचित था और उनकी कहानियां पढ़ चुका था । फिर भी जो कुछ हुआ, वह उस पढ़े हुए ज्ञान से अलग निकला ।

**पहले गांधीवादी फिर क्रांतिकारी के रूप में**

जेल में बरतन के नाम पर हमें एक तसला और एक कटोरी मिली । दोनों ही लोहे के बने थे । बिस्तरे के नाम पर मूंज का बना एक टाट और एक बहुत खुरदरा कंबल । जेल में यही मेरी सारी संपत्ति थी ।

मुझे सादा कैद की सजा थी । नियमानुसार मुझे जेल के कपड़े नहीं पहनाये जा सकते थे यानि कि मैं अपने खादी के बने कुर्ते-पजामे पहन सकता था । पर मैंने मांगकर जेल का कुर्ता-पजामा लिया । यह मैंने कोई मौलिक कार्य नहीं किया था क्योंकि उस युग में सभी राजनीतिक कैदी साधारण कैदी के रूप में रहना पसंद करते थे । मजबूरन अफसरों को राजनीतिक कैदियों को दो श्रेणियों में बांटना पड़ा । पहली श्रेणी के कैदियों को भोजन ठीक-ठाक मिलता था । लेकिन मुझ-जैसे दूसरी श्रेणी के अपराधियों को वही मिलता था जो कि साधारण कैदियों के लिए था । सुबह पांच रोटियां और एक ढब्बू दाल । शाम को पांच रोटियां और एक ढब्बू तरकारी जिसमें घास की प्रधानता होती थी । दाल में गोता लगाने पर भी दाल का पता नहीं लगता था । हां, कुछ कंकड़ अवश्य मिल जाते थे । साधारण कैदियों को, जिन्हें सश्रम कारागार मिला था, हम लोगों से एक रोटी ज्यादा मिलती थी । प्रातःकाल नाश्ते के रूप में उन्हें एक छटांक भुने हुए चने भी मिलते थे । लेकिन हम लोगों के लिए नाश्ते की जरूरत नहीं समझी जाती थी । लेकिन नयी श्रेणी के अनुसार मुझे सुबह-शाम पाव भर दूध मिलने लगा ।

१९२५ में मैं फिर से गिरफ्तार हुआ । अब की बार मैं गांधीवादी स्वयं सेवक के रूप में नहीं बल्कि एक क्रांतिकारी के रूप में पकड़ा गया था । यह लखनऊ के पास काकोरी स्टेशन के

चन्द्रशेखर आजाद

निरंतर यात्रा— गांधीजी

इलाके में ट्रेन रोककर सरकारी खजाने को लूटने का मामला था । इसे 'काकोरी षड्यंत्र केस' का नाम दिया गया । पंडित रामप्रसाद बिस्मिल और अशफाकुल्ला खां ने खजाने को लूटने का नेतृत्व किया था । मैं और चंद्रशेखर आजाद भी इसमें शामिल थे । चंद्रशेखर तो अंत तक गिरफ़ार नहीं हो पाये थे लेकिन इस केस में बहुत सारे लोग गिरफ़ार किये गये । यह मुकदमा लखनऊ की अदालत में डेढ़ साल तक चला । असल में दो मुकदमे चले, क्योंकि अशफाकुल्ला और सच्चिदानाथ बख्शी इतनी देर बाद गिरफ़ार हुए कि उनको मुख्य मुकदमे में शामिल करना संभव नहीं था । दोनों मुकदमों में कुल मिलाकर चार व्यक्तियों—रामप्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी और अशफाकुल्ला को फांसी हुई और मुझे १४ साल की सजा हुई । मेरी सज़ा के विरुद्ध सरकार ने चीफ कोर्ट लखनऊ में अपील की और मेरी सजा बढ़ाने को कहा । लेकिन अंगरेज जजों ने उसे इस आधार पर स्वीकार नहीं किया कि मेरी उम्र मात्र अठारह वर्ष की थी ।

## विशेष व्यवहार की मांग

१४ साल की सजा मैं बारह साल में काटकर बाहर आया । इस बीच न जाने कितनी लड़ाइयां जेल के अंदर हुई । हवालात में ही काकोरी कैदियों ने सोलह दिन का अनशन किया था और विशेष व्यवहार की मांग की थी । विशेष व्यवहार की मांग का अर्थ था कि हम लोगों को अंगरेज कैदियों के समान सुविधाएं मिलें । गोरे कैदियों को फौजी बैरक की सुविधाएं थीं । उन्हें दूध, गोश्त, चीनी सब-कुछ मिलता था ।

अंत में सरकार मान गयी थी । लेकिन उसने बड़ी चालाकी से एक छिद्र रखकर इस रियायत को समाप्त करने की कोशिश की । वह यह की हमें विशेष व्यवहार बीमारी के आधार पर दिया गया था ।

इस छिद्र का पता हमें तब चला जब हम लोग सजा पाकर अलग-अलग जेलों में बांट दिये गये । मेरे साथ श्री विष्णुशरण दुबलिश नैनी सेंट्रल जेल भेजे गये जहां जवाहरलाल नेहरू और मौलाना आजाद रह चुके थे । जेल

पहुंचते ही हम लोगों ने अनशन करने की घोषणा की। हम दोनों को अलग करके काल कोठरियों में बंद कर दिया गया था। जब पैंतालिस दिन हो गये और मेरा वजन ३२ पौंड घट गया, तब महान पादक और नेता गणेश शंकर विद्यार्थी आये। वह हम दोनों के साथ घंटों बैठे। इस भेंट के लिए दुबलिशजी और हम इकट्ठा कर दिये गये थे। विद्यार्थी जी ने कहा कि सब कुछ तय हो गया है। हमें विशेष व्यवहार मिलेगा, इसलिए हम अनशन तोड़ दें। वह हम दोनों को दूध का गिलास पिलाकर चले गये। इसी प्रकार उन्होंने अन्य जेलों में भी अनशन कर रहे राजनीतिक बंदियों के अनशन को तुड़वाया। बरेली सेंट्रल जेल में उन्होंने मुकुंदी लाल और राजकुमार सिंह का अनशन तुड़वाया।

### संघर्ष जारी रहा

लेकिन सरकार नहीं झुकी थी और हमें विशेष व्यवहार नहीं मिला। इसलिए हमारा संघर्ष जारी रहा। वास्तव में यह इतिहास काफी लंबा है। यतीन्द्र नाथ दास अनशन के ६३वें दिन शहीद हुए। तब भी सरकार ने विशेष व्यवहार रोकना चाहा। इस पर भगत सिंह ने लाहौर जेल में और मैंने बरेली सेंट्रल जेल में अनशन किया। यह अनशन ५२ दिन का हो चुका था। मेरी स्थिति मृत प्रायः हो गयी थी। तब मुझे नाक के रास्ते रबड़ की नली से रोज साढ़े सात पौंड दूध-दवा आदि पिलाया जाता था। जब नाक में रबड़ की नली डाली जाती थी, तब अत्यंत कष्ट होता था। सात-आठ आदमी जबरदस्ती पकड़े रहते थे और कैदी हिल नहीं सकता था।

अब की बार यतीन्द्र नाथ दास की शहादत कह लीजिए या भगत सिंह और मेरा अनशन कह लीजिए, सरकार को झुकना पड़ा और कैदियों का नया वर्गीकरण किया गया।

इस नये वर्गीकरण में कैदी तीन वर्गों में बांटे गए—ए, बी और सी। हमने मांग की कि हमें बी श्रेणी में रखा जाए, तभी हम अनशन तोड़ेंगे। सरकार ने शर्त रखी कि हम अनशन तोड़ दें तो हमें बी श्रेणी में रख दिया जाएगा।

१९२१ में राजनीतिक कैदियों के लिए जो रोटियां बनती थीं, वह पैर से सानी जाती थीं यानि कि आटे के पहाड़ पर पानी डालकर रसोइये उस पर नाच करते थे। यह न समझा जाए कि यह जुल्म का कोई तरीका था, क्योंकि सारे यूरोप में यही तरीका था। हम लोगों ने इसे बंद कराया और जेल में ए, बी और सी श्रेणियां शुरू करवायीं। यहां चलते हुए एक बात स्पष्ट कर दी जाए। क्रांतिकारियों के अलावा हजारों कांग्रेसी कार्यकर्ता जेल गये। उन्होंने थोड़ा-बहुत संघर्ष भी किया पर मुट्ठीभर क्रांतिकारियों ने जिनमें यतीन्द्रनाथ दास के अलावा अंडमान जेल के मोहित मोहन शामिल थे, जेल में सुधार करवाये। आज तक वही श्रेणी व्यवस्था चल रही है। मोतीलाल नेहरू आदि जेल में रहे। उनको व्यक्तिगत आधार पर विशेष व्यवहार मिलता था। लेकिन क्रांतिकारियों ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर जो सुविधाएं प्राप्त कीं, वह सब कैदियों को मिलीं। जेल सुधार का कार्य स्वतंत्र भारत में भी उसके आगे नहीं बढ़ा।

### जेल में पढ़ना-पढ़ाना

जेल में कांग्रेसी कैदियों से हम क्रांतिकारियों

के मधुर संबंध थे । कांग्रेसी कम पढ़े-लिखे थे । हम क्रांतिकारी उन्हें पढ़ाते थे । रमेन्द्र वर्मा जो कि बाद में उत्तर प्रदेश में मंत्री बने, को मैंने पढ़ाया था । बाद में मेरे लेखन में वे मुझे सहयोग देते रहे । यह कहना कि मैं शिक्षक था, गलत होगा, हम साथ-साथ पढ़ते थे । मैं बोलता जाता था और वे लिखते जाते थे ।

जेल में साधारण कैदी भी यानि कि चोर, उचक्के थे । इनमें एक अजीब बात जो मैंने देखी थी कि ये कैदी अदालत में बिल्कुल मुंह नहीं खोलते थे और अपने को निर्दोष कहते थे, वे अन्य कैदियों के सामने अपनी सारी करनी प्रकट कर देते थे । इन्हीं कैदियों को सुनकर जो कहानियां मेरे सामने आयीं, उनका प्रयोग मैंने अपने उपन्यासों में किया है । 'अवसान' नाम का मेरा उपन्यास हूबहू इसी तरह का रिपोर्ताज है ।

ये साधारण कैदी हम लोगों को बहुत इज्जत देते थे । हमें 'बाबूजी' कहते थे । जेल अधिकारियों को यह पसंद नहीं था ।

### कालकोठरियां

अंत में कालकोठरियों के बारे में बता दूं । बरेली सेंट्रल जेल में १८८४ के बर्मी विद्रोह के कैदियों के लिए काल कोठरियां बनायी गयीं थीं । इसमें लोहे का दरवाजा होता था । कोई जंगले की व्यवस्था नहीं थी । इसलिए दिन में भी अंधेरा रहता था । आदर्शवाद के कारण मुझे अपनी ४ नंबर की काल कोठरी में कोई परेशानी नहीं हुई । लेकिन बहुत-सारे लोग इस यातना को सहन नहीं कर पाते थे । उल्लासकर दत्त, जो बाद में बंगला के बड़े लेखक बने, तो पागल हो गये थे । कुछ तो मर भी गये थे ।

लेकिन वह समय कुछ और ही था, वह एक नशा था, एक संकल्प था, जिसने हम लोगों को संघर्ष करते रहने का आदेश दिया ।

**(प्रस्तुति : शिवशंकर अवस्थी)**

## प्रकृति-संदेश

*आंधी आती है और चली जाती है । अपनी प्रौढ़ता का अभिमान लेकर खड़े हुए बड़े-बड़े वृक्ष गिर जाते हैं पर छोटे-छोटे पौधे जो कि समूह के साथ झुकना जानते हैं अपना सिर उठाये खड़े रहते हैं ।*

*आज का टूटता हुआ विश्व निकट भविष्य में आनेवाली आंधी का पहला काला बादल है । यह आंधी बहुत प्रबल होगी क्योंकि इसके पीछे सदियों से पिसती हुई, गुलाम शोषित जनता की आहों की तड़पन होगी । उसमें अनगिनत बलिदानों का संबल होगा । हमारा और विश्व का कल्याण इसी में है कि हम प्रकृति संदेश सुनें और इस आनेवाली साम्यवाद की आंधी के साथ झुक सकें ।*

**— बसंत कुमार मिश्र**

**१ फरवरी ४४ जबलपुर सेंट्रल जेल**

# मुझे हथकड़ी पहनाकर जबरन घुमाया जाता था

● जयप्रकाश नारायण

*सन १९४२ की बात है । कांग्रेस महासमिति द्वारा 'भारत छोड़ो' पुस्तक एवं नेताओं की गिरफ़्तारी के साथ ही देश के कोने-कोने में आंदोलन की ज्वाला भड़क उठी थी । तभी आग की तरह खबर फैली कि हजारीबाग जेल से जयप्रकाशजी निकल भागे हैं ।*

*जेल से भागने के बाद की कहानी स्वयं जयप्रकाशजी के शब्दों में ।*

सब तरफ सख्ती से खोज हो रही थी । हर क्षण शंका के बीच घिरे होते थे । ऐसी स्थिति में मैं क्या कर सकूंगा ? छिप-छिपकर शहर-शहर घूमूं, तो उससे बात कुछ बनती नहीं थी और गिरफ़्तार होने का पूरा खतरा था । सोचता था, इतना कुछ करने के बाद फिर गिरफ़्तार हो जाऊं, तो क्या फायदा होगा ? आखिर तय किया कि यहां से रावलपिंडी जाता हूं और वहां अफगानिस्तान जाने की कोशिश करूंगा। अफगानिस्तान पहुंचकर फिर आगे की योजना बनाऊंगा । अरुणा (अरुणा आसफअली) से योजना पर चर्चा हुई और उसी ने रावलपिंडी तक की यात्रा का इंतजाम किया ।

दिल्ली से रावलपिंडी का टिकट लेकर फर्स्ट क्लास में जा बैठा । ऊपर से नीचे तक मैं अंगरेजी कपड़ों में था । सर पर हैट, टाई, सूट आदि । फ्रंटियर मेल थी । मिस्टर एंड मिसेज खान के नाम आरक्षण था, पर योजनानुसार वे नहीं गये और उनकी जगह मैं चला था । लेकिन भेद कहीं खुल गया था । प्लेटफार्म पर ही काफी चहलकदमी देखी । सादे कपड़े में तेज निगाहों से डिब्बे के भीतर-बाहर नजर रखनेवाले लोग बहुत थे । मेरे डिब्बे के सामने से कई लोग बार-बार गुजरते थे । मैं संकट भांप गया था और अपनी तरफ से काफी सचेत था ।

दिल्ली से गाड़ी चली, तो सुबह कोई छह बजे मुगलपुरा स्टेशन पर रुकी । मैंने चाय मंगवायी । मैं अंगरेजी स्लीपिंग सूट पहने था । चाय अभी पी ही रहा था कि तीन लोग मेरे

डिब्बे में आये— दो सिख थे और एक अंगरेज । मैं सब-कुछ भांप रहा था । मैंने तुरंत कहा, 'आइए, आइए, ये सीट खाली ही है ।'

वे भीतर आकर बैठ गये । उनके पीछे न कोई कुली दाखिल हुआ और न उनके अपने हाथ में ही कोई सामान था । मेरा शक एकदम पक्का हो गया । बिना सामान के आखिर ये लोग कहां जा रहे हैं ?

मैं चाय पीता रहा और मानो उनकी तरफ से एकदम उदासीन हो गया । हालांकि, चाय के प्याले के पीछे से मैं उनको बार-बार देखता तो था ही ।

जैसे ही गाड़ी आगे बढ़ी, उनमें से जो अंगरेज था, वह उठा और मेरे पास आकर बोला, 'यू आर जयप्रकाश नारायण ! सरकार के आदेश पर मैं आपको 'अरेस्ट' करता हूं ।' उसके हाथ में पिस्तौल थी । वह लाहौर का सीनियर एस. पी. रॉबिंसन था । मैंने चौंकते हुए प्रतिवाद किया, 'क्या कह रहे हैं आप ? मैं किसी जयप्रकाश नारायण को नहीं जानता । मैं तो... ।'

'बात बनाने की जरूरत नहीं है ।' रॉबिंसन ने कड़े स्वर में उत्तर दिया, 'मिस्टर नारायण, यह न बिहार है, न नेपाल । यह पंजाब है । डोंट प्ले एनी ट्रिक हीयर । हुक्म है कि कुछ भी चालाकी करें, तो गोली मार दो ।'

'यह तो ज्यादती है कि आप किसी जयप्रकाश नारायण के शक में मुझे पकड़ रहे हैं,' मैंने कहा, क्योंकि रॉबिंसन कड़ाई तो बहुत दिखा रहा था, लेकिन सच में मैं ही जयप्रकाश नारायण हूं, इसके बारे में पूरा विश्वास उसके चेहरे पर नहीं था ।

जे. पी. : १९४६
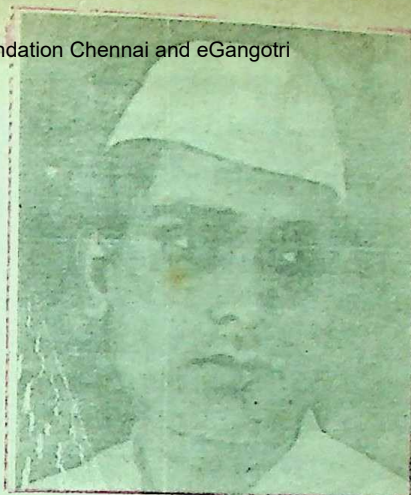
बक्से में कुछ जरूरी चिट्ठियां थीं । कुछ सर्क्यूलर थे । इन सबको साथ ले चलने की कोई जरूरत नहीं थी, पर वह गलती हो गयी थी । रॉबिंसन के साथ के सिख जवानों ने मेरे सामान की तलाशी ली और मैं ही जयप्रकाश नारायण हूं, इसका पक्का सबूत रॉबिंसन के हाथ लग गया ।

'आप अपने कपड़े पहन लीजिए,' रॉबिंसन बोला । मैंने अपना सूट वगैरह पहन लिया । लाहौर स्टेशन आया । वहीं हम उतरे । मेरा एक हाथ हथकड़ी में बंधा था । और उसकी चेन एक जवान ने पकड़ रखी थी । मैंने हैट खींचकर अपना चेहरा ढंक लिया था, ताकि कोई पहचाने नहीं । हजारीबाग से निकल भागने के बाद से, पुलिस के साथ जो आंख-मिचौनी शुरू हुई थी, वह अंततः लाहौर किले में आकर समाप्त हो गयी ।

लाहौर किले में मुझे १६ माह रखा गया । वे दिन भयंकर थे । एक अंधेरी, छोटी-सी कोठरी । उसी में सोना, खाना, पाखाना सब । एक खाट दी थी और कंबल । उतनी घुटन और

मन की टूटन मैंने कभी महसूस नहीं की थी । एक माह तक उसी अंधेरी कोठरी में एकदम चुप रहा । इतना एकांत ! इतना सूनापन !! और यह भी जानता था कि बाहर देश में भी एकदम सन्नाटा है ।

मेरा क्या होगा, इसकी कभी चिंता नहीं होती थी, पर देश में कैसे उत्साह आएगा, यह बात जरूर मन में घूमती थी । यह भी सोचता था कि अब तक जो किया, उसमें कहां, क्या चूक हुई आदि ।

पर अपने से कब तक कोई बात करे ? दूसरा कोई तो छोटे-छोटे सवालों का भी जवाब न दे । संतरी से बात करूं, तो वह पत्थर की मूर्ति बना रहे । इनकार में या स्वीकृति में सिर भी न हिलाये । किसी अफसर को बुलाऊं, तो कोई आये ही नहीं । न कोई किताब, न अखबार, न कोई कागज-कलम । एकदम शून्य में फेंक दिया हो जैसे । गेट के नीचे से खाने की थाली खिसकाकर भीतर डाल दी जाती थी और मैं खाकर उसी रास्ते से बाहर ठेल देता था । मेहतर आता था । सफाई करके चला जाता था । भिश्ती पानी लाता था और घड़ा भर जाता था । एक माह इसी प्रकार चला ।

**यातनाओं का वह भयावह दौर !**

फिर एक दिन एक अफसर आया । उसने दरवाजा खुलवाया । 'चलिए' मैं बाहर आया । ऑफिस ले गये । वहां एक इंस्पेक्टर और एक सब-इंस्पेक्टर बैठा था । उनके बीच मुझे बिठाया और फिर पूछताछ शुरू हुई— कहां से रुपया आता था ? हथियार कहां से आते थे ? जेल से कैसे निकले ? कहां-कहां ठहरे । फरारी जीवन में किसने मदद की । नेपाल में क्या करने गये थे ? रावलपिंडी क्यों जा रहे थे ? मैंने सारे प्रश्नों का एक ही जवाब तय कर लिया था— 'जानता हूं, पर मैं बताऊंगा नहीं ।'

'मैं नहीं जानता हूं,' ऐसा कहने का तो कोई मतलब ही नहीं था । मैं कौन हूं, जब यह बात खुल ही चुकी थी, तब इसके सिवा कोई जवाब क्या हो सकता था कि मैं जो भी जानता हूं, वह आपको बताऊंगा नहीं !

पूछताछ का क्रम १०-१५ दिनों तक चलता रहा । सुबह ही जेल से निकालकर ले जाते और दिनभर वहीं कुरसी पर बिठाते । आठ-आठ, दस-दस घंटे पूछताछ चलती । एक ही जवाब और कई तरह के सवाल । उस बीच खाना भी नहीं । उसी में गपशप भी चलती और पूछताछ भी ।

कभी कोई नया आदमी अकेले में ले जाकर पूछता, खूब खुशामद करता । अपनी पगड़ी उतार कर पैरों पर रख देता । 'आप तो महान हैं । गांधी, नेहरू के बाद देश आपको ही जानता है । अंगरेज सरकार आपसे डरती है । लेकिन जरा सोचिए, हमें तो ड्यूटी करनी है । आप मदद नहीं करेंगे, तो हम कुत्तों की मौत मरेंगे । हमारे बाल-बच्चे भूखों मरेंगे ।'

कभी कोई आता— 'जयप्रकाश जी, देखिए, यह कहा है आपके अच्युत पटवर्धन ने । लोहिया जी का, अरुणा आसफअली का यह बयान है । हम जो आपसे पूछ रहे हैं, वह तो सब इन लोगों ने कह दिया हैं । अब आप ही क्यों चुप हैं ?'

'जब इन लोगों ने आपको जो चाहिए, वह सब बता दिया है, तो फिर मुझसे क्यों पूछते

हैं ?' मैं इतना ही कहकर चुप रह जाता ।

धीरे-धीरे उनकी सख्ती बढ़ने लगी ।

घंटों कुरसी पर बिठाकर पूछते रहते । एक क्षण दिमाग तनावमुक्त नहीं होने देते, जरा-सी सुस्ती हुई नहीं कि बाल पकड़कर झकझोर देते । कहते 'सोने के लिए बुलाया है ?'

फिर बगल के कमरे में किसी की बेतरह पिटाई करते । मारने की, गाली की, हंटर की और चीखने-चिल्लाने की आवाज से कमरा भर जाता था । उसके बाद मुझे लाकर एक कोने में बिठाते और एक सिपाही एक-एक कर पिटाई के सामान मेरे सामने रखता जाता । छड़ी, कोड़ा, हंटर, लोहे की चेन । कोई कुछ बोलता नहीं । बीच-बीच में इंस्पेक्टर आदि आकर चीजों को घुमा-फिराकर देखते-जांचते और फिर चले जाते । फिर शाम होती तो चीजें समेट लेते और मुझे ले जाकर सेल में बंद कर देते । प्रत्यक्ष पिटाई से भी ज्यादा भयानक था वह सब ।

धीरे-धीरे पूछताछ की, मुझे बिठाये रखने की अवधि बढ़ती गयी । आखिरी १० दिन तो पूरे २४ घंटे वहीं कुरसी पर बिठाकर रखा । दोनों हाथ और कभी एक, पीछे मोड़कर बांध देते ।

सिर हमेशा झनझनाता रहता । बाल सफेद होने लगे । खाना तो एकदम ही नहीं खाता था । देखकर ही उबकाई आती । नींद एकदम गायब हो गयी थी । कभी १२ बजे तक बिठाये रखते और फिर इंस्पेक्टर कहता, 'आज छुट्टी । जाइए, जाकर सो जाइए,' सेल में लाकर बंद कर देता । जैसे ही आंख झपकने को होती, दरवाजे पर लोहे की जंजीर से तेज खड़खड़ाहट करते

और दरवाजा खोलकर भीतर आ जाते । झकझोर देते— 'चलो, चलो, सोना नहीं है ।' और फिर वही कुरसी, वही पूछताछ, मानसिक रूप से तोड़ने की कोशिश । सेल बदलकर एक दूसरी और भी ज्यादा छोटी कोठरी में डाल दिया । एकदम निकम्मी जगह थी । वहां भी वही क्रम चलता रहा । सेल के ऊपर मधुमक्खियों का एक छत्ता था । कभी-कभी उसी को निहारता रहता था । बर्फ की सिल्लियों पर लिटाने से भी ज्यादा भयानक था वह सब । व्यक्ति मानसिक संतुलन खो दे, ऐसी स्थिति थी ।

न कागज, न बाहर की कोई चिट्ठी । मन तो कमजोर नहीं हुआ था, पर बहुत अकेला हो गया था । इतनी लंबी पूछताछ के बाद भी उनके हाथ कुछ नहीं लगा । वरिष्ठ अधिकारियों को वे बराबर खबर भेजते थे, तो उन्हें भी लगा होगा कि इस आदमी से कुछ मिलेगा नहीं । ऊपर से ही आदेश आया कि पूछताछ बंद कर दो । एक दिन सुबह आये । सेल खोला और बोले— 'आपको यहां से ले जाना है । उठिए ।'

एक दूसरे सेल में ले जाकर रखा। थोड़ा बड़ा और थोड़ा अच्छा था। सामने कुछ पेड़ वगैरह लगे थे। कई दिन तक तो वे पेड़ ही जीवन में जैसे एक नवीनता ले आये। पाखाना भी सेल से थोड़ी दूर पर था। वे बराबर मुझे याद दिलाते रहते थे कि यह बिहार नहीं, पंजाब है।

उन दिनों मैक्डोनाल्ड वहां होम सेक्रेटरी थे। इतने महीनों में पहली बार वे 'इंस्पेक्शन' पर आये। मुझसे पूछा, तो मैंने सारी स्थिति बयान की और अपनी दिक्कतें बतलायीं।

'इज इट सो ?' यह तो बहुत खराब हुआ है। आप एक 'एप्लीकेशन' लिखकर दीजिए। मैं कार्रवाई करूंगा।'

### घूमने से इनकार

महीनों बाद कागज-कलम हाथ में आया। लगता था, जैसे लिखना भूल गया हूं। अर्जी लिखी। लिखने-पढ़ने का सामान मांगा और साथी मांगा। कागज-कलम, अखबार आदि तुरंत मिले। वहीं पहली डायरी लिखी थी, जो बाद में जेल-डायरी के नाम से प्रकाशित हुई।

मैंने साथी मांगा था, तो एक दिन मेरा सेल खुला और मैंने देखा कि सामने राममनोहर लोहिया खड़े हैं। आंखों पर तो विश्वास नहीं हुआ। एक घंटे की उस मुलाकात में कितनी खुशी हुई, मैं कह नहीं सकता। लगा, जैसे सारी मुश्किलें आसान हो गयीं, जैसे जेल से ही फुरसत मिल गयी। बाद में भी थोड़े समय हमें मिलने देते थे। मुझे शाम को घूमने के लिए सेल से निकालते थे। पहले दिन निकाला, तो एक हाथ में हथकड़ी पहना रखी थी और उसकी जंजीर का एक सिरा एक इंस्पेक्टर पकड़े था। मैंने कहा, 'हथकड़ी खोलिए।' 'हथकड़ी खोलने का हुक्म नहीं है,' इंस्पेक्टर बोला।

मैंने आपत्ति की, 'मैं हथकड़ी पहनकर तो नहीं घूमूंगा।' 'देखिए मिस्टर नारायण, किले के बाहर १५०० लोगों का पहरा है। भागने की कोशिश कीज़िएगा, तो कोई चांस नहीं है,' इंस्पेक्टर बोला। मैंने कहा कि घुमाने लाये हैं, तो हथकड़ी खोलिए, ऐसे मैं घूमूंगा नहीं।' ले जाकर मुझे सेल में बंद कर दिया।

दूसरे दिन फिर आये। फिर हथकड़ी वगैरह साथ थी, तो मैंने बाहर जाने से इनकार कर दिया। 'आप हथकड़ी लगाएंगे, तो मैं घूमूंगा नहीं। इसलिए बाहर क्यों निकालते हैं ?' मैंने कहा, तो इंस्पेक्टर बोला कि मिस्टर नारायण घुमाने का तो हुक्म है। इसलिए आपको घूमना तो पड़ेगा ही! दो सिपाहियों ने मुझे उठा लिया और मुझे लेकर घूमने लगे। इतना वाहियात था वह सब कि बड़ा गुस्सा आया मुझको। २-३ दिन ऐसा ही चला, फिर मैंने चिढ़कर कहा— 'ये क्या निकम्मी बात है! मैं लिखकर होम सेक्रेटरी से शिकायत करूंगा।' तब कहीं यह सिलसिला बंद हुआ। ●

**प्रीतिलता वाड्डेदर प्रथम महिला थीं, जो भारत के स्वाधीनता संग्राम में शहीद हुईं। वह बंगाल के प्रसिद्ध क्रांतिकारी मास्टर सूर्यसेन के क्रांतिकारी दल की सक्रिय सदस्या थीं।**

१९२० ई. के ढलते मास । अंगरेज सरकार के प्रति भारत का रहा-सहा मोह भी अब भंग हो चला था । प्रथम विश्व युद्ध के नाजुक दौर में हिंदुस्तानी सैनिकों ने जिस दिलेरी से उसके साम्राज्य की रक्षा की थी, उससे आशा बनी थी कि अब सरकार भारत के प्रति और उदारता बरतेगी, किंतु वास्तव में मिला क्या ? हृदयहीन दमन का प्रतीक-'रोलट एक्ट' । भारत बौखला उठा, विरोधी नारे बुलंद होने लगे । इसी सिलसिले में एक सभा हो रही थी, अमृतसर के चहारदीवारी से घिरे जलियांवाले बाग में । सरकार को यह सहन न हुआ । जनरल डायर के आदेश पर उसके सैनिक उस निहत्थी और असहाय भीड़ पर अंधाधुंध गोलियां बरसाने लगे । बाहर निकलने का तो कोई रास्ता था नहीं । कितने वहीं भून दिये गये । कितने आहत हो वहीं धराशायी हो गये । इस नृशंस हत्याकांड से भारत की आत्मा कराह उठी । अंगरेज सरकार को उखाड़ फेंकने की उसने मन में ठान ली ।

अभी कुछ साल पहले ही गांधीजी भारतीय राजनीति में उतरे थे । उनके प्रादुर्भाव ने राष्ट्रीय आंदोलन को न केवल दिशा और गति दी, अपितु उसे अपेक्षित जनाधार भी दिया । उन्हीं

# गर्व और उत्साह से जेल यात्रा

● डॉ. समर बहादुर सिंह

**जमनालालजी के जेल जाने से घर के नौकरों-चाकरों में हाहाकार मच गया । उन्हें जब अठारह मास की सजा हुई तो राजाजी ने कहा, आज वर्धा में ऐसा लग रहा है, जैसे राम बनवास गये हों ।**
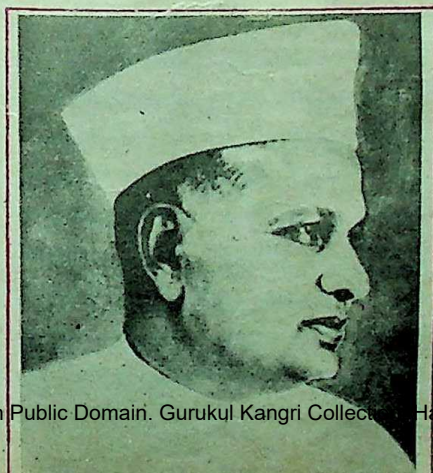
की प्रेरणा से उस साल सितम्बर मास में कलकत्ता के अपने विशेष अधिवेशन में कांग्रेस ने वह प्रस्ताव पास किया, जिसने इस आंदोलन को एक नया मोड़ दिया और वह प्रस्ताव था 'असहयोग' का। अब कांग्रेस का उद्देश्य बन गया 'स्वराज्य'। देशवासियों से अपील की गयी कि वे आगे ब्रिटिश शासन से कोई सहयोग न करें और वैध तथा शांत ढंग से उसकी अवज्ञा करें। तीन माह बाद नागपुर कांग्रेस ने इस प्रस्ताव की पुष्टि भी कर दी।

### असहयोग का बिगुल

१९२९ ई. के उभरते मास। 'असहयोग' का बिगुल बजते ही सारे देश में उत्साह की एक लहर-सी आ गयी। व्यथित और निराश भारत को अब एक नयी ज्योति, नयी चेतना मिल गयी थी। वकीलों ने अदालत का बहिष्कार किया, विद्यार्थी सरकारी स्कूलों-कॉलेजों से बाहर निकल आये और कितने राजा-रईसों ने अपनी 'राय बहादुरी' को तिलांजलि दे दी। देशबंधु चित्तरंजन दास और पं. मोतीलाल नेहरू-प्रभृति बैरिस्टर भी इस आंदोलन से आ जुड़े। विदेशी कपड़ों की होलियां जलने लगीं और झुंड के झुंड स्वयंसेवक गिरफ़्तारियां देने लगे। गांधीजी के जादुई नेतृत्व में लोगों के दिल से जेल का डर न जाने कहां क़ाफूर हो गया था। जेल जाना अब गर्व और गौरव की बात बन गयी थी। सत्याग्रहियों पर लाठी बरसती, उनके बदन लहूलुहान हो जाते, किंतु उनके कंठ से यह गीत फूटता ही चलता—

*"सर पर बांधे कफनिया हो, शहीदों की टोली निकली।"*

और देखते-देखते भारत के सारे जेल इन शहीदों से ठसाठस भर गये।
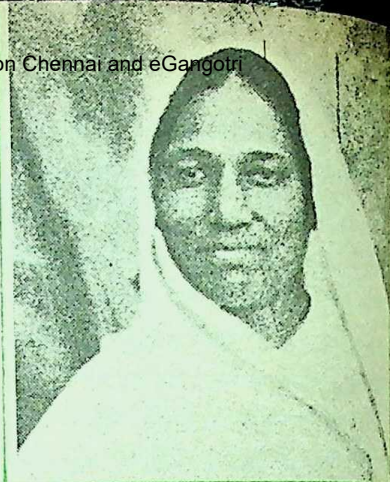
**"मुझे जेल जाने और बहनों को जेल के लिए तैयार करने की ऐसी धुन लगी जैसे पीहर जाने का ही उत्साह हो।"**

**श्रीमती जानकी देवी बजाज**

वाराणसी के जो किशोर पढ़ाई-लिखाई छोड़ इस आंदोलन में कूद पड़े थे, उनमें एक थे लालबहादुर और दूसरे थे त्रिभुवन नारायण सिंह। बाद में जब गांधीजी की प्रेरणा से वहां काशी विद्यापीठ की स्थापना हुई तो दोनों ने साथ ही वहीं से 'शास्त्री' परीक्षा पास की। कालांतर में शास्त्रीजी भारत के प्रधानमंत्री बने और त्रिभुवन उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री और फिर पश्चिम बंगाल के राज्यपाल। दोनों आजीवन मित्र बने रहे।

### जेल-जीवन के किस्से

त्रिभुवन नारायण सिंह मेरे श्वसुर के अनुज थे। वह अकसर अपने जेल-जीवन के किस्से हमें सुनाया करते। वह एक संपन्न और प्रतिष्ठित जमींदार परिवार में जनमे थे। सारी सुख-सुविधाएं थीं। किंतु गांधीजी के आंदोलन

पर वह सब-कुछ छोड़ स्वतंत्रता-सेनानी बन गये। वह सत्याग्रह करते और फिर पकड़कर जेल भेज दिये जाते। जब पुलिस उन्हें गिरफ़्तार करने कोठी पर आती तो महल्ले भर में आतंक हो जाता। विधवा मां लहुरे-लाड़ले के कष्टों की कल्पना कर कातर हो जातीं, किंतु उस समय वह उस वेदना को प्रकट न होने देतीं। अंगरेजों की आंखें भी सजल हो जातीं, किंतु उनके मुख से एक ही बात निकलती, 'चार भाई हैं एक तो देश-सेवा के लिए समर्पित होना ही है।'

जेल में उन्हें 'सी' क्लास मिलता। दिन ढलते ही सारे कैदी बैरकों में बंद कर दिये जाते। फर्श की सेज और टाट का बिछौना होता। ओढ़ने के लिए भेड़ के बाल का बना कंबल मिलता। बैरक के भीतर ही एक खुला शौचालय होता। रात में सारे कैदी उसी का उपयोग करते। मच्छर नींद हराम कर देते किंतु आजादी के उन मतवालों को वह कष्ट नहीं लगता। समय काटने के लिए कभी राष्ट्रीय गीत गाये जाते, कभी कविता पाठ होता और कभी किस्से-कहानियां। यदा-कदा ज्वलंत समस्याओं पर गरमागरम बहस भी होती। हंसी-मजाक का दौर तो देर रात तक चलता रहता।

दिनभर इन कैदियों को तरह-तरह के कामों में व्यस्त रखा जाता। कुछ कुएं से पानी खींचते, कुछ खेती-बारी का काम देखते और कुछ रसोई में मदद करते। एक बार जब मां जेल में त्रिभुवन से मिलने गयीं तो वह मसाला पीस रहे थे। मां के दिल पर उस समय क्या बीती होगी, उसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। खाने का बरतन होता मात्र एक टिन का तसला। उसी में परोसी जातीं अधजली रोटियां, पानी-जैसी दाल और उबली सब्जी। घी-दूध का सवाल ही नहीं था। वैभव में पले त्रिभुवन के स्वास्थ्य पर इस कुपोषण का बुरा प्रभाव पड़ता, किंतु उस तपस्वी को तन की परवाह ही कब थी।

### जमनालालजी की जेल यात्रा

जब छूटकर आते तो फिर आंदोलन शुरू हो जाता। पुलिस की निगाह से बचे रहने के लिए वह कोठी से जुड़े बगल के अहाते की एक कच्ची कोठरी में रहते। लाल बहादुर शास्त्री और डॉ. केसकर भी उसी कोठरी में दिन बिताते। तीनों सपूत सत्याग्रह चालू रखने के लिए वहीं योजनाएं बनाया करते। उनका प्रिय भोजन था खिचड़ी और प्रिय पेय था चाय। बाद में जब वे तीनों दिल्ली में रहते थे, तो त्रिभुवन के घर यदा-कदा उनकी खिचड़ी की दावत हुआ करती थी। शास्त्रीजी तो प्रातः देर रात गये, त्रिभुवन के घर आते और चाय अथवा लस्सी की चुसकियों के बीच राज-काज विषयक विचार-विमर्श होता।

अभी पिछले दिनों मैं वर्धा गया था। वहां जमनालालजी बजाज के त्याग और तप के किस्से सुने। जंगे-आजादी में उन्होंने बड़ी अहम भूमिका निभायी। कितनी बार जेल गये, कितनी यातनाएं सहीं, किंतु क्या मजाल कि चेहरे पर जरा भी शिकन आये। १९२३ ई. में जब उनकी पहली गिरफ़्तारी हुई तो सारा वर्धा कराह उठा। उस समय तक जेल के बारे में लोगों की यही धारणाएं थीं कि वहां तो चोर, डाकू और खूनी अपराधी ही सजा काटते हैं। देश-भक्ति में भी लोग जेल जा सकते हैं, इसकी कल्पना तब कम ही लोग कर सकते थे। इसलिए जमनालालजी के जेल जाने से घर के नौकर-चाकरों और गांव के लोगों में हाहाकार मच गया। जब बजाजजी को अठारह महीने
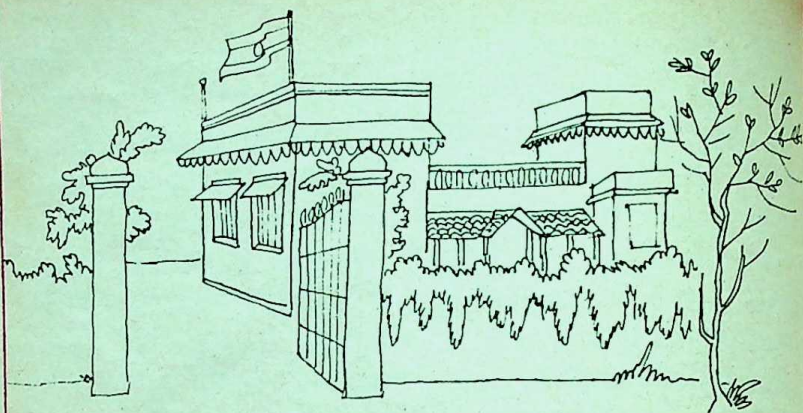
की सजा हुई तो राजगोपालाचारी ने कहा कि आज वर्धा में ऐसा लग रहा है जैसे राम बनवास गये हों ।

स्व. बजाज की पत्नी जानकी देवी बताती हैं, "जमनालालजी को 'ए' श्रेणी में रखा गया था, किंतु वह सबके साथ 'सी' श्रेणी का ही खाना खाते । उनके जीवन में यह पहला ही अवसर था, जब उन्होंने बिना घी-दूध के केवल ज्वार की रोटी खायीं । इसका शरीर पर ऐसा असर हुआ कि लोगों को देखना भी असह्य हो गया । चरबी सूख गयी थी । कोमल और सुंदर चेहरे पर लाली के बदले कालिमा छा गयी थी । दाढ़ी बढ़ गयी थी और शरीर सूखकर कांटा हो गया था । जब वह छूटकर लौटे और घर के कपड़े पहने तो ऐसा लगा कि किसी के मांगे कपड़े पहने हों ।"

## जानकी देवीजी के अनुभव

नमक सत्याग्रह के दौरान अपनी खुद की गिरफ़ारी का जिक्र करते हुए जानकी देवी कहती हैं— "मुझे जेल जाने और बहनों को जेल के लिए तैयार करने की ऐसी धुन लगी, जैसे पीहर जाने का ही उत्साह हो । मेरा यह काम जोर से चलने लगा तो अधिकारियों ने मुझे बाहर रखना खतरनाक जानकर गिरफ़ार कर लिया, दूसरे दिन जेल में ही मुकदमा हुआ और छह महीने की सजा दे दी गयी । मुझे 'ए' क्लास मिला।"

"मैं नागपुर जेल में थी । वहां के सुपरिंटेंडेंट अनुशासन के बड़े कठोर थे और कैदी उन्हें जालिम कहा करते थे । बैंगन का उबला साग और सूखी रोटी मिलती, उसी पर घी रखकर खा लिया करती । ठंडे पानी से ही नहाती और कपड़े धो लेती । पानी में काम करने और ठंडा तथा सूखा खाने से मुझे दिन में तीन-तीन, चार-चार टट्टियां और उल्टियां होने लगीं । बुखार भी आने लगा । डॉक्टर ने दवा देने को कहा, पर मैंने इनकार कर दिया । मेरी तबीयत दिन-पर-दिन बिगड़ती ही गयी । कोठरी का ताला शाम को पांच बजे बंद हो जाता । रात को कोठरी में ही जो कमोड रखा जाता था, उसी में बार-बार टट्टी जाना पड़ता था । सात दिन में मेरा तेईस पौंड वजन घट गया । बवासीर की शिकायत पहले से थी तो, अब खून की टट्टियां

और खून की उल्टियां होने लगीं । मेरी हालत मरी-जैसी हो गयी थी—"

खैर, एक बंदिनी सहेली की सेवा और घरेलू उपचार से उनकी तबियत संभल गयी । जेल में ही खबर मिली कि बजाजवाड़ी, मगनवाड़ी और महिलाश्रम और तीनों संस्थाएं जब्त हो गयीं । बजाजवाड़ी की गायों का दूध जब पुलिस बेचती तो उसको कोई खरीदता ही नहीं । मुफ्त में भी कोई उसे स्वीकार न करता । दुकान से जब तिजोरियां निकालने पुलिस आती, तो कोई मजदूर उन्हें निकालने पर राजी न होता । ऐसी थी उस समय की भावनात्मक एकता । बजाज परिवार के अन्य लोग जो जेल गये, उनकी अपनी अलग कहानी है ।

## अभिशाप भी वरदान

जेल-जीवन यों तो अभिशाप ही था, किंतु कइयों के लिए वह वरदान भी साबित हुआ । दुनिया की आपा-धापी से दूर वहां चिंतन-मनन का सुयोग मिलता-खास तौर पर 'ए' श्रेणी के कैदियों के लिए । कुछ मनीषी वहां लिखते-पढ़ते भी । कहते हैं लोकमान्य तिलक का 'गीता रहस्य' कालेपानी की कोठरी में ही लिखा गया । विनोबा भावे के 'गीता प्रवचन' का सृजन भी महाराष्ट्र के धूलिया जेल में हुआ । जवाहर लाल नेहरू ने तो अपने सभी प्रमुख ग्रंथ जेल में ही लिखे । उनकी जग जानी आत्म-कथा और 'विश्व इतिहास की झलक' मुख्यतः देहरादून जेल में लिखी गयी । और जब १९४२ ई. के 'भारत छोड़ो' आंदोलन में वह अपने साथियों के साथ अहमद नगर दुर्ग में बंदी बनाये गये, तो उस समय का उपयोग उन्होंने किया । अपनी इतिहास विषयक पुस्तक 'भारत की खोज' के प्रणयन में । वह जब जेल जाते तो अपने साथ उन नोटों का पुलिंदा भी ले जाते, जिन्हें वह अपने अवकाशीय अध्ययन में तैयार किया करते थे । लेखन में वे नोट बड़े सहायक सिद्ध होते । अहमद नगर में मौलाना अब्दुल कलाम आजाद और आचार्य नरेंद्र देव— जैसे प्रकांड पंडितों के विचार-विमर्श से भी उन्हें इस रचना में पर्याप्त सहायता मिली । नेहरूजी नित्य-नियमित बड़े तड़के उठकर यह लेखन-कार्य किया करते थे ।

नेहरूजी ने अपनी आत्मकथा में अपने जेल जीवन का बड़ा रोचक विवरण दिया है । वह वहां भी बहुत नियमित और सक्रिय रहते । अपने को चुस्त-दुरुस्त रखने के लिए रोज शेव करते । व्यायाम भी वह बराबर करते । यौगिक आसनों का उन्हें बड़ा शौक था । जब वह कलकत्ते के अलीपुर जेल में थे, तब वह अपनी उस तंग कोठरी में ही आगे, पीछे चहलकदमी कर लिया करते थे । और जब इससे ऊब जाते, तो शीर्षासन करते । देहरादून जेल में जब एक बार उनका स्वास्थ्य कुछ गिरने लगा था, तो वह दिन-दिनभर कमरे के बाहर धूप सेवन किया करते थे । वह सही अर्थों में प्रकृति-उपासक थे ।

स्वतंत्रता-संघर्ष के बनते-बिगडते इतिहास के प्रहरी ये जेल भी हमारे रण-बांकुरों के मनोबल को न तोड़ सके । तोड़ते भी कैसे ? वे तो 'करो या मरो' का व्रत लेकर विश्व की उस प्रबलतम सत्ता से टक्कर लेने आगे बढ़े थे । उनकी जुबान पर बस यही शेर होता—

*"सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है ।*
*देखना है ज़ोर कितना, बाज़ुए कातिल में है"* ।

**—मानस-बी-१२८**
**रामसागर मिश्र नगर, लखनऊ-१६**

# एक भारतीय की सीख

● परिपूर्णानन्द वर्मा

*इस लड़के का केवल यही दोष है कि अधिकारियों के प्रति दुर्व्यवहार तथा गाली-गलौज करता है । इसे सभी साथी चाहते हैं । मेरी राय में इसे कठोर जेल न भेजिए, उसके बजाए भारतीय चिकित्सा पद्धति के अनुसार इसे जिम्मेदारी दीजिए ।*

एक समय था जब स्वराज्य के बाद भारत के जेलों का प्रबंध इतना अच्छा हो गया था कि हम लोग संसार के सामने दावे के साथ कहते थे कि अपराध शास्त्र के हर पहलू से हमारे देश के जेलों का प्रबंध श्रेष्ठ है । जब जेनेवा में अंतरराष्ट्रीय अपराध निरोध तथा चिकित्सा कांग्रेस में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा आयोजित सम्मेलन में मैंने संपूर्णानंद शिविर-खुला [illegible] खुली जेल की स्थिति बतलायी तो संसार के हर कोने से आये पुलिस तथा जेल के अधिकारी दंग रह गये । विदेशों में खुला जेल का अर्थ होता है दिन में खुले रखना तथा रात में चहारदीवारी के भीतर । फिर ऐसा प्रयोग भी बस्ती से बहुत दूर किया जाता है, इस भय से कि काम वासना के अपराध न हों । पर संपूर्णनंद शिविर तो बस्ती के बीच में, बिना चहारदीवारी के होते थे, हैं भी, तथा कैदी को 'साथी' कहा जाता था । वे अपने परिवार को भी रख सकते थे तथा अपने कारखाने में गैर बंदी को भी काम में लगा लेते थे । मुझसे एक अमरीकी अपराध शास्त्री ने पूछा था—

"क्या काम वासना के अपराध नहीं हुए।"

मैंने उत्तर दिया, "नहीं, हमारे यहां अब भी मां-बहन की भावना वर्तमान है ।" ग्रेट ब्रिटेन के 'प्रिजन कमिशन' के चेयरमैन मि. पीटरसन जब भारत आये थे तब मैं उन्हें ऐसा एक शिविर दिखाने गया था । उन्होंने आश्चर्य से कहा—

"मैं इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता था ।"

### जेलों की खस्ता हालत

पर अब मैं वह दावा, वह अभिमान नहीं कर सकता । स्वराज्य के बाद बड़े गुणी, अनुभवी जेल यात्री जेल मंत्री बनाये गये थे। अब तो जिसे कोई विभाग न देना हो, वह जेल

मंत्री बनाया जाता है । वह जमाना चला गया जब वाइसराय-गवर्नर जनरल तक जेल का मुआयना करते थे । मैंने जेलों में जेल के विजिटर बुक में वाइसराय के नोट देखे हैं । अब तो जेल मंत्री भी जेल का मुआयना नहीं करते-विजिटर बुक में तो नोट लिखना उनकी मर्यादा के विरुद्ध है । केंद्रीय शासन में जेल का अलग मुहक्मा भी नहीं है । समाज कल्याण विभाग से जो आशा थी, वह भी नहीं रही । उसके पास बाल सुधार का कार्य है पर दफ़्र की फाइल तक ।

## स्त्री जेलों की दशा

भारत की सीख से अब भी विदेश के जेल शासन वाले लाभ उठाते हैं । वर्षों पहले की बात है, लंदन से चालीस मील दूर एक स्त्री जेल का मुआयना करने का मुझे अवसर मिला था । बहुत साफ-सुथरा जेल था । २०-२२ वर्ष तक की लड़कियां रखी जाती थीं । जिस लड़की के छूटने का समय होता था, उसे स्वीकृति दी जाती थी कि गोदाम से बढ़िया से बढ़िया ऊनी थान लेकर अपने लिये सिलाई घर में जाकर वस्त्र तैयार कर लें ।

मैंने पूछा, "जब वह युवती छूटकर जाती है, उसके पास सिलाई की शिक्षा से प्राप्त कार्य की मजदूरी भी होती है या उसे वैसे ही छोड़ दिया जाता है ?" गवर्नर (जेल सुपरिंटेंडेंट) ने उत्तर दिया,

"हम उसे केवल जिस स्थान से गिरफ़्तार होकर आयी थी, वहां तक का रेल या बस का भाड़ा देते हैं ।"

मैंने कहा, "जरा सोचिए-वस्त्र से सुसज्जित नवाब-जादी लगती युवती फाटक के बाहर निकलती है तो इस ठंडे देश में उसके पास चाय का एक प्याला पीनेभर पैसा भी नहीं है तो क्या वह पुनः अपराध के कुमार्ग पर नहीं जा सकती ? आप लोग अनेक भारतीय जेलों की तरह सिलाई की मजदूरी क्यों नहीं देते । बिचारी युवती को ।"

मेरे साथ स्वेडन, हालैंड जरमनी तथा अमरीका की एक-एक महिला भी जेल देखने
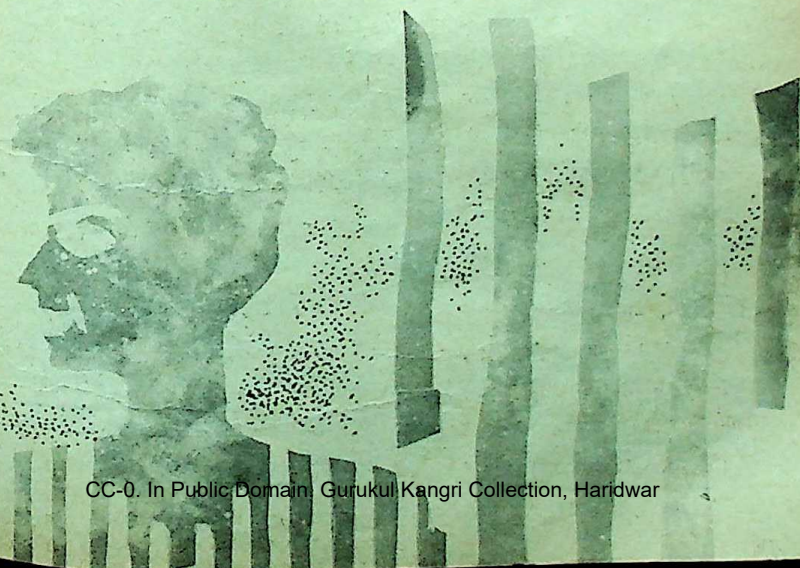
आयी थीं। वे भी मेरे सुझाव पर बहुत प्रसन्न हुईं। गवर्नर को मेरी बात समझ में आयी। हमने विजिटर्स बुक में नोट लिखा। पता चला कि चार महीने में लड़कियों को सिलाई की मजदूरी का आदेश हो गया। भारत ने एक बड़ी लाभदायक तथा सुदूरव्यापी प्रभाववाली प्रथा चालू करा दी।

## खेल परंपरा बनी

जेल के प्रशासन की हर जगह पोल तो होती है, यह मैं संसार के अनेक देशों की जेल देखने के बाद कह सकता हूं। मिश्र की राजधानी काहिरा का रमणीक नीलतट पर आसक्त होनेवाला व्यक्ति वहीं के केंद्रीय जेल की कच्ची धूलभरी सड़कें तथा गंदे बैरिक की कैसे कल्पना कर सकता है। पर्यटकों का स्वर्ग स्विट्जरलैंड का सबसे मशहूर जेल-खुला तथा अधखुला दोनों देखने का मौका मिला। जेल साफ-सुथरा था। हमारे देखने के लिए वहां कैदी हॉकी मैच खेल रहे थे। मैं जानना चाहता था कि यह दिखावा है या स्थायी कार्यक्रम। मैं एक कोने पर खड़ा अंगरेजी में जपता गया-वंडरफुल। सोचा कोई तो अंगरेजी समझने वाला कैदी इधर से निकलेगा। आखिर एक उधर से गेंद ले जाते हुए मेरा मंत्र सुनकर धीरे से कहता गया, "वर्षों में एक बार।" जब मैंने विजिटर बुक में लिख दिया कि दर्शकों को दिखलाने के लिए खेल न किये जाएं तो शासन के ऊपर तहलका मचा और अब नियमित रूप से खेल होता है।

## वह सलाह उपयोगी हुई

यों तो लिखने को बहुत कुछ है—बड़े रोचक प्रसंग हैं जैसे संयुक्त राज्य अमरीका की जेलों में गोरे-काले का भेद भाव इत्यादि। पर नीचे की घटना से भारतीय दृष्टिकोण से विदेश को कितना लाभ पहुंचता है, इसका पता चलेगा।

न्यूयार्क से कुछ दूर लड़कों की एक जेल है। इसमें २० वर्ष की उम्र तक के लड़के रखे जाते हैं। यदि उनमें सुधार नहीं हुआ तो कठोर जेल में भेजे जाते हैं।

जेल के कर्मचारियों की बैठक थी। हर पखवारे यह बैठक होती है जिसमें जेल के प्रशासक, चिकित्सक, मनोवैज्ञानिक तथा शिक्षक बैठकर हर लड़के के चरित्र पर रिपोर्ट पढ़कर विचार करते हैं कि उसे जेल में रखें या बाहर भेजा जाए। उस दिन की बैठक में मैं भी मौजूद था—केवल दर्शक के रूप में। एक ऐसा लड़का पेश हुआ जिसकी शिकायत थी कि वह अपने वार्ड में सह-बंदियों के साथ तो ठीक व्यवहार करता है, पर जहां जेल का कोई भी अधिकारी, चाहे वार्ड का रक्षक ही क्यों न हो, देखते ही भयंकर गाली-गलौज करता है। पिटने पर और गाली देता है। बड़ा उद्दंड है। जब उस लड़के की पेशी हो गयी और चला गया, तब सबने निर्णय किया कि उसे किसी कठोर जेल में भेज दिया जाए।

अब मैंने अपनी जुबान खोली। मैंने कहा, "मैं तो विजिटर हूं। अनधिकार चेष्टा कर रहा हूं। मुझे क्षमा करें। इस लड़के का केवल यही दोष है कि अधिकारियों के प्रति दुर्व्यवहार तथा गाली-गलौज करता है। अन्यथा यह अपने साथियों के साथ प्रेम से रहता है। इसे सभी साथी चाहते हैं। इसके विरुद्ध और कोई अभियोग नहीं है। अतः हमारी भारतीय

चिकित्सा कीजिए कठोर जेल में भेजकर जीवन नष्ट न कीजिए। इसे स्वयं अफसर बना दीजिए। इसको २०-२५ लड़कों पर मानिटर-गार्जियन-सरदार जो कहिए बना दीजिए। बस इसके हाथ पर अधिकार का एक पट्टा पहना दीजिए। फिर देखिए जो दूसरों से अनुशासन तथा आज्ञापालन की आशा करेगा वह स्वयं अपने से बड़े अफसरों के अनुशासन में रहेगा।''

मेरे सुझाव पर जेल प्रशासक तथा मनोवैज्ञानिक, दोनों उठकर खड़े हो गये। उन्होंने कहा, ''हमने इतनी दूर तक नहीं सोचा था। हम भारतीय मित्र की सलाह को बड़ा वैज्ञानिक महत्त्व देते हैं।''

मैंने अपना भारत का पता दे दिया। तीन-चार महीने बाद पत्र आया कि वह लड़का जेल में श्रेष्ठ आचरण, व्यवहार तथा अनुशासन में रहने लगा है।

जेल प्रशासन में भारत विदेशों को बहुत कुछ सिखा सकता है, पर केंद्र तथा प्रदेश सरकारें अब जेलों में रुचि नहीं ले रही हैं। तभी पिछले पचास वर्ष में हमारे जेलों में दुबारा जेल आनेवालों का औसत २ प्रतिशत से बढ़कर समूची जेल आबादी का १५ प्रतिशत हो गया है।

—राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन
हिंदी भवन महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ

चक्रव्यूह भेदने की रणनीति का ज्ञान अभिमन्यु को अपनी मां सुभद्रा के गर्भ में ही हो गया था। इस बात की सत्यता अब अमरीकी वैज्ञानिकों ने अपने अनुसंधानों से प्रमाणित कर दी है। गर्भावस्था में शिशु की श्रवण-क्षमता का पता लगाने के लिए कई प्रकार के प्रयोग किये गये। इन प्रयोगों के बाद जो रिपोर्ट तैयार की गयी है, उसमें स्पष्ट कहा गया है कि मानव-शिशु जन्म लेने से पूर्व ही अपने माता-पिता की आवाज खूब अच्छी तरह पहचानता है। वह मां के गर्भ में रहकर सुन सकता है और समझ भी सकता है।

'साइंस' नामक पत्रिका के अनुसार नार्थ केरोलिना विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान शास्त्र के प्रोफेसर एंथोनी डेकास्पर तथा उनके एक साथी विलियम ने भी एक विशिष्ट पद्धति से अध्ययन किया, जिसके तहत बच्चों को चूसने के लिए निप्पल दी गयी और उस निप्पल को एक विशेष प्रकार के रिकार्डर से जोड़ दिया गया। इसमें विशेषता यह थी कि एक तरीके से निप्पल चूसने पर शिशु अपनी मां की आवाज सुन सकता था और दूसरे तरीके से निप्पल चूसने पर किसी अन्य बाहरी महिला की आवाज सुन सकता था। तब पाया कि बच्चा इस तरीके से निप्पल चूसना चाहता है कि वह केवल अपनी मां की ही आवाज सुने।

उक्त प्रयोग के बाद यह बात सिद्ध हुई है कि बच्चा ३६ घंटे की आयु का हो या ७२ घंटे की आयु से बड़ा, हर बच्चा अपनी मां की आवाज को ही प्राथमिकता देता है।

कहानी

# डिरेवर कहां होता है ?

● शशिप्रभा शास्त्री

"अढ़ाई सौ ?"

"हुं !" नीता की बांह ने उसकी आंखों को ढांप रखा था और वह स्वयं को तंद्रा-जैसी स्थिति में महसूस कर रही थी ।

"अढ़ाई सौ !!" नीता के सिरहाने मोजाइक के चिकने फर्श पर बैठी मिट्ठू ने दुबारा आश्चर्य प्रगट किया ।

"हां, ढाई सौ । बार-बार क्यों पूछ रही है ? इन रुपयों में प्राइवेट वॉर्ड के मरीज का खाना भी शामिल रहता है । जानती है, वहां क्या-क्या खाना मिलता था ?"

और इस बार मिट्ठू के बिना पूछे ही नीता ने उसी स्थिति में लेटे-लेटे गिनाना शुरू कर दिया था, "सबरे छह बजे बैड-टी । आठ यानी दूध, कॉर्नफ्लेक्स या दलिया और— ।" नीता का स्वर धीमा ... था, जैसे वह कहीं दूर डूबनी ... रहा ... अपनी आवाज सहित ।

"दोपहर खाने में दो सब्जियां, एक सब्जी पनीर की, दाल, दही, फल, चार चपातियां और चावल ।"

"बा ऽ ऽ प रे । इत्ता आप खा लेते थे ?"

"कहां, मैं तो सिर्फ एक रोटी ही खाती थी, दूसरी चीजें भी शायद थोड़ी-थोड़ी ही । फिर साढ़े तीन बजे चाय और शाम को सात-आठ बजे के बीच में उसी तरह का उतना ही खाना ।"

"वहां आप कितने दिन रहे ?"

"पंद्रह दिन ।" नीता ने अरबराते हुए कहा था ।

"पंद्रह दिन !!" मिट्ठू की ओर का स्वर अब शांत हो गया था । नीता की बांह उसके माथे पर अब भी पसरी पड़ी थी । नीता अपनी बंद आंखों के बीच देख रही थी, कि मिट्ठू की आंखें ढाई सौ शब्द सुनकर उस समय कितनी चौड़ी हुई होंगी और अब वह एक दिन के ढाई सौ के हिसाब से पंद्रह दिनों की कुल राशि को जोड़ने में कितनी तन्मयता से तल्लीन होगी ।

मिट्ठू की उम्र मुश्किल से ग्यारह बरस की होगी, वह फ्रॉक और कभी-कभी स्कर्ट-ब्लाउज

पहनकर आती थी । अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद नीता उन दिनों दिल्ली में खेलगांव में रह रही थी । उसके मेजबान ने सबेरे उसके घूमने और बीमारी के बाद उसकी दिनभर की परिचर्या के लिए बिहार से आयी इस मिट्ठू नाम की छोटी लड़की को रख दिया था । सबेरे मिट्ठू के साथ वह घूमने जाती तो रास्ते में आजू-बाजू लगे काले और नीले रंग के चमकदार बोर्डों पर सफेद उजले अक्षरों में लिखे ब्लॉकों के नामों को पढ़ती जाती—हवासिंह ब्लॉक,मदनलाल ब्लॉक, मिल्खासिंह ब्लॉक, लेडी पिंटो ब्लॉक, कमलजीत संधू ब्लॉक वगैरा ।

पहले दिन उसने मिट्ठू से पूछा था, "जानती है, कमलजीत संधू कौन हैं ?"

"नहीं ।" उसने कहा था ।

"एक तेज दौड़नेवाली लड़की का नाम है यह । इन्होंने अपने देश का नाम कई जगह ऊंचा किया ।"

मिट्ठू सोचने लगी थी ।

उस दिन चंदगीराम ब्लॉक, छोटासिंह ब्लॉक, के.पी. ठक्कर ब्लॉक दस-बारह ब्लॉकों जैसे के नाम पढ़ने के बाद साथ चलती मिट्ठू की ओर से स्वर उठा था, "आजकल कमलजीत संधू कहां रहते हैं ?"

"हुं ?" फिर जैसे मस्तिष्क पर जोर डालते हुए और फिर हल्की हताशा के स्वर में नीता ने कहा था "पता नहीं ।" फिर खुद ही बुदबुदाया

था, ''पूछूंगी किसी से ।''

मिट्ठू ने कुछ नहीं सुना था, वह धूल में सनी अपनी कमजोर पट्टियां वाली हवाई चप्पलों के आगे के हिस्से की नोक से एक छोटे कंकड़ को उछालकर साथ-साथ ले चलने के प्रयास में रत थी—

खेलगांव की विशाल चौड़ी-स्वच्छ सड़कें, एक ओर घास के हरे-भरे मैदान, उधर की दिशा से ही दूर से सुन पड़ती मोरों की कंकरीली, नुकीली आवाजें, दूसरी ओर ऊंची उठी हुई मंजिली शानदार मकानी इमारतें, उनके सामने खड़ी रंग-बिरंगी कारें खेल गांव के नाम को सार्थक करती हुई पूरे वातावरण को भव्यता का एक अजीबोगरीब जामा पहनाती प्रतीत हो रही थीं ।

जब, देश-देश के खिलाड़ी इन मकानों में आकर रहे होंगे तो उनकी कल्पना में मिट्ठू-जैसी निरीह लड़कियां भूलकर भी नहीं आयी होंगी, उनके सामने तो भारत की लंबी-ऊंची, तेज-तर्रार-मजबूत खिलाड़ी लड़कियां ही रही होंगी । अधपेट खायी, अर्धनिद्रा से उठकर सबेरे नौकरी पर निकल पड़नेवाली अर्ध विकसित लड़कियों के बारे में उनके मन में कभी कोई सोच नहीं उभरा होगा ।

चलते-चलते ही नीता ने एक दूसरा प्रश्न किया था, ''तुम यहां बिहार से कैसे आ गयीं ?''

''मेरी चाची है यहां । जनवरी में जब उसके बच्चा होने को था, तो चाचा मुझे उसकी सेवा के लिए ले आये थे, तब से मैं यही हूं ।''

'और अब उन लोगों ने तुझे कमाई पर भी लगा दिया ।' वह वाक्य न कहकर नीता पूछ रही थी, ''वह बच्चा अब कितना बड़ा है ?''

''हुं, अब छह महीने का हो गया है ।''

''क्या नाम रखा है उसका ?''

''संतोष पांडे । पांडे जानती हैं आप ?''

''हां-हां, क्यों नहीं ।''

मिट्ठू के सिकुड़े-सिमटे चेहरे पर कुछ क्षण के लिये एक बेनामी चमक आकर ठहर गयी थी । कुछ न होते हुए भी ऊंची जात के गुमान के रंग ने उसके चेहरे को ढांप लिया था ।

''बड़ा हरामी है वो ।'' कुछ पल बाद मिट्टू के होंठ फिर खुले थे ।

''कौन ?''

''वो ही, संतोष पांऽ ऽ डे ।'' प्रश्न के उत्तर मिट्ठू ने कुछ खींचकर कहा था ।

''क्यों ?''

''कल उसने हरा मिर्च खा लिया और घंटा एक तक रोता रहा । मिर्चा लग गयी, तो फिर उसे चीनी खिलायी, तब कहीं जाकर वह शांत हुआ ।''

''हुं ।''

आज इस समय भी घूमकर लौटकर आने के बाद नीता रोज की तरह पलंग पर लेट गयी थी और रोज क़ी तरह ही मिट्ठू सिरहाने बैठकर बतियाने लगी थी ।

''चाय लाएं ?'' कुछ देर बाद अपने चिंतन से उबरकर मिट्ठू ने पूछा हर दिन ढाई सौ के हिसाब से पंद्रह दिन की कुल राशि वह नहीं हैं जोड़ सकी थी ।

नीता कहीं दू ऽ र खो गयी थी— ''हवाई जहाज के किराये के साथ भी खाने का पैसा जुड़ा रहता है ।'' वह यों ही बुदबुदाने लगी थी ।

"वहां क्या-क्या मिलता है ?"

"वहां ? वहां तो इतनी तरह की चीजें होती हैं, चाय, दूध, कॉफी, जूस तो वहां पूरे रास्ते ही चलता रहता है, खाना-नाश्ता टाइम-टाइम पर मिलता है ।"

"खाना-नाश्ता हवाई जहाज में ही बनता है ?"

"नहीं, जिस देश में जहाज ठहरता है और जहां से चलता है, खाना तो वहीं से लदता है । हां चाय, कॉफी वगैरा वहीं जहाज में ही तैयार होती है ।"

"वहां के पसिंजर बाथरूम कहां जाते हैं ? उधर पिसाब घर होता है ?"

"क्यों नहीं होता, वहां तो एक थोड़ी दो-चार होते हैं, वहां साबुन, तौलिया और दूसरी जरूरत की सभी चीजें होती हैं ।"

मिट्ठू पूछती जा रही थी [illegible] बतलाती चल रही थी, जैसे अचेतनावस्था में [illegible] रही हो ।

"जहाज इतने सारे यात्रियों और उनके सामान को लेकर इतने ऊपर उड़ जाता है कि— ।" लग रहा था, नीता के सोच में कुछ पुराना बीता हुआ सरक रहा हो और चादर में लिपटे पड़े धरती पर लेटे जमूरे की तरह प्रश्नकर्त्री मिट्ठू को जवाब भी देती जा रही हो । मिट्ठू ने पूछा था, जहाज से नीचे का सब-कुछ दिखता है, पेड़, मैदान, घर, सड़क— ?"

"जब हवाई जहाज नीचे होता है तब सब कुछ दिखता है, पर जब जहाज ऊपर पहुंच जाता है, उस समय कुछ नजर नहीं आता, सब कुछ बादलों में गुम हो जाता है ।"

"कुछ नहीं दिखता ?"

"कुछ भी नहीं ।"

"खिड़की खोल के भी नहीं ?"

"जहाज की सब खिड़कियां बंद रखी जाती हैं, कोई खिड़की भूलकर भी नहीं खोली जाती ।"

"क्यों ऽऽ ?"

"क्यों ? भीतर तो यह भी नहीं मालूम होता, कि जहाज उड़ रहा है, ऊंची हील के सैंडिल पहने सुंदर-सुंदर ऊंची कद-काठी की लड़कियां चाय-जूस कॉफी सर्व करती हुई इधर-उधर मजे से घूमती रहती हैं और, और जहाज आठ सौ मील प्रति घंटे की रफ़्तार से— ।"

"पर खिड़कियां क्यों बंद रहती हैं ?" जहाज की गति से मिट्ठू को जैसे कुछ लेना-देना न हो ।

"हवाई जहाज का तापमान सही रखने के लिए । तापमान जानती है, तू ?" नीता ने उसे समझाना चाहा था ।

"नहीं ।" मिट्टू के स्वर की रगड़ से लग रहा था, जैसे वह जानना ही न चाहती हो, वह एक दूसरी बात पूछने लगी थी, "हवाई जहाज गिर भी जाते हैं ?"

"गिर भी जाते हैं, इस तरह की खबरें अक्सर आती हैं ।"

"हां, उधर फिल्म भी चलती है ।" आंखें मूंदे लेटी नीता को जैसे एक नयी तसवीर दिखी हो ।

"इतने ऊंचे उड़ते हुए हवाई जहाज में फिल्म भी... ?" मिट्टू के स्वर में आश्चर्य भर उभरा था ।

"और क्या ।"

मिट्टू की ओर से कुछ देर कोई आवाज नहीं सुन पड़ी थी । दूसरा प्रश्न उसने ठहरकर किया था, "और डिरेवर ? वहां डिरेवर कहां होता है, जो इत्ता बड़ा जहाज चलाता है, डिरेवर दिखता है ?"

'ड्राइवर कहां होता है ? दिखता तो नहीं । नीता मानो खुद ही मंथन करने लगी हो । कहां होता है ड्राइवर ? स्वयं यात्रा करते हुए उसने तो ड्राइवर के सिर्फ नाम की ही घोषणा सुनी थी ।

बचपन में उसने मां को नहीं देखा था, मां न जाने कब उससे विलग हो गयी । छोटी उम्र में ही शादी हो गयी थी, बच्चे भी हुए थे, फिर सब दूर चले गये । दुःख-सुख झेलती, प्रेम-घृणा, क्रोध-ईर्ष्या-द्वेष-अवसाद में तिरती हुई अपने आसपास के लोगों से कभी दूर छिटकी, कभी उनसे जुड़ी वह अब भी जीवन यात्रा पर है ।

कब सोचा था उसने, कि अपने घर से इतनी दूर एक अनजाने परिवार में वह इतना घुलमिल जाएगी, वे लोग उसे इतना मानने लगेंगे, वह खुद उनके लिए इतना सोचेगी— । प्रेम भी करेगी और तब उसे प्रेम के सब तूफानों को भी झेलना होगा और वह झेलेगी— । उसकी जिंदगी के जहाज को इतनी दूर चलाकर कौन ले आया है ? कौन ले जा रहा है इस जहाज को, आगे और आगे ? खुद तो वह कुछ भी नहीं कर रही है, कौन करवा रहा है उससे इतना कुछ ? कहां है वह ड्राइवर ?

"मिट्टू ड्राइवर को तो— ।"

"चाह ! चाह लीजिए आप, हम चाय ले आये हैं, आप सो गये क्या ?" यह मिट्टू का स्वर था ।

मिट्टू उसके पास से उठकर कब चली गयी थी, उसके लिए चाय लेकर वह उसके पलंग के पास कब से खड़ी है— । नीता को पता ही नहीं चला था, मिट्टू की आवाज सुनकर वह उठकर बैठ गयी, उसकी आंखें देख रही थीं, मिट्टू के चेहरे पर से सब प्रश्न मिट चुके थे, पर नीता का मन तो मिट्टू के प्रश्न को, एक बड़े जलजले को अपने में समेटे अब भी बेकल था ।

डिरेवर कहां होता है ? उसकी या किसी की जिंदगी का भी ? आज तक जान/देख पाया है, क्या कभी कोई ? नीता का मन चकर घिन्नी बना हुआ था ।

— ३/६ भगवान नगर देहरादून

**यदि अन्याय न रहे, तो बहादुरी का गुण समाप्त हो जाय ।**
—एजिसलस

**विवेक बहादुरी का उत्तम भाग है ।**
—शैक्सपियर

# आस्था के आयाम

## हिम्मत से क्या कुछ नहीं हो सकता

कुदरत की छोटी-सी भूल आदमी को इस दुनिया में अजूबा बना देती है । पश्चिमी पाकिस्तान के जिला सरगोधा में जन्मे आनंद कुमार सेठ इसका जीता-जागता उदाहरण हैं ।

जन्म से ही उनके बायें घुटने में कैप नहीं थी और दायां कूल्हा बेकार था । हड्डियों के जोड़ के पास घुटना टेढ़ा था तथा बायें पैर का पंजा भी बीच से दोषयुक्त था इतने सारे शारीरिक दोषों के कारण उनका सही विकास नहीं हुआ । अतः कद मात्र साढ़े तीन फुट ही रह गया । अतः आनंद ने समझ लिया कि उनका शरीर तो ठीक नहीं हो सकता मगर सही-सलामत दिमाग के जरिये वह प्रकृति से दो-दो हाथ कर सकते हैं ।

आनंद कुमार के पिता बंटवारे के बाद कासगंज जिला (एटा) में आकर बस गये थे । इसलिए कासगंज में ही उन्होंने बी.ए. तक की पढ़ाई पास की । दो पहियों की साइकिल चलाना सीखा और फिर स्कूटर चलाना भी सीखा । उनके मन में और अधिक सीखने की अदम्य इच्छा थी । आनंद सेठ ने मन ही मन ठाना कि वे रेडियो का काम सीखेंगे भी और कामयाब भी होंगे । अपना घायल मन लेकर वह लखनऊ गये और वहां उन्होंने पूरी लगन के साथ रेडियो का काम सीखा और फिर कासगंज में ही मरफी रेडियो की एजेंसी ली । देखते ही देखते वह सिद्धहस्त हो गये ।

जिला स्तर पर अपनी लगन से टेबिल टेनिस में प्रथम स्थान बनाया । यह पूछने पर कि जीवन में सबसे बड़ा धक्का कब लगा ?

उन्होंने बताया कि— "लखनऊ में जब वह रेडियो मैकेनिक का काम सीखने के इरादे से पोलीटेक्नीक के प्रिंसीपल के पास गये तब बजाय उनका उत्साह बढ़ाने के प्रिंसीपल ने कहा कि तुम हैमर नहीं चला सकते, क्योंकि तुम्हारी हाईट कम है ।"— सुनकर उन्हें बहुत चोट पहुंची ।

दूसरा धक्का तब लगा जब कासगंज के रेलवे इंस्टीट्यूट में टेबिल टेनिस खेल रहे लड़कों से उन्होंने कहा कि वे उन्हें भी टेबिल टेनिस खेलना सिखायें तो उन्होंने उसका मजाक उड़ाया— लेकिन जीवन की हर घटना ने मुझे आगे बढ़ाया है । मैंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा ।

उनका विवाह एक बहुत गरीब घर की सामान्य लड़की के साथ हुआ । बच्चे भी हैं । आनंद ने बताया कि वे भरपूर जिंदगी जी रहे हैं ।

आनंद अपने जीवन में कुछ न कुछ करते रहने में विश्वास रखते हैं । ताकि आम आदमी उनके जीवन से प्रेरणा ले सकें ।

**— प्रस्तुति : प्रमिला ओबेराय**

# आत्महत्या करने वाले की

हम में से प्रत्येक के मुंह से किसी-न-किसी समय ये शब्द निकले हैं । 'हे भगवान । मैं चाहता हूं कि मौत मुझे सभी कष्टों से मुक्ति दिला दे ।' लेकिन फिर हममें से कितनों ने इस धमकी को पूरा करने का प्रयत्न किया है ? हम में से अधिकांश के लिए निराशा की यह भावना अस्थायी होती है । संभवतः इसीलिए जब ह[म] किसी ऐसे व्यक्ति के सामने पड़ते हैं, जिसने अपने जीवन का अंत करने का प्रयत्न किया, हमारी समझ में नहीं आता कि हम क्या करें ।

### सहायता के समय ये बातें

ऐसे व्यक्ति की सहायता करते समय ती[न] बातों का ध्यान रखना चाहिए : संबंधित व्य[क्ति] की शारीरिक और मनोवैज्ञानिक अवस्था औ[र] कानूनी पहलू ।

आत्महत्या करने के कई तरीके हैं । भारत [में] आमतौर पर जल कर, जहर खाकर, गले में फांसी लगाकर और रक्त स्राव से कलाई की नसें काट कर, छुरा मारकर आत्महत्या की जा[ती] है । आत्महत्या का कोई भी तरीका हो, जब कभी आप किसी आत्महत्या का प्रयत्न करने वाले व्यक्ति के संपर्क में आएं, आपको तत्का[ल] पुलिस और एंबुलेंस बुलानी चाहिए । फिर ज[ब] तक सहायता न आ जाए, आप आत्महत्या का प्रयत्न करनेवाले व्यक्ति के कष्ट कम करने के [लिए] प्रयत्न कर सकते हैं । पुलिस की प्रतीक्षा करने का अर्थ यह नहीं है कि अगर कोई जल रहा है तो आप उसे जलने दें और पुलिस के पास दौड़ें । आप परिस्थिति के अनुसार मौत को रोकने के सभी आवश्यक उपाय कर सकते हैं लेकिन आपको पुलिस और डॉक्टर बुलाने के काम को प्राथमिकता देनी चाहिए ।

यह सब करने के बाद आपको संबंधित

*आत्महत्या का प्रयास संकट में फंसे व्यक्ति की सहायता की अपील है । दुर्भाग्यवश हम में से अधिकांश यह नहीं जानते कि ऐसी स्थिति में क्या किया जाए । मनश्चिकित्सक एस.जी. दस्तूर बताते हैं कि ऐसी स्थिति में सहायता के लिए आप क्या कर सकते हैं ।*

व्यक्ति की शारीरिक दशा की ओर ध्यान देना चाहिए । अगर वह व्यक्ति मर गया है तो अधिकारियों के पहुंचने का इंतजार करें । अगर मरा नहीं है तो देखें कि वह चेत है या वह अचेत है ।

अगर वह अचेत है और उससे रक्त स्राव हो रहा है या वह जल गया है, तो उसे आवश्यक प्राथमिक चिकित्सा प्रदान करें । अगर उसे सांस लेने में तकलीफ हो रही है तो उसके मुंह से अपना मुंह मिलाकर उसकी सांस फिर से चालू करें । अगर उसका दम घुट रहा है उसके गले में भीतर तक अंगुली डालकर घुमा दें और अगर वहां कोई वस्तु फंस गयी है तो उसे निकाल दें । फिर उसके तंग कपड़ों को ढीला उसकी श्वास नली में फंस सकता है और उसकी श्वास को रोक सकता है । इस तरह आप उसकी जान बचाने के स्थान पर उसकी मौत का कारण बन सकते हैं ।

जलने के मामलों में लपटों को बुझाने के लिए पानी का इस्तेमाल करें । इसके बाद शरीर के जले हिस्सों को शीतलता प्रदान करने और ऊतकों की हानि रोकने के लिए उन पर पानी डालते रहें । रोगी के कपड़े उतारने का प्रयत्न न करें । उसे केवल एक हल्की सूखी चादर से लपेट दें और उसे फौरन ऐसे अस्पताल में पहुंचाएं जहां 'बर्न्स यूनिट' हो ।

अगर रोगी होश-हवाश में है, आपका काम कुछ कठिन हो जाएगा । संभव है कि वह डरा

# मानसिकता क्या होती है?

कर उसे आराम करने के लिए एक पलंग पर लिटा दें । उसे अस्पताल ले जाने तक हल्के कपड़े से उढ़ाकर गरम रखें । अचेत व्यक्ति को मुंह से खाने या पीने के लिए कुछ न दें । यह

● एस. जी. दस्तूर

हुआ हो, वह आक्रामक मुद्रा में हो सकता है । उसके शरीर पर चोट हो सकती हो, वह सदमे में हो सकता है । उसके साथ बात करें, उसे भरोसा दिलाएं कि आप उसकी सहायता करने के लिए आये हैं । उसे चोट, बेचैनी के लिए प्राथमिक चिकित्सा प्रदान करें ।

अगर रोगी ने जहर या मात्रा से अधिक नींद की गोलियां खा ली हों तो आप तत्काल उसे गरम नमकीन पानी पिलाकर उल्टी कराने का प्रयत्न करें। पानी से शरीर में पहुंचे विष का असर कम करने में भी सहायता मिलती है। इसलिए उसे बीच-बीच में पानी देते रहें।

अगर रक्तस्राव हो रहा है तो फौरन उसे रोकने के उपाय करें। रक्त स्राव की जगह को अंगुली से दबाएं या घाव के दोनों हिस्सों को तब तक मिलाकर रखें जब तक रक्त स्राव बंद न हो जाए। फिर घाव के ऊपर हल्की पट्टी बांध दें। घाव पर रुई का फ़ाया न लगाएं क्योंकि रुई के रेशे घाव में चिपक जाते हैं। अगर उन्हें ठीक से साफ न किया गया तो उससे रोग संचार हो सकता है। घाव पर गाज (जाली वाला कपड़ा) रखना सबसे अच्छा होता है।

**सदमे की स्थिति में**

आत्महत्या का प्रयत्न करने का जो भी तरीका रहा हो, संबंधित व्यक्ति शोक या 'सदमे' की स्थिति में होगा। चिकित्सा के अर्थ में शॉक अथवा सदमा न केवल भीतरी अथवा बाहरी की जा सकती है। शॉक से पीड़ित व्यक्ति [illegible] और पीला पड़ जाएगा, उसकी सांस तेज [illegible] लगेगी और उसकी नब्ज कमजोर पड़ जा[illegible] उसका जी मिचलाएगा, उसे मूर्च्छा का अ[illegible] होगा और प्यास लगेगी। उसके कपड़े ढी[illegible] कर दीजिए, उसे स्वास्थ्य लाभ की स्थिति में रखिए उसका शरीर गरम रखिए।

आत्महत्या का प्रयत्न करनेवाले व्यक्ति [illegible] केवल शारीरिक सदमा नहीं होता उसे भावनात्मक आघात भी होता है। ऐसी स्थि[illegible] बहुत सावधानी बरतने की जरूरत है। उस व्यक्ति के बगल में बैठिए, उसके सिर और [illegible] को सहलाइए, उसका भय दूर कीजिए और उसमें आशा जगाइए।

आपको अत्यधिक धैर्य और सहानुभूति [illegible] काम लेना चाहिए। उससे कहना चाहिए कि आप उसके दर्द, उसकी परेशानियों को समझ[illegible] हैं। आप उसके साथ हैं, उसकी सहायता [illegible] चाहते हैं। कभी-कभी केवल इस बात से [illegible] भरोसा और विश्वास मिलता है कि कोई व्यक्ति उनके साथ है, उनकी चिंता करता है।

***वास्तव में आत्महत्या का प्रयत्न सहायता की अपील है। यह एक दुःखी व्यक्ति का समाज से यह कहने का तरीका है कि वह उसे वर्तमान कष्ट से निकाले।***

रक्त स्राव के, बल्कि जलने और हड्डी टूटने के कारण ब्लड लिक्विड (रक्त तरल) के अभाव में होता है। यद्यपि भयंकर सदमे का सर्वोत्तम इलाज अस्पताल में ही होता है, मौत को रोकने के लिए बुनियादी प्राथमिक चिकित्सा तत्काल

अकसर लोग आत्महत्या का प्रयास इसलि[illegible] करते हैं कि वह अपने को निस्सहाय, अनचा[illegible] अनुभव करते हैं अथवा उन्हें अपनी वर्तमान परिस्थितियों से शरम आती है। आत्महत्या करने का जो भी कारण रहा है उस समय उस[illegible]

छान-बीन मत कीजिए । इस बारे में बाद में पूछताछ की जा सकती है ।

### आलोचनात्मक रवैया नहीं

आत्महत्या का प्रयास करनेवाले व्यक्ति के प्रति कभी आलोचनात्मक रवैया मत अपनाइए । ये दुःखी लोग अपनी निंदा किये जाने अथवा सजा दिये जाने से डरते हैं । उन्हें इस बात की आशंका रहती है कि उन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया जाएगा । उनकी आलोचना करके उनकी परेशानी मत बढ़ाइए । आमतौर पर आत्महत्या का प्रयास परिवार व कुल के नाम पर बट्टा समझा जाता है और परिवार के लोग इस प्रकार बदनामी करानेवाले व्यक्ति की निंदा करते हैं । आपको चाहिए कि परिवार को उसकी असहाय स्थिति के बारे में बताएं । उनसे कहिए उसकी निंदा करने और उन्हें उसे नाराज करने के स्थान पर उनकी तकलीफ को समझना चाहिए, उसे दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए ।

ऐसा करते समय धर्म और नैतिकता का सहारा मत लीजिए । हमारे देश में हर काम में ईश्वर और नर्क को घसीटने का रिवाज है । लोग इस बात को नहीं समझते हैं, किसी निराश व्यक्ति से ऐसी बातें करके वह उसके घावों पर नमक छिड़कते हैं ।

वास्तव में आत्महत्या का प्रयत्न सहायता की अपील है । यह एक दुःखी व्यक्ति का समाज से यह कहने का तरीका है कि वह उसे वर्तमान कष्ट से निकाले । एक व्यक्ति जो अपना जीवन समाप्त करने का प्रयत्न करता है, वास्तव में ऐसा नहीं चाहता । सभी जीवों में जीवन रक्षा की प्रवृत्ति इतनी मजबूत होती है कि वे लोग मरना नहीं चाहते । अवचेतन में वह आशा करते हैं कि उन्हें समय पर बचा लिया जाए ।

लेकिन अगर सहायता की पुकार का कोई उत्तर नहीं दिया गया, अगर दुखद स्थिति का समाधान नहीं किया गया, तो इस बात की संभावना है कि संबंधित व्यक्ति आत्महत्या का पुनः प्रयत्न कर सकता है । एक महिला ने अंततः अपनी जान लेने से पहले ११ बार आत्महत्या का प्रयास किया था । अतः यह जरूरी है कि आप दया और सहानुभूति के साथ व्यवहार करें ।

### बहस मत कीजिए

कभी-कभी ऐसे लोग अपनी बात कहकर अपना दुःख हल्का करना चाहते हैं । उन्हें बात करने दीजिए । उनके साथ बहस मत कीजिए । अगर उनकी बातें सिर पैर की हैं, उनकी निंदा मत कीजिए । अगर उनकी बात परस्पर विरोधी हैं तो इस बात की चर्चा मत कीजिए । बहुत शांत रहिए । उनकी स्थिति के बारे में मजाक मत कीजिए । केवल उनकी बात सुनिए, उन्हें

**आत्महत्या करने वाले व्यक्ति को कभी-कभी केवल इस बात से बड़ा भरोसा और विश्वास मिलता है कि कोई व्यक्ति उसके साथ है, और उसकी सहायता करना चाहता है ।**

बढ़ावा और सांत्वना दीजिए।

यह भी संभव है कि रोगी चिकित्सा सहायता लेने से इनकार कर दे, विशेष रूप से वह अस्पताल जाने से इनकार कर सकता है। अगर ऐसा हो तो आपको बहुत धैर्य और शांति से उसे समझाना चाहिए कि अस्पताल जाना क्यों जरूरी है। उसका डर दूर कीजिए। उसे बताइए कि डॉक्टर उसकी मदद करने के लिए है। अगर जरूरत पड़े तो आप कुछ समय तक एंबुलेंस को रोक सकते हैं। नम्र और दृढ़ रहिए।

### अकेला न छोड़ें

आप कुछ भी करें आत्महत्या का प्रयत्न करनेवाले रोगी को अकेला न छोड़ें। किसी की उपस्थिति से उसका हौसला बढ़ने में बहुत सहायता मिलती है। अगर आपको कुछ देर के लिए उसे छोड़कर कहीं जाना हो तो अपनी जगह वहां किसी और को बिठा दीजिए।

आपको रोगी को यह बताकर जाना चाहिए कि आप क्यों जा रहे हैं। आखिर में कानून का सवाल है। आत्महत्या का प्रयास पुलिस के हस्तक्षेप योग्य अपराध है। रोगी की मदद करने वाले हर व्यक्ति को गवाही देनी पड़ सकती है। इसलिए जब कभी आत्महत्या के प्रयास का कोई मामला सामने आए, पुलिस को बुला भेजिए। पुलिस का इंतजार और रोगी की सहायता करते समय अपनी गतिविधि पर ध्यान रखिए। आपको अदालत में उसका ब्यौरा देना होगा। आपको यह बताना होगा कि आप वहां कैसे पहुंचे, आपको किसने बुलाया, क्या रोगी के साथ आपका रिश्ता है, जब आप पहुंचे तो रोगी की दशा कैसी थी? आपने उसे देखकर क्या किया आदि? इसलिए आपके अपने हित में यह जरूरी है कि आप जो कुछ करें सोच-समझ कर करें।

प्रस्तुति न...

## लंदन की जेल में गीता पाठ

१ जुलाई १९०९ को भारतीय क्रांतिकारी मदनलाल ढींगरा ने लंदन के इम्पीरियल इंस्टीट्यूट के जहांगीर हाल में भारत में रहकर अत्याचार करनेवाले करजन वाइली को गोलियों से भूनकर प्रतिशोध लिया था। युवक ढींगरा विनायक दामोदर सावरकरजी का शिष्य था। ब्रिटेन की ब्रिक्सटन जेल में ढींगरा ने ४७ दिन व्यतीत किये थे। उसने लंदन के 'इंडिया हाउस' में रहनेवाले हिंदुस्तानी क्रांतिकारियों को संदेश भिजवाकर गीता की प्रति तथा श्रीराम और श्रीकृष्ण के चित्र मंगवाये थे जिससे वह फांसी पर चढ़ने तक अपने अवतारों की पूजा तथा गीता का अमृत छक सके।

## शुभ हो सावन मास

सावन लौटा और घन लौटे भर-भर नीर
कंत न लौटे कामिनी चिंतित, व्यथित, अधीर

सावन का शुभ-आगमन, डूबा मोद बबूल
सादर स्वागत कर रहा बरसा नूतन-फूल

छप्पर की आंखें बचा सावनयाती-सेंध
पहुंच कंगूरों तक गयी मानो करने प्रेम

पत्र झील का ले नदी पहुंची नद के पास
भेजा हो संदेश लिख 'शुभ हो सावन मास'

मौसम-नृप की साख पर सावन-साहूकार
बांट रहा निश्चिंत-मन पानी-द्रव्य उधार

झूल रही झूला हुमक सुघड़, सयानी नंद
धावज चुन-चुन गा रही सरस सावनी-छंद

सैनिक सावन-सुभट के मेघ न मानें हार
बूंद-बाण, दामिनी-खड़ग गर्जे, करें प्रहार

खेतों में लहला उठे ज्वार, बाजरा, धान
देख हुलस हिय, गा रहा सावन-गीत किसान

घन-गर्जन चपला-चमक, प्रबल-पवन, अंधियार
कसक विरहिणी को रहे सावन के उपहार

धरा-थाल में नीर भर, पर्वत-पाट बिठार
सावन-पाहुन के चरण मौसम रहा पखार

—मनोज तोमर
घासीराम की चाल,
जसवाड़ी रोड, खंडवा (म.प्र.)

## वर्षा रोयी थी

मैंने वर्षा की आंखों में झांका
न जाने
किन ताल-तलैया का दर्द लिये
पिछले पावस की मधु याद संजोये
धूमिल होती दीठ लिये
धुंधुवाती सौगात लिये
नीले-नीले पलक छोड़
क्यों धरती मैया के
आंचल में छिपने
यूं दौड़ी-भागी चली आयी
मां की रूखी काया का मोह
इतना कि
त्यागी आसमानी व्यामोह
और फिर मैंने देखा
वर्षा की नन्हीं-नन्हीं बूंदें
केले के पत्तों से सरकतीं
इमली के पत्तों से झरतीं
पीपल के पत्तों से टपकती
कमल और पुरइन पर ठहरतीं
मेंहदी के झाड़ों में रिसतीं
गुलाब और जूही में सरसतीं
मैंने देखा
सबकी छत पर वर्षा रोयी थी
जिसकी छत टपकी
उसने समझा— वर्षा आयी है
भीगे आंगन, भीगी गलियां
न भींगे जो वह क्या जाने
वर्षा-पीर, वर्षा पीर
झर-झर रोयी, भर-भर रोयी
मान भरकर मचल मचल कर
देखो धार-धार वह रोयी
नद-नदिया में उमड़-उमड़कर
दिवा-रात्रि बरस-बरसकर
आंसू से पत्थर पिघला है
धरती हरी बनी सुखदा है

—डॉ. मंजु ज्योत्स्ना
२११ मयूर विहार नयी दिल्ली-९२
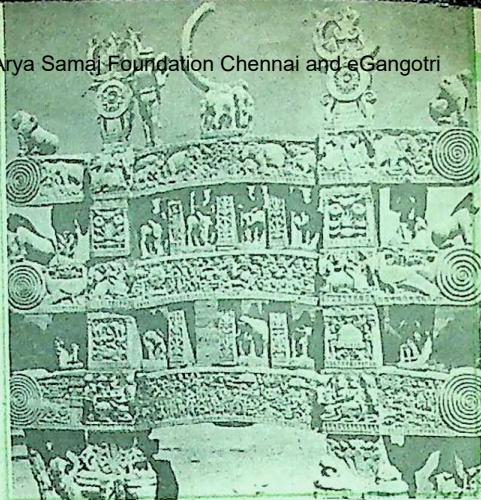
# मध्य प्रदेश : भारत का अमरीका

● एस. पाठक

अमरीका में वहां के मूल निवासी यानी रेड इंडियन न जाने कब से रहते आये हैं पर अमरीका में प्रगति का दौर यूरोप के लोगों के वहां पहुंचने पर ही शुरू हुआ । स्पेन, नीदरलैंड और इंगलैंड के लोगों ने अमरीका में बसकर उसे बनाया-संवारा और आज की हालत तक पहुंचाया । भारत में ऐसी ही स्थिति मध्यप्रदेश की है । एक समय इस राज्य में ज्यादातर आदिवासी ही रहते थे । फिर धीरे-धीरे दूसरे राज्यों या क्षेत्रों के लोग वहां पहुंचे । बाहर से आये इन लोगों ने ही मध्यप्रदेश को प्रगति की राह पर अग्रसर किया । इसीलिए मध्यप्रदेश को भारत का अमरीका कहा जा सकता है ।

अन्य क्षेत्रों से आकर बसनेवालों की तादाद मध्य प्रदेश में इतनी बढ़ी कि वहां के मूल निवासी या आदिवासी अब राज्य की जनसंख्या के एक-तिहाई रह गये हैं । राज्य के पिछले सौ साल के इतिहास में जो नाम प्रमुखता से उभरे हैं, उनमें अधिकतर दूसरे राज्यों से आकर मध्यप्रदेश में बसे लोगों के हैं ।

## हर दिशा के लोग

मध्यप्रदेश में भारत की हर दिशा के लोग पहुंचे हैं । उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, दक्षिण के राज्यों, बंगाल, बिहार के लोग पहले से ही काफी थे, आजादी के समय पंजाब और सिंध से आये विस्थापित भी बड़ी तादाद में आकर यहां बसे । इन सबके परस्पर संपर्क से मध्यप्रदेश संस्कृति का बहुरंगा गुलदस्ता बन गया । समूचे देश की संस्कृतियों का संगम । इस संस्कृति-संगम का प्रदेश की जीवन-शैली से लेकर कला-कौशल तक हर क्षेत्र में प्रभाव पड़ा है । पर वह सर्वाधिक स्पष्ट रूप से
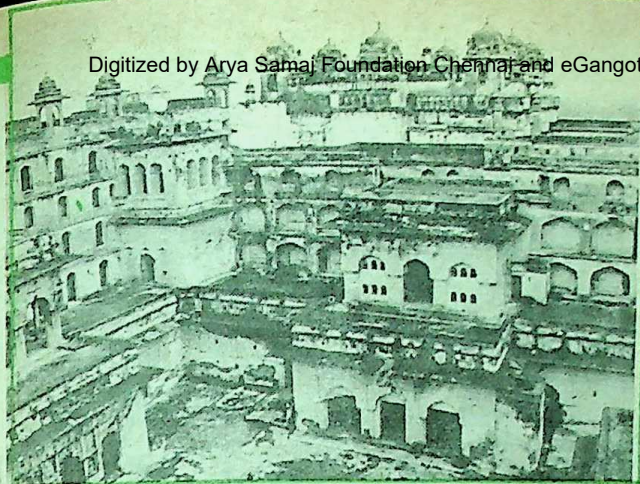
सामने आता है भाषा के मामले में । मध्यप्रदेश की भाषा हिंदी है और मालवी, निमाड़ी, बुंदेली, बघेली, छत्तीसगढ़ी-जैसी अनेक बोलियां वहां चलती हैं, पर वहां की हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता है खड़ी बोली का वहां प्रचलित स्वरूप । खड़ी बोली के उद्‌भव का इलाका यद्यपि पश्चिमी उत्तरप्रदेश और दिल्ली के आसपास का क्षेत्र माना जाता है, पर खड़ी बोली का सर्वश्रेष्ठ रूप मध्य प्रदेश में ही मिलता है।

### मध्यप्रदेश का तीसरा रूप

मध्यप्रदेश का जो रूप आज हमारे सामने है, वह उसका तीसरा रूप है । अंगरेजों के अधिकार के उपरांत इसका प्रथम रूप चीफ कमिश्नरी का था, दूसरे रूप में इसके साथ शासन की सुविधा की दृष्टि से विदर्भ भी सम्मिलित किया गया और तीसरा रूप आज का है । सन १९५६ में राज्य पुनर्गठन अधिनियम के अंतर्गत इस नये प्रदेश की रचना हुई ।

अपने आधुनिक रूप में यह अपने प्रथम रूप की अपेक्षा अत्यधिक विस्तृत है । इतना विस्तृत है कि इसका क्षेत्रफल इंगलैंड, जरमनी अथवा जापान से अधिक है । जनसंख्या के आधार पर भारत में इसका स्थान छठवां है ।

इसकी उत्तरी सीमा चंबल और दक्षिणी सीमा गोदावरी नदियों द्वारा निर्धारित होती है । इन दोनों नदियों के बीच ४,४३,४५९ वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाला यह भारत का विशालतम राज्य है ।

उत्तरप्रदेश, बिहार, उड़ीसा, महाराष्ट्र, आंध्र, गुजरात और राजस्थान इन सात राज्यों से घिर कर यह भारत के मध्य में अपनी स्थिति रखता है । इसलिए इसका नाम मध्यप्रदेश अत्यंत उचित प्रतीत होता है, और यह भारत की हृदयस्थली कहलाने का सच्चा अधिकारी है ।

आधुनिक मध्यप्रदेश की संरचना पुराने मध्यप्रदेश के १७ हिंदी भाषी जिले एवं मध्य भारत, भोपाल और विंध्यप्रदेश राज्यों को मिलाकर की गयी है । इसके अतिरिक्त राजस्थान के कोटा जिले का सिरोंज तालुका तथा पूर्व मध्यभारत के मंदसौर जिले का सुनेल परिवृत्त भी इसमें शामिल है ।

मध्यप्रदेश पाषाण युग और उसके भी पहले अपना विशेष महत्त्व रखता था; फिर भी पुराना
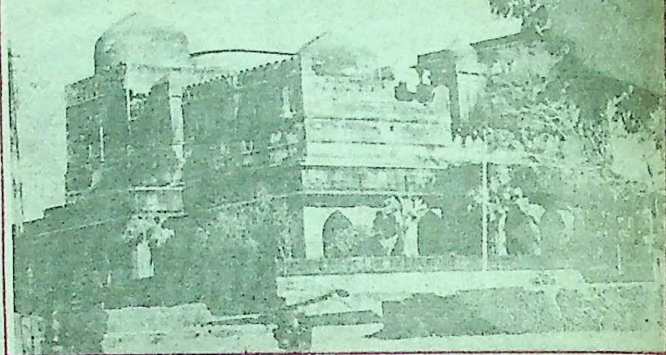
इतिहास क्रमबद्ध नहीं मिलता । मौर्यों के शासनकाल से, विशेष रूप से चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा ही मध्यप्रदेश राज्य को साम्राज्य में सम्मिलित करने का उल्लेख मिलता है । सम्राट अशोक ने इस प्रदेश पर अपना शासन व प्रभाव दोनों कायम रखा था । सांची का बौद्ध विहार अशोक द्वारा निर्मित है । चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने उज्जयनी में कला और संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र स्थापित किया था ।

### प्राकृतिक वैभव

राज्य को प्रकृति का वैभव प्राप्त है । यहां की वनस्थलियों में ऋषियों और मुनियों ने तपस्या व साधना की । कालिदास, भवभूति, वराह मिहिर, मंडन मिश्र और गंगाधर— जैसे संस्कृत के प्रकांड विद्वान इस प्रदेश की देन हैं । केशव, कुंभनदास, पद्माकर आदि वाणी के अमरपुत्र इस प्रदेश की ही देन हैं । संगीत के क्षेत्र में तानसेन, बैजू बावरा और नायक भिक्षु इस भूमि में ही उत्पन्न हुए थे । इस प्रदेश के विभिन्न स्थानों में स्थित मंदिरों में जो मूर्तियां मिली हैं, वे उच्च कोटि की कला को प्रस्तुत करने की दृष्टि से आज भी महत्त्व रखती हैं । उज्जैन, खजुराहो, विदिशा, धार, अमरकं[टक], जबलपुर, महेश्वर, पंचमढ़ी और सांची आ[दि] प्राचीन भवनों और मंदिरों में मध्यप्रदेश के प्राचीन कलात्मक वैभव के दर्शन होते हैं ।

### आर्यों, द्रविड़ों और वनवासियों की सं[गम]स्थली

मध्यप्रदेश के निवासी मुख्यतः दो प्रजाति[यों के] हैं— उत्तरी क्षेत्रों के तथा नर्मदा घाटी के [निवासी] प्रधानतः आर्य जाति के हैं और दक्षिणी त[था] पूर्वी क्षेत्रों (भूतपूर्व गोंडवाना) में आदि[वासी] जन जातियों के बहुत से लोग गोंड और भारतीय द्रविड़ प्रजाति के हैं । इतिहास [बताता] है कि आर्यों ने जब विंध्याचल पार किया [तो] उनके दबाव के कारण आदिवासियों ने ज[ंगलों] में शरण ली । नवीन मध्यप्रदेश के आदिवासियों की कुल संख्या ४३ लाख से अधिक है । इनमें बस्तर में मुड़िया, मारि[या], परजा, मथरा, सरगुजा में पांडों और कोर[वा], जशपुर में उरांव, बैतूल में मुंडा, गोरवा, ...

**मध्यप्रदेश : संपूर्ण देश की संस्कृति का संगम । यहां की वनस्थलियों में ऋषियों और मुनियों में तपस्या और साधना की साहित्य, संस्कृति और कला के क्षेत्र में मध्यप्रदेश का योगदान अविस्मरणीय रहेगा ।**

में गोंड और बैगा तथा भोपाल और मालवा में भील जाति के बंधु रहते हैं ।

इतिहासकारों के अनुसार वर्तमान मध्यप्रदेश राज्य का महाकौशल भाग रामायण काल के दंडकारण्य का अंग था । महाकौशल में प्राचीनतम ऐतिहासिक प्रमाण हैं ३२६-१८४ ई.पू. की जबलपुर जिले के सिहोरा तहसील में स्थित रूपनाथ ग्राम की चट्टान पर अंकित अशोक का शिलालेख । रूपनाथ की अशोक शिला यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि वह भाग उस समय मौर्य साम्राज्य में था । सुप्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग, जो ७०० ई. के प्रारंभ में भारत आया था, ने चांदा (विदर्भ) के निकट भांडक के बाद शासक का वर्णन किया है । भांडक वंश शीघ्र ही समाप्त हो गया, परंतु उसकी सहयोगी शाखाओं ने महानदी के तट पर अवस्थित श्रीपुर (सिरपुर) को राजधानी बनाकर इस वंश की परंपराओं को जारी रखा । तीव्र देव के समय में श्रीपुर वंश अपनी शक्ति तथा समृद्धि के शिखर पर था । बाद में यह वाकाटकों के आधीन भी रहा ।

## वाकाटक, राष्ट्रकूट और हैहय

वाकाटकों के उत्तराधिकारी थे राष्ट्रकूट । इस प्रांत में उनका सर्वप्रथम उल्लेख अभिमन्यु द्वारा उंडिवाटिका । उंडिवाटिका ग्राम पंचमढ़ी के निकट स्थित उंटिया ग्राम माना गया है । हैहय वंश ने ईस्वी के ९वीं सदी के अंत अथवा १०वीं सदी के प्रारंभ में त्रिपुरी पर अधिकार कर लिया । अपने शासनकाल के अंतिम दिनों में त्रिपुरी के कर्णदेव १०८० ई. में चंदेल राजकुमार कीर्तिवर्धन के हाथों पराभूत हुए तथा कीर्तिवंर्धन ने उनकी राजधानी तथा अनेक क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया । बाद में चेदि साम्राज्य के एक भाग पर चंदेलों का शासन मुगलों के आक्रमण तक बना रहा । त्रिपुरी के महाराज कर्णदेव को मालवा अधिपति सुप्रसिद्ध भोजराज के उत्तराधिकारी उदयादित्य ने परास्त किया इसके बाद प्रांत उत्तर पूर्वी भाग परमार शासकों के अधीन हो गया । बाद में धार के उदयवर्मन ने इस प्रांत पर शासन किया ।

## बस्तर के नागवंशीय

बस्तर के नागवंशीय येल वर्ग के सिंद परिवार से पूर्वजों तथा विरुदों के मामले में घनिष्ठ रूप से जुड़े प्रतीत होते हैं । नागवंशी नाम के बारे में एक लेख में कहा है कि वंश के संस्थापक पुरुष सर्पराज धरवेंद्र के पुत्र थे । नागवंशीय शासन सत्ता की समाप्ति के बाद बस्तर में काकतिया वंश का उदय हुआ ।

गोंड इस क्षेत्र के सबसे पुराने निवासी हैं, परंतु उनके शासन का इतिहास एवं परंपरा का तत्कालीन इतिहासकारों के लेखों से ही पता चलता है । गोंड वंश का प्रारंभ एक कथानक के अनुसार जातवा नामक व्यक्ति से हुआ जिसे

एक कन्या ने जन्म दिया था तथा जिसकी रक्षा सर्पराज ने की थी। गोंड राजवंश बाद में खैरला, गढ़मंडल, देवगढ़, देवलगढ़ या चांदा (विदर्भ) की चार शाखाओं में विभाजित हो गया है। संपूर्ण सतपुड़ा पठार जिसे गोंडवाना कहा जाता था के अधीन उक्त चारों शाखाओं में खटेला प्राचीनतम थी। यह वंश विदर्भ पर भी शासन करता था। इस वंश के अंतिम राजा नरसिंह राव का पुत्र मालवा के होशंगावशाह के विरुद्ध युद्ध करता हुआ सन १४३३ में मारा गया तथा उसके साथ ही खटेला गोंडवंश का अंत हो गया।

गढ़मंडल शाखा इस वंश की दूसरी तथा सबसे शक्तिशाली शाखा थी। इसका उदय त्रिपुरी के हैहयों के अंत के साथ-साथ हुआ। इस वंश की राजधानी प्रारंभ में गढ़ा (त्रिपुरी के निकट) था बाद में मंडला थी। यह दोनों नगर नर्मदा के दाहिने किनारे अवस्थित थे। इस शाखा का प्रथम राजा संग्रामशाह १५३० ई. में सत्तासीन हुआ। उसका राज संपूर्ण नर्मदा घाटी में था। वह ५२ गढ़ों का स्वामी बताया गया है। उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र दलपतशाह गद्दी पर बैठा। वह राजधानी बदलकर दमोह जिले में सिंगौरगढ़ ले गया। उसके बाद उसकी विधवा रानी दुर्गावती अपनी नाबालिग पुत्र वीरनारायण की संरक्षिका बनकर शासन करने लगी। दुर्गावती अपने साहस तथा देशभक्ति के लिए भारतीय इतिहास में अमर है। उन्हीं के शासनकाल में कड़ा माणकपुर में अकबर के सूबेदार आसफ खां ने गढ़मंडल पर आक्रमण किया। यद्यपि दूसरे युद्ध में आकस्मिक बाढ़ के कारण रानी हार गयी, परंतु स्वाभिमान की रक्षा के लिए घायल रानी ने छाती में कटार भोंककर आत्म बलिदान कर दिया। मुगल आक्रमणकारियों के सामने हिंदू नारियों का साहस भी इस घटना से प्रकट हो गया। इस वंश का अंतिम शासक नरहरशाह था, जिसे १७८१ ई. में सागर के मराठा सूबेदार ने पकड़ कर कैद कर लिया। इस प्रकार पूरी तीन सदी तक इस प्रानत पर शासन करने के बाद इस वंश का सूर्यास्त हो गया।

देवगढ़ शाखा का अधिकृत इतिहास 'आइने-अकबरी' में वर्णित किन्हीं जातवा छातवा जो कि १६वीं सदी ई. के अंत में सत्तासीन थे, से प्रारंभ होता है। इस वंश का सबसे वीरपुरुष वंशानुक्रम में चौथा बख्त बुलंद था। उसके साम्राज्य में छिंदवाड़ा, बैतूल, बालाघाट, नागपुर, भंडारा तथा सिवनी का कुछ भाग था। बख्त बुलंद ने नागपुर की नींव डाली तथा मुगलों की आपाधापी में अपनी सीमाओं का विस्तार किया। बाद में विदर्भ के रघुजी भोंसले ने इस राज्य को अधिकृत कर लिया।

इस वंश की अंतिम शाखा ने चांदा (विदर्भ) पर १२५० ई. से १७५१ ई. तक शासन किया।

१८५७ के प्रथम, स्वाधीनता-संग्राम की असफलता के बाद अंगरेजों ने इस विशाल भू-भाग पर धीरे-धीरे पैर जमाने शुरू कर दिये। बाद में जब अंगरेज पूरी तरह सत्तारूढ़ हो गये थे, तब उन्होंने प्रशासन की सुविधा के लिए सेंट्रल प्राविंसेज एंड बरार नाम से एक प्रदेश बनाया। आजादी के बाद यही क्षेत्र मध्यप्रदेश कहलाया। राज्य पुनर्गठन के बाद मध्यप्रदेश का वर्तमान रूप बना।
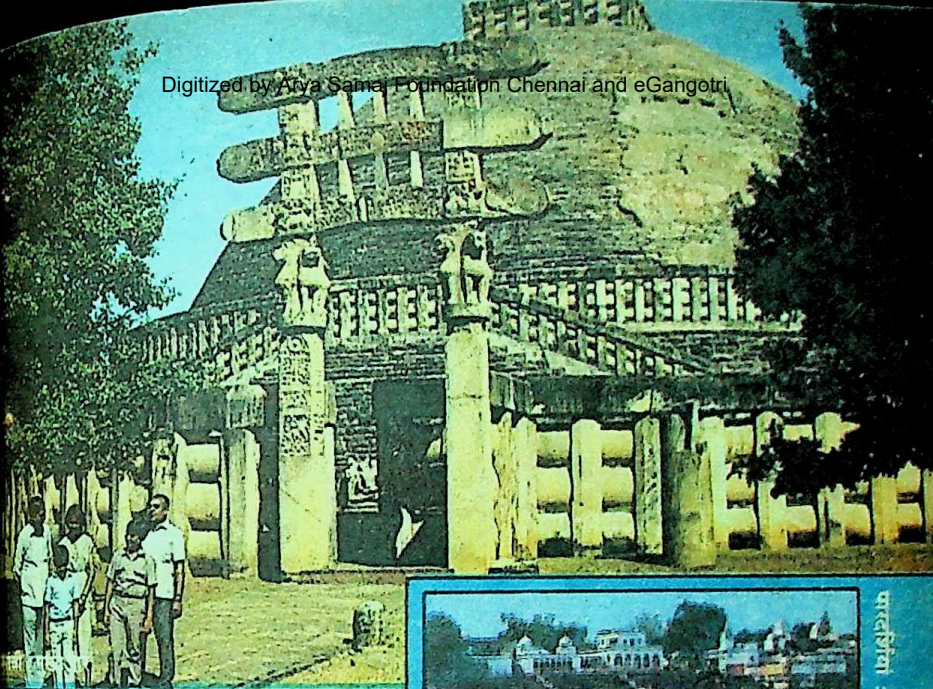
नर्मदा : कुंआरी नदी का शांत सौंदर्य
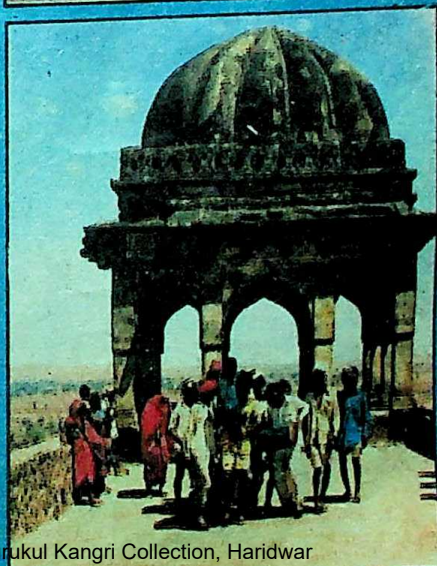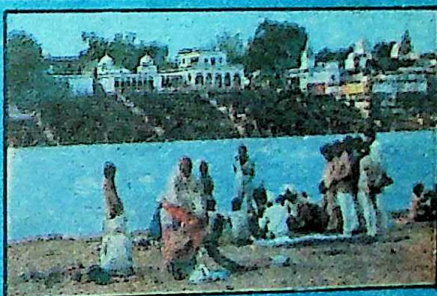
खजुराहो : साधना एवं शिल्प का अनुपम संगम

पारदर्शियां : म. प्र. सूचना केंद्र के सौजन्य से

मध्य प्रदेश दुर्गों का प्रदेश : एक ऐतिहासिक दुर्ग की प्राचीर पर पर्यटक
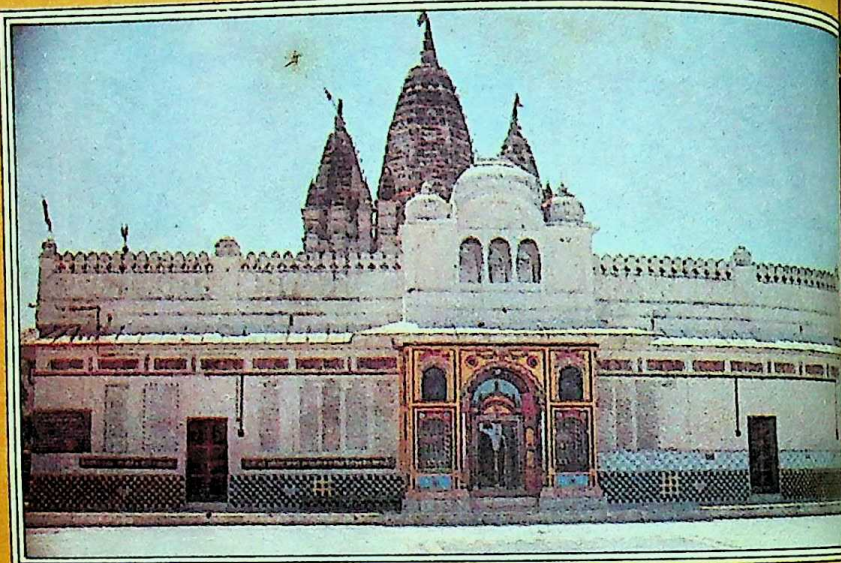
सोनागिरि का मुख्य मंदिर

सोनागिरि का मुख्य द्वार

सोनागिरि स्थित जैन मं
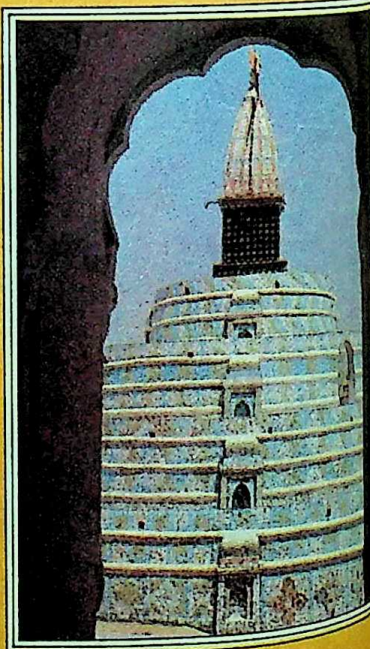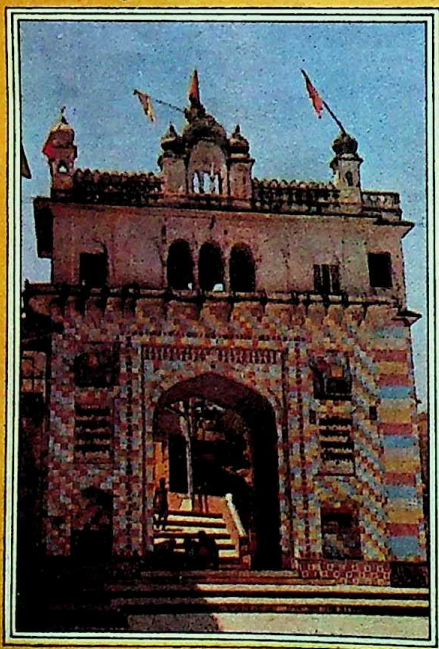
पारदर्शियां : शमशेर अ. खान

# सोनागिरि

## जहां पर्यटक भी अलौकिक अनुभूति में खो जाता है

● शमशेर अ. खान .

सोनागिरि, जिसे स्वर्णगिरि, श्रमणगिरि, स्वर्णाचल आदि कई नामों से जाना जाता है, यह दिगम्बर जैनसंप्रदाय का जहां परम पवित्र सिद्ध क्षेत्र है, वहीं पर्यटकों के लिए अलौकिक आनंद की अनुभूति करानेवाला पर्यटन क्षेत्र भी है । दतिया से ग्यारह किलोमीटर की दूरी पर स्थित सिनावल नामक ग्राम की पहाड़ी को सोनागिरि के नाम से जाना जाता है, इस पहाड़ी पर जैन तीर्थंकरों के अनेक जिनालय अवस्थित हैं । ग्वालियर व झांसी रेल मार्ग व सड़क मार्ग दोनों के बीच स्थित सोनागिरि पर्वतराज के जिनालयों को देखकर अलौकिक अनुभव होता है ।

जैन ग्रंथों के अनुसार इस स्वर्णगिरि (सोनागिरि) शिखर से महाऋषि श्री नंग-अनंग कुमार ने साढ़े पांच करोड़ मुनियों सहित मोक्ष प्राप्त किया था । सोनागिरि पर्वतराज की तलहटी में १७जैन मंदिर और छह छतरियां हैं तथा शिविर पर ८७ जैन मंदिर हैं । पहाड़ी पर जाने के लिए एक मुख्य द्वार है जो संगमरमर की टाइलों से बनाया गया है । पर्वतराज की परिक्रमा के लिए मार्ग बना हुआ है । यह परिक्रमा पथ जैन तीर्थ की सीमा-रेखा है ।

पर्वतराज पर मंदिर क्रमांक ५७ प्रमुख मंदिर है , जो श्री चंद्रप्रभुजी मंदिर के नाम से विख्यात है । श्री चंद्रप्रभु भगवान की प्रतिमा को मूलनायक के रूप में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है । इसी मंदिर के निकट एक छतरी में मुनि श्री नंगानंग कुमार के प्राचीन युगल चरण चिह्न विराजमान हैं ।

पर्वतराज सोनागिरि के सिद्ध क्षेत्र की मान्यता के पीछे जो कथा प्रचलित है वह इस प्रकार है :-

उज्जैनी नगरी के नरेश श्रीदत्त की रानी विजया के कोई संतान न होने के कारण दुखी रहती थी । एक दिन चारण ऋद्धि धारी मुनि वहां पधारे । राजदंपत्ति ने विनयपूर्वक नमोस्तु कर भक्ति की, तत्पश्चात संतान होने के बारे में उन्होंने पूछा तो मुनियों ने धर्मोपदेश देते हुए बताया कि तुम स्वर्णगिरि की यात्रा करो । उस क्षेत्र की पूजा करने से तुम्हारे संतान होगी । राजा ने सपरिवार स्वर्णगिरि की यात्रा की । उस समय चंद्रप्रभु का समवशरण वहां पर ही विराजमान था । उनके दर्शन कर राजा श्रीदत्त को अपार हर्ष हुआ । प्रभु के प्रताप से रानी पुत्रवती हुई । पुत्र का नाम स्वर्णगिरि की यात्रा से फलीभूत होने के कारण स्वर्णभद्र रखा गया ।

मुनि नंग-अनंग कुमार अनेक मुनियों के

साथ विहार करते हुए स्वर्णागिरि पधारे । सभी मुनि वहां रहकर घोर तपश्चरण करने लगे । और उन्होंने वहां केवल ज्ञान प्राप्त किया । यहीं पर निवास कर समय-समय पर अनेक मुनियों ने निर्वाण भी प्राप्त किया ।

इन मुनियों के निर्वाण का समाचार पाकर उज्जैनी का राजा स्वर्णभद्र परिवार सहित स्वर्णागिरि आया । कुछ समय उपरांत स्वर्णभद्र को संसार से विरक्ति हो गयी और उसने मुनिव्रत धारण कर लिया । स्वर्णागिरि पर संघ सहित निवास कर उसने घोर तपश्चरण किया तथा पांच हजार मुनियों के साथ मुक्ति प्राप्त की ।

पर्वतराज की महत्ता महर्षि नंग-अनंग कुमारों के कारण भी है । ये महान उद्भढ विद्वान परम वीतरागी मुनि थे । गृहस्थ जीवन में उन्होंने महाराजा अरिज्ञय जैसे पिता का राज्य-वैभव परित्याग कर दिगंबरी दीक्षा धारण की थी ।

## यात्रा का आरंभ

पर्वतराज के प्रमुख द्वार से प्रवेश करते ही, हाथी दरवाजा के पहले ही प्रथम मंदिर है । इसी मंदिर से पर्वतराज मंदिरों की वंदना शुरू हो जाती है । मंदिर में नेमिनाथजी की प्रतिमा खड्गासन अवस्था में प्रतिष्ठित है ।

मंदिर के आगे चबूतरा है । उसी के पास में एक चौकोर बरसाती कुंड बना हुआ है । बरसात में पर्वत से पानी का झरना इसमें गिरकर शोभा बढ़ा देता है । कुंड के ऊपर शिव मंदिर है । कुंड से लगा हुआ दरवाजा है, जो हाथी-द्वार के नाम से प्रसिद्ध है, जिसमें एक बड़ा भारी पीतल का घंटा लगा हुआ है । जिसकी ध्वनि काफी दूर तक सुनायी देती है ।

हाथी द्वार में प्रवेश करके दायीं ओर सीढ़ियां चढ़कर क्रमांक दो मंदिर में पहुंचा जा सकता है । इसे श्री नेमिनाथ मंदिर कहते हैं जिसमें नेमिनाथजी की पद्मासन प्रतिमा सुशोभित है । इस मंदिर के दायीं ओर एक दरवाजा है उसमें से निकलकर मंदिर क्रमांक तीन की ओर निकलते हैं । यह आदिनाथजी का मंदिर है । मंदिर क्रमांक चार आदिनाथजी का मंदिर है । मंदिर क्रमांक पांच भगवान पार्श्वनाथजी का मंदिर है । मंदिर क्रमांक छह चंद्रप्रभुजी, मंदिर क्रमांक सात नेमिनाथजी, मंदिर क्रमांक आठ प्रभुमंदिर व नौ व दस पाश्वर्वनाथजी के हैं ।

इन सभी ७७ मंदिरों में क्रमांक ५७ का चंद्रप्रभुजी का मंदिर प्रमुख एवं प्राचीन है । इस में मूल नामक वेदी के अतिरिक्त सात वेदियां हैं । मंदिर बहुत विशाल है । संपूर्ण मंदिर के अंदर और बाहर चौक में संगमरमर का फर्श है । दीवालों में चारों तरफ मकराने पत्थर की पट्टियों पर वैराग्य भावना, बराह भगवान, बाईस परिग्रह चित्र व लेख हैं ।

सोनागिरि पर मंदिरों की संख्या ८७ है, जिनमें १३५ प्रतिमाएं हैं, जिनमें निरंतर वृद्धि हो रही है ।

मंदिरों में भ्रमण व दर्शन के लिए नंगे पांव आना पड़ता है । होली के अवसर पर एक भव्य मेला लगता है ।

यहां की यात्रा करने केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि पर्यटन की दृष्टि से भी आनंद उठाया जा सकता है ।

—११३, एस. एच., शास्त्रीनगर,
गाजियाबाद-२०१००१

# हिंदू मुसलमान एक हैं

*दरिया दिल दरियाव है, अगम अपार बेअंत*
*सब महं तुम, तुम में सबै, जानि मरम कोई संत*
*जंगम जोगी से बड़ा, पड़े काल के हाथ*
*कह दरिया सोई बाचि है, जो एतनाम के साथ ।*

हे प्रभु तुम तो अगम, अपार और अनंत हो, तुम्हारा दिल नदी के समान उदार है, तुम सभी में विराजमान हो, चाहे वह हिंदू हो या मुसलमान, ऊंच हो या नीच और ये सभी तुम में विराजमान हैं—लेकिन इस रहस्य को हरेक आदमी नहीं जानता, कोई विरला संत ही समझता है इसीलिए वह हर प्राणी में समान भाव से प्रभु के दर्शन करता है ।

विश्व के समस्त चल-अचल जीवधारी त्यागी-तपस्वी-योगी और राजा-महाराजा—सभी काल के वश में हैं । सभी को एक न एक दिन मरना है । हां, लेकिन वही बच सकता है, जिसके साथ सत्यनाम प्रभु हैं यानी जिसने प्रभु के नाम का स्मरण किया है और अंत समय भी वह स्मरण उनके साथ रहा है ।

*नाम निर्लेप निर्गुन, निर्मल वही एक से अनंत, सब जगत सारा*
*पढ़ि बेद कितेब, विस्तार कथा कथैं*
*हारि बेचून वह नूर प्यारा*
*निःपेच निर्वान, निःकर्म निर्भिर्म वह*
*एक सर्वज्ञ, सत नाम प्यारा*

उस प्रभु का नाम ही सर्वश्रेष्ठ है । वह निर्लेप है, निर्गुन है और निर्मल है । वही एक है और वही अनेक । वही समस्त संसार है और समस्त संसार में व्याप्त है । वेद और कुरान पढ़कर उनकी व्याख्या कर-कर के लोग थका हो गये, लेकिन उसका भेद कोई नहीं पा सका । वह तो प्यारी ज्योतिवाला, निश्छल, निष्काम, भ्रम रहित तथा सर्वज्ञ है । ऐसे ही सत्य नामवाले प्रभु का नाम हमें परमप्रिय है ।

# टूटते बिंब

● माया मिश्र

अगस्त १९७५ :

मैं परित्यक्ता करार दी गयी । जाने क्यों यह ख्याल आ रहा है कि परित्यक्ता क्या वह न होगी, जिसे पति ने छोड़ दिया है । पर मैंने तो खुद अपने व्यक्ति के मन से उस घर से विदा ली, जहां मैं केवल एक वस्तु थी । सुधीश-जैसे समृद्ध घर में हर चीज का एक मोल होता है, और हर चीज पर 'प्राइस टैग' लगा होता है ।

दो बरस से अलग थी । जैसे-तैसे कटे । भला छोटी-छोटी बातों को लेकर कोई डाइबोर्स

क्या सुधीश ने जब विवाह की बात की, तो क्या वह जानता नहीं था कि मैं संगीत से प्यार करती हूं ? एक स्वतंत्र जीवन की हामी भरती हूं और स्टेज पर प्रोग्राम देती रही हूं । कितनी ही बार वह मेरा प्रोग्राम सुनने आया, कितनी ही बार मेरी कला को सराहा । क्या सब ढोंग था ? मुझे छलने के लिए ? उसने कभी एक बार भी मुझे अहसास नहीं होने दिया कि उसे यह सब पसंद नहीं है ।

शायद, उसने सोचा होगा कि किसी भी

कैसे पा सकता है । बड़ा ही तनाव रहा इतने दिन । आज एक अजीब-सी राहत महसूस कर रही हूं । एक असीम आनंद, जो सहज ही किसी पिंजरे के बंद पक्षी को मुक्त होने पर होता है ।

इतना आनंद तो उस दिन भी नहीं हुआ था, जब सुधीश से विवाह कर देने की हामी डैडी ने भर दी थी । जवां उमर, कब क्या सोच पाती है ? डैडी ने कितनी लगन व मेहनत से मुझे संगीत सिखाया, कितनी ही बार मेरे स्टेज प्रोग्राम के लिए खुद रातों-रात जागकर घंटों रियाज करवाया और उस शाम तब जब तालियों की गड़गड़ाहट से अभयंकर हाल गूंज रहा था, उनकी आंखों में आंसू छलछला रहे थे, कितना गर्व उन्हें हो रहा होगा । दूसरे ही दिन मैंने सुधीश से ब्याह करने की बात उन्हें बतायी ।

कभी-कभी कोई दिन मनहूस होता ही है, जो जिंदगी की कालिमा से ढक देता है ।

लड़की की तरह मुझे भी जिंदगी में सबसे बड़ी कामना केवल गहनों, कपड़ों, सिनेमा देखने और इत्र-फुलेल में डूबे रहने की होगी, जबकि मुझे इन सबकी क्या गरज थी ? उन्नीस बरस की उमर में यह सब लदा भरा था । मुझे तो आकर्षण सिर्फ सामाजिक सुरक्षा का था—एक घर का था । मैं तो सिर्फ एक साथी चाहती थी, जिसके साथ खुशियां बांट सकूं—भोग सकूं । शादी के बाद, हफ्तेभर में मुझे लगा कि मैं खुलकर किसी से 'हलो' भी नहीं कर सकती—बाहर की छोड़ो, घर में भी योग-क्रिया के लिए पाजामा सूट नहीं पहन सकती । सुधीश, जिसकी एक-एक भंगिमा ने मुझे मोहित किया, आज ऐसा लगता है, कि वह सब भ्रम था । कितना भयंकर, कितना विनाशकारी ?

डैडी ने तभी कहा था, 'इतना बड़ा घर है,

इतना बड़ा उसका व्यापार । वह क्यों चाहेगा कि तुम्हें कोई प्रशंसा की नजरों से भी देखे ?'

हां, प्रशंसा क्या, लोग तो तृषित निगाहों से भी देखते हैं । सुधीश को क्या लगा था ? अपना नहीं सोचा, आज कहता है चूड़ीदार पाजामा मत पहनो, कुरता मत पहनो, जींस मत पहनो और उस दिन पंजाबी प्रोग्राम में कैसा दीवाना बना घूम रहा था—'ओह, यू आर सुपर्ब, फेंटास्टिक, ऑन द टॉप !' 'तू तो बिल्कुल पंजाबड़ी लग रही है । पापा को कोई गम नहीं होगा कि मैं एक गैर जाति की लड़की से शादी कर रहा हूं ।'

ऊंह, छोड़ो इन बातों को, जिस घर के दरवाजे खुद बंद कर आयी हूं वहां के बारे में क्या सोचना ? ओह, पिछले दो बरस से बंद ही तो थे वे किवाड़, अब बाहर के लिए बंद कर दिये हैं । मेरे लिए तो पहले दिन से ही बंद थे, जब घर के अंदर गयी तो कैद हो गयी और बाहर आ गयी, तो झांकने को मन नहीं हुआ ।

कितनी गालियां दी थीं सुधीश ने, मुझे भी—आशुतोष को भी, लेकिन वह तो भला हुआ उसके जाने के बाद दी । वरना, आज मेरे प्रोग्राम कौन अरेंज करता ? उसका कसूर ही क्या था ? यही न कि मुझे कमरे से बाहर आने

में जरा देर हुई, तो उसने परदे से अंदर झांककर ड्राइंग रूम की झलक देख ली । यूं ऐसे घर में जहां मुझसे मिलने आनेवाले को बरांडे में ही बैठना पड़े, मुझे क्या अपना घर लगता ? किसी भी हम-साथी के घर जाकर उत्सुकता तो होती ही है—देखें, कैसा घर-वर मिला है ।

आशुतोष और मैंने कई प्रोग्राम साथ-साथ किये थे । सुधीश उसे गाली दे सकता था, पर उसका और मेरा अतीत तो नहीं मिटा सकता था ? बेवकूफ ! जब शादी मुझसे कर ही ली, तो दूसरों से क्यों जलन ?

भला हुआ जो मैंने चार-पांच साल मतलब के लोगों को एकदम ही नहीं छोड़ दिया, वरना मेरा क्या होगा ? कीर्ति और सुहास मेरे पास हैं, मुझे क्या गरज थी कि मैं मेंटनेंस के लिए लड़ती और बच्चों को उसे दे देती ।

यूं मां हूं—बच्चे किसी से भी हों, हैं तो मेरे अपने ही ।

पर जिंदगी में जीने के लिए रुपया-पैसा सब कुछ चाहिए । फिर कल ये बच्चे यह न सोचें कि आलीशान घर से लाकर मां ने हमें बेघर-बार कर दिया । मेरे अपने हाथ मजबूत हैं, उन्हें किसी लाठी की जरूरत नहीं ।

मेरे पास इतना न भी होता, तो भी सुधीश के घर—ओफ्—कौन रहता । छोटी-सी कीर्ति रोती है, तो क्यों ? बेचारा सुहास, उसे तो सुधीश ने कभी हाथ नहीं लगाया, उसने कितना हंगामा किया एक दिन । जानती हूं मुझे दुःखी करने को ही । वरना, धनवान को कितनी लालसा होती है बेटे की ? मध्यवर्गीय व्यक्ति तो आज लड़के और लड़की में कम फरक करता है पर धनवान को कुलदीपक चाहिए । बड़े-बड़े लोग जगह-जगह की मानता मानेंगे, हम देहरी को पूजेंगे । बाहर चाहे गुलछर्रे उड़ायें और पत्नी से पुत्र हो तो उसे भी पूछेंगे, पर यह सुधीश । सुहास से ही नफरत । वहम का क्या इलाज ?

अरे, तुम्हारी देहरी से बाहर निकलने की कब इजाजत थी मुझे, और वहम का क्या इलाज ? टेलीफोन से बच्चे पैदा होते हों, ऐसा अभी साइंस ने कोई करिश्मा नहीं किया है ।

पर हां, वह माने तो माने, मैंने कोई देवी होने की कसम नहीं खायी है । मेरा मन, जो चाहे करूं । परसों ही लंदन जाना है, प्रोग्राम देना है । जींस ही पहनूंगी !! बड़ी-बड़ी हेडलाईंस में मेरी तसवीरें होंगी । ले जाऊंगी आशुतोष को भी । भेजूंगी अखबार उसे—देखे, अब कि उस समय की श्रीमती सुधीश भी कुछ हैं । उसके बेडरूम में बेड-टी देनेवाली, उसकी आंखों से उसका मिजाज पहचानकर चलने, बोलने, हंसने की गुलाम ज्योति नहीं, असली ज्वाला है, जो उसे उसकी धूर्तता के लिए जिंदगीभर जलाएगी ।

उमर ही क्या है मेरी ? यह हुनर न भी होता तो क्या, कुछ पढ़-लिख नहीं सकती थी ? कहीं भी नौकरी कर सकती थी । और गुलामी की जिंदगी ही रास आती, तो सुधीश न सही, किले की दीवार के हर मेहराब पर हमसफर मुझे मिल ही जाता । हर मोड़ पर कोई न कोई होता, जो मुझे समझ मेरा आदर करता ।

किसी गरीब के घर आती, तो शारीरिक कष्ट होता, पर यूं मन का मंथन तो न होता । किसी ऐसे रईस के पल्ले बंधती, जो कुछ नहीं तो मेरा गायन ही सुनता, यों तिरस्कृत तो न करता ।

*क्यों ऐसी बातों से पाप-पुण्य को तौलती रही कि सफलताओं की ऊंची अट्टालिकाओं में रहकर यह सब बेमानी है कि जिंदगी को सामाजिक ढकोसलों में बांधा जाए ।*

मैंने इन चार सालों में उससे कब पूछा कि वह बाहर कहां गया, कहां क्या करता है या घर ही में बने बार-रूम में बैठकर क्या गप्पें लगाता है ? उसके घरवालों ने भी कब मुझे आदर दिया, कब अपना माना ? कोई सड़क की स्ट्रीट सिंगर तो थी नहीं, और अगर होती भी तो देख-सुन कर ब्याहा था ।

पर मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं सुधीश से ही मेरा झगड़ा है । जाए वह जहन्नुम में ! जिसे न मुझसे प्यार रहा, न मेरे बच्चों से । ठीक है, कोई कहेगा मैंने गलती की, मुझे परवाह नहीं । मैं लड़ लूंगी जमाने से । मैं देख लूंगी सबको ।

● ● ●

दिसम्बर १९८५ :

बरसों बाद आज फुरसत मिली । डायरी के पन्ने पलट रही थी, निगाह उस दिन पर पड़ गयी, जब अपने को बंधनमुक्त कर लिया था ।

कहां थी, कहां आ गयी हूं ?

अपने हाथों का करिश्मा देखकर खुद हैरत होती है । कितना अजीब दकियानूसीपन होता, अगर कहीं सुधीश के घर को अपना घर मान लिया होता ।

आज डैडी नहीं हैं, वरना देखते कि उनके दुःख के शोलों पर मैंने कितना बड़ा महल खड़ा किया है । बेचारे ! इतना बड़ा 'शॉक' लगा उन्हें । अरे, वह घर था ही कहां, जिसके छूटने का उन्हें दुःख हुआ ?

कीर्ति-सुहास, किस चीज की कमी है उन्हें ? इतना बढ़िया स्कूल जहां देश-विदेश के बच्चे पढ़ते हैं—रुपया, पैसा सब ढेर लगा दिया है और जिंदगी किसे कहते हैं, सबको दिखा दिया है ।

सुधीश-जैसे व्यापारी ! उधर मैं देखती भी नहीं । मैं गाऊं और एक बार निगाह उधर कर भर दूं तो कयामत । कॉलेज में परेश कहता था—'स्वर और सौंदर्य का कितना बेजोड़ जोड़ है' और आज तो फिर ऐसा निखार परवान चढ़ा है कि मैं दीन-दुनिया की परवाह नहीं करूंगी । मुझे नहीं अपने कान, और आंख खोल कर रखने—कि फलां ने ऐसा कहा, फलां ने वैसा—चांद चढ़ा है, दुनिया देखे ।

मैं सब समझती हूं । जो मुझसे जलते हैं, उन्हें ही ऐसी घटिया बातें सूझती हैं । 'फ्री-लाइफ' चाहिए, इसी से बच्चे बोर्डिंग में हैं । इतने सारे बच्चे हॉस्टल में रहकर पढ़ते हैं, तो क्या सब मांओं को 'फ्री-लाइफ' चाहिए । फिर मेरी 'फ्री-लाइफ' हो, तो दूसरों के पेट में क्यों दर्द हो ?

कांफ्रेंस में जाना होता है, रियाज भी करना होता है, सैट के लोगों का आना-जाना भी होता है । कहां सबको अपने साथ बांधे फिरूं ?

तीन साल पहले सुधीश ने अपने दोस्त के द्वारा खबर भेजी थी कि बच्चों को उसके पास भेज दूं । क्या समझ रखा है ? मैं सब कुछ कर सकती हूं ।

और पति शब्द से मुझे नफरत है । क्या करना । यों ही 'एडमायरर्स' क्या कम होते हैं ? किसी को भी साथी मान लो ।

अरे, आशुतोष से कोई संबंध बनाना मुझे कभी जंचा ही नहीं, पर परेश तो सचमुच अच्छा लगता था । कीर्ति को स्कूल ले गयी थी, पहले दिन वहां मिल गया । कई बरस आता-जाता रहा । ठीक है—दूर के ढोल सुहावने । तब कविता करता था या किसी की चुरा लाता हो, कॉलेज में बड़ा 'हीरो' दीखता था, सीनियर था कई साल । मुझे तो ज्यादा दिन अपील नहीं किया । चला गया, चला जाए ! यहां कौन उनके बिना घर सूना है !

कभी-कभी अकेलापन खलता है, पर इतना काम है, कि समझ नहीं पड़ता कैसे निबाहूंगी । सोमेश बाहर का काम संभाल लेते हैं, अच्छे हैं पर थोड़ा 'पोजेटिव' हैं । रुपया तो मेरा ही है । एक फ्लैट खरीदने की सोच रही थी, तो ऐसा बोले, जैसे मुझे हमेशा के लिए बांधकर रख सकेंगे ।

मुझे किसी पुरुष की यों भी सनातन जरूरत नहीं है । कह चुकी हूं अगर संगीत में इतना नाम न कमा लिया होता, तो किसी भी फील्ड में सर्वोपरि ही होती ।

अमरीका के 'टूर' में सारा इंतजाम जैफरी ने किया था । सच ही तो कहता था कि 'आदमी उसी औरत के साथ पंद्रह मिनट बात कर सकता है जिसकी काबलियत का वह कायल हो या उससे प्यार करता हो ।' फिर इससे आगे उसने बड़े झेंपते हुए कहा था—'फिर इतनी बड़ी आर्टिस्ट से कैसे कहूं—आई लव यू...।'

लगातार पत्र डालता रहा है । कभी-कभी मन होता है शादी कर लूं—बाहर की कल्चर में कोई दकियानूसीपन नहीं होगा ।

बच्चों की बात पता नहीं, जैफरी कैसे ले, पर ठीक है अगर शादी करूंगी, तो भी उनकी देखभाल तो कर सकती हूं ।

पर सोचती हूं क्या करना । कहीं वह वहीं बाहर रहने की बात न करे ।

सोमेश ही ठीक है । वैसे अपने को बांध लेने की भी क्या तुक है ?

बांध लूं तो किसी ऐसे से, जो किसी बुलंदी पर पहुंचा सके, जो यह महसूस करा सके कि मेरा भी कुछ अस्तित्व है, जो कभी तो यह समझे कि हर चीज पर 'प्राइस-टैग' नहीं लगा होता ।

वैसे, मन को जिसने सबसे ज्यादा छुआ, वह डिप्लोमेट, अपने ग्रे बालों में—ऊंचा अपनी पदवी से भी और कितना मितभाषी था । जैफरी गरदन झुका धीरे से मुसकराता, आज भी वह छवि बसी है मन में । कितना शालीन—बस देखते ही रह गयी । क्यों होता है कभी-कभी मन ऐसा कि कोई उस जैसा हमेशा पास रहे ।

न. न, यह भावुकता कदम लड़खड़ा देगी । छोटे-से पर्वत पर पहुंचकर क्या थक जाता है ? अभी ऊंचा शिखर और ऊपर है । यह समर्पण, प्यार-व्यार कुछ माने नहीं रखता.... ।

जो असलियत है, बस उसको ही सिर आंखों पर रखना है । पर, पता नहीं क्यों हर पुरुष चाहता है कि पत्नी अपने हर सपने को

सिर्फ उसके चारों तरफ ही बुने ? देखे तो—उसे, सुने तो—उसे, बोले तो—उसी से। जाने क्यों वह यह भूल जाता है कि जिंदगी का सफर चलायमान होता है, कोई स्थिरता नहीं कि जिस दिन उससे नाता जोड़ा संसार की हर वस्तु, हर बात पर बस वैसी की वैसी ही रहेगी।—ठहर जाएगी।

क्यों वह यह नहीं समझ सकता कि मन के तार टूटते-जुड़ते रहते हैं और यही टूटना-जुड़ना जिंदगी का लुत्फ है। और गलती से कहीं जुड़ गया, तो जोड़ा तो हमने ही है—क्यों नहीं तोड़ दें। क्यों नहीं हम एक घिसटते जीवन के बोझ को कंधे से उतार फेंकते ? उसी दम जब लगे कि तार कमजोर हैं। कोई कसम क्यों खाकर बैठे जिससे एक संयोग सारी उम्र उसके पीछे पड़ा रहे—भटकता रहे ? क्यों ? आखिर क्यों ? क्यों नहीं हम इतनी सामर्थ्य अपने अंदर जुटा लेते कि बड़े-बड़े दुःख, छोटे-मोटे संस्कारों की संजीदगी का बाना पहनकर न झेलने पड़ें।

जिंदगी है ही क्या ? मन का सुखभर तो है। मन की व्यथा को सालों साल क्या इसीलिए बरदाश्त करते हैं कि झूठी-मूठी सामाजिक और वैयक्तिक रुढ़ियां हमें कसे हैं ?

मैं तो बंधनहीन रहूंगी। मुझे—सच, कोई कठिनाई नहीं है। जिस सामाजिक परिवेश में हूं, वहां ऐसे शख्स की न जरूरत है, न मन की बेताबी की कि उसके मिजाज को सहना पड़े। बल्कि सत्य तो यह है कि पग-पग पर जो बाधाएं आएंगी, वह ऐसे व्यक्ति से, ऐसे 'कैरेक्टर' से ही, जो कभी भी वक्त-बेवक्त यह याद दिलाता रहे कि उसका संबंध एक दावेदार का है।

परेश ऐसा नहीं था तो क्या ? बैंड बाजों के साथ शादी करना ही क्या शादी है ? तीन-चार बरस रहा, मुझे भी शायद हमदर्दी की जरूरत थी—सुधीश का घर छोड़ा था, बच्चे छोटे थे। शायद, पांव डांवाडोल हो गये थे, डैडी भी नहीं रहे थे। एक सशक्त कंधे की जरूरत महसूस की हो, शायद। पर यह सब कब चाहा कि ऐसा व्यक्ति जो हमदर्दी दिखाकर वही नाटक दुहराना चाहे जिसका मैं पटाक्षेप कर चुकी थी।

ठीक है, जिंदगी बहुत पड़ी है, ऐसे साथी आते-जाते रहेंगे, जल्दी क्या है ? जैफरी, सोमेश दोनों ही मेरे लिए एक से हैं। आखिर, आशुतोष भी तो इतनी ही लगन से मेरा काम करता है। कीर्ति के लिए जब भी दौड़-भाग करनी होती है, वही करता है, यह बात अलग है कि वहीं 'पोस्टेड है।

किसी दर्दीली बानगी को मुझे नहीं अपनाना है। जानती हूं यह भी, किसी दिन मेरे हाथ अशक्त हो जाएंगे, पर तब के लिए अपना आज क्यों बरबाद करूं ?

**फरवरी, १९८९ :**

लगता है आज ही सबसे मनहूस दिन है। सारे बिंब, प्रतिबिंब टूटे-बिखरे पड़े हैं। लगता है सब कुछ खत्म ही हो गया। सारे कगार, सारे मेहराब ध्वस्त हो गये हैं।

एक राख़ का ढेर है जहां खड़ी हूं ।

कोई पन्ना खोलकर नहीं पढ़ना है, कोई परदा उठाकर नहीं देखना है । कोई अतीत का तार नहीं है, जो जोड़ना या तोड़ना है । सब कुछ इतना साफ है, सब कुछ दिखायी पड़ रहा है । सामने ढेरों पत्र पड़े हैं । देश-विदेशों का 'फैनमेल' करीने से जमा रखा है । तमाम डिस्क सामने अलमारियों के कांच से झांक रहे हैं । मेरा करिश्मा मुझे ही चौंका रहा है ।

आसमान में उड़ती जा रही हूं । देख रही हूं नीचे धरती खिसक गयी है । जो कुछ कीर्ति ने आज बताया है, उसने सामने पसरे वैभव को कालिमा से पोत दिया है । ऊंचे-ऊंचे कबर्ड में रखे सैकड़ों चित्र, जो करीने से मखमल जड़ित अलबम में सुरक्षित हैं । जिस औरत के हैं—उसकी सफलता के प्रतीक हैं—उस औरत को हरा दिया है । जिंदगी की बुलंदियां छूकर वही हाथ बर्फ से ढक निष्प्राण हो गये हैं । ऐसा लगता है सब मृग-मरीचिका था ।

आराम का वक्त आ गया था ।

उथल-पुथल मच गयी है । आक्रोश और बदला—मन मथ गया है, पर इस सबसे ज्यादा तो दुःख है कि उस भयानक अंधेरे का, जो भीतर ही भीतर सर्वत्र समा गया है ।

कितने नीच हो तुम शशांक !

अच्छा है तुम घर वापस नहीं आये । मुझे नींद की गोली दे, कीर्ति पर ही हाथ साफ करना चाह रहे थे कुछ तो शरम की होती ।

मैंने तुम्हें आश्रय दिया था । तुम्हारे दुःख को मैंने अपना दुःख माना था । जैफरी की बहन के बेटे हो । जैफरी भी बुरा मान गया था । उसको तुम्हारा मेरे घर में आना सबसे बुरा लगा । पता नहीं क्यों, कितने सालों से उसने मेरी कोई खबर नहीं ली । मुझे लगता था मेरे बाकी सफर में तुम मेरा साथ दोगे । यूं दो-चार बरस छोटे हो तो क्या ? सोचा था तुम डॉक्टर हो, अब मुझे अपनी फिक्र नहीं करनी पड़ेगी, पर तुमने यह क्या किया ?

यों कीर्ति ने भी कभी घर आना नहीं चाहा । जब से बड़ी हुई है अक्सर 'स्टडी-टूर' में या किसी और बहाने वह लंबी छुट्टियां अपनी हमजोलियों के साथ ही बिताती रही है । शायद, यह सब न भी बताती, जानती हूं इसीलिए कहा होगा कि मुझे नीचा दिखाना चाहती है ।

उसकी अपनी 'सोसाइटी' में कुछ 'टेबू' है ? ऐसा तो नहीं फिर मैंने ही उसे कोई सीमा-मर्यादाएं तो बतायी नहीं ।

पर आस्तीन का सांप बनकर शशांक ने क्यों ऐसा किया ? कीर्ति ने उसी के रहने पर 'प्रोटेस्ट' किया । क्या पहले भी कभी कुछ हुआ होगा ? कीर्ति चली गयी है । उसे तो अपने 'हिस्टोरिकल टूर' पर जाना ही था । इस वक्त अकेली रह गयी हूं सुहास आदर करता है, मां हूं न, पर है तो पुरुष ही । वह कब यह मानेगा कि मैंने गलती नहीं की । जानती हूं दरवाजे से

ही कहता आएगा ऐसे नीच आदमी को घर में रहने कैसे दिया ? यूं शंशाक क्या मुंह लेकर घर आएगा—पर 'गोली मार दूंगा', कहेगा ।

छोटा था, तब एक दिन सोमेश पर बंदूक तान कर खड़ा हो गया था । 'तुम मेरे डैडी नहीं हो—खबरदार... ।'

जाने किसने बता दिया था उसे । बताने को क्या, कोई बात छिपी थोड़े ही थी किसी से ।

देखो न, घर कभी बन ही नहीं पाया । जो भी आया, इसी धुन में कि इतना रुपया कमाती है—गुलछर्रे उड़ाओ इसकी मेहनत पर, ऐश करो । पर जाने मुझे भी क्या धुन थी—क्यों अकल नहीं आयी कि यह सब चक्रव्यूह है । उलझते हुए भीतर ही भीतर घुसती-धंसती जा रही हूं, कभी निकल नहीं पाऊंगी इस मृग-मरीचिका से ।

बार-बार वही नाटक दुहराती रही । क्या फर्क था सुधीश, परेश, शशांक में ? सोमेश सेक्रेटरी रहा, पर उसने भी कभी उस ढंग का आदर नहीं दिया, जिसकी मैंने कल्पना की थी । जैफरी भला था, मैंने उसके स्नेह व इशारों को तरह दी, तो चला गया पर यह कलंक मेरे घर में रख गया...

ओफ ! किस घड़ी में इसको अपनेपन का अहसास दिया । हल्का हार्ट-अटैक था गुजर जाता—अब करना ही क्या था, किस ऊंचाई पर पहुंचने की साध बची थी ? आज यह दिन तो न देखना पड़ता ।

लगता है, इस दुःख को बता सकूं काश, कोई पास होता । कोई ऐसा भी होता, जिसे रोकर कह पाती कि मृग-मरीचिका में भटकती रही हूं मैं । मन का दर्द कहां छिपाऊं, किसे दिखाऊं ? कोई सिर पर हाथ रखकर कह भर देता कि—'मत करो, आज कोई लेखा-जोखा—कोई कंधे पर हाथ रखकर थोड़ी दूर तक मेरे सफर में साथ ही चल लेता ।'

जिद थी मेरी शायद—पूरी हो गयी । जिस आदमी से झगड़ा था, उस का क्या बिगड़ा ? जरूर सुख-चैन में होगा । कौन जाने कीर्ति को ही भेज दिया होता, तो आज इस क्षोभ का मुंह तो नहीं देखना पड़ता । सुहास को भी 'पिता का नाम' जिंदगी के हर कालम में भरना है । वह कालम कहां से भरूं ? उसकी पढ़ाई के वक्त जब से विदेश में है मां का नाम या अभिभावक का नाम लिखती रही हूं ।

चाहती हूं मेरे पास आकर रहे—यहीं कुछ काम करे । क्यों आएगा वह मेरे पास ? मैंने ही कब चाहा कि अपना वक्त उसे दूं ?

क्यों ऐसी बातों से पाप-पुण्य को तौलती रही कि सफलताओं की ऊंची अट्टालिकाओं में रहकर यह सब बेमानी है कि जिंदगी को सामाजिक ढकोसलों में बांधा जाए । किस किताब में लिखा है ऐसा सब कुछ ? बाग में फूल खिला था, सुगंध तो बिखरती ही, देखनेवाले भी जमा होते ही, पर फूल तोड़कर मसल ही दिया जाएगा, इसका अहसास क्यों नहीं कर पाये ?

भला, यह भी कोई तर्क था कि अपने जीवन से अगर किसी को सुख मिल जाए थोड़ी देर, तो कौन-सा पाप है ? ये सुख भोगनेवाले सिर्फ लूटनेवाले थे । ऊंचाई पर वह नीचे से उठती अंगुलियां, छींटे, ताने क्या सुनायी देते हैं ?
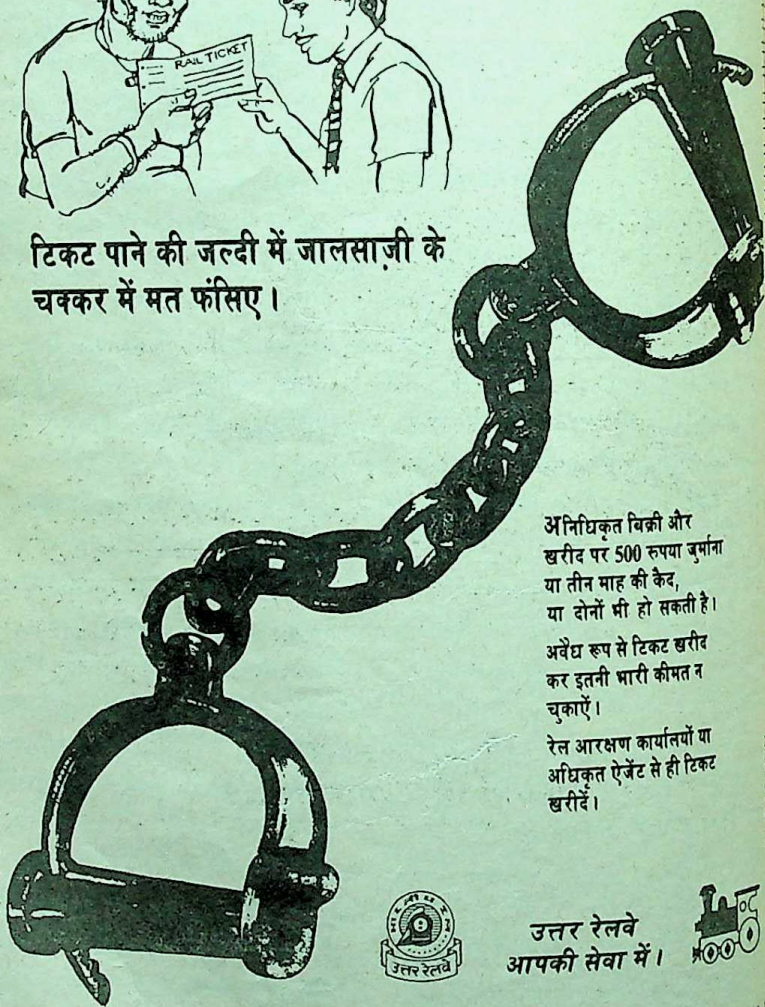
• • •

'वह तो आप मां हो, इसलिए नहीं कहता हूं।' एक बार सुहास ने कहा था । क्या इन्हीं बातों की ओर इंगित कर रहा था ?

"ओफ । कितनी शरम और कितना बोझ महसूस कर रही हूं"—सुहास ने कभी अगर कहा कि वह सुधीश का बेटा नहीं है तो ? सोच भी नहीं सकती क्या होगा ?

इतने भीड़भरे माहौल में रही हूं कि ये सूनी अकेली जिंदगी कैसे काट सकूंगी ? ये हंसती हुई बुलंदी, ये कहकहोंभरे इशारे—क्या यूं ही मेरा पीछा करते रहेंगे ? यह नाम, नेकनामी, यह बदनामी, यह पाप-पुण्य सब ऐसे ही भटकाता रहेगा ।

अपनी परछाई से भी डर रही हूं । इतनी ऊंचाई से गिरी हूं कि उठने की हिम्मत कैसे जुटा सकूंगी । इन्हीं बातों के, इन्हीं उलझनों के ताने-बाने बुनती ही रही हूं । टालते रहने की या कहूं कि समस्याओं और दुःखों से मन छुड़ाने के लिए 'सब ठीक है' 'सब जायज है' के आवरण को ओढ़े रही और अपनी कमजोरियों को ढके रही । क्या फर्क पड़ता अगर किसी के प्रति समर्पित रहकर एक गुमनाम जिंदगी ही बसर कर ली होती और कहीं इन बुलंदियों पर न पहुंचकर खाली अंधेरी गलियों में भटकती ही रह गयी होती, तब क्या होता ? क्यों जिंदगी को एक खैरात बना भौतिक सुखों के लिए तहस-नहस कर दिया ?

घनघोर वर्षा में बिजली भयानक रूप से कड़क रही है । रह-रहकर घर की हर दीवार कांप रही है । सुगरा बी पास के कमरे में है, 'मुझे तंग न करे',—यह कहकर उसे भेज दिया है । मेरा रोना देखकर जही नहीं रही थी वह ।

उसने कभी मुझे रोते देखा ही नहीं । कब से मेरी निजी नौकरानी रही है, बार-बार बिनती कर रही थी । पगली कहीं की । यूं जिंदगी खत्म करने की हिम्मत कहां है मुझ में ?

मैंने तो जिंदगी तिल-तिलकर खत्म कर दी है । इस बेजान शरीर को खत्म करके मिलेगा ही क्या ? जिस आक्रोश और तनाव को लेकर छोटा-सा झगड़ा किया था, इतना तूल दिया था, उसको सुलझाने के लिए अपनी तो अपनी, दो और बेकसूर जिंदगियों की भी कुर्बानी दे डाली ।

किसी ने क्या खोया ? न सुधीश ने ? न शशांक ने ? न परेश ने ? और न ही सोमेश ने या जैफरी ने ? खोया तो सिर्फ मैंने । पाया शायद, बहुत कुछ या कुछ नहीं यह भी नहीं जानती ।

पर जो कुछ पाया आज सब ढह गया ।

—द्वारा श्री रा. प्र. मिश्र
पूर्व पुलिस महानिदेशक,
ई १/१८३, अरेरा कॉलोनी, भोपाल

## बड़ा हिरण

**विश्व में सबसे बड़े हिरण के बारे में पता चला है । इसका नाम है 'अलस्कन मूस' इसकी लंबाई ७ फुट ८ इंच (२.३ मीटर) और वजन लगभग १८०० पौंड (८१६ कि. ग्रा.) है । बारह सींगे की नोकदार सींगों की दूरी (१९९ से. मी.) है ।**

# झाड़ू लगाने का काम मिला !

रामनरेश त्रिपाठी

सन १९२१ की बात है । गांधीजी का असहयोग आंदोलन जोरों पर था । हर एक कार्यकर्ता को हर वक्त यह आशंका बनी रहती थी कि न जाने पुलिस कब आये और उसे पकड़ ले जाए ।

इलाहाबाद के हिवेट रोड पर एक मकान के ऊपर के एक बड़े कमरे में प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की मीटिंग हो रही थी । मीटिंग में कमेटी के पचपन सदस्य मौजूद थे । उनमें मैं भी था । दर्शक भी काफ़ी संख्या में कमरे में भरे थे ।

कांग्रेस के एक नेता सरकार के जबरदस्त मुकाबले की बात बता रहे थे, उसी समय एक स्वयंसेवक ने, जो छज्जे पर खड़ा सड़क की ओर देख रहा था, सूचना दी कि पुलिस आ गयी । बस का भोंपू भर सुनायी पड़ा । मिनट-दो-मिनट बाद ही एक अंगरेज जीने से ऊपर आकर कमरे के दरवाजे पर खड़ा हो गया और अकड़ के साथ बोला—मैं सबको गिरफ़्तार करता हूं ।

हम लोग तो जैसे गिरफ़्तार होने के लिए तैयार ही बैठे थे । झटपट उठ खड़े हुए और एक-एक करके नीचे आ गये । पुलिस के सिपाहियों ने हमें बस में भरकर दरवाजा बंद कर लिया । अंगरेज ड्राइवर की बगल में बैठ गया और बस चल निकली ।

जनवरी का महीना था । ऊनी कोट और

स्व. रामनरेश त्रिपाठी (१८८९-१९६२) खड़ी बोली के प्रारंभिक काल के प्रमुख प्रकाश-स्तंभ थे । श्रीधर पाठक के बाद त्रिपाठीजी का ही युग आता है । उनका साहित्य-सृजन बहु-आयामी है । गद्य और पद्य की विभिन्न विधाओं में उन्होंने खड़ी बोली को परिमार्जित-परिष्कृत किया है । 'मिलन' (१९१७), 'पथिक' (१९२०) और 'स्वप्न' (१९२८) उनके तीन खंड काव्य हैं । तीनों का भाव-क्षेत्र स्वतंत्रता-संग्राम और स्वदेशोत्कर्ष है । तीनों काव्यों की सृजनात्मकता द्विवेदी-युग और छायावादी-युग के बीच सेतु स्थापित करती है । 'मानसी' नाम से प्रकाशित त्रिपाठीजी का एक कविता-संग्रह भी उपलब्ध है जिसकी कुछ कविताएं अपने उदात्त अर्थ-वैभव एवं मर्मस्पर्शी रसात्मकता में आज भी बेजोड़ हैं ।

त्रिपाठीजी का गांधीजी से निकट का संपर्क था । गांधीजी के असहयोग आंदोलन में भाग

सदरी तो करीब-करीब सबके बदन पर थी; बाकी खद्दर की धोती, कुरता और टोपी के सिवा और कोई वस्त्र शायद किसी के पास नहीं था। जो सदस्य दूर के जिलों से आये थे, उनकी जेबों में कुछ रुपये भले ही रहे हों, शहरवालों के पास तो कुछ पैसे ही रहे होंगे। मेरे पास एक रुपये की रेजगारी थी।

पहली रात हम लोगों की इलाहाबाद के मलाका जेल में कटी। न खाना मिला, न पीना; न ओढ़ना मिला, न बिछौना। सारी रात हम लोगों ने जमीन पर बैठे-बैठे या लेटकर बिता दी।

दूसरे दिन हम लोग एक अंगरेज मजिस्ट्रेट के सामने खड़े किये गये। उसने हर एक से पूछा—कुछ कहना चाहते हो?

हम लोगों ने तय कर लिया था कि हम लोग मुकदमे में कोई भाग न लेंगे। हर एक ने कहा—"मैं कुछ नहीं कहना चाहता।"

हर एक का बयान लिख लेने के बाद ही वह सजा भी सुना देता था। हर एक को उसने डेढ़-डेढ़ वर्ष की सजा दी। शायद वह पहले ही से तय करके आया था। मुझे डेढ़ वर्ष की कैद और एक सौ रुपया जुरमाने की सजा दी। जुरमाना न वसूल होने पर एक महीने की सजा और। डेढ़ वर्ष और सौ रुपये जुरमाना की सजा और कइयों को भी दी थी।

लेकर वे कई बार जेल गये थे। त्रिपाठीजी का सृजन विद्रोह और क्रांति के शंखनाद से प्रारंभ होकर निर्माण और लोकमंगल की स्वर-माधुरी में प्रतिध्वनित होता है। भाव-सौंदर्य और कर्म-शौर्य का सम्यक समन्वय त्रिपाठीजी के काव्य की अपनी विशेषता है। अदम्य आशावाद और प्रखर कर्म-निष्ठा ने इनकी काव्य-रचना को जो ओजस्विता प्रदान की है वैसी 'दिनकर' के बाद हिंदी साहित्य-सृजन में फिर नहीं देखी गयी। किंतु त्रिपाठीजी सबसे अधिक स्मरणीय हैं— उनके लोक-गीतों के संग्रह के लिए। गांधीजी ने उन्हें लोकगीतों के संग्रह का एक बार जिक्र-भर किया था। किंतु त्रिपाठीजी के फक्कड़, यायावरीय स्वभाव के लिए यह संकेत ही मानो 'चरैवेति-चरैवेति' मंत्र का जागृति-स्फुरण बन गया। वे कई वर्षों तक कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक [illegible] की यात्राएं करते रहे, और इस परिक्रमा में उन्होंने देश की अनेक भाषाओं के सैकड़ों लोकगीत संग्रहीत किये।

उन दिनों आंदोलन की ऐसी धूम थी कि खबरें हवा पर चढ़कर दौड़ती थीं, और रेल और तार से भी पहले पहुंच जाती थीं। मेरी गिरफ़्तारी की खबर मेरे बड़े भाई को साठ मील दूर के गांव में मिल गयी थी और वे दूसरे ही दिन इलाहाबाद आ पहुंचे थे। दिनभर उनको मुझसे मिलने का मौका नहीं मिला और बिना कुछ खाये-पिये, बिना नहाये-धोये वे जेल के फाटक पर बैठे रहे।

रात में करीब आठ बजे हम लोग फिर बस में भरे गये। मेरे बड़े भाई बस के बाहर खड़े रो रहे थे और मैं उनको तसल्ली दे रहा था। मैंने उनको कहा कि घर लौट जाइए और मां को ढाढ़स बंधाइये, मैं अठारह-उन्नीस महीने बाद लौट ही आऊंगा, चिंता न कीजिए।

हम लोगों को ओढ़ने-बिछाने का कोई सामान नहीं मिला था।

मेरे साथियों में एक बंगाली युवक चटर्जी थे। वे जरा नटखट स्वभाव के थे। जेल या पुलिस के एक अंगरेज कर्मचारी मैकफर्सन से उनकी कुछ कहा-सुनी हो गयी थी। उन्होंने मैकफर्सन को बेशरम और डरपोक आदि कह डाला था। जब बस चलने को हुई, तब मैकफर्सन ने झट से बस का दरवाजा खोला और बदला लेने की नीयत से चटर्जी को एक घूंसा मारकर तत्काल दरवाजा बंद कर दिया। चटर्जी के पीछे ही सटकर मैं बैठा था। चटर्जी ने तो अपना सिर हटा लिया. घूंसा अचानक मेरे सिर में लगा। फिर तो बस में बैठे सारे साथी अंगरेजी में सरकार को सरापने लगे।

बस हम को इलाहाबाद स्टेशन पर पहुंचा गयी। वहां से हम लोग ट्रेन के दो-तीन डिब्बों में बैठा दिये गये और ट्रेन चल पड़ी। डिब्बों में पुलिस के जवान भी थे। यह मालूम हो चुका था कि हम लोग आगरा जेल में रक्खे जाएंगे। रास्ते के हर स्टेशन पर एक बड़ी भीड़ हम लोगों का दर्शन करने के लिए खड़ी मिलती। रेलवे लाइन के किनारे-किनारे भी गांव के लोग—स्त्री-पुरुष, बुड्ढे, प्रौढ़ और युवक खड़े दिखायी पड़ते और ट्रेन को देखते ही महात्मा गांधी की जय बोलते थे। हम लोग भी उच्च स्वर से जय बोलते थे।

रास्ते में एक मनोरंजक बात यह हुई कि अपने एक साथी से कुछ कागज, जो उसकी जेब में थे, लेकर मैंने फाउंटेन पेन से जो मेरे पास था, एक चिट्ठी अपने बड़े भाई को और दो चिट्ठियां दो मित्रों को लिखकर और उनकी पीठ पर पता लिखकर चलती ट्रेन की खिड़की से, पुलिस की आंख बचाकर, बाहर फेंक दीं। लिफाफे तो हमारे किसी के पास थे नहीं, इससे खुली चिट्ठी ही फेंक दी थी।

चालीस वर्ष पहले की बात है, याद आने पर आज भी मुझे हर्ष होता है कि उन दिनों गांधी जी के प्रति जनता में कितनी श्रद्धा व्याप्त थी और राजनीतिक कैदियों के साथ उनमें कितनी सहानुभूति थी कि मेरी सब चिट्ठियां लिफाफे में बंद करके और उन पर चिट्ठियों की पीठ पर लिखे हुए पते लिखकर डाक में डाल दी गयी थीं और सभी मिल भी गयी थीं। यह बात जब मेरे बड़े भाई और मित्र आगरा जेल में मिलने आये तब उन्हीं की जुबानी मालूम हुई।

आगरा जेल में हम लोग रात के वक्त पहुंचे थे और धोती-कुरते के सिवा हमारे सब कपड़े [illegible] लिये गये थे। हम

सब को एक लंबे कमरे में पहुंचाकर उसका दरवाजा, जिसमें किवाड़ नहीं थे, बल्कि लोहे की मोटी-मोटी सींकों का था, बाहर से बंद करके ताला लगा दिया गया था । अंदर बहुत से लोहे के पलंग, जैसे अस्पतालों में होते हैं, कतार की कतार पड़े थे । किसी पर कोई गद्दा या बिछौना नहीं था । कमरे की दो बड़ी दीवारों में दोनों ओर, आमने-सामने जंगले लगे थे, जिनमें किवाड़ नहीं थे । आगरे की सरदी बड़ी भयानक थी । उस रात में हवा भी चल रही थी । सींकचों से हवा आती थी, बरछी-सी लगती थी । पलंग की जाली में से हवा आती थी, इससे लेट नहीं सकते थे । सारी रात हम लोग सरदी में ठिठुर गये । न बैठे रह सकते थे, न लेटे रह सकते थे, सिर को घुटनों में डालकर किसी तरह सांस लेते रहते थे ।

पलंगों पर बैठे-बैठे कुछ मित्रों ने जोर-जोर से रामधुन लगाना शुरू किया । उससे कुछ गरमाहट जरूर आयी । रामनाम में इतना बल है, और शब्द में इतनी शक्ति है, हम यह महसूस करते रहे । गाना जाननेवाले कुछ साथियों ने भजन भी गाये । बहरहाल सोया तो कोई नहीं । कुछ लोग हाथों से अंगों को रगड़-रगड़ कर उनमें गरमी पैदा करने में लगे थे । बड़ी तकलीफ थी, जबकि शाम को खाना भी नहीं मिला था । कहा गया था कि कल जब जेल के रजिस्टर में नाम दर्ज कर लिया जाएगा, तब खाना और कपड़ा मिलेगा ।

आगरा जेल में मुझे झाड़ू लगाने का काम मिला था । जांघिया और आधी बांह का कुरता पहनने को मिला । मेरे एक पैर में लोहे का एक कड़ा और गले में मोटे तार की [illegible] पहना दी

गयी थी, जिसमें करीब तीन इंच लंबी, पौन इंच मोटी और दो इंच चौड़ी लकड़ी की तख्ती लटका दी गयी थी, जिस पर नंबर आदि लिखे थे । मुझे जांघिये से बड़ी तकलीफ थी । उसमें इजारबंद नहीं था । उन दिनों मेरे तोंद भी थी । जांघिया पेट पर अंटता नहीं था और उसके दोनों कोने मुझे दिनभर और रात में जब तक मैं जागता रहूं, हाथ से पकड़े रहने पड़ते थे । रात में सोता तो जांघिया सरककर पैरों से बाहर हो गया हुआ मिलता और नग्न ही उठकर, जांघिया पहनकर उसे बायें हाथ से पकड़े रखना पड़ता था ।

हमको लोहे के दो-दो तसले भी मिले थे—एक छोटा, एक बड़ा । बड़े तसले को हम लार्ड तसला कहते थे और छोटे को लेडी तसला । लेडी तसले में दाल या तरकारी दी जाती थी और लार्ड तसले में पानी । रोटियां हाथ में पकड़ा दी जाती थीं । दिन बिताने का [illegible] तरीका और क्या होता !

पहले दिन जो दाल आयी, रह कोयले जैसे काले रंग की थी । वह शायद लोहे के बरतन में पकायी गयी थी । कोई तरकारी मिली थी या नहीं, याद नहीं आ रहा है । रोटियों में मिट्टी मिली थी । दांत से कुचली नहीं जा सकती थी । जेल में ही कुछ दिनों के बाद मालूम हुआ कि कैदियों के लिए दस छंटाक आटे में छह छंटाक मिट्टी मिलाकर रोटी बनायी जाती है । कई दिनों तक हम लोगों को मामूली कैदियों का ही खाना दिया जाता था । अगले दिन जो दाल आयी, उसमें सफेद-सफेद कीड़े, जो सूत के टुकड़ों की तरह थे, नजर आये । बात यह थी कि वर्ष का अंत था, जेल में जो दाल कैदियों के लिए खरीदकर रक्खी गयी थी, उसके नीचे के हिस्से में कीड़े पड़ गये थे । वह मय कीड़ों के पानी में उबाल दी जाती थी । वही हम लोगों के हिस्से में पड़ी ।

हम लोगों ने जेल का खाना लेने से इनकार कर दिया । खाना रोज समय पर आता और लौट जाता ।

जेल के पास ही, ऊंची चहारदीवारी के बाद एक पहाड़ी थी, शहर के लोग जो सबेरे दिशा-मैदान के लिए उधर जाते, वे पहाड़ी पर चढ़कर जेल के अंदर की चहल-पहल देखने लगते थे ।

हम लोगों ने तीन या चार उपवास कर लिये थे । चौथे दिर हमारे एक साथी ने अपनी ही सूझ-बूझ से हमारे उपवास का हाल एक कागज पर लिखकर और उसे एक कंकड़ से बांधकर चहारदीवारी से बाहर फेंक दिया । पहाड़ी पर से किसी ने देख लिया और वह कागज उठा ले गया ।

राजनीतिक कैदी सड़ा-गला खाना नहीं [illegible] रहे हैं और चार दिनों से उपवास कर रहे हैं, [illegible] समाचार जंगल की आग की तरह आगरा [illegible] में फैल गया और पूरे शहर में हड़ताल हो गयी । सभाएं होने लगीं और अंगरेजी सरकार की कायरता और नीचता का उद्घोष होने लगा । अगले दिन पहाड़ी पर से एक ढेला चहारदीवारी के अंदर आया, उसमें एक पुर्जा बंधा हुआ था । उसी में हड़ताल होने की [illegible] लिखी हुई थी । इसके अगले दिन जेल [illegible] का बड़ा अधिकारी, जो अंगरेज था, आया [illegible] हम लोगों को बुलाकर खाने की शिकायतें सुनीं । उसने कहा—लोहा तो शरीर के लिए बहुत ताकत देनेवाला है । हमारे साथी प्रोफे[illegible] साहब ने कहा—मैं यूनिवर्सिटी में साइंस का प्रोफेसर हूं और जानता हूं कि लोहे का जंग कितना हानिकारक है । आपके पास भी तो शरीर है, क्या आप लोहे के जंग वाला शोरबा लेते हैं ? साहब चला गया । उसके जाने के एक-दो दिन बाद ही हम लोग बस में भरकर आगरा सेंट्रल जेल में भेज दिये गये ।

यह गांधीजी की पहली सेना थी, जो अंगरेजी हुकूमत के सबसे बड़े किले जेल के भय को तोड़ने के लिए आयी थी. जो जनता [illegible] सिर पर बनाया गया था । शुरू-शुरू में यह सेना शिवजी की बारात थी । इसमें वकील, प्रोफेसर, सेठ, किसान, मजदूर, इंजीनियर, स्कूल मास्टर, स्वामी, पंडित, पुजारी, आस्तिक, नास्तिक, कवि, शायर, गवैया, पहलवान, [illegible] डॉक्टर, मौलवी, ग्रंथकार, पत्रकार, विरही, छैला, क्रांतिकारी, हिंदू, मुसलमान, ईसाई, बुड्ढे और जवान पचासों किस्मों के लोग [illegible]

गये थे और पकड़कर बैरकों में भर दिये गये थे।

उन दिनों हम लोग जेल के लिए नये थे और जेल हमारे लिए। दोनों को एक-दूसरे के पहचानने में शंकाओं का समाधान खुद कर लेना पड़ा था।

सेंट्रल जेल में कुछ दिनों तक हम लोगों को ढाई रुपया रोज के हिसाब से मनमांगा सामान मिलता रहा। लेकिन हम लोग गांधीजी के आदर्शों को ध्यान में रखकर उतना ही सामान लेते थे, जितने की हमें नितांत जरूरत होती।

प्रबंध में सुविधा होने के लिए जेल के सुझाव से हमने दस-दस साथियों का एक-एक मेस बना लिया। रोज सबेरे एक बनिया, जो शायद ठेकेदार था, रजिस्टर लेकर आता और मेस-मैनेजर से चीजों के नाम लिखवा ले जाता। अगले दिन सब सामान लाकर दे जाता।

बनिया बड़ा ठग था। जो चीज बाजार में चार आने सेर मिलती, उसका दाम वह एक रुपया सेर काटता। हम लोग एतराज नहीं करते थे, क्योंकि ढाई रुपया इतना काफी था कि संयम से रहने से उसका आधा भी बहुत होता था।

साथियों में भिन्न-भिन्न स्वभाववाले लोग थे। इससे सबकी रुचि का ध्यान रखना पड़ता था। कुछ लोग स्वयंपाकी भी थे, कुछ लोग केवल हिंदू के हाथ और साथ का खाना खाते थे, और कुछ हिंदू, मुसलमानों की थाली में परोसा खाना साथ बैठकर भी खाते थे।

कुछ दिनों के बाद ढाई रुपये का डेढ़ रुपया कर दिया गया। तो भी खाने-पीने को कम नहीं होता था।

हर एक मेस में दो-दो या तीन-तीन कैदी दिये गये थे, जो खाना बनाने, सफाई करने और पानी देने का काम करते थे। वे सब चोर, डाकू, गिरहकट, ठग, उचक्के, जुआरी और दुराचार आदि भिन्न-भिन्न जुर्मों के सजायाफ्ता कैदी थे।

उनमें से एक का किस्सा लिखने लायक है। उसका नाम सत्यनारायण था। वह ब्राह्मण था और बनारस जिले का था। उसे सात वर्ष की सजा हुई थी। वह देखने में सुंदर और रईस घर का लगता भी था। छह वर्ष काट चुका था। वह खाना बनाता था। एक दिन हम लोग खा चुके, तब उसकी दाल में भी दो चिम्मच घी डाल दिया गया। दाल में घी पड़ा देखकर वह रोने लगा। घी से ज्यादा उसके आंसू गिरे थे। पूछने पर उसने बताया कि वह एक प्रतिष्ठित घर का है। घर में पांच हलों की खेती होती है। कई गायें और भैंसे हैं। किसी मामले में उसके पिताजी और पुलिस में कुछ कहा-सुनी हो गयी थी। पुलिस ने कत्ल के एक मामले में उसे झूठमूठ फंसा दिया और मजिस्ट्रेट ने उसे सात वर्ष की सजा दे दी थी।

उसने कहा—सात बहनों-भाइयों में मैं सबसे छोटा हूं। मां मुझे बहुत प्यार करती थी। वह अपने हाथ से मेरी दाल में घी डालती थी। आज घी देखकर मां की याद आ गयी। छह वर्षों तक मुझे घी देखने को नहीं मिला था।

वह देर तक रोता रहा। हम लोगों का भी जी भर आया।

— प्रस्तुति : रतनलाल जोशी

# काले पानी की काली प्यास

● मौलवी फजल हक

सितम्बर, १८५७ !

साढ़े चार महीने तक उम्मीद का चांद दिल्ली पर चांदनी बरसाता रहा । इसके बाद तो दुर्भाग्य का काजल मानों चारों तरफ से बरस पड़ा हो । बदहवास खिसियाये सिपाहियों की भगदड़, किंकर्त्तव्यविमूढ़ जनता, भयातुर मुगलों का शाही परिवार । और फिर विजयोन्मत्त अंगरेजों ने मार-काट की थी । हजारों मारे गये, लाखों की संपत्ति लूटी गयी, गेहूं के साथ घुन भी धड़ाधड़ पीसे गये । जो निर्दोष थे, उन्हें भी दोषियों की कतार में खड़ा करके गोली से उड़ा दिया गया ।

और फिर अंगरेजों ने बंदी बनाया मौलवी फजल हक को । जब मौलवी साहब सिपाहियों और जनता के समक्ष बोलते तो एक सम्मोहन-अस्त्र-सा छोड़ते थे । उन्हें सुनकर अपाहिज भी एक बार लड़खड़ाते हुए उठ पड़ते । वे शब्दों के जादूगर थे, मरी हुई उम्मीद के मसीहा थे । उनकी कलम में सैकड़ों तलवार की मार थी । वे क्रांति के दार्शनिक-योद्धा थे । जब दिल्ली लड़खड़ाकर गिर गयी, तो वे भागकर खैराबाद पहुंच गये और फिर उन्होंने अवध में अपना क्रांति-शंख फूंका । अवध निवासी भी एक बार तो सरों पर कफन बांधकर अंगरेजों पर टूट पड़े, पर जब भाग्य की बैसाखियां टूट जाती हैं, फिर कोई भी कुछ नहीं कर पाता । मौलवी फजल हक अपना स्वतंत्र-यज्ञ करते हुए ही पकड़े गये और उन्हें लखनऊ लाया गया ।

अंगरेज उनके दमकते हुए अतीत को जानते थे ।

मौलवी फजल हक वल्द मौलाना फजल इमाम खैराबादी, सदरुस्सरूर (चीफ जज) निजामे बादशाह अकबर शाह द्वितीय । अट्ठाईस वर्ष की आयु में सन १८२५ में वे अंगरेजों की दिल्ली रेजीडेंसी में 'सरिश्तदार' (कचहरी चीफ) मुकर्रर हुए थे । कुछ साल रह कर उन्हें न जाने क्यों अंगरेजों से नफरत हो गयी और वे 'ब्रिटिश-राज' के खिलाफ झज्जर, सहारनपुर, टोंक, रामपुर और अवध निवासियों को उकसाते रहे । फिर सन १८४८ में वे लखनऊ में 'सदरस्सरूर' बन गये और सन १८५६ तक इसी पद पर रहे । जब अंगरेजों ने अवध हड़प लिया, तब वे फिर से सक्रिय हो उठे और अलवर तक आ पहुंचे । मई, १८५७ में वे दिल्ली आ धमके और अपनी वाणी का जादू फैलाने लगे । 'सादिकुल अखबार' में २६ जुलाई १८५७ में उनका 'फतवा-ए-जिहाद' छपा, जिसने क्रांति-युद्ध के हवन में घी का काम किया ।

पकड़े जाने पर अवध के जुडीशयल कमीश्नर मिस्टर जी कैम्बल और खैराबाद डिविजन के ऑफीशिएटिंग कमीश्नर मेजर बैरन ने ४ मार्च, १८५९ को उन पर दो आरोप
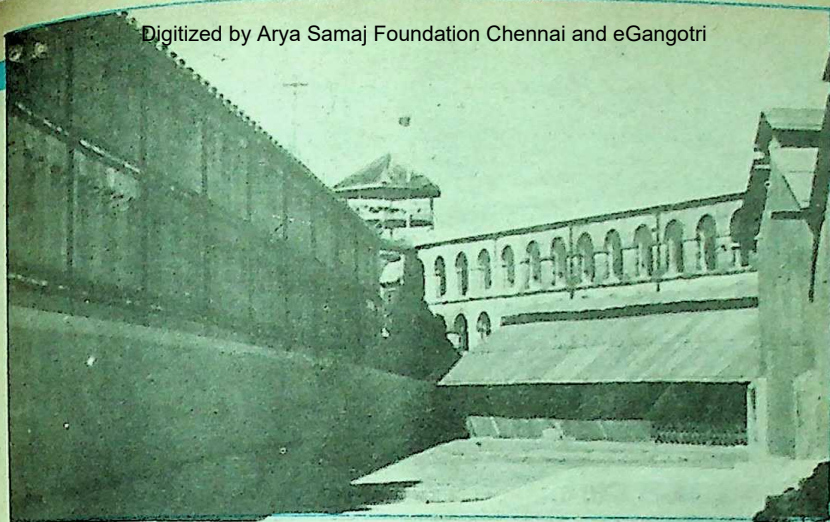
लगाये। पहला, सन १८५७ और १८५८ में उन्होंने अपनी जादुई तकरीरों द्वारा गदर को भड़काया। दूसरा, सन १८५८ में बूंदी में वे बागियों के शिरोमणि मम्मू खां की मजलिसे-आजादी के मुखिया थे और गदर को भड़काते रहे।

जब मौलवी साहब ने उत्तर-पश्चिम प्रांत के लेफ्टिनेंट गवर्नर से कहा कि न्याय-कमीशन गलती कर रहा है, क्योंकि गदर में हिस्सा लेनेवाले फजल हक शाहजहांपुर का निवासी है और वे फजल हक खैराबाद के रहनेवाले हैं। उनकी प्रार्थना पर कोई गौर नहीं किया गया। फलतः उन्होंने एक अपील १ फरवरी, १८६० को सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फॉर इंडिया को भी भेजी पर वहां भी कुछ नहीं बना। फिर कलकत्ते के प्रतिष्ठित मुसलमानों ने एक सामूहिक निवेदन-पत्र गवर्नर-जनरल को भेजा पर सरकार ने उसे भी नामंजूर कर दिया। और फिर अंगरेजों ने उन्हें सजा सुना दी कि 'उनकी सारी जायदाद जब्त कर ली जाए और ता-उम्र काला पानी भेज दिया जाए।'

शकस्ता-दिल, आंसुओं से लबरेज आंखें लिए बूढ़े मौलवी फजल हक अपने वतन के मिट्टी से दूर अंडमान टापू ले जाए गये। एक विशालकाय पत्थर के पिंजड़े में अवध की बुलबुल को डाल दिया गया।

## काले पानी की यातनाएं

मौलवी साहब को कड़ी यातनाएं दी गयीं। अपने दुःखों को उन्होंने फटे-पुराने कपड़ों के टुकड़ों पर, कागज के पुर्जों पर लिखा। ना जाने उन्हें कौन-सी उम्मीद दिलासा दे रही थी कि वे आश्वस्त हो गये थे कि उन्हें रिहा कर दिया जाएगा और एक बार फिर वे अवध के आमों के दरख्त के घने सायों के नीचे कोयलों की कूक सुनेंगे।

उन्होंने काले पानी की जेल में अरबी में अपनी व्यथा लिखी थी। उनकी इस व्यथा-कथा को 'मुकद्दमातुस्सौरतुल हिंदिया' का नाम दिया गया। जिसमें वे लिखते हैं, 'मैं एक टूटा हुआ बेजार कैदी यह लिख रहा हूं। न जाने कैसे मैं इन आफतों को सह रहा हूं और उस मालिक से, भले ही थोड़ी ही देर की सही, कुछ
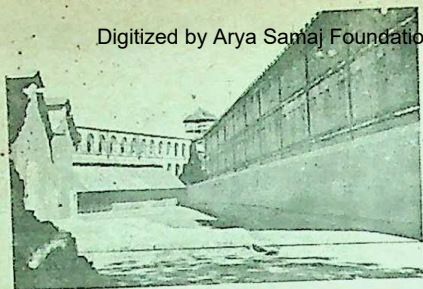
राहत की भीख मांग रहा हूं । मैं जंजीरों से जकड़ा हुआ हूं और लगभग पागल-जैसा हो गया हूं । मेरा अतीत कितना सुखद था, पर आज तो मैं तकलीफों के मकड़-जाल में फंस गया हूं । मैं रोज खुदा से इबादत करता हूं कि मुझे इस दोजख से छुटकारा दिला दे । मैं एक खौफजदा कैदी हूं, जिस पर इन जालिमों ने कहर ढा रखा है । मेरे नफीस कपड़े उतार लिये गये हैं और मुझ पर बेपनाह आफतें डाल दी गयी हैं । मैं एक बहुत ही निराश कैदी हूं जिस पर इस संगदिल जेलर ने बदतमीजियों की कसर नहीं छोड़ी है । फिर भी मुझे अल्लाह की रहमत पर आज भी भरोसा है । मैं सीधा-साधा, नाजुक मिजाज शख्स इस खतरनाक शैतान के पंजे में आ गया हूं । मुझ पर बेहद सख्ती और बेरहमी की जा रही है । मैं एक सफेद खाल के आदमी की कैद में हूं जिसका दिल स्याह काला है, आंखें बिल्ली जैसी हैं, बाल भूरे हैं और निहायत कमीना है । उसने मेरे कपड़े उतारकर फाड़ डाले हैं और घटिया मोटे कैनवास के कपड़े पहना दिये हैं । मैं बहुत दुःखी हूं और अपने वतन और लोगों को देखने को तड़प रहा हूं । बहुत ही उदास हूं मैं, मेरे सब साथी छीन लिये गये, यहां तक कि मुझे एक नौकर तक नहीं दिया गया है । बगैर दलील सुने, सफाई सुने मुझे सजा दी गयी है । मेरा अंग-अंग दुःख रहा है । मैं एक हारे-थके हुए शेर के मानिंद हूं, गमगीन, टूटा हुआ... ।"

'...मुझे दीन परस्त और एक नामवर उलेमा जानकर ही यह (जेलर) मुझ पर जुल्म ढा रहा है, ताकि मेरी हिम्मत भी टूट जाए । यह सब कुछ तो इन अंगरेजों ने किया था, जिससे हमारी विद्या-प्रणाली नष्ट हो जाए और हमारी किताबों से ज्ञान से भरे पन्ने फाड़ फेंके हैं । इस क्रांति में सैकड़ों घर उजाड़ दिये गये और सब जगह गम के बादल छा गये.... ।'

'इन अंगरेजों के दिल मैले थे और वह अपना सिक्का जमाकर फूले नहीं समा रहे हैं । इन्होंने हिंदुस्तान को चारों तरफ से घेर लिया है, भले लोगों की बेइज्जती की है और जिसने भी इनके खिलाफ आवाज उठायी है, उसे कुचल डाला है । इन्होंने अपने वादे तोड़े हैं और दगाबाजी से हमें काबू में किया है.... । इन्होंने अपने पुजारी और पादरियों को तैनात करके गलत बातें फैलायी हैं, हमें गुमराह करने की कोशिशें की हैं । यहां तक कि ये हमारे गांवों और शहरों में हमारे ही मजहब के खिलाफ बोलकर हमारे भोले-भाले लोगों के दिमाग में शक डाल रहे हैं ।..... ।

'मामला इतना तूल पकड़ गया था कि हमारे बागी सिपाहियों ने तैमूर के वंशजों की दिल्ली में शरण ली । वहां इन सिपाहियों ने उस आदमी को गद्दी पर बैठाया, जो पहले इनका बादशाह था, और जिसके वजीर और उमराव हुआ करते थे । लेकिन यह बादशाह बहुत बूढ़ा था और दर हकीकत इसकी बीवी इस पर गालिब थी । इसका वजीर तो स्वयं अंगरेजों से मिला हुआ था । और यही हाल इसके रिश्तेदार-नातेदारों का था । ये एक ऐसा बादशाह था, जिसे कुछ

नहीं आता था और जो कुछ भी करता था, वह गलत करता था। वह न तो अपना फैसला कर पाता था, न ही हुक्म दे पाता था और न ही अच्छा या बुरा करने के काबिल था। इसने बेटों और पोतों को सिपाहियों का सरदार बना दिया था, पर वे कायर, मूर्ख और बेवफा थे, जो अक्लमंदों से दूर भागते थे। .... और इसी दौरान कुछ गांवों और शहर के बहादुर मुसलमान फतवा सुनकर शहीद होने निकल पड़े, जिहाद लड़ने। दिल्ली में मेरे खानदान के लोग और कुछ रिश्तेदारों ने मुझे हालात सुधारने को बुलाया। और मैं जैसा भी तकदीर का हुक्म हुआ, दिल्ली की तरफ बढ़ चला। वहां अपनों से मिला, उनके पास रहा, क्योंकि दिल्ली ही मेरा हैड क्वार्टर था। वैसे मैंने अपने लोगों को सही सलाह दी, पर उन्होंने न मेरी सलाह मानी न ही मेरे बताये रास्ते पर चले। और जब अंगरेजों ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया, तो शाही फौज और शहर के लोग सब चले गये। खाने की चीजें गायब हो गयीं। यहां तक कि पानी भी मिलना दूभर हो गया क्योंकि, इन सब चीजों पर तो दुश्मन का कब्जा हो गया था। इस हालत में भी मैं यहां पांच दिन और रात रहा। फिर मैं अपने परिवार और बच्चों के साथ चल पड़ा था—सब कुछ छोड़कर—अपनी किताबें, साजोसामान और जायदाद, क्योंकि सवारी का कोई बंदोबस्त ही नहीं था। मैंने फिर अल्लाह का नाम लेकर एक सड़क पकड़ ली। अब तो अल्लाह के ही हाथों सब कुछ था।

'दिल्ली पर काबिज होकर फिर अंगरेजों ने बादशाह और उसके बेटे पोतों को पकड़ने की सोची, जो कि वहां रह रहे थे, जहां तकदीर उन्हें घसीट कर ले गयी थी। और वे बदनसीब भी किस्मत के फरेब-जाल में फंसकर उम्मीद लगाये बैठे थे। बादशाह भी मकबरे में बहुत निश्चिंत होकर बैठा था। यहीं पर उसे कैदी बनाया गया और बेटे और पोतों सहित सभी को जंजीरों से जकड़ दिया गया। रास्ते में किसी अंगरेज अफसर ने बेटे और पोतों को गोली से उड़ा दिया। उनके धड़ वहीं फेंक दिये गये। उनके सर काटकर एक थाल में रखे गये और फिर इस तोहफे को बादशाह को पेश किया गया। बाद में तो इन कटे हुए सरों को भी कुचलकर फेंक दिया गया..... ।'

### व्यथा कथा का प्रकाशन

काले पानी की इस विशाल जेल में मौलवी फजल हक यही सब रद्दी कागज के टुकड़ों और कपड़ों के चिथड़ों पर लिखते रहे। तभी किस्मत से काले पानी के एक और कैदी मुफती इनायत अहमद को सन १८६० में रिहा किया गया। मौलवी फजल हक ने जेल में लिखे सब हस्तलिखित पुर्जों के चिथड़ों को मुफ्ती इनायत अहमद को दे दिया। ये सब हस्तलिखित दस्तावेज हिंदुस्तान में आकर अलग-अलग टुकड़ों में बंट गये। एक हिस्सा रामपुर पहुंच गया, तो दूसरा हबीबगंज। तीसरा हिस्सा अलीगढ़ पहुंचा तो चौथा मक्का शरीफ। सन १८६१ में काले पानी में ही मौलवी फजल हक की मृत्यु हो गयी। मरने से पहले उनकी हस्तलिखित व्यथा-कथा के कुछ अंश उनके बेटे अब्दुल हक खैराबादी के पास भी पहुंचा दिये गये। पूरी की पूरी हस्तलिखित कथा दबा कर रखी गयी और वह गोपनीय बनी रही। सन १९४७ में जब भारत-पाकिस्तान का विभाजन

हुआ, तब अलीगढ़ के मौलवी अब्दुल शहीद खान शेरवानी ने अपने इकट्ठे किये हुए अंशों का उर्दू में तर्जुमा करके छापा और शीर्षक रखा 'बागी हिंदुस्तान'। बाद में मौलाना अबुल कलाम आजाद को मक्का शरीफ वाली प्रति मिल गयी, जिसका शीर्षक उन्होंने 'सौरतुल हिंदिया' रखा। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. मेंहदी हुसैन ने इस का नाम रखा 'मुकदमानुमा—सौरतुल हिंदिया।' आज भी रामपुर की रजा लाइब्रेरी में अरबी में हस्तलिखित यह व्यथा-कथा आपको मिल जाएगी।

मौलवी फजल हक काले पानी के जेल से रिहा होने की उम्मीद आखिरी दम तक बांधे रहे। उनके अंदर एक तड़प उठती रही—जेल से बाहर होने की। शायद, उनकी उस व्यथा का अनुमान लगाकर ही बाद में उर्दू के शायर असगर गोंडवी ने लिखा था—

**असीराने बला की हसरतों को आह क्या कहिए**
**तड़प के साथ ऊंची हो गयी दीवार जिंदां की**

निःसंदेह, असीराने बला यानी कैद में कष्ट भोगने वाले अभागे कैदी मौलवी फजल हक की हरेक तड़प के साथ अंडमान की उस अभेध्य जेल की दीवार ऊंची होती गयी थी।

**प्रस्तुति : मेजर बाला दुबे (से.नि.)**

## इनके भी बयां जुदा-जुदा

**लड़कियों के दुख अजब होते हैं सुख उससे अजब**
**हंस रही है और काजल भीगता है साथ-साथ**

परवीन शाकिर

**मैकदा हो कोई मसजिद हो कि बुतखाना हो**
**जिस जगह रूह सुकूं पाये भली लगती है**

खलिश देहलवी

**धड़कन बनकर और कभी तुम सांसें बनकर**
**शाम-सवेरे घर में आते-जाते रहना**

जफर गोरखपुरी

**तब्दीलिए मौसम को जायें तो कहीं जायें**
**सब एक-सा मौसम है इस वक्त जिधर जाओ**

शुजा खावर

**हजार बार जमाना इधर से गुजरा है**
**नयी-नयी सी है कुछ तेरी रह गुजर फिर भी**

फिराख गोरखपुरी

**मुझे तलाश थी मुझ-जैसा कोई मुझको मिले**
**क्या खबर थी इसी जुस्तजू में तुम भी हो**

कमाल अहमद सि[illegible]

**जाने क्या सोच के हम तुझसे वफा करते हैं**
**कर्ज है पिछले जनम का जो अदा करते हैं**

कैलाश [illegible]

**इंतजार भी तेरा दिल को एक रहमत है**
**रात कट गयी अपनी दिन गुजर गया अपना**

मैकश अक[illegible]

**साफ चेहरे नजर नहीं आते**
**दि के शीशे में बाल है यारो**

अफशाँ फ[illegible]

**मेरे कुछ रफीकों ने मशवरा दिया मुझको**
**वह मुझे खुदा लिक्खें उनको मैं खुदा लिक्खूं**

आजाद गु[illegible]

**(प्रस्तुति : कुलदीप तलवार)**

मरीज : ''हाय...हाय''...
डॉक्टर : ''क्यों चिल्ला रहे हो ? खराब दांत की जगह अच्छा दांत निकाल रहा हूं क्या ?''
मरीज : ''वह होता तो भी चल जाता, आप तो जीभ ही उखाड़ रहे हैं ।''

पति : ''जब मैं ऑफिस में सो रहा था, तब मैनेजर आ गया ।''
पत्नी : ''अच्छा, उसके बाद क्या हुआ ?''
पति : ''मेरे सिर के नीचे जो फाइल थी, उसे निकालकर तकिया रख कर गया !''

''यार कल दादी की मौत का बहाना बनाकर मैं दफ्तर से छुट्टी लेकर सिनेमा देखने चला गया था । और अब मुसीबत हो गयी है ।''
''क्यों क्या हुआ ?''
''आज ऑफिस से आते वक्त मैनेजर दादी की अस्थियां लाने के लिए कह रहा था !''

''क्या बात है ? आधे घंटे से मैनेजर कान पर फोन रखकर चुप ही बैठे हैं ।''
''चुप. वह तो अपनी पत्नी से बातें कर रहे हैं ।''

व्यंग्य

# लुका-छिपी का खेल

● हरि जोशी

मैं सोच नहीं पा रहा था कि ताहिर भाई से पीछा कैसे छुड़ाऊं ? वे बचपन में मेरे साथ पढ़े थे तथा कुछ दिनों से बीवी-बच्चों सहित हमारी कॉलोनी में रहने लगे थे । यदि मुझे इस बात का जरा भी अंदाज होता कि मेरी भरी युवावस्था में ताहिर मियां मुझ पर ऐसा जुल्म ढाएंगे, तो मैं अपने अब्बा जान से कह देता कि मुझे किसी दूसरे स्कूल में दाखिला दिलवा दीजिए । इस स्कूल में ताहिर मियां—जैसे दोस्ती निभानेवाले पढ़ते हैं ।

ताहिर मियां की मजबूरी को मैं नहीं समझता था, बात ऐसी नहीं थी; लेकिन वे अपनी समस्या और मजबूरी के कारण हमें इस तरह मजबूर कर देते । यह बात हमें भी मंजूर नहीं थी । उनका नियम बन चुका था कि हर शाम को ठीक पौने छह बजे सपरिवार मेरे घर आते । आधा घंटा बैठते, बच्चों को मेरे घर पर छोड़ते और मियां-बीवी दोनों कहीं निकल जाते । फिर साढ़े आठ बजे आते, फिर आधा घंटा बैठते, चाय-नाश्ते के बाद ही अपने घर प्रस्थान करते । इस प्रकार जब लगातार हमारी एक महीने की शामों का कचूमर वे निकाल चुके, तो हमें चिंता हुई । मैंने अपनी बेगम से भोपाली अंदाज में कहा, ''ये क्या हो रिया है ?''

बेगम बोली, ''दोस्ती निबाहना तो कोई आप से सीखे ?''

ताहिर भाई की मजबूरी यह थी कि उनके पांच बच्चे थे, जिनके रख-रखाव के लिए उनका, दिनभर की नौकरी करने के बाद, ट्यूशन करना भी जरूरी था । अपनी श्रीमती को भी उन्होंने शाम के समय, बी. एड. के एक कॉलेज में भरती करा दिया था । बी. एड. के बाद वे भी अध्यापिका बनने की सोच रही थीं ।

मुझे इस बात की तो बहुत खुशी थी कि इस अधेड़ उम्र में आकर ताहिर भाई को अपने परिवार के उत्थान करने की सूझी, लेकिन शाम के चार घंटे, मैं और बेगम आठ बच्चों के माता-पिता होने की जो अनुभूति करते, बच्चों के व्यवहार से वह समझने में देर नहीं लगती थी कि इन्हें गुरिल्ला-युद्ध की अच्छी ट्रेनिंग मिली हुई है ।

परेशान होकर मैंने अपनी प्रकृति और
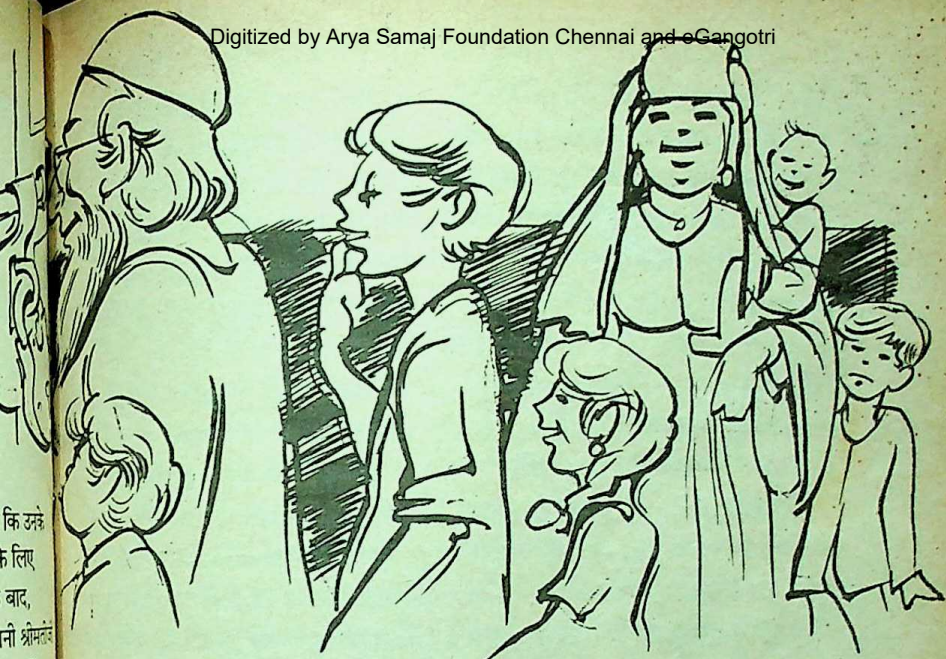
कार्यक्रम के विरुद्ध कार्यालय से पांच बजे घर पहुंचने के बाद, दिनभर के व्यस्त कार्यक्रम के पश्चात भी, ठीक साढ़े पांच बजे घर से बाहर निकल जाने का निर्णय लिया । समस्या का समाधान यही था कि घर के दरवाजे पर शाम साढ़े पांच बजे तक ताला होना चाहिए ।

ताहिर भाई की एक और खूसूसियत थी कि अपने घर में नियमों का पालन बड़ी कड़ाई से करते थे । सबसे पहले तो इस बात का ध्यान वे रखते थे कि कोई आगंतुक उनके घर आये ही नहीं । यदि आ भी जाए तो वे खुद सड़क पर आकर उसे चलता कर दें, किंतु यदि कोई ढीठ किस्म का इनसान आ ही जाए, जो बिना कुंडी खटखटाये भीतर आकर बैठ ही जाए, ऐसे बदतमीज आदमी को वे चाय पिला दिया करते थे । चाय पिलाते वक्त मंहगी चाय की पत्ती, ऊंचे दाम पर खरीदी हुई शकर तथा बामुश्किल मिलते दूध का जिक्र करना नहीं भूलते थे । यही नहीं उस एक कप चाय पिलाने की चर्चा वह कई दिनों तक जगह-जगह करते थे । "कोई आ जाए तो क्या किसी को चाय भी न पिलायें ? माना कि मंहगाई आसमान छू रही है, फिर भी चाय तो किसी भी मेहमान को पिलानी ही पड़ती है" आदि-आदि ।

दूसरों के घर बैठने की स्थिति में उनका चिंतन बिलकुल विपरीत हो जाता । यदि वे आधा घंटे बैठने के लिए आएंगे, तो निश्चय ही तीन घंटे बैठेंगे । यदि नाश्ता, चाय, सुपारी आदि जल्दी दे दिए जाएं तो अढ़ाई घंटे में भी वे उठ सकते हैं । इस अढ़ाई-तीन घंटे के समय को भरने के लिए उनके पास चर्चा के कुछ निश्चित विषय रहते, जो उनके मितव्ययी होने का आभास कराते रहते । एक दिन वे सपरिवार तांगे में बैठकर रेलवे स्टेशन से अपने घर तक पांच किलोमीटर की यात्रा पूरी करके आये । तांगेवाले ने पांच रुपये मांगे । ताहिर भाई ने जेब

में से एक रुपये का नोट बहुत सोच-विचार के बाद निकाला । जब तांगेवाले और ताहिर मियां के बीच बहुत देर तक वाकयुद्ध हुआ, तब कहीं जाकर ताहिर मियां ने पचास पैसे का एक सिक्का और निकाला । पचास पैसे के साथ-साथ बातचीत में माहिर, ताहिर मियां ने उसे एहसान के बोझ से भी लाद दिया कि "आपकी शराफत देखकर पचास पैसे और दे रिया हूं, वरना ऐसा-वैसा आदमी होता, तो कह देता—जो बने कर ले, अब मैं पैसा भी देने वाला नहीं ।"

मेरे सामने समस्या अब भी पहाड़वत खड़ी थी । प्रश्न यह था कि शाम साढ़े पांच बजे से, साढ़े छह बजे तक ताला किन-किन परिस्थितियों में रह सकता है । समस्या का विभिन्न दृष्टिकोणों से विश्लेषण करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि आगामी एक या दो सप्ताह हम भी उस एक डेढ़ घंटे में अपने परिचित परिवारों के यहां मिलने-जुलने जाया करें । शायद, ताहिर मियां खुद ही समझ जाएं ?

पहले दिन ही मुझे कार्यालय से घर आने में थोड़ी देरी हो गयी । इसलिए एक पड़ौसी से कहकर हमने घर के बाहर ताला लगवा दिया । ताहिर मियां के भय से हम लोग घर में छुपे रहे । हमारी योजना का दुर्भाग्य ही समझिए कि जैसे ही पौने छह बजे और ताहिर मियां सीढ़ियां चढ़कर ऊपर आये, कि मेरे दो वर्षीय पुत्र ने जोर-जोर से रोना शुरू कर दिया । तुरंत एक-दो बिस्किट उसके मुंह में ठूंसे और किसी तरह उसे चुप कराया । दरवाजे पर ताला देखकर ताहिर मियां भी भांप गये होंगे कि हमने ताला नहीं बल्कि नहले पर दहला लगाया है ।

कल तक तो मैं बच्चों को ही डराया कर[illegible] था कि रोना बंद करो नहीं तो दाढ़ीवाला ब[illegible] आएगा और रोते हुए बच्चों को पकड़कर [illegible] जाएगा, किंतु आज तो ताहिर मियां ही दा[illegible] बाबा बन गये हैं, जिनसे डरकर मेरा समू[illegible] परिवार गुमसुम होकर, सहमा हुआ छुपक[illegible] है ।

ताहिर मियां भी आखिर ताहिर मियां थे[illegible] हारनेवाले कहां थे ? उन्होंने पड़ौसी से पूछ[illegible] "अभी-अभी तो घर में थे, इतनी जल्दी ता[illegible] डालकर कहां चले गये ?"

पड़ौसी सज्जन, जिन्होंने कृपापूर्वक स्व[illegible] ताला लगाया था, बोले, "आपका बहुत दे[illegible] तक इंतजार किया, जब वे बहुत निराश हो[illegible] तो कहीं चले गये होंगे ।"

"कोई बात नहीं, कभी-कभी जरूरी का[illegible] आ ही जाते हैं," यह कहकर ताहिर मियां ने अपने पांचों बच्चों को उन पड़ौसी सज्जन के अहाते में किया और खुद दोनों मियां-बीवी [illegible] से चुपचाप खिसक गये । उनके निर्धारित कार्यक्रम में किसी प्रकार बाधा नहीं पड़ी । [illegible] तीन घंटों तक ताहिर मियां के बच्चे लड़ते-झगड़ते और रोते रहे, जब ताहिर मि[illegible] बच्चों को अपने घर ले गये, तब पड़ौसी मियां-बीवी, इस बात पर आपस में लड़ते-झगड़ते रहे कि इस समस्या को कि[illegible] आमंत्रित किया था । खोजबीन चलती रह[illegible] वह शाम, हमारी तो चैन से कटी ।

रातभर हम निश्चिंत होकर सोये किंतु सु[illegible] हुई और शाम की वही चिंता हमें घेरने ल[illegible] मैंने घर के सदस्यों को आगाह कर दिया [illegible] हो सकता है ताहिर मियां आज निर्धारित स[illegible]

से दो घंटे पूर्व ही आ धमकें ? इसलिए जितनी जल्दी हो घर से निकल जाना चाहिए, ताला देखकर वे चले जाएंगे ।

हम डाल-डाल तो अपने ताहिर मियां पात-पात । उस दिन वे भी कार्यालय से जल्दी आ गये और हमारे घर पर ताला लगाने से पूर्व, ठीक साढ़े तीन बजे मय बच्चों के घर पर आ धमके । मुझे काटो तो खून नहीं । मैंने अपनी पुस्तक जो टेबिल पर रखी थी, उसी से सिर ठोंक लिया । गनीमत थी कि पेपरवेट नहीं था, वरना न जाने क्या होता ?

ताहिर मियां की मुख मुद्रा से स्पष्ट था कि उस दिन के खेल में पुनः वे विजयी हुए और हार का शिकार मेरा समूचा परिवार । उस दिन उन्होंने पूरी कसर निकाल ली । उस दिन की अनुभूतियों को सोचकर ही सिहर उठता हूं, दोस्ती के इतिहास में उस दिन को काला दिन के नाम से पहचाना जाना चाहिए ।

अगले दिन हमें और भी जल्दी ताला लगाकर घर से जाना पड़ा ।मजबूर होकर एक परिचित के यहां दिनभर रहे । घर लौटने पर ज्ञात हुआ कि ताला देखकर उन्होंने पहले तो घर के आसपास के तीन-चार चक्कर लगाये, फिर पड़ौसी से जानकारी प्राप्त की कि हम कहां गये थे ? उनका मंतव्य शायद, यह रहा हो कि हम जहां भी गये थे, वे वहां पहुंचकर अपने बच्चों को हमारे सुपुर्द कर दें तथा इस प्रकार अपनी सच्ची मित्रता का परिचय दें । वैसे उस दिन पड़ौसी को हम भी गलत पता देकर आये थे ।

अभी तक तो सूचना नहीं मिली है कि वे उस गलत पते पर गये या नहीं, किंतु प्रत्येक आगामी सुबह मेरे लिए चिंताकारक होती है । समझ में नहीं आता ताहिर मियां से कैसे निजात पाऊं ? मैं सपरिवार भागता हूं यह सोचकर कि उनकी पकड़ में न आ सकूं, और उनका संकल्प है हमें हमारे ही घर में पकड़ लेने का, देखना यह है कि यह लुका-छिपी का खेल कब तक जारी रहता है ?

—एम. आई. जी.-३७७, न्यू सुभाषनगर,
रायसेन रोड, भोपाल-४६२०२३

## एड्स के लिए केकड़े का सीरम

*हमारे यहां उड़ीसा में केकड़ों को बड़े चाव से खाने के उपयोग में लाया जाता है । यहां बंगाल की खाड़ी के चांदीपुर तट पर एक विशेष प्रजाति का केकड़ा पाया जाता है, जिसे अभी तक किसी भी उपयोग में नहीं लाया जाता था । नाम है 'समुद्रिका' ।*

*उड़ीसा की 'वाइल्ड लाइफ टुडे' पत्रिका के अनुसार यह समुद्रिका नामक केकड़ा अब बड़ा उपयोगी माना जा रहा है । इस केकड़े से यहां के मेडिसिन साइंस के अनुसंधानकर्ताओं ने एक ऐसा सीरम तैयार कर लिया है जो 'एड्स' जैसे घातक रोग के लिए वरदान साबित हो सकेगा । अभी समुद्रिका के सीरम पर अनुसंधान कार्य चल रहे हैं ।*

# अपराधी ने जेल में सबसे पहले टूथ ब्रुश बनाया

रिचर्ड नेविल (सन १४२८-७१) इंगलैंड के एक सम्मानित योद्धा और राजनेता हुए हैं। उन्हें अर्ल ऑव वारविक की उपाधि दी गयी थी। इंगलैंड के मशहूर शहर वारविक शायर की स्थापना और उसके नामकरण का संबंध इन्हीं अर्ल ऑव वारविक से है।

समय के साथ-साथ वारविक शायर नगर फलता-फूलता रहा, लेकिन सन १८७८ के आसपास दो विरोधी समुदायों के जातीय-धार्मिक दंगों की वजह से वारविकशायर धरती के भीतर और आसमान के पार तक दहल उठा। यहां की जमीन मानव-रक्त से सन गयी और लाशों के ढेर लग गये। जिस-तिस के मकान-दुकान आग की लपटों में समा गये और वातावरण निरीह बच्चों और अबलाओं के क्रंदन से भर उठा।

और जैसा कि होना ही चाहिए था, इस हिंसा-हाहाकारभरी त्रासदी के जिम्मेदार विलियम एडिस नामक व्यक्ति को पकड़कर जेल में ठूंस दिया गया। इतिहास इस बात की पुष्टि अथवा खंडन नहीं करता कि यह विलि[illegible] एंडिस और एडिनबरा में जन्मे विख्यात धर्म[illegible] और मनीषी, पादरी विलियम एडिस (१८४४-१९१७) एक ही व्यक्ति थे अथवा अलग-अलग।)

बहरहाल, जेल के एकांत और भावना[illegible] निर्बाध विचरण ने बंदी एडिस के अंतर्मन को मथकर रख दिया।

सन १८८० की वह निस्तब्ध सुबह [illegible] बताये रक्तपात की दूसरी 'सालगिरह' थी। [illegible] वर्ष पूर्व के घटनाक्रम और उसमें अपनी [illegible] पर मनन करते-करते एडिस की ग्लानि और अंतश्चेतना के क्रंदन चरम को छू बैठे—पश्चात्ताप और अपराध-बोध से [illegible] एडिस रो-रोकर अपनी मुट्ठियां फर्श पर [illegible] लगा : 'ओह ! बच्चे अनाथ हो गये, मात[illegible] निस्संतान हो गयीं, उनके पालक—भाई, [illegible] पिता—असहाय और बेघरबार हो गये इन सबके विनाश का कारण मैं ही तो हूं !... मैं [illegible] हूं !'

आत्म-भर्त्सना और आत्म-ताड़ना से उद्विग्न एडिस ने अपने बाल नोचे, छाती पीटी, चेहरे पर अपने ही हाथों तमाचे जड़े और निजात न पाकर मुट्ठियां फिर फर्श पर मारने लग गया ।

देह को मिलनेवाली पीड़ा अंततः उसकी चेतना के द्वारों पर दस्तकें दे उठी; और सहसा उसके अंतर्मन को वास्तविक धर्मालोक की किरणें नजर आने लगीं । वह स्तब्ध रह गया ।

'मूर्ख', एडिस ने अपने आपको धिक्कारा 'अपने धार्मिक उन्माद को तू धार्मिक चेतना क्योंकर समझ बैठा ?' दो वर्ष पूर्व, अपने भड़काये धर्मोन्माद के फलस्वरूप बहे खून और बिखरे मानवीय अंगों की स्मृति से वह सिहर उठा ।

'क्या काले-गोरे सबका रक्त लाल तो नहीं होता ? क्या विभिन्न मतावलंबियों के हाथ-पैर, हृदय, फेफड़े, गुरदे एक-जैसे नहीं होते ?' उसने अपने-आपसे सवाल किये और आत्मताड़ना से भरकर फिर मुट्ठियां फर्श से टकराने लगा । 'कैसे अपने अपराध का निराकरण करूं ? क्या अपने प्राण खुद ले लूं ?'

एडिस बिलख-बिलखकर रोने लगा । रोते-रोते उसके भीतर से आवाज आयी—'अपने प्राण लेने से तेरी मुक्ति नहीं होगी । तेरी मुक्ति उन कालों और गोरों में सद्भाव पैदा करके ही होगी, जिनमें कभी तूने उन्माद भड़काया था । दूसरों के लिए खोदे गड्ढों का अपने हाथों पाटना ही तुम्हारा प्रायश्चित होगा ।'

मन में ऐसा समाधान उभरते ही एडिस को सांत्वना मिलने लगी और वह प्रायश्चित के उपायों और मार्गों पर मनन करने लगी । यह तो तय था कि उसे अविलंब धार्मिक, जातीय सद्भाव फैलाने का उपक्रम शुरू किये बिना चैन नहीं पड़ने वाला था ।
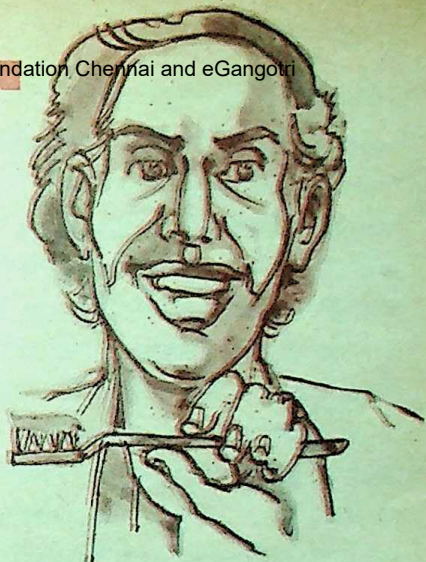
सोचते-सोचते दिन चढ़ आया और आसपास के काले-गोरे, हर धर्म के कैदियों को एकटक निहारता, खोया बैठा रहा ।

कैदी रोज सुबह, मुंह साफ करने की गरज से दांत अपनी अंगुलियों से रगड़-रगड़कर मांजते थे, जिससे अकसर उनकी अंगलियों और मसूड़ों पर खरोंचें पड़ जाती थीं और खून बहने लगता था ।

'यह भी तो रक्तपात ही है ! क्या मैं इन कालों-गोरों को इस रक्तपात से रोक सकता हूं ?' अपना प्रायश्चित अविलंब शुरू करने को आतुर विलियम एडिस इसी विचार में डूब गया ।

बहुत सोच-विचार और युक्ति चिंतन के बाद, एडिस ने लकड़ी की एक चपटी खपच्ची ढूंढ़ी और जानवरों के रंग-बिरंगे, काले-सफेद बाल इकट्ठे किये । खपच्ची को छीलकर उसकी

हाथ में पकड़ने योग्य नन्हीं-सी डंडी बनायी और बालों को छांटा और काटा । फिर डंडी के अगले सिरे पर किसी जुगत से महीन सुराख किये और जैसा-तैसा एक गोंदिल द्रव जुटाकर बालों के यकसार थक्के सुराखों में चस्प करके, करते-करते उसने दांत मांजने का एक बुरुश—टुथ ब्रश—तैयार कर डाला ।

इस टुथब्रश का पहला प्रयोग आश्चर्यजनक रूप से सफल और सुखद रहा । फिर, कारावास के शेष दो वर्ष एडिस ने ऐसे टुथब्रश बना-बनाकर साथी कैदियों को भेंट देते रहने में ही बिता दिये ।

जेल से छूटने तक एडिस के पास ऐसे असंख्य बुरुश जमा हो गये, जिन्हें वह अपने साथ ले आया ।

वारविक शायर लौटकर इन और कालांतर में बनाये बुरुशों से एडिस ने सांप्रदायिक सौहार्द फैलाया । घर-घर वह अपना टुथब्रुश देने जाता और कहता—'जिस तरह काले-सफेद बाल इस बुरुश में यकसां गुंथ-बैठकर एक उपयोगी भूमिका निभाने में कामयाब हुए हैं, उसी तरह रंग, भाषा, जाति आदि के भेद भुलाकर हमें अपने समाज में परस्पर गुंथना और जमना होगा, वरना समाज में हम अपनी वाजिब भूमिका नहीं निभा पायेंगे ।

टुथ ब्रश का यह आविष्कर्ता विलियम एडिस कालांतर में 'संत एडिस' के नाम से विख्यात हुआ ।

**प्रस्तुति : वत्सला अरोड़ा**

***आधी रात के समय मंदिर में लोबान का धुआं भरा हुआ है । धनी व्यक्तियों की कतारें अपने भाग्यांक को पहचानने के लिए टकटकी लगा कर धुएं की ओर देख रही हैं । सैकड़ों मील दूर से आये लोगों में उत्सुकता है, तो केवल सट्टे में लगाये जानेवाले नंबरों को जानने की ।***

***दूर जंगल के एक कोने में बने इस मंदिर का देवता है कुत्ता । समाधिरूपी मंदिर में कुत्ते के प्रतिरूप को ताम्रपत्रों में सहेज कर रखा गया है । इन्हीं ताम्रपत्रों को जुआरी लोग श्रद्धा एवं भक्ति से छूकर चूमते हैं । ताकि उनके भाग्य का दरवाजा खुल जाए ।***

***इसे श्रद्धा कहें या अंधभक्ति ! कहा जाता है कि श्वान मंदिर में लोबान जलाकर श्वान देवता की पूजा करने के उपरांत जब घर पहुंचकर सो जाते हैं, तब उन्हें भाग्यांक स्वप्न में दिखायी देता है ।***

***इस मंदिर में आनेवाले लोगों में वेश्याएं, रेस खेलनेवाले, लॉटरी आदि में पैसा लगाने वाले जुआरी शामिल होते हैं ।***

***ताइवान में स्थित इस श्वान मंदिर की किस्मत भारी संख्या में आनेवाले भक्तों के कारण खुल गयी ।***

# बुद्धि-विलास

१. एक व्यापारी को एक सौदे में अपनी पूंजी पर २० प्रतिशत की हानि होती है । अब बाकी पूंजी पर वह कितने प्रतिशत लाभ कमाये कि उसका टोटा पूरा हो जाए ?

२. हिंदू धर्मशास्त्रों के अनुसार किस ऋषि को ब्रह्मा, विष्णु और महेश का अवतार माना जाता है ? वह किसकी संतान था ?

३. यूनान का वह कौन दार्शनिक था जिसे सम्राट सिकंदर की देवता के समान आराधना न करने पर फांसी पर चढ़ा दिया गया था ?

४. क. वह कौन यूरोपीय यात्री था जिसने औरंगजेब के गद्दी पर बैठने के बाद की घटनाओं पर बारीकी से प्रकाश डाला था और जिसने अनेक प्राचीन भारतीय परंपराओं का तिरस्कार-भावना से वर्णन किया है ?

ख. वह कब से कब तक भारत में रहा था ?

५. भूतपूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई को किस पड़ोसी देश से उसका सर्वोच्च नागरिक सम्मान प्राप्त हुआ है और किसलिए ?

६. क. ब्रिटेन की सर्वोच्च अपील अदालत कौन-सी है ?

ख. हाल में उसने कौन-सा निर्णय दिया था जो भारत की एक घटना से संबंधित है ?

७. क. फ्रांस की पहली महिला प्रधानमंत्री कौन नियुक्त हुई हैं ?

ख. अंतरिक्ष में जानेवाली इंगलैंड की पहली महिला कौन है ? वह कब और किस अंतरिक्ष-यान से गयी थीं ?

८. भारतीय संसद के केंद्रीय कक्ष में डॉ. अंबेडकर के बाद किन भारतीय नेताओं के चित्र लगाये गये हैं ?

९. क देश में बनी पहली संस्कृत फिल्म का क्या नाम है ?

ख. उसका निर्माता-निर्देशक कौन है ?

१०. क. अगलीशताब्दी में संसार को अनुमानतः कितनी ऊर्जा की आवश्यकता होगी ?

ख. संसार में उपलब्ध जीवाश्म ईंधन (तेल, कोयला, गैस) से कितनी ऊर्जा प्राप्त हो सकेगी ?

ग. अतिरिक्त ऊर्जा की प्राप्ति किस स्थान से होने की संभावना है ?

११. नीचे दिये गये चित्र को देखिए और बताइए यह क्या है—

**अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे । यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प ।**

**—संपादक**

कहानी

# 'पंखहीन'

## शफीक रहमानी

**क्या** लिखें इस कॉलम में ? सोच में पड़ गयी है हिना । महाविद्यालय में अपनी प्रथम नियुक्ति के समय व्यक्तिगत जानकारी देना है उसे । एक छपे हुए फार्म पर । कॉलम हैं —नाम/ पिता का नाम/ जन्म-तिथि/ विवाहित अथवा अविवाहित... और बस, कलम रुक गया है । क्या लिखे ! यूं ऐसा अस्पष्ट तो नहीं है ये कॉलम । परंतु उसकी हैसियत तो इतनी अस्पष्ट हो गयी है कि स्वयं नहीं समझ पा रही है । कैसी विचित्र स्थिति है ये भी । कौन मानेगा उसे अविवाहिता । पर क्या वास्तव में वो विवाहिता है ! सोचकर दर्द की एक तीव्र लहर दौड़ गयी है उसके सारे शरीर में और फिर गयी है नजरों में सुहागरात की फूलों से सजी सेज... और गूंज गये हैं कानों में इस अवसर पर अनवर के कहे शब्द ।

तड़प उठी थी वो इन शब्दों को सुनकर । अंधेरा छा गया था उसकी आंखों के सामने... और हजार-हजार आंसू रोयी थी वो इस क्षणिक भावुकता पर जो बांध गयी थी उसे अनवर के साथ प्रणय सूत्र में । और जी भरकर कोसा था उन क्षणों को जब विस्मृत हो गयी थीं उसके मस्तिष्क से वो यादें, जो उजागर कर गयी थीं अनवर का स्वभाव । और कोसा था उन क्षणों को जब भूल गयी थी उस घटना को, जिसने स्पष्ट कर दी थी उसके समक्ष अनवर की विचारधारा ।

हां, वो घटना ऐसी ही थी । जब समझा उसने अनवर के विचारों को पहली बार ।

उस दिन कॉलेज से वापस आते समय संगम के समक्ष मिल गया था उसे अनवर ।

"हैलो, हिना ! मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था ।" करीब आकर कहा था उसने ।

"क्यूं ? क्या मुलाकात के लिए घर के दरवाजे बंद रहते हैं !" तुनक गयी थी वो ।

एक ही कॉलोनी में आमने-सामने मकान उनके । और दोनों परिवारों में वर्षों पुराने घ संबंध भी । सो बचपन ही से साथ-साथ खे कूदते जवान हुए थे वे । बे-रोक-टोक आना-जाना था एक-दूसरे के घर । तब उसे सड़कों पर मिलना-जुलना पसंद नहीं था ।

"नहीं —ये बात नहीं है । बस एक प कॉफी पीने का मूड हुआ था तुम्हारे साथ ।"

तरस आ गया था उसे अनवर के 'मूड' पर । और वो रेस्तरां की ओर बढ़ गयी थी हों पर हलकी मुसकान लिये । लेकिन ये मुसका

अधिक समय तक नहीं रह सकी थी ।

हॉल में अपने स्थान पर बैठते ही अनवर के कुछ मित्र आ गये थे उनके पास, आसपास की मेजों से उठकर और अनवर ने उनका स्वागत इस प्रकार किया था जैसे वे उसके आमंत्रित अतिथि हों । और वे सब उससे कुछ इतनी बेतकल्लुफी से मुखातिब हुए थे कि हड़बड़ा गयी थी वह । फिर उनके हंसने बोलने का अंदाज और उसे लेकर अनवर से किया जानेवाला मजाक भी खल गया था उसे । तब कॉफी खत्म करते ही उठ खड़ी हुई थी वह । अनवर ने चाहा भी था कि वह कुछ देर और बैठे वहां । पर उसे बिल्कुल ही गवारा नहीं हुआ था यह । और रेस्तरां से बाहर आते ही फट पड़ी थी अनवर पर ।

"ये क्या तमाशा लगा रखा था तुमने... इस बेहूदगी का क्या मतलब था आखिर !"

"क्यूं ! इसमें बुरा क्या था ? मेरे कुछ दोस्त तुम्हें देखना चाहते थे; इसलिए बना लिया ये प्रोग्राम ।" अनवर ने हंसते हुए जवाब दिया था ।

"देखना चाहते थे !" चौंक पड़ी थी वह सुनकर; "मैं कोई नुमाइश की चीज हूं... जो देखना चाहते थे ?" चेहरा तमतमा उठा था उसका ।

"नुमाइश की न सही, पर मेरी चीज तो हो ! और अपनी चीज को मनचाहे ढंग से बरतने का मुझे हक है ।" अनवर ने अधिकार पूर्ण स्वर में कहा था ।

"हक ! अधिकार ?" सुनकर स्मृति में कौंध गया बरसों पहले बीता लम्हा । घर के पीछे बगीचे में एक खजूर का पेड़ था । उसकी हरी-हरी पत्तियों को गूंथकर सुंदर बनाने की कला सीखी थी उसने मां से । तो जब भी मन होता वो निकल आती बगीचे में । बैठ जाती माला गूंथने । उस दिन भी ऐसा ही हुआ । मम्मी-पापा दोनों चले गये थे कहीं । वो बगीचे में निकल आयी थी और गूंथ डाली थी एक सुंदर माला । फिर उसे सजाने लगी थी चमेली के खुशबूदार फूलों से । तभी किसी ने पीछे से आकर उसकी आंखों पर हाथ रख दिये थे ।

"कौन है !" क्षणभर को दिल की धड़कन

तेज हो गयी थी । फिर अंगुलियों से टटोलकर अंदाजा लगाया था और धीरे से नोंच लिया था उसने एक हाथ में । अनवर को पहचान गयी थी वह ।

अनवर ने तत्काल आंखों पर से हाथ हटा लिये थे; "शैतान कहीं की । देखा, कैसा निशान पड़ गया है ।" शिकायत की थी उसने ।

"आंखें क्यूं बंद की थीं मेरी ?" वह ठुनक उठी थी

"मैं सारे घर में तलाश करता फिर रहा था । और आप यहां छुपी बैठी ये माला बना रही हैं ।" फिर उसके निकट ही बैठकर पूछा था उसने, "किसके लिए बनायी है ये माला ?"

वो चुप रही थी ।

"जानती हो ! लड़कियां माला किसे पहनाती हैं ?"

उसने इनकार में सिर हिला दिया था जानते हुए भी ।

"अपने दूल्हा को ।" अनवर ने उसकी आंखों में झांकते हुए कहा था । और उसका चेहरा एकदम लाल हो गया था शरम से । और न जाने कैसे हाथों में पकड़ी माला अनवर के गले में पहुंच गयी थी और वो भाग खड़ी हुई थी अपने कमरे की ओर । अनवर उसके पीछे दौड़ा था पकड़ने के लिए । अधिकार जो मिल गया था उसे ।

तो उसी अधिकार का उपयोग किया है अनवर ने । उसे अपनी चीज मानकर । सोचने लगी थी वह दुखी मन से । और ये हाड़-मांस के जीते-जागते मानव शरीर को चीज-वस्तु मानने की मानसिकता भी तो कचोट गयी थी उसे बहुत गहरे तक और पुनः झनझना उठे थे उसकी स्मृति के तार... ।

तीसरी या शायद चौथी कक्षा में पढ़ती थी वो उन दिनों । शहर में वार्षिक मेला लगा था यहीं से उसके पापा ने कुछ खिलौने लाकर दिये थे, उसे और अनवर को भी । अनवर को लाकर दिये जानेवाले खिलौनों में सोने-जागने वाली एक बहुत सुंदर गुड़िया थी । वह बहुत खुश हुआ था वो इसे पाकर । रात को अपने साथ ही लेकर सोता था इसे । और सुबह स्कूल जाते वक्त अलमारी के एक खाने में बंद कर रख जाता था ।

उन्हीं दिनों अनवर की मौसी आयी थीं उसके घर । साथ में था उनके एक छोटा, अनवर की ही उम्र का लड़का आबिद । बहुत सीधा और हंसमुख । दोपहर को वे तीनों साथ ही खेलते थे । वह अपने खिलौने ले जाती थी घर से । और अनवर अपने खिलौने निकाल लाता था । इनमें आबिद को सोने-जागनेवाली गुड़िया ही सबसे अधिक अच्छी लगती थी । वो अधिक समय उसी से खेलता रहता था । तब एक दिन पूछा था अनवर ने उससे, "तुम्हें ये गुड़िया अच्छी लगती है ?"

"हां, बहुत अच्छी लगती है । कितनी खूबसूरत है —गुलाबी रंग, सुनहरे बाल, बड़ी-बड़ी नीली आंखें । आबिद ने बड़ी मासूमियत से जवाब दिया था ।

और दूसरे ही दिन अनवर ने खेलते-खेलते गुड़िया के सुनहरे बाल नोंच डाले थे । आंखों को पिनें चुभोकर उन्हें बिगाड़ दिया था और होंठ से उसके नाक-कान काटकर पूछा था आबिद से, "अब कैसी लगती है ये गुड़िया ?" पूछने

***"हिना, जीवन के कुछ अनुभव बदल देते हैं इंसान के सारे स्वभाव को। सेना में नौकरी करते हुए, सीमा पर सैनिक झड़पें भोगते हुए समझ में आया है इंसान और वस्तु का अंतर। किसी तड़पते हुए इंसान को चाहे वह शत्रु ही क्यों न हो, छोड़कर आगे बढ़ना बहुत कठिन होता है जबकि कीमती वस्तुओं को रोंदते हुए आगे बढ़ने में सैनिक के कदम नहीं रुकते।"***

हुए होंठों पर मंद-मंद मुसकान और आंखों में एक विचित्र चमक थी।

आबिद तो रुआंसा हो गया था ये सब देखकर। और वो स्वयं सिर से पैर तक कांप उठी थी। डर के मारे रोंगटे खड़े हो गये थे उसके। गुड़िया का बिगड़ा हुआ रूप और अनवर की मुसकान देखकर काली पड़ गयी थी वह। अनवर एक भयानक दैत्य-सा दिखायी दिया था उसे।

तब आबिद ने डरते-डरते पूछा था अनवर से, "ये क्या कर दिया तुमने ? क्यूं बिगाड़ दिया गुड़िया को !"

"तुम्हें क्या मतलब ! मेरी चीज है, जो चाहे करूं।" अनवर ने उखड़े हुए स्वर में उत्तर दिया था और फिर आनंदित-सा होकर हंस पड़ा था खुद ही। चेहरे पर किसी असीम तृप्ति का भाव था।

अतीत की घटना को याद करते हुए देखा था उसने अनवर की ओर। कल रबर की गुड़िया का हुलिया बिगाड़ दिया था अपनी चीज कहकर। और अब अपनी चीज कहकर अधिकार जमा रहा है उस पर ! सोच में पड़ गयी थी हिना। तो क्या बिगड़ जाने दे गुड़िया की भांति अपना चेहरा ! नोंचने दे अनवर को अपने बाल ? चुभोने दे अपनी आंखों में पिनें ??? और काटने दे उसे अपने होंठ... कान... और नाक ! बन जाए इतनी कमजोर और पलटकर कह दिया था उसने,

"मैं इंसान हूं, चीज नहीं, कि मनचाहे ढंग से बरता जा सके मुझे।"

"क्या !" अनवर को विश्वास नहीं हुआ हो जैसे अपने कानों पर।

"हां, गलत नहीं कह रही हूं" दृढ़ता से जवाब दिया था उसने।

"अच्छा... ये हिम्मत।" कहने को हंसा था अनवर परंतु वो हंसी आतंकित कर देनेवाली ही थी। फिर आगे कहा था उसने, "देखो हिना, अपनी सीमा से बाहर जाने की कोशिश मत करो।"

"सीमा," पुनः झटका लगा था उसे, "मेरी सीमाएं निर्धारित करने का अधिकार किसने दे दिया तुम्हें।" गुस्सा आ गया था उसे भी।

"ये अधिकार मुझे है, और मैं दिखा दूंगा।" अनवर का स्वर एकदम कठोर हो गया था और वह पैर पटकता हुआ पुनः रेस्तरां में चला गया था। और वह स्वयं तेज-तेज कदमों से घर की ओर चल पड़ी थी। अनवर की इस विचारधारा ने झकझोरकर रख दिया था उसे।

और वह बहुत आगे तक सोचने पर विवश हो गयी थी ।

तभी तो इस घटना के आठ-दस दिन बाद जब अनवर के मम्मी-पापा की ओर से उसके संबंध का प्रस्ताव आया था घर में तब साफ कह दिया था उसने मां से, "नहीं मम्मी, अभी इसकी जरूरत नहीं है । अभी तो तीन-चार वर्ष मुझे अपना कोर्स पूरा करने में ही लगेंगे ।"

"लेकिन बेटी हम लोग तो..." शायद मां उनकी बचपन की दोस्ती को नजर में रखकर आश्वासन दे चुकी थीं ।

"नहीं मां, प्लीज !" गंभीरता से कहा था उसने और मां आश्चर्य से उसे देखती हुई चुप हो गयी थीं ।

मगर बात खत्म कहां हुई थी ? तीसरे-चौथे दिन ही अनवर आ पहुंचा था उसके कमरे में, "तुमने शादी करने से इंकार कर दिया ?" आते ही पूछा था उसने ।

"हां" संक्षिप्त-सा उत्तर दिया था उसने । उसे अनवर का इस प्रकार आकर प्रश्न करना अच्छा नहीं लगा था ।

"क्यों ?" अनवर ने फिर पूछा था ।

"इसलिए, कि मैं उपभोक्ता वस्तु बनकर नहीं रहना चाहती । मैं अपनी शर्तों पर और अपने पूरे अस्तित्व के साथ जीना चाहती हूं एक इंसान की तरह ।"

"बहुत घमंड है अपने आप पर !"

"हां, अपने इंसान होने पर गर्व है मुझे ।"

"तो, ये आखिरी फैसला है तुम्हारा !"

"हां, अगर तुमने अपने रवैये और सोच में तब्दीली नहीं की तो ।"

"तुम मुझे झुकाना चाहती हो !"

"नहीं, सिर्फ इस सचाई का अहसास कराना चाहती हूं कि औरत वस्तु या चीज नहीं होती ।"

"ठीक है । अब देखना है, जीत किसकी होती है ।" अनवर ने चुनौतीभरे स्वर में कहा था और निकल गया था कमरे से । वो निढाल होकर गिर पड़ी थी पलंग पर । अनवर की बातें से भारी कष्ट पहुंचा था उसे । अलगाव की खाई कुछ और चौड़ी हो गयी थी ।

तब व्यस्त कर लिया था उसने स्वयं को कॉलेज की कला प्रदर्शनी में और उन्हीं दिनों सैन्य विज्ञान के स्नातकोत्तर अनवर को थल सेना में कमीशन मिल गया था और चला गया था वो दूर प्रशिक्षण केंद्र में ।

समय पर लगाकर उड़ने लगा था । वह कॉलेज के अंतिम वर्ष में पहुंच गयी थी और अनवर सैनिक अधिकारी बनकर सीमा पर पदस्थ हो गया था । इस बीच कितनी ही बार आया था वह अवकाश में घर, सेना के रौबीले वस्त्र पहनकर । तब स्वर का कड़ापन स्पष्ट झलकता रहता था । सदैव विजयी रहने और दूसरों को पराजित करने की मानसिकता विकसित ही हुई थी और अधिक । तब उसमें भी आत्मरक्षा का भाव बढ़ता गया था । खाई चौड़ी होती गयी थी ।

लेकिन अचानक दूरियां सिमट गयी थीं । हां, वह सब कुछ इतना ही अचानक और अप्रत्याशित ढंग से हुआ था कि भूल बैठी थी वह पिछला सब-कुछ ।

वह कॉलेज में उसकी अंतिम परीक्षा से कुछ पहले के दिन थे । सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों ही कार्य तीव्र गति से चल रहे थे । न घर फुरसत थी, न कॉलेज में । उसे 'पीड़ित नारी'

विषय पर क्लेवर्क के अंतर्गत मूर्ति तैयार करनी थी । इलियास मूर्तिकला में कॉलेज का श्रेष्ठ छात्र था । उसी के सहयोग से बना रही थी वह ये मूर्ति घर पर । रोजाना तीन-चार घंटे खर्च करते थे वे दोनों इस कार्य पर । इलियास दोपहर को उसके घर आ जाता था और फिर शाम तक व्यस्त रहते थे वे इस कार्य में ।

उन्हीं दिनों फिर अवकाश पर आया था अनवर ।

हमेशा की तरह उससे मिलने भी आया था वह । तब वह और इलियास दोनों ही बड़ी तन्मयता से मूर्ति निर्माण में व्यस्त थे । और उसे पता ही नहीं चला था कि वो कब तक कमरे के द्वार पर खड़ा रहा था । वह तो उसकी आवाज सुनकर चौंकी थी ।

"क्या मैं अंदर आ सकता हूं ?" अनवर अनुमति मांग रहा था द्वार पर खड़ा हुआ । उसके चेहरे पर एक मुसकान थी ।

आश्चर्य हुआ था हिना को यह देखकर । और उसने हल्की-सी मुसकान के साथ आगे बढ़कर स्वागत किया था अनवर का ।

बैठने के लिए कुरसी देते हुए पूछा था, "कब आना हुआ यूनिट से ?"

"कल रात आया था । तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है ?" उत्तर देते हुए अनवर की नजरें सामने रखी अर्धनिर्मित मूर्ति पर केंद्रित थीं ।

"अच्छी चल रही है... इम्तिहान करीब आ गये हैं ।" उसने संक्षिप्त-सा उत्तर देकर उससे इलियास का परिचय कराया था जो अपने कार्य में व्यस्त था । अनवर ने बहुत विनम्र भाव से बात की थी इलियास से और फिर कुछ देर पश्चात ही शालीनता से विदा ली थी उसने ।

वह स्तब्ध-सी देखती रह गयी थी उसे । उसके इस बदले हुए व्यवहार को ।

दूसरे दिन शाम को फिर आया था वह । और आने से पूर्व फोन पर मालूम किया था कि मुलाकात करने से उसकी पढ़ाई में कोई बाधा नहीं पड़ेगी । चकित कर देनेवाले थे ये परिवर्तन । पूछ भी लिया था उसने...

"इस बार बिल्कुल बदले-बदले नजर आ रहे हो, क्या बात है !"

उत्तर एकदम नहीं दिया था अनवर ने । कुछ क्षणों बाद कहा था, "हिना, जीवन के कुछ अनुभव बदल देते हैं इंसान के सारे स्वभाव को । सेना में नौकरी करते हुए, सीमा पर सैनिक झड़पें भोगते हुए समझ में आया है इंसान और वस्तु का अंतर । किसी तड़पते हुए इंसान को चाहे वह शत्रु ही क्यों न हो, छोड़कर आगे बढ़ना बहुत कठिन होता है जबकि कीमती वस्तुओं को रोंदते हुए आगे बढ़ने में सैनिक के कदम नहीं रुकते ।

ऐसी गंभीरता थी अनवर के कंठ में कि द्रवित हो गयी थी वह । द्रवित भी और मन ही मन अपनी वैचारिक जीत के अहसास से पुलकित भी ।

और बस भर गयी थी उनके बीच की खाई । जब उसी क्षण पूछा था अनवर ने उसकी आंखों की गहराई में झांकते हुए, "मुझसे शादी करोगी न हिना ?" तो फिसल गया था उसके

होंठों से स्वीकारात्म शब्द 'हां' ।

खुशी की लहर दौड़ गयी थी दोनों घरों में । परीक्षा समाप्ति के तत्काल बाद शादी की तिथि निश्चित हो गयी थी । और फिर सज गयी थी सुहाग की सेज और आतुर हो उठा था उसका तन-मन पिया मिलन के लिए । नजरें बार-बार दीवार पर टंगी घड़ी पर पड़ रही थीं उस रात ।

करीब दस बजे अनवर आया था कमरे में । अपने सारे साहस और निर्भीकता के बाद भी सिकुड़ गयी थी वह सेज पर ।

तभी अनवर का स्वर टकराया था कानों से, "अपनी जीत पर मुबारकबाद हासिल करने आया हूं हिना साहिबा ।"

स्वर में वही पुराना कड़वा कसैलापन था । घबराकर देखा था उसने अनवर को । और फिर अपने आप को संयत करते हुए पूछा था, "क्या ये मिलन किसी युद्ध का परिणाम है अनवर ?"

"हां । अधिकार और अस्तित्व के युद्ध का । जिसमें जीत अधिकार की हुई है । तुम्हारा अस्तित्व अब मेरे अधिकार में है । किसी उपभोक्ता वस्तु की भांति ।" अनवर के होंठों पर मंद-मंद मुसकान थी और आंखों में विचित्र-सी चमक । देखकर कांप गयी थी वह सिर से पैर तक ।

फिर मन में आशा की कोई किरण संजोये पूछा था उसने, "फिर तुम्हारी उन बातों का क्या मतलब था अनवर, जो तुमने युद्ध क्षेत्र में तड़पते इंसान के संदर्भ में कही थीं... ? क्या मानवीय संवेदना की यह अभिव्यक्ति मात्र ढोंग थी ।"

और उत्तर में जोरदार ठहाका लगाया था अनवर ने, "युद्ध में सब कुछ जायज होता है हिना, तुम कलाकार यही तो नहीं समझते ।"

अंधेरा छा गया था उसकी आंखों के सामने ।

आज भी उन क्षणों की वेदना याद करते सिहर उठी है वह । तब विवाह के सुर्ख जोड़े में लिपटा हुआ अपना शरीर आग की लपटों में घिरा लगा था उसे । ऐसी आग जिसके घेरे को तोड़कर बाहर निकलना नामुमकिन-सा हो गया हो ।

अनवर कोई फिल्मी धुन गुनगुनाता हुआ सामने के सोफे पर पसर गया था, किसी अलौकिक आनंद की अनुभूति में सराबोर-सा ।

और असहनीय पीड़ा के क्षणों में बरबस याद हो आया था उसे बचपन का वह दिन जब दोपहर के समय अपने कमरे में लेटी कॉमिक्स पढ़ रही थी वह । तभी अनवर दबे पांव आया था अंदर और इशारे से बाग में चलने का संकेत किया था । उसके दोनों हाथ निकर की जेबों में थे ।

"क्यों, क्या बात है ?" आहिस्ता से पूछा था उसने ।

"बाग में चलो, फिर बताऊंगा । बहुत अच्छी चीज लाया हूं ।"

वह चुपचाप बाहर आ गयी थी उसके साथ । तब बाग के कोने में आकर अपनी जेब से एक चिड़िया निकाली थी अनवर ने । छोटी-सी । सुंदर-सी चिड़िया उसकी अंगुलियों में फंसी चीं-चीं कर रही थी ।

"छोड़ दो इसे । क्यूं पकड़ लाये हो नन्ही-सी जान को ।" तरस आ गया था उसे ये देखकर ।

"पागल हो गयी हो, कितनी मेहनत से

पकड़ा है इसे ! डाल-डाल, पात-पात नचाया है इसने मुझे ।"

"फिर क्या करोगे इसका ?" जवाब में अनवर ने दूसरी जेब से एक छोटी-सी कैंची निकाली थी और देखते-देखते चिड़िया के पर कतर डाले थे । फिर छोड़ दिया था उसे नीचे जमीन पर । चिड़िया ने तत्काल उड़ने का प्रयास किया था और गिर पड़ी थी औंधे मुंह । अनवर ने ठहाका लगाया था ।

"देखा, मुझे परेशान करने का नतीजा ! अब मैं इसे पूरे बाग में दौड़ाता फिरूंगा । देखना, कितना मजा आता है !" अनवर के चेहरे पर असीम सुख की तृप्ति का भाव था ।

उसकी आंखों में आंसू आ गये थे ।

आंसू आज भी भर आये हैं आंखों में ।

शादी के बाद तीन चार-दिन ही रुका था अनवर । और फिर अपनी यूनिट में वापस चला गया था । इन तीन-चार दिनों में रात को वह उसके कमरे में आकर सोफे पर सो जाता था चुपचाप और दिनभर घरवालों, शेष बचे मेहमानों के समक्ष हंसी-मजाक करता रहता था उनसे प्यारभरे स्वर में । तड़प-तड़प कर रह जाती थी वह अंदर ही अंदर । किससे कहती मन की बात । कौन विश्वास करता अनवर का खिलता-मुसकराता चेहरा देखकर, उसकी बातों पर ।

आज भी कौन विश्वास करेगा । तभी तो तड़प उठी है वह अपने से संबंधित जानकारी का फार्म भरते समय । क्या दर्शाये अपनी स्थिति ? विवाहिता... या अविवाहिता... ?

**जिला पुस्तकालयाध्यक्ष,**
**शासकीय जिला पुस्तकालय**
**नयी आबादी, भिंड-४७७००१ (मध्यप्रदेश)**

## काटने से मृत्यु

**विश्व में सांपों के काटने से प्रति वर्ष लगभग ३० से ४० हजार व्यक्तियों की मृत्यु होजाती है, जिसमें से केवल वर्मा में एक लाख व्यक्तियों में लगभग १५ व्यक्तियों की मृत्यु सांप के काटने से होती है ।**

## पांच सितारा सुविधाएं कुत्तों के लिए

**जीव संरक्षण संगठन के लोगों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब ब्रिटेन ने मानव के समान कुत्तों के लिए भी पांच सितारा सुविधाएं उपलब्ध करा दी हैं ।**

**इस सुविधा के अंतर्गत कुत्ते बड़े पांच सितारा होटलों में खाना खाते हैं, ब्यूटी पार्लरों में जाते हैं और मंहगी कारों में घुमाये जाते हैं । कुत्तों के मालिक अपने कुत्तों को ब्राइटन स्थित 'हॉस्पिटेलिटी इन' में छोड़ कर जाते हैं । इस जगह कुत्तों को वही सारी सुख-सुविधाएं दी जाती हैं, जो उनके मालिकों को दी जाती हैं ।**

# अपराधी साहित्यकार : कुछ जेल में भी रहे

● रवीन्द्रनाथ त्यागी

किस्सा कहने की कला में संसार के सब से ज्यादा सफल फ्रेंच उपन्यासकार अलेक्जेंडर ड्यूमा के अनुसार संसार का सारा साहित्य मात्र चार चीजों पर टिका है और वे चीजें हैं युद्ध, प्रेम, अपराध और सस्पेंस । चूंकि साहित्य के संदर्भ में अपराध एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है, आज मैं कुछ ऐसे महान साहित्यकारों की चर्चा करूंगा जो व्यक्तिगत जीवन में कोई छोटा या बड़ा अपराध करते पकड़े गये ।

### शेक्सपियर ने सेब चुराये

शेक्सपियर के बारे में कहा जाता है कि जब वे किशोर थे तो एक सामंत के बगीचे में से सेब चुराया करते थे । कुछ प्रतिभावान लोगों को संदेह है कि बड़ा होने पर उन्होंने जो महान नाटक लिखे वे उनके न होकर मार्लो के थे । मगर उन पर लगाया यह अभियोग अभी तक साबित नहीं हो पाया । सर वाल्टर रैले को फांसी की सजा घोषित किये जाने पर भी साढ़े बारह वर्षों तक 'टावर आफ लंदन' में कैदी रखा गया । इस अवधि के भीतर वह महान सामंत 'विश्व का इतिहास' लिखता रहा । गनीमत यही थी कि इस अवधि में उसकी सुंदर पत्नी भी उसके साथ रही । अंत में चलकर इंगलैंड के सनकी बादशाह जेम्स प्रथम ने [जो खुद भी लेखक था] एक दिन उसकी मृत्यु के आज्ञापत्र पर दस्तखत क़र ही दिये और अगले दिन उस वीर पुरुष की गरदन कुल्हाड़ी से अलग कर दी गयी । सर रैले पर मुकदमा तो राजद्रोह का चलाया गया था पर बादशाह ने उसे फांसी जो दी वह क्यों दी—इस बारे में विभिन्न इतिहासकारों ने विभिन्न मत प्रकट किये हैं । बहर हाल, उसकी ऊपर चर्चित पुस्तक अभी भी अमर है । 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' नामक महान फंतासी का लेखक जान बनयान कुछ धार्मिक मतभेदों के कारण प्रायः जेल में ही रहा और उसका काफी लेखन-कार्य जेल के भीतर ही संपन्न हुआ । अपने समय का वह सर्वश्रेष्ठ गद्य-लेखक था । 'राबिन्सन क्रूसो' का विश्वविख्यात लेखक डेनियल डिफ़ो भी चर्चा के

भ्रष्टाचारों पर लिखने के कारण कानून की गिरफ्त में आ गया था । उसे एक ऐसे लकड़ी के खंभे से चौराहे पर बांधा गया जिसके ऊपरी भाग में एक ऐसा खोखला स्थान था जिसमें से उसका सिर आगे की ओर निकाला गया था । उन दिनों के रिवाज के मुताबिक जनता ने उस पर पत्थर और जूते नहीं फेंके; उनके स्थान पर उसके प्रशंसकों ने उसे फल खिलाये और शराब पिलायी । जब उसे जेल में भी कैद रखा गया तो जेलर ने उसके प्रति बहुत शिष्टता और भद्रता बरती । मिल्टन बराबर कर्ज से दबा रहता था और उसने एक कर्जदार से बचने के लिए अपनी अमर कृति 'पैरैडाइज लौस्ट' के सारे प्रकाशनाधिकार एक प्रकाशक को मात्र पांच पौंड में बेच दिये थे । अंगरेजी के सर्वप्रथम निबंधकार फ्रांसिस बेकन को भी सरकारी कोष में कुछ गड़बड़ी करने के कारण कई वर्ष जेल में गुजारने पड़े थे । 'यूटोपिया' के लेखक सर टामस मोर को हेनरी अष्टम ने प्राणदंड दिया ।

ओलिवर गोल्डस्मिथ प्रायः कर्ज में दबे रहते थे । एक बार जब मकान का किराया न दे पाने के कारण उनकी गिरफ्तारी का वारंट जारी हो गया तो उन्होंने डॉ. सैमुएल जानसन को उसकी तुरंत खबर दी । जानसन खुद फटेहाल रहते थे पर फिर भी इन्होंने एक पाउंड का सिक्का गोल्डस्मिथ के पास उसी समय पहुंचाया । इसके बाद जब वे जल्दी से जल्दी गोल्डस्मिथ के पास पहुंचे तो उन्होंने पाया कि गोल्डस्मिथ इतनी ही देर में उस पाउंड की शराब मंगाकर पी चुका था । जानसन को बड़ा गुस्सा आया और उन्होंने गोल्डस्मिथ से पूछा कि क्या कुछ ऐसा लिखा हुआ मैटर है जिसके बदले वे किसी प्रकाशक से कुछ रुपया मांग सकें और उसे जेल जाने से बचा सकें ? गोल्डस्मिथ ने कागजों के पुलिंदों में से एक उपन्यास का मसौदा निकाला जिसे उसने इस कारण नहीं छपाया था क्योंकि वह उसे घटिया समझता था । डॉ. जानसन ने पांडुलिपि को बीच-बीच में से पढ़ा और उन्हें वह कृति पसंद आयी । प्रकाशक ने जानसन के कहते ही उसे काफी रुपया पेशगी दे दिया और गोल्डस्मिथ की जान बच गयी । वह उपन्यास 'दी विकार ऑफ वेकफील्ड' नाम से छपा और छपते ही प्रसिद्ध हो गया । पिछले दो सौ वर्षों में उस उपन्यास को करोड़ों पाठकों ने पढ़ा है और आज भी वह विश्व की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों में गिना जाता है । गोल्डस्मिथ का सरल व दयालु स्वभाव, उसकी आस्तिकता और सादगी—जितनी इस कृति में स्पष्ट हुई उतनी और किसी कृति में नहीं हुई ।

### बायरन कर्ज में दबे रहे

शेरिडन और बायरन भी कर्जे से दबे रहते थे । डी.एच. लारेंस के महान उपन्यास 'लेडी चैटर्लें'ज़ लवर' को अश्लील होने के कारण जब्त कर लिया गया । इसी प्रकार जेम्स जायस के उपन्यास को भी अमरीकन सरकार ने जब्त किया पर जब सारे संसार के बड़े-बड़े लेखकों ने इसका प्रतिरोध किया तो अमरीका के राष्ट्रपति को वह प्रतिबंध हटाना पड़ा । इस उपन्यास का नाम था 'यूलीसिज ।' सर वाल्टर स्काट को भयंकर आर्थिक परेशानियों के कारण 'लाइफ ऑफ नैपोलियन बोनापार्ट' नाम की पुस्तक लिखनी पड़ी पर उन्होंने ब्रिटेन के प्रधानमंत्री से सहायता नहीं मांगी हालांकि वे उनके घनिष्ठ मित्र थे । 'दी पिक्चर आफ दी डोरियन ग्रे' जैसे

महान उपन्यास के लेखक आस्कर वाइल्ड पर भयंकर मुकदमा चला और जेल में ही उन्होंने 'दी बैलैड फ्राम दी रीडिंग जेल' नामक अमर कविता लिखी। अमरीका के अंगरेजी कहानीकार ओ. हेनरी [जिनकी तुलना चेखव व मोपांसा से की जाती है] एक बैंक में कैशियर थे। उन पर गबन का आरोप लगा और अदालत ने उन्हें लंबी कैद की सजा दी। उनको सजा सुनाते समय जज और जूरी के कई सदस्य रोने लगे और अदालत के क्लार्क को फैसला पढ़ना पड़ा। इस सारी घटना के संदर्भ में दर्दनाक बात यह थी कि ओ. हेनरी शायद निर्दोष था। रोते हुए जज को आंसू पोंछने के लिए ओ. हेनरी ने अपना रूमाल दिया जो जज साहब ने कभी वापस नहीं किया। वे उसे उस महान कलाकार की स्मृति-स्वरूप सदा अपने पास रखते रहे। ओ. हेनरी की सजा अमरीका के समाचार-पत्रों में प्रथम पृष्ठ पर छपी और अदालत को खुलेआम गालियां दी गयीं। जज ने ओ. हेनरी से अपील करने को कहा पर ओ. हेनरी ने वैसा करने से मना कर दिया। उस दृष्टिकोण से दुखी होकर जज ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। ओ. हेनरी ने जज साहब से कहा कि 'ईश्वर ने मुझे जेल दी है तो इसमें भी कुछ भला ही छिपा होगा।' उन्होंने जेल में अनेक अपराधियों की जीवनगाथा सुनी और उसके बाद उसने न्यायपालिका के विरुद्ध और कैदी अपराधियों के पक्ष में अनेक मर्म-स्पर्शी कहानियां लिखीं। फिलहाल जिस अंगरेजी पुस्तक को लेकर एक देश ने फांसी की सजा सुनायी है वह सलमान रश्दी की 'दी सैतानिक वर्सेज' नामक पुस्तक है। इस सजा ने उनकी पोथी को विश्व प्रसिद्ध कर दिया।

फ्रांस के कई लेखकों को अदालत के सामने कठघरे में खड़े होना पड़ा। 'मदाम बावरी' के लेखक फ्लाबर्ट ने अपनी लंबी स्टेटमेंट में बताया कि उनकी पुस्तक अश्लील न होकर अश्लीलता के विरोध में है। जूरी की सारी महिला-सदस्यों ने भी यही कहा और अंत में उन्हें बाइज्जत बरी कर दिया गया। इसी प्रकार 'कैंडीडा' नामक महान व्यंग्य-उपन्यास के लेखक वाल्तेयर को कई साल की कड़ी कैद हुई और उन्हें अपने जीवन के बेहतरीन वर्ष 'बैस्तीस' की कुख्यात जेल में व्यतीत करने पड़े। बाद में एक दिन ऐसा भी आया जब फ्रांस के सम्राट ने भरे दरबार में उनका हार्दिक स्वागत किया। बाल्जक बहुत ठाठ से रहता था, वह भड़कीले वस्त्र पहनता था और शानदार बग्घी रखता था। बुरी तरह कर्ज में दबे रहने के बावजूद वह हमेशा खुश रहता था। उसका कहना था कि अगर उसके कर्जदारों को नींद आ सकती है तो वह क्यों नहीं गहरी नींद सो सकता? कर्ज के दबाव में उसने 'दी ड्राल स्टोरीज' नामक अश्लील पुस्तक भी लिखी जो लाखों-करोड़ों में बिकी।

### दोस्तोवेस्की पर राजद्रोह

रूस में अनेक लेखकों को जेल में रहना पड़ा पर जितना दर्दनाक किस्सा दोस्तोवेस्की का है, उतना शायद और किसी का नहीं। उसे राजद्रोह के अपराध में कई और लोगों के साथ फांसी की सजा सुनायी गयी थी। जिस दिन उन्हें फांसी लगनी थी और जब वे खंभों से बांधे जा चुके थे और 'फायरिंग स्क्वाड' उन्हें जैसे ही बंदूक की गोलियों का निशाना बनाने जा रहा था

**एक बार किसी संदर्भ में मिर्जा गालिब भी कुछ दिनों जेल में रहे। जेल से छूटे तो उनके दोस्त काले खां ने उन्हें पकड़ लिया और लगे उनकी खातिर करने। मिर्जा साहब के एक दोस्त ने जब उन्हें रिहाई की बधाई दी तो मिर्जा साहिब ने कहा कि "कौन मरदूद कैद से छूटा है? पहिले गोरे की कैद में था और अब काले की कैद में हूं।"**

वैसे ही एक भागता हुआ घुड़सवार आया और कहने लगा कि 'बंदूकें वापस खड़ी करो क्योंकि महामहिम जार ने इन सबको प्राणदंड के स्थान पर मात्र उम्र कैद की सजा दी है।' इस घोषणा को सुनकर एक अपराधी उम्रभर के लिए पागल हो गया। दोस्तोवेस्की ने जेल में अनेक वर्ष गुजारे और वहां के जीवन पर आधारित 'दी नोट्स फ्राम दी डैड हाउस' नामक उपन्यास लिखा। स्तालिन जैसे संगदिल तानाशाह तक इस पुस्तक को पढ़ते-पढ़ते अपने आंसू पोंछने लगता था। साम्यवादी सरकार ने भी कई लेखकों को 'नोबिल पुरस्कार' मिलने पर नाराजगी दिखायी। इसी प्रकार उन महान साहित्यकारों की चर्चा न करना भी असंगत ही होगा जिन्हें नाजी अधिनायकवाद ने समाप्त किया। जूलियस फूचिक को हिटलर ने अनेक यातनाएं देने के बाद मात्र चालीस वर्ष की आयु में फांसी दे दी। स्टीफेन ज्वेग ने मानसिक तनाव में आकर आत्महत्या कर ली।

**मुंशी प्रेमचंद : विद्रोही के रूप में**

अब मैं अपने देश के लेखकों की चर्चा करूंगा। पहले उन लेखकों की चर्चा करूंगा जो मूलतः राजनीतिक नेता थे। जैसा कि हम सभी जानते हैं, लोकमान्य तिलक ने 'गीतारहस्य' नाम का विख्यात ग्रंथ तभी लिखा था जब वे जेल में थे। पंडित नेहरू ने 'भारत की खोज' नाम का प्रसिद्ध ग्रंथ तभी लिखा था जब वे जेल में थे। यशपाल एक सक्रिय क्रांतिकारी थे और उन्हें आठ वर्ष की कैद सुनायी गयी थी। प्रेमचंद की भी ब्रिटिश सरकार से खूब चलती थी। इसी कारण उन्हें नाम तक बदलना पड़ा पर उन्होंने विदेशी हकूमत के सामने कभी घुटने नहीं टेके। एक बार एक बड़ा मजेदार किस्सा हुआ। जिले के अंगरेज कलक्टर से ही उनकी सीधी झड़प हो गयी जब कि वे सिर्फ एक मामूली मुदर्रिस ही थे और जमाना था जलियांवाले बाग का। उनके घर और कलक्टर की कोठी के बीच में सिर्फ एक सड़क का फासला था। वे घर के बाहर बैठे दोस्तों के साथ गप कर रहे थे कि कलेक्टर साहिब बहादुर ने उन्हें इशारे से बुलाया और पूछा कि "जब मैं शाम को टहलने निकलता हूं तो आप सड़क पर आकर मुझे सलाम क्यों नहीं करते?" मुंशी प्रेमचंद ने जवाब दिया कि "मैं अपने काम में मशगूल रहता हूं और यह मेरी कोई ड्यूटी नहीं है कि सड़क पर टहलते किसी

साहब को सलाम करने मैं बाहर आऊं चाहे वह कितना भी बड़ा अफसर क्यों न हो ।'' इसके जवाब में कलक्टर ने कुछ अभद्रता और अशिष्टता दिखायी । प्रेमचंद ने अगले ही दिन अदालत में कलक्टर के खिलाफ मुकदमा दर्ज करवा दिया । सारे गोरखपुर शहर को रातोंरात सारी बात का पता लग गया । एक हफ्ते तक शहर के रईसों ने और सेशन-जज ने कोशिशें कीं और तब कहीं मुंशी प्रेमचंद और कलक्टर साहब में सुलह हुई । इसी तरह स्कूलों के एक इंस्पेक्टर ने भी एक दफा उनसे फरमाया कि 'तुम बड़े मग़रूर हो, मैं तुम्हारे घर के सामने से निकल जाता हूं और तुम हो कि सलाम तक नहीं सकते ?' मुंशीजी ने तपाक से जवाब दिया कि 'जब मैं स्कूल में होता हूं बस तभी नौकर होता हूं; अपने घर पर तो मैं उसका बादशाह हूं ।' इंस्पेक्टर तो बेचारा चला गया पर मुंशीजी ने उस पर मानहानि का मुकदमा ठोकना चाहा जो दोस्तों के कहने-सुनने के कारण दायर नहीं किया जा सका । हिंदी साहित्य की मुकदमेबाजी के इतिहास में सबसे दिलचस्प मुकदमा वह था जो महाकवि सुमित्रानंदन पंत ने कुछ गलत किस्म के लोगों की सलाह पर अपने वर्षों पुराने अभिन्न मित्र बच्चनजी के खिलाफ इलाहाबाद के सेशन-जज की अदालत में दायर किया था । बच्चनजी तो सम्मान मिलते ही दिल्ली से प्रयाग पहुंचे और अदालत में हाजिर हुए पर पंतजी की ओर से उनका वकील ही पेश हुआ । यह मुकदमा पंतजी ने वापस ले लिया । मेरे विचार में यदि यह फौजदारी का मुकदमा चलता तो जज साहब अपना फैसला कविता में ही देते । 'पोइटिक जस्टिस' का सिद्धांत यदि यहां काम नहीं आता तो कहां आता ?

बंकिम बाबू ने उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में [जब वे एक मजिस्ट्रेट थे] 'कपाल कुंडला' व 'आनंदमठ' जैसे विस्फोटक उपन्यास लिखे। शिकायत बहुत ऊपर तक गयी पर कुछ किया नहीं जा सका ! इसी प्रकार जब शरत् बाबू देशभक्त चितरंजन दास के संपर्क में आये तो उन्होंने 'पथेर दावी' नामक उपन्यास लिखा जिसकी प्रतियां पुलिस ने अपने अधिकार में ले लीं । शरत् बाबू ने एक मित्र से पूछा कि 'जेल में खाने को अफीम मिलती है या नहीं ?' दोस्त ने कहा कि नहीं । इस उत्तर को सुनकर शरत्चंद्र बोले कि 'ओह, जेलें शायद भद्र पुरुषों के रहने के लिए बनी ही नहीं ।' बहरहाल शरत् बाबू कानून की गिरफ्त में आते-आते बच गये ।

अब यह उचित ही होगा कि मैं फारसी और उर्दू के भारतीय अदीबों के बारे में कुछ बात करूं । 'आईने-अकबरी' के लेखक और शहंशाह अकबर के नौरतन अबुलफजल को जहांगीर ने एक हिंदू राजा की सहायता से उस वक्त कत्ल करवा दिया था जब वह [यानी कि जहांगीर] इलाहाबाद का गवर्नर था । जहांगीर ने तो जो सजा पायी वह पायी ही, उस राजा पर अकबर ने आठ करोड़ रुपये का जुरमाना लगाया । राजा ने यह हत्या दबाव में आकर की थी और वह इतना बड़ा जुरमाना अदा करने की स्थिति में हरगिज नहीं था । महाकवि केशवदास अपने मित्र राजा टोडरमल के पास गये और तब जुरमाना आधा किया गया और उसका भुगतान किश्तों में करने की अनुमति भी प्राप्त हुई । इसी प्रकार हिंदी के अमर कवि अब्दुर्रहीम खानखाना

को नूरजहां ने कैद में डलवाया और उसके साथ वह क्रूरता की गयी कि मैं तो उसे बयान भी नहीं कर सकता ।

## जेल में अकबर इलाहाबादी

उर्दू में जहां एक ओर ऐसे साहित्यकार हुए जो जज बने [जैसे डॉ. सर मुहम्मद इकबाल, आनंदनारायण मुल्ला और 'अकबर' इलाहाबादी] तो काफी शायर ऐसे भी हुए जिन्हें जेल काटनी पड़ी । एक बार किसी संदर्भ में मिर्जा गालिब भी कुछ दिनों जेल में रहे । जेल से छूटे तो उनके दोस्त काले खां ने उन्हें पकड़ लिया और लगे उनकी खातिर करने । मिर्जा साहब के एक दोस्त ने जब उन्हें रिहाई की बधाई दी तो मिर्जा साहिब ने कहा कि 'कौन मरदूद कैद से छूटा है ? पहिले गोरे की कैद में था और अब काले की कैद में हूं ।' उनका उत्तर सुनकर सब लोग हंस पड़े । इसी प्रकार 'दाग' देहलवी के पिता नवाब शमसुद्दीन को अंगरेज रेजीडेंट को कत्ल कराने के जुर्म में फांसी हुई थी । कुछ लोगों का खयाल था कि इस मामले में गालिब ने अंगरेजों की मदद की थी मगर मिर्जा गालिब सारी उम्र इस बात से इंकार करते रहे । शराब की लत के कारण गालिब अक्सर कर्जे से दबे रहते थे । उर्दू के बड़े शायर जिन्हें सबसे ज्यादा सजा मिली—सम्राट बहादुरशाह 'जफर' थे । लाल किले के दीवाने खास में [जहां शाहआलम के वक्त तक कंपनी का गवर्नर जनरल लार्ड क्लाईव जूते निकालकर आता था, बादशाह को नजर पेश करता था और बराबर खड़ा रहता था] उस बूढ़े आदमी का कोर्ट-मार्शल किया गया और उसे देश-निकाले की सजा दी गयी । कैद के दिनों में उसे तीस रुपया प्रतिमाह की रकम बतौर जेब खर्च के दी जाती थी और हालत यह हो गयी थी कि कागज कलम के न होने के कारण वह जेल की दीवारों पर कोयले से गजलें लिखा करता था । एक दयालु अंगरेज कलक्टर ने यह हालत देखी तो उसने कागज कलम वगैरा का माकूल इंतजाम किया । शहंशाह जफर की उम्र उस समय अस्सी से ऊपर थी ।

पाकिस्तान में भी कुछ उर्दू-साहित्यकारों को मुसीबतें उठानी पड़ीं । मंटो पर बाकायदा मुकदमा चला, इब्ने-इंशा को देश से निर्वासित किया गया और लगभग यही व्यवहार फैज-अहमद—फैज के साथ किया गया ।

—शमशेर हाउस, १/१
गुरु तेगबहादुर रोड, देहरादून-२४८००१

### धरती के अंदर फूल

**धरती के ऊपर जहां अनेक प्रकार के रंग-बिरंगे फूल मिलते हैं, वहीं पृथ्वी के गर्भ में भी विभिन्न रंगों के विचित्र फूल मौजूद हैं । 'रिजेन्थोलिया गार्डनरी' इसी तरह का एक आस्ट्रेलियन फूल है । यह फूल मिट्टी के अंदर ही फूलता है ।**
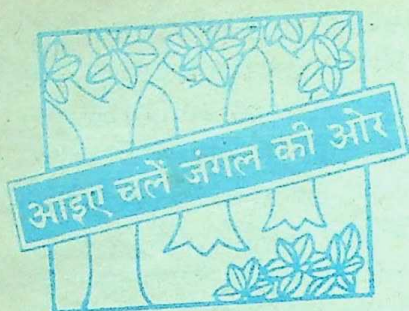
# संकट में हैं गैंडा

आम लोगों के बीच गैंडे का विस्मयकारी सींग अभी तक सम्मोहन का साधन बना हुआ है। सम्भवतः गैंडे की दीर्घावधि के लिए प्रभावोत्पादक समागम विशिष्टताओं के कारण अनेक लोगों का ऐसा विश्वास है कि यह सींग शक्तिशाली कमोत्तेजकता लिये होता है। चीन के लोगों में ऐसी मान्यता है कि बुखार को दूर करने, सिर दर्द व हृदय की मुसीबतों से छुटकारा पाने, यकृत व चर्म रोगों को दूर भगाने के लिए गैंडे का सींग एक कारगर औषधि है। उत्तरी यमन में गैंडे के सींग से खंजरों के दस्ताने तैयार किए जाते हैं जिसे जंबिया कहा जाता है। ऐसे प्रतिष्ठा का प्रतीक
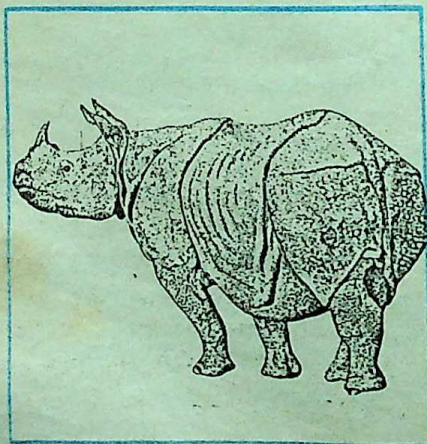
माना जाता है। इसलिए गैंडे के सींग की मांग में काफी वृद्धि हुई है जिसके कारण गैंडे की अनेक प्रजातियां अंत के निकट पहुंच गयी हैं। आज गैंडे की केवल एक प्रजाति अर्थात भारतीय गैंडा भारतीय उपमहाद्वीपों में देखा जा सकता है। और इस क्षेत्र से एशिया गैंडे की अन्य दो प्रजातियां शिकारियों द्वारा सैकड़ों वर्ष पूर्व मार भगा दी गयी।

गैंडे का सींग वास्तव में सींग नहीं है क्योंकि इसमें हड्डी नहीं होती है। इसके स्थान पर यह केरेटिन के संघनित रेशों से मिलकर बना होता है ठीक इसी तरह की बनावट घोड़े की टाप में भी होती है। पर्याप्त परीक्षणों के बाद यह बात स्पष्ट हुई है कि गैंडे के सींग में कोई विशेष प्रकार की सामग्री नहीं होती है। लोगों ने इसके सींग के प्रति भ्रामक धारणा बना रखी है।

भारतीय गैंडे दलदली जंगलों में लंबी घास और सरकंडों के बीच रहना अधिक पसंद करते हैं। अन्य जातियों के गैंडों के विपरीत भारतीय गैंडा अधिक सामाजिक प्राणी हैं। बहुधा ये एक ही परिक्षेत्र में साथ-साथ रह लेते हैं। भारतीय गैंडे मूलतः भारत गंगा के मैदान और हिमालय की तलहटी में असम से नेपाल तक के क्षेत्र में पाये जाते हैं। शिकारियों द्वारा शिकार किये जाने से १९०४ में इनकी संख्या में भारी कमी आ गयी थी। असम और उत्तरी बंगाल में उस समय संख्या केवल बारह तक रह गयी थी। सौभाग्य से वर्तमान में इन्हें और इनके प्राकृतिक आवासों को पर्याप्त संरक्षण दिए जाने से इनकी संख्या में वृद्धि हो सकती है।

# कवियों का कल्पना-स्रोत कचनार

## द्वारा : ल. बालसुब्रमण्यम

प्राचीन काल से ही भारतीय कवियों ने कचनार की सुंदरता की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। महाकवि कालिदास का कहना है कि फूलों से सजे हुए कचनार को देखकर प्रेमियों के दिलों में एक गहरी टीस उठती है, क्योंकि, "शाखाओं के अग्रभाग पर फूलों का जमघट है, कोमल पत्ते निकले हुए हैं, मधुरस को पीते हुए मस्त भौंरे इकट्ठे हो गये हैं, शरद ऋतु में खिला हुआ कचनार का ऐसा पेड़ किसके चित्त को विदीर्ण नहीं करता ?''

कचनार मूलतः भारतीय उपमहाद्वीप का वृक्ष है। हिमालय के निचले भागों में तथा बर्मा में यह प्राकृतिक रूप से पाया जाता है । चीन में भी इसकी कुछ जातियां उगती हैं । यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में पनपता है परंतु ऐसे स्थान इसे विशेष पसंद है जहां पानी आसानी से निथर जाता हो । यह अधिक ठंड को सहन नहीं कर सकता ।

कचनार की सुंदरता का मुख्य कारण इसके आकर्षक, बड़े आकार के, रंगीन, सुगंधित फूल हैं। ये फूल अनेक रंगों के हो सकते हैं—सफेद, गुलाबी, बैंगनी आदि । शायद इसीलिए इसका वैज्ञानिक नाम बौहनिया वेरीगेटा रखा गया है । वेरीगेटा का अर्थ होता है बहुरंगी । फूलों की पंखुड़ियों पर आकर्षक रेखाएं भी अंकित होती है । फूल तब निकलते हैं जब वृक्ष के सभी पत्ते झड़ गए हों। फूलों की बहुलता के कारण कचनार दूर से ही पहचाना जाता है ।

कचनार मध्यम आकार का वृक्ष होता है । इसकी ऊंचाई १० मीटर से अधिक नहीं होती ।पत्ते नवंबर-दिसंबर में गिरना आरंभ करते हैं । मार्च
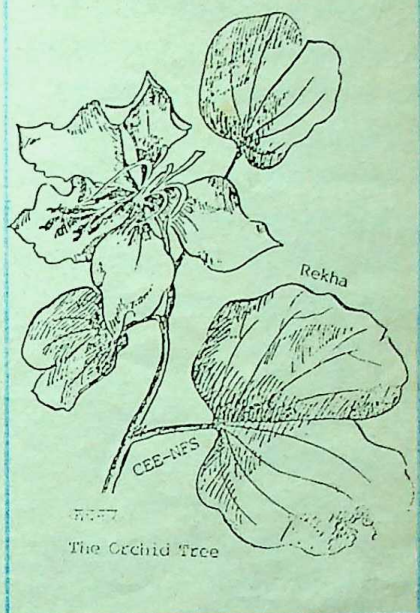
तक पेड़ लगभग पत्रहीन हो जाता है । नये पत्ते अप्रैल-मई तक आ जाते हैं । इस बीच बड़े सुंदर सफेद-गुलाबी फूल फरवरी-अप्रैल में निकलते हैं । ये मधुमक्खियों, पक्षियों और बंदरों को आकर्षित करते हैं । मधुमक्खियों आदि से ही इन फूलों का परागणन भी होता है ।

# सारस : स्वयं अपने शत्रु

सारस स्वयं अपने सबसे बड़े शत्रु हैं । शिकारी और भक्षक तो बाद में आते हैं ।

भूखे सारस बहुत खतरनाक हो जाते हैं और एक-दूसरे पर आक्रमण करने लगते हैं । अफ्रीका के सेनेगल देश में स्थित इजाउड्ज नेनल पार्क के सरोवर में ये पक्षी भूखी अवस्था में प्रायः परस्पर लड़ते हुए देखे जा सकते हैं । इस आपसी संघर्ष में चोंच पर गहरे घाव हो जाने के कारण ये खा नहीं पाते और भूखे मर जाते हैं ।

जेल एक विचित्र दुनिया है । जो घटना कहीं न घटित हो वह यहां दैनिक घटती रहती है । जैसे जंगल में तरह-तरह के अजगर, सांप, सिंह, भालू हिंसक पशुओं का वास है, कुछ थोड़े से अपवादों को छोड़ जेल में वैसे ही मनुष्य निवास करते हैं । भूल से कोई पाप हम कर बैठते हैं तो मन में क्लेश होता है । पर यहां घनघोर अपराधियों का जमघट बारहों मास बना रहता है, हत्या, डकैती, बलात्कार, लड़की

तुलसीदास जी कह गये हैं । बड़का-बड़का अफसर, मनिस्टर रोज कितना रुपया बना रहा है उसको कोई कहने जाता है । हमारा भी यहीं खेला होता रहेगा, कोई कुछ बोले । अपराधियों में यही मनोवृत्ति बनी रहती है और मौज से वे अपना दिन काटते हैं । छूटते हैं, बरस-छह महीना में ऐश-मौज कर फिर इसी दुनिया में आ विराजते हैं । हंसी में कहते भी हैं —जेल तो मेरी ससुराल है, इसी में जिंदगी काटनी है ।

# जेल डॉक्टर की डायरी

● डॉ. महेश नारायण

भगानेवालों का एक तरह से मेला लगा रहता है । पात्र बदलते हैं, पर संख्या नहीं घटती । समुद्र से दस बाल्टी पानी निकालिए वह घटने को है ? खा रहे हैं, पी रहे हैं, दंड बैठक कर रहे हैं । ताश, गाना-गोटी जमा है । चिंतामुक्त जीवन है । तारीख पर कचहरी गये । लौटकर इसी दुनिया में खो गये । क्या पाप है, क्या पुण्य-सब बराबर है । बोलो सियावर रामचंद्र की जय । भगवान सब देखता है, नीचे का हाकिम क्या समझेगा । अब दशहरा आ रहा है, उसकी तैयारी करो । मुकदमे की तारीख पड़ती ही रहती है । उससे क्या लेना-देना । छूटकर भी तो यही काम करना है और क्या दूसरा धंधा अपनाया जाएगा । पाप-पुण्य कुछ नहीं । सकल पदारथ हैं जग माहीं —गोस्वामी

अब विदेशी शासन नहीं रहा । जेल में आराम अधिक, तकलीफ कम है । पर यह बात जो मुसटंड हैं, प्रभावशाली हैं, उन पर लागू होती है । यदि उनकी बात नहीं चली तो छत पर चढ़ जाएंगे, अनशन कर देंगे, भीतर जेल स्थित फैक्टरी में हड़ताल करवा देंगे । असेंबली में काम रोको प्रस्ताव तक पेश हो सकता है । जेल अधिकारियों को नौकरी करनी है तो उनकी बात माननी ही पड़ेगी । पर साधारण कैदी तो पिसता रहता है । वह इन मुस्टंडों का नौकर बना रहता है तभी उसकी खैर है । जो ऐसा नहीं कर सके उसकी ओर कोई देखनेवाला नहीं ।

कोई ऐसा दुष्कर्म नहीं जो जेल में नहीं होता है । मारपीट, अप्राकृतिक अभिचार, कभी-कभी आपसी मनमुटाव बढ़ा तो किसी की हत्या भी

हो सकती है। जहां बाघ, शेर का जमाव हो वहां जो न हो जाए थोड़ा है। ऐसा उदाहरण विरले देखने में आता है कि जेल में आकर भी आदमी संयमित रहे, सुपथ का अवलंबन करता रहे।

कई जिला एवं केंद्रीय कारागारों में मैं चिकित्सा पदाधिकारी रहा। जो कैदी विशेषकर भयंकर अपराध वाले मेरे पास चिकित्सार्थ, टॉनिक या विशेष भोजन मांस, दूध, फल, अंडा के निमित्त आते, तो अक्सर मैं उनसे कहता—किसलिए यह सब काम करते थे। तुम जेल में, तुम्हारा परिवार बिना सहारे हो, भोजन एवं कपड़ों के लिए तरसता है। क्या लाभ तुमको अपराध कृत्य से मिलता है। लज्जा से वे चुप हो जाते, कोई उत्तर उनसे देते नहीं बनता था। कुछ यह भी कहते, छूटने पर नहीं कुछ करने पर भी पुलिस मुझे दूसरे जुर्म में फंसा फिर यहां भेज देगी। कुछ का यह उत्तर होता, अब दूसरा काम मुझसे होने का नहीं। मैं चुप हो जाता, पर इस दिशा में मेरा प्रयास बराबर जारी रहता। केंद्रीय काराओं में कल-कारखाना होता है, जहां लोहारगिरी, बढ़ई मास्टरगिरी, नेवार बनाना, दरी बनाना, कंबल बनाना, कपड़ा बनाना आदि काम कैदियों को सिखाया जाता है, पर ऐसा उदाहरण मेरे देखने या जानने में नहीं आया कि कैदी छूटकर इन पेशों को अपनाता है। साधारण नागरिक का विश्वास भी इस पर से उठ जाता है। अरे यह जेल काटे हुए है इसका क्या ठिकाना।

राजेंद्र बाबू जब सत्याग्रह-आंदोलन के मध्य हजारीबाग जेल में रहे तो वहां समय के सदुपयोग के निमित्त जेल अधिकारियों की

विशेष अनुमति ले नेवार बनाना सीखते थे। बंगाल के नामी नेता जे.एम. सेनगुप्त को एक ही लड़का था। उसे स्कूल पहुंचाने के निमित्त एक नौकर उन्होंने रखा जो हत्याकांड का अभियुक्त रह जेल से हाल ही में छूटा था। यह रहस्य जान जाने पर भी उन्होंने उसे हटाया नहीं, विश्वास किया। पर ये विशेष उदाहरण हैं। सर्वसाधारण पर लागू नहीं होते।

एक केंद्रीय कारा में मैं पदस्थापित था। वहां एक दिन एक कैदी मेरे पास आया। नाटा कद, काला रंग, गठीला बदन, धवल दंतपंक्ति। नाम उसने जो बताया उसे सुन मेरा रोमांच हो गया। बिहार में, खासकर उत्तर बिहार में उसका नाम सुन लोग कांप उठते थे। स्वाधीनता आंदोलन के मध्य जिस जमींदार के यहां वह पहुंचा, जितना रुपया उसने मांगा तत्काल वे उसे बिना एक पल विलंब किये दे देते थे। घोड़े से जाता था। उसके साथ पिस्तौल से लैस एक गिरोह रहता था, जो विपरीत स्थिति या खतरा होने पर वे अपने हथियार से दुश्मन का सामना करते और उसे खत्म करके छोड़ते। पुलिसवालों का सामना होने पर भी उनके साथ वे यही व्यवहार

करते । मार-काट कर इच्छित रकम ले वे जल्दी से निर्दिष्ट स्थान पर निकल जाते । अंगरेजी शासन था । उसके पकड़ने के अनेक उपाय किये गये पर वह पकड़ में नहीं आता था । उसका नाम सुन लोग त्राहि मांगते थे । यही नहीं, जो पुलिस का भेदिया रहा, स्वाधीनता आंदोलन में जिसने अंगरेजों का साथ दिया उसका तो वह सफाया ही कर देता था ।

स्वराज्य हुआ तब वह किसान आंदोलन में भिड़ा, किसानों का दुःख दूर करने के निमित्त । पर मार्ग उसका हिंसा का ही रहा । कहीं अकाल है । जमींदार हां कहे या ना उनकी कोठी का धान जबर्दस्ती निकलवा गरीबों में बांट देता था । गरीब किसानों का दुःख-दर्द दूर करने के निमित्त वह पैसा भी इसी उपाय से लाता और अभावग्रस्तों के बीच वितरित कर देता । पहले अंगरेज डरते थे, अब बड़े भूस्वामी । उसकी सभा में हजारों-हजार की संख्या में लोग जुटते और वह पूंजीपतियों के अत्याचार के विरुद्ध जोशीला भाषण देता । कहीं बाढ़ आयी । किसानों के घर डूब गये तो वह बिना सरकारी आदेश के बांध कटवा देता और किसी को उसके विरुद्ध बोलने की हिम्मत नहीं होती । अपने जीवन में न जाने कितनी हत्याएं उसने की होंगी —कोई गिनती नहीं । कहा, "डॉक्टर बाबू, दो-तीन चीज की जरूरत है । मेहरबानी कर आप आर्डर कर दीजिए । क्या ? चालमुघरा आंचल, एक पाव दूध तथा दो कुटिया मांस ।"

"चालमुघरा तेल क्या कीजिएगा ।"

"शरीर में मालिश करूंगा ।"

मैंने तुरंत इन तीनों वस्तुओं का आदेश कर दिया । वह समय पर आता और ले जाता । यदि भीड़ है तो चुप खड़ा हो जाता । भीड़ होती तो मांस और दूध ले शांति से चला जाता । मुझ पर दृष्टि पड़ती तो मुसकराकर नमस्ते करता विनयपूर्वक । जेल के सब नियमों का पालन करता । कभी किसी जेल कर्मचारी या कैदी से उसका झगड़ा नहीं हुआ ।

केंद्रीय कारा से मेरी बदली दूसरे सेंट्रल जेल में हुई । कुछ वर्ष बाद एक जिला जेल में गया तो फिर उससे वहां मेरी भेंट हुई । किसान आंदोलन में ही पकड़ा वह जेल आता था । स्वराज्य के पश्चात अब गुप्त या भूमिगत जीवन उसने त्याग दिया था । मुझसे मिल वह बहुत प्रसन्न हुआ । विनम्रतापूर्वक उन्हीं तीन चीजों की मांग की । मैंने आदेश दे दिया । अन्य कैदियों की भांति वह सब समय जेल अस्पताल नहीं आता । बस एक समय, आदेशित वस्तु लेने के निमित्त । जेल में राजनीतिक बंदी आते रहते हैं । वे अस्पताल में भी आ, आवश्यक न होने पर भी अपनी इच्छित वस्तु की मांग करते हैं । डॉक्टर से झगड़ा करने पर तैयार हो जाते हैं । पर इसने कभी उन नेताओं का साथ नहीं दिया । अपने काम से काम । अतः मैं इससे बहुत प्रभावित होता था । हंसमुख व्यक्ति था । मुझसे जी खोलकर बात करता । पर मिनट, आध मिनट । फिर वापस अपने कक्ष में चला जाता । कभी-कभी पूछने पर अपने बीते भूमिगत जीवन की कहानी सुनाता । जेल में कहां क्या हो रहा है इससे कोई सरोकार नहीं रखता । घूमता-फिरता, शांति से पड़ा रहता । शरीर उसका बहुत हृष्ट-पुष्ट था । जब नंगे बदन कभी रहता तो संथाल के समान उसका शरीर चमकता ।

समय उपरांत मेरी बदली दूसरी जिला जेल में हुई। यहां भी वह पकड़ाकर आया। वही निवेदन, तदनुकूल मेरा आदेश। एक दिन उसने कहा, "एक काम और कर दीजिए डॉक्टर बाबू तो बड़ी कृपा होगी।"

"क्या ?"

"मांस बंटने के समय बड़ी भीड़ हो जाती है। धक्के-मुक्की के बीच मेरा नंबर बहुत बाद में आता है। तब तक अच्छा फांक सब खत्म हो जाता है। छेछरा और झोल ही मेरे हिस्से पड़ता है। आप बांटनेवाले को आदेश दे दीजिए कि जब मांस कड़ाही में चढ़ा रहे उसी समय मुझे मिल जाए। मैं अपने कमरे में गरम कर सिझा लूंगा।"

मैंने ऐसा ही विशेष आदेश इनके लिए कर दिया। यही सिलसिला चला। चूंकि यह आदेश अन्य किसी कैदी के लिए नहीं था। अतः निश्चित समय पर वह अपना कटोरा ओढ़ने में छिपाये आता और वैसे ही छिपाकर मांस ले जाता जिससे कोई देखे नहीं।

कई जेल में मेरे साथ रह वे बहुत हिलमिल गया था। प्रारंभ से राजनीतिक आंदोलन में रुचि लेने के कारण मैं उसके संघर्ष की कहानी रुचि से सुनता था। उसके प्रति आदर का भाव रखता था। अतः एक दिन मैंने उससे यह सुझाव रखा कि स्वराज्य आंदोलन में आपका बहुत योगदान रहा। स्वराज्य के बाद किसान आंदोलन में भी आप बहुत सक्रिय रहे। अब जेल से छूटकर देश को आगे बढ़ाने में किसी रचनात्मक कार्य में आप संलग्न होइये जिसमें सबकी भलाई हो। संघर्ष के मार्ग लगिए।'

कहा, "डॉक्टर बाबू। किसान बहुत तकलीफ में हैं। उनका दुःख देखा नहीं जाता। जालिम जमींदार ऐश-मौज का जीवन व्यतीत करते हैं। किसान जो देश की रीढ़ है उसकी ओर कोई नहीं देखता।"

मैं लाचार पड़ जाता हूं। मैंने यही कहा, "मेरी बात पर शांत हो विचार कीजियेगा।" जैसे-जैसे मेरे अवकाश प्राप्त करने का दिन निकट आता गया, मैंने जब-तब उससे यह बात दुहरायी। बात नहीं काट, मुसकराकर 'अच्छा' कह चला जाता।

मैंने सिविल असिस्टेंट सर्जन के पद से अवकाश ग्रहण किया। वह भी जेल से छूट बाहर निकल गया। बहुत दिनों तक उनसे कोई संपर्क नहीं हुआ। पर जो साहित्यिक मित्र उसको जानते थे उनसे उसकी चर्चा भर होती। एक साहित्यकार की जयंती में गया तो बहुत दिन बाद उससे भेंट हुई। सभा का मैं ही अध्यक्ष था। वह भी मुझसे अनुमति मांग उन पर कुछ बोला। मेरे कहने पर आश्वासन दिया, "इनके स्मृति ग्रंथ की आप तैयारी कीजिए। पैसा मैं जुटाऊंगा।" सभा से प्रस्थान करते

समय जेल में कही बात मैंने दुहरायी तो वह मुस्कराकर रह गया। चलते समय मुझे प्रणाम किया फिर मैं भूल गया सारी बात। अब तो मैं जेल में हूं नहीं कि वह आये और अपनी बात मैं उससे कहूं।

एक दिन एक मित्र ने बताया कि उसने अपने इलाके में एक डिग्री कॉलेज की स्थापना की है और वहीं उसका सेक्रेटरी है। सुनकर जैसी प्रसन्नता मुझे हुई वह वर्णन नहीं कर सकता। मेरी बात का प्रभाव पड़ा ऐसा खूंखार आदमी सुमार्ग पर चला। उससे कुछ दिन पश्चात भेंट हुई तो इस शुभ समाचार की मैंने चर्चा की, प्रामाणिकता के लिए उसने मुसकराकर कहा, ''आपका यही हुक्म था तो क्या करता।'' फिर कई बार उससे भेंट हुई। बराबर कॉलेज की समृद्धि के विषय में बातें करता। इस संबंध में अपनी दौड़-धूप की बात करता। पहले जब संघर्षमय जीवन था तो उसके आगे-पीछे कई व्यक्ति सुरक्षा के निमित्त सादे भेष में रहते। अब जब कॉलेज का काम आरंभ किया तो बराबर उसको मैंने अकेले घूमते देखा। कॉलेज को सरकार ने स्वीकृति प्रदान कर दी है। उसके अंगीभूत होने की बात चल रही है। कई वर्ष पूर्व उसका संस्थापक चल बसा।

वह तो चला गया। पर मुझे इस बात का बहुत आनंद हुआ कि मेरी बात का उस पर प्रभाव पड़ा। देश के लिए बहुत बड़ा काम करके वह गया। ऐसा उदाहरण कम देखने में आता है। यह दूसरों के लिए आदर्श का काम करेगा।

—मधुबनी, पूर्णिया

## चूहों और बंदरों की पूजा

**बीकानेर के पास एक ऐसा मंदिर है जहां चूहों को पूजा जाता है और शिमला के पास 'जाखो मंदिर' भी ऐसा मंदिर है जहां बंदरों की पूजा की जाती है। यहां हर वर्ष आसपास के इलाके से हजारों बंदर आते हैं।**

***ओजोन गैस वायुमंडल में एक ऐसी परत का निर्माण करती है जो सूर्य की हानिकारक पैरा-बैंगनी किरणों को अपने अंदर सोख कर उन्हें पृथ्वी तक नहीं आने देतीं। वायु प्रदूषण, कार्बन डाइ-आक्साइड, क्लोरोफ्लोरा कार्बन तथा ब्रोमीन युक्त हेलोंस आदि गैसों की बढ़ी हुई मात्रा ओजोन की परत को नष्ट कर रही है। ओजोन की परत के नष्ट होते जाने का दुष्परिणाम दक्षिण आस्ट्रेलिया के लोगों के सामने आ गया है। यहां चर्म कैंसर अधिक फैलने लगा है जो विश्व के अन्य भागों की अपेक्षा दो गुना है।***

# सुकरात के जीवन का अंतिम दिन

● चंद्रप्रभा पांडेय

सुकरात ग्रीस (एथेंस) का महान दार्शनिक था उसका जन्म ईसा पूर्व ८६९ में हुआ था। ईसा पूर्व ३९९ में उसे अपने विचारों, आदर्शों, शिक्षाओं तथा कार्यों के लिए मृत्यु दंड दिया गया। उसने हेमलॉक 'जहर' का प्याला खुशी से पीकर अपने विचारों और सिद्धांतों के लिए अपने जीवन को उत्सर्ग कर दिया। उसके जीवन में अंतिम दिन की घटनाएं जो उसके शिष्य प्लेटो ने अपनी पुस्तकों में दर्ज की हैं कुछ इस प्रकार थीं—

सुकरात के जीवन का वह अंतिम दिन और दिनों की ही तरह था। वह जेल में बंद था और बेड़ियों से जकड़ा हुआ था, परंतु सुख की नींद में सोया हुआ था। उसके मित्र क्रीटो, फीडो, अपोलोडोरस, सिम्मियास तथा सीबस रोज तड़के ही उस जगह पर एकत्रित हो जाते जहां पर मेलेटस द्वारा सुकरात पर किये गये केस और आरोपों की सुनवाई तथा जांच-पड़ताल हुई थी। यह जगह जेल के सामने ही थी ये सब अन्य शुभचिंतकों और एथेंसवासियों के साथ सुबह जेल के दरवाजे के खुलने का इंतजार करते और दरवाजे के खुलते ही सुकरात के पास अंदर चले जाते। सुकरात के प्रसिद्ध तरीके (प्रश्न-उत्तर) से बातचीत होती रहती, और जीवन और मृत्यु के तमाम पहलुओं पर बहस होती। इस प्रकार सारा दिन बीत जाता और सूर्यास्त होने पर वे सब अपने घर चले जाते।

मृत्यु दंड के एक दिन पहले क्रीटोजो कि सुकरात का घनिष्ठ मित्र भी था और एथेंस का एक रईस, उसके पास गया था। उसने तरह-तरह से सुकरात को समझाने की और

मनाने की कोशिश की थी कि वह जेल से भाग जाए, और थेसाली जाकर अपनी प्राणरक्षा करके, अपना जीवनयापन करे । भाग जाने का सारा इंतजाम आसानी से वह कर सकता था और अपनी सारी धन-दौलत लगाने के लिए भी वह तैयार था । उसने तरह-तरह की दलीलें दी थीं—"इस प्रकार अन्यायपूर्ण ढंग से दिये गये मृत्यु दंड को स्वीकार कर लेना कायरता है । जानबूझकर इस प्रकार अपने प्राणों की आहुति देना स्वैच्छिक बलिदान की तलाश है । अपने बीवी-बच्चों को मझधार में छोड़ना कर्त्तव्य-विमुखता है ।

जब तुम अपने बच्चों की शिक्षा और पालन-पोषण का भार खुद ले सकते हो तो उसे न लेना अपने कर्त्तव्य से च्युत होना है । युवा मेलेटस के लगाये आरोपों (कि तुम एथेंस के युवावर्ग को अपने विचारों से भ्रष्ट कर रहे पुराने देवी-देवताओं के बदले नये-नये देवी-देवताओं की स्थापना कर रहे हो) को मानकर कोर्ट में जाकर उनका सामना करने की थी कोई जरूरत नही थी । और इस सब अन्याय को खुशी-खुशी सह लेना कायरता से, एक प्रकार की आत्महत्या है ।"

फिर अगर हम सब जो तुम्हारे मित्र और शुभचिंतक हैं तुम्हें बचाने की कोशिश नहीं करते तो वह भी हमारी कर्तव्य विमुखता होगी । जो कुछ करना है सब आज की ही रात करना है, क्योंकि डेलॉस से अपोलो की पूजा करने गया हुआ जहाज वापस आ गया है । (जितने दिनों तक यह जहाज पूजा के लिए जाता-आता था, उतने दिनों तक एथेंस में कोई रक्तपात नहीं किया जाता था) और आज तुम्हारे जीवन का आखिरी दिन है ।

**हर चीज के दो पहलू होते हैं । वैसे तो वे एक-दूसरे के विपरीत दिखते हैं, परंतु दरअसल एक-दूसरे के पर्याय हैं—न्याय-अन्याय, सुख-दुःख, सुंदर-असुंदर, गरम-ठंडा या सोना-जागना । ये एक-दूसरे से ही पैदा होते हैं एक के बिना दूसरे की कल्पना या अस्तित्व ही नहीं होता । इसीलिए जीवन मृत्यु का मृत्यु जीवन का ही दूसरा रूप है ।**

परंतु सुकरात पर क्रीटो तथा अन्य मित्रों की बातों का कोई असर नहीं हुआ । क्रीटो यद्यपि हर प्रकार से सुकरात की प्राणों की रक्षा के लिए तैयार था, परंतु सुकरात अपने निश्चय पर अटल रहा अविचलित रहा । वह भाग जाना, किसी प्रकार अपनी जान बचाना, कानून के खिलाफ समझता था । वह अन्याय का जवाब अन्याय से देना ठीक नहीं समझता था । वह बुराई को बुराई से नहीं काटना चाहता । राज्य के कानून का (वह जैसा भी हो) उल्लंघन नहीं करना चाहता । क्रीटो को उस दिन निराश होकर लौटना पड़ा था ।

उस ऐतिहासिक दिन भी तमाम एथेंस निवासी, सुकरात के मित्रगण, क्रीटो आदि रोज से पहले ही पहुंचकर जेल के बाहर इंतजार कर

रहे थे । जेल के दरवाजे खुलने पर वार्डन ने उनसे कहा कि वे बाहर ही रुकें क्योंकि उसे सुकरात की बेड़ियां खोलने का आदेश दिया गया है और वह उसी आदेश का पालन करने जा रहा था । थोड़ी देर बाद वार्डन ने इन लोगों को अंदर जाने का इशारा किया । जब ये लोग अंदर घुसे तो देखा कि सुकरात के पैरों की बेड़ियां खुली थी । सुकरात की पत्नी जैनिथप अपने छोटे लड़के को गोद में लिए सुकरात के पास बैठी थी । उन सबको देखते ही जैनिथप रोने लगी और वही सब कहने लगी जैसा कि स्त्रियां ऐसे समय कहती हैं । सुकरात ने क्रीटो से कहा कि वह जैनिथप को घर पहुंचा दे । इस पर क्रीटो के नौकर-चाकर जैनिथप को घर ले गये । वह छाती पीटती, रोती हुई वहां से गयी ।

कुरसी पर बैठते हुए, सुकरात ने अपने पैर को ऊपर उठाकर सहलाते हुए कहा, "सुख और दुःख कितने अद्‌भुत मान हैं । यद्यपि वे कभी एक साथ नहीं होते, परंतु कभी भी एक-दूसरे से ज्यादा दूर नहीं होते । पैरों में बेड़ियों के बंधे होने से जो दर्द था, उनके खुल जाने से वही अब सुख और आनंद में बदल गया है । इसी प्रकार सुख-दुःख लगातार एक-दूसरे का पीछा करते हैं ।"

इसी समय उसके मित्र सीबस ने उससे कहा कि मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूं । कई लोग यह जानना चाहते हैं, खासकर ईवनुस कि आज तक तुमने कभी कविताएं नहीं लिखीं, परंतु अभी हाल में तुमने 'अपोलो की प्रार्थना' और ईसप की कहानियों का पद्य रूपांतरण किया है । इस समय तुम्हारा यह सब लिखने का क्या उद्देश्य था ।"

सुकरात ने कहा, "सीवस तुम ईवनुस से कहना कि मैंने यह सब रचनाएं किसी बराबरी की या प्रतिद्वंद्विता की भावना से नहीं लिखीं । मैंने उन्हें अपने एक स्वप्न की वजह से लिखा है । मुझे जीवनभर लगातार एक स्वप्न आता है कि, 'सुकरात कला की सेवा करो' उसी के लिए मेहनत करो ।" पहले मुझे लगता था कि मैंने जीवनभर तो कला की ही सेवा की, क्योंकि मैं सोचता हूं कि दर्शन से बड़ी कला और क्या हो सकती है । दार्शनिक से बड़ा कलाकार कौन हो सकता है ? परंतु अभी जब अपोलो की पूजा में गये हुए जहाज की वजह से मेरा मृत्यु दंड रुका रहा तो मुझे लगा कि मुझे अपोलो के सम्मान में कुछ लिखना चाहिए और मैंने इन कविताओं की रचना की । इन्हें लिखने के पीछे मेरे मन में ईवनस को नीचा दिखाने का कोई ख्याल नहीं था । सीवस तुम उसे यह सब जरूर बताना और मेरी ओर से उससे अलविदा कहना ।

इसके बाद सुकरात ने पैर जमीन पर रख दिये और अंत तक इसी मुद्रा में बैठा रहा, इस समय के हुए वार्तालाप और बहस में सुकरात ने बहुत-से विषयों पर अपने विचार शांत भाव से अपने प्रश्न-उत्तर की शैली में व्यक्त किये । "आत्महत्या नहीं करनी चाहिए । आत्मा क्या है ? जीवन का अंत तब तक नहीं करना चाहिए जब तक भगवान की इच्छा न हो ।"

इसी बीच क्रीटो ने सुकरात से कहा कि जो व्यक्ति तुम्हें जहर देगा वह तुम्हें ज्यादा बातचीत करने से मना कर रहा है । उसका कहना है कि ज्यादा बातचीत करने से शरीर में ज्यादा गरमी पैदा होगी और गरमी की वजह से जहर का असर देर से होगा । एक के बजाय दो-तीन

***सुकरात को विष का प्याला दिया गया और उन्होंने सहज ही लिया, उनकी मृत्यु अवश्यंभावी जान सभी मित्र रोने लगे तो वे बोले, "जिस वजह से मैंने स्त्रियों को जाने को कहा तुम सब आदमी होकर वही सब कर रहे हो...., फिर क्या हुआ.... ?***

खुराक देनी पड़ेंगी । सुकरात ने कहा कि उससे कहो वह चिंता न करे दो-तीन खुराक की जरूरत नहीं पड़ेगी ।

उसने अपने मित्रों और शुभचिंतकों के चिंतित होने पर कहा, "जिस व्यक्ति ने अपना जीवन दर्शन चिंतन के लिए बिताया है, वह मृत्यु को सामने पाकर विचलित होने के बजाय हर्षित होता है । उसे लगता है कि अब मेरी आत्मा तमाम शारीरिक बंधनों से मुक्त हो जाएगी । उसने वैसे भी जीवनकाल में कभी शरीर को प्राथमिकता नहीं दी, सांसारिक और दैहिक सुखों को कभी महत्त्व नहीं दिया, हमेशा जीवन-सत्य और ज्ञान की खोज करता रहा । वह शरीर और जीवन से ऊपर उठकर मुक्त होने की चेष्टा में रहा, और इसीलिए मृत्युद्वार पर भयभीत और विचलित नहीं बल्कि निर्भीक और आनंद से भरा हुआ है । दार्शनिक तो जीवनभर मृत्यु की ही प्रैक्टिस करता रहता है, इसलिए उसे मृत्यु भयानक नहीं लगती । हर चीज के दो पहलू होते हैं । वैसे तो वे एक-दूसरे के विपरीत दिखते हैं, परंतु दरअसल एक-दूसरे के पर्याय हैं—न्याय-अन्याय, सुख-दुःख, सुंदर-असुंदर, गरम-ठंडा या सोना-जागना । ये एक-दूसरे से ही पैदा होते हैं, एक के बिना दूसरे की कल्पना या अस्तित्व ही नहीं होता । इसीलिए जीवन मृत्यु का मृत्यु जीवन का ही दूसरा रूप है । सब कुछ साइक्लिक या चक्रीय है ।"

इस लंबी बातचीत में बहुत देर हो गयी थी, तब अचानक सुकरात ने कहा कि अब समय हो गया है । मुझे अब स्नान करने के लिए जाना चाहिए । जहर पीने के पहले नहा लेना बेहतर होगा क्योंकि इससे स्त्रियों को मेरे शव को नहलाने की तकलीफ नहीं उठानी होगी ।

क्रीटो ने सुकरात ने पूछा, "तुम अपने परिवार के लिए कुछ करने के लिए कहना चाहते हो तो हमसे कहो, हमें आदेश दो । तुम जो कुछ भी चाहोगे हम करेंगे ।"

सुकरात ने कहा, "वही जो मैं हमेशा कहता रहा हूं । अपना-अपना ख्याल रखना । यही करके तुम मेरे लिए सबसे बड़ा काम करोगे ।"

"तुम्हारा अंतिम संस्कार किस प्रकार किया जाए ?"

"जैसा तुम ठीक समझो, चाहे दफनाकर या जलाकर । परंतु दुःख और भय से नहीं । क्योंकि जैसा मैं कहता रहा हूं कि तुम मेरा शरीर ही जलाओगे या दफनाओगे, मुझे नहीं ।" इस

प्रकार अंत तक वह मजाक करता रहा, क्रीटो को लेकर चुटकी लेता रहा ।

फिर वह दूसरे कमरे में स्नान करने के लिए चला गया । क्रीटो उसके पीछे-पीछे गया, परंतु उसने सबको बाहर रहने के लिए कहा । सब बाहर बैठकर इंतजार करते रहे । उस समय सभी मित्रों को अपने दुर्भाग्य की गुरुता का ध्यान आया । उन्हें लगा कि सुकरात की मृत्यु के बाद वे सब अनाथों का-सा जीवन बिताएंगे । नहाने के बाद उसके तीनों लड़के उसके पास लाये गये । एक बड़ा था, परंतु दो छोटे थे । घर की स्त्रियां भी आयीं । वह उनसे बातचीत करता रहा, उन्हें हिदायतें देता रहा, फिर उसने स्त्रियों और बच्चों से जाने के लिए कहा । और दुःख उपस्थित लोगों के पास आया ।

सूर्यास्त हो गया था । वह चुपचाप बैठ गया और इसके बाद उसने कुछ नहीं कहा । जेल का कर्मचारी उससे अंतिम विदा और माफी मांगने के लिए उसके पास आया और कहा, "मैंने ऐसा महान और दयालु व्यक्ति पहले कभी नहीं देखा । मैं आपसे अंतिम विदा लेने आया हूं, और कहना चाहता हूं कि आप अंत को अवश्यंभावी मानकर स्वीकार करें । मैं आपको विष, राज्य के कानून और आदेशानुसार दूंगा, मैं विवश हूं ।" कहते-कहते वह फूट-फूट कर रो पड़ा । सुकरात ने उससे अलविदा किया और कहा कि मैं वैसा ही करूंगा जो तुम कहोगे और उसने उपस्थित लोगों से कहा कि वह बड़ा ही अच्छा आदमी था । मेरे पास अक्सर आता था, बातचीत करता था, और आज किस तरह मेरे लिए रो रहा है । फिर उसने क्रीटो से कहा कि देखो अगर विष तैयार है तो उससे कहो कि ले आये ।"

क्रीटो ने कहा कि, "अभी सूर्य पहाड़ों के ऊपर है, अस्त नहीं हुआ । और लोगों ने तो काफी देर करके विष लिया है, तुम भी जल्दी मत करो अभी समय है ।"

सुकरात ने कहा कि जो ऐसा करते हैं, सोचते हैं कि इससे कुछ फायदा होगा, परंतु मुझे यह सब शोभा नहीं देता । ऐसा करने में मैं अपनी ही नजरों में गिर जाऊंगा, क्योंकि जब जीवन का प्याला ही खाली हो गया है तो उससे चिपके रहने से क्या लाभ ? तुम वही करो जैसा मैं कहता हूं ।

विष लाया गया तो सुकरात ने पूछा, "मुझे क्या करना होगा ?" प्याला देनेवाले ने कहा कि इसे पी लो और चलते-फिरते रहो, जब पैरों में भारीपन लगे तब लेट जाना, फिर जहर अपना असर खुद दिखाएगा । सुकरात ने प्याला ले लिया, वह न पीला पड़ा, न काला, उसके चेहरे पर कोई मलिनता नहीं आयी, फिर उसने कहा कि मैं एक प्रार्थना तो कर ही सकता हूं कि मेरी जीवन से मृत्यु तक की यात्रा सौभाग्यपूर्ण हो । यह कहकर बिना किसी हिचक के, शांत भाव से उसने उस प्याले में दिये गये विष को पी लिया । अब तक जिन आंसुओं को सब किसी प्रकार रोके हुए थे वे अपने आप फूट पड़े फीडो ने अपना मुंह छुपा लिया और अपने दुर्भाग्य पर रोता रहा कि मैंने कितना बड़ा मित्र खो दिया । क्रीटो रोता हुआ बाहर चला गया अपोलोडोरस पहले से ही रो रहा था । अब तो वह दहाड़ मारकर रोने लगा । सुकरात को छोड़कर सभी रो पड़े । तब सुकरात ने कहा, "यह क्या हो रहा

है ? जिस वजह से मैंने स्त्रियों को जाने को कहा तुम सब आदमी होकर वही सब कर रहे हो । मृत्यु के सामने शांत रहो और बहादुर बनो ।''

इस पर सबने अपने आपको संभाला । सुकरात चलता-फिरता रहा और पैरों में भारीपन आने पर लेट गया । विष देनेवाले ने उसके पैर छुए तथा, चिकोटी काटकर बार-बार पूछता रहा कि क्या तुम्हें लगता है । सुकरात ने कहा, 'नहीं' ।

सुकरात का शरीर सुन्न होता गया और अकड़ता गया । उस व्यक्ति ने कहा कि जहर असर जब हृदय तक पहुंचेगा तब उसकी मृत्यु हो जाएगी । उसका सर ढक दिया गया । कुछ समय बाद कपड़ा उठाकर सुकरात ने कहा, ''क्रीटो, ऐस्कलेपस को एक मुरगा चढ़ाना न भूलना ।'' क्रीटो ने कहा, ''जैसा तुम कहोगे किया जाएगा और कुछ तो नहीं करना ।'' सुकरात ने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया । (ऐसक्लेप्स बीमारी से मुक्त करनेवाले देवता थे और बीमारी से ठीक होने पर उनकी पूजा एक मुरगा चढ़ाकर की जाती थी) । सुकरात जीवन को एक बीमारी समझकर क्रीटो से मुरगा चढ़ाने का अनुरोध करता है । अंत तक उसे अपने हर कर्त्तव्य की याद थी ।

इस प्रकार संसार के एक महान दार्शनिक और आदर्श चरित्र का अंत हुआ ।

जी-३, मसजिद मोठ, ग्रेटर
कैलाश-२, नयी दिल्ली-११००४८

**भारत में चूहों को 'गणेश' की सवारी के रूप में पूजते हैं । इसी संदर्भ में राजस्थान में करणी माता के मंदिर में चूहों की विशालतम फौज है । वहां भक्त बड़ी श्रद्धा एवं भक्ति से उनके आधा खाये हुए पदार्थों को प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं ।**

**विश्व की स्तनधारियों की कुल संख्या का लगभग एक तिहाई चूहों की संख्या है । अभी तक जितनी मौतें विश्व युद्धों में हुई हैं, उससे कहीं अधिक मृत्यु चूहे द्वारा फैलाये गये रोगों से हुई है ।**

***विश्वभर में रेन-फारेस्ट एक करोड़ साठ लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले थे पर १९७५ के आते-आते घटकर केवल एक करोड़ वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में ही रह गये । खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसार १९८१ से ८५ के दौरान प्रतिवर्ष ४० लाख हेकटेयर रेन-फारेस्ट समाप्त हो गये जो कि कुछ रेन-फारेस्ट का एक प्रतिशत है । जाहिर है कि इससे जैविक विभिन्नता की भी व्यापक तबाही हुई है । अनुमान है कि यदि निर्वनीकरण इसी रफ़्तार से चलता रहा तो सन २०२५ तक केवल अमेजान, गुयाना व जैरे में ही घने जंगल बचेंगे । इस कारण २०२५ तक अकेले पौधों की ही ६०,००० प्रजातियां खतम हो जाएंगी ।***

# इन्सान

कितना उदार ! कितना महान !
जय ! जय ! तेरी जय ! इन्सान !
दृढ़ आशा की तू सजग मूर्ति
तू सहनशीलता का स्तंभ !
शंकर बन पीता व्यथा-गरल !
चुपचाप सहे अन्याय दंभ !
वधिर, अंध, उच्छिन्न संसृति में,
पाता रहता व्याधि अपार !
पर जग को देता मृदु उर से
प्रेमित ईश्वर का उपहार !
तेरे प्रेम भक्ति, अर्जन से
पावन हो जाते भगवान !
कितना उदार ! कितना महान !
जय ! जय ! तेरी जय इन्सान !

— श्रीमन्नारायण अग्रवाल

जबलपुर जेल ३१.१२.४३
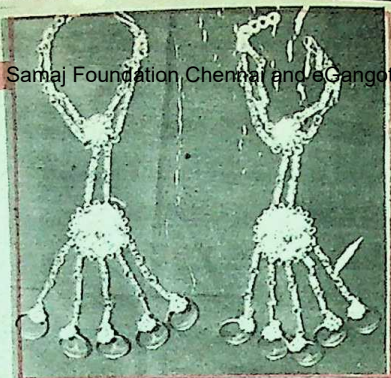
# मेवाती आभूषणों में समायी हुई है सांस्कृतिक एकता

● भगवानदास मोरवाल

***यह बुंदा महिलाओं के कानों में झूलता हुआ जब रोशनी में पड़ने से अपनी किरणें बिखेरता तो वह दृश्य बड़ा मोहक होता था। लेकिन आज यह दुर्लभ कर्ण आभूषण जैसे विलुप्त हो गया। विलुप्त इसलिए नहीं कि इसको बनाने वाले हाथ नहीं रहे बल्कि इसलिए कि आधुनिकता की तेज लौ में यह समाप्त हो गया है। यह आकर्षक आभूषण 'बुंदा' रंग-बिरंगी चूड़ियों के टुकड़ों से बनाया जाता है।***

लोककलाओं की शृंखला में मेवात की अपनी पहचान और अपना महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यहां का लोकगीत "बबराबाण" (महाभारत पर आधारित) जोकि मीरासियों द्वारा गाया जाता है, शोध का विषय रहा है। इन लोककलाओं की आज तक सुसंगत और सुव्यवस्थित तरीके से न तो चर्चा हुई है, और न ही इनका प्रदर्शन। इसीलिए मेवाती लोककलाएं और उनकी पहचान जितनी तेजी से समाप्त होती जा रही हैं, कोई बड़ी बात नहीं कि आने वाले दिनों में ये लोककलाएं ऐतिहासिक पृष्ठों की बजाए केवल दंतकथाओं में सुनने को
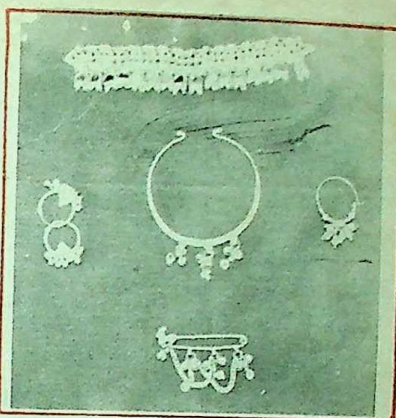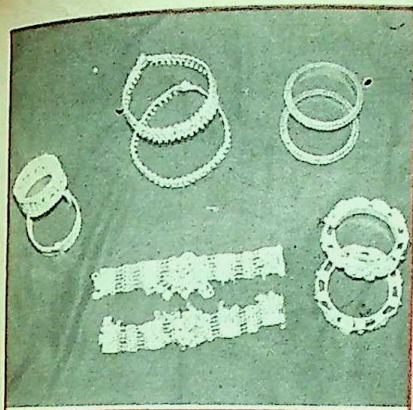
मिलें ।

राजधानी दिल्ली की के निकटवर्ती आंचल में बसा मेवात हमेशा से शांतिप्रिय और कलाप्रेमी क्षेत्र रहा है । यह क्षेत्र मुख्यतया हरियाणा के कुछ दक्षिणी जिलों, राजस्थान के पूर्वी जिलों और उत्तर प्रदेश के दक्षिण-पश्चिम में रचा-बसा अपनी अनूठी लोककलाओं के कारण आज भी जिंदा है ।

इन्हीं लोककलाओं में सबसे प्रमुख स्थान है —यहां के आभूषणों का । पारंपरिक शैली में निर्मित इन आभूषणों को पहने अनेक मेव महिलाएं मेवात में प्रायः दीख जाएंगी, इसीलिए इन आभूषणों को मेवात की सांस्कृतिक एकता का प्रतीक भी कहा गया है ।

## समाप्त होती परंपरा

इन आभूषणों की एक अलग पहचान है लेकिन यह पहचान आज हाथ, पैर और गले से उतरकर घर में रखे संदूकों में बंद होने लगी है और वह समय दूर नहीं जब ये पारंपरिक आभूषण संदूकों से निकलकर स्वर्णकारों के हाथों से होते हुए केवल धातु के पिंड ही रह जाएंगे । लेकिन आज भी मेवात में किसी संपन्न महिला की परख उसके हाथ, पैर और गले में पहने हुए इन्हीं आभूषणों से होती है । एक समय था जब कोई मेवाती महिला इन आभूषणों से लदी-फंदी सामने से गुजरती थी तो देर तक इन आभूषणों की खनक कानों से टकराती रहती थी, परंतु आज धीरे-धीरे यही आभूषण आधुनिकता की आंच में तपते हुए अपना पारंपरिक रूप खोते जा रहे हैं ।

मेवाती महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले ये आभूषण मुख्यतया चांदी के होते हैं । सिवाय गले में पहने जानेवाले कुछ आभूषणों के जोकि सोने के होते हैं । कुछ आभूषण ऐसे भी होते हैं जो दोनों धातुओं अर्थात् सोना और बांदी दोनों के अलग-अलग बने होते हैं ।

हाथों में पहने जाने वाले आभूषण हैं —बांकड़ा, पछेली, छण, दस्तबंद, झंगीरी, परीबंद, छन्नी और हथफूल । गले में पहने जानेवाले आभूषण सबसे अधिक आकर्षक होते हैं और ये अधिकांशतः सोना और चांदी दोनों धातुओं के बने होती हैं ।इनमें —हंसली, गुलीबंदी, झंजीरा, हार, तोड़ा, ताबीज, जोबन

कली, बटन, तौख, डोर, सावन झड़ी, हमेल, कटला, चंपाकली आदि प्रमुख हैं ।

कुछ वर्षों पहले तक मेवात की महिलाएं एक पारंपरिक आभूषण जिसे कि वे स्वयं ही बनाती थीं, खूब पहना जाता था, जिसे 'बुंदा' कहा जाता था । यह बुंदा महिलाओं के कानों में झूलता हुआ जब रोशनी में पड़ने से अपनी किरणें बिखेरता तो वह दृश्य बड़ा मोहक होता था । लेकिन आज यह दुर्लभ कर्ण आभूषण जैसे विलुप्त हो गया । विलुप्त इसलिए नहीं कि इसको बनाने वाले हाथ नहीं रहे बल्कि इसलिए कि आधुनिकता की तेज लौ में यह समाप्त हो गया है । यह आकर्षक आभूषण 'बुंदा' रंग-बिरंगी चूड़ियों के टुकड़ों से बनाया जाता है ।

मेवात में पहने जानेवाले इन आभूषणों में सबसे अधिक भार वाला आभूषण है हंसली । इसके अलावा पैरों में पहनी जानेवाली कड़ी भी काफी भार की होती है । हंसली जो गले में पहनी जाती है चांदी और सोना दोनों की बनायी जाती है । इसका वजन साढ़े तीन सौ ग्राम से लेकर एक किलो तक होता है ।इसी तरह पैरों में पहनी जाने वाली कड़ीका वजन भी ढाई सौ ग्राम से लेकर एक किलो तक होता है ।

हंसली और कड़ी के अलावा इन आभूषणों का भार ग्राम या किलोग्राम की बजाय तोला में मापा जाता है । कड़ी के अलावा पैरों में नेवरी, गठिया, पाजेब, छैलकड़ा, रमझोल, टणका और झांझण पहने जाते हैं ।

हाथों की कलाई में पहने जानेवाला आभूषण बांकड़ा ४० तोला से लेकर ६० तोला तक का बना होता है । पछेली, तौख भी ३० से ४० तोलों तक के बने होते हैं ।

विवाह के अवसर पर वधु का पिता अपनी पुत्री को दहेजस्वरूप इन्हीं आभूषणों को देता है । कुछ आभूषणों को तो हिन्दू और मेव औरतें आज भी बराबर पहनती हैं । इनमें —हंसली, बटन, पाजेब, नेवरी, कुंडल, ढोलना, रमझोल, छैलकड़ा और हथफूल प्रमुख हैं ।

### बदलता रहन सहन

इस क्षेत्र के एक वृर्णकार श्री जुगलकिशोर आज की और पहले की स्थितियों में आये परिवर्तन के बारे में बताते हैं कि पहले इन जेवरातों को केवल हिंदू औरतें ही पहनती थीं लेकिन बाद में मेव औरतें भी इन्हें पहनने लगीं किंतु आज हालात यह हैं कि इनको दोनों संप्रदाय की महिलाएं बहुत कम पहनती हैं।

इसका कारण पूछने पर वे बताते हैं कि एक तो ये धातुएं बहुत महंगी हो गयी हैं । दूसरा, लोगों के रहन-सहन का तरीका एकदम बदल गया है और नये-नये आकार के जेवरातों के प्रति यहां की औरतों का आकर्षण भी बढ़ता जा रहा है ।

उपरोक्त तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि ऐंसी कलाओं को बचाने की जिम्मेदारी केवल मेवात के वाशिंदों की तो है ही, इसके साथ उन राज्य सरकारों की भी है जिनकी सरहद में ये लोककलाएं दम तोड़ती जा रही हैं । अतः कोई बड़ी बात नहीं जो आभूषण हमें प्रत्यक्ष शरीर के विभिन्न अंगों पर सुशोभित नजर आते हैं कुछ वर्षों के बाद हमें संग्रहालयों में ही देखने को मिलें ।

—डब्लूजेड-५८३ (निकट जैन मंदिर)
पालम गांव, नयी दिल्ली-११००४५
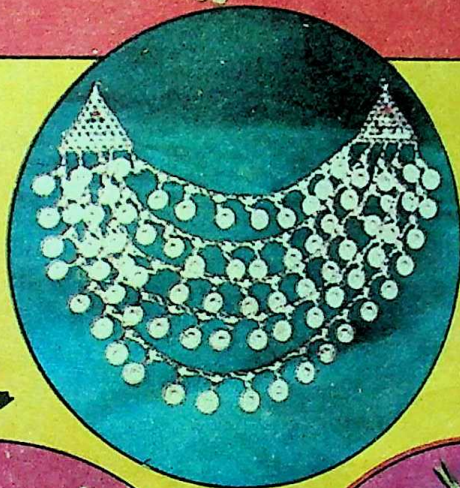
विभिन्न प्रकार के कंगन
गले में पहने जानेवाले अन्य आभूषण गले के सौंदर्य के लिए
...यफूल पैरों और गले में पहने जानेवाले आभूषण
रत्न जटित हंसली
छाया : भगवानदास मोरवाल
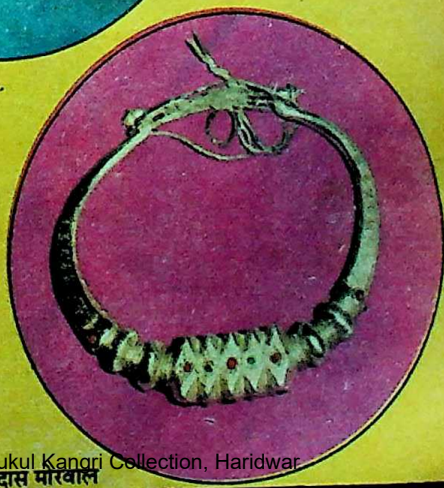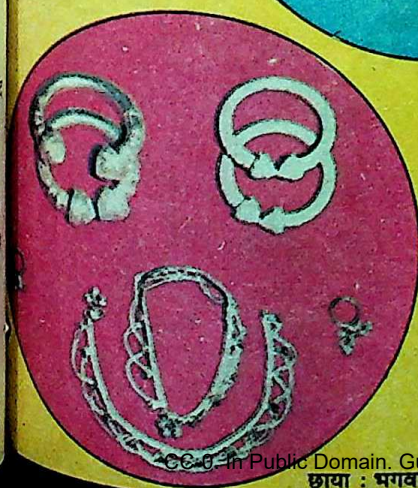
शीबा
एक नवोदित तारिका

फिल्मों में जेल का दृश्य अक्सर आता है और कितनी ही फिल्में ऐसी हैं जिनमें दर्शक अपने प्रिय सितारे को सीखचों के पीछे खड़ा देखते हैं । परदे पर आनेवाला यह नजारा कभी-कभी वास्तविक जीवन में भी एक हकीकत बन जाता है जब फिल्मी सितारों को जेल की हवा खानी पड़ती है ।

सोफिया आयकर विभाग से बचने के लिए वर्षों तक अपने देश के बाहर रही । फिर लौटी तो इटली के फिल्म उद्योग ने उसे हाथों-हाथ लिया । लेकिन कर वंचना के जुर्म में उसे कारावास की सजा हो गयी । सोफिया ने १७ दिन रोम की जेल में गुजारे । सिने जगत में एक गाथा बन चुकी सोफिया बताती है कि उसके

## फिल्मी अभिनेता और अभिनेत्रियां

# जो अपराध कर जेल में रहे

किसी न किसी वजह से जेल की सजा भुगतनेवाले फिल्मवालों की तादाद काफी बड़ी हो सकती है । तथापि पश्चिमी जगत के कुछ फिल्मी सितारों के जेल के अनुभव के किस्से काफी रोचक हैं । इनमें कितने ही वे सितारे भी शामिल हैं जिनकी अंतरराष्ट्रीय ख्याति रही है । सबसे अधिक उल्लेखनीय नाम सोफिया लारेन का लिया जा सकता है । पूरी दुनिया में तहलका मचानेवाली इटली की खूबसूरत फिल्मी तारिका

आसपास की कोठरियों में हर जगह वेश्याएं थीं, कातिल थे । उसका कहना है कि जेल का अनुभव हासिल करने के काबिल रहा । इटली लौटने पर उसे जेल होना लाजिमी था पर वह अपने देश आना और अपनी मां से मिलना चाहती थी, इतने पर भी वह मानती है कि जेल में गुजरे ये थोड़े से दिन भी उसके लिए किसी आघात से कम नहीं थे ।

साठ के दशक की कामेडी फिल्मों की

### शीबा : माडलिंग से अभिनय के क्षेत्र में

*सामने के पृष्ठ पर : जीनत अमान, किमी काटकर और संगीता बिजलानी के बाद एक और माडल ने फिल्मी दुनिया में कदम रखा है । ये है शीबा । शीबा पहले दुबई में थी और उसने कुछ जापानी उत्पादों के लिये यूरोप में माडलिंग की । सुनील दत्त की फिल्म 'यह आग कब बुझेगी' में उसने पहली बार अभिनय किया । इस समय वह सात अन्य फिल्मों में काम कर रही है । निर्माता-निर्देशक बी. सुभाष के अनुसार अपनी समकालीन अभिनेत्रियों में शीबा सर्वोत्तम है । उसमें और मीना कुमारी में अद्भुत साम्य है ।*

मशहूर तारिका जूडी कार्ने को नशीली दवाओं से संबंधित अपराध के सिलसिले में तीन महीने केंट के कूखमवुड प्रिजन में काटने पड़े । उसे महसूस हुआ कि जेल की जिंदगी आदमी को बुरी तरह तोड़ देती है, तबाह कर देती है । सजा पूरी करके वह बाहर निकलनेवाली ही थी कि एक अन्य कैदी महिला ने धारदार कैंची से उस पर हमला करने की कोशिश की । दूसरे कैदी और एक वार्डर उसे बचाने के लिए छलांग लगाकर तुरंत उसके पास न पहुंच गये होते तो जूडी का काम तमाम हो जाने में शायद कोई कसर नहीं रह जाती ।

### जेल की अलग दुनिया

दरअसल जेल की अपनी अलग दुनिया होती है । बाहर की दुनिया का सितारा जेल के भीतर पहुंचकर दूसरे आम कैदियों की हैसियत में पहुंच जाता है । आदमी बड़ा हो या छोटा, धनवान या मुफलिस, जेल में सब बराबर हो जाते हैं । और आदमी को जेल के भीतर पहुंचानेवाला कानून भी सबको एक ही लाठी से हांकता है । इतने पर भी कुछ कैदी ऐसे होते हैं जिनकी समूची जीवनधारा ही जेल के अनुभव से बदल जाती है । ऐसे लोगों में एक हैं टी वी के जाने-माने सितारे स्टैसी कीचा । स्टैसी कानून के पंजे में उस समय फंस गया जब वह लंदन के हीथरो हवाई अड्डे में कोकीन की तस्करी करते पकड़ा गया । उसे नौ माह की सजा हुई जिसमें से तीन माह उसने रीडिंग की जेल में गुजारे । जेल में स्टैसी ने अपनी जिंदगी का रवैया पूरी तरह बदल लिया । अपनी अभिनेत्री पत्नी जिल डोनाह्यू को तलाक दे दिया और अपने से सोलह साल छोटी पोलिश अभिनेत्री मलगोसिया तोमासी से शादी करने की योजना बना ली । स्टैसी कहता है कि जेल में रहने से उसे अपनी नशे की आदत पर काबू पाने में आसानी हुई ।

स्टैसी का कहना है कि वह महारानी का मेहमान बनना तो नहीं चाहता था पर इस अनुभव ने उसे जिंदगी को एक नये ढंग से देखने का नजरिया प्रदान किया । उसने जेल के पुस्तकालय में काम किया और अखबार बांटे । बाद में जब उसे माइक हैमर की भूमिका निभाना पड़ा तो जेल का अनुभव बहुत काम आया । उसका अभिनय जानदार रहा । स्टैसी बताता है कि कभी-कभी वह हताशा से भर उठता था । तब दूसरे कैदी उसे धीरज बंधाते और उसका मन बहलाते थे ।

### जेल से ख्याति

और 'ईस्ट एंडर्स' में अपनी भूमिका के लिए चर्चित होनेवाले लेसली ग्रैंथम को तो अपनी ख्याति का रास्ता ही जेल से मिला था । वह सन १९६६ में फौज के साथ जरमनी में था । वहां एक डकैती के वक्त उसकी गोली से एक टैक्सी ड्राइवर मर गया और ग्रैंथम को बारह साल की सजा हो गयी । हालांकि वह अब अपने जेल के दिनों की बात नहीं करता पर उसके साथ जेल में रहे लोग बताते हैं कि ग्रैंथम हमेशा सिर झुकाये रहता था और अपना दलिया बनाता था । जेल में उसका व्यवहार सबसे मधुर था । जेल में वह नाटकों में अभिनय करने लगा था और पोर्ट्समाउथ जेल में सीखी यह कला ही उसे अलबर्ट स्कवायर के नाटकघरों के रंगमंच तक ले गयी ।

**प्रस्तुति : शारदा पाठक**

के.के. बिड़ला फाउंडेशन



# साहित्य के लिए सम्मान

सरस्वती नः सुभगामयस्करत्.

## पुरस्कार
## तीन लाख, डेढ़ लाख और पचास हजार रु.

के. के. बिड़ला फाउंडेशन ने साहित्य के लिए दो बड़े सम्मान— सरस्वती सम्मान भारतीय साहित्य के लिए और व्यास सम्मान हिंदी के लिए— प्रवर्तित किये हैं। यह सम्मान प्रति वर्ष दिये जाएंगे। किसी भारतीय नागरिक द्वारा लिखी गयी भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में दी गयी १५ भाषाओं में से किसी की भी एक उत्कृष्ट कृति को 'सरस्वती सम्मान' और हिंदी की कृति को 'व्यास सम्मान' समर्पित किया जाएगा, इनके लिए चुनी हुई कृतियों के लेखकों को क्रमशः ३,००,०००/- व १,५०,०००/- रुपये की राशि भेंट की जाएगी।

### सरस्वती सम्मान

फाउंडेशन की नियमावली के अनुसार इस सम्मान के लिए ऐसी कृति ही प्रस्तावित की जा सकती है जो सम्मान वर्ष से ठीक पहले १० वर्ष की अवधि में प्रकाशित हुई हो। इसका मूल्यांकन लेखक के साहित्य में योगदान और समकालीन लेखन पर उसके प्रभाव की पृष्ठभूमि में किया जाएगा।

### व्यास सम्मान

प्रति वर्ष दिये जानेवाले इस सम्मान के लिए ऐसी कृति ही प्रस्तावित की जा सकती है जो सम्मान वर्ष से ठीक पहले १० वर्ष की अवधि में प्रकाशित हुई हो। इसका मूल्यांकन लेखक के साहित्य में योगदान और समकालीन लेखन पर इसके प्रभाव की पृष्ठभूमि में किया जाएगा।

### बिहारी पुरस्कार

यह पुरस्कार वर्ष के ठीक पहले १० वर्ष की अवधि में प्रकाशित हिंदी की ऐसी उत्कृष्ट कृति पर दिया जाएगा जिसका लेखक राजस्थान का निवासी भारतीय नागरिक हो। कृति का मूल्यांकन लेखक के पूरे कृतित्व की पृष्ठभूमि में किया जाएगा।

इन पुरस्कारों के संबंध में निदेशक, के.के. बिड़ला फाउंडेशन, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १०वीं मंजिल, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ से विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

**कंधे और गरदन के मध्य स्थित बिंदु**
कंधे का दर्द, गरदन का दर्द होने पर इस बिंदु पर दबाव दीजिए ।
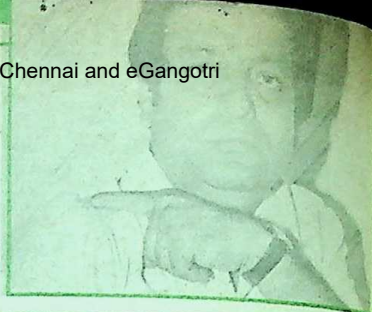
# अपना इलाज स्वयं कीजिए-३८

**पंजे पर स्थित बिंदु**
पंजे में दर्द, पैर की अंगुलियों का आर्थराइटिस में इस बिंदु पर दबाव लाभकारी है ।

**कान के एकदम ऊपर स्थित बिंदु**
बहरापन, ऊंचा सुनायी देना, कान में आवाज आने में इस बिंदु पर दबाव दें ।

## दबाव कितनी देर डालें

*१. बारह घंटों में दो बार ।*
*२. दबाव एक मिनट तक दिया जा सकता है, एक बिंदु पर साठ बार ।*
*३. भोजन के एक घंटे पूर्व अथवा एक घंटे बाद ।*
*४. दबाव सहनीय होना चाहिए और अंगूठे के अग्रभाग से दिया जाना चाहिए ।*

**पीठ पर स्थित बिंदु**
कंधे का दर्द, पीठ के ऊपरी भाग में दर्द हो तो इस बिंदु पर दबाव दीजिए ।

**आंख के ऊपर स्थित बिंदु**
सिर दर्द, माइग्रेन, नजर कमजोर होने पर इस बिंदु पर दबाव देना चाहिए ।

**बाहरी टखने के एकदम सामने स्थित बिंदु**
टखने का दर्द, पंजे का दर्द हो तो इस बिंदु पर दबाव दें ।

**पैर के पिछले भाग पर स्थित बिंदु**
पिंडली का दर्द, साइटिका में इस बिंदु पर दबाव दें ।

**पीठ पर स्थित बिंदु**
पीठ के दर्द में इस बिंदु पर दबाव देना चाहिए ।

**कोहनी पर स्थित बिंदु**
कोहनी का दर्द, हाथ का दर्द, हाथ का लकवा होने पर इस बिंदु पर दबाव दीजिए ।

**एड़ी के पीछे स्थित बिंदु**
एड़ी का दर्द होने पर इस बिंदु पर दबाव दीजिए ।

● डॉ. सुधीर खेतावत

— एक्यूप्रेशर चिकित्सा एवं प्रशिक्षण केंद्र, नीलकमल सिनेमा परिसर इंदौर-४५२००३

शेखर को आज पहली बार अपने कद का एहसास हुआ था। वैसे भी यह हादसा एक न एक दिन तो होना ही था। आखिर सच्चाई कब तक छिपती। वास्तविकता पर परदा डालकर, वह अपने को गलतफहमी में कब तक रखता? मन बहलाने की भी एक सीमा होती है।

किंतु शेखर के पास कोई विकल्प भी तो नहीं था। जब जिंदगी की दौड़ में वह अपने साथियों से काफी पीछे छूट गया, या बेरहमी से पीछे की ओर धकेल दिया गया (जैसा कि वह

चिढ़-सी हो गयी थी। उसे लगता—ये प्रश्न नहीं, व्यंग्य कर रहे हैं। आखिर वह इनका क्या उत्तर देता? या सच बोलकर हीन भावनाओं से ग्रस्त होता या झूठ बोलकर उपहास का पात्र बनता। वह जानता था कि लोगों का कुशल-मंगल पूछना अधिक से अधिक एक शिष्टाचार भर हो सकता है। इसके अतिरिक्त कुछ नहीं। बाप का दाह संस्कार करके श्मशान से लौटते हुए दुःखी बेटे से भी राह चलते तथाकथित परिचित कुशल-मंगल पूछ लेते हैं। तो क्या वह सदा सही बात बताता है? कोई

# सहधर्मी

● शिववचन चौबे

मानता है) तो जीने का कोई न कोई सहारा तो ढूंढ़ना ही था। कुछ न कुछ सांत्वना देकर अपना मानसिक संतुलन तो कायम रखना ही था। अगर उसी का मनोबल टूट जाता, तो फिर उसके परिवार का क्या होता? बीबी-बच्चे तो बिखरकर टुकड़े-टुकड़े हो जाते। वह भीतर से भले गलता जा रहा था परंतु बाहरी ढांचे को बदस्तूर कायम रखना भी उसकी एक सामाजिक विवशता थी। और शेखर वही कर रहा था।

जब से भाग्य ने पलटा खाया, जानबूझकर वह अपने परिचितों से कटने लगा था। भरसक कोशिश करता कि कोई शुभचिंतक यह न पूछे "क्या हाल-चाल है शेखर? प्रसन्न तो हो न?"

उसे इन प्रश्नों तथा ऐसे प्रश्नकर्ताओं से

जरूरी नहीं। वह तो यही कहकर टाल देता है "सब ठीक ही है।"

अपनी छोटी-सी उमर में ही शेखर ने बहुत दुनिया देख ली है। अपनी मानसिक शांति की रक्षा के लिए, परिचितों से दूर रहने के अलावा उसके पास शायद कोई दूसरा विकल्प था ही नहीं।

वैसे वह प्राइवेट कंपनी में एक अच्छे ओहदे पर था, जहां पैसा और प्रतिष्ठा दोनों सुलभ थे। दस बरस पहले उसने जानबूझकर सरकारी नौकरी ज्वाइन की थी। अपनी प्रतिष्ठा और व्यक्तित्व में कुछ और अहमियत लाने के लिए। प्राइवेट कंपनी में मालिक के खास आदमियों से वह तंग आ चुका था। कम पढ़े-लिखे या हीन प्रवृत्ति के लोगों को ज्यादा सुविधाएं मिलना वहां

एक आम बात थी । वहां पर कोई खास कानून-कायदे तो चलते नहीं । सारे रूल्स रेगुलेशन तो घाटा-मुनाफा को केंद्र बिंदु मानकर ही बनते-बिगड़ते हैं । मिल मालिक के पालतू आदमी भले ही कम पढ़े-लिखे हों, लेकिन वफादार तो होते ही हैं । वे मालिक के लिए अपना धर्म-ईमान ही नहीं, अपनी इज्जत तक दांव पर रखने को प्रस्तुत हो जाते हैं । किसी मालिक को इसके सिवा चाहिए ही क्या ।

शेखर की तरह स्वाभिमानी और सुयोग्य इंजीनियर तो केवल मशीनों की देखभाल ही कर सकते हैं, घाटे-मुनाफे के जोड़-तोड़ से उन्हें क्या मतलब । सो-ऐसे लोग तो आते-जाते ही रहेंगे । हजार-दो हजार तनख्वाह बढ़ाने से कोई भी इंजीनियर आ सकता है । लेकिन वह अपनी काबिलियत तो केवल मशीनों के रख-रखाव और उत्पादन क्षमता बढ़ाने तक ही सीमित रखेगा । कोई स्वाभिमानी इंजीनियर किसी मिल-मालिक के लिए टैक्स की चोरी तो नही कर सकता, जेल तो नहीं जा सकता या अपनी इज्जत तो नहीं बेच सकता।

फिर मालिक से उसका खास संबंध कैसा ? मालिक और नौकर का ही न । सो, किसी को बुरा लगे, तो लगता रहे, एक इंजीनियर जाएगा दूसरा आ जाएगा । खास लोग तो खास होकर ही रहेंगे । मालिक अपने गदहे को पंजीरी खिलावे तो इसमें किसी के बाप की जान क्यों जाए ? वह भूसे का हकदार है, उसकी बात करे । हां, अगर उसमें कोई कमी है, तो देखी जाए ।

यह दलील अपनेआप में गलत नहीं है ।
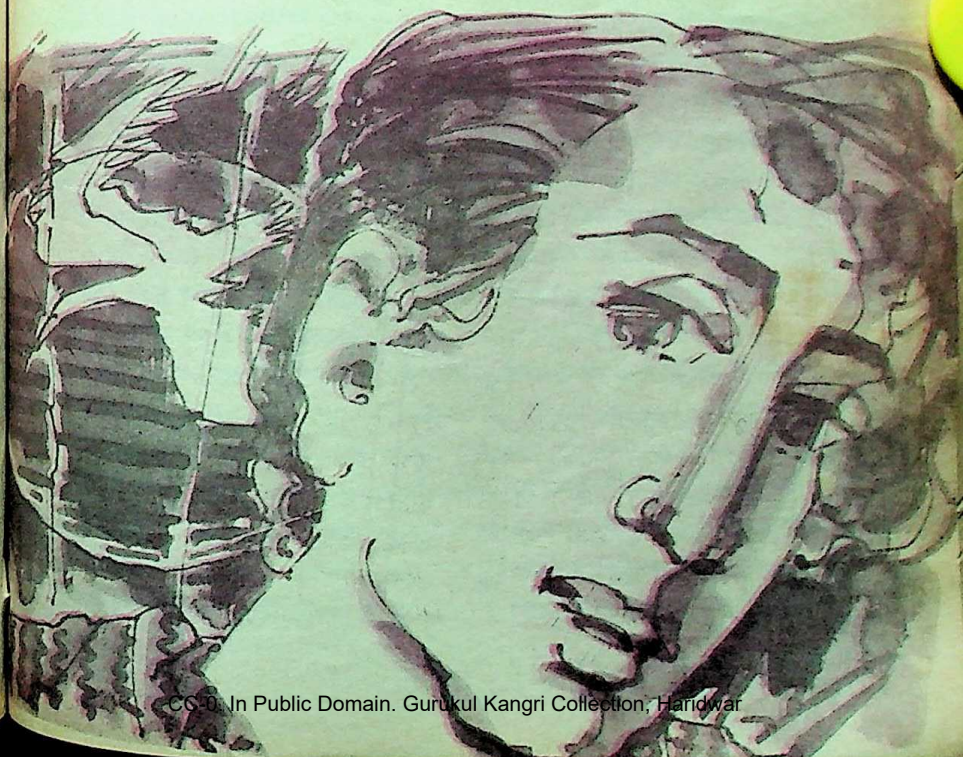
यही सोचकर शेखर ने नौकरी बदली थी । वह सरकारी प्रतिष्ठान में इसीलिए आया कि कम से कम वहां जो भी होगा कायदे-कानून के तहत होगा । उसकी सेवाएं समाज और देश-हित में होंगी । उसकी निष्ठा और योग्यता का लाभ किसी व्यक्ति की प्राइवेट संपत्ति नहीं बन सकेगी । लेकिन होता वही है, जो होना होता है । आज शेखर अपनी मति से संसार का सबसे दुःखी आदमी है । जब गीदड़ के बुरे दिन आते हैं, तो लोग कहते हैं वह शहर की तरफ भागता है । शेखर के साथ बिल्कुल वही हुआ—न रत्ती भर कम और न रत्ती भर ज्यादा । कायदे-कानून ! स्वाभिमान ! देश-सेवा, सरकारी प्रतिष्ठान ! हुंह ! उल्लू का पट्ठा तवे से भागकर चूल्हे में कूद पड़ा, आकाश से गिरा खजूर में अटक गया । आज उसके सारे सपने चूर-चूर होकर बिखर गये । जिस लगन और उत्साह से उसने सरकारी प्रतिष्ठान में कम पैसे की नौकरी स्वीकार की थी—लगता है वह उसके जीवन की सबसे बड़ी भूल थी । उसे क्या पता कि सरकारी प्रतिष्ठानों के रूल्स-रेगुलेशन कोई जरूरी नहीं कि संविधान के अनुसार ही हों । स्वायत्तता के नाम पर या देशहित के आवरण में यहां के कानून-कायदे तीर्थस्थानों में चलती हुई पंडागिरी या राजनीति में स्थापित दादागिरी के सिवा कुछ नहीं । यहां तक कि स्वयं न्यायालय भी इनके विरुद्ध निर्णय लेने में सक्षम नहीं है । ऊपर से नीचे तक पुलस्त्यवंशियों की रक्षा-परंपरा अत्यंत सुसंगठित और सुव्यवस्थित है, जो परस्पर हितों और सुख-सुविधाओं को सुरक्षित रखती है । कागजी कार्यवाही तो एक खानापूरी और औपचारिकता मात्र है । यह कागजी लीपा-पोती एक आवश्यक व्यवस्थात्मक ढाल भी है । इस तथाकथित व्यवस्था के विरूद्ध आवाज उठाना, अपना सत्यानाश करने के सिवा कुछ नहीं । यहां सबकुछ ऊपरवाले की मरजी से ही चलता है ।

बेचारा शेखर तो यहां कुछ दूसरे ही सपने लेकर आया था । अगर उसने कभी ऐसे वातावरण में काम किया होता, तो कुछ सावधानी अवश्य बरतता । सो, अपनी सेवा भावना और निष्ठा के उत्साह में दिन पर दिन फंसता ही चला गया । आज वह एक ऐसा दुखी जीव है, जो न अपना दुःख कुछ कह पा रहा है, न उसे सह पा रहा है । वस्तुतः अपने दुर्भाग्य का दायी वह स्वयं है । अब तो शेखर भी इस सत्य को स्वीकारने लगा है ।

उस दिन कंपनी के आर्केस्ट्रा प्रोग्राम में वह कतई जाना नहीं चाहता था । उसने तो अपनी पत्नी कमला से कह भी दिया था कि उसकी तबियत ठीक नहीं है । अगर वह चाहे तो बच्चों के साथ चली जाए । लेकिन बीवी-बच्चे कहां माननेवाले थे ? और उनकी जिद पर उसे क्लब जाना पड़ा था ।

कंपनी में हर तीसरे साल प्रोमोशन की लिस्ट निकलती, लेकिन शेखर एक ही पद पर आठ साल से अटका पड़ा था । अब उसके साथी ही नहीं, मातहत काम करनेवाले अफसर भी उससे वरिष्ठ बन चुके थे, जबकि वह जहां का तहां जड़वत खड़ा था—किसी अहल्या की तरह शापित और प्रताड़ित । अंतर इतना ही था कि पत्थर बनी अहल्या शायद दूर-दराज जंगलों में पड़ी थी और वह घनी आबादी के बीच

समाज-समाज ... [illegible] ... रहते हों । भाड़ में जाए ऐसा समाज । कौन गट्ठर बांध के ले जाना है । खाली हाथ आना, खाली हाथ जाना । रही बात दो रोटी खाने और सम्मान के साथ जीने की सो, भगवान का दिया हुआ बहुत है ।

---

सामाजिक उपेक्षा और अवहेलना सहने को बाध्य ! बीवी-बच्चों को उसकी विवशता का क्या पता ?

आज शेखर की कुरसी वरीयता के क्रम से अफसरों की सबसे पिछली कतार में लगी थी, जब कि कभी उसके मातहत काम करनेवाले अफसरों की कुरसियां काफी आगे थीं । वरीयता के इस कटु सत्य को जहर के घूंट की तरह पीने को शेखर बाध्य था । यह क्रम उसकी सामाजिक स्थिति की वास्तविक सच्चाई थी । लेकिन काश !...शेखर इसका सामना कर पाता । उसके सीने में भी एक दिल था जो इसे सच्चाई नहीं अन्याय मानकर विद्रोह करने पर उतारू हो रहा था । आगे बैठे अफसरों के बीवी-बच्चे बार-बार पीछे मुड़कर देखते और परस्पर काना-फूसी करते । वे आपस में बातें कुछ भी करते हों, किंतु शेखर को लगता—सब उसी के बारे में बतिया रहे हैं । सब उसकी तकदीर की फटी कमीज पर ताना कस रहे हैं ।

शेखर की निगाह परदे पर नहीं, लोगों पर टिकी थी । कभी आंखें बचाकर आगे बैठे अपने साथियों की ओर देखता और कभी स्वयं अपने भीतर झांकने लगता— "आज अपनी दुर्दशा का दायी मैं स्वयं हूं । अगर शुरु में ही गुप्ता साहब की बातें मान ली होतीं, तो मेरा क्या बिगड़ जाता ? कौन-सा पहाड़ टूट जाता ? कंपनी के ही कितने रोयें झड़ते ? अरबों-खरबों के इस सरकारी प्रतिष्ठान में दस-पांच लाख रुपये क्या अर्थ रखते हैं ? हरिश्चंद्र बनने में चला था, तो क्या डोम के घर पड़ोसियों की इज्जत बिकेगी ? या तो कोई सत्य और ईमान की रक्षा कर ले या समाज में अपनी प्रतिष्ठा की । दोनों एक साथ तो चल नहीं सकते । कम से कम आज के परिवेश का सत्य तो यही है । मेरी निष्ठा तो केवल गुप्ता साहब को समर्पित होनी चाहिए थी । प्रतिष्ठान या देश के हितों की रक्षा तो ऊपरवालों का काम है ।

मेरे इस मूरख मन को पता होना चाहिए था कि वह ठेकेदार गुप्ता साहब का खास आदमी है और मैं डाइरेक्टर स्तर के आला अफसर से दस सीढ़ी नीचे काम करनेवाला एक मामूली इंजीनियर । कहां राजा भोज, कहां गंगू तेली ! उस भले आदमी ने तो मुझे संकेत भी किया था— "बातों का अर्थ समझो और फूलो-फलो" । लेकिन मैं— 'मूरख हृदय न चेत' । मेरी तो मति मारी गयी थी । —"नहीं सर, यह आर्डर इन्हें मिल ही नहीं सकता । ये मैनुफैक्चरर नहीं, एजेंट हैं । कंपनी की पॉलिसी यह है, सर...कि हम स्पेयर पार्ट के आर्डर केवल मैनुफैक्चरर को देते हैं, किसी बिचौलिये एजेंट को नहीं । "बिचौलिये ही तो सारे घपलों की जड़ हैं ।" मेरी नादानी देखकर गुप्ता साहब ने फिर भी कहा था—"शेखर, तुम बातें
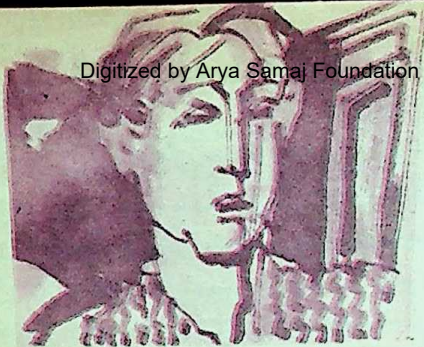
समझने की कोशिश करो । ये मैनुफैक्चरर के अथराइज्ड एजेंट हैं । कोई अपने घर से तो स्पेयर पार्ट लाकर सप्लाई करेंगे नहीं । तुम नोट बनाकर लाओ ! ऊपर से उसकी स्वीकृति मिल जाएगी । बातों का अर्थ समझो और फूलो-फलो ।" लेकिन मेरी अकल में इशारा धंसे तब न !...विनाश काले विपरीत बुद्धि ! मैं कितना शेर बनता था । अब होश ठिकाने आ गये । भ्रष्टता के झूठे इलजाम.... । तबादला पर तबादला... । कभी यह काम, कभी वह... । सालाना कान्फीडेंशल रिपोर्ट की लीपा-पोती लगता है, दुनिया के सारे दोष और अवगुण रातों-रात मेरी काया में छुआछूत की बीमारी की तरह प्रवेश कर गये हों । प्रोमोशन की बात तो दूर, नौकरी करना मुश्किल हो गया है, मुझे । मानसिक शांति भंग हो गयी है । किस-किस का दरवाजा नहीं खटखटाया,ऊपर के ही नहीं, अगल-बगल के सारे लोग सच्चाई के रहस्य को जानते हैं, लेकिन आज तक की है किसी ने कोई मदद ? कौन जानबूझकर इस बेमतलब के बवाल में फंसे ? सब मेरी ही तरह मूरख थोड़े हैं । आदमी अपने कर्मों का फल स्वयं भोगता है । मैं भी भुगतूं ? जस करनी तस भोगहुं ताता... ।

यह सब सोचते-सोचते शेखर बेचैन-सा हो गया और अंत में तबियत ठीक न होने का बहाना बनाकर अकेले ही क्वार्टर चला आया था । उसका यह व्यवहार कमला को अच्छा तो नहीं लगा, किंतु वह करे क्या ? शेखर की विवशताओं से वाकिफ होकर भी उसे बच्चों का ख्याल तो करना ही था । वह उन्हें हीन भावनाओं का शिकार कैसे होने दे । उसके पास केवल दो ही विकल्प थे...या तो शेखर के नेक इरादों का संपूर्ण समर्थन कर उसे नैतिक बल प्रदान करे अथवा पथभ्रष्ट हो जाने दे । पथभ्रष्टता की प्रारंभिक प्रक्रिया वैसे भी शेखर के मस्तिष्क में मचलने लगी थी । पतन की राह जितनी ढलवा होती है, उतनी ही चिकनी भी ।

रात में सोते समय कमला ने इसी ऊहापोह की स्थिति में शेखर से पूछा था..."तुम इतना चिंतित काहे रहते हो ? भगवान की दया से हमें किस बात की कमी है ?"

..."देखो कमला, कम से कम भगवान का नाम मत लो । बहुत देख लिया, सत्यमेव जयते और अहिंसा परमो धर्मः" को । मुझे इन मान्यताओं के पक्ष या विपक्ष में कुछ नहीं कहना है । मैं बहुत छोटा आदमी हूं । रूखा-सूखा खाकर समाज में केवल सम्मान के साथ जीना चाहता हूं । मुझे रुपया-पैसा और राज-पाट भले ही नहीं चाहिए, लेकिन कम से कम पेटभर भोजन और सम्मान का जीवन तो चाहिए ही । मैं तो यह भी नहीं जानता कि मैंने आज तक जो कुछ किया है, वह गलत था या सही । केवल इतना ही जान सका हूं कि मैं केवल अपनी करनी का फल भोग रहा हूं । समाज में मुझे आज तक उपेक्षा और प्रताड़ना के सिवा मिला

ही क्या है ? इसका तो अर्थ यही है कि कहीं न कहीं मैं गलत अवश्य हूं । शेखर ने बिलखते हुए कहा था ।

"नहीं, शेखर नहीं । समाज की बात मत करो । मान्यताओं की बात करो । बिना मान्यताओं के किसी समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती । वह व्यक्ति बराबर दुःखी रहता है, जो यह सोचता है कि समाज के लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं । तुमने अपने विवेक से जीवन जीने का जो रास्ता चुना है, उस पर अकेले भले पड़ जाओ, किंतु छोड़ो कभी नहीं । अगर तुम अपने हिसाब से सही हो, तो समाज की उपेक्षा की कतई परवाह न करो । हम राम को भगवान इसलिए नहीं कहते कि वे अयोध्या के संपत्तिशाली राजा थे । बल्कि इसलिए कहते हैं कि अकेले बन-बन दुःख भोगते हुए भी, उन्होंने धर्म और समाज की मान्यताओं की रक्षा की थी । तो क्या उस समय का समाज उनसे खुश हो गया था । कतई नहीं । उसी समाज को खुश करने के लिए अंत में अपनी इच्छाओं के विरूद्ध उन्हें विवश होकर सती-सीता को निर्वासित भी करना पड़ा । कहो, करना पड़ा था कि नहीं ? अयोध्या का समाज तो शायद खुश हो गया होगा । किंतु इतना कुछ करके भी क्या स्वयं राम खुश हुए थे ? हरगिज नहीं । राम राज्य में सब खुश थे, केवल राम और उनकी सहधर्मिणी सीता को छोड़कर ।

समाज-समाज....स...एक ही रट लगाये रहते हो । भाड़ में जाए ऐसा समाज । कौन गट्ठर बांध के ले जाना है । खाली हाथ आना, खाली हाथ जाना । रही बात दो रोटी खाने और सम्मान के साथ जीने की सो, भगवान का दिया हुआ बहुत है । हम समाज में सबसे ऊपर नहीं तो सबसे नीचे भी तो नही हैं । सच पूछो तो तुम्हारा समाज केवल मैं हूं...तुम्हारी पत्नी और सहधर्मिणी कमला और हमारी मान्यताएं हमारी पथ प्रदर्शक हैं । बस... ।" यह कहते-कहते कमला भावविभोर हो उठी थी उसकी दृढ़ता और आत्म विश्वास देखकर शेखर ने एक लंबी सांस लेते हुए कहा था...कमला !...तुम सचमुच धन्य हो, मेरी सच्ची सहधर्मिणी.... ।

—प्रबंधक, एन.टी.पी.सी.
इंदिरा भवन सिविल लाइंस,
इलाहाबाद (उ.प्र.)

## द्वीप की खोज

किंवदंतियों के अनुसार अटलांटिक महासागर के मध्य में एक अनुपम, भव्य और शानदार महाद्वीप अटलांटिस था । यह धरती पर स्वर्ग के समान था । इस महाद्वीप के लोगों ने अपने बाहुबल से समूचे दक्षिण पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अफरीका को जीत लिया था । बाद में एथेंसके लोगों ने इन्हें पराजित कर दिया । अटलांटिस के लोग घमंडी और दुष्ट हो गये थे । अतः दंड स्वरूप समुद्र ने उसे निगल लिया । यूनान के दार्शनिक प्लेटो ने अपनी पुस्तक टिमाअस् में इस महाद्वीप का वर्णन किया है । कुछ लोग आज भी अटलांटिस की खोज करने में लगे हैं ।
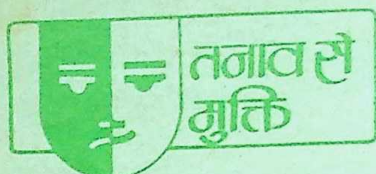
● डॉ. सतीश मलिक

## मन नहीं लगता

**पवन शर्मा, कांगड़ा : ३० साल का नौजवान, मां-बाप का इकलौता पुत्र हूं । अविवाहित हूं । बी. ए. द्वितीय पास हूं तथा छोटी-सी दुकान गांव में है । मुझे १२-१४ साल से दिल घटने की बीमारी है । इसी कारण किसी भी काम को करने में मन नहीं लगता । हमेशा उदास, परेशान, हताश व निराश रहता हूं । सोच-सोचकर याददाश्त भी कम हो गयी है । स्कूटर, साइकिल, कार आदि चलाना व सीखना चाहता हूं । परंतु हौसला नहीं है । टीका लगवाने तक से डरता हूं । छोटे-से चूहे व मरे हुए सांप तक से भय है । दवाइयां खायीं, पर ठीक नहीं हुआ । डैडी, मम्मी व बड़ी बहन घर में हैं । क्या करूं ?**

१२-१४ साल की आयु से भय का केवल आपको आभास हुआ है । वास्तव में समस्या की जड़ें बचपन में पड़ गयीं इसके कारण आपका व्यक्तित्व सही तरह से नहीं उभरा । आप शायद अकेले पुत्र होने के कारण बहुत सुरक्षित वातावरण में पले तथा मां-बाप ने आपको जिंदगी की दिक्कतों का सामना नहीं करने दिया । परिणाम यह हुआ कि आप में भय, आत्मविश्वास की कमी हो गयी है तथा अपने आपको जिंदगी की जद्दोजहद का सामना करने में असमर्थ पाते हैं । दवाई खाने से भला क्या लाभ । व्यक्तित्व उभारने का अब भी प्रयास करें । धीरे-धीरे आत्मनिर्भर होने की कामना से आत्म विश्वास भी आएगा ।

## पढ़ना आवश्यक

**प्रदीप कुमार : इंटर कला का १७ वर्ष का छात्र हूं । स्वभाव से कारुणिक । दूसरों का दुःख नहीं देख सकता इसी कारण कुछ रच लिया करता हूं । माता-पिता क्षुब्ध रहते हैं । हर समय कहते हैं, रचने में क्या है ? पढ़ाई की ओर ध्यान दो । वह चाहते हैं, बेटा पढ़कर घर का काज देखे और धन अर्जन करे । मुझे सांसारिक सुख से सुख नहीं । चाहता हूं किसी साहित्यिक पत्रिका से जुड़कर आजीवन उसका कार्य करूं । साहित्यकार स्वतंत्रता सेनानी से मिलता-जुलता हूं तो इस पर भी प्रतिबंध लगा दिया । इंटर की परीक्षा होनेवाली है, मेरा मन करता है भाग जाऊं ।**

भाग जाना तो कायरता ही होगी । मुझे विश्वास है कि आपका कोई भी शुभचिंतक इसकी सलाह नहीं देगा । आप अपनी रुचि की ओर अवश्य ध्यान दें, परंतु अभी पहले परीक्षा की ओर अपना मन लगा लें । आप पढ़-लिखकर धन अर्जन करते-करते भी अपनी रुचि को बढ़ावा दे सकते हैं । याद रखें यदि आप पढ़ते-लिखते नहीं तो साहित्यकार बनने में भी बाधा पड़ सकती है । क्योंकि रचित कृति छपने लायक है या नहीं इसके लिए आपको पढ़ना-लिखना तो करना ही होगा ।

## वैवाहिक जीवन

**क. ख. ग. उत्तराखंड : मैं ३८ वर्ष का हूं तथा पत्नी ३७ वर्ष की । १४ वर्ष का था तब विवाह हो गया था । छह वर्ष का था, तब मां का साया उठ गया तथा पिता ने कठोर गरीबी में हमें पाला । बचपन से ही समाज सेवा व निर्धन की सहायता करता हूं ।**

गांव के विद्यालय में ही अध्यापक हूं । गायक, कलाकार के रूप में मेरी अपनी अलग पहचान है । वैवाहिक जीवन कभी सुखमय नहीं रहा । मेरी पत्नी मेरी भावनाओं के अनुरूप नहीं ढल सकी न ही मैं । स्वभाव से चिड़चिड़ा, रात को नींद भी कम आती है । सालों बीत गये, पर पत्नी से बात करने तक का मन नहीं बना सकता । एक ब्राह्मण विधवा के बच्चे को पढ़ाता था कि उसने मेरे और उस बहन के रिश्ते को कलंकित किया । कृपया मार्गदर्शन करें ।

यह सब आपके बाल विवाह के कारण से ही है । उस समय व्यक्तित्व पूरी तरह से विकसित नहीं हुआ होता है । यदि बाद में कोई भी अपना व्यक्तित्व उभारता है तो आपस में अनबन रहने लगती है । परंतु हमारे समाज में आप अपनी पत्नी को इस कारण छोड़ नहीं सकते । इसलिए इसका हल है कि आप दोनों आपस में खुलकर बातचीत करें—झगड़ा अवश्य होगा, उससे डरें नहीं मन के भीतर कुछ न रखें—निकाल दें, इस प्रकार आप एक-दूसरे को समझने लगेंगे । समस्या तब आती है, जब हम मन-ही-मन घुटते रहते हैं तथा एक-दूसरे के प्रति गलत धारणाएं बना लेते हैं ।

### कैसी बीमारी ?

**सूर्यभान सिंह, जमालपुर : जिला मुंगेर बिहार में एस. एस. सी. पास रेलवे में सेवारत हूं । मेरी बीमारी नौकरी से पहले शुरू हो गयी थी । पहले दिल घबराया, चक्कर आया व हाथ-पैर ठंडे होने लगे । कुछ दिन दवा खायी ठीक हो गया । फिर, एक दिन अचानक ऐसा ही हुआ, पसीना आया,**

**इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आय, पद, आयु एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें ।**

**—संपादक**

**दिल धड़का, मुंह सूखा । मार्च'८५ में यह बीमारी आरंभ हुई तथा एक दिन बेहोश हो कर भी गिर गया । डॉक्टर की दवा से ठीक था परंतु किसी ने कहा कि क्यों नींद की गोली खा रहे हो । दवा छोड़ो, फिर तनाव का शिकार हो गया । कभी पीठ, कभी छाती, कभी माथे में अजीब-सा लगता है । माथे में छेद है यह भी लगता है । ई. ई. जी. सी. टी. स्कैन सभी सही है । यह क्या रोग है व इसका निदान व इलाज लिखें ।**

आपका रोग मानसिक तनाव द्वारा भी उत्पन्न हो सकता है । साथ ही शारीरिक जांच भी अत्यधिक आवश्यक है । मानसिक तनाव व्यक्तिगत जीवन में उठी समस्याओं को लेकर होता है । उनका आपने कोई जिक्र नहीं किया । वास्तव में दबी हुई भावनाएं ही तनाव के रूप में अचेतन मन में रहती हैं—उन्हें हम जब पहचानते नहीं तथा उनकी ओर ध्यान नहीं देते, तब वही शरीर में लक्षण उत्पन्न कर एक 'साइकोसोमेटक' बीमारी बनकर सामने आती है । यानि कारण मानसिक तनाव होता है तथा लक्षण शरीर में उत्पन्न होते हैं ।

***अमेजान रेन-फारेस्ट में चिड़ियों की प्रजातियों का २० प्रतिशत रहता है ।***

***इंडोनेशिया में रेन-फारेस्ट में चिड़ियों की प्रजातियों का १४ प्रतिशत रहता है ।***
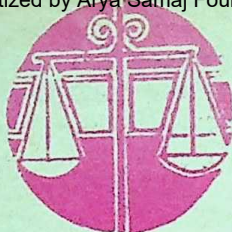
## मकान में हिस्सा

**इ. आलम, दाऊदनगर : मेरी सास के नाम से एक बड़ा मकान है, जो उन्हें उनके मेहर में दिया हुआ है । क्या उस मकान में हम लोगों का हिस्सा हो सकता है ?**

मकान आपकी सास के नाम से है । मकान आपके अनुसार उन्हें मेहर में दिया हुआ है । मेहर की राशि विवाह के समय देने पर कोई रोक नहीं है । जैसा आपके पत्र से प्रतीत होता है, आपकी सास जीवित हैं । उनके जीवन काल में संपत्ति में किसी अन्य का हिस्सा होने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता ।

## बुआ के नाम जमीन

**अरुणकुमार राय, ओंटा, पटना : मेरे दादाजी ने अपनी लड़की यानी मेरी बुआ के नाम दो एकड़ जमीन लिख दी थी । बुआ के कोई संतान नहीं हुई । उनके मर जाने पर उस जमीन पर उनके सगे-संबंधी पिछले बीस साल से कब्जा जमाये बैठे हैं । वे लोग मेरे पिताजी से उस जमीन की रजिस्ट्री कराना चाहते थे, लेकिन पिताजी ने रजिस्ट्री नहीं करायी । अब न पिताजी हैं और न उस जमीन के कागजात । क्या इस स्थिति में उस जमीन पर कानूनन मेरा अधिकार हो सकता है ?**

आपके दादाजी ने अपनी जमीन अपनी बेटी को दे दी तथा उनके लिए लिख दी । किस प्रकार के प्रलेख आपके दादाजी ने लिखे, इसका उल्लेख आपके पत्र में नहीं है । यदि पहले ही आवश्यक दस्तावेज बन चुके हैं, तो अब नये दस्तावेजों की क्या आवश्यकता है । आपकी बुआ के सगे-संबंधी अब नयी रजिस्ट्री लिखवाने के लिए आग्रह किस कारण से कर रहे हैं ? इन तमाम प्रश्नों के उत्तर के बाद ही यह निर्णय लिया जा सकता है कि जमीन के स्वामित्व की स्थिति क्या है ?

## शराबी पिता की संपत्ति

**अचला, कानपुर : मैं तीस वर्षीय अविवाहित, सरकारी कर्मचारी हूं । मेरे पिता अवकाश-प्राप्त सरकारी कर्मचारी हैं । वे शराबी तथा पर-स्त्रीगामी होने के कारण गत सात वर्ष से हमसे अलग दूसरे शहर में रह रहे हैं । वे वहीं अपनी पेंशन प्राप्त करते हैं । पेंशन से हमें घर चलाने के लिए वे एक पैसा भी नहीं देते । हम सब भाई-बहन मां के साथ उसी मकान में रहते हैं, जो पिताजी का है । मां और बहन का खर्च मैं ही उठाती हूं । भाइयों ने मुझसे काफी रुपया लेकर तथा उस मकान पर बैंक से ऋण लेकर अपना व्यवसाय शुरू किया था लेकिन व्यवसाय चौपट होने से सारी रकम डूब गयी । अब उनके परिवार का खर्च भी मुझे चलाना पड़ रहा है । इस पर भी भाभी मेरी मां और छोटी बहन को घर से निकाल देने पर तुली रहती है । भाभी ने मां और बहन के विरुद्ध पुलिस में रिपोर्ट लिखा दी, जिसे बड़ी मुश्किल से रद्द कराया जा सका । मैं चाहती हूं कि किसी तरह पिताजी का मकान बिक जाए, जिससे बैंक का ऋण चुक जाए और उसके बाद बची रकम हम सभी भाई-बहन आपस में बांट लें । क्या हम मकान बेच सकते हैं ?**

आपके पिताजी का चाल-चलन कैसा है, वह शराब पीते हैं या दूसरे गलत काम करते हैं

आदि, इन बातों से मकान पर उनका अधिकार समाप्त नहीं हो जाता । आपके भाइयों को मकान पर ऋण किस प्रकार मिल गया । मकान पर ऋण लेने से पहले पिताजी की अनुमति जरूर ली गयी होगी । ऐसी स्थिति में बैंक अपनी रकम मकान से वसूल कर सकती है । आप लोग सभी मिलकर भी मकान नहीं बेच सकते । बैंक द्वारा मकान बेचे जाने की स्थिति में कर्जे की रकम काटकर शेष रकम आपके पिताजी को ही मिलेगी, आप लोगों—भाई-बहनों या मां को नहीं ।

## हाउस टैक्स की रकम

**वीरेन्द्र खत्री, हसनपुरा औरंगाबाद : मैं एक कमरे में किरायेदार की हैसियत से एक कंपनी चला रहा हूं । किराया प्रतिमाह नियमित देता आ रहा हूं । मकान मालिक का कहना है कि मैं हाउस टैक्स की रकम भी अदा करूं । क्या मकान मालिक की यह मांग जायज है ?**

मकान-मालिक किराये की राशि प्राप्त करने का अधिकार रखता है । हाउस टैक्स देने का उत्तरदायित्व साधारणतयः किरायेदार का नहीं होता । मेरे विचार में मकान-मालिक की मांग जायज नहीं है वह आपको गृह-कर की राशि अदा करने के लिए बाध्य नहीं कर सकता ।

## तलाक लेना है

**क.ख. नैनी, इलाहाबाद : मैं ३६ वर्ष का युवक हूं । अच्छे घर-परिवार का हूं । आमदनी भी अच्छी है । दो बच्चे हैं । शादी हुए १० साल हो गये । पत्नी का शादी से पहले किसी लड़के से शारीरिक संबंध था, यह बात पत्नी ने ही बतायी थी । लेकिन शादी के बाद उसे मैंने कभी गलत कार्य करते नहीं देखा । हम दोनों में आपस में काफी प्रेम है । मैं व्यापार के संबंध में बराबर बाहर जाता रहता हूं । एक बार मैं रात में घर वापस आया, तो देखा कि पत्नी अपने कमरे में नौकर के साथ सोयी हुई है । मैंने नौकर को तो निकाल दिया है । अब मैं पत्नी से तलाक लेना चाहता हूं और बच्चों को मैं अपने पास ही रखना चाहता हूं । इसके लिए सरल सा उपाय बताइए ।**

***विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ***

***—रामप्रकाश गुप्त***

पत्नी से तलाक लेने के लिए आप हिंदू विवाह अधिनियम के अंतर्गत याचिका दायर कर सकते हैं । पत्नी के परपुरुष से संबंध की बात आपको न्यायालय में प्रमाणित करनी पड़ेगी । यह घटना कब की है, उसका उल्लेख आपने नहीं किया । जहां तक बच्चों का प्रश्न है, वह किसके संरक्षण में रहें, इसका निर्णय न्यायालय ही कर सकता है । बच्चों के संरक्षण का निर्णय करते समय न्यायालय बच्चों की आयु के साथ-साथ उनके भविष्य को भी ध्यान में रखता है ।

## एक नाम राशि का चक्कर

**राजेंद्र कुमार सविता, इंदरगढ़, दतिया : मेरे इलाके में आठ साल पहले एक व्यक्ति रहता था, उसका नाम भी राजेंद्र कुमार सविता था और उसके पिता का नाम भी वही था जो मेरे पिताजी का है, इतना ही नहीं उसकी जाति भी वही थी जो मेरी है । उसके विरुद्ध पास के थाने में आई.पी.सी. एक्ट ३६५ का केस दर्ज है । अब किसी को भी पता नहीं कि वह कहां रहता है । पुलिस जब भी केस को उठाती है तो गिरफ़ारी का वारंट लेकर मेरे पास ही आ धमकती है जिससे मेरी छवि धूमिल होती है । मैं एक प्रतिष्ठित व्यवसायी हूं । बताइए, मैं क्या करूं ?**

किसी अन्य व्यक्ति के विरुद्ध अभियोग के लिए आपको गिरफ्तार नहीं किया जा सकता। आपका तथा आपके पिता का नाम अपराधी से मिलने के कारण पुलिस भूल कर रही है। आप पुलिस अधिकारियों से मिलकर स्थिति साफ कर दें। यदि इससे बात न बने तो उच्च न्यायालय में समादेश याचिका दाखिल कर दें। याचिका में आप उच्च न्यायालय से अनुरोध कर सकते हैं कि वह पुलिस विभाग को आपको परेशान न करने के लिए आवश्यक निर्देश दे।

### संपत्ति कर के बारे में

**राजेश कुमार शाह, खंडवा : मेरा एक पैतृक मकान है, जिसका संपत्ति कर नगर निगम ने इस बार यकायक बढ़ा दिया है यानी पिछले सालों में जो संपत्ति कर ३५० रु. वार्षिक था उसे बढ़ाकर इस वर्ष २५०० रुपये वार्षिक कर दिया है, जो अनुचित ही नहीं अन्यायपूर्ण है। कृपया, संपत्ति-कर निर्धारण प्रक्रिया की जानकारी एवं उससे छूट मिलने की विधि बताने का कष्ट करें।**

नगर निगम संपत्ति-कर में परिवर्तन करने से पूर्व गृह स्वामी को अधिकार देता है कि वह परिवर्तन पर अपना एतराज एक निश्चित समय-सीमा के अंदर दाखिल कर दे। आपको भी अपने संपत्ति कर बढ़ाने के विरोध में एतराज नगर निगम के सक्षम अधिकारी के पास दे देने चाहिए। अकारण ही संपत्ति-कर में वृद्धि नहीं की जा सकती। संपत्ति-कर का निर्धारण करते समय मकान का मूल्य, इसमें जमीन का मूल्य भी जोड़ा जाता है, स्टैंडर्ड किराया आदि बातों को ध्यान में रखा जाता है। अगर भूल से आपकी संपत्ति पर कम कर लगाया जा रहा था, तब तो नगर निगम को भूल सुधार करने का अधिकार है। असंगत वृद्धि का आप विरोध कर सकते हैं। नगर निगम द्वारा आपके एतराज पर सुनवाई के बाद दिये निर्णय से संतुष्ट न होने पर आप न्यायालय में अपील कर सकते हैं। ●

## अंगरेज पत्रकार ने भी भारत के लिए जेल यातनाएं सहीं

**भारत की स्वाधीनता के लिए अंगरेजों के गढ़ लंदन की जेल में यातनाएं सहन करनेवालों में एक अंगरेज पत्रकार भी थे— मि. गाम आल्ड्रेड।**

'हेराल्ड ऑव रिवोल्ट' तथा 'जस्टिस' के संपादक मि. गाम आल्ड्रेड ने सन १९०७ में लंदन के इंडिया हाउस में आयोजित १८५७ के स्वातंत्र्य समर की अर्द्ध शताब्दी समारोह में विनायक दामोदर सावरकर का तर्कपूर्ण भाषण सुना तो वे भारत को आजाद किये जाने के समर्थक बन गये।

वीर सावरकर ने '१८५७ का स्वातंत्र्य समर' ग्रंथ लिखा तो १९०८ में ब्रिटिश सरकार ने प्रकाशित होने से पूर्व ही उसे जब्त कर लिया था। गाम आड्र्रे ने अपने पत्र में इस आदेश की खुली आलोचना करते हुए सावरकर का समर्थन किया। इसी बात से क्रुद्ध होकर पत्रकार गाम आल्ड्रेड को ब्रिक्सटन जेल में बंद कर दिया गया।

गाम आल्ड्रेड पर मुकदमा चला तथा उन्होंने बेली न्यायालय में खुलकर भारत की स्वाधीनता का समर्थन किया।

# जेल-जीवन

## रोमांचक सत्य कथाएं

# दास्तान — दो कैदियों की

## (स्व. बिहारीलालजी दुबे एवं स्व. पन्नालालजी दुबे)

● रमेशचंद्र दुबे

मेरा जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ, जिस परिवार के दो वरिष्ठ सदस्यों ने स्वतंत्रता आंदोलन में जेल की यातनाएं सहीं एवं हमारी पीढ़ी को देश के लिए मर मिटने की प्रेरणा दी। इनमें से एक हैं मेरे पूज्य दादाजी स्व. बिहारीलाल दुबे एवं दूसरे मेरे पिताजी स्व. पन्नालाल दुबे। जब मेरे दादाजी एवं पिताजी प्रथम बार सन १९३० में जंगल सत्याग्रह करते हुए जेल गये, तब तक मेरा जन्म नहीं हुआ था, किंतु वर्ष १९४२ में जब वे दूसरी बार 'भारत छोड़ो' आंदोलन के समय जेल गये, तब मैं लगभग छह-सात वर्ष का था। प्रस्तुत है मेरे पिता स्व. पन्नालालजी दुबे द्वारा सुनाये गये जेल यात्रा के कुछ संस्मरण—

### जेलर को सबक

मेरे दादा स्व. बिहारीलाल दुबे सन १९३० में जंगल सत्याग्रह करने पर अंगरेज प्रशासन द्वारा नागपुर सेंट्रल जेल भेज दिये गये। उन्हें छह माह का कारावास हुआ। अंगरेज उस समय राजनीतिक कैदियों से भी साधारण कैदियों—जैसा व्यवहार करते थे। जेलर ने उन्हें पत्थर तोड़ने की सजा दी। वे इस आदेश से क्रोधित हो उठे तथा गुस्से में आकर वहां की घास उखाड़ने लगे। जेलर ने उनकी इन हरकतों से नाराज होकर उनके पैरों में बेड़ी डलवा दी।

दादाजी जेल में किसी से कुछ कहते नहीं थे, सिर्फ राम नाम का जाप किया करते थे। पैरों में बेड़ी डाले जाने पर अचानक उनके मुंह से निकला जिसने मेरे पैरों में बेड़ी डालने का आदेश दिया है, वह रोते हुए मेरे पास आएगा। जेलर ने यह बात सुन ली थी। यह राम की महिमा ही थी कि जेलर का एक ही जवान बेटा था, जो दूसरे दिन एक दुर्घटना में राम को प्यारा हो गया। जेलर समझ गया कि यह बाबाजी का श्राप ही है। वह तुरंत दादाजी के पास आया और उनके पैरों से बेड़ी निकलवा दी। इस घटना के बाद उसने दादाजी को कभी कुछ नहीं कहा।

पं. पन्नालालजी दुबे

### साथियों में पारिवारिक स्नेह

वर्ष १९४२ में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान मेरे पिताश्री स्व. पन्नालालजी दुबे ढाई वर्ष तक जबलपुर जेल में रहे। उस समय कुछ ऐसे भी जेल-साथी थे, जो जेल से जल्दी छूट जाते थे जिनमें से एक थे अमरावती के स्व.
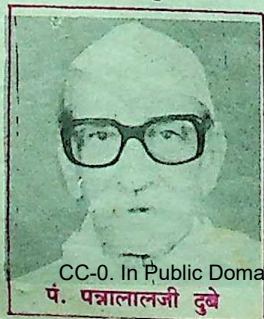
*मित्र ने देखा कि इस समय उनके पास ऐसे मामले भी आये, जिससे उन्हें काफी बड़ी रकम मिल सकती थी, किंतु उन्होंने देश-सेवा के आगे अपना पेशा पुनः प्रारंभ करने से साफ इनकार कर दिया । यह देख कर चितरंजन दासनी मित्र लौट गया था ।*

बालासाहेब मराठे । पिताजी ने उन्हें बताया कि मेरी मां की आंखों का ऑपरेशन होना है, लेकिन मैं जेल में हूं, मराठेजी के मन में यह बात घर कर गयी । वे जेल से जैसे ही रिहा हुए, सीधे हमारे घर गोंदिया पहुंचे तथा मेरी दादी को परिवार सहित अपने गृहनगर अमरावती ले गये । पंद्रह दिन में ऑपरेशन की व्यवस्था कर उन्होंने ऑपरेशन करा दिया जो सफल रहा । पिताजी कहा करते थे कि उस समय लोगों के मन में स्वार्थी प्रवृत्ति नहीं थी, तथा हमारे साथी एक-दूसरे के परिवार को स्वयं का परिवार मानते थे ।

## पहले देश फिर परिवार

स्वतंत्रता आंदोलन की एक अमिट कहानी आज भी मेरे मन-मस्तिष्क में पूर्वजों के त्याग और देश-प्रेम की भावना का सम्मान बनाये हुए हैं ।

'भारत छोड़ो' आंदोलन के समय जब पिताजी जबलपुर जेल में थे, तब मेरे दो भाईयों का स्वर्गवास कुपोषण तथा दवा-दारू के अभाव में हो गया । इन मौतों से दुःखी पिताजी के मित्रों ने मेरी माताजी से कहा, 'हम पैरोल पर दुबेजी को रिहा करा लाते हैं, किंतु मां ने उन्हें साफ मना कर दिया और कहा जिसे जाना था, वो तो चले गये, पर जिस बात के लिए दुबेजी जेल गये हैं, पहले उसे सफल हो जाने दो ।'

## क्रांतिकुमार भारती की रामायण

पिताजी की जेल-यात्रा के समय उनके और एक सहयोगी थे कविवर क्रांतिकुमार भारती जिन्होंने गांधीजी और नेहरूजी पर काव्यात्मक रामायण लिखी थी । वे जेल में कस्तूरबा गांधी एवं डॉ. राजेंद्र प्रसाद को गीता तथा रामायण का पाठ सुनाया करते थे ।

राजस्थान निवासी देश-सेवा हेतु गृहत्याग कर निकले, कविवर क्रांतिकुमारजी की उक्त रामायण को सुनकर लोग उनसे प्रेरित होते थे तथा स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया करते थे । अंगरेज उनसे इतने खफा थे कि साधारण कैदियों से उनकी दाढ़ी के बाल तक नुचवा डाले थे । वे आजादी के बाद सन १९४८ में जेल से रिहा हुए ।

स्वतंत्रता पूर्व जब मैं छोटा था, तब वे घर पर आया करते थे तथा कविताएं सुनाया करते थे, जिसकी कुछ पंक्तियां आज भी मुझे याद हैं :—

**मां रोती क्यों घबराती हो,**
**मैं जाता हूं मुझको जाने दो**
**हम वीर हैं इस देश को आजाद करेंगे**

उनकी कविताएं उस समय देश के लिए बलिदान होने की प्रेरणा प्रदान करती थीं ।

### बाबू चितरंजन दास का त्याग

पिताजी बतलाते थे कि बाबू चितरंजनदास कलकत्ता के एक माने हुए विद्वान वकील थे तथा बड़े से बड़े मामले को निपटाने का उस समय एक लाख रुपये से कम नहीं लेते थे । स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी के संपर्क में आकर उन्होंने अपनी वकालत का पेशा छोड़ दिया, जिससे उनका परिवार आर्थिक संकटों से गुजरने लगा । तब उन्होंने एक मित्र से कर्ज लिया । वे जब कर्ज अदा करने की स्थिति में नहीं रहे, तब मित्र के बड़े भाई ने उनके मित्र को २५,००० रुपये वापस मांगने के लिये उनके पास भेजा ।

मित्र ने देखा कि इस समय उनके पास ऐसे मामले भी आये जिससे उन्हें काफी बड़ी रकम मिल सकती थी, किंतु उन्होंने देश-सेवा के आगे अपना पेशा पुनः प्रारंभ करने से साफ इनकार कर दिया । चितरंजनदासजी का यह देशप्रेम देखकर उनका मित्र लौट गया तथा अपने बड़े भाई से बोला मैं उस व्यक्ति से एक पैसा नहीं ले सकता, जिसने देश के लिये अपना सर्वस्व निछावर कर दिया है ।

### सबसे लंबी जेल यात्रा

सन १९४२ में भारत छोड़ो आंदोलन के समय मेरे पिताजी लगभग ढाई वर्ष तक जेल में रहे । इस समय उनके साथ स्व. रविशंकर शुक्ला, स्व. कुंजीलाल दुबे, स्व. श्रीमन्नारायण अग्रवाल, सेठ गोविंददास, व्यौहार राजेन्द्रसिंह जी, स्व. एच.वी. कामथ स्व. अनंत गोपाल शेवडे, श्रीकन्नमवारजी—जैसे शीर्षस्थ नेता भी उनके साथ जेल में थे ।

वर्ष १९४० में कांग्रेस के अध्यक्ष पद का चुनाव हुआ, जिसमें नरम दल की ओर से पटाभि सीतारामैया को तथा गरम दल की ओर से बाबू सुभाषचंद्र बोस को अध्यक्ष पद के लिए खड़ा किया गया था । इस चुनाव में बाबू सुभाषचंद्र बोस भारी मतों से विजयी हुए । इस पर महात्मा गांधी ने जो नरम दल के नेता थे कहा कि यह पट्टाभि सीता रामैया की हार नहीं, बल्कि व्यक्तिगत रूप से मेरी हार है । पश्चात जब त्रिपुरा में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ, तब सुभाषचंद्रजी ने गांधीजी से कहा कि आपको यदि मेरा अध्यक्ष बनना मंजूर नहीं है, तो मैं यह पद त्याग देता हूं और उन्होंने पद-त्याग दिया । बाद में वे जरमनी चले गये ।

जरमनी से सन १९४१ में लौटकर उन्होंने वर्मा-रंगून में आजाद हिंद फौज की स्थापना की । उस समय उन्होंने 'जय हिन्द' का नारा दिया, तथा राष्ट्र भावना से प्रेरित एक गीत से नवयुवकों को आह्वान,जिसके बोल थे ।—

**कदम-कदम बढ़ाये जा, खुशी के गीत गाए जा**
**ये जिंदगी है कौम की, कौम पर लुटाए जा**

इस गीत ने मुझे भी प्रेरणा दी और मैं भी इस गीत को गुनगुनाते हुए नौजवानों के साथ प्रभातफेरी में शामिल होने लगा । देशभक्ति की वैसी भावना, आज हमारे समाज में कहीं नजर नहीं आती ।

—**संपादक : 'भंडारा दर्शन' दैनिक,**
**गोंदिया-४४१६०१** (महाराष्ट्र)

**लुटा है और लुटेगा वो कारवां यारो है जिसने राहजनों को ही रहबरी सौंपी**—एस. नारायण

## एक निष्ठा आवश्यक

तरुणाई तकाजे में बह न जावें, बहक न जावें और न उच्छृंखल ही बनें । प्रत्युत विवेकशीलता, विनम्रता, सेवा वृत्त, प्रामाणिकता और अनुशासन-पालन की वृत्ति, राष्ट्र-प्रेम और राष्ट्रीय-भावना अध्यव्यवसाय और लगन के साथ जोरदार प्रसार कर देश और राष्ट्र को उन्नतशील एवं समृद्ध बना समुन्नत राष्ट्रों के समकक्ष बनाने का प्रयत्न करें । तभी लोक-कल्याण, मानवता की सेवा और विश्व शांति का भारतवर्ष का जीवित धर्मकर्त्तव्य और जीवनोद्देश्य पूरा किया जा सकता है और होगा ।

इस पुनीत उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह परमावश्यक है कि हम आजाद हों । आजादी हासिल करने के लिए यह निहायत जरूरी है कि हम आपसी कलह, द्वेष और वाद-विवाद की दूषित मनोवृत्ति से दूर रहें और एकनिष्ठा से इष्ट-सिद्धि में लग जाएं ।

**— लक्ष्मीशंकर गोविंदशंकर मिश्र**

राजबंदी निवास जबलपुर, फरवरी ४.१.८८

## सीधा-सरल तरीका

*सदैव ऐसे बोल बोलो, जो किसी का दिल न दुखावें, मनुष्य जाति की सेवा के तौर-तरीकों में से यह भी एक सीधा और सरल तरीका है ।*

**— ब्रज बिहारी पांडे**

सेंट्रल जेल, जबलपुर,
१९.१.१९४४

## हिम्मत पस्त न हो

*कल इतिहास की चीज होगी । हमने जो भोगा है वह मातृभूमि की प्रसव-पीड़ा है । इसी का पर्यवसान नवराष्ट्र के जन्म में होगा । हमारी यह रक्तांजलि उसी आनेवाले राष्ट्रदेव के चरणों में अर्ध्य होगी । इस विश्वास और निष्ठा के साथ हमें अपनी राह पर हिम्मत से डटे रहना चाहिए । हमारे दिल न टूटें, हिम्मत पस्त न हो और पैर न लड़खड़ाएं, बस हमारी फतह निश्चित है । भावी पीढ़ियां हिंदुस्तान के इस गौरवशाली जमाने पर गर्व करेंगी । ईश्वर हमारे साथ है ।*

जबलपुर सेंट्रल जेल, ३.१.४४

**— हरिप्रसाद चतुर्वेदी**

**श्री पन्नालाल दुबे मध्यप्रदेश के एक प्रसिद्ध गांधीवादी स्वाधीनता सेनानी थे । वे अनेक बार जेल भी गये । जबलपुर जेल में कारावास भुगतते हुए उन्होंने अनेक बंदी नेताओं व कार्यकर्ताओं से संदेश मंगवाये थे और जेल में उन्हें संकलित कर एक पुस्तिका बनायी थी । प्रस्तुत हैं, इसी पुस्तिका में संकलित संदेशों में से कुछ संदेश ।**

**यह चित्र इस नोटबुक के प्रथम पृष्ठ का है, जिसे जेल अधिकारियों ने प्रमाणित किया था कि इसमें सौ पृष्ठ हैं ।**

This copy belongs to Mr P.L. Dube
Blank book.
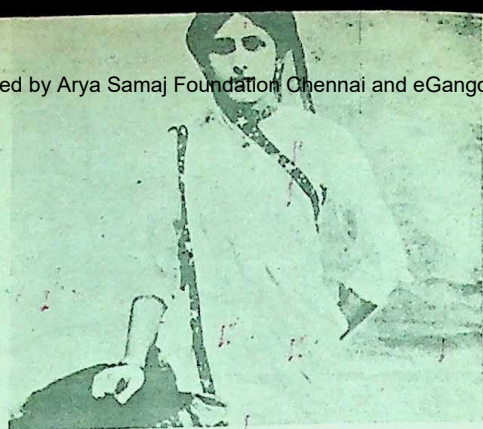
श्रीमती कमला नेहरू

# जेल में जब कमला नेहरू मजिस्ट्रेट बनीं

● कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

पुरानी पीढ़ी के तपस्वी पत्रकार स्व. पं. विश्वंभरप्रसाद शर्मा तथा उनकी सहधर्मिणी श्रीमती शांतिदेवी दोनों अपने जमाने के जाने-माने स्वाधीनता सेनानी थे ।

नवम्बर १९३० में देशभर में महात्मा गांधी के निर्देश से नमक कानून भंग करने का आंदोलन चल रहा था । पुरुष नमक कानून तोड़कर ब्रिटिश सरकार की जड़ें हिला रहे थे तो महिलाएं शराब की दुकानों पर विदेशी वस्त्रों के विरुद्ध पिकेटिंग कर जन-जागृति पैदा कर रही थीं ।

### आग बरसानेवाले भाषण

शर्मा दंपत्ति का कार्य क्षेत्र उन दिनों आगरा में था । श्रीमती शांति देवी ने कांग्रेस की महिलाओं का नेतृत्व संभाला हुआ था । वे दिनभर आगरा नगर तथा गांवों में जातीं और महिलाओं को एकत्रित कर विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार की प्रेरणा देतीं । शांतिदेवी का भाषण आग बरसानेवाला होता था । आगरा प्रशासन उनके भाषणों की सी. आई. डी. रिपोर्ट पाकर कांप उठता था ।

आगरा में अंगरेज सरकार ने आदेश दिया कि नगर व क्षेत्र को विद्रोह की आग में झोंकने वाली इस महिला को जेल में डाल दिया जाए ।

थानेदार कुछ सिपाहियों को लेकर शर्माजी के निवास पर जा पहुंचा । बोला, "बहनजी कहां हैं, उनकी गिरफ्तारी के वारंट हैं ।" शांतिदेवी अंदर से बाहर आयीं और बोलीं,

"आप १० मिनट रुकिए मैं तैयार होकर आती हूं। मैं तो आप लोगों की कई दिनों से प्रतीक्षा कर रही थी।"

शांतिदेवी अपने हाथ में थैला तथा गोदी में बच्चा लिए बाहर आयीं तो थानेदार समझ गया। उसने कहा, "बहनजी, वारंट तो आपके अकेले के हैं, इस नन्ने-मुन्ने को क्यों जेल ले जाती हैं ?"

शांतिदेवी ने मुसकराकर उत्तर दिया, "भाईसाहब इसे भी तो आजादी की लड़ाई का सिपाही बनने दो। कल को देश आजाद होगा तो यह दावा तो कर सकेगा कि उसने भी गांधीजी की सेना में भरती होकर जेल काटी थी देश की आजादी के लिए। थानेदार ये शब्द सुनकर एक बार तो रो पड़ा था।

शांतिदेवी अपने बेटे क्रांति को गोद में लेकर पुलिस की गाड़ी में जा बैठीं। उन्हें इलाहाबाद जेल भेज दिया गया।

**बच्चे के कारण मन बहलेगा**

इलाहाबाद जेल में श्रीमती कमला नेहरू, सुखदेवी पालीवाल तथा श्रीमती शर्मदा त्यागी (श्री महावीर त्यागी की पत्नी) पहले से सजा काट रही थीं। शांतिदेवी की गोद में उन्होंने बच्चा देखा तो प्रसन्न हो उठीं—चलो इस सुंदर बच्चे के कारण खेलना-खिलाना हो जाएगा-अच्छा समय कट जाएगा।

क्रांति कुछ ही दिनों में कमला नेहरू से हिलमिल गया। क्रांति घुटनों के बल बैरक में दौड़ता, खेलते-खेलते मिट्टी खाने लगता। कमलाजी उसे मिट्टी खाने से रोकतीं। शांतिदेवी से मिट्टी खाने की शिकायत करतीं तो वे हंसकर कह देतीं, "हमारे देश की मिट्टी इतनी पवित्र है कि वह भी पेट में पहुंचकर अच्छे संस्कार ही देती है।"

***कमलाजी उसे मिट्टी खाने से रोकतीं। शांतिदेवी से मिट्टी खाने की शिकायत करतीं तो वे हंसकर कह देतीं, "हमारे देश की मिट्टी इतनी पवित्र है कि वह भी पेट में पहुंचकर अच्छे संस्कार ही देती है।"***

जेल की ऊब मिटाने के लिए महिला राजबंदियों ने राम नाटक खेला। कमला नेहरू मजिस्ट्रेट बनीं, सुखदेवी पालीवाल कोतवाल। शांतिदेवी को मुजरिम बनाकर अदालत में पेश किया गया, सरकारी वकील शर्मदा त्यागी ने आरोप लगाया कि शांतिदेवी देश में एक भावी सपूत के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रही हैं। अभियुक्त शांतिदेवी ने आरोप को चुनौती दी। कमलाजी के सामने मिट्टी से मुंह सने बालक क्रांति को पेश किया गया। बस फिर क्या था—कमलाजी ने शांतिदेवी को जुरमाना सुना दिया। जुरमाने में शांतिदेवी ने सभी को शानदार दावत दी।

**प्रस्तोता : शिवकुमार गोयल**

***जो अपने आप में विश्वास नहीं करता, वह नास्तिक है।*** — विवेकानंद
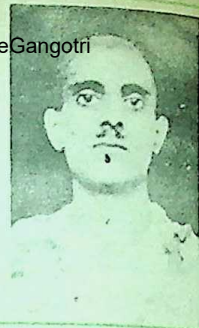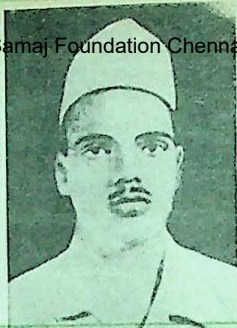
शहीद भगत सिंह राजगुरु सुखदेव

# फांसी के तख्ते पर साहस और दिलेरी

● वीरेन्द्र (वयोवृद्ध पत्रकार)

पंजाब के वयोवृद्ध पत्रकार श्री वीरेन्द्र, संपादक 'प्रताप' उस दिन उसी लाहौर जेल में बंद थे, जहां भारतीय स्वाधीनता संग्राम के तीन महान सेनानियों भगतसिंह, सुखदेव तथा राजगुरू को फांसी पर लटकाया गया था ।उधर तीनों क्रांतिकारियों को फांसी लगायी जा रही थी, इधर जेल में तमाम बंदी 'इंकलाब जिंदाबाद' के नारों से उनका मानो अभिवादन कर रहे थे । यहां प्रस्तुत हैं—श्री वीरेन्द्र के रोमांचकारी क्षणों के कुछ प्रसंग :

मैं और मेरे १२ साथी स्व. अहसान इलाही सन १८३२ में नियम १८१८ की धारा ३ के अंतर्गत लाहौर की जेल में बंद थे । हमें पता लग गया था कि २४ मार्च की सबेरे भगतसिंह, सुखदेव तथा राजगुरू को फांसी दी जाएगी ।

२३ मार्च की दोपहर एक कैदी ने हमारी बैरक में आकर खबर दी कि कल सबेरे की जगह शाम को ही तीनों को फांसी दे दी जाएगी । हम सबके लिए यह खबर एक बम के धमाके के समान थी । हमें यह सपने में भी विश्वास नहीं था कि सरकार इस सीमा तक पागल हो जाएगी कि सभी नियमों को ताक पर रखकर दिन निकलने से पहले ही शाम को ही तीनों साथियों के गले में फंदा डाल देगी ।

### भगतसिंह की निशानी

वह खबर देनेवाला कैदी भगतसिंह आदि के निकट रहता था । हमने उससे प्रार्थना की कि वह भगतसिंह के पास जाए तथा हमारे लिए उनका स्मृति चिह्न लाकर दे । कैदी चला गया तथा दो घंटे बाद वापस आया तो उसके पास

एक पैन तथा एक कंघी थी । सफेद हाथी दांत की कंघी पर भगतसिंह ने अपने हाथ से कुरेद कर अपना नाम लिखा हुआ था ।

सायं ४ बजे के लगभग चीफ हैडवार्डर हाथ में तालियों का गुच्छा लिये आया । "हमें बैरक में बंद कर ताले क्यों लगाये जा रहे हैं ?" वह बोला कुछ नहीं किंतु उसकी आंखों से आंसू बहे और गालों पर लुढ़क आये । उसने केवल इतना कहा, "सारा खेल समाप्त होनेवाला है—उन्हें कुछ घंटों में फांसी दी जाने वाली है", हम सब भयभीत हुए बैठे रहे ।

लगभग ७ बजे शाम हमें अचानक 'इनकलाब जिंदाबाद' के नारे सुनायी दिये । जब इन तीनों वीरों को फांसी की ओर ले जाया जा रहा था तब वे ये नारे लगा रहे थे । हमें समझते देर नहीं लगी कि तीनों वीर जवान राष्ट्र की वेदी पर बलि चढाये जा चुके हैं । हमने पूरी रात जागते हुए काटी ।

सवेरे सात बजे चीफ वार्डन बैरक का ताला खोलने आया मैंने जैसे ही उससे पूछा कि रात में क्या हुआ ? वह फूट-फूट कर रो पड़ा । बोला, "मैंने विभिन्न जेलों में अपने ३० वर्ष की सेवा शाला में सैकड़ों लोगों को फांसी दिये जाते देखा ही था, लेकिन आज तक किसी कैदी को इस साहस और दिलेरी के साथ फांसी के तख्ते की ओर जाते नहीं देखा, तीनों ने कोठरियों से निकलकर हाथ मिलाये तथा नारे लगाते हुए फांसीघर की ओर चल दिये, उनकी गरदन में फांसी का फंदा डाला गया तो उन्होंने अंतिम नारा लगाया । उनका नारा समाप्त होता इससे पहले ही उनको फांसी पर लटका दिया गया ।

"बाबाजी, मैंने जीवन में कभी वाहे गुरु को याद नहीं किया । कई बार तो मैंने देश की अवनति व लोगों के दुःख के लिए उन्हें दोषी भी ठहराया है।"

**अब वाहे गुरु को क्यों याद करूं ?**

वह चीफ वार्डन सिख था । फांसी के कुछ देर पहले वह भगतसिंह के पास गया और उसने अनुरोध किया, "मेरे बेटे, अब केवल कुछ मिनट ही जीवन के शेष रह गये हैं—इसके बाद तुम इस संसार में नहीं रहोगे । वाहे गुरु की अंतिम अरदास क्यों न कर लें ।"

यह सुनकर भगतसिंह मुसकरा दिये और बोले, "बाबाजी, मैंने जीवन में कभी वाहे गुरु को याद नहीं किया । कई बार तो मैंने देश की अवनति व लोगों के दुःख के लिए उन्हें दोषी भी ठहराया है । अब जब मौत मेरे सामने खड़ी है वाहे गुरु की अरदास करूं तो वह कहेगा कि मैं बहुत डरपोक और बेईमान आदमी हूं । अब मुझे इस संसार से वैसे ही विदा हो जाने दो जैसा मैं हूं । मेरी क्रांति यह नहीं रहेगी कि भगतसिंह कायर था और उसने अपनी मौत से घबराकर वाहे गुरु को याद किया था ।"

*चेहरे बदले, कद को तराशा, अपनापन नीलाम किया*
*तब जाकर हम इस बस्ती में, बाइज्जत कहलाये हैं*

—सबा फाजली

**विदेशी शासन के विरुद्ध अनवरत संघर्ष के बाद देश को स्वतंत्रता मिली । असंख्य युवक-युवतियों ने हंसते-हंसते मातृभूमि के लिए शीश कटाया । इन वीर शहीदों की पुण्य स्मृति वर्तमान और भावी पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहेगी ।**

## भरी अदालत में हत्या

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में पूना में भयंकर प्लेग फैला । तब तक भारतीय जनता प्लेग के बारे में कुछ भी नहीं जानती थी । अंगरेज अधिकारियों ने प्लेग के रोगियों को अलग-थलग करने के लिए घर-घर की तलाशी ली । प्लेग के रोगियों को जबरदस्ती घरों से निकाल दिया गया । सरकारी कार्रवाई में सहानुभूति और समझ-बूझ का अभाव था । सरकार दमन और आतंक का सहारा लेकर प्लेग की रोक थाम करना

# कुछ मारकर मरे :

चाहती थी । प्लेग कमिश्नर श्री रैंड के नेतृत्व में सरकारी कारिंदे जूते पहनकर लोगों के घरों, रसोईघर, पूजा स्थल आदि में घुस जाते थे । घरों से निकाले गये प्लेग रोगियों की चिकित्सा एवं उपचार की कोई व्यवस्था न थी । उन्हें नगर के बाहर एक निर्जन स्थान पर छोड़ दिया जाता था ।

तिलक ने साप्ताहिक 'केसरी' में इस दमन की कड़े शब्दों में निंदा की । व्यायाम मंडल, पूना के दामोदर चाफेकर और बालकृष्ण चाफेकर ने जनता के अपमान का बदला लेने के लिए २२ जून, १८९७ को प्लेग कमिश्नर श्री रैंड और उनके सहयोगी लेफ्टीनेंट आर्यस्ट की हत्या कर दी ।

चाफेकर बंधुओं को गिरफ़्तार कर लिया गया । उनका एक सहयोगी सहकारी गवाह बन गया । चाफेकर बंधुओं के तीसरे भाई ने अपनी मां से आज्ञा लेकर अपने भाइयों को पकड़वानेवाले की भरी अदालत में हत्या कर दी । तीनों भाइयों को फांसी दे दी गयी ।

## हंसते-हंसते फांसी के तख्ते पर

खुदीराम को मुजफ्फरपुर बम केस में फांसी की सजा दी गयी । उन्होंने ३० अप्रैल १९०८

को सेशन जज किंग्सफोर्ड को मारने के लिए एक फिटन पर बम फेका था। फिटन में एक अंगरेज महिला और उसकी लड़की थी। खुदीराम की उम्र उस समय केवल १७ वर्ष की थी। उन्हें फांसी की सजा दी गयी। ११ अगस्त १९०८ को यह वीर एक हाथ में गीता लेकर हंसते-हंसते फांसी के तख्ते पर झूल गया। उसके अंतिम संस्कार में हजारों लोग शामिल हुए। ये सभी लोग उसका अस्थि चूर्ण और भस्मियों का कुछ भाग अपने साथ ले गये। अस्थि चूर्ण और भस्मियों के लिए इतनी धक्कम-धक्का हुई कि अंत में वहां कुछ भी न बचा।

## कटहल के भीतर बंदूक

कन्हाईलाल दत्त को अलीपुर षड्यंत्र केस में प्रमुख सरकारी गवाह नरेन्द्र गोस्वामी को

# कुछ फांसी पर चढ़े

जेल में गोली मार देने के लिए फांसी की सजा दी गयी। कन्हाई लाल ने एक कटहल में छिपाकर जेल में पिस्तौल मंगवायी और अंगरेज पहरेदार की उपस्थिति में नरेन्द्र गोस्वामी की हत्या कर दी। अंगरेज पहरेदार ने कन्हाईलाल को पकड़ लिया था। लेकिन उन्होंने गोली चलाकर पहरेदार को घायल कर दिया और नरेन्द्र का पीछा करते हुए उस पर अपनी पिस्तौल खाली कर दी। कन्हाईलाल को अपने बलिदान की बड़ी प्रसन्नता थी। फांसी पर चढ़ते समय कन्हाई का वजन १६ पौंड बढ़ गया था।

## वाइसराय पर बम

दिल्ली षड्यंत्र केस वाइसराय लार्ड हार्डिंग पर बम गिराने के बारे में था। अदालत में बम गिराने की कोई गवाही नहीं दी गयी। फिर भी मास्टर अमीर चंद, अवध विहारी, भाई बाल मुकुन्द और वसन्त कुमार विश्वास को फांसी दे दी गयी।

फांसी के समय चारों वीर बहुत प्रसन्न थे। एक अंगरेज अधिकारी ने अवध विहारी से पूछा, "आपकी अंतिम इच्छा क्या है ?"

अवध विहारी : "यही कि अंगरेजी साम्राज्य नष्ट हो जाए"।

अंगरेज अधिकारी : "शांत रहिए, आज तो शांतिपूर्वक प्राण दीजिए। अब इन

बातों का क्या लाभ ?''

अवध विहारी : ''आज कैसी शांति ? मैं तो यह चाहता हूं कि आग भड़के और चारों ओर भड़के, जिसमें तुम भी जलो, हम भी जलें, हमारी गुलामी भी जले और अंत में भारत कुंदन बनकर निखरे ।''

चारों वीर बन्दे मातरम कहते हुए हंसते-हंसते फांसी के तख्ते पर झूल गये ।

## फांसी के बाद उपवास

भाई बाल मुकुन्द का विवाह एक ही वर्ष पूर्व रामरखी के साथ हुआ था । उनका अभी गौना भी नहीं हुआ था । रामरखी एक दिन जेल में भाई बाल मुकुन्द से मिलने गयीं । उसके बाद उन्होंने सूखी रोटी खाना और जमीन पर सोना शुरू कर दिया । पति को फांसी दिए जाने के बाद उसने निर्जल उपवास शुरू कर दिया और अठारहवें दिन प्राण छोड़ दिए ।

## फांसी के समय वजन बढ़ गया था !

कर्तार सिंह अमरीका में 'गदर' अखबार के संपादन विभाग में थे । वह देश को स्वाधीन कराने के लिए १९१४ में स्वदेश लौटे । उन्हें १६ नवम्बर १९१६ को फांसी दी गयी । फांसी पर चढ़ते समय उनका वजन १० पौंड बढ़ गया था । फांसी के समय उनकी आयु केवल १९ वर्ष थी ।

कर्तार सिंह १९१२ में सान फ्रांसिस्को पहुंचे । वहां उन्होंने भारतीय मजदूरों का संगठन किया । उन्होंने न्यूयार्क में एक हवाई जहाज कंपनी में काम करके विमान चलाना सीखा ।

स्वदेश लौटकर कर्तार सिंह ने छात्रों, सैनिकों और गांववालों को विदेशी शासन के विरुद्ध भड़काना शुरू किया । वह बहुत मेहनती थे और हर रोज ४०-५० मील साइकिल पर चक्कर लगा लेते थे । वह बहुत ही साहसी थे । एक दिन पुलिस ने उन्हें पकड़ने के लिए एक गांव को घेर लिया । कर्तार सिंह गांव में न थे । पुलिस दल में उन्हें कोई पहचानता नहीं था । कर्तार सिंह फौरन गांव में चले गये । उन्होंने अपनी साहसिक कार्रवाई से स्वयं को बचा लिया ।

कर्तार सिंह के नेतृत्व में ३ फरवरी १९१५ को लुधियाना जिले के रब्बो गांव में डाका डाला गया । घर में एक अतीव सुंदर युवती को देख उनके दल के एक सदस्य के मन में पाप आ गया । उसने उस लड़की का हाथ पकड़ लिया । कर्तार सिंह ने तत्काल अपनी पिस्तौल उस दुष्ट के सिर पर लगा दी और उससे उस लड़की को बहन कहकर मांफी मंगवायी । इस पर घर की गृहिणी ने कर्तार से पूछा, ''ऐसे धर्मात्मा और सुशील

युवक होकर तुम इस कार्य में क्यों शामिल हो गये ।'' इस पर कर्तार सिंह ने गृहिणी को अपने दल का उद्देश्य समझाया । गृहिणी ने कर्तार से अनुरोध किया कि वह कुछ धन लड़की के विवाह के लिए छोड़ जाए । कर्तार सिंह ने सारा धन गृहिणी के सामने रख दिया । गृहिणी ने कुछ धन अपने पास रख शेष कर्तार सिंह को सौंप दिया ।

लाहौर षड्यंत्र केस के मुकदमे के दौरान जज उनसे सोच समझ कर बयान देने को कहता रहता था । इस पर कर्तार सिंह का उत्तर होता था, ''फांसी ही लगा दोगे । हम उससे डरते नहीं हैं । फांसी की सजा सुनाने पर उन्होंने जज को धन्यवाद दिया । कर्तार सिंह वीरों में शूरवीर थे ।

## कमर में छिपा बम

धन्ना सिंह का नाम सुनकर पुलिस थर-थर कांपती थी । धन्ना सिंह ने पुलिस के अनेक भेदियों को जान से मार दिया था । उनके एक विश्वासपात्र मित्र ने छल करके २५ अक्तूबर १९२३ को पकड़वाया । रात में जिस समय उन्हें पकड़ा गया वह सो रहे थे । उन्हें पुलिस के ४० जवानों ने घेर लिया । वह अपना पिस्तौल निकाल रहे थे कि एक पुलिस इंस्पेक्टर ने उन पर लाठी चला दी । धन्ना सिंह को जंजीरों से जकड़ दिया गया । पुलिसवाले उन्हें घेरे खड़े थे । अचानक फुर्ती से धन्ना सिंह ने ऐसा झटका मारा कि उनकी कमर के पास छिपे बम में धमाका हो गया । धन्ना सिंह के साथ पुलिस के पांच जवान और अधिकारी मारे गये और तीन घायल हुए । पुलिस कप्तान हार्टिन और एक जवान बाद में परलोक सिधारे ।

### मकड़ी का जहर :एक दवा

**गंभीर मानसिक आघात के इलाज में मकड़ी के जहर से बनी दवा काफी लाभदायक हो सकती है । मानसिक रोग के क्षेत्र में शोध कर रहे डॉ. हंटर जैक्सन ने अमरीकी केमिकल सोसायटी के वार्षिक सम्मेलन में यह आश्चर्यजनक जानकारी हाल ही में दी है । उन्होंने बताया कि साधारण मकड़ी के मामूली जहर से मानसिक असंतुलन के इलाज के लिए नयी पद्धति विकसित की जा सकती है । डॉ. जेक्सन और उनके सहयोगियों ने मकड़ियों के जहर का परीक्षण चूहों पर किया है । इसके काफी अच्छे परिणाम सामने आये हैं ।**
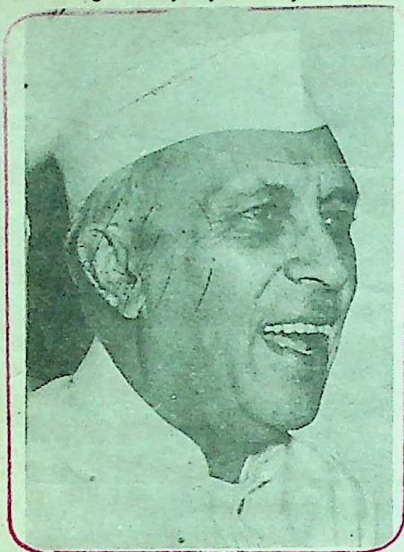
# नैनी जेल में सात साल बाद

● जवाहर लाल नेहरू

मैं करीब सात साल के बाद फिर जेल गया था और जेल-जीवन की स्मृतियां कुछ-कुछ धुंधली हो गयी थीं । मैं नैनी सेंट्रल जेल में रखा गया था, जो कि प्रांत का एक बड़ा जेल खाना है । वहां मुझे अकेले रहने का एक नया अनुभव मिला । मेरा अहाता बड़े अहाते से, जिसमें कि बाईस सौ या तेईस सौ कैदी थे, अलग था । वह एक छोटा-सा गोल घेरा था, जिसका ब्यास लगभग एक सौ फुट था और जिसके चारों तरफ करीब-करीब पंद्रह फुट ऊंची गोल दीवार थी । उसके बीचोंबीच एक मटमैली और भद्दी-सी इमारत थी, जिसमें चार कोठरियां थीं । मुझे इनमें से दो कोठरियां, जो एक-दूसरे से मिली हुई थीं, दी गयीं । एक नहाने-धोने वगैरा के लिए थी । दूसरी कोठरियां कुछ वक्त तक खाली रहीं ।

बाहर के विक्षोभ और दौड़-भाग के जीवन के बाद, यहां मुझे कुछ अकेलापन और उदासी महसूस हुई । मैं इतना थका हुआ था कि दो-तीन दिन तक तो मैं खूब सोता रहा । गर्मी का मौसम शुरू हो गया था और मुझे रात को अपनी कोठरी के बाहर, अंदर की इमारत और अहाते की दीवार के बीच की तंग जगह में खुले में सोने की इजाजत मिल गयी थी । मेरा पलंग भारी-भारी जंजीरों से कस दिया गया था, ताकि मैं कहीं उसे लेकर भाग न जाऊं, या शायद इसलिए कि पलंग को कहीं अहाते की दीवार पर चढ़ने की सीढ़ी न बना लिया जाए । रातभर अजीब तरह की आवाजें आया करती थीं । खास दीवार की निगरानी रखनेवाले सजायाफ्ता पहरेदार अक्सर एक-दूसरे को तरह-तरह की आवाजें लगाया करते थे । कभी-कभी वे ऐसी लंबी आवाजें लगाते थे जो अंत में दूर तक चलती हुई तेज हवा के कराहने की-सी आवाजें मालूम होती थीं । बैरकों के अंदर से कैदी-चौकीदार बराबर जोर-शोर से अपने कैदियों को गिनते थे और कहते थे कि सब ठीक है । रात में कई बार कोई-न-कोई

जेल-अफसर अपना चक्कर लगाता हुआ हमारे अहाते में आ जाता था और जो सिपाही ड्यूटी पर होता था उससे वहां का हाल पूछता था। चूंकि मेरा अहाता दूसरे अहातों से कुछ दूर था, ये आवाजें ज्यादातर साफ सुनायी न देती थीं, और पहले-पहल मैं समझ न सका कि ये क्या हैं। पहले-पहल तो मुझे ऐसा लगा कि मैं किसी जंगल के पास हूं और किसान लोग अपने खेतों से जंगली जानवरों को भगाने के लिए चिल्ला रहे हैं, और मालूम होता था कि मानों रात में स्वयं जंगल और जानवर-सब मिलकर गीत गा रहे हैं।

मैं सोचता हूं कि यह मेरा महज खयाल ही है या यह सचाई है कि चौकोर दीवार की बनिस्बत गोल दीवार में आदमी को अपने कैद होने का ज्यादा भान होता है। कोनों और मोड़ों के न होने से यह भाव हमारे मन में भी बढ़ जाता है कि हम यहां दबाये जा रहे हैं। दिन के वक्त वह दीवार आसमान को भी ढक लेती थी और उसके एक छोटे हिस्से को ही देखने देती थी। मैं—

**उस नन्हें नीले वितान पर बंदी जिसे कहें आकाश,**
**उड़ते हुए मेघ-खंडों पर जिनमें**
**रजत-ऊर्मि-आभास—**

अपनी सजल सतृष्ण दृष्टि डाला करता था। रात को वह दीवार मुझे और भी ज्यादा घेर लेती थी और मुझे ऐसा लगता था कि मैं किसी कुएं के भीतर हूं। कभी-कभी तारों से भरा हुआ आसमान का जितना हिस्सा मुझे दिखायी देता था वह मुझे असली नहीं मालूम होता था। यह किसी बनावटी तारा-मंडल का हिस्सा-सा लगता था। ●

## एक प्रश्न गीत

*जितना कभी नहीं पाया था*
*उतना खोया*
*क्या सोचूं*
*बाहर हंसता और हंसाता*
*कितना रोया,*
*क्या सोचूं*

*टूट-बिखर ही गये एक दिन*
*सारे सपने*
*किसी किनारे जैसे छूटे*
*जो थे अपने*
*मैंने मन का कल्मष अपना*
*कब-कब धोया*
*क्या सोचूं*
*भूल हुई जो अनजाने में*
*खुद को खोजा*
*पीड़ाओं ने कहा नींद में*
*क्षणभर सो जा*
*मैं तो जलती हुई दुपहरी*
*कितना सोया*
*क्या सोचूं*

*मन का वरण किया था मैंने*
*बेचा तन को*
*भेंट दिया यह सारा जीवन*
*उसी अगन को*
*यादों की माला में उसको*
*बहुत पिरोया*
*क्या सोचूं*

**—तारादत्त 'निर्विरोध'**

१२८२, खेजड़े का रास्ता,
जयपुर (राजस्थान)

# जेल के अधिकारियों से संघर्ष

● मोरारजी देसाई

साबरमती जेल । पहले दो-तीन दिन मैं कच्ची जेल में रहा और सजा हो जाने पर मुझे 'बी' श्रेणी मिली । १९३० से पहले कैदियों का कोई वर्गीकरण नहीं हुआ था, परंतु पंजाब में कैदियों के प्रति दुर्व्यवहार होने पर जतीन दास ने आमरण उपवास किया । उसके फलस्वरूप राजनीतिक कैदियों का वर्गीकरण कर दिया गया था । ए.बी.सी. जैसी तीन श्रेणियां रखी गयी थीं । सामान्य रूप से मुझे 'ए' क्लास में रखा जाना चाहिए था क्योंकि उसकी पूरी पात्रता मुझ में थी । परंतु इस बारे में मुझे कोई खास खयाल नहीं हुआ । सी क्लास में मुझे रखा जाता तो भी मैं कोई आपत्ति न करता । यों भी मैं जेल गया तो ए बी सी सभी क्लासों के सत्याग्रही सी क्लास के ही खाने और अधिकारों का उपयोग करते थे । सरदार वल्लभ भाई पटेल जब मार्च के शुरू में साबरमती जेल में रहते थे तभी से ऐसी शुरूआत हुई थी । नया वर्गीकरण भी तभी हुआ था और इस वर्गीकरण पर उस समय सत्याग्रही कैदियों में भारी ऊहापोह मचा था । खासकर तीसरे दर्जे यानी सी क्लास के कैदियों में, जिनकी संख्या कुल कैदियों में ८०-९० प्रतिशत थी, उससे बहुत असंतोष पैदा हुआ था । सरदार ने इस बारे में सभी कैदियों से बातचीत की और वर्गीकरण को लेकर सत्याग्रहियों में एक-दूसरे के प्रति कटुता अथवा आशंका उत्पन्न न हो, इस दृष्टि से कैदियों को कम से कम जो सुविधाएं उपलब्ध थीं उन्हें ही सबके लिए मान्य रखने का निश्चय किया था। इसीलिए सब सी क्लास की सुविधाओं का ही उपभोग करते थे और उससे सभी सत्याग्रही कैदी संतुष्ट थे ।

### 'डबलिया' यानी पक्के कैदी

यहां मुझे एक बात अवश्य बता देनी चाहिए । नासिक जेल में दो बार से ज्यादा सजा पाये हुए कैदी ही रहते थे, जिसकी निशानी के तौर पर उन्हें काली टोपी पहनने को दी जाती थी । वे सब 'डबलिया' यानी पक्के कैदी कहलाते थे ।

### काम तो करना ही चाहिए

जेल के अधिकारियों से— खासकर नये सुपरिंटेंडेंट के साथ हमारे साथियों का संघर्ष होता रहता था । सुपरिंटेंडेंट ने मुझसे कहा, "सत्याग्रही कैदियों को काम तो करना ही चाहिए, काम न करना नियम के विरुद्ध है । अतः आपको उन्हें समझाना चाहिए ।" मैंने उनसे पूछा, "कितना काम करना चाहिए ?" उन्होंने कहा, "यह तो स्वयं आपको ही निश्चित करना चाहिए ।" कताई में मेरी गति के बारे में भी उन्होंने पूछा । मैंने कहा, "मैं जिस गति से

स्वाधीनता आंदोलन के सिलसिले में श्री मोरारजी भाई देसाई अनेक बार जेल गये । यहां प्रस्तुत हैं उनके जेल जीवन संबंधी कुछ प्रसंग

कातता हूं वह गति सबकी नहीं हो सकती, इसलिए मेरी गति के हिसाब से काम का निश्चय नहीं होना चाहिए । अपने साथियों से पूछकर ही मैं आपको इस बारे में कुछ कह सकता हूं ।''

इसके बाद अपने साथियों से काम के बारे में मैंने बातचीत की और उनसे कहा, ''काम तो हमें करना ही चाहिए और जो काम करने का निश्चय करें उसमें लापरवाही नहीं होनी चाहिए ।'' काफी विचार-विनिमय के बाद सबने ४०० गज सूत रोज कातकर देना स्वीकार किया । सुपरिंटेंडेंट ने भी इसे मंजूर किया, परंतु काम बराबर हो इसकी जिम्मेदारी मेरे ऊपर डाल दी । मैंने अपने साथियों से कहा, ''जो काम करना आपने मंजूर किया है, वह आपको करके देना ही चाहिए । आपकी तरफ से इसका आश्वासन मैंने दिया है, इसलिए स्वभावतः इसकी जिम्मेदारी मेरी है । आप लोग अगर रोज चार सौ गज सूत कातकर नहीं देंगे और रुई की पूनियां बिगाड़ेंगे, तो मैं यह जिम्मेदारी नहीं ले सकूंगा । आप मुझे विश्वास दिलायें कि आप स्वेच्छा से ऐसा करेंगे तभी मैं यह जिम्मेदारी ले सकता हूं ।'' वे सब भी यह जिम्मेदारी मेरे ऊपर रखना चाहते थे, इसलिए उन्होंने यह बात मंजूर की । इसके बाद सब इसी तरह काम करने लगे और काम का झगड़ा इस तरह खतम हुआ ।

मैंने १९४० के अक्तूबर के अंत में या नवम्बर के आरंभ में वैयक्तिक सत्याग्रह करने की सूचना दी थी और तुरंत ही मुझे साबरमती जेल में नजरबंद कर दिया गया था । १९४१ के अप्रैल महीने तक मैं वहां रहा । श्री मावलंकर और मैं, दोनों एक ही बैरक में थे । अनेक विषयों पर हम आपस में बातचीत करते, जिससे मैं मानता हूं कि हम दोनों के ही विचारों में स्पष्टता आती थी ।

### यरवदा जेल में

अप्रैल के अंत में एक दिन शाम के समय जेलर ने आकर मुझसे कहा कि आपको यहां से बदलकर अब यरवदा जेल में रखा जाएगा, जहां जाने के लिए तत्काल आपको यहां से चलना है ।

उसी रात रेलगाड़ी में मुझे दादर होते हुए यरवदा जेल के लिए पूना ले जाया गया । यरवदा जेल की जिस बैरक में मुझे ले गये उसमें उस समय सरदार वल्लभ भाई पटेल, बाला साहब खेर, भूलाभाई देसाई, एल.एम. पाटिल और नूरी साहब थे । थे तो वहां मुंशी कन्हैया लाल मणिक लाल भी, परंतु मेरे पहुंचने से पहले ही वे रिहा हो गये थे ।

**प्रस्तुति : श्रीदेवी वी.**

# यरवदा जेल में सात दिन

● जयरामदास दौलतराम
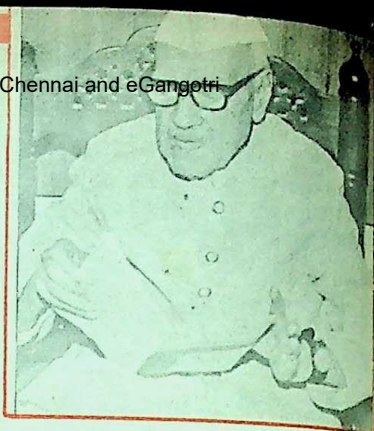
हम उन्हीं दिनों गिरफ़ार किये गये थे, जब अंगरेज सरकार से संधि की बातें चल रही थीं। सरदार वल्लभ भाई पटेल और मैं यरवदा जेल में अभी दो दिन से ही रह रहे थे कि पं. मोतीलाल और पं. जवाहरलाल नेहरू और डॉ. महमूद को नैनी जेल से विशेष रेलगाड़ी द्वारा लाकर महात्माजी के साथ ठहराया गया, ताकि वे संधि की बातों में परामर्श के लिए मौजूद हों। दो-एक दिन में संधि-दूत सर तेजबहादुर सप्रू और श्री जैकर भी आ गये। बातें जेल-अधीक्षक के कार्यालय में हुईं। वे बातें एक दिन में तो तय होनेवाली न थीं, इसीलिए दो-तीन बार जब संधि-दूत आये तो सरदार को और मुझे महात्माजी के साथ रहने दिया गया। इस प्रकार मुझे उनके साथ सात दिन रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ और उनके कारावास-जीवन को निकट से देखने का लाभ मिला।

### जेल में गांधीजी की दिनचर्या

जेल में महात्मा गांधी की क्या दिनचर्या थी ? वे प्रभात को चार बजे के लगभग उठते थे। दातुन-पानी से निवृत्त होकर वे और काका कालेलकर ठीक साढ़े चार बजे प्रार्थना पर बैठ जाते थे। वे गीता के एक-एक अध्याय का मुक्तकंठ से पाठ करते थे। पौने पांच बजे के लगभग प्रार्थना पूरी होती। दिन में बहुत काम होने से महात्माजी शरीर से थक जाते थे, इसीलिए वे घंटा-भर और लेट जाते थे। पौने छह से पौने सात तक घूमते और फिर बरामदे में बैठकर जलपान करते थे। लगभग सात बजे से लेकर दस बजे तक कपास पींजने और सूत कातने का काम करते थे। दस बजते ही नहाने

**(स्वर्गीय श्री जयरामदास दौलतराम (१८९१-१९७९) ने भारत के स्वतंत्रता-आंदोलन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था। स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् वे क्रमशः बिहार के राज्यपाल, केंद्रीय सरकार में खाद्यमंत्री, असम के राज्यपाल और संपूर्ण गांधी वाङ्मय के प्रथम प्रधान संपादक रहे। वे सभी भारतीय भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि के पक्ष में थे। उनकी जन्मशताब्दी के अवसर पर विशेष।)**

के लिए उठते । साढ़े दस बजे के लगभग फिर थोड़ा कुछ खाते थे । फिर आधे घंटे के करीब अखबार पढ़ते और पंद्रह-एक मिनट के लिए एक झपकी और ले लेते । बारह बजे चरखे पर बैठ जाते और शाम के छह बजे तक चरखा चलता रहता । उसके बाद दिन का आखिरी खाना खाते और घंटा-भर घूमते । ठीक साढ़े सात बजे प्रार्थना होती ।

संध्या को केवल काका साहब ऊंची आवाज में प्रार्थना करते और महात्माजी आंखें बंद कर धुन में बैठे रहते । पौने आठ बजे प्रार्थना समाप्त कर महात्माजी अपनी डायरी लिखते थे । डायरी में वे हरेक दिन दो-चार पंक्तियां ही दर्ज करते थे । सबसे पहले उसमें वे जितनी कपास पींजते थे या जितना सूत कातते थे, वह दाखिल करते थे । अन्य बातें बाद में लिखते थे । दिन में कोई विशेष घटना घटती, तो उसका संक्षिप्त उल्लेख कर देते थे ।

कभी-कभी तो उन्हें काफी देर हो जाती थी । एक ओर उन्होंने खाना कम कर दिया था, दूसरी ओर वे श्रम भी बहुत करते थे । फिर उन्हें कोठरी में ही सारा वक्त बैठना होता था । उन्हें अधिक आराम करना चाहिए था । पर वे आराम या नींद की परवाह नहीं करते थे ।

### वायसराय को जवाब

चार सितम्बर की शाम को हमने सुलह के कासिदों से अंतिम बातें समाप्त कर दी थीं । दूसरे दिन सुबह साढ़े ग्यारह बजे वे वाइसराय के पत्र के उत्तर में लिखे हुए हमारे पत्र को ले जाने वाले थे । अगर महात्माजी रात-रात में उत्तर लिख सकें और सरदार वल्लभ भाई और मुझसे राय ले सकें, तो उस पत्र के अंतिम रूप की दो नकलें सुबह तक तैयार हो सकेंगी । इधर यह ऐसा आवश्यक काम, जिसका समूचे भारत के सुख-दुःख से घनिष्ठ संबंध था, जिसकी दुनिया-भर में प्रतिक्रिया होनेवाली थी, उधर समय कम था, सो मैंने सोचा कि महात्माजी आज और कोई काम न कर सबसे पहले उत्तर लिखने बैठेंगे । लेकिन सदा की भांति वे शाम को घूमने गये । उन्होंने डायरी भी लिखी । मैंने सोचा अब जरूर लिखने बैठेंगे । परंतु नहीं । मीरा बेन (मिस स्लेड) के लिए वे
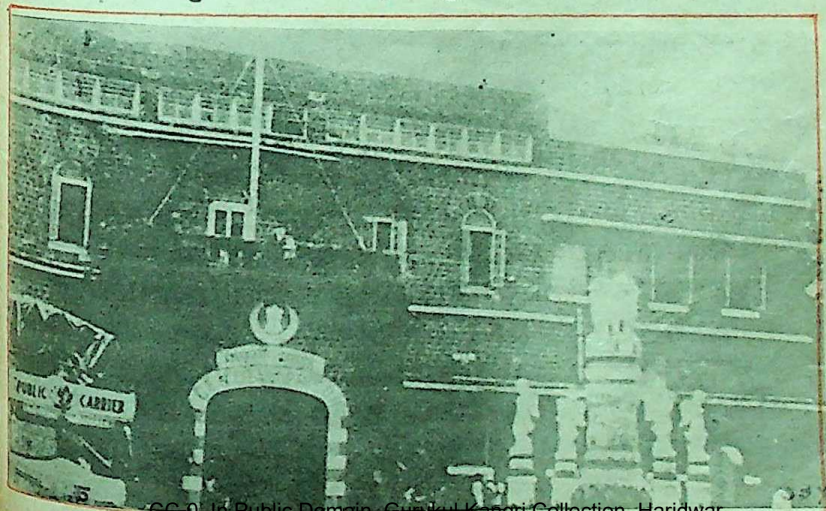
उन दिनों आश्रम में गाये जाने वाले जिन भजनों का अंगरेजी में अनुवाद कर रहे थे, उन्होंने उनमें से एक का अनुवाद भी किया । नियमानुसार, रात के वही नौ बज गये । वह उनके सोने का समय था । पर तब वे जवाब लिखने बैठे ।

दस बजे उन्होंने सरदार वल्लभ भाई से कहा कि वे जाकर आराम कर लें । काका कालेलकर भी उनींदे लग रहे थे, सो उन्हें भी कहा कि वे जाकर सोयें । मुझे कहा कि मैं संधि से संबद्ध पत्र-व्यवहार में से अमुक-अमुक कागजों की नकलें उनके नोट-बुक में रख दूं । मैं उनके सामने बैठा वही काम कर रहा था । कुछ समय बाद मेरी आंखें भी भारी-भारी-सी होने लगीं । भला, हम सब हर रोज सुबह चार बजे उठते थे । लेकिन मैं अपने को सायास जगाकर, सायास चुस्त बनाकर काम कर रहा था । महात्माजी तेज-तेज लिखकर पन्ने भरते जा रहे थे । बारह बजे के लगभग उन्होंने उत्तर लिखकर पूरा किया । काका साहब इस बीच में उठे थे । महात्माजी से उन्होंने कहा कि वे लिखे हुए उत्तर को ऊंची आवाज में पढ़ें ताकि वे सुनें और मैं भी सुनूं । जब उन्होंने उसे पढ़कर पूरा किया, तब महात्माजी ने मुझसे पूछा कि मैं उसमें क्या-क्या तब्दीलियां करना चाहता हूं । मैंने दो-तीन बातों के लिए अपनी राय दी । उन्होंने उसमें कुछ संशोधन किये । इस कार्यवाही में पौना एक बजने को आया ।

पौने आठ (जब वे भजन का अंगरेजी अनुवाद करने बैठे थे) से पौने एक तक पूरे पांच घंटे उन्होंने दिन के श्रम से उपजी क्लांति के बावजूद पालथी मार, सीधे बैठकर लगातार काम किया था । तब जाकर वे खाट पर लेटे । सुबह को साथ सबके फिर प्रार्थना में आ बैठे ।

## गांधीजी की आलपिनें

दूसरे दिन सुबह को नकल तैयार रखी थीं । संधि-दूतों को दो नकल चाहिए थीं । वे उनमें से एक हैदराबाद और दूसरी बंबई ले जाने वाले थे । पर आलपिनें कहां से लाएं कि कागज एक-साथ रह सकें ? महात्माजी ने झट से कहा, ''आलपिनें मुझसे लो ।'' हमने देखा, उन्होंने गत्ते के उस बक्से में से एक कागज निकाला, जिस पर बहुत-सी आलपिनें लगी थीं । उनके पास डाक में ढेर सारे पत्र आते थे । उत्तर देने के बाद वे गैर-जरूरी पत्र फाड़ देते थे और उनमें लगी हुई आलपिनें निकालकर अलग रखते जाते थे ।

महात्माजी जेल के बाहर भी महा तपस्वी थे, परंतु जेल में तो उनकी तपस्या एक कठिन अवस्था तक जा पहुंची थी । वे राजबंदी थे । पर उनके मासिक व्यय के लिए सरकार ने एक सौ रुपये मासिक मंजूर किये थे । एक ओर वाइसराय महोदय आधे-भूखे, अधनंगे, निर्धन भारतवासियों की मेहनत की कमाई में से २१ हजार रुपये वेतन पाते थे,दूसरी ओर महात्माजी पर खींच-तानकर १२ रुपये मासिक से अधिक खर्च नहीं होता था । वह अपने सादा रहन-सहन से सरकार को दिखाना चाहते थे कि वह निर्धन भारत के साथ कितना बड़ा अन्याय कर रही थी ।

संधि की बातें खतम हुईं, तो सरकार के आदेशानुसार सरदार वल्लभ भाई को और मुझे फिर से जेल के दूसरे हिस्से में भेज दिया गया ।

**प्रस्तुति—डॉ. मोतीलाल जोतवाणी**

**सन १९४२ के 'अंगरेज भारत छोड़ो' और 'करो या मरो' आंदोलन के सिलसिले में श्री लखन प्रसाद सिंह को जेलयात्रा करनी पड़ी थी । प्रस्तुत है— उनका जेल-जीवन संबंधी एक संस्मरण :**

# स्नेह जो तेल की शीशी में उतरा

हमारे साथियों में शत्रुघ्न बाबू एवं गंगा बाबू को तो उच्च श्रेणी प्रदान की गयी और अन्य लोगों सहित मुझे तृतीय श्रेणी का कैदी घोषित किया गया । तृतीय श्रेणी के कैदियों का जीवन बहुत कष्टमय था ।

भागलपुर सेंट्रल जेल की एक घटना बड़ी ही रोचक है । जाड़े के दिन थे । तेल के अभाव में मेरे हाथ-पांव की चमड़ी फट जाया करती थी और उससे खून निकलने लगता था । चेहरे का चमड़ा भी कड़ा होकर कुछ फट जाता था । जेल में एक शब्द बहुत ही प्रचलित था, और वह था 'जोगार' । जोगार का अर्थ था— येन-केन-प्रकारेण सामान इकट्ठा कर अपना काम चलाना । जो जितना जोगार कर लेता, वह उतना चतुर समझा जाता और आराम से रहता ।

शत्रुघ्न बाबू एवं गंगा बाबू उन दिनों साथ ही थे । उन्हें मेरी हालत पर तरस आता, किंतु वे चुप ही रहते । उन्हीं के कहने पर एक दिन मैं अस्पताल गया और डॉक्टर ने स्वास्थ्य की दृष्टि से एक छटांक तेल प्रति सप्ताह मेरे लिए स्वीकृत किया । उस सूखे शरीर के लिए एक छटांक तेल तो दो दिनों के लिए भी काफी नहीं था । लेकिन मैं जब तेल लगाने जाता, तो देखता कि शीशी में तेल प्रायः पूर्ववत ही है— वह घट नहीं रहा है । मुझे कुछ समझ में नहीं आता कि यह क्या हो रहा है । एक दिन मैंने गंगा बाबू, शत्रुघ्न बाबू तथा अन्य साथियों से इसका जिक्र किया, तो गंगा बाबू उछल पड़े, कहने लगे, 'तो क्या तुम यह समझ रहे हो कि हम लोग 'जोगार' से तेल मंगाकर तुम्हारी शीशी में रोज डाल दिया करते हैं ? क्या तुम अपने को बड़ा ईमानदार और हम लोगों को चोर समझ रहे थे ?' असलियत जानने में अब मुझे देर नहीं लगी । मेरी बेवकूफी पर तरस खाकर तथा मेरे मन को भी रखते हुए गंगा बाबू और शत्रुघ्न बाबू, जो दोनों हमारे प्रिय नेता थे— मेरे प्रति अपना स्नेह इस प्रकार तेल की शीशी में डालते जा रहे थे । मेरी आंख छलक आयी, कितना वात्सल्य था, कितना मधुर प्यार था, क्या आज के नेता और कार्यकर्ता के पारस्परिक संबंध की इससे कोई भी तुलना हो सकती है ?

# मैं अपने जीवन की भीख क्यों मांगू

मेरे गुरु मुझे शक्ति देंगे । यदि मुझे मरना भी पड़ेगा तो मैं साहसपूर्वक मरूंगा । मैं भगवान के घर जाऊंगा । मैं तैयार हूं । मेरे गुरु ने मुझे एक 'शब्द' दिया है । मैं अपने जीवन की भीख क्यों मांगूं । मैंने सम्मानपूर्वक जीवन जिया । मैं साहसपूर्वक मरूंगा । मैं हर व्यक्ति को आशीर्वाद दूंगा । यहां तक कि जो मुझे फांसी पर चढ़ाएगा, उसे भी आशीर्वाद दूंगा, यहां तक कि उस न्यायाधीश को भी, जिसने मुझे फांसी की सजा सुनायी । वे तो केवल भगवान की इच्छा पूरी कर रहे हैं । मैं उन्हें क्यों दोष दूं । मैं हर व्यक्ति को आशीर्वाद दूंगा, यहां तक कि अपने दुश्मनों को भी । पर मैं इस संसार से जाने के पूर्व अपने परिवार से अपने बच्चों से मिलना चाहता हूं . . . उन्हें आखिरी बार देखना चाहता हूं ।

**—मच्छी सिंह**

**मच्छी सिंह को अठारह लोगों का कत्ल करने के अभियोग में फांसी की सजा सुनायी गयी थी । वह पंजाब में होमगार्ड का हवलदार था । मच्छीसिंह के अनुसार वह अपने माता-पिता और भाइयों की हत्या का बदला ले रहा था ।**

# मौत का तो दिन तय है !

प्रार्थना ने मुझे होनी को स्वीकार करने की ताकत दी है । मौत तो भाग्य में लिखी है । दिन तो तय है । कोई अदालत मौत का दिन तय नहीं कर सकती । कोई कानून उसे बदल नहीं सकता । मैं चाहता हूं कि मेरी लाश मेरे परिवारवालों को न दी जाए । दूसरे, मेरा सामान भी जला दिया जाए । मैं नहीं चाहता कि उनसे मेरी याद आये । समय सबसे बड़ा मरहम है । मैं भी जल्दी ही भुला दिया जाऊंगा ।

**—माल सिंह**

**हिसार निवासी माल सिंह ने २० वर्ष कैद की सजा के खिलाफ अदालत में अपील की तो उसे बढ़ाकर मृत्यु दंड में परिवर्तित कर दिया गया । माल सिंह जेल से भाग निकला, पर सात वर्ष बाद वह पुनः गिरफ़्तार कर लिया गया । बाद में उसके मृत्यु दंड को २० वर्ष की कैद में बदल दिया गया ।**

# मैं ईश्वर को माफ नहीं कर सकता

मैं इस आशा में प्रार्थना करता हूं कि मैं छोड़ दिया जाऊंगा । मैं प्रार्थना करना पसंद नहीं करता, पर मुझे प्रार्थना करनी पड़ती है . . . . भगवान ने हमेशा मेरे साथ बुरा किया । मैं उससे नाराज हूं । मैं उसे कभी माफ नहीं कर सकता । हो सकता है, पूजा से मेरी सजा घट जाए ।

*इश्क के गोले बनाकर बम फेका करो*
*हम तुमको देखा करें तुम हमको देखा करो*
*तुम वहां और हम यहां*
*फिर यार का मिलना कहां*
*और जो कली मुरझा गयी*
*तो फूल का खिलना कहां*

*अपने जहन से बनाया है । मुश्किल है ना . . . कविता ऐसे ही होती है । दुःख से दिमाग बढ़ता है । मैं चाहता हूं कि जब मरूं तब मेरी कविता, गीता और सूरसागर का पाठ किया जाए ।*

—लाल सिंह

**लालसिंह को महेन्द्रगढ़ जिले (हरियाणा) के एक जौहरी गंगा राम, उसकी पत्नी और तीन बेटियों की हत्या के अभियोग में फांसी की सजा सुनायी गयी थी ।**

# भगवान यह रास्ता-फिर कभी न दिखाये

मैं कभी जेल के पास फटकूंगा तक नहीं । कभी नहीं । यदि करतार भी मेरे पीछे जेल में रह गया, तब भी नहीं । मैं उसकी पत्नी व बच्चों, अपनी पत्नी और बच्चों को उससे मिलने भेजूंगा, पर मैं कभी नहीं आऊंगा । भगवान यह रास्ता फिर कभी न दिखाये । हमारी उनसे (बिल्ला और रंगा से) भोजन के बारे में लड़ाई हुई थी । हम उनसे बात नहीं करते थे । उन्हें फांसी पर चढ़ाये जाने से एक दिन पहले मैं रोया भी । मैंने रंगा की आंखों में मौत देखी थी ।

**उजागर सिंह को श्रीमती विद्या जैन की हत्या के जुर्म में फांसी की सजा सुनायी गयी थी । करतार सिंह उसका भाई था । उसे भी इसी हत्या के मामले में फांसी का दंड दिया गया था ।**

# पीर साहब और जेलमंत्री

● भगवानसिंह (भू.पू. उच्चायुक्त)

उन दिनों की बात है, जब स्वतंत्रता-संग्राम की अग्नि से तपे हुए ब्रिटिश साम्राज्य के शासन से प्रताड़ित जेलों की यात्राओं से शुद्ध और सात्विक बने, जनता के उन प्रतिनिधियों का राज्य था जो शासन की बागडोर, स्वतंत्र भारत का एक प्रजातंत्रीय सपना संजोकर चला रहे थे । स्वतंत्रता आंदोलन की अग्नि-परीक्षा से गुजरकर निकले ये बुजुर्ग स्वार्थपरता तथा परिवारवाद से बहुत दूर, केवल एक ही ध्येय लेकर आगे चल रहे थे कि २०० साल की पुरानी गुलामी से जीर्ण-शीर्ण देश के शरीर को स्वस्थ और सबल बनाना है । माफिया, कदाचित इस शब्द की उत्पत्ति भी उस समय तक नहीं हुई थी, पाशविक शक्ति के पूजकों को, उस व्यवस्था में कोई स्थान नहीं था । औद्योगिक घराने भी स्वदेशी के नाम पर ही शासन का संरक्षण मांग सकते थे । केवल धन बटोरने के लिए नहीं । उत्तर में प्रतापसिंह केरों, गोविंद वल्लभ पंत, रविशंकर शुक्ल, पश्चिम में मोरारजी देसाई, और सुदूर दक्षिण में राजाजी और कामराज, उड़ीसा में डॉ. मेहताब तथा बंगाल में डॉ. विधानचंद्र राय, असम में लोकनायक बादलोई और बिहार में श्रीकृष्ण सिन्हा। उपरोक्त मुख्यमंत्रियों में, प्रत्येक अपने विशेष व्यक्तित्व का धनी, आदर्श का पुजारी और देशप्रेमी था ।

ये लोग अपने मंत्रिमंडल में भी उन्हीं लोगों को जगह देते थे, जो इन मापदंडों पर खरे उतरने वाले, साफ, स्वच्छ और धवल छवि के लोग होते थे ।

१९५० के दशक के अंतिम भाग में एक कठिन समस्या आ खड़ी हुई । और वह उतनी ही घनघोर थी जितनी देश-विभाजन के समय शरणार्थियों की समस्या थी । फर्क केवल इतना था कि इस बार के शरणार्थी पूर्व पाकिस्तान से आ रहे थे और सभी बंगलाभाषी ही थे । इन शरणार्थियों की भाषा, उनकी जीवन शैली वेशभूषा, संस्कृति तथा आचरण सभी बंगाली ही थे । अतएव इस प्रकोप का भारी प्रभाव बंगाल पर पड़ना स्वाभाविक ही था । और जब बंगाल उनके सैलाब में डूब गया तो आस-पास के दो प्रदेशों—उड़ीसा तथा बिहार—को भी उस बाढ़ के प्रकोप को झेलना पड़ना ही था। भारत सरकार ने भी समस्या से जूझने के लिए अपने पुनर्वास मंत्रालय का एक नया भाग कलकत्ता में खोल दिया । इस प्रसंघ से सेक्रेटरियट का संचालन/नेतृत्व मैं करता था। इस पुनर्वास मंत्रालय में मेरे साथ चार डिप्टी सेक्रेटरी और एक वित्तीय सलाहकार के अलावा पूरा तामझाम था । कलकत्ता के एक बहुचर्चित मकान में, जो कभी सुहरावर्दी के निवास के रूप

**जेल सुपरिंटेंडेंट ने बताया कि ये चारों डकैती और हत्या के मामले में यहां आये हैं । पलक मारते चारों ने मौलाना से विनती की कि बताइए हुजूर, हम कौम के ब्राह्मण हैं । तिलक लगाते और माला फेरते हैं । कहीं ऐसा काम कर सकते हैं ?**

में जाना जाता था, यह मंत्रालय स्थापित हुआ । अतएव इससे प्रभावित प्रदेशीय सरकारों में भी पुनर्वास मंत्री नियुक्त हुए । बंगाल में श्री पी.सी. सेन, जो प्रफुल्ल बाबू के नाम से प्रसिद्ध थे । इस कार्य के लिए नियुक्त किये गये । उनके संगठन-कौशल की सभी लोग दाद देते थे ।

बाबू श्रीकृष्ण सिन्हा, जिन्हें विधान बाबू की तरह, श्री बाबू पुकारा जाता था, ने इस पुनर्वास मंत्रालय के लिए चुना एक धार्मिक नेता, जो अपनी ईमानदारी तथा पवित्र आचरण के लिए प्रसिद्ध थे और उनका आदर समस्त मुसलिम समाज में पीर की तरह किया जाता था । वे थे मौलाना उज्जैर मुनीमी । प्रसिद्ध धार्मिक स्थान के पीर अपने भगवत भजन के लिए प्रसिद्ध थे । बहुत ही खुदा परस्त थे । पूरी नमाजें अदा करते । वे अल्लाह की इबादत में तो दिन गुजारते थे परंतु सुबह और शाम आम लोगों की मदद करने का काम भी अंजाम देते थे । वह भी खुदा का हुक्म मानकर । देश छोड़कर ही नहीं बल्कि अपना सब कुछ छोड़कर आये हुए शरणार्थियों के पुनर्वास के लिए ऐसे ही मंत्रियों की जरूरत थी, जिनमें दूसरों की मदद करने के जज्बे हों । मौलाना उज्जैर मुनीमी इन सब पहलुओं पर बड़े खरे उतरे । उन्हें न तो सियासती दाव-पेच का इल्म था और न सरकारी व्यवस्था की टेढ़ी-मेढ़ी गलियों में सपाट दौड़ जाने की काबिलियत ।

मैं जब पटना में श्री बाबू को अभिवादन करके मौलाना के घर पहुंचा तो क्या देखता हूं कि नंगे और भूखे बंगाली शरणार्थी इनके बंगले पर एकत्र हैं । उन्हें मौलाना अपने स्वयं के बटुए से दस-दस रुपये बांट रहे थे । मैंने उनके बारे में जो सुना था और उनके दरवाजे पर जो देखा हूबहू एक ही तसवीर थी, जो इनसान के दर्द और तकलीफ से घायल थी और सरकारी पैसा न होने पर अपनी ही स्वयं की छोटी-सी पूंजी को उन पर न्यौछावर कर रहे थे ।

मौलाना मुझे बड़े तपाक से सरकारी बंगले के बैठने के कमरे में ले गये, बड़े प्यार से और बाइज्जत । अपने घर की बनी मीठी रोटी के टुकड़े देकर खाने की शुरूआत करने को कहा । मैं द्रवित होता जा रहा था और समझ नहीं पा रहा था कि उनका इस काम में कैसे हाथ बटाऊं ? मैंने उनके विभागीय सचिव मोहन को बुलवाया और पूछा कि आपने मंत्री महोदय के लिए अपने बजट में कोई डिसक्रैसनरी ग्रांट का खाना रखा है या नहीं । मोहन बोले, 'हमें उम्मीद नहीं थी कि केंद्रीय सरकार से पास हो सकेगा, इसलिए नहीं रखा ।' मैंने उन्हें सुझाया कि मौलाना कब तक अपने छोटे से बटुए से इस तरह दान देते रहेंगे । मैंने उन्हें सुझाया और कहा कि वे एक नोट बनाकर लिख लें कि आज से बिहार के पुनर्वास के मंत्री जनाब उज्जैर मुनीमी को दो सौ रुपये प्रति मास जिस मद में

चाहें खर्च करने का अधिकार होगा । इसका कोई हिसाब-किताब रखने की जरूरत नहीं होगी । मैंने विश्वास दिलाया कि केंद्रीय पुनर्वास मंत्री श्री मेहरचंद खन्ना, जो दिल्ली में रहते हैं, इस रकम को बढ़ाकर दो हजार रुपये अवश्य कर देंगे । और यही हुआ भी । मौलाना किसी मुहताज शरणार्थी को अपने घर से खाली हाथ बिना मदद किये हुए वापस नहीं भेजते । इस समय तक मंत्रियों को उनकी शखसियत पर चुना जाता था । ये दूसरी बात थी कि श्री कृष्ण सिन्हा ने एक इनसान की जगह एक फरिश्ते को मंत्री बना दिया था ।

ज्यों-ज्यों दिन गुजरते गये बिहार में इन शरणार्थियों की तादाद भी सावन-भादों की नदी की तरह उफनने लगी । केवल वेतिया कैंप में तंबुओं के नीचे ५० हजार शरणार्थी पड़े थे । अतः मुझे बार-बार जाना पड़ता था । एक बार जब मैं पटना पहुंचा तो पुनर्वास मंत्रालय के सचिव मुझे लेने आये और बातचीत के दौरान बोले कि मौलाना के पास दो विभाग हो गये हैं । श्री बाबू ने उन्हें जेल विभाग और सौंप दिया । वे मुझे समझा रहे थे कि मुश्किल यह है कि प्रांतीय जेल विभाग केंद्रीय विभाग की छत्रछाया में पलनेवाला विभाग नहीं है । मौलाना इसी मुश्किल में हैं । मौलाना को जब जेल विभाग दिया गया तो वे श्री बाबू के पास पहुंचे कि आप मेरे साथ क्या नाइनसाफी कर रहे हैं । मेरे पास तो एक ही विभाग बहुत बड़ा है । परंतु श्री बाबू को नहीं मानना था और वे नहीं माने । मौलाना ने आखिर अपने पी.ए. से पूछा कि मुझे इसमें क्या करना होगा । पी.ए. ने जल्दी से मौलाना को जिला जेल का मुआयना करा दिया ।

मौलाना के जेल आने की खबर सारे कैदियों में बिजली की तरह दौड़ गयी । और, खासतौर से उन कैदियों में जिनके मुकदमे अदालत में विचाराधीन थे । जेल में हस्ब मामूल, कैदियों की परेड हुई जिसमें विचाराधीन कैदियों की पंक्ति सबसे आगे थी । जेल मंत्री महोदय के निरीक्षण के लिए तैयार थे । मौलाना जेल सुपरिंटेंडेंट के साथ ज्यों ही आगे बढ़े तो पहले चार कैदी झुक गये और मौलाना के पांव पकड़ लिये । पेश्तर इसके कि वार्डर लोग उन्हें छेड़ें, मौलाना ने हाथ पकड़ उन चारों को खड़ा किया और सारा हाल कहने को कहा । चारों बड़े लंबे तड़ंगे और माथे पर गहरे रंग के तिलक-छापे लगाये हुए कह रहे थे— "हुजूर, हम बेकसूर हैं । पुलिस ने हमें दुश्मनी से जेल भेज दिया है ।" जेल सुपरिंटेंडेंट ने बताया कि ये चारों डकैती और हत्या के मामले में यहां आये हैं । पलक मारते चारों ने मौलाना से विनती की कि बताइए हुजूर, हम कौम के ब्राह्मण हैं । सुबह-शाम भगवान का भजन करते हैं । तिलक लगाते और माला फेरते हैं ।
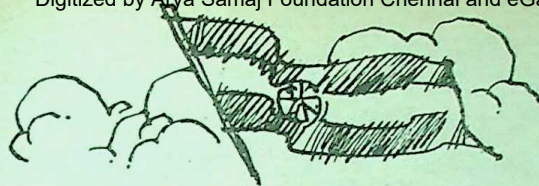
कहीं ऐसा काम कर सकते हैं । जेलमंत्री का खुदा परस्ताई मन पिघल गया । पूर्व इससे कि वह कुछ कहते, जेल सुपरिंटेंडेंट ने उन्हें हाथ पकड़कर दूसरे कैदियों के सामने बढ़ा दिया । खुदा-खुदा करके यह मुआयना किसी तरह खतम हुआ और सुपरिंटेंडेंट साहब ने जेल मंत्री को अपने दफ़्तर में खाने-पीने की सजी मेज पर ला बिठाया । मौलाना को कुछ अंदर-अंदर कचोट-सा रहा था । उन्होंने सुपरिंटेंडेंट से पूछा जेलमंत्री की हैसियत से मैं क्या कर सकता हूं । उन्होंने पुराने दरबारी अंदाज में जवाब दिया, "हुजूर ! मालिक हैं । सब कुछ कर सकते हैं ।" मौलाना जेलमंत्री ने आव देखा न ताव और सामने रखी हुई निरीक्षण पुस्तिका उठा ली । उन्होंने मुआयने की किताब में चुनिंदा लफ़्जों में जड़ दिया— 'मैं जेलमंत्री उज्जैर मुनीमी हुक्म सादिव फरमाता हूं कि इन चार बेकसूर ब्राह्मणों को जो सुबह-शाम की इबादत करते हैं, जेल से फौरन रिहा कर दिया जाए ।' मौलाना ने दस्तखत करके किताब बंद कर दी और उठकर खड़े हो गये । जेल सुपरिंटेंडेंट देखते ही रह गये । न कुछ कहते बना और न कुछ करते । मंत्रीजी तैश में थे । उन्होंने ड्राइवर को जल्दी से घर चलने का हुक्म दे दिया ।

आई.जी. साहब ने फौरन मंत्रीजी को टेलीफोन मिलाया और कहा कि उनके हुक्म की तामील नहीं हो सकेगी । बार-बार ऐसा एहसास दिलाने की कोशिश की । मौलाना ने टका-सा जवाब दे दिया कि मैं जेलमंत्री के नाते यह भी तय नहीं कर सकता कि जेल में कौन-कौन रहे और कौन नहीं रहे तो मैं इससे इस्तीफा दे दूंगा । बात बढ़ती गयी और ऊपर पहुंची । परंतु मौलाना अपनी जिद पर कायम थे । गृह सचिव ने श्री बाबू (मुख्यमंत्री) से पूरी दास्तान सुनायी तो वे बहुत हंसे और सब लोगों को अपने-अपने काम पर चले जाने के लिए कह दिया ।

मौलाना अपने हुक्म को वापस लेने के लिए तैयार नहीं थे । उन दिनों बिहार के चीफ सैक्रेटरी एल.पी. सिंह, आई.सी.एस. अपनी सूझ-बूझ के लिए मशहूर थे । श्री बाबू ने उन्हें तलब किया और मामले को खूबसूरती से निपटाने का काम सौंपा । उन दिनों आई.सी.एस. चीफ सेक्रेटरी की राजनीतिज्ञ लोग भी बड़ी इज्जत करते थे । तो जब ऐसा व्यक्ति मौलाना के घर खुद आ खड़ा हुआ तो मौलाना कभी उनको कभी अपने घर को देखने लगे । जब एल.पी. सिंह ने जेब से एक टाइप किया हुआ कागज निकाला और मौलाना से उस पर दस्तखत करने का सुझाव दिया । मौलाना बोले, "देखो एल.पी. सिंह, जो मैं जेल में हुक्म पास कर आया हूं, उसको तो रद्द करूंगा नहीं ।" और सिंह साहब ने बहुत शायस्तगी से कहा, 'जनाब, ऐसा होना भी नहीं चाहिए । यह तो

दूसरा हुक्म है जिस पर आप दस्तखत करेंगे ।' मौलाना को यकीन हो गया कि उनका पहला हुक्म कायम रहेगा तो इस हुक्म पर भी दस्तखत कर दिये और यह दूसरा हुक्म भी । इसमें लिखा था कि जब तक मैं दूसरा हुक्म न दूं, पहले हुक्म की तामील नहीं की जाए । जेल मंत्री मोहम्मद उज्जैर मुनीमी खुश थे कि उनका दिया गया हुक्म बरकरार था और प्रशासन की परेशानी भी दूर हो गयी । ऐसे थे उस वक्त के मंत्री और उनकी ईमानदारी । भोलापन भी लाजवाब था ।

कहते हैं कि खुदा जिनसे खुश होता है उन्हें जल्दी ही अपने पास बुला लेता है । इसी तरह इस खुदा के बंदे को आवाज कुछ जल्दी ही लग गयी और इनसानियत का एक सिपाही हमको छोड़कर चला गया ।

एक दिन मैंने देखा कि मेरे मकान के सामने से श्री एल.पी. सिंह अपनी मोटी छड़ी लेकर प्रातः टहलने जा रहे थे । मैं भी उनके साथ सड़क कूटने चल दिया । पुराने दिनों की बातें छिड़ गयीं और हम लोग मोहम्मद उज्जैर मुनीमी के पास तक जा पहुंचे और जेलवाले किस्से को याद कर उनकी ईमानदारी, और साफ गोई पर श्रद्धावनत भी हुए और हंसे भी ।

—एफ-६४, पूर्वी मार्ग,
वसंत विहार, नयी दिल्ली-११००५७

# हंसिकाएं

## अवनति

*प्रेमिका ने जेलर प्रेमी को इतना बता दिया,*
*''तू मेरा कैदी है, मैंने तुझे पलकों में*
*बंदी बना लिया''*

## अन्योन्य

*जेलर की पत्नी बोली हंसकर*
*''घर तो इन्हें जेल नजर आता है*
*तथा जेल/घर''*

## सराहना

*जेल में अपराधी ने ढेरों कविताएं लिखीं*
*जेलर को सुनायी तो उसने*
*की यों, सराहना*
*''कैदियों के लिए उपयुक्त होगी*
*यह नयी यातना''*

## रसिक

वे—
जनान्दोलन में आ उतरे
नारे की गरिमा समझ न पाये,
बहू-बेटियों पर नजरें गढ़ाये
चिल्लाते बार-बार ''बहूजन हिताय, बहूजन सुखाय''

## मन

*भारोत्तोलन प्रतियोगिता में*
*प्रथम आनेवाली महिला का*
*यही कथन था/*
*सौ मन का बोझ यों ही उठा लिया*
*किंतु 'मन का' बोझ उठाना कठिन था*

## जुर्म

*पूंजीपतियों पर जेलर ने टिप्पणी दी है/*
*जिन्होंने उम्र भर जिंदगी के मजे लूटे*
*वे भी अपराधी हैं ।*

**—डॉ. सरोजनी प्रीतम**

# वैद्य की सलाह

**रमेश, बरेली**

**प्रश्न : उम्र ३२ वर्ष । मल त्याग करते समय जोर लगाने पर मूत्र द्वारा शुक्र निकल जाता है । विशेष दवा लिखें ।**

**उत्तर** : 'चंदनासव' दो चम्मच, 'द्राक्षासव' दो चम्मच भोजन के बाद दोनों समय तीन माह तक नियमित पीयें ।

**राजेश, कन्नौज**

**प्रश्न : मेरी माताजी की उम्र ४५ वर्ष है, ४-५ साल से हांफती रहती थी । अब तीन साल से सांस फूलती है । कृपया इलाज लिखें ।**

**उत्तर** : 'नागार्जुनाभ्र रस एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । 'अर्जुनारिष्ट' दो-दो बड़े चम्मच भोजन के बाद दोनों समय पीयें ।

**नरेन्द्रपाल, पाली**

**प्रश्न : पान पराग खाने का आदि था । कुछ समय बाद सीने में दर्द उठना शुरू हुआ । पान पराग छोड़ने से दर्द कम हो गया, फिर भी कभी-कभी होता है ।**

**उत्तर** : 'सूतशेखर रस' साधारण तीस ग्राम 'शंख भस्म' दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । सुबह-शाम एक-एक मात्रा पानी से लें । 'अविपत्तिकर चूर्ण' एक-एक चम्मच दोपहर-रात पानी से लें पान पराग सेवन न करें ।

**विभू, आगरा**

**प्रश्न : उम्र २७ वर्ष । गालों पर झाई (धब्बे) हो गये हैं । सिर में खुजली होती है दवा लिखें ।**

**उत्तर** : 'कैशोर गूगल' एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें 'सारिवाद्यासव' दो-दो चम्मच भोजन के बाद पीयें ।

**रामपाली भाटी, जयपुर**

**प्रश्न : उम्र ६७ साल । एक वर्ष से दोनों पैरों की एड़ियों में दर्द रहता है थोड़ा चलने पर दर्द बढ़ जाता है लड़खड़ा जाती हूं ।**

**उत्तर** : 'महायोगराज गूगल' एक-एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । गरम पानी में नमक डालकर एड़ियों की सिकाई रात को प्रतिदिन करें ।

**श्रीमती जय माला, उदयपुर**

**प्रश्न : उम्र ४५ साल । छाती में बांयी ओर दर्द होता है । कभी-कभी बांह में कलाई तक भी होने लगता है तथा दायें पैर में कूल्हे से लेकर नीचे पंजों तक दर्द हो जाता है । पिंडलियों में जांघ तक तथा मुंह पर भी सूजन आ जाती है । कब्ज भी बनी रहती है, अनेक इलाज किये विशेष लाभ नहीं ।**

**उत्तर** : 'रास्ना गूगल' तीस ग्राम 'नागार्जुनाभ्र रस दस ग्राम 'श्रृंगभस्म' पंद्रह ग्राम 'गोक्षुरादि गूगल' तीस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । सुबह-शाम एक-एक मात्रा गरम पानी से लें । 'अर्जुनारिष्ट' दो चम्मच 'दशमूलारिष्ट' दो चम्मच भोजन के बाद पीयें । आहार-विहार का परहेज कर तीनों औषधियां सेवन करें ।

**श्रीमती तिवारी, नयी दिल्ली**

**प्रश्न : बेटी की उम्र १८ वर्ष । माहवारी अभी तक नियमित नहीं हो रही है । ५-६ माह आने के बाद २-३ महीने बंद हो जाती है ।**

**उत्तर** : 'कुमारी आसव' दो-दो चम्मच भोजन के बाद दोनों समय पिलायें ।

**—कविराज वेदव्रत शर्मा**
—बी ५/७, कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१

**सच्चिदानंद मिश्र, वाराणसी**

**प्र. स्मृति की व्याख्या किस प्रकार करेंगे, और इस शब्द से क्या बोध होता है ?**

□ श्री रामदास गौड़ के ग्रंथ 'हिंदुत्व' (पृष्ठ ४४९) के अनुसार स्मृति से छहों वेदांग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छंद, ज्योतिष और निरुक्त) धर्मशास्त्र, इतिहास, पुराण और नीति के सभी ग्रंथ समझे जाते हैं । स्मृति शब्द का यह व्यापक प्रयोग है, परंतु विशिष्ट अर्थ में स्मृति शब्द से धर्मशास्त्र के उन्हीं ग्रंथों का बोध होता है जिनमें प्रजा के लिए उचित आचार-व्यवहार की व्यवस्था और समाज के शासन के निमित्त नीति और सदाचार संबंधी नियम स्पष्टतापूर्वक दिये रहते हैं ।

**अरविंद सिंहानिया, जयपुर**

**प्र. ऐंटि बायोटिक्स क्या हैं ?**

□ मनुष्य के शरीर में रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता होती है । सरदी-जुकाम जैसे छोटे रोगों से मनुष्य अपनी उक्त प्रतिरोधक क्षमता के कारण ही औषधियों का उपयोग किये बिना लड़ लेता है । मानव शरीर में 'ऐंटिबाडीज' नामक एक सूक्ष्म जीव होता है जो रोगों से लड़ने में सहायता करता है । कभी-कभी ये ऐंटिबाडीज कमजोर पड़ जाते हैं जिनको बलशाली बनाने के लिए ऐंटिबायोटिक दवाओं की सहायता लेनी पड़ती है । ये ऐंटिबायोटिक दवाएं शरीर में ऐंटिबाडीज उत्पन्न करके रोगों को नष्ट करके हमें स्वस्थ करती हैं ।

**कृष्ण मोहन प्रसाद मंडल, मुजफ्फरपुर**

**प्र. पर्यावरण की व्याख्या किस प्रकार करेंगे ?**

□ सामान्यतया पर्यावरण में वायु, जल और भूमि को शामिल किया जाता है । किंतु प्रकृति ने हमें जो परिवेश दिया है, अर्थात हमारी धरती, और समस्त जीव-जंतुओं तथा पेड़-पौधों सहित, इस पर उपस्थित प्रत्येक वस्तु हमारा पर्यावरण है । ये सभी चीजें प्रकृति का संतुलन बनाये रखती हैं ।

**शंकरलाल निगम, रायबरेली**

**प्र. हवा महल क्या है, और कहां है ?**

□ हवा महल जयपुर में है जिसे महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने १७९९ में निर्मित कराया था । इसका निर्माण रनिवास की महिलाओं के लिए हुआ था जहां से वे परदे में रहते हुए ऊंचाई पर होने के कारण गरमियों में हवा का आनंद ले सकती थीं और गणगौर, आदि अन्य धार्मिक तथा राजसी जुलूसों का अवलोकन कर सकती थीं । समस्त सवारियां और परेड इस महल के सामने ही स्थित सड़क से गुजरते थे । इसकी एक विशेषता यह भी है कि बाहर से कोई भी व्यक्ति सवारियां देखती महिलाओं को नहीं देख सकता है ।

**प्रह्लाद जसवानी, मंडला (म. प्र.)**

**प्र. तेल और पानी आपस में घुलते क्यों नहीं ?**

□ तेल एक प्रकार का वसा है जिसकी व्यूहाण्विक (मेलिक्यूलर) बनावट पानी से भिन्न है जिससे ये आपस में नहीं मिल पाते ।
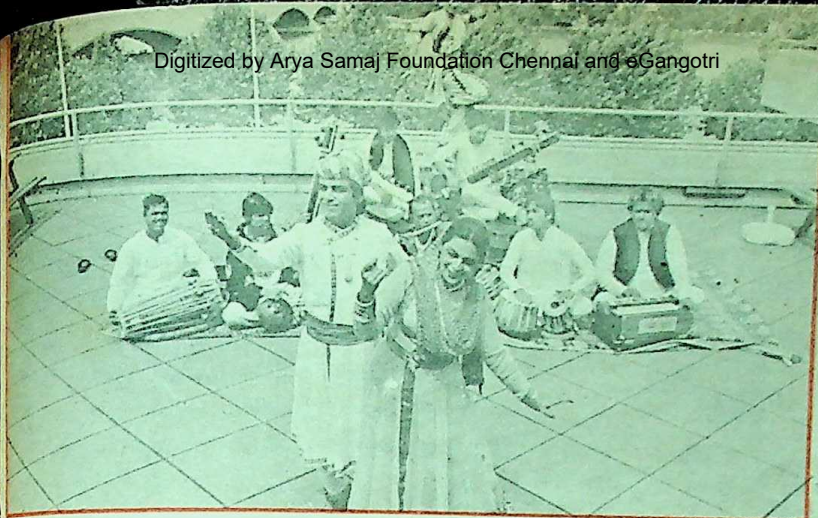
सिरताज अंजुम, मुगलसराय

**प्र. तबले का आविष्कार कब हुआ और किसने किया, तथा इसके कितने घराने हैं और इनका महत्त्व क्या है ?**

□ तबले का आविष्कार कब हुआ इसके बारे में निश्चित रूप से कुछ भी कहना कठिन है। संगीत के इतिहास से संबंधित कुछ अधिकारी व्यक्तियों का यह मानना है कि अब से लगभग ५०० वर्ष पूर्व अमीर खुसरो ने पखावज के दो भाग करके उसे तबले का रूप दिया था। किंतु तेरहवीं शताब्दी में भी यह था इसके कुछ प्रमाण मिले हैं। तबले के घरानों के संबंध में दिल्ली, अजराड़ा, पूरब, लखनऊ, फर्रुखाबाद, बनारस तथा पंजाब घराने अधिक महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं, यद्यपि इन सभी घरानों की नींव दिल्ली में ही पड़ी थी। इन सब घरानों की वाद्य शैलियां भिन्न हैं।

राधेश्याम चतुर्वेदी, दतिया

**प्र. दूध सफेद क्यों दिखायी देता है ?**

□ धूप सात रंगों का मिश्रण है। दूध में इन सातों रंगों का प्रतिबिंब है जिससे यह सफेद दिखायी देता है।

संजीव कुमार सज्जन, देवघर

**प्र. धूम्रपान की हानियों तथा तंबाकू में पाये जाने वाले रसायनों से परिचित करायें ?**

□ सिगरेट के धुएं में कोई ४ हजार खतरनाक रसायन पाये जाते हैं। इनमें से ४३ रसायन तो ऐसे हैं जो कैंसर के बीज बोते हैं। निकोटीन और टार (डायर) इनमें अत्यधिक खतरनाक हैं। निकोटीन हृदय और मस्तिष्क को तो प्रभावित करता ही है साथ ही रक्तवाहनियों को भी क्षतिग्रस्त कर देता है। यह दिल की धड़कन और रक्तचाप को बढ़ाता है। टार में बेंजोपायरीस, नाइट्रोसायीन और नॉफ्थिलोकीन—जैसे रसायन मौजूद हैं जो कैंसर के जनक पाये गये हैं। सिगरेट के धुएं में हाइड्रोजन सायनाइड एक अन्य रसायन है जो सांस लेने में बाधा उत्पन्न करती है। इसकी कार्बन मोनोआक्साइड गैस मस्तिष्क की ओर उन्मुख आक्सीजन को सोख लेती है।
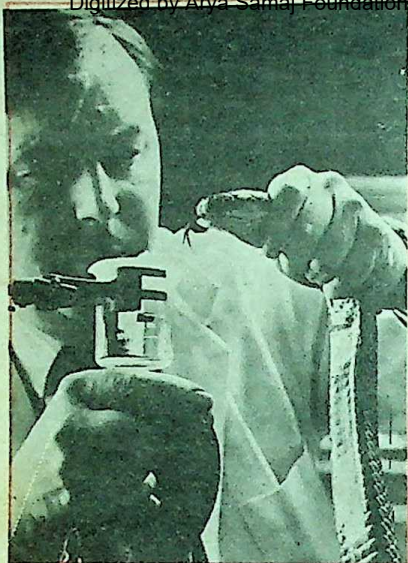
**महमूद हसन बरकटकर, सिवान**

**प्र. सांपों की कितने किस्में हैं और इनमें कितनी अधिक विषैली होती हैं ?**

□ संसार में सांप की लगभग तीन हजार प्रजातियां हैं जिनमें से केवल चार सौ प्रजातियां अत्यधिक विषैली हैं । आस्ट्रेलिया में पाया जाने वाला 'हाइड्रोफिश वेल्शरी' नामक समुद्री सांप कोबरा से शतगुणा अधिक विषैला बताया जाता है । सांपों की एक अन्य विषैली जाति वाइपर है ।

**शुभांगी वर्मा, इंदौर**

**प्र. सीमेंट में ऐसे कौन-से तत्व हैं जो पानी मिलने पर यह जम जाती है ?**

□ सीमेंट में कैल्सियम सिलिकेट और कैल्सियम एलुमिनेट होते हैं जो जल से मिलने पर हाइड्रोलाइज्ड होकर कोलाइडी जेली बनाते हैं । सीमेंट के कणों में सूक्ष्म छिद्र होते हैं । इन छिद्रों में जल भर जाने पर सीमेंट की एकसमान परत बन जाती है । फिर सीमेंट के कणों की भीतरी जलरहित परत कोलाइडी जेली में से जल का चूषण कर लेती है जिससे सतह सख्त हो जाती है । सीमेंट नमी के प्रति बहुत उदार होती है इसलिए इसे बनाते समय इसमें लगभग तीन प्रतिशत जिप्सम मिला दिया जाता है जो सीमेंट के जमने की प्रक्रिया को मंद कर देता है ।

**रचना बनर्जी, उज्जैन**

**प्र. मुगल साम्राज्य की स्थापना कब हुई थी ?**

□ सन १५२६ में बाबर ने पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहीम लोदी को पराजित करके मुगल साम्राज्य स्थापित किया था ।

**सविता कुलश्रेष्ठ, जयपुर**

**प्र. संसार में सबसे बड़ा महल किस राजा का है ?**

□ ब्रुनेई के सुलतान का महल संसार में सबसे बड़ा बताया गया है । जनवरी, १९८४ में बनकर तैयार हुए इस महल पर ४२ करोड़ २० लाख डॉलर खर्च आया था । इसमें १,७८८ कमरे और एक गेराज है जिसमें सुलतान की ११० कारें खड़ी की जाती हैं और ८०० और वाहनों के लिए भी स्थान है । इस महल के भीतर ही एक टेलिपैड तथा मसजिद भी है ।

**रामेश्वर प्रसाद पांडे, बक्सर**

**प्र. सारिपुत्त और मोग्लायन कौन थे ?**

□ ये दोनों गौतम बुद्ध के प्रथम शिष्य थे ।

## चलते-चलते

एक बैंक अधिकारी बच्चों को गोलक देकर उन्हें पैसे जमा करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा था । एक बच्चे ने इसका विरोध किया । क्यों ? ''इससे बच्चे कंजूस बनते हैं और मां-बाप डाकू ।''

—सूत्रधार

# भिक्षा के पात्र

बात उन दिनों की है, जब मैं बी.एस.सी. प्रथम वर्ष की छात्रा थी । मैं ग्रीष्मावकाश में अपने पिताजी के साथ देहरादून से उत्तरकाशी बस से जा रही थी । रास्ते में एक स्थान पर किसी चट्टान के सड़क पर गिर जाने के कारण हमारी बस आगे नहीं जा सकी और हमें रातभर रास्ते में ही रुकना पड़ा ।

हमारे पास खाने-पीने का कुछ भी सामान नहीं था और न ही वहां आस-पास खाने-पीने की वस्तुओं की कोई दुकान थी । सुबह से कुछ न खाने के कारण हम लोग भूख से व्याकुल हो रहे थे ।

कुछ लोगों के पास खाना बनाने का सामान था । वे लोग इधर-उधर से लकड़ियां इकट्ठी करके उन पर खाना बनाने लगे । खाना बनानेवालों में दो साधु भी थे । खाना बनाकर उन साधुओं ने हम लोगों से खाना खाने का आग्रह किया ।

पहले तो औपचारिकतावश हमने इंकार कर दिया परंतु उनके आग्रह के सामने हमारी एक न चली । उन्होंने हमें बहुत प्रेमपूर्वक पेट भरकर भोजन कराया । भोजन करके हमने उन्हें मन ही मन धन्यवाद दिया ।

आज भी साधुओं के नाम-मात्र से ही वह घटना चलचित्र की भांति आंखों के सामने आ जाती है ।

— **विन्देश्वरी गुप्ता**

ई-१५१-ई फेज-१ अशोक विहार
दिल्ली-११००५२

# कैरियर बचा दिया

घटना १३ जून १९८७ की है । बी.ए. (अंगरेजी प्रतिष्ठा) के प्रथम पत्र की परीक्षा थी । तैयारी अच्छी थी, अतः प्रश्न-पत्र मिलते ही लिखने में इस तरह व्यस्त हो गयी कि उस तीव्र गरमी में ठंडे पानी के गिलास भी, जिसे लेकर छोटे-छोटे लड़के हर १०-१५ मिनट पर प्रत्येक परीक्षार्थी के पास जा खड़े होते, मुझे आकर्षित नहीं कर सके । एक बार तो मुझे गुस्सा आ गया जब उन्हीं में से एक लड़का पूछने का दुःसाहस कर बैठा— "दीदीजी, पानी चाहिए ?"

लिखने की धुन में तीन घंटे कैसे बीत गये पता भी नहीं चला और दोहराना बाकी रह गया । खैर यह कोई ज्यादा चिंता की बात नहीं थी और मैं कॉपी जमा कर गेट की तरफ बढ़ने लगी । गेट के बाहर आकर रिक्शा अभी तय ही कर रही थी कि वही लड़का, जिस पर मुझे काफी गुस्सा आया था परीक्षा-भवन में, मेरे करीब आकर खड़ा हो गया और मेरा प्रवेशपत्र (एडमिटकार्ड) बढ़ाते हुए कहने लगा— "दीदीजी, यह आपके डेस्क पर छूट गया था ।"

मैं एकदम से अवाक रह गयी । इतना छोटा लड़का और इतना बड़ा काम !

आज भी जब इस घटना की याद आती है तो मेरा हृदय उस लड़के के प्रति श्रद्धा से भर उठता है । उसी की बदौलत मेरा कैरियर बिगड़ते-बिगड़ते बच गया ।

— **कुमकुम**

द्वारा—श्री नागेन्द्र प्रसाद स्टेट बैंक ऑफ इंडिया बाजार ब्रांच सीवान- (बिहार)

# पुलिस मेरी लाश खोजती रही

● रामाधार सिंह

१९२९-३० के आसपास जब मैं लोअर मिडल स्कूल में पढ़ता था—कुछ देशभक्तों के कार्यों से बड़ा प्रभावित हुआ । मेरे शिक्षक स्व. बाबू बिल्टू साह छात्रों को देशभक्ति से संबंधित पुस्तकें पढ़-पढ़कर सुनाया करते थे । उसी समय उन्होंने मोतीलाल नेहरू लिखित पुस्तक 'पंजाब हत्याकांड' नामक पुस्तक छात्रों को पढ़कर सुनायी । प्रश्न करने एवं किसी चीज के प्रति सहज उत्सुकता की अपनी प्रवृत्ति के कारण एक दिन मैंने उस पुस्तक को किसी तरह चुराकर पढ़ा । उसमें प्रकाशित चित्रों को देखकर अंगरेजी हुकूमत की नृशंसता के खिलाफ मेरा किशोर मन दहक उठा । तब सहजानन्द सरस्वती अंगरेजी हुकूमत के खिलाफ जगह-जगह भाषण दिया करते थे, उनका भाषण मैं पड़ोसी गांव निसरपुरा में नहर पार कर सुनने गया था । उस समय सत्याग्रह का जोर था । भाषण समाप्त करने के बाद स्वामीजी ने ललकारा कि कौन-कौन स्वयंसेवक बनना चाहते हैं ? कई हाथ उठे थे । उनमें 'काब' गांव का कोई व्यक्ति न था । स्वामीजी ने पुनः ललकारा, 'काब' में कोई देशभक्त बहादुर नहीं है ?' जवाब में मेरा हाथ उठा था । तभी से मैं स्वय सेवकों में भरती हो गया ।

गांव की पाठशाला से पास कर जब मैंने गोना स्कूल में नाम लिखवाया तो वहां के सेकेंड टीचर बाबू गनेशदत्ता सिंह के नेतृत्व में राष्ट्रीय झंडा लेकर राष्ट्रीय गान गाने का दैनिक नियम

**श्री रामाधार सिंह : बिहार के एक वयोवृद्ध स्वतंत्रता-सेनानी । उनका जन्म ११ जनवरी १९१९ को पटना जिले के विक्रम थाने के अंतर्गत आनेवाले ग्राम काब में हुआ था । यहां प्रस्तुत हैं—उनके संस्मरण**

बन गया । घर आने तक यह क्रम चलता रहता था । इन सबके कारण मेरे भीतर देशभक्ति का बीज अंकुरित होता रहा ।

१९३४ के भूकंप के समय महात्मा गांधी पटना की डुमरी कोठी में 'कैंप' किये हुए थे । उन्हें देखने के लिए मैं गांव से भागकर आया था । वे भूकंप-पीड़ितों को सहायता पहुंचवा रहे थे । मैं भी स्वयंसेवकों में शामिल हो गया ।

१९३७ के चुनाव में, विक्रम में हुए जवाहरलाल नेहरू का भाषण रात के दस बजे सुनने का अवसर मिला उससे भी मेरे भीतर की देशभक्ति का रंग गाढ़ा हुआ । वह चुनाव अपनी आंखों के सामने देखा । मेरे गांव के दो स्वयंसेवी बंधु, बाबू हरनंदन सिंह एवं श्री गोरखनाथ पराग की देशभक्ति के कारनामे भी प्रसिद्ध थे । उनसे भी मैं प्रेरणा ग्रहण करता था । स्थानीय नेताओं से उन सहोदर भाइयों का गहरा संपर्क था । उन भाइयों के साथ १९३७ के चुनाव में मैंने भी सक्रिय हिस्सेदारी निभायी थी । स्व. चंद्रदीप शर्मा 'प्रभोश', महातम राम आदि कांग्रेस के संगठन में भाग लेते थे ।

## जेल जाने की पृष्ठभूमि

१९३९ में दूसरा विश्व युद्ध छिड़ चुका था, उसका प्रभाव पूरी दुनिया पर पड़ा । मेरे गांव की दिलचस्पी राजनीति में होने के कारण युद्ध में भी उसकी दिलचस्पी बढ़ने लगी । कुछ युवक तो 'वार' में भरती हो गये । बाद में युद्ध के खिलाफ भी माहौल तैयार होने लगा । 'न देंगे एक भाई, न देंगे एक पाई' जैसे नारे गूंजने लगे । मेरे गांव में युद्ध के खिलाफ एक वातावरण तैयार हो गया ।

फिर आयी १९४२ की अगस्त-क्रांति । ८ अगस्त को बंबई की एक सभा में गांधीजी सहित कई नेता गिरफ़्तार कर लिए गये, जिसकी चर्चा पलक झपकते पूरे देश में फैल गयी । एक जगत नारायण लाल किसी तरह बच निकले ।

खबर पाने पर मेरे गांव में योजना बनी कि पाली गंज थाने में झंडा फहराने के लिए चलना है । ११ से १५ के बीच की किसी तारीख को गांव के युवकों के साथ मैं पाली पहुंचा, जहां पहले से कन्हाई सिंह, श्याम देव शर्मा आदि के नेतृत्व में पहले से ढेर सारे युवक जमा थे । फिर सबने मिलकर थाने को घेर लिया । इससे पहले नहर ऑफिस पर झंडा फहरा चुके थे । वहां किसी तरह के प्रतिरोध का सामना नहीं करना पड़ा था । तब पाली के थानेदार महेन्द्र सिंह राष्ट्रीय स्वयं सेवकों के जत्थे के दबाव में आकर स्वयं राष्ट्रीय झंडा फहराने के लिए बाध्य किये गये । उन्होंने झंडा फहराया भी । भीड़ ने उनसे नारे भी लगवाये । उन्होंने भीड़ से कहा, "कानूनन मुझे किसी को गिरफ़्तार करना होगा । आप सब गांधीवादी हैं । इसलिए, कुछ कानून की गिरफ़्त में आ जाइए ।" तत्काल पाली के परशुरामपुर के कन्हाई सिंह गिरफ़्तार कर लिए गये ।

घटना के दूसरे दिन जब दारोगा कन्हाई सिंह को चालान कर दानापुर ले जा रहे थे, तभी रास्ते में उलार-भरतपुरा हाई स्कूल के छात्रों ने सिद्धेश्वर शर्मा, रघुवंश पांडेय आदि के नेतृत्व में उन्हें पुलिस-गिरफ़्त से छुड़ा लिया । यह खबर बाद को मुझे गांव में मिली ।

काब गांव के पश्चिमी नहर एवं सोन नदी के ढाब के बीच में एक घना बाग था, जो डेराई

बाग कहलाता था । हम आजादी के दीवाने युवकों ने उस बाग पर कब्जा कर उसका नाम आजाद बाग रखा । उस इलाके में आनेवाले तमाम नेशनलिस्ट वहां शरण पाते थे । झलास से घिरा घना बाग होने के कारण वह नेशनलिस्टों के लिए शरणस्थली बाग था, जहां बाबू गंगाशरण सिंह, श्याम नंदन सिंह, अनंत मिश्र, हरपाल यादव, कपिलदेव त्रिपाठी आदि निरापद छिपते थे । वहां खाने-पीने का प्रबंध निसरपुरा गांव के बाबू भागवत सिंह आदि करते थे । संगठन से संबंधित कार्यों की सूचना प्रदीप राम चर्मकार हरिजन अपनी साइकिल से पास-पड़ोस के गांवों में लोगों एवं कार्यकर्ताओं को पहुंचाया करता था । पुलिस की गतिविधियों से लोगों को सावधान भी करता था । मैं उस इलाके के कार्यकर्ताओं में प्रमुख भूमिका निभा रहा था । ब्रिटिश हुकूमतशाही के खिलाफ कई विद्रोहों में भागीदारी निभायी ।

### थाने पर चढ़ाई

१७ अगस्त १९४२ को विक्रम थाने पर

चढ़ाई के क्रम में पुलिस ने गोलियां दागीं । दस हजार से भी अधिक लोगों का हुजूम 'महात्मा गांधी की जय', 'स्वतंत्र भारत की जय', 'बंदे मातरम' आदि नारे बुलंद कर रहे थे । पुलिस की गोलियों से कई घायल हुए । मुझे भी पुलिस के अनगिनत छर्रे लगे । शहीद हुए साथियों में त्रिवेणी शर्मा (काब), रंगनाथ शर्मा (गोड़खरी, पटना कॉलेज के वर्तमान प्राचार्य आर. सी. प्रसाद के सगे चाचा), बुटाई राम (सोरमपुर) आदि थे । अचेतावस्था में भी मेरे ऊपर तेज हथियार से वार किये गये और मृत सोचकर मुझे छोड़ दिया गया । बाद में गांव के लोगों की मदद से मैं विक्रम अस्पताल पहुंचाया गया । पहले तो मुझे मृत समझा गया था, लेकिन बाद में सघन चिकित्सा से मैं किसी प्रकार बच गया । गिरफ्तारी से बचाने के लिए डॉक्टर की सलाह पर मुझे बाद में एक मील की दूरी पर तेलपा गांव (ससुराल) में छिपाया गया । मेरे साथ नरेन्द्र सिंह चलने लायक नहीं रहने के कारण अस्पताल से भाग नहीं सके और गिरफ्तार कर लिए गये । चूंकि मैं मृत घोषित किया गया था, इसलिए पुलिस मेरी कथित लाश को बहुत दिनों तक खोजती रही । मैं ससुराल में छिपा हुआ था । उस गांव में अक्सर गोरी पलटन आती रहती थी । गांववालों के दबाव के कारण मुझे गांव छोड़ना पड़ा ।

मैं पुनः अपने गांव चला आया और आजाद बाग में छिपकर रहने लगा । रात किसी मचान पर छिपकर सोता । कुछ दिन बीत गये । अन्य साथियों के साथ मैंने भी समझा कि गोरी सरकार अब थाने लूटने की घटना को भूल गयी होगी । गोली लगने से मेरे दायें गाल में कान के

**आज बिहार में स्वतंत्रता सेनानी विशेषकर बिहार में 'नंबर दो' के घृणित नागरिक माने जाते हैं । अब केवल भाई-भतीजावाद एवं स्वार्थ चलता है । देश के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठा का घोर अभाव है । अधिकांश में राष्ट्रीय भावना लुप्तप्राय है ।**

नीचे छेद हो गये थे । खाना खाने पर दाल वहां से बह जाती थी । मैं हमेशा सिर पर पगड़ी बांधे रहता ।

### सुग्गे पर कोप

एक दिन सुबह के वक्त मैं आजाद बाग के समीपस्थ खेत में दिशा-मैदान को जा रहा था कि दर्जनों की संख्या में हरी रंग की मिलिट्री गाड़ियों को गांव की ओर आते देखा । मैं समझ गया कि यह पलटन की गाड़ी है । बस भागते हुए गांव गया और 'भागो, पलटन आ रहा है' चिल्लाते हुए पूरब की ओर भागा । मेरे चिल्लाने से सभी देशभक्त सेनानी भाग निकले । मैं भागता हुआ पहले रामलखन सिंह यादव के यहां टोला हरिरामपुर पहुंचा । मेरे बहुत कहने पर भी उन्होंने शरण नहीं दी । तब मैं खपुरी गांव के बाबू रामनंदन सिंह के यहां पहुंचा । उन्होंने शरण दी । खिलाया-पिलाया । सुरक्षा की पूरी व्यवस्था की । बाद को पता चला कि मेरे गांव काब को पलटन ने तहस-नहस कर दिया । मेरे घर को तो नेस्तनाबूद कर ही दिया गया, मेरे पिता एवं चाचा को बुरी तरह पीटा भी गया । पलटन के साथ एक एस. डी. ओ., मि. डे (आई. सी. एस.) मेरे पिता से पूछते, 'टुम रामाडार को डो', पर पिताजी कहते, "हम सुनली है कि थाना पर उ मारल गेल है . . . हमरा लाश न मिलल है, जेकरा से दाह-संस्कार करतीं ।" डे कहते, "टुम झूठ बोलटा है" और उन्हें नृशंसतापूर्वक पीटते । पूरे गांव सहित मेरे घर तक को बरबाद कर दिया गया । मेरे घर में पिंजरे में बंद एक सुग्गा था, जिसे डे के कहने पर काट डाला गया । तबाही का वह दृश्य आज भी मेरे गांव के बूढ़ों को दहला देता है । मेरे चाचा देवधनी सिंह को तो इतना पीटा गया कि बाद में वे इसी पिटाई की कमजोरी से मर ही गये ।

पुलिस मेरे पीछे थी । मैं भाग रहा था । पृष्ठभूमि में ब्रिटिश शाही के खिलाफ गतिविधियों में भागीदारी भी निभाता । मेरे ही एक मित्र के कारण पुलिस को मेरे जिंदा होने की सूचना मिल गयी । बाद को एक साजिश के तहत अंततः विक्रम पुल पर गिरफ़्तार कर लिया गया । मुझे याद है कि मुझे पकड़ते हुए एक सिपाही चिल्लाया था, "भूत मिल गया . . . भूत मिल गया" । मेरे ऊपर थाने पर हमले के साथ ही, एक पोस्ट ऑफिस में आग लगाने का आरोप लगाया गया । इसी आरोप में दशरथ महतो तथा रामदास सिंह भी पकड़े गये थे । दानापुर में गया प्रसाद मजिस्ट्रेट की अदालत ने मुझे दिसम्बर १९४२ को दो वर्ष की सश्रम कारावास तथा ५० रुपये नकद या नहीं देने पर छह माह की जेल-सजा दी । सजा काटकर जेल से निकलने पर पुनः मेरे नाम का एक वारंट

निकला और फिर से मुझे अन्य साथियों के साथ नौ महीने की जेल की सजा हुई ।

जेल में बड़ी यातना दी जाती थी । खाने के नाम पर दो रोटी और पानी-सी दाल दी जाती । जो कंबल दिये गये, उनमें चिल्लरों की संख्या बहुत थी । राजनीतिक कैदियों के साथ क्रूर व्यवहार किया जाता । वहां जेल (पटना-फुलवारी कैंप जेल) में मेरे साथ सर्वश्री अम्हारा के श्यामनंदन बाबू के भाई रामनंदन सिंह, उनके चाचा बाबू भुखी सिंह, सूरजदेव सिंह, रामसिंहासन सिंह, बिन्देश्वरी सिंह (सभी गांव अम्हारा के), बरौनी, बेगूसराय आदि के भी बुजुर्ग क्रांतिकारी साथी थे । रामपुर मुंगेर के इंजीनियरिग छात्र बाबू गीता प्रसाद सिंह, लक्खीसराय के साहित्यकार पं. रामावल्लभ चतुर्वेदी, बड़हिया के बाबू सुखदेव सिंह, सूर्यनारायण सिंह तथा हरि सिंह आदि भी वहीं थे । बाद में गीता प्रसादजी के अनुरोध पर, क्योंकि मुझे गोली लगी थी, खाने में रोटियों की संख्या पांच कर दी गयी । भात में पिल्लू, दाल में बीड़ी की टुकड़ी, दतवन की कूची आदि रहते थे । लोग गंदी चीजों को निकालकर खाते । कंचनपुर के बाबू चंद्रिका सिंह को सात वर्ष की सजा हुई थी । वे वहां दूध के प्रभारी थे । उन्हीं के कहने पर मेरे लिए दूध का प्रबंध किया गया था । बिहारी 'डाइट' के अतिरिक्त मारवाड़ी 'डाइट' भी दी जाती थी । मारवाड़ी 'डाइट' वालों को बासमती चावल का भात दिया जाता था । कभी-कभी हम लोग उसका माड़ किसी तरह प्राप्त कर खा लिया करते ।

**(प्रस्तुति—डॉ. भगवतीशरण मिश्र एवं शिवनारायण)**

## बुद्धि-विलास के उत्तर

**१. (२५ प्रतिशत), २. दत्तात्रेय (अत्रि और अनसूया का पुत्र), ३. कैलिस्थिनीज (अरस्तू का भतीजा), ४. क. फ्रांसीसी यात्री बर्नियर, ख. १६६५ ई. से १६६८ ई. तक, ५. पाकिस्तान से 'निशान-ए-पाकिस्तान', अपने प्रधानमंत्री-काल में भारत-पाक संबंध सुधारने के लिए, ६.क. हाउस ऑफ लाइस, ख. भारत से चोरी गयी नटराज की प्रतिमा को खरीदनेवाले (वेयर डेवलपमेंट कारपोरेशन) को इंगलैंड के उच्च न्यायालय के फैसले के खिलाफ अपील की इजाजत नहीं दी, ७. क. श्रीमती एडिथ क्रेसन, ख. हेलेन शरमन, सोवियत अंतरिक्ष-यान सोयूज टी. एम.-७२ से दो अन्य सोवियत यात्रियों के साथ (विगत १८ मई को), ८. डॉ. राममनोहर लोहिया तथा डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के चित्र, ९. क. 'आदि शंकराचार्य', ख. जी. वी. अय्यर, १०.क. ३० अरब मेगा यूनिट (१ मेगा यूनिट=१० लाख यूनिट), ख. १५ अरब मेगा यूनिट, ग. सौर ऊर्जा, ११. चार्वाक, १२ यूनिसेफ द्वारा जारी टिकट ।**

प्रवेश

## आमंत्रण

कर रहे हैं हम
दर्द के शिखरों की
अनवरत यात्रा
एक शिखर पार कर
रुकते हैं हम
पलभर के लिए
कि दूसरा शिखर
बांहें फैलाये
देता है आमंत्रण

## दरवाजा

एक अरसे से
बंद है यह दरवाजा
वर्जित है यहां
किसी का आगमन
आज फिर—
खटखटा रहा कोई
द्वार धीरे-धीरे
खोलूं कि न खोलूं
सोच रहा मन
पूछूं तो बताता नहीं
कौन है वो
क्या उसका नाम
डरती हूं मैं
कहीं ऐसा न हो
हाथ में लेकर कूंची
गहरा और—
करता जाए
मेरे जीवन पट पर
उदासी का रंग

## प्रश्न

प्रश्न करना सहज है
उत्तर की प्रतीक्षा सहज है
प्रतीक्षारत—
रूठ जाना तुम्हारा भी सहज है
सहज नहीं है तो बस
उत्तर देना प्रिय
तुम्हारे—इस प्रश्न का
एक प्रश्न पूछती हूं मैं तुम्हीं से
क्या ऐसे नाजुक मसले
प्रश्नों में पूछे और
उत्तर में सुलझाये जाते हैं
कुछ प्रश्न अनसुलझे अधूरे ही
अधिक खूबसूरत होते हैं
अधूरापन रोमांचक है पूर्णता अंत
पहले स्वयं अपने मन को पहचानो
मन की गति—दिशा जानो
क्या स्वयं प्रश्न के प्रति
गंभीर दृष्टि है तुम्हारी
फिर मुझसे प्रश्न करो
और सच तो यह है
मेरा कहा मानो
अनुत्तरित ही रहने दो
अपना यह प्रश्न प्रिय
प्रश्न से उत्तर के बीच
लंबी दूरी है बाधाएं हैं
उन्हें लांघता हुआ स्वयं
उत्तर पहुंच जाएगा प्रश्न के समीप

**गायत्री माहेश्वरी**

एम.ए., एल.एल.बी., बी. एड.
संप्रति— शोध कार्य (हिंदी) बी.एच.यू. —के ७/२१ लाला सूर की गली, वाराणसी-२२१००१

**आत्म कथ्य :** कविता मेरे नितांत एकांत की अंतरंगता का सर्वाधिक प्रिय व अंतरंग साथी है तथा अपनी भावनाओं के आवेगों को बांधकर एक रूप दे देने का सशक्त माध्यम भी ।

# "आशीर्वाद दीजिए जब तक जिंदा रहूं, लिखता रहूं"

● डॉ. शरद नागर

अज्ञेयजी के साथ बातचीत के दौरान नागरजी ने कहा था, "यदि मैं लेखक न बनता तो एक्टर अच्छा बनता, डायरेक्टर अच्छा बनता ।" और यह सच है-रंगमंच, रेडियो तथा फिल्म के क्षेत्र में नागरजी ने अभिनय भी किया, निर्देशन भी किया और लेखन भी किया । १९४०-४७ ई. तक बंबई में फिल्मी दुनिया में रहे और लखनऊ आने के बाद भी १९४९-५० के जमाने में आइडियल फिल्म स्टूडियो में बनी सिंह आर्ट प्रोडक्शन की फिल्म 'चोर' की पटकथा एवं संवाद उन्होंने लिखे थे । ये फिल्म पूरी तैयार हुई, फिल्म का प्रीमियर शो भी लखनऊ में धूमधाम से हुआ किंतु फिल्म चली नहीं । 'चोर' के निर्देशक थे तत्कालीन विख्यात निर्देशक आनंदी प्रसाद कपूर । ये वाराणसी निवासी थे और आचार्य नरेन्द्र देव के समधी थे । नृत्य निर्देशक थे श्री मदन मिश्रा, जो अब अपने मूल नाम विश्वनाथ मिश्र के नाम से विख्यात रंगकर्मी के रूप में अधिक जाने जाते हैं । और प्रमुख नायिका की भूमिका अलकारानी (श्री विश्वनाथ मिश्रा की धर्मपत्नी तथा अब श्रीमती कृष्णा मिश्रा के नाम से ख्याति प्राप्त) ने अभिनीत की थी ।

लखनऊ में ही दूसरी फिल्म, अभिनेता भारत-भूषण के भाई ने शुरू की थी जो पूरी न हो सकी । उसकी पटकथा तथा संवाद भी नागरजी ने लिखे ।

### उपन्यासों के साथ-साथ नाट्य लेखन

१९४८ में चकाचौंध भरी फिल्मी दुनिया छोड़कर पुनः लखनऊ में ही मुस्तकिल तौर पर बसकर काम करने का फैसला करने के उपरांत १९५०-६० के दशक में जहां एक ओर उन्होंने 'बूंद और समुद्र', 'सुहाग के नूपुर' तथा 'शतरंज के मोहरे'- जैसे उपन्यास, 'गदर के

फूल' तथा 'ये कोठेवालियां' सदृश्य इतिहास एवं समाज शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से अनुपम ग्रंथों की रचना की, वहीं दूसरी ओर इसी दशक में ७ दिसम्बर, १९५३ से ३१ मई, १९५६ ई. तक आकाशवाणी के ड्रामा प्रोड्यूसर की हैसियत से अनुबंधित होकर सेवारत रहे और इस अवधि में उन्होंने उत्कृष्ट रेडियो नाटक और रूपक न केवल लिखे ही वरन उनकी उत्कृष्ट प्रस्तुतियां अपने निर्देशन में प्रसारित करके भारतीय रेडियो नाट्य लेखन एवं प्रस्तुति के क्षेत्र में नये मानदंड भी स्थापित किये। उन्होंने रेडियो नाटकों हेतु अपने ही मंत्र 'कान को आंख बनाओ' साधकर अपने नाटक 'गूंगी' में एक 'गूंगी' पात्र की रेडियो के श्रव्य माध्यम से स्थापना करके तथा उसका सजीव एवं जीवंत चित्रांकन करके नये कीर्तिमान की स्थापना की। अपने रेडियो नाटकों के माध्यम से जहां एक ओर रेडियो नाटकों के श्रोता समूह का विस्तार किया, वहीं दूसरी ओर लखनऊ में रेडियो नाटक कलाकारों का एक विशाल समूह तैयार करने में सफलता प्राप्त की। जिन दिनों वे ड्रामा प्रोड्यूसर रहे, उन्होंने सवा घंटे से अधिक अवधि के नाटक भी प्रसारित किये। 'सुहाग के नूपुर' जब पहली बार प्रसारित हुआ कदाचित उसकी प्रसारण अवधि डेढ़ घंटे से अधिक थी।

### नाटक के खिलाफ मुकदमा

इसी दशक में १९५३ में नागरजी ने लखनऊ में भारतीय जन नाट्य संघ की विवादास्पद नाट्य प्रस्तुति मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' के श्रीमती रजिया सज्जाद ज़हीर कृत नाट्य रूपांतर का निर्देशन किया। इस नाटक के मंचन के उपरांत भारतीय दंड विधान की १८७६ ई. की 'ड्रामा परफोमेंस एक्ट' के तहत सरकार बनाम भारतीय जन नाट्य संघ का मुकदमा चला। भारतीय जन नाट्य संघ के तत्कालीन महामंत्री बाबूलाल वर्मा, कोषाध्यक्ष गोकुलचंद्र रस्तोगी, नाटक के निर्देशक अमृतलाल नागर तथा रूपांतरकार रज़िया सज्जाद ज़हीर के नाम सम्मन तामील हुए। मुकदमा उर्दू के ख्यातिनाम शायर, न्यायमूर्ति आनंद नारायण मुल्ला के न्यायालय

**नागरजी मात्र उपन्यासकार नहीं थे। वे एक सफल नाटककार, निर्देशक और अभिनेता भी थे। रंगमंच के अतिरिक्त उन्होंने कई फिल्मों में भी भूमिकाएं अभिनीत कीं।**

फिल्म 'आगे कदम' में
देहाती अध्यापक की भूमिका में नागरजी

में पहुंचा । न्यायमूर्ति ने इस अधिनियम को भारतीय गणतंत्र के नागरिक अधिकारों के विरुद्ध मानते हुए लोक-तांत्रिक भारत के लिए अमान्य घोषित कर दिया । यह अपने आप में एक स्वतंत्र प्रकरण है अतः इसकी चर्चा बाद में ।

## सफल निर्देशक

१९४९ में लखनऊ विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति आचार्य नरेन्द्र देव के आदेश पर नागरजी ने जयशंकर प्रसाद कृत नाटक 'स्कंद गुप्त' का निर्देशन किया । लखनऊ में बाढ़ पीड़ितों के सहायतार्थ धन संग्रह के लिए उन्होंने स्वलिखित नाटक 'परित्याग' का निर्देशन किया, जिसका प्रथम मंचन २५ सितम्बर, १९५४ को हुआ, इस नाटक के 'रिपीट' शो होने का विवरण भी मिलता है । महादेवी जी द्वारा इलाहाबाद में स्थापित साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था 'रंगवाणी' के लिए उन्हीं के आग्रह पर नागरजी ने भारतेंदु हरिश्चंद्र के जीवन पर केंद्रित नृाट्यालेख 'युगावतार' की रचना की और इलाहाबाद जाकर स्वयं उस नाटक का निर्देशन किया— इस नाटक का मंचन इलाहाबाद में २३ सितम्बर, १९५५ को हुआ ।

लखनऊ में नवयुग कन्या विद्यालय के भवन निर्माण हेतु फंड एकत्रित करने के लिए नागरजी के निर्देशन में गोदान का मंचन (१९५५) में हुआ । नागरजी ने भगवती चरण वर्मा द्वारा स्थापित संस्था भारती के लिए वर्माजी के ही लिखे नाटक 'रुपया तुम्हें खा गया' का निर्देशन किया ।

२२-२३ अगस्त १९५६ को सर्वदानंद वर्मा (तत्कालीन मुख्यमंत्री सम्पूर्णानंद के सुपुत्र) की संस्था 'नटराज' ने सर्वदानंद वर्मा लिखित नाटक 'चेतसिंह' का मंचन किया, जिसका निर्देशन नागरजी ने किया ।

आकाशवाणी की रजत जयंती के अवसर पर ८ दिसम्बर, १९६३ को तत्कालीन केंद्र निदेशक के विशेष आग्रह पर उन्होंने स्वलिखित नाटक 'नुक्कड़ पर' का निर्देशन किया ।

'नुक्कड़ पर'' के मंच प्रयोग के बाद नाट्य लेखक अथवा प्रयोक्ता के रूप में कार्य करने में नागरजी का रस नहीं रहा किंतु नाटक देखने और नाटक करनेवालों को प्रोत्साहित करने में वे सदैव आगे रहते थे ।

१९६७-६८ में जब मुझे आधुनिक हिंदी रंगमंच के प्रथम नाट्य प्रयोग, पं. शीतलाप्रसाद त्रिपाठी कृत नाटक 'जानकी मंगल' के प्रथम मंचन की तिथि ३ अप्रैल, १८६८ खोज निकालने में सफलता मिली तो वे बहुत प्रसन्न हुए । अप्रैल, १९६८ में इसी तिथि के आधार पर पूरे देश में हिंदी रंगमंच शतवार्षिकी का आयोजन हुआ । आकाशवाणी के तत्कालीन चीफ ड्रामा प्रोड्यूसर श्री चिरंजीत के आग्रह पर नागरजी ने राष्ट्रीय प्रसारण हेतु एक रूपक 'हिंदी रंगमंच के सौ वर्ष' लिखा और जहां तक मुझे स्मरण है इसे उन्होंने ही 'प्रोड्यूस' किया, रिकॉर्डिंग लखनऊ केंद्र पर हुई थी ।

इस नाटक में उन्होंने ३ अप्रैल, १८६८ को काशी में खेले गये पं. शीतला प्रसाद त्रिपाठी कृत नाटक 'जानकी मंगल' (जिसमें लक्ष्मण की भूमिका स्वयं भारतेंदु ने की थी) से लेकर १९६८ तक की हिंदी नाटक और रंगमंच की विकास यात्रा को रोचक एवं प्रभावी ढंग से

युगावतार के मंच प्रयोग के अवसर पर लिया गया एक दुर्लभ चित्र । मध्य में हैं नागरजी मध्य की पंक्ति में बायें से तीसरे महादेवी जी ।

रूपायित किया ।

एक प्रकाशक ने जब उनसे नाटक की मांग की तो उन्होंने कहा कि "भाई अब नाटक नहीं लिखते । शरद से पूछो शायद कोई अप्रकाशित पुराना नाटक हो ?" मैंने उन्हें १९६३ में आकाशवाणी में खेले गये नाटक 'नुक्कड़ पर' का स्मरण कराया और उन्हें निकालकर दिया । बोले, उसे दुबारा लिखाएंगे ये कुछ पुराना हो गया है । उन्होंने ८-१० दिन में ही उसका स्वरूप परिष्कृत कर दिया । ये नाटक १९८१ में प्रकाशित हुआ लेकिन किसी संस्थान ने अब तक मंचित नहीं किया ।

दूरदर्शन केंद्र लखनऊ के आग्रह पर उन्होंने सूरदास के जीवन पर आधारित फोटो नाटक 'चढ़त न दूजो रंग' लिखा जो दूरदर्शन केंद्र लखनऊ द्वारा प्रसारित किया गया । प्रस्तुति सराहनीय रही । ये नाटक पुस्तक रूप में १९८२ में प्रकाशित हुआ ।

**नाटक के संस्कार कैसे मिले !**

नाटक के संस्कार नागरजी के मन में कैसे प्रस्फुटित हुए और इस क्षेत्र में उनके जीवन के जो अनुभव रहे, उसकी चर्चा वे अक्सर करते थे । उन्हीं के शब्दों में— "*धुर बचपन में घर में मैं अकेला लड़का अपने दादा का दुलारा, किसी से मिलने-जुलने या अकेले जाने-आने की इजाज़त नहीं, दादा के बैंक (इलाहाबाद बैंक, सिटी ब्रांच चौक, जहां के वे एजेंट थे) में ही हमारा रिहायशी फ़्लैट था । हम छज्जे पर लटके रहते, आती-जाती चीजें देखते, लोगों की लड़ाईयां, गालियां तक सीख लीं । इन सबका अकेले में अभिनय करता-एक दिन पिताजी ने मारा तो पता लगा बुरी चीज़ है । घटनाओं को, व्यक्तियों के हाव-भाव को सूक्ष्मता से देखने और उन व्यक्तियों की मिमिक्री करने से संवादों को, गालियों को दोहराने से वह चीजें बाद में मेरे डायलॉग्स में सहायक हुईं । परिस्थितियां अगर ठीक होतीं तो मैं अभिनेता या डायरेक्टर ही बना होता । नाटक के संस्कार इस प्रकार से उभारने में मेरे पिता (राजा राम नागर) के नाट्य संस्कारों ने भी मुझे प्रभावित किया ।....*
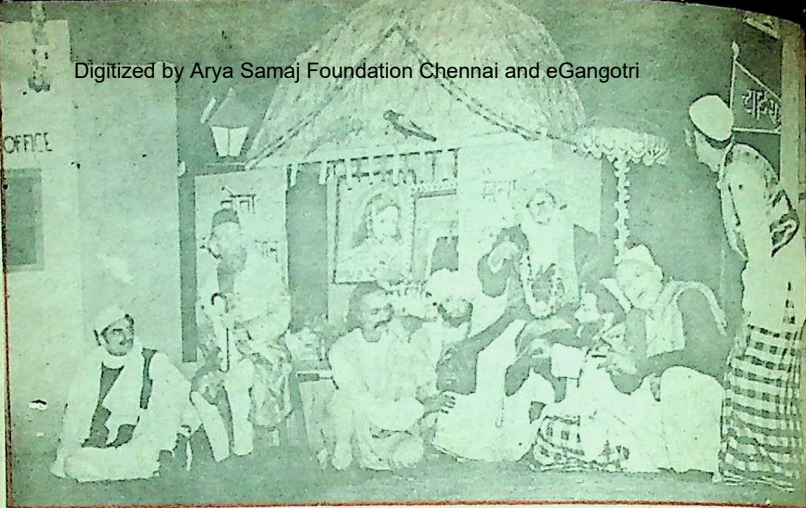
'नुक्कड़ पर' का एक दृश्य

मेरे पिता पं. राजाराम नागर और उनकी समस्त मित्र मंडली बीसवीं सदी के प्रथम दशक से ही लखनऊ में शौकिया रंगमंच की दागबेल डालनेवालों में से रही। लगभग १९१९-२० ई. से लखनऊ में हिंदी रंगमंच उन्नायक पं. माधव शुक्ल के निर्देशन में नाटक 'महाराणा प्रताप' खेला गया, जिसमें पिताजी ने अभिनय किया था। मुझे याद है नाटक के रिहर्सल मेरे पिता के कमरे में होते थे— पं. माधव शुक्लजी रिहर्सल के समय हाथ उठा-उठा कर संवाद बताते थे। उसके बाद १९२२ के लगभग लखनऊ में पं. माधव प्रसाद लिखित नाटक बनबीर (उर्फ पन्नाधाय) खेला गया जिसकी याद मुझे अधिक है इस नाटक में जब मेरे पिता को तलवार चुभायी जा रही थी, मैं रो पड़ा था।....

आठ-दस बरस की उम्र में हम भी नाटक करने लगे। मुझे याद है कालिगान टोले में हमारे एक मित्र थे सत्य गोपाल झींगरन वहां हम लोगों ने घर में ही मंच बनाकर डी.एल. राय कृत किसी नाटक का कोई अंश मंचित किया था। उसके बाद १९३०-३१ में कालीचरण स्कूल (अब डिग्री कॉलेज) की ओल्ड ब्वायज़ एसोसिएशन द्वारा खेले गये नाटक 'अभिमन्यु' में एक छोटा-सा पार्ट किया, एक सैनिक का। एक बार इसी एसोसिएशन के एक नाटक (नाटक डी.एल. राय का था) में हमारे चचाज़ाद भाई त्रिलोकी नाथ दवे को भारतमाता का अभिनय करना था लेकिन प्रदर्शन के दिन वो आये ही नहीं। सब जने हमसे अभिनय करने को कहने लगे—हमको औरत का पार्ट करने में थोड़ी झिझक थी—पहली बार, फिर भी करना पड़ा। उसके बाद हमने मंच पर कभी अभिनय नहीं किया। बंबई जाकर किशोर साहू की फिल्मों में गेस्ट आर्टिस्ट के रूप में काम किया। किशोर साहू की फिल्म में एक भले आदमी का रोल किया जो डस्टबिन में पड़े नवजात शिशु को पड़ा देखकर उठाता है और बच्चे के पास ही पड़े विजिटिंग कार्ड के पते पर ले जाकर पहुंचाता है। किशोर साहू की फिल्म

'राजा' में भी छोटी-मोटी भूमिका की । इसके बाद किशोर साहू की फिल्म 'वीर कुणाल' में कापालिक की बड़ी भूमिका की । इस भूमिका के मेकअप में स्टूडियो में ही मेरे अनुज चित्रकार मदन (मदनलाल नागर) ने मेरा स्केच बनाया था जो बड़े बेटे कुमुद के पास है । आचार्य आर्ट प्रोडक्शन की फिल्म 'आगे कदम' में ग्रामीण अध्यापक की भूमिका की थी, ये फिल्म बंगला के नाटक 'मानमयी गर्ल्स स्कूल' पर आधारित थी'' .....

## अंतिम दिनों तक सक्रिय

१९६४ के जीवन के अंतिम दिनों तक वे रंगकर्मियों का दिशा-निर्देश करते रहे । इन लगभग २५ वर्षों में हिंदी नाटक तथा रंगमंच चेतना को जागृत करने में उनका जो योगदान रहा उसकी विस्तृत चर्चा इस लेख का प्रतिपाद्य विषय नहीं है । उनके जीवनकाल में अंतिम जन्म-दिवस समारोह के अवसर पर १७ अगस्त १९८९ को लखनऊ की प्रथम पंक्ति की संस्था 'नटरंग' द्वारा खेले गये नाटक 'सारस्वत' के मंच प्रयोग का जिक्र किये बिना कदाचित बात अधूरी ही रह जाएगी ।

'सारस्वत' मराठी के जाने-माने नाटककार मामा वेररकर की सशक्त नाट्य-कृति है इसका हिंदी रूपान्तर भी नागरजी ने महादेवीजी के कहने पर किया था । नाटक का हिंदी रूपांतर संभवतः १९५७ में ही किया था, आलेख महादेवीजी द्वारा इलाहाबाद से आरंभ की गयी पत्रिका 'साहित्यकार' के दो अंकों में प्रकाशित हुआ था किंतु अपरिहार्य कारणों से न उनकी संस्था 'रंगवाणी' द्वारा मंचित हो सका और न किसी अन्य संस्था ने उठाया । इस नाटक को मंचित करने की इच्छा और स्वयं निर्देशित करने अथवा उसके मुख्य पात्र बाबा की भूमिका करने की बात लगभग १९८१ से इन पंक्तियों के लेखक के मन में थी । किंतु अनेक अपरिहार्य कारणों से ये संभव न हो सका । जब लखनऊ की प्रथम पंक्ति की नाट्य संस्था 'नटरंग' के महामंत्री तथा संवेदनशील अभिनेता, निर्देशक, नाटककार राजेश भदौरिया से इस विषय में चर्चा हुई तो वे उल्लास से बोले, 'हमें स्क्रिप्ट दीजिए । हम इसे करेंगे !' उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी में मेरे सहयोगी, नाट्य सर्वेक्षक तथा उदीयमान अभिनेता-निर्देशक चंद्र मोहन ने निर्देशन का दायित्व लिया और आदरणीय कुमुद भाई साहब को मुख्य भूमिका के लिए राजी कर लिया ।

जीवनभर आदर्शों तथा सिद्धांतों पर जीने वाले लेखक के संघर्ष को मामा वरेरकर ने जिस जीवंतता से उकेरा है, वह विलक्षण है । नागरजी द्वारा रूपांतर भी उतना ही सशक्त हुआ है । लेखक के चरित्र में दर्शकों को कई स्थलों पर ऐसी प्रतीति हुई मानो नागरजी ही स्वयं मंच पर हों, भाई साहब और अन्य सभी कलाकारों ने उत्कृष्ट अभिनय किया ।

इस प्रस्तुति को देखकर नागरजी भी संतुष्ट हुए, जन्म दिवस के अवसर पर सबकी बधाइयां स्वीकार करते हुए उन्होंने अंत में कहा ''आशीर्वाद दीजिए, जब तक जिंदा रहूं लिखता रहूं ।''.....

—चौक, लखनऊ-२२६००३

**अजय भाम्बी**

**राजेश कुमार उपाध्याय, नयी आबादी मंदसौर**
**प्रश्न** :मेरे संतान योग हैं या नहीं ? कब ?
**उत्तर** : १९९३ तक संभावना । हल्का योग है ।

**सुनील कुमार, पटना**
**प्रश्न** :राजनीति और फिल्म में मुझे कौन क्षेत्र उन्नति प्रदान करेगा ? रत्न सुझायें ?
**उत्तर** : राजनीति मोती धारण करें ।

**वीणा प्रसाद, नयी दिल्ली**
**प्रश्न** :मेरे भाग्य में पूर्ण सुख शांति, सबसे अच्छा समय कब ?
**उत्तर** : अभी आपको शनि की साढ़े साती चल रही है । साढ़े साती के बाद उत्तम समय प्रारंभ होगा ।

**सिद्धार्थ श्रीवास्तव, कटनी**
**प्रश्न** :पी.ई.टी. में प्रवेश संभव ? यदि हां तो कब ?
**उत्तर** : अगले वर्ष संभावना है ।

**रमेश चंद्र, कटिद्वार (गढ़वाल)**
**प्रश्न** :आत्म ज्ञान कब व जीविका का माध्यम क्या होगा ?
**उत्तर** : आपको केतु की महादशा चल रही है जिसमें आपका आध्यात्मिक उत्थान होगा । व्यवसाय ज्यादा सहायक रहेगा ।

**क.ख.ग., गाजियाबाद**
**प्रश्न** :गज केसरी और महा साम्राज्यधिपति योग कब घटित होगा ? रत्न भी बतायें ?
**उत्तर** : ये दोनों योग राहू की महादशा में घटित होंगे । नीलम पहनें ।

**प्रभात दुबे, बिलासपुर**
**प्रश्न** :प्रमोशन कब तक, रत्न बतायें ?
**उत्तर** : हीरा धारण करें तुरंत प्रमोशन होगा ।

**विनोद कोहली, शाहदरा**
**प्रश्न** :क्या संतान योग है । अगर हां तो कब तक ?
**उत्तर** : संतान योग बराबर है । १९९३ के अंत से पूर्व ।

**डॉ. सी.पी. तिवारी, इंदौर**
**प्रश्न** :राजनीति में सफलता कब ? भाग्योदय कारक रत्न सुझायें ?
**उत्तर** : शनि की महादशा में राजनीति में सफलता मिलेगी । नीलम धारण करें ।

**गीतांजली गर्ग, मेरठ**
**प्रश्न** :शादी कब होगी ?
**उत्तर** : १९९२ में ।

**बलबीर चड्ढा, दिल्ली**
**प्रश्न** :वर्तमान में चल रहे मुकदमे का हल कब तक तथा किसके पक्ष में होगा ?
**उत्तर** : आपके पक्ष में नहीं रहेगा ।

**पीताम्बर दत्त, टनकपुर (नैनीताल)**
**प्रश्न** :मेरे पिता लापता हैं, कब तक मिलने की संभावना है ?
**उत्तर** : आपकी स्पष्ट कुंडली नहीं है ।

**रोमा रानी, बोकारो**
**प्रश्न** :क्या मुझे मेडिकल में प्रवेश मिलेगा ? कब तक ?
**उत्तर** : हाल फिलहाल नहीं ।

**अजय कुमार, गया**
प्रश्न :शादी कब तक ? पत्नी कैसी ?
उत्तर : शादी अप्रैल '९२ से पूर्व । पत्नी सुंदर एवं दक्ष होगी ।

**संजीव कुमार, मथुरा**
प्रश्न :इस वर्ष आई.ए.एस. में सफलता मिलेगी या नहीं ?
उत्तर : संभावना है ।

**ए.एल. माहेश्वरी, झाबुआ**
प्रश्न :बीमारी से कब छुटकारा मिलेगा ? अच्छा समय कब आएगा ?
उत्तर : अभी समय लगेगा ।

**श्रीमती तारा देवी, अल्मोड़ा**
प्रश्न : हमारा मकान कब बनेगा ?
उत्तर : मकान चार वर्ष के भीतर ।

**सुनील उपाध्याय, नयी दिल्ली**
प्रश्न :व्यवसाय में सफलता कब तक ? अनुकूल रत्न सुझायें ?
उत्तर : व्यवसाय की दृष्टि से सफलता १९९२ के उत्तरार्द्ध से । पुखराज धारण करें ।

**अ.ब.स., गया (बिहार)**
प्रश्न :क्या गर्भस्थ शिशु पुत्र है ?
उत्तर : नहीं ।

**डॉ. त्रिभुवन नाथ शर्मा, सागर (म.प्र.)**
प्रश्न :स्थायी समाधान जीविका का,किस रूप में, कब तक ?
उत्तर : अध्यापन, ज्यादा उपयुक्त रहेगा ।

**अमीकर मंगल, गोरखपुर**
प्रश्न :मेरा बी.ए. की प्रवेश परीक्षा में चुनाव हो जाएगा ?
उत्तर : नहीं ।

**सुधीर अग्रवाल, किरनपुर**
प्रश्न :जो कार्य हाथ में लिया है, कब तक पूर्ण होगा ? उपयुक्त रत्न सुझायें ?
उत्तर : कठिनाईयों के साथ । नीलम धारण करें ।

**पूनम शर्मा, दयाल गंज (प्रतापगढ़)**
प्रश्न :शैक्षिक एवं वैवाहिक जीवन कैसा होगा ?
उत्तर : अपनी पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान दें । विवाह की चिंता छोड़ें ।

—डी-२/२, जनकपुरी नयी दिल्ली-११०५८

११४

नाम
जन्म- तिथि (अंग्रेजी तारीख).....................
महीना .......................सन.................
जन्म-स्थान.............. जन्म-समय.............
वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण..............
...............................................
पता...........................................
...............................................
आपका एक प्रश्न................................
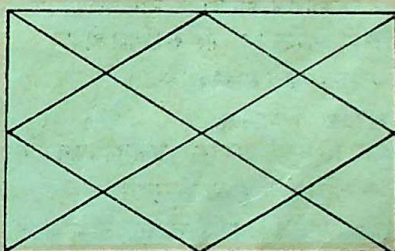
**इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें**
संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि—११४)
'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
अंतिम तिथि : २० अगस्त, १९९१

# और अंत में

## आसमान सूखा है धरती है गीली
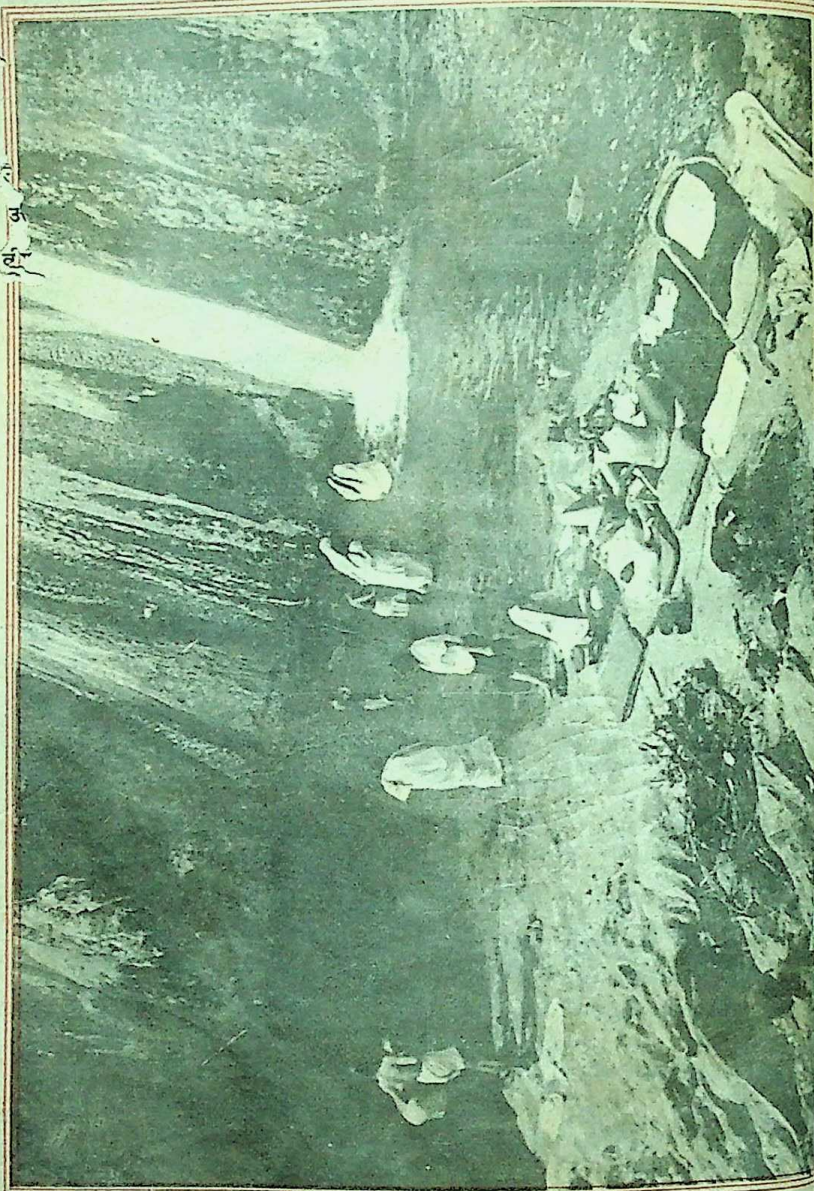
दी हिंदुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिंदुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित

१८-२०, कस्तुरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१
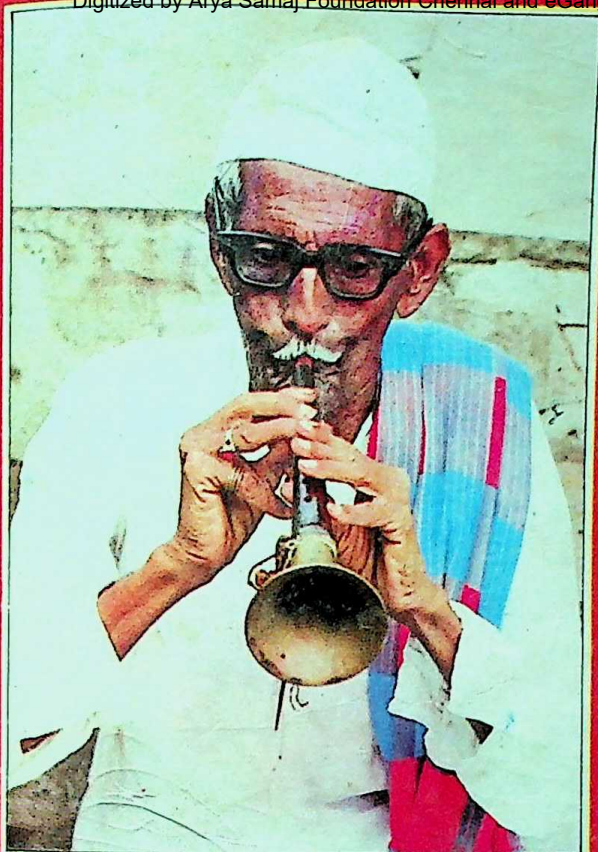
## समस्या-पूर्ति— १४५

## शहनाई

समस्या-पूर्ति साहित्य की पुरानी विधा है। हमने उसे फिर से जीवित किया है। यहां प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और नीचे का शीर्षक पढ़िए, इसे लेकर आपको एक छंदबद्ध कविता लिखनी है। रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की हो। समस्या-पूर्ति के परंपरागत नियमों के अनुसार चित्र के नीचे दिये शब्द कविता के अंत में ही आने चाहिए।

कृपया ध्यान दें :

१. समस्या-पूर्ति केवल पोस्टकार्ड पर भेजें। लिफाफे में भेजी गयी प्रविष्टि खोली ही नहीं जाएगी।
२. समस्या-पूर्ति संपादक के व्यक्तिगत नाम से नहीं भेजें। ऐसी प्रविष्टियों पर विचार नहीं किया जाएगा।
३. एक बार पुरस्कृत व्यक्ति की रचना यथासंभव छह माह तक दोबारा पुरस्कृत नहीं की जाएगी।

प्रथम पुरस्कार-१२५ रु. द्वितीय पुरस्कार-१०० रुपये तृतीय पुरस्कार-७५ रुपये

अंतिम तिथि : २० अगस्त, १९९१

सितम्बर '९१
कादम्बिनी
भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिक
संसद में शून्यकाल
संविधान में व्यवस्था नहीं
उत्तर प्रदेश :
देश का केंद्र प्रदेश
जेबकतरे : पुलिस के
लिए वरदान
निर्वाह व्यय
रुपये
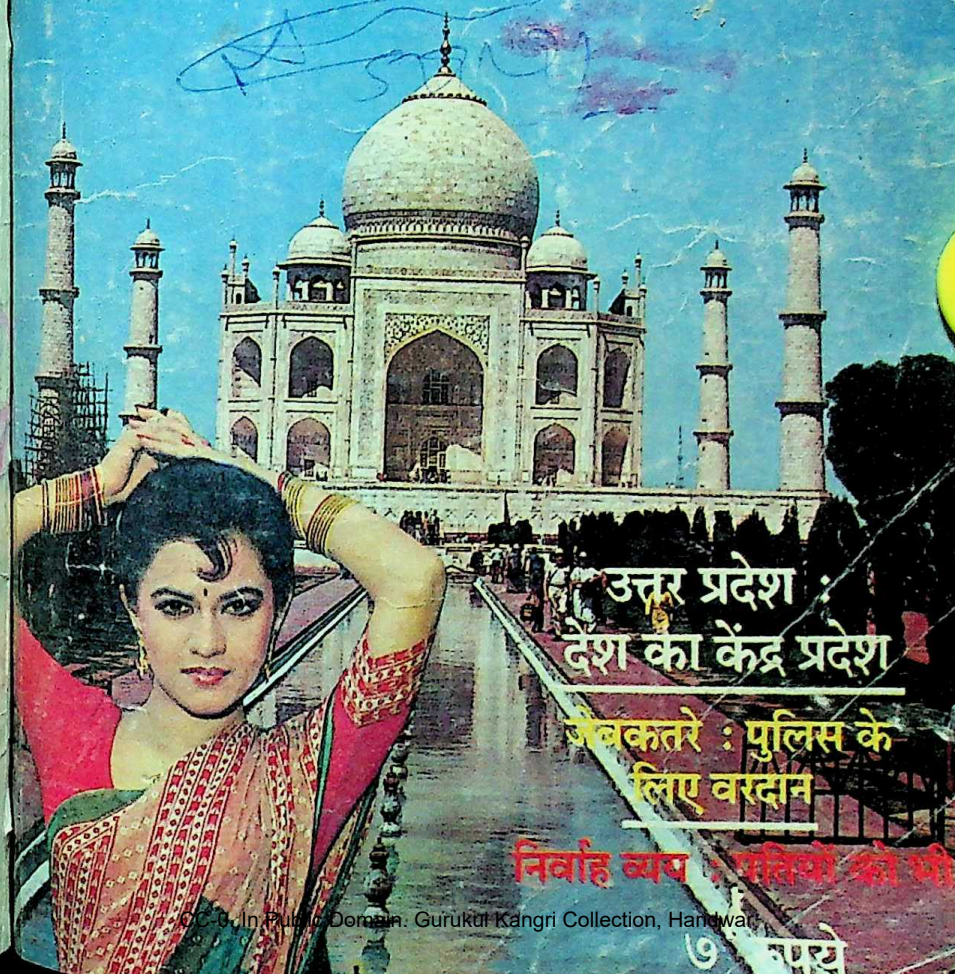
ये बात सिर्फ एक नाम की नहीं है। ये बात है एक शुरुआत की। ऐसी बेहतर जिन्दगी की शुरुआत जो आप दे सकते हैं कमला को। कमला का तो भला होगा ही, पर आपको अनुभव होगा एक ऐसे सुख का, एक ऐसे गर्व का, जिसे शब्दों में बताना बहुत मुश्किल है।

काम न तो कठिन है, न इसे चाहिए बहुत ज्यादा समय। चाहिए तो बस विश्वास, कुछ लगन। अपने पड़ोस के किसी अनपढ़ को अपनाकर हर रोज थोड़ा बहुत पढ़ाइए। इतना कि उसे अपना राशन कार्ड बनवाना आ जाए। भले बुरे की पहचान करना आ जाए। वो अंध विश्वास की धुंध के परे देख सके। छोटे स्वस्थ परिवार का मतलब समझ सके। एक बेहतर जिन्दगी की नींव रख सके।

आप बस हाथ बढ़ाइए, आपके साथ है राष्ट्रीय साक्षरता मिशन जो आपको शुरुआत की जानकारी दे सकता है। अब कलम उठाइए और साथ दिया कूपन भरकर भेजिए।

सच मानिए, आप किसी कमला को ऐसी जिन्दगी दे सकते हैं। जिसे देकर आपको होगा एक अनोखा गर्व। गर्व, किसी को नाम देने का। गर्व, किसी की जिन्दगी को नई शुरुआत देने का।

# चलो पढ़ाएं, कुछ कर दिखाएं

जी हाँ, मैं किसी को पढ़ाकर उसकी ज़िन्दगी बेहतर बनाना चाहता/चाहती हूँ.
कृपया मुझे, पढ़ाने की जानकारी इस भाषा में भेजिए : ____________

नाम : ____________________

____________________

पता : ____________________

____________________

____________________

भेजिए : राष्ट्रीय साक्षरता मिशन
पोस्ट बॉक्स नं. 9999, नई दिल्ली 110011

# शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

**नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।**

● **ज्ञानेन्दु**

१. **प्रगल्भ**—क. परिपक्व, ख. प्रतिभावान, ग अनुभवी, घ. सुदृढ़।

२. **कर्मोपघाती**—क. बाधक, ख. नाशक, ग. काम बिगाड़नेवाला।

३. **स्वांतःसुखाय**—क. सुखदायी, ख. सुख की इच्छा करनेवाला, ग. आत्मसंतुष्टि, घ. अपना मन खुश करने के लिए।

४. **कुतूहल**—क. उत्सुकता, ख. इच्छा, ग. ज्ञान, घ. विशेषता।

५. **प्रतिपीड़**—क. बेरहमी, ख. कष्ट के बदले कष्ट पहुंचाना, ग. विनाश, घ. भंग करना।

६. **जनश्रुत**—क. अफवाह, ख. प्रसिद्ध, ग. दीर्घकाल से प्रचलित, घ. सुनी-सुनायी।

७. **धर्म्य**—क. परोपकारी, ख. कर्त्तव्यशील, ग. धर्मसंगत, घ. धार्मिक।

८. **अव्याहत**—क. अबाधित, ख. जो प्रयोग में न आ सके, ग. बाधक।

९. **जनाकीर्ण**—क. भीड़भाड़, ख. घनी आबादीवाला, ग. लोगों के बीच, घ. लोगों के दबाव में।

१०. **प्रतिवेश**—क. वेश बदलना, ख. पोशाक, ग. पड़ोस, पड़ोसी, घ. संग।

११. **कांतार**—क. रोशनीवाला, ख. घना जंगल, ग. संबंधी, घ. अंधकार।

१२. **निर्दलन**—क. हराना, ख. कष्ट, ग. नाश करना, घ. पीड़ा न पहुंचाना।

१३. **अघटित**—क. जो ठीक न हो, ख. जो हुआ न हो, ग. अवश्य, घ. अविश्वसनीय।

१४. **जीवनांत**—क. आजीवन, ख. जीवन के अंतिम दिन, ग. मृत्यु, घ. घुल-घुलकर मरना।

१५. **कतर-ब्योंत**—क. रद्द करना, ख. प्रतिरोध, ग. आलोचना, घ. काट-छांट।

## उत्तर

१. ख. प्रतिभावान, कुशल, दक्ष। **प्रगल्भ** होने के कारण ही वह उन्नति के शिखर पर पहुंच सका। (मूल—प्र, गल्भ्)

२. ग. काम बिगाड़नेवाला। **कर्मोपघाती** सदैव निंदा का पात्र बनता है। (कर्म+उपघाती)

३. ग. आत्मतुष्टि या आत्मसंतोष (स्वांतः—मन, सुखाय=सुख के लिए) **स्वांतः सुखाय** तुलसी रघुनाथ गाथा।

४. क. उत्सुकता, उत्कट इच्छा। उस घटना ने **कुतूहल** पैदा कर दिया।

५. ख. कष्ट के बदले कष्ट पहुंचाना, सताना। **प्रतिपीड़** की भावना त्याग कर मनुष्य को समाज की सच्ची सेवा करना चाहिए। (मूल—प्रति, पीड़्)

६. ग. दीर्घकाल से प्रचलित। इसमें नया क्या है, यह तो **जनश्रुत** है। (जन, श्रुत)

७. ग. धर्मसंगत, धर्मसम्मत। मनुष्य के लिए वही बात ग्रहणीय है जो **धर्म्य** है। (धर्म से)

८. क. अबाधित, निर्बाध । उसका कार्य **अव्याहत** रूप से चल रहा है ।
(व्याहत=अवरुद्ध)

९. ख. घनी आबादीवाला । अब यह नगर **जनाकीर्ण** हो गया है । (जन+आकीर्ण=भरा हुआ)

१०. ग. पड़ोस । **प्रतिवेश** के साथ सदैव सौहार्दपूर्ण संबंध रखना चाहिए ।
(मूल—प्रति, विश्)

११. ख. घना जंगल । उस तपस्वी ने **कांतार** में अपनी कुटिया बनायी है । (मूल—कांत, ऋ)

१२. ग. नाश करना, टुकड़े-टुकड़े करना । युद्ध में शत्रुपक्ष के **निर्दलन** की चेष्टा की जाती है ।
(मूल—निर्, दल्)

१३. ख. जो हुआ न हो । **अघटित** की पहले से ही कल्पना करना ठीक नहीं ।

१४. ग. मृत्यु । **जीवनांत** के पश्चात मनुष्य की स्मृति ही शेष रह जाती है । (जीवन+अंत)

१५. घ. काट-छांट । उसकी योजना में काफी **कतर-ब्योंत** की गयी है । (बोलचाल)

---

## पारिभाषिक शब्द

**Cost of living =जीवनयापन-व्यय**
**Standard of living =जीवन-स्तर**
**Recognition -प्रस्वीकृति, मान्यता**
**Mandate=जनादेश**
**Subconscious =अवचेतन**
**Worksheet =कार्यपत्रक**
**Wear and tear =टूट-फूट**
**Variation=विभिन्नता**
**Unofficial =अशासकीय**
**Unanimity =मतैक्य**

# ज्ञान-गंगा

***कथनेन विनाप्याशां पूरयंति हि साधवः । प्रतिगेहं भासते हि विवस्वान् कथनं विना ॥***

(नीतिसंग्रह २/२४)

—उत्तम पुरुष बिना किसी याचना के ही दूसरों की अभिलाषा को पूर्ण कर देते हैं । सूर्य निश्चित रूप से सभी के घर को बिना किसी अनुरोध किए ही प्रकाशित करता है ।

***सूरयो विश्वा आशास्तरीषाणी ।***

(ऋग्वेद ५/१०/६)

—विद्वान सब आशाओं (दिशाओं अथवा कामनाओं) को पार करने में समर्थ हैं ।

***यश्चकार स निष्करत् ।***

(अथर्ववेद २/९/५)

—जो सदा कार्य करता रहता है, वही अभ्यासी उस कार्य की निष्कृति (पूर्णता-संपन्नता) करने की योग्यता प्राप्त करता है ।

***प्रत्यासन्न—विनाशानामुपदेशो निरर्थकः ।***

(राजतरंगिणी ७/५५)

—जिनका विनाश प्रत्यासन्न (सन्निकट) होता है, उन्हें उपदेश देना निरर्थक है ।

***एकांतेन कारुण्यपरः करतलगतमपि अर्थं न रक्षितुं क्षमः ।***

(सोमदेवनीति वाक्यामृतम् ६/३६)

—जो मनुष्य अत्यंत करुणाशील और कृपालु होता है, वह अपनी हस्तगत वस्तु की भी रक्षा नहीं कर सकता है ।

***कर्मसु चाऽमृतम् ।***

(मुंडक उपनिषद्)

—कर्मों में अमृत निवास करता है ।

**(प्रस्तुति—महर्षिकुमार पांडेय)**
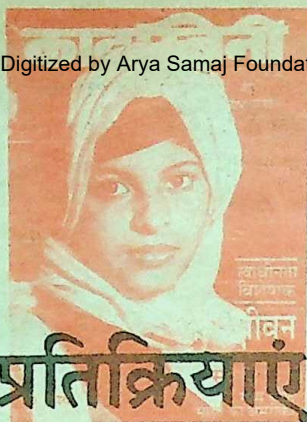
# प्रतिक्रियाएं

## पुरस्कृत पत्र

### कारागार ही जिसका घर

'कादम्बिनी' अगस्त '९१ का स्वाधीनता विशेषांक, उन शहीदों, जो 'दरोदीवार पर हसरत की नजर करते हुए अपने अहले-वतन को खुश रहने का आशीर्वाद देते हुए अपने अंतिम सफर पर रवाना हो गये थे और उन स्वतंत्रता-संग्राम सेनानियों, जिन्होंने मां की मुक्ति तक अपने परिवार को छोड़ कृष्ण जन्मभूमि-कारागार-को ही अपना दूसरा घर मान लिया था, के प्रति कृतज्ञतापूर्ण श्रद्धांजलि या स्मरणांजलि ही है। वास्तव में तो उनका विस्मरण एक प्रकार से कृतघ्नता ही होती जिसके लिए शास्त्रों में भी कोई निष्कृति नहीं है।

यद्यपि गोधाती, सुरापी, चोर और वचन भंग करनेवाले के लिए निष्कृति है।

**गोध्यने चैव सुरापे च चौरे भग्नव्रते तथा।**
**निष्कृतिर्विहिता सद्भिः कृतघ्ने नास्ति निष्कृति ॥**

—वाल्मीकि रामायण

अतः आपके द्वारा प्रकाशित यह अंक इस कृतघ्नता का परिहार करने का सद्प्रयास है। इस अंक ने अब से लगभग ६० वर्ष पूर्व कलकत्ता से प्रकाशित साप्ताहिक 'हिन्दूपंच' के विशेषांक—बलिदान अंक—और 'चांद' के 'फांसी अंक' की याद ताजा कर दी जो प्रकाशित होते ही तत्कालीन ब्रिटिश सरकार के कोप का शिकार होकर जब्त कर लिए गये थे। अतः इस अंक के प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई स्वीकारें।

श्री एस. पाठक का 'मध्यप्रदेश : भारत का अमरीका' लेख मध्यप्रदेश की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि स्पष्ट करनेवाला और काफी खोजपूर्ण है। पर इसमें एक छोटी-सी तथ्यात्मक भूल भी है। लेखक का यह उल्लेख कि पूर्व मध्यभारत के मंदसौर जिले का सुनेल परिवृत्त भी इसमें शामिल है। तथ्यात्मक रूप से सही नहीं है। वास्तव में पूर्व इंदौर राज्य की तहसील और मध्यभारत बनने के बाद से 'टप्पा' रहा। यह क्षेत्र राज्य पुनर्गठन के समय पुरानन मध्यभारत से निकालकर नये राजस्थान को अंतरित कर दिया गया था और अब राजस्थान में ही है।

**व्यंकटराव यादव**

ए-१८/१०, वेदनगर, उज्जैन-४५६०१०

## प्रोत्साहन पुरस्कार

### उत्तराखंड में भी

'कादम्बिनी' के जुलाई अंक में—'बिहार के नचनियों-बजनियों की लोमहर्षक दास्तां' पढ़ी। बिहार की तरह ही उत्तराखंड (कुमाऊं-गढ़वाल) में भी पीढ़ियों से सांस्कृतिक परंपराओं का वाहक यह वर्ग पर्वतीय संस्कृति का एकमात्र दर्पण है। यहां ऊंचे-ऊंचे पर्वतों पर तथा कभी-कभी देवालयों में अरुणोदय एवं सायंकाल बजती नौबत तो सारे पर्वतीय अंचलों में संगीत का दैवीय वातावरण प्रदान करती है।

उत्तराखंड में नचनियों-बजनियों के वर्ग में अनेक कलाकार हैं जैसे—ढोली (ढोलक वादक), हुड़किया, हुलेरे (नर्तक), मशकवादक आदि प्रमुख हैं । कुछ दशक पूर्व आर्थिक रूस से अक्षम होते हुए भी इस वर्ग के प्रति पर्वतीय समाज के घर-घर में सम्मान एवं अपनेपन का दृष्टिकोण था । आधुनिकता ने इस महत्त्वपूर्ण वर्ग की उपयोगिता को नकारकर इनके लिए गहरा संकट उत्पन्न कर दिया है । सरकार की आरक्षण योजना से भी अन्य अनारक्षित वर्गों द्वारा मिलनेवाला अपनापन इनसे अनायास ही छिन गया है ।

**—नवल पाठक**

ग्रा.—कराला डिबाली, पो.—संगौड़,
जि.—पिथौरागढ़ (उ.प्र. पिन—२६२५२१,
पिथौरागढ़

## कादम्बिनीमय बिहार

'कादम्बिनी' का अगस्त १९९१ अंक स्वाधीनता विशेषांक के रूप में देखकर और पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई । जुलाई '९१ में बिहार कादम्बिनीमय ही रहा और 'कादम्बिनी महोत्सव' का प्रथम अवसर बिहार को ही मिला ।

अगस्त अंक में जेल-जीवन पर रोचक सामग्रियां हैं । किंतु, श्री रामवृक्ष बेनीपुरी पर कुछ भी विवरण नहीं है, देखकर क्लेश हुआ । लोकनायक जयप्रकाश नारायण को अगस्त क्रांति का अग्रदूत बनानेवाले बेनीपुरी जी ही थे । वे जयप्रकाशजी के साथ जेल में भी रहे । बेनीपुरी की पुस्तकें 'कहीं की पर्दा' और 'जंजीरें और दीवारें' 'जेल-जीवन की सच्ची कहानियां' हैं । 'नयी धारा' में जेल-डायरी धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुई थी । 'आम्बृरपाली' की रचना भी जेल में ही हुई थी । उत्कृष्ट संपादन और सूचनाप्रद सामग्रियों के सुचयन के लिए हार्दिक बधाई स्वीकार करें ।

**श्रीरंग शाही**

गोपालगंज बिहार

**(बेनीपुरी जी बिहार ही नहीं देश के विख्यात विद्वान रहे हैं । उनकी उपेक्षा जानबूझकर नहीं की गयी । यह शायद प्रसंगवश हो गया ।—सं.)**

## वीरता बांझ हो जाएगी

'कादम्बिनी' ने स्वाधीनता दिवस के उपलक्ष्य में देशभक्त शहीदों के जेल-जीवन के रोमांचक व प्रेरक अनुभव प्रकाशित कर निःसंदेह उन्हें सच्ची हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की है ।

सबसे कम उम्र के शहीद खुदीराम बोस का भी पुण्य स्मरण आवश्यक होगा क्योंकि उन्हें भी ११ अगस्त १९०८ को १८ वर्ष की आयु में कलकत्ता की जेल में फांसी दी गयी थी ।

इस अंक की सभी घटनाएं दर्शाती हैं—शहीदों की उस उत्सर्ग भावना को । जिन्होंने मां-भारती के चरणों के आगे नर-मुंडों की माल को भी तुच्छ समझा । फांसी के फंदे को जिन्होंने जीवनसंगिनी माना, प्यार किया उसी से, ब्याह रचाया उसी से, और हो गये उसी के ।

इस अंक की समस्त सामग्री प्रेरणास्रोत है, मार्गदर्शक है—उस गुमराह युवा-पीढ़ी के लिए जो गतिरोधात्मक आक्रामक, नकारात्मक साधन ठेस पहुंचाते हैं उस गरिमामय थाती को, जो शहीदों ने हमें सौंपी है ।

जिन शहीदों ने राष्ट्र के दर्द को सच्चे अर्थों में जाना, उस दर्द को हम यदि कुछ अंशों में भी महसूस करें तो निःसंदेह हम एक उस नये भारत

की नींव रख सकते हैं, जिसका सपना उन शहीदों की आंखों में मृत्युपर्यंत बसा रहा।

उनके जेल जीवन की यातनाओं व पीड़ाओं को महसूस करें जो हमारे इस स्वतंत्र भारत की नींव में; मां-भारती के प्राणों में कहीं ना कहीं अवश्य धड़क रही है। कह रही है हमसे कि राष्ट्र से बढ़कर कुछ नहीं होता। श्री सरल जी की पंक्तियां यहां प्रासंगिक होंगी—

प्रेरणा शहीदों से अगर हम नहीं लेंगे
आजादी ढलती हुई सांझ हो जाएगी
यदि वीरों की पूजा हम नहीं करेंगे तो
यह सच मानो वीरता बांझ हो जाएगी

—जगदीश वर्मा
महिदपुर (उज्जैन)-४५६४४३

### प्रेरणा की घूंटी

अगस्त '९१ के अंक में एक से एक भावप्रवण लेख पढ़ने को मिले। जेल में दी जानेवाली यातनाओं को पढ़कर रोंगटे खड़े हो गये। देश को स्वतंत्रता इतनी कठिनाइयां झेलने के बाद मिली है, उसका मूल्य नयी पीढ़ी समझ नहीं पाती, क्योंकि उन्होंने आजादी के वातावरण में पहली सांस ली है इसलिए वे नहीं जानते कि गुलामी क्या होती है। गुलामी की जंजीरें काटने के लिए देशवासियों को क्या-क्या जुल्मो-सितम सहने पड़े, उससे रूबरू करवाने के लिए आज हर पत्र-पत्रिका का दायित्व बनता है। आज नयी पीढ़ी को वास्तव में एक प्रकार का नया जोश, उमंग और प्रेरणा की घूंटी देने की आवश्यकता है, ताकि वे दिग्भ्रमित न हो जाएं। स्वतंत्रता सेनानियों के उदाहरणों को सामने रख मिली हुई स्वतंत्रता का सदुपयोग करें—ऐसा देश का वातावरण बनाने की समय की सख्त मांग है। जिससे देश की नींव को नैतिकता, पुख्ता सिद्धांतों और मानवीयता का पुष्ट आधार मिल सके। आज प्रचलित भौतिकतावाद, पश्चिमीकरण और बढ़ते नशीले व्यसनों ने देश की नींव को हिलाकर रख दिया है। ऐसे प्रेरणादायी लेखों की सीमेंट से ही उसे पुनः जोड़कर मजबूत किया जा सकता है। इतने सार्थक अंक के लिए कृपया साधुवाद स्वीकारें।

—नीति अग्निहोत्री
वंदनानगर इंदौर (म.प्र.)

कालचिंतन सभी के सम्मुख यथार्थ प्रस्तुत करता है जिसके अंतर में से समय के हस्ताक्षर तथा चिंतन के अंकुरण होते हैं। आज जबकि मंहगाई का हाहाकार मचा है। फिर भी एक गृहिणी अपने बजट में से किसी तरह व्यवस्था कर 'कादम्बिनी' पत्रिका पढ़ने के लिए जोड़-तोड़ कर लेती हैं, किंतु यदि कुछ अपने भीतर की भावना को व्यक्त करना चाहे तो कैसे ? 'टाईप' कराने की दिशा में एक अहिंदी राज्य में 'हिंदी' टाईप कितना मंहगा पड़ता है,

—भारती पांडे
बड़ौदा (गुजरात)

### जहां सभ्यता की किरण

भारत की पवित्रतम धरा जहां अनेक मसीहा अवतरित हुए और संपूर्ण विश्व को शांति, प्रेम, दया एवं सद्भावना का अमर संदेश दिया वही भारत-भूमि आज ऐसे लोकनायकों के अभाव में अशांति, आतंकवाद समस्या और संघर्षों का पर्याय बन चुकी है।

वह देश जहां की संस्कृति सबसे गौरवशाली और समृद्ध समझी जाती है आज अपने ही देश में अपमानित की जा रही है। भारत में आज

कोई राष्ट्रभाषा है तो सम्मानरहित, संस्कृति है तो निरीह अवस्था में, जिस राष्ट्र का भूत स्वर्णिम रहा हो, किंतु वर्तमान समस्यायें व मानवीय संघर्षों में जी रहा है आज उस भारत का निश्चत व सुनहरा भविष्य बताना कठिन है।

वह राष्ट्र जहां से सभ्यता की प्रथम किरण प्रस्फुटित हुई थी आज असभ्यता व अज्ञानता के गहरे अंधकार में डूब चुका है। मानव मानव का दुश्मन है।

अगर यही हाल रहा तो २१वीं सदी का इतिहास इनसानी खून से लिखा जाएगा और जिसके उत्तरदायी भी होंगे विधाता की सर्वोत्तम कृति इनसान।

—रागिनी श्रीवास्तव
देवरिया (उ.प्र.)-२७४००१

### साहित्य महोत्सव

'कादम्बिनी साहित्य महोत्सव' के माध्यम से आपने युवा/नये साहित्यकारों को प्रोत्साहन देने का जो यज्ञ शुरू किया है उसके लिए आपकी जितनी प्रशंसा की जाए कम होगी।

कादम्बिनी क्लब की स्थापना का विचार अति उत्तम है।

श्यामकुमार दास
अलीगढ़

इंदौर नगर में 'कादम्बिनी साहित्य' महोत्सव आयोजित कर आपने हमारे नगर पर बहुत उपकार किया है। महोत्सव ने युवा रचनाकारों में उत्साह का संचार किया है।

रुचिर संस्था आपका, कादम्बिनी परिवार का आभार व्यक्त करती है।

—डॉ. रवीन्द्र पहलवान
इंदौर

अनेक पत्र बिहार पर आये हैं जिनका सार उपरोक्त पत्र जैसा है।

**रामजय प्रताप सिंह, पूर्वी चंपारण; मुन्नू प्रसाद खवाड़े, देवघर (बिहार)। परिमल भारती, दिलीप, 'दिव्य' मुजफ्फरपुर। रामशरण सिंह, जमशेदपुर। अन्विता त्रिपाठी, कदमकुआं, पटना। शंकरकुमार सिंह, दरभंगा। वीरेन्द्र कुमार सिंह, मुजफ्फरपुर। वरुण कुमार मिश्र, गोपालगंज।**

वर्ष ३१, अंक ११, सितम्बर १९९१

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

## निबंध एवं लेख



## स्थायी स्तंभ



मुखपृष्ठ पारदर्शी : (युवती) प्रमोद भानुशाली, (ताजमहल) देवव्रत बनर्जी।

कार्यकारी अध्यक्ष

नरेश मोहन

संपादक

राजेन्द्र अवस्थी



## कहानियां एवं हास्य-व्यंग्य



## कविताएं



## सार-संक्षेप



## संपादकीय परिवार

सह-संपादक : **दुर्गाप्रसाद शुक्ल**, वरिष्ठ-उप-संपादक : **प्रभा भारद्वाज, भगवती प्रसाद डोभाल**, उप-संपादक : **डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह**, प्रूफ रीडर : **प्रदीप कुमार**, कला विभाग प्रमुख : **सुकुमार चटर्जी**, चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त, मूल्य : **वार्षिक** : ७५ रुपये, **द्विवार्षिक : १४५ रुपये, विदेशों में : वायुसेवा से २९० रुपये वार्षिक समुद्री जहाज से : १३५ रुपये वार्षिक, पता : संपादक 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।**

# कालचिंतन

—भागता हुआ बेगाना समय आकर ठहर गया, सहमा-सा लड़खड़ाता बोला : मैं परीक्षा लेने आया हूं । कितना धैर्य है ?

—हां, हमारे धैर्य की परीक्षा का समय है यह ।
—परीक्षा बेहिचक भयावह होती है और इस भयावहता को स्वीकार कर लिया जाए तो वह पर काट देती है । समय आगे निकल जाएगा, हम वहीं खड़े रहेंगे ।
—हम वहीं खड़े रहने के लिए नहीं जन्में; जो विपरीत सोचते हैं वे अजन्मे ही रहते तो ठीक था, भार तो नहीं बनते इस धरा पर, समाज के माथे का कलंक या जीवन के चरम सुख के दगाबाज दुश्मन-दोस्त !
—हमारी यात्रा समय को समेट कर उसे कैद करने के लिए है और वस्त्रों के विशाल बादल में उसे बदलकर अपने लिए स्वयं उपहार प्राप्त करने की महान अभिलाषा है ।
—यह अलग है कि समय चिकने द्रव्य-सा निरंतर फिसलना चाहता है और अटूट चेष्टारत रहता है कि वह कालातीत हो, किसी का कैदी न बने और अपने बाहुपाश में सर्भा कुछ समेटता हुआ आगे बढ़ता जाए । इस प्रक्रिया में वह सभी को कुचल सके और काल के अनंत गर्त में विस्मरण के लिए छोड़ दे !
—यही हमारी परीक्षा के क्षण हैं । यहीं हमारा धैर्य धर्मकांटे पर आ खड़ा होता है ।
—सोचिए तब !
—कब, किसने हमारे धैर्य की परीक्षा नहीं ली !
—सत्ताधारी जो हो, जैसा हो मदांध होता है ।
—सत्ताधारी प्रकाश के छलावे में अंधकार को बांटता है, यह समझे बिना कि एक दिन वह स्वयं इस छल का शिकार होगा ।
—इसीलिए एक सत्ता दूसरे को सदैव नकारती रही है । एक सत्ताधारी अपने आगे-पीछे को बौना कहकर अपनी विराटता का खोखलापन प्रस्तुत करता है ।
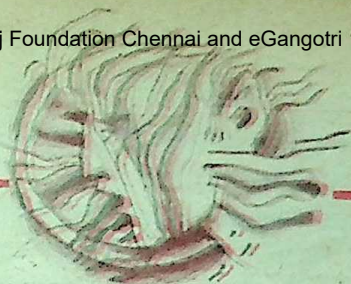
—समय और धैर्य के नियामक उसे कुचलकर इतिहास के कूड़ेघर में फेंक देते हैं ।

□

—सोचने का क्षण है यह :

● जंगली आग से कभी समूचा जंगल नहीं जलता । जलती हैं मात्र झाड़ियां, कूड़ा और करकट

● बांसों के आलिंगन से लगी आग प्यार के दुर्लभ क्षणों का साक्षी है, बांस कभी मरते नहीं

● घास उगती है, फैलती है, सूखती है, फिर उगती है और इस निरंतर चक्र में भी वह सदाबहार बनी रहती है, घास कभी मरती नहीं

● विवशता देखिए; बांस न फूले तो बांझ कहलाये, फूले तो अकाल से भयग्रस्त होने का संकेत दे और बंसलोचन पैदा करे तो पूजनीय बने—एक स्थिति दर्जनों विरोधाभास !

● बांस विरोधाभासों को झेलता है और जीवित ही नहीं रहता, और भी कोपिले छोड़ता है; तभी तो वह भोजन भी है और मदांध सत्ताधारियों के हाथों निरीह जनता का भक्षक भी ।

● विवशता में जीता है बांस, बांस मरता नहीं !

—ऐसे अनेक तत्व हैं, सोचिए तो सामने उतरेंगे वे ।

—धैर्य की परीक्षा भले ली जा रही हो लेकिन लेने वाली सरकारी गाड़ी है और सरकारी बैल ।

—सरकार कोई चिड़िया नहीं है ।

—सरकार शहतूत का पेड़ नहीं है जो रेशम दे सके ।

—सरकार पलाश वृक्ष नहीं है जो वह लाख दे सके जिससे सुहाग का बोध होता है ।

—सरकार न बसंत है

—सरकार न संगीत है

—सरकार एक सन्नाटा है जो सबसे भारी और दुखदायी होता है ।

—सरकार एक कुरसी है जिसके नीचे स्प्रिंग लगे हैं, थोड़ा जोर से बैठने का प्रयत्न जो भी करेगा औंधेमुंह नीचे गिरेगा ।
—सत्यावरण में स्पष्ट है कि सत्ता, सरकार और कुरसी कभी एक के हाथ नहीं रहीं ।
—विशाल जन प्रांगण में उठे हुए हाथ उसे यूं खिसका देते हैं जैसे राजा जनक का धनुष एक कालजयी महापुरुष ने हवा की तरह उठा लिया था ।

□

—फिर भय क्यों ?
—परीक्षा-भवन में मजबूत हाथों और भरपूर स्याही से भरी कलम के साथ जाइए ।
—जनसमूह के सामने अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते समय अपने को सदैव उनसे श्रेष्ठ मानिए ।
—मन जब भी टूटने की स्थिति में पहुंचे अपने मस्तिष्क के चेतना द्वार पर दस्तक दीजिए ।
—घड़ी चलाने के लिए जैसे चाबी भरी जाती है, धर्म की परीक्षा लेने वालों के मुंह पर इतिहास के काले पृष्ठ दे मारिए ।

□

—साथ तो आइए !
—संगठित होने में ही श्रेष्ठता है ।
—संगठन भयमुक्त बनाता है ।
—संगठन सामर्थ्य भी है और सहारा भी ।
—संगठन की तुला में दूसरी ओर कितना भी कुछ रख दीजिए मूल पलड़ा जमीन से हिलेगा भी नहीं ।
—जीवन ज्योति है; जीवन सार्थक रहकर अमरत्व तक पहुंचने के लिए है ।
—अमरत्व तक पहुंचते वही हैं जिनकी अपनी बौद्धिकता पर अटूट आस्था है ।
—फाइलों में हस्ताक्षर करने वाले हाथ अपने जीवन का इतिहास मिटाते हुए कोरे कागज पर मात्र एक धब्बा छोड़ते हैं । दूसरा उसी कोरे कागज का प्रयोग अपने हित में करता है ।

□

—देखिए इसे भी :
—जम्हाई लेते हुए एक व्यक्ति खड़ा था, हिसाब दे रहा था आधी रात के बाद तक जागने का और सूरज निकलने के पहले उठने का ।

—डायरी के काले कारनामों को वह अपनी व्यस्तता का अभिषेक बता रहा था।

—भीड़ और भीड़—बस, लोकप्रियता का मानदंड उसके लिए यही था।

—खाली कुरसियां देखकर उसकी आंखें नम हो जाती थीं और तब वह बाज की तरह अपने सहायकों के सामने चीखता और दहाड़ता था। सहायक दुबके हुए थे। कौन मुंह खोले और इस युगात्मक बोध का स्पंदन अनुभव करे कि भीड़ की कमी नहीं थी, उसे आने नहीं दिया गया!

—उस व्यक्ति के पास समय नहीं है; अनजाने बार-बार दोहराता है कि जनकल्याण का ठेका उसी ने खरीदा है।

—उसमें संयम नहीं है,
उसमें धैर्य नहीं है,
वह मात्र जयकार के नारों की सार्थकता को पहचानता है।

—पहचानने दीजिए उसे, आइए हम चलें किसी झील में, नाव पर सवार हों, चांदनी रात हो, ठंडी हवाएं और एक हम सफर। सरकस के जोड़े हों, झील नीली हो या काली वह प्राण-तत्व में लबरेज है। सुख के इन क्षणों को सम्हालें, पकड़ें, जीतें और मन तथा मस्तिष्क को नयी ताजगी दें, ताकि अगले क्षण अहंकारी और दंभियों को यह एहसास करा सकें कि समय हमारा हमसफर था, वही समय उन्हें धीरे-धीरे मुट्ठी में पीस रहा है।

□

—वह परीक्षा लेने आया है न?

—निर्विघ्न, दृढ़ता से परीक्षा दे दीजिए, परिणाम की चिंता इसलिए न कीजिए क्योंकि परीक्षा तो वह ले लेगा, प्रश्नपत्र वह जांच नहीं सकेगा, सुबह का पहरुआ उसके रात के काले कारनामों में अनंत विराम लगा देगा!

# कादम्बिनी साहित्य महोत्सव : उपलब्धियां

हमने घोषणा की थी कि युवा रचनाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए हम 'कादम्बिनी साहित्य महोत्सव' का आयोजन करेंगे। तदनुसार पहला आयोजन २१ और २२ जुलाई को हमने पटना में आयोजित किया। उसके तत्काल बाद दूसरा आयोजन इंदौर में ४ और ५ अगस्त को आयोजित किया गया। इन दोनों आयोजनों के विस्तृत विवरण से स्पष्ट है कि 'कादम्बिनी साहित्य महोत्सव' नयी प्रतिभाओं के लिए साहित्य जगत में प्रवेश का सिंहद्वार सिद्ध हुआ है।

पटना एवं इंदौर में बहुत बड़ी संख्या में युवा रचनाकारों ने आशुलेखन प्रतियोगिता में भाग लिया। पूर्व घोषित योजनानुसार यह प्रतियोगिता दो खंडों में थी—एक खंड कहानी के लिए था और दूसरा निबंध लेखन के लिए।

ब्रजकिशोर मेमोरियल हाल, पटना के खुले प्रांगण में कहानी लिखती युवा लेखिकाएं

रवीन्द्र भवन, पटना के मंच पर बायें से— 'कादम्बिनी' के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी, बिहार विधानसभा के अध्यक्ष श्री गुलाम सरवर, मानव संसाधन विकास मंत्री श्री रामचंद्र पूर्वे, सर्चलाइट प्रकाशन के चीफ एग्जिक्युटिव श्री वाई.सी. अग्रवाल एवं हिंदुस्तान टाइम्स, नयी दिल्ली के प्रसार व्यवस्थापक श्री राकेश शर्मा

निबंध-लेखन के लिए हमने प्रतियोगियों को साहित्य, कला, संस्कृति, इतिहास, पुरातत्व, दर्शन आदि के अतिरिक्त समसामयिक समस्याओं से संबंधित विषय भी दिये थे। युवा रचनाकारों ने प्रायः इन सभी विषयों पर अपने विचार लिखे। अधिकांश निबंध स्तरीय थे और उनमें आज के युवा वर्ग की मानसिकता भी प्रतिबिंबित होती थी। सांप्रदायिकता-जैसी समसामयिक ज्वलंत समस्या के प्रति आज का युवा वर्ग कितना संतुलित और पूर्वाग्रह रहित है, यह हमें इंदौर में प्राप्त निबंधों से ज्ञात हुआ। पिछले एक-दो वर्षों में इंदौर में सांप्रदायिक दंगे हुए हैं और उसका प्रभाव युवा रचनाकारों के मन पर भी पड़ा है। प्रसन्नता की बात यह है कि आज के युवा रचनाकार सांप्रदायिकता से पूर्णतः मुक्त हैं। हमें किसी भी निबंध अथवा कहानी में सांप्रदायिकता की भावना नहीं दिखायी दी। इसके विपरीत इन निबंधों एवं कहानियों में मनुष्य की उदारता, करूणा और पारस्परिक प्रेम की भावना ही व्यक्त हुई। साहित्य के लिए यह एक स्वस्थ लक्षण है कि हिंदी का युवा रचनाकार सांप्रदायिकता की भावना से मुक्त है।

भाषण करते हुए श्री गुलाम सरवर

निबंधों की तरह कहानियों को पढ़ने से भी हमें युवा रचनाकारों से आशा बंधी। उचित मार्गदर्शन के बाद ये सब हिंदी कथा साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर बन सकते हैं, इसमें संदेह नहीं है।
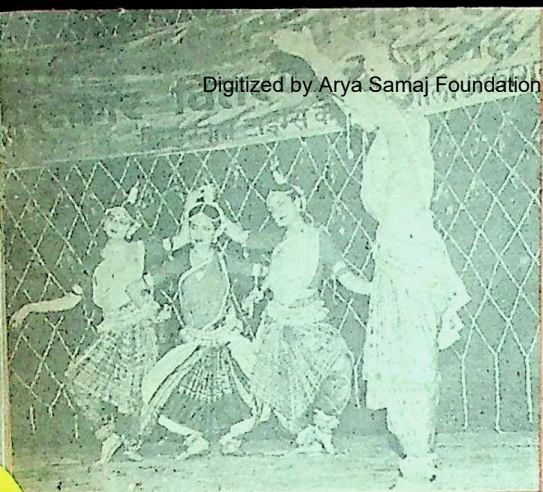
पटना में पुरस्कार वितरण के बाद आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम

केंद्रीय नागरिक उड्डयन एवं पर्यटन मंत्री श्री माधवराव सिंधिया का स्वागत करते हुए 'कादम्बिनी' के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी

हमारे लिए 'कादम्बिनी साहित्य महोत्सव' की एक उपलब्धि यह भी रही कि हमें युवा रचनाकारों के मानस को निकट से जानने-समझने का अवसर मिला । रचनाकारों को भी संपादक की कठिनाइयों का पता लग सका ।

अब प्रस्तुत है, पटना एवं इंदौर में आयोजित 'कादम्बिनी साहित्य महोत्सव' का विस्तृत विवरण :

## पटना के गंगा तट पर

पटना में २१ जुलाई को गंगातट पर स्थित ब्रजकिशोर मेमोरियल हाल के प्रांगण में प्रातः से ही युवा रचनाकार एकत्र होने लगे थे । अनेक युवा रचनाकार गोंडा, हजारी बाग, रांची, मोकामा, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, गया तथा बिहार के अन्य नगरों से प्रतियोगिता में भाग लेने आये थे । ब्रजकिशोर मेमोरियल हाल निबंध लिखनेवाले प्रतियोगियों से पूरी तरह भरा हुआ था । कहानी खंड में भाग लेनेवाले रचनाकार खुले प्रांगण में शामियाने के नीचे बैठे थे । लेकिन अनेक रचनाकारों ने वृक्षों की छाया तले कहानी लिखना पसंद किया । पटना में कुल मिलाकर नौ सौ से अधिक रचनाकारों ने भाग लिया । प्रतियोगिता प्रारंभ होने के पूर्व हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह के प्रसार-व्यवस्थापक श्री राकेश शर्मा ने युवा रचनाकारों का स्वागत किया एवं 'कादम्बिनी'—संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी ने इस प्रतियोगिता एवं महोत्सव की सार्थकता पर प्रकाश डाला । निबंध लेखन के लिए प्रतियोगियों को चौंतीस विषय दिये गये थे, जिनमें से किसी एक विषय पर उन्हें निबंध लिखना था । कहानी लेखन के लिए कोई विषय नहीं दिया गया था । प्रतियोगिता के पश्चात अनेक युवा रचनाकारों ने 'कादम्बिनी'—संपादक से भेंट कर साहित्य संबंधी अनेक विषयों पर चर्चा की ।
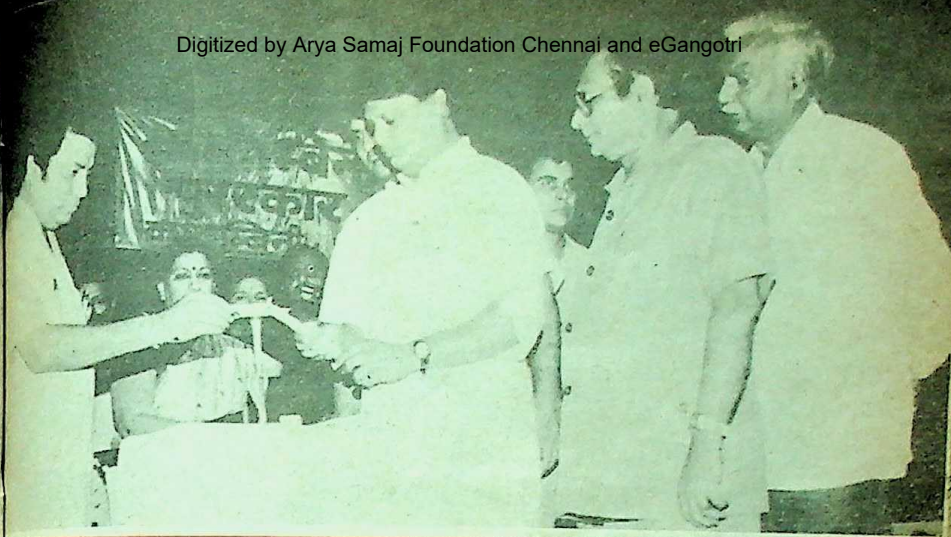
दीप जलाकर समारोह प्रारंभ करते हुए श्री माधवराव सिंधिया

'कादम्बिनी'—संपादक की अध्यक्षता में प्रतियोगिता में प्राप्त रचनाओं पर एक निर्णायक मंडल ने लगातार दस घंटे विचार-विमर्श कर पुरस्कृत योग्य रचनाओं का चयन किया, जिनकी घोषणा दूसरे दिन रवीन्द्र भवन में आयोजित एक भव्य समारोह में की गयी।

## रवीन्द्र भवन में

रवीन्द्र भवन में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में युवा रचनाकारों के अतिरिक्त पटना के गणमान्य नागरिकों, साहित्यकारों, अधिकारियों के अतिरिक्त राज्यमंत्रिमंडल के अनेक सदस्य भी उपस्थित थे।

इस समारोह में सरस्वती वंदना के पश्चात श्री राकेश शर्मा ने युवा रचनाकारों और आमंत्रित जनों का स्वागत किया। बाद में 'कादम्बिनी' के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी ने 'कादम्बिनी' साहित्य महोत्सव के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। श्री अवस्थी ने अपने भाषण में साहित्य, समाज और राष्ट्र के समक्ष आज उपस्थित अनेक समस्याओं की चर्चा की और इस संदर्भ में युवा रचनाकारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। श्री अवस्थी ने कहा कि राजनीति क्षणभंगुर है, जबकि साहित्य चिरंतन। उन्होंने युवा रचनाकारों को निर्भीक होकर रचना करने का परामर्श दिया। श्री अवस्थी ने स्पष्ट रूप से

पुरस्कार विजेताओं के साथ 'कादम्बिनी' के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी
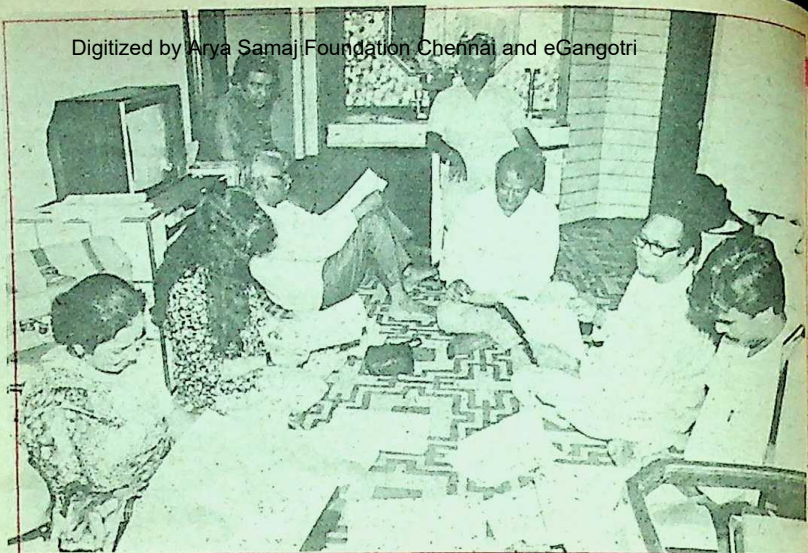
इंदौर में रचनाओं पर विचार करते हुए निर्णायक मंडल

घोषित किया कि राजनीति में जो गंदगी और अधकचरापन उभर रहा है, लेखक को खुलकर लिखना होगा और मार्गदर्शक बनना पड़ेगा। राजनीति के कारण आज सर्वत्र भय और आतंक का वातावरण है। साहित्य ही मानव को भयमुक्त बना सकता है।

समारोह में उपस्थित बिहार के मानव संसाधन विकास (माध्यमिक शिक्षा) मंत्री श्री रामचंद्र पूर्वे ने श्री अवस्थी के उद्गारों से सहमति व्यक्त की और घोषणा की कि उनकी सरकार नयी प्रतिभाओं को उभारने के लिए स्कूलों में तरह-तरह की प्रतियोगिताएं आयोजित कर पुरस्कार बांटेगी।

हिंदी के वयोवृद्ध कवि श्री आरसी प्रसाद सिंह ने 'कादम्बिनी साहित्य महोत्सव' के आयोजन की प्रशंसा की और आशा व्यक्त की कि नवोदित रचनाकारों को प्रकाश में लाने का यह सबसे प्रबल माध्यम है।

सफल रचनाकारों को पुरस्कार वितरित करते हुए बिहार विधानसभा के अध्यक्ष श्री गुलाम सरवर ने कहा कि, 'अवस्थीजी दूरदराज स्थित मेरे पिछड़े हुए इलाके से भी एक प्रतिभा खोज लाये हैं, इससे मुझे बहुत खुशी हुई है।' उनका कहना था कि प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है, आवश्यकता उन्हें खोज निकालने और पर्याप्त आश्वासन देने की है।

रवीन्द्र भवन पटना में पुरस्कार वितरण के पश्चात भारतीय नृत्यकला मंदिर की छात्राओं ने शास्त्रीय एवं लोकनृत्य प्रस्तुत किये।

पटना के इस आयोजन को सफल बनाने में सर्चलाइट प्रकाशन के चीफ एग्जिक्यूटिव श्री वाई.सी. अग्रवाल तथा उनके अधीनस्थ कार्यकर्ताओं ने अथक परिश्रम किया।

## इंदौर में कादम्बिनी साहित्य महोत्सव

साहित्य महोत्सव के अंतर्गत इंदौर में 'कादम्बिनी' द्वारा आई.के. कॉलेज में आशु लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.
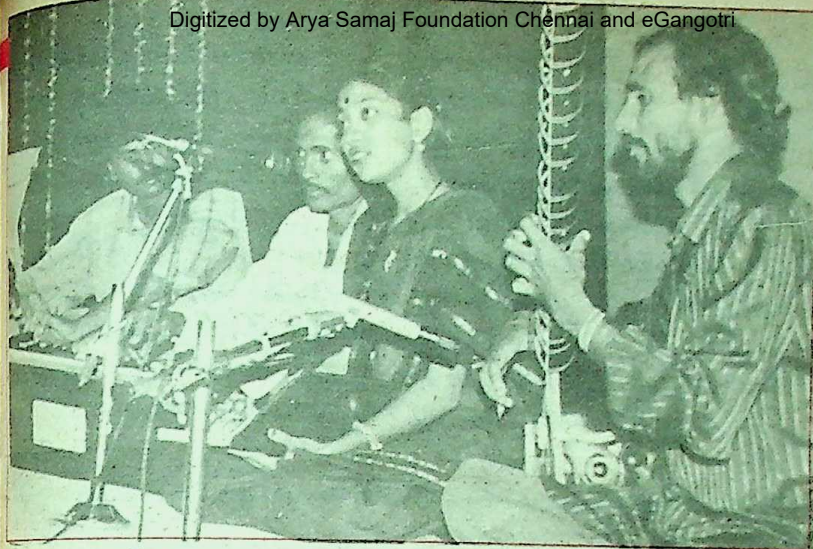
इंदौर में पुरस्कार वितरण के पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम का एक दृश्य

जिसमें पांच सौ से अधिक रचनाकारों ने उत्साह से भाग लिया ।

'कादम्बिनी' साहित्य महोत्सव के दूसरे दिन केंद्रीय नागरिक उड्डयन एवं पर्यटन मंत्री श्री माधवराव सिंधिया ने सफल प्रतियोगियों को पुरस्कार वितरित किये । इस अवसर पर भाषण करते हुए 'कादम्बिनी' के संपादक एवं विख्यात कथाकार श्री राजेन्द्र अवस्थी ने विभिन्न नगरों में 'कादम्बिनी' साहित्य महोत्सव के आयोजन की सार्थकता पर प्रकाश डाला । श्री अवस्थी ने कहा कि आज दुर्भाग्य से हिंदी में साहित्यिक पत्रिकाओं की संख्या नगण्य है । ऐसे में 'कादम्बिनी' ने न केवल अपना वैशिष्टय और स्तर बनाये रखा है, वरन उसकी प्रसार-संख्या भी बढ़ी है । श्री अवस्थी ने कहा कि 'कादम्बिनी' सदैव से युवा रचनाकारों को प्रोत्साहन देकर उन्हें प्रकाश में लाती आयी है । हिंदी में साहित्यकारों की पुरानी पीढ़ी प्रायः खत्म हो गयी है । समस्या है हमारी पीढ़ी के बाद लेखकों की नयी पीढ़ी तैयार करने की । 'कादम्बिनी' साहित्य महोत्सव इसी दिशा में एक विनम्र प्रयास है ।

श्री अवस्थी ने कहा कि साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए नगर-नगर में 'कादम्बिनी' क्लब स्थापित किये जाएंगे । इस संबंध में विस्तृत रूपरेखा की घोषणा शीघ्र की जाएगी ।

श्री अवस्थी ने युवा लेखकों को परामर्श दिया कि वे निर्भीक होकर लिखें क्योंकि लेखक ही सत्ता के दोषों को प्रकाश में ला सकता है ।

युवा रचनाकारों को पुरस्कार देते हुए केंद्रीय मंत्री श्री माधवराव सिंधिया ने कहा कि लेखकों को प्रोत्साहन देने के लिए 'कादम्बिनी' ने जो प्रक्रिया अपनायी है, वह बधाई के योग्य है । कारण, वर्तमान में साहित्य की कमी को पूरा करने में युवा लेखक बहुत सफल साबित होंगे । उन्होंने आशा व्यक्त की कि युवाओं के बुनियादी प्रशिक्षण का यह अनूठा प्रयोग है जिसमें स्वयं संपादक लेखकों के पास चलकर

आया है । उन्होंने कहा कि "आशा है, अवस्थीजी इंदौर से द्वार की ओर बढ़ेंगे और ग्वालियर में भी ऐसा कार्यक्रम आयोजित करेंगे । वहां भी प्रतिभाशाली रचनाकार हैं ।" श्री सिंधिया ने सांस्कृतिक मूल्यों के निरंतर अवमूल्यन पर गहरी चिंता व्यक्त की और कहा कि हमें सोचना चाहिए कि आखिर हम कहां जा रहे हैं । कार्यक्रम के आरंभ में श्री अवस्थी एवं श्री राकेश शर्मा ने श्री सिंधिया का पुष्पहारों से स्वागत किया । समारोह का समापन सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा हुआ ।

इंदौर में 'कादम्बिनी' साहित्य महोत्सव को सफल बनाने में डॉ. सुधीर खेतावत, डॉ. एम.ए. फारुकी (प्रिंसिपल, आई.के. कॉलेज), सर्वश्री विनय जोशी, कमल जैन, निर्मल जैन, शरद जैन, रवि मेहता एवं कु. प्रतिभा ठाकुर ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया ।

## पटना में पुरस्कृत रचनाकार

### निबंध

***प्रथम पुरस्कार*** : *डॉ. विनोद कुमार सिंहा,* ***द्वितीय पुरस्कार*** : *शैलेन्द्र कुमार सिंह,* ***तृतीय पुरस्कार*** : *नम्रता सिन्हा,* ***सांत्वना पुरस्कार*** : *१. विनय, २. वीरेन्द्र कुमार, ३. ऋषिकेश चौधरी, ४. स्तुति रानी, ५. सत्येन्द्र त्रिवेदी, ६. हंसा गुप्ता, ७. नीलांशु रंजन, ८. मधुरिमा, ९. अमिताभ तिवारी, १०. संजीव कुमार ।*

### कहानी

**प्रथम पुरस्कार** : *उषा कुमारी,* ***द्वितीय पुरस्कार*** : *राज मंगल,* ***तृतीय पुरस्कार*** : *असित रंजन,* ***सांत्वना पुरस्कार*** : *१. पल्लवी सिन्हा, २. वर्षा सिन्हा, ३. इला झा, ४. हितेन्द्र कुमार गुप्ता, ५. अभय कुमार झा, ६. प्रियदर्शी जाल्हार रम्पी, ७. प्रेम रंजन अनिमेष, ८. जयप्रकाश, ९. राकेश शर्मा, १०. मनोज कुमार श्रीवास्तव ।*

**निर्णायक मंडल** : **अध्यक्ष— 'कादम्बिनी', संपादक सदस्य— सर्वश्री डॉ. मधुकर गंगाधर, प्रो. केदारनाथ कलाधर डॉ. मंजू ज्योत्सना, डॉ. मिथिलेश कुमारी, सहायक-संपादक 'कादम्बिनी' ।**

## इंदौर में पुरस्कृत रचनाकार

### निबंध

***प्रथम पुरस्कार*** :*इस्माइल लहरी,* ***द्वितीय पुरस्कार*** : बीनी मैथ्यू, ***तृतीय पुरस्कार*** : ललित उपमन्यु, ***सांत्वना पुरस्कार*** : *१. मनीष दवे, २. अनीमा वाजपेई, ३. वीरेन्द्र भदोरिया, ४. अमला करमलकर, ५. मनोज कुमार पांचाल, ६. कुडीलाल चूड़ीवाला (नेत्रहीन), ७. प्रगति कुमार पांडे, ८. सुरेन्द्र कुमार जोशी, ९. पूजा श्रीवास्तव, १० गीता सूरी ।*

### कहानी

***प्रथम पुरस्कार*** : *रवीन्द्र व्यास,* ***द्वितीय पुरस्कार*** : *शारदा मिश्रा,* ***तृतीय पुरस्कार*** : *जयश्री कर्णिक,* ***सांत्वना पुरस्कार*** : *१. संजय गोयनका, २. अनुपमा सोगानी, ३. राजीव छत्रे ४. किसलय पांचोली, ५. प्रदीप जोशी, ६. रश्मि चतुर्वेदी, ७. शैलेन्द्र जोशी, ८. सिंघई सुभाष जैन, ९. अनिता ठाकुर, १०. प्रीति जोशी*

**निर्णायक मंडल**

**अध्यक्ष— 'कादम्बिनी'—संपादक सदस्य— डॉ. गणेश दत्त त्रिपाठी, डॉ. अरुणा शास्त्री, सहायक-संपादक 'कादम्बिनी'**

**ताज और शेख— दो ऐसी कवयित्रियां जिनकी कृष्णभक्ति के मार्ग में धर्म बाधक नहीं बन सका । कृष्ण के प्रति उनका समर्पण, उनकी भक्ति किसी अन्य कवि से कम नहीं ।**

# दो उपेक्षित कृष्ण भक्त मुसलिम कवयित्रियां

● वीरनारायण शर्मा

जिस प्रकार कुछ मुसलिम कवि रसखान, रहीम कृष्ण भक्ति से प्रभावित होकर हिंदी साहित्य में श्रेष्ठ हुए उसी प्रकार कुछ मुसलमान कवयित्रियां भी प्रभावित हुईं । ताज का नाम उनमें सर्वोपरि है । ताज की रचनाएं भक्ति रस से ओतप्रोत हैं । ताज की भाषा सरल मुसलमानी घरेलू भाषा है । उसमें पंजाबी एवं फारसी का पुट है । संभव है ताज ने ब्रजभाषा का अभ्यास किया हो । उन्होंने पद शैली का अनुसरण नहीं किया । उनकी भाषा दरबारी कवियों की भाषा है तथा उसकी शैली कवित्त सवैया-जैसी है । भाषा अलंकृत और सानुप्रासिक होने से भाषा-सौष्ठव अधिक हृदयग्राही और आकर्षक हो गया है । भाषा में कहीं-कहीं खड़ी बोली का भी आभास होता है ।

शेख प्रेम, माधुर्य, श्रृंगार और शालीनता की कवयित्री हैं । वे बड़ी सहृदय एवं रसिक थीं । उन्होंने अपने काव्य सृजन में सम्य-सुषमा बिखरायी है । उनकी काव्य कला अद्‌भुत थी । वे अत्यंत वाक्-पटु थीं तथा उनक वाक् चातुर्य प्रथम कोटि का था । उनको ब्रज भाषा पर अद्‌भुत अधिकार था । हो सकता है, ब्रज भाषा पर इतना अधिकार प्राप्त करने में आलम उनके सहायक रहे हों । उनके काव्य पर फारसी परंपरा के प्रेम का प्रभाव है । उनके प्रेम वर्णन में प्रेम की पीर की अभिव्यक्ति अत्यंत हृदयस्पर्शी है । प्रेम का जो प्रसाद घनानंद, बोधा और ठाकुर में दिखायी देता है । शेख के 'आलमकेलि' में उससे कम आनंद नहीं है ।

**ताज : मीरा-जैसी प्रेम की पराकाष्ठा**

ताज का काल ई.स. १६४४ है । ताज ने कृष्ण को अपना प्रियतम मानकर कविता की है । उनका नाम पुरुषों-जैसा दिखायी देता है परंतु उनकी रचनाओं से यह ध्वनित होता है कि वे स्त्री थीं । निम्न उदाहरण देखिए—

*सुनो दिलजानी मेरे दिल की कहानी तुम*
*दस्त की बिकानी बदनामी भी सहूंगी मैं*

*देवपूजा ठानी मैं निमाज हूं भुलानी*
*तजे कलमा कुरान सारे गुनन गहूंगी मैं*
*श्यामला सलोना सिरताज सिर कुल्ले दिये*
*तेरे नेह दाग में निदान है, दहूंगी मैं*
*नंद के कुमार कुरबान ताणी सूरत पै*
*हौं तो तुरकानी हिंदुवानी—है, रहूंगी मैं*

ताज की उक्त पंक्तियों में मीरा-जैसी प्रेम की पराकाष्ठा दिखायी देती है । जैसे मीरा ने समस्त लोक-लाज तजकर कृष्णोपासना की, ठीक उसी प्रकार ताज के कृष्ण प्रेम में बड़ा दृढ़ निश्चय दिखायी देता है । फारसी साहित्य के प्रेम-दर्शन में प्रेमी और प्रेमिका का एकाकार होना अनिवार्य है । प्रेम की उपर्युक्त स्थिति में जात-पात धर्म और सभी सामाजिक मान्यताओं से प्रेमी-प्रेमिका ऊपर उठ जाते हैं । जब तक प्रेमी और प्रेमिका के बीच 'तू' और 'मैं' का भेद है तब तक उसे सच्चा प्रेम नहीं माना गया जब 'मैं' 'तू' में और 'तू' 'मैं' में बदल जाए तभी फारसी साहित्य सच्चे प्रेम की मान्यता प्रदान करता है । फारसी साहित्य की प्रसिद्ध उक्ति है— 'मन तो शुदम् तो मन शुदी' अर्थात मैं तू हो जाऊं और तू मैं हो जा । अलौकिक प्रेम का चरम बिंदु जीव का ब्रह्म में या आत्मा का परमात्मा में विलय होना है ।

ताज के निम्न सवैये की भाषा एवं भाव सौंदर्य अनूठा है :

*नाम तिहारो सुनौ जग में तुम गोकुल के ठग हो हम जानी*
*सालस हौ अपने मन में चितचोर धने सौं अवै हम ठानी*
*हेत बड़ी हम सों जुकियो छवि 'ताज' गुने इत लाल सुज्ञानी*
*बैन बजावत हूं सुनियो तुक चारहिं आदि के अक्षर बानी*

मीरा बाई की भांति ताज सदा कृष्ण प्रेम में लीन रहती थीं । वे कृष्ण को अपना प्रीतम मानकर ही उनकी उपासना करती थीं । उनकी कविता बड़ी सरस एवं सरल है । जहां कहीं उनकी भाषा खड़ी बोली है तथा उसमें कुछ शब्द पंजाबी भाषा के अवश्य पाये जाते हैं ।

ताज नित्य नहा-धोकर मंदिर में भगवान के दर्शन को जाती थीं । बाद में भोजन ग्रहण करती थी । पहले ताज मंदिर में प्रवेश कर दर्शन करती थीं इसके पश्चात अन्य भक्तजन मंदिर में प्रवेश करते थे ।

### गंगा की आराधक—शेख

शेख का काल ई. सन १६९४ है । वे रंगरेजिन थी । वे मुसलमान भावुक कवयित्री थीं । वे आलम कवि की समकालीन थीं । एक बार आलम कवि ने इन्हें अपनी पगड़ी रंगने को दी जिसके एक कोने में एक कागज का टुकड़ा भी बंधा चला गया । शेख ने जब पगड़ी खोली वह कागज का टुकड़ा उन्हें मिला जिस पर निम्न आधा दोहा लिखा हुआ था—

***कनक छरी सी कामिनी काहे को कटि छीन***

शेख ने पगड़ी को रंगकर तथा अधूरे दोहे की पूर्ति कर आलम कवि को लौटा दिया पूर्ति का दोहा निम्न प्रकार है—

*कटि को कंचन काटि विधि कुचन मध्य धरि दीन*

इसे पढ़कर आलम कवि बहुत प्रसन्न हुए। अंत में उन्होंने शेख से विवाह कर मुसलमान धर्म स्वीकार कर लिया।

इनकी कविता प्रेमरस से परिपूर्ण है। कहीं-कहीं आलम और शेख दोनों ने मिलकर काव्य रचना की है। आलमकेलि के बहुत से पद शेख के रचे हुए हैं।

शेख का कोई ग्रंथ नहीं मिलता परंतु कई संग्रहों में उनके स्फुट पद मिलते हैं। उन्होंने कई देवताओं के स्तुति विषयक पद भी लिखे हैं। गंगा का उन्होंने बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया है—

*नीके न्हाई धोई धुरि पैठो नेकु वैठो आनि,*
*धुरि जटि गई धूरिजटी लौ भवन मैं*
*पैन्हि पैठयो अम्बर सु निकस्यो दिगम्बर ह्वै*
*दृग देखो भाल में अचम्भो लाग्यो मन में*

शेख की अधिकांश रचनाएं श्रृंगार रस पूर्ण हैं। उनमें से कुछ कृष्ण को आलंबन मानकर की गयी हैं और कुछ में लौकिक प्रेम प्रदर्शन किया गया है :

*जब से गुपाल मधुबन—को सिधारे भाई*
*मधुवन भयो मधु दानव विषम सो*
*शेख कहे सारिका सिखंड खंजरीट सुक*
*कमल कलेस कीन्ही कालिन्दी कदम सों*

उक्त रचना शेख को थोड़ी देर के लिए सूरदास की पंक्ति में लाकर खड़ा कर देती है। उक्त भाव को सुरदास ने निम्न प्रकार व्यक्त किया है—

*बिनु गुपाल बैरिनि भई कुंजै*
*तब वे लता लगत तन सीतल, अब भई विषम ज्वाल की पुजै*
*बृथा बहति जमुना, खग बोलत बृथा कमल फूलनि अलि गुंजैं*
*पवन पान धनसार सजीवन, दधिसुत किरनि भानु भई भुंजैं*
*यह ऊधो कहियौ माधो सौं मदन मारि की नहीं हम लुंजै*
*सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कों मग जोवत अखियां भई छुंजैं*

शेख के यमक भावोत्कर्ष अलंकार के उदाहरण तो देखते ही बनते हैं। प्रेम की धारा का प्रवाह आलम और शेख में समान हैं। उनके शांति और भक्ति के पद भी असाधारण हैं। भावना का ऐसा साम्य बहुत कम देखने को मिलता है। नायिका भेद और कलापूर्ण काव्य रचना की दृष्टि में शेख को पुरुष कवियों की श्रेणी में रखा जा सकता है। शेख की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनकी भाषा शुद्ध, पद्धति सरल और भाव व्यंजना सुव्यवस्थित है। शेख के पहले और बाद में भी उन—जैसी ब्रजभाषा किसी भी स्त्री कवि ने नहीं कही। आश्चर्य का विषय तो यह है कि ऐसी परिष्कृत और प्रांजल ब्रजभाषा और शिष्ट काव्य शैली मुसलमान संस्कृति में जन्म लेकर व पल-पुस कर उन्होंने कैसे प्राप्त की। उनकी रचना आलम, लछिराम, ठाकुर और दास से टक्कर लेती है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि ऐसी श्रेष्ठ कवयित्रियों के साहित्य को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए एवं उनके जीवन और कृतित्व के बारे में अधिक से अधिक शोध कराया जाए एवं शोध-कर्त्ताओं को शासन द्वारा विशेष आर्थिक सहायता प्रदान की जाए तभी हमारे हिंदी संसार की श्रीवृद्धि में सही योगदान मिल सकेगा।

**—रावजी पथ, सिरोंज (म.प्र.) पिन-४६४२२८**

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी १४ सितंबर का दिन आएगा । 'हिंदी दिवस' के उपलक्ष्य में दिनभर जलसे होंगे, भाषण होंगे, और परंपरागत 'कर्मकांडों' का आयोजन होगा । अगले दिन १५ सितंबर को जब तक सूर्योदय होगा, तब तक सभी लोग पूर्ववत अपनी-अपनी दिनचर्या में खो गये होंगे और एक दिन पहले दोहराये गये संकल्प की विस्मृति का हिस्सा बन चुके होंगे । 'हिंदी दिवस' संबंधी घटनाचक्र की यह आवृत्ति हम कई वर्षों से करते आये हैं ।

हिंदी दिवस

# राज्याभिषेक अथवा श्राद्ध दिवस

● कन्हैया लाल गांधी

### राजभाषा की गति

आज से चार दशक पूर्व इसी दिन अर्थात १४ सितंबर, १९४९ को, संविधान के निर्माताओं ने संविधान के सत्तरवें अनुच्छेद को पारित किया था जिसमें धारा ३४३ से ३५१ तक के अनुसार २६ जनवरी, १९६५ से हिंदी का राज्याभिषेक निश्चित किया गया था । धारा ३४३ (१) का निर्णय था, कि "संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी ।" लक्ष्य की प्राप्ति के लिए १९५० के बाद अनेक कारगर कदम उठाये गये । हिंदी प्रशिक्षण के लिए सरकारी बजट में धनराशि जुटायी गयी, हिंदी पढ़ने और इसे सरकारी कामकाज में इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहन भी दिये गये, परंतु वस्तुतः राजभाषा के पद पर अंगरेजी ही आसीन रही । असफलता का एक मुख्य कारण था —राजनीतिक और सरकारी ढांचे के ऊपरी-स्तर के अधिकारियों में भारतीय संस्कृति और हिंदी के प्रति वांछित निष्ठा का अभाव । लगभग १० वर्ष बाद, १९५९ में तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू ने एंगलो इंडियन मेंबर फ्रेंक एंथोनी के एक प्रावेदन का उत्तर देते हुए संसद को यह आश्वासन दिया कि वे अंगरेजी को उतने समय तक विकल्प राजभाषा के रूप में बनाये रखेंगे, जब तक अहिंदी भाषा-भाषी इसकी जरूरत महसूस करेंगे । इस आश्वासन को भाषा विधेयक १९६३ एवं भाषा संशोधन विधेयक १९६७ में समाविष्ट कर दिया और राज कार्य में अंगरेजी के इस्तेमाल को पूर्ववत बनाये रखना वैद्य करार दे दिया गया । इन भाषा विधेयकों के

विरोध में देश भर में प्रदर्शन हुए और अनेक हिंसाएं भी हुईं। फिर इन प्रदर्शनों की प्रतिक्रियाएं हुईं। अनेक स्थानों पर, विशेषकर पश्चिमी बंगाल और तमिलनाडु में मुजाहरे हुए। गाड़ियां जलायी गयीं, हिंदी में लिखी नामपट्टियों को पोत दिया गया और उग्रवादी गतिविधियों में एक सौ से अधिक जानी नुकसान और बहुत अधिक संपत्ति के नुकसान की रिपोर्ट मिली। भावी समय भी हिंदी के लिए कोई उत्साहवर्धक परिस्थिति सामने न ला सका। आज लगभग स्थिति यह है कि हिंदी के बारे में सोचनेवालों के दो वर्ग हैं —एक वर्ग वह है जो हिंदी को राजभाषा बनाने का सशक्त विरोधी है और भाषायी उग्रराष्ट्रीयता का बुरी तरह से शिकार है। दूसरा वर्ग वह है, जो हिंदी के प्रति उदासीन है। इस वर्ग के सामने राजभाषा की प्राथमिकता या तो गौण है या वह निराशा की इस सीमा तक पहुंच चुका है कि उसे लगता है कि हिंदी अपनी बाजी हार चुकी है और इसमें अब जान फूंकना संभव नहीं है। आजादी से पहले इस वर्ग में हिंदी के प्रचार के लिए जो तड़प थी अथवा स्वतंत्रता के फौरन बाद हिंदी के प्रसार के लिए इस वर्ग में जो उत्साह था, उसका प्रायः लोप हो चुका है। कुछ लोग तो 'हिंदी दिवस' को अब इसका 'श्राद्ध दिवस' कहने लगे हैं। अब प्रश्न यह है कि आगे क्या करना चाहिए। इसका निर्णय करने के लिए राजभाषा का अनेक आयामों से निरीक्षण करना होगा।

### राजनीतिक आयाम

इसे स्वीकारने में शायद कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए कि हमारी भाषा समस्या की उत्पत्ति का देश के भौगोलिक विस्तार, जातीय विभिन्नता और इतिहास के साथ गहरा संबंध है। परंतु इसी से प्रायः मिलती-जुलती परिस्थितियां, क्या सोवियत यूनियन और अमरीका में नहीं थीं ? यदि ये देश भाषा की समस्या से अछूते रहे और हम इस समस्या को दिन-प्रतिदिन दुर्गम बनाते चले गये, तो इसका दायित्व किस पर है ? क्या यह दायित्व उन राजनीतिक नेताओं पर है, जो आजादी के बाद देश की नीतियां बनाने और उन्हें कार्यान्वित करने के जिम्मेदार थे ? क्या अकुशल राजनीतिक नेताओं को चुननेवाली जनता इस मामले में सर्वथा निर्दोष है ? और उस

नौकरशाही के बारे में क्या कहा जाए जिसकी सलाह से सरकार की नीतियां बनती हैं और जो सरकारी नीतियों को कार्यरूप देती है ? भाषा-समस्या के उलझाने में शायद ये सभी पक्ष भागीदार हैं, परंतु लोकतंत्र में सर्वाधिक जिम्मेदारी राजनीति के कर्णधारों की होती है । भाषा के मामले में शायद कोई भी राजनीतिक पार्टी अपने निहित-स्वार्थों अथवा क्षेत्रीय सीमाओं से ऊपर नहीं उठ सकी । अपने वोट-बैंक को समृद्ध करने के लिए सभी पार्टियों ने भाषा के प्रश्न से मनमाना खिलवाड़ किया । कांग्रेस पार्टी की लोकप्रियता उत्तर और दक्षिण में प्रायः एक समान घटती-बढ़ती रही है, इसलिए भाषा के मामले में इसकी स्थिति हमेशा झूमा-झूमी की बनी रही है । द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम, जिसकी लोकप्रियता तमिलनाडु तक सीमित है, शुरू से हिंदी की कट्टर विरोधी रही है । मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी, जिसका वोट बैंक पश्चिमी बंगाल है, का कहना है कि राजभाषा के मामले में हिंदी को किसी प्रकार की तरजीह नहीं मिलनी चाहिए । भारतीय जनता पार्टी ने भी अब तक हिंदी के लिए कोई ठोस काम नहीं किया है । इस प्रकार किसी पार्टी ने भाषा के प्रश्न को राष्ट्रीय गौरव की दृष्टि से नहीं रखा । शायद इसमें दो मत नहीं हो सकते कि राष्ट्रीय समस्या का हल राष्ट्रीय दृष्टिकोण के विकास के बिना नहीं हो सकता । इस दृष्टिकोण के प्रादुर्भाव और विकास के लिए यह आवश्यक है कि समय-समय पर संसद और राजनीतिक पार्टियों के अन्य सदस्य एक निर्धारित प्रोग्राम के अनुसार विश्वविद्यालयों में काम करने तथा अन्य बुद्धिजीवियों के संपर्क में आयें और राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक प्रश्नों पर विचारों का राष्ट्रीय दृष्टिकोण से आदान-प्रदान करें और देश के सामने प्रस्तुत सभी समस्याओं के हल खोजने का प्रयत्न करें।

## आर्थिक पहलू

भाषा का प्रश्न दो प्रकार से जीविकोपार्जन के साथ जुड़ा हुआ है । जिस भाषा के अध्ययन से जीविका के जितने अधिक मार्ग खुलेंगे, वह भाषा उतनी अधिक लोकप्रिय बनेगी । दूसरा, यदि हिंदी को राजभाषा के पद पर स्वीकारने से जीविका उपार्जन की प्रतियोगिता में परिस्थितियां हिंदी भाषी वर्ग के अधिक अनुकूल हो जाएंगी तो अहिंदी भाषी वर्गों से विरोध की स्थिति उत्पन्न होना स्वाभाविक है । राजभाषा समस्या को हल करने के लिए इन दोनों बातों का समाधान खोजना जरूरी है ।

अहिंदी भाषी प्रांतों के लोगों को हिंदी की ओर प्रवृत्त करने के लिए हिंदी भाषी प्रदेशों को कुछ सकारात्मक कदम उठाने होंगे । उनमें से एक कदम यह हो सकता है कि हिंदी-पट्टी की प्रांतीय सरकारों को सरकारी और गैर-सरकारी नौकरियों में कुछ स्थान अहिंदी भाषी प्रदेशों के प्रत्याशियों के लिए सुरक्षित करने होंगे । इसी प्रकार का प्रावधान शिक्षा संस्थाओं, विशेषकर टेक्निकल और व्यावसायिक संस्थाओं के प्रवेश के लिए करना होगा । जब अनेक प्रांत 'अपनी धरती, अपना सुपूत' के नारे में बहे जा रहे हैं, हिंदी राज्यों से ऐसी मांग औचित्य की कसौटी पर चाहे खरी न उतर सके, परंतु प्रत्येक उपलब्धि कुछ न कुछ बलिदान तो अवश्य मांगती ही है । अहिंदी भाषी प्रदेशों में अभी भी हजारों की संख्या में हिंदी में बी.ए., एम.ए. और

*आज से चार दशक पूर्व इसी दिन अर्थात १४ सितंबर, १९४९ को, संविधान के निर्माताओं ने संविधान के सत्तरवें अनुच्छेद को पारित किया था, जिसमें धारा ३४३ से ३५१ तक के अनुसार २६ जनवरी १९६५ से हिंदी का राज्याभिषेक निश्चित किया गया था । धारा ३४३ (१) का निर्णय था कि संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी ।*

पी.एच-डी. पास व्यक्ति मिलेंगे, जिन्हें हिंदी पढ़ने के बाद कोई काम नहीं मिल सका । तो ऐसी स्थिति में और लोग हिंदी क्यों पढ़ेंगे ?

जीविकोपार्जन संबंधी भाषा समस्या का दूसरा पक्ष, जिसका संकेत ऊपर किया गया है, थोड़ा अधिक जटिल है । कोई ऐसा रास्ता तलाशना होगा कि जिससे केंद्रीय सरकार की नौकरियों, विशेषकर अखिल भारतीय प्रतियोगिता में, किसी वर्ग को अन्य वर्ग अथवा वर्गों के मुकाबले में अधिक फायदा न दिया जाए । अहिंदी भाषी लोगों का भय है कि हिंदी को संघ की एकमात्र भाषा स्वीकारने के बाद हिंदी प्रदेशों के उम्मीदवारों को नौकरियों में बढ़त मिल जाएगी । यह धारणा कुछ सीमा तक निराधार है । हिंदी भाषी प्रदेश अन्य प्रदेशों से शिक्षा में पिछड़े रहने के कारण कम से कम निकट भविष्य में तो उनसे नौकरियों की प्रतियोगिता में बढ़त नहीं ले सकते । अखिल भारतीय प्रतियोगिता पर थोड़ा और विचार करें । इसमें अन्य विषयों के अतिरिक्त एक भारतीय भाषा भी प्रतियोगिता का विषय हो । प्रतियोगिता और साक्षात्कार में पास होने के पश्चात प्रत्येक प्रत्याशी के लिए एक अन्य भाषा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य हो । इस 'अन्य भाषा' का ज्ञान कामकाज चलाने के स्तर को ध्यान में रखकर निर्धारित किया जाए । हिंदी प्रदेश के कर्मचारियों के लिए यह 'अन्य भाषा' अहिंदी प्रदेश की कोई एक भाषा होगी और अहिंदी प्रदेश के कर्मचारियों के लिए यह भाषा हिंदी होगी । अहिंदी प्रदेशवालों के लिए अन्य भाषा निर्धारित करते समय इस बात को भी ध्यान में रखा जा सकता है कि प्रत्याशी के लिए कौन-सा राज्य विनिहित किया गया है । स्पष्ट है कि अन्य भाषा का चयन करते समय उस प्रत्याशी के लिए उसके राज्य विशेष की भाषा को वरीयता दी जाएगी । यहां यह स्पष्ट कर देना जरूरी है कि अंगरेजी अथवा किसी विदेशी भाषा का अध्यापन प्रत्येक शिक्षा संस्था में अनिवार्य रूप से बना रहेगा । इस योजना के अनुसार प्रत्येक कर्मचारी को बोलचाल तथा कामकाज के लिए हिंदी का ज्ञान होगा, इसलिए विशिष्ट वर्ग के बीच परस्पर संसर्ग की भाषा अंगरेजी के स्थान पर हिंदी बन जाएगी । संस्कृत भाषा, जिसने प्रायः सभी भारतीय भाषाओं को संपन्न बनाया है, की कृपा से अथवा भारतीय सिनेमा के अनुग्रह से आम जनता का अधिकांश भाग

अब भी सरल हिंदी समझने और इससे मिलती-जुलती भाषा बोलने में समर्थ है। तकनीकी और औद्योगिक विभागों में भाषा का प्रश्न अधिकतया उपर्युक्त टेक्निकल शब्दावली के चयन तक सीमित हो जाता है, क्योंकि तकनीकी क्षेत्र में भाषा का प्रयोग कम होता है। यदि तकनीकी शब्दावली के चुनने में मानसिक संकीर्णता का परिचय न दिया जाए और विदेशी तथा सभी देशी भाषाओं से सर्वाधिक उपयोगी शब्द चुन लिए जाएं, तो भाषा समस्या के समाधान में यह एक सही कदम होगा।

### सांस्कृतिक पक्ष

सरकार की अदूरदर्शिता के कारण अहिंदी प्रदेशों के लोगों के मन में यह आशंका पैदा हो गयी है कि हिंदी के संघ की भाषा बनने से प्रादेशिक भाषाओं का विकास अवरुद्ध हो जाएगा। इस संबंध में स्व. महादेवी वर्मा के ये शब्द सार-गर्भित हैं : —"जिस नियम से नदी, नदी की गति रोकने के लिए शिला नहीं बन सकती, उसी नियत से हिंदी भी किसी सहयोगिनी का पथ अवरुद्ध नहीं कर सकती।" इसके प्रतिकूल प्रत्येक भाषा दूसरी भाषा के सीखने और विकास में सहायक सिद्ध होती है। विभिन्न भाषा भाषियों के बीच परस्पर विश्वास उत्पन्न करने तथा भारतीय वाङ्मय को समृद्ध बनाने के लिए यह आवश्यक है कि केंद्रीय तथा प्रादेशिक सरकारें प्रत्येक भाषा के उत्कृष्ट साहित्य का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने के लिए शीघ्रातिशीघ्र एक समन्वित योजना बनाकर उसे अमल में लाएं। समय-समय पर ऐसे आयोजनों की व्यवस्था की जाए, जिसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के विद्वान अपनी-अपनी भाषाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट साहित्य पर निबंध पढ़ें। इससे प्रत्येक भाषा के विद्वानों के मन में अन्य भाषाओं के प्रति सम्मान की वृद्धि होगी और इन भाषाओं के साहित्य को अन्य भाषाओं में अनुवाद करने की रुचि बढ़ेगी।

जिन भाषाओं या बोलियों की अपनी लिपि नहीं है, उनकी लिपि का निर्माण भी बहुत जरूरी है। देश के सांस्कृतिक विकास के लिए इस संबंध में कदम उठाना वैसे भी सरकार का नैतिक कर्त्तव्य है और इससे प्रत्येक भाषा भाषी को समस्त भारतीय भाषाओं के विकास के लिए सरकार की दियानतदारी का विश्वास भी हो जाएगा। लिपि-रहित बोलियों के लिए देवनागरी लिपि के प्रयोग की बात भी विचारणीय हो सकती है।

हिंदी के प्रशिक्षण में शिल्पविज्ञान अर्थात टेक्नालोजी का प्रयोग लगभग शून्य के बराबर है। केंद्रीय हिंदी संस्थान को ऐसे केसिट्स बनाने चाहिएं, जिनसे अहिंदी भाषी सरलता से हिंदी सीख सकें। अमरीका में अंगरेजी सिखाने के लिए केसिट्स का इस्तेमाल पिछले कई दशकों से हो रहा है। भारत में कितनी संस्थाएं हैं, जहां हिंदी सिखाने के लिए (अंगरेजी के लिए नहीं) लिंगुआफोन का प्रयोग हो रहा है? शिक्षा के इन साधनों के प्रयोग से अहिंदी भाषी शिक्षार्थियों को हिंदी के शब्दों का सही उच्चारण सीखने और उनके अभ्यास का मौका मिलेगा। अनेक अहिंदी भाषी हिंदी का 'समुचित' ज्ञान प्राप्त करने पर भी हिंदी बोलने में संकोच करते हैं, क्योंकि उनके मन में यह आत्म-विश्वास नहीं बन पाता कि वे हिंदी में सही उच्चारण कर पाएंगे

और उनके द्वारा शब्दों का अशुद्ध उच्चारण की स्थिति में हिंदी भाषा-भाषी उनकी खिल्ली नहीं उड़ाएंगे । इस प्रकार का हीन-भाव हिंदी के इस्तेमाल और प्रसार में काफी बाधक है । इस हीन-भाव को दूर करना बहुत जरूरी है । हिंदी भाषा भाषियों द्वारा इस संबंध में उदारता के प्रदर्शन और हिंदी प्रशिक्षण में प्रौद्योगिकी प्रसाधनों के इस्तेमाल से हिंदी की लोकप्रियता में अप्रत्याशित सफलता मिल सकती है ।

हिंदी में अच्छी और वैज्ञानिक ढंग से लिखी पाठ्य पुस्तकों का बहुत अभाव है । यदि किसी योजना के प्रारंभ में ही लक्षों के प्रकर्ष को भूलकर लेन-देन का बोल-बाला होने लगे, तो ऐसी योजना प्रायः मृत प्रसव की स्थिति में रह जाती है । योजना के निर्माताओं को इस संबंध में सतर्क रहना होगा ।

यथासंभव हिंदी का सरलीकरण और मानकीकरण आवश्यक है । इसे भी करना चाहिए । अहिंदी भाषियों के लिए हिंदी का व्याकरण काफी व्यवधान पैदा करता है । लिंगदोष और वर्तनी दोष इसके उदाहरण हैं । हिंदी के संख्या-वाचक शब्दों में आसानी से सुधार लाया जा सकता है । उदाहरणतया, तेलुगु भाषा में यदि कोई व्यक्ति लगभग बीस संख्याएं सीख ले तो शेष संख्याओं को याद रखने में उसे बहुत कम कठिनाई होती है, जबकि हिंदी में ऐसा नहीं है । तेलुगु में संख्याएं प्रायः बीस एक (२१), बीस दो (२२), के क्रम से अग्रसर होती हैं । चार के लिए नालुगु है, तो चालीस के लिए नलभै है, छह के लिए आठ है और साठ के लिए अरबै । अन्य भाषाओं के गुणों का अध्ययन करने के उपरांत

हिंदी में अनेक ऐसे सुधार लाये जा सकते हैं जिससे विशेषकर अहिंदी भाषियों का, हिंदी सीखना आसान हो जाएगा और वे हिंदी में अपनी भाषा की और एक जानी-पहचानी झलक देख सकेंगे ।

### उपसंहार

भाषा के प्रश्न को चाहे हम राजनीतिक दृष्टि से देखें अथवा इसके आर्थिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं पर नजर डालें, समस्या के मूल में हमें व्यक्तिगत एवं राष्ट्रीय अस्मिता (व्यक्तित्व) के बीच एक टकराव की स्थिति दिखायी देती है । जब तक प्रत्येक भौगोलिक, धार्मिक, जातीय एवं भाषाई वर्ग अपने व्यक्तित्व को कुछ हद तक समाज के व्यक्तित्व में विलीन करने के लिए तैयार नहीं होगा, तब तक भाषा की समस्या का स्थायी हल खोजना परछाइयों के पीछे भागनेवाली बात होगी । इसलिए देशवासियों में राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने को उच्च प्राथमिकता देनी होगी ।

इस समय भारत अनेक संकट की स्थितियों में से गुजर रहा है, इसलिए भाषा की समस्या को नारेबाजियों से और विकट बनाना या समस्या को उग्र रूप देना अकलमंदी की बात नहीं होगी । इसलिए समय की पुकार चुपके से ठोस काम करने की है, न कि प्रदर्शनों की । हिंदी के विकास से जुड़ी स्वयंसेवी संस्थाओं को और सजीव बनाना होगा । इसमें काम करनेवाले कार्यकर्ताओं को ईसाई स्वयंसेवकों की प्रचार

# हंसिकाएं
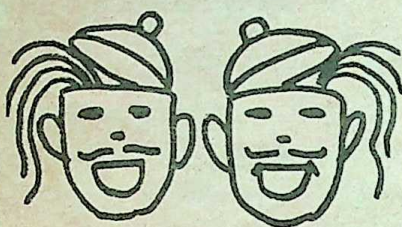
### इलाज

अनिद्रा रोगियों के बारे में वे बताने लगे
डॉक्टर के पास जाने के स्थान पर
वे अब कवि सम्मेलनों में जाने लगे

### मुद्रा

रूपसी को झपकी लेते देखकर
वे बोले —क्या बताएं
सोना गिरवी रखा है
शेष हैं अब यही सोने की मुद्राएं

### नींद

वे बताते हैं
लोग जो घोड़े खरीद नहीं पाते
वही घोड़े बेचकर सो जाते हैं

### श्रम

फर्श रगड़-रगड़ कर साफ़ करते हुए
मंत्रीजी के सेवक ने कहा है...
"इन दिनों मेहनत ज्यादा करनी पड़ती है
क्योंकि उन्हें थूककर चाटना पड़ रहा है ।"

### चिड़िया

चिड़ियाघर में
शेर चीते आदि खूंख्वार जानवर देखकर
रसिक ने पूछा
ऐसी कौन-सी चिड़िया थी
जिसके नाम पर नाम दिया
चिड़ियाघर ।

—डॉ. सरोजनी प्रीतम

शैली से बहुत कुछ सीखना होगा ।

भाषा संबंधी नीतियों को सच्चाई से लागू करने में अनेक प्रांतों का लेखा पीछे कुछ उत्साहवर्धक नहीं रहा है । त्रिभाषा सूत्र के लागू करने में दियानतदारी का अभाव इसकी एक मिसाल है । दक्षिण में आपको हिंदी के अनेक विद्वान मिल जाएंगे, परंतु यदि उत्तर भारत में आप दक्षिण की भाषाओं के विद्वान तलाश करना शुरू करें तो शायद ही सफलता मिले । भारतीय संविधान की अनेक धाराओं का शब्द, अर्थ एवं भाव की दृष्टि से सही तौर पर पालन न करना इसका एक अन्य उदाहरण है ।

भाषा का विकास एक दीर्घसूत्री प्रक्रिया है । इसलिए इसमें जल्दबाजी दिखाना बुद्धिमत्ता की बात नहीं होगी, लेकिन इस संबंध में अंगघात और गतिहीनता की स्थिति में संतुष्ट रहना भी राष्ट्रीय गौरव की भावना से विहीन होने का प्रमाण देना होगा । इसलिए उचित यही होगा कि स्थिति की वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए हिंदी को देश की राजभाषा बनाने के लिए एक क्रमबद्ध समय सूची तैयार की जाए और इसका दियानतदारी के साथ पालन किया जाए । हिंदी दिवस को मनाने की सर्वोत्तम विधि यही होगी कि इस दिन बैठकर भाषा से संबंधित सरकारी और गैर-सरकारी विभाग और स्वयंसेवी संस्थाएं इस विषय में स्थिति का वस्तुपरक जाएजा लें । भविष्य के लिए आवश्यक योजनाओं का निर्माण करें और नवीन एवं सबल संकल्पों के साथ सफलता की ओर ऊंची मंजिलों तक पहुंचने में जुट जाएं ।

—राजभवन, हैदराबाद
(आंध्र प्रदेश)
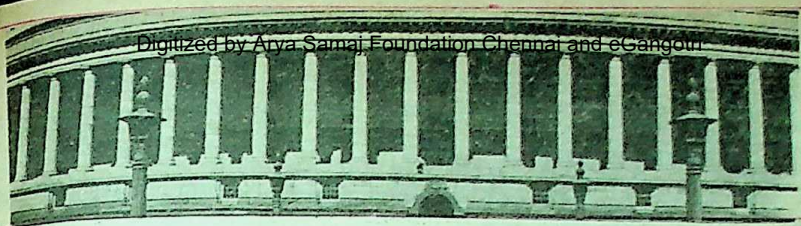
## संसद में शून्यकाल

# संविधान में व्यवस्था नहीं है

डॉ. रवीन्द्र कुमार वर्मा

***सदन की कार्यवाही को व्यवस्थित ढंग से संचालन हेतु कुछ सीमाएं निर्धारित की जाती हैं । किसी भी सदस्य को विवाद हेतु अध्यक्ष की अनुमति लेनी होती है तथा ऊपरी बात को सदन की कार्यवाही सूची में शामिल कराना होता है ।***

विधायिका के सदस्यों द्वारा उठाये गये लोक महत्त्व के मामले ही प्रजातांत्रिक अभिव्यक्ति के लक्षण हैं । सत्ता पक्ष या सरकार को लोकहित के प्रति सजग रखने, तथा प्रजातांत्रिकता के प्रति सजग रखने हेतु, सदस्यों को अपने विधायी कर्त्तव्यों का पालन करना होता है । अपने क्षेत्र की समस्याओं एवं लोक महत्त्व के मुद्दों को सदन के समक्ष रखना भी उनकी विधायी भूमिका है । इन कार्यों के संचालन एवं विधायकों के प्रभावपूर्ण कर्त्तव्यपालन हेतु नियमों का निर्माण किया गया है । सदस्यों को भी अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों से परिचित होना आवश्यक है । उन्हें विभिन्न अवसरों पर अपनी बात को कहने, किसी विषय पर विवाद उठाने तथा सदन का ध्यान आकर्षित करने के अवसरों का प्रदान नियमों द्वारा किया गया है । सदन की कार्यवाही को व्यवस्थित ढंग से संचालन हेतु कुछ सीमाएं निर्धारित की जाती हैं । किसी भी सदस्य को विवाद उठाने हेतु अध्यक्ष की अनुमति लेनी होती है तथा ऊपरी बात को सदन की कार्यवाही सूची में शामिल कराना होता है । इसके लिए पूर्व सूचना की आवश्यकता होती है । समय, नियम एवं महत्त्व के आधार पर सदस्यों के प्रश्नों, प्रस्तावों, प्राइवेट प्रस्तावों एवं विवादों को अध्यक्ष द्वारा स्वीकार या अस्वीकार किया जाता है । इन नियमों के चलते कुछ सदस्य अपनी बात को कहने से वंचित रह जाते हैं । अथवा कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण बातें जिन पर सदन का ध्यान दिलाना आवश्यक हो और सूचना अवधि के बाद घटित हुई हों या सदस्य के मस्तिष्क में उसी क्षण आयी हों, जिसे बिना पूर्व सूचना के

सदन में नहीं उठाया जा सकता । यह स्थिति सदस्यों के अधिकार को बाधित करती है । ऐसी स्थिति के लिए ही 'शून्यकाल' का महत्त्व है । परंतु शून्यकाल से संबंधित किसी प्रकार का वैधानिक प्रावधान नहीं है, न ही यह संसदीय कार्य-सूची में शामिल होता है ।

ब्रिटेन के हाउस ऑव कामंस की कार्यवाही में ऐसी स्थिति में सदस्यों की असमर्थता महसूस की गयी है । सदन की कार्यवाही पर हाउस ऑव कामंस के सेलेक्ट कमेटी में बयान देते हुए हाउस ऑव कामंस के स्पीकर ने कहा था, 'संसद केवल सत्ता और विपक्ष नहीं है —यह ६३० व्यक्तियों का वैसा समूह है, जिसमें अल्पसंख्यक, यहां तक कि एक-सदस्यी अल्पसंख्यक भी हैं । यह संभावी है कि बहुत कारणों से न तो सत्ता न विपक्ष ही उस विषय पर विवाद करना चाहते हैं, जिस पर अल्पसंख्यक विवाद करना चाहते हैं । संसद की यहां शाश्वत समस्या है कि सरकार के विपक्ष के तथा अल्पसंख्यकों के दावों का समंजन कैसे हो ।'

**शून्यकाल का उद्भव एवं महत्त्व**

इंगलैंड संसदीय व्यवस्था की जननी है तथा विश्व में सभी संसदीय व्यवस्थाओं में संसदीय-प्रक्रिया संबंधी नियमों एवं परंपराओं का स्रोत ब्रिटिश संसद ही है । वहां संसदीय प्रणाली को आज की स्थिति तक विकसित होने में करीब छह सौ वर्ष लगे हैं और वहां के सांसदों को समुचित अवसर प्रदान करने की दिशा में समय-समय पर प्रयास एवं विकास होते रहे हैं । भारतीय संदर्भ में भी यह उचित एवं प्रासंगिक है । भारतीय विधायकों एवं सांसद की संसदीय प्रक्रिया के विकास के क्रम में शून्यकाल का उपयोग करने लगे । प्रश्नकाल के तुरंत बाद अध्यक्ष की अनुमति के बिना भी वाद-विवाद उठाकर सदन का ध्यान कतिपय मुद्दों पर आकर्षित करने की प्रणाली विकसित हुई है । शून्यकाल में विवाद से संबंधित प्रणाली का उद्भव कब, कैसे और कहां हुआ, इसकी जानकारी उपलब्ध साहित्य से प्राप्त नहीं होती है । परंतु इतना अवश्य स्पष्ट है कि १९६७ में आयोजित पीठासीन पदाधिकारियों के सम्मेलन में शून्यकाल के औचित्य और उससे संबंधित नियम बनाने का मुद्दा उठाया गया था और यह परिपाटी उससे भी पूर्व की है । संसदीय कार्यप्रणाली से संबंधित भारतीय एवं विदेशी लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों में शून्यकाल का उल्लेख नहीं मिलता है । एर्सकीनमेय, राधानंदन झा, एम.एन. कॉल और एस.एल. शकधर, मुकर्जिया आदि प्रतिष्ठित लेखकों की पुस्तकों के इंडेक्स, कंटेंट्स और यहां तक कि फुटनोट में भी शून्यकाल का जिक्र नहीं मिलता है । सम्मेलनों में तो यह भी दावा किया गया है कि विश्व के किसी संसदीय प्रणाली में 'शून्यकाल' का प्रावधान नहीं है । भारत में सभी राज्यों की विधायिकाओं में भी इसके प्रचलन के स्पष्ट संकेत नहीं मिलते हैं ।

फिर भी सदस्यों को निर्बाध रूप से विवाद करने तथा सदन का ध्यान आकर्षित करने के अधिकार को विश्व के कतिपय संसदों में दूसरे-दूसरे नामों से दिये जाने के संकेत मिलते हैं —जैसे 'टेन मिनट्स एक्सपेरिमेंट', 'ग्रिवान्स आवर', 'दिस हाउस डू नाऊ एडजार्न मोशन' आदि । प्रथम प्रणाली में सदस्यों को विवाद उठाने या अपनी वह बात, जो सदन की

र्यवाही सूची में नहीं है, को करने के लिए दस मिनट बोलने का अधिकार दिया जाता है । कुछ राज्यों में 'ग्रिवांस आवर' की व्यवस्था है जिसके तहत आधे घंटे या एक घंटे का समय सदस्यों को ग्रिवांसेज (शिकायतें) कहने का अवसर दिया जाता है । इसमें सरकार के लिए जवाब देना आवश्यक नहीं होता है परंतु उचित समझे जाने पर कोई अन्य समय उत्तर हेतु निर्धारित किया जाता है । ब्रिटेन के हाउस ऑव कामंस में सदस्यों को बिना पूर्व सूचना के विवाद उठाने का अवसर सरकार द्वारा एक मोशन की घोषणा कर प्रदान किया जाता है, जिसमें कहा जाता है कि 'देट दिस हाउस डू नाउ एडजार्न' । यह मोशन प्रतिनिधि बैठक के अंत में लाया जाता है, जिसमें व्यक्तिगत तौर पर सदस्यों को किसी मामले को उठाकर आधे घंटे तक विवाद करने का अवसर प्रदान किया जाता है । इसके अतिरिक्त हाउस ऑव कामंस में 'एमरजेंसी एडजार्नमेंट मोशन' लाने का, किसी सदस्य को, अधिकार है तथा सरकार से उस मामले पर जवाब-तलब भी किया जाता है ।

जहां तक भारत में इन अवसरों को प्रदान करने का प्रश्न है, शून्यकाल (प्रश्नकाल के तुरंत बाद) में विवाद उठाने का प्रचलन है । किस राज्य-विधायिका में कब और कैसे यह प्रचलन आरंभ हुआ, इसका उल्लेख उपलब्ध साहित्य में दृष्टिगोचर नहीं हुआ, परंतु सर्वप्रथम १९६७ में शून्यकाल के औचित्य पर तथा इससे संबंधित नियम बनाने के औचित्य पर प्रश्न उठाये गये । उल्लेखनीय है कि १९६७ के सम्मेलन में मैसूर विधायिका के स्पीकर ने यह प्रश्न उठाया कि शून्यकाल के पीछे कोई बौधिकता या आधार है या नहीं ? क्या यह विधायी-प्रक्रिया के बाहर की वस्तु है ? यदि इसका समापन आवश्यक है, तो उसके लिए क्या उपाय किये जाएं ? अर्थात इस शून्यकाल को समाप्त करने की ही बात थी । १९६९ में बिहार विधान परिषद एवं मैसूर विधायिका के स्पीकरों ने पुनः शून्यकाल के शून्यालाप पर आक्षेप किया । बिहार विधान परिषद की ओर से यह प्रश्न उठाया गया कि क्या शून्यकाल को परिभाषित करने हेतु, कुछ विशेष नियम बनाने चाहिएं ? तथा क्या यह निर्धारित किया जाना चाहिए कि इसमें कौन-कौन विषय विवाद के लिए उठाये जाएं ? मैसूर विधायिका की ओर से यह आरोप लगाया गया कि शून्यकाल में बिना सूचना के अत्यधिक मामले उठा दिये जाते हैं, जिससे सदन की पूर्व निर्धारित कार्यवाही को संपन्न करने में गड़बड़ी हो जाती है । क्या इसे खतम ही कर देना चाहिए ? परंतु तमिलनाडु के स्पीकर ने केवल उन्हीं मुद्दों को उठाने का औचित्य सिद्ध किया, जो अप्रत्याशित ढंग से किसी सदस्य के क्षेत्र में घटित घटना से संबंधित हो ।

**शून्यकाल का औचित्य :**

अब हम यह देखेंगे कि शून्यकाल पर पीठासीन अधिकारियों के अनुभव में और व्यवहार रूप में क्या दोष और गुण अवतरित होते हैं । शून्यकाल के विवाद से उत्पन्न परिस्थितियां निम्नलिखित तरीके से विधायिका कार्यवाही को प्रभावित करती हैं—

१. शून्यकाल के विवाद का लंबा हो जाना फलतः सदन की पूर्व निर्धारित कार्यवाही पर उसका असर पड़ना ।
२. पहले से निर्धारित विषयों से संबंधित विवाद

का उठना ।

३. गैर-महत्त्वपूर्ण विषयों को लाने से सदन का नकारात्मक उपयोग ।

मैसूर के स्पीकर के शब्दों में, 'शून्यकाल अवांछित है तथा इसकी प्रवृत्ति नकारात्मक है । इसके चलते पूर्व से एजेंडा तैयार करने का तत्व ही हवा में उड़ा दिया जाता है । कम महत्त्वपूर्ण विषयों को उठाकर विकट स्थिति उत्पन्न कर दी जाती है । कोई सदस्य विवाद को घंटों लंबा कर देता है, फलतः सदन में कार्यवाही हेतु पूर्व निर्धारित एजेंडा के विषयों पर विवाद को क्षति पहुंचती है, जो कि राष्ट्रहित के विरुद्ध है । जिससे सरकार को पर्याप्त जवाब देने के समुचित अवसर को क्षति पहुंचती है ।

शून्यकाल को परिभाषित करने के भी प्रयास किये गये हैं परंतु इस दिशा में कोई सफल प्रयास नहीं किया गया है । एक पीठासीन अधिकारी ने इसे परिभाषित करते हुए लिखा है :

"जैसा कि मैं समझता हूं शून्यकाल वह चीज है जो प्रश्नकाल के बाद होता है और सदस्य उन मुद्दों को लाते हैं जो एजेंडा में नहीं होते ।"

एक दूसरे पीठासीन अधिकारी के शब्दों में, "वह मुद्दा जो सदन के पटल पर स्पीकर की अनुमति से विवाद के लिए रखा जाता है, शून्यकाल का भाग नहीं हो सकता । यदि स्पीकर अनुमति नहीं देते हैं और फिर भी सदस्य मुद्दे को उठाते हैं, जो कि नियम के विरुद्ध है, तो वह शून्यकाल बन जाता है ।" अतः इसे लागू करने या हटाने के
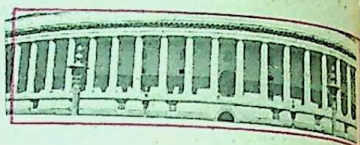
लिए कानून बनाने की बात ही नहीं की जा सकती । उपर्युक्त उक्तियों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि शून्यकाल-जैसा कि इसका नाम है 'शून्य' के समतुल्य है । 'शून्य' का उपयोग (मसलन शून्य का मूल्य किसी संख्या के बाद में आने से बढ़ जाता है) जिस तरह कभी-कभी बढ़ जाता है उसी तरह यह पूर्व निर्धारित एजेंडा के विषयों के विवाद से कभी-कभी ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो जाता है और यदि इसका उपयोग जनहित में नहीं है (मसलन शून्य का मूल्य किसी संख्या के एकदम पीछे आने के समान) तो वह वास्तव में शून्य ही रह जाता है । अतः शून्यकाल का महत्त्व कभी-कभी मूल्यहीन हो जाता है ।

## भारतीय राज्यों में शून्यकाल का औचित्य

परंतु वृहद् पैमाने पर सदस्यों को बिना पूर्व सूचना के महत्त्व के विषयों पर विवाद पर विवाद उठाने के अधिकार की सिफारिश की जाती रही है, जिसे सदस्य अपनी इच्छा से उठाने के लिए उत्साहित हों ।

जहां तक शून्यकाल के प्रावधानों का प्रश्न है, लिखित रूप में किसी भारतीय विधायिका में नहीं मिलता । कुछ लोगों का मत है कि इसके लिए कतिपय प्रावधान किये जाने चाहिए तथा कुछ लोगों का मत

है कि इसके लिए (शून्यकाल के लिए) किसी तरह का विधिक प्रावधान नहीं होना चाहिए। इसके लिए विधिक प्रावधान का नहीं होना ही इसकी महत्ता है। असम में रूल्स कमेटी ने यह मान्यता दी है कि प्रश्नकाल के तुरंत बाद शून्यकाल होगा तथा उसके बाद ही पूर्व निर्धारित कार्यवाही शुरू होगी। शून्यकाल से संबंधित विधिक प्रावधान करने हेतु यह दलील दी जाती है कि कभी-कभी शून्यकाल की अवधि प्रश्नकाल की अवधि से भी अधिक समय खींच लेता है, अतः इस पर प्रतिबंध लगाने के नियम बनने चाहिए। परंतु शून्यकाल से संबंधित नियम बनने के साथ ही शून्यकाल अपनी आत्मा खो देगा। फिर भी संसदीय प्रक्रिया से संबंधित अभिलेखों, पुस्तकों एवं नियमों में शून्यकाल को स्थान मिलना चाहिए। यह सदन के सदस्यों की भावनाओं को महत्त्व देने में 'सेफ्टी बाल्व' का कार्य करता है। यदि शून्यकाल को मान्यता नहीं दी जाए, तो उसके विकल्प में कुछ व्यवस्था की जाए। ऐसा करने से ही संसदीय प्रणाली के मूल तत्व की रक्षा की जा सकेगी। दिनानुदिन अभिव्यक्ति की स्वच्छंदता-जैसी समस्याओं की जटिलता और वृहद्ता बढ़ती जा रही है। फलतः ऐसे अवसरों का होना आवश्यक है।

## बिहार विधान-मंडल में शून्यकाल

सरकारी नीतियों को शून्यकाल विवाद के द्वारा प्रभावित किया गया है। शून्यकाल में उठाये गये बिंदुओं पर सरकार का आश्वासन तथा तत्काल कार्यवाही करने का आश्वासन भी मिला है, कई अवसर ऐसे भी आये हैं, जिसमें सदस्यों ने वाक आउट भी किया है, तथा सरकार की नीति को प्रभावित किया है।

जहां तक बिहार विधान मंडल का प्रश्न है, शून्यकाल एक महत्त्वपूर्ण काल के रूप में उपयोग किया जाता रहा है। अनेकानेक कठिनाइयों के बावजूद शून्यकाल मात्र शून्य न होकर 'पूर्ण' की भूमिका अदा करता रहा है। बिहार-विधान मंडल ने सदन की कार्यवाही में शून्यकाल के द्वारा व्यवधान उत्पन्न करनेवालों के लिए कुछ नियम बना लिए हैं। प्रारंभ में शून्यकाल के दौरान अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हो जाती थी। इससे निपटने के लिए एक सदस्य को बोलने हेतु १० मिनट का समय तय किया गया। फिर भी कई सदस्यों को मौका नहीं मिलता था और अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हो जाती थी। अतः यह निश्चय किया गया कि शून्यकाल में उठाये जानेवाले मुद्दों की सूचना एक घंटा पूर्व अध्यक्ष को दे दी जाए। जन-समस्याएं इतनी अधिक हैं कि यह व्यवस्था भी कम पड़ने लगी फलतः बिहार विधानसभा के अध्यक्ष प्रो. शिवचंद्र झा ने यह नियमन जारी किया कि एक सदस्य ५० शब्दों से अधिक का वक्तव्य नहीं दे सकता। हमें देखना है कि शून्यकाल का शून्य अपना आकार कितना बढ़ाता है? अर्थात कहीं यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और पूर्णकाल का ही रूप धारण न कर ले।

**—शोध फेलो, जगजीवन राम संसदीय अध्ययन एवं राजनीतिक शोध संस्थान, १० मैंगलस रोड, पटना-८००००१**

कहानी
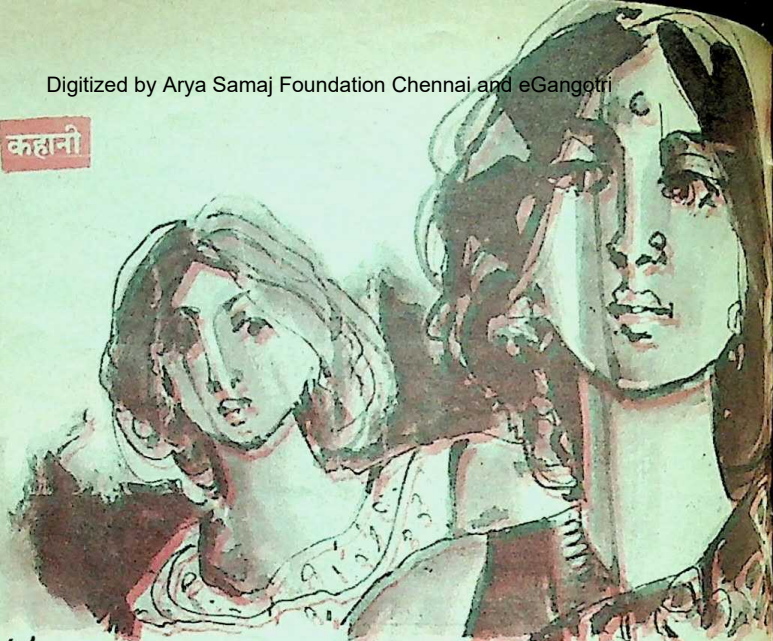
"आपका विवाह हो गया ?" तूलिका ने पूछा । क्षणांश के लिए रूककर उसने उत्तर दिया, "नहीं !"

तूलिका के नेत्रों में प्रश्नचिह्न देखकर उसने नयन झुका लिए । संभवतः वार्तालाप के लिए दोनों कोई सूत्र नहीं पकड़ पा रही थीं, अतः उसने मंद स्वर में कहा, "अब मैं जाती हूं ।"

तूलिका नगरनिगम की एक पाठशाला में अध्यापिका थी । उसका जन्म एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था । सरस्वती की उस पर विशेष अनुकंपा थी । कुशाग्र बुद्धि होने के कारण वह सदा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होती रही । वह साहित्यिक अभिरुचि की एक संवेदनशील महिला थी । जीवन के चालीस बसंत देख चुकी थी । उसके पति मितभाषी, यथार्थवादी व परिश्रमी पुरुष थे । वह कृषि-भवन में सह-निदेशक थे । दो वर्ष हुए जैसे-तैसे ऋण लेकर व पत्नी के आभूषण बेचकर चित्रक ने अपने घर का निर्माण करवाया था । धीरे-धीरे प्रथम खंड के किराये से वह ऋण चुका रहा था । कुछ दिन हुए उसके घर का प्रथम खंड एक नवीन कंपनी ने किराये पर ले लिया था । घर एक महत्त्वपूर्ण पथ पर बना हुआ था । कंपनी के अधिकारीगण को चित्रक का घर व्यावसायिक दृष्टि से अत्यधिक सुविधा व लाभजनक लगा, अतः उन्होंने निर्णय करने में

# जीवन लक्ष्य

● कमलिनी कौल

तनिक भी विलंब न किया । ज्योत्सना उसी कंपनी में 'पब्लिक रिलेशन' आफिसर थी । कंपनी के स्वयं के दूरभाष का अभी प्रबंध नहीं हुआ था, अतः वह कपनी से संबद्ध किसी न किसी कार्य के लिए, दूरभाष का प्रयोग करने, तूलिका के पास आती थी । तूलिका एक बजे अपनी पाठशाला से घर आ जाती थी और फिर उसे संपूर्ण दिन एकाकी काटना असहनीय लगता था । ज्योत्सना की मित्रता भीषण गरमी में पुरवइया के झोंके के सदृश्य उसके मन को प्रफुल्लित करती थी । वह ज्योत्सना को आग्रहपूर्वक स्वयं के साथ भोजन करने के लिए निमंत्रित करती, अतः एक मास पुरातन मित्रता ने कब अंतरंगता का बाना पहन लिया, दोनों ही न जान सकीं । एक दिन ज्योत्सना ने पूछा, "दीदी, तुम्हारा मायका कहां है ?"

"कालकाजी," तूलिका ने कहा ।

ज्योत्सना ने अस्फुटित स्वर में कहा, 'कालकाजी,' पलांश के लिए जो दामिनी-सी उसके नयनों में दमक गयी, तूलिका के नेत्रों से उसकी दमक छुपी न रह सकी । संभवतः अतीत की प्रिय या अप्रिय स्मृतियां ज्योत्सना के मर्म को विकल कर रही थीं । तूलिका के अनुभवी नेत्र यह सत्य जान चुके थे, परंतु कुछ भी कहना, उसने उचित नहीं समझा ।

धीरे-धीरे एक मास और व्यतीत हो गया । पाठशाला में ग्रीष्मकालीन अवकाश हो चुका था, अतः तूलिका अब घर पर ही रहती थी ।

"ज्योत्सना, तू कल क्यों नहीं आयी ?" तूलिका ने जिज्ञासावश पूछा ।

"कालकाजी गयी थी ।" ज्योत्सना ने शांत स्वर में उत्तर दिया ।

"कालकाजी, ऐसा कौन-सा कार्य अटका पड़ा था ? जिसके लिए तुझे अवकाश लेकर कालका जी जाना पड़ा ?" तूलिका की दृष्टि ज्योत्सना के अंतर्मन को भेद रही थी ।

"मुझे 'किटि पार्टी' में जाना था ।"

"क्या कह रही हो ज्योत्सना ?" तूलिका ने चकित दृष्टि से ज्योत्सना को निहारते हुए कहा ।

"मैं सत्य कह रही हूं, दीदी, आठ वर्ष पूर्व मेरा विवाह हुआ था ।" ज्योत्सना ने निर्लेप स्वर में उत्तर दिया ।

"तुम्हारे पति कहां हैं ?" तूलिका ने पूछा ।

"वह कालकाजी में रहता है ।" ज्योत्सना ने कहा ।

"क्या उसने तुझे . . . ?" तूलिका ने पूछा ।

ज्योत्सना ने तूलिका को रोकते हुए कहा, "नहीं, मैंने उसे छोड़ दिया है ।"

"क्यों ? ऐसी कौन-सी घटना हो गयी कि तू उसका परित्याग करने पर विवश हो गयी ?" तूलिका ने आहत स्वर में पूछा ।

"ये पूछो दीदी कि क्या घटित नहीं हुआ था !" उस नराधम का परित्याग मैंने किसी विवशता से नहीं, अपितु स्वेच्छा से किया था । आज स्वयं पर क्रोध आता है कि मैं इतनी विवश, इतनी असहाय क्यों थी ? क्यों न तोड़ सकी अर्थहीन बंधन ? क्यों नरक के दावानल में तिल-तिल करके भस्म होते देखती रही स्वयं के अस्तित्व को ? आठ वर्ष पूर्व सात फरवरी को उठी थी, मेरी डोली । यद्यपि मेरे जन्मदाता रूढ़िवादी नहीं हैं तो भी भाई-बंधुओं का मान रखने को सदा विवश रहते हैं । मेरे पिताजी चार भाई हैं और एक उनकी लाड़ली बहन है । बुआ

के चचिया ससुर के सुपुत्र के संग हुआ था मेरा विवाह। क्या सुपात्र जुटाया था बुआ ने मेरे लिए? यहां भी चतुरा बुआ ने अंगूठा दिखा दिया मेरे निरीह माता-पिता को। चंदन ने 'सिविल इंजीनियरिंग' में 'डिप्लोमा' लिया था। परंतु उन्हें बताया गया लड़का प्रथम श्रेणी में 'इंजीनियरिंग' में स्नातक था। चलो, यह सब तो छोड़ो। घर से विदा होते समय ताई, चाची सब नातेदारों ने वही बलिदानी सीख दी। अगर समय आये तो स्वयं की आहुति देने से तनिक भी विचलित मत होना। क्या भाग्य-विडंबना है नारी की!

ज्योत्सना इतना कहकर शून्य में निहारने लगी। कुछ पलों के लिए वहां असीम निस्तब्धता व्याप्त हो गयी। तूलिका उठकर चाय बना लायी। चाय पीते समय ज्योत्सना ने पुनः अपनी व्यथा-कथा को आगे बढ़ाया, "नयनों में इंद्रधनुषी स्वप्न लिए जब मधु-यामिनी आयी तो जैसे पलांश में, मैं गगन से धरा पर गिरा दी गयी। चंदन का अतिशय शुष्क स्वर गूंज उठा, "देखो, मैं बहुत सख्त आदमी हूं। एक तो तुझे मेरी मां की हर इच्छा पूर्ण करनी होगी, दूसरा मैं ना सुनने का अभ्यस्त नहीं हूं। अगर आधी रात को भी मैं खाना बनाने को कहूं तो तुझे बनाना होगा। अगर मेरी मां तुझे चिलचिलाती धूप में भी खड़ा रहने को कहे तो तुझे निःशब्द उनकी आज्ञा का पालन करना होगा।" हृदय दर्पण की टूटी किरणों से संपूर्ण काया अथाह वेदना से विकल हो उठी। अभी मैं संभल भी नहीं पायी थी कि वह क्षुधातुर नर व्याघ्र मेरे पर टूट पड़ा। विवाहोपरांत जो बलात्कार नारी पर होते, उनकी सुनवायी कहां होती है? संभवतः इस अक्षम्य अपराध का कोई दंड नहीं लिखा है, विधाता ने भी। आज भी मेरुदंड में शीतलहर दौड़ जाती है उस पतिरूपी नर-भक्षक की वह मुखाकृति स्मरण कर। मदिरापान से कपाल तक चढ़े हुए जवाकुसुम से रक्तिम नेत्र, दुर्गंधमय श्वास तथा मुख से निकलती हुई झाग। मैं लुटी-पिटी विस्फारित नेत्रों से अपना सर्वनाश देखती रही। पति-नामी वह क्रूर पुरुष अपनी पिपासा शांत कर मुख फेर, शैया पर किसी वृषभ-सा सो गया। उसने एक बार, केवल एक बार भी यह देखने का कष्ट नहीं किया कि मेरी क्या दशा थी? कितना आहत हुआ तन व मन। परंतु स्वयं की व्यथा मुझे नीलकंठ-सी पीनी पड़ी। रूपहले स्वप्न तो कभी के छिन्न-भिन्न हो चुके थे। ओ मां जगदंबा। कितना क्रूर था मेरा भाग्य। उस रात्रि से जो त्रास-चक्र आरंभ हुआ, तो निरंतर आठ वर्ष तक पिसती रही उसमें।" अतीत की भयावह स्मृतियों के स्मरण मात्र से ही पीताभ हो गया ज्योत्सना का मुखारबिंद।

● ● ●

शनिवार को ज्योत्सना का आफिस एक बजे बंद हो जाता था। वह कभी-कभी तूलिका के पास ठहर जाती थी। 'आफिस' बंद होने के पश्चात वह तूलिका के पास आ गयीं। दोनों सखियों ने मिलकर भोजन किया तथा भोजनोपरांत दोनों वार्तालाप में मग्न हो गयीं। तूलिका के आग्रह पर ज्योत्सना अपनी शेष व्यथा-कथा सुनाने लगी, "विवाह के एक सप्ताह पश्चात, वह मुझे कलकत्ता ले गया। दो कमरे का छोटा-सा फ्लैट था। मैंने दृढ़ निश्चय किया था कि मैं चंदन को अपना हृदय परिवर्तन

**पुष्पों को नया जीवन-संदेश देकर जीवन-लक्ष्य केवल स्वयं की जाई हुई संतान को पालने तक ही सीमित नहीं है, अपितु साधनहीन, अनचाहे पुष्पों को महकाने में भी निहित है।**

करने के लिए विवश कर दूंगी । अपनी सेवा-निष्ठा, मधुर व्यवहार तथा प्रेम में आकंठ डुबो दूंगी उस पाषाण-हृदय पुरुष को । मैं पूर्ण मनोयोग से उसकी रुचि के खाद्य पदार्थ बनाती । घर सजाती । स्वयं उसकी रुचि के अनुसार श्रृंगार करती । परंतु वह पुरुष न जाने किस माटी का बना हुआ था कि घर आते ही निर्लेप भाव से एक बार चहुंदिक निहारता और फिर मदिरापान करने बैठ जाता । मदिरापान करने के पश्चात एक के बाद एक खाद्य पदार्थ कचर-कचर करके भकोसता जाता । प्रशंसा का एक शब्द तो कहना दूर, वह कभी भूले से यह भी न पूछता कि मैंने खाना खाया है या नहीं ? मेरा संपूर्ण दिन कैसे व्यतीत होता है ? कई बार बिना भोजन किये मैं रसोई समेटकर कमरे में आती, तो बेसुरे खर्राटों की कर्णकटु स्वर-लहरी निद्रादेवी को कोसों दूर भगा देती और अगर उसकी पलकें खुल जातीं, तो डकारते हुए, आरंभ होता उसका देह-पल्लवी को नोचने का त्रास-चक्र ।''

चार वर्ष उपरांत चंदन का स्थानांतरण देहली में हो गया । परंतु उज्ज्वल भविष्य की कल्पना केवल स्वप्नमात्र बनकर रह गयी । त्रास-चक्र अत्यधिक तीव्र गति से चलने लगा । अब ज्योत्सना को पति के अत्याचारों के साथ, सास के अत्याचार भी सहन करने पड़ते । चंदन की मां कई बार ज्योत्सना को ऐसे-ऐसे अपशब्द कहती कि उसकी मांस-मज्जा तक दग्ध हो जाती । कभी कहती, ''बुढ़िया मुझे देखकर जलती है । मैं अभी भी जवान हूं न !'' पारदर्शी 'नाइटी' में जब चंदन की मां षोड्षी बनी घर भर में घूमती तो ज्योत्सना लज्जा से नेत्र झुका लेती । प्रतिवेशी का पुत्र जो कि कैशोर्य के द्वार की ओर पग बढ़ा रहा था, जब खिड़की में खड़ा होकर भद्दे गीत गाने लगता, तो चंदन की मां गर्व से ज्योत्सना की ओर देखते हुए कहती, ''देखा बुढ़िया । अभी भी लड़के मरते हैं मुझ पर !'' सनकी सास का अभद्र व्यवहार सहन करने के अतिरिक्त कर ही क्या सकती थी, निरुपाय ज्योत्सना ।

विषाक्त जीवन के तपते दिवस व तिमिराच्छादित रात्रि दोनों ही अंतहीन थे । पहले तो मनोरंजन का कोई स्थान ही न था उसके जीवन में, फिर भी अगर कभी भूले-भटके चंदन ज्योत्सना को हाट-बाजार ले जाता, तो बस में चढ़ते हुए या मार्ग पर चलते हुए दोनों हाथों से उसे यूं बचा-बचा कर चलता कि राह चलते पथिक उसे चकित दृष्टि से निहारने लगते । ज्योत्सना उसके हास्यास्पद व शक्की स्वभाव के कारण हर स्थान पर उपहास का पात्र बनती ।

यहां तक ही गरल-पान करना पड़ता तो ज्योत्सना ने वह भी किया होता, परंतु उस निर्दयी निर्मम ने तो उसे कहीं का नहीं छोड़ा ।

ज्योत्सना ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से तूलिका को बताया, ''जब दीदी मैं प्रथम बार गर्भवती हुई, तो हृदय अति प्रसन्न था । अपने आंगन में महकने वाले पुष्प की महक में, हर कष्ट भूल जाऊंगी, मैं ऐसा सोचती थी परंतु जब मैंने प्रसन्नचित्त चंदन को यह सूचना दी तो उसने मुझे गुर्राते हुए कहा था, ''बत्तीसी काहे को दिखा रही है ? क्या कभी कोई पिल्ला नहीं देखा ? अभी तो मेरी स्वयं की ही क्या आयु है ? मेरे खाने-खेलने के दिन हैं । कल ही मेरे साथ चल डॉक्टर के पास । हुं ! बड़ी आयी मां बननेवाली ।'' उसी समय मेरी आकांक्षाओं पर तुषारापात हो गया

था । इस वज्रपात ने कोई आकांक्षा शेष नहीं रहने दी मेरे हृदय में, और फिर गर्भपात का ऐसा चक्कर चला कि सात वर्षों में आठ गर्भपात करवाये मेरे । कभी चंदन स्वयं मेरे साथ मेरी आकांक्षाओं की आहुति दिलवाने जाता, तो कभी उसकी माताश्री जिसे विधाता ने न जाने मातृत्व के गरिमापूर्ण पद पर क्यों बिठाया था ? जब अंतिम बार मैं डॉक्टर के पास गयी तो फिर मृत्यु द्वार तक पहुंचकर, अपनी कोख की आहुति देकर वापस लौटी ।'' ज्योत्सना के नयनों से झर-झरकर अश्रु बह निकले ।

कुछ शांत होने पर उसने पुनः आगे कहा, ''मेरे जनगण को न मेरे घर आने की अनुमति थी, न ही 'फोन' करने की आज्ञा थी । यहां तक कि मेरे मांजाए भाई को भी अपमानित कर चंदन ने अपने द्वार से बाहर निकाल दिया । मेरे अनुरोध करने पर मेरे माता-पिता ने मेरे घर में कोई भी मध्यस्थता करनी बंद कर दी ।

दिन-प्रतिदिन मैं ससुराल नामक यम नगरी में कष्ट भोगती रही । किसी दयालु प्रतिवेशी ने मेरे जनकगण को मेरी दयनीय दशा की सूचना दे दी । मेरे माता-पिता व सब भाई-बहन व्याकुल हुए मेरे द्वार पर भागते आये, परंतु वे मेरे दुर्भाग्य को कैसे टाल सकते थे ?''

चंदन ने विषैली हंसी हंसते हुए कहा, ''ले जाओ अपनी बांझ लड़की को यहां से । मुझे इस ठूंठ की कोई आवश्यकता नहीं है ।'' उसके इन जलते शब्दों को सुनकर मेरा संपूर्ण नारीत्व विद्रोह की ज्वाला में जल उठा । मेरे अंतर्मन की अग्नि प्रचंड रूप से प्रज्वलित हो चुकी थी ।

''मैं तो उसे कारागार की रोटी अवश्य खिलाती, परंतु ऐसे में वही बुआ नामधारिणी नारी फिर मार्ग-अवरुद्ध कर खड़ी हो गयी । वह मेरे सब चाचा-ताऊ को लेकर मेरे पिता के द्वार आ बैठी । अब गुरूजनों का मान रखते हुए चंदन को दंडित किये बिना ही छोड़ दिया गया । त्रास-चक्र की अतिशय लंबी तिमिराच्छादित रात्रि समाप्त हो गयी । अब सात मास हो चुके हैं विधिवत् तलाक हुए ।'' इतना कहकर ज्योत्सना शून्य दृष्टि से विस्तृत नीलांबर को निहारने लगी ।

''हे जगन्नाथ ! किन अपराधों का दंड भोगा तूने ज्योत्सना !'' तूलिका ने मार्मिक स्वर में कहा ।

''कोख की आहुति दे, मैं अर्ध-विक्षिप्त हो

गयी थी, दीदी । पिताजी के समझाने पर मैंने यह नौकरी स्वीकार की । वह चाहते हैं कि मैं कुछ ऐसा करूं, जिससे मुझ में आत्मविश्वास जागृत हो और शेष जीवन-पथ पर मैं निर्भय हो कर चल सकूं ।'' ज्योत्सना ने बताया ।

''क्या कभी अतीत की स्मृतियां बाधा नहीं डालतीं तेरे जीवन में ?'' तूलिका ने कहा ।

''वे तो अब उस विषैले धुएं के सदृश्य हैं, जिसमें श्वास लेना भी कठिन प्रतीत होता है । मानव को परिस्थितियों के संग समझौता करना ही पड़ता है । मैंने अपनी एक भतीजी गोद ले ली है । क्या यह उचित है ?'' ज्योत्सना ने जिज्ञासापूर्ण नेत्रों से तूलिका पर दृष्टिपात करते हुए कहा ।

''क्या तुम उसे विधिवत् गोद ले चुकी हो । अगर नहीं तो मैं तुझे एक परामर्श... ।'' तूलिका ने वाक्य अधूरा छोड़ते हुए कहा ।

''दीदी, आप तनिक भी संकोच मत करो । मैं आपको निकटतम प्रियजनों में से एक समझती हूं, तभी तो अपना संपूर्ण अतीत अक्षरशः सत्य आपके सामने रख दिया है । कालका जी की कोई स्मृति शेष नहीं रखना चाहती । न जाने किन उन्मादी क्षणों में मां-बेटे ने मुझे 'किटि पार्टी' में जाने की आज्ञा दे दी थी, परंतु अब मैं वहां किसी से कोई संपर्क भी नहीं रखना चाहती हूं ।'' ज्योत्सना ने गंभीर स्वर में कहा ।

''देखो ज्योत्सना, तुम्हारी भतीजी संपन्न परिवार से संबंधित है । तुम उसे लाख अपना बनाओ, परंतु वह रहेगी अपने माता-पिता की ही बेटी ।'' तूलिका ने समझाते हुए कहा ।

''तो मैं क्या करूं दीदी ? हृदय में कभी-कभी असीम शून्यता व्याप्त हो जाती है । मैं स्वयं का प्रतिरूप देखना चाहती थी, किसी मानव-मूर्ति में । कितना रिक्त है मेरा जीवन और मैं !'' ज्योत्सना ने घोर निराशा में घिरते हुए कहा ।

''क्यों हृदय हारती है, ज्योत्सना ? तू अभी भी अपना प्रतिरूप देख सकती है किसी मानव-मूर्ति में ।'' तूलिका ने मधुर स्वर में कहा ।

''वह कैसे संभव है ? दीदी, तुम तो जानती हो कि मैं... ।'' ज्योत्सना ने आश्चर्यपूर्ण स्वर में कहा ।

''क्या अपना प्रतिरूप स्वयं की जाई संतान में ही दिखायी देता है ? ज्योत्सना, स्वयं के लगाये पौधों को तो हर प्राणी सींचने की चेष्टा करता है । परंतु वास्तविक आनंद तो पतझड़ से परिपूर्ण उपवन के पौधों को सींचने में है । तू किसी अनाथ को गोद ले ले । तेरी शिक्षा, तेरे विचार, तेरा लालन-पालन, उसके महकते हुए जीवन में तेरा रूप प्रतिबिंबित कर देगा । अच्छे कर्म करके अच्छे फल की आशा कर सकता है मानव । आज नीरू, नीमा को हर कोई स्मरण करता है, जब भी कबीर की जीवनी स्मरण की जाती है, तो कबीर के जन्मदाता भर्त्सना के पात्र ही बनते हैं । अतः जीवन सार्थक हो उठता है असमय मुरझाते हुए पुष्पों को नया जीवन-संदेश देकर । जीवन-लक्ष्य केवल स्वयं की जाई हुई संतान को पालने तक ही सीमित नहीं है अपितु साधनहीन अनचाहे पुष्पों को महकाने में भी निहित है ।'' तूलिका के इतना कहते ही, मानो एक नवीन प्रभात ज्योतिर्मय किरणें बिखेरता हुआ उदित हो गया ज्योत्सना के

# स्वास्थ्य और सौंदर्य का राज़ अब छिपा नहीं है। दुनिया की लाखों महिलायें इसे जानती हैं।
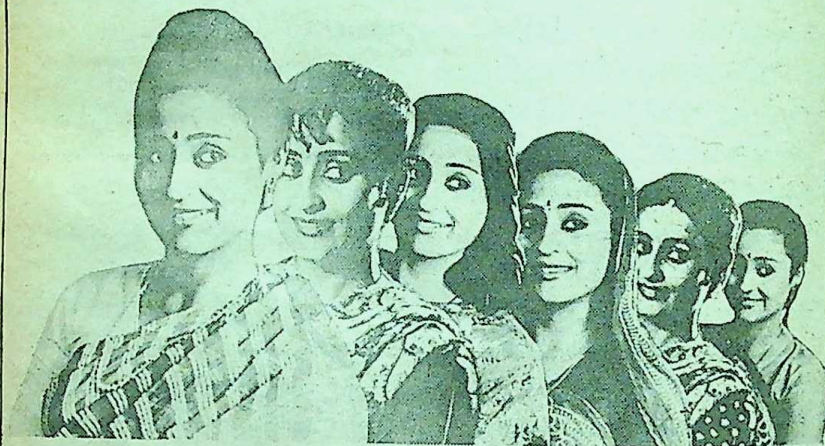
## आप ही इससे वंचित क्यों रहें?

**माला-डी के विषय में डाक्टर से पूछें।**

davp 91/232 HIN

सम्मुख ।

● ● ●

आज इस बात को सोलह वर्ष व्यतीत हो चुके हैं । ज्योत्सना और तूलिका संसार सागर की बहती रेती में विलीन हो चुकी थीं । एक दिन अकस्मात दोनों कनाट प्लेस में मिल गयीं । ज्योत्सना के साथ एक किशोर व एक किशोरी थे । तूलिका ने ज्योत्सना की कुशल-क्षेम पूछने के पश्चात बच्चों पर प्रश्नसूचक दृष्टि डाली ।

ज्योत्सना ने गर्वपूर्ण मुस्कान बच्चों पर डालते हुए मधुर स्वर में कहा, "मेरे बच्चों से मिलो दीदी, मेरे बेटे का नाम प्रभात है और यह इस वर्ष रुड़की इंजीनियरिंग कॉलेज में गया है और यह मेरी बेटी ऊषा, जो मैडिकल कॉलेज में गयी है । इन दोनों बच्चों के कारण ऊषा ने लालिमा बिखेरते हुए नया प्रभात उदित कर दिया है, मेरे जीवन में ।"

दोनों बच्चे सुंदर सभ्य व शिष्ट थे । दोनों ने शिष्टतापूर्वक झुकते हुए तूलिका को करबद्ध नमस्कार किया । कुछ समय के लिए दिशाकाल को भूल दोनों सखियां सड़क पर खड़ी वार्तालाप में लीन हो गयीं । तत्पश्चात तूलिका ने ज्योत्सना को किसी काफी हाउस में चलकर बैठने का अनुरोध किया तो ज्योत्सना ने प्रभात को चाबियां देते हुए कहा, "दोनों भाई-बहन गाड़ी में जाकर बैठो ।" तत्पश्चात तूलिका के चरण-स्पर्श करते हुए ज्योत्सना भावपूर्ण स्वर में बोली, "आज नहीं दीदी, मैं फिर कभी आपके घर आऊंगी । अब तो मैं देहली में ही रहती हूं । मैं मन-प्राण से आपकी आभारी हूं उचित समय पर मार्गदर्शन कर, जो जीवन-लक्ष्य प्राप्त करने की प्रेरणा आपने मुझे दी, उसी के कारण मेरा घर-आंगन महकते हुए पुष्पों की महक से, महक उठा है । दोनों बच्चे भी मेरे प्रति असीम स्नेह रखते हैं और मैं ! मैं तो उनकी मां ही हूं ना !

एक दिन मेरी महकती हुई बगिया को देखने अवश्य आना । मैं पुनः कहती हूं अगर मेरे जैसी अन्य बहनें या निःसंतान दंपति समाज के इन ठुकराये हुए पुष्पों को लू के उष्ण झोंकों से बचा लें, तो ये धूल-धूसरित पुष्प तो खिल ही उठेंगे, उनका स्वयं का जीवन भी अकथनीय आनंदानुभूति से पुलक उठेगा और इसमें देश व समाज दोनों का भी कल्याण होगा ।"

तूलिका स्नेहिल दृष्टि से ज्योत्सना की गाड़ी को पथ के उस पार विलीन होते हुए देखती रही ।

—एल-६७ए, मालवीय नगर, नयी दिल्ली ।

## कबीर की दृष्टि में प्रेम

*जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान*
*जैसे खाल लोहार की, सांस लेत बिनु प्रान*
*पीया चाहै प्रेम रस, राखा चाहै मान :*
*एक म्यान में दो खड्ग, देखा सुना न कान*
*पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित हुआ न कोय*
*ढाई अच्छर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय*

*प्रेम न बाड़ी उपजै, प्रेम न हाट बिकाय*
*राजा परजा जेहि रुचै, सीस देई लै जाय*
*प्रेम पियाला जो पियै, सीस दच्छिना देय*
*लोभी सीस न दे सकै, नाम प्रेम का लेय*
*जैसा बंधन प्रेम, तैसो बंधन और*
*काठहिं भेदै कमल को, छेदि न निकरै भौं*
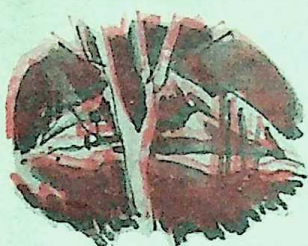
# परिवर्तन

● विजय कुमार सिन्हा

कैमूर पठार सूखे की आग से धधक रहा था । लोग पानी-पानी कर रहे थे । वन्य-प्राणी अपने प्राणों की रक्षा के लिए त्राहि-त्राहि कर रहे थे । अभी थोड़े ही दिन हुए थे कि मेरे पिताजी, जो कि उस समय उप-अरण्यपाल थे, शाहाबाद वन प्रमंडल के वन प्रमंडलाधिकारी नियुक्त किये गये थे । चिलचिलाती धूप मई महीने की । कड़ाके की गरमी । वन्य-प्राणी मृग-मरीचिका से त्रस्त थे । इस वन-प्रमंडल का मुख्य क्षेत्र कैमूर पठार का ही भू-भाग है ।

## शिकार करना एक शौक

कैमूर पठार वन्य प्राणियों का अनुपम आश्रय है । मुख्य पठार पर जहां पेड़ों की संख्या बहुत ही कम है, वहीं झाड़ियों की संख्या बहुत अधिक है । इस वन्य प्रदेश में काला मृग, चीतल, सांभर, सोनाचीता, बाघ, जंगली सूअर इत्यादि प्रजातियां बहुतायत से पायी जाती हैं । और इन दिनों यह अभ्यारण्य माना जाता है । इसका कुल क्षेत्रफल १३४२.२२ वर्ग किलोमीटर है ।

मैं यहां जिस समय की चर्चा कर रहा हूं, उस समय न तो यह अभ्यारण्य घोषित किया गया था और न ही वहां पर किसी प्रकार के शिकार करने पर रोक ही थी । वन्य प्रदेश शिकार-क्षेत्रों में विभक्त था । शिकार में जाने से पहले वन प्रमंडलाधिकारी के कार्यालय से अनुमति प्राप्त करनी पड़ती थी । उन दिनों शिकार करना सभ्य वर्ग के व्यक्तियों की मूर्धन्य हॉबी मानी जाती थी । मेरे पिताजी भी इस हॉबी से परे नहीं थे । शायद ही कोई सप्ताह ऐसा गुजरता था, जब पिताजी शिकार पर नहीं निकलते हों । शिकार करने में शायद उन्हें अपने विजय के आनंद की अनुभूति होती थी । ऐसा परिवेश, कैमूर पठार का प्रभार, शिकार करने की भावना और भी तीव्रतर हो गयी ।

सूखे के कारण पठार के ऊपरी भाग के निवासी बिल्कुल ही बेरोजगार पड़े थे । सरकार द्वारा चलाये जा रहे कुछ सूखा-राहत कार्यों के कारण लोगों को रोजगार मिल रहा था । बिहार रिलीफ कमेटी की ओर से कुछ वस्त्र इत्यादि वितरित करने के लिए आये थे । पिताजी को

**छह महीने का रहा होगा, पास ही खड़ा था। मृगी के धराशायी होते ही वह मृग-शावक घायल मृगी के स्तन को चूसने लगा। शायद उसे पता नहीं था कि जिस मां के स्तन को वह चूस रहा है, वह अपना दम तोड़ चुकी थी।**

उसे जरूरतमंद लोगों में वितरित करना था। वितरित की जानेवाली सामग्रियों के साथ पिताजी सायंकाल करकटगढ़ वन-विश्रामागार पहुंचे। मैं भी साथ था। पिताजी के अन्य अधीनस्थ अधिकारी वहां पहले से ही उपस्थित थे। देर रात तक पिताजी ने उन कपड़ों को वितरित किया।

### धराशायी मृग शावक

मेरे पिताजी देर रात तक कार्य करते रहे थे। स्वाभाविक था कि वे सुबह में देर से उठते। चूंकि उनके आखेट पर जाने का समय सवेरे चार बजे का था, इसलिए सभी लोग सवेरे चार बजे से ही तैयार थे। दौरे के कार्यक्रम के अनुसार, इस करकटगढ़ वन-विश्रामागार से सीधे ही मुख्यालय सासाराम लौट जाते। रास्ते में पड़नेवाले वनों एवं औषधालयों का निरीक्षण तो होना ही था। साथ-साथ रास्ते में मिलनेवाले जानवर के शिकार का इरादा भी था। रात देर गये सोने के कारण पिताजी के उठने में कुछ देर हो गयी। फिर भी पांच बजते-बजते हम लोग तैयार होकर गये, तब तक चाय तैयार हो चुकी थी, झटपट चाय पीकर हम लोगों ने प्रस्थान कर दिया। अभी एक किलोमीटर भी न आ सके होंगे कि सामने झाड़ियों के बीच एक बहुत ही बड़ा काला-मृग दिखायी पड़ा, पिताजी ने निशाना साधा और ट्रैगर दबा दी। पिताजी के गोली चलाने पर वह मृग भाग निकला। उसी के निकट ही, एक मादा मृग थी। उस पर ज्यों ही गोली चली, वह धराशायी हो गयी। धराशायी मृग का शावक, जो कि मुश्किल से छह महीने का रहा होगा, पास ही खड़ा था। मृगी के धराशायी होते ही वह मृग शावक घायल मृगी के स्तन को चूसने लगा। शायद उसे पता नहीं था कि जिस मां के स्तन को वह चूस रहा है, वह अपना दम तोड़ चुकी थी वह किसी की मानसिक लिप्सा की शांति हेतु सदा के लिए शांत हो चुकी थी।

### मृत मृगी का दाह-संस्कार

घर पहुंचने पर विचार हुआ कि जल्द से जल्द उसका सामिष आहार बनाया जाए। लेकिन यह क्या, मेरे पिताजी रो रहे थे। हम मृत मृगी की ओर बढ़ ही रहे थे कि पिताजी ने हमें रोक दिया। उन्होंने मृत मृगी का दाह संस्कार बड़े सम्मान से कराया। यही नहीं, उन्होंने निश्चय कर लिया कि आगे फिर वे कभी भी आखेट पर नहीं जाएंगे। पिताजी ने आगे बताया था कि वे उस मृत मृगी को देखकर, अपनी मां को याद करने लगे थे।

पूरी घटना की याद आते ही मन उद्वेलित हो उठता है। शेष रह जाता है परिवर्तन!

— राजकीय व्यापार प्रमंडल-२
लातेहार, जिला-पलामू

# जेबकतरे : पुलिस के लिए वरदान

● जगदीश 'प्यासा'

'हूं उस साले की क्या बात करते हो ।' वह तो सुच्च (स्विच) है वह अपने काम का नहीं है' यदि कुछ व्यक्ति आपस में आपको यह बातचीत करते हुए सुनायी दें, तो आप हैरानी में पड़ सकते हैं । यह व्यक्ति कौन हैं और किसके बारे में ऐसी बातचीत कर सकते हैं । तो आप समझिए आपस में बातें करनेवाले उच्चस्तर के चोर, डाकू, जुआरी, बदमाश या पुलिसवाले ही हो सकते हैं और बात जेबकतरे के विषय में कर रहे हैं ।

अपराध-जगत में जेबकतरे को बड़ी हेय दृष्टि से देखा जाता है और ऊपर वर्णित लोग आपस में गाहे-बगाहे जेबकतरे से अपने कई काम करवाते हैं, लेकिन काम लेते समय इतना जरूर देखा जाता है कि कहीं अधिक जोखिमभरा काम न हो, क्योंकि पकड़ में आने पर जेबकतरा टूट सकता है और उनके लिए मुश्किल मुसीबत का कारण बन सकता है । इसलिए खूंखार अपराधी अपने रहस्यों रहने-सहने के भेदों को जेबकतरों से छिपाकर रखते हैं । खूंखार अपराधी जेबकतरों को नौकर-चाकर और सेवादारोंवाली श्रेणी में ही गिनता है, क्योंकि जेबकतरा हत्या, लूटपाट, डकैती और अन्य जघन्य अपराधों में प्रत्यक्ष रूप से अपनी भागीदारी करने से सदैव बचने का प्रयत्न करता है । इसलिए अपराधी वर्ग जेबकतरे को कोई विशेष महत्त्व नहीं देता और उसे मात्र एक सुच्च (स्विच) ही माना जाता है ।

## पुलिस का भेदिया

इस 'स्विच' को जब चाहा, मर्जी से जिस प्लग में लगा दिया । पुलसिया भाषा में भी जेबकतरा 'सुच्च' के नाम से ही सम्मानित किया जाता है । हालांकि अपराधी वर्ग द्वारा तो जेबकतरे से भेदिये का काम भी लिया जाता है, पुलिस भी अकसर अपराधी तक पहुंचने के लिए कई बार जेबकतरों का सहारा लेती है, हां अब 'सुच्च' शब्द का कुछ ज्यादा प्रचलन हो जाने से जेबकतरों को 'मिस्त्री' के छद्‍म नाम से पुकारा जाने लगा है । फिर भी 'सुच्च' शब्द अपराधी वर्ग एवं पुलिस में जेबकतरों का पर्यायवाची शब्द है ।

उधर जेबकतरों की भी अपनी अलग दुनिया है । जिस आपाधापी में 'माल' उनके हाथ लगता है, उससे कहीं बेदर्दी से वह शराब और औरतों के चक्कर में उसे लुटाने को तत्पर रहते हैं । उनकी भाषा भी अपने 'कोड' शब्दों की होती है । जेबकतरे आपको बस स्टैंड, रेलवे स्टेशनों, मेलों और अन्य भीड़-भाड़वाले स्थानों

**जेबकतरा यानी कि ऐसा स्विच, जब चाहा जिस प्लग में लगा लिया, थाने को ठुलाखाना तथा वर्दीधारी सिपाही के लिए मच्छर, मक्खी शब्द का प्रयोग बराबरी के हिस्से को 'खानो खान' तथा १/४ हिस्से के लिए 'बूड़ी' शब्द को इस्तेमाल पांच रुपये को 'सवा सेरी', दस रुपये के लिए 'अढ़ाई सेरी', बीस रुपये के लिए 'सूतली', पचास रुपये के लिए 'आधा गज', सौ रुपये के लिए 'एक गज' तथा हजार रुपये के लिए 'एक थान' कोड शब्दों का उपयोग**

पर अपनी उपस्थिति का अहसास करवाते ही रहते हैं। इनका यह कार्य जोखिमभरा तो है ही, कई बार रंगे हाथों पकड़े जाने पर इनकी जमकर पिटाई भी हो जाती है, परंतु इनकी कार्यशैली बड़ी ही चुस्त एवं फुरती से भरी होती है। किसी स्थान पर यदि पुलिस सादे कपड़ों में घूम रही हो, तो एक जेबकतरा अपने साथी को सतर्क करने के लिए कहेगा 'ठुलेखाने' के आदमी घूम रहे हैं। 'ठुलाखाना' जेबकतरे थाने के लिए प्रयोग करते हैं। इतना सुनते ही साथी जेबकतरे सतर्क हो जाते हैं। जैसे वर्दी धारी पुलिस के लिए जेबकतरे 'मक्खी या मच्छर' का प्रयोग करते हैं। उधर जेबकतरों के आपसी किस्से कम दिलचस्प नहीं होते हैं। एक आसामी पर यदि कोई जेबकतरा सफल नहीं हो पाता, तो फौरन ही वह उस आसामी को अपने से तेज जेबकतरे के हवाले कर देगा और बदले में उससे वहीं पर पलों में ही मोल-भाव तय कर लेंगे। यह मोलभाव सीधा सपाट एवं निश्चित राशि में भी हो सकता है। मोलभाव की प्रक्रिया भी बड़ी दिलचस्प होती है। मान लीजिए आसामी को जेब से प्राप्त माल पर यदि इन्हें बंटवारा करना हो, तो आधे हिस्से के लिए वह 'खानो खान' बराबर का हिस्सा शब्द का प्रयोग

करेंगे । एक चौथाई हिस्से के लिए तो एक जेब-कतरे का दूसरे जेबकतरे से इतना ही काफी है कि तुम्हें बूड़ी (१-४) मिल जाएगी बस—

निश्चित राशि के लिए भी यह अजीब शब्द का प्रयोग करेंगे पांच रुपये के लिए 'सवा सेरी', दस रुपये के लिए 'अढ़ाई सेरी', बीस रुपये के लिए 'सूतली' और पचास रुपये के लिए 'आधा गज'—सौ रुपये के लिए 'एक गज' तथा हजार रुपये के लिए 'एक थान' शब्द का प्रयोग करते हैं ।

शाम को यह लोग अपनी सांकेतिक भाषा का प्रयोग करते हैं । मसलन पहला कहता हैं, "मैंने तो आज पांच गज ही बनाये" यानि ५ गुणा १००=५०० तो दूसरा प्रत्युतर में बताता है, "अमा यार आज तो साली किस्मत ने साथ नहीं दिया । दस थान (१० गुणा १०००=१० हजार) की आसामी हाथ से निकल गयी । सौदा बना ही नहीं । काम बनने (निर्विघ्न काम बनने को) को ही यह सौदा बनना कहते हैं अपने मुखबिर के लिए यह 'बोला' शब्द का प्रयोग करते हैं, जो कि अक्सर इनके लिए आसामियों का पता करके देता है । 'बोला' की सूझबूझ एवं उसकी सूचना पर ये पूरा विश्वास करते हैं । बोला के रूप में अकसर ये छोटे-छोटे लड़कों से काम लेते हैं और 'बोला' से ही आगे जेबकतरों अर्थात 'सुच्च' के रूप में इनकी यात्रा शुरू होती है ।

## पेशे की ईमानदारी

इस पेशे में कभी संलग्न रह चुके एक व्यक्ति ने बातचीत के दौरान बताया कि बाबूजी इस पेशे में लेन-देन के रूप में अत्यधिक सावधानी और साथ में ईमानदारी बरती जाती है । उसने यह भी बताया कि इस पेशे में प्रवेश करना कठिन नहीं, लेकिन इस पेशे से बाहर आना आसान नहीं, बल्कि कभी-कभी यह जान लेवा सिद्ध हो सकती है । उसने स्वीकार किया कि उसे अब भी कभी-कभी पुलिस और अपराधी वर्ग के अनुचित कामों का कोपभाजन बनना पड़ता है । पेशे से बाहर निकला यह युवक मानता है कि पुलिस और अपराधियों का उसके प्रति दृष्टिकोण वैसा ही है, जैसे कि उस समय था, जब वह इस घृणित धंधे में था ।

इसी धंधे के कारण कई बार जेल जा चुके एक अन्य ने बताया कि जेबकतरों को जेल में भी घृणा की दृष्टि से देखा जाता है तथा उनसे अन्य अपराधियों से ज्यादा काम लिया जाता है । रात में उन्हें खूंखार कैदियों की मालिश एवं अन्य कई प्रकार से सेवा करनी पड़ती है । उसके अनुसार जेल में कई बार छोटा जेबकतरा खूंखार अपराधियों की हवस का शिकार भी हो जाता है । जब उसे चारों ओर से हीनभावना से देखा जाता है, तो वह जब जेल से बाहर आता है, तो उसकी दुनिया बदल चुकी होती है । उसके सोचने का ढंग बदल चुका होता है और वह पहले से ज्यादा खतरनाक बन जाता है ।

## एक झटके में ही काम

एक अन्य पढ़े-लिखे जेबकतरे ने जो कि बेरोजगारी से तंग आकर इस कीचड़ में फंसा है, ने आक्रोश प्रकट करते हुए कहा, 'आज हर व्यक्ति एक-दूसरे की जेब काटने को प्रयत्नशील है । बेटा बाप की, भाई-बहन की, नेता जनता की जेबें काटने पर लगे हुए हैं ।' फिर संयत होते हुए उसने बताया कि वास्तव में यदि प्रशासन और समाज अपने दायित्वों को अच्छी

ह पहचान ले तो यह कुव्यवसाय काफी सीमा क समाप्त हो सकता है । सामाजिक संगतियों विषमताओं एवं आर्थिक तंगी के रण ही लोग इस रास्ते पर धकेले जाते हैं । उससे उसके पेशे की कला के बारे में पूछा र जौहर दिखाने का अनुरोध किया तो उसने क मना करते हुए इतना कहा कि उसका धंधा ड़ में बस एक झटके पर निर्भर करता है कि टका कितना स्वाभाविक हो सकता है । जैसे कड़े जाने का भय हर जेबकतरे को सदा काम रते वक्त रहता है ।

उसी जेबकतरे ने बताया कि महानगरों में तो बकतरों ने डॉक्टरों की सहायता से मामूली-सा ऑपरेशन करवाकर के तर्जनी अंगुली में ब्लेड फिट करवा रखे हैं और उसी ब्लेड फिट की हुई र्जनी अंगुली से वह भीतर से भीतर तक की ब साफ कर लेते हैं । उसका तो यहां तक कहना था कि इस ब्लेड का तीखापन इतना होता है कि लोगों को जिस अंगुली में सोने की अंगूठी हो वह भीड़ में बिना कोई विशेष दर्द के आसामी की अंगूठी समेत अंगुली काटकर ले जाते हैं लेकिन जेबकतरे इस हरकत को अपनी कला का बिगड़ा हुआ स्वरूप मानते हैं क्योंकि उनका काम तो नाम के अनुरूप जेब अर्थात आसामी की गांठ साफ करना है, न कि अंगुली अथवा किसी अन्य प्रकार की हिंसा करना है ।

एक बात जो सामान रूप से इस कुव्यवसाय में लगे लोगों ने कही, वह है कि उनके नाम प्रकाशित नहीं किये जाने चाहिए । नाम प्रकाशित हो जाने से उन्हें ज्यादा घृणा की दृष्टि से देखा जाता है । इससे उनके सुधरने की गुंजाइश बहुत कम रह जाती है, क्योंकि पुलिस और अपराधी वर्ग जिनके पास इनकी सूची होती है, फिर इनसे अपने कई तरह के काम करवाने में जुट जाते हैं ।

—सदर बाजार सिरसा-१२५०५५ (हरि.)

रोज सूरज निकलते ही धूप की अंगुली पकड़ मानव—मन तरह-तरह के घरौंदे बनाता है, द्वार पर आशा उल्लास के रंग-बिरंगे फूल टांग दिवस का सहर्ष स्वागत करता है, किंतु न जाने क्यों अखबार की सुर्खियां पढ़ते ही

# मनुष्यता का कोई विकल्प नहीं

● इंदिरा मोहन

अब वे घरौंदे चटखने लगे हैं, बंदनवार के फूल कुम्हलाने लगे हैं । हादसे दहलीज में घुस आये हैं । महानगरों की उमस बढ़ रही है । भारत जैसे शांत, अहिंसा पसंद देश को अचानक क्या हो गया—सारा विश्व स्तब्ध है । जीवन की सामान्य धारा में हिंसा का विष रिसने लगा है—परिणाम गली-गली कोहराम मचा रहा है, पर उसकी जड़ कहां है, यह तलाश अधूरी है ।

इन बातों को हममें से बहुत स्वीकार तो करते हैं—अकेला चना, भाड़ नहीं फोड़ सकता, अतः मौन हैं, खामोश हैं, भाग्य की प्रतीक्षा में सिर पर हाथ रखे बैठे हैं । कुछ इस कोलाहल में, उस रोशनी का इंतजार कर रहे हैं, जो कभी हारती नहीं । आस्था और विश्वास के संकेतों को टटोलकर स्वाधीनता के प्रति निरंतर सतर्क हैं, सावधान हैं—साफ दिल और साफ मस्तिष्क की यह सजगता ही तो मनुष्यता है, मानवता है जो घर से शुरू हो समाज, राष्ट्र और विश्व की चेतना को झंकृत कर कालजयी जीवन-मूल्यों को अंकुरित करती है । फिराक गोरखपुरी ने ठीक ही कहा है—

**"अगर बदल न दिया आदमी ने दुनिया को जान लो यहां आदमी की खैर नहीं ॥"**

किसी भी देश अथवा राष्ट्र की एकमात्र संपत्ति उसके सदस्यों के आचार-विचार हैं। वे ही कच्चा माल, धातु, कोयले, हीरे की खान हैं । उनका परिश्रम समुद्र बांध सकता है, ईमानदारी रेगिस्तान आबाद कर सकती है, समर्पण अभावों को मुस्कराहट दे सकता है । कर्म तो जल का प्रवाह है, वह तो बहेगा ही—यदि विवेक का बांध बना है, तो वह फसलों को जीवन दान देगा अन्यथा बाढ़ के रूप में खेतों की हरियाली निगलेगा । उन्नति के शिखर पर जानेवाली प्रवृत्तियों के साथ मन में अवनति के गर्त में ढकेलनेवाली प्रवृत्तियां भी रहती हैं । कौन-सी जिज्ञासा, कौन-सी आकांक्षा जीवन-पथ को सुवासित करेंगी और कौन सी कंटकों से विदीर्ण करेंगी—यह पहचान संस्कारों की आधार शिला है, जिसे समाज पूर्वजों से

रासत में प्राप्त करता है । भागवत में एक
था है । जब द्रौपदी की पांच संतानें अश्वत्थामा
ा मार दी गयीं, तो अर्जुन द्रौपदी के सामने
श्वत्थामा का सिर काट लाने का आग्रह करता
। द्रौपदी ने कहा, 'अश्वत्थामा की मां गौतमी
प्रकार न रोये जैसे मैं दुःखी हूं—उसका भी
ी हाल क्यों हो जो मेरा हुआ है, अर्जुन
श्वत्थामा को न छूना । उसे छोड़ दो'—यह है
रत की आत्मा-करुणा यह भाव ही तो सच्ची
नवता है । अधर्म शक्ति का नहीं, दुर्बलता का
तक है । आग यदि बुझने लगे, तो
क्तिशाली नहीं रहेगी । शक्ति मनमानी करने में
ीं वरन अधर्म के विनाश और संयमपूर्ण
वहार में है । संघर्ष न प्रकृति में सम्माननीय है
मनुष्य समाज में । 'जिसकी लाठी उसकी
स' जंगल का विधान हो सकता है मानव
यता इस विधान के विरोध में जन्मी है ।

### व्यष्टि में ही समष्टि

हमारी संस्कृति में समाज किसी भीड़भाड़
ा नाम नहीं । संस्कृत भाषा में सम कहते हैं
ाथ-साथ, अज अर्थात चलना । एक आदर्श
े अनुप्राणित विविध इकाइयां समाज का
िर्माण करती हैं—समाज ऐसा चले, मानो एक
ी प्राण सारे समाज को चला रहा हो । जिस
समाज में किधर जाना है और किधर से हटना
, इसका आदर्श स्पष्ट होता है—वहां समाज
एक उद्देश्य से प्रेरित हो आगे बढ़ता है, ऐसा
नहीं कि अपनी कामनाओं के लिए कुछ चरित्र
मिल गये और समाज का निर्माण हो
गया—ऐसा समाज बालू की दीवार की तरह
अनवरत बिखरता ही रहेगा । मधुमक्खी सदैव
सामूहिक रूप से छत्ते में, चींटियां संघ में रहती
हैं । मानव भी आदिकाल से समूह में रहता
आया है । ऐसा नहीं कि अलग-अलग अंगों
हृदय, मस्तिष्क, यकृत आदि ने मिलकर शरीर
का निर्माण किया, वरन् समग्र देह के निर्माण में
अंग-प्रत्यंग साथ-साथ बनते गये । इसी प्रकार
समष्टि ब्रहमांड में समग्र व्यक्तियों का निर्माण
और छोटे दायरे में मानव रूपी इकाई का निर्माण
होता है । अतः समष्टि से अलग व्यक्ति की
सत्ता नहीं है । समाज के हित में अपना हित
निहित है—इस बात को समझना देव बनने का
मूल है—दैवी संपत्ति मुक्ति की ओर, स्वतंत्रता
की ओर ले जाती है, आसुरी प्रवृत्ति बंधन की
ओर । प्रकृति में कौआ भी है, और हंस भी ।
शेर भी है और गाय भी—जो गुण जीवन के
पोषक एवं सहायक होंगे, उनका चयन ही
संस्कृति हो सकती है ।

हम यदि समृद्ध हों, स्वार्थी बनें, तो मानवीय
सभ्यता और पशु-सभ्यता में अंतर क्या रहेगा ?
हमारा पड़ोसी वेदना में हो, हमें कराह न सुनायी
दे । पड़ोस में आग लगी हो, हमें आंच न

**जब द्रौपदी की पांच संतानें अश्वत्थामा द्वारा मार दी गयीं, तो अर्जुन द्रौपदी के सामने अश्वत्थामा का सिर काट लाने का आग्रह करता है । द्रौपदी ने कहा, 'अश्वत्थामा की मां गौतमी उस प्रकार न रोये, जैसे मैं दुःखी हूं—उसका भी वही हाल क्यों हो, जो मेरा हुआ है,**

आये । हमारा सुख-समाज के साथ है, समाज का विकास हमारे साथ है लहर समुद्र से, बूंद मेघ से विलग नहीं होती । बौद्धिक चेतना जागृत कर केवल अपने विकास का प्रयास उस टिमटिमाते दीपक-सा होगा, जिसका प्रकाश न अपने घर को उजाला दे सकता है, न पड़ोसी की देहरी को—जब-जब दूसरों को पीछे ढकेल कुछ लोगों में आगे बढ़ने का उन्माद प्रबल होता है, तब-तब समाज का असंतुलन सृष्टि-चक्र में विप्लव पैदा करता है । अनैतिकता की अराजकता से लड़खड़ाता वर्तमान इस सत्य का साक्षी है ।

### संशोधन आवश्यक

अनजाने में किये गये अपराध घातक नहीं होते । हां, उन्हें छिपाते रहने में कई दोष आ जाते हैं । वे अपने लिए ही हानिकारक हैं । जिस जाति अथवा देश की जनता अपनी त्रुटियों को स्वीकार न करती हुई दुराग्रहपूर्वक उन्हीं की पुष्टि करती हैं, संशोधन की ओर ध्यान नहीं देती, उनका पतन न साहित्य रोक सकता है, न विज्ञान । हिंसा और जुल्म पर टिकी समाज-व्यवस्था को एक दिन न केवल इतिहास के कटघरे में खड़ा होना पड़ता है, वरन भावी पीढ़ी के उस लांछन को ढोना पड़ता है, कि मौका तो मिला था, किंतु अक्षमता के कारण सदुपयोग न कर सके ।

अपनी-अपनी शूद्रताएं हम जानते हैं, पर हममें यह सामर्थ्य नहीं कि उन्हें खींचकर बाहर निकाल सकें अथवा आंख दिखा, चुप रहने का संकेत दे सकें । आज प्रत्येक व्यक्ति मनमाना आचरण करना चाहता है, मनमाने ढंग से जीना चाहता है । प्रश्न यह है कि जो-जो भोगने की अभिलाषा है, क्या वह दूसरों के अधिकारों का हनन किये बिना भोगा जा सकता है । मन में न जाने कितनी बातें उठती रहती हैं, यदि इन सबको वाणी से प्रकट करते हैं, तो वह निश्चय ही पागल प्रतीत होगा । मानव को मानव बनाए रखने हेतु यह नियंत्रण जरूरी है । यद्यपि आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार विकारों का बलात् दमन नहीं किया जाना चाहिए । हम शरीर के विकार नाखून, बाल, स्वेद आदि दूर कराते हैं, धोते हैं, तो क्या मन में उत्पन्न होनेवाले वासना विकार नहीं धोये जाने चाहिए? बगीचे में भी अनुचित झाड़-झंकाड़ की कांट-छांट करनी पड़ती है ।

### एक पुरातन कथा

बचपन में हम एक कहानी सुनते आये हैं। एक बार बीरबल की सलाह से अकबर ने नगर के किनारे तालाब खुदवाया । प्रत्येक को आज्ञा दी कि रात को एक-एक घड़ा दूध उसमें छोड़ दे । योजना थी कि एक दूध का तालाब दूसरे दिन तैयार हो जाएगा । पर दूसरे दिन सुबह जब अकबर बीरबल के साथ वहां पहुंचे, तो देखा कि तालाब जल से पूर्ण है और दूध का नाम नहीं । प्रत्येक ने सोचा कि सब तो दूध डालेंगे ही, यदि मैं एक घड़ा पानी डाल दूंगा तो उतने दूध में क्या पता चलेगा । अमर्यादित महत्त्वाकांक्षा, अस्वस्थ अहंकार, अमानवीय व्यवहार इंसान को जहां-तहां भटका रहे हैं। आज मनुष्य का मनुष्य बने रहना ज्यादा जरूरी है, स्वयं के लिए भी और समाज के लिए भी। व्यासजी ने हजारों साल पहले कहा था—

**'नहिं मानुषात् श्रेष्ठतरम् हि किंचित्'**

भारत एक श्रम-प्रधान देश है । जिन देशों
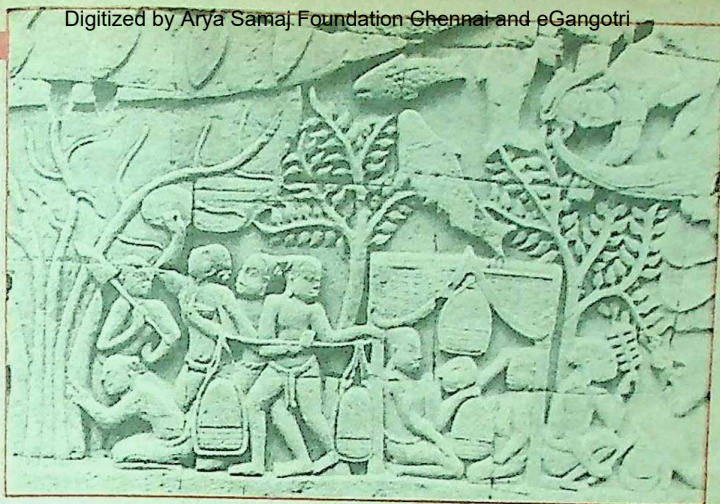
की हम देखा-देखी कर रहे हैं, वे पूंजी प्रधान हैं—वहां मनुष्य कम हैं, पूंजी अधिक —उन्हें ऐसी मशीन चाहिए, जिसमें पूंजी लगे पर मनुष्य अधिक न लगें। हमारी समस्या ठीक इसके विपरीत है। हमारे पास पूंजी कम, मनुष्य अधिक हैं। आज भारत में बेकारों की संख्या चार करोड़ से ज्यादा है। उत्तर प्रदेश की आबादी इंगलैंड की आबादी से दुगनी है। धरती पर मौजूद हर सातवां आदमी भारतीय है। एक समय था, जब मानवीय गुणों का हमारे पास अपार भंडार था। आड़े वक्तों को हंसते-खेलते झेल लेते थे। पूंजी नहीं थी, तो संतोष था। साधन नहीं थे तो सदाचार था। सुविधा नहीं थी, तो तपस्या थी। किंतु आज बाहरी पूंजी के साथ अंतःकरण की जेब भी खाली होती जा रही है।

### जीवन की मांग निर्भय होना

मनुष्य से श्रेष्ठ और कुछ नहीं। वर्तमान लोकतांत्रिक समाजों ने जिस स्वार्थपरक भौतिक सुविधाओं की व्यवस्था खड़ी की है उस शोरगुल में आत्म-विस्मृति तो बनी रहती है पर आत्मा की भूख नहीं मिटती। पदार्थ सदा सीमित रहेंगे। तृष्णा अंनत है। अतः विज्ञान की उन्नति के साथ अशांति संघर्ष एवं विनाश के क्षेत्र बढ़ते ही जाएंगे। प्रतिस्पर्धा की इस दौड़ में अभयंतर जीवन सूख-सा गया है। समय स्थान की दूरी तो कम हुई पर संवेदन शून्यता ने भावना और विचार में परस्पर दूरी बढ़ा दी। जितना भी समय है, वह इच्छाओं की बेचैनी और कोलाहल में बीत जाता है। विज्ञान हर समय भयभीत करता हुआ क्षण-क्षण मन को व्यग्र करता है, जबकि जीवन की सहज मांग है, निर्भयता की, अमरता की।

जीने के लिए मनुष्य केवल पशु तो नहीं—सुख-सुविधाओं के बाद भी वह कोई ऊंची कल्पना रखता है, ऊंचा स्वप्न देखता है, उसकी भावनाएं, विश्वास आस्थाएं दूसरी हैं। उसमें ज्ञान-इच्छा और क्रिया तीनों खुलकर खेलना चाहते हैं। विविधता के इस सौंदर्य को टुकड़ों में बांटकर देखना हमारी परंपरा नहीं। पाश्चात्य जगत मनुष्य की समग्रता का विचार न कर एक-एक भाग का विचार करता है, वहां

# प्रत्यक्ष कर संबंधी विषयों पर हिन्दी में मूल लेखन के लिए पुरस्कार
# पुरस्कार वर्ष 1991-92

राजस्व विभाग, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड प्रत्यक्ष कर की चारों शाखाओं अर्थात् आयकर, धनकर, दानकर और कम्पनी लाभ अति कर से संबंधित विषयों पर हिन्दी में प्रामाणिक साहित्य के लेखन और प्रकाशन को बढ़ावा देने के लिए "प्रत्यक्ष कर साहित्य पुरस्कार योजना" नामक एक पुरस्कार योजना चला रहा है।

**पात्रता :**

इस योजना के अंतर्गत पुरस्कार के लिए कोई भी भारतीय नागरिक, चाहे वह सरकारी सेवा में हो या गैर-सरकारी सेवा में या किसी भी अन्य व्यवसाय में लगा हो, अपनी मूल पुस्तक भेज सकता है।

**पुरस्कार :**

इस योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किए जायेंगे

| | |
|---|---|
| प्रथम पुरस्कार-2 | 10,000/-रु० प्रत्येक |
| द्वितीय पुरस्कार-2 | 7,500/-रु० प्रत्येक |
| तृतीय पुरस्कार-2 | 5,000/-रु० प्रत्येक |

**मूल पुस्तक की परिभाषा**

इस योजना के अंतर्गत मूल पुस्तक से अभिप्राय उस पुस्तक से है जो (क) प्रतियोगी अथवा लेखक द्वारा स्वयं मूलतः हिन्दी में लिखी गई हो (ख) स्वयं प्रतियोगी अथवा लेखक द्वारा किसी अन्य भाषा में लिखी गई पुस्तक का स्वयं उसके द्वारा किया गया हिन्दी अनुवाद हो।

**अवधि :**

इस योजना के अंतर्गत नकद पुरस्कार गत वित्तीय वर्ष अर्थात् 1 अप्रैल, 1990 से 31 मार्च, 1991 के बीच लिखी गई पाण्डुलिपियों तथा प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित पुस्तकों के लिए वर्ष 1991-92 में दिए जाएंगे।

**विशिष्ट आकर्षण :**

पुरस्कार के लिए जो पुस्तकें चुनी जायेंगी, प्रकाशित होने पर उनकी अधिक से अधिक दो हजार प्रतियां विभाग स्वयं खरीदेगा।

**प्रविष्टियाँ :**

पुरस्कार के लिए विचारार्थ पुस्तकें मुद्रित या टंकित रूप में ही स्वीकृत की जायेंगी।

**अंतिम तारीख :**

इस योजना के अंतर्गत आवेदन पत्र के साथ प्रविष्टियां प्राप्त होने की **अन्तिम तारीख 31 अक्तूबर, 1991** है।

इस प्रयोजन के लिए निर्धारित आवेदन पत्र तथा योजना के संबंध में विस्तृत जानकारी डाक द्वारा या स्वयं आकर "श्री राम शंकर सिंह, सहायक निदेशक (राजभाषा) (प्रशासन), राजभाषा प्रभाग, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, आयकर निदेशालय (गवेषणा, सांख्यिकी, प्रकाशन व जनसम्पर्क), छठी मंजिल, [illegible] नई दिल्ली-110001 (टेलीफोन नं. 3313823) से प्राप्त की जा सकती है।

davp 91/251

रोटी है, राज है, पर न सुख है, न शांति । जितनी आत्म हत्याएं अमरीका में होती हैं, जितने मानसिक रोग के शिकार वहां हैं, जितने लोग ट्रैंक्विलाइजर के सहारे सोते हैं, विश्व में अन्य कहीं दुर्लभ है । पात्र की पहचान उसकी भीतरी संपन्नता से है—यदि वह प्यास बुझाने में असमर्थ है, तो सोने का हो या चांदी का केवल खोखलेपन का प्रदर्शन है । जिस संस्कृति का आकार प्रतिस्पर्धा और संघर्ष में है, उसके अनुकरण द्वारा हम कौन-सी परत खोलकर त्याग और सहयोग की सुगंधि बिखेर सकेंगे । पतन न हो साथ ही उन्नति भी हो दोनों बातें आवश्यक हैं ।

जिस विकास की भित्ती पर हम खड़े होना चाहते हैं, उसके नीचे पशु योनी की श्रेणी है । यह लक्षण सत्व के नहीं भयानक तमस के हैं और तमस आलस्य, शिथिलता से घिरी मृत्यु की कालिमा का नाम है ।

**शुद्ध हृदय की आवश्यकता**

हमारे समाज में आज जुड़ाव की कमी है । लोग जाति से, दल से, धर्म से जुड़े दिखते हैं, पर राष्ट्रीय हित से जुड़ा कोई नहीं । अपनी-अपनी ढपली, अपना-अपना राग । राग बेसुरा, बेताला हो रहा है । अलग-अलग इकाई के रूप में हम सचेत हैं, पर विभिन्न इकाइयों के समूह के रूप में हम असावधान हैं और असंयमित भी । यह सच है कि हमारे समाज में दोषों की लंबी तालिका है—अव्यवस्था, छूआछूत, जाति-पांति, भाषा की संकीर्णता आदि । अलग-अलग फोड़ों का इलाज करने के स्थान पर उनके मूलभूत कारण दूषित रक्त को शुद्ध करना जरूरी है । देश-भक्ति से ओत-प्रोत, शील से विभूषित, स्वस्थ संतुलित आकांक्षा, राष्ट्र-शरीर को पुनः पुष्ट कर सकती है । राष्ट्र चुनौती को स्वीकारने के लिए अपनी आत्म-शक्ति को पहचानना होगा । आत्म-गौरव से प्रेरित अपनी संस्कृति, इतिहास और आध्यात्मिक परंपराओं का उत्तराधिकारी बनना होगा । आकृति में दमकती हुई कांति, हृदय में अदम्य करूणा, कर्म-शक्ति का उत्साह विभाजन और विघटन की दरारों को मिटा सकती है । सूर्य तो स्वतंत्र एक-जैसा प्रकाश दे रहा है । प्रतिबिंब को पकड़नेवाले पदार्थ में भेद है—साफ कांच सूर्य की गोलाई शीघ्र पकड़ लेता है, पर दीवारों में वह शक्ति कहां ।

—१२ लखनऊ रोड, दिल्ली-७
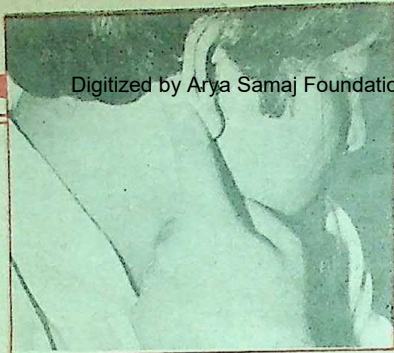
**कान के पीछे स्थित बिंदु**
बहरापन, कम सुनायी देने पर इस बिंदु पर दबाव दीजिए ।

# अपना इलाज स्वयं कीजिए-३७

**पंजे पर स्थित बिंदु**
पंजे का दर्द, पैर की अंगुलियों का आर्थराइटिज होने पर इस बिंदु पर दबाव दें ।

**रिंग फिंगर के सिरे पर छोटी अंगुली की ओर स्थित बिंदु**
बहरापन होने पर इस बिंदु पर दबाव देना चाहिए ।
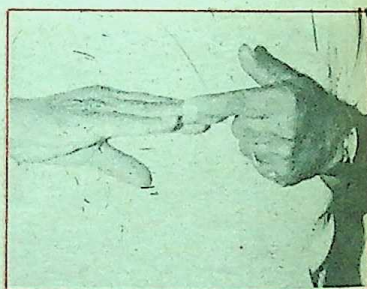
**गरदन पर स्थित बिंदु**
गरदन में दर्द, गरदन की अकड़न में इस बिंदु पर दबाव लाभकारी है ।

## दबाव कितनी देर डालें ?

*१. बारह घंटों में दो बार ।*
*२. दबाव एक मिनट तक दिया जा सकता है, एक बिंदु पर साठ बार ।*
*३. भोजन के एक घंटे पूर्व अथवा एक घंटे बाद ।*
*४. दबाव सहनीय होना चाहिए और अंगूठे के अग्रभाग से दिया जाना चाहिए ।*

**कान के ऊपर स्थित बिंदु**
ऊंचा सुनायी देना, बहरापन, टिनाइटिस में इस बिंदु पर दबाव दें ।

**अंगुलियों के मिलन स्थल पर स्थित बिंदु**
त्वचा रोग के लिए इस बिंदु पर दबाव देना चाहिए ।

**अंदरूनी टखने के एकदम पीछे स्थित बिंदु**
टखने का दर्द, प्रजनन अंग की तकलीफ होने पर इस बिंदु पर दबाव दीजिए ।

**पीठ पर स्थित बिंदु**
पीठ के दर्द में इस बिंदु पर दबाव दें ।

**पैर के बाहरी भाग पर स्थित बिंदु**
साइटिका, पैर में रक्त संचार की कमी में इस बिंदु पर दबाव दें ।

**कान पर स्थित बिंदु**
नींद नहीं आना, बोलने की तकलीफ में इस बिंदु पर दबाव दीजिए ।

**● डॉ. सुधीर खेतावत**

—एक्यूप्रेशर चिकित्सा एवं प्रशिक्षण केंद्र, नीलकमल सिनेमा परिसर इंदौर-४५२००३

## किस्सा अवध के नवाबों का

# तीस सेर घी में बने परांठे खाने वाले

● अनन्त राम गौड़

दिल्ली में जब मुगल सल्तनत लाल किले की चारदीवारियों में ही सिमटकर रह गयी थी, और शहंशाह कमजोर होकर मराठों से दबा हुआ महसूस कर रहा था, तब अवध की रियासत नवाबों के अधीन सांस्कृतिक दृष्टि से खूब फल-फूल रही थी। यद्यपि यह सच है कि अवध में ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रभाव दिन-पर-दिन बढ़ रहा था और सेना पर अंगरेज पूरी तरह हावी हो चुके थे, रियासत में कानून और व्यवस्था बनाये रखने की जिम्मेदारी भी अंगरेज हथिया चुके थे जिससे अवध के नवाब फिरंगियों की कठपुतली बनकर रह गये थे। लेकिन इस बड़ी जिम्मेदारी से मुक्त होकर अवध के नवाबों को अपनी सल्तनत में कला और साहित्य को समुन्नत करने का एक नायाब अवसर मिल गया था। समस्त अवध से राजस्व लखनऊ ही में आता था जिसका अधिकतर भाग नवाब और अमीर-उमरा द्वारा अपने ही ऐशो-आराम पर खर्च किया जाता था।

### मिली-जुली संस्कृति

वास्तु और ललित कलाएं, नृत्य और संगीत, हाथ की कारीगरी और चित्रकारी के साथ-साथ पाक-कला भी खूब पनप रही थी। हिंदू और मुसलिम सभ्यताओं की सर्वोत्तम परंपराओं से मिलकर अवध में एक तरह की गंगा-जमुनी संस्कृति परवान चढ़ रही थी। अमीर हसन ने अपनी पुस्तक 'वैनशिंग कलृचर ऑव लखनऊ' में लिखा है कि लखनऊ के नवाबों और उनकी बेगमों ने स्थानीय रीति-रिवाजों, भाषा, बोलियों और यहां तक कि अंधविश्वासों और शकुन-अपशकुन के विचारों को भी बेहिचक स्वीकार कर लिया था। कृष्ण तो तत्कालीन नवाबों के चहेते थे जिनके गोपियों के साथ रास की विषयवस्तु को नवाब वाजिद अली शाह ने अपनी ठुमरियों में पिरोया था।

### समोसे में बंद 'लाल' पक्षी

इसी तरह शाही रसोईघरों में भी मिश्रित परंपराएं पनप रही थीं। नवाब और उनके सामंत अपने बावरचीखानों पर काफी धन खर्च
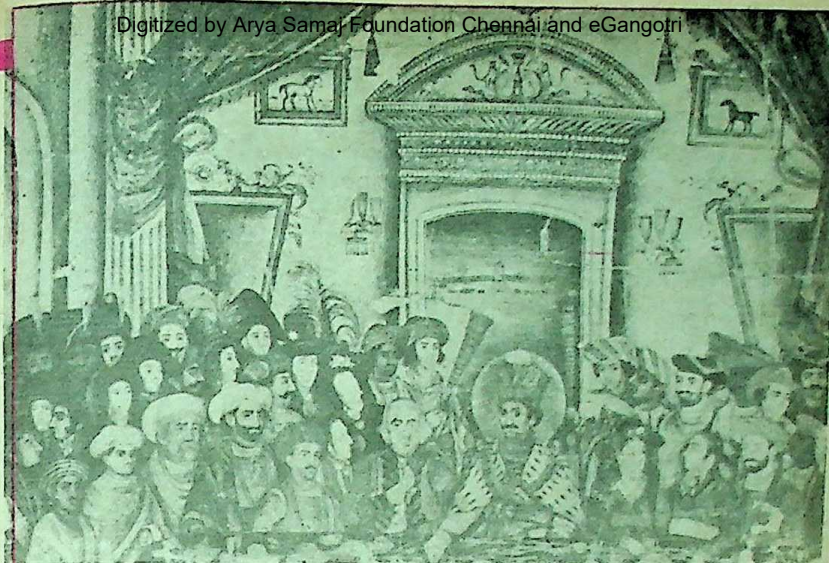
गाजीउद्दीन हैदर ब्रिटिश मेहमानों के साथ

# उत्तर प्रदेश : देश का केंद्र प्रदेश

करते थे। बताया जाता है कि नवाब आसफउद्दौला के रसोईघर पर प्रतिदिन तीन हजार रुपये तक व्यय होते थे। इसके अतिरिक्त उनकी बड़ी बेगमों के अपने अलग रसोईघर हुआ करते थे। शेख तसद्दुक हुसैन के 'रोजनामचा' में बयान किया गया है कि मलिका जमानिया और कुदसिया बेगम, जो नवाब नसीरुद्दीन हैदर की बेगमें थीं, अपने दस्तरख्वानों पर प्रतिदिन क्रमशः तीन सौ और चौदह सौ रुपये खर्च करती थीं। इनके बावरचियों, जिनको रकाबदार कहते थे, को वेतन भी बहुत अच्छे मिलते थे। इनमें से कुछ की तो एक हजार रुपये प्रति माह तक की वकत थी। कुदसिया बेगम का रकाबदार, पीर अली, इस खूबी से समोसे बनाता था कि जिंदा लाल (एक छोटा पक्षी जो घरों में पाला जाता है) उनमें इस तरह बिठाया जाता था कि समोसा तोड़ते ही वह निकल भागता था। अपना यह कमाल उसने हैदराबाद में भी दिखाया था।

**नवाब सालारजंग का पुलाव**

'गुजिश्ता लखनऊ' में अब्दुल हलीम शरर ने बताया है कि नवाब शुजाउद्दौला के साले नवाब सालारजंग का बावरची, जो सिर्फ उनके लिए खाना तैयार करता था, बारह सौ रुपये

मासिक वेतन पाता था। अब समझ लीजिए कि १७५४-७५ में यह रकम कितनी भारी रही होगी। उनका वह रकाबदार विशेषतया उनके लिए ऐसा भारी पुलाव पकाता था कि उनके अतिरिक्त अन्य कोई उसे पचा नहीं सकता था। उनके पुलाव की यह शोहरत सुनकर नवाब शुजाउद्दौला ने एक दिन उनसे कहा, "तुमने कभी हमें वह पुलाव नहीं खिलाया जो खास अपने लिए पकवाया करते हो ?" नवाब सालारजंग ने अर्ज किया, "बेहतर है। आज ही हाजिर करूंगा।" नवाब सालारजंग के लिए यह बात बड़े गर्व की थी कि स्वयं नवाब शुजाउद्दौला साहब ने फरमाइश की थी।

अतएव घर लौटकर उन्होंने अपने रकाबदार को आदेश दिया कि जितना पुलाव रोज पकाते हो आज उससे दूना पकाओ। बावरची ने कहा, "हुजूर, मैं तो आपके खासे के लिए नौकर हूं किसी दूसरे के लिए नहीं पका सकता।" किंतु यह तो नवाब साहब की फरमाइश थी, भला, यह क्या मुमकिन था कि उनके लिए वह न ले जाएं ? बहरहाल, बावरची इस शर्त पर पकाने को तैयार हुआ कि "हुजूर खुद ले जाकर अपने सामने खिलायें और चंद लुक्मों (ग्रास) से ज्यादा न खाने दें, और एहतियातन आवदारखाने (पानी के घड़े आदि) का इंतजाम करके अपने साथ ले जाएं।"

आखिर बावरची ने पुलाव तैयार किया और सालारजंग खुद लेकर पहुंचे। शुजाउद्दौला ने खाते ही बहुत तारीफ की, लेकिन दो-चार लुक्मे ही खाये थे कि सालारजंग ने बढ़कर हाथ पकड़ लिया। शुजाउद्दौला ने आश्चर्य से उनकी तरफ देखा और बोले, "मेरा इन चार लुक्मों से क्या होता है ?" और यह कह कर दो-चार ग्रास और ले लिए। अब प्यास लगी। सालारजंग ने पानी पिलाना शुरू किया। किंतु उनकी प्यास बहुत देर बाद बुझी।

आजकल की रुचि को देखते हुए यह बात किसी पौष्टिक पदार्थ की विशेषता नहीं समझी जा सकती। लेकिन उस समय के लोगों के लिए पौष्टिक पदार्थ का यही स्तर था कि खाद्य पदार्थ स्वादिष्ट हो, किंतु असर में इतने गरिष्ठ भी हों कि हर मेदा उन्हें सहन न कर सके।

### पहलवान की दावत

इसी तरह का एक किस्सा 'शरर' ने गदर के बाद के लखनऊ में रहने वाले एक हकीम बंदा मेंहदी का सुनाया है जिसे उनके एक वयोवृद्ध मित्र ने इस तरह बयान किया है, "हमारे खानदान में हकीम से बहुत रब्त-जब्त था। एक दिन हकीम साहब ने हमारे बालिद और चचा को बुला भेजा कि एक पहलवान की दावत है आप भी आकर लुत्फ लीजिए।"

"वहां जाकर मालूम हुआ कि वह पहलवान रोज सुबह बीस सेर दूध पीता है, ढाई-तीन सेर बादाम और पिस्ते खाता है तथा दोपहर और शाम को ढाई सेर आटे की रोटियां और एक दरम्याने दर्जे का बकरा खा जाता है। उसका शरीर भी इस गिजा के अनुरूप था।"

"वहां पहुंचकर यह भी देखा कि वह पहलवान नाश्ते के लिए बेचैन था और बार-बार तकाजा कर रहा था कि खाना जल्दी मंगवाया जाए। लेकिन हकीम साहब जान-बूझकर टाल रहे थे। एक बार वह नाराज होकर जाने भी लगा। हकीम साहब ने जब यह देखा कि अब वह भूख बिलकुल नहीं बर्दाश्त

कर सकता तो उन्होंने महरी के हाथ एक दस्तरख्वान भेजा जिसमें थोड़ा-सा पुलाव था जिसकी मात्रा छंटाकभर से ज्यादा न होगी । यह देखकर वह बड़े क्रोध में आ गया तथा उसने पूरी तश्तरी मुंह में डाल ली । पांच मिनट बाद उसने पानी मांगा तथा इतनी ही देर बाद एक बार फिर पानी पीकर उसने डकार ली ।''

"अब तक अंदर से दस्तरख्वान आ चुके थे और खाना चुन दिया गया था । करीब डेढ़ पाव चावलों के उसी पुलाव की एक तश्तरी हकीम साहब ने पहलवान के सामने पेश की । लेकिन पहलवान साहब माफी मांगने लगे । वह कहने लगे कि वह उस एक लुक्मे से ही तृप्त हो गये हैं, इसलिए अब एक चावल भी खाने की गुंजाइश उनके पेट में नहीं है । हकीम साहब ने वह सब चावल खा लिए और उस पहलवान से बोले कि बीस-बीस सेर और तीस-तीस सेर खा जाना इनसान की गिजा नहीं, यह तो गाय-भैंस की गिजा हुई । इनसान की गिजा यह हुई कि चंद लुक्मे खाये मगर उनसे कूवत और तवानाई वह आये जो बीस-बीस सेर गल्ला खाने से भी न आ सके ।''

बेगम अम्मतुज्जोहरा

### गाजीउद्दीन हैदर के परांठे

ऐसी ही कुछ गिजा बादशाह गाजीउद्दीन हैदर की भी थी । उनको परांठे बहुत पसंद थे । उनका रकाबदार हर रोज छह परांठे पकाता और फी परांठा पांच सेर के हिसाब से तीस सेर घी रोज लिया करता । एक दिन प्रधान मंत्री मोतमदउद्दौला आगा मीर ने शाही बावरची को बुलाकर पूछा, "अरे भई, यह तीस सेर घी क्या होता है ?" वह कहने लगा, "हुजूर, परांठे पकाता हूं ।" वह बोले : "भला मेरे सामने तो पकाओ ।" उसने कहा, "बहुत खूब ।" उसने परांठे पकाये । जितना घी खपा उसने खपा दिया बाकी जो बचा उसे बहा दिया । मोतमदउद्दौला आगा मीर ने यह देखकर हैरत से कहा, "पूरा घी तो खर्च नहीं हुआ ।" बावरची कहने लगा, "बाकी घी इस काबिल थोड़े ही रहा कि किसी और खाने में लगाया जाए । यह तो तेल हो गया ।"

वजीर से जवाब तो न बन पड़ा, लेकिन हुक्म दे दिया कि आयंदा से सिर्फ छह सेर घी दिया जाए । फी परांठा एक सेर घी बहुत है । वजीर की इस पाबंदी से बावरची नाखुश हो गया और उसने बादशाह के लिए मामूली परांठे

बनाने शुरू कर दिये । जब कई दिनों तक बराबर यही हालत रही तो बादशाह ने एक दिन पूछ ही तो लिया कि ये परांठे किस तरह के आते हैं । बावरची ने निवेदन किया, "हुजूर नवाब मोतमदउद्दौला बहादुर के हुक्म के मुताबिक बनाता हूं ।" और उसने सारा हाल बयान कर दिया ।

अब मोतमदउद्दौला साहब तलब किये गये । उन्होंने झुक कर अर्ज किया, "जहांपनाह, ये लोग लूटते हैं ।" बादशाह ने इसके जवाब में दस-पांच थप्पड़ और घूंसे रसीद किये, और पूछा, "क्या तुम नहीं लूटते हो ? तुम तो पूरी सल्तनत और मुल्क को लूटे खा रहे हो । यह जो बावरची थोड़ा-सा घी ज्यादा ले लेता है वह भी मेरे खासे (भोजन) के लिए तो यह तुमको गवारा नहीं हुआ ।" इसके बाद से ३० सेर घी फिर जाने लगा, लेकिन नवाब मोतमदउद्दौला पर बादशाह का जो स्नेहभरा हाथ फिरा था उसके बदले उन्हें खिलअत अता हुई और ओहदा भी बढ़ गया ।

**मुरगों को केसर-कस्तूरी की गोलियां**

इसी तरह से अबुल कासिम खां भी लखनऊ के एक शौकीन रईस थे । उनके यहां बहुत भारी पुलाव पकता था । कोई ३४ सेर गोश्त की यखनी तैयार करके नियार ली जाती थी और उसमें चावल दम किये जाते । यह पुलाव इस तरह का होता कि जैसे चावल खुद ही हलक से नीचे उतरे जा रहे हैं । और गरिष्ठता उनमें बिलकुल नहीं । इतनी ही ताकत का पुलाव वाजिद अली शाह का खास महल साहिबा के लिए रोज तैयार होता था ।

नवाबी जमाने के बावरचीखाने के ऐसे कई किस्से मशहूर हैं । इसी तरह बताया जाता है कि शौकीन रईसों के लिए केसर और कस्तूरी की गोलियां खिलाकर मुरगे तैयार किये जाते थे । इस तरह उनके मांस में केसर और कस्तूरी की खुशबू रच-बस जाती थी और फिर उनकी यखनी निकाली जाती थी जिसमें चावल दम दिये जाते थे ।

अब कहां है वह लखनऊ ? जोश मलीहाबादी का लखनऊ —जिसके रईस, आलम, अदीब और शायर जोश को अजीब लगते थे, 'जिनके लचकीले सलाम, उनके उठने-बैठने के पाकीजा अंदाज, उनके तहजीब में डूबे वे हाव-भाव, उनके लिबास की अनोखी तराश-खराश, सामाजिक और साहित्यिक समस्याओं पर उनका वह वाद-विवाद, उनके शब्दों का ठहराव, उनके लहजे के कटाव, विनम्रता के सांचे में ढला उनका स्वाभिमान और बावजूदे कमाल हाथ जोड़-जोड़कर अपनी कम इल्मी का उनका एतराफ, अब कहां है ? वे तमाम लोग इस कदर सभ्य, शालीन और सुसंस्कृत थे कि ऐसा मालूम होता था कि जैसे वे इस दुनिया के नहीं किसी प्रकाश-मंडल के वासी हैं ।"

अब न वह लखनऊ है और न लखनऊ वाले । एक-एक करके सब चले गये खाक के नीचे । जोश के ही शब्दों में—

*जलती हुई शमाओं को बुझाने वाले*
*जीता नहीं छोड़ेंगे जमानेवाले*
*लाशे देहली पे लखनऊ ने यह कहा*
*अब हम भी हैं कुछ रोज में आनेवाले*

—सी २ बी/११२ सी जनकपुरी,
नयी दिल्ली-११००५८
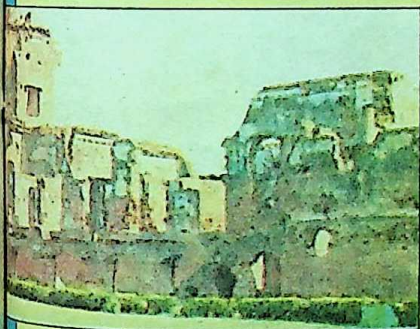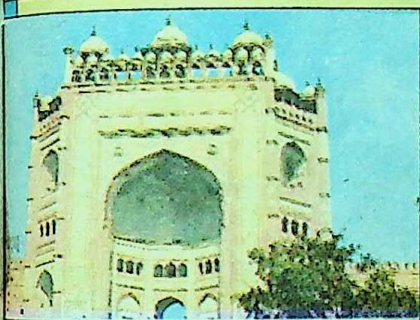
उत्तर प्रदेश जहां क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का दूसरा राज्य है, वहीं आबादी की दृष्टि से यह प्रदेश शीर्ष स्थान रखता है । जनसंख्या की इस वृद्धि के कारण प्रदेश को आर्थिक कठिनाइयों से भी गुजरना पड़ता है । सांस्कृतिक दृष्टि से यह प्रदेश धनी है । राम व कृष्ण की जन्म स्थली होने का गौरव इसी प्रदेश को प्राप्त है । राजनीतिक अलगाव के बावजूद भी देश को सांस्कृतिक सूत्र में पिरोनेवाले इस प्रदेश ने बहुत सारे उतार-चढ़ाव झेले हैं । इस प्रदेश की विभिन्न जाति व धर्मों को ग्रहण करने की भी विशिष्ट परंपरा रही है ।

पारदर्शी : बसंत मिश्रा
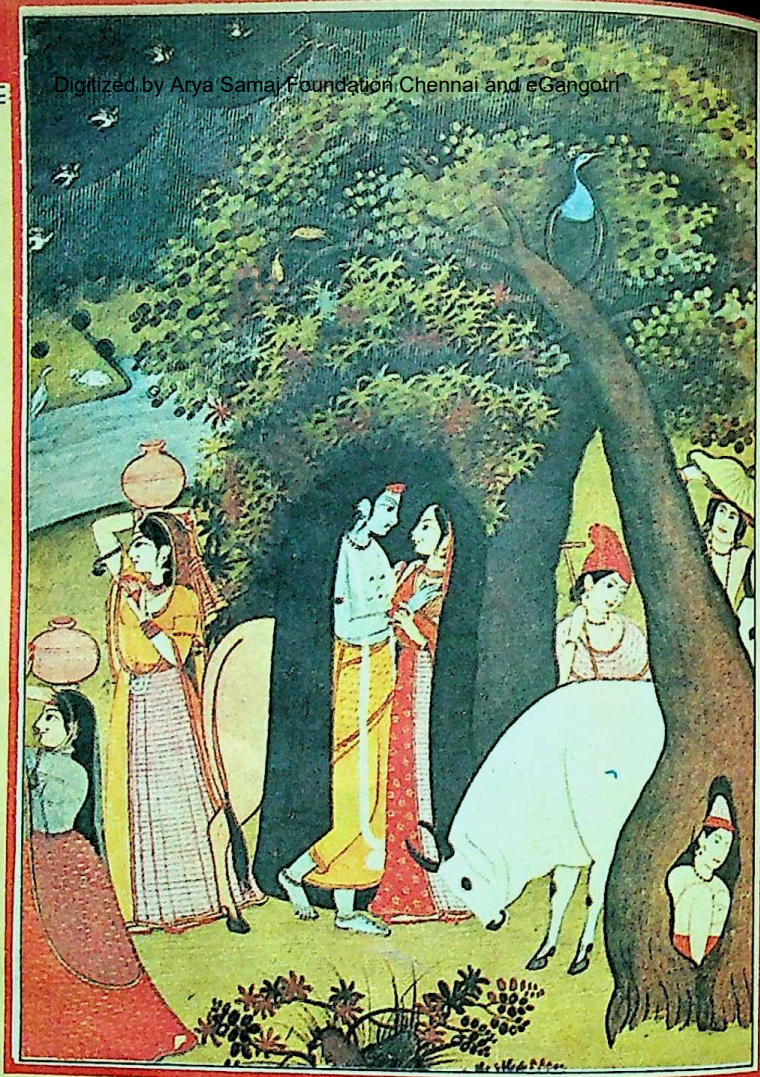
वर्षा का आनंद ◆ कांगड़ा शैली

उत्तर प्रदेश मुगल राजनीति का केंद्र रहा। मुगल काल में जहां इस प्रांत में मुगल शैली ने अपना प्रभाव छोड़ा, वहीं भगवान कृष्ण भी इसी प्रदेश में जन्मे, जिन्होंने मानव दर्शन को समझाने की कोशिश की। गीता के संदेश आज भारतवासी के मानस पटल पर ही नहीं, बल्कि देश की सीमाओं को लांघकर हर मानव के मस्तिष्क में विचार फूंकते हैं।

**रसमयी वर्षा ऋतु ने कलाकार हृदय को अत्यधिक रसविभोर किया है। साहित्य, संगीत एवं चित्रकला में वर्षा का आनंदातिरेक सुंदरता से व्यक्त हुआ है।**

# आई बरखा बहार पड़े बूंदनि फुहार

● डॉ. रेखा सिन्हा

छह ऋतुओं का देश है भारत। प्रत्येक ऋतु का अपना अलग ही सौंदर्य है, उसकी अपनी प्राकृतिक पहचान है जिससे प्रभावित होकर कवियों ने अनेक छंद रचे तो चित्रकारों एवं संगीतकारों की भी सदैव प्रेरणा स्रोत रही है। छह ऋतुओं के अंतर्गत जो ऋतुएं प्रकृति में स्पष्ट परिवर्तन लातीं हैं तथा जिनके आगमन से जनमानस आनंदातिरेक के कारण फाग तथा कजरी-जैसे गीत प्रकारों को शब्द-बद्ध एवं स्वर-बद्ध करता है, वे हैं—वसंत तथा वर्षा ऋतु।

माघ तथा पौष की कड़कती ठंड के बाद फाल्गुन मास के साथ छायी मौसम की हल्की वासंती गुनगुनाहट हृदय को आनंदित कर देती है। कोयल की मधुर कूक, पुष्पों पर झूमते भ्रमर, लाल-पीले टेसू तथा सरसों के फूल-और तभी रचना होती है अलमस्त फागों की तथा कलाकार हृदय इस वासंती वातावरण को चित्रांकित करता है 'राग वसंत' तथा 'रागिनी वासंती' अथवा 'वासंतिकी' के रूप में।

धीरे-धीरे यही मनमोहक ऋतु अपने वासंती रूप को त्यागकर जब ग्रीष्म की ओर बढ़ने लगती है तब सर्वत्र शुष्कता छा जाती है। नदी इत्यादि सभी जल-स्रोत जल-विहीन होने लगते हैं, प्यासा जन-जीवन, सूखे वृक्ष में भी छाया तलाशते पशु-पक्षी, जल के अभाव एवं ग्रीष्म के ऊष्णतायुक्त वातावरण के कारण कुम्हलाये पेड़-पौधे। प्यास से तृषित चातक पक्षी आकाश की ओर उन्मुख होकर जैसे आकाश से जल की याचना करता है। ग्रीष्म की जल-विहीन शुष्क ऋतु में भी कलाकार की रचनाधर्मिता जागृत रहती है। संगीतकार इस उष्ण वातावरण को राग दीपक के स्वरों में प्रदर्शित करता है तो चित्रकार रंग तथा तूलिका के माध्यम से राग दीपक को चित्र में साकार करता है।

परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। ग्रीष्म की

तपन के पश्चात आकाश में छाने लगते हैं श्वेत-श्याम बादलों के समूह तथा संदेश देते हैं जन-जन में प्राणों का संचार करने वाली वर्षा ऋतु के आगमन का । आकाश में छायी श्यामल घटाओं तथा ठंडी-ठंडी बयार के साथ झूमती आती है जन-जन को रससिक्त करती, जीवन दायिनी वर्षा की प्रथम फुहार । वर्षा की सहभागिनी ग्रीष्म की उष्णता आकाश से जल बिंदुओं के रूप में पुनः धरती पर अवतरित होती है किंतु अपने नवीन मनमोहक रूप में । ऊष्ण वातावरण के कारण घिर आये मेघ तत्पश्चात जीवनदान करती वर्षा का प्रसंग एक किवदंती में प्राप्त होता है जिसके अनुसार बादशाह अकबर ने दरबार में गायक तानसेन से ग्रीष्म ऋतु का 'राग दीपक' सुनने का अनुरोध किया । तानसेन के स्वरों के साथ वातावरण में ऊष्णता व्याप्त होती गयी । सभी दरबारीगण तथा स्वयं तानसेन भी बढ़ती गरमी को सहन नहीं कर पा रहे थे । लगता था, जैसे सूर्य देव स्वयं धरती पर अवतरित होते जा रहे हैं । तभी कहीं दूर से राग मेघ के स्वरों के साथ मेघ को आमंत्रित किया जाने लगा । स्वरों के साथ-साथ आकाश पर मेघ छाने लगे । जल वर्षा के कारण ही गायक तानसेन की जीवन रक्षा हुई ।

ऋतु परिवर्तन के साथ प्रकृति सदैव एक नया ही रूप धारण करती है । चारों ओर छायी हरियाली, सूखे वृक्षों पर नवीन पल्लव-ऐसा प्रतीत होता है जैसे धरा ने अपने जीर्ण-शीर्ण वस्त्रों का परित्याग कर नवीन हरित परिधान धारण किया हो । आकाश में मेघों की गड़गड़ाहट के साथ श्यामल घनघोर घटाओं में स्वर्णिम चपला दामिनी की थिरकन, मृदंग वादन की संगति में नृत्य का आभास देती है । मेघ गर्जना से उन्मादित मयूर अपने सतरंगी इंद्रधनुषीय पंखों को फैला कर नृत्य विभोर हो रहा है । श्यामवर्णी मेघ के मध्य उड़ती हुई श्वेत बकुल पंक्तियां अत्यंत मनोहारी प्रतीत होती हैं । वर्षा में सूर्यदेव के दर्शन दुर्लभ हैं, लगता है ग्रीष्म ऋतु में कठिन परिश्रम के कारण सूर्यदेव श्यामल मेघों की ओट में विश्राम कर रहे हैं ।

## ऋतुओं का कलाओं पर प्रभाव

इस रसमयी ऋतु ने कलाकार हृदय को अत्यधिक रस विभोर किया है । साहित्य, संगीत एवं चित्रकला तीनों ही कलाओं की भाव-व्यंजना एक ही है किंतु अभिव्यक्ति के माध्यम भिन्न-भिन्न हैं । साहित्य शब्द प्रधान है, संगीत स्वर प्रधान है तथा चित्रकला रेखा एवं रंग प्रधान । बाह्य रूप से तीनों कलाएं अवश्य भिन्न प्रतीत होती हैं परंतु आंतरिक रूप में तीनों ही एक-दूसरे की पूरक हैं । वर्षा के आनंदातिरेक को तीनों ही विधाओं में सुंदरता के साथ उजागर किया है ।

### साहित्य में

महाकवि कालिदास कृत 'ऋतु संहारम्' षट् ऋतु वर्णन पर ही आधारित है । द्वितीय सर्ग वर्षा ऋतु का है । सर्ग के प्रथम श्लोक में नायक-नायिका से परम सुहावनी वर्षा ऋतु के आगमन का वर्णन करते हुए कहा है कि प्रिये, जल बिंदुओं से पूर्ण, जलधर स्वरूप, मस्त हाथियों के समान रूप वाला, विद्युत रूपी झंडे सहित, वज्र की ध्वनि को भी मंद करनेवाला, कामीजन को प्यारा, राजा के समान विपुल नाद करता हुआ वर्षाकाल आ गया है ।

'मेघदूतम्' कालिदास की वियोग श्रृंगार

प्रधान रचना है । शापित यक्ष अपनी विरह व्यथा का संदेश अपनी प्रिया तक पहुंचाने के लिए वर्षा काल के मेघ से ही याचना करता है । पूर्व मेघ में यक्ष उज्जयिनी नगरी में स्थित महाकाल के मंदिर में संध्या समय तक रुके रहने का आग्रह मेघ से करता है, जिससे वह अपनी गर्जना द्वारा सायंकालीन शिव की आरती में पटह ध्वनि का कार्य संपन्न कर महाकाल के प्रसाद का संपूर्ण फल प्राप्त कर सके ।

एक अन्य श्लोक में कवि ने कंदराओं से प्रतिध्वनित मेघ-गर्जना की तुलना मुरज ध्वनि से की है । यक्ष मेघ से कहता है कि जहां बांसों के छिद्रों में वायु भर जाने के कारण सुषिर वाद्य के रूप में मधुर शब्द हो रहा है, किन्नरियां त्रिपुर विजय के गीत गा रही हैं, अब वहीं यदि मेघ गर्जना करे तो कंदराओं से प्रतिध्वनित होकर छायी मेघ गर्जना मृदंग ध्वनि के समान प्रतीत होगी और इस प्रकार भगवान शिव के तांडव नृत्य हेतु गीत तथा वाद्य की संगति हो जाएगी ।

'उत्तर मेघ' में यक्ष द्वारा मेघ तथा अलकापुरी की समानता का प्रसंग है । यक्ष मेघ से कहता है कि जिस प्रकार उसमें (मेघ में) बिजली की चंचलता है उसी प्रकार अलकापुरी में रमणियों की चेष्टाएं (हाव-भाव) हैं यदि उसमें इंद्र-धनुष है तो अलकापुरी में चित्रमय प्रासाद है, यदि मेघ स्निग्ध गंभीर घोष करता है तो वहां भी मृदंग निनाद व्याप्त हैं, यदि वह जल से पूर्ण है वहां के फर्श भी मणिमय हैं, मेघ यदि ऊंचाई पर है तो अलकापुरी की अट्टालिकाएं भी गगनचुंबी हैं ।

## संगीतकला भी अछूत नहीं

संगीतकला भी वर्षा के रस माधुर्य से अछूती नहीं है । लोक-गीतों में वर्षा संबंधी गीत कजरी के रूप में गाये जाते हैं । सावन-भादों के घने कजरारे बादल आकाश पर छा गये हैं लेकिन सजनी का साजन अभी तक नहीं आया—

*बरखा आये गई मोरी गुइंया*
*सजना नाहीं आए ना*

बरखा की बहार अब बीतने को है परंतु 'रसिया' ने अभी तक सुधि नहीं ली । बालों का गजरा मुरझाने लगा है, रास्ता देखते-देखते आंख का कजरा भी थक चला है लेकिन उस बेदर्दी ने तो पतिया तक नहीं पठाई है । 'उसके' बिना तो सावन की बदरिया भी नहीं सुहाती, बिजुरी की चमक जैसे डसने लगती है—

*बीते बरखा बहार, सुधि लीन्ही न हमार*
*कैसे बेदरदी से नेहा लगाए रसिया*
*मोहे सावन की बदरिया न भाए रसिया*
*घिरे घोर घटवा झकझोर पुरवा*
*कतों बिजुरी चमक डस जाए रसिया*
*मुरझाए गजरा थक गइल कजरा*
*तबौ पतिया तलुक न पठाए रसिया*

दूसरी ओर 'गोरी' सोलहों श्रृंगार के साथ आनंदित हो भीग रही है—

*आई बरखा बहार पड़े बूंदनि फुहार*
*गोरी भीजत अंगनवा अरे सांवरिया*
*गोरी-गोरी बैयां पहने हरी-हरी चूड़ियां*
*आगे सोने के कंगनवा अरे सांवरिया*
*बालों में गजरवा सोहे नैनन बीच सजरा*
*माथे लाली रे टिकुलिया अरे सांवरिया*

शास्त्रीय संगीत में छह ऋतुओं के साथ छह रागों का संबंध स्थापित किया गया है। वर्षा के आनंद को अपनी स्वरलहरियों द्वारा और अधिक प्रभावोत्पादक बनानेवाला राग 'मेघ' है जिसका वर्णन मल्लार या मेघ मल्लार के रूप में भी प्राप्त होता है। राग मेघ को जलधर अर्थात जल को धारण करनेवाला भी कहा गया है। राग मेघ मल्लार के अतिरिक्त मियां मल्लार, गौंड़ मल्लार, सूरदासी मल्लार, रामदासी मल्लार इत्यादि मल्लार के अन्य प्रकार भी हैं। स्वर रचना के साथ वर्षा-कालीन रागों में निबद्ध बंदिशों की शब्द रचना भी ऋतु अनुकूल रहती है। सूरदासी मल्हार की यह शब्द रचना कितनी सटीक व मनोहारी है—

*स्थाई— बरसन लागी बूंदरिया सावन की*
*अंतरा—*
*घन पर घननन गरजत बरसत*
*दामिनी दमके जियरा लरजे*
*तान सुनत मन भावन की*

संगीत शास्त्रों में राग-रागिनियों के दो रूप माने गये हैं—स्वरमय या नादमय रूप तथा भावमय रूप, जिसे राग की आत्मा भी कहा गया है। राग का भावमय रूप, राग विशेष से उत्पन्न भाव पर आधारित होकर, मानवीय रूप में कल्पित है। राग-रागिनियों के इन्हीं मानवीय रूपों को श्लोक बद्ध किया गया। राग मेघ को नादमय रूप के द्वारा जहां संगीतकारों ने साकार किया वहीं श्लोकों के आधार पर वर्णित भावमय दैविक रूप का अंकन चित्रकारों ने किया। संगीतकार वर्षा को स्वर के माध्यम से साकार करता है तो चित्रकार रंग तथा तूलिका के माध्यम से उसे रूपायित करता है।

### चित्रकला में

राजपूत चित्रकला में जिस प्रकार राग-रागिनियों का अंकन 'रागमाला' चित्रों में है, उसी प्रकार 'बारहमासा' चित्र श्रृंखला में छह ऋतुओं की सुंदर भावाभिव्यक्ति है। बारहमासा चित्रों में भी सर्वाधिक आकर्षित करते हैं फालुन तथा सावन-भादों मास के चित्र। चित्रकार जहां फागुन का चित्रण 'होली' तथा 'वसंत' के रूप में लाल-पीले जैसे श्रृंगारिक रंगों के माध्यम से करता है, वहीं सावन-भादों का अंकन हरे-भरे वातावरण, हर्षित जन जीवन तथा घने श्यामल मेघों के साथ वर्षा के रूप में करता है। कांगड़ा शैली के चित्रों में कलाकार ने वर्षा के उन्मादित वातावरण को रूपबद्ध किया है।

प्यासे चातक के साथ जन-जन को जीवन दान करती आ गयी है— ऋतुओं की रानी, रसभीनी-वर्षा ऋतु।

**द्वारा— ब्यौहार राम मनोहर सिन्हा,**
**५०१ ब्यौहारबाग, जबलपुर (म. प्र.)**

***जहां प्रेम और भक्ति नहीं, वहां परमात्मा नहीं है। —समर्थ गुरु रामदास***

# और हैं जो महान होते हैं

● गोपाल चतुर्वेदी

इधर हम बड़े आदमी बनने की कोशिश में हैं। हर महान व्यक्ति कभी-कभी छोटों की सुविधा के लिए अपनी जिंदगी का सार्वजनिक लेखा-जोखा करता है। हमने भी मुड़कर देखा और पाया कि अपना बचपन खासा घटना-रहित रहा है। सब स्कूल जाते हैं, हम भी गये। सिर्फ इस फर्क के साथ कि हम हफ्ते में तीन-चार बार बैंच पर खड़े हुए, एक-दो बार संटी-सुख भोगा और तकरीबन रोज बिला नागा अपने कान उमेठे गये।

इसी का सुखद नतीजा है कि कान के कच्चे लोगों की भरमार में अपने कान पके और भरे-भरे हैं। सोना भी तो तपकर ही खरा होता है। खिचे हुए कानों का अपना फायदा है। बहुत गरमी पड़ी तो हम अपने ही हाथ से कान हिलाकर पंखा झल लेते हैं। इस कान के सूप विषय के मा-साब ने हमारे कान को दिमाग का सैल्फ समझकर खूब घुमाया है। दर्द तो हर बार हुआ पर वह कम्बख्त कभी 'स्टार्ट' ही नहीं हुआ।

इन मास्टरों ने हमें घर पर भी नहीं बख्शा। वह हमारे पिताश्री को मौके-बेमौके हमारी बुद्धि-शून्यता और तिमाही-छमाही परीक्षा की सिफर-कारगुजारी के किस्सों से भड़काते रहते। पिता होने के नाते उनका भी हरकत में आना भी लाजमी था। वह भी कान के सैल्फ को कभी दायें, कभी बायें, कभी गोलाकार घुमाकर अपने दिल के गुबार निकालते। फिर मां को चेताते—

"तुम्हारा लाड़ला तो पढ़ता-लिखता है नहीं। घास खोदेगा, घास। यकीनन, एक न एक दिन, चोरी-चकारी में जेल जाएगा।"

से सुना और उस सूप से साफ। कभी-कभी चंवर-झुलते राजाओं की तसवीर देखकर हमें ख्याल आता है कि दरबारियों को उनकी शक्ल जरूर गज-सूपों के बीच अपनी बौनी नाक-सी लगती होगी। यह हमारे कानों की ही कृपा है कि बे-कार रहकर भी हम कार के एक अहम हिस्से से भली-भांति परिचित हैं। हमारे हर

हम आज भी सोचते हैं तो हमारा सिर शरम और आत्म-ग्लानि से झुक जाता है। हम अपने पूज्य पिताजी की एक भी भविष्यवाणी पूरी न कर पाये।

ऐसा नहीं कि हमने अपनी ओर से कोई कोर-कसर की। हम पूरी तैयारी से घास खोदने का पिताजी का अरमान पूरा करने में जुटे रहे।

हमने जासूसी-ऐय्याशी की किताबें पढ़ीं। हर इम्तहान के पहले हनुमानजी से प्रसाद का वादा किया। यह हमारी परीक्षा-प्रणाली की आस्तिकता का ही सबूत है कि हम हर क्लास बिना प्रयास पास करते गये। वह भी ऐसे माहौल में जब अपने अधिकारों के बारे में छात्र इतने जागृत न थे। नकल का चलन कम था। आज अवसर की बराबरी का जमाना है। नकल का जोर ज्यादा है। इसे हम प्रभु के आशीर्वाद का करिश्मा ही कहेंगे कि बी.ए. का हिमालय हम बिना परिश्रम की आक्सीजन के सफलतापूर्वक चढ़ गये। वह भी जब कि अर्थशास्त्र के प्रश्न-पत्र में हमने, डिमांड-सप्लाई के नियमों की जगह, अपनी सब्जी मंडी के भावों का विशद विवेचन किया। इतिहास में मुगल आर्किटेक्चर के स्थान पर अपने घर की ढहती दीवारों और दीपक के संत्रास का बयान किया और अंगरेजी के परचे में शेक्सपियर के 'एज यू लाइक इट' के सवाल में मिल्टन के 'पैराडाइज लोस्ट' का जवाब लिखा। पर वाह रे पवन-पुत्र! लगता है वह हमारी उत्तर पुस्तिकाएं जांचनेवाले परीक्षकों की अक्ल को घास खाने सुमेरु पर्वत पर छोड़ आये थे।

यों हमें बाद में बताया गया कि उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन की प्रक्रिया का सरलीकरण हमारे समय से ही चालू है। इसके अंतर्गत उत्तर पढ़ने की जरूरत ही नहीं पड़ती। जिन परीक्षकों के पास पालतू कुत्ता होता है, वह कापियां उसके सामने पेश करते हैं। अगर उसने दुम हिलायी तो प्रत्याशी पास। कुत्ता गुर्राया, प्रत्याशी फेल! जाहिर है कि शिक्षाविद् तक मानते हैं कि जानवर इंसानों से अधिक निष्पक्ष है। इधर परीक्षकों को अधिक पढ़ी-लिखी पत्नियां होने लगी हैं। बिना कुत्तेवाले, उत्तर पुस्तिकाएं उनको अर्पित कर देते हैं। उनसे वह या उनके बच्चे गिनती का अभ्यास करते हैं। जितने पन्ने रंगे, उतने नंबर मिले। हमें यकीन है। हमारे सहयोगी पढ़ाई के सूरमा ऐसे ही सुखद संयोगों से सफल रहे हैं। अब भले ही अपने को तीस मारखां बताते हैं।

### ऐतिहासिक तरक्की

हाल फिलहाल देश ने और क्षेत्रों के साथ पढ़ाई में भी ऐतिहासिक तरक्की की है। अब कलम का स्थान कटार ने ले लिया है। लैक्चरर या टीचर अहिंसक होने के नाते खुद ही हथियार डाल देते हैं। वह अपनी ताकत लड़कों के साथ लड़ने में क्यों जाया करें? उनके अस्त्र आपसी लड़ाई के लिए रिजर्व हैं। थोड़े दिनों में पुलिस-फौज के हाकिम स्कूल-कॉलेज चलाएंगे और विद्यार्थी उन्हें अनुशासन सिखाएंगे!

हमारे पास होने की अनपेक्षित खबर से पिताजी का दिल बल्लियों उछला और फिर बैठ

गया । वह ऐसा लेटे कि फिर उठे ही नहीं । हम काफी दिनों तक अपराध-बोध से पीड़ित रहे । अब हमें समझ आया है कि चौंकानेवाले नतीजे निकालना हमारी शिक्षा व्यवस्था की स्थायी और मुसल्सल सिफत है । पिताजी के स्वर्ग सिधारने से उनके सरकारी विभाग पर सहानुभूति का भयंकर दौरा पड़ा और उसने हमें बाबू बना दिया । हम अब भी बाबू हैं पर विभाग में हमदर्दी का स्थान बे-अदबी ने ले लिया है । लोग फब्तियां कसते हैं, "देखो ! चौबे के कैसी चर्बी चढ़ी है । न खुद हिलता है न कागज को हिलने देता है ।"

पिताजी की इच्छा पूरी करने हम घास छीलने के लिए कमर कसे रहे । पहले घास और गधे दोनों की इफरात रही होगी । अब घास तो कोठियों में शिफ्ट कर गयी है और गधे सियासत में । फिर भी हमने हिम्मत नहीं हारी । हम एक बंगले में खुरपी और हंसिया लिए घुस गये । वहां के सुरक्षा गार्ड ने हमें देखा । हमने साहब से मिलने का इसरार किया । उसने लाठी दिखायी, हमने हंसिया । इतने में साहब अपनी वातानुकूलित कार में कहीं जाने के लिए अवतरित हुए । चौकीदार ने विजयी हुंकार के साथ कॉलर-पकड़कर हमें उनके आगे कर दिया—

"साब ! यह सुबह से अंदर जाने के लिए टोह ले रहा है ।"

"क्यों", उन्होंने हमारी ओर घूरा ।

"सर ! हम अपने पिता की आत्मा की शांति के लिए घास छीलना चाहते हैं ।"

"हमारा लॉन माली 'मो' करते हैं ।"

"वह पैसे लेकर छीलते हैं, हम फ्री में घास छीलेंगे । दो-तीन दिन में पिताजी की बरसी है । एक मौका दे दें ।"

उन्होंने आव देखा न ताव । गार्ड की मदद से हम पिछली सीट पर ठूंसे गये और थाने छोड़ दिये गये । थानेदार ने चपत लगाते सवाल किया — "किस गैंग के हो ?"

हमने सरकारी गैंग के होने के सबूत बतौर अपना परिचय-पत्र प्रस्तुत किया, उसने खुरपी का मुआयना करते हुए सवाल किया— "लगता है कि अपने बाबू-क्लास के साथियों की तरह तुम भी घास खाने की हालत में पहुंच गये हो ।"

हमने पिताजी की हसरत पूरी करने की जिद दोहरायी— "घास नहीं छीली न सही । आप जेल में ही रख लो ।"

"घर में दाल-रोटी नहीं जुटती तो जेल में मुफ्त की तोड़ोगे । हम कोई बेवकूफ हैं । चलो चौबीस घंटे रख लेंगे । निकालो सौ रुपये !"

हम दस रुपये भी नहीं निकाल पाये तो उसने हमें थाने-बाहर कर दिया ।

घास-अभियान में असफल होकर भी अपनी जेल-प्रयाण की आकांक्षा बरकरार रही। इधर लाइसेंस, परमिट, रेल की बर्थ जैसी हर सुखद चीज के लिए घूस का चलन है। जेल भी जरूर खास होगा वर्ना थानेदार फकत चौबीस घंटों के लिए हमसे सौ के नोट जैसी नायाब दौलत की फर्माइश क्यों करता। जेल के प्रति अपनी उत्सुकता, थोड़े दिनों बाद, और बढ़ गयी जबकि उससे मधुर और मीठी यादें जुड़ गयीं। हमारे सरकारी कबूतरखाने के सामने कुछ धन्ना सेठों के निजी मकान हैं। उनमें से किसी परोपकारी ने एक दिन पूरी कॉलोनी में लड्डू बंटवाये। हमने लड्डू-वितरक कारिंदे से जिज्ञासा जतायी— "क्यों भैया! कोई नया मिष्ठान भंडार खुल रहा है जो 'सैम्पल' बंट रहे हैं।"

"हमारे मालिक ऐसे घटिया काम नहीं करते हैं। उन्हें पुलिसवाले स्मगलिंग के जुर्म में जेल ले गये थे। आज ही जमानत पर छूटे हैं और सबका मुंह मीठा करा रहे हैं।"

मिठाई खाकर जेल और जेल जानेवालों की नेकनीयती के बारे में अपनी आस्था और दृढ़ हो गयी।

हमारे विद्वान मित्र आतताई भी बताते हैं कि अरस्तू, सुकरात, गैलीलिओ से लेकर नेहरू, गांधी और जयप्रकाश तक सारे महत्त्वपूर्ण चिंतक, विचारक और लीडर जेल की तीर्थ-यात्रा अकसर करते रहते थे। कृष्णजी का तो जन्म-स्थल ही जेल था। हमें लगा कि जैसे ही हम पिताजी की जेल जाने की इच्छा पूरी करेंगे, तत्काल साधारण से महान बन जाएंगे! हमने जेल-एक्सपर्ट आतताई से सलाह ली— "चोरी, डकैती, स्मगलिंग करके भी लोग जेल जाते हैं। इस बारे में आपका क्या ख्याल है।"

"फर्क सिर्फ नजरिये का है। इनमें से कुछ समाज-सुधारक हैं, कुछ समाजवादी।"

"पर लोग तो इन्हें समाज का दुश्मन करार देते हैं," हमने जिरह जारी रखी।

"स्मगलर, सोना, चोरी, ड्रग्स आदि लाकर मुल्क से जरूरी चीजों का अभाव दूर करते हैं। चोर-डाकू संपन्न लोगों की दौलत उड़ाकर सामाजिक न्याय और समता की पताका फहराते हैं।"

"हमें जेल जाना है। हम क्या करें", हम बुनियादी मुद्दे पर आये।

"बनने को तो आप लीडर बनकर कभी जेल जा सकते हैं। पर नयी पीढ़ी के नेताओं-सी बदनामी का माद्दा आपमें है नहीं। इसके मुकाबले स्मगलिंग शराफत का धंधा है। आप वही ट्राई करें।"

सामान्य आदमी की जिंदगी दूसरों की सलाह, पड़ोसी के अनुकरण और विवशता के वशीकरण के दायरे में घूमती है। हमने कई बार मिठाईवाले स्मगलर को फोन घुमाया। हर बार उन्हें चुनाव के सिलसिले में व्यस्त पाया। तंग आकर एक दिन हम सुबह-सुबह दतौन करते

उनके दरवाजे पर धमक लिए।

वह बोले, "कहिए।"

"हमें भी धंधे में लगाकर अपनी शरण ले लें।"

"नौकरी के लिए हमारे दफ़्तर में पता करिए।'

"हमें जेल जाना है", हमने विनती की।

"शौक से जाएं। हम क्या करें।"

"हमें भी स्मगलिंग में शामिल कर लें।" हम घिघियाये।

"बक्वास बंद करिए"।

"आप तस्करी में ही तो जेल गये थे।"

इतना सुनना था कि वह 'चैपी'-'चैपी' करने लगे। एक भीमकाय एल्सेशियन ने 'भौं'-'भौं' कर हमें दौड़ा लिया। गनीमत यही रही कि पाजामे में पैर गेट के पास फंसा और हम सीधे बाहर गिरे। मोहल्लेवाले हमें खुशी-खुशी घर ढो ले गये—

"भाभी ! चौबे को समझाइये। सड़क पर औंधे पड़े थे", एक ने हमदर्दी दिखायी।

"सबेरे से तो ठर्रा नहीं पीना चाहिए," दूसरे ने सहानुभूति जतायी।

"और नाक कटाओ", पत्नी ने डांट पिलायी। हमने उन्हें अपने श्रवणकुमार बनने का व्रत सुनाया। उन्होंने हमारा ज्ञान बढ़ाया— "छोटे लोग बड़े काम नहीं कर सकते हैं। सब ऊपरवाले की लीला है। इस बरसी में पिताजी की आत्मा से माफी मांग लेना।"

तब से हम रिकार्ड-रूम के कागज खोद रहे हैं। न घास खोदी, न जेल गये। अपने महानता के सपने धरे के धरे रह गये।

— डी-१/५ सत्य मार्ग नयी दिल्ली-२१

# इनके भी बयां जुदा जुदा

यह उसके प्यार की बातें फकत किस्से पुराने हैं
भला कच्चे घड़े पर कौन दरिया पार करता है

—हसन रजवी

वह अपने कांधे पे कुनबे का बोझ रखता है
इसलिए तो कदम सोचकर उठाता है

—मनव्वर राना

पल भर वह चश्मतर से मुझे देखता रहा
फिर उसके आंसुओं से मेरी आंख भर गयी

—मक्बूल आमर

दरो दीवार पर इतना पड़ा है सारे दिन पानी
अगर कल धूप भी निकलेगी तो घर बैठ जाएगा

—शुजा खावर

परिंदों में कभी फिरकापरस्ती क्यों नहीं होती
कभी मंदिर पे जा बैठे कभी मसजिद पे जा बैठे

—डॉ. उर्मिलेश

इस भीड़ में लोगों की मैं रो भी नहीं सकता
एक तुम हो कि चुपके से तन्हाई में रो लोगे

—इशरत किरतपुरी

तुझको इंसान तो कह दूं मैं खुशी से लेकिन
यह बता दे कि तू इस दौर का इंसां तो नहीं

—दिवाकर राही

मेरी दुनिया में मुझे तू भी तो आकर देखे
खौफ का बोझ अलग, दर्द का बाजार जुदा

—अदा जाफरी

(प्रस्तुति : कुलदीप तलवार)

# चींटीखोरों का सपना

● दामोदर अग्रवाल

अमरीका की चकाचौंध कर देनेवाली ऐश्वर्यमयी संस्कृति से ऊबकर वहां के कुछ युवक-युवतियां न्यूयार्क, वाशिंगटन और शिकागो की सभ्यता छोड़कर शहरों, सड़कों और बस्ती से सैकड़ों मील दूर ऐसी जगहों पर जाकर बस रहे और अपना एक गांव बसा रहे हैं, जहां वे रेडियो, टेलीविजन, होटल, नाचघर, रेस्त्रां, शराब और पत्र-पत्रिकाओं से बचे रहें ।

अस्वाभाविक आवाजों, बनावटी रंगों, प्रेम और सेक्स से ऊबे हुए इन लोगों का एक सपना है— इक्कीसवीं शताब्दी के शुरू होते-होते विज्ञान पर आधारित आज के विकसित औद्योगिक समाज का एक ऐसा विकल्प पैदा करना, जो निराशा, कुंठा और घुटन की पीड़ाओं से मुक्त हो ।

जो युवा इस तरह जिन गांवों और छोटी-छोटी मुक्त बस्तियों की स्थापना कर रहे हैं वे अधिकतर पढ़े-लिखे और समृद्ध परिवारों के हैं । उनका नाम रखा गया है 'आर्मेडिलोज ड्रीम' यानी 'चींटीखोरों का सपना' । इस तरह के 'ड्रीम' या 'सपनों के गांव' सात-आठ साल पहले ही अस्तित्व में चुपचाप आने लगे थे, गोकि अमरीकी प्रचार-माध्यमों का ध्यान उन पर इतने बरसों बाद अब जा रहा है ।

और अब तो अमरीका के टेलीविजन यह भी कह रहे हैं कि उलझनों से दूर जीवन का यह विकल्प भी अपनेआप में काफी अनोखा और आकर्षक है ।

## शहर से दूर

इन अमरीकी युवाओं ने, जिनमें कुछ विवाहित, बच्चोंवाले जोड़े भी हैं, अपनी बस्तियों का नाम 'आर्मेडिलो' नामक एक दक्षिण अमरीकी जंतु के जीवन के प्रतीक पर रखा है । आर्मेडिलो एक चींटीखोर जानवर है जो ऊपर के हवा-पानी से दूर जमीन में बिल खोदकर रहता है और मौसम की मार पड़ते ही, या दुश्मन की आहट पाते ही अपने बिलों में जाकर छिप जाता है । 'ऊपर का हवा-पानी आज की समृद्ध पाश्चात्य सभ्यता है, और विज्ञान और उद्योग हमारे दुश्मन हैं जिन्होंने हमारा सुख-चैन छीन लिया है ।' ऐसा विश्वास है 'चींटीखोरों का सपना' नामक गांवों के निवासियों का ।

'आर्मेडिलो' (जो चींटी खाकर जीता है) नामक जंतु की शारीरिक बनावट बड़ी विचित्र है । दक्षिण अमरीका में भी अब लगभग लुप्त होते हुए इन जीवों का शरीर लगभग पूरा का पूरा मजबूत हड्डियों के ढक्कन से ढका-सा होता है, जो उनकी रक्षा कवच का काम करता है । खतरे का आभास होते ही वह उस 'कवच' में घुस जाता है और पकड़े जाने पर भी वह वहीं तब तक सुरक्षित, अडिग बैठा रहता है, जब तक दुश्मन अपना धैर्य खोकर चला न जाए ।
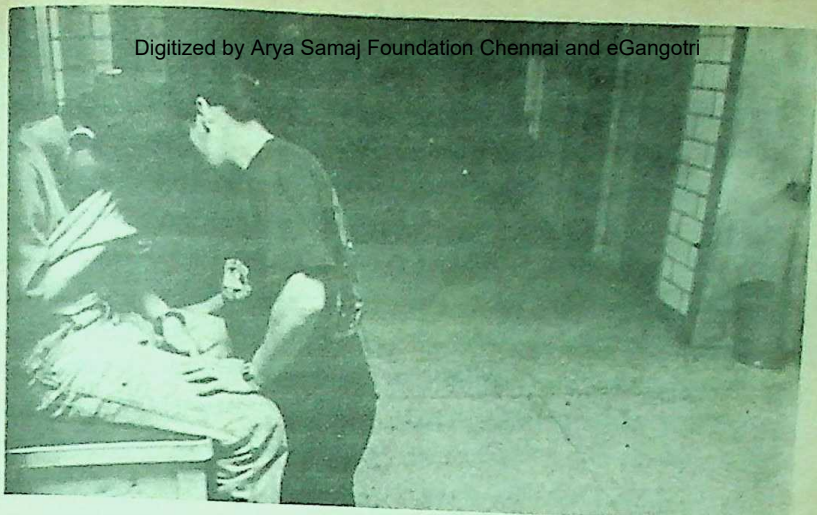
खतरा टल जाने के बाद वह अपने को एक गेंद की तरह लुढ़काता अपने बिल में चला जाता है।

**बाहरी संकट का सामना**

'चींटीखोरों का सपना' के निवासियों ने आर्मेडिलो के हर व्यवहार को एक प्रतीक मानकर उसको एक नया अर्थ दिया है। मसलन, दूसरे जानवरों से उसका दूर रहना सादगी, संतोष और अपनेआप में संपूर्णता की निशानी है। उसका 'रक्षा-कवच' आंधी-पानी और हमलों से बचाव का प्रतीक है। दक्षिण अमरीका में अनेक दूसरे खूंख्वार जानवर भी रहते हैं, जिनके सामने 'आर्मेडिलो' की हस्ती ही क्या है, और उसकी नस्ल कभी भी मिट सकती है। पर नहीं, वह ऐसा कभी भी नहीं होने देगा, क्योंकि वह अपने ढंग से जीने और हर बाहरी संकट का डटकर सामना करने को तैयार हैं। प्रकृति ने भी उसको ऐसे ही ढाला है कि वह अपना बचाव कर सके।

'चींटीखोरों का सपना' के लोग भी इसी तरह की जिंदगी जीना चाहते हैं। उनका विश्वास है कि हर तरह की सुविधा-संपन्नता और वैभव के बावजूद हमारी सभ्यता का भावनात्मक पक्ष कमजोर हुआ है। कहीं किसी को शांति नहीं, और जो है उसका सुख भोगे बिना, उसके लिए प्रकृति और ईश्वर का शुक्रगुजार हुए बिना, जो नहीं है उसे भी जल्दी से जल्दी पा लेने की अपनी कोशिश में आज का आदमी अपनी आत्मा की पहचान भी खोता जा रहा है।

हम सब मन को छोड़कर शरीर की सजावट में लगे हुए हैं। ऐसे में हमें जरूरत है, एक ऐसे 'रक्षा-कवच' की जो हमें 'स्टार-वार' की कल्पना से दूर रखकर हमारे अस्तित्व को लुप्त होने से बचाये और आधुनिकीकरण के नाम पर चल रहे प्रयोगों और तनावों से भी हमें दूर रखे। जरूरी यह भी है कि जब खतरा पैदा हो तब हम 'आर्मेडिलो' की तरह अपने को गेंद की तरह लुढ़काते हुए अपने-अपने 'बिलों' में घुस

**उन्मुक्त जीवन और भौतिक समृद्धि से घबड़ाए हुए अमरीकी लोग गांवों में अपनी दुनिया बसा रहे हैं, जहां वे शांतिपूर्वक सुख-चैन से रह सकें ।**

जाने की क्षमता पैदा करें ।

एक आर्मेडिलो का कहना है कि आदमी आज जितना बेचैन और परेशान है, उतना इतिहास में वह पहले कभी नहीं था । उसकी लड़ाई दूसरों से तो है, अपने आप से भी है, जो अधिक खतरनाक है । प्रकृति, पहाड़ों, नदियों, जंगल, फूलों और चिड़ियों की खूबसूरती का स्वाद भूलकर वह मनोरंजन के नये, निहायत कृत्रिम आयाम ढूंढ़ने में लगा हुआ है । मनोरंजन के एक उत्तम माध्यम सिनेमा को भी, जिसके जरिए वह जीवन के और नजदीक जा सकता था, उसने सैक्स और हिंसा से लादकर निहायत नकली और बेमानी बना डाला है । कुछ बरसों में ही दो बड़ी लड़ाइयां हुईं, संस्कृतियां टूटीं और फिर बनीं, औरत-मर्द के संबंधों में न जाने कितने नये-नये नुक्ते कायम हुए, यहां की सभ्यता वहां गयी, वहां की यहां आयी— इन सारे परिवर्तनों और संक्रांतियों के बावजूद आदमी की खुशियों का आंचल सजा नहीं है । इसलिए हमारी विपदाओं का जवाब शिकागो नहीं, चींटीखोरों का गांव है ।

### मशीन मानव का जन्म

आज के तेजी के साथ बढ़ते हुए शहरी समाज में विकसित और विकासशील देशों का आदमी अपनेआप में एक विरोधाभास, एक अप्रासंगिक कड़ी होकर रह गया, और उसकी स्वाभाविक चेतना को भी कंप्यूटर और मशीन-मानव के हवाले कर दिया गया है । सुखी पारिवारिक जीवन और स्वस्थ यौन-संबंधों को भी आंच आयी है । आदमी कभी साहित्य और कला हो जाता है और कभी अर्थशास्त्र और विज्ञान, फिर भी कहीं भी उसकी कोई पहचान स्थापित नहीं हो पा रही है । साथ ही, वह कभी निहायत भौतिक हो जाता है, कभी निहायत मानवतावादी । उसकी करुणा समाप्त हो गयी है, और वह संदेह तथा विश्वासहीनता के काले घेरे में जी रहा है ।

इन सबसे बचने के लिए वह नशे और खुले सेक्स का सहारा लेता है, जो उबकाई के साथ-साथ आत्मसंहार की वृत्ति को बढ़ावा देता है । इसलिए विज्ञान की फैलती संस्कृति उसे अब जहां ले जा चुकी है, वहां से वापस आना तो मुश्किल है, किंतु उसका एक विकल्प जरूर है— 'आर्मेडिलोज ड्रीम' नामक गांव, जहां जाकर सभ्यता से ऊबे हुए लोग सुख और शांति से जी सकते हैं ।

### पुनः प्रकृति की ओर

एक 'आर्मेडिलो' से सवाल पूछा गया कि इतनी बड़ी दुनिया में एक-दूसरे के प्रति अविश्वास और हथियारों की होड़ का जो जबरदस्त माहौल बन गया है, क्या उसे ऐसे दस-बीस गांव बसाकर मिटाया जा सकता है, तो उसने कहा—एक शुरूआत तो कीजिए, हो सकता है दो-चार पीढ़ियों के बाद ये गांव ही सभ्यता के वास्तविक विकल्प साबित हों ।

दूसरे ने कहा— अब हो क्या रहा है, हमारे जीवन में। 'नेचर' से हमें तलाक मिला हुआ है। किसी से किसी की दोस्ती रही नहीं और हम सब अकेले-अकेले, अलग-अलग जी रहे हैं। सामाजिक जीवन भी हमारा मुखौटों का हो गया है, पीढ़ियां एक-दूसरे को समझने में असमर्थ हैं, व्यवहारों में जहर घुला हुआ है और हम सब एक असहनीय कड़ुवाहट की दुखभरी जिंदगी जी रहे हैं। इस तरह तो सभ्यता की सारी उपलब्धियां एक तरह से बेकार ही तो हो गयी हैं? तो हम क्या करें? हम सिर्फ यह करें कि शिकागो की संस्कृति और अट्टालिकाओं से दूर एक ऐसा जगत बनायें, जहां जाकर कुछ लोगों को सुकून हासिल हो सके।

और यह सच है कि अमरीका में आज इस तरह के न जाने कितने गांव बस गये हैं। शुरू-शुरू में तो लोगों ने उनमें कोई विशेष दिलचस्पी नहीं दिखायी, उन्हें 'पागलों का गांव' कहा, पर धीरे-धीरे उनके दार्शनिक पक्ष को समझने लगे। अब शायद ही कोई दिन ऐसा हो, जब उन गांवों के निवासियों की जीवन-शैली पर किसी अखबार में कोई लेख न छपता हो, या उनके 'नेटवर्क' पर कोई प्रोग्राम न दिखाया जाता हो।

इन गांवों के लोगों की अपनी गायें हैं, अपने खेत हैं। उनकी डबल-रोटियां उनकी अपनी बेकरियों में ही बनती हैं, मक्खन वे अपनी गायों के दूध से ही बनाते हैं। बाहर का डिब्बाबंद खाना वर्जित है। उनके रोज के साथी हैं, गांववालों के अलावा घोड़े, कुत्ते, सूअर और मुरगियां, जिन्हें वे पालते हैं और जिनके साथ उनका व्यवहार बराबरी का है। वे उनके सेवक भी हैं, साथी भी। न उन्हें बिजली की चाह है, न गरम पानी की। तेल के दीपक ही काफी हैं। रेडियो नहीं सुनते, टेलीविजन नहीं देखते और बाहर की दुनिया से उनके नातों का सिर्फ एक बिंदु है अखबार, जो डाक से आता है।

**इच्छा गांव में वापिसी की**

ध्यान देने योग्य बात यह है कि इन गांवों से आदमी के जीवन और संसार की कोई समस्या हल नहीं होती, न ही इनसे शहरी सभ्यता को नष्ट कर देने का नारा ही बुलंद होता है। उनका मकसद सिर्फ यह है कि यदि आप ऊब गये हैं, तो आइए, हमारे साथ रहिए हमेशा के लिए, और हमारे गांव जैसे ही और गांव भी बसाइए। उनका यही संदेश उभरती पीढ़ी को भी है।

उनका कहना है 'हम कोई क्रांति, कोई व्यापक परिवर्तन करना नहीं चाहते, कर भी नहीं सकते, पर यह जरूर कहेंगे कि लक्ष्य सुख और शांति है, तो एक रास्ता हमारा सपनों का गांव भी है।'

—१३-बी, पाकेट ए सुखदेव विहार
नयी दिल्ली-११००२५

***जानवरों को प्रशिक्षण कैसे दिया जाता है?***

*किसी भी जानवर को पालतू या प्रशिक्षण देने के लिए आदमी का व्यवहार मालिक जैसा होना चाहिए, क्योंकि ऐसी स्थिति में ही ये मालिक की आज्ञा का पालन करते हैं। इस कार्य में मालिक की आवाज और ताकत महत्त्वपूर्ण कार्य निभाती है। किसी भी जानवर को पालतू जानवर बनाने के लिए सम्मान और सजा दोनों ही जरूरी हैं।*

२९ वर्षीय आत्मस्वाभिमानी व जनता की पीड़ा को समझनेवाले बलिदानी श्री देव सुमन ने ८४ दिनों के भूख हड़ताल के बाद इस दुनिया से २५ जुलाई १९४४ को जेल की काल कोठरी में प्राणांत किया ।

टिहरी रियासत में २५ मई १९१५ को जोल गांव में श्रीदेव सुमन का जन्म हुआ था । उस दौरान रियासत की जनता दोहरी गुलामी के अत्याचार से त्रस्त थी । टिहरी नरेश नये कपड़े पहनने पर भी टैक्स लगाता था । ब्रिटिश शासन से प्रतिबंधित रियासत का राजा ब्रिटिश सरकार को खुश करने के लिए जनता को निरीह और निरक्षर रहने के लिए मजबूर भी करता था । इन कठोर परिस्थितियों के बावजूद भी श्रीदेव सुमन उत्तरदायी शासन के लिए सक्रिय थे । साथ ही राष्ट्रीय आंदोलन में जूझ रहे राष्ट्रीय नेताओं—गांधी, नेहरू आदि से बराबर संपर्क कर पूर्ण हिंदुस्तान की रियासतों को लोकतांत्रिक पद्धति के लिए तैयार करने में रात दिन एक कर रहा था । २९ वर्ष की छोटी-सी उम्र में ही श्रीदेव सुमन की पैठ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के शिखर नेताओं में हो गयी थी । इसीलिए जब सुमन की मृत्यु हुई, तब गांधीजी ने कहा था, "मैं 'सुमन' को बहुत सम्मान की दृष्टि से देखता हूं । उनकी अकाल मृत्यु पर मुझको बड़ा दुःख हुआ । परमात्मा उनकी आत्मा को शांति दे ।"

# सुमन का बलिदान : देशी रियासतों के विलय का कारण बना

● भगवती प्रसाद डोभाल

*टिहरी नरेश ने श्रीदेव सुमन के शव को घर के पास होते हुए भी परिवारवालों को सौंपना तो दूर, चुपचाप भिलंगना नदी के हवाले अंधेरी बरसात की रात को किया । इस क्रूर और कायरतापूर्ण हरकत के लिए इतिहास टिहरी नरेश को माफ नहीं करेगा ।*

## अंतिम २०९ दिन जेल में

३० दिसम्बर १९४३ को सुमन को टिहरी जेल में बंद कर दिया गया और २५ जुलाई १९४४ की शाम साढ़े चार बजे उनका देहावसान हो गया। जेल के अंदर उन २०९ दिनों में उन पर क्या-क्या गुजरी, क्यों वे अनशन करने पर तुल गये, वास्तव में उनकी मृत्यु का कारण क्या था ? इन बातों पर तब तक रहस्य का पर्दा पड़ा रहा, जब तक अखिल भारतीय देशी राज्य-लोक-परिषद द्वारा नियुक्त जांच-कमेटी की रिपोर्ट सामने नहीं आयी।

श्री देव सुमन

## वे सबका सम्मान चाहते थे

सुमनजी शांति व सम्मान के साथ राज्याधिकारियों से समझौता करना चाहते थे, परंतु राज्य संचालकों के निर्णय पर उन्हें जबरन जेल में ठूंस दिया गया। वे लोग उन्हें दमन के द्वारा कुचल देना चाहते थे। अब अच्छा मौका हाथ लगा था इसके बल पर अपनी पदोन्नति के रास्ते उन्हें दिख रहे थे। इसीलिए जैसे ही श्रीदेव सुमन जेल में पहुंचे वैसे ही उनके बदन के सब कपड़े छीन लिए गये और नंगा करके आठ नंबर वार्ड में बिना किसी ओढ़ने-बिछौने के तन्हाई में बंद कर दिया गया। उन्हें उसी दिन से डराया-धमकाया जाने लगा कि तुम माफी मांगो नहीं तो इस कोठरी से जिंदे बाहर नहीं निकल सकते। सुमन ने दृढ़ता से उत्तर दिया, "अन्य राजबंदियों को दमन नीति से तुमने झुका लिया है, लेकिन मुझसे ऐसी आशा मत करो। मैं तिलभर भी अपने मार्ग से नहीं हटूंगा।" इस बात पर उन्हें क्रूर यातना दी गयी। पैंतीस किलो वजन की बेड़ियां पैरों में डाली गयीं। यह बेड़ियां आज भी टिहरी जेल में उस महान क्रांतिकारी पर किये गये अत्याचार की साक्षी हैं। खाने के लिए उन्हें भूसे और रेत से मिश्रित रोटियां दी गयीं, लेकिन सुमन ने उन्हें खाने से मना कर दिया, और कहा, "मेरे साथ मनुष्यों जैसा व्यवहार करो, इन रोटियों को जानवर भी नहीं खाएंगे।"

इस बात पर ठंडभरी रात में बाल्टियों और पिचकारियों से पानी फेंका गया, लेकिन वह अविचल रहे। वे सात दिन तक बिना खाये-पिये और बिस्तर विहीन गीले फर्शपर कड़कड़ाती ठंड में बेड़ियों से जकड़े पड़े रहे। इतना समय बीत जाने पर भी सुमन टस से मस नहीं हुए। अंततः जेल कर्मियों को थोड़ा झुकना पड़ा।

## अहिंसावादी द्वेष नहीं रखता

प्रारंभिक संघर्ष के बाद कुछ दिनों तक सुमन के साथ अन्य राजबंदियों का-सा व्यवहार किया जाता रहा। अधिकारी समझ गये कि उनसे माफी मंगवाना कठिन है। इसलिए नये पैंतरे के

मां श्रीमती तारादेवी

पत्नी श्रीमती विनय लक्ष्मी

साथ उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया । मुकदमे में राज्य से बाहर का वकील रखने की उनको इजाजत नहीं दी गयी । इसलिए स्वयं श्रीदेव सुमन ने अपने मुकदमे की पैरवी की । उन्होंने कहा—

"मैं इस अभियोग को कतई झूठा, बनावटी और बदले की भावना से चलाया गया मानता हूं । मेरे विरुद्ध जो गवाह पेश किये गये हैं, वे सरकारी कर्मचारी हैं और बनावटी हैं । शेष पुलिस के आदमी हैं । मैंने समय-समय पर जो लेख लिखे हैं, उनमें मैंने राज्य की वैद्य आलोचना की है और मेरी भावना हमेशा सुधार की रही है । ... मैं जहां अपने भारत देश के लिए पूर्ण स्वाधीनता के ध्येय में विश्वास करता हूं, वहां टिहरी राज्य में मेरा वह प्रजामंडल का उद्देश्य वैद्य व शांतिपूर्ण उपायों से श्रीमहाराज की छत्र-छाया में उत्तरदायी शासन प्राप्त करना और सेवा के साधन द्वारा राज्य की सामाजिक, आर्थिक तथा सब प्रकार की उन्नति करना है । इसी ध्येय को लेकर मैं शुरू से ही प्रयत्नशील हूं । मैं सत्य और अहिंसा के सिद्धांत पर विश्वास करता हूं । इस सिद्धांत को माननेवाला कभी किसी के प्रति घृणा व द्वेष का भाव नहीं रख सकता ।

..."यदि यह बयान देकर मैं आपको तथा श्री महाराज को इस झूठे अभियोग व दोष से अपने को निर्दोष होने का विश्वास न करा सका, तो यहीं अपना जीवन देकर मैं अपने देश, उद्देश्य, सिद्धांत व संस्था की रक्षा करूंगा । मैं प्राण रहते इस प्रकार इस राज्य के सार्वजनिक जीवन का अंत न होने दूंगा ।"

## प्राणांत जेल में

और इस प्रकार जेल में सार्वजनिक जीवन की रक्षा के लिए ८४ दिन तक जेल की काल-कोठरी में उपवास करते-करते सुमन ने प्राणांत कर दिये । सुमन को कृत्रिम उपायों से भोजन देने की कोशिश की गयी, पर उसमें जेल कर्मचारी सफल नहीं हो सके ।
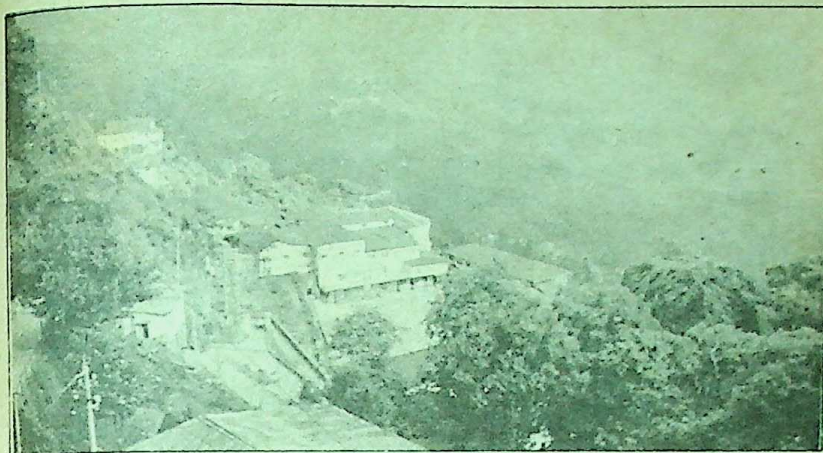
इन पहाड़ियों को जगाया सुमन ने

## पारिवारिक झलक

*पिता के आकस्मिक देहावसान से परिवार का सारा भार माताजी पर आ पड़ा था । सुमन उस समय केवल तीन वर्ष के थे, दो बड़े भाई कमलनयन सात वर्ष के, परशुराम पांच वर्ष के और नन्हीं बहन गायत्री सिर्फ एक वर्ष की ।*

*इस विकट परिस्थिति में मां श्रीमती तारादेवी के अथाह धैर्य ने सारे परिवार को उस सीढ़ी तक पहुंचाया जहां से देश सेवा की ललक हिलोरे लेती है । अल्प शिक्षित पत्नी श्रीमती विनय लक्ष्मी को शिक्षित करवाने का काम शादी के बाद सुमन ने किया ।*

श्रीदेव सुमन की मृत्यु की सूचना को सार्वजनिक करने में रियासत को बहुत दिन लगे । ब्रिटिश भारत की लाहौर जेल में स्वर्गवास होनेवाले यतीन्द्र नाथ दास के शव तक को उनके घर कलकत्ते भिजवाया गया, जहां शव का दाह-संस्कार किया गया । लेकिन टिहरी नरेश ने श्रीदेव सुमन के शव को घर के पास होते हुए भी परिवारवालों को सौंपना तो दूर, चुपचाप भिलंगना नदी के हवाले अंधेरी वरसात की रात को एक कंबल में लपेटकर किया । इस क्रूर और कायरतापूर्ण हरकत के लिए इतिहास टिहरी नरेश को माफ नहीं करेगा ।

सुमन का यह 'बलिदान' आजाद भारत में देशी रियासतों के विलय का प्रमुख स्रोत बना । इस महान स्वतंत्रता सेनानी का निर्वाण भारत की युवा पीढ़ी को प्रेरणा देता है ।

टिहरी की ऐतिहासिक भिलंगना नदी ने दो महापुरुषों को समेटा है । स्वामी रामतीर्थ ने स्वेच्छा से इसी में जल-समाधि ली थी । कुछ वर्षों बाद श्रीदेव सुमन को जबरन इस नदी में जल-समाधि दी गयी । ●
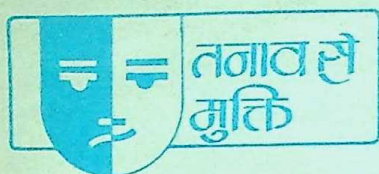
● डॉ. सतीश मलिक

## पति के रूप में नहीं

**स. कानपुर : बीस वर्ष की विज्ञान की स्नातिका हूं। एक मित्र जिसके व्यक्तित्व को उभारने में, (ग्रंथियों को सुलझाने में) समर्थ हुई। अब मुझसे विवाह करना चाहता है। परंतु वह देखने में व समाज में इस योग्य नहीं कि मैं उसे पति के रूप में स्वीकार करूं। परंतु गहराई में सोचने से समस्याओं में उलझ जाती हूं। खास तौर पर परीक्षा के समय एक-एक समस्या सामने दिखती है। सलाह दें।**

आपको विवाह कभी भी भावावेश में आकर नहीं करना चाहिए। आपने अपने मित्र के व्यक्तित्व को उभारने व उसकी कई गुत्थियों को सुलझाने में मदद की— इसके लिए वह आपका आभारी है, कोई किसी भी भावना के साथ लैंगिक आकर्षण की भावना जुड़ सकती है।— ऐसा आप मानकर चलें, इसलिए ऐसा हो रहा है, परंतु आपको विवाह के विषय में संभलकर चलना चाहिए, क्योंकि आप यह निर्णय सारी उम्र के लिए ले रही हैं। किसी भी महिला के मन में एक पुरुष का रूप होता है। क्या वह यह आदमी पूरा कर सकता है ? ऐसा आप अपने से पूछें। पुरुष-स्त्री के ऊपर अपना स्वामित्व दिखा सके, ऐसा भी प्रायः स्त्री की इच्छा होती है। आपके केस में उसका व्यक्तित्व का स्तर आपने उभारा है। आप उसे तर्क द्वारा समझाकर कि पुरुष स्त्री में केवल प्रेमी-प्रमिका या पति-पत्नी का ही रिश्ता न होकर कई तरह के और रिश्ते भी हो सकते हैं। इसमें दिल दुखाने की कोई बात नहीं। दिल तब दुखेगा जब आप जबरन अपने आपको किसी पर तरस खाकर शादी कर लेंगी और बाद में उसको चलाना कठिन हो जाएगा।

## अधिक लगाव

**लता, उज्जैन : १८ वर्ष की दसवीं की छात्रा हूं। यूं तो कक्षा में कई छात्राएं हैं, लेकिन मुझे एक छात्रा से इतना अत्यधिक लगाव है कि मन करता है कि उसी के सामने बैठी रहूं। परंतु वह मुझसे उतनी ही दूर भागती है। मेरे पापा नहीं हैं तथा मैं अपनी मां, चाचा-चाची के साथ रहती हूं। घर में काम-काज करने के बावजूद डांट खाती हूं, यहां तक कि टी. वी. पर भी ताला लगाना पड़ता है। इस लड़की को लेकर नींद तक नहीं आती। क्या करूं ?**

इस आयु में प्रायः ऐसे लगाव हो जाते हैं। परंतु हर व्यक्ति अपनी पहचान नहीं खोना चाहता है। जब आप उसके नजदीक जाती हैं तब उसे इस बात का डर हो जाता है। हर कोई दूसरे के बहुत निकट आने पर ऐसा ही महसूस करता है। परंतु आपको अपनी पारिवारिक समस्याओं को लेकर भी प्रेम व सुरक्षा की भावना की अत्यधिक आवश्यकता है। आपको चाहिए कि लड़कियों का समूह बना लें— इस प्रकार से एक के पीछे भी नहीं पड़ेंगी व वह लड़की भी आपसे नहीं कतराएगी। आपके पिता के न रहने से आपकी माताजी भी जल्दी झल्ला जाती हैं व परेशान हो जाती हैं, इसलिए शायद डांटती भी रहती हैं। चाचा का घर होने से वह ऐसा व्यवहार करते हैं। परंतु यदि आप पढ़-लिखकर अपनी मां का सहारा बन जाओगी

तो सभी का आपकी ओर दृष्टिकोण बदल जाएगा ।

### अजीब दर्द

**शैलेंद्र सिंह, झुंझनूं (राजस्थान) : मुझे तीन वर्ष से दिल में दर्द है— पहले नाभि के नीचे होता था— दवा लेने से ठीक हो गया । बायीं ओर शरीर में दर्द बना रहता है । कमर में दोनों कंधों के नीचे कभी जलन तो कभी दर्द । पूरा शरीर गरम रहता है । घबराहट व बेचैनी बनी रहती है । अब छह माह से पैरों में भी दर्द है । शौच के समय सफेद-सा आता है । आलस्य बना रहता है । गंदे विचार आने पर दिमाग पागल-सा हो जाता है । छह माह से पेट का तेजाब कम करने तथा गैस कम करने की दवा खा रहा हूं, कोई लाभ नहीं । कृपया कुछ सुझाव दें ।**

यूं ही बिना डॉक्टरी जांच अथवा मल-मूत्र एवं रक्त जांच किये बिना रोग का इलाज नहीं कराना चाहिए । आपको पेट की तेजाब व गैस कम करनेवाली दवा से कभी लाभ नहीं होगा । कृपया वह दवा बंद कर दें । आपके रोग के लक्षण मानसिक तनाव व उदासीनता से उत्पन्न तन के लक्षणों में उभरकर आ गये हैं । इसलिए मनोचिकित्सा द्वारा इलाज कराएं । राजस्थान के बड़े अस्पतालों में इसकी व्यवस्था है । वैसे दिल्ली आकर भी इसका निदान करा सकते हैं ।

### उत्तेजना अनुभव करना

**अ. ब. स., पानीपत : १८ वर्ष का बी. काम. का छात्र हूं । किसी व्यक्ति से बातचीत करते समय उत्तेजना अनुभव करता हूं तथा फिर घबरा जाता हूं । मित्र के घर तक जाने में या परिचित के मिलने पर यह बात ध्यान में आ जाती है कि इससे अब क्या बात करूं ? संकोच करने लगा हूं । यह बात सफलता में बाधा बन गयी है ।**

आप वास्तव में उस समय ज्यादा संवेदनशील हो जाते हैं— आप ऐसा मानसिक तनाव की स्थिति में करते हैं । इसका इलाज यह नहीं कि मेलजोल से कतराया जाए । अपितु यह है कि आप अपनी समस्या को समझें । आपमें सामाजिकता की कमी है, इसे सीखा जा सकता है ।जैसे और लोग सीखते हैं । सबसे पहले अपने मन के तनाव को कम करें,विश्राम करना सीखें । किसी ऐसे व्यक्ति को बात करने के लिए चुनें जो विश्वसनीय व समझदार हो साथ में आपका मजाक आदि न बनाए । यदि आप पहल नहीं करते तो दूसरे व्यक्ति को शुरू करने दें । सहजता पूर्वक बातचीत करने में योगदान करें । बातचीत करना भी एक कला है । इसे आप सीख सकते हैं । भागिए मत, मेलजोल बढ़ाइए । चाहे तो शुरू में हल्की गपशप में ही भाग लें । धीरे-धीरे आप सब कुछ सीख जाएंगे ।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आय, पद, आयु एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें ।

—संपादक

*१९वीं सदी में हेनरी बेट्स ने अमेजान के जंगलों में अपनी आधे घंटे की पदयात्रा में तितलियों की ७०० प्रजातियां खोजीं ।*

**हमन है इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या**
**रहे आजाद या जंग से, हमन दुनिया से यारी क्या**
**जो पिछड़े है पियारे से, भटकते दरबदर फिरते**
**हमारा यार है हममें, हमन को इंतजारी क्या**

और, यह भी सच है कि कबीर ने किसी का इंतजार नहीं किया... और न किसी की परवाह । वह एक अलमस्त आशिक की तरह अपने यार का हो रहा, उसको न फिक्र थी अल्लाह की और न ईश्वर की, जिसको मुल्ला अजान देकर उठाया करता था, और न उस ईश्वर की जो पुजारी के घंटे बजाने पर ही जागता था । व्यक्ति और ईश्वर के रिश्ते की बुनियाद भीतर ही होती है, जिसको किसी आडंबर की जरूरत ही नहीं होती है । कबीर की वाणी वह लता है जो योग की जमीन पर भक्ति के बीज पड़ने से अंकुरित हुई है । अगर हम कबीर के समय के भारत का अवलोकन करें तो साफ दिखायी देता है कि उन दिनों उत्तर के हठयोगियों और दक्षिण के भक्तों में मौलिक अंतर था । एक टूट जाता था पर झुकता नहीं था । दूसरा झुक जाता था परंतु टूटता नहीं था । एक के लिए समाज की ऊंच-नीच की भावना मजाक और आक्रमण का विषय थी तो दूसरे के लिए मर्यादा और स्फूर्ति का, एक को अपने ज्ञान पर गर्व था, तो दूसरे को अपने अज्ञान पर भरोसा था ।

लेकिन साधारण जनता पर इन दोनों से दो प्रकार की प्रतिक्रियाएं हुईं । एक ने श्रद्धालु गृहस्थ के मन में शंका का भाव पैदा कर दिया । वह सोचने लगा कि माया विकराल है, इससे छुटकारा पाना कठिन है,सिद्धि का मार्ग कांटों से भरा हुआ है । दूसरे ने उसे लापरवाह बना दिया, गलती से जिसने एक बार भी हरि का नाम ले लिया, उसे और कुछ करने की जरूरत नहीं । विष्णु का तिलक अगर एक बार माथे चढ़ गया तो बैकुंठ का दरवाजा खुला है ।

लेकिन कबीर इन सबसे अलग थे, वह संसार में भटकते हुए जीवों को देखकर करुणा के आंसू बहाना पसंद नहीं करते थे । वरन वे उन्हें और भी कठोर होकर फटकार लगाते थे । संसार में भरमने वालों पर दया कैसी, मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर होनेवालों को आराम कहां, 'करम की रेख पर मेख न मार सका, तो वह संत कैसा ।' कबीर में यह अक्खड़ता योगियों तथा मुसिलम परिवेश में पलने-बढ़ने के कारण आयी थी ।

कहने को तो कबीर का लालन-पालन जुलाहा परिवार में हुआ था । इसलिए उनके मत का महत्त्वपूर्ण अंश इस जाति के परंपरागत

# छत्तीसगढ़ के कबीर पंथी

● एस. अहमद

विश्वासों से भरा हुआ रहा हो, तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं होनी चाहिए ।

जिस जुलाहा परिवार ने कबीर का पालन-पोषण किया था, वह कहने को मुसलिम था, लेकिन कबीर की वाणियों से जान पड़ता है कि इस जाति ने एकाध पुश्त पहले ही इस्लाम धर्म को स्वीकार किया होगा । क्योंकि तब तक वह जाति अपने पूर्व जातिगत संस्कारों से मुक्त नहीं हो पायी थी ।

एक गौर तलब बात यह भी रही है कि कबीर ने अपने आपको जुलाहा तो कई बार कहा है, लेकिन न तो उन्होंने अपने आपको मुसलमान कहा और न ही हिंदू ।

वह सिर से पैर तलक मस्त-मौला थे । वे प्रेम मतवाले थे । मगर अपने को उन दीवानों में नहीं गिनते थे, जो माशूक (दुनियावी) के लिए सिर पर कफन बांधे फिरते हैं । कबीर को यह रंग सूफियों से मिला था ।

## उल्टे रास्ते के राही

कबीर का रास्ता उल्टा था, और उन्हें सुयोग भी अच्छा मिला । जितने प्रकार के संस्कार पड़ने के रास्ते थे, वे सब उन पर बंद थे । वे मुसलमान होकर भी मुसलमान नहीं थे । हिंदू होकर भी वे हिंदू नहीं थे, साधू होकर भी साधू नहीं थे । वे सबसे अलग थे और रहे भी ।

और जो कबीर जीवनभर अपनी अलख दूसरों से अलग जगाता रहा, न अल्लाह का होकर रहा और न ईश्वर का . . . ,

**आसमान का आसरा छोड़ प्यारे**
**उलटि देख घट अपनो जी**
**तुम अपने आप तहकीक करो**
**तुम छोड़ो मन की कल्पना जी**

वह जीवन पर्यंत पंडित और मुल्लाओं को लताड़ लगाते रहे । अपनी जमीन से जुड़े रहकर आम आदमी की बात उसकी भाषा में करते रहे । वह व्यक्ति को संपत्ति की तरह बांटने के विरोधी थे । उनका मजहब, उनका ईमान इनसान था, न कि अल्लाह और ईश्वर । और ऐसे कबीर को उनके शिष्यों ने उनकी मृत्यु के बाद अपनी सुविधा के अनुसार खेमों और मठों में बांट लिया है । हर एक के पास अपने-अपने साक्ष्य हैं प्रमाणिकता के . . . लेकिन वह कबीर तो अपनी जिंदगी में न तो हिंदू थे और न मुसलमान ।

## पंथ के विरोधी

कुछ विद्वानों का मत है कि कबीर ने अपने जीवन काल में अपने मत को आगे बढ़ाने के लिए किसी भी प्रकार के मठ या पंथ की
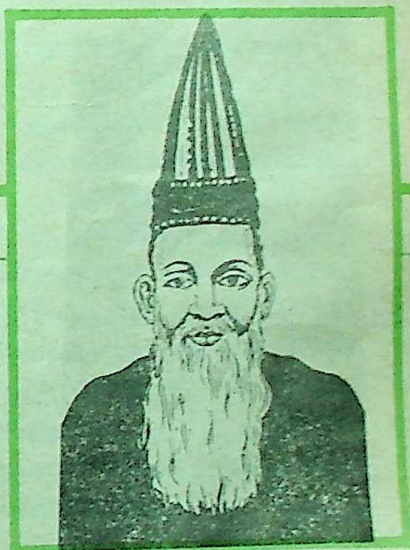
स्थापना नहीं की थी । तो फिर कबीर पंथ का प्रवर्तक कौन था, क्योंकि कबीर तो स्वयं ही मठों और पंथों की दूषित मनोवृत्ति पर लगातार कटु प्रहार करते रहे हैं । और वह ही अपने नाम और मत पर एक पंथ का निर्माण करेंगे—यह अपने आप में विरोधाभाषी तथ्य है ।

लेकिन आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार कबीर साहब ने भारतीय ब्रह्मणवाद, सूफियों के भावात्मक रहस्यवाद तथा हठवादियों के साधनात्मक रहस्यवाद और वैष्णवों के अहिन्यावाद का मिलाप करके अपना पंथ खड़ा किया था । लेकिन यह कोई अंतिम सत्य नहीं है । क्योंकि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को पंथ विरोधी बताया है ।

बहरहाल, सत्य कुछ भी हो लेकिन आज देश में कबीर साहब के नाम पर २९ मठाधीश गद्दी-नशीन हैं । और कबीर साहब के बयान को अपने-अपने ढंग से प्रचारित करने में लगे हुए हैं ।

जहां तक छत्तीसगढ़ के कबीर पंथियों का सवाल है इस पंथ की स्थापना संवत १५७० के आसपास मानी जाती है । जब कबीर साहब ने शिष्य धर्मदास के पुत्र चूरामनि नाम साहब (कहा जाता है कि स्वयं कबीर साहब चूरामनिनाम साहब को पंथाचार्य के पद पर आसीन किया था) बांधवगढ़ छोड़कर कोरबा पहुंचे । जहां का तोमर वंशी राजा उनका शिष्य बन गया । वहां से वे कुदमाल आये । जहां उनके द्वारा एक कोढ़ग्रस्त सेठ मोती साहू का उपचार हो गया और उसने आपके प्रताप से प्रभावित होकर अपनी सारी संपत्ति तथा अपनी दोनों कन्याओं को उनके चरणों में अर्पित कर दिया ।

एक उल्लेखनीय तथ्य यह भी है जैसा कि छत्तीसगढ़ के कबीर पंथ के प्रचारक कहते कि स्वयं कबीर साहब ने अपने शिष्य धर्मदास को उनके बयालीस वंशों तक पंथाचार्य की गद्दी चलाने का आशीर्वाद दिया था । और वह भी बांधवगढ़ आकर, जबकि एतिहासिक क्रम में जो तथ्य मिलते हैं, उसके अनुसार कबीर कभी भी बांधवगढ़ आये ही नहीं ।

और उसी आर्शीवाद को याद करके चूरामनिनाम साहब ने वंश परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए दोनों कन्याओं को स्वीकार कर लिया । और इस तरह ४२ वंशों तक चलनेवाली कबीर पंथ की गद्दी की स्थापना हुई ।

छत्तीसगढ़ के कबीर पंथियों के अनुसार छत्तीसगढ़ ही कबीर पंथ का मूल केंद्र है, जिसके प्रवर्तक धर्मदास साहब माने जाते हैं । मध्य प्रदेश के रीवां जिले के अंतर्गत आनेवाले बांधवगढ़ में धर्मदास नामक एक वैष्णव शालिगराम के उपासक थे । उनका साक्षात्कार संवत १५१९ में मथुरा में संत कबीर दास से हुआ कबीर के मूर्ति-पूजन के संबंध में विरोधी सिद्धांत को सुनकर धर्मदास काफी प्रभावित हुए । और कबीर साहब बांधवगढ़ लाये, जहां उनका और कबीर साहब का लंबा समागम हुआ । और धर्मदास ने कबीर के उपदेशों को ग्रहण कर लिया और पंथी शाखा का संचालन करने का आर्शीवाद प्राप्त कर लिया ।

धर्मदास के पुत्र नारायण दास ने कबीर के विचारों का विरोध किया फलस्वरूप धर्मदास ने पुत्र से नाता तोड़ लिया । कहा जाता है कि

कबीर दास ने धर्मदास को आर्शीवाद दिया था कि तुम्हारे एक पुत्र और होगा । और इसके बाद ही धर्मदास की पत्नी अमिनमाता ने संवत १५३८ में मुक्तामन नाम (चूरामन नाम) को जन्म दिया ।

छत्तीसगढ़ के कबीर पंथी यह भी कहते हैं कि धर्मदास को कबीर साहब का आर्शीवाद था कि तुम्हारे विंद वंश के रूप में बयालीस वंश प्रकट होंगे, जो पंथ का संचालन करेंगे । और स्वयं कबीर साहब ने धर्मदास की सारी शंकाओं का निवारण करते हुए संवत १५४० में उनको पंथ की गुरुआई का भार सौंपा—

**धर्मदास सुनियो चितलाई**
**तुम जनि शंका मानुहु आई**
**हमारे पंथ चलाओ जाई**
**वंश बयालीस अटल अधिमाई**
**वंश बयालीस अंश हमारा**
**साई समरथ वचन पुकारा**
**वंश बयालीस गुरुआई होना**
**इतना वर हम तुमको दीना**

*—कबीर वाणी*

इतना जानकर धर्मदास ने जिज्ञासावश चूरामनिनाम साहब के बयालीस वंशों के नाम जानने की इच्छा कबीर साहब को जतलाई, तो उन्होंने बयालीस वंशों के नामों का उल्लेख इस प्रकार किया —

१. सुदर्शन नाम, २. कुलपति नाम, ३. प्रमोध गुरु, ४. केवल नाम, ५. अमोल नाम, ६. सुरति सनेही नाम, ७. हक्कनाम, ८. पाक नाम ९. प्रगट नाम, १०. धीरज नाम, ११. उग्रनाम, १२. दयानाम, १३ ग्रंधमुनि नाम, १४. प्रकाश मुनि नाम, १५. उदित मुनि नाम, १६. मुकुंद मुनि नाम, १७. अर्ध नाम, १८. उदय नाम, १९. ज्ञान नाम, २०. हंसमणि नाम, २१. सुकृत नाम, २२. अग्रमणि नाम, २३. रस नाम, २४. गंगमणि नाम, २५. पारस नाम, २६. जागृत नाम, २७. भृंगमणि नाम, २८. अकह नाम, २९. कंठमणि नाम, ३०. संतोषमणि नाम, ३१. चात्रिक नाम, ३२. आदि नाम, ३३.नेह नाम, ३४.अज्र नाम, ३५. महा नाम, ३६. निज नाम, ३७. साहेब नाम, ३८. उदय नाम, ३९. करुणा नाम, ४०. अर्धव नाम, ४१. दीर्घ नाम, ४२. महामणि नाम ।

और इस तरह कबीर साहब ने धर्मदास के घर में अवतरित चूरामनिनाम साहब की परंपरा में ४२ वंशों का अखंड और अटल राजरू स्थापित किया था । कबीर पंथियों का ऐसा विश्वास है कि सत्य पुरुष के नौतम अंश (धर्मदास के वंश) से ही संसार के समस्त कष्टों की मुक्ति होगी ।

## काशी का कबीर चौरा

यह तो हुई छत्तीसगढ़ के कबीर पंथियों की अपनी बात, लेकिन कबीर चौरा (काशी) वालों का कहना है कि कबीर दास कभी छत्तीसगढ़ या बांधीगढ़ गये ही नहीं, और धर्मदास उनके शिष्य थे ही नहीं, लेकिन नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित कबीर ग्रंथावली में धर्मदास को कबीर साहब का शिष्य बताया गया है । जहां तक कबीर के बांधीगढ़ आने और धर्मदास के ४२ वंशों तक पंथ की गद्दी सौंपने का सवाल है, इसमें विपरीत धारणाएं हो सकती हैं ।

लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण और गौरतलब बात

यह है कि कबीर को एक मुसलमान जुलाहा परिवार ने पाला था, उनका बचपन से लेकर जवान होने तक का समय उसी परिवेश के बीच बीता, वहीं उनकी शादी हुई (इसमें भी दो मत है) और उनके यहां एक पुत्र और पुत्री का जन्म भी हुआ। लेकिन मुसलमानों के बीच कबीर की कोई परंपरा (मज या गद्दी) नहीं चली। हां, एक मुसलमान शिष्य बिजली खां का उल्लेख जरूर मिलता है। लेकिन परंपरा जैसी कोई भी स्थिति नहीं है। जबकि कबीर के हिंदू अनुयाइयों ने तो उनके नाम पर देश में ७० मठ बना रखे हैं (संख्या अधिक भी हो सकती है) जिसमें अकेले म. प्र. के छत्तीसगढ़ इलाके में ही पंद्रह हैं। इसके अतिरिक्त विदेशों में फिजी, ट्रीनीडाड—अमरीका, अफरीका, मारीशस, फिलीपाइंस द्वीप, नेपाल में भी कबीर पंथ के मठ हैं।

वर्तमान में छत्तीसगढ़ में कबीर पंथ की गुरुआई परंपरा के आचार्य पंडित श्री १०८ श्री ग्रंधमुनि नाम साहब १३वीं पीढ़ी के गुरु हैं। छत्तीसगढ़ में पंथ की प्रमुख गद्दी दामा खेड़ा ग्राम में है, जहां प्रति वर्ष तीन दिवसीय संत समागम समारोह होता है।

कबीर ने जड़ समाज को चेतन करने के लिए जिस चेतना की जोत को जलाया था। आज आवश्यकता उस जोत को और तेज करने की है, इसके लिए कबीर पंथियों को एक जुट होकर आगे आना चाहिए।

—एच-१ शांतिनगर, रायपुर-४९२००१

*बिल्ली के समान दिखनेवाले जाति के जानवर जिनमें प्रमुखतः शेर, चीता, बाघ और जंगली बिल्ली हैं, ये सभी जानवर स्वतंत्र रूप से शिकार करते हैं। ये जानवर शिकार झुंड में नहीं करते। केवल मादा ही अपने बच्चों को शिकार करने के तरीके सिखाने के लिए उनके साथ शिकार करती है। ये सभी जानवर अपने शिकार पर आक्रमण पत्थरों की ऊंचाई से पेड़ों की टहनियों पर चढ़कर करते हैं। शेर शिकार के पीछे दौड़कर घातक हमला करता है। लेकिन बाघ और चीता ही ऐसे जानवर हैं जो शिकार का लंबी दूरी तक पीछा करते हैं। ये दोनों ही जानवर एक घंटे में १०० किलोमीटर तक की दूरी तय करते हैं।*

*बिल्ली भी इसी जाति से संबंधित है, इसलिए यह भी स्वतंत्र रूप से शिकार पर आक्रमण करती है। लेकिन पालतू बिल्ली मनुष्य द्वारा दिये गये भोजन को सहजता से इसलिए खा लेती है, क्योंकि वहां उस क्षेत्र पर अपना अधिकार समझती है। बिल्ली आदमी के साथ रह सकती है, लेकिन किसी अनजान बिल्ली को वह नहीं अपनाती। क्योंकि इस जाति के जानवर संगठन में नहीं रहते। ये स्वतंत्र रूप से शिकार करते हैं और इनका कोई नेता या उपनेता नहीं होता। इसलिए ये अपने मालिक के स्वामिभक्त नहीं होते। वहीं दूसरी ओर जंगली कुत्ते संगठन में ही शिकार करते हैं। इन जंगली कुत्तों का नेता भी होता है जो शिकार के दौरान उन्हें आक्रमण के लिए निर्देश देता है और अन्य कुत्ते उसके आदेश का पालन करते हैं, इसलिए कुत्ते आज्ञाकारी होते हैं।*

# मां का दूध मिश्रित सोमरस है !

● डॉ. युगेश्वर

आज । इतने दिनों बाद । मां की याद आयी । दैनिक धंधों की व्यस्तता में मां को भूल गया था । याद आने का कारण भी । शायद गलत हो । मेरा अहंकार । हां, अहंकार । मां के साथ अहंकार ? अहंकार ही तो है । जो मां को याद कर रहा है । किंतु इसमें बुराई क्या है ? अहं की । मैं की चेतना ही तो मुझे मां से अलग करती है । वरना मैं तो मां ही था । अद्वैत मां ।

सोचता हूं । यह मैं न होता तो । मां होती क्या ? किंतु उत्तर सीधा है । मां न होती तो । मैं होता क्या ? मैं कबीर स्वामी नहीं हूं । संत कबीर होता, तो कहता—पहले पूत । पाछे भइ माई । फिर भी इस सीधे उत्तर के लिए मां को याद नहीं कर रहा हूं । मेरे अस्तित्व ने एक स्त्री को मां बनाया है । मेरे अभाव में स्त्री होती । प्रेमिका, पत्नी, गृहिणी आदि जाने क्या-क्या होती ? सब होती । किंतु मां तो वह मेरे कारण है।

मेरे अभाव में स्त्री की आंखों में पानी होता । माथे पर टेसू-सा फूला सिंदूर होता । मुख पर दर्पण का उजास होता । किंतु मां का आंचल का दूध तो मैं हूं । वह धवल दूध मेरा है । बस मेरा । मुझे अस्तित्व से हटा दीजिए । आंचल का दूध सूख जाएगा । रह जाएगी केवल आंखों की बरसात । दुखती-सूखती मृदु मांसल देह । यह देह भी जेठ का ढेला बन जाती । बसंत के बाद । भयानक तपनवाला ग्रीष्म इसीलिए तो आता है । किंतु मैंने मां को जेठ की तपन और दुर्दिन उर्फ बरसात की अंधेरी कीचड़ से बचा लिया । अबसंत में भी बगिया को मंहकाया । चांद का पूर्ण मुख और उषा के आलोक में सूरजमुखी का पौधा दिया । उर्वरा को सूखने से बचा लिया । हल्दी लगा पीला मुख भ्रमर बाल को चूमकर आरक्त हो उठा ।
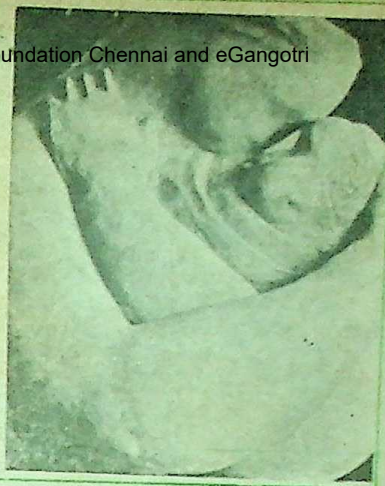
मैंने ही मां को श्रद्धा बनाया । नारी तुम केवल श्रद्धा हो । यह मां नारी ही श्रद्धा है । मेरे अभाव में पिता मनु (मन) के लिए श्रद्धा इड़ा थी । इड़ा अर्थात बुद्धि-क्रीड़ा थी । कामायनी थी । मेरे आते ही वह संपूर्ण ममत्व से भर गयी । मेरे प्रति ही नहीं, संपूर्ण सृष्टि के जीव-जंतु के प्रति ममता । यही ममता माता

है । यह मम मां का नहीं । मेरा था । पहली बार किसी की परता ममता कहलायी ।

कौशल्या पहले भी थीं । अनेक कुशलताओं ने उन्हें कौशल्या बनाया था । किंतु मां कौशल्या में उषा-सा उगकर मैंने उसे दिशा दी । इसके पहले शायद, दिशा विभाजन न था । दिशा भी अखंड आकाश-जैसी अविभाजित थी । किंतु मेरे उदित होते ही आकाश विभाजित होकर प्राची के रूप में जाना जाने लगा । इसीलिए प्राची वंद्य है—**बंदौ कौशल्या दिसि प्राची** । दिशा विभाजन के साथ ही मैंने काल-विभाजन किया ।

माता कुमाता नहीं हो सकती । किंतु पुत्र सपूत भी हो सकता है । कपूत भी । सपूत माता को उजागर करता है । अखंड, अबंध रखता है । कपूत की मां बंध जाएगी । उसके टुकड़े-चिथड़े हो जाएंगे । कपूत मां को कुएं में धकेल सकता है । सपूत कुएं को पाटकर उस पर पट्टी और पत्तन बसाता है । यों कि मां की समृद्धि का आधार भी मैं ही हूं । वसु तो मैं ही हूं । इसे धारण करने के कारण मां बसुधा कहलायी ।

## चंपई व्यक्तित्व

निश्चिय ही मां के जीवन में पहले भी रस था । सपने भी थे । किंतु मैंने उसे नया रस दिया। वा त स्ल्य रस । वात्सल्य का अमृत घट । किंतु मां की महानता देखिए । उसने संपूर्ण अमृत घट मेरे मुंह में उड़ेल दिया । **त्वमेव वस्तु गोविंद तुभ्यमेव समर्पयामि** (हे प्रभु, यह संपूर्ण अमृत तुम्हारा है । तुम्हें ही सौंपता हूं) । इस अमृत घट से भूख मेरी मिटी । और तृप्ति हुई मां की । देव निर्मित यह घट कभी रीता नहीं हुआ । मेरे ओठ सूखें उसके पहले ही यह झरने लगता । आज सोचता हूं । मैं तो और किसी चीज से जी लेता । किंतु मां का सुख । मां के आंनद का क्या होता ?

मेरा मृदु मुख । कमल की गंध ! रूप, रस, एवं मृदुता से भरा पराग निर्मित मुख । मां के युवा मन की स्वच्छंद कल्पना, कौतुक गृह के सुहावने सपने, भाव प्रवण हृदय । मंदिर के देवता यहीं साकार हुए थे । मेरा मुख निहारते-निहारते मां का स्वर्ण घट पुनः-पुनः भर जाता । संपूर्ण व्यक्तित्व में गुलकंद लिपट जाता । गुलाब जामुन । बसंत के जिस वन में कोयल ने पिउ-पिउ किया था । अमराई सुरभित हुई थी । वह रसाल । रस से भर जाता । नारी व्यक्तित्व मधूक की तीखी मिठास और गंधरस से चंपई हो गया । तब आंखों में पानी । शायद आते । आते भी तो मैं उन्हें अपनी किसलय हथेलियों से पोंछ देता ।

दांपत्य का नीला आकाश मेरे उदय से पूर्णिमा की अंजोरिया से भर गया । एकटक निहारती तुम्हारी पुतलियां डिठौना बनतीं । मेरे ललाट का एक काला बिंदु तुम्हारी आंखों की सुरमई को और गहरा देता ।

देवि, तुम्हें पता है । प्रत्येक नारी के पास एक अतल सूनी गहराई है । अनंत का विस्तार है । कोई पुरुष । चाहे कितना ही उदार । वीर । बहादुर या कामाग्रज हो । इस गहराई । इस विस्तार को नहीं भर सकता । भरना तो दूर । इसे पाना भी कठिन है । किंतु मेरे लिए यह कितना सहज था ।

## लोक की लोरी

मेरी एक किलकारी में अनंत संगीत की

ध्वनि थी । मेरे रोते ही मां विष्णुपद छोड़ देती । मेरे आंसुओं को आंचल से पोंछकर उसमें केवड़ा जल की तरलता और इत्र की गंध पाती । उसका संपूर्ण व्यक्तित्व केसर-कस्तूरी-सा सुगंधित हो जाता । अरे, यही तो मेरा हिरण्या है । मैंने ही मां के अनंत को आकार दिया । विराट् व्यष्टि गौरव को प्राप्त हुआ । निरभ्र विस्तृत आकाश को बादल के एक टुकड़े ने रेखांकित किया । मेरा रोम-रोम तुम्हारे शून्य को सृजित किये हैं ।

फिर कहता हूं । मैं न होता तो तुम सूखी नदी-सी उपेक्षित हो जाती । धन्यवाद दो । इस भगीरथ को । जो हिमालय और सागर का सेतु बना ।

कितने अवरोधों के बाद गंगा समतल हुई थी । पिता के कमंडल से निकलकर उसे शिव-जटा में उलझना पड़ा । तुम वहीं रह जातीं । सिर चढ़ने यह सुख कभी न कभी तुम्हें निराश करता । क्योंकि स्त्री-सुख सिर चढ़ना नहीं । पावन बनने बनाने में है । पुत्रों-परिजनों का उद्धार करने में है । ढरक्कर धारा बनने में है । तटों को अन्न-जल से भर देने में है । कलकल-छलछल की वैदिक गायत्री को लोक की लोरी बना देने में है ।

संगम का अंत खारेपन में है । किंतु यह खारापन लोकयात्रा की लंबी मिठास के संदर्भ में अत्यंत तुच्छ है ।

मां । मैं तुम्हारी यश पताका का दंड हूं । वंश । तुम इसी वंश को आधार बनाकर लहराओ । निरवधि काल के असीम में लहराओ । तुम्हें लहराकर मैं सार्थक होता हूं । मातृ देवो भव की ध्वनि ध्वनित हो ।

स्त्री संतान प्राप्त कर । उसे पालकर सार्थक होती है । संतान नारी सार्थकता की अभिव्यक्ति है । इसीलिए संतान माता की सनातन अस्ति है ।

संतान जितना ही अपने को सार्थक एवं सक्रिय करती है मातृ-मूर्ति पूज्य होती है । यही मातृ देवो भव है । संतान स्वयं मातृ विग्रह है । मातृ यज्ञ का पवित्र चमस । माता का दुग्ध मिश्रित सोम रस है । उसके कर्म ही नैवेद्य । सजी थाली की दीप्त आरती हैं ।

मातृ रूपेण संस्थिता प्रत्येक नारी प्रतिमा । धन्य है । कपूत को भी असीसती है । अपने आशीषवल से कपूत को सपूत बनने की आशा से कभी विरक्त नहीं होती है । कामायनी से दाक्षायणी बनती है । ! !

**—काशी विद्यापीठ, वाराणसी-२**

### *शेर और चीता शक्तिशाली कौन ?*

*शेर और चीते में अधिक शक्तिशाली कौन-सा जीव है । यह प्रश्न आसान नहीं है । शेर शारीरिक बनावट और ताकत में चीते से अधिक है, लेकिन चीता आक्रमण में अधिक शक्तिशाली है । कई बार अहम भाव से चूर शेर मादा को ही शिकार के लिए भेजता है । वहीं दूसरी ओर चीता कुशल शिकारी माना जाता है । चीता चुस्त जानवर है । यह अपना शिकार घने जंगल में ही करता है, वहीं दूसरी ओर शेर खुले मैदान में ही शिकार करता है ।*
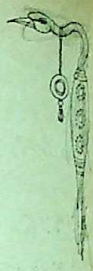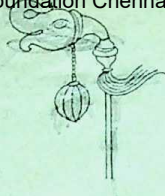
छत्र सायबान काबो काब (मकर शीर्ष) आलम (गणेश मूर्ति शीर्ष)

सम्राट अकबर के राज्य-चिह्न

# मुगल बादशाहों द्वारा हिंदू प्रतीक-चिह्नों का प्रयोग

● कामेश्वर प्रसाद सिंह

सम्राटों और राजाओं द्वारा अत्यंत प्राचीनकाल से ही राज्य-चिह्नों का प्रयोग किया जाता रहा है । ये राज्य-चिह्न संप्रभुता और गौरव का प्रतीक होते थे ।

रामायण और महाभारत काल में भिन्न-भिन्न प्रकार के राज्य-चिह्नों के उपयोग के विवरण मिलते हैं । ध्वजाओं और झंडों में सूर्य, चंद्रमा, गरूड़, सिंह, बाघ आदि का प्रयोग अत्यंत प्रचलित था ।

मगध सम्राट अशोक ने भारत के अनेक हिस्सों में गडवाये अपने स्तंभों के शीर्ष पर सिंह, बृषभ, अश्व आदि की प्रतिमाएं बनवायी थीं । गरूड़ पक्षी का राज्य-चिह्न के रूप में प्रयोग मगध साम्राज्य के बाद अनेक राजाओं ने किया । गरूड़-चिह्न का प्रयोग सिक्कों पर भी किया गया । बृषभ चिह्न का प्रयोग तो मोहनजोदड़ो और हरप्पा काल से ही चला आ रहा है । अशोक का चार सिंहोंवाला राज्य-चिह्न आज भारत का राज्य-चिह्न है ।

मुगल काल में राज्य-चिह्नों के उपयोग का पहला विस्तृत वर्णन अबुल फजल के 'आइने अकबरी' में मिलता है । मुगलकाल में जिन राज्य-चिह्नों का प्रयोग किया गया, वे शायद प्राचीन काल से ही किये जाते थे । सूर्य, बाघ, नरव्याघ्र चिह्न का प्रयोग भाले, बर्छे के शीर्ष भाग पर राज्य-चिह्नों के रूप में किया जाता था ।

मुगल सिंहासन जिसे 'औरंग' कहा जाता था, छह कोनों वाला होता था । जिसके ऊपर क्षत्र होता था । मुगल कालीन चित्रों में इस प्रकार के राज्य-सिंहासनों को देखा जा सकता हैं । इन सिंहासनों में हंस, मोर, आदि चिह्नों का प्रयोग किया गया है । शाहजहां का प्रसिद्ध मयूर सिंहासन (तख्ते-ताउस) सुनहरे पांवों का था और इसकी छत पर मीनाकारी की हुई थी ।
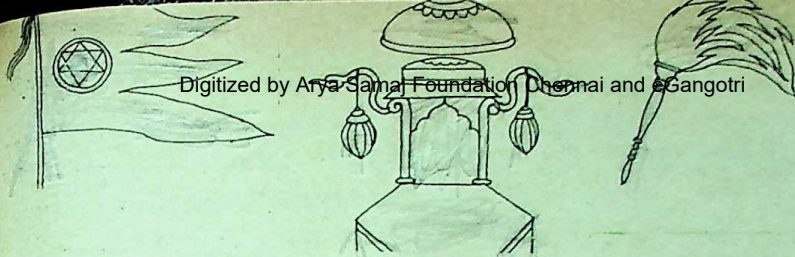
सम्राट जहांगीर का सिंहासन और छत्र

छत पन्ने के बारह खंभों की टिकी हुई थी। प्रत्येक खंभे पर रत्नों से जड़ें दो मयूर थे। मयूर का चिह्न एक हिंदू चिह्न है। मगुलकाल में छत्र का प्रयोग भी पूर्णतः हिंदू-चिह्न है। भारत के सम्राटों को छत्रपति कहा जाता था। छत्र का प्रयोग इस बात का द्योतक था कि राजा संसार के ईश्वर का प्रतिनिधि है और छत्र ईश्वर की कृपा का प्रतीक।

'आलम' या ध्वज-दंड का प्रयोग भी राज्य-चिह्नों के रूप में होता था। इनके सिरे पर हिंदू देवता गणेश की प्रतिमा थी, जिसे सम्राट अकबर ने प्रतीक-चिह्न के रूप में स्वीकार कर रखा था। हाथी के सिर पर मुकुट गणेश का ही प्रतीक माना जा सकता है।

मुगलों के झंडों में अनेक हिंदू प्रतीक-चिह्नों का प्रयोग किया गया है। झंडे के साथ चंबर के कुछ बालों को बांध दिया जाता था। झंडे का रंग गुलाबी, लाल, नीला, हरा, पीला और सफेद होता था। इससे प्रतीत होता है कि मुगल शासनकाल में अनेक रंगों के झंडों का प्रयोग होता था।

अकबर के बाद भी झंडों पर अनेक हिंदू प्रतीक-चिह्नों का प्रयोग होता रहा। जहांगीर के झंडे पर सूर्य, सिंह और मकर का चिह्न था। वे चौकोर कपड़ों के बने होते थे, जिनका एक सिरा दो कोणों को सी कर बनाया जाता था।

चंबर का प्रयोग भी राज्य-चिह्न के रूप में प्राचीन काल से किया जाता रहा है। चंबर पहाड़ी याक के पूंछ के बाल से बनते हैं। राजाओं के सिंहासन के निकट चंबरधारी सेवक खड़े होकर धीरे-धीरे इसे हिलाते रहते थे। इसका दंड सोने या चांदी का बना होता था। हिंदुओं के विवाह में इसका प्रयोग अभी भी किया जाता है। परंतु बाद में मोर के पंखों से बने 'मोर्छलों का प्रयोग अधिक प्रचलित हो गया।

'सायबान' एक तीन-चार मीटर लंबी छड़ी-जैसी होती थी। जिसके सिरे पर लंबे पंखें लगे होते थे। ये गोल या अंडाकार या पान के आकार के होते थे। इनमें कीमती रत्न जड़े होते थे। इनका प्रयोग भी धूप से बचाव के लिए किया जाता था।

अबुल फजल ने 'काबो काबा' का वर्णन किया है। अरबी के इस शब्द का अर्थ 'सितारा' होता है। यह एक प्रकार का दंड होता था, जिसके ऊपरी सिरे पर एक गोल चमकती हुई गेंद जैसी लटकी रहती थी। यह कभी-कभी कमल के फूल के आकार की होती थी, जो एक हिंदू प्रतीक है।

—मो. ढेलवा गोसांई, पो.-बाढ़, पटना-८०३२१३

## जानी-मानी प्रतिध्वनि

वह नाम
गूंजता हुआ कुटीर ग्राम
है किसका
अन्य किस दिशा में
इसे सुनूं
ओ पुन्नूं—सस्सी पुन्नूं

वह नाम
गूंजता हुआ नदी धाम
है किसका
इसे सुनना
जी चाहता है
मन बराबर अधीर
ओ हीर—ओ रांझे हीर

वह आभा अभिज्ञान
वह बांसुरी तान दिशा-दिशा गुंजायमान
है किसकी
इसे सुन
प्राण दुःखी बनते सुखी
ओ राधा—राधेश्याम
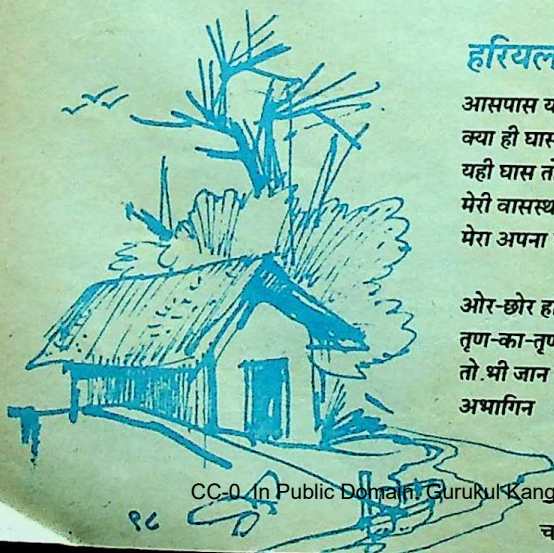
## बंदर और तोते

पाला है अपने ही अपने में
तोता—नन्हा-सा तोता
तभी तो दुहरा-दुहराकर कहता
जीवन ओह कितना है खोटा

पाला है अपने ही अपने में
बंदर—नन्हा-सा बंदर
तभी तो रुक-रुककर जतलाता
जान तो है जान क्या—बवंडर

जब-जब सुन
कंठ में तुतलाता है तोता
जब-जब देख
स्वांत में फुदकता है बंदर

भैया कैसे न होते
प्राण तेरे खोटे
मानवी ढांचे में पाले हैं जब
मात्र बंदर और तोते !
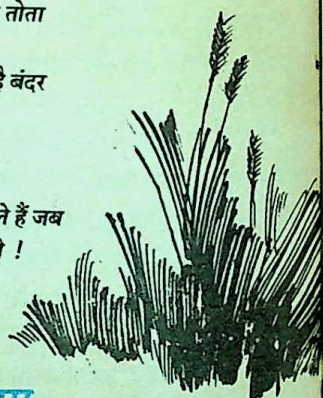
## हरियल वास

आसपास यह घासस्थली
क्या ही घासस्थली क्या ही तृण
यही घास तो
मेरी वासस्थली
मेरा अपना वास

ओर-छोर हरियाया हुआ
तृण-का-तृण
तो भी जान मेरी
अभागिन

इधर-उधर लो
घास-ही-घास
बराबर तृण
तो भी आमरण
सिर पर ऋण

क्या ही बढ़िया वास
बढ़कर इससे
क्या ही हरियाया हुआ
तृण-हाय-तृण-अपतृण

—ओदोलेन स्मेकल

— द्वारा चेकोस्लोवाकिया दूतावास, नीति मार्ग,
चाणक्यपुरी नई दिल्ली

## सागर

सागर-सरगम में
गुनगुन-गुनगुनाते कितने
जन्मों के गम

एक सपना
सागर-तट पर गया
मन-आकाश
प्रकाश-सागर से भर गया

सागर-लहरों में
जितनी खानी है
मेरी लेखनी की
कहानी है

खाली गिलास
मैं खाली गिलास

भरना चाहता हूं
उसमें सागर-सा
गहरा विश्वास
मैं एक खाली गिलास

मेरे दिल में 'कुछ' होता है
सागर
आधी रात को
जाने किस दर्द का मारा
फूट-फूटकर
बच्चे की तरह रोता है
मेरे दिल में

—केदारनाथ कोमल

एल I/-५५-बी, डी.डी.ए. कालकाजी,
—नयी दिल्ली-११००१९

## समय सोता है

समय
धुंधले आसमान से निकलकर
सूर्य की किरणों को निहारता है
समय, शाम की प्रतीक्षा में
सारे जहां की सैर करता है
घने अंधकार में
समय चुपचाप चलने को
मजबूर हो जाता है
खामोश देखने को रह जाता है
बदनाम छाया में
बैठा समय
पापियों का साथ देता है
और अंत में
समय, सब्र की सीमा समाप्त कर
वहीं सो जाता है

—अरविंद आलोक

प्राध्यापक
केंद्रीय हिंदी संस्थान, नयी दिल्ली

# हिंदू मुसलमान एक हैं

मैं तो फकीर हूं, परमहंस और निर्वाण नहीं । जो दाढ़ी मूंछ मुंडवाते है, शरीर पर भस्म मलते हैं, पीतांबर साड़ी पहनते हैं और एक ही ब्रह्म को मानते हैं लेकिन इतना सब करते हुए भी हिंदू और मुसलमान को अलग-अलग समझते हैं, जबकि दोनों में कोई अंतर नहीं हैं, क्योंकि दोनों एक ही धर्म, एक ही ब्रह्म के उपासक हैं ।

**एना नंद फकीर है, परमहंस निरबान**
**दाढ़ी मूंछ मूड़ावते, भस्म करे अस्नान**
**भस्म करे अस्नान, ओढ़ पिताम्बर साड़ी**
**माने एक ही ब्रह्म, तुरक हिंदू से न्यारी**
**भिक्षुक दोनों दीन के, 'एन' हमारा नाम**

हे प्रभु, आपको छोड़कर हमारा और कौन है, जिसे हम अपना स्वामी कहें । मुझे तो चारों ओर,हर तरफ कण-कण में आप ही आप दिखायी देते हैं, आपका सांवला सलौना रूप ही दिखायी देता है । मेरे तो आप ही सच्चे स्वामी हैं । आपसे मेरे मन की कोई भी बात छुपी हुई नहीं, इसलिए अब आप जो चाहें सो करें, मुझे सब स्वीकार है ।

**और हमारे कौन है, जाते कहे हजूर**
**दीसत आपहिं आप हो, रोम रोम भरपूर**
**रोम रोम भरपूर, सांवला सांचा सांई**
**मेरे मन की बांत, छुपी कछु तुमसे नाहीं-**
**जो चाहे सोई करो, 'एन' हमें मंजूर**

१. एक कक्षा में छात्रों की संख्या छात्राओं से तीन गुनी है। यदि छात्र-छात्राओं की कुल संख्या ४८ है तो छात्र एवं छात्राओं की अलग-अलग संख्या कितनी है ?

२. क. इसवर्ष देश का सर्वोच्च सम्मान 'भारतरत्न' मरणोपरांत किन्हें प्रदान किया गया है ?

ख. अब तक 'भारतरत्न' से सम्मानित व्यक्तियों की संख्या कितनी है ?

ग. इनमें विदेशी कितने हैं ? उनके नाम बताइए।

३. क. देश में प्रधानमंत्रियों में सबसे बड़ा कार्यकाल किसका रहा ?

ख. सबसे छोटा कार्यकाल किसका रहा ?

४. क. केबिनेट मंत्रियों में सबसे बड़ा कार्यकाल किसका रहा।

ख. सबसे छोटा कार्यकाल किसका रहा ?

५. क. भारत में हजरत मोहम्मद की दाढ़ी का एक बाल (मू-ए-मुकद्दस) स्मृति-चिह्न के रूप में कहां सुरक्षित है ?

ख. देश में किस इबादतगाह में उनका पद-चिह्न संरक्षित है ?

६. क. 'आनन्दमठ' की कथा का मूल किस घटना पर आधारित है ?

ख. यह उपन्यास किस बात के लिए प्रसिद्ध है ?

७. एशिया के किन देशों में हाल में बहुत समय बाद कुछ ज्वालामुखियों का विस्फोट हुआ है ?

८. देश का इस सबसे पुराना अखबार कौन-सा है ? वह कितने वर्षों से निरंतर प्रकाशित हो रहा है ?

९. निम्नलिखित खेलों में हाल में किसने नये विश्व-रेकॉर्ड कायम किये हैं—

क. पोल वाल्ट, ख. १०० मीटर दौड़ (पुरुष), ग. महिला शक्तितोलन (७५ किलो वर्ग में)

१०. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

—संपादक

**कहानी**

कुछ दिनों पहले मैंने अचानक एक समाचार पत्र में पढ़ा कि हजारीबाग के पास जीप और ट्रक की टक्कर में एक व्यक्ति की मृत्यु हो गयी । उसकी जेब से जो कागज निकला उससे पता चला कि मृत व्यक्ति का नाम दरबारी लाल था और वह पहले बिहार के भारत-नेपाल सीमा पर दारोगा के पद पर पदस्थापित था ।

इस समाचार को पढ़ने के बाद मैं बड़ी देर तक दारोगा दरबारी लाल के बारे में सोचता रहा ।

# दारोगा दरबारी लाल

● डॉ. गौरी शंकर राजहंस

उन दिनों मैं भारत-नेपाल सीमा पर मोतीपुर जिला में स्कूल शिक्षक था । दरबारी लाल मेरा पड़ोसी था । वह मेरा अत्यंत ही घनिष्ठ मित्र था । भगवान ने उसमें अद्भुत क्षमता दी थी । दुनिया का असंभव से असंभव काम दरबारी लाल कर करा सकता था । उसकी अद्भुत योग्यता को देखकर मैं हमेशा दरबारी लाल के सामने नत मस्तक रहता था ।

उन दिनों रमेश रस्तोगी नामक सज्जन मोतीपुर के एडिशनल कलेक्टर थे जिन्हें लोग संक्षेप में ए. सी. साहब कहा करते थे ।

हुआ ऐसा कि उन दिनों कलेक्टर साहब लंबी छुट्टी पर गये हुए थे और ए. सी. साहब के पास जिला के प्रशासन का भार था । एक दिन ए.सी. साहब लंच खाकर घर से दफ़्तर जा रहे थे । उन दिनों काम का बोझ अधिक था और ड्राइवर छुट्टी पर था, इसीलिए वे स्वयं गाड़ी चला रहे थे । वैसे भी उनके बंगले से आफिस की दूरी मुश्किल से तीन-चार किलोमीटर थी । ए.सी. साहब को यह विश्वास था कि नव सिखवा होने के बावजूद भी वे इस दूरी को आसानी से तय कर लेंगे ।

संभवतः ए.सी. साहब किसी विचार में लीन थे कि एकाएक उनकी गाड़ी के सामने एक ६-७ वर्षीय बच्चा आ पड़ा । गल्ती से गाड़ी से उसे धक्का लग गया । देखते ही देखते वहां बहुत भीड़ जमा हो गयी और भीड़ ने ए.सी. साहब को पहचान लिया । कुछ शुभचिंतकों ने धीरे-से ए.सी. साहब को गाड़ी पर बैठाकर चुपचाप भाग जाने को कहा क्योंकि भीड़ उग्र होती जा रही थी और बार-बार नारा लगा रही थी कि निर्दयी अफसर एक गरीब के बच्चे को कुचल देना चाहता है ।

ए.सी. साहब ने आव देखा न ताव और झट से रफूचक्कर हो गये । एस. पी. उन दिनों छुट्टी पर थे । वैसे भी उनसे उनकी नहीं बनती थी ।





दफ़
खो
उन्
कि
सड़
गाड़
फि
कर
पर
सा
सा
पह
से
नाड़
चा

दफ़र आते ही उन्होंने पहले डी. एस. पी. को खोजा। वे भी उन दिनों छुट्टी पर थे। फिर उन्होंने दारोगा दरबारी लाल को टेलीफोन किया कि बाजार में राजेन्द्र प्रसाद मोहल्ले के सामने सड़क पर एक गरीब बच्चे का एक्सीडेंट उनकी गाड़ी से हो गया है। दारोगा दरबारी लाल फिलहाल वहां जाए और मामले को रफा-दफा कर दे।

ए. सी. साहब का हुक्म पाकर दारोगा मूछों पर ताव देते हुए घटना स्थल पर पहुंचा।

प्रायः दो घंटे बाद दरबारी लाल ए.सी. साहब के कमरे में बेधड़क घुस गया। ए.सी. साहब को थोड़ी झुंझलाहट भी हुई परंतु इसके पहले कि वह कुछ बोलते दरबारी लाल ने जोरों से औरों को सुनाते हुए कहा, "मामला बहुत नाजुक है ! मैं आपसे अकेले में बात करना चाहता हूं।"

यह कहकर दरबारी लाल ने अपना टोप ए. सी. साहब के टेबल पर रख दिया और आराम से साम्नेवाली कुरसी पर पसर गया। ए.सी. साहब झुंझला तो जरूर गये थे, परंतु यह सोचकर उन्होंने संतोष किया कि संभवतः दरबारी लाल कोई शुभ समाचार लाया है। इसीलिए उन्होंने कमरे के अन्य लोगों से पंद्रह-बीस मिनट के लिए बाहर चले जाने के लिए कहा।

अन्य लोगों के बाहर जाते ही दरबारी लाल ने ए.सी. साहब से कहा— "ज़रा अपना ड्राइविंग लाइसेंस दिखाइएगा... ।"

"अपना ड्राइविंग लाइसेंस दिखाइएगा... क्या मतलब है तुम्हारा इससे दरबारी लाल... ।" ए.सी. साहब ने खीझते हुए कहा।

ए.सी. साहब को बहुत बुरा लगा, परंतु यह सोचकर उन्होंने दराज से अपना ड्राइविंग लाइसेंस निकालकर दे दिया कि शायद दरबारी लाल उन्हें बचाने की कोई तरकीब निकाले।

ड्राइविंग लाइसेंस को ऊपर से नीचे पूरा मुआयना करने के बाद दरबारी लाल ने उस लाइसेंस को ए.सी. साहब की तरफ फेंका मानो वह कूड़ा हो ।

ए.सी. रस्तोगी साहब थोड़ा झुंझला भी गये । परंतु अपनी भावनाओं को छिपाते हुए उन्होंने पूछा, "क्यों, क्या बात है । तुमने लाइसेंस में क्या देखा है ? तुम्हें और क्या चाहिए... ?"

दरबारी लाल ने गंभीर होते हुए ए.सी. साहब को कहा, "आपने कभी इस ड्राइविंग लाइसेंस को देखा है... ?"

ए.सी. साहब ने कहा, "क्या बकवास करते हो दरबारी लाल ? मैं तो रोज ही इसे देखता हूं । इसमें आखिर क्या त्रुटि है जिसकी ओर तुम अंगुली उठा रहे हो... ?"

दरबारी लाल ने कहा, "गुस्ताखी माफ हो तो एक बात कहूं ?"

"हां... हां... कहो...कहो... क्या कहना चाहते हो... ?" ए.सी. साहब ने कहा ।

"आपने ड्राइविंग लाइसेंस को कभी भी गंभीरतापूर्वक नहीं देखा । नहीं तो आज यह नौबत नहीं आती । इस लाइसेंस का नवीकरण १९८८ में ही हो जाना चाहिए था और यह १९९० का वर्ष चल रहा है । आपका लाइसेंस दो वर्ष पुराना है और इस लाइसेंस के बल पर आप कोर्ट में मुकदमा हार जाएंगे ... ।"

"कोर्ट में मुकदमा हार जाऊंगा... ? आखिर क्या पहेलियां बुझा रहे हो दरबारी लाल... ? साफ-साफ कहो क्या बात है ?"

इस बीच ए.सी. साहब का निजी सचिव कमरे में घुस आया । दरबारी लाल ने उसे उस कमरे से चले जाने के लिए कहा । फिर सामनेवाले दरवाजे को बंद कर धीरे से रस्तोगी साहब के कान में कहने लगा, "आपकी अब भारी फजीहत होनेवाली है । जिस लड़के को आपने मोटर से कुचला है वह सुखिया का बेटा लखना है ।सुखिया कभी आपके यहां काम करती थी । क्या यह बात सच नहीं है... ?"

"हां यह बात तो सच है । परंतु इससे इस एक्सीडेंट का क्या तालुक है... ?"

दरबारी लाल ने कुरसी पर पसरकर बैठते हुए कहा, "ए.सी. साहब, मामला बहुत संगीन है । आप इसे जितना आसान समझते हैं उतना आसान नहीं है । सुखिया ने पुलिस को यह बयान दिया है कि वह कुछ साल पहले आपके घर काम करती थी और यह बच्चा आपके और उसके नाजायज संबंधों का प्रतीक है ! यह बात आप अच्छी तरह जानते हैं । आपने जानबूझकर सुखिया के बच्चे को कुचल देना चाहा जिससे इस दुनिया से ही उसका नामो निशान मिट जाए और फिर सुखिया आपको कभी ब्लैकमेल नहीं कर सके... ?"

ए.सी. साहब ने खीझते हुए कहा, "कैसी बे सिर पैर की बात कर रहे हो दरबारी लाल ! मैंने तो सुखिया को कभी गौर से देखा तक नहीं है ! वह जो कुछ कह रही है सरासर झूठ है ! मिथ्या है ! यह आरोप मुझे बदनाम करने के ख्याल से... !"

दारोगा दरबारी लाल ने ढीठ होकर सुनाया, "ए. सी. साहब हर अपराधकर्मी ऐसा ही कहता है । सुखिया के बच्चे का चेहरा आपके चेहरे से बहुत मिलता है । सांच को आंच क्या ! अभी आप चलिए मैं उस बच्चे को दिखा देता हूं ।

दरबारी लाल जानता था कि ए.सी. एक नंबर के घूसखोर हैं । परंतु खुशामद के स्वर में उसने कहा, "हुजूर की ईमानदारी के बारे में कौन नहीं जानता है । परंतु अपने मतलब के लिए थोड़ी-बहुत बेइमानी तो करनी ही पड़ती है ।यह कलयुग है । यहां ईमानदार लोगों की पूछ नहीं है । एक काम कीजिए हुजूर ! आपके पास सप्लाई विभाग है । दस बड़े व्यापारियों को बुलाकर उनसे पांच-पांच हजार रुपये चंदा ले लीजिए । उनसे कहिए कि आपके गांव में यज्ञ होनेवाला है, उसी के लिए यह चंदा चाहिए । उसके बाद की मैं गारंटी लेता हूं कि मैं इस मामले को रफा-दफा करा दूंगा... ।"

हू-ब-हू आपकी कार्बन कापी लगता है । ऐसी हालत में अब दुनिया में किस-किसका मुंह बंद करते फिरेंगे आप । किस-किसको समझाते होंगे कि सुखिया का बेटा लखना आपका बेटा नहीं है । जबकि सुखिया गला फाड़-फाड़कर चिल्लाकर कहती है कि लखना आप ही का बेटा है और समाज की निगाह में आप अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए अपने लखना को इस दुनिया से उठवा लेने का प्रयास कर रहे हैं... !"

ए.सी. साहब के तो मानो होश ही उड़ गये । वे काफी देर गंभीर बने रहे । फिर उन्होंने लगभग गिड़गिड़ाते हुए दारोगा दरबारी लाल से पूछा, "तुम तो बड़े सक्षम हो दरबारी लाल ! तुम ही कोई रास्ता निकालो जिससे यह मामला दब जाए... ।"

दरबारी लाल ने अपनी कुटिल मुस्कान को दबाते हुए कहा, "मैं तो चाहता था कि आपके ड्राइविंग लाइसेंस को कोर्ट में दिखाकर यह कहा जा सकता था कि सुखिया के बेटे को चोट उसकी गल्ती से लग गयी । ए. सी. साहब बिल्कुल निर्दोष हैं । वह जिम्मेदार व्यक्ति हैं और उनका ड्राइविंग लाइसेंस हाजिर है ।

परंतु जब आपके पास ड्राइविंग लाइसेंस है ही नहीं तो भला मैं कोर्ट में क्या दिखाऊंगा । अब एक ही उपाय है कि आपका ड्राइवर अपने ऊपर यह इल्जाम ले ले कि ड्राइविंग वह खुद ही कर रहा था । आप पीछे की सीट पर बैठे हुए थे... ।"

ए. सी. साहब की जान में जान आयी । उनको लगा कि यह उपाय बहुत ही आसान है । उन्होंने अपने ड्राइवर मनोहर राम को बुलाया । वे चाहते थे कि मनोहर राम जो उनका विश्वासी ड्राइवर है, सारा इल्जाम अपने ऊपर ले ले । फिर वे इस मामले से निबट लेंगे ।

चपरासी ने अत्यंत विनम्रपूर्वक कहा, "हुजूर, मनोहर राम तो कल से छुट्टी पर है । वह करीब पंद्रह-बीस दिनों के बाद ड्यूटी पर आएगा... ।"

दरबारी लाल ने कहा, "आपसे कलेक्ट्रेट में

बहुत से कैजुअल ड्राइवर भी तो काम करते हैं । उसी में से किसी ड्राइवर को मुझे दे दीजिए ! मैं बाकी सब मामला ठीक कर लूंगा... ।''

दरबारी लाल कैजुअल ड्राइवर मोहन कुमार के साथ थाने गया । रास्ते में उसने मोहन कुमार से कहा, ''नौकर को हमेशा मालिक के प्रति वफादार होना चाहिए । तुमने अपनी जान देकर भी वफादारी प्रकट की है । यह बहुत अच्छा काम किया है तुमने । तुम्हारी फांसी के बाद ए.सी. साहब सौ-पचास रुपये माहवारी तो तुम्हारे परिवार को देते ही रहेंगे... ।''

ड्राइवर के तो होश उड़ गये । उसने लगभग दरबारी लाल के पांव पकड़ते हुए कहा, ''हुजूर, मैं नौकरी करने आया हूं । कोई फांसी चढ़ने के लिए नहीं । मैं दूसरों के लिए अपनी जान क्यों दूं... ।''

दारोगा दरबारी लाल ने रहस्यमयी आंखों से उसकी ओर देखा और कहा, ''वहां तो ए. सी. साहब के सामने तुमने साफ-साफ कहा कि तुम इस एक्सीडेंट का जुर्म अपने सिर पर ले लोगे । अब तुम मुझसे मुकर रहे हो । सैकड़ों ऐसे मामले हैं जहां कार एक्सीडेंट में ड्राइवर को फांसी की सजा हुई है । तुम्हें तो पहले ही सोच-समझ कर कहना चाहिए था... ।''

ड्राइवर ने गिड़गिड़ाते हुए दारोगा दरबारी लाल से कहा, ''हुजूर, कोई रास्ता निकालिए । मैं तो वैसे भी कैजुअल ड्राइवर हूं । यहां काम नहीं करूंगा । किसी और जगह काम कर लूंगा । परंतु मैं ए. सी. साहब के लिए फांसी नहीं चढ़ूंगा... ।''

बहुत देर तक गंभीर रहने के बाद दरबारी लाल ने कहा, ''एक उपाय है मोहन राम । तुम चुपचाप यहां से ड्राइवर यूनियने प्रेसीडेंट के पास चले जाओ और उससे कहो कि ए.सी. साहब एक बच्चे की हत्या का जुर्म मेरे सिर पर मढ़ना चाहते हैं ।

प्रायः दो घंटे के बाद दरबारी लाल ए. सी. साहब के बंगले पर पहुंचा और सीधे उनके ड्राइंग रूम में घुसकर अपना टोप सोफे के टेबल पर रख दिया और स्वयं सोफे में धंस गया । ए. सी. साहब की पत्नी माया देवी को दरबारी लाल का यह रवैया निहायत ही बदतमीजी-जैसा लगा । वे अपने पति के साथ ड्राइंग रूम में चाय पी रही थीं । दरबारी लाल को देखते ही ए. सी. साहब हड़बड़ा कर उठ गये और उन्होंने दबी जबान में दरबारी लाल से पूछा, ''सब कुछ ठीक-ठाक हो गया न दरबारी लाल... ?''

दरबारी लाल ने कहा, ''हुजूर,' मामला बहुत संगीन है । मैं आपसे अकेले में दो बातें करना चाहता हूं... ।''

बड़ी अनिच्छा से ए.सी. साहब ने अपनी पत्नी माया देवी को ड्राइंग रूम से चले जाने के लिए कहा । फिर दरबारी लाल ने स्वयं सारे दरवाजे बंद कर दिये और फुस-फुसाकर ए.सी. साहब के कानों में कहा, ''वह ड्राइवर मोहन राम तो बड़ा डरपोक निकला । वह थाने से ही भाग गया ।

इतना सुनते ही ए. सी. साहब चिंता में पड़ गये । बहुत देर तक विचार मग्न रहने के बाद उन्होंने दरबारी लाल से पूछा, ''कोई रास्ता निकाल सकते हो दरबारी लाल... ?''

दरबारी लाल काफी देर तक मौन रहा । फिर उसने ए. सी. साहब के कानों में

फुस-फुसाते हुए कहा, "हुजूर, एक उपाय मैंने सोचा है । मैंने सुखिया से भी बात की है... ।"

ए.सी. साहब उसका मुहं देखने लगे । दरबारी लाल ने कुछ रुककर कहा, "मैंने सुखिया को इस बात के लिए राजी कर लिया है कि वह बच्चे को लेकर तुरंत नेपाल चली जाए और वहीं उसका इलाज कराए । बच्चे की हालत नाजुक है । उसके इलाज के लिए और सुखिया का मुंह बंद करने के लिए कम से कम दस हजार रुपया चाहिए । एक बार सुखिया को यह पैसा मिल गया फिर सारा मामला रफा-दफा हुआ समझिए... । न सुखिया इस देश में रहेगी और न मामला तूल पकड़ेगा । अभी आपके प्रमोशन का समय आ गया है । आप किसी जिले में कलेक्टर बनेंगे । यदि यह मामला उछल गया तो आपके कलेक्टर बनने का मौका हमेशा के लिए समाप्त ही हो जाएगा और पता नहीं हुजूर को क्या-क्या मुसीबतें झेलनी पड़ें । अभी तो हुजूर की किस्मत अच्छी है कि कलेक्टर साहब छुट्टी पर हैं । कलेक्टर साहब जैसे ही छुट्टी से लौटेंगे तो उनके दरबारी उनके कान भरेंगे ही । कलेक्टर साहब से हुजूर की दुश्मनी जग-जाहिर है । कलेक्टर साहब इस मौके को हाथ से जाने नहीं देंगे और हुजूर का कैरियर हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगा । इसलिए हमारा तो विचार है कि दस हजार रुपये देकर यह अध्याय सदा के लिए बंद कर दिया जाए... ।"

ए.सी. साहब को यह विचार पसंद आया । वे अंदर चले गये और थोड़ी देर बाद दस हजार रुपये की गड्डी दरबारी लाल के हाथों में रखते हुए कहा, "तुम बहुत काबिल आदमी हो दरबारी लाल ! मैं जरूर तुम्हारी तरक्की करवा दूंगा ।"
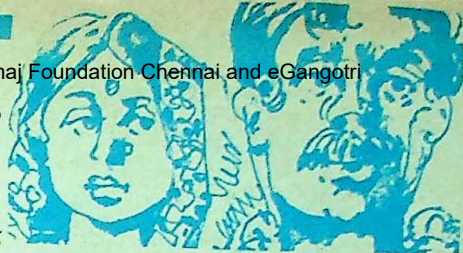
प्रायः एक सप्ताह के बाद दरबारी लाल एक दिन फिर ए.सी. साहब के दफ़्तर में बेधड़क घुस गया और टेबल पर अपना टोप रखते हुए उसने कहा, "हुजूर आपको एक बहुत जरूरी बात कहनी है... ।"

वहां मौजूद अफसरों को आश्चर्य हो रहा था कि एक मामूली-सा दारोगा कितनी बदतमीजी से ए.सी. साहब से बातें कर रहा है और ए.सी. साहब उसके सामने कितने नरवस लग रहे हैं ।

ए.सी. साहब ने सब अफसरों को उस कमरे से चले जाने के लिए कहा और बहुत ही चिंतित होकर दरबारी लाल से पूछा, "अब कौन-सी मुसीबत आ पड़ी दरबारी लाल... ?"

दरबारी लाल पता नहीं कहां से एक नेपाली अखबार का फोटो स्टेट कापी लाया था, जिसमें सुखिया ने बयान दिया था कि उसका लड़का लखना असल में ए.सी. साहब का लड़का है और बदनामी से बचने के लिए रस्तोगी साहब उसे अपनी गाड़ी से कुचल देना चाहते थे । वे चाहते थे कि लड़का मर जाए जिससे इस बात का कोई सबूत ही नहीं रहे ।

इस खबर को पढ़ते ही ए. सी. साहब के होश उड़ गये । उन्होंने बहुत चिंतित होकर दरबारी लाल से कहा, "लगता है सुखिया ब्लैकमेल कर रही है... ।"
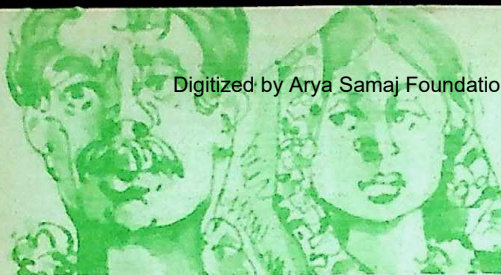
"पर मैं क्या करूं दरबारी लाल ! कोई रास्ता सोचो । मैं इस औरत की ब्लैकमेलिंग से तंग आ गया हूं..." ए. सी. साहब ने रुआंसा होते हुए कहा ।

दरबारी लाल काफी देर तक चुप रहा । फिर उसने कहा, "एक रास्ता है हुजूर ! सुखिया जहां रहती है वह गांव नेपाल में यहां से प्रायः तीस किलोमीटर दूर है । कल सुबह चार बजे आप मेरे साथ मोटर साइकिल से चलिए । आप धोती, कुर्ता पहन लेना । उतनी सबेर आपको कोई पहचानेगा भी नहीं । हम दोनों सुखिया को कुछ ले-देकर मना लेंगे और कह देंगे कि वह तराई से हटकर दूर पहाड़ियों पर चली जाए जहां कोई उसे पहचानता न हो और किसी को यह बताए भी नहीं कि वह कहां जा रही है । फिर कलेक्टर साहब क्या कलेक्टर साहब के पुरखे भी पता नहीं लगा पाएंगे कि सुखिया कहां है... ।"

ए. सी. साहब को यह सुझाव पसंद आया । दूसरे दिन सुबह वे धोती, कुर्ता पहनकर पांव पैदल दरबारी लाल के घर पहुंचे । दरबारी लाल पहले से तैयार था । दरबारी लाल ने हाथ के इशारे से ए.सी. साहब को चुप रहने के लिए कहा । फिर धीरे-से उनके कानों में फुस-फुसाकर कहा कि हम लोग जल्दी से यहां से निकल जाएं जिससे आस-पड़ोस किसी को यह पता नहीं लगे कि हम कहां जा रहे हैं ।

ए.सी. साहब दरबारी लाल की मोटर साइकिल के पीछे बैठ गये । घने जंगलों, उबड़-खाबड़ रास्तों से होते हुए दरबारी लाल प्रायः तीन घंटे में ए.सी. साहब को सुखिया के गांव लनौर ले गया । ए. सी. साहब को बाहर छोड़कर दरबारी लाल अंदर सुखिया की झोंपड़ी में पहुंचा । उसने सुखिया से कहा, "ए.सी. साहब उसे फुसलाकर अपने साथ ले जाना चाहते हैं । रास्ते में उसे और उसके बेटे को जान से मार देना चाहते हैं ।"

इतना सुनना ही था कि सुखिया चिल्ला-चिल्ला कर रोने लगी । उसकी चिल्लाहट को सुनकर आस-पड़ोस के लोग भी जमा हो गये । उनमें से कई लोगों ने ए.सी. साहब को पहचान लिया । रस्तोगी साहब को धोती, कुर्ता में आये हुए देखकर गांववालों को बहुत आश्चर्य हुआ ।

सुखिया ने झोंपड़ी से बाहर निकलकर देखा कि सचमुच में ए.सी. साहब मोटर साइकिल के पास खड़े हैं । फिर क्या था वह और भी चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगी ।

दरबारी लाल ने धीरे-से आकर ए.सी. साहब के कानों में कहा, "बात बनती नहीं है ! हम लोग जल्दी-से यहां से खिसक जाएं । नहीं तो गांववाले हम लोगों पर हमला कर देंगे । वैसे भी हम लोग दूसरे देश में हैं । यह बात यदि खुल गयी तो हम दोनों जेल जाएंगे... ।"

ए.सी. साहब को दरबारी लाल की सलाह बड़ी नेक लगी और इसके पहले कि भीड़ उग्र होती झटपट दोनों वहां से रफूचक्कर हो गये ।

रास्ते में अत्यंत चिंतित स्वर में ए.सी. साहब ने दरबारी लाल से पूछा, "अब क्या होगा

दरबारी लाल... ?"

उसने कहा, "हुजूर की ईमानदारी के बारे में कौन नहीं जानता है । परंतु अपने मतलब के लिए थोड़ी-बहुत बेइमानी तो करनी ही पड़ती है ।यह कलयुग है । यहां ईमानदार लोगों की पूछ नहीं है । एक काम कीजिए हुजूर ! आपके पास सप्लाई विभाग है । दस बड़े व्यापारियों को बुलाकर उनसे पांच-पांच हजार रुपये चंदा ले लीजिए । उनसे कहिए कि आपके गांव में यज्ञ होनेवाला है, उसी के लिए यह चंदा चाहिए ! उसके बाद की मैं गारंटी लेता हूं कि मैं इस मामले को रफा-दफा करा दूंगा... ।"

"कैसे होगा यह मामला रफा-दफा जरा मुझे विस्तार से समझाओ दरबारी लाल... ।" ए.सी. साहब ने चिंतित होकर पूछा ।

दरबारी लाल ने कहा, "हुजूर, बात ऐसी है कि जब मैं सुखिया की झोंपड़ी गया तो उसने कहा कि मैं एक ही शर्त पर समझौता करूंगी कि मैं उससे विवाह कर लूं और बच्चे को अपना नाम दूं । फिर उसके जीवन-यापन के लिए कम से कम पचास हजार रुपयों का प्रबंध हो जाए ।"

"परंतु तुम उससे कैसे विवाह कर सकते हो दरबारी लाल ? तुम तो शादी-शुदा हो !" ए.सी. साहब ने आतुर स्वर में पूछा !

दरबारी लाल ने कहा, "हुजूर मैं आपके लिए जान भी दे सकता हूं । एक क्या सौ विवाह कर सकता हूं । शायद हुजूर को यह मालूम नहीं है कि मेरी पत्नी का आज से दो वर्ष पूर्व कैंसर से स्वर्गवास हो गया था । बच्चे सयाने हो गये हैं । अपने गांव में खेती करते हैं । हुजूर की इज्जत के लिए मैं सुखिया से विवाह कर लूंगा और दक्षिण बिहार के किसी छोटे-से गांव में बस जाऊंगा

ए. सी. साहब ने दरबारी लाल को गले से लगा लिया । उनकी आंखों से आंसू छलक आये । रुंधे स्वर से उन्होंने कहा, "दरबारी लाल तुम्हारे इस त्याग को मैं कभी नहीं भूलूंगा... ।"

प्रायः एक सप्ताह के बाद आर्य समाज मंदिर में सुखिया और दरबारी लाल का विवाह संपन्न हुआ । बाराती केवल एक ही व्यक्ति थे— स्वयं ए. सी. साहब ! विवाह के बाद एक ब्रीफ केस दरबारी लाल की ओर बढ़ाते हुए रस्तोगी साहब ने कहा, "तुम्हारे इस त्याग को मैं हमेशा याद रखूंगा दरबारी लाल ... ।"

दरबारी लाल ने ब्रीफ केस खोलकर देखा— दस-दस हजार की पांच गड्डियां थीं ।

ए.सी. साहब तब तक गाड़ी को देखते रहे जब तक वह उनकी नजरों से ओझल नहीं हो गयी ।

घर जाकर उन्होंने राहत की सांस ली । नौकर से कॉफी बनाने के लिए कहा और सोफे पर लुढ़क गये ।

मुझे दरबारी लाल ने बता रखा था कि सुखिया पहले से ही उसकी रखैल थी । वह अत्यंत प्रतिभाशाली व्यक्ति था । मैं बड़ी देर तक उसकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता रहा । मैं बार-बार यही सोचता हूं कि काश वह जिंदा रहता । बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में ऐसे प्रतिभाशाली लोगों की बड़ी आवश्यकता है ।

— ए-१/२७६
सफदरजंग एनक्लेव, नयी दिल्ली-११००२९

# निर्वाह-व्यय पतियों को भी

***पति द्वारा पत्नी को निर्वाह-व्यय देने की बात तो साधारण-सी है परंतु पत्नी द्वारा पति को निर्वाह-व्यय देने की बात नयी है।***

कुछ समय पहले ललित मोहन बनाम त्रिपता देवी (१९९० जम्मू व कश्मीर) के पति का किसी गंभीर दुर्घटना में मानसिक संतुलन बिगड़ गया था जिसके परिणामस्वरूप पत्नी से उनके संबंधों में कटुता आती गयी और अंत में स्थिति यहां तक पहुंची कि पत्नी ने क्रूरता व परित्याग के आधार पर न्यायालय से विवाह-विच्छेद की डिक्री प्राप्त कर ली। पति ने इस डिक्री के विरुद्ध अपील की परंतु जब उसे उसमें सफलता नहीं मिली तो उसने पत्नी से निर्वाह व्यय दिलाये जाने के लिए आवेदन पत्र प्रस्तुत कर दिया जिसे न्यायालय ने स्वीकार कर लिया। पति ने इस आवेदन पत्र में कहा कि उनकी पत्नी (तलाकशुदा) नेशनल हाइड्रो प्रोजेक्ट कारपोरेशन में सेवारत है। उसकी आय का पर्याप्त साधन है। जबकि वह स्वयं दुर्घटना में आयी सिर में गंभीर चोट के कारण स्थायी क्षीणता से पीड़ित रहता है तथा कोई कार्य कर सकने में असमर्थ होने के कारण अपने निकट संबंधियों पर आश्रित है। इस तथ्य के आधार पर उसने पत्नी से स्थायी निर्वाहिका के रूप में ५०० रुपये प्रतिमाह का दावा किया।

न्यायालय ने यह माना कि वास्तव में पति की कोई स्वतंत्र आय नहीं थी जबकि जम्मू व कश्मीर हिंदू विवाह अधिनियम, १९५५ की धारा ३० व ३१, जो हिंदू विवाह अधिनियम, १९५५ की धारा २४ व २५ के समान है, के अंतर्गत पत्नी अपने तलाकशुदा पति को निर्वाह व्यय देने में सक्षम थी। परंतु पत्नी की सेवाएं अस्थायी होने के कारण न्यायालय ने उसे (पत्नी को) आदेश दिया कि वह आवेदक यानी पति को मुकदमे में आये खर्च के लिए ५०० रुपये तथा स्थायी निर्वाहिका के रूप में १०० रुपये प्रति माह का भुगतान करे।

**निर्वाह व्यय का सामाजिक आधार**

इस आदेश को पारित करते हुए न्यायालय ने कहा कि उक्त विधिक प्रावधान का उद्देश्य है कि किसी भी पक्षकार को उसकी आर्थिक परेशानियों के कारण न्यायालय द्वारा समुचित न्याय पाने से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। इस प्रकार का प्रावधान बनाये जाने का औचित्य यही है कि पति अथवा पत्नी में से कोई भी, जिसके पास मुकदमे की कार्रवाई के लिए आवश्यक धन जुटाने का कोई स्वतंत्र साधन नहीं है, अपंग न हो जाए। यह सामाजिक व नैतिक आधार पर इस उद्देश्य से बनाया गया है कि मुकदमे की अवधि में पति एवं पत्नी दोनों ही स्वयं का निर्वाह कर सकें क्योंकि इस अवधि में उन्हें दूसरा विवाह करने की स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है। किसी भी पक्षकार का दायित्व हो जाता है

कि वह दूसरे पक्षकार को मुकदमे की अवधि में आर्थिक सहायता प्रदान करे जिससे कि वह स्वयं का जीवन निर्वाह करते हुए मुकदमे का व्यय भी वहन करती/करता रह सके। और ऐसा न हो कि उसका नैतिक पतन हो जाए या वह भूख से दम तोड़ दे।

इसी प्रकार कुछ समय पहले उत्तर दिल्ली के माडल टाउन क्षेत्र के निवासी श्याम सुंदर लाल गुप्ता ने हिंदू विवाह कानून के अंतर्गत एक याचिका प्रस्तुत करके पत्नी शकुंतला देवी से २५०० रुपये प्रति माह निर्वाह व्यय दिलाने की मांग की थी, इस मामले में याची का विवाह १९५४ में होकर १९८५ में तलाक हो गया था बच्चे भी बड़े व विवाहित हो गये थे। याची पति दिल्ली क्लाथ मिल में सेवारत था जहां से उसकी सेवाएं समाप्त कर दी गयी थीं। नौकरी समाप्त हो जाने के बाद जब उसकी आय का कोई साधन शेष न रहा तो वह दोस्तों की दया पर निर्भर हो गया। यद्यपि उनके एक बहुमंजिले मकान में एक पुत्र सहित चार किरायेदार थे। जिनसे साढ़े चार हजार रुपये प्रति माह किराया आता था। यह किराया उनकी पत्नी शकुंतला देवी वसूल करके अपने पास रख लेती थीं। प्रतिवादी पत्नी डॉक्टर थी। इस याचिका की सुनवाई के दौरान प्रतिवादी पत्नी अनुपस्थित रही थी। अतः जिला न्यायाधीश ने अपने एकतरफा निर्णय में आदेश दिया था कि वह अपने तलाकशुदा पति अर्थात याची को १२०० रुपये प्रति माह निर्वाह व्यय के रूप में दिया करे।

# भी मिल सकता है!

• श्रीनिवास गुप्त

## जीवन यापन के लिए

हिंदू कानून के अंतर्गत पतियों को अपनी पत्नियों से निर्वाह-खर्च प्राप्त करने का अधिकार प्रदान किया गया है। हिंदू विवाह अधिनियम की धारा २४ में पति को पत्नी से मिलनेवाली अंतरिम सहायता (निर्वाह-खर्च के रूप में) का तथा धारा २५ में इसी प्रकार के स्थायी निर्वाह-खर्च का प्रावधान है इस प्रावधान के अनुसार जहां इस अधिनियम के अधीन होनेवाली कार्रवाई में न्यायालय को प्रतीत हो कि यथास्थिति, पति या पत्नी की ऐसी कोई स्वतंत्र आय नहीं है, जो उसके संभाल और कार्रवाई के आवश्यक व्ययों के लिए पर्याप्त हो, वहां पर न्यायालय पति या पत्नी के आवेदन पर प्रत्यार्थी को यह आदेश दे सकेगा कि वह अर्जीदार को कार्रवाई में होनेवाले व्यय तथा कार्रवाई के दौरान में प्रति मास ऐसी राशि संदत्त करे जो अर्जीदार की अपनी आय तथा प्रत्यार्थी की आय को देखते हुए न्यायालय को युक्तियुक्त प्रतीत हो। यहां कार्रवाई के दौरान का तात्पर्य उस अवधि से होगा जो वादपत्र प्रस्तुत करने व निर्णय दिये जाने के दिन के मध्य आती है।

योगेश्वर प्रसाद बनाम ज्योति रानी (१९८१) के मामले में दिल्ली उच्च न्यायालय ने कहा था कि धारा ५५ में स्थायी निर्वाह खर्च और भरण-पोषण के लिए की गयी अदालती कार्रवाई भी धारा २४ की कार्रवाई की परिभाषा

में आती है । इस धारा का उद्देश्य साधनहीन तथा निर्धन पक्षकार को न्याय पाने तथा अपना जीवनयापन करने के लिए आवश्यक धन उसके विपक्षी से प्रदान कराना है ।

**स्त्री-पुरुष में समानता का तर्क**

स्पष्ट है कि पति हो अथवा पत्नी, कोई भी पक्षकार यह आर्थिक सहायता प्राप्त कर सकता है । पुराने कानून में पति को पत्नी से इस प्रकार का निर्वाह-खर्च एवं कार्रवाई-खर्च प्राप्त करने का अधिकार नहीं था, क्योंकि स्त्रियों के पास प्रायः आय के साधन नहीं हुआ करते थे । धारा २४ का वर्तमान स्वरूप संशोधित है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस धारा का लाभ केवल पति अथवा पत्नी को प्राप्त हो सकता है, संतानों को नहीं । परंतु नरेन्द्रकुमार बनाम सूरज मेहता (१९८२) तथा सुभाषिणी बनाम उमाकांत (१९८१) के मामलों में यह निर्धारित किया गया है कि धारा २४ के अंतर्गत कार्रवाई में ही, धारा २६ के अंतर्गत संतानों के भरण-पोषण के लिए भी व्यवस्था की जा सकती है । इस धारा के अंतर्गत भरण-पोषण देते समय आवेदक के निकट संबंधी तथा मित्रों आदि से प्राप्त आर्थिक सहायता पर न्यायालय कोई विचार नहीं करेगा । सी.बी. जोशी बनाम

गंगा देवी (१९८०) के मामले में इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने निर्णय देते हुए यह कहा कि आवेदक के पास पारिवारिक संपत्ति के रूप में गहने थे । उन्हें बेचकर वह अपना गुजारा कर सकता था । परंतु इस आधार पर उसे निर्वाह-खर्च देने से इंकार नहीं किया जा सकता । आवेदक की वास्तविक आय इस धारा में समाधान प्रदान करने का सही आधार है, न कि उसकी कमाने की क्षमता ।

गुरूमेल सिंह बनाम भूचारी (१९८०) के मामले में पंजाब व हरियाणा उच्च न्यायालय ने कहा है कि यदि प्रत्यार्थी अपने पिता के साथ धन अर्जित कर रहा है तो भी वह आवेदक को इस धारा के अंतर्गत सहायता देने के लिए बाध्य है । इसी प्रकार इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने १९८० में रामनारायण बनाम उर्मिला देवी के मामले में कहा है कि यदि आवेदक धन अर्जित कर रहा है, परंतु उसका वेतन अथवा कुल आय अपर्याप्त है तो भी इस धारा के अंतर्गत उसे समाधान मिल सकता है । निर्वाह खर्च तथा मुकदमे की कार्रवाई के लिए धनराशि युक्ति-युक्त होनी चाहिए अर्थात यह पारिवारिक स्तर के अनुरूप जीवन की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त हो ।

**परिस्थितियां बदलने पर परिवर्तन**

हिंदू विवाह अधिनियम की धारा २५ स्थायी तौर पर दिये जानेवाले निर्वाह-खर्च का प्रावधान करती है । इस धारा के अंतर्गत साधनहीन पति अथवा पत्नी को भरण-पोषण पाने के लिए यह आवश्यक है कि इस अधिनियम के अंतर्गत किसी मामले में बिक्री पारित हो गयी हो । जैसा कि स्पष्ट है कि यह अधिकार भी पति तथा पत्नी

दोनों को ही प्राप्त है, परंतु संशोधन अधिनियम, १९७६ से पूर्व पति को यह अधिकार प्राप्त नहीं था, इसके अतिरिक्त हिंदू विवाह अधिनियम के बाहर अपने देश के किसी अन्य कानून के अंतर्गत किसी भी पति को भरण-पोषण का यह अधिकार नहीं है । गोविंदराव मुसल्ले बनाम आनंद बाई के मामले में बंबई उच्च न्यायालय ने इस तर्क को अस्वीकार कर दिया कि धारा २५ केवल भरण-पोषण प्राप्त करने का समाधान मात्र है ।

### निर्वाह व्यय विदेशों में भी

डोमेस्टिक प्रोसीडिंग्स एंड मैजिस्ट्रेट्स कोर्ट्स एक्ट, १९७८ की धारा ६३ के अंतर्गत इंगलैंड में पति को अपनी पत्नी से निर्वाह व्यय पाने का अधिकार प्रदान किया गया है । इस विषय में पति व पत्नी का दायित्व समान है । केलडरबैंक बनाम केलडरबैंक (१९७५) के एक मामले में न्यायालय ने कहा था कि विधि के सिद्धांत के अनुसार पति व पत्नी दोनों ही पूर्ण समानता के आधार पर धन व संपत्ति के मामलों में न्यायालय आते हैं । इस मामले में विवाह-विच्छेद हो जाने पर पति के पास कोई निजी धनराशि नहीं बची थी अतः न्यायालय ने पत्नी को आदेश दिया था कि वह उसे यानी अपने तलाकशुदा पति को १०,००० पाउंड की राशि का भुगतान करे । पत्नी ने इस आदेश के विरुद्ध अपील की थी तो न्यायालय ने उपरोक्त सिद्धांत का प्रतिपादन किया था ।

केंद्रीय विधि आयोग ने १९७४ में अपनी ५९वीं रिपोर्ट के पृष्ठ ८३ पर यह सिफारिश की थी कि धारा २५ में संशोधन करके पक्षकारों की आर्थिक एवं उनके आचरण के साथ-ही साथ

मामले की परिस्थितियों को भी भरण-पोषण की मात्रा को तय करते समय ध्यान में रखा जाना चाहिए । इन परिस्थितियों में आवेदक की आयु तथा उसके स्वास्थ्य आदि को गिना जा सकता है । घर परिवार चलाने का आर्थिक दायित्व सदा से पति ही निभाता आया है । जीविका अर्जित करने के विषय में पत्नियों ने पहले कभी नहीं सोचा परंतु आधुनिक समाज में पत्नियों का सोच बदला है वे भी बढ़-चढ़कर विभिन्न क्षेत्रों में कार्यभार संभाल रही हैं तथा निजी उद्योगों के माध्यम से भी प्रायः धन अर्जन में उनकी रुचि बढ़ी है । इसलिए पति द्वारा पत्नी को निर्वाह-व्यय देने की बात तो साधारण-सी है परंतु पत्नी द्वारा पति को निर्वाह-व्यय देने की बात नयी है । यद्यपि १९५५ से हिंदू विधि में इस आशय का प्रावधान विद्यमान रहा है परंतु पत्नियों द्वारा अपने तलाकशुदा अथवा तलाक के मुकदमे के दौरान पतियों को निर्वाह-व्यय देने के मामले अब जल्दी-जल्दी प्रकाश में आने लगे हैं । इस विषय में न्यायालयों का दृष्टिकोण सराहनीय रहा है ।

—११-१२ त्रिवेणी नगर,
मीरपुर कैंट, कानपुर-२०८००४

# सहनशीलता का पाठ

बात उन दिनों की है, जब हर एक बैंक की नौकरी के लिए अलग-अलग परीक्षाएं होती थीं । मुझे यूनियन बैंक की लिखित परीक्षा हेतु बुलाया गया था । मैं घर से निकला तो समय पर था, परंतु रास्ते में साइकिल पंचर होने के कारण लगभग १५ मिनट बाद परीक्षा केंद्र में पहुंचा, मेरी परिस्थिति को देखते हुए केंद्र इंचार्ज ने मुझे परीक्षा में बैठने की अनुमति दे दी, परंतु अतिरिक्त समय देने से मना कर दिया । मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और बदहवास-सा बोर्ड पर अपना रोल नंबर देखकर परीक्षा रूम की तरफ भागा । परंतु परीक्षा रूम में जाने पर मालूम हुआ कि सभी सीट्स भरी हुई है और इस रोल नंबर पर कोई दूसरा ही परीक्षार्थी बैठा हुआ है ।

इस स्थिति को देखकर मैं, रूम इंचार्ज पर झुंझला उठा, तब उन्होंने मुझसे प्रवेश-पत्र मांगा, उसे देखने पर मालूम हुआ कि जल्दी-जल्दी में मैं, 'एस' सीरीज वाले रूम की जगह 'टी' सीरीज वाले रूम में चला गया था, क्योंकि सभी सीरीज में एक जैसे ही रोल नंबर थे, इसलिए यह गलती हो गयी थी । मैं जल्दी से अपने 'एस' सीरीजवाले रूम में गया और परीक्षा देकर बाहर निकला, 'टी' सीरीजवाले रूम इंचार्ज को देखकर मैं आंखें नहीं मिला पा रहा था । उन्होंने मेरी स्थिति समझी और पास आकर बोले, "बेटा यह तो बैंक में नौकरी के लिए लिखित परीक्षा ही है, नौकरी के बाद ग्राहकों के साथ तुम्हें बहुत सहनशीलता और शालीनता का व्यवहार करना पड़ेगा, तभी तुम इस क्षेत्र में सफल हो पाओगे, मेरी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं ।"

इस घटना को बीते काफी समय गुजर गया परंतु अब भी जब मैं बैंक के लिए निकलता हूं, तो उन महाशय के शब्द मेरे कानों में गूंजते रहते हैं ।

**— संतोष श्रीवास्तव**

यूनियन बैंक आफ इंडिया,
अंचलीय कार्यालय, गंगोत्री भवन,
टी.टी. नगर, भोपाल-४६२००३ (म.प्र.)

# यादगार दस्तक

आम तौर में यह देखा गया है कि हम लोग उन लोगों को ज्यादा इज्जत देते हैं और पसंद करते हैं, जो बाहरी रूप में खूबसूरत हों या आकर्षक हों । मन के सौंदर्य को हम न पहचानते हैं न पहचानने की कोशिश करते हैं । यह शायद, सदियों से चली आ रही दुनिया की रीत है ।

मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था । वक्त की करवट ने कुछ मेरे साथ ऐसा रूखा बर्ताव किया कि मैंने जीवन जीने की इच्छा ही छोड़ दी थी । माता-पिता, भाई सभी समझाकर थक गये थे । लेकिन मुझ पर कोई असर नहीं हुआ । मैंने यह निश्चय कर लिया था कि मेरा जीवन, मेरे अपने आप के लिए, परिवारवालों के लिए

और दुनिया के लिए एक बोझ के सिवा कुछ भी नहीं, और मौत के इंतजार में मेरे दिन कटने लगे। इन्हीं बुरे दिनों में उसने मेरे जीवन में प्रवेश किया। हालांकि, वह दिखने में कुछ खास नहीं थी, और तो और अपंग भी ! इसलिए पहली मुलाकात में मैंने उससे कोई खास बातें नहीं की थी, सिवाय मन ही मन सहानुभूति प्रकट करने के। परंतु वक्त के साथ धीरे-धीरे मैंने उसे पहचाना, अपनी भूल का अहसास किया, और उसे दुनिया की सबसे 'खूबसूरत' लड़की होने का दर्जा दिया।

पड़ोसी होने के कारण थोड़ी-थोड़ी, इधर-उधर की बातचीत हम दोनों के बीच, धीरे-धीरे गहरी दोस्ती में बदल गयी। रोज हम शाम को एक-दूसरे का इंतजार करने लगे। उससे मुझे बहुत-कुछ सीखने को मिला, जो शायद उसके खूबसूरत न होने के कारण उससे दोस्ती न कर, मैं खो देती। उसने मुझे जीने का वह हौसला दिया, जिसके कारण आज में जिंदा हूं। उसने मुझसे एक बार कहा था, "देखो निर्मला, जरूरी नहीं हम हमेशा ही जीवन में आगे देखकर चलें और सीखें। पीछे देखकर भी बहुत कुछ सीख सकते हैं। निराश हम तब होते हैं, जब हम, हमसे सफल लोगों को देखकर उनके-जैसे बनना चाहते हैं, पर बन नहीं पाते। क्यों नहीं हम उन परेशान लोगों को देखते, जिनके मुकाबले हम पूर्णतः खुश हैं, सफल हैं।" अपने-आप को उदाहरण स्वरूप लेते हुए उसने कहा था, "अब मुझे ही देख लो, मेरा एक पैर और हाथ बेकार है तो क्या हुआ ? दूसरे दोनों तो अच्छे हैं, जिससे मैं सभी काम कर पाती हूं। मैं तो उन लोगों को देखकर सोचती हूं, जिनके दोनों पैर बेकार हैं कि मैं कितनी अच्छी स्थिति में हूं— कम-से-कम एक पैर तो मेरा साथी है। लेकिन मालूम है ऐसे लोग भी हिम्मत से जीते हैं, जीने की आशा छोड़ नहीं देते। अरे ! जीवन जीने के लिए होता है, उससे डरकर भागने के लिए नहीं। निराशा तो पलभर की साथी होती है हमारे जीवन में, उसे जीवन-साथी कभी भी नहीं बनाना चाहिए।" उसकी इन्हीं बातों ने मेरे जीवन को पूर्णतः बदल दिया था। मेरे मन में उसी पल जीने की और जीवन से लड़ने की एक नयी आशा जाग उठी थी। मैंने निश्चय कर लिया था कि मैं जिऊंगी— हिम्मत से !

आज, हम दोनों को मिले दो-तीन साल से ज्यादा हो चुके हैं। लेकिन आशा की 'ज्योति' जो वह मेरे सम्मुख रख गयी है, अभी भी अपना प्रकाश चारों तरफ फैला रही है, और भविष्य में फैलाती रहेगी।

यह मेरे जीवन की सबसे खूबसूरत और यादगार 'दस्तक' थी।

**• निर्मला अय्यर**

— एफ-६२, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल
(म.प्र.)
पिन-४६२००३

**जो पुरुष अपनी जाति, आश्रम या कुल के धर्म को त्याग देते हैं, उनकी शुद्धि किसी प्रायश्चित से नहीं हो सकती।** —महाभारत

**प्रसिद्ध होने का यह एक दंड है कि मनुष्य को निरंतर उन्नतिशील बने रहना पड़ता है।** —चैपिन

"आप पर कुल घोषित इनाम कितना था ?"

"ढाई लाख । दो लाख मध्य प्रदेश सरकार से । शेष राजस्थान और उत्तर प्रदेश से । मुझे जिंदा या मुरदा पकड़ने के लिए ।"

"आप पर कुल मुकदमें कितने बने थे ।"

"लगभग चार सौ मुकदमे कत्ल के । पर वास्तव में चले कुल दो थे । एक में फांसी की

"हाई कोर्ट से छूट गये थे फांसी की सजा के मामले में । जे. पी. गुप्ता हमारे वकील थे । आजन्म कारावास की सजा जेल में घट गयी थी ।"

"जिस मामले में सजा हुई थी उसमें कई मजदूर भी मर गये थे ।"

"लोगों ने गवाही दी थी ?"

"दी थी ।"

### दस्यु मोहर सिंह के रोमांचक अनुभव

# पटवारी सुधर जाए तो आदमी डाकू न बने

● दिनेश चंद्र दुबे

सजा हुई थी और एक में आजन्म कारावास । पुंडलीक साब के न्यायालय में । न्यायालय विशेष अदालत जेल में ही लगती थी । शेष सरकार ने वापस ले लिए थे ।"

"लेकिन आप तो मेरे सामने बैठे हैं । फांसी और आजन्म कैद की सजा . . ."

"आप फरार क्यों हुए थे ।"

"हमारे घर की एक बीघा जमीन हमारे रिश्तेदार जगदीश बगैरा, गब्बर डाकू के दम पर हमसे छीने ले रहे थे । मैंने जब देखा तो मैंने कहा कि यदि उसी का डर है तो हम भी डाकू हो जाएंगे । इसी कारण दविश लगा के मैंने

मोहर सिंह व लेखक

जगदीश को मारा और फरार हो गये थे । वो जमीन मेने फिर ले ही ली थी ।''

''आपकी दृष्टि में डाकू बनने के मुख्य कारण क्या हैं?

''गांव के आदमी को सबसे ज्यादा लड़ानेवाला आदमी होता है पटवारी । यदि पटवारी सुधर जाए तो आधा आदमी डाकू न बने । वह किसी की जमीन किसी के खाते में डाल देता है और फिर आपस में गांववाले लड़ते रहते हैं । जिसके नाम जमीन चढ़ जाती है वह समझता है हमें मिल ही जाएगी । और जिसकी होती है वह देगा क्यों । बस मुकदमेबाजी चालू रहती है । पटवारियों का सुधार हो जाए तो सारी दुनिया सुधर जाए । हमारे लिए सबसे बड़ी समस्या पटवारी है ।''

''ऐसी कोई घटना आपको याद पड़ती है ?''

''हां, हां । कोलुआ के ठाकुर है उनकी जमीन वाढई पटवारी ने इतै वितै कद्दई । जगमोहन था उस ठाकुर का नाम । वे हमाये संग फरार थे । बाद में जगमोहन अलग हो गये थे । हमने कोलुआ गांव जो नगरा थाने में पड़ता है जाकर उस पटवारी को पकड़ लिया ।''

''फिर ?''

''हमने उसे मारा नहीं । नाक काट ली थी । मारौ जासै नई कै और पटवारी देखे तो सोचे कै ऐसा करे से ऐसो होत । चकुआ से कटवाई । दूसरे सौं कटवाई हती । अगर पैले पतो होता तो और दंड देतौ । हमें तो बाद में पता चलौ के गांवन के झगड़न को असली कारण पटवारी है । पटवारी सुधर जाए तो सब सुधर जाए ।''

''आपने अपराधों में सबसे सुरक्षित अपराध किसको माना और कोन से अपराध सबसे ज्यादा किये ।''

''पकड़ । (अपहरण) ।''

''क्यों ?''

''पकड़ों में पइसा अच्छो मित्तो और कछू बुरौ काम भी न करने पत्त तौ । खुद नइयाँ तौ छुडाने वारो कहू से लाके देतो ।''

''कुल आपने कितनी पकड़ की होगी ?''

''शुमार नहीं है । हजारों ।''

''सबसे अधिक धन प्राप्त कर छोड़नेवाले अपहरण का कोई किस्सा सुनाएं ?''

''एक बनिया की पकड़ मैं मैने आठ लाख रुपये लिये थे । दिल्ली का बनिया था । गुप्ता । शायद राजकुमार नाम था । मूर्ती चोर था ।''

''कैसे पकड़ा आपने दिल्ली के आदमी को ?''

''हमारे यहां एक गांव है गढी टेटरा । मुरैना जिले की सबलगढ़ तेहसील में । वहीं का एक बढई था । करना नाम था उसका । वो भी मूर्ती चोर था । यहां से मूर्तीयां ले जाकर दिल्ली फिल्ली ले जाके बेंचत तौ । हमने वाय पटाओ । बाने कई मैं लिवा लाऊगो पकड़ के । मैने कही कैसे ? जौ बोलो हम बा सैठ को ल्याये । वौ गाओ सैठ पै दिल्ली बोलो एक मूर्ती है बढिया । ऐसी आपने कभऊ न देखी हुयै । सुनके सैठ बोलो हम पैले मुनीम कौ भेजे है । वासे टेलीफून करा दिये यदि वाये ठीक लगे तई हम आय जायगें । मुनीम आओ हमने खट्ट पकड़ लओ । फिर वा मे दये डंडा । कर फोन । बाने तब श्यामपुरा टेशन से दिल्ली फोन करो । सेठ हवाई जहाज से आओ । हमने

*"गांव के आदमी को सबसे ज्यादा लड़ानेवाला आदमी होता है पटवारी। यदि पटवारी सुधर जाए तो आधा आदमी डाकू न बने। वह किसी की जमीन किसी के खाते में डाल देता है और फिर आपस में गांववाले लड़ते रहते हैं। जिसके नाम जमीन चढ़ जाती है वह समझता है हमें मिल ही जाएगी। और जिसकी होती है वह देगा क्यों। बस मुकदमेबाजी चालू रहती है। पटवारियों को सुधार हो जाये तो सारी दुनिया सुधर जाए। हमारे लिए सबसे बड़ी समस्या पटवारी है।"*

ग्वालियर से अंबेस्डर कार भेजी महराजपुरा हवाई अड्डे पै। करना कार में बैठके लेवे गओ। गाडी मे बिठाके वह आरओ तो सेठ चौका गाडी किते जगह मे ले जा रओ। तो वो बोलो मराज ऐसी मूर्ती तो जंगल में ई हुये। सेठ चुपा गओ। इतै हम लोग तैयार बैठे ते के इतनी दूर है तो इतनी दूर मे महराजपुरा से गाडी इतै पौच पै। जैसई गाडी आई हमने सेठ पकलओ।"

"कितने रुपये मांगे आपने ?"

"मांगे तो बीस-पच्ची लाख। पर बात तै भई आठ लाख में। सेठ ने अपनी बीवी को खबर भेजी। बीबी आई कपकपाती। भोत भैभीत हती। बाने हमे भइया कै दई। भैय्या कई तो हमने बीस हजार बाये बहिन के नाते और कम कद्दये।"

"आप खुद कोई पकड़ करने कभी गये ?"

"मैं केवल एक बेर पकड़ करने गऔ। फिर न गऔ। टुकड़ी भेज के पकरा लेत ते। हम गये तो हमने २५ मौड़ा स्कूल से पकर लये। छट छटा के दो रै गये। उनऊ के बापन पै कुल चार सौ रुपया हते। का लेते। उल्टो किराओ देके लोटाये। तब से मैं खुद कभऊ न गओ।"

"मोहर सिंह हंस पड़ते हैं। ५० वर्ष के लंबे-चौड़े छह फुटे बागी। १९७२ में वे जौरा जिला ग्वालियर में हाजिर हुए थे जयप्रकाश नारायण के समक्ष। आज जेल से छूटकर मेरे सामने बैठे स्मृतियों को मेरे आग्रह पर कुरेद-कुरेदकर अपने जीवन की विशिष्ट घटनाओं को बताने आये थे। मेरे आग्रह पर।"

"अच्छा ठाकुर साहब एक बात बताइए। आपको लोग डाकू क्यों कहते हैं ? जबकि आपने कोई डकैती डालना तो बताया नहीं है।

"वैसे हम लोग खुद को बागी कहते हैं। लेकिन जनता तो हमै डाकू ही कहै है। फिर कभी-कभी हम डकैती भी डालते थे।"

"आपने सबसे बड़ी डकैती कहां डाली थी ? और कैसे ?"

"राजस्थान में। पडौरा कस्बे में डाली थी। हमारे गोहद, मेहगांव जैसा ही कस्बा था। (लगभग २५ हजार की आबादी वाली भिंड जिले की तहसील जहां न्यायिक दंडाधिकारी

एस. डी. ओ., रेवेन्यू और पुलिस की रेंक तक के अधिकारी रहते है ।) मैना जाति का गांव था यह । बड़े पैसेवाले लोग होते हैं । अफीम वगैराह की खेती करते हैं ये लोग ।''

''आपको पता कैसे चल जाता था कि यहां के लोग अमीर है और यहां डकैती डालना ठीक होता है ।''

''हम लोग राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश सभी जगह घूमते रहते हैं । हर जगह आदमी बन जाते हैं । दिन के दो बजे लूटा था हमने हम एक सौ आठ लोग थे । टी. एम. सी., स्टेनगन और बंदूकों से लैस । थाना कस्बे के पास ही था । मैं और मेरे कुछ विशिष्ट साथी थाने की तरफ लग गये थे । शेष ने पूरे गांव को घेर लिया था । फिर क्लोज सर्किल बनाते गये थे ।''

''वह डकैती कम से कम बीस-पच्चीस लाख की डकैती पड़ी थी । सैकड़ों तो सोने के कड़े औरतों से उतरवाये थे । खुदई उतांत्त जात ती । मना कौन करेगो । डाके के एक घंटे बाद हम लोग चल दिये थे । मध्य प्रदेश की ओर ।''

''अच्छा एक बात बताइए ठाकुर साहब । इस क्षेत्र में डाकू किस जाति के लोग ज्यादा होते हैं ?''

''गूजरों में । हम गूजर है । बाद में ठाकुरों में । कुशवाह भदौरियों में ।''

''अपराध के समय क्या आप इन जातियों के लोगों के यहां कभी डकैती, पकण किये ?''

''कभी नहीं ।''

''क्यों ?''

''तई तो दविश पर जाती । वेई खुद डाकू बन जाते ।

''सबसे ज्यादा किन लोगों के यहां अपराध करते थे आप लोग ?''

''मैना, किरार आदि ।''

''क्यों ?''

''पईसे वाली कौम है ।''

''ब्राह्मणों के यहां ?''

''बहुत कम । क्योंकि उनसे मिलता-जुलता कुछ नहीं था ।''

''कभी बिना पैसे के भी पकड़ छोड़ते थे ।''

''कई बेरे । किसी ने रंजिश से पकड़वा दिया । गलत सूचना पर हमने पकड़ कर ली या कोई हम और आप जैसे आदमी की सिफारिश आ गयी । आखिर हमारे आदमी भी तो रहते थे ।''

''आप लोग ज्यादातर ठहरते कहाँ थे ?''

''जंगलों में ।''

''परेशानी नहीं होती थी ?''

''आदत पज्जाती थी । एक दिन कौ काम तो थौ नहीं ।''

''खाने-पीन और वैसी कोई परेशानी नहीं होती थी ?''

काहे की परेशानी । हमारी औरते हमारे पास आती रहती थीं ।''

''खाना तो हम आप लोगों से भी अच्छा खाते थे । जंगलों में घी, दूध की क्या कमी ।''

''शराब पीते थे ?''

''मैं तो नहीं पीता था जब तक फरार रहा । कोई जहर मिला दे तो !''

''सामान कौन लादता था ? कितने दिन का सामान रखते थे कम से कम ?''

''दो दिन का । लादती थी पकड़ें और नये

गैंग में आये साथी ।"

"पकड़ें लोग क्यों कराते थे ?"

"कमीशन देते थे हम ।"

"राजकुमार गुप्ता की पकड़ में कितना कमीशन दिया था आपने ?"

"पचास हजार ।"

"बिना कमीशन के भी पकड़ें कराते थे ?"

"कई बार । रंजिश निकालने के लिए ।"

"हथियार कौन-कौन से थे आप लोगों पर ?"

"कौन से नहीं थे जे पूछो आप ?"

"कहां से आते थे हथियार ?"

"अगर सरदार, पंजाबी न दे तो हथियार आ ही नहीं सकते थे । बार्डर पर कोई न कोई आदमी तो मरता ही है । मरनेवाले के हथियार छुपाकर हमें बैंच दिये जाते थे । अपनी टी. एम. सी. मैंने पचास हजार में खरीदी थी ।"

"रुपयों का बंटवारा कैसे करते थे ?"

"हथियार के ऊपर । जैसे इस हथियार का इतना भाग, इसका इतना ।"

"ईमानदारी से बंटवारा होता था ?"

"बिलकुल ईमानदारी से । ईमानदारी ने बरते तो कौन साथ देगा या वफादार रहेगा ।"

"आप कितने पढ़े लिखे हैं ?"

"एक भी दर्जा नहीं । और में लगाउत तो अशोक कौ बिल्ला ।"

"वे फिर हंसते हैं, "अब जरूर जेल में रहकै दस्तखत कर लैत हौं ।"

"आप लोग पुलिस की वरदी क्यों पहिनते थे ?"

"गांव में कोई शक नहीं करता था कि हम डाकू हैं । वे तो जभी समझते थे कि उल्टे बिंद गये जब पकड़ होती या लूट होती की, हम पुलिसवाले नहीं हैं ।"

"जब आप फरार हुए आपकी उम्र क्या थी ?"

"अठारह साल ।"

"कितने साल फरार रहे ?"

"पंद्रह साल ।"

"इस दौरान किसी साथी ने कोई विश्वासघात किया ?"

"कभी नहीं । कर भी नहीं सकते थे । करते तो जाते कहां पुलिस मार डालती ।"

"पुलिस क्या झूंठे एकाउंट दिखाती थी ?"

"नहीं । झूंठे दिखाती तो मानता कौन । अलग दिखता है ।"

"आपसे पुलिस के इंकाउंटर हुए ?"

"कई बार । महिने में दो-एक बार तो गोली चल ही जाती थी ।"

"कभी आपके आदमी मरे ।"

"एक बार । गुना जिले में ५-७ आदमी मरे थे । पर पुलिस के भी इससे ज्यादा मरे होंगे ।"

"क्या पुलिस से पैसे बंधे रहते थे ?"

"एकाध बार । हम जहां रुकते थे वहां हमारी सूचना कौन देता है, इसका पता हमें इसी तरह लगता था । कभी-कभी थाने पर पैसे भेज

दिये तो दविश नहीं पड़ती थी ।''

''आपके फरार जीवनकाल में आपको सबसे ईमानदार पुलिस अधिकारी कौन-सा लगा ?''

''अध्योध्यानाथ पाठक । वे कभी पैसा नहीं बांधे और कहलाते रहे कि हमारी भैंट आमने-सामने ही होगी ।''

''किसी बड़े अधिकारी को पैसे दिये ?''

'' बगैर पैसे के हम जिंदा रहते ''

''कितने ? पार नहीं । दो-पांच लाख ।''

''क्यों ?''

''हम जिस छोटे-मोटे जंगली थाने में रुकते थे उसे परेशान न करे इसलिए ।''

''रघुनंदन शर्मा एक डी. एस. पी. हैं उन्हें जानते हो ?''

''जानता हूं । बड़ा पोटू । (पाटने वाला) है पर है ईमानदार । उसे गोली लगी थी एक बार ।''

''अच्छा आपके बाल-बच्चे हैं ?''

''हैं । दो मौड़ा एक मौड़ी । बच्चा आठवीं और छटवीं में पढ़ते हैं । बच्चियों को हम नहीं पढाते । क्या करना है पढा के ?''

''पत्नी है ? नाम ?''

''कभी देश के सबसे चर्चित खूंखार माने जानेवाले दस्यु मोहर सिंह गूजर शरमा गये ।''

''रामबेटी है नाम ।''

''आपका ब्याह फरार होने के बाद हुआ था या पहिले ।''

''फरारी में ।''

''कैसे ।''

''गांव के बूड़न ने ठान लई और संगातियन ने । हमैं तो जब पतौ चलौ जब . . .''

''ब्याह क्या बकायदा बाजे-गाजे के साथ हुआ था ?''

''हां जौरा (जिला मुरैना) सर्किल के एक गांव में । बाकायदा बरात आई । गई ।''

''पत्नी को रखा कहां था ।''

''ग्वालियर । दूसरे के नाम से मकान था । कभी हमारे पास भी आ जाती थी जैसे और साथियों की पत्नियां आती थीं ।''

''अच्छा ठाकुर साहब इतना पैसा आया था वह कहां गया ?''

''है हमाये पास । २०० बीघा जमीन ली है भाइयों के नाम । यहां जमीन तौ पचास-पचास हजार बीघा मिलै । मेरे नाम केवल ३०-३५ बीघा जमीन है । सरकार से अलग मिली है १५ एकड़ । खेती होती है ।''

''आपको हाजिर होने के बाद कैसा लगता है ?''

''बहुत अच्छा ।''

''इसमें पत्नी का कोई सहयोग ?''

''वौ का जाने जब हाजिरी की बात चली तब बोली अच्छा है ।''

''आप हाजिर होना चाहते थे ?''

"बिलकुल । [illegible] कब तक बचते । कभउ तो मरते ही ।"

"अब कोई परेशानी है । कोई डर ?"

"कोई नहीं । डर कैसौ माराज ।"

"पुराने जीवन की याद आती है?"

"कभी-कभी जब कभऊ कोऊ परेशानी आती है । वैसे ऐसी कोऊ परेशानी नहीं आई ।"

"नेताओं में आपको सबसे अच्छा कौन लगा ।"

"इंदिरा जी ।"

"हम लोगों को प्रकाश चंद्र सेठी ने उनसे मिलवाया । उन्होंने तुरंत सरकार को लिखा कि उन्हें छोड़ दिया जाए । उनकी बात कौन टालता ।"

"आप कैसी जेल में रहे ।"

"खुली में । फिर कभी-कभी छह-छह माह बाहर भी रहते थे और डाकुओं को हाजिर करने के लिए प्रयत्नशील रहकर । सरकार इससे खुश थी । छूट गये ।"

"आपको फांसी होने पर डर नहीं लगा ।"

"नहीं । क्योंकि सरकार ने पहिले ही कह दिया था कि किसी को फांसी नहीं होगी । सरकार ने मुकदमें वापस भी इसीलिए ले लिये थे । राजस्थान सरकार के मामले भी नहीं चले ।"

"क्या कभी कोई गैंगों में आपस में गोली चलती थी । झगड़े वगैरह होते थे ?"

"होते तो थे । पर हम पंचायत करके निपटा [illegible] तो पुलिस को फायदा होगा ।"

"आपकी यह बंदूक ?"

"लायसैंसी है । सरकार ने लायसैंस दिया है । डकैत काल के हथियार तो सभी हमने आत्म समर्पण के साथ ही जमा कर दिये थे ।"

अंत में एक बात और । "क्या आप लोगों के मन में जजों के प्रति कभी कोई बदलात्मक भाव आया ?"

"कभी नहीं । असली काम तो गवाह कत्ते । बोलेंगे तो सजा । नहीं तो बरी । जज बा में काह करैगो । कोट कचरयिई हमने पैली वो हाजिर होने के बाद देखो पैले तो हम जानतऊ नाइते कै . . . चले अब माराज मेहगांव तक जानौई है अबे ।"

"मेहगांव भिंड से २० किलोमीटर दूर कस्बा है । मोहर सिंह अपने परिवार के साथ आजकल वहीं रहते हैं । वे हमारे आग्रह पर मेरे बच्चों के साथ एक-एक फोटो खिचवाकर पांव छूने लगते हैं, (क्योंकि मैं ब्राह्मण हूं) तो मैं उनका हाथ पकड़ लेता हूं । कंधे पर बंदूक लटकाये उन्हें दरवाजे पर छोड़ने जाते वक्त मैं सोचता रहता हूं कि क्या यही वह मोहर सिंह है जिनके नाम से कभी इस शहर में शाम होते-होते लोग दरवाजे बंद कर तब तक नहीं खोलते थे जब तक सुनिश्चित न हो जाए कि आगुंतक घर का ही सदस्य है ।"

**—प्रथम अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश,**
**भिंड (म. प्र.) ४७७००१"**

***प्रेम अंधा है और प्रेमी उन सुंदर मूर्खताओं को जिन्हें वे करते हैं, नहीं देख सकते ।***

**—शेक्सपियर**

# वैद्य की सलाह

**योगेश, किशनगढ़ :**

**प्रश्न : उम्र १७ साल । मुंह से बदबू बहुत आती है । बात करने में भी परेशानी होती है ।**

**उत्तर :** 'विड़ंगारिष्ट' दो-दो चम्मच सम भाग पानी मिलाकर भोजन के बाद दोनों समय पीयें ।

**अशोक, पटना**

**प्रश्न : उम्र २५ साल । बायें हाथ में छोटी व साथ वाली अंगुली में कुछ अहसास नहीं होता । स्पर्श की अनुभूति नहीं है । एलोपैथी इलाज किया विशेष लाभ नहीं ! स्थायी व अच्छा इलाज लिखें ।**

**उत्तर :** 'रसायन रस' दो ग्राम लेकर तीस मात्रा बनायें, एक मात्रा सुबह शहद से लें । 'अश्वगंधारिष्ट' दो-दो चम्मच भोजन के बाद दोनों समय पीयें । 'त्रयोदशांग गूगल' एक वटी रात दूध से लें । छह माह नियमित औषधियां सेवन करें ।

**राजेश कुमार सिंह, नैहाड्री प. बंगाल**

**प्रश्न : उम्र १९ वर्ष । आठ-नौ बार बुखार आ चुका है । कमजोरी बहुत है । भूख नहीं लगती । सिर के बाल झड़ते हैं ।**

**उत्तर :** 'द्राक्षासव' दो चम्मच, 'लोहासव' दो चम्मच व सम भाग पानी मिलाकर भोजन के बाद दोनों समय नियमित तीन माह लें ।

**वासु, पिथौड़ागढ़**

**प्रश्न : उम्र २० वर्ष । गले और दोनों हाथों में चकत्ते पड़ गये, कृपया इलाज बतायें ।**

**उत्तर :** 'खदिरारिष्ट' दो-दो बड़े चम्मच भोजन के बाद दोनों समय नियमित एक वर्ष सेवन करें ।

**सत्येन्द्र, अनपरा**

**प्रश्न : उम्र २० वर्ष । लगभग दो वर्ष से पेट में वायु बहुत बनती है । मल के साथ छोटे-छोटे कीड़े भी निकलते हैं । शारीरिक विकास भी आयु के अनुसार नहीं हो रहा है ।**

**उत्तर :** 'कृमि मुदगर रस' एक-एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें 'रोहितकारिष्ट' दो चम्मच 'द्रक्षारिष्ट' दो चम्मच भोजन के बाद दोनों समय लें ।

**कु. पंकजरानी, नगीना**

**प्रश्न : उम्र २८ वर्ष है । मेरे दोनों स्तनों में गांठें महसूस होती हैं । किसी प्रकार का दर्द भी नहीं होता है । केवल दबाने पर अहसास होता है, उचित दवा लिखें ।**

**उत्तर :** योग्य शल्य चिकित्सक से परामर्श कर रोग निदान शीघ्र करायें ।

**विजेन्द्र गर्ग, भिवानी**

**प्रश्न : बिटिया की उम्र ६ साल है । अभी तक चली नहीं है । डॉक्टरों को दिखाया है, कोई खराबी या बीमारी नहीं बताते ।**

**उत्र :** 'रस राज रस' दो ग्राम 'असन्ध चूर्ण' पंद्रह ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह, शाम दूध से दें । 'महानारायण तेल' पैरों पर आहिस्ता-आहिस्ता मलें । छह माह नियमित औषधि सेवन करायें ।

**राजन्द्र प्रसाद, बिहारशरीफ**

**प्रश्न : आयु ५१ वर्ष । एक साल से मेरा बायां अंडकोष बढ़ गया है । धीरे-धीरे बढ़ रहा है । स्थायी इलाज लिखे ।**

**उत्तर :** 'वृद्धिवधिका वटी' एक-एक सुबह-शाम पानी से लें । 'चंद्रप्रभा वटी' रात दूध से लें ।

**आदित्य कुमार, गुमला :**

**प्रश्न : उम्र २१ वर्ष । तीन वर्ष पूर्व टी. बी. का रोगी था । अब इस रोग से मुक्त हो गया हूं । कमजोरी अधिक मालूम पड़ती है । दाहिना हाथ व पीठ में दर्द रहता है ।**

**उत्तर :** 'च्यवनप्राश अवलेह' एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें । 'द्राक्षासव' दो चम्मच, 'लोहासव' दो चम्मच भोजन के बाद दोनों समय पीयें ।

**सुनील श्रीवास्तव, सागर**

**प्रश्न : उम्र २७ वर्ष । ३-४ वर्ष से अल्सर रोग से पीड़ित हूं । काफी इलाज करा चुका हूं । साधारण दवा लिखें ।**

**उत्तर :** 'सूतशेखर रस' दो-दो वटी सुबह-शाम पानी से लें । 'धात्रीचूर्ण' एक-एक चम्मच दोपहर-रात पानी से लें ।

**अशोक, बिसाऊ :**

**प्रश्न : उम्र २३ वर्ष । पैर बहुत दुखते हैं विशेषकर गरमियों में ज्यादा परेशानी होती है ।**

**उत्तर :** 'केशोर गूगल' एक-एक वटी सुबह-रात दूध से लें ।

**नमिता, वाराणसी**

**प्रश्न : आयु २३ वर्ष । बहुत समय से सिर-दर्द से पीड़ित हूं । धूप तथा जरा-सा भी गरिष्ठ भोजन सहन नहीं होता । एलोपैथी दवा के अधिक सेवन से पैरों में झनझनाहट तथा कमजोरी मालूम पड़ती है ।**

**उत्तर :** 'गोदन्ती भस्म' साठ ग्राम, देसी खांड दो सौ ग्राम, भली प्रकार मिलाकर रखें । आधा-आधा चम्मच सुबह-शाम पानी से लें । 'लवणभास्कर चूर्ण' आधा-आधा चम्मच भोजन के बाद दोनों समय पानी से लें ।

**एक भाई, हैदराबाद**

**प्रश्न : मेरे हाथ-पैर में कंपन विद्यमान है हाथ की अंगुलियां फटकती हैं । एक अजीब तरह की कमजोरी महसूस करता हूं । हस्तमैथुन की आदत है ।**

**उत्तर :** 'चंद्रप्रभा वटी' एक सुबह दूध से लें । 'ब्रह्म रसायन' एक चम्मच रात दूध से लें । 'चंदनासव' दो-दो चम्मच भोजन के बाद पीयें ।

**सुदीप, इंदौर**

**प्रश्न : उम्र २२ वर्ष । पिछले छह वर्षों से अकसर सरदी, जुकाम व जोरदार खांसी हो जाती है । ठंडा पानी, दही, चावल, केला, नीबू नहीं ले सकता । एलोपैथी से बहुत इलाज कराया, उनका कहना है कि फेफड़ों में कफ सूख गया है । बचपन में निमोनिया बिगड़ गया था ।**

**उत्तर :** 'तालीशादि चूर्ण' साठ ग्राम, 'चंद्रामृत' दस ग्राम, 'टंकणभस्म' दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । 'द्राक्षारिष्ट' दो चम्मच 'वसारिष्ट' दो चम्मच भोजन के बाद पीयें । 'च्यवनप्राश' एक-एक चम्मच रात दूध से लें । तीन माह नियमित औषधियां सेवन करें ।

**अजय पांडेय, मेरठ**

**प्रश्न : पिछले दस वर्षों में दाहिने हाथ की कोहनी से नीचे का हिस्सा पतला हो गया है । कमजोरी रहती है । कृपया कुछ सुझायें ।**

**उत्तर :** 'अश्वगंधाचूर्ण' सौ ग्राम, 'महायोगराज गूगल' पंद्रह ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-रात दूध से लें । 'महाभाषतेल' प्रतिदिन रुग्न स्थान पर मालिश करें । छह माह नियमित औषधियां सेवन करें ।

**—कावराज वेदव्रत शर्मा**

**—बी ५/७, कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१**

**कर्म में वाक्शक्ति होती है ।**

**—शंकराचार्य**

**कला का अंतिम और सर्वोच्च ध्येय सौंदर्य है ।**

**—गेटे**

आइए चलें जंगल की ओर

# वृक्ष और लोक मानस

● गिरीश भंडारी

जब से मनुष्य ने धरती पर जन्म लिया, उसके मन में वनस्पति के प्रति एक विशेष मोह, आकर्षण और श्रद्धा थी। बिना किसी कारण पेड़ या झाड़ियां काटना न सिर्फ एक अपराध माना जाता था, बल्कि एक निर्दय आस्थाहीन कार्य भी।

लिखित इतिहास में चर्चा है कि जूलियस सीजर के समय पूरा यूरोप अत्यंत घने वनों से ढका था। चार सौ साल पश्चात, महान रोमन सम्राट जूलियन ने वन संपदा को रोमन साम्राज्य की सबसे अमूल्य निधि बताया था। उसके राज्य में तो स्थिति यह थी कि अगर कोई वृक्ष या पौधा कुम्हलाया दिखायी दे जाता था, तो राहगीर चिल्ला-चिल्लाकर सब लोगों का ध्यान आकर्षित करते थे। पानी की बाल्टियां डाली जाती थीं, पेड़ की पत्तियों की धूल हटायी जाती थी और पेड़ के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना की जाती थी! ऐसा विश्वास था कि वनस्पति जीवन युक्त है और सृष्टि का एक महत्त्वपूर्ण अंग। उत्तरी अमरीकी रैड इंडियन लोगों का तो वनस्पति और प्रकृति प्रेम अद्वितीय है।

### वृक्ष पूजने की परंपरा

फिजी द्वीप समूह के युसावा द्वीप के नागरिक नारियल को तोड़ते समय नारियल को संबोधित करते हुए कहते थे, "मुझे आज्ञा दो कि मैं अपनी क्षुधा मिटाऊं।"....सेमल के वृक्ष सारे

***जैसे-जैसे तथाकथित सभ्यता का विकास हुआ, वन और वनस्पति मात्र दोहन का साधन बन गयी। आज हाल यह है कि वन प्रायः लुप्त हो गये हैं, हजारों प्रकार की वनस्पतियां सदा के लिए समाप्त हो गयीं हैं, और वन और जीवन से संबंधित जीव प्रणाली बुरी तरह अस्त व्यस्त हो गयी है...।***

अफरीका में पवित्र माने जाते थे। भारत में भी वृक्षों को पूजने की परंपरा है। तुलसी के साथ तो भारतीय मानस की विशेष निष्ठा है। लक्ष्मी या रुक्मिणी स्वरूपा तुलसी का विधिवत शालिग्राम से पाणिग्रहण भारतीय परंपरा में कालांतर से समाहित है। निश्चित है कि भारतीय मनीषी तुलसी के कीटाणु नाशक व स्वास्थ्यवर्धक गुणों से परिचित थे, और तुलसी के संरक्षण के लिए इस विधान की रचना की गयी थी।

### गर्भवती स्त्री की तरह सम्मान

मलक्का में लौंग की लताओं में जब पुष्प लगने लगते हैं, तब उनको वही सम्मान, आदर और संरक्षण दिया जाता है जो गर्भवती महिलाओं को। यह माना जाता है कि यह पुष्पवेष्टित लताएं अब गर्भवती हैं। इनके सामने शोरगुल, अग्नि व तेज रोशनी करना सख्त मना होता है। जावा में चावल की फसल को भी पकाते समय तक वही सम्मान दिया जाता है।

चीन में मृतकों की कब्रों के ऊपर पेड़ लगाने का रिवाज हजारों साल पुराना है। यह माना जाता है कि पेड़ों का विस्तार और उनका सहनशील व्यक्तित्व मृतक की आत्मा को शांति पहुंचाएगा और उसे शक्ति प्रदान करेगा।

### वृक्ष से अनुमति

सुमात्रा में तो पेड़ काटने से पहले उस पेड़ की आज्ञा लेने का विधान था। किसी पेड़ को काटने से पहले काटनेवाला कुल्हाड़ी उठाने से पहले पेड़ को संबोधित करते हुए कहता था,
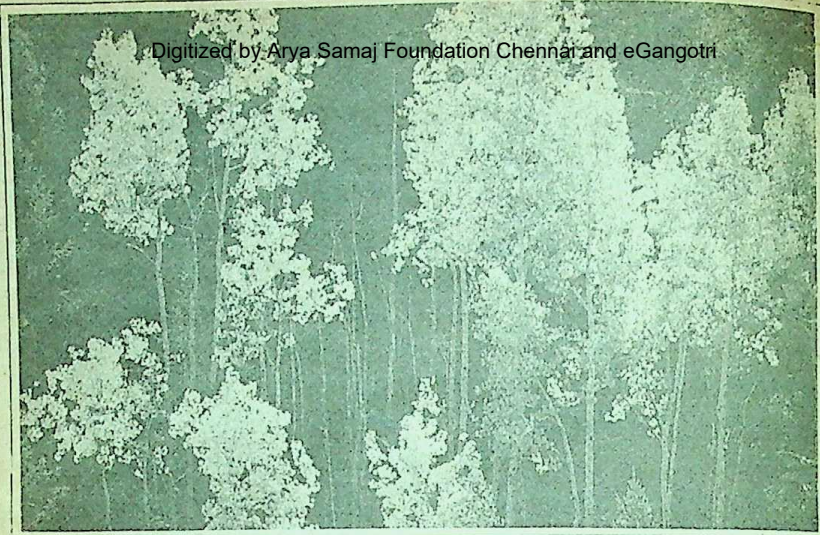
"वृक्ष सुनो । मैं तुम्हें नहीं काटता पर क्या करूं मैं मजबूर हूं । सरकार का हुक्म है कि तुम्हें काटकर सड़क बनाने का रास्ता साफ किया जाए । मुझे क्षमा करें मेरे मित्र, मेरे रक्षक... !"

...फिर तो ऐसा भी होने लगा कि अगर कोई जंगल का हिस्सा साफ करने की आवश्यकता पड़ी तो लोग झूठमूठ ही एक कागज को खोल लेते थे और पढ़ना शुरु करते थे, "क्या करें जंगल के वृक्षों । डच सरकार का हुक्म है कि जंगल को साफ किया जाए....अति शीघ्र । अगर मैं तुम्हें साफ नहीं करता हूं तो मुझे सूली पर चढ़ा दिया जाएगा.... ।"

## जीवन श्रृंखला और पेड़

पेड़ों और वनस्पतियों के प्रति प्रेम और श्रद्धा को मात्र अंधविश्वास मानना उचित नहीं । मानव ने अपने आविर्भाव के समय से ही देख लिया था कि संपूर्ण सृष्टि एक जंजीर है, जिसकी कड़ियां हैं मनुष्य, पशु-पक्षी, वनस्पति, नदियां, पर्वत और अन्य सभी वस्तुएं जो प्रकृति में विद्यमान हैं ।

इस विचार को धक्का लगा सत्रहवीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के जन्म से । जहां इस क्रांति ने मनुष्य को तकनीकी ज्ञान और शक्ति उपलब्ध करायी, वहीं उसके मन से प्रकृति के प्रति श्रद्धा और आदर की भावना को भी कम कर दिया । धीरे-धीरे—जैसे-जैसे तथाकथित सभ्यता का विकास हुआ, वन और वनस्पति मात्र दोहन का साधन बन गयी । आज हाल यह है कि वन प्रायः लुप्त हो गये हैं, हजारों प्रकार की वनस्पतियां सदा के लिए समाप्त हो गयीं हैं, और वन और जीवन से संबंधित जीव प्रणाली बुरी तरह अस्त-व्यस्त हो गयी है... । फल है अनावृष्टि, अतिवृष्टि, मौसमों का बदलाव, भूस्खलन, रेगिस्तानों का बढ़ना आदि ।

...आशा है कि मनुष्य अपनी 'सभ्यता' का लबादा उतार फैकेगा और अपने पूर्वजों की गौरवमय परंपरा को फिर से अपनाएगा, ताकि वन और वनस्पतियां जीवन प्रणाली को फिर से सुचारू रूप से स्थापित कर सकें ।

**—नियंत्रक, रक्षा-लेखा (पेंशन), द्रौपदी घाट, इलाहाबाद**

# जागेश्वर—पत्थरों पर उकेरी गयी कविता

●राज शेखर पंत

***व्यावसायिक संस्कृति के आधुनिक युग में भी जागेश्वर में सांस्कृतिक सात्विकता के दर्शन होते हैं । प्रकृति ने इतिहास के साथ मिलकर वर्षों सन्नाटा बुना है यहां । प्राचीन मंदिर, देवदार के वर्षों पुराने वृक्ष और पत्थर की छतवाले मकान मूक होकर भी कुछ बोलते-से लगते हैं ।***

कहते हैं "हिमालय के दर्शन मात्र से ही मनुष्यों के पाप यूं समाप्त हो जाते हैं —जैसे सुबह की पहली धूप में ओंस की नन्हीं-नन्हीं बूंदे । हिमालय से लगे हुए भारत के उस उत्तरी हिस्से में जिसे 'कुमायूं' कहा जाता है, यह विश्वास सैकड़ों वर्ष पूर्व भी दृढ़ हुआ करता होगा । इस क्षेत्र की आज भी लगभग वीरान पड़ी पहाड़ियों की चोटियों और निर्जन घाटियों में बिखरे पड़े प्राचीन मंदिरों ने, जो कि स्थापत्य कला के अद्‌भुत नमूने हैं । सबने जन साधारण के इस विश्वास को जैसे अमर कर दिया है ।

**अचानक चार सौ मंदिरों का निर्माण**

चौथी-पांचवीं शताब्दी के आसपास जबकि उत्तरी भारत राज्य के मैदानी हिस्सों पर गुप्त-वंश का शासन था, कुमायूं एक स्वतंत्र राज्य की हैसियत से 'कत्यूरी' वंश के राजाओं के अधीन था । कला और साहित्य के क्षेत्र में गुप्त कालीन रचनात्मकता के प्रभाव से कुमायूं अछूता नहीं रहा था । इस क्षेत्र के बहुत से प्रमुख मंदिरों का निर्माण इसी समय प्रारंभ हुआ, कत्यूरी राजाओं ने इन मंदिरों के माध्यम से एक नयी स्थापत्य शैली को जन्म दिया था । यह शैली अपने प्रारंभिक दौर में गुप्त कला से प्रभावित रही, परंतु कलांतर में इसका विकास गूर्जर प्रतिहार शैली के समानांतर ही हुआ । पत्थर की बड़ी-बड़ी चट्टानों को चौकोर काटकर उनमें खूबसूरत नक्काशी की जाती थी और फिर इन्हें निर्माण स्थल पर ले जाकर लोहे की सांकलों से जोड़ दिया जाता था । लगभग सातवीं-आठवीं शताब्दी ईसवी पश्चात कत्यूर वंश का पतन प्रारंभ हुआ और कुमायूं पर इलाहाबाद के पास झूंसी नामक स्थान से आये

संतान की आकांक्षी स्त्रियां रात्रि जागरण यहीं करती हैं।

एक चंद वंशीय राजकुमार सोम चन्द का शासन स्थापित हो गया। चन्द वंशीय राजाओं के समय में मंदिरों के निर्माण-कार्य में अभूतपूर्व तेजी आयी थी। लगभग चार-सौ भव्य मंदिरों का निर्माण तो अकेले अल्मोड़ा जिले में ही हुआ था।

## शंकराचार्य का योग

कुमायूं के मंदिरों में अल्मोड़ा शहर के पूर्व में लगभग छत्तीस कि.मी. दूर स्थित जागेश्वर मंदिर समूह का अपना अलग स्थान है। देवदार के घने जंगलों के बीच स्थित इस मंदिर समूह को अगर पत्थरों पर उकेरी गयी कविता कहा जाए तो अनुचित नहीं होगा। कुमांयुनी स्थापत्य की पूरी कहानी को इस मंदिर समूह के दो सौ से अधिक छोटे-बड़े मंदिरों में ढूंढ़ा जा सकता है। इन मंदिरों में प्रमुख मंदिर जागेश्वर दंडेश्वर तथा मृत्युंजय के हैं। जागेश्वर को द्वादश ज्योर्तिलिंगों में से एक माना गया है। स्कंद पुराण के अनुसार दक्ष-प्रजापति के यज्ञ में सती के दाह के पश्चात विरही शिव ने इसी वन में तप किया था। शिव के लिंग को पुराणों में 'यागीश' या 'यागेश्वर' कहा गया है, ऐसा माना जाता है कि मृत्युंजय के मंदिर की स्थापना स्वयं राजा विक्रमादित्य ने की थी, तथा सम्राट शालीवाहन ने जागेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया था। कत्यूरी शासकों द्वारा इन मंदिरों के जीर्णोद्धार की बात भी कही जाती थी। आठवीं शताब्दी में आदिशंकराचार्य ने आकर इन मंदिरों की विधिवत प्रतिष्ठा की थी और यहां का प्रबंध एक दक्षिण भारतीय ब्राह्मण को सौंपा था। इस ब्राह्मण ने एक स्थानीय युवती से विवाह कर लिया, उनकी संतान बटुक (बडुंवा)
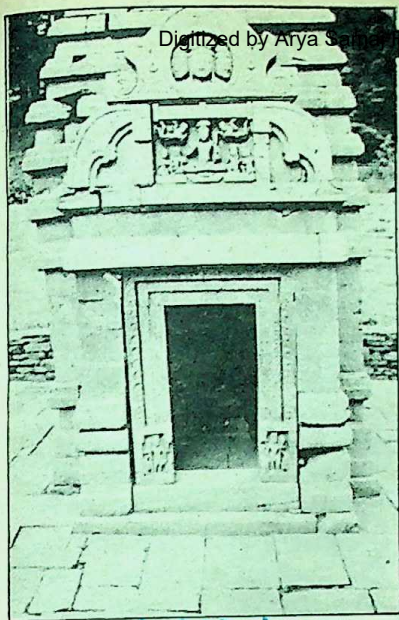
बौद्ध शैली में जागेश्वर ।

कहलायी । मंदिर का प्रबंध आज भी इन्हीं लोगों के हाथों में है ।

### जीवित समाधि

स्थापत्य की दृष्टि से मध्ययुगीन लकुलीश शैव-मत के केंद्र में बने इस मंदिर समूह में तीन विभिन्न रचना काल स्पष्ट दीखते हैं, इनका विस्तार ईसा की आठवीं शताब्दी से लेकर अठारहवीं शाताब्दी तक है । मृत्युंजय मंदिर इस समूह का प्राचीनतम् मंदिर है, इसका निर्माण संभवतः ईसा की आठवीं शती में हुआ होगा । दसवीं शताब्दी तक जाग नाथ, नवदुर्गा, कालिका, पुष्टि देवी, कुबेर, बालेश्वर इत्यादि के मंदिर बन चुके थे । सूर्य, नवग्रह तथा नीलकंठेश्वर के मंदिर चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दी के हैं । चौदहवीं शती के अंतिम दशकों में राज्य करनेवाले राजा गरुड़ ज्ञानचंद के काल में पांच भव्य मंदिरों के निर्माण कार्य के प्रमाण उपलब्ध हैं । राजा रतन चन्द ने सन १४५२ में अपने विस्तृत विजय-अभियान के पश्चात जागेश्वर मंदिर समूह का व्यापक विस्तार किया था । सत्रहवीं शताब्दी के एक अन्य चंद वंशीय शासक राजा बाज बहादुर चंद ने भी जागेश्वर मंदिर समूह में जीर्णोद्धार कार्य करवाया था । उन्होंने अपनी प्रजा पर २ रु. प्रतिव्यक्ति के हिसाब से 'मांगा' नामक कर भी लगाया था ताकि, जीर्णोद्धार में हो रहे अत्यधिक व्यय को वहन किया जा सके । राजा बाज-बहादुर के पुत्र उद्योत-चंद के समय में ऋद्धि गिरी गोसाईं नामक एक फकीर ने जागेश्वर मंदिर के प्रांगण में जीवित समाधि ली थी । कहा जाता है कि समाधि लेने के वर्षों बाद यह फकीर कुछ तीर्थ-यात्रियों को प्रयाग में मिला था और उसने राजा के द्वारा दी गयी अंगूठी इन्हीं यात्रियों के माध्यम से वापस राजदरबार में भिजवायी थी । राजा उद्योत-चंद इस फकीर के अनन्य भक्त थे, वह इन्हें उदुवा कहा करता था । राजा कल्याण चंद के शासन-काल में (सन १७२९ से १७४७ तक) रामपुर के रोहिल्लों ने अलीमुहम्मद खां के नेतृत्व में कुमायूं पर दो बार चढ़ाई की थी और यहां के लगभग सभी मंदिरों और मूर्तियों को खंडित कर दिया था । कहा जाता है कि ततैयों के अचानक आक्रमण के कारण रोहिल्लों को जागेश्वर के रास्ते से ही लौटना पड़ा था । इस मंदिर-समूह में कोई भी मूर्ति खंडित नहीं है । कुमायूं क्षेत्र से रोहिल्लों को वापस भेजने के लिए कल्याण चंद ने उन्हें बहुत-सा धन दिया था । मंदिर-समूह से प्राप्त एक शपथ-पत्र जिसे 'तमसुक' कहा जाता था, से ज्ञात होता है कि राजा ने भगवान जगन्नाथ से

बहुत-सा धन उधार लिया था। चंद राजाओं ने इस मंदिर को बहुत-से गांव भी भेंट में दिये थे इस प्रकार की भेंट को गूंठ कहा जाता था। राजा लक्ष्मी चन्द, देवी चन्द, कल्याण चंद दीपचन्द इत्यादि के ताम्र-पत्रों में इस तरह की गूंठों का वर्णन है।

### सुंदरतम स्थानों में

स्थिति के लिहाज से मंदिरों के निर्माण के लिए चुना गया यह स्थल कुमायूं के संभवतः सुंदरतम् स्थानों में से एक है। जिले के पुराने दस्तावेजों में पट्टी वारुन और पुराणों में दारुक वन (नागेशं-दारुकावेन कहा जानेवाला यह स्थान अब भी देवदार के सैकड़ों वर्ष पुराने वृक्षों से आच्छादित है, कुछ वृक्ष तो लगभग एक-हजार वर्ष पुराने हैं तथा इनकी ऊंचाई तीन सौ फुट तक है। पचीस फुट से भी अधिक गोलाई वाले देवदार के ऐसे वृक्ष हिमालय में अबं शायद ही कहीं बचे हों। एक पहाड़ी-नदी ऊपर शिखर से उतरकर विशाल देवदार की जड़ों से उलझती हुई धीरे-धीरे बहती है, इसी नदी के किनारे समतल-सी जमीन पर बना हुआ है जागेश्वर मंदिर समूह, मंदिर के पीछे एक महाश्मशान है जहां प्रतिदिन कम से कम एक शवयात्रा अवश्य आती है। किसी दिन यदि शवदाह न हो सके तो स्थानीय व्यक्तियों द्वारा ऊनी कंबल जलाये जाने की प्रथा है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन जागेश्वर में मेला लगता है तथा सावन में चर्तुदशी के दिन श्रद्धालुओं द्वारा पार्थिव पूजन किया जाता है। इस मंदिर में पूजा से पुत्र-लाभ की आशा की जाती है, संतान की आकांक्षा रखनेवाली स्त्रियां यहां हाथ में जलता हुआ दीपक लेकर रातभर खड़ी रहती हैं।

जागेश्वर-मंदिर में पवन-राज, राजा दीप चन्द, और त्रिमल चन्द की अष्ट-धातु की बनी हुई तीन मूर्तियां भी हैं। ढाई से तीन फुट की यह मूर्तियां बौद्ध-मूर्तिकला से प्रभावित लगती हैं। पवन-राज की मूर्ति सन ७३ में चुरा ली गयी थी। तीन-चार वर्ष के अंतराल में दिल्ली के एक होटल से बरामद कर इस मूर्ति को मंदिर में पुनः प्रतिष्ठित कर दिया गया है। जागेश्वर समूह के सभी मंदिर पत्थर की अत्यधिक सुंदर मूर्तियों से भरे पड़े हैं। काले पत्थर में तराशी गयी दुर्गा, गणेश की मूर्तियां और एक-मुखी शिवलिंग वास्तव में अद्वितीय हैं। मृत्युंजय मंदिर में पत्थर के प्रवेशद्वार पर बहुत सुंदर नक्काशी की गयी है। मंदिर की दीवारों पर भी विभिन्न आकृतियां उकेरी गयी हैं। बहुत-सी मूर्तियों को एक अंधेरे कमरे में बंद करके रखा हुआ है, संभवतः सुरक्षा की दृष्टि से।

व्यावसायिक संस्कृति के आधुनिक युग में भी जागेश्वर में सांस्कृतिक सात्विकता के दर्शन होते हैं। प्रकृति ने इतिहास के साथ मिलकर वर्षों सन्नाटा बुना है यहां। यहां के प्राचीन मंदिर, देवदार के वर्षों पुराने वृक्ष और मंदिर समूह के आसपास बने नक्काशीदार खिड़की-दरवाजे और पत्थर की छत वाले इक्का-दुक्का मकान—सभी जैसे इस कभी न खतम होनेवाली निरभ्रता के विभिन्न अंग हैं। मंदिर के पास ही हाल ही में कुमायूं मंडल विकास निगम द्वारा एक आधुनिक रेस्ट हाउस बना दिया गया है। तीखे रंगों से पुती हुई यह आधुनिक इमारत प्रकृति और अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति सरकारी नजरिए पर एक सशक्त टिप्पणी हैं।

—बद्री भवन, भीमताल, नैनीताल-२६३१३६

राजदीप चन्द की मूर्ति
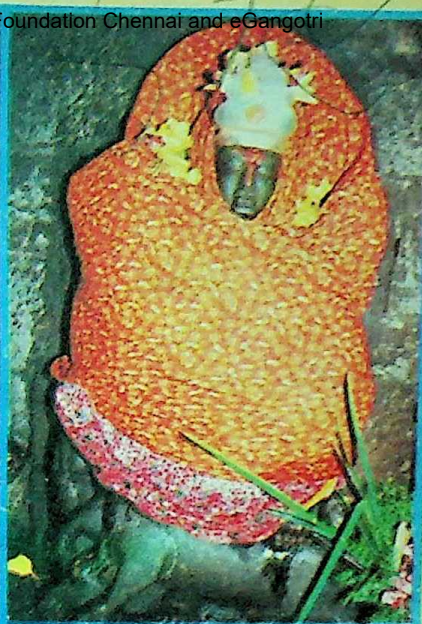
कालिका मंदिर में देवी की पाषाण प्रतिमा

जागेश्वर मंदिर
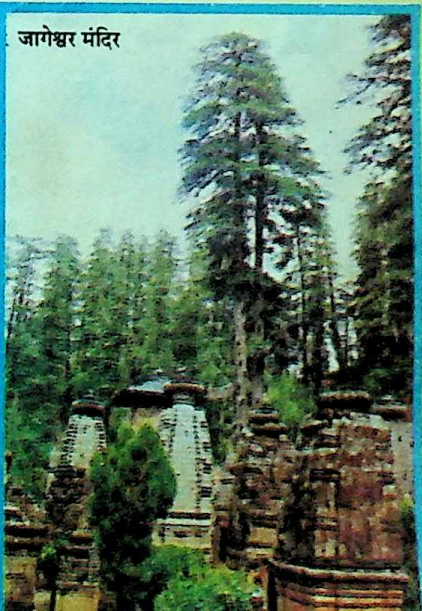
जागेश्वर मंदिर में द्वारपाल की मूर्ति
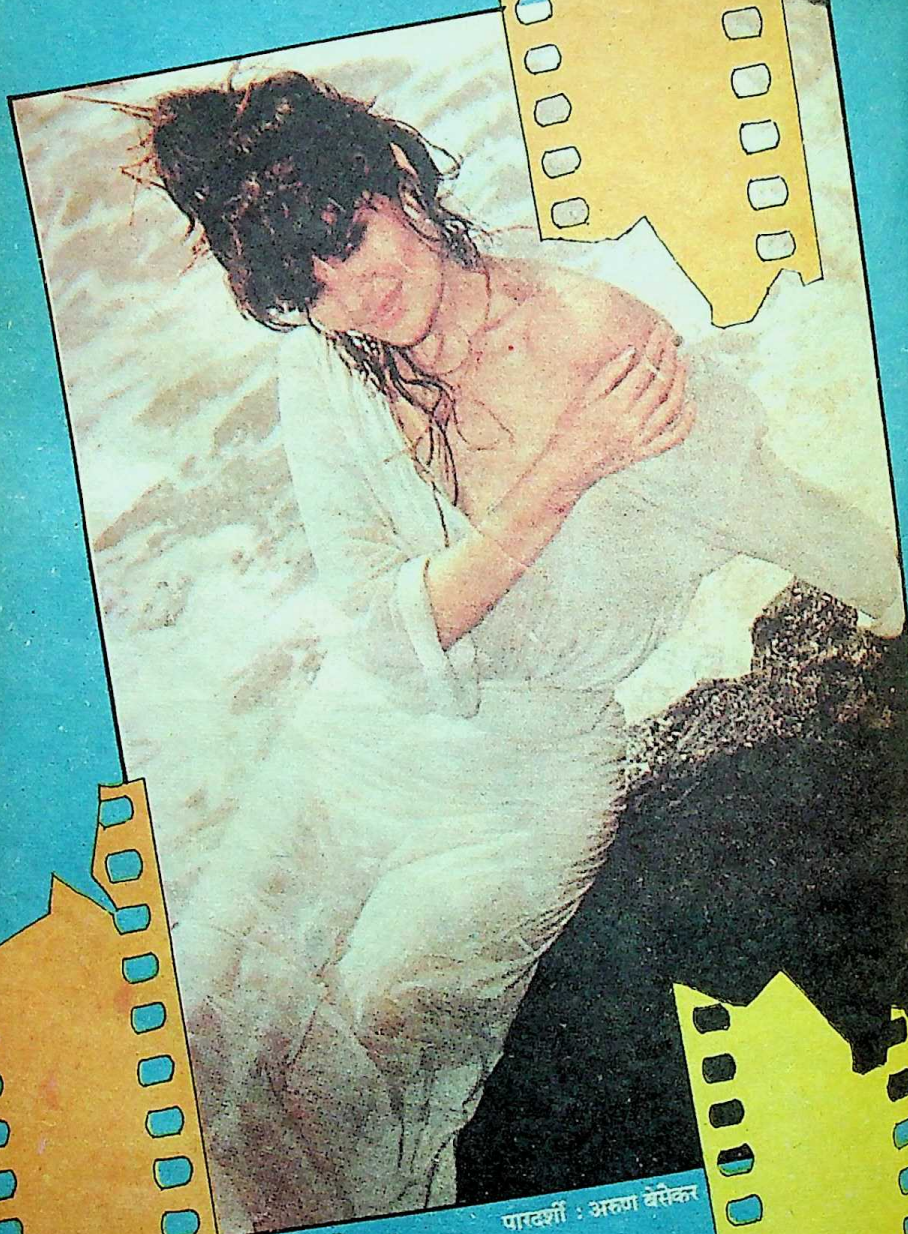
पारदर्शी : अरुण बेसेकर
सोनू वालिया

## फिल्मों में आयी पहली राजघराने की सुसंस्कृत-विदुषी

# अभिनेत्री : वनमाला

● बद्रीप्रसाद जोशी

नीली आंखें, पतले होंठ, ईरानी सौंदर्य और बात करने का गजब चातुर्य जिस मुकाम पर ठहरता है— वनमाला उसी शख्सियत का नाम है। हिंदी सिनेमा की उम्र का चौथा दशक जिस अभिनेत्री की उपस्थिति भर से चमत्कृत था, जिसे सोहराब मोदी ने मराठी फिल्म 'आंख-मिचौनी' में देखा और सहसा अपनी खोज को विराम दे दिया। 'सिकंदर' की रुखसाना की अनवरत खोज थी। उन्हें वनमाला में ईरानी सौंदर्य के अक्स उभरते मिले सोहराब मोदी ने इस 'रुखसाना' को अनुबंधित कर लिया।

जब पृथ्वीराज वनमाला के साथ 'सिकंदर' फिल्म की शूटिंग करते थे, शशि कपूर बहुत छोटे थे, परंतु वे मंत्रमुग्ध होकर एकटक वनमाला की ओर देखा करते थे। जब शशि कपूर ने वनमाला की 'वसंत सेना' देखी, तो वे मंत्रमुग्ध हो गये। बाल मन पर सौंदर्य की छाप ऐसी पड़ी कि जब शशि के सामने गिरीश कर्नाड ने 'वसंत सेना' को 'उत्सव' के नाम से बनाने का प्रस्ताव रखा, तो शशि ने स्वीकृति दे दी।

### फिल्म के परदे पर गोली दाग दी

वनमाला के व्यक्तित्व में सबसे अनोखी चीज थी, उनकी आंखें— समुद्र के रंग और गहराई वाली आंखें, जिनके कारण उन्हें 'सिकंदर' में रुखसाना की भूमिका मिली। शशि कपूर ने अपनी फिल्म 'अजूबा' की नायिका का नाम भी रुखसाना इसी प्रभाव में रखा है। वनमाला ने इस भूमिका से पूरे भारत में तहलका मचा दिया। 'सिकंदर' उस समय की 'शोले' थी।

जब वनमाला के पिता कर्नल रावबहादुर बापूराव पवार को किसी ने यह खबर दी थी कि कर्नल साहब, आप जिसे खोज रहे थे, आपकी वह बेटी फिल्मों में आ गयी है और उसकी फिल्म नाटकघर (आज का रीगल सिनेमा) में लगी है, बापूरावजी अपने संगी-साथियों

*आज फिल्म उद्योग पर नजर डालने पर लगता है कि कहीं न कहीं अच्छे कलाकारों का संकट खड़ा हो गया है। हिंदी फिल्मों में उस जमाने में अच्छी अभिनेत्रियां आयीं, जब अच्छे घरों के लोग अपनी लड़कियों को कलाकार बनने से रोकते थे। आज जब उस तरह की पाबंदी नहीं है, अच्छी कला का प्रदर्शन करने का मौका है, तब ऐसे फूहड़ अभिनय होते हैं, जो किसी फिल्म को दीर्घायु प्रदान नहीं कर पा रहे हैं। ऐसी ही अभिनेत्रियों में सोनू वालिया भी एक हैं। 'खून भरी मांग' में लोगों ने जरूर इसे देखा है। तब दर्शकों ने सोचा था कि शायद यह लड़की कुछ समय तक परदे को अपनी कला से कुछ देगी, लेकिन आगे चलकर सोनू वालिया ने ऐसी कोई छाप नहीं छोड़ी, जिससे इससे आशा की जाए। यानी कलाकारों के संकट से कब तक फिल्म उद्योग गुजरेगा, यह देखने की बात है।*

सहित फिल्म देखने गये, पर फिल्म के एक दृश्य पर वे खासे उत्तेजित हो गये और कमर में लटकी रिवाल्वर से उन्होंने परदे पर गोली चला दी । टाकीज में भगदड़ मच गयी, परदा जल गया और जले मन से बापूराव घर लौट आये ।

प्रांत मालवा, आज जिसे उज्जयिनी कहते हैं, वहां वनमाला का जन्म हुआ, यानी अवंतिका में १९१४ में वह जनमी थीं ।

### सामंती वातावरण

पिता को मंत्री पद मिलते ही वनमाला का पूरा परिवार उज्जैन से शिवपुरी और फिर ग्वालियर में आ गया । राजघराने के प्रतिष्ठित सभासद होने के नाते वहां के ठाठ-बाट निराले थे । राजकन्याएं उनके साथ रहा करती थीं । इनका ज्यादातर वक्त घुड़सवारी, शिकार आदि में साथ-साथ बीतता । किंतु वनमाला को हिंसा से डर लगता था, एवं प्रकृति से पागलपन की हद तक प्यार था ।

घर में हस्तकलाएं सिखायी जातीं । वनमाला को सरदार रॉटर स्कूल में चित्रकला की शिक्षा मिली । पर सामंतशाही के जो गजब तौर-तरीके वहां थे, वे उन्हें रास नहीं आये और वह स्कूल आखिर में छोड़ दिया ।

### फिल्मी दुनिया में प्रवेश

आगरकर हाईस्कूल, पुणे में उनकी एक मौसी प्रधानाचार्य थीं । उन्होंने वनमाला को अपने पास बुला लिया । वहां एक छोटी-सी जगह रिक्त थी, वनमाला वहां पचास रुपये प्रतिमाह पर पढ़ाने लगीं । यह १९३६-३७ की बात है । शांताराम उस समय काफी ख्याति प्राप्त कर चुके थे । उन्होंने वनमाला से कहा— आप स्टूडियो में आकर मेरे असिस्टेंट डाइरेक्टर का काम क्यों नहीं स्वीकार लेतीं ? उन्हें यह प्रस्ताव पसंद आ गया ।

कुछ दिनों बाद मास्टर विनायक और बाबूराव पेंढारकर ने आचार्य अत्रे की एक कथा स्वीकार की और 'नवयुग चित्रपट' के नाम से एक कंपनी बनायी । इस कंपनी ने मराठी फिल्म 'लपंडाव' बनायी जो हिंदी में 'आंख मिचौनी' के नाम से बनी । इस फिल्म में काम करने के लिए सबने वनमाला से जिद कीं और उन्होंने फिल्म को स्वीकार कर लिया ।

'सिकंदर' के एक दृश्य में आउटडोर शूटिंग पर घुड़सवारी का दृश्य था । ऐसे काम प्रायः डुप्लीकेट से लिये जाते हैं । पर यह दृश्य वनमाला ने खुद फिल्माया पहाड़ी से पूरी रफ़्तार में घोड़ा दौड़ाते जब वह नियत स्थान पर कूदीं, तो पृथ्वीराजजी जोर से चीखे, "कमाल है कमाल, इतना अद्भुत दृश्य ! लगता है माता-पिता ने तुम्हें झूले पर डालने की जगह घोड़े पर ही डाला होगा ।" शूटिंग के दौरान वे इस प्रकार की शाबाशी देकर कलाकारों में हिम्मत बंधाते थे ।

### फिल्मी सफलता, जीवन की असफलता

पर फिल्मी सफलता वनमाला के निजी

वनमाला

जीवन की असफलता का हिस्सा बनी रही।

पिता ने बिलकुल संबंध तोड़ लिये थे। भाई-बहन आते रहते और वह खुद पिता के आतंक से ग्वालियर नहीं जाती थीं। वे राजर्षि थे और प्रायः कहते कि वह कुछ भी कर ले, कितना भी नाम कमा ले, पर देखना उसका सब-कुछ नष्ट हो जाएगा, उसे कुछ नहीं मिलेगा। पता नहीं उन्होंने इतना सटीक अनुमान कैसे लगाया था?

१९४० से १९५४ तक वनमाला फिल्मों में रहीं। बाद में दो साल तक उन फिल्मों में काम किया जो अधूरी थीं, इनमें नरगिस के साथ की 'अंगारे' और 'श्यामची आई' जिसे साने गुरुजी ने वनमाला के खास आग्रह पर बनाया था और डॉ. राजेंद्र प्रसाद और नेहरूजी ने एक खास आयोजन पर फिल्म देखी थी, इसे पूरी करके उन्होंने बंबई से नाता तोड़ लिया।

वनमाला का प्रेम-संबंध एक ऐसे व्यक्ति के साथ रहा, जिसने अपने वचन को निभाया ही नहीं। वह पहले से ही विवाहित था। पर वह उन्हें हर बार विवाह का आश्वासन देता रहा। उस व्यक्ति ने सिर्फ प्यार का ही भुलावा नहीं दिया, बल्कि उस पवित्र भावना का उसने नाजायज फायदा भी उठाया।

**हिमालय में भी शांति नहीं**

सब लुट जाने के बाद उनका पिता से एका भी हो गया और वह जाकर ग्वालियर में परिवार के साथ रहने लगीं। बाद के साल अलग-अलग अनुभवों से भरे रहे। पिता हर साल तीर्थ-यात्राओं पर जाते थे, उनके साथ वह भी चली गयीं। लगभग सभी तीर्थ किये और हिमालय में शांति ढूंढ़ी। अफसोस वहां भी उन्हें कोई ऐसी जगह नहीं मिली, जहां उनकी आत्मा को दिली सुकून मिल सके। अंततः वृंदावन में एक भूमिखंड था, गोवरधन की परिक्रमा के पास, वहीं ठिकाना बना लिया। स्वामी हरिदास कला संस्थान की नींव रखी और तमाम सांस्कृतिक गतिविधियों, अध्यात्म से गहरे रिश्ते कायम कर लिये।

वनमाला की कुछ प्रमुख फिल्में हैं— घर जवांई, चरणों की दासी, सिकंदर, कादंबरी, राजा-रानी, वसंत सेना, पर्वत पे अपना डेरा, दूसरा पेशवा। धन कमाना वनमाला का उद्देश्य कभी नहीं रहा। फिल्मों से निवृत्ति के पहले वनमाला ने 'श्यामची आई' में कार्य कर अभिनय का स्वर्ण पदक भारत के राष्ट्रपति से ग्रहण किया था।

— ५ एफ, नाज सिनेमा बिल्डिंग,
बंबई-४००००४

# गौरांगिनी

● मनोरमा जफा

*केंद्र के प्रकोष्ठ में प्रविष्ट हो मानसी देवी ने दीवार पर टंगे नृत्यकारों के चित्र दिखाये । जूली हर चित्र के सामने खड़ी हो जाती । उसका मन ही न भरता, कला के सेवक ! उसकी आंखें आदर तथा श्रद्धा से भरी थीं । मानसी देवी के कहने पर ही वह आगे बढ़ी । नृत्य केंद्र जूली के लिए एक पावन मंदिर था ।*

कोथ हाल में कत्थक नृत्य देखकर जूली बौरा गयी । नृत्य में तबले व सारंगी की लय के साथ घुंघरू की आवाज ने जूली के हृदय में ऐसा घर किया कि जूली भीड़ चीरती हुई ग्रीनरूम में पहुंच गयी व नाचनेवाली मानसी देवी के बगल में खड़ी हो गयी । उसने अपनी पर्स डायरी में दिल्ली के नृत्य केंद्र का पता नोट कर लिया और मन में तय कर लिया कि वह शीघ्र से शीघ्र कत्थक नृत्य सीखने भारत जाएगी और वह भी मानसी देवी के बताये पशुपति महाराज से ।

जूली हारवर्ड में मास्टर्स कर रही थी । अवकाश के समय लाइब्रेरी में जाकर भारत की नृत्य शैलियों का अध्ययन करने लगी । पैसे बचाने के लिए केवल एक ही समय खाना शुरू कर दिया व रहने के लिए सस्ता-सा कमरा ले लिया । हर समय चहचहानेवाली जूली रातों-रात बदल गयी । भारत में नृत्य सीखने के संकल्प ने उसे एक शांत व्यक्तित्व प्रदान किया । दो वर्ष की कठिन तपस्या कर जूली ने सात हजार डालर जमा कर लिये । भारतीय रुपयों में हिसाब लगाया । एक लाख से ऊपर रुपये । मानसी देवी से पत्र व्यवहार करने से उसे अंदाज हो गया था कि इतने रुपये, भारत में कुछ वर्ष बिताने के लिए काफी हैं । भारत के दूतावास से वीजा बनवाकर आखिर जूली दिल्ली आ ही गयी ।

पालम हवाई अड्डे पर मानसी देवी स्वयं खड़ी थीं । उन्होंने जूली को गले लगाया और जूली फूली नहीं समायी ।

नृत्य केंद्र पालम से पंद्रह किलोमीटर दूर था । सुबह का झुटपुटा था । टैक्सी की खिड़की में मुंह लगाये जूली भारत के हरे पेड़ों पर, हरी घास पर और सबसे अधिक खुली धूप पर मुग्ध हो रही थी । टैक्सी एक अजीब-से घर के सामने रुकी । मानसी देवी ने घंटी बजायी और एक अधेड़-सी महिला ने दरवाजा खोला ।

''यही हैं श्रीमती सेन, जूली । इन्होंने अपने

घर में तुम्हें एक कमरा दिया है । यह जगह नृत्य केंद्र के पास है । तुम पैदल आ-जा सकती हो । हां खाना तुम अलग बनाना । और यहां एक मेज पड़ी है स्टोव, चारपाई, कुरसी सभी-कुछ है । बस बाथरूम शेयर करना पड़ेगा ।''

''मानसी देवी, धन्यवाद ।'' और जूली ने मानसी देवी का हाथ पकड़ माथे पर चुंबन चिपका दिया ।

मानसी देवी माथा पोछती हुई कुछ सोचकर चुप रह गयीं । फिर बोलीं, ''हां दो घंटे के बाद मैं तुम्हें स्वयं नृत्य केंद्र ले चलूंगी ।''

''मुझे साड़ी पहननी होगी न ? मैंने एक हारवर्ड स्क्वायर से खरीदी थी ५० डालर की ।'' और जूली ने अपना सूटकेस खोलकर लाल छापे की रेशमी साड़ी निकाल ली ।

मानसी देवी मुसकराकर रह गयी, ''अच्छा मैं चलती हूं दो घंटे बाद आऊंगी ।''

ठीक ग्यारह बजे मानसी देवी आ गयी ।

जूली अपनी स्कर्ट पर दोहरी की हुई साड़ी लपेटे थी ।

''ठीक है, न मानसी देवी ?''

''नहीं । साड़ी के लिए तुम्हें पेटीकोट व ब्लाउज भी बनवाने पड़ेंगे । आज तुम स्कर्ट पहनकर ही नृत्य केंद्र चलो । वहीं का दरजी सब बना देगा ।''

''और घुंघरू कहां से खरीदूं ?''

''वह भी नृत्य केंद्र से ।''

जूली, मानसी देवी के साथ केंद्र पहुंच गयी । दूर से ही घुंघरू की आवाज सुन वह उतावली हो गयीं ।

''कितना स्वर्गीय है, मेरे हृदय पर हाथ रखकर देखिए न, देखिए कितनी जोर से धड़क रहा है ।'' और जूली ने मानसी देवी का हाथ अपने हृदय पर रखा ।

'अरे' मानसी देवी सकपका गयी ।

केंद्र के प्रकोष्ठ में प्रविष्ट हो मानसी देवी ने दीवार पर टंगे नृत्यकारों के चित्र दिखाये । जूली हर चित्र के सामने खड़ी हो जाती । उसका मन ही न भरता, कला के सेवक ! उसकी आंखें आदर तथा श्रद्धा से भरी थीं । मानसी देवी के कहने पर ही वह आगे बढ़ी । नृत्य केंद्र जूली के

लिए एक पावन मंदिर था ।

नृत्य के कमरे के सामने अपने जूते उतार जूली मानसी देवी के साथ अंदर गयी । मानसी देवी ने उसे अपने पास बिठा लिया व अंगरेजी में समझाने लगीं ।

''जूली ! भारत बहुत भिन्न है । खुले में किसी का भी चुंबन लेना निषिद्ध है । खुले में यहां मां ही केवल अपने नन्हें बच्चे का चुंबन ले सकती है । जब बच्चा बड़ा हो जाता है तो मां के लिए भी उसका चुंबन लेना तो क्या स्पर्श भी वर्जित है ।''

जूली आश्चर्य में पड़ गयी, उसका मुंह खुला-का-खुला रह गया ।

मानसी देवी पुनः बोलने लगीं, ''नृत्य केंद्र में प्राचीन गुरु-शिष्य परंपरा है ।''

''मेरी समझ में नहीं आया ।''

''यहां मैं तुम्हें नाच सिखाऊंगी । इसके माने हैं मैं गुरु और तुम शिष्या । यह मेरी शिष्या कविता तुमको सब-कुछ बताएगी ।'' मानसी देवी जूली को कविता के पास बिठाकर बाहर चली गयी । कविता ने जूली को नृत्य केंद्र के सारे नियम समझा डाले । ''गुरु के पैर छूने पड़ते हैं और गुरु कुछ भी कहे वह सहना पड़ता है । जूली तुम शिष्या हो तुम्हें नीचे आसन में बैठना होगा । गुरु आदर का पात्र है'', आदि-आदि ।

जूली कविता की बातें समझ चुकी थी, तभी मानसी देवी आ गयीं । वह मानसी देवी के पैरों पर सिर रखकर बोली, ''गुरु ।'' वहां बैठे शिष्य तथा तबला व सारंगी वालों की हंसी से पूरा नृत्य हाल गूंज गया ।

जूली के लिए नये घुंघरू बने, बंधे । गुरु-दक्षिणा आदि से निवृत्त हो, जूली साड़ी पहनकर बैठ गयी । अदा, ठाठ, नजाकत, घूंघट, टुकड़े, चक्कर-पर-चक्कर करती हुई लड़कियों को एक-एक देखकर जूली सनाका खा गयी । सबकी-सब कैसी फिरकी की तरह चक्कर लगा लेती हैं । वह भी खड़ी हो गयी उसने भी चक्कर लेना चाहा पर वह चक्कर खाकर गिर पड़ी और सब-के सब खिलखिलाकर हंसने लगे । मानसी देवी ने उन सबको आड़े हाथों लिया और जूली के मन में मानसी देवी के लिए और स्नेह व आदर बढ़ गया ।

नृत्य केंद्र का वातावरण बड़ा सुखमय था । घुंघरू तो उसको इतने भाये कि उसका मन चाहा कि वह पैरों में पहने-ही-पहने घर जाए पर मानसी देवी ने कहा, ''जूली, यहां की सभ्यता ऐसी नहीं है ।''

''पर क्यों ?''

''घुंघरू बड़े पवित्र होते हैं । सड़क पर नहीं

पहने जाते । सड़क गंदी होती है न ।

जूली समझकर चुप हो गयी । जूली पर घुंघरू का रंग चढ़ा था । वह मिसेज सेन के साथ बाजार से घुंघरू वाली पायल खरीद लायी और उसे वह सदा पहने रहती ।

अपने कमरे में कृष्ण की तसवीर के सामने और पास में गीता भी रख जूली घंटों निकाल देती । एक दिन वह कविता से बोली :

"कविता मुझे, गीता के श्लोकों का अर्थ बता दो ।"

"मुझे नहीं आता । यह तो टीचर ही बताएगी ।"

"पर क्या तुम गीता नहीं पढ़तीं ?"

"नहीं, गीता कौन पढ़ता है । मैं तो हनुमानजी के मंदिर जाती हूं ।"

"सच ! मैं भी चलूंगी हनुमान मंदिर ।"

और अगले मंगल जूली कविता के साथ हनुमान मंदिर गयी । मंदिर का वातावरण उसे अच्छा लगा । भीड़ बहुत थी । कविता के साथ परिक्रमा करते-करते मंदिर में किसी ने उसके चिकोटी काटी तो जूली चिल्ला पड़ी और उसने नोचनेवाले का हाथ पकड़ लिया ।

"टेंपिल में तुम बदमासी करता है", वह गुंडा जूली का हाथ मरोड़कर भाग गया और जूली खिसयायी-सी रह गयी । वह चिल्लायी, "कविता, कविता !" पर कविता भी आंख ओट हो गयी थी । जूली अकेली ही चिल्ला रही थी । उसके चारों ओर खड़ी जनता खामोश देख रही थी ।

तभी कविता आ गयी । जूली का मन खिन्न हो गया था । फिर भी उसने हनुमानजी की पूजा की । रात वह सो न सकी । भारत एक उलझी-सी पहेली लगा । पर फिर उसने मन संभाल लिया ।

उसने एक साइकिल खरीद ली । साइकिल से वह नृत्य केंद्र भी जाती व बाजार-हाट भी करती थी । एक दिन नृत्य केंद्र से लौटने में थोड़ा अंधेरा हो गया था । लैंप पोस्ट की बत्ती बुझी थी । किसी ने पीछे-से जूली को धक्का दिया । साइकिल गिर गयी । साथ में जूली भी । गिरानेवाले ने ही उसे इस बेरहमी से पकड़ लिया कि जूली घबरा गयी ।

"हैल्प, गुंडा, गुंडा ।" वह चिल्लायी ।

इतने ही में एक दूसरा आदमी आ पहुंचा और उसने गुंडे की गरदन पकड़ ली । गुंडा गरदन छुड़ाकर भाग गया, मगर साथ में जूली के गले से सोने की जंजीर भी ले गया । जूली सड़क पर ही बैठकर सिसकियां भरती

*समीर रातभर करवट बदलता जागता रहा । जूली खिड़की की सलाख पकड़े खड़ी रही । उसका मन कोसों दूर अमरीका की खुली हवा में अठखेलियां कर रहा था । रात खड़े-ही-खड़े कट गयी । सुबह-सुबह जूली ने केंद्र में मानसी दीदी के चरण छूकर उन्हें अपना निश्चय कह सुनाया ।*

फूट-फूटकर रोने लगी ।

बचानेवाला शरीफ आदमी था । उसने जूली की साइकिल उठायी और पूछा "आप कहां रहती हैं ? चलिए मैं आपको आपके घर पहुंचा आता हूं ।"

"धन्यवाद ।"

"किस बात का ?"

"आपने मुझे बचा लिया ।" फिर कुछ सोचकर बोलीं "चलिए पहले पुलिस स्टेशन में रिपोर्ट लिखवा दें ।"

"न, न, न । वहां न जाइए । वह लोग भी आपको तंग करेंगे ।"

"पुलिस तंग करेगी ? पर क्यों ?"

"देखिए, मैं आपको घर पहुंचा आता हूं फिर आपका जो मन आये करिएगा ।"

"आप तो बड़े अजीब हैं ? सुनिए, आपका नाम क्या है ?" जूली ने बड़ी मिठास से पूछा ।

"मेरा नाम, 'समीर चंद्र ।'

श्रीमती सेन का घर आ गया था । जूली रुकी । समीर ने मुड़ते हुए उससे कहा, "देखिए आप घर जाइए, अंधेरा होने के बाद अकेले घर से बाहर न जाया करिए ।"

"धन्यवाद, मिस्टर चंद्र । एक बात और बताइए, आप कहां रहते हैं ?"

"यहां से तीन घर बाद, १४ नंबर में ।"

उस रात जूली देर तक जगती रही, सोचती रही । भारत कितना सुंदर और असुंदर है । सभ्यता और असभ्यता दोनों ही साथ-साथ । गयी रात नींद न आयी । सुबह श्रीमती सेन के उठने की आहट पाकर वह उनके कमरे में गयी और उस शाम की आप बीती कह सुनायी । ऊपर से चुप दीखनेवाली श्रीमती सेन ध्यान से जूली की बातें सुनकर गंभीर हो गयीं । जूली पूछे जा रही थी—"क्या करूं, कैसे रहूं, कोई भी उपाय नहीं है क्या ?" श्रीमती सेन आखिर बोलीं, "भारत में स्त्री के सुरक्षित रहने का एक ही उपाय है—विवाह । विवाह करके पति उसकी रक्षा करता है ।" विवाह, विवाह, विवाह, जूली अपने कमरे में चली गयी, पर किससे ? जूली मुसकरायी, यह प्रयोग भी वह करेगी ।

अगले दिन सुबह ही वह १४ नंबर के बंगले पर गयी और दरवाजा खटखटाया । समीर ने दरवाजा खोला । जूली ने समीर का हाथ पकड़ लिया, "समीर ! तुमने मुझे बचाया, हम तुमसे शादी करेगी ।"

"मुझसे ?" समीर हड़बड़ाया, "पर क्यों ?"

"नहीं । हम करेगी शादी ।"

समीर अनाथ था और अकेला ही रहता था । नयी-नयी नौकरी थी । उसने हामी भर दी । जूली केंद्र नहीं गयी । उसी शाम समीर जूली को लेकर आर्य समाज मंदिर गया और जूली ने समीर से विवाह कर लिया ।

जूली मन-ही-मन बेहद प्रसन्न थी । समीर भी अपने भाग्य पर आश्चर्य कर रहा था । स्वयं ही कठिनाइयों में पढ़-पढ़ाकर क्लर्की करते हुए उसे क्या कभी कोई गौरवर्णी कोई भारतीय लड़की भी मिलती ? और अब बड़ों-बड़ों को सौंदर्य में मात देनेवाली जूली उसकी जीवन संगिनी बन गयी । वह जूली को गुलाब के फूल की तरह संजोकर रखेगा । पर मन में हुई प्रतिक्रिया बस प्रतिक्रिया ही बनकर रह गयी । क्योंकि वह स्वयं असुंदर था । जरूरत से ज्यादा ऊंची नाक और दुबला शरीर और उससे भी

अधिक था वह भारतीय पुरुष, पुरुषतत्व का अनोखा लिबास पहने।

जूली समीर को लेकर श्रीनगर घूमने गयी। वहां जूली और समीर को हर आदमी ऐसे घूर-घूर कर देखता कि समीर का मन खट्टा हो जाता। मिठास कसैलेपन में बदलने लगी।इधर जूली मन व शरीर से ऊंचे डग भरती, उधर समीर चोट खाये घायल हिरन-सा मन-ही-मन कुढ़ता और गिरता। उसका भारतीय मन, पुरुषत्व की तेज आंच में भड़क उठा। सात दिन का हनीमून तीन दिन में समाप्त कर वह जूली को दिल्ली ले आया।

समीर, मशीन की तरह काम करनेवाला क्लर्क ही था। जूली उसकी पत्नी थी। उसका उस पर पूरा अधिकार था। समीर ने पूर्वी सभ्यता के पिंजड़े में, पश्चिम में स्वतंत्र पत्नी जूली को कैद कर रखा था। जूली समीर को स्नेह देती, उसने दाल रोटी-सब्जी और प्याज के मसाले की करी सभी-कुछ बनाना सीख लिया था। भारतीय नारी की तरह वह सुबह समीर से भी पहले उठकर चाय बना देती फिर नृत्य की साधना करती। अजीब मशीन की तरह जीवन बन गया। उसे लगा कि वह थक गयी थी। एक वर्ष, आठ महीने, एक लंबा अरसा। उसका मन घुटने लगा और एक दिन उसने समीर से कह ही डाला, ''समीर, मैं अमरीका जाऊंगी।''

''कहां!'' समीर सकपकाया।

''अपने देश। यहां मेरा दम घुटता है। यहां मैं ऊब गयी हूं।''

''पर, पर मैं यहां अकेले कैसे रहूंगा?'' समीर की जबान लड़खड़ा गयी।

''मैं यहां नहीं रहूंगी, समीर।'' जूली ने सख्ती से कहा।

अचानक ही समीर को जैसे किसी ने आकाश से स्थल में ला पटका। वह ऑफिस नहीं गया। रात में फफक-फफककर रोया भी।

''मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता। मैंने तो तुम्हीं को प्यार किया है। तुमसे मैंने शादी की है, जूली।'' समीर ने हर तरह से जूली को

बहलाया-फुसलाया, प्रेम जताया। पर जूली दृढ़ निश्चय कर चुकी थी। पुरुष के इस रूप से जूली बिलकुल अनभिज्ञ थी। समीर की विलखन ने जूली को और डुबा दिया। वह उठकर खड़ी हो गयी।

''यूं इंडियन मैन, (तुम हिंदुस्तानी आदमी)।''

समीर रातभर करवट बदलता जागता रहा। जूली खिड़की की सलाख पकड़े खड़ी रही। उसका मन कोसों दूर अमरीका की खुली हवा में अठखेलियां कर रहा था। रात खड़े-ही-खड़े कट गयी। सुबह-सुबह जूली ने केंद्र में मानसी दीदी के चरण छूकर उन्हें अपना निश्चय कह सुनाया।

केंद्र में कानाफूसी हुई और १५ दिन बाद ही जूली अपना सूटकेस समेटकर स्कर्ट पहन पालम हवाई अड्डे गयी। केंद्र का कोई भी अध्यापक और साथी उसको पहुंचाने न गया।

उसे पहुंचाने आया तो केवल समीर ।

जूली के मन में समीर का स्थान केवल एक परिचित के रूप में ही रह गया ही था । पर समीर के लिए जूली, पत्नी थी । वह बार-बार जूली से कहता, "अकेले जा रही हो । वहां पहुंचते ही तार देना ।" आदि-आदि । जूली सुनी-अनसुनी कर रही थी । अमरीका का खुला स्वतंत्र जीवन उसे बुला रहा था । जूली ने जाते समय समीर से हाथ मिलाया, और समीर के माथे पर बेरुखी से चुंबन देकर अंदर चली गयी । समीर लुटा-लुटा-सा देखता रह गया । वह जाने कितनी देर हवाई अड्डे पर खड़ा रहा । जहाज कब का जा चुका था ।

समीर के पास जूली का न कोई पत्र आया, न कोई समाचार । जूली सपना-सी हो गयी थी समीर के लिए । वही नीरस जीवन, जूली से मिलने के पहले वाला । चार महीने बीत गये । एक दिन ऑफिस से लौटते समय आप-ही-आप पैर केंद्र की तरफ मुड़ गये और समीर मानसी दीदी के पास जा पहुंचा ।

"अरे समीर मैं तो आज ही तुमको याद कर रही थी । जूली का पत्र आया है ।"

"जूली का पत्र ?" समीर को विश्वास न हुआ ।

मानसी दीदी ने समीर को पत्र पकड़ा दिया । समीर ने कांपते हाथों से पत्र खोला ।

"दीदी

आपको यह पत्र पाकर आश्चर्य होगा । चार महीने में यह पहला पत्र है । इन चार महीनों में, मैं बराबर अपने आपसे लड़ रही थी और लगा कि मैं जो ढूंढ़ रही थी वह मुझे भारत ही में मिला था । एक पति का प्यार, उनकी तरह तो यहां कोई भी नहीं लगा । समीर मेरे पति हैं, उनके बिना जीवन अधूरा-सा है । वह मुझे शाम को रोज लेने आते थे क्योंकि वह मेरे पति थे । मैं भी तो उनकी पत्नी हूं, हम दोनों ने घर बनाया था, उनके बंधन में अधिकार था, स्नेह था । वह मेरे थे, मैं अच्छी-बुरी सब तरह से उन्हीं की थी । समीर और उनका अधिकार और केंद्रवालों का स्नेह व कंसर्न, एक-दूसरे के बारे में । भारत की हवा में नमी है, यहां की हवा सूखी है । मैं यहां चार दिन से अपने अपार्टमेंट में बीमार हूं । यदि वहां केंद्र न आती तो मानसी दीदी आप भी मुझे देखने आ जातीं । चार महीने की लंबी अवधि के नितांत अकेलेपन के बाद आज मैं इस निर्णय पर पहुंची हूं कि मैं शेष जीवन समीर के पास भारत में ही बिताऊंगी । मुझे मालूम है समीर वहां आते होंगे । आप उनको बता दें । मैं उनकी पत्नी हूं वह मुझे माफ कर देंगे । आप उनसे कह दें मेरी तरफ से । उनको लिखने का बल न जुटा सकी । उनका केबिल पाने पर ही वहां आऊंगी ।

आपकी जूली"

पत्र पढ़कर समीर की आंखें डबडबा आयी थीं । मानसी दीदी ने समीर का हाथ पकड़ा, "मेरा क्लास खत्म हो गया समीर, चलो जूली को अभी केबिल देकर आते हैं ।"

समीर चुपचाप मानसी दीदी के साथ चल दिया ।

"तत् थई, तत् थई, तत् थई ।"

समीर को घुंघरुओं की मधुर ध्वनि दूर से सुनायी दे रही थी ।

—डी १—५७ सत्यमार्ग,
चाणक्यपुरी, नयी दिल्ली-११००२१

# गोष्ठी

**अजय कुमार, आरा**

**प्र. विश्व की पांच बड़ी सेनाएं कौन-सी हैं ?**

□ जर्नल ऑव डिफेंस स्टडीज में विश्व की पांच बड़ी सेनाओं का इस क्रम में वर्णन मिलता है; सोवियत संघ (५०,९६,०००), चीन (३२,००,०००), संयुक्त राज्य अमरीका (२१,६३,२००), और भारत (१३,६२,०००) । सैन्य दृष्टि से पांचवें बड़े देश के बारे में कोई प्रविष्टि नहीं मिलती । यूरोप के कुछ देश पांचवें स्थान पर हो सकते हैं ।

**रेणुका चक्रवर्ती, इलाहाबाद**

**प्र. घोड़े की उत्पत्ति कब से मानी जाती है ?**

□ जीवाश्मों के अध्ययन से पता चलता है कि घोड़ों के वंशज कोई पांच करोड़ वर्ष पूर्व पाये जाते थे, किंतु उस समय वे न तो इतने बड़े होते थे और न इनके खुर आज जैसे थे । इनकी अगली टांगों में चार-चार तथा पिछली टांगों में तीन-तीन अंगुलियां होती थीं । आज की तरह के घोड़े तीस लाख वर्ष पूर्व पाये जाते थे ।
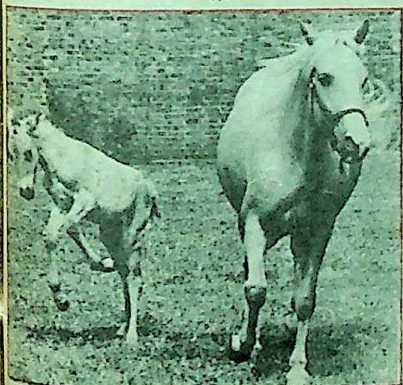
**सचिदानंद मिश्र, वाराणसी**

**प्र. पौराणिक दृष्टि से कश्मीर की क्या महत्ता है ?**

□ सरस्वती की वंदना में कहा जाता है 'नमस्ते शारदे देवि कश्मीर पुरवासिनी' । इसका अर्थ यह हुआ कि कश्मीर प्रदेश कभी सरस्वती की क्रीड़ा भूमि रहा था । कश्मीर का उद्गम कश्यप ऋषि से माना जाता है जो देव और असुर दोनों के पिता थे । कश्मीर लक्ष्मी का भी निवास रहा है जैसा कि उसकी राजधानी 'श्रीनगर' के नाम से ही स्पष्ट हो जाता है । सामान्यतया, लक्ष्मी और सरस्वती में, भोग और मोक्ष में, परस्पर विरोध माना जाता है, किंतु कश्मीर ने उस परंपरा को जन्म दिया जहां दोनों का संगम हो गया, और एक ही साधना से दोनों की प्राप्ति संभव मानी जाने लगी । कहा गया है :

**श्री सुंदरीसेवन तत्पराणाम**
**भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव ।**

कश्मीर की श्रीविधा तंत्र-साधना में प्रमुख स्थान रखती है । वहां लक्ष्मी और सरस्वती का विरोध समाप्त हो गया है ।

**विष्णुध्वज पारिजात, उज्जैन**

**प्र. दक्षिण के 'नायनमार' कवि कौन थे और कब हुए ?**

□ शैव संत कवियों को 'नायनमार' कहते हैं । इनकी संख्या ६३ है । ये ईसा की तीसरी से नौवीं शती तक के हैं । इनमें पांच राजा, चार सामंत, चार सेनानायक, चौदह ब्राह्मण, छह वैश्य, तेरह कृषक, और चार शिवाचार्य थे । इनके अतिरिक्त कुम्हार, शिकारी, ग्वाले, धोबी, मछुए, आदि जातियों के लोग भी शैव संत नायनमार हुए हैं । इन्होंने शिवस्तुति पर भक्तिभावपूर्ण पद्य रचे हैं ।
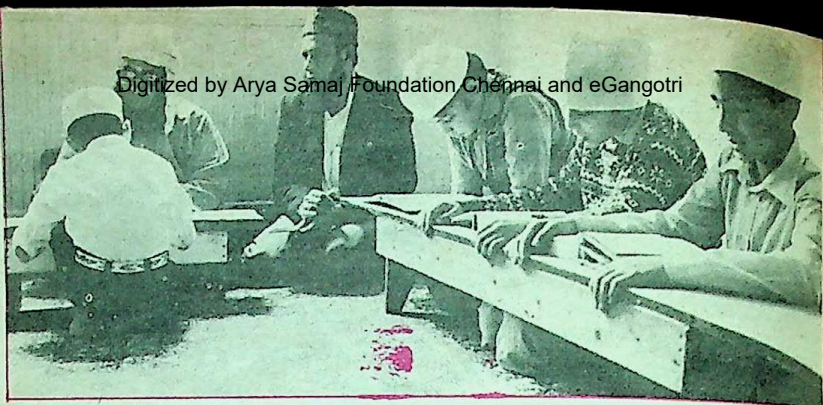
**मोहन जगदाले, जबलपुर**

**प्र. किसी देश से लगनेवाले समुद्र की कितनी सीमा उस देश के अधिकार में रहती है ?**

□ अंतरराष्ट्रीय मान्यता के अनुसार १२ किलोमीटर तक का क्षेत्र संबंधित देश की सीमा में आता है, किंतु २०० किलोमीटर के क्षेत्र को आर्थिक खंड की संज्ञा दी गयी है जिसमें उस देश को मछली पकड़ने, तेल के उत्खनन, आदि का अधिकार रहता है ।

**साजिद अली अंसारी, भदोही**

**प्र. विश्व में सबसे अधिक बच्चों को जन्म देनेवाली स्त्री कौन है ?**

□ मास्को से १५० मील पूर्व की ओर स्थित शुया नामक स्थान में फियोदोर वैसिलयेव (१७०७-८२) नामधारी एक किसान की दो पत्नियों में से प्रथम ने ६९ बच्चों को जन्म दिया था । उसने २७ बार गर्भ धारण किया, जिसमें उसने १६ जोड़े जुड़वा बच्चों, सात बार त्रिकों को और ४ सेट चतुष्कों को जन्म दिया । ये लगभग सभी बच्चे वयस्क होने तक जीवित रहे । सैन ऐंटोनियो (चिले) में लिओनटिना ऐल्बिना ने १९८१ में अपने ५५वें और अंतिम बच्चे को जन्म दिया ।

**अरविंद कुमार ठाकुर, दरभंगा; राकेश मिश्र, मुंगेर**

**प्र. इस्लाम धर्म कितना पुराना है ? हजरत मोहम्मद का जन्म कब हुआ, तथा कुरआन के रचयिता क्या वही थे ?**

□ हजरत मोहम्मद का जन्म ई. सन ५७० में मक्का में हुआ था । इस्लाम धर्म की शुरुआत ई. सन ६२२ से मानी जाती है जब मोहम्मद साहब का मक्का से मदीना के लिए 'हिजरा' (प्रस्थान) हुआ था और वहां पैगंबर ने इस्लाम धर्मावलंबियों के प्रथम समुदाय की स्थापना की । इसी समय से 'हिजरी' कैलेंडर भी शुरू हुआ । मुसलमानों का विश्वास है कि कुरआन में जो कुछ भी लिखा हुआ है वह स्वयं परमात्मा के अपने शब्द हैं जो उसने अपने रसूल (संदेशवाहक) से कहलाये हैं । मोहम्मद के अपने कथन 'हदीस' कहलाते हैं ।

**कासम अली, कुरूड (रायपुर, म. प्र.)**

**प्र. उपग्रहों में त्रुटि होने की स्थिति में वे वायुमंडल में वापस क्यों आ जाते हैं, वहीं नष्ट क्यों नहीं हो जाते ?**

□ उनमें इस प्रकार की व्यवस्था की जाती है कि वे लौटकर पृथ्वी के वायुमंडल में आ जाएं, और यदि संभव हो तो त्रुटि ठीक भी की जा सके ।

**अर्जुन कुमार सिंह 'कुशवाहा', समस्तीपुर**

**प्र. विश्व का सबसे भयानक तूफान कब और कहां आया ?**

□ गंगा-डेल्टा द्वीप, बंगलादेश, में १२-१३ नवंबर १९७० को चक्रवात तूफान आया था, जिसमें लगभग दस लाख लोग मारे गये थे। (गिनेस बुक ऑव वर्ल्ड रिकार्ड्स)।

**केशव कूल, हजारीबाग**

**प्र. कैंप डेविड का क्या महत्त्व है ?**

□ अमरीका स्थित कैंप डेविड राष्ट्रपति का छुट्टियां मनाने का स्थान है, जहां राष्ट्रपति जिमी कार्टर की मध्यस्थता में मिस्र के अनवर सादात और इस्राइल के प्रधानमंत्री मेनाशेम बेगिन के मध्य वार्ता के बाद सितंबर १९७८ में मध्य पूर्व में शांति स्थापना का आधार तैयार हुआ था।

**शशिभूषण कुमार, मुजफ्फरपुर**

**प्र. चंद्रगुप्त मौर्य किस वंश का था और उसके माता-पिता कौन थे ?**

□ चंद्रगुप्त मौर्य के वंश के संबंध में निश्चित रूप से कुछ भी कहना संभव नहीं है। मेगस्थनीज की प्रसिद्ध पुस्तक 'इंडिका', कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' और विशाख दत्त के 'मुद्राराक्षस' में चंद्रगुप्त मौर्य की शासन व्यवस्था का ही वर्णन मिलता है।

**प्रेम जसवानी, मंडला (म.प्र.)**

**प्र. छींकते समय आंखें क्यों बंद हो जाती हैं ?**

□ छींकते समय हमारे शरीर के अंदर से बहुत तीव्र, लगभग १६० किलोमीटर प्रति घंटे की, गति से हवा बाहर निकलती है जिससे पूरा शरीर हिल जाता है और आंखें भी स्वतः ही बंद हो जाती हैं।

**विप्रसेन रघुवंशी, रायसेन (म.प्र.); दिनेश कुमार साहू, सरगांव म. प्र.**

**प्र. ऐस्टरायड क्या होते हैं ?**

□ हमारे सौर मंडल में नौ ग्रह हैं जो दीर्घवृत्तीय परिक्रमा-पथ में सदा सूर्य का चक्कर लगाते रहते हैं। इन ग्रहों के अतिरिक्त कुछ अन्य क्षुद्रग्रह भी हैं जो सूर्य के चारों ओर घूमते रहते हैं। इनको 'ऐस्टरायड' कहते हैं। अब तक १६०० ऐस्टरायड पहचाने जा सके हैं। कक्षा में प्रत्येक ऐस्टरायड का अपना अलग पथ होता है। कुछ वैज्ञानिकों का विश्वास है कि अंतरिक्ष में कभी कोई बड़ा ग्रह फूट पड़ा होगा जिसके टुकड़े अब सूर्य का चक्कर लगा रहे हैं। किंतु निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन है।

**सुनील जोशी, उज्जैन (म.प्र.)**

**प्र. पृथ्वी तक पहुंचने में सूर्य के प्रकाश को कितना समय लगता है ?**

□ पृथ्वी से सूर्य की दूरी १५ करोड़ किलोमीटर है, तथा सूर्य की किरणों को यहां तक पहुंचने में ८ मिनट २० सेकेंड लगते हैं।

## चलते-चलते

सत्यार्थी से अभिषेक ने सौ रुपये उधार मांगे, किंतु उस समय सत्यार्थी के पास पचास रुपये का ही एक नोट था जो उसने अभिषेक को दे दिया।

कुछ दिनों बाद कॉफी हाउस में दोनों मिले तो सत्यार्थी ने अपने पचास रुपये वापस मांगे, और कहा "तुम मेरे कर्जदार हो।"

"जी, नहीं," अभिषेक ने कहा, "तुमसे मुझे पचास रुपये लेने हैं, क्योंकि मैंने तुमसे सौ रुपये मांगे थे।"

**—सूत्रधार**

मराठी कहानी

# एक घटा एक

● डॉ. योगेन्द्र जावडेकर

सुबह से रिमझिम बारिश हो रही है । चारों ओर अंधेरा । दम घोटनेवाली हवा ! यह समझ में नहीं आ रहा कि जो अंधेरा छाया है, वह बादलों के घुमड़-घुमड़ कर आने से है या संध्या हो जाने से ! कितने बजे होंगे ? जानने से क्या फर्क पड़नेवाला है । चाहे जो हो, यह निश्चित है कि काम का निपटारा किये बिना भोजन के लिए नहीं जाया जा सकता ।

आज ओ पी डी का काम समाप्त होने में ही विलंब हुआ । बरसात के मौसम में यही तकलीफ हुआ करती है । संक्रामक बीमारियां फैलने लगती हैं—दस्त, पीलिया, पोलिओ......और फिर रोगियों का सिलसिला खतम होने का नाम ही नहीं लेता । खासकर, बच्चों के विभाग में काम करनेवालों के लिए तो तकलीफें ही तकलीफें ! ओ पी डी का काम निपटाकर, ज्यों-त्यों दो-चार कौर गले से नीचे उतारकर 'वॉर्ड' में आया, तो नये रोगियों की खूब रेल पेल ! आज हमारे यूनिट की इमर्जेंसी । इसका मतलब था कि सभी नये रोगी हमारे ही वॉर्ड में भरती होंगे । वॉर्ड तो पहले ही से भरा हुआ है ! पुराने रोगियों की जब छुट्टी होंगी तभी तो नयों के लिए दाखिले की जगह बनेगी ! मैं बड़ी तेजी के साथ डिस्चार्ज स्लिपें तैयार करने लगा । मेरा सहयोगी—विनोद—नये मरीजों को देख रहा था । जब तक दस-पांच मरीजों को दाखिले की व्यवस्था हो पाती, तब तक नये मरीज सामने हाजिर हो जाते । तब मुझे लगा कि आजकल समुद्र की लहरों पर सवार होकर आनेवाली लहरों के सपने मैं क्यों देखा करता हूं, इसका अन्वयार्थ समझ में आ गया ।

अपने आपको कोसते हुए मैंने फिर से तेजी के साथ हाथ चलाना शुरू किया । काम में दो-चार मिनटों की देर रह जाए तो शायद सोने के लिए समय ही न मिले !

वॉर्ड के दरवाजे पर शोरगुल हुआ । कॅज्युअल्टी अफसर जयंत एक बीमार बच्चे को लेकर हांफता हुआ आ रहा था ।

"अरे, गॅस्ट्रो है । ग्रेड थ्री डि हाइड्रेशन । शरीर से बहुत पानी निकल चुका है, इसलिए खुद ले आया हूं," जयंत हांफ रहा था ।

चद्दर में लिपटे हुए उस सात-आठ महीने के बालक को जयंत ने बगल के कमरे में मेज पर

रखा ।

सांस जोर से चली । बच्चा होश खो बैठा था । हाथ-पैर ठंडे पड़ गये । नाड़ी लगी-न लगी-सी । तालू भीतर धंसा हुआ । मेरा हाथ बालक के पेट की ओर गया । पेट की चमड़ी को एक भारी-सी चिकोटी काटी तो वह उसी स्थिति में रह गयी ।....''अरे ! पेशेंट तो शॉक में है,'' मैंने कहा ।

आइ व्ही लगायी जा चुकी थी । अलग-अलग जांच के लिए बच्चे का खून लेकर, मेरे सहयोगी विनोद ने बच्चे की नस में इंजेक्शन देना शुरू किया । मैंने बाहर आकर उसके खून को प्रयोगशाला में भेजा और प्रयोगशाला को तत्काल रिपोर्ट भेज देने के लिए फोन किया । फिर मैं बच्चे के मां-बाप की ओर मुड़ा ।

''बच्चे को कब से दस्त हो रहे हैं ?''

''दो दिन हो गये साब ! बिलकुल पानीनुमा दस्त हो रहे हैं ।''

''पेशाब कब किया था ?''

''सुबह से तो नहीं किया साब ।''

''शायद, बोतल से दूध पिलाते होगे !''

''हां साब ।'' कहकर बच्चे की मां ने एक मैले-कुचैले कपड़े में लपेटकर रखी हुई एक बोतल मुझे दिखायी । सिगरेट के पैकेट पर जैसे एक वैधानिक चेतावनी छपी रहती है, वैसी ही चेतावनी कि ''बोतल से दूध पिलाना 'बच्चे की तंदुरुस्ती के लिए हानिकारक है', हर बोतल पर छपनी चाहिए'', यह अपनी राय मैंने उस औरत को बता दी । इसका मतलब उसके दिमाग में कहां तक प्रवेश कर सकेगा, इसका मैंने बिलकुल विचार ही नहीं किया ।

''सुबह से तो पानी भी नहीं पिलाया साब । पेट को इतना आराम देने पर भी हर पांच-दस मिनट के बाद दस्त होते ही रहे ।''

''यदि उसे पानी पिलाया होता, तो यह हालत न होती ।''

मैं बहुत परेशान होने लगा था । परंतु यह बौद्धिक परामर्श देने का अवसर नहीं था ।

खून की रिपोर्ट आ गयी । उनके अनुसार

**अशिक्षा तथा अंधविश्वास के कारण हमारा समाज अपने तथा अपने परिवार के स्वास्थ्य के प्रति बेहद लापरवाह है, ऐसे में परिवार नियोजन कैसे सफल हो सकता है । इसी समस्या से जूझते हुए डॉक्टरी व्यवसाय से संबद्ध लेखक का एक मर्मस्पर्शी अनुभव ।**

दवाई में हेर-फेर की गयी । दो-चार घंटे बीते । बहुत-सा सलाइन भी दिया । फिर भी बच्चे की स्थिति में खास फर्क नजर नहीं आया । उसे खून या 'प्लाज़्मा' देना जरूरी था । मैंने रिपोर्ट की फाइल देखी । ब्लड ग्रुप-ए बी पॉजिटिव । पैथॉलोजिस्ट ने इसके नीचे एक टिप्पणी भी दर्ज की थी । 'नो स्टॉक अॅव्हेलेबल' (हमारे पास इस ब्लड ग्रुप का खून इस समय नहीं है) इस स्थिति में उस बच्चे के मां-बाप में से किसी का खून उस बच्चे के खून से मेल खाता है या नहीं, यह देखना आवश्यक हो गया था । बच्चे की मां इतनी कमजोर और एनिमिक थी कि उसका खून लेने का प्रश्न ही नहीं उठता था । अतः मैंने बच्चे के पिता को बुलाकर कहा, "तुम्हारे बच्चे को खून देना पड़ेगा ।"

"अच्छा !—तो दे दो ।"

"उसके खून से मेल खानेवाला खून हमारे पास नहीं है । खून तुम्हें देना होगा ।' मैंने कहा ।

"नहीं साब ! मैं अपना खून कैसे दे सकता हूं ? हम ठहरे कामगार ! घर पर अभी चार बच्चों को छोड़कर आया हूं । यदि मुझे कुछ हो गया तो उनकी देखभाल कौन करेगा ?" वह आदमी गिड़गिड़ाने लगा ।

"लेकिन तुम्हें कुछ भी नहीं होगा । अपने शरीर में पांच लिटर खून होता है । उसमें से कुछ ले लिया जाए तो कुछ भी नहीं बिगड़ता । इसके अलावा तुम्हारा बच्चा तो बहुत छोटा है । उसे ज्यादा खून की जरूरत नहीं होगी ।" मेरा वैज्ञानिक स्पष्टीकरण ।

"नहीं साब ! खून तो मैं नहीं दे सकता । आप चाहे जो कहें ।"

"देखो, तुम मुझ पर भरोसा रखो । खून लिया जा रहा है, यह तुम्हें महसूस भी नहीं होगा ।"

इस पर बच्चे की मां ने 'हमारे आदमी का खून मत लो' कहकर खुल्लमखुल्ला जोर-जोर से रोना ही शुरू कर दिया ।

"देखो, जो खून देना है, वह तो तुम्हारे कलेजे के टुकड़े के लिए ही है न; किसी दूसरे के लिए तो नहीं ।" जहां तक हो सक रहा था मैं अपने दिमाग को शांत रखने की कोशिश कर रहा था ।

उसने एक ही रट लगा रखी थी—"नहीं साब, हम खून नहीं देंगे ।" अब साफ शब्दों में वास्तविकता को बतलाने के सिवा मेरे पास दूसरा कोई चारा नहीं था ।

"खून नहीं दिया गया तो तुम्हारे बच्चे के बचने की कोई उम्मीद नहीं है ।"

वह पलभर के लिए स्तब्ध रहा ।...मेरे मन में आशा के अंकुर फूटने लगे... उसने कुछ-न-कुछ निर्णय लिया होगा..... ।

"ठीक है साब ! मर जाने दो उसे ! हम दूसरा पैदा कर लेंगे ।"

मैं अवाक् रह गया ! 'एक बच्चे को मर जाने दो । हम दूसरा पैदा कर लेंगे ।'—यह एक बाप कह रहा है ।

एक घटा एक बराबर शून्य । शून्य जमा एक बराबर एक—कितना सरल हिसाब है !

आधी रात होने पर उस बच्चे की मृत्यु का प्रमाण-पत्र तैयार करते समय मुझे बराबर लग रहा था कि मैं उस पर एक घटा एक बराबर शून्य लिखूं !

**अनुवाद : डॉ. म.के. गाडगिल**

'भारत से तुम्हारे लिए क्या भेंट लाऊं ?' अपनी बहन जेन को छाती से लगाते हुए मेगॄडोनाल्ड ने पूछा ।

'एनी थिंग, दैट्स नाइस ।' (जो भी अच्छी चीज हो) —अपने फूल-से अधर से उसके माथे को चूमते हुए जेन ने कहा ।

अभिमान भरे नेत्रों से अपने पुत्र को विलियम्स देखते रहे । मेग्डोनाल्ड अपने पिता से गले मिला ।

'विश यू वैल माई सन । यह यात्रा तुम्हें सफलता प्रदान करे । भगवान तुम्हारी कामनाएं पूरी करें । दो महीनों में लौट आओगे न ?'

मेग्डोनाल्ड भावविभोर हो गया । उसकी आंखों में आशा चमक उठी । उसको इर्द-गिर्द प्रकाश से भरा-सा लगा । पिता की गंठीली अंगुलियों से उसने अपनी अंगुलियां मिलायीं ।

आई होप सो । जिस भारत देश से मैं प्रेम करता हूं उसके दर्शन के लिए दो महीने पर्याप्त नहीं हैं । फिर भी कोशिश करूंगा । जब सारा संसार निद्रावस्थित था, तब जो भारत जागृत और क्रियाशील रहा उस भारत के दर्शन करने जा रहा हूं । जब संसार के इतर देश सभ्यता के पालने में रेंग रहे थे तब जो भारत उन्नत सभ्यताओं की जननी बन चुका था उस भारत को देखने जा रहा हूं । उस पवित्र भूमि पर पैर रखने जा रहा हूं । पुण्यसलिला गंगा में मन भर डुबकी लगा-लगाकर स्नान करने जा रहा हूं । हिमालय की तलहटी के प्रदेशों की प्राचीनता और संस्कृति की विशेषताओं का रसास्वादन करने जा रहा हूं । हिंदू धर्म नामक एक महान तत्व को जिस देश ने संसार को दिया उस देश में चंद घंटों में पहुंच जाऊंगा । भारत संबंधी ये

# यह है, प्राचीन भारत

● **वेंकट सुब्रमणयम (जयरथन)**

***भारत महान देश है । इसकी संतानें बहुत ही श्रेष्ठ हैं । उन्हें यह अप्राप्य संपत्ति विरासत में मिली है । धूल से आवृत्त चित्र की भांति वह धुंधली पड़ी हैं । उसके महत्त्व को पहचानने की असमर्थता जो दीख पड़ती है वह तात्कालिक है । उसकी आत्मा रोगग्रस्त है । बस इतना ही है । इसके अलावा भारत में कोई अभाव नहीं है । अगर इस रोग का निवारण हो जाए तो निद्रा से जाग उठे मृगराज की भांति यह जाग उठेगा और सिंहगति से आगे बढ़ेगा । यह निश्चित है...***

मोहनजोदड़ो से प्राप्त पशुपति की मुद्रा

विचार मुझे गद्‌गद्‌ कर रहे हैं । मैं पसीजकर उन्हीं विचारों में घुल जाता हूं ।'

यह कहते-कहते मेग्‌डोनाल्ड की अंगुलियों ने पिता की अंगुलियों को कस लिया । इलियनाइस विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर वर्ग में, 'मुगल पूर्व भारत' विषय का विशेष अध्ययन कर रहा था, मेग्‌डोनाल्ड । भारत की सभ्यता और संस्कृति का उत्थान, भारतवासियों की जीवन पद्धति, आध्यात्मिक क्षेत्र में उसकी श्रेष्ठता, उसका सनातन धर्म आदि ने उसे बहुत आकृष्ट किया । किसी प्रकार वह एक बार भारत हो आने के लिए अधीर हो रहा था ।

**मानसिक गुलामी और भारतवासी**

अपने देश में रहनेवाले कुछ भारतवासियों से संपर्क रखकर उसने भारत के बारे में जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया । वे तो भारत की भौगोलिक सीमा रेखाओं मात्र से अवगत थे । उसको दुःख था कि ये भारतवासी भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति को एक साधारण चीज और ढोंग समझते हैं । कई बार वह यह सोचने को मजबूर हुआ कि इन भारतवासियों की मानसिक गुलामी अब भी बनी हुई है । यह जानकर उसे बड़ा विस्मय हुआ कि भारत के लोग पश्चिमी देशों और उनकी सभ्यताओं का खूब सम्मान करते हैं और अपने देश की सभ्यता की आधारभूत बातों को बिना जाने उसे हेय समझते हैं । कई बार उसने सोचा कि भारत के प्रधान शत्रु भारतीय ही हैं । इसलिए वह इस अति प्राचीन भारत को प्रत्यक्ष देखकर आनंदित होना चाहता था । भारत जाने के आवश्यक खर्च के लिए उसने धन भी इकट्ठा कर लिया था । उसने छुट्टी में भारत जाने का निश्चय कर लिया । आज वह भारत जा रहा है ।

हवाई जहाज की रवानगी की घोषणा हुई ।

पिता और बहन से विदा लेकर वह विमान पर चढ़ा । उसकी मां यदि तलाक लेकर न जाती तो आज उसे विदा करने वह भी आती, यह विचार क्षणभर के लिए उसके मन को हिला गया ।

थोड़ी देर में वह आकाश में उड़ने लगा ।

पालम हवाई अड्डे पर उतरा और बाहर आया । बाहर का मैदान खाली था । न टैक्सी थी, न कोई आटो रिक्शा ही । दूर लोगों की बड़ी भीड़ दीख पड़ी । रंगीन कपड़े सिर पर लपेटे लोग इधर-उधर घूम रहे थे । उसकी समझ में नहीं आया कि किससे, क्या पूछूं ? पास खड़े किसी पुलिसवाले से पूछा कि मामला क्या है ? उसने हिंदी में कुछ कहा जो उसकी समझ में नहीं आया । फिर इसने अंगरेजी में कुछ पूछा तो बड़ी गड़बड़ हो गयी । किसी तीसरे आदमी ने उसे समझाया कि यहां अखिल भारतीय किसानों का मेला चल रहा है । भारतभर के किसान यहां जुलूस में आ रहे हैं ।

'सम्मेलन में क्या होगा ?'

'नेता लोग भाषण देंगे । लोग नेता के अनुकरण करने की शपथ ग्रहण करेंगे ।'

'इतने लोग कैसे आये ?' उत्सुक हो मेगृडोनाल्ड ने पूछा । उसके प्रश्न से यह ध्वनित हुआ कि किसान लोग खेत में काम करना छोड़कर बेकार यहां क्यों घूम रहे हैं ।

इनके ठहरने के लिए अच्छा प्रबंध किया गया है । ये लोग हजारों लारियों में आये हैं । मेले के समाप्त होते ही ये सब अपने-अपने गांव लौट चलेंगे । जो नेता कहते हैं कि किसान लोग मेरे पक्ष में हैं, उन्हें पाठ सिखाने आये हैं । किसान जुलूस इतना लंबा था कि एक छोटी-सी जगह को पार करने में घंटों लग गये । बाप रे बाप कितनी बड़ी भीड़ है । किसी घमंडी नेता का गरूर तोड़ने यह जुलूस निकाल रहे हैं । भावावेश में आकर जो नेता भाषण दे रहा था उसे मेगृडोनाल्ड ने देखा और सुना । उसकी समझ में कुछ नहीं आया । देखने में वह सज्जन-सा लगा । उसकी आकृति और बोलने के ढंग में विशेष आकर्षण था ।

### व्यथा से भरा मन

इसमें गर्व करने की क्या बात थी ? एक व्यक्ति के 'ईगो' के लिए लाखों लोग अपना काम-धंधा छोड़कर, जिम्मेवारी की उपेक्षा करके, अपने को भी तकलीफ में डालकर क्यों आये हैं ? नेता के भाषण को अखबार में पढ़कर जान नहीं सकते ? उत्पादन का कितना नुकसान होता है ? शारीरिक बल का कितना अपव्यय होता है ? यह तो दो राजनयिक नेताओं का शीत युद्ध है । इसमें आम लोगों को क्यों घसीटते हैं ? लोग भी इसमें कैसे फंस जाते हैं ? सड़क को रोकते हुए, बिना खाये, गंदे स्थानों को और गंदा करते हुए ये लोग जा रहे हैं । क्या राजनीति इनके लिए मन बहलाव है ?

खिन्न मन से मेगृडोनाल्ड एक होटल की ओर गया । सड़क पर उसने देखा कि पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित लोग बड़ी भीड़ में जा रहे थे । उनकी बोली में, व्यवहार में, कार्यप्रणाली में एक अस्वाभाविकता दिखायी पड़ी । धर्म और संस्कृति संबंधी पुस्तकों की दुकानों पर एक भी खरीददार नहीं था । सिनेमाघरों में बड़ी भीड़ थी । धक्कामुक्की करके लोग काले बाजार में टिकट खरीद रहे थे । पैसे को पानी की तरह बहानेवाले और भड़कीले वस्त्र पहने हुए धनिकों

को उसने देखा । उन्हीं की छाया में पिचके मुंहवाले, दुबले-पतले, चिथड़ों से अपने शरीर को ढककर जानेवाले गरीबों को भी देखा ।

उसका मन व्यथा से भारी हो गया ।...

**मुक्ति शरीर की या आत्मा की ?**

वाराणसी !

गंगा तट पर खड़ा होकर धीमी चाल से बहनेवाली नदी की शोभा को निहारता रहा । हिंदुओं की जीवनधारा तो यही गंगा है । वह रोमांचित हुआ । उसे लगा कि भारतीय संस्कृति का मूल यहीं छिपा पड़ा है । वह इस पवित्र धारा में अपने शरीर को भिगोना चाहता था । पतलून और कमीज को एक थैली में रखकर किनारे पर छोड़ा और पानी में नहाने वह उतरा । शीतल जल ने उसे पुलकित किया । कई लोग, 'गंगा माई की जय' बोलते हुए स्नान कर रहे थे । यह देखकर उसके रोंगटे खड़े हो गये ।

उसने अनुभव किया कि कोई कठोर वस्तु उसके शरीर को स्पर्श करते हुए बह रही है । उसने अपने को उससे अलग किया । देखा कि वह एक मृत शरीर है । एकदम चौंक पड़ा । सोचा —क्या आत्महत्या करने के लिए यह पवित्र गंगा ही मिली ? चकित होकर खड़े उससे पास में नहानेवाले आदमी ने पूछा —'क्या देख रहे हैं, आप ?'

मेग्डोनाल्ड ने अपनी चिंता व्यक्त की ।

'नहीं, नहीं, यह आत्महत्या नहीं है । मरे आदमी के शव को गंगा में बहा देना पवित्र माना जाता है । गंगा में शव को बहा देने से आदमी को मुक्ति मिलती है । यह कहकर वह आदमी 'गंगा माई की जय' बोलते हुए नदी में डुबकी लगाने लगा ।

'मुक्ति ? मुक्ति तो आत्मा को मिलती है ! शरीर को कहां मिलती है ? आपके धर्माचार्यों ने यही तो कहा है । मृत शरीर को पानी में बहा देने से उसकी पवित्रता और शुद्धता नष्ट नहीं होती ? इस पवित्र गंगा को अपवित्र करने को आपका मन कैसे मानता है ? इस प्रकार के काम के लिए आपके धर्म ने मान्यता दी है ? इससे धर्म ही अपवित्र हो जाता है । इन सारी बातों को आप नहीं जानते ?'

'उसने प्रश्नों की झड़ी लगा दी । बड़ी वेदना के साथ नदी के प्रवाह को देख रहा था । नदी

पांडुक शिला मंदिर

लहरें मारती हुई आगे बढ़ रही थी मानों उसकी वेदना को मानकर बह रही हो ।

गंगा में स्नान करके आनेवालों को देखकर वह खुश तो हुआ, परंतु उसे ऐसा लगा कि ये लोग फल के सार को उगलकर निस्सार छिलके को चबा रहे हैं ।

मेग्डोनाल्ड बड़े दुख के साथ किनारे पर आया । अपनी थैली को देखा तो वह गायब थी । उसकी चोरी हो गयी । उसे संतोष था कि उसमें पैसे नहीं रखे थे । वह नहीं जानता था कि यहां परदेशी लोगों का माल चोरी हो जाता है । लोग गोता लगाकर स्नान कर रहे थे । उन्हें इसकी परवाह कहां । उसे जांघिये में जाता देख

लोग हंस रहे थे । 'हिप्पियों का गंगा स्नान से क्या मतलब ? इन लोगों के कारण ही नदी की 'सैंक्टिटी' (पवित्रता) नष्ट हो जाती है ।... '

भक्ति के नाम पर पंडे लोग जो अन्याय करते हैं, उसे मेगृडोनाल्ड ने देखा । दाहकर्म के समय पैसे लूटने को देखा । भक्ति की बिक्री, विश्वास की चोरी देखकर वह सिहर उठा ।

'इन लोगों को क्या हुआ ?'

'ये लोग अपना आत्मबल कैसे खो बैठे ?'

'हम एक महत्त्वपूर्ण विरासत के उत्तराधिकारी हैं ।' इस बात को ये लोग

भुवनेश्वर में लिंगराज मंदिर

धीर-धीरे भूलते जा रहे हैं ।

**समता का सूत्र**

कलकत्ते में रेलगाड़ी में सफर कर रहा था, मेगृडोनाल्ड ।

उसके सामने दो व्यक्ति बैठकर अंगरेजी में बातें कर रहे थे । उसने उनकी बातों को ध्यान से सुना ।

'परसों तीन जमींदारों के सिर धड़ से अलग कर दिये । उनके कटे सिरों को उनके घरों के सामने ही लटका दिया ।' एक ने कहा ।

दूसरा बड़े चाव से सुन रहा था ।

'इन धनिकों को इसी प्रकार मार डालना चाहिए । इन लोगों को मार डालने से ही लोगों में समता आएगी ।

दूसरे ने दिलोजान से इसका समर्थन किया ।

'माफ कीजिए' —मेगृडोनाल्ड ने बीच में टोककर पूछा । 'यह कैसे संभव होगा ? एक धनिक के मरने पर उसका पुत्र उसकी संपत्ति का वारिस बनेगा । इससे समता कैसे स्थापित होगी ? किसी को जान से मारना कोई धर्म है ? जब तक बुनियादी बातें नहीं बदलतीं कोरे मानव संहार से क्या होगा ? एक धनिक के मरने पर उसके स्थान पर दूसरा उत्पन्न हो जाएगा । इससे समता थोड़ी ही आएगी । सच बात तो यह है, परंपरागत धनिक से अधिक खतरनाक हैं, ये नये धनिक ।'

सामने के दोनों आदमी उसे एकटक घूर रहे थे । फिर दोनों ने एक-दूसरे को देखा ।

'यू आर एन अमेरिक आई सपोस' —एक ने कहा ।

'हां' —कहा, मेगृडोनाल्ड ने ।

'यथेच्छाकारी बूर्ष्वा' —एक ने धीमे स्वर में कहा । फिर अपने साथी से अपनी मातृभाषा में बोलने लगा । इसके बाद दोनों इसे अछूत समझकर बातें करने लगे ।

'क्या ये नहीं जानते कि उनके ऐसे विचार निराधार हैं ? ऐसे विचारों को फैलाना कीटाणुओं का पोषण करना है ।'

'युद्ध में भी नेकी होनी चाहिए । अधर्म युद्ध खंडनीय है, —ऐसा विचार जिस देश ने दिया, उस देश में ये विचार-लहरियां ? आम लोग भी इसे सहन कर लेते हैं ? मेगृडोनाल्ड सबको चुपचाप देखता आ रहा था । 'मेहनत करने पर मजदूरी' —यह सिद्धांत अब नहीं रहा । 'मेहनत न करने पर मजदूरी, मेहनत करने पर

बोनस' —यह मनोभाव फल रहा है । यह देखकर उसका दिल रोने लगा । उसने यह भी देखा, कम मेहनत करना बुद्धिमानी है, अधिक मजदूरी पाना चतुराई है । यह मनोभाव लोगों के दिल में जमकर बैठ गया है । उसने देखा, मालिकों का शोषण कम, मजदूरों का शोषण ज्यादा हो रहा है ।

हाय ! इन लोगों को क्या हुआ ? ये लोग कहां जा रहे हैं ?

### भारतवासी कौन ?

'महाराष्ट्र से गैर मराठों को निकाल देना चाहिए । नहीं तो बड़ा हंगामा होगा ।'

'कर्नाटक, कन्नड़भाषियों के लिए मात्र है ।'

'ओडिशा की सारी नौकरियां, ओडिशा निवासियों को ही मिलनी चाहिए ।'

'बिहार में बाहरवालों को कोई काम नहीं है ।'

मेग्डोनाल्ड ने इस प्रकार के नारे सुने ।

मराठे, कन्नडिगा, ओडिशावाले, बिहारवाले —ओफ ! कितनी जातियां ! कितने प्रकार के लोग हैं ? तब सच्चा भारतवासी कौन है ? वह कहां रहता है ? क्या भारत में ही भारतीय विदेशी बन गया ? लोग कहते हैं —भारत प्राचीन देश है । इस प्राचीन देश का निवासी कौन है ? —उसका मन विकल हो उठा ।

उसने देखा, उसके सपनों का भारत आज के भारत से भिन्न है । वह तिलमिला उठा । उसे लगा कि वह कई वर्ष के बाद के भारत में आया है । उसके स्वप्न का भारत कुछ सौ वर्ष पहले मर चुका है ।

थकान भरे मन और टूटे स्वप्नों के साथ वह तमिलनाडु में आया ।

अति प्राचीन तमिलनाडु के बारे में उसने जो पढ़ा था वे सब उसे अब याद आये । मूर्तिपूजा के निंदक, व्यक्तिपूजा को धर्म मानकर चल रहे हैं । उन पर उसे तरस आया । उसने देखा, मंदिर में देवमूर्तियों को माला पहनाने का खंडन करनेवाले, चौराहे पर प्रतिष्ठित अपने प्रिय नेताओं को माला पहनाकर सिर नवाते हैं । धर्म और पूजापाठ पर अपना प्रभाव डालने की इच्छा रखनेवाले राजनयिकों को देखकर उसे हंसी आयी । टेढ़े-मेढ़े मार्ग पर चलकर समस्याओं का हल करनेवालों को देखकर उसका चित्त खिन्न हुआ । राजनयिक शत्रुता के कारण भाई, भाई का गला काटना देखकर वह बौखला उठा ।

यह देखकर उसे वेदना हुई कि एक ओर जाति-पांति का भेदभाव दूर करो, कहकर दूसरी ओर उसका पोषण करते हैं । इन लोगों की अज्ञानता कब दूर होगी ? उनमें विवेक कब जगेगा ?

'राजनयिक नेता जनता के सेवक हैं'। —इस बात को लोग कब जानने लगेंगे ?

'भला, इन लोगों की यह दुस्थिति कैसे हुई ?'

'इनका ह्रास कैसे हुआ ?'

'इनके मन का मैल कब धुलेगा ?'

मेग्डोनाल्ड का मन चूर-चूर हो रहा था

### विवेकानंद का ये भारत

यह है कुमारी अंतरीप, जहां देवी वर्षों से तपस्यालीन है ।

समुद्र की लहरें एक-दूसरी से टकराकर बिखर जाती हैं ।

तीन सागरों के संगम स्थल पर एक विराट

शिलाखंड बड़ी गंभीरता से खड़ा है। यह है, विवेकानंद स्मारक शिलाखंड !

मेगृडोनाल्ड बड़ी ललक से विवेकानंद की प्रस्तर मूर्ति को निहार रहा है । गंभीर शेर की भांति विवेकानंद खड़े हैं ।

'हे, वीर परिव्राजक ! ऐ, तपस्यालीन ज्ञान भानु ! आप ही ने यह नारा दिया —उठो, जागो ! आपके भारत का यह अधःपतन कैसे ? आपने ही भारतवासियों में जागृति उत्पन्न की । उस देश की यह हालत ?

उसका दिल अतीव दुःख से फटा जा रहा था ।

अपलक नेत्रों से उस गंभीर मूर्ति को वह देखता हुआ खड़ा रहा ।

भारत महान देश है । इसकी संतानें बहुत ही श्रेष्ठ हैं । उन्हें यह अप्राप्य संपत्ति विरासत में मिली है । धूल से आवृत्त चित्र की भांति वह धुंधली पड़ी हैं । उसके महत्त्व को पहचानने की असमर्थता जो दीख पड़ती है वह तात्कालिक है । उसकी आत्मा रोगग्रस्त है । बस इतना ही है । इसके अलावा भारत में कोई अभाव नहीं है । अगर इस रोग का निवारण हो जाए तो निद्रा से जाग उठे मृगराज की भांति यह जाग उठेगा और सिंहगति से आगे बढ़ेगा । यह निश्चित है...

इस देश के रोग का निवारण करने दूसरे विवेकानंद का अवतरण होना चाहिए । मन से बेकल इन भारतवासियों को ठिकाने लाने दूसरे विवेकानंद को ज्ञान की ज्योति लेकर जन्म लेना होगा ।

तब भारत जगेगा । नयी धारा बहेगी । यह निश्चित है ।

अमरीका की ओर अग्रसर होते हुए मेगृडोनाल्ड ने इन विचारों को अपनी डायरी में अंकित कर लिया ।

उसका दृष्टिपटल अश्रुसिंचित हुआ ।

**अनुवादक : एम. सुब्रमण्यम**

### *पक्षी क्यों चहकते हैं ?*

*पक्षियों के लिए सबसे अधिक संवेदनशील स्थान है उनका घोंसला । ये स्थान किसी भी अनजाने जीव के लिए वर्जित रहता है । पक्षी अधिकतर तब चहकते हैं, जब कोई बाहरी जीव उनके क्षेत्र में प्रवेश करता है । तब ये जोर-जोर से चहककर अन्य पक्षियों को सचेत करते हैं और अनचाहे जीव को भगाने के लिए कई बार आक्रमण भी करते हैं ।*

*पक्षियों के चहकने का दूसरा मूल कारण है नरपक्षी द्वारा घोंसले के लिए उपयुक्त स्थान का खोज लेना । घोंसलों के लिए स्थान पाते ही नर पक्षी चहक-चहककर मादा को अपनी ओर आकर्षित करता है । मादा पक्षी उसी नर पक्षी की ओर अधिक आकर्षित होती है, जिसकी चहकने की आवाज अधिक होती है । नर पक्षी इस प्रतियोगिता में जीतने के लिए मधुर से मधुर संगीत निकालते हैं ।*

### प्राइवेट लिमिटेड कैसे ?

**क.ख.ग., रांची : मैं अखबारों व पत्रिकाओं के लिए लिखता हूं । मैं जानना चाहता हूं कि प्राइवेट लिमिटेड एक निजी उद्योग है, जिसका एक मालिक (प्रोप्राइटर) होता है, जो कुछ कर्मचारियों को वेतन पर रखकर अपना उद्योग चलाता है और कर्मचारियों का इस उद्योग में कोई अधिकार नहीं होता है ? इसका पंजीयन किस विधान अथवा अधिनियम के अंतर्गत होता है ? इसके लिए सदस्यों की संख्या निश्चित होती है, या एकमात्र स्वामी ही प्राइवेट लिमिटेड आरंभ कर सकता है ?**

अखबारों को लेख आदि देने का कार्य प्रारंभ करने में कोई बाधा नहीं आनी चाहिए । यह ठीक है कि आपके लेख या अन्य सामग्री अखबार वाले उपयोग के लिए स्वीकार करें यह आवश्यक नहीं है । व्यवस्था की दृष्टि से यह कार्य कोई, व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह भी कर सकता है । इस कार्य के लिए प्राइवेट लिमिटेड कंपनी बनायी जा सकती है । प्राइवेट लिमिटेड कंपनी का पंजीकरण कंपनी कानून के अंतर्गत कराया जा सकता है । इस प्रकार की कंपनी में सदस्यों की अधिकतम संख्या पचास तक हो सकती है ।

### पंजीयन रद्द कराना

**गोपाल, वृंदावन : मैंने अपनी नयी दुकान का उ. प्र. दुकान और वाणिज्य अधिष्ठान अधिनियम १९६२ एवं उ. प्र. दुकान और वाणिज्य अधिष्ठान नियमावली, १९६३ के अंतर्गत दुकान या वाणिज्य अधिष्ठान के पंजीयन के अंतर्गत पंजीकृत कराया है जो कि पैंतीस रुपये का है । इसकी अवधि पांच साल की है । मेरी दुकान ठीक प्रकार से नहीं चल रही है अतः मैं दुकान का यह पंजीयन कैंसिल कराना चाहता हूं अतः अब मुझे क्या करना पड़ेगा ?**

दुकान का पंजीकरण कराने के बाद, दुकान के न चलने की स्थिति में आपको पंजीकरण अधिकारी को सूचित कर देना चाहिए । इसके लिए सूचना देते समय पंजीकरण का पूरा विवरण अर्थात फर्म का नाम, पंजीकरण संख्या तथा पंजीकरण की तारीख का उल्लेख अवश्य करें, जिससे विभाग में आपका रिकार्ड निकलना सुलभ हो ।

### वेतन का सवाल

**क.ख.ग., गोरखपुर : गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा विधि सम्मत अनुमोदनोपरांत मेरी नियुक्ति एक डिग्री कॉलेज में हुई । मैं निरंतर पढ़ा रहा हूं । प्रबंध समिति ने मुझे बाध्य किया कि मैं प्रातः ७ से १० तक डिग्री में पढ़ाऊं, साथ ही १०.३० से ४ तक इंटर में । जब तक डिग्री से वेतन न दिया जाए तब तक इंटर से ही वेतन लें । लगभग पांच वर्षों से यही क्रम चल रहा है । मैं दोनों समय पूर्णकालिक हूं । प्रबंध समिति के सामने मुंह खोलने की मेरी हिम्मत नहीं है । डिग्री से वेतन दिलाने की बात जब मैंने निदेशक से की, तो उन्होंने कहा कि मेरी सेवा इंटर की ही मानी जाएगी । मुझे डिग्री का वेतन नहीं मिल सकता ।**

**मेरी मजबूरी का फायदा उठाकर प्रबंध समिति धांधलीवश मुझे डिग्री के वेतन से वंचित कर रही है । मुझ असहाय शिक्षक के लिए न्यायालय क्या करेगा ? मैं कैसे डिग्री का वेतन पाऊंगा तथा इंटर से मुक्त होकर एक ही सेवा करूंगा ?**

इंटर कॉलेज में अध्यापन कार्य के लिए आपको नियुक्ति पत्र मिला या नहीं, आप डिग्री कॉलेज में अपनी उपस्थिति किस प्रकार दर्शाते हैं, आदि बातों का विवरण आपके पत्र में नहीं है । एक स्थान पर पूर्णकालिक आधार पर कार्य करते हुए दूसरे स्थान पर भी सेवा करने की साधारणतय; अनुमति नहीं होती । परंतु आपके मामले में तो दोनों स्थानों पर प्रबंध समिति एक ही है । इसका मतलब यह भी माना जा सकता है कि एक स्थान अर्थात डिग्री कॉलेज में नियुक्ति के साथ दूसरे स्थान पर कार्य उनकी अनुमति से किया जा रहा था । आपकी मूल नियुक्ति डिग्री कॉलेज की है, जहां आप पढ़ा भी रहे हैं, इसलिए आपको वह वेतन तो मिलना ही चाहिए । उसके साथ इंटर कॉलेज में सेवा करने के लिए आपको पृथक से विशेष वेतन/भत्ता मिलना चाहिए । परंतु यह तब ही संभव है, जब आप खुलकर इसकी मांग करने को तैयार हों । अब आपको पांच वर्ष का समय हो चुका है । आप इंटर कॉलेज में पढ़ाने से इंकार कर सकते हैं ।

## बेदखल करना है

**तुलाराम, गढ़वाल : मेरे चार लड़के हैं, जिनमें दो शादी-शुदा, बाल-बच्चेदार हैं, दो अभी मुझ पर आश्रित हैं । दोनों बड़े लड़के मुझे किसी प्रकार की आर्थिक सहायता नहीं देते अपितु अनादर का भाव भी रखते हैं । मैं उन दोनों को अपनी चल-अचल संपत्ति से वंचित करना चाहता हूं । तथा उनमें से एक बड़ा लड़का जो मेरे मकान में रह रहा है तथा खेती भी संभाले हुए है, को बेदखल करना चाहता हूं । कृपया, विधि सम्मत राय दें ।**

*विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ*

*—रामप्रकाश गुप्त*

आप अपनी संपत्ति का भाग्य निर्धारण करने के लिए स्वतंत्र है । आप एक घोषणा करके अपने दो बेटों को संपत्ति के अधिकार से वंचित कर सकते हैं । इस हेतु शेष दो बेटों के पक्ष में वसीयत कर देनी भी लाभप्रद रहेगी ।

आपके मकान में रह रहे लड़के से मकान व खेत छोड़ने के लिए आप नोटिस दे दें । खेती की देखभाल आपको स्वयं शुरू कर देनी चाहिए तथा मकान से लड़के को निकालने के लिए कानूनी कार्रवाई करनी चाहिए । आप इस लड़के को मकान से बाहर निकालने तथा मकान को अपने कब्जे में लेने के लिए दीवानी दावा कर सकते हैं ।

## जमीन की वापसी कैसे ?

**राजेंद्र किशोर, भागलपुर : मेरे तिरानवे वर्षीय वृद्ध पिता अनिद्रा, मानसिक कमजोरी एवं भुलक्कड़पन के बहुत पुराने मरीज हैं । चार महीने पहले गांव के कुछ लोगों ने उनसे कुछ जमीन, जिसे उन्होंने अपने नाम से सन १९४४ में रैयती बंदोबस्त करवाया था, की रजिस्ट्री बिक्री उन्हें डरा-धमकाकर एवं बहकाकर करा ली है । जितने रुपये रजिस्ट्री दस्तावेज में लिखवाये गये, भुगतान उससे कम दिया गया एवं किसी-किसी मामले में नहीं भी दिया गया ।**

**पिताजी पुराने विचारधारा के सीधे-सादे व्यक्ति**

हैं एवं उन्होंने कीमत मिलने के विश्वास पर रजिस्ट्री की रसीद भी उन लोगों के हवाले कर दी । इन व्यक्तियों ने अपनी शर्तों पर जमीन लिखवायी तथा जिस जमीन की बात उन लोगों ने तय की थी, उसका बिक्रीनामा न करवाकर, अन्य भूमि का बिक्रीनामा करवा लिया । मेरे पिता अकेले थे । ठीक से देख नहीं पाते, ठीक से सुन नहीं पाते, अतः जैसे-जैसे इन व्यक्तियों ने कहा करते गये । हम दो भाई हैं, जो सरकारी नौकरी पर दूर रहते हैं । हमें इन सब घटनाओं का पता अब लगा है । बिक्री करने के पूर्व हम दोनों भाइयों से राय नहीं ली गयी । जायदाद पूरे ६.२० एकड़ है ।

**क्या इस जायदाद को वापस पाने का कोई उपाय है ?**

आपके पत्र से ऐसा स्पष्ट होता है कि आपके पिताजी ने मानसिक कमजोरी की स्थिति में कुछ जायदाद दूसरों के नाम कर दी तथा यह सब कार्रवाई करने में उन्होंने अपनी स्वतंत्र राय का इस्तेमाल नहीं किया । कहीं-कहीं पर तो धोखा-धड़ी करके भी उनसे संपत्ति हस्तांतरित करवा ली गयी । ऐसी स्थिति में संपत्ति का हस्तांतरण स्वतंत्र राय व स्वेच्छा से न होकर मानसिक कमजोरी या धोखाधड़ी के आधार पर माना जाएगा तथा आपके पिताजी को उक्त हस्तांतरण को अवैध तथा निष्क्रिय घोषित करवाने का अधिकार है । इस कार्रवाई को पूरी सावधानी से तथा यथाशीघ्र कर लेना उपयुक्त रहेगा । घोषणा हेतु दावे में उनकी मानसिक स्थिति तथा धोखे का पूरा विवरण अवश्य दें ।

## चाचा का अधिकार

**अनिलकुमार अरोड़ा, बेगूं : मेरी उम्र सोलह वर्ष है, मेरे माता-पिता का देहांत हो चुका है । पिताजी एक प्रिंटिंग प्रेस व मकान छोड़ गये थे । जिसे पिताजी के बाद चाचाजी संभाले हुए हैं । मैं**

**चाचाजी के पास ही रहता हूं जो मुझे बहुत तंग करते हैं, मारते-पीटते भी हैं । अगर मैं कुछ कहता हूं तो वे प्रेस व मकान को बेच देने की धमकी देते हैं तथा कहते हैं कि उन्होंने मुझे व मेरी बहन को अपने पास रखकर पाला-पोसा तथा बहन की शादी की तथा माताजी-पिताजी का क्रिया कर्म किया, इसमें जो खर्च हुआ उसकी वसूली के लिए वह प्रेस व मकान बेच सकते हैं । बताइए, मैं क्या करूं क्या उनके पास रहकर अपमान व मारपीट सहता रहूं ?**

मारने-पीटने या आपकी संपत्ति बेचने के अधिकार आपके चाचाजी को नहीं है । पिताजी के स्वर्गवास के तुरंत बाद आप व आपकी बहन संपत्ति के पूर्ण स्वामी हो गये हैं । प्रेस तथा मकान पर आपके चाचा का कोई अधिकार नहीं है । अगर आपके पिताजी ने कोई रकम उनसे उधार ली हो तो, वह उस रकम की वापसी के लिए तीन वर्ष की अवधि में कार्रवाई कर सकते थे । आपके पत्र से ऐसा लगता है कि आपके पिताजी का स्वर्गवास पांच वर्ष से अधिक पहले हो चुका है । इस अवधि में आप पर हुए व्यय के साथ-साथ प्रेस से तथा मकान से कुछ आय भी हुई होगी । इस प्रकार प्राप्त हुई आमदनी का पूरा ब्यौरा समझाने का उत्तरदायित्व भी आपके चाचाजी का है । ●

# आखिर विद्यापति गंगातट तक नहीं पहुंच पाये

● डॉ. चंद्रलेखा सिंह

विद्यापति मैथिली भाषा के एक उच्च कोटि के कवि तो थे ही, साथ-साथ संस्कृत के उद्‌भट विद्वान, गद्य के भी प्रवीण लेखक, भाषा और भाव के अपूर्व धनी, चिंतक, राजनीतिज्ञ और महान साधक भी थे । वे राजकवि और जन-कवि दोनों ही थे । उन्हें कई राजाओं से प्रश्रय प्राप्त हुआ जैसी कि उक्ति है निरालंबो न तिष्ठंति पंडिताः वनिता लताः' यही धारणा थी उन दिनों, पर उन्होंने केवल उनके लिए ही अपनी कलम नहीं उठायी, बल्कि जन-समाज के लिए भी लिखा और बहुत लिखा जो आज मिथिला के घर-घर में प्रसारित है । गोस्वामी तुलसीदास को छोड़कर देश का शायद ही कोई ऐसा कवि होगा, जिसने जन-मन को इस परिमाण में प्रभावित किया हो । यहां किते कलाम न होगा यह बताना कि महाकवि केवल कवि ही नहीं एक कुशल योद्धा भी थे और कई लड़ाइयों में भी उन्होंने भाग लिया था ।

### राजकवि और जनकवि

संस्कृत भाषा में उनके लिखे गये ग्रंथ किसी-न-किसी राजा या रानी के सुझाव पर लिखे गये थे । उनकी सर्वप्रथम कृति 'ओइनी' राजवंश से संबंधित है । इस वंश के राजे उनके प्रथम पृष्ठपोषक थे । उत्तर बिहार के पूसा नामक स्थान किसी समय कृषि अनुसंधानशाला (जो १९३४ के भयंकर भूकंप के बाद उठकर दिल्ली चली आयी) के कारण भारत-प्रसिद्ध था, उसके समीप ही एक स्थान है ओइनी । किसी समय यह ओइन वार ब्राह्मण राजाओं की राजधानी थी । अपने भुजबल के लिए यह राजवंश प्रसिद्ध था । इस वंश के राजा गगनेश्वर या गणेश्वर अपने व्यक्तित्व तथा शौर्य के लिए प्रसद्धि थे । सुलतान अलसान को यह गवारा न हुआ और उसने उसकी हत्या करके उनके राज्य पर १३७२ ई. में अधिकार कर लिया । उनके तीन पुत्र थे—वीरसिंह, कीर्तिसिंह तथा रावसिंह । अनुमान है कि वीरसिंह ने वहां से दस मील दूर—गंडक नदी के पार जाकर वीरसिंहपुर नामक गांव बसाया और वहीं रहने लगे । शेष दोनों जौनपुर के इब्राहीम शाह के शरणागत हुए और उसकी मदद से उन्होंने अलसान को पराजित किया । गद्दी पर कीर्तिसिंह बैठे, तभी विद्यापति को उनका प्रश्रय प्राप्त हुआ और उनके राजत्व काल से ही कवि

वर्षाकाल में गंगा

ने अपनी प्रथम पुस्तक लिखी - कीर्तिलता - कीर्तिसिंह की वीरगाथा, जिसके अंतिम श्लोक में लिखा - एवं संगरसाहस, प्रमथन प्रालब्ध लव्घोदयां, पुष्णातु प्रियमाशशांकतरर्णी श्रीकीर्तिसिंहोनृपः ।

**संस्कृत और अवहट्ट भाषा के कवि**

विद्यापति ने कीर्तिलता की रचना संस्कृत और अवहट्ट भाषा में की, तत्पश्चात भूपरिक्रमा तथा पुरुष-परीक्षा नामक ग्रंथ संस्कृत भाषा में, फिर कीर्तिपताका अवहट्ट में । तदुपरांत शैव-सर्वस्व-सार और शुंभ-वाक्यावली की रचना उन्होंने राजा भवसिंह की पत्नी विश्वासदेवी के आदेश पर की । इन सभी पुस्तकों में विभिन्न राजाओं और रानियों का कीर्ति-कलाप वर्णित है । लगता है कि कीर्तिसिंह के बाद राजवंश ओइनी से उठकर मिथिला के मध्यभाग में चला गया जिसके सबसे प्रसिद्ध वंशज राजा शिवसिंह हुए जिनकी तथा उनकी विदुषी पत्नी लखिमा ठकुराइन की चर्चा विद्यापति के पदों में बहुतायत से पायी जाती है, यथा—

**भनइ विद्यापति एहु रस जाने,**
**राए सिवसिंह लखिमा देइ रमाने, आदि आदि ।**

विद्यापति ने और भी अनेक ग्रंथ संस्कृत में लिखे, यथा राजा दर्पनारायण के सुझाव पर विभागसार, उनकी भार्या राज्यशासिका धीरमती के कहने पर दानवाक्यावली तथा दुर्गाभक्तितरंगिणी आदि । इस बीच राजा शिवसिंह के देहावसान के बाद महाकवि एक और राजा के आश्रय में चले

गये –द्रोणावार-वंशीय राजा पुरादित्य (उपनाम गिरि नारायण) के, जिनकी राजधानी जनकपुर के समीप राजबनौली में थी । वहीं उन्होंने लिखनावली नामक ग्रंथ की रचना लगभग १४१८ ई. में की जिसमें उन्होंने राजा पुरादित्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है और अपने बाहुबल के सप्तरीदेश को विजय कर वहां द्रोणवारवंश के राज्य की स्थापना का उल्लेख किया है । राजा गिरिनारायणसिंह मेरे ससुरालवालों के

पूर्वजों में थे, अतः उनके संबंध में बहुत दिनों से मैं यह सुनती आ रही हूं कि वे महाकवि के पोषक ही नहीं, अंतरंग मित्र भी थे । एक दिन भी उन्हें अपने से अलग नहीं होने देते थे । पर उनके उत्तराधिकारियों में उन-जैसी गुणग्राहकता न हुई जिसके फलस्वरूप पुनः ओइनी राजवंश के प्रश्रय में लौट आये ।

शिव मंदिर

### एक राजनीतिज्ञ कवि

महाकवि के उपर्युक्त ग्रंथों से यह साफ-साफ परिलक्षित होता है कि वे मात्र कवि ही नहीं थे, एक कुशल राजनीतिज्ञ भी थे तथा समय-समय पर राजाओं के समक्ष राज्य एवं युद्ध-संचालन पर अपने सुझाव प्रस्तुत किया करते थे । समय बड़ीउथल-पुथल का था — लूटमार, दंगा-फसाद का । देश में पठानों का शासन था । 'ला-आर्डर' उसी तरह ढीला पड़ता जा रहा था जिस प्रकार मुगल-शासन के अंतिम काल में । जाहिर है कि ऐसे दुर्दिन में मिथिला के तत्कालीन राजाओं को उनकी सलाह मूल्यवान प्रतीत होती, एक लंबे अर्से तक राजाओं के प्रश्रय में उनके रहने का, संभव है कि यह भी एक मुख्य कारण रहा हो ।

स्वभाव से विद्यापति हंसमुख थे तथा खेलकूद में भी अभिरुचि रखते थे, इसी कारण उन्हें खेलनकवि भी कहते थे जिसकी चर्चा उन्होंने स्वयं कई स्थानों पर की है ।

### वे गंगातट तक नहीं पहुंच पाये

वे काफी उम्र तक जीवित रहे । उनका जन्मकाल १३८० ई. बताया जाता है, पर मरणकाल के संबंध में कोई निश्चित मत नहीं है । कहते हैं, जब वे बहुत वृद्ध हो गये तो वे गंगा-तट की यात्रा पर चल पड़े ।

वृद्धावस्था के कारण वे गंगा-तट पर नहीं पहुंच पाये, कुछ इधर ही थककर लेट गये, उनकी शक्ति जाती रही । मंजिल करीब थी, पर वे वहां तक पहुंचने में भी असमर्थ थे । उर्दू के एक शायर ने लिखा है—

**किस्मत पर उस मुसाफिरे-बेकस के रोइए**
**जो थक गया हो राह में मंजिल के सामने**

यही दशा कुछ महाकवि की भी हुई । अतः बड़े दर्द-भरे शब्दों में वह बोले, 'मां गंगे, मैं इतनी दूर तक तेरे लिए आया, अब क्या तू आकर मुझे गोद में न ले लेगी' । कहते हैं, तभी गंगा से एक जल का स्रोत निकला और जहां वे असहायावस्था में पड़े हुए थे, वहां आकर उन्हें वहां से बहा ले गया । उस स्थान (ग्राम बाजितपुर, बरौनी से अधिक दूर नहीं) पर अब

भी गंगा का एक 'छाड़न' मौजूद है तथा प्राचीनकालीन विद्यापति के किसी भक्त का बनाया हुआ शिव का मंदिर मौजूद है जहां शिव भक्तों की भीड़ रहती है और पर्व-त्यौहारों पर एक बड़ा मेला लगा करता है। जिस 'छाड़न' की मैंने चर्चा की है, वह कभी पानी से खाली नहीं होता, बल्कि बाढ़ के जमाने में गंगा के जल से वह भर उठता है मानों वह कोई झील हो।

वे शैव थे, हालांकि उनके रस से परिपूर्ण पद अधिकांशतः वे हैं जो राधा-कृष्ण-प्रेम की माधुर्य लीला से संबंधित हैं।

*विद्यापति जब बहुत वृद्ध हुए, तब वे गंगातट की यात्रा पर चल पड़े। लेकिन जर्जर वृद्धावस्था के कारण गंगा-तट पर नहीं पहुंच पाये। बड़े दर्दभरे शब्दों में वह बोले, "मां गंगे। मुझे अपने में समेट लें।" कहते हैं जल का स्रोत निकला और असहाय कवि को अपने साथ बहा ले गया। और इस प्रकार मात्र गीत गोविंद की रचना करने से सफल कवि ने अपना देह त्याग किया।*

### रहस्यवाद के कवि

विद्यापति मूलतः रहस्यवाद के कवि थे और उनके सर्वोच्च पद वे हैं जिनमें उन्होंने राधा-कृष्ण के रूप में आत्मा और परमात्मा के पारस्परिक आकर्षण का, आत्मा का परमात्मा से मिलन की बेचैनी का वर्णन किया है। उन्होंने आगे चलकर यह अनुभव किया कि यदि उन्हें समाज के प्रत्येक अंग तक पहुंचना है तो वह संस्कृत के द्वारा संभाव्य नहीं है, वह प्रचलित मैथिली भाषा के द्वारा ही संभव हो सकता है। अतः इसके बाद की सारी रचनाएं उन्होंने मैथिली भाषा में कीं और उनमें इतना माधुर्य भर डाला कि एक बार जिसने उन्हें पढ़ा या सुना, वे कभी उन्हें भुला नहीं पाये। माधुर्य के साथ-साथ वह भाव की गहराई, अर्थ-गौरव से परिपूर्ण ही नहीं, ओतप्रोत हैं। उदाहरणार्थ उनके एक मैथिली पद का अर्थ इस प्रकार है—

"सखि ! मेरा अनुभव क्या पूछती है ? उसी प्रीति को अनुराग बखानते हैं जो क्षण-क्षण में नयी प्रतीत होती है। मैं सारे जन्म उस रूप को निहारती रही, पर नेत्र तृप्त न हुए। कानों से वह मधुर व.गी सुनती रही, पर ऐसा लगता है मानो श्रुतिपथ को उसने छुआ ही नहीं, अर्थात् तृप्ति न हुई। कितनी मधुयामिनी-रातें-मैंने केलि में बितायीं, फिर भी केलि का वास्तविक अनुभव न हुआ अर्थात् साध पूरी न हुई। लाख-लाख युगों तक मैंने हृदय में रखा, तब भी हृदय शीतल न हुआ (अर्थात् भरा नहीं)। रसिक यद्यपि रस में मग्न रहे, अनुराग से वंचित ही बने रहे (अर्थात् उसका प्रकृत अनुभव न पा सके)। विद्यापति कहते हैं, लाख में एक आदमी भी ऐसा न मिला, जिसका प्राण पूर्ण

रूप से जुड़ाया हो ।''

दिव्य-प्रेम की चिरंतन अतृप्ति ही तो रहस्यवाद की वास्तविक नीति है । कितने सुंदर शब्दों में विद्यापति ने इसे पद में व्यक्त किया है, **'जनम अवधि हम रूप निहारल, नयन न तिरपित भेल, (आत्मा परमात्मा के लिए तड़पती ही रही) —**

इसी तरह पद-लालित्य एवं भाव-व्यंजना का सुंदर समन्वय हम विद्यापति में पाते हैं । माधुर्य से अतिशय भरी हुई है महाकवि की वह मूल पंक्तियां जिसका अनुवाद उपर्युक्त है ।

## आज भी लोकप्रिय

जिस प्रकार जन-समाज में प्रवेश पाने के लिए विद्यापति ने संस्कृत भाषा का परित्याग करके जन-भाषा-मैथिली-में पद्य रचना का आरंभ किया, उसी प्रकार विषय के चयन में भी वे परिवर्तन लाये । राधा-कृष्ण प्रेम की गहराई और आध्यात्मिक अर्थ को साधारण जन नहीं समझ पाते हैं, यही कारण है कि रासपंचाध्यायी तथा गीत-गोविंद के संबंध में कहा गया है कि इन्हें पढ़ने का अधिकार उसी को है जिसमें इस प्रेम-प्रसंग के आध्यात्मिक अर्थ की तह तक पहुंचने की क्षमता है । कवि विद्यापति ने भी इस बात को महसूस किया तथा जीवन के अंतिम दिनों में ऐसी पदावलियों की रचना की, जिसे देश की आम जनता आसानी से समझ सकती थी और उसे व्यवहार में ला सकती थी । वे हैं नचारी, महेशवाणी, गंगास्तुति, व्यवहार गीता आदि । इनमें शिव-पार्वती के विवाह की कथा सरल भाषा में कथित है जिसे समझने में आम आदमी को कोई कठिनाई नहीं होती । इसी तरह व्यवहार के गीतों के भी जो मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि के अवसर पर स्त्रियों द्वारा लाये गाये जाते हैं, इनकी लोकप्रियता का, मिथिला के घर-घर में इनके प्रचार का, यही कारण है, और इन्होंने ही विद्यापति को जन-कवि के समादृत आसन पर बिठाया है । और वे अमर हैं उस देश में जहां की एक भी सामाजिक क्रिया, पर्व-त्यौहार आदि बगैर विद्यापति के गीतों के सफल नहीं माना जाता है । गरज यह कि जन-समाज में, मिथिला के गांव-गांव में, यदि आज वे जीवित हैं तो मुख्यतः इसी जन-साहित्य के कारण । उदाहरणार्थ इन दो पंक्तियों को लीजिए जो शिव-संबंधित एक नचारी गीत की हैं जो विवाह के समय औरतों के द्वारा गाया जाता है । विषय है पार्वती का विवाह । महादेव बारात लेकर आये हैं । उन्हें देखकर पार्वती की मां अपने पति से कहती है—

**आगे माय हम न रहब एहि आंगन**
**जो बूढ़ होयतन जमाय ।**

अर्थात्—इस गृह प्रांगण में नहीं रहूंगी यदि यह वृद्ध मेरा दामाद बनेगा ।

इसी भांति विद्यापति के अधिकांश जन-साहित्य सरलता और विनोद से भरे हुए हैं तथा अपने इन्हीं गुणों के कारण व्यापक रूप से प्रसारित हैं । हमारे देश के शायद ही किसी महाकवि ने उनकी तरह देश के विद्वत जन-समाज के लिए भी लिखा और वह भी इतनी बड़ी संख्या में । मिथिलांचल में उनकी लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण ये रचनाएं हैं जिन्हें वहां की अपढ़ जनता तक आसानी से समझ पाती है ।

**द्वारा— राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह**
**२-बी महारानी बाग, नयी दिल्ली-६५**

***हाल ही में एक भेंट में श्री सिंह ने बताया कि उन्होंने राजीवजी को श्री पेराम्बदुर जाने से मना किया था । यद्यपि तमिलनाडु की जनता में श्री राजीव गांधी बेहद लोकप्रिय थे तथापि लिट्टे उग्रवादी राजीवजी से असंतुष्ट थे । लेकिन वे इस सीमा तक जाएंगे, इसका बहुत कम लोगों को भान था । यों, लिट्टे उग्रवादियों की हिंसक गतिविधियों ने श्री सिंह के मन में आशंकाएं पैदा कर दी थीं और उन्होंने राजीवजी को एक तरह से श्री पैराम्बदुर न जाने के बारे में सावधान भी किया था । श्री सिंह को इस बात की गहरी पीड़ा है कि वे राजीवजी को श्री पेराम्बदुर जाने से बलात न रोक सके ।***

# उन्होंने राजीव गांधी को संभावित संकट से आगाह कर दिया था !

राज्यपाल का पद सामान्यतः शोभा और सम्मान का पद समझा जाता है । वास्तविक अधिकार मंत्रि-मंडल के पास होते हैं और राज्यपाल को राष्ट्रपति के प्रतिनिधि के नाते मंत्रि-मंडल के निर्णयों पर सहमति की मुहर लगानी पड़ती है । पर राज्य में राष्ट्रपति-शासन की स्थिति में राज्यपाल ही सर्वोपरि होता है और उसे राज्य के हितों का ध्यान ही नहीं रखना पड़ता है, वरन उसे सत्ताच्युत निर्वाचित सरकार द्वारा छोड़ी गयी ढेर सारी समस्याओं से भी जूझना पड़ता है । देश में अनेक राज्यों के राज्यपालों को—जैसे पंजाब और कश्मीर में—यही कुछ करना पड़ रहा है । पर इन सबसे विकट स्थिति का सामना करना पड़ा तमिलनाडु के राज्यपाल श्री भीष्मनारायण सिंह को । श्री पेराम्बदुर में श्री राजीव गांधी की निर्मम हत्या के समय तमिलनाडु में राष्ट्रपति का शासन था और राज्यपाल पद पर थे श्री भीष्मनारायण सिंह ।

राज्यपाल तमिलनाडु : भीष्म नारायण सिंह

## गरिमामय परंपरा

श्री भीष्मनारायण सिंह के श्रीमती गांधी से निकट संबंध थे । वे उन पर अटूट विश्वास भी रखती थीं, यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है । अतः उनके राज्यपाल रहते श्री राजीव गांधी की हत्या का षड्यंत्र सफल हो जाए, इससे अधिक पीड़ा की बात शायद श्री सिंह के लिए और कोई हो ही नहीं सकती थी । इसीलिए उन्होंने नैतिक मूल्यों की रक्षा के लिए श्री राजीव गांधी की हत्या के तत्काल बाद प्रधानमंत्री के पास त्यागपत्र दे देने की पेशकश की । राज्य विधानसभा में भी तमिलनाडु की मुख्यमंत्री कुमारी जयललिता ने इस तथ्य की पुष्टि की और कहा कि राज्यपाल का यह कदम इस पद की महान परंपराओं के अनुरूप था ।

साधारणतः संसद के सदनों या राज्य विधान सभाओं में राष्ट्रपति अथवा राज्यपालों के आचरण के संबंध में कोई टिप्पणी नहीं की जाती । तमिलनाडु की मुख्यमंत्री ने इस परंपरा की भी चर्चा की और कहा कि कभी-कभी इन नियमों का उल्लंघन भी आवश्यक हो जाता है । प्रकारांतर से वे श्री भीष्मनारायण सिंह के कदम की सराहना कर रही थीं ।

## संकट के समय सूझबूझ

तमिलनाडु के राज्यपाल के रूप में श्री भीष्मनारायण सिंह ने राज्य की बहुमूल्य सेवा की है, यह बात तमिलनाडु के सभी लोग स्वीकार करते हैं । श्री भीष्मनारायण सिंह ने १५ फरवरी को यह पद विषम परिस्थितियों में संभाला था । श्रीलंका के उग्रवादी गुट लिट्टे की गतिविधियों पर अंकुश न लगा पाने के कारण केंद्र में करुणानिधि सरकार को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन की घोषणा कर दी थी और श्री सुरजीत सिंह बरनाला के स्थान पर श्री भीष्मनारायण सिंह को नया राज्यपाल नियुक्त किया था । उनके नाम का सुझाव स्वयं श्री राजीव गांधी ने प्रधानमंत्री श्री चंद्रशेखर को

स्व. राजीव गांधी

दिया था क्योंकि श्री राजीव गांधी श्री भीष्मनारायण सिंह की कार्यकुशलता और संकटों से जूझने की उनकी अद्‌भुत क्षमता से भलीभांति परिचित थे । इंदिराजी के समय विभिन्न संकटों के समय श्री सिंह के संतुलित व्यवहार, दृढ़ संकल्प और सूझबूझ से कार्य करने की शैली को वे निकट से देख चुके थे, अतः स्वाभाविक था कि तमिलनाडु के समक्ष उपस्थित घोर संकट के निराकरण के लिए उन्हें श्री सिंह के अतिरिक्त कोई और नाम नहीं सूझा । राजीवजी ने देखा था कि जब असम की समस्या विकराल रूप धारण करने लगी थी, तब श्रीमती गांधी ने अपने विश्वस्त सहयोगी के रूप में श्री भीष्मनारायण सिंह को ही वहां का

राज्यपाल नियुक्त किया था ।

### संस्कार संपन्न व्यक्तित्व

श्री भीष्मनारायण सिंहजी को अत्यंत निकट से देखने का हमें भी अवसर मिला है । सन १९८० में जब वे केंद्रीय संचार एवं संसदीय कार्यों के मंत्री बने थे, तब से ही हमारा उनसे निकट संबंध रहा । उसके बाद हमने उन्हें अनेक पदों पर कार्य करते देखा । अहम से सर्वथा दूर, मितभाषी श्री सिंह में विरोधियों को भी अपना बनाने की अद्‍भुत क्षमता है । वे सरल हृदय हैं, छल-कपट से दूर ! यह गुण उन्हें संस्कार में मिले हैं । दिल्ली की चकाचौंध में भी वे अपनी जन्मभूमि पलामू के एक छोटे-से कस्बे को नहीं भूल पाये ।

### एक ऊंची छलांग

१३ जुलाई १९३३ को आदिवासी बहुल पलामू जिले के डालटन गंज में जन्मे श्री सिंह बचपन से ही मेधावी रहे हैं । उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में अध्ययन किया और स्नातक की उपाधि प्राप्त की । अपने छात्र जीवन में उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में युवक कांग्रेस का गठन किया । पर बनारस—जैसे बड़े नगर में रहते हुए भी पलामू को नहीं भूले और विद्याध्ययन की समाप्ति के बाद उन्होंने पलामू जिले को ही अपना कार्यक्षेत्र बनाया । उन्होंने पलामू जिले में पंचायतों और पंचायत परिषदों का गठन किया । बाद में छोटा नागपुर से राज्य में मंत्री बननेवाले वे पहले व्यक्ति थे ।

### राज्य से केंद्र में

सन ६७-६८ में वे बिहार विधान परिषद के सदस्य बने और सन १९७१ में वे शिक्षामंत्री व खान एवं भूगर्भ विभाग के मंत्री नियुक्त हुए । वे खाद्य-नागरिक आपूर्ति मंत्री भी रहे । सन ७६ में वे राज्यपाल के सदस्य बने । सन ७७ में उन्हें कांग्रेस संसदीय दल का उप मुख्य सचेतक नियुक्त किया गया । सन ७८ से ८३ तक वे संसदीय दल के चीफ विह्प भी रहे । बाद में केंद्रीय मंत्रिमंडल के सदस्य के रूप में उन्होंने अनेक मंत्रालयों का काम देखा । बाद में असम के साथ-साथ वे सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश एवं मेघालय के भी राज्यपाल रहे । कांग्रेस शताब्दी समारोह के नाते श्री भीष्मनारायणजी ने पूरे देश में समारोह आयोजित कर अपनी संगठन-क्षमता का परिचय दिया ।

### जंगल राज्य में अकेले

अपने इन्हीं सब अनुभवों और गुणों के कारण वे सबके बीच लोकप्रिय भी रहे हैं । करुणानिधि-सरकार की बर्खास्तगी के बाद तमिलनाडु के राज्यपाल पद पर ऐसा ही अनुभवी, व्यवहार-कुशल किंतु लक्ष्य के प्रति समर्पित दृढ़ व्यक्तित्व वाला व्यक्ति ही नियुक्त किया जा सकता था । जैसा कि सब जानते हैं तमिलनाडु में लिट्टे उग्रवादी न केवल श्रीलंका वरन अपने आश्रयदाता भारत की सार्वभौमिकता और अखंडता के लिए भी खतरा बन गये थे । करुणानिधि-सरकार से उन्हें कोई भय न था । स्थिति दिन-प्रतिदिन बिगड़ती जा रही थी । इसीलिए केंद्र सरकार को तमिलनाडु में राष्ट्रपति शासन लागू करना पड़ा ।

जब श्री भीष्मनारायण सिंह ने तमिलनाडु के राज्यपाल का पद संभाला तथा राज्य में कानून और व्यवस्था लगभग समाप्त हो चुकी थी । जंगल-राज की स्थिति बनती जा रही थी । श्री
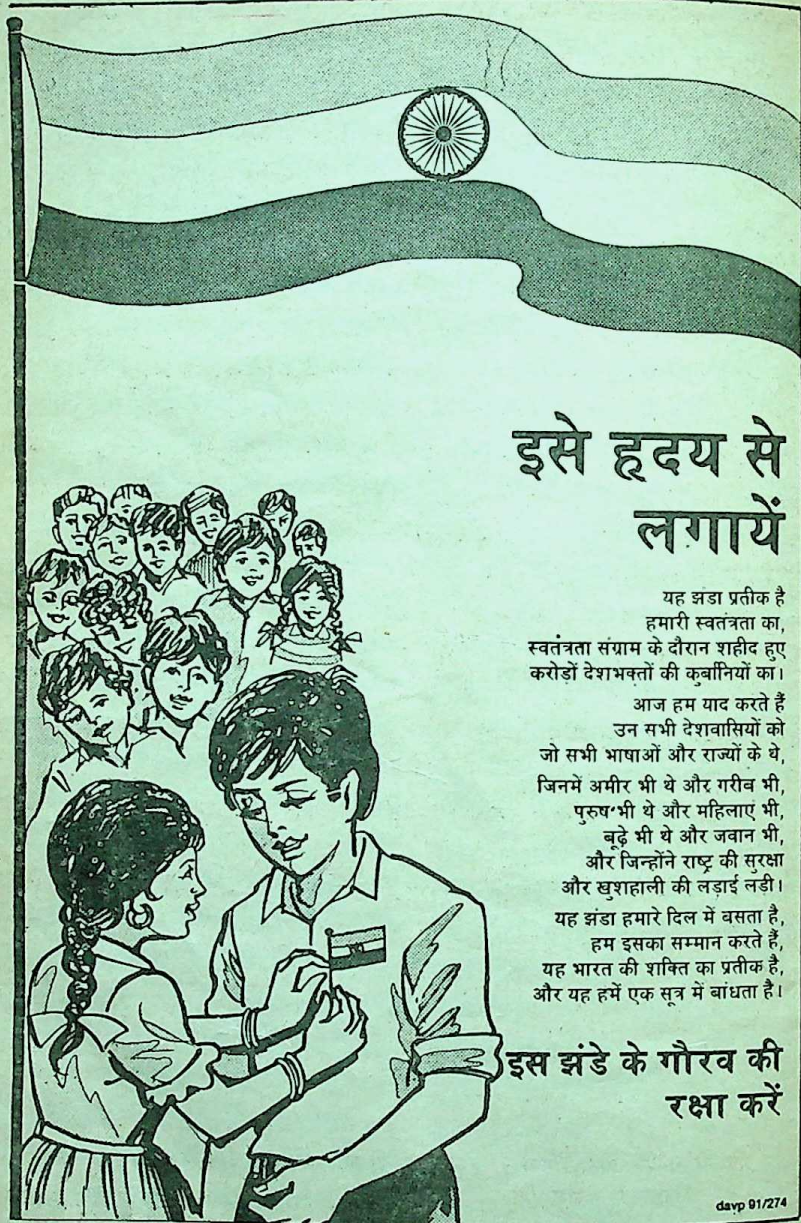
इसे हृदय से लगायें
यह झंडा प्रतीक है
हमारी स्वतंत्रता का,
स्वतंत्रता संग्राम के दौरान शहीद हुए
करोड़ों देशभक्तों की कुर्बानियों का।
आज हम याद करते हैं
उन सभी देशवासियों को
जो सभी भाषाओं और राज्यों के थे,
जिनमें अमीर भी थे और गरीब भी,
पुरुष भी थे और महिलाएं भी,
बूढ़े भी थे और जवान भी,
और जिन्होंने राष्ट्र की सुरक्षा
और खुशहाली की लड़ाई लड़ी।
यह झंडा हमारे दिल में बसता है,
हम इसका सम्मान करते हैं,
यह भारत की शक्ति का प्रतीक है,
और यह हमें एक सूत्र में बांधता है।
इस झंडे के गौरव की रक्षा करें
davp 91/274

सिंह ने सबसे पहले कानून और व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त करने का बीड़ा उठाया । करुणानिधि सरकार ने राज्य की पुलिस को शस्त्रहीन कर दिया था । उसका मनोबल बिल्कुल टूट चुका था ।

### उग्रवादियों से निपटना

अपनी पहली पत्रकार-परिषद में श्री सिंह ने अपनी प्राथमिकताओं की चर्चा करते हुए कहा कि उनका पहला काम राज्य में कानून और व्यवस्था की स्थिति को सुधारना है और उसके बाद राज्य में लोकतांत्रिक ढंग से निर्वाचित सरकार की नियुक्ति का मार्ग प्रशस्त करना है । बाद में श्री सिंह ने पुलिस अधिकारियों तथा अन्य उच्चाधिकारियों को लिट्टे के उग्रवादियों से कड़ाई से निपटने के स्पष्ट निर्देश दिये । उनकी बातों का प्रशासन पर प्रभाव पड़ा और कानून तथा व्यवस्था की स्थिति सुधरी ही उग्रवादियों की गतिविधियों पर भी अंकुश लगा । पांच माह के राष्ट्रपति शासन की अवधि में श्री सिंह ने तमिलनाडु की आर्थिक एवं औद्योगिक प्रगति को तेज करने के भी उपाय अपनाये । उन्होंने राज्य में मद्य-निषेद्य पूर्णतः लागू करने में पहल की, कारण उसी से जुड़ा हुआ था गरीब तबके के सुख-सुविधापूर्ण जीवन का प्रश्न ।

### पुलिस का मनोबल बढ़ा

श्री भीष्मनारायण सिंह के कार्यकाल में पुलिस का मनोबल बढ़ा, वह गतिशील और प्रभावी बनी तथा कानून एवं व्यवस्था की स्थिति पूर्णतः सुधर गयी । यह बात तमिलनाडु के सभी वर्गों के लोग मानते हैं ।

पुलिस के प्रभावपूर्ण होने का एक उदाहरण यह है कि श्री राजीव गांधी की निर्मम हत्या के पश्चात तमिलनाडु में भड़के दंगों पर मात्र छत्तीस घंटों में काबू पा लिया गया । यही नहीं, श्री भीष्मनारायण सिंह की अद्‌भुत प्रशासन क्षमता का ही यह परिणाम है कि तमिलनाडु में पुनः लोकतांत्रिक चुनाव निर्विघ्न संपन्न हो सके और नयी सरकार पदभार ग्रहण कर सकी ।

### राजीवजी को आगाह कर दिया था !

हाल ही में एक भेंट में श्री सिंह ने बताया कि उन्होंने राजीवजी को श्री पेराम्बदुर जाने से मना किया था । यद्यपि तमिलनाडु की जनता में श्री राजीव गांधी बेहद लोकप्रिय थे तथापि लिट्टे उग्रवादी राजीवजी से असंतुष्ट थे । लेकिन वे इस सीमा तक जाएंगे, इसका बहुत कम लोगों को भान था । यों, लिट्टे उग्रवादियों की हिंसक गतिविधियों ने श्री सिंह के मन में आशंकाएं पैदा कर दी थीं और उन्होंने राजीवजी को एक तरह से श्री पैराम्बदुर न जाने के बारे में सावधान भी किया था । श्री सिंह को इस बात की गहरी पीड़ा है कि वे राजीवजी की श्री पेराम्बदुर जाने से बलात न रोक सके ।

**—राजेन्द्र अवस्थी**

*प्रेम मृत्यु से अधिक शक्तिशाली है, मृत्यु जीवन से अधिक शक्तिशाली है । यह जानते हुए भी मानव-मानव के मध्य कितनी संकुचित सीमा खिंची है ।*

—खलील जिब्रान

# प्रवेश

## तलाश

काले बादलों की भांति,
छायी घनी उदासी
पतझड़ के पत्ते की भांति
पीला पड़ा चेहरा
थके बोझिल घिसटते कदम
हरी दूब की मखमली चादर रौंदते
कुछ सोचने को विवश
मैं कौन ? मेरा अस्तित्व क्या ?
एक झूठी आस
जैसे रेगिस्तान में मरीचिका
आत्मविश्वास का झीना आगोश
ठंडी सर्द हवा का झोंका
कांटों की हल्की चुभन
तार-तार होता
आत्मविश्वास
दूर भाग्य की टिमटिमाती लौ
बुझने को आतुर
इन सबसे जूझता कर्मयोगी
स्वेद बिंदुओं से दमकता ललाट
रेगिस्तान में
नीर की तलाश
कभी न खतम होनेवाली
'तलाश' ।

## झूठ

'झूठ'
स्वयं में संपूर्ण सत्य
किसी ने
झूठ बोला
क्या
यह झूठ है
नहीं
यह तो सत्य है
कि
किसी ने झूठ बोला
क्या
झूठ का सत्य से कोई संबंध है
हां
ठीक वैसा
जैसा मनुष्य का
तृष्णा से
मनुष्य जो कि
स्वयं में
सर्वांग सत्य है
लिए फिरता है
अपनी आत्मा को
तृष्णा में डुबोकर
तृष्णा
हां वही तृष्णा
जो कि एक झूठ है
सिर्फ झूठ
यही तो है
संपूर्ण सत्य ।

## आंचल

सनसनाती हवा
लहराता रूपहला आंचल
जमाने की आंधी से
बेखबर
मनचला
हर दिशा में उड़ने को बेताब
बबूल के पेड़ों से
अनजान
एक छोटा-सा कांटा
तार-तार होता आंचल
आंखों से झरते
अनमोल मोती
जिंदगी की सिसकती लौ
छितरे हुए, खून के धब्बे
मानो
आंचल पर खिले बूटे
मुसकराने को
बेबस
फिर से सिमट आया
अस्तित्व
उसी घरौंदे में
थम-सी गयी उड़ान
फिर से होती भोर
वही सूरज
वही चांद
पर कहीं सो गया
रूपहला आंचल ।

**कु. मनीषा पुखार**

*द्वारा : डॉ. विश्वनाथ पुखार गोला गोकर्णनाथ खीरी (उ.प्र.)*

**आत्मकथ्य :**

*जब मन कुछ अशांत होता है और कुछ कहने को व्याकुल होता है तब बरबस ही लेखनी सजीव हो उठती है और छितरे हुए शब्द कविता का रूप ले लेते हैं ।*

## मेरा जो गीत है

ये जिंदगी है जिंदगी बना लो रे
कांटों की राहों पर चलना है हमको रे
पूरब से पश्चिम तक अपना है जीवन रे
पतझड़ से मधुबन को लाना है हमको रे
ये जिंदगी है जिंदगी बना लो रे

पर्वत से नदिया तक सबका है जीवन रे
करुणा की जिंदगी है आंसुओं का गागर रे
आंखों की रोशनी है भावनाओं का सागर रे
ये जिंदगी है जिंदगी बना लो रे...

मेरा जो गीत है, जीवन का साज है
दर्पण का चित्र है ये स्वप्नों का हार रे
'मनु' ये स्वप्न है इन स्वप्नों को साकार बना लो रे
ये जिंदगी है, जिंदगी बना लो रे

**मनु दत्त 'मनु'**

द्वारा— श्रीमती शशि शर्मा, सिटी चाइल्ड स्कूल, देहली गेट, गाजियाबाद-२०१००१

**आत्म-कथ्य**

कविता मेरे लिए जीवन का यथार्थ भी है, स्वप्न भी।

जन्म : जुलाई, १९५१, सिकंद्राबाद, जि. बुलंदशहर,

**संप्रति—** औषधि निर्माण कंपनी में उत्पादक रसायनज्ञ,

## तुम्हारे लिए

सावन की बहारों से पूछो
मैंने क्या-क्या न किया तुम्हारे लिए
तुम रूठी रहीं, मैं मनाता ही रहा
मैं हंसता ही रहा तुम्हारे लिए

अधरों पर गीत सजाता रहा
जीवन को ही मीत बनाता रहा
पूछो शीतल पवन की धारा से
मैं उड़ता ही रहा तुम्हारे लिए

तुम आयीं जब जीवन में मेरे
नव यौवन का उपहार लिए
साजों की मधुर आवाजों पर
मैं गुनगुनाता ही रहा तुम्हारे लिए

नयनों में 'मनु' हार लिए
अधरों पर मीठा प्यार लिए
तुम आयीं जब आंगन में मेरे
मैं प्रीत के दीप जलाता ही रहा
तुम्हारे लिए

## चले सभी वे जाते हैं

पत्थर सिसक-सिसक कर कहता
क्यूं मुझको छोड़ गये हैं राही
मंजिल तो मैं भी बन जाता
गर मिल जाता कोई तमगा शाही

मैंने अब तक दर्द सहे हैं
जीवन में ठोकर खा-खाकर
जख्म जिगर का सी डाला है
पीड़ा के घर आंसू पीकर

मन में व्यथा भरी पड़ी है
सपनों में साकार करी है
अपनों ने कब समझा मुझको
जिनसे दुनिया भरी पड़ी है

प्रीत सभी दिखलाते हैं
हमदर्द सभी बन जाते हैं
'मनु' गर कहता हूं पीड़ा अपनी
चले सभी वे जाते हैं

## तो मैं जानूं

यूं तो दीवाली की रातों में
तुमने लाखों दीप जलाये होंगे
मेरे अंधकारमय जीवन का
दीप जलाओ तो मैं जानूं

यूं तो सुबह-सबेरे उषा को
पृथ्वी ने वरण किया होगा
मेरी आशा के शिशिर को
उष्णता दिलाओ तो मैं जानूं

.........

यूं तो साकी बन कितनों को
तुमने भर-भर जाम पिलाये होंगे
मेरे इन सूखे अधरों को
मधुरस पान कराओ तो मैं जानूं

यूं तो तुमने अपने गीतों में
'मनु' मन की व्यथा रची होगी
मानव की अंत: पीड़ा को
इन गीतों में दर्शाओ तो मैं जानूं

### दिनकर जयंती २३ सितम्बर के अवसर पर

# मृत्यु से बड़े राष्ट्र कवि दिनकर

● अरविन्द कुमार सिंह

स्वर्गीय पंडित किशोरी दास वाजपेयी ने लिखा है, 'महाकवि दिनकर अपने ढंग के एक ही थे । मुझे कोई अन्य कवि साहित्यकार बहुत ढूंढ़ने पर भी ऐसा दिखायी नहीं देता, जिसका नाम उनके नाम के साथ लिया जा सके । तुलसीदास के साथ सूरदास, पंत के साथ निराला और हरिऔध के साथ श्री मैथिलीशरण गुप्त का नाम स्वतः आ जाता है, परंतु दिनकर के साथ रखने के लिए कोई नाम नहीं मिलता ।'

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर का कृतित्व जितना बहुआयामी, ओजपूर्ण और शौर्यवान था उतना ही उनका व्यक्तित्व आकर्षक, दिव्य और विराट था ।

मेरा परम सौभाग्य है कि मैं ऐसे युगविभूति राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर का पौत्र हूं । दस वर्ष की वय तक मैंने उनका स्नेह प्राप्त किया । आज वे स्वयं तो नहीं हैं, लेकिन उनके साथ बिताये हुए दिनों की स्मृतियां हैं, जो मेरी जीवन निधि है ।

बाबा का जीवन बहुत व्यस्त था । वे पूरी तरह व्यवस्थित जीवन जीते थे । सुबह उठकर टहलना । उसके बाद स्नानादि से निवृत्त होकर पूजा । पूजा से उठकर नाश्ता करते । बाबा मधुमेह के रोगी थे और नाश्ते के पूर्व उन्हें इंसूलिन की सूई लेनी पड़ती थी । हम लोग यह देखकर चकित रह जाते थे कि वे स्वयं ही अपने पेट में सूई लगा रहे हैं ।

इसके बाद वे लिखने बैठ जाया करते थे । वे उलटे लेटकर, मसनद की टेक लगा कर लिखते थे । इस बीच मुलाकातियों से भी मिलते, और फिर लिखने बैठ जाते । लिखते-लिखते जब वे क्लांत हो जाते तो उठकर हम बच्चों के साथ खेल लिया करते थे ।

बाबा स्वभाववश भावुक व्यक्ति थे । लेकिन भावना के वश में आकर जीवन से पलायन करना वे नहीं जानते थे । वे आजीवन संघर्ष करते रहे । सिमरिया घाट के कृषक परिवार से लेकर संसद सदस्य और फिर भारत सरकार के हिंदी सलाहकार के पद तक वे पहुंचे । बिहार विश्वविद्यालय में स्वयं स्नातक होते हुए स्नातकोत्तर छात्रों को शिक्षा दी । भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति रहे । यह दूरी उन्होंने

अपने अध्यवसाय, कर्मनिष्ठा, आत्मबल और आत्मविश्वास के सहारे तय की थी। उनके भीतर कहीं यह गहराता हुआ विश्वास था कि कितनी भी जद्देजहद के बाद भी यदि कर्म में लगे रहो, तो कामयाबी मिलेगी।

बाबा के भीतर एक योद्धा था जो अन्याय, अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न और विषमताओं के खिलाफ सदा खुले स्वर में बोलता था। अपनी अंतिम सार्वजनिक सभा में, कई केंद्रीय मंत्रियों और तत्कालीन उपराष्ट्रपति के सामने उन्होंने कहा था, "यहां की जनता भेड़ है, रखवाले-चरवाहे की बन आयी है।" . . . और यह भी कह गये, "यह सरकार प्रचंड मूर्ख है।"

लेकिन उनके इस योद्धा व्यक्तित्व में एक और रूप भी छिपा हुआ था—जो गुलाब की पंखुड़ी के समान कोमल था। दिल्ली में श्री रामकला केंद्र द्वारा रामलीला का आयोजन होता था। वैदेही विदाई के समय वे नजर बचाकर रूमाल से आंसू पोंछते जाते थे।

बाबा ने दो बेटियों, छह भतीजियों और दो पोतियों का विवाह किया था। इन बेटियों का विछोह उन्हें सहना पड़ा। १२ अक्तूबर, १९७१ की डायरी में वे लिखते हैं—

'कल जब आगरे में कल्लो से विदा लेकर चला, न वह रोयी, न मैं रोया। याद आया कि हर बेटी की विदाई के समय मैं फूट-फूटकर रोया था। बबुनी जब विदा हो रही थी मैं बड़का दा के दालान में छुपकर रोया था। तान्या को विदाई देते समय टालस्टाय फूट-फूट कर रोये थे। जवाहरलालजी को बेटी की जुदाई सहनी नहीं पड़ी, नहीं तो वे भी रोये होते।'

बाबा फिल्म सेंसर बोर्ड के सदस्य थे। बोर्ड के सदस्यों के लिए फ़िल्मों का विशेष शो हुआ करता था। अकसर बाबा हम लोगों को भी अपने साथ फिल्म देखने ले जाया करते। लेकिन ज्यादातर फिल्में वे आधा-एक घंटे देखते और बीच ही में उठ जाया करते। कहते, "दुर, बेकार है—चलो घर चलें।" इससे हम लोगों को बड़ी कोफ़्त होती कि आधी फिल्म में ही उठाकर ले जा रहे हैं।

एक समय किसी सभा में (बाबा का अभिनंदन समारोह था) बाबा मंच पर बैठे थे। दर्शक दीर्घा में बैठे थे गुलशननंदा। जब बाबा बोलने लगे, तब उन्होंने हंसते हुए कहा, "प्रतिष्ठा, कीर्ति और पुरस्कार तो हमें खूब मिलते हैं, लेकिन जहां रुपयों का सवाल आता है, वहां सारे चेक गुलशननंदा के खाते में जमा हो जाते हैं।"

न जाने कितने ही स्वनामधन्य कवि और साहित्यकार उनका आशीर्वाद पाकर पनपे और बढ़े थे। स्व. भवानी प्रसाद मिश्र, रेणुजी, दुष्यंत कुमार, डॉ. धर्मवीर भारती आदि लेखक उनके स्नेह भाजन थे।

इस तरह न जाने कितने किस्से, कितनी कहानियां हैं, जो उनके सहज सरल व्यक्तित्व को

***युवा पुत्र के असमय गुजर जाने का दारुण दुःख तो उन्होंने झेला ही, लेकिन दूसरी ओर अपने इर्द-गिर्द छाये कुछ लोगों के नकाबपोश चेहरों की असलियत भी वे जानने लगे थे।***
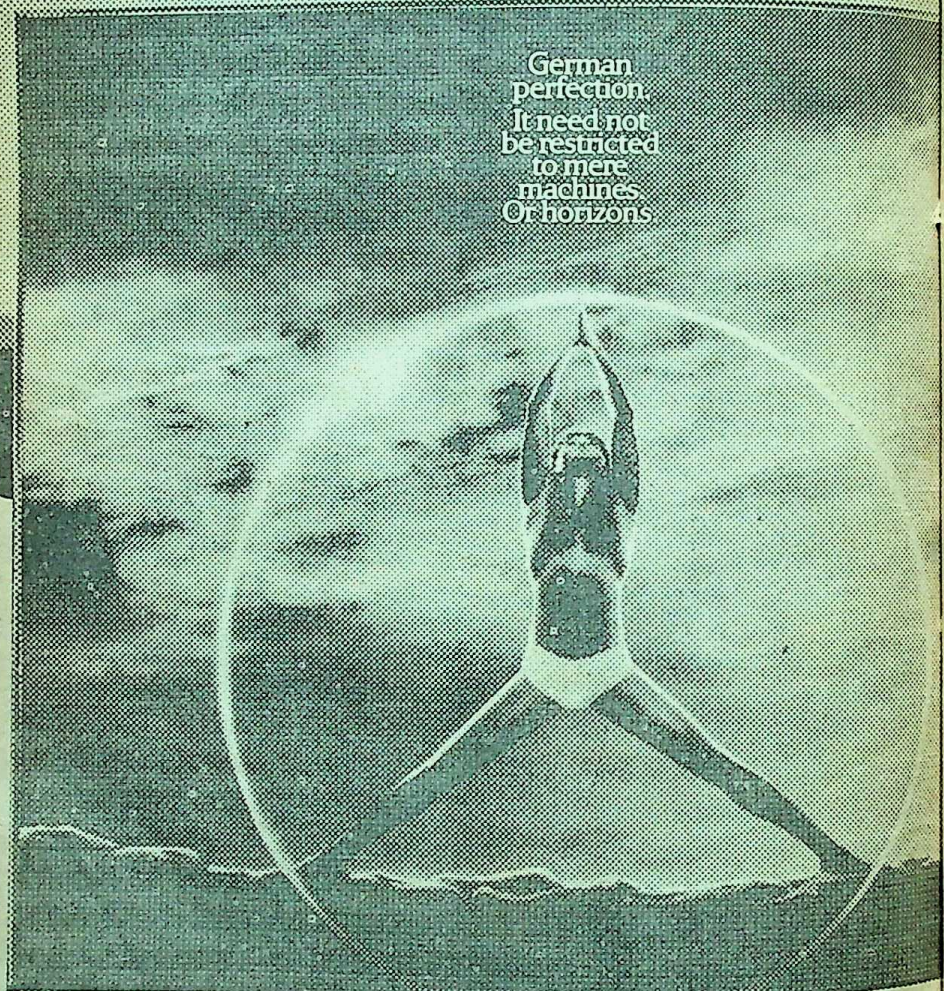
रेखांकि
चिंतव
अभि
एकाव
पहलू
था, उ
भी प्रा
चिंतन
दूर-दूर
उठा च
आगा
मे
हुआ
भेद वि
यु
दुःख
अपने
चेहरों
(निश्च
से भरे
एकता
थी ।)
महसूस
नहीं हैं
पूर्व वे
हम तुम्
तुम हम
दूस
चिंतित
सबको
से बनत
अप
लिखा

रेखांकित करती हैं । एक ओर युग कवि, युग चिंतक, युग दृष्टा और दूसरी ओर स्नेही अभिभावक जो अपने परिवार से पूरी तरह एकाकार था । यह उनके एक ही व्यक्तित्व के दो पहलू थे । उनका चिंतन जितना कल के लिए था, उतना आज और आनेवाले कल के लिए भी प्रासंगिक है ।

**चिंतन कर यह जान की तेरी पल-पल की चिंता से**
**दूर-दूर तक के भविष्य का मनुज जन्म लेता है**
**उठा चरण यह सोच की तेरे पद के निक्षेपों की**
**आगामी युग के कानों में ध्वनियां गूंज रही हैं**

मेरे पिताश्री का देहांत सन १९६७ ई. में हुआ था । उनके निधन ने बाबा को बुरी तरह भेद दिया था ।

युवा पुत्र के असमय गुजर जाने का दारूण दुःख तो उन्होंने झेला ही, लेकिन दूसरी ओर अपने इर्द-गिर्द छाये कुछ लोगों के नकाबपोश चेहरों की असलियत भी वे जानने लगे थे । (निश्चय ही जिनके लिए वे सदैव करूण भाव से भरे रहते थे, उन लोगों ने ही परिवार की एकता में दरार डालने की कोशिश शुरू कर दी थी ।) शायद यही वह स्थिति थी जब उन्हें महसूस हुआ कि चीजें दरअसल उतनी आसान नहीं हैं, जितनी कि वह दिखती हैं । देहांत से पूर्व वे इन स्थितियों को समझ गये थे—

**हम तुम्हारे लिए महल बनाते हैं**
**तुम हमारी कुटिया को देखकर जलते हो**

दूसरी ओर देश की दुर्दशा देखकर भी वे चिंतित और विचलित थे । वे मानते थे कि सबको सुख देनेवाली सभ्यता भोग नहीं त्याग से बनती है ।

अपनी ५ जून, १९७१ की डायरी में उन्होंने लिखा है, 'सुख और दुःख भोगता हुआ मनुष्य किस रूप में जीता है, इसकी एक कल्पना भारत में इस प्रकार की गयी थी । एक विकराल कुआं है, जिसकी पेंदी में सांप बैठा हुआ है और जगत पर बाघ । कुएं की दीवार से एक पेड़ निकल आया है । उसकी डाल पकड़कर एक आदमी लटका हुआ है । वह सांप के भय से नीचे नहीं उतर सकता, न बाघ के भय से कुएं से बाहर निकल सकता है । पास की ही डाल में एक मधु का छत्ता लटक रहा है । दो संगीन खतरों के बीच झूलता हुआ आदमी कभी-कभी इस छत्ते से मधु चाट लेता है । इसी मधु के सहारे वह जीता है ।'

जब से दिल्ली से आया हूं मैं इसी प्रकार जी रहा हूं । मेरा मधु कोष अरविन्द और पद्मा हैं ।'

आखिरकार वे चले गये । २४ अप्रैल, १९७४ की अर्ध रात्रि में । आखिरी समय में भी उनके मुंह से 'राम राम' निकलता था । उन्हीं की पंक्तियां गूंज रही थीं—

**आखिर वह भी सो गया जिंदगी ने जिसको**
**था गला रखा सोतों को छेड़ जगाने में**

लेकिन दूसरी ओर वे सांत्वना भी दे रहे थे—जीवन के दर्शन पक्ष की ओर से—

**रोने की क्या बात ?**
**जन्म का यहीं कहीं उद्गम है**
**पर्वत का वह मूल**
**जहां से सभी स्रोत चलते हैं**
**आखिर को हम पहुंच गये ही वहां**
**जहां से शुरू किया था**
**कफन और पोशाक छटी की**
**दोनों एक वसन है**

**—दिनकर भवन,**
**आर्य कुमार रोड,**
**पटना-८०००४**

● **अजय भाम्बी**

**रेणुका देवी, औरंगाबाद**
**प्रश्न :** सुखी दांपत्य जीवन कब तक ?
**उत्तर :** डेढ़ वर्ष और कष्ट रहेगा ।

**एकता, ऋषिकेश**
**प्रश्न :** मेरा एम.बी.बी.एस. में दाखिला इसी वर्ष होगा ?
**उत्तर :** एम.बी.बी.एस. में दाखिला अवश्य होगा ।

**डॉ. कैलाश गुप्ता, अकोला**
**प्रश्न :** स्थानांतरण कब तक संभव है ?
**उत्तर :** अभी नहीं ।

**संचिता वशिष्ठ, कानपुर**
**प्रश्न :** विवाह कब तक ? घर-वर कैसा ?
**उत्तर :** विवाह अगले वर्ष । कुंडली अवश्य मिलायें ।

**अनिल कुमार तिवारी, बिलासपुर**
**प्रश्न :** मकान कब तक बनेगा ?
**उत्तर :** हाल-फिलहाल संभावना नहीं है ।

**योगेन्द्र सिंह, जयपुर**
**प्रश्न :** मेरे लिए श्रेष्ठ व्यवसाय क्या होगा ?
**उत्तर :** इंडस्ट्रीज में जाएं ।

**सुदामा प्रसाद, इलाहाबाद**
**प्रश्न :** मेरा दिमाग खराब है, पागल सरीखा हूं, सन १९८५ से । कब तक अच्छा होऊंगा ?
**उत्तर :** हमें तो आपकी कुंडली एकदम ठीक मालूम पड़ती है । योग्य चिकित्सक का परामर्श लें । अच्छा समय १९९२ से प्रारंभ होगा ।

**इंदु पांडे, श्रीनगर गढ़वाल**
**प्रश्न :** तकनीकी क्षेत्र में भाग्योन्नति कब तक ? रत्न सुझायें ?
**उत्तर :** अगले वर्ष । मोती पहनें ।

**अल्का जैन, कोटा**
**प्रश्न :** क्या डॉक्टर बनने का योग है ?
**उत्तर :** योग तो है पर हल्का । अतः अत्यधिक मेहनत की आवश्यकता है ।
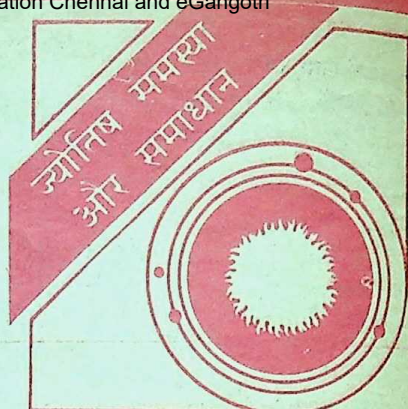
**सोनी, भागलपुर**
**प्रश्न :** दांपत्य जीवन टूट जाएगा या रहेगा ?
**उत्तर :** दांपत्य जीवन में सुधार की संभावना है । धैर्य एवं संयम से काम लें ।

**रमा कक्कड़, देहरादून**
**प्रश्न :** विवाह कब होगा ? विलंब का क्या कारण है ? उपाय बताएं ?
**उत्तर :** आपका सप्तम (दांपत्य) भाव दूषित है इसी कारण विलंब हुआ । अगले वर्ष विवाह का योग बनता है

**किशोर जोशी, ग्वालियर**
**प्रश्न :** कौन-सा नग धारण करना उचित है ?
**उत्तर :** पन्ना, अच्छी किस्म का धारण करें ।

**अशोक चंद्र वार्ष्णेय, भोपाल**
**प्रश्न :** उच्च रक्त चाप एवं अंड कोषों में दर्द कब ठीक होगा ?
**उत्तर :** आपके स्वास्थ्य में सुधार शीघ्र आएगा । अच्छे चिकित्सक की सलाह भी लें ।

**संतोष कुमार, अलवर**
**प्रश्न :** अपना मकान कब होगा ?

उत्तर : १९९४ मार्च से पूर्व ।

**पवन अधिकारी, छाना (अल्मोड़ा)**
प्रश्न : जिंदगी में क्या दुःख हुई दुःख हैं ?
उत्तर : निराश न हों अगले वर्ष से बहुत अच्छा समय आएगा ।

**प्रवीण कुमार शर्मा, महू**
प्रश्न : पुत्र के जीवन में सुधार व प्रगति कब ? रत्न सुझायें ?
उत्तर : पुत्र की कुंडली में सुधार मार्च '९२ से शनैः शनैः आएगा ।

**सत्यनारायण प्रसाद गुप्ता, सिमडेगा (बिहार)**
प्रश्न : मनोनुकूल स्थानांतरण एवं पदोन्नति कब तक ? कृपया रत्न बतायें ?
उत्तर : इसी वर्ष में । नीलम पहनें ।

**राजेश कुमार श्रीवास्तव, रायबरेली**
प्रश्न : मेरा कैरियर किस क्षेत्र में उज्ज्वल है ?
उत्तर : नौकरी करना ज्यादा उचित रहेगा ।

**मृदुला मित्तल, आगरा**
प्रश्न : विवाह का योग कब तक है ?
उत्तर : विवाह नवम्बर '९१ और अगस्त '९२ के मध्य ।

**रेखा गौड़, जोधपुर**
प्रश्न : क्या सरकारी नौकरी का योग है ?
उत्तर : प्रयास करें सरकारी नौकरी मिलेगी ।

**तारकेश्वर नाथ, बिहार शरीफ**
प्रश्न : अपना मकान, मोटर गाड़ी कब तक ?
उत्तर : दो वर्ष के भीतर ।

**नंद किशोर, ठाटीपुर, ग्वालियर**
प्रश्न : संतान योग कब ?
उत्तर : १९९३ में ।

**वर्षा सक्सेना, लखनऊ**
प्रश्न : मेडिकल, प्रशासनिक सेवा अथवा इंजीनियरिंग में कौन-सा योग है ?
उत्तर : मेडिकल उत्तम है ।

**पी.के. शर्मा, चटिया, पूर्वी चंपारण**
प्रश्न : मेरी प्रोन्नति होगी या नहीं ?
उत्तर : बराबर होगी ।

—डी-२/२, जनकपुरी नयी दिल्ली-५८

११५

नाम
जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) ......... महीना ......... सन ............................
जन्म-स्थान......... जन्म-समय ..................................................
वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण ............................................
पता ..............................................................................
आपका एक प्रश्न ..................................................................

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि ११५) 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० सितंबर, १९९१

# छूट गए बरसात में

## आगामी काव्य चर्चा का विषय

## महंगाई में, त्यौहार में

संपर्क : 'क्या करेंगे आप'

द्वारा : संपादक कादम्बिनी, हिन्दुस्तान टाइम्स, नयी दिल्ली-१

अंतिम तिथि : २० सितंबर १९९१

नेताजी के घड़े पाप के
फूट गये बरसात में
छाते मजहब और जात के
टूट गये बरसात में
'झूठेजी' के वादे सारे
रूठ गये बरसात में
'अर्धसत्यजी' मौसम की 'मस्ती'
लूट गये बरसात में
हाय ! हाय ! 'बेपेंदीजी' तो
छूट गये बरसात में

—रामस्वरूप पंडित 'मयूरेश'
द्वारा : श्री रामजीवन पंडित
ग्रा. भोजपुर, पो. कुरता,
जिला दुमका (सं.प.), (बिहार)-८१५३५२
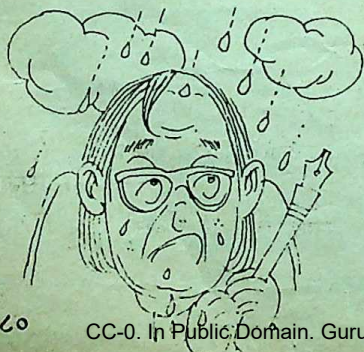
छूट गये बरसात में, पड़ा रंग में भंग
पत्नी पीहर को गयी, ले बच्चों को संग
ले बच्चों को संग, अकेले तपैं रसोई
सहें विरह की मार, तरस ना खावै कोई
संपादकजी, याद, आत है बात-बात में
काटे कटे न रात, करें हम क्या बरसात में

—ब्रजवासी-किशनवीर यादव
कामां, भरतपुर, (राज.)

कुरसी बंगला कार प्रतिष्ठा
कुछ नहि आयी हाथ में
हुए चुनाव पराजित नेता
चमचे रोते साथ में
नेताजी के स्वप्न सुनहले
टूट गये बरसात में
जब्त जमानत हुई कि छक्के
छूट गये बरसात में

—चंद्र प्रकाश पटसारिया
शा. उच्च. मा. विद्या. इंदरगढ़,
जिला-दतिया (म.प्र.)
पिन-४७५६७५

मैंने एक बार
अपने मित्र से कहा—
''कश्मीर स्वर्ग है''
वह बोला—
''कश्मीर स्वर्ग नहीं, नर्क है''
तभी वहां से एक सज्जन निकले
उन्होंने कहा—
''वह स्वर्ग हो या नर्क,
पर आज उसका बेड़ा गर्क है।''

**—सुहास अग्रवाल 'युवराज'**

१६४८, उपरैनगंज वार्ड, दीक्षितपुरा
जबलपुर (म.प्र.)
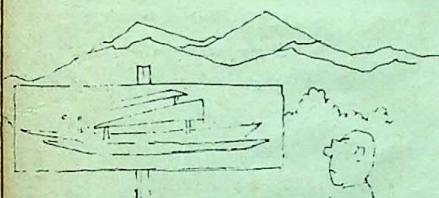
जटा बीच गंग, अंग-अंग में भभूत मले
महावरदानी महादेव छवि न्यारी है
माथे पे शशांक धारे, नंदी पे सवार आप
भूत प्रेत संग लिए कहां की तैयारी है
घाटियों में लगी आग, बुझती नहीं है नाथ
आज त्रिपुरारी एक विनती हमारी है
एक बार नाथ कश्मीर चले जाते आप
उग्रवादियों से त्रस्त धरती तुम्हारी है

**—वाहिद अली 'वाहिद'**

सेक्टर ८ की टंकी
विकास नगर, लखनऊ-२०

मैया मोहि संपादक बहुत खिझायौ
मोसों कहत छंद लिखन को आपन मौज उड़ायौ
कबहुं पठा देत हो खाड़ी कबहुं 'फूल' बनायौ
अबके कहत कश्मीर-दशा कवित्त रच के बतावा
हे माई अब तू ही बता मैं जम्मू केहि विधि जायौ
जे आदरणीय अवस्थी जी ने मोटर नहीं पठायौ

**—आर्य**

द्वारा : श्रीमती डॉ. शिवचंद्र प्रसाद
विलियम्स टाऊन देवधर-८१४११२

बह रही बारूदी बयार कश्मीर में
सिसक रहे खूबसूरत चिनार कश्मीर में
जग-प्रसिद्ध मनमोहक कश्मीर की वादी
हो गयी अलगाव की, आतंक की वादी
दुस्साहसियों की गूंज रही ललकार है
नित कर रही, व्यवस्था को खबरदार है !
सीमा पार से आ रहे हथियार कश्मीर में
हथियार डाले खड़ी हुई सरकार कश्मीर में... !!

**—सुभाष सेंगर 'पार्थिव'**

ई-२/३५७ महावीर नगर, भोपाल-१६

हसरत थी कि वादियों के देखेंगे नजारे
वो बर्फीली चोटियां, डल झील पे शिकारे
झेलम की मस्त लहरें, चिनारों की कतारें
केसर की महकती क्यारियां, वो दिलफरेब बहारें
वो भोले हंसते चेहरे, वो हुस्न वो शबाब
हव्वा खातून के नगमे और फिरदौस के ख्वाब
पर कुछ दिनों से सिरफिरों ने छीना है घाटी का
अमन
खून के धब्बों से बदनुमां हो गया रंगीन चमन
अब लौटते हैं पर्यटक भी शोक, भय और पीर में
तुम ही बताओ क्या करेंगे जाके हम कश्मीर में ?

**—रमेश सिद्धार्थ**

प्रवक्ता, के.एल.पी. कॉलेज रेवाड़ी (हरियाणा)

● पं. शिवप्रसाद पाठक

**ग्रह स्थिति : सूर्य १७ सितम्बर से कन्या में, मंगल कन्या में, बुध ३ से सिंह में, २४ से कन्या में, गुरु सिंह में, शुक्र १ से कर्क में, २५ से सिंह में, शनि मकर में, राहु धनु में, केतु मिथुन में, हर्षल नेप्च्यून धनु में, प्लेटो तुला राशि में भ्रमण करेंगे ।**

**मेष** : मास में इच्छित कार्यों की पूर्ति होगी, लंबित योजना की पूर्ति होगी । उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा । आंतरिक विवादों में सावधानी रखें । संभाषण में नियंत्रण हितकर होगा । आकस्मिक यात्रा का योग उपस्थित होगा । पंचम गुरु मित्रों के सहयोग से धनदायी होगा । संपत्ति के कार्यों में सफलता मिलेगी । शत्रु-पक्ष व्यवधान उपस्थित करेगा ।

**वृषभ** : परोपकारी कार्यों की अधिकता होगी । पारिवारिक दायित्वों में उदासीनता रहेगी । नवीन योजनाओं में धन व्यय होगा । स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें । आजीविका की दिशा में नवीन पदस्थापना, पदोन्नति अथवा इच्छित कार्य पूर्ण होगा । शत्रु-पक्ष का पराभव होगा । राजनीतिक संबंधों में सुधार होगा । लेखन, सृजन अथवा रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी ।

**मिथुन** : मास में धैर्य तथा संयम से कार्य करें । जोखिमपूर्ण कार्यों में धनहानि होगी । आजीविका की दिशा में श्रम-साध्य सफलता मिलेगी । नवीन कार्यों में प्रियजनों का सहयोग मिलेगा । आकस्मिक यात्रा होगी । यात्रा से धन लाभ होगा । प्रियजनों से भेंट होगी । आमोद-प्रमोद में सावधानी रखें ।

**कर्क** : नवीन कार्यों में सफलता मिलेगी । प्रवास पीड़ादायी होकर उपलब्धिपूर्ण होगा । प्रियजनों से संभाषण संतुलित रखें । आजीविका की दिशा में व्यर्थ विरोधाभास होंगे । शत्रु-पक्ष की क्रियाशीलता चिंतनीय होगी । आमोद-प्रमोद पर व्यय होगा । परोपकारी प्रयासों की पूर्ति होगी ।

**सिंह** : आर्थिक दायित्वों में वृद्धि होगी । नवीन स्थान की यात्रा धनदायी होगी । पारिवारिक खिन्नता का सामना करना होगा । संपत्ति संबंधी विवाद का समाधान प्रियजन के सहयोग से होगा । आकस्मिक रूप से विषम परिस्थितियों का उदय होगा । शत्रु-पक्ष से सतर्कता हितकर होगी । व्यर्थ संभाषण टालें ।

**कन्या** : मास में अनपेक्षित कार्यों की पूर्ति होगी । नवीन योजनाओं की तीव्र गति से प्रगति होगी । संपत्ति के विवादों को टालना हितकर होगा । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में धन-व्यय होगा । रोजगार की दिशा में प्रभुत्व की वृद्धि होगी । कार्यों की अधिकता होगी । प्रवास की अधिकता होगी ।

**तुला** : मास उत्साहवर्धक एवं सफलतादायी होगा । सार्वजनिक जीवन में यशस्वी सफलता

मिलेगी। विशिष्ट व्यक्ति से भेंट होगी। नवीन

आर्थिक संसाधन का आरंभ होगा। परोपकारी प्रयासों से यश पूर्ति होगी। जोखिमपूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी। जीवन-साथी के कारण चिंतनीय स्थिति का उदय होगा।

**वृश्चिक :** आकस्मिक धन-लाभ से विद्यमान समस्या का समाधान होगा। नवीन स्थान की यात्रा होगी। लेखन, सृजन संबंधी कार्यों में सुखद समाचार मिलेगा। शत्रु-पक्ष षड्यंत्रकारी प्रयास होगा। निकटजनों से मतांतर में वृद्धि होगी। जीवनसाथी के सहयोग से किसी महत्त्वपूर्ण कार्य की पूर्ति होगी। स्वजनों से भेंट होगी।

**धनु :** मास में धैर्य तथा संयम से कार्य करें। आपसी विवाद तथा व्ययों पर नियंत्रण हितकर होगा। पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी। चिकित्सा संबंधी व्यय होंगे। प्रवास से साधारण लाभ होगा। संपत्ति के कार्यों में विलंब हितकर होगा। उच्चाधिकारियों के समक्ष व्यक्तित्व प्रभावशाली रहेगा।

**मकर :** आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी। उच्चाधिकारियों के सहयोग से लंबित योजना पूर्ण होगी। कार्यों की अधिकता से अस्वस्थता का सामना करना होगा। स्वजनों का सहयोग उत्साहदायी होगा। नवीन वाहन, वस्त्र, अथवा विलासितादायी वस्तु पर व्यय होगा।

न्यायालयीन विवाद में सुलह होगी।

**कुंभ :** भाग्यदायी अवसरों का उदय होगा। राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी।

आकस्मिक धन-लाभ होगा। संपत्ति व विशिष्ट कार्य की पूर्ति होगी। वाक्पटुता तथा साहसिक वृत्ति से सफलता मिलेगी। उदर अथवा रक्त विकार का सामना करना होगा। पारिवारिक कलह से मानसिक खिन्नता बढ़ेगी।

**मीन :** मास इष्ट सिद्धि में सहायक होगा। प्रियजन अथवा संतान संबंधी मनोनुकूल समाचार मिलेगा। आर्थिक दिशा में प्रयास सार्थक होंगे। रोजगार संबंधी परिवर्तन होगा। आकस्मिक यात्रा का योग होगा। यात्रा पीड़ादायी होगी। पारिवारिक समन्वय से प्रसन्नता होगी। किंतु अस्वस्थता संबंधी चिंता विद्यमान रहेगी। संपत्ति के विवाद में विलंब होगा।

— ज्योतिषधाम पत्रिका, १२/४ ओल्ड सुभाषनगर,
गोविंदपुरा, भोपाल (म.प्र.)

## पर्व और त्योहार

**१ सितम्बर श्री कृष्ण जन्माष्टमी, २ श्री कृष्ण जन्माष्टमी वैष्णव गोकुलाष्टमी, ५. जया एकादशी, पर्यूषण पर्वारंभ, ८. कुशोत्पाटिनी अमावस्या, ११ हरितालिका एवं गणेश चतुर्थी. १२ ऋषि पंचमी, १३ पर्यूषण पर्व समाप्त, १४ लोलार्कषष्ठी, १५ संतान सप्तमी, १९ पदमा एकादशी, २० वामन द्वादशी, २२ अनंत चतुर्थदशी, २३ भाद्रपद पूर्णिमा महालयारंभ, ३० महालक्ष्मी व्रत।**

# नयी कृतियां
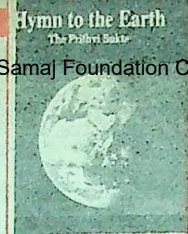
## 'तुम !' हां, बिल्कुल तुम !

नौवीं शताब्दी के कवि बाइ जूई की कविताएं कितनी अधिक आधुनिक हैं यह देखकर आश्चर्य होता है । अनुवादक के शब्दों में 'आज से ग्यारह सौ वर्ष पूर्व चीन के घोर सामंतवादी वातावरण में भी वह आम आदमी और गरीबों का पक्षधर रहा और लोक-कवि कहलाया ।' राजनीतिक-आर्थिक शोषण और सामाजिक विसंगतियों के प्रति विरोध का स्वर मुखरित करनेवाली ये कविताएं आज के युग में भी सर्वथा प्रासंगिक हैं । अनुवादक ने वर्तमान पाठक के साथ कवि की मानसिकता के तादात्म्य के आधार पर इस संकलन को 'तुम ! हां, बिल्कुल तुम ।' शीर्षक दिया है । मूलवर्ती चेतना के आधार पर इनका शीर्षक यह भी हो सकता है ''आज की कविताएं ! हां, बिल्कुल आज की ।''

बाइ जूई ने मध्यकालीन काव्य की अलंकृत शैली अथवा रोमानी कविता की बिंबात्मक भाषा का प्रयोग न कर, वर्तमान काव्य-प्रवृत्ति के अनुरूप व्यंजना के द्वारा ही अपना लक्ष्य-साधन किया है । उदाहरण देखिए :

**उसके अहाते में था / एक बेहतरीन दरख्त,**
**तीस बरस जिसमें / लगाये थे उसने अपने दिलो-जान**
**सिपाहियों ने काट डाला उसे जड़ से**
**यह कह कर / दरबार ने भेजा है हमें**
**महल के लिए अच्छी इमारती लकड़ी की तलाश में,**
**हम अंगरक्षक हैं शहंशाह के / खास अपने**
**इसलिए मैं अपने मेजबान को कहता हूं**
**कि वह ध्यान रक्खे / और चुप लगा जाए ।**
**क्योंकि सिपाहियों के अगुआ पर / शहंशाह की मेहरबानी है ।**

(शाही अंगरक्षक)

**हवा में डोलते पत्ते / जलकुंभी के ।**
**कमल की पैदाइश सबसे घनी है जहां**
**वहां से पार / तैरती आती एक नाव ;**
**कि फूलों के बीच से / दिखाई दे जाता है**
**उसे अपना प्रियतम ।**
**शरमाकर वह अपना सर झुकाती है,**

**और उसके जूड़े से / कीमती कंधा**
**गिर जाता है, नीचे पानी में ।** (कमल चुनते हुए)

पहली कविता में शाही आतंक के विरुद्ध आक्रोश है, और दूसरी में श्रृंगार का एक अत्यंत कोमल (शास्त्रीय शब्दावली में) 'सात्विक भाव' । किंतु न आक्रोश की भाषा में आवेग है और न प्रणय की अभिव्यक्ति में उच्छास-सीधी, सरल-स्निग्ध भाषा में व्यंजना के द्वारा ही 'अभिप्राय' व्यक्त हो गया है ।

अनुवादक को मूल रचनाकार के साथ अपने तादात्म्य का अहसास कितना स्पष्ट है, इसका प्रमाण चयनिका के मुखपृष्ठ पर अंकित इन पंक्तियों में मिल जाता है :

**काश ये नज़्में मेरी होतीं /**
**इनसे मगर क्या अच्छी होतीं ।।**

हिंदी में पाश्चात्य, विशेष रूप से यूरोपीय भाषाओं की कविताओं के अनुवाद तो काफी मिलते हैं, किंतु चीनी कविताओं के अनुवाद कम ही हैं । मुझे विश्वास है कि इस संकलन के माध्यम से हिंदी के काव्य प्रेमी पाठक वर्तमान युग-जीवन की अनुभूतियों का एक नये परिप्रेक्ष्य में आस्वादन कर सकेंगे—जिन्हें दूर अतीत में सर्वथा भिन्न देश-काल के कवि ने, प्रायः आज की भाषा में ही, वाणी प्रदान की थी । **नगेन्द्र**

**'तुम हां, बिल्कुल तुम !'**
**लेखक—बाई जूई, रूपांतरकार—प्रियदर्शी ठाकुर**
**प्रकाशक—भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली**
**मूल्य—पैंतालीस रुपये ।**

## हाइम टु दि अर्थ, दि पृथ्वी सूक्त :

पृथ्वी सूक्त अथवा पृथ्वी की बंदना अथर्ववेद के बारहवें अध्याय में की गयी है । यह कुल मिलाकर तिरसठ श्लोक हैं । इनमें पृथ्वी और पृथ्वी पर मनुष्य जीवन के अस्तित्व के बारे में स्फुट विचार हैं । पृथ्वी सूक्त विषय वस्तु, संरचना और शैली की दृष्टि से एक अनुपम रचना है ।

वरिष्ठ प्रशासकीय अधिकारी श्रीनिवास श्रीधर सोहनी ने अपनी प्रशासकीय जिम्मेदारियों के बीच समय निकालकर सुंदर, सरल एवं सटीक अंगरेजी में पृथ्वी सूक्त का अनुवाद करके साहित्य जगत की जो सेवा की है उसके लिए वह साधुवाद के पात्र हैं । पुस्तक के अवलोकन से प्रकट होता है कि श्री सोहनी का अध्ययन गहन और चयन विशिष्ट है । मदर टेरेसा ने पुस्तक की भूमिका लिखते हुए आशा प्रकट की है कि यह पुस्तक लोगों में अपने उत्तरदायित्वों की चेतना फैलाने में महत्त्वपूर्ण योगदान करेगी ।

**हाइम टु दि अर्थ, दि पृथ्वी सूक्त, लेखक : श्रीनिवास एस. सोहनी, प्रकाशक : स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, एल-१० ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नयी दिल्ली ११००१६ ; मूल्य : एक सौ पचीस रुपये ।**

## अमीर खुसरो का हिंदवी काव्य

हिंदी को संपन्न और समृद्ध बनाने में अमीर खुसरो (सन १२५३-१३२५) का विशिष्ट योगदान है । उन्होंने लिखा था, 'हस्त मरा मौलिद—ओ मावा-ओ वतन' । यही मेरा जन्मस्थान और यही मेरी मातृभूमि है । उनका कहना था कि फारसी और तुर्की की अपेक्षा हिंदवी अपने मधुर शब्दों के कारण अधिक लोकप्रिय है । अमीर खुसरो का हिंदवी काव्य काल क्रम में अब हमारे साहित्य का अभिन्न अंग बन गया है ।

उर्दू के प्रसिद्ध लेखक और शोधकर्ता प्रोफेसर गोपी चंद नारंग ने पहली बार एक ऐसी पांडुलिपि खोज निकाली है, जिसमें अमीर खुसरो से संबंधित १५० पहेलियां हैं । इनमें से १४४ पहेलियां प्रकाशित की जा रही हैं ।

अमीर खुसरो के साहित्य की विशेषता तुर्की फारसी के शब्दों के साथ हिंदवी (हिंदी) भाषा के शब्दों का प्रयोग था । उनकी एक रचना की बानगी देखिए—

**जि हाल-ए-मिस्कीं मकुन तगाफुल दुराई नैनां बनाई बतियां**
**कि ताब-ए-हिजां न दारम ई जां न लेहु काहे लगाए छतियां**
**चु शमूअ-ए-सोजां चु जर्रा हैरां हमेशा गिरियां ब इश्क-ए-आं माह**
**न नींद नैनां, न अंग चैनां न आप ही आवे न भेजे पतियां**

डॉ. नारंग ने प्रस्तुत पुस्तक की रचना करके हिंदी जगत को और ज्ञान अमीर खुसरो के बारे में दिया है ।

**अमीर खुसरो का हिंदवी काव्य : लेखक : गोपीचंद नारंग, प्रकाशक : सीमांत प्रकाशन नयी दिल्ली-११०००२, मूल्य : सौ रुपये ।**

**आधुनिक राजस्थानी साहित्य : एक अध्ययन** : क्षेत्रीय साहित्य के बारे में कम पुस्तकें प्रकाशित होती हैं । अतः यह बड़े संतोष और हर्ष का विषय है कि—राजस्थानी, हिंदी और अंगरेजी के सुपरिचित लेखक श्री बी. एल. माली 'अशांत' ने आधुनिक राजस्थानी साहित्य पर ३८४ पृष्ठों के गवेषणापूर्ण ग्रंथ की रचना की है

राजस्थानी एक समृद्ध, जीवंत और प्राचीन भाषा है । आधुनिक हिंदी साहित्य के विकास में राजस्थानी भाषा का विशिष्ट योगदान है । प्राचीन राजस्थानी साहित्य की चर्चा तो अनेक पुस्तकों में है लेकिन आधुनिक राजस्थानी साहित्य पर किसी विद्वान ने अपनी कलम नहीं उठायी है श्री अशांत की वर्तमान रचना इस कमी को पूरा करती है । प्रस्तुत पुस्तक में राजस्थानी पद्य और गद्य साहित्य की विस्तृत विशद और विद्वतापूर्ण विवेचना की गयी है ।

**आधुनिक राजस्थानी साहित्य : एक अध्ययन, लेखक— बी. एल. माली 'अशांत', प्रकाशक : राजस्थानी बाल साहित्य प्रकाशन ट्रस्ट, लक्ष्मणगढ़ (सीकर) राजस्थान, मूल्य : दो सौ रुपये ।**

**न. प.**

---

**जो कार्य तुम आज कर सकते हो, उसे कल पर कदापि न छोड़ो ।**

—बेंजामिन फ्रेंकलिन

# आस्था के आयाम

## मार्टिन लूथर किंग पर जूता फेंका !

अमरीका में अश्वेत आंदोलन के प्रमुख नेता मार्टिन लूथर किंग का जन्म १५ जनवरी, १९२९ को अटलांटा, जार्जिया में हुआ था । छह वर्ष की आयु में ही उन्हें श्वेत-अश्वेत के भेद का कडुवा घूंट पीना पड़ा था । तब से इन्होंने श्वेत-अश्वेत के भेद को खत्म करने के लिए आंदोलन छेड़ा । लेकिन इस समतावादी ने ८ अप्रैल, १९६८ को हत्यारे की गोली खाकर अमरीकी समाज की खाई पर दुनिया की निगाह आकर्षित की ।

गांधीजी के सच्चे अनुयायी का यह हस्र गांधीजी की हत्या के २० वर्ष बाद हुआ, जब भारत गांधी शताब्दी की तैयारी की ओर था ।

एक बार मार्टिन किसी सार्वजनिक सभा में भाषण दे रहे थे । किसी श्रोता ने उन पर जूता फेंका । जूता किंग के पास पहुंचते ही सभा में खलबली मच गयी, लेकिन किंग अविचलित

खड़े रहे और बड़े धैर्य से बोले, "धन्य है वह देश, जिसके वासी अपने खिदमतगारों का इतना खयाल रखते हैं । पैदल चलनेवाले मुझ जैसे तुच्छ सेवक के प्रति यह उपकार भुलानेवाला नहीं है, पूरा उपकार तब ही होगा, जब एक जूता फेंकनेवाले सज्जन दूसरा जूता भी फेंक दें, ताकि मैं जूतों का उपयोग कर सकूं ।

लूथर किंग के इस सदाचारी व्यवहार से सारा श्रोता समाज उनका और कायल हो गया ।

## हरे बटन की आस्था

इसी वर्ष जुलाई के महीने में एक मालगाड़ी जो जानवरों से लदी थी, बगैर ड्राइवर के १२५ किलोमीटर दूरी सहारनपुर से करेंगी स्टेशन तक तय कर गयी । आश्चर्य यह कि ३३ स्टेशनों को बिना किसी बाधा के पार करती गयी । प्रत्येक स्टेशन से उसे हरी झंडी मिलती गयी । इंजन से चार डिब्बे पीछे बैठे मुहम्मद अनवर को पता चला कि गाड़ी बिना ड्राइवर के है तो वह फांदता हुआ चलती गाड़ी के इंजन तक जा पहुंचा । हर बटन को उसने दबाया, लेकिन गाड़ी रूकी नहीं, आखिर हरे बटन को दबाते ही गाड़ी रुकी । असल में ड्राइवर मुरादाबाद सब-डिविजन के मतलबपुर स्टेशन पर गाड़ी से उतरा ही था कि गाड़ी चल दी, यह सब वह हैरानी से देखता रहा ।

यह एक आश्चर्यजनक समाचार तो था ही । साथ ही गाड़ी पर बैठा व्यक्ति यदि हरा बटन न दबाता तो आगे जाकर यह गाड़ी कितने ही जान-माल का नुकसान करती, यह सोचने की बात है । ●

# ईश्वर कहां है ?

ईश्वर कहां है ? एक चिरंतन प्रश्न जो
सभ्यता के विकास के
साथ-साथ बहुआयामी भी होता गया है । यहां प्रस्तुत हैं,
कुछ उन लोगों के उत्तर,
जिनसे पूछा गया था— 'ईश्वर कहां है ?'

# विश्वास के कारण

**—बिरजू महाराज**

जीवन के हर क्षण में ईश्वर है । उनकी मदद के बिना सांस खींचना भी संभव नहीं है । हर चीज के वही मालिक हैं । शिव हैं तो जागृति है और शव है तो सब कुछ समाप्त है ।

जीवन के हर मोड़ पर ईश्वर है बस उनको खोजने की बात है । जीवन में जब अंधकार होता है तो उसका आभास होता है । पर दृष्टि खोलते ही आप भ्रम में पड़ जाते हैं, क्योंकि दृष्टि भ्रमण करती है । इसलिए गांधीजी के बंदरों का व्यवहार सबसे उपयुक्त है, तभी आप ईश्वर का अनुमान कर सकते हैं ।

नृत्यों के स्वरों और बोलों में भी ईश्वर है । उसमें आनंद रूपी ईश्वर के दर्शन की भावना प्रकट होती है । आज के मनुष्य में एकाग्रता की सबसे अधिक कमी है । पूजा के समय भी ध्यान भंग हो जाता है ।

मैं तो उस परिवार से हूं जहां ईश्वर की सेवा करना कर्त्तव्य माना जाता है । ईश्वर हर पाप को धो देता है । मीरा, सूर और तुलसी हमारी तरह के इंसान थे, पर ईश्वर से ध्यान में वह ईश्वर स्वरूप हो गये थे । उनकी वाणी और लेखनी में ईश्वर उतर आये थे ।

पर ईश्वर के आसरे नहीं रहना चाहिए । कर्म आवश्यक है । उन्होंने हमें विभिन्न अंग और क्षमताएं इसीलिए दी हैं कि हम कार्य करें और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करें । हमें उनके पास चलकर जाना पड़ेगा । यह नहीं हो सकता कि आपको कोई चीज सिर्फ इसलिए प्राप्त हो जाए, क्योंकि आप ईश्वर पर विश्वास करते हैं ।

मैं एक बार नहाकर निकला तो अपने घर के सोफे पर विष्णु को शयनावस्था में पाया । मैं उनको देखकर मुग्ध हो गया । पर मैंने जैसे ही अपनी पत्नी को बुलाया वे गायब हो गये । यह सिर्फ विश्वास के कारण ही हो पाया था ।

# जवाब खुद प्राप्त करें

**—खुशवंत सिंह**

ईश्वर कहां है मुझे नहीं मालूम । वह है भी या नहीं यह भी मुझे नहीं पता । क्योंकि मैंने न तो उसे देखा है और न ही महसूस किया है ।

मैं यह जानता हूं कि हम इस दुनिया में हैं और यहां एक व्यवस्था है । पर विश्व की इस व्यवस्था के लिए ईश्वर जैसी शक्ति जिम्मेदार है मैं इसे नहीं मानता हूं । यदि वह शक्तिशाली और न्यायप्रिय होता तो इतना अन्याय नहीं होता । अकाल, बाढ़ और महामारियां नहीं आतीं । अंधे और अपाहिज बच्चे नहीं पैदा होते ।

यदि यह मान भी लिया जाए कि ऐसी कोई शक्ति थी जिसने विश्व की रचना की है, तो अब वह इतनी शक्तिशाली नहीं रह गयी कि सबको न्याय दे सके । इसी कारण ईश्वर के होने की कल्पना मुझे प्रभावी नहीं लगती है ।

वैसे प्रत्येक धर्म में ईश्वर के होने से संबंधित किस्से और कहानियां हैं । सारी बुरी चीजों के लिए पूर्व जन्म के कर्मों को दोषी बताया जाता है पर यह सारी बात तर्कविहीन हैं । इसी कारण महावीर और बुद्ध ने भी ईश्वर के होने या न होने के प्रश्न को सबके लिए खुला छोड़ दिया था कि वह इसका जवाब खुद प्राप्त करें ।



## अनुभूति की चीज

—इंद्रनाथ चौधरी

मैं उस संस्कृति में पला-बढ़ा हूं जहां नैतिक बोध और कर्त्तव्य पालन को ईश्वर के होने या न होने से अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है । अपने कर्त्तव्य को पूरा करने और नैतिकता से आत्मतुष्टि मिलती है । पर इसका अर्थ यह नहीं है कि मैं ईश्वर को नहीं मानता । वह सर्वत्र है । हम दुर्गा के साथ असुर की प्रतिमा भी रखते हैं, क्योंकि उसमें भी ईश्वर का अंश है । व्यावहारिक दृष्टि से भी नास्तिकता के मुकाबले आस्तिकता अधिक लाभदायक वस्तु है । ईश्वर की प्रार्थना से मानसिक शांति मिलती है ।

ईश्वर तक पहुंचने के कई रास्ते हैं और सभी रास्ते ठीक हैं । पर सर्वोत्तम रास्ता वह है, जिस पर चलकर मानवतावाद को कम-से-कम नुकसान पहुंचाये बिना उस तक पहुंचा जा सके । इसी से पूरी तसल्ली मिलती है ।

नैतिक बोध और कर्त्तव्यपालन में यदि आप ईश्वर को साक्षी मान लेते हैं तो आत्मतुष्टि बढ़ जाती है । वैसे आत्मतुष्टि के कई प्रकार हो सकते हैं । विभिन्न लोगों को अलग-अलग प्रकार से आत्मतुष्टि मिलती है ।

ईश्वर के संबंध में बहुत स्पष्ट-सी धारणा बनाना बहुत मुश्किल है । यह अनुभूति की चीज है इसलिए इसमें स्पष्टता आ ही नहीं सकती है । इसलिए लिखकर इसे बौद्धिक रूप देना संभव नहीं है ।
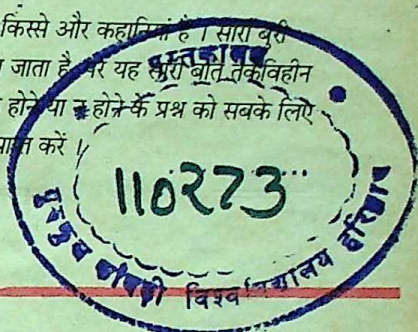
# गलत काम पर ईश्वर साथ नहीं

—डा. नरेश त्रेहन

मैं उन लोगों में नहीं हूं जो हर छोटी-बड़ी बात के लिए भगवान को याद करते हैं। पर इसका अर्थ यह नहीं कि मैं भगवान को नहीं मानता हूं। कुछ मंत्र हैं जो मैं हर रोज दोहराता हूं। ईश्वर के स्वरूप के बारे में कुछ कहना संभव नहीं है। क्योंकि पता नहीं वह एक है या अनेक। पर कोई शक्ति है जो सारे संसार में संतुलन बनाये हुए है। अच्छी चीजें उसी के द्वारा होती हैं और बुरी घटनाएं भी वही कराता है। वही आपको अच्छे और बुरे की पहचान भी देता है। यह परालौकिकवाद का चरम है जो मानसिक शांति देता है।

किसी का ऑपरेशन करते समय या और किसी भी समय मैं ईश्वर को याद कभी नहीं करता हूं। मैं अपना कार्य पूरी मेहनत और लगन से करता हूं। उसके बाद यदि आप सफल या असफल होते हैं तो यह उसकी इच्छा पर निर्भर करता है। पर कोई यह सोच ले कि उसने कोई गलत काम किया है और ईश्वर की प्रार्थना उसको इस कार्य के परिणाम से बचा लेगी तो ऐसा नहीं हो सकता है। आपकी अंतरात्मा में जो आवाज उठती है, संभवतः वह ईश्वर की आवाज होती है। आप तभी जान पाते हैं कि आप गलत कर रहे हैं या सही।

# उसे ढूंढ़ पाना वास्तविक समस्या

—शोभना नारायण

ईश्वर आप में है। वह आपकी हर क्रिया को निश्चित करता है। यदि आप किसी कार्य को सच्चे दिल से करते हैं तो वहां ईश्वर है। आपकी अंतरात्मा में ईश्वर है जो आपको गलत कार्य करने से रोकता है।

मेरी अराधना में, डांस की साधना में, हर जगह ईश्वर है। हमें नृत्य की प्रेरणा तथा नये विचार भी वही देता है। प्रतिकूल परिस्थितियों में शक्ति ईश्वर ही देता है। बस साधना और लगन तथा एकाग्रता के साथ उसे खोजने की आवश्यकता है।

अपने कार्य को पूरी लगन से करने पर आप एक परम आनंद की स्थिति में पहुंच जाते हैं, वहीं पर आप ईश्वर को पा सकते हैं। अपने कर्त्तव्य का पालन करना ही ईश्वर

है । ऐसा नहीं कि ईश्वर सिर्फ मंदिर में ही बैठा है । ईश्वर हमारे साथ हर जगह ही है, पर मुख्य बात है विश्वास ।

एक रेल दुर्घटना में मेरे पिता की मृत्यु के समय मैं वहां पर अकेली थी, मृतकों के बीच में से अपने पिता के शव को ढूंढ़ा और उन्हें लेकर अपने परिवारवालों के पास दिल्ली आयी । उस समय मैं आयु में भी कम थी । पर मेरे अंदर बैठे ईश्वर ने मुझे शक्ति दी और मैं वह काम कर सकी । उसके तुरंत बाद मुझे मथुरा में कार्यक्रम देने जाना था । इस दुःख के माहौल में भी मैंने मथुरा में जाकर कार्यक्रम दिया । इसमें ईश्वर हमारे साथ रहा, पर उसे ढूंढ़ पाना ही वास्तविक समस्या है ।

## मौलिक चीज में उसे देखनेवाले थक जाते हैं !

**—महंत देवी दयाल (बिल्लो महाराज)**

मैं नहीं जानता कि ईश्वर कहां है ? मैं खुद उसे ढूढ़ने का प्रयास कर रहा हूं । मंदिर, मसजिद, गुरुद्वारा आदि ईश्वर तक पहुंचने के साध्य हैं । हनुमानजी के प्रति मेरी असीम श्रद्धा है मैं उन्हीं के प्रति समर्पित भाव से मंदिर में बैठता हूं । शायद इसी तरह मैं इसके पास पहुंच जाऊं ।

ईश्वर श्रद्धा और विश्वास का दूसरा नाम है । जिसके प्रति आपकी श्रद्धा और विश्वास हो वही ईश्वर हो सकता है । वह मूर्ति में भी हो सकता है । आपके मन के भीतर भी हो सकता है । पर उसे खोजने के पहले आपको अपने आप को पहचानना पड़ेगा । यदि आप अपना पता ढूंढ़ लें तो ईश्वर का पता मिल जाएगा ।

श्रद्धा और विश्वास किसी मनुष्य के प्रति भी हो सकते हैं । पर यह उसके बड़प्पन, गुणों आदि के ऊपर होगा । व्यक्ति का आभारी भी हुआ जा सकता है कि उसने ईश्वर की ओर जानेवाला मार्ग बताया । हनुमान जैसे भक्त राम को इसलिए ईश्वर मानकर पूजते थे, क्योंकि उन्हें मालूम था कि श्रीराम ने किसी विशेष प्रयोजन से जन्म लिया है । आज हम उन्हें इसलिए पूजते हैं क्योंकि हमने सुना और पढ़ा है कि वे भगवान हैं । जिस प्रकार बच्चों को यह पता चल जाता है कि उसके मां-बाप कौन हैं ।

शराब या अन्य किसी मौलिक चीज में ईश्वर को देखनेवाले लोग भी अंततः थक जाते हैं । शराबखाने और जुआखाने का अंत है, पर मंदिर ऐसी जगह है जहां आने पर हमेशा शांति मिलती है । इसका कोई अंत नहीं है । यहां कोई बाधा पहुंचानेवाला नहीं होता है । यहां बैठकर आप शांति से उसकी प्रार्थना कर सकते हैं ।

# हमारा उससे भय का नाता

**—कृष्ण मोहन (युवा वैज्ञानिक)**

*मैं यह मानने को तैयार नहीं हूं कि कोई ऐसी शक्ति है जो मेरे भविष्य को निर्धारित कर सकती है । मैंने कभी ईश्वर को महसूस तक नहीं किया है । इसलिए मैं उसके होने या न होने के प्रश्न का जवाब नहीं दे सकता ।*

*जहां तक हिंदू धर्म की बात है पुराणों और उपनिषदों में भी ईश्वर को कभी विष्णु, कभी ब्रह्मा तो कभी किसी अन्य नाम से संबोधित किया गया है । इसका अर्थ है कि वहां भी यह मान लिया गया है कि कोई शक्ति है जो हमारी समझ के बाहर है । पर वह कहां है कौन है, इन प्रश्नों को छोड़ दिया गया है ।*

*मैं खुद बहुत-सी बातों का जवाब नहीं दे सकता इसलिए यह हो सकता है कि ऐसी कोई शक्ति हो, पर मुझे उसका पता नहीं है । ईश्वर से नाता जोड़ने की कोशिश हम आम लोग तभी करते हैं, जब कुछ असामान्य घटना हो जाती है । इस प्रकार उससे हमारा एक भय का नाता है जब हमें भय लगता है तो हम उसे याद करते हैं । मैं यह नहीं करना चाहता ।*

## बुद्धि-विलास के उत्तर

**१. (छात्र-३६, छात्राएं-१२) २. क. श्री राजीव गांधी तथा सरदार पटेल, ख. २६, ग. २ (खान अब्दुल गफ्फार खां तथा डा. नेल्सन मंडेला), ३. क. पं. जवाहरलाल नेहरू (१६ साल ९ मास १३ दिन), ख. चौ. चरणसिंह (५ महीने १८ दिन), ४. क. श्री जगजीवनराम (बीच में सिर्फ १ महीने २६ दिन छोड़कर ३२ साल से अधिक समय तक), ख. न्यायमूर्ति एच.आर. खन्ना (केवल ५ दिन), ५. क. हजरतबल (कश्मीर में डल झील के किनारे), ख. कदम-ए-रसूल (कटक), ६. क. बंगाल का १७६९-७० का दुर्भिक्ष, ख. 'बंदे मातरम्' गीत के लिए, ७. फिलीपीन के 'माउंट पिनातुबो' का विस्फोट, ३५० से अधिक लोग मरे (६०० वर्षों के बाद), जाफन के 'माउंट अनजेन' का विस्फोट, लगभग ४० मरे (२०० वर्षों के बाद), ८. मुम्बई समाचार (१६९ वर्ष पूरे किये,, ९. क. सोवियत संघ के सर्जी बुबका (६.०८ मीटर), ख. अमरीका के लेराय बुरैल (९.९० सेकंड), ग. भारत की सुभिता लाहा (२३५.५ किलोग्राम), १०. सन् ६० में 'यूनीसेफ' ने दूध के प्याले के साथ बच्चे के स्थान पर मां और बच्चे का प्रतीक प्रयोग में लाया ।**

## कर्म भी महत्त्वपूर्ण

**—डॉ. एस. जेड. कासिम** (कुलपति, जामिया मिलिया इस्लामिया)

*विज्ञान में हम बगैर परीक्षा के किसी वस्तु पर विश्वास नहीं करते हैं, जबकि इसके ठीक विपरीत धर्म और ईश्वर का अर्थ ही विश्वास है । लेकिन जिस प्रकार विज्ञान में हम कई बातों को उदाहरण द्वारा मान लेते हैं, उसी तरह ईश्वर के अस्तित्व में भी विश्वास के लिए कई उदाहरण सामने आ जाते हैं । ईश्वर को कई वस्तुओं में देखा जा सकता है, बस नजरिया अलग होने के कारण लोग उसे अलग-अलग चीजों में देखते हैं ।*

*ईश्वर पर विश्वास किये बगैर आप प्रगति नहीं कर सकते, आपके व्यक्तित्व का चरित्र और शक्ति इसी विश्वास से प्राप्त होता है । एक बार वैज्ञानिकों की एक बैठक के बाद रात्रिभोज होना था । उसमें प्रख्यात वैज्ञानिक सी. वी. रमण को भी आना था, पर वह नहीं आये । बाद में पता चला कि चंद्रग्रहण होने के कारण वह पूजा कर रहे थे और इसीलिए नहीं आये । जब उनसे पूजा करने का कारण पूछा गया, तब उन्होंने कहा कि हमारा पालन-पोषण कुछ विश्वासों के साथ हुआ है । यह विश्वास हमें भला-बुरा समझने की शक्ति और आदर्श देते हैं । इसके बगैर हम दिशाहीन हो जाएंगे इसलिए इस विश्वास का पालन आवश्यक है ।*

*हर मनुष्य के जीवन में एक समय ऐसा आता है, जब उसे ईश्वर पर विश्वास करना पड़ता है । कई ऐसी चीजें होती हैं जिन्हें समझना संभव नहीं होता तब लगता है कि कोई विशेष शक्ति मौजूद है । पर मनुष्य के कर्म भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं यदि वह उन्हें छोड़कर केवल विश्वास के कारण पूजा करता रहा तो न उसका भला होगा और न समाज का । इसलिए मैं नहीं समझता कि कहीं भी बैठकर केवल ईश्वर का नाम लेने से ईश्वर मिल जाता है ।*

## यदि होता तो सहायता करता

**—लक्ष्मण** (घरेलू नौकर)

*मैं ईश्वर को नहीं मानता, मेरा उस पर कोई विश्वास नहीं है । मैं मंदिर जाता हूं, क्योंकि मेरे साथ के बहुत सारे अन्य लोग भी जाते हैं, पर मुझे लगता है कि ईश्वर केवल अंधविश्वास है ।*

*यदि वह वास्तव में होता तो इन सारे मंदिर जानेवालों की सहायता कर देता । तब हम लोग ऐसे ही नहीं रहते, बल्कि कुछ अच्छा कर रहे होते । हम अपनी सारी मेहनत और सारी पूजा के बावजूद वहीं हैं । ईश्वर कहीं नहीं है ।*

**प्रस्तुति : सौरभ सिन्हा**

## चंद पल बेहतर

'वर्षों की अर्थहीन जिंदगी से बेहतर है इंसान चंद पलों की सार्थक जिंदगी जी सके' यह उद्‌गार 'कादम्बिनी' के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी ने मंजुल स्मृति समारोह के अवसर पर सिरसा के कृषि ज्ञान केंद्र में लेखिका एवं पत्रकार श्रीमती मंजुला शर्मा की प्रथम पुण्य तिथि पर व्यक्त किये ।

'मंजुल स्मृति समारोह' के मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए श्री अवस्थी ने घोषणा की कि वह प्रति वर्ष मंजुला स्मृति में हरियाणा के किसी लेखक को एक हजार रु. नकद राशि से पुरस्कृत किया करेंगे । यह समारोह दिल्ली में मंजुला के जन्म दिवस पर आयोजित किया जाया करेगा ।

इस अवसर पर मंजुला के जीवन से जुड़ी एक स्मारिका 'पहचान' का विमोचन श्री अवस्थी ने किया । मंजुला के जीवन एवं साहित्य पर सर्वश्री जगदीश 'प्यासा', सुगन चंद मुक्तेश एवं जी.डी. चौधरी ने अपने विचार व्यक्त किये तो मंजुला की रचनाओं का प्रस्तुतिकरण सर्वश्री मनफूल वर्मा, सुरेंद्र वर्मा एवं श्री गोपाल शास्त्री ने किया । इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती रक्षा शर्मा कमल तथा मंच संचालन सुरेंद्र वर्मा ने किया । इस अवसर पर सिरसा के साहित्यकार डॉ. राजकुमार निजात तथा हनुमानगढ़ के श्री मायामृग को ५०१ रुपये की राशि एवं स्मृति चिह्न से सम्मानित किया गया ।

सभा के प्रधान श्री मुक्तेश ने श्री राजेन्द्र अवस्थी एवं सुश्री साधना अवस्थी को स्मृति चिह्न भेंट करके उपस्थित जनों का आभार प्रकट किया ।

## सुरेशचन्द्र शुक्ल का नार्वे में सम्मान

ओसलो में साहित्यकार एवं पत्रकार सुरेशचन्द्र शुक्ल का सम्मान किया गया । श्री शुक्ल को यह सम्मान उनके सांस्कृतिक एवं मानवाधिकार के कार्यों के लिए एक प्रतिष्ठित नार्विजन संस्थान द्वारा दिया गया ।

श्री शुक्ल भारतीय संस्कृति एवं हिंदी का प्रचार और प्रसार नार्वे में कर रहे हैं ।

## महिलाओं की भागीदारी आवश्यक

'देश और समाज के विकास के लिए सभी कार्य क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी आवश्यक है, क्योंकि कार्य क्षमता में महिलाएं पुरुषों के बराबर हैं ।'—यह विचार 'कादम्बिनी' संपादक राजेन्द्र अवस्थी ने बरेली में 'इनर व्हील क्लब' के अधिष्ठापन समारोह में व्यक्त किये ।

श्री अवस्थी ने कई विकसित देशों का जिक्र करते हुए विकास कार्य में महिलाओं की भागीदारी की ओर ध्यान आकर्षित किया । साथ ही भारतीय महिलाओं की भागीदारी को

अपेक्षाकृत बेहतर बताते हुए उन्होंने कहा कि 'सेवा भावना' महिलाओं में अधिक होती है, इसलिए उनका आगे आना ज्यादा सार्थक होगा

यूरोपीय देशों में महिलाओं की स्थिति के बारे में श्री अवस्थी ने कहा कि भारत की अपेक्षा वहां महिलाएं अधिक स्वतंत्र और मुक्त रहती हैं। इसलिए अपने देश में भी हम महिलाओं को जितनी मुक्त नजर से देखेंगे, उन्हें उतना ही अच्छा पाएंगे।

क्लब की ओर से श्री अवस्थी को पूर्व अध्यक्षा निर्मला सिंह ने अभिनंदन पत्र भेंट किया। क्लब की नयी कार्यकारिणी में अध्यक्षा रीता जैन व उपाध्यक्षा साधना अग्रवाल, सचिव ज्योति श्रीवास्तव, कोषाध्यक्ष मोहिनी अचल, आई.एस.ओ. मधु मेहरा, सह-सचिव वीना मेहरोत्रा चुनी गयीं।

## मुनि श्री नगराज को मूर्तिदेवी पुरस्कार

भारतीय ज्ञानपीठ ने सन १९८३ से प्रवर्तित मूर्तिदेवी पुरस्कार वर्ष १९९० का प्राकृत, पालि, संस्कृत और हिंदी के विख्यात विद्वान और प्राचीन भारतीय संस्कृति के व्याख्याता मुनि श्री नगराज (जन्म १९१७) को उनके प्रसिद्ध ग्रंथ 'आगम और त्रिपिटक : एक अनुशीलन' के लिए समर्पित किया।

डॉ. सिंघवी का अभिमत है कि 'पुरस्कृत ग्रंथ की विशेष उपलब्धि यह है कि इसमें भारतीय दर्शन तथा संस्कृति में सन्निविष्ट मूल्य तथा दृष्टि रेखांकित है।

इस पुरस्कार के अंतर्गत एक प्रशस्तिपत्र और श्रुतदेवी सरस्वती की प्रतिमा के साथ ५१,००० रुपये की राशि समर्पित होगी।

## श्री सिब्बल के चित्रों की प्रदर्शनी

नयी दिल्ली : जापान में ओसाका में आयोजित 'त्रिनाले' चित्रकला प्रदर्शनी में भारतीय चित्रकार श्री डी. पी. सिब्बल के पर्यावरण पर आधारित चित्र 'क्रियेशन-टू' को काफी सराहा गया। श्री सिब्बल को बचपन से ही चित्रकला का शौक रहा है। मूलतः वे वास्तुकार हैं पर उनके चित्र देश-विदेश में आयोजित प्रदर्शनियों में काफी सराहे गये हैं। हाल ही में नयी दिल्ली में आयोजित कुछ चित्र-प्रदर्शनियों में भी श्री सिब्बल के चित्रों ने काफी प्रशंसा अर्जित की। राष्ट्र संघ के नयी दिल्ली स्थित कार्यालय ने विश्व विकास के चालीस वर्ष पूरे होने के सिलसिले में समारोह आयोजित किये थे। इसके लिए उसने विकास का चित्रण करनेवाले श्री सिब्बल के प्रतीक चिह्न को अपनाया था।

## प्रेमकिशोर 'पटाखा' का सम्मान

अलीगढ़ में लायन्स क्लब की ओर से बाल साहित्य के कवि—प्रेमकिशोर 'पटाखा' को उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए लायन्स इंटरनेशनल के डिस्ट्रिक चेयरमैन श्री एल.डी. वार्ष्णेय ने शाल एवं स्मृति चिह्न भेंट करके सम्मानित किया।
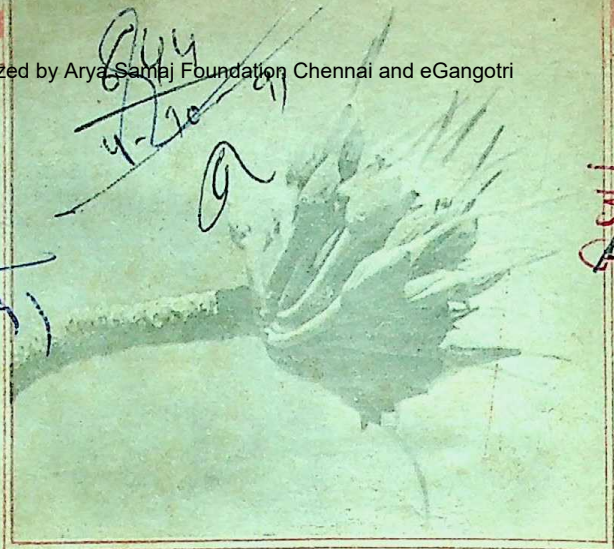
## समस्या पूर्ति—१४३ महुआ

### प्रथम पुरस्कार

*ऊषा की पौ फटते-फटते रंग भरे महुआ के*
*आज सबेरे महके-महके फूल खिले महुआ के*

*खुले निदारे नयन, पवन ने कुसुमांचल लहराया*
*प्राणों में केसर-सुगंध भर अंग-अंग मुसकाया*
*अंगूरी अधरों का मधुरस पीने मधुकर आया*
*मधुर गुलाबी अधर चूमकर गीत मिलन का गाया*

*अनुराग-कथा कहते-कहते अधर खुले महुआ के*
*नदी किनारे चुपके-चुपके फूल झरे महुआ के*

—रमेश चन्द्र सक्सेना

प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय स्टेट बैंक स्थानीय प्रधान कार्यालय, लखनऊ

### द्वितीय पुरस्कार

*एक डाल पर फल बहुतेरे*
*कुछ छोटे कुछ बड़े घनेरे*
*फल सिर मुकुट सभी बहुरंगी*
*कुछ सफेद कुछ लाल भुजंगी*
*बूझ-बुझौवल पूछे बुधुआ*
*नहि बेदना, यह तो महुआ*

—मुरलीधर झा

ऊर्जा विभाग, मेकन, पोस्ट-हीनू, रांची-८३४००२ (बिहार)

### तृतीय पुरस्कार

*महुआ बीनन की बेरा में जिन सोओ पांव पसार*
*ले लो अपनी छन्नी चुनका जल्दी जा पहुंचो मोहार*
*जा पहुंचो मोहार संग गुंइयन खों लेंकें*
*पैलउं सब पतरोई झारियो पौ फटतई डोंगा टपकें*
*डुभरी और लटा के लाने धरने परहैं जे महुआ*
*हर छठ में तो सोई लगहें पसई चाउर औ महुआ*

(शैली बुंदेलखंड लोकगीत)

—अल्पना श्रीवास्तव

द्वारा—श्री ए.सी. श्रीवास्तव, ला. ब. शास्त्री कॉलोनी, बेंकट वार्ड—कटनी (म.प्र.)-४८३५०१

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१